संकेताक्षर के विवरण

अ०	=	अव्यय
अप०	=	अपभ्रंश
उप०	=	उपसर्ग
क्रि०	=	क्रिया
क्रि० वि	=	क्रिया विशेषण
गु०	=	गुण वाचक
गुज०	=	गुजराती भाषा
तत्०	=	तत्सम
तद्०	=	तद्भव
दे०	=	देश विशेष में प्रचलित शब्द
पु०	=	पुंलिङ्ग
प्र०	=	प्रत्यय
प्रा०	=	प्राकृत
मुहा०	=	मुहाविरा
लो० उ०	=	लोकोक्ति (कहावत)
वा०	=	वाग्धारा या Idiom,
वि०	=	विशेषण
सर्व०	=	सर्वनाम
स्त्री०	=	स्त्रीलिङ्ग
सं० अ०	=	संयोजक अव्यय

ओं तत्सत्

हिन्दी शब्दार्थ-पारिजात

——:o:——

अ

अ नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर है। कण्ठस्थान से उच्चारित होने के कारण यह कण्ठ्य कहा जाता है। व्यञ्जनों का उच्चारण इसकी सहायता के बिना, स्वतन्त्ररीत्या हो नहीं सकता, इसीसे वर्णमाला में क ख ग आदि वर्ण अ संयुक्त लिखे तथा बोले जाते हैं। जिस शब्द के पूर्व यह अक्षर जोड़ा जाता है, वह शब्द विपरीत अर्थवाचक हो जाता है। यथा अनाचार, अर्थात् आचार रहित, अकर्मण्य अर्थात् जो कर्म के युक्त न हो। स्वरादि शब्द के पूर्व अ होने से अन् हो जाता है। यथा अनधिकार अर्थात् अधिकार का अभाव।

अ (पु०) विष्णु, निषेध, अल्प, अभाव, अनुकम्पा, सादृश्य (यथा अब्राह्मण), भेद (यथा अपद), अप्राशस्त्य (यथा अकाल), अल्पता (यथा अनुदार) गणित में अ १ संख्यावाची है।

अउ दे० (सं० अ०) और, तथा।

अउघड़ दे० (औघड़) (पु०) भारत वर्ष का एक उपासक पंथ। इसके प्रवर्तक ब्रह्मगिरि थे।

अउर दे० (सं० अ०) और, तथा।

अऊत तद्० }
अपुत्र तत्० } (पु०) [अ = नहीं ऊत = पुत्र] पुत्र हीन; जिसके सन्तान न हो, निर्वंश, घारा, मूर्ख, जाहिल।

अंऊजना (क्रि०) जलना, गरमी पड़ना, घुभना, छिपना, छिदना।

अऋण (वि०) ऋणमुक्त, जो कर्जदार न हो।

अऋणिन्—(सं०) [न ऋण + इन्] ऋणमुक्त जो किसी का देनदार न हो।

अंश तत्० (पु०) भाग, बाँट, पृथक्, स्कन्ध, दिन, भूपरिधि का ३६० वाँ भाग, पितृधन का भाग।—क तत्० [अंश + अक] (पु०) बाँटनेवाला, साझी, भाग, दिन—ांश तत्० (पु०) [अंश + अंश] भाग का भाग।—ी तत्० [अंश + ई] (पु०) दायाद, बाँटने वाला, बटवैया, भागी।—ज (पु०) पाराशय मुनि।—सुता (स्त्री०) यमुना।

अंशु तत्० (पु०) [अंश + उ] किरन, रश्मि, तेज, मयूख, आभा, दीप्ति, ज्योति।—जाल तत्० (पु०) [अंशु + जाल] रश्मि समुदाय।—धर तत्० (पु०) [अंशु + धर] रश्मिधारी अर्थात् सूर्य, अग्नि चन्द्रमा, दीप, देवता, ब्रह्मा, प्रतापी।—मान तत्० (पु०) [अंशु + मान] सूर्य, चन्द्रमा। एक राजा का नाम। अंशुमान सूर्यवंश में एक राजा हो गये हैं। ये राजा सगर के पौत्र और राजा असमञ्जस के पुत्र थे। जब राजा सगर के साठ हजार पुत्र यज्ञीय अश्व को खोजते हुए पाताल में जा महर्षि कपिल के क्रोध से भस्म हो गये, तब राजा सगर ने अपने पुत्रों के आने में विलम्ब देख, अपने पौत्र अंशुमान को भेजा। ये जाकर मुनि को सन्तुष्ट कर यज्ञीय अश्व ले आये और पितामह का यज्ञ पूरा कराया। साथ ही अपने पितृव्यों के उद्धार का उपाय भी गरुड़ जी से अवगत किया [हरिवंश—वनपर्व देखो।]—माली तत्० (पु०) [अंशु + माली] जो अंशुओं की माला धारण किये हुए हैं, अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप आदि।

अंशुक तद्० (पु०) [अंशु+क] वस्त्र, रेशमी वस्त्र, टसर, रश्मि समुदाय।
अंशल तद्० (पु०) बाँटने वाला, भाग करने वाला।
अंसल तद्० (वि०) बलवान।
अंह (पु०) पाप, बाधा, विघ्न। [त्याग, पीड़ा।
अंहति या अंहती तद्० (स्त्री०) [अंह+ति] दान,
अंहस तद्० (पु०) [अंह+अस] पाप, स्वधर्म त्याग, अपराध, पातक, दुष्कृत, कल्मष, अघ।
अंहुड़ी (स्त्री०) एक प्रकार की लता, मरकला।
अक तद्० (पु०) पाप, दुःख।
अकउआ तद्० (पु०) अर्क, मदार, अकवन।
अकच तद्० (वि०) बिना बालों का, (पु०) केतुग्रह।
अकच्छ तद्० (पु०) [अ+कच्छ] नङ्गा, मेहरा, व्यभिचारी, लम्पट। जैन सम्प्रदाय के साधु, विशेषतः ये निर्ग्रन्थ भी कहे जाते हैं।
अकड़ तद्० (स्त्री०) टेढ़ापन, फुलाहट, ऐंठ, बाँकापन, शेखी, नटखटी, जैसे—
"घड़ी भर में सब अकड़ निकाल दूँगा।"
—बाज़ दे० (पु०) अकड़ैत, छैला, बाँका, छैल, चिकनियाँ—बाज़ (वि०) अभिमानी, घमंडी।—मकड़ दे० (स्त्री०) ऐंठ कर चलने की चाल, घमण्ड, अभिमान।—ना (क्रि०) (अकुञ्चन) ऐंठना, टेढ़ा होना, दुखना, पीड़ा करना. बड़ा पकड़ना।—ैत दे० (पु०) बाँका, छैला, अभिमानी।—बाई दे० (स्त्री०) अन्नग्रह, बात रोग, नसों का अकड़ना। [ऐंठन।
अकड़ा (पु०) रोग विशेष।—व (पु०) खिंचाव, तनाव,
अकण्टक तद्० (पु०) [अ+कण्टक] काँटा रहित अविरोधी, शत्रुहीन, निरुपाधि, चैन से।
अकत (वि०) पूर्ण, समूचा, सारा।
अकथ तद्० (पु०) [अ+कथ] न कहने योग्य, कहने की शक्ति के बाहिर।—नीय या अकथ्य तद्० (पु०) जो कहने योग्य न हो।—थितव्य तद्० (पु०) अवक्तव्य।—ा तद्० (स्त्री०) कुकथा, मन्दकथा, अपभाषण।
अकद—(पु०) प्रतिज्ञा वचन, वादा।—बंदी (स्त्री०) इकरार नामा, प्रतिज्ञापत्र।
अकनी तद् (वि०) (आकर्ण का अप०) सुनकर।
अकम्पन तद्० (पु०) (अ+कम्पन) दृढ़, कठोर, मजबूत। अकम्पन रावण के एक सेनापति का नाम भी था। हनुमान ने उसे मारा था। यह रावण का मामा सुमाली का बेटा था और इसकी माता का नाम केतुमालिनी था। रावण की माता कैकसी इसकी बहिन थी। इसकी दूसरी बहिन का नाम कुम्भीनसी था।
अकपट तद्० (पु०) [अ+कपट] कपटहीन, सरल, सीधा, छलरहित।—ता तद्० (स्त्री०) उदारता, सरलता।
अकबक दे० (पु०) असम्बद्धवाक्य बकबक, प्रलाप।
अकबाल (पु०) प्रताप।
अकरन तद्० (पु०) [अ+करन] निष्कारण, हेतु शून्य, कारण रहित, न करने योग्य।
अकरणीय तद्० (वि०, न करने योग्य। [बढ़िया।
अकरा तद्० (अनर्घ तद्०) (पु०) महँगा, बहुमूल्य,
अकरास दे० (पु०) अँगड़ाई, देह टूटना।
अकरुण तद्० (पु०) [अ+करुण] करुणा रहित, निर्दय, निष्ठुर।
अकर्ण तद् (पु०) [अ+कर्ण] कर्ण रहित, बहरा, बूचा। (पु०) साँप।
अकर्णी तद्० (पु०) असङ्गत, अनुचित, अवसंख्य।
अकर्म तद्० (पु०) [अ+कर्म] कुकर्म अपराध, पाप, बुरा काम, अधर्म, बुराई।—तद्० (पु०) कामहीन, बेकार बैठा।—तद्० (पु०) निगोड़ा चाण्डाल, अपराधी।
अकर्मक तद्० (पु०) [अ+कर्मक] वह क्रिया जिसमें कर्म न हो, जैसे—"आना, रहना," कर्म रहित।
अकर्मण्य तद्० (पु०) आलसी, कार्यक्षम, काम करने के अयोग्य।
अकल तद्० (पु०) [अ+कला] अङ्गहीन, अवयवरहित, निराकार, परमात्मा। सिख सम्प्रदाय के परमात्मा का नाम।
अकल्पन तद्० (पु०) [अ+कल्पन] सचाहट, प्रकृत, सत्य, यथार्थ, वास्तविक।
अकल्पित तद्० (पु०) सच्चा, कल्पना रहित।
अकल्याण तद्० (पु०) [अ+कल्याण] अमङ्गल, अशकुन, अशुभ, मन्द, बुरा।

अकथार तद्० (पु०) कुच, काँख, गोदी, दोनों हाथों के बीच का स्थान।

अकस दे० (पु०) वैर, द्वेष।

अकसर तद्० (गु०) अकेला, एकाकी, बहुधा (यह अक्सर का अपभ्रंश है)।

अकसीर दे० (स्त्री०) रसाइन, कीमिया (वि०) अव्यर्थ, अत्यन्त गुणकारी। [नक, अचानचक, सहसा।

अकस्मात् तत्० (अ०) हठात्, बलात्, दैवात्, अचा-

अकह्य तद्० (वि०) न कहने योग्य, अवर्णनीय।

अकहुवा दे० (वि०) अकथनीय।

अका तद्० (गु०) निर्बोध, जड़, मूढ़, पागल।

अकाण्ड तत्० (गु०) अकस्मात, हठात्।—ताण्डव तत्० (पु०) व्यर्थ की उछल कूद।—पात् तत्० (वि०) होते ही मर जाने वाला।

अकाज तद्० (पु०) बिगाड़, हिंसा, व्यर्थ।—ी (वि०) बाधक, कार्य बिगाड़ने वाला।

अकाट्य तत्० (वि०) न काटने योग्य, असखण्डनीय।

अकाम तत् (गु०) अकारथ, व्यर्थ, निष्फल।—निर्जरा (स्त्री०) जैनियों के मतानुसार कर्मनाश का भेद विशेष।

अकार तद्० (पु०) स्वरूप, आकृति, सूरत, "अ" अक्षर।

अकारज तद् (पु०) हानि, नुकसान, अकार्य, बुरा काम।

अकारण तत् (अ०) कारण रहित, अनर्थक, व्यर्थ।

अकारथ दे० (वि०) व्यर्थ, निष्फल।

अकारत दे० (वि०) अकारथ।

अकाल तत्० (पु०) दुर्भिक्ष, असमय।—कुसुम (पु०) अनऋतु का फूल।—पुरुष तत्० (पु०) सिक्खों के ग्रन्थों में ईश्वर का नाम है।—पुष्प तत्० (पु०) अनऋतु का फूल।—जलद् तत्० (पु०) असमय के मेघ।—मृत्यु तत्० (संस्कृत में यह पुँल्लिङ्ग है, पर हिन्दी में यह स्त्रीलिङ्ग है) कुसमय की मृत्यु, अपक्व मृत्यु।—वृष्टि तत् (स्त्री०) कुसमय की वर्षा।

अकालिक तत्० (वि०) बिना समय का, असामयिक, बेमौका।

अकाली तद् (पु०) सिक्ख विशेष।

अकाव दे० (पु०) आक, मदार।

अकाश तद् (पु०) आकाश, शून्य, आसमान, गगन, नभ, पोल, अन्तरिक्ष।—दिया (पु०) वह दीपक जो कार्तिक मास में बल्ली में बाँध कर ऊपर लटकाया जाता है।—बानी दे० (स्त्री०) आकाशवाणी, देववाणी।

अकिञ्चन तत्० (गु०) दरिद्र, कङ्गाल, दीन, दुःखी।—ता,—त्व तत्० (स्त्री०) दरिद्रता।—कर तत्० (वि०) तुच्छ, असमर्थ।

अकिल दे० (स्त्री०) अक़्ल, बुद्धि।

अकीरति तद्० } (स्त्री०) अकीर्ति, अपकीर्ति, अयश,
अकीर्त्ति तत्० } अप्रतिष्ठा, दुर्नाम, कलङ्क।—कर, तत्० (गु०) दुर्नाम करने वाला, अयशस्कर।

अकुण्ठ } तत्० (वि०) तीक्ष्ण, चोखा।
अकुण्ठ्य }

अकुताना दे० (क्रि०) ऊबना, घबड़ाना।

अकुताही दे० (क्रि०) ऊबै, घबड़ावै।

अकुतोभय तत्० (गु०) निडर, निःशङ्क, निर्भय, साहसी।

अकुल तत्० (गु०) [अ+कुल] कुलरहित, नीच, निगोड़ा।

अकुलाना दे० (क्रि०) व्याकुल होना, घबड़ाना।

अकुलीन तत्० (गु०) कुलहीन, सङ्कर, कुजाति।

अकुशल तत्० (गु०) अमङ्गल, अशुभ, बुरा।

अकूत दे० (वि०) जो कूता न जा सके। [चट्टान।

अकूपार तत्० (पु०) समुद्र, सागर, कछुआ, पत्थर,

अकृतज्ञ तत्० (वि०) कृतघ्न, किये हुए उपकार को न मानने वाला।

अकृत्रिम तत्० (वि०) बेबनावटी, प्राकृतिक।

अकेल } तद् (वि०) इकला, एक ही, दुःखी।
अकेला }

अकोर तद्० (स्त्री०) घूस, मुट्ठभरी, तोफा।

अकोसना दे० (क्रि०) बुरा भला कहना, गालियाँ देना, शाप देना।

अकौवा, अकौआ दे० (पु०) मदार, अर्क।

अर्क तत्० (पु०) मदार, अकवन, अकउवा।

अक्खड़ दे० (वि०) उद्दण्ड, उजड्ड।

अक्खर दे० (पु०) अक्षर।

अक्खोमक्खो दे० (पु०) दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बालक के मुँह पर फेरना।

अक्रूर तत्० (पु०) दयालु, सरल, अक्रोधी, कोमलस्वभाव। श्रीकृष्ण के चाचा थे। ये श्वफल्क के पुत्र थे। माता का नाम गान्दिनी था। इनकी ही सम्मति से सत्यभामा के पिता सत्राजित ने सत्राजित को

मार कर उसकी स्यमन्तक मणि ले ली थी। जब कृष्ण ने उसे डराया, तब वह स्यमन्तक मणि अक्रूर को दे कर भागा, किन्तु पकड़ कर मार डाला गया।

अक्त तत्० (गु०) भींजा, गीला, लिपा, सींचा हुआ।

अक्ष तत् (पु०) पहिया, धुरी या कील, चौसर का पाँसा, गाड़ी का जुआ, गाड़ी, रथ, आँख, रुद्राक्ष, सोने की तौल का एक बाट विशेष, आत्मा, ज्ञान, मण्डल, सर्प। वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतर होती हुई उसके आर पार गई है और जिस पर पृथ्वी घूमती जान पड़ती है।—कुमार तत्० (पु०) देखो अक्ष-कुमार।—कूट तत्० (पु०) आँख की पुतली।—क्रीड़ा तत्० (स्त्री०) पासे का खेल।—पाद तत्० (पु०) एक विख्यात हिन्दू दार्शनिक ऋषि। इनका दूसरा नाम गौतम है। इन्होंने न्यायदर्शन प्रणयन किया है। इसीलिये न्याय का दूसरा नाम अक्षपाद दर्शन भी है। इनका होना खीष्टाब्द से ६०० वर्ष पूर्व से २०० वर्ष पूर्व के भीतर माना जाता है। इनके बनाये दर्शन में ५२८ सूत्र हैं। इन्होंने न्याय में ईश्वर और परलोक को माना है। दुःख से अत्यन्त निवृत्ति को यह मुक्ति मानते हैं। न्याय का दूसरा नाम आन्वीक्षिकी विद्या भी है, जिसका अर्थ है सुन कर अन्वेषण करना।

अक्षत तत्० } [अ+क्षत] (पु०) बिना टूटे चाँवल
अच्छत तद्० } जो पूजा के काम में आते हैं। (गु०) बिना टूटा साबा।—योनि तत्० (स्त्री०) वह स्त्री जिस पति-सम्बन्ध न हुआ हो।

अक्षम तत्० (गु०) [अ+क्षम] क्षमता रहित, अशक्त।

अक्षय तत्० [अ+क्षय] (गु०) अविनाशी, जिसका कभी नाश न हो, अमर, चिरजीवी स्थिर।—कुमार तत्० (पु०) रावण के उस पुत्र का नाम जो हनुमान द्वारा मारा गया। यह मन्दोदरी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। इसको लोग अक्षयकुमार भी कहते हैं।—तृतीया तत्० (स्त्री०) आखातीज, वैशाख शुक्ला ३।—नवमी तत्० (स्त्री०) कार्तिक शुक्ला ९।—वट तत् (पु०) प्रयाग का एक वृक्ष, इसको अक्षयवट भी कहते हैं। यह प्रयागराज के [illegible] माना था।

अक्षर तत्० [अ+क्षर] (पु०) अकारादि वर्ण बिन्दु, ब्रह्मा, ब्रह्म, शिव, मोक्ष, गगन, धर्म, तपस्या, अपामार्ग (चिचेरी), जल। (गु०) नाशरहित, निर्विकार, सत्य।—माला तत्० (स्त्री०) वर्णमाला, अक्षर श्रेणी।—विन्यास तत्० (पु०) लेख, लिपि।—शः तत्० (क्रि० वि०) अक्षर अक्षर।

अक्षरौटी दे० (स्त्री०) वरतनी, वर्णमाला, स्वर का भेद।

अक्षवार तत् (पु०) जुआखाना।

अक्षांश तत्० (पु०) [अक्ष+अंश] कल्पित भूगोल की ऊपर की रेखा विशेष, पृथ्वी की धुरी पृथ्वी के उत्तर वा दक्षिण केन्द्र तक ९० (नब्बे अंश) पर के रेखा (Latitude)

अक्षि तत्० (पु०) } आँख, नेत्र, नयन।—गत तत्०
अक्षि तद्० (स्त्री०) } (वि०) आँख पर चढ़ा हुआ (शत्रु)।—विभ्रम तत्० (क्रि०) आँख घुमाना।—विक्षेप तत्० (पु०) कटाक्षपात।

अक्षुण्ण तत्० (गु०) अचूर्णित, मनस्ताप रहित। अटूट, समस्त, अविहत।

अक्षौहिणी तत्० (स्त्री०) एक बड़ी सेना जिसमें २१८७० रथ, २१८७० हाथी, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल होते हैं।

अक्स (पु०) परछाईं, छाया।

अक्खड़ तद्० (गु०) गवार, जङ्गली, अशासित अनमिला, अनगढ़, झगड़ालू।

अखण्ड तत्० (गु०) सम्पूर्ण, समस्त, सब, खण्ड रहित।—नीय तत्० (गु०) जो खण्डन न हो सके।

अखण्डित तत्० (गु०) जिसके टुकड़े न हो सकें।

अखतीज दे० (स्त्री०) अक्षय तृतीया।

अखरना तद्० (स्त्री०) अनुचित मालूम होना।

अखरोट तद्० (पु०) वृक्ष और फल विशेष।

अखाड़ा तद्० (पु०) मल्लयुद्ध स्थान, आङ्गन, साधु गुसाइयों का दल। रामायण में अखाड़ा का प्रयोग अक्वाड़ के स्थान में हुआ है।

अखाद्य तत्० (गु०) खाने के अयोग्य, अभक्ष्य।

अखारी—(स्त्री०) चकरा, एक प्रकार की टेढ़ी लकड़ी।

अखिल तत्० (गु०) समस्त, सारा, सब।

अखीर दे० (पु०) अन्त, समाप्ति छोर।

अखूट दे० (गु०) अक्षय जो न घटे।

अखेट दे० (पु०) आखेट, शिकार ।—क दे० (पु०) शिकारी ।
अखोह तद्० (पु०) ऊबड़खाबड़ भूमि,ऊंची नीची ज़मीन
अख्याति तद्० (स्त्री०) अकीर्त्ति, अपयश, दुर्नाम ।
अख्यायिका दे० (स्त्री०) आख्यायिका ।
अग तद्० (पु०) अचल, पर्वत, वृक्ष आदि ।
अगड़धत्ता दे० (वि०) लम्बा तड़ङ्गा, ऊँचा ।
अगड़ बगड़ तद्० (गु०) बेमेल, बालमेल, असंलग्न वाक्य । [अनगिनती ।
अगणित तद्० (गु०) बहुत, असंख्यात, अपार,
अगण्य तद्० (गु०) गिनने योग्य नहीं, असार, तुच्छ ।
अगति तद्० (स्त्री०) नरक, अकालमृत्यु, (गु०) गतिहीन, आश्रयहीन ।—क गति तद्० (स्त्री०) अनन्य उपाय होकर स्वीकार करना ।
अगत्या तद्० (क्रि० वि०) आगे से, भविष्य, अकस्मात, विवश हो । [सुहृद ।
अगद तद्० (पु०) दवाई (गु०) निरोग, अरोग्य,
अगनू (स्त्री०) या अगनेत तद् (पु०) अग्निकोण ।
अगम तद्० (गु०) अगम्य, दुर्गम, अपहुँच, औघट, विकट, गहरा, अथाह । [(पु०) नेता, अगुआ ।
अगमानी दे० (स्त्री०) अगवानी, आगे जाकर स्वागत,
अगम्य तद्० (वि०) न जाने योग्य, अनघट, गहन, कठिन ।—ा तद्० (स्त्री०) न गमन करने योग्य ।
अगर तद्० (पु०) सुगन्धित काष्ठ विशेष ।—बत्ती (स्त्री०) धूपबत्ती ।—वाला दे० (पु०) वैश्य वर्ण के अन्तर्गत एक शाखा, जो अपने को अगरोहा ग्राम (यह दिल्ली के पश्चिम की ओर है) के रहने वाले होने के कारण अगरवाले कहते हैं ।
अगरई तद्० (वि०) सांवलापन लिये सदली रङ्ग ।
अगलबगल दे० (क्रि० वि०) इधर उधर, दोनों ओर, आसपास ।
अगला तद्० (गु०) पहला, पूर्व, प्रधान ।
अगवा तद्० (पु०) दूत, "अगवानी"।—ई (स्त्री०) अगवानी, अभ्यर्थना ।
अगवाड़ा तद्० (पु०) आगा, अग्र भाग ।
अगवानी दे० (स्त्री०) देखो अगमानी ।
अगवार दे० (पु०) अन्न का वह भाग जो हलवाहे आदि खेती का काम करने वालों को दिया जाता है ।
अगधाही तद्० (स्त्री०) अग्निदाह ।
अगस्ति तद्० } (पु०) नक्षत्र विशेष, तारा । यह तारा
अगस्त्य तद्० } भाद्र मास के अन्त में उदय होता है ।
१ अगस्त्य तारा के उदय होते ही जल निर्मल हो जाता है । इसके उदय होने पर ही राजागण विजय यात्रा करते थे और पितृतर्पण आदि आरम्भ किया जाता है । २ अगस्त्य एक ऋषि का नाम है जो मित्रावरुण के पुत्र थे । इनका पहला नाम मान है । पीछे से विन्ध्य पर्वत का गर्व खर्व करने के कारण इनका नाम अगस्त्य पड़ा । इनका दूसरा नाम कुम्भज भी है । इनका नामोल्लेख वेद में भी पाया जाता है और इनके नाम की अगस्त्यसंहिता भी प्रचलित है ।—कूट तद्० (पु०) दक्षिण के एक पर्वत का नाम जिससे ताम्रपर्णी नदी निकली है ।
अगहण या अगहन तद्० } (पु०) मार्गशीर्ष मास ।
अग्रहायण तद्० } यह मास बड़ा पवित्र माना गया है । हिन्दुओं का यह नयाँ मास है । प्रायः लोग इसे मगसिर भी कहते हैं ।
अगहनिया, या अगहनी (वि०) अगहन में होने वाला धान । [की ओर, सामने ।
अगहुड़ तद्० (गु०) पहिले पहल, अगला, आगे
अगाऊ तद्० (गु०) अगाड़ी, आगे, पहले ।
अगाड़ी तद्० (क्रि० वि०) आगे, सामने । (स्त्री०) घोड़े के बाँधने की आगे की रस्सी ।—मारना मोहरा मारना, वैरी की अगली सेना को हटाना ।
अगाध तद्० (गु०) अथाह, जिसकी थाह न मिले, बहुत गहरा ।
अगासी तद्० (स्त्री०) पगड़ी, बरान्दा ।
अगिनि तद्० (पु०) आग, आँच, वह्नि ।
अगुण तद्० (गु०) निर्गुण, जिसमें गुण न हो, गुणहीन ।
अगुवा तद्० (पु०) एक पक्षी या कीड़ा विशेष, देवता विशेष, मार्ग दिखाने वाला । [हिमालय ।
अगेन्द्र तद्० (पु०) पहाड़ों का राजा, सुमेरु,
अगोचर तद्० (पु०) इन्द्रियों की गति के अदृश्य ।
अगोरना तद्० (क्रि०) रखना, चौकी देना ।
अगोरा तद्० (पु०) देखने वाला, रखवाला ।
अगौनी तद्० (स्त्री०) भेंट के लिये आगे जाना ।

अग्नि तत्० (पु०) आग, वन्हि, चित्रक वृक्ष।—देव ... (पु०) वैदिक देवता, कृत्तिकानक्षत्र।
... तत्० (पु०) पूर्व-दक्षिण का कोना।—
... तत्० (स्त्री०) मुर्दा जलाना।
... तत्० (पु०) अग्नि जलाने के लिये गड्ढा।
—कुमार तत्० (पु०) क्षुधावर्द्धक औषध विशेष।
—क्रीड़ा तत्० (स्त्री०) आतिशबाजी।—होत्री तत्० (पु०) जो अग्नि में नित्य नियमित रूप से हवन करता हो।—ज्वाला—तत्० (स्त्री०) अग्निशिखा, आँवले का पेड़।—परीक्षा तत्० (स्त्री०) अग्नि को हाथ पर रख कर मूठ सच की परीक्षा लेना। यह विधान साक्षियों से शपथ लेने का स्मृतियों में निरूपण किया गया है।—पुराण तत्० (पु०) अठारह पुराणों में से एक।—बाण तत्० (पु०) आग्नेयास्त्र अर्थात् जिसे चलाने से आग बरसे।—मान्द्य तत्० (पु०) अजीर्ण, भूख न लगना या भूख की कमी।—यन्त्र तत्० (पु०) बन्दूक, तोप, तमंचा।—ष्टोम तत्० (पु०) यज्ञ विशेष, अग्नि-सम्बन्धी वेदोक्त अग्निस्तव।—ष्वात्त तत्० (पु०) पितृ विशेष मारीच पुत्र, देवताओं के पूर्वज।—अग्न्याधान तत्० (पु०) श्रुति विहित अग्निसंस्कार, अग्निरक्षण, अग्निहोत्र।
—उत्पात तत्० (पु०) आग लगना, आकाश से अग्नि बरसना, धूमकेतु दर्शन, उल्कापात।

अगयारी दे० (स्त्री०) अग्नि से धूप देना।

अग्र तत्० (पु०) आगे, पहले, किसी काम का मुखिया अगुआ, आदि, प्रथम, मुख्य, ऊपर का भाग, सिर, शिखर, एक राजा का नाम। (गु०) श्रेष्ठ; उत्तम, अधिक।—गण्य तत्० (वि०) नेता, अगुवा, प्रधान।—गामी तत्० (पु०) आगे चलने वाला अगुवा, उत्साही।—सर तत्० (पु०) अगुवा, सन्देसी, दूत।—ज तत्० (पु०) श्रेष्ठ, बड़ा भाई।
—जन्मा तत्० (पु०) ब्राह्मण, पुरोहित, जेठा भाई देवताओं में सर्व प्रथम उत्पन्न अर्थात् ब्रह्मा।
—पश्चात् तत्० (अ०) आगे पीछे, आगा पीछा।—णी तत्० (पु०) आगे चलने वाला, समाज का मुखिया, अगुआ।—भाग तत्० (पु०) पहला भाग, पहला हिस्सा।

अग्रहण तत्० (पु०) अगहन मास [देखो अगहन]।

अग्रहार तत्० (पु०) देवस्व महादान, देवता को अर्पित सम्पत्ति, धान्यपूर्ण खेत।

अग्राह्य तत्० (गु०) ग्रहण करने योग्य नहीं, तुच्छ, निस्सार, शिवनिर्माल्य।

अग्रिम तत्० (वि०) अगाऊ पेशगी।

अघ तत्० (पु०) पाप, अधर्म, अपराध, दोष।—असुर-अघासुर तत्० (पु०) कंस के सेनापति का नाम है, बकासुर इनका ज्येष्ठ भाई था और पूतना इनकी जेठी बहिन थी, भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जी को मारने के लिये इसी को कंस ने वृन्दावन में भेजा था।—नाशक तत्० (गु० पाप दूर करने वाले प्रयोग, मन्त्र जप करना आदि।

अघखानि तद्० (गु०) पापों का समुदाय, पापी, अधर्मी। [दोनों, अयोग्य।

अघटित तत्० (गु०) घटना रहित, असम्भव, अन-

अघमर्षण तत्० (गु०) सब पापों का नाशक, पाप हटाने वाले वैदिक मन्त्र, एक प्रयोग जो सन्ध्योपासन में किया जाता है।

अघाई तद्० (स्त्री०) छकाई, अफराई, पेटभराव, तृप्ति।

अघाना तद्० (क्रि०) पेट भरना, अफराना, तृप्त होना, छकना, भरपूर होना।

अघोर तत्० (पु०) महादेव का दूसरा नाम, सब से भयङ्कर, उपासना विशेष।—पन्थ (पु०) शैव सम्प्रदाय की एक शाखा का नाम है। इस सम्प्रदाय के लोग अपने को अघोरी या अघोर पन्थी कहते हैं। ये बहुत ही मलीन होते हैं घृणा का ये नाम तक नहीं जानते हैं, इनके लिये कोई भी पदार्थ अभक्ष्य है ही नहीं। सर्वतोभाव से घृणा को जीत लेना ही इनके धर्म का मूल है।

अघोरी तत्० (पु०) अघोर पन्थी।

अङ्क तत्० (पु०) आँक, चिन्ह, संकेत, दाग, रेखा, संख्या, लेख, अक्षर, लिखावट। यथा "मेटत कठिन कुअङ्क भाल के।"—तुलसी। एक से नौ तक की संख्या। नाटक का एक परिच्छेद, अंश। भाग्य, देह, बार, दफा, स्थान, अपराध, पर्वत, पाप, दुःख, ऐब, समीप।—मुँदा दे० (क्रि०) देना या लगाना, गले लगाना।—गणित तत्० (पु०)

संख्याओं का हिसाब।—विद्या तत्० (स्त्री०) अङ्कगणित।

अङ्कना तत्० (क्रि०) लिखना, छापना, संकेत करना, चिन्ह करना, मोल भाव करना।

अङ्काई तद् (स्त्री०) आँक, कूत, अटकल।

अङ्कवार तद्०(पु०) कौंर, कोन, गोदी।

अङ्काना तद्० (क्रि०) परखना, आँचना, मोल ठहराना।

अङ्काव तद्० (पु०) निरख, भाव, मोल ठहराना

अङ्कित तद्० (पु०) चिन्ह किया हुआ, मुद्रित, चिन्हित, परखा हुआ, जाँच किया हुआ, छापा हुआ।

अङ्कुर तत्० (पु०) अँकुरा, फुनगी, नया उगा हुआ तृण आदि, बीज से उत्पन्न कोंपल, गोद्दी।

अङ्कुरित तत्० (पु०) अङ्कुरयुक्त, जिसमें अङ्कुर उत्पन्न हुए हों, ।—यौवन तत्० (पु०) यौवन का आरम्भ, युवा अवस्था की पहली दशा।

अङ्कुश तत्० (पु०) आँकड़ी, लोहे का एक हथियार जिससे हाथी चलाये जाते हैं। मुड़ा हुआ कांटा। —ग्रह तत्० (पु०) आँकुश की पकड़, महावत, हस्तिपक, हाथी चलाने वाला।—धारी तत्० (पु०) हस्तिपक, पीलवान। [लेना।

अङ्कोरना तद्० (क्रि०) भूँजना, गरम करना, घूँस

अङ्किया तद्० (स्त्री०) लोहे की क़लम जिससे बरतन पर हथौड़ी के सहारे नक्काशी की जाती है, आँक।

अङ्कुआ तद्० (पु०) अँकुर या बीज से फूट कर निकली हुई नोक जिसमें से प्रथम पत्ते निकलते हैं।

अङ्ग तत् (पु०) शरीर का एक हिस्सा, अवयव, शरीर, मित्र का सम्बोधन, शास्त्र विशेष, वेदाङ्ग, जैन शास्त्र विशेष। बलि राजा का क्षेत्रज पुत्र। [इस राजा के शासित देश का भी नाम अङ्ग देश है। जन्मान्ध महर्षि दीर्घतमा से बलि राजा की पत्नी सुदेष्णा के गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी।] गङ्गा और सरयू के सङ्गम के मध्य देश को अङ्ग देश कहते हैं।—जन्मा तत्० (पु०) सन्तान, केश, काम, पसीना, मद, मोह।—राज तत्० (पु०) कर्ण का नाम है। राजा दुर्योधन ने अर्जुन की प्रतियोगिता करने के लिये कर्ण को अङ्ग देश का अधिपति बनाया था। कर्ण का पहला नाम वसुषेण था।—ग्रह तत्० (पु०) अकड़वाई, वात रोग।

अङ्गड़खङ्गड़ दे० (वि०) बचाखुचा, गिरा पड़ा, इधर उधर का टूटा फूटा।

अङ्गड़ाई तद्० (स्त्री०) जम्हाई, शरीर मरोड़ना।

अङ्गद तत्० (पु०) केयूर, बाजूबन्द, कपिराज बालि का पुत्र। [बीच की भूमि।

अङ्गन तद्० (पु०) अँगनाई, आँगन, चौक, मकान के

अङ्गना तत्० (स्त्री०) सुन्दरी, कामिनी, स्त्री, लुगाई। दे० (पु०) आँगन, सहन।

अङ्गन्यास तत्० (पु०) वैदिक या तान्त्रिक उपासनाओं में मंत्रों के द्वारा अङ्गस्पर्श करना। [कपड़ा।

अङ्गरखा तद्० (पु०) पहिनने का सिला हुआ लंबा

अङ्गराग तत्० (पु०) शरीर को सुन्दर और सुगन्धित बनाने वाला लेप, चन्दन लगाना, सुगन्धित पदार्थों से शरीर पर मैल धूरे निकालना।

अङ्गरी तद्० (स्त्री०) युद्ध के समय पहना जाने वाला परिच्छद, कवच, बख्तर।

अङ्गा दे० (पु०) अँगरखा, अँगरखी।

अङ्गाकड़ी दे० (स्त्री०) कोयलों पर सेकी हुई मोटी मोटी रोटी, बाटी, मधुकरी।

अङ्गार तद्० (पु०) जलता हुआ कोयला। – क तत्० (पु०) मंगल ग्रह।—मणि तत् (पु०) मूंगा।—मती तत्० (स्त्री०) कर्ण की स्त्री।

अङ्गारा तत्० (पु०) कोयला, जली लकड़ी।

अङ्गारी तद्० (स्त्री०) अँगीठी, गोरसी या बरोसी, आग रखने का बर्तन, दहकते हुए कोयले का छोटा टुकड़ा।

अङ्गिया तद्० (स्त्री०) चोली, काचुली, कंचुली, सीसरा कपड़ा, स्त्रियों के पहिरने का कुरता।

अङ्गिरस तत्० (पु०) एक प्राचीन ऋषि, दस प्रजापतियों में से एक, अथर्ववेद के प्रादुर्भाव कर्ता होने से यह अथर्वा भी कहे जाते हैं। बृहस्पति का नाम, छठवाँ सवत्सर का नाम, कतीरा।

अङ्गिरा तत्० (पु०) तारा, ब्रह्मा का मानसपुत्र, ये धर्मशास्त्र-प्रवर्तक ऋषियों में से हैं, इनके बनाये हुए ग्रन्थ का नाम अँगिरा-संहिता है। देव गुरु बृहस्पति इन्हींके पुत्र हैं।

अङ्गी तत्० (पु०) शरीर वाला, शरीर धारी, प्रधान, किसी समुदाय का मुखिया।

अङ्गीकार तत्० (पु०) स्वीकार, मानना, ग्रहण, लेना, प्रतिज्ञा, सम्मति।

अङ्गीकृत तत्० (त्रि०) स्वीकृत, माना हुआ, अपनाया हुआ।

अङ्गीठी तद्० (स्त्री०) आग रखने का पात्र, बोरसी।

अङ्गुल तत्० (पु०) आठ जौ के बराबर परिमाण, एक गिरह का चौथा हिस्सा।

अङ्गुली तत्० (स्त्री०) अँगुरी, हाथ का या पैर का अंग।—त्राण तत्० (पु०) अँगुलियों की रक्षा करने वाला, यह युद्ध में अस्त्र शस्त्रों से अँगुलियों की रक्षा करने के लिये बनाया जाता था, दस्ताना।

अङ्गुल्यानिर्देश तद् (पु०) कलङ्क, लाञ्छन।

अङ्गुष्ठ तत्० (पु०) अंगूठा।

अङ्गूठा तद्० (पु०) अंगुष्ठ, मोटी अँगुरी।

अङ्गूठी तद्० (स्त्री०) मुंदरी, छल्ला, अंगुलीय, अँगुलियों में पहिनने का गहना।

अङ्गूर तद्० (पु०) दाख, द्राक्षा, फल विशेष, मेवा।

अङ्गेजना दे० (क्रि०) सहना, बरदाश्त करना।

अङ्गेट (स्त्री०) अङ्गोट, डील, आकार, आकृति।

अङ्गेठी तद्० (स्त्री०) देखो अङ्गीठी।

अङ्गोछना दे० (क्रि०) शरीर को तौलिया से पोंछना।

अङ्गोछा तद्० (पु०) शरीर पोंछने का वस्त्र, अगवछा, गमछा, अँगपुछा, तौलिया।

अङ्गोरा तद्० (पु०) मच्छर, मशक, मसा, डाँस।

अङ्घ्रि तत्० (पु०) चरण, चौथा हिस्सा, वृक्षों की जड़।—प तत्० (पु०) वृक्ष।

अच् तत्० (पु०) स्वरवर्ण, संज्ञा विशेष, छिपाकर धरना।

अचक तद्० (अ०) अचानक, अचानचक, हठात्, अकस्मात्, बिना जाने बूझे।

अचका दे० (वि०) अपरिचित, अनजान।

अचकरी तत्० (स्त्री०) शरारत, छिछोरपन, अनुचित काम, धींगा धींगी, असदाचार।

अचण्ड तत्० (पु०) धीर, शान्त, सुशील, मृदु, सरल स्वभाव वाला।

अचम्भा तद्० (पु०) चमत्कार, विस्मय।—करना दे० (क्रि०) विस्मित होना, आश्चर्यित होना।

अचञ्चल तत्० (पु०) स्थिर, बिना घबड़ाया हुआ, दृढ़ मन वाला।

अचर तत्० (पु०) जड़ पदार्थ, जो चल न सकता हो, स्थावर, दृढ़। [रहता है, पल्ला,

अचरा दे० (पु०) साड़ी का वह छोर जो

अचरज तद्० (पु०) अचम्भा, आश्चर्य।

अचल, तत्० (पु०) अटल, स्थिर, धीर, जो चलायमान न हो, जैनियों का पहला

अचला तत्० (स्त्री०) पृथिवी, धरती,—सप्तमी तत्० (स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी, के लिये शुभ कर्म सम्पन्न होते हैं, सप्तमी को अचला कहते हैं।

अचवन दे० (पु०) कुल्ला करने की क्रिया।

अचानक तद्० (अ०) अकस्मात्, हठात्, एकाएकी, बिना कारण, दैवयोग से।

अचाना, अचवाना (क्रि०) मुँह धोना, कुल्ला खाने के पीछे मुँह साफ करना,

अचानचक दे० (क्रि० वि०) अचानक।

अचार तद्० (पु०) आचार, व्यवहार, कपिस नित्य करने योग क्रिया, जो व्यवहार का सहायक हो। आम या नींबू आदि मसाले मिला कर पकाया हुआ खाद्य पदार्थ वि[illegible]

अचारज दे० (पु०) आचार्य।

अचारी दे० (वि०) आचार रखने वाला, (पु०) आ[illegible] विचार से रहने वाला ब्राह्मण, (स्त्री०) अच[illegible] अचार विशेष। [निर्दुंघ, चिन्ताहीन

अचिन्त तद्० (पु०) जिसको चिन्ता न हो, बेसु[illegible]

अचिर तत्० (अ०) देर नहीं, शीघ्र, तुरन्त, वेग।

अचूक तद्० (पु०) बिना चूका हुआ, ठीक।

अचेत तत्० (पु०) अज्ञान, मूर्च्छित, इन्द्रियों के ज्ञान का नष्ट हो जाना। [मूर्खता

अचैतन्य तत्० (पु०) अज्ञानता, निर्जीव, जड़पदार्थ,

अचैन तत्० (पु०) चैन न रहना, दुःखी, व्याकुल, बेचैन।

अचौना (पु०) आचमन करने का प्रयोग करना।

अच्छत तत्० (वि०) जीते रहना, वर्तमान रहना, स्थिति, होना रहना, जैसे—
"तुम्हें अच्छत को वरत हमारा।"—रामायण।

अच्छर तत्०
अच्छरा तद्० } (पु०) वर्ण, अक्षर।

तद्० (वि०) भला, उत्तम, सुन्दर, मनोहर,
ा, (स्वीकारार्थक अव्यय)।
दे० (स्त्री०) सुघराई, सुघरता, उत्तमता।
तद्० (पु०) जो कि कभी च्युत न हो, जिसका
भी नाश न हो, स्थिर, अमर, सर्वदा वर्तमान
ने वाला, ठहरा हुआ, अचल, विष्णु या एक
म।—नन्द (पु०) ईश्वर।
दे० (वि०) जीवित रहना, उपस्थित रहना।
ना पछताना तद्० (वि०) पश्चात्ताप करना, किये
ए बुरे कर्मों से दुःखी होना। [असहाय।
तद्० (पु०) जिसके छत्र नहीं, राज्य से च्युत,
तद्० (स्त्री०) इसका बहुवचन, अछरन होता
यथा.—
मोहहि सब अछरन के रूप"— पद्मावत।
वागना, स्वर्ग की वेश्या, अप्सरा का यह
पभ्रंश है।
टी दे० (स्त्री०) वर्णमाला।
ानी तद्० (स्त्री०) वत्ती, वानी, प्रसूता स्त्री के
पीहर में खाने की औषध।
दे० (वि०) अस्पृष्ट, नया, कोरा, न छुआ हुआ।
ता तद्० (वि०) नहीं छुआ हुआ, जूठा नहीं,
नवीन, पवित्र।
तद्० (पु०) बहुत अधिक, यथा—
"धरे रूप गुन को गरब फिरै अछेह उछाह"
—बिहारी सतसई।
ाम (वि०) स्थिर, शान्त, गम्भीर, क्षोभहीन।
तद्० (पु०) आज, वर्तमान दिन।
तद्० (पु०) नहीं उत्पन्न होने वाला, विष्णु से
उत्पन्न, ब्रह्मा, शिव। [सूर्यवंशीय अयोध्या का
ाजा, जिसके पुत्र महाराज दशरथ थे। अज राजा
वीर थे, गन्धर्वराज के पुत्र से सम्मोहनास्त्र
नको मिला था।] बकरा, मेष राशि।—ा तद्०
(स्त्री०) बकरी, माया, अविद्या, प्रकृति।
गर तद्० (पु०) बकरे को निगलने वाला बहुत
मोटा साँप, आलसी, निकम्मा।
जगव तद्० (पु०) शिव का धनुष। [वस्तु।
जगध तद्० (पु०) अद्भुत, आश्चर्य, बिना देखी सुनी
जगुन तद्० (पु०) अद्भुत, आश्चर्य, बिना देखी सुनी
जगैब तद् (पु०) अदृष्ट स्थान।

अजदहा (पु०) अजगर, बड़ा मोटा साँप।
अजनबी (वि०) अपरिचित, अज्ञान, बिना जान पहिचान का।
अजपा (वि०) जिसका उच्चारण न हो (पु०) गड़रिया।
अजब (वि०) विलक्षण, अनूठा, अनोखा।
अजवाइन (स्त्री०) एक मसाले का नाम।
अजमोद (पु०) दवाई का नाम।
अजय तद्० (पु०) जिसकी जीत नहीं हुई हो, जो अजेय हो, जिसे कोई नहीं जीत सके। वीरभूमि ज़िले की एक नदी का नाम।
अजर तद्० (वि०) जवान, यौवन, युवा, अमर, जो कभी बूढ़ा न हो।
अजस (पु०) बदनामी, अपकीर्ति।
अजसी तद्० (पु०) निन्दित, यशरहित।
अजहूँ तद्० (अ०) आज भी, अभी, अब तो, अब तक आजतक। [प्रतिक्षण।
अजस्र तद्० (अ०) निरन्तर, नित्य, सर्वदा,
अजहत्स्वार्था तद्० (स्त्री०) अलङ्कार शास्त्र का एक लक्षण जिसमें अपने बोधक अर्थ का न त्याग कर लक्षण भिन्न अर्थ बतलाता है। [-माया, दुर्गा।
अजा तद्० (स्त्री०) जिसका जन्म न हो। बकरी,
अजाचक (पु०) जिसको माँगने की जरूरत न हो (वि०) अयाची, सम्पन्न। [भरापूरा।
अजाची (पु०) सम्पन्न मनुष्य, न माँगने वाला (वि०)
अजाड़ तद्० (पु०) सनिज्ञा टाट।
अजातशत्रु तद्० (पु०) १—राजा युधिष्ठिर का दूसरा नाम। युधिष्ठिर किसी को अपना शत्रु नहीं समझते थे, इसी कारण उनका यह नाम पड़ा। २—इस नाम के एक राजा का दर्शन उपनिषदों में भी आता है। यह राजा महाज्ञानी था। महर्षि गार्ग्य इसके यहाँ गये और राजा से कुछ विषयों में उपदेश लेकर लौट आये थे। ३—मगध के एक प्राचीन राजा का भी नाम अजातशत्रु था। उसके पिता का नाम बिम्बिसार था। ५८५ खीष्टाब्द के पूर्व यह मगध का राज करता था। तद्० (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो।
अजाति तद्० (पु०) बिना जाति का, निकाला हुआ जातिच्युत।

अड़तीस तद्० (पु०) सख्या विशेष, आठ और तीस।
अड़ना तद्० (क्रि०) थमना, रुकना, द्विविधा करना, निश्चय से च्युत होना।
अड़बंग तद्० (पु०) ऊँचा नीचा, दुर्गम।
अड़बंगा तद्० (पु०) बाँका, तिर्छा, असमान, बेढंगा।
अड़बड़ तद्० (पु०) मलाप, निरर्थक बकना, गाली देना, ऊँचा नीचा।
अडबन्ध तद्० (पु०) कटिबन्ध, कोपीन।
अड़बल तद्० (पु०) अड़जाने वाला, रुकने वाला, अड़ुआ, हठी, मगरा।
अडसठ (पु०) साठ और आठ, ६८।
अड़ाड़ा तद्० (पु०) ढोंग।
अड़ाना (क्रि०) टिकाना, रोकना, उलझाना, अटकाना
अड़ानी तद्० (स्त्री०) छाता, रोकने वाला, बड़ा पंखा।
अड़ियल दे० (वि०) रुकजाने वाला, अड़कर चलने वाला, सुस्त।
अड़िया दे० (स्त्री०) अड़े के आकार की एक लकड़ी, जिसे टेक कर फ़कीर बैठते हैं। लंबे आकार की कच्चे सूत की पिण्डी, फेंटी।
अड़ी (वि०) आमदी, हठी।
अड़ूसा तद्० (पु०) एक वृक्ष का नाम, रूसा, वसा, खाँसी में इसका प्रयोग होता है।
अड़ेयाना तद्० (क्रि०) आश्रय देना, रक्षा करना, अरक्षित करना।
अड़ैच तद्० (स्त्री०) वैरभाव, शत्रुता, द्वेष।
अडोल तद्० (पु०) नहीं डोलने वाला, स्थिर, अचल, अटल, दृढ़, नहीं हिलने वाला। [प्रतिवेश।
अड़ोस पड़ोस तद्० (पु०) पड़ोस, पास पास,
अड्डा तद्० (पु०) ठहरने की जगह, सेना रहने का स्थान, छावनी।
अढ़तिया दे० (पु०) आढ़त करने वाला।
अढ़ाई तद्० (पु०) सख्या विशेष दो और आधा।—गुना दो और आधे से अधिक, एक एक हिस्से में और अढ़ाई हिस्सा बढ़ना।
। (स्त्री०) काठ या पत्थर का बर्तन, चूना या गारा ढोने का काठ या लोहे का बर्तन।
(अ०) टेक कर, सहारा लेकर।
तद्० (स्त्री०) ढाई सेर की तौल, भार पसेरा।

अणद दे० (पु०) आनन्द।
अणि तद्० (स्त्री०) अग्रभाग कीलक, पहिये के का काँटा, नोकीदार, नोंक, याद, धार, सीमा।
अणिमा तद्० (पु०) या अनिमा तद्० (स्त्री०) (हिन्दी में स्त्री०) आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति।
अणीय (वि०) अतिसूक्ष्म, बारीक।
अणु तद्० (पु०) कणिका, अत्यन्त सूक्ष्म, धान्य विशेष, सूक्ष्म वस्तु, सब से छोटा हिस्सा। छप्पर के छेद से घर में आये हुए सूर्य के प्रकाश में उड़ते हुए जो छोटे कण दील पड़ते हैं उनमें से एक कण के साठवें भाग को अणु या परमाणु कहते हैं। यह नैयायिकों का प्रधान तत्व है। नैयायिक इसी के द्वारा सांसारिक पदार्थों की उत्पत्ति मानते हैं। यह शक्तिमान है। मिलने और बिछुड़ने की शक्ति इसमें वर्तमान है।—मान (पु०) छोटा सा।—वाद (पु०) सिद्धान्त विशेष अणुवाद में जीव और आत्मा अणु माना है। यह श्रीवल्लभाचार्य का सिद्धान्त है।—वादी (पु०) अणुवाद के मानने वाला।—वीक्षण (पु०) छोटे छोटे पदार्थों को देखने के लिये काँच का बना हुआ एक प्रकार का यन्त्र, दूरबीन।
अण्टा तद्० (पु०) गद, गोली, एक प्रकार का खेल।—गुड़गुड़ (वि०) बेलाग चित्त पड़ा हुआ।—घर (पु०) गोली खेलने का कमरा।—चित्त तद्० (पु०) उत्तान पड़ा हुआ, बेलाग गिरा हुआ।—बन्धु (पु०) जुआ खेलने की कौड़ी।
अण्टिया (स्त्री०) घास का पूरा या पूला, छोटी गठरी।
अण्टी (स्त्री०) धोती का वह भाग जो कमर पर मोड़ कर बाँध जाता है अंगुलियों के बीच का भाग।
अण्टलाना तद्० (क्रि०) बाँकैनी करना, ऐंठना, बाँकापन दिखाना, अभिमान करना, अंगों को स्वयं मरोड़ना।
अण्ड तद्० (पु०) एरण्ड वृक्ष, अण्डा, बीज, पेशीकोष, अण्डकोष, कस्तूरी।—ा (पु०) पक्षी आदि के उत्पन्न होने का स्थान, गोलाकार।—कटाह तद्० (पु०) ब्रह्माण्ड, विश्व, संसार, गोल।—कोष तद्० (पु०) मुष्क, फोते, खाड़।—ज तद्० (पु०) अण्डे से पैदा होने वाले जन्तु। यथा—पक्षी, साँप मछली-गोह गिरगिट बिसखपरा।

अयडबयड,(स्त्री०) प्रलाप, बे सिर की बात, बकबक।
अयडस (स्त्री०) असुविधा, कठिनाई, संकट।
अयडी तद्० (स्त्री०) आसाम का बना हुआ रेशमी वस्त्र विशेष, ज्यादेतर यह ओढ़ने के काम में आता है। आसाम की अयडी बहुत अच्छी होती है।
अयडुआ तद्० (पु०) बिना बधिया किया हुआ जानवर —बैल (पु०) साँड़, आलसी मनुष्य।
अयडैल तद्० (वि०) अयडावाली।
अतः तद्० (अ०) इससे, इस कारण, इस हेतु, इसलिये।
अतएव तद्० (अ०) इसी कारण, इसी हेतु, इसीलिये।
अतथ्य (वि०) असत्य, झूंठ।
अतद्गुण (पु०) अलंकार विशेष।
अतनु तद्० (पु०) या अतन तद्० (पु०) देह रहित, बिना शरीर का कामदेव। [कामदेव का शरीर महादेव के क्रोध से भस्म हो गया था, इन्द्र ने इसे महादेव पर विजय पाने की आशा से भेजा था, परन्तु अभाग्यवश वह महादेव के क्रोधाग्नि से दग्ध हो गया। पुनः पार्वती की प्रार्थना से महादेव ने इसको उज्जीवित किया। अतएव कामदेव का नाम अतनु है।]
अतन्द्रित तद्० (गु०) आलस्य रहित, कर्मठ, चपल, चालाक, जाग्रत।
अतर दे० (पु०) पुष्पसार, इत्र।—दान (पु०) अतर रखने का पात्र।
अतरंग (पु०) वह क्रिया जिससे लंगर ज़मीन से उखाड़ कर रखा जाता है।
अतरसों (पु०) बीते और आने वाले परसों का पूर्व अगला दिन, वर्तमान दिन से बीता हुआ या आने वाला तीसरा दिन।
अतर्कित तद्० (वि०) बिना विचारा, आकस्मिक।
अतर्क्य तद्० (वि०) अचिन्त्य। अनिर्वचनीय।
अतल तद्० (गु०) बिना तल का, बिना पेंदे का, वर्तुल गोल, सात पातालों में पहिला पाताल।—स्पर्श तद्० (गु०) अगाध, अतिगंभीर, जिसके तल का स्पर्श न हो सके।
अतवार दे० (तद्०) रविवार।
अतसी तद्० (स्त्री०) तीसी, अलसी, पाट, सन।
अताई तद्० (पु०) गवैया, यन्त्री बजाने वाला, बजवैया।
अति तद्० (गु०) जिन शब्दों के पहले अति शब्द आता है वे शब्द अपने से अधिक अर्थ के वाचक हो जाते हैं। अधिक, बहुत, विस्तार, अत्यन्त, बड़ा, बीता हुआ, हो चुका, उलाँघना, पार।—उक्ति तद्० (स्त्री०) अत्युक्ति, असम्भव प्रशंसा।—काय तद्० (पु०) बड़ा शरीर, भयानक शरीर वाला। रावण का एक पुत्र, इसने तपस्या के द्वारा ब्रह्मा को सन्तुष्ट करके एक अभेद्य कवच पाया था, जिससे यह अजेय हो उठा था। लक्ष्मण के साथ युद्ध में यह मारा गया।—काल (पु०) अबेर, विलम्ब, देरी।—क्रम (पु०) बाँघना, पार होना, अपरा, अपमान करना, अन्यथाचरण, क्रमभङ्ग करना।—क्रान्त (पु०) पार गया हुआ।—कृच्छ्र तद्० (पु०) व्रत विशेष, पाप दूर करने के लिये यह व्रत किया जाता है, यह व्रत प्राजापत्य व्रत का भेद है, उससे इसमें विशेषता यही है कि जितने दिन भोजन करने का नियम है उतने दिन अतिकृच्छ्र में दाहिने हाथ में जितना अन्न आवे उतना ही आहार करना चाहिये।
अतिथि तद्० (पु०) साधु, यात्री, पाहुन, जिनके आने की तिथि नियत न हो। श्रीरामचन्द्र जी के पौत्र एवं कुश के पुत्र का नाम।—भक्त (पु०) अतिथियों की सेवा करने वाला, अतिथिपूजक।
अतिपन्था तद्० (पु०) बड़ा मार्ग, राजपथ, सड़क।
अतिपर तद्० (पु०) अति शत्रु, महावैरी, उदासीन, असम्बन्ध।
अतिपराक्रम तद्० (पु०) बड़ा प्रताप, बड़ा तेज।
अतिपात तद्० (पु०) अन्याय, उत्पात, उपद्रव।
अतिपातक तद्० (पु०) भारी पाप, नव प्रकार के पापों में सब से बड़े तीन पाप। माता, कन्या और पुत्र की स्त्री का संसर्ग करना, पुरुषों के लिये अतिपातक है। ऐसे ही पुत्र, पिता तथा श्वसुर का संसर्ग करना, स्त्रियों के लिये अतिपातक है।
अतिपान तद्० (पु) बहुत पीना, मत्तता, पीने का व्यसन। [बहुत ही पास, दूर नहीं।
अतिपार्श्व तद्० (पु०) सन्निकट, समीप, अति निकट,
अतिप्रसंग तद्० (पु०) अत्यन्त मेल, पुनरुक्ति, अति विस्तार, व्यभिचार, क्रम का नाश करना।
अतिबरवै (पु०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रथम तृतीय चरणों में १२ और दूसरे तथा चौथे चरणों

अजान तद्० (पु०) अज्ञान, मूर्ख, निर्बोध, अविवेकी।
अजामिल तद्० (पु०) एक ब्राह्मण का नाम, यह ब्राह्मण प्रथम अवस्था में सच्चरित्र था, परन्तु पीछे से कुसंग में पड़ कर आचार भ्रष्ट हुआ, दासी के गर्भ से उत्पन्न इसके दस पुत्र थे, जिनमें से एक का नाम नारायण था, मरने के समय अजामिल ने अपने नारायण पुत्र को पुकारा, इसी कारण विष्णुदूत इसको विष्णुलोक में ले गये।—श्रीमद्भागवत।
अजायब (पु०) अद्भुत वस्तु, विचित्र पदार्थ।—खाना,—घर (पु०) अद्भुत वस्तु का समाहालय।
अजिऔरा (पु०) आजी या पितामही का घर।
अजित तद्० (पु०) नहीं जीता हुआ, ऐसा वली जो सब को जीत ले।
अजिन तद्० (पु०) मृगछाला, हरिण की खाल जिस पर ब्रह्मचारी, सन्यासी आदि धार्मिक व्यक्ति बैठ कर उपासना करते हैं।
अजिर तद्० (पु०) आँगन, अँगना, चौक, चबूतरा।
अजों तद्० (अ०) आजतक, अबतक, अब ही तक।
अजीगर्त तद्० (पु०) एक ब्राह्मण जो शुन शेफ का पिता था।
अजीरन तद्० (पु०) देखो अजीर्ण। [अजीर्ण होना।
अजीर्ण तद्० (वि०) पुराना नहीं, अपच, नहीं पचना,
अजीव तद्० (पु०) बिना जीव का, अचेतन, मरा हुआ, मृत, जड़ पदार्थ। [उत्पाती कार्य।
अजुगत तद्० (स्त्री०) अन्धेर, उत्पात, अत्याचार,
अजों } अजौं } (वि०) आज तक, अभीतक, अबतक।
अज्ञ तद्० (पु०) [अ+ज्ञ] नहीं जानने वाला, मूर्ख, बे समझ, बेवूक, अनजान, अनसमझ, अनसमझ, अबोध।—ता, तद्० (स्त्री०) मूर्खता, जड़ता, नादानी।
अज्ञात तद्० (पु०) [अ+ज्ञात] नहीं जाना हुआ, अनजाना।—नामा तद्० (वि०) जिनके नाम का पता न हो।—वास तद्० (पु०) छिपकर रहना।—यौवना (स्त्री०) मुग्धा नायिका का एक भेद।
अज्ञान तद्० (पु०) [अ+ज्ञान] मूर्ख, निर्बुद्धि, अज्ञ, बुद्धिहीन—त (अ०) अज्ञान से, बेसमझी से, अनजाने।—नी तद्० (वि०) ज्ञानशून्य, मूर्ख, जड़।

अज्ञेय तद्० (पु०) नहीं जानने योग्य, योग्य, दुर्ज्ञेय। [किनार
अञ्चल तद्० (पु०) अँचला, कपड़े क
अञ्जन तद्० (पु०) सुरमा, काजल, अ का द्रव्य, अञ्जना, गोभना, काजल ग गिरि। अञ्जना या अञ्जनी तद्० (की हथिनी, वानरी विशेष, हनुमान नाम, अञ्जनी नारी वानरी के गर्भ से मान की उत्पत्ति हुई थी।—गिरि त पर्वत विशेष,।—नन्दन तद्० (पु०)
अञर पञर दे० (स्त्री०) देह का बन्द, श
अञ्जलि, अञ्जली तद्० (स्त्री०) हाथ स सम्पुट, अंजुरि, दोनों हाथों को ऐसा ज बीच में अवकाश रहे। परिमाण वि सुशीलता, प्रणाम, नमस्कार, विनय बन्धन (पु०) हाथ जोड़ना, करसम नम्रता प्रदर्शित करने की मुद्रा।
अञ्जसा तद्० (अ०) शीघ्रता, शीघ्रता से
अञ्जही दे० (स्त्री०) अन्न की मण्डी। (बाज़ी।
अञ्जुरी दे० (स्त्री०) अंजलि।
अञ्जीर तद्० (पु०) अञ्जीर नामक वृक्ष क
अञ्जोर दे० (पु०) उजेला, प्रकाश, रोशनी
अञ्झा तद् (पु०) अनध्याय, छुट्टी, अवक
अटक तद्० (स्त्री०) रोक, बाधा, रुकावट कना। भारतवर्ष की पश्चिमोत्तर सी एक नगर का नाम, सिन्धु नदी का दू कहते हैं कि सिन्धु नदी के प्रबल वे उसका अटक नाम पड़ा, क्योंकि वहाँ अटक जाते हैं।—न दे० (स्त्री०) अनुम —ना दे० (क्रि०) रोकना, छेकना, किसी कार्य में विघ्न डालना।—ाव रुकावट, प्रतिबन्ध।—लपच्चू बिना ठौर ठिकाने, अनिश्चित।
अटकर या अटकल दे० (स्त्री०) अन्दाज़
अटका तद्० (पु०) मिट्टी का पात्र विशेष, जी का प्रसाद।
अटक्राम तद्० (पु०) बिा

अटखेल तद्० (गु०) बहुत खेलने वाला, खिलाड़ी, चंचल ।—ी (स्त्री०) चपलता, खिलाड़पन, ढिठाई, चंचलत्व ।
अटट तद्० (गु०) मोटा, पोढ़ा, दृढ़ ।
अटन तद्० (पु०) फिरना, चलना, घूमना, भ्रमण, [यात्रा ।
अटना तद्० (क्रि०) समाना, मर जाना, घूमना, फिरना ।
अटपट तद्० (पु०) अनियमित रेखा, बाँका, टर्रा । —ी (स्त्री०) तिरछी, ऐंढी, टेढ़ी, बेढंगी, कठिन ।
अटम्बर दे० (पु०) आडम्बर, खानदान, परिवार ।
अटम तद्० (पु०) राशि, ढेर, अटाला ।
अटल तद्० (पु०) दृढ़, पोढ़ा, अचल, नहीं टलने वाला। गुसाइयों के एक अखाड़े का नाम ।
अटवी तद्० (स्त्री०) वन, जंगल, गहन, कानन, भयानक जंगल, हिंस्र जन्तुओं का वास स्थान ।
अटा तद्० (स्त्री०) कोठा, ऊपर की कोठरी, सब से ऊपर का कमरा ।
अटाटूट दे० (वि०) नितान्त, बिलकुल ।
अटारी (स्त्री०) देखो अटा ।
अटाल दे० (पु०) बुर्ज, धरहरा ।
अटाला तद्० (पु०) खटला, ढेर, सामग्री, सामान, [असबाब ।
अटिया तद्० (स्त्री०) छोटी मड़ैया, झोपड़ी, छोटा मकान, पर्णकुटी ।
अटूट तद्० (गु०) बहुत पोढ़ा, नहीं टूटने वाला, नहीं घटने वाला, सम्पूर्ण, पूरा, कुल ।
अटेक तद्० (गु०) टेक नहीं, निराश्रय, उद्देश्य-हीन, भ्रष्ट प्रतिज्ञ ।
अटेर तद्० (गु०) एक ग्राम का नाम ।—न दे० (पु०) फेंटी, परेती ।—नी दे० (क्रि०) फेंटा बनाना, गोलाकार बनाना, मोड़ना । [बनाना ।
अटेरना (क्रि०) मोड़ना, अटेरन से सूत की फेंटी
अटोल तद्० (पु०) अविकल, असभ्य, अनाड़ी, गाली, बर्बर ।
अट्टहास तद्० (पु०) बहुत हँसना, खिलखिला कर हँसना, ठट्ठा मारना ।
अट्टालिका तद्० (स्त्री०) अट्टाल, अटारी, राजगृह, प्रासाद, धवलागार, बड़ा मकान, हर्म्य ।
अट्ठा (पु०) तास का एक पत्ता ।

अट्ठाईस (स्त्री०) बीस और आठ, २८ ।
अट्ठानबे (पु०) नब्बे और आठ, ९८ ।
अट्ठावन (पु०) पचास और आठ, ५८ ।
अठकोशल (पु०) पचायत, सलाह, गोष्ठी ।
अठन्नी दे० (स्त्री०) धेली, आधा रुपया, आठ आने ।
अठमासा (पु०) खेत जो आठ मास तक जोता जाय ।
अठल तद्० (पु०) संसार विशेष ।
अठलाना दे० (क्रि० वि० अ०) ऐंठ दिखाना, इतराना, गर्व जनाना, ठसक दिखाना ।
अठवारा तद्० (पु०) अठवाँ दिन, सप्ताह, आठ दिन का समुदाय ।
अठपास (पु०) अठपहल, अठपहली वस्तु ।
अठमासा (वि०) आठ महीने का, आठ महीने में उत्पन्न होने वाला गर्भ ।
अठहत्तर (पु०) सत्तर और आठ, ७८ ।
अठान दे० (क्रि०) सताना, पीड़ित करना ।
अठारह (पु०) दस और आठ, १८ ।
अठासी (वि) अस्सी और आठ, ८८ ।
अठिलाना दे० (क्रि०) अठलाना ।
अठेल तद्० (गु०) जो ठेला न जाय, अविचलनीय, अपरिहार्य, जो हट न सके, यथेष्ट, प्रचुर ध्रुव, स्थिर ।
अठोठ दे० (पु०) ठाट, आडम्बर, पाखण्ड ।
अठोतरसौ (वि०) एक सौ आठ, १०८ ।
अठोतरी (स्त्री०) १०८ गुरिया की माला ।
अड़ तद् (स्त्री०) अड़ान, विरोध, हठ, मगरा, चेष्टा ।
अड्डा तद् (पु०) मण्डी, हाट बज़ार, विदेशीय या प्रान्तीय वस्तुओं के उतारने की जगह, उतार दिन, रुकावट ।—ा (पु०) रोकना, रुकावट प्रतिबन्ध ।
अड़गाड़ा (पु०) एक लकड़ी जो नटखट गौओं के गले में लटकाया जाता है जो भागते समय उनके पैर में लगती है, ठेकुर, ढेंगना ।
अड़चन (स्त्री०) रुकावट, बाधा, विघ्न, आपत्ति ।
अड़पोपो (पु०) धूर्त, हाथ देखने के बहाने लोगों को ठगने वाला ।
अड़तल तद्० (पु०) ओट शरण, हीला ।
अड़तला तद्० (पु०) शरण, आश्रय, आड़, बचाने वाला, रक्षा करने वाला । [चालीस ।
अड़तालीस तद्० (पु०) संख्या विशेष, आठ और

अड़तीस तद्० (पु०) संख्या विशेष, आठ और तीस।
अड़ना तद्० (क्रि०) थमना, रुकना, हिचिषा करना, निश्चय से च्युत होना।
अड़बंग तद्० (पु०) ऊँचा नीचा, दुर्गम।
अड़बंगा तद्० (पु०) बाँका, तिर्छा, असमान, बेढंगा।
अड़बड़ तद्० (पु०) प्रलाप, निरर्थक बकना, गाली देना, ऊँचा नीचा।
अड़बन्ध तद्० (पु०) कटिबन्ध, कोपीन।
अड़बल तद्० (पु०) अड़जाने वाला, रुकने वाला, अड़ुवा, हठी, भगरा।
अड़सठ (पु०) साठ और आठ, ६८।
अड़ाड़ा तद्० (पु०) ढाँग।
अड़ाना (क्रि०) टिकाना, रोकना, उलझाना, ढरकाना,
अड़ानी तद्० (स्त्री०) ढाल, रोकने वाला, बड़ा पंखा।
अड़ियल दे० (वि०) रुकजाने वाला, अड़कर चलने वाला, सुस्त।
अड़िया दे० (स्त्री०) चड़े के आकार की एक लकड़ी, जिसे टेक कर फ़क़ीर बैठते हैं। लंबे आकार की कच्चे सूत की पिण्डी, फेंटी।
अड़ी (वि०) आमदी, हठी।
अड़ूसा तद्० (पु०) एक वृक्ष का नाम, रूसा, वसा, खाँसी में इसका प्रयोग होता है।
अड़ेयाना तद्० (क्रि०) आश्रय देना, रक्षा करना, अवलम्बित करना।
अड़ैच तद्० (स्त्री०) वैरभाव, शत्रुता, द्वेष।
अडोल तद्० (पु०) नहीं डोलने वाला, स्थिर, अचल, अटल, दृढ़, नहीं हिलने वाला।
अड़ोस पड़ोस तद्० (पु०) पड़ोस, पास पास, [प्रतिवेश।
अड्डा तद्० (पु०) ठहरने की जगह, सेना रहने का स्थान, छावनी।
अढ़तिया दे० (पु०) आढ़त करने वाला।
अढ़ाई तद्० (पु०) संख्या विशेष, दो और आधा।— गुना दो और आधे से अधिक, एक एक हिस्से में और अढ़ाई हिस्सा बढ़ना।
अढ़िया (स्त्री०) काठ या पत्थर का बर्तन, चूना या गड़ा ढोने का काठ या लोहे का बर्तन।
अढ़ुकि तद्० (अ०) उढ़क कर, सहारा लेकर।
अढ़ैया तद्० (स्त्री०) ढाई सेर की तौल, माप बटखरा।

अणद् दे० (पु०) आनन्द।
अणि तद्० (स्त्री०) अग्राम कीलक, पहिये के अग्रभाग का काँटा, सीसीदार, नोंक, बाढ़, धार, सीमा।
अणिमा तत्० (पु०) या अनिमा तद्० (स्त्री०) (हिन्दी में स्त्री०) आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति।
अणीय (वि०) अतिसूक्ष्म, बारीक।
अणु तद्० (पु०) कणिका, अत्यन्त सूक्ष्म, धान्य विशेष, सूक्ष्म वस्तु, सब से छोटा हिस्सा। छप्पर के छेद से घर में आये हुए सूर्य के प्रकाश में उड़ते हुए जो छोटे कण दीख पड़ते हैं उनमें से एक कण के साठवें भाग को अणु या परमाणु कहते हैं। यह नैयायिकों का प्रधान तत्त्व है। नैयायिक इसी के द्वारा सांसारिक पदार्थों की उत्पत्ति मानते हैं। यह शक्तिमान है। मिलने और बिछुड़ने की शक्ति इसमें वर्तमान है।—मात्र (पु०) छोटा सा।—वाद (पु०) सिद्धान्त विशेष अणुवाद में जीव और आत्मा अणु माना है। यह श्रीवल्लभाचार्य का सिद्धान्त है।—वादी (पु०) अणुवाद को मानने वाला।—वीक्षण (पु०) छोटे छोटे पदार्थों को देखने के लिये काँच का बना हुआ एक प्रकार का यन्त्र, दूरबीन।
अण्टा तद्० (पु०) गेंद, गोली, एक प्रकार का खेल। —गुड़गुड़ (वि०) बेलाग चित्त पड़ा हुआ।—घर (पु०) गोली खेलने का कमरा।—चित्त तद्० (पु०) उत्तान पड़ा हुआ, बेलाग गिरा हुआ।—वन्धु (पु०) जुआ खेलने की कौड़ी।
अण्टिया (स्त्री०) घास का पूरा या पूला, छोटी गठरी।
अण्टी (स्त्री०) धोती का वह भाग जो कमर पर लौट कर बाँध जाता है अंगुलियों के बीच का भाग।
अण्टलाना तद्० (क्रि०) बाँकैती करना, ऐंठना, बाँकापन दिखाना, अभिमान करना, अंगों को स्वय मरोड़ना।
अण्ड तद्० (पु०) एरड वृक्ष, अण्डा, बीज, पेशीकोष, अण्डकोष, कस्तूरी।—ा (पु०) पक्षी आदि के उत्पन्न होने का स्थान, गोलाकार।—कटाह तद्० (पु०) जगत्, विश्व, संसार, गोल।—कोष तद्० (पु०) मुष्क, थैली, खाड।—ज तद्० (पु०) अण्डे से पैदा होने वाले जन्तु। यथा—पक्षी, साँप मछली...

अघडचघड, (स्त्री०) प्रलाप, बे सिर की बात, बकबक।
अघडस (स्त्री०) असुविधा, कठिनाई, संकट।
अघडी तद्० (स्त्री०) आसाम का बना हुआ रेशमी वस्त्र विशेष, ज्यादेतर यह ओढ़ने के काम में आता है। आसाम की अघडी बहुत अच्छी होती है।
अगडुआ तद्० (पु०) बिना बधिया किया हुआ जानवर —चैल (पु०) साँड, आलसी मनुष्य।
अघडैल तद्० (वि०) अघडावाली।
अतः तद्० (अ०) इससे, इस कारण, इस हेतु, इसलिये।
अतएव तद्० (अ०) इसी कारण, इसी हेतु, इसीलिये।
अतथ्य (वि०) असत्य, झूठ।
अतद्गुण (पु०) अलंकार विशेष।
अतनु तद्० (पु०) या अतन तद्० (पु०) देह रहित, बिना शरीर का कामदेव। [कामदेव का शरीर महादेव के क्रोध से भस्म हो गया था, इन्द्र ने इसे महादेव पर विजय पाने की आशा से भेजा था, परन्तु सभाग्यवश वह महादेव के क्रोधाग्नि से दग्ध हो गया। पुनः पार्वती की प्रार्थना से महादेव ने इसको उज्जीवित किया। अतएव कामदेव का नाम अतनु है।]
अतन्द्रित तद्० (गु०) आलस्य रहित, कर्मठ, चपल, चालाक, जाग्रत।
अतर दे० (पु०) पुष्पसार, इत्र।—दान (पु०) अतर रखने का पात्र।
अतरंग (पु०) वह क्रिया जिससे लंगर ज़मीन से उखाड़ कर रखा जाता है।
अतरसों (पु०) बीते और आने वाले परसों का पूर्व अगला दिन, वर्तमान दिन से बीता हुआ या आने वाला तीसरा दिन।
अतर्कित तद्० (वि०) बिना विचारा, आकस्मिक।
अतर्क्य तद्० (वि०) अचिन्त्य। अनिर्वचनीय।
अतल तद्० (गु०) बिना तल का, बिना पेंदे का, वर्तुल गोल, सात पातालों में पहिला पाताल।—स्पर्श तद्० (गु०) अगाध, अतिगभीर, जिसके तल का स्पर्श न हो सके।
अतवार दे० (तद्०) रविवार।
अतसी तद्० (स्त्री०) तीसी, अलसी, पाट, सन।
अताई तद्० (पु०) गवैया, जन्त्री बजाने वाला, बजवैया।
अति तद्० (पु०) जिन शब्दों के पहले अति शब्द आता है वे शब्द अपने से अधिक अर्थ के वाचक हो जाते हैं। अधिक, बहुत, विस्तार, अत्यन्त, बड़ा, बीता हुआ, हो चुका, उल्लंघना, पार।—उक्ति तद्० (स्त्री०) अत्युक्ति, असम्भव प्रशंसा।—काय तद्० (पु०) बड़ा शरीर, भयानक शरीर वाला। रावण का एक पुत्र, इसने तपस्या के द्वारा ब्रह्मा को सन्तुष्ट करके एक अभेद्य कवच पाया था, जिससे यह अजेय हो गया था। लक्ष्मण के साथ युद्ध में यह मारा गया।—काल (पु०) अबेर, विलम्ब, देरी।—क्रम (पु०) लाँघना, पार होना, अपरा, अपमान करना, अन्यथाचरण, क्रमभङ्ग करना।—क्रान्त (पु०) पार गया हुआ।—कृच्छ्र तद्० (पु०) व्रत विशेष, पाप दूर करने के लिये यह व्रत किया जाता है, यह व्रत प्राजापत्य व्रत का भेद है, इससे इसमें विशेषता यही है कि जितने दिन भोजन करने का नियम है उतने दिन अतिकृच्छ्र में दाहिने हाथ में जितना अन्न आवे उतना ही आहार करना चाहिये।
अतिथि तद्० (पु०) साधु, यात्री, पाहुन, जिनके आने की तिथि नियत न हो। श्रीरामचन्द्र जी के पौत्र एवं कुश के पुत्र का नाम।—भक्त (पु०) अतिथियों की सेवा करने वाला, अतिथिपूजक।
अतिपन्था तद्० (पु०) बड़ा मार्ग, राजपथ, सड़क।
अतिपर तद्० (पु०) अति शत्रु, महावैरी, उदासीन, असम्बन्ध।
अतिपराक्रम तद्० (पु०) बड़ा प्रताप, बड़ा तेज।
अतिपात तद्० (पु०) अन्याय, उत्पात, उपद्रव।
अतिपातक तद्० (पु०) भारी पाप, नव प्रकार के पापों में सब से बड़े तीन पाप। माता, कन्या और पुत्र की स्त्री का संसर्ग करना, पुरुषों के लिये अतिपातक है। ऐसे ही पुत्र, पिता तथा श्वसुर का संसर्ग करना, स्त्रियों के लिये अतिपातक है।
अतिपान तद्० (पु) बहुत पीना, मत्तता, पीने का व्यसन। [बहुत ही पास, दूर नहीं।
अतिपार्श्व तद् (पु०) सन्निकट, समीप, अति निकट,
अतिप्रसंग तद्० (पु०) अत्यन्त मेल, पुनरुक्ति, अति विस्तार, व्यभिचार, क्रम का नाश करना।
अतिपरवै (पु०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रथम तृतीय चरणों में १२ और दूसरे तथा चौथे चरणों

में ७ मात्राएं होती हैं। साथ ही इसके विषम पदों के आरम्भ में जगण नहीं आता और अन्त का वर्ण लघु होता है।

अतिबल तत्० (वि०) अत्यन्त बली, प्रबल, प्रचण्ड।

अतिबला तत्० (स्त्री०) वृक्षविशेष पीतबला, खरीयारी का पेड़।

अतियोग तत्० (पु०) एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ नियत परिमाण से अत्यधिक मिलाव।

अतिरथी तत्० [अति+रथिन्] (पु०) अतिशय योद्धा, रथकुशल, महायोद्धा, बहुत मनुष्यों को एक साथ लड़ाने वाला।

अतिरिक्त तत्० [अति+रिच्+क्त] (पु०) भिन्न, छोड़ कर, परिमाण से अधिक।

अतिरेक तत्० [अति+रिच्+घञ्] (पु०) आधिक्य, बची, अतिशय, बहुत ही। [एक महाव्याधि।

अतिरोग तत्० [अति+रुज्+घञ्] (पु०) क्षयरोग,

अतिवाहिक तत्० (पु०) पाताल-निवासी, लिङ्गशरीर।

अतिविषा तत्० (स्त्री०) अतीस।

अतिवेल तत्० (वि०) बेहद, असीम। [दोष।

अतिव्याप्ति तत्० (स्त्री०) न्याय शास्त्र का एक लक्षण

अतिशय तत्० [अति+शी+अच्] (पु०) अत्यन्त, विस्तार, यश, बाहुल्य।—पान (पु०) अत्यन्त मद्यपान।—ी श्रेष्ठ, अधिक, अत्यन्त।—उक्ति (स्त्री०) अतिशयोक्ति, अत्यन्त चतुराई, सम्मानित करने के लिये असम्भव प्रशंसा। काव्य का अलङ्कार विशेष। [घात।

अतिसन्धान तत्० (पु०) अतिक्रमण, धोखा, विश्वास-

अतिसार या अतीसार तत्० [अति—सृ+घञ्] संग्रहणी रोग, जठर की व्याधि, पेट की पीड़ा।

अतिहसित तत्० (पु०) हास्य का एक भेद विशेष, इस प्रकार के हास्य में हँसने वाला, हँसते समय ताली बजाता है, बीच बीच में अयोग्य वचन बोलता जाता है। हँसते हँसते उसका शरीर काँपने लगता है और आँखों से आँसू निकलने लगते हैं।

अतीन्द्रिय तत्० (वि०) इन्द्रियों द्वारा जानने के अयोग्य, अप्रत्यक्ष, अगोचर।

अतीत तत्० [अति+ई+क्त] (पु०) भूत, गत, अतिक्रान्त, बीता हुआ, संगीत शास्त्रानुसार परिमाण विशेष।—काल तत्० (पु०) बीता हुआ समय। [बहुत अधिक।

अतीव तत्० [अति+इव] अतिशय, अत्यन्त, यथेष्ट,

अतीस तत्० (पु०) औषधि विशेष।

अतुराना दे० (क्रि०) अकुलाना, घबड़ाना।

अतुल तत्० [अ+तुल] (पु०) अतुल्य, अनुपम, असदृश, तुलना रहित—नीय तत्० (वि०)। —ित (वि०) अनुपम, असमाननीय, उपमा-रहित, सर्वश्रेष्ठ, अपार, अपरमित।

अतूप दे० (वि०) विचित्र, अपूर्व।

अतेज तत्० (वि०) क्षीणता, हतश्री, हतप्रभ।

अतोल तत्० या अतौल, अप्रमाण, इयत्ता रहित, तौलने का नहीं।

अत्ता, अत्तिका तत्० (स्त्री०) माता, ज्येष्ठा बहिन, बड़ी मौसी, सास। इसका प्रयोग पुराने नाटकों में आता है। नाटकों में जेठी बहिन के सम्बोधन में अत्तिका आता है।

अत्तार दे० (पु०) यूनानी दवा बेचने वाला।

अत्यन्त तत्० [अति+अन्त] (पु०) अतीव, अतिशय अत्यधिक।—कोपन (पु०) चण्ड, अतिशय क्रोधी।—गामी (वि०) शीघ्रगामी, अधिक चलने वाला।—वासी बहुत रहने वाला, नैष्ठिक ब्रह्मचारी।—अभाव (पु०) अत्यन्ताभाव, न्यायमत से सब प्रकार से अभाव, त्रिकाल में जिसकी स्थिति न हो, अभाव पदार्थ।

अत्यय तत्० [अति+ई+अच्] (पु०) विनाश, अतिक्रम, मृत्यु दोष, राजाज्ञा का उल्लंघन, अपराध।

अत्यर्थ तत्० (पु०) विस्तार, अतिशय, अधिक।

अत्यष्टि तत्० (पु०) छन्दोविशेष, वह छन्द जिसमें सत्रह वर्ण और चार पाद होते हैं।

अत्याचार तत्० (पु०) दुर्व्यवहार, अन्याय, दौरात्म्य निषिद्धाचरण।—ी तत्० (पु०) दुष्कर्मी, दुरात्मा, कुकर्मी। [आवश्यक।

अत्यावश्यक तत्० (पु०) अति प्रयोजनीय, बहुत

अत्युक्ति तत्० (स्त्री०) असम्भव कथन, आरोपित कथन, काव्य का अलङ्कार विशेष।

अत्युक्था तत्० (स्त्री०) छन्दोविशेष, चार पद और बारह अक्षर वाला।

अत्युत्कट तद्० (गु०) अतिशय कठिन, अति तीव्र।
अत्युत्कण्ठा तद्० (स्त्री०) अतिशय मनस्ताप, अत्यन्त चिन्ता।
अत्युत्कृष्ट तद्० (गु०) अत्युत्तम, बहुत अच्छा।
अत्युत्तम तद्० (गु०) अति रमणीय, अतिशय उत्कृष्ट बहुत अच्छा। [निश्चय करना, पारचात्य।
अत्युत्तर तद्० (पु०) सिद्धान्त, मीमांसा निर्धारण,
अत्र तद्० (अ०) यहाँ, यहाँ, इस ठौर।—त्य (अ०) यहाँ का, इसी स्थान का, इस ठौर का।
अत्रप तद्० (गु०) निर्लज्ज, लज्जाहीन बेशर्म बेहया।
अत्रभवान् तद्० (पु०) पूज्य, श्लाघ्य, माननीय। नाटकों में इस शब्द का प्राय व्यवहार होता है। [वाला।
अत्रस्थ तद्० (पु०) इसी स्थान का वासी, यहीं रहने
अत्रि तद्० (पु०) सप्तर्षियों में से एक ऋषि का नाम यह ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, कर्दम प्रजापति की कन्या अनसूया इन्हें ब्याही थी। इनके पुत्रों का नाम महर्षि दुर्वासा, दत्तात्रय और चन्द्र है। मनु संहिता में लिखा है, कि मनु के दस प्रजापतिपुत्रों में से एक अत्रि भी थे। —जात तद्० (पु०) चन्द्रदिग्गज, नेत्रज, नेत्रप्रसूत, नेत्रभू, निशाकर, सुधांशु, चन्द्रमा।
अथ तद्० (अ०) अनन्तर, मङ्गल आरम्भार्थ, प्रश्न, अधिकार, संशय, अनन्तर समुच्चय तदनन्तर, तदुपरि, पश्चात्।—च वाक्य योजनार्थ अव्यय शब्द, और।—वा, पक्षान्तर, या, वा, प्रकारान्तर, किम्वा। [पूर्व की जाती है।
अथऊ दे० (पु०) जैनियों की व्यालू जो सूर्यास्त से
अथक तद्० (वि०) अथकित, अश्रान्त अक्लान्त।
अथयउ तद्० (गु०) डूब गया, डूब गया, अस्त हो गया अस्तमित। रामायण में इस शब्द का प्रयोग किया गया है, संस्कृत के अस्तमित शब्द से यह निकला है।
अथरा दे० (पु०) मिट्टी की नाद जिसमें रंगरेज कपड़ा रंगते हैं और जुलाहे सूत भिगोते हैं। (स्त्री०) दही जमाने का मिट्टी का कूंडा।
अथर्व तद्० (पु०) (अथर्वन्), अतिवृद्ध, चतुर्थवेद। यह वेद ब्रह्मा के उत्तर वाले मुख से निकला है। इसमें नौ शाखा पाँच कल्प हैं और बीस काण्डों में समाप्त होता है। इसका प्रधान ब्राह्मण गोपथ है। इससे सम्बन्ध रखने वाली उपनिषदों की संख्या कोई २८ और कोई ३१ बताते हैं। इसमें अधिकता से अभिचार प्रयोग पाये जाते हैं।—ण (पु०) शिव, महादेव।—णी (पु०) अथर्व वेदज्ञ ब्राह्मण, पुरोहित।—शिख (पु०) उपनिषद भेद।—शिरोमणि (पु०) उपनिषद भेद।—शिर (पु०) अथर्ववेद की सातवीं उपनिषद—ा तद्० (पु०) ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जिसे ब्रह्मा ने ब्रह्मविद्या सिखलायी थी, और इसी ने सर्व प्रथम अग्नि को प्रकट कर आर्य जाति में यज्ञ क्रिया का प्रचार किया।
अथल दे० (पु०) वह भूमि जो लगान लेकर दूसरे को जोतने बोने को दी जाती है।
अथवना (क्रि०) अस्त होना डूबना। [अव्यय है।
अथवा तद्० (अव्य०) या, वा, किंवा, यह विच्छेदक
अथाई तद्० (स्त्री०) मित्रों के एकट्ठे होने का स्थान सभा, चौपार, बैठक।
अथान या अथाना, तद्० (पु०) अचार, खटाई, (गु०) बिना स्थान, बेठिकाने। [गहरा, बेथाह।
अथाह तद्० (गु०) गहिरा, गम्भीर, अगाध, बहुत
अथोर दे० (वि०) बहुत, थोड़ा नहीं, पूरा।
अथकचा तद्० (पु०) बेठन, लपेटन, वेष्टन, लपेटने का वस्त्र। [हुआ, कच्चा।
अदग्ध तद्० (गु०) अप्रज्वलित, अपक्व, नहीं जला
अदण्डनीय तद्० (गु०) या अदण्ड्य तद्० (गु०) दण्डके अनुपयुक्त अदण्ड है, जिसको दण्ड न दिया जा सके, जो दण्डित न हो सके, स्वधर्मनिष्ठ, सदाचारी, महात्मा।
अदत्त तद्० (गु०) अदान, नहीं दिया, असमर्पित, अप्रतिपादित।—ा तद्० (स्त्री०) अविवाहिता, कुमारी, अनूढ़ा।
अदद दे० (पु०) गिनती, संख्या का चिन्ह, संख्या।
अदन तद्० (पु०) भक्षण, भोजन, जेवनार, अहार, खाना।—ीय तद्० (गु०) भक्षणीय, खाद्य वस्तु, भोज, भोजन योग्य।
अदना दे० (वि०) तुच्छ, सामान्य, नीच।
अदब दे० (पु०) शिष्टाचार, बड़ों के प्रति सम्मान।
अदबकार दे० (क्रि० वि०) हठ करके, अवश्य।

अदभ्र तत्० (गु०) यथेष्ट, प्रचुर, अधिक, पूरा, ढेर का, सम्पूर्ण (पु०) स्लेच्छोत्पादक पुरुष। [अनोखा।
अद्भुत तत्० (गु०) विलक्षण, आश्चर्यजनक, विचित्र,
अदमपैरवी दे० (स्त्री०) मुकदमे में आवश्यक कार्रवाई का न करना। [न होना।
अदमसबूत दे० (पु०) प्रमाण का अभाव, सबूत का
अदमहाज़िरी दे० (स्त्री०) गैरहाज़िरी अनुपस्थिति।
अदम्य तत्० (गु०) दमन करने के अयोग्य, दुर्दान्त, जो नहीं दबाया जा सके।
अदरक दे० (पु०) आर्द्रक, हरी सोंठ।
अदरसा दे० (पु०) अनरसा, मिठाई विशेष।
अदरा (पु०) आर्द्रा नक्षत्र।
अदराना (क्रि०) फूलना, इतराना, नटखटी करना।
अदर्शन तत्० (गु०) छिपा, ढका, लुका, गुप्त।—नीय तत्० अदृश्य, नहीं देखने योग्य।
अदल दे० (पु०) न्याय, इंसाफ़।
अदलबदल दे० (अ०) परिवर्तन।
अदवायन दे० (स्त्री०) खाट की रस्सी।
अदहन तत्० (पु०) भात बनाने के लिये गर्म पानी।
अदा दे० (वि०) चुकता (स्त्री०) हावभाव, नखरा।
अदाता तद्० (पु०) अदानी, सूम, कृपण, कीचड़, दान-शक्ति हीन। [निष्ठुरता।
अदाया तत्० (स्त्री०) दयाशून्यता, कठोरता, निर्दयता,
अदालत दे० (स्त्री०) न्यायालय, कचेहरी।
अदावत दे० (स्त्री०) बैर, विरोध, शत्रुता।
अदिति तत्० (स्त्री०) देवमाता, देवताओं की माँ, महर्षि कश्यप की स्त्री, दक्ष प्रजापति की कन्या। वामनावतार में भगवान् विष्णु इन्हीं के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। १२ देवताओं की ये माता थीं। नरकासुर के मारने पर भगवान् कृष्ण जी को जो दो कुण्डल मिले थे, वे कुण्डल इन्हीं को समर्पित हुए थे।—नन्दन तत्० (पु०) देवता, सुर। [खोटा ग्रह दशा।
अदिन तत्० (पु०) अभागा दिन, कुदिन, बुरी दशा,
अदिष्ट तत्० (पु०) भाग्य, प्रारब्ध, विपत्ति।
अदीठ दे० (वि०) गुप्त, अप्रत्यक्ष, अनोखा।
अदीह दे० (वि०) सूक्ष्म, महीन, छोटा।
अदूर तत्० (क्रि० वि०) पास, समीप।—दर्शी (वि०) भासमन्द, अविचारी।

अदृश्य तत्० (गु०) अगोचर, अलक्षित, गुप्त, छिपा हुआ, जो न देख पड़े।
अदृष्ट तत्० (गु०) अगोचर, अलख, अनदेखा, भाग्य, दुर्भाग्य, प्राकृतिक, प्रकृत से उत्पन्न, अग्नि, जलादि, प्रातभय।—पुरुष तत्० (पु०) किसी कार्य में स्वयं कूद पड़ने वाला, बिना बनाये बनने वाला।—पूर्व तत्० (गु०) पहले का नहीं देखा, बिना जाना हुआ। नैयायिक मत से धर्माधर्म की संज्ञा नैयायिक और वैशेषिक के मत से अदृष्ट आत्मा का धर्म है। सांख्य और पातञ्जल अदृष्ट को बुद्धिधर्म कहते हैं—फल तत्० (पु०) पूर्वकर्मों के फल, सुख दुःख।—वाद तत्० (पु०) एक प्रकार का सिद्धान्त जिसमें परलोकादि अदृष्ट बातों पर बिना तर्क वितर्क किये शास्त्रानुसार विश्वास किया जाता है।
अदेय तत्० (गु०) दान के योग्य नहीं, असमर्पणीय, किसी का न्यास चाहे उसे स्वामी ने रखा हो या स्वयं मँगवाया हो, पुत्र, स्त्री और सन्तान के रहते अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति आदि अदेय वस्तु हैं।—दान तत्० (पु०) अयोग्य को दान, अपात्र को दान।
अदोखिल दे० (वि०) निष्कलङ्क, निर्दोष।
अदौरी तद्० (स्त्री०) बड़ी, मथौड़ी, उर्द की दाल की पिठी की सुखाई हुई बरी, इहँडौरी।
अद्धी तद्० (स्त्री०) आधा, बराबर भाग, आधी दमड़ी, महीन सूती कपड़ा, तनजेब।
अद्भुत तत्० (वि०) अनोखा, विचित्र।—तोपमा तत्० (स्त्री०) उपमा अलङ्कार विशेष।
अद्मर तत्० (गु०) पेटार्थी, लोभी, लालची, पेटू।
अद्य तत्० (अ०) आज, अब, अब भी, वर्तमान दिन।—तन तत्० (गु०) अद्यजात, आज का उत्पन्न, काल विशेष।—पि तत्० (अ०) अब पर्यन्त, आज तक।—वधि तत्० (अ०) अद्यारम्भ, आज से लेकर। (समय परिच्छेदार्थक अव्यय)।
अद्रक तद्० (स्त्री०) आर्द्रक आदी, कच्ची सोंठ।
अद्रि तत्० (पु०) पर्वत, पहाड़, अचल, वृक्ष, शैल, सूर्य, परिमाण विशेष।—कीला तत्० (स्त्री०) भूमि, पृथिवी।—ज तत्० (पु०) शिलाजीत, गेरू, पर्वतजात वस्तु।—जा तत्० (स्त्री०) अमितगमा, पार्वती सैंहली, पृथ्, पहाड़ पर उत्पन्न होने वाली

वता।—तनया तद्० (स्त्री०) पार्वती, दुर्गा, अद्रिनन्दिनी।—पति तद्० (पु०) पर्वतराज, हिमालय पर्वत।—वह्नि तद्० (स्त्री०) पर्वत से उत्पन्न अग्नि। —भिद् तद्० (पु०) पर्वत भेदक वज्र, इन्द्र। —राज तद्० (पु०) हिमालय पर्वत प्रधान पर्वत। —शृङ्ग तद्० (पु०) पर्वत के ऊपर का भाग, पर्वत शिखर। [द्वितीय रहित।

अद्वितीय तद्० (पु०) अनुपम, अतुल्य, एक ही, अतुल,

अद्वैत तद्० (पु०) द्वैतरहित, एक, भेद रहित, जिसके समान दूसरा नहीं, शङ्कराचार्य का मत जिसमें उन्होंने जीव और ईश्वर को एक माना है, जगत् को मिथ्या सिद्ध किया है।—वाद तद्० (पु०) एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें ब्रह्ममय जगत् माना जाता है।—वादी तद्० (पु०) जो केवल एक ही ईश्वर पदार्थ मानते हैं। एकेश्वरवादी, अद्वय वादी बौद्ध विशेष।

अध तद्० (अ०) नीचा, तल, औंधा, आधा।—स् तद्० (अ०) नीचे, निम्न, तल, पाताल।—कृत तद्० (पु०) नीचे किया हुआ, अधक्षेपण।— पात तद्० (पु०) नीचे पतन, ध्वंस, नष्ट, नरकपात, सौभाग्य सम्पति से वञ्चित होना।—प्रस्तरण तद्० (पु०) कुशासन, तृणशय्या।—शिरा तद्० (पु०) अधोमुख, सूर्यवंशीय त्रिशंकु राजा। त्रिशंकु शब्द में विस्तार से देखो।—क्षिप्त तद्० (पु०) अधस्त्यक्त, निन्दित, ययाति राजा, त्रिशंकु।

अधकचा दे० (पु०) अधपका।

अधकपार दे० (पु०) पहाड़ी हरीभरी और उपजाऊ भूमि। [पीड़ा, रोग विशेष, सूर्यावर्त।

अधकपाली तद्० (पु०) अधासीसा, आधे सिर की

अधखिला दे० (वि०) आधाखिला हुआ।

अधगो तद्० (स्त्री०) नीचे की इन्द्रियाँ, गुदा आदि।

अधन तद्० (पु०) कंगाल, दरिद्र, धन हीन, दीन।

अधपई दे० (स्त्री०) आध पाव, दो छँटाक।

अधन्ना दे० (पु०) दो पैसे का एक सिक्का।

अधवर दे० (पु०) आधी दूर, बीच में, मध्य में।

अधबुध दे० (वि०) अर्द्ध शिक्षित।

अधम तद्० (पु०) नीच, निकृष्ट, अपकृष्ट निन्दित। (पु०) जार, उपपति, भेद।—भृतक (पु०) छोटा भृत्य, नीच भृत्य, पहरे वाला, मोटिया, कुली। —ऋण तद्० (अधमर्ण) ऋणी, धर्ता, खतुक, देनदार।—ा तद्० (स्त्री०) स्वीया आदि नायिकाओं में से एक नायिका।—अङ्ग तद्० (पु०) पद, चरण, निकृष्ट अवयव।—ाधम तद्० (पु०) अति नीच, अति निकृष्ट, नीचातिनीच।

अधमता तद्० (स्त्री०) दुष्टता, नीचता।

अधमरा दे० (वि०) मृतप्राय, अर्द्धमृत। [अधमता।

अधमोई तद्० (स्त्री०) पापिष्ठता, नीचता, दुष्टता,

अधमुआ (वि०) दे० अधमरा।

अधर तद्० (पु०) नीचे का ओंठ मध्य, शून्य, मुख का अवयव विशेष, अस्पष्ट, नीच, अव स्तल, कारागार, योनि।—बुद्धि तद्० (वि०) अबूझ, ना समझ। —मधु (पु०) अधरामृत, अधरासव, अधररस। —ामृत तद्० (पु०) होंठों का मिठास, अधर रस।—ा तद्० (स्त्री०) अधोदिक, नीचा अधीर। —ीकृत तद्० (क्रि०) अपवादित, पराहत, तिरस्कृत निन्दित।—ीभूत (पु०) निरस्कृत, अपरीकृत।

अधर्म तद्० [अ+धर्म] (पु०) पाप, अन्धेर, अन्याय, अनीति, धर्म नहीं, विधर्म, धर्म विरोधी। [अधर्म की उत्पत्ति के विषय में पौराणिक कथा यह है कि ब्रह्मा के पृष्ठ देश से इसकी उत्पत्ति हुई है, इसके *वाम भाग से अलक्ष्मी (दरिद्रता) उत्पन्न हुई जो* अधर्म से ब्याही गई।]—ात्मा तद्० (पु०) पापिष्ठ, अन्यायी।—ाचारी तद्० (पु०) नीच आचारवाला।—िष्ठ तद्० (पु०) अति दुराचारी। —ी तद्० (पु०) पापी, दुराचारी, दोषी।

अधवन दे० (पु०) आधा, अर्द्ध, बराबर का हिस्सा।

अधवाइ दे० (स्त्री०) आध थान, अधाई, आधे घर के लोग।

अधसेरा दे० (पु०) आधासेर = छटाक।

अधाधुन्ध दे० (क्रि० वि०) अन्धाधुन्ध।

अधान तद्० (पु०) तेज आदि।

अधार तद्० (पु०) (आधार) आश्रय अवलम्ब, आहार, सहारा, कलेवा, खाना। [अन्यायी।

अधार्मिक तद्० [अ+धर्म+इक] (पु०) धर्महीन,

अधि तद्० (अ०) आधिक्य बोधक, प्रधान्य बाधक, अधिक, ऊपरीभाग, ईश्वर, उपसर्ग, सामने, वश में।

अधिक तत्० (गु०) अतिरिक्त, बहुत, विस्तार, बहुत देर, विशेष ।—तर तत्० (गु०) दूसरे की अपेक्षा अधिक ।—ता तत्० (स्त्री०) आधिक्य, अतिरिक्तता, बहुतायत, बढ़ती ।—न्तु तत्० (अ०) और, दूसरा, अपर, विशेषतः ।—ाधिक तत्० (गु०) बढ़ती से बढ़ती ।—ाङ्ग तत्० (गु०) बीस अँगुलियों से अधिक अँगुली वाला, या और किसी अधिक अवयव से युक्त।

अधिकरण तत्० (पु०) आधार, आश्रय पात्र, अधिकार करण, आधिपत्य, सातवाँ कारक ।

अधिकाई तद्० (स्त्री०) बहुतायत, अधिकता, बढ़ती, आधिक्य, सरसाई ।

अधिकाना तद्० (क्रि०) बढ़ाना, उभारना ।

अधिकार तत्० [अधि+कृ+घञ्] स्वामित्व, प्रभुत्व, स्वत्व, बपौती ।—स्थ तत्० (गु०) वश में रहने वाला, ज़मींदारी में बसने वाला ।—ी तत्० (पु०) प्रभु, स्वामी, अधिपति, अधिकार-विशिष्ट, स्वत्ववान्, पुजारी, पण्डा, स्थान या मठ धीशों के उत्तराधिकारी ।

अधिकृत तत्० (पु०) देखवैया, औहदार, लगाया गया, नियोजित, कार्य में लगा हुआ, आय व्यय देखने वाला, अध्यक्ष।

अधिक्रम तत्० (पु०) चढ़ाव, चढ़ाई, आरोहण ।

अधिगत तत्० [अधि+गम्+क्त] अवगत, ज्ञात, प्राप्त, पठित, जानकार, ऊपर गये हुए, स्वर्गीय, मुक्त ।

अधिज्य तत्० (गु०) धनुष पर ज्या चढ़ाये हुए, धनुर्गुण नियोजित, धनुष चढ़ाये हुए, युद्धार्थी, वीर ।

अधित्यका तत्० (स्त्री०) पर्वत के ऊपर का स्थान, अथवा भूमि, समस्थल, टीला, तराई, कोह, देवल खँड ।

अधिदेव या अधिदेवता तत्० (पु०) इष्टदेव, अधिष्ठात देवता ।

अधिदैवत तत्० (पु०) मुख्य देवता, सूर्य मण्डलस्थ, चिन्ता करने योग्य पुरुष, महाविद्या, दैवयज्ञ ।

अधिप तत्० (पु०) राजा, प्रभु, स्वामी ।

अधिपति तत्० (पु०) (देखो अधिप) ।

अधिमांस तत्० (पु०) आँख में का फोड़ा । [शुक्लमास।

अधिमास तत्० (पु०) लौंद, मलमास, दो अमावस्या

अधियाना तद्० (क्रि०) आधा करना, बराबर हिस्सा करना ।

अधियारी दे० (स्त्री०) आधे का अधिकारी, आधे का [स्वामी ।

अधिरथ तत्० (पु०) सारथि, रथ हाँकने वाला, कर्ण का पिता ।

अधिराज तत्० (पु०) नरपति, महाराज ।

अधिवास तत्० (पु०) शुभ की पहली क्रिया, वासस्थान, निवास, निलयता, सुगन्धि द्रव्य, प्रतिवासी ।

अधिवेदन तत्० (पु०) संस्कार विशेष, विवाह ।

अधिवेशन तत्० (पु०) बैठक, विचारार्थ किसी स्थान पर जमाव, सभा का अधिवेशन ।

अधिष्ठाता तत्० [अधि+स्था+त] रक्षक, पालने वाला, अध्यक्ष, प्रधान । (स्त्री०)—अधिष्ठात्री तत्० अधिदेवता, स्थितिकारिणी ।

अधिष्ठान तत्० [अधि+स्था+अनट्] (पु०) ठाँव वाला व्यवहार चक्र, प्रभाव चक्र, अध्यासन, अवस्थान, स्थायी ।

अधिष्ठित तत्० (गु०) स्थापित, नियुक्त ।

अधीत तत्० (पु०) पढ़ा हुआ, पठित, शिक्षित ।—ि तत्० अध्ययन, पठन ।—ी तत्० अध्ययनविशिष्ट, कृताध्ययन । तत्० (पु०) छात्र, विद्यार्थी ।

अधीन तत्० (गु०) वशीभूत, आज्ञाकारी, सेवक, आश्रित, वशवर्ती ।—ता (गु०) दासत्व, पारतन्त्र्य, वशीभूत, अधीनत्व ।

अधीर तत्० (पु०) चञ्चल, कातर, अस्थिर, अपण्डित, उतावला, हड़बड़िया ।—ा तत्० (स्त्री०) विद्युत, चञ्चला, मध्य नायिका का एक भेद । दोहा 'वक्र-युक्ति पति सों कहे मध्या धीरा नारि । मध्या देह जराह्यो वचन अधीरा गारि ॥" चञ्चल स्त्री ।—ता तत्० (स्त्री०) घबराहट, चञ्चलाहट, उतावली, हड़बड़ी, खटपटी । [चपलता ।

अधीरज तद्० (पु०) घबराहट, अधीरता, अधैर्य,

अधीश तत्० (पु०) या अधीस तद्० स्वामी, प्रभु, मालिक, ईश्वर ।—वर तत्० मण्डलेश्वर, चक्रवर्ती ।

अधीश्वर तत्० (पु०) अधिपति, राजा स्वामी पति, अध्यक्ष ।

अधुना तत्० (अ०) इस बेर, अब, अभी, इदानीं,

सम्प्रति।—तन (गु०) इदानीन्तन, साम्प्रतिक, वर्तमान समय में रहने वाला।
अधूरा दे० (गु०) अधबना, अपूर्ण, असम्मत, असमाप्त।
अधेड़ दे० (गु०) अधवैसा, अधबूढ़ा, इसका प्रयोग प्रायः अधिकता से स्त्रियों के लिये ही होता है।
अधेन दे० (पु०) (अध्ययन का अप०) पढ़ना, अन्वेषण।
अधेला दे० (पु०) आधा पैसा, अधपाई, पैसे का आधा।
अधेली दे० (स्त्री०) आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना।
अधैर्य तत्० (पु०) उतावला, अस्थिर, व्याकुल।—वान् तत्० (वि०) आतुर, व्यग्र, उतावला।
अधो तत्० (पु०) नीचे, तले, नरक।—गामी तत्० (वि०) अवनति की ओर जाने वाला।
अधोगत तत् (स्त्री०) अवनत, नीचगामी।—ति तत्० अधोगमन, नरक प्राप्ति, अधःपतन।
अधोतर दे० (स्त्री०) वस्त्र विशेष, एक प्रकार का कपड़ा।
अधोधम तत्० (पु०) अति नीच, पाजी, नीच से नीच।
अधोमुख तत्० (पु०) अवनत मुख, नीचे मुख, औंधा मुख।
अधोवायु तत्० (पु०) अपान वायु, मलक्रिया, पद्म-पाद।
अधोभुवन तत्० (पु०) पाताल, बलि के रहने का स्थान।
अधोमस्तक तत्० (पु०) सूर्यवंश का त्रिशंकु राजा का नाम, नीचा सिर।
अधोक्षज तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, नारायण, इन्द्रियजन्य, ज्ञान को वश करने वाला, योगीराज, वासुदेव।
अध्यक्ष तत्० (पु०) स्वामी, प्रभु, मुख्य, प्रधान—ता (स्त्री०) कर्तृत्व तत्वावधारकता।
अध्ययन तत्० (पु०) पाठ, पठन, पढ़ना।
अध्यक्षर तत्० (पु०) प्रणव, ओं, ओंकार।
अध्यवसाय तत्० (पु०) सतत, उद्यम, लगातार, उपाय, यत्न, आस्था, उत्साह, कर्म, उत्तम काम करने की उत्कण्ठा। कर्मदक्षता।—ी तत्० (वि०) उत्साही, काम को उद्यमता पूर्वक करने की उत्सुकता।
अध्यशन तत्० (पु०) भोजन करने के बाद ही फिर भोजन करना, अधिक परिमाण में खाना।
अध्यात्म तत्० (गु०) आत्मज्ञान, आत्म-सम्बन्धी, आत्म-विषयक।—द्रष्टा तत्० (पु०) ऋषि, मुनि, आत्म-दर्शक।—विद्या तत्० (स्त्री०) ब्रह्मविद्या, आत्म-तत्व विषयक शास्त्र।—रति तत्० (स्त्री०) जो सर्वदा भगवान् की आराधना करते हैं।—ा तत्० (पु०) अध्यात्मनिष्ठा, पारमार्थिकता, जीवात्मा, परमात्मा।
अध्यापक तत्० (पु०) पाठक, गुरु, उपाध्याय, शिक्षक, वेद शास्त्र पढ़ाने वाला।—ी दे० (स्त्री०) पढ़ाई मुदर्रिसी।
अध्यापन तत्० (पु०) पाठ पढ़ाना, विद्यादान, सिखाना, शिक्षा देना।
अध्याय तत्० (पु०) प्रकरण, पर्व, पाठ, सर्ग, परिच्छेद, पुस्तक के भाग।
अध्यारोप तत् (पु०) मिथ्या आग्रह, मिथ्या कलङ्क, अधिक्षेप, आक्षेप।
अध्यारोहण तत्० (पु०) आरोहण, चढ़ना।
अध्यारोही तत्० (पु०) आरोहण-कर्त्ता, चढ़ने वाला।
अध्यास तत्० (पु०) आरोप, भ्रम, भूल, एक वस्तु में दूसरी वस्तु की कल्पना, निवास।—ी—ित—ित तत्० (गु०) कृत-निवास।—ीन तत्० आसनस्थ, कृताधिवेशन, उपविष्ट, बैठा हुआ।
अध्याहरण तत्० (पु०) कल्पना करना, वितर्क करना।
अध्याहार तत्० (पु०) आकांक्षा, पूर्ति के लिये शब्द ढूँढ़ना, वाक्य का अर्थ पूरा करने के लिये लुप्त शब्द का अनुसन्धान करके अर्थ सुगम करना। वाक्य पूर्ति के लिये पदयोजना करना।
अध्युषित तत्० (गु०) बसा हुआ, रहता हुआ।
अध्यूढ़ा तत्० (स्त्री०) विवाहिता स्त्री, परिणीता।
अध्येता तत्० (पु०) छात्र, शिष्य, पाठक।
अध्येषणा तत्० (स्त्री०) याचना, मांगना, आदर पूर्वक प्रार्थना, प्रश्न।
अध्रुव तत्० (गु०) अनिश्चित, क्षयभङ्गुर।
अध्व तत्० (पु०) बाट, मार्ग, पन्थ।—ग तत्० (पु०) पथिक, पन्थ, बटोही, उष्ट्र, सूर्य, खेचर, वृक्ष विशेष।—गा तत्० (स्त्री०) भागीरथी, गङ्गा, जाह्नवी।—गामी तत्० (पु०) पथिक, पन्थ,—जा तत्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष।—नीन तत्० (पु०) पथिक, पर्यटन, भ्रमणकर्त्ता।—न्य तत्० (पु०) पथिक।
अध्वर तत्० (पु०) याग, यज्ञ, वसुभेद, सावधान।
अध्वर्यु तत्० (पु०) यजुर्वेदज्ञ, होमकर्त्ता विशेष। अध्वर्यु का कार्य यह है कि यज्ञमण्डप में भूमि को नाप कर कुंड बनावे, यज्ञीय पात्र तैयार करे, जा कर समिध और पानी लावे; अग्नि प्रदीप्त करे,

और यज्ञपशु को ला कर उसको पत्ति दे और उस समय यज्ञपशु के अध्यापार्य यजुर्वेद के मन्त्र पढ़ता जाय। [तमोरहित।
अध्यान्त तद्० (पु०) ईषद् अन्धकार, सन्ध्याकाल,
अन् तद्० (अ०) निषेधार्थक अव्यय। ना, नहीं, बिना, रहित। [काल।
अनः तद्० (पु०) शकट, अन्न, जननी, जन्म, अत्यल्प
अनंश तद्० (पु०) अंशरहित, बटवारे में हिस्सा पाने का अनधिकारी, जैसे जन्मान्ध, मूक, नपुंसक, कुष्ठी, मूर्ख इत्यादि भाग पाने के अयोग्य हैं।
अनअहिवात दे० (पु०) वैधव्य, रँडापा, विधवापन, सौभाग्य-रहित। [प्रयोजन।
अनइच्छा तद्० (स्त्री०) बिना चाह, चाह नहीं, बिना
अनइच्छित तद्० (पु०) बिना चाह का, बिना प्रयोजन का, अभिष्ट नहीं।
अनइस तद्० (पु०) बुरा, निकम्मा, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।
अनक दे० (पु०) नगारा, दुष्ट, नीच, छोटा।
अनकरीब दे० (क्रि० वि०) प्रायः, लगभग।
अनकहा दे० (वि०) अकथित, जो कहा हुआ न हो।
अनख दे० (पु०) ईर्षा, डाह, कसक, अकाज, कुढ़न, क्रोध, वैर, द्वेष, द्रोह। [गाली।
अनखगार दे० (पु०) क्रोधयुक्त गाली, क्रोध की
अनखाना (क्रिया०) क्रोध करना, चिढ़ना।
अनगढ़ दे० (पु०) अनबना, अकृत्रिम, अशिक्षित, प्राकृतिक, बिना बनाया हुआ। —ा (पु०) टेढ़ा, बाँका, अनसीला। —ी दे० (स्त्री०) बेढिकाने, बेमेल, बे-सिर-पैर का, बेढङ्गा, जैसे अनगढ़ी बात।
अनगणित तद्० (गु०) बहुत, असंख्यात, अपार। —अनगाणित तद्० या अनगिनती दे० (गु०) अधिक संख्यक। [मुनि, तपस्वी, वनवासी।
अनगार तद्० (गु०) आगारशून्य, गृहरहित, ऋषि,
अनगिनत दे० (वि०) अपार, असंख्य।
अनगिना दे० (वि०) असंख्य, बिना गिना हुआ।
अनग्नि तद्० (पु०) श्रुति स्मृति विहित अग्निहोत्र कर्म हीन, निरग्नि, अग्नि का अभाव, अग्निचयन रहित यज्ञ।
अनघ तद्० [अन्+अघ] (गु०) निष्पाप, निर्मल, पाप रहित, सुकृती, पुण्यवान, पवित्र, शुद्ध। —ा तद्० (स्त्री०) सुन्दर, अच्छा, गान का एक परिमाण।
अनङ्ग तद्० (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ। ब्रह्मा के आदेश से तारकासुर पर विजय प्राप्त करने के लिये महादेव के पुत्र का सेनापति होना आवश्यक था, परन्तु योगीराज महादेव का विवाह तो हुआ ही नहीं था और वे विवाह करना भी नहीं चाहते थे, अतएव कामदेव पर यह भार सौंपा गया, उसने अपना काम आरम्भ कर दिया। जब महादेव को यह बात मालूम हुई, तब उन्होंने अपने क्रोध से कामदेव को जला डाला, तभी से कामदेव का नाम अनङ्ग पड़ा। कामदेव दूसरे जन्म में भगवान् कृष्ण का पुत्र हुआ, नाम था प्रद्युम्न, और उसकी स्त्री मायावती हुई। (गु०) शरीर रहित, अङ्गहीन। (पु०) आकाश, मन। —भीम (पु०) उड़ीसा का अत्यन्त प्रसिद्ध राजा, [कहते हैं जगन्नाथ जी का मन्दिर इसी राजा ने बनवाया था। ११७४ खृष्टाब्द में यह यहाँ राज्य करता था। यह अत्यन्त पुण्यात्मा तथा यशस्वी था।]
अनचाहत दे० (गु०) नहीं चाहा हुआ, इच्छारहित, अनिच्छित। [स्मात् दैवात्।
अनचित दे० (गु०) अचानक, एकाएक, अचीत, अक-
अनचीह्ना दे० (वि०) अपरिचित, बेजान पहचान का।
अनछीला तद्० (गु०) या अनछिला तद्० (गु०) बिना छीला हुआ, छिलका समेत, अनाड़ी।
अनजान दे० (गु०) अनपहिचान, अनचीन्हा अपरिचित, अज्ञातकुलशील, निर्बुद्धि। —े (क्रि० वि०) बिन जाने, बिना जाने बूझे, बिना जाने, नहीं जान के। [उत्पत्ति-शक्ति-रहित।
अनजामा तद्० (गु०) मरु, बाँझ, ऊसर, बिना उगा,
अनजीवत तद्० (गु०) प्राण रहित, मृतक, मुर्दा, शव। रामायण में इसका प्रयोग आया है। यथाः—"अनजीवत सम चौदह प्राणी।"
अनट दे० (स्त्री०) गाँठ, गिरह, ऐंठ, विरुद्धाचरण, विपरीत आचरण।
अनड्वान तद्० (पु०) बैल, साँड़, बरद, वृषभ।
अनत तद्० (अन्यत्र का अप०) (गु०) अन्यत्र, और ठाँव, दूसरी ठौर, अन्य स्थान, सीमा। [प्रत्यक्ष, गुप्त।
अनदेखा तद्० (गु०) अदृष्ट, नहीं देखा हुआ, परस्पर,
अनधन दे० (पु०) धन धान्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य।

अनन्त तद्० (पु०) विष्णु, महादेव, शेषनाग, अनन्तजित् नामक जैनाचार्य, वासुकि, सिन्दुवार वृक्ष, आकाश, अभ्रक, अनरस, (गु०) अन्त रहित, अनवधि, अशेष, असीम, अपर्याप्त, अपार। (पु०) काशमीर का राजा, [यह राजा सङ्ग्रामराज का पुत्र था, बाल्यावस्था ही मे इसकी वीरता स्फुटित होने लग गई थी। अनेक युद्धों में इसने विजय प्राप्त किया था। अन्त में यह स्त्री के प्रेम से राजकार्य से उदासीन हो गया था। यद्यपि सुचतुर मन्त्री राज्य की उत्तम व्यवस्था करते थे, तथापि स्त्री के कहने से इसने अपने पुत्र कलश को काशमीर का राजा बनाया, राज्य पाकर वह उच्छृङ्खल हो गया और पिता के साथ अनुचित व्यवहार करने लगा। मन्त्रियों को यह बात खटकने लगी अतएव पुनः उन लोगों ने कौशल से वृद्ध अनन्त से राज पाट अपने हाथ में लेने को कहा। राजा ने वैसा ही किया।—गौर तद्० (पु०) सङ्गीत शास्त्र, स्वर भेद।—चतुर्दशी तद्० (स्त्री०) भाद्र मास की शुक्ल चतुर्दशी, अनन्त देव का व्रत विशेष।—विजय (पु०) राजा युधिष्ठिर का शङ्ख।—वीर्य (पु०) अपरिसीम पराक्रम।—व्रत (पु०) भाद्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन जो उपवास किया जाता है, अनन्त देव का व्रत।—मूल (पु०) मूल विशेष, स्वनामख्यात लता, औषध विशेष।

अनन्तर तद्० (गु०) अनन्तरि, अव्यवहित, अनवकाश अत्यन्त समीप, पास। (पु०) पीछे, पास, पश्चात् —ज तद्० (पु०) क्षत्रिया के गर्भ में ब्राह्मण से उत्पन्न अथवा क्षत्रिय के वीर्य से वैश्या स्त्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।

अनधिकार तद्० (पु०) अधिकार का न होना, प्रभुत्व का अभाव, विवशता। (वि०) अधिकार रहित, अयोग्य।—ी तद्० (वि०) जिसे अधिकार न हो।

अनध्याय तद्० (पु०) वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने पढ़ाने की मनाई हो। यथा १, ३०, ८, १४, १५ तिथियाँ अनाध्याय की हैं।

अनन्य तद्० (गु०) एक ही, जिसको दूसरे का भरोसा नहीं, अभिन्न, अन्य नहीं।—गति तद्० (गु०) अनन्य गतिक, गत्यन्तर शून्य, एकाश्रय।—चेता तद्० (पु०) एकनिष्ट, अनन्यमना, एकचित्त, एकतान।—ता तद्० (स्त्री०) एकनिष्ठा।

अनपच दे० (पु०) अजीर्ण, अफरा।

अनपढ़ा तद्० (गु०) मूर्ख, अज्ञ, विद्याहीन, अशिक्षित।

अनपत्य तद्० (गु०) नि सन्तान, निर्वंश, पुत्रहीन, अपुत्र।

अनपत्रप तद् (गु०) निर्लज्ज, फूहड़, लज्जाहीन।

अनपराध तद्० (गु०) निर्दोष, निरपराध, दोषशून्य, शुद्ध, सच्चरित्र।

अनपाय तद्० (गु०) अनश्वर, अक्षय, अनाश्य, चिरस्थाई (पु०) अलङ्कृत।—ी तद्० (पु०) स्थिर, निश्चय, अविनश्वर, अपाय रहित।—िनी तद्० (स्त्री०) नाशरहित, अचल, दृढ़, नित्य।

अनपेक्ष तद्० (गु०) स्वाधीन, निरपेक्ष।—क्षित तद्० (गु०) अननुरुद्ध, अमान्य-कृत, वर्जित, अनिच्छित।

अनबन दे० (स्त्री०) बिगाड़, विरोध, फूट।

अनबनाव तद्० (पु०) अनरस, बिगाड़, फूट, ऐंठाऐंठी।

अनबिधा दे० (वि०) बिना छेद किया हुआ। [निर्बोध।

अनबूझ तद्० (गु०) असमझ, अनजान, बुद्धिहीन,

अनबेधा तद्० (पु०) अनछेदा, अवेधा, अछिद्रित।

अनबोल तद्० (पु०) चुपचाप, अवाक, अबोल, अनबोला, चुपका, गूँगा, साफ़ नहीं बोलने वाला, अस्पष्टवादी, पशु।—ना (वि०) गूँगा।

अनब्याहा दे० (पु०) अविवाहित, बिनब्याहा, क्वारा।

अनभल तद्० (पु०) बुराई, खुटाई, बुरा, खोटा, अमङ्गल।—ाई तद्० (स्त्री०) बुराई। [में गमन।

अनभिगमन तद्० (पु०) अस्थान गमन, भयङ्कर स्थान

अनभिज्ञ तद्० (गु०) अनजान, अज्ञान, मूर्ख, निर्बोध।—ता तद्० (स्त्री०) अनजानपना, अनाड़ीपन।

अनभिप्रेत तद्० (वि०) अभिप्राय विरुद्ध, अनभिमत।

अनभिमत तद्० (गु०) असम्मत, मतविरुद्ध, अनिष्ट।

अनभिव्यक्त तद्० (गु०) अस्पष्ट, अव्यक्त अप्रकाश।

अनभ्यस्त तद्० (गु०) अनभ्यासित, अपठित, अनधीन। [हार, देवदावरा।

अनभ्यास तद्० (पु०) अशिक्षा, अनध्ययन, अव्यव-

अनमना तद्० (गु०) सुस्त, उदास, घाबरा, खोदी।

अनम्र तद्० (गु०) अविनत, अविनयी, उद्दण्ड।

अनमिल दे० (गु०) बेमेल, बेजोड़ टूटे फूटे, अटपट।

अनमोल तद्० (गु०) अमोल, उत्तम, अमूल्य, बढ़िया।
अनय तद्० (पु०) व्यसन, विपद्, भाग्य, अशुभ, दुर्नीति, पाप। [बिगाड़, ऐंठा मैंठी।
अनरस तद्० (पु०) विरस, मित्रों में अनबनाव, फूट,
अनरसा दे० (वि०) बीमार, अनमना, रोगी। [कुरीति।
अनरीति तद्० (स्त्री०) कुचाल, कुढङ्ग, भ्रष्टरीति,
अनर्गल तद्० (गु०) निरर्गल, अबाध, अप्रतिहत प्रतिबन्धक रहित, बेरोक, स्वेच्छक, बेरोक, अड़बड।
अनर्घ्य तद्० (गु०) अमूल्य, अक्रेय, अत्युत्कृष्ट।
अनर्जित तद्० (गु०) अनुपार्जित, बिना परिश्रमलब्ध, बिना कमाया हुआ।
अनर्थ तद्० (गु०) वृथा, निष्फल, अर्थहीन, अनुचित। —क तद्० (गु०) वृथा, निष्फल, अप्रयोजन, निरर्थक।—कारी (वि०) हानि करने वाला।
अनर्ह तद्० (गु०) अनुपयुक्त, अयोग्य, कुपात्र।
अनल तद्० (पु०) पूर्णता रहित, अग्नि, आग, वसुभेद, भेला, पित्त।—पक्ष तद्० (पु०) पक्षी विशेष, यह पक्षी सर्वदा आकाश ही में उड़ा करता है, ज़मीन पर कभी नहीं रहता, अपने अण्डे को वह आकाश से गिरा देता है। अण्डा पृथ्वी पर पहुँचने से पहले ही फूट जाता है, और उसमें से बच्चा निकल आता है, जो उसी समय से उड़ने लग जाता है। यथा—

दोहा

"अनलपक्ष का चेटुआ, गिरेउ धरणि अरराय।
बहु अधीन यह लीन है, मिल्यो तासु को धाय॥"
—विचारमाला।

—प्रभा तद्० (स्त्री०) ज्योतिष्मती नामक लता विशेष, अग्नि की शिखा, दीप्ति।—प्रिया तद्० (स्त्री०) अग्नि-भार्या, स्वाहा। [श्रमी, उद्योगी।
अनलस तद्० (गु०) आलस्य-विहीन, उद्युक्त, परि-
अनल्प तद्० (गु०) अधिक, बहुविस्तार।
अनलेख तद्० (वि०) अगोचर, अदृश्य।
अनवकाश तद्० (गु०) अवकाश रहित, निरवसर।
अनवद्य तद्० (गु०) अनिन्दित, सुन्दर, स्वच्छ, मान्य मान, संभ्रान्त।—ाङ्ग तद्० (पु०) सुन्दर अङ्ग, सुडौल, शरीर। [भूषण विशेष।
अनवट दे० (पु०) छल्ला, बिछीया, स्त्रियों के पैर का

अनवधान तद्० (पु०) असनोयोग, चित्त की एकाग्रता का अभाव, अप्रणिधान, चित्त का अनावेश, असनोयोगी, अनाविष्ट।—ता तद्० (पु०) मनोयोग शून्यता, प्रमाद, अनवहितता, असावधानता
अनवरत तद्० (गु०) निरन्तर, अजस्र, सर्वदा, अविरत, नित्य, लगातार, प्रतिदिन।
अनवसर तद्० (पु०) कुसमय, असमय, अनवकाश।
अनवस्था तद्० (स्त्री०) दुर्दशा, अबाधा, अवस्था-रहित, स्थित्यभाव, दरिद्रता, अस्थिर, दुरवस्था, तर्क विशेष नैयायिकों के मत से एक प्रकार का दोष, यथा—मनुष्य किससे उत्पन्न हुए, इस प्रश्न का उत्तर दिया गया कि मनु से, मनु कहाँ से उत्पन्न हुए, ब्रह्मा से, ब्रह्मा कहाँ से उत्पन्न हुए, विष्णु से, इसी प्रकार लगातार प्रश्न करते जाने से कुछ निर्णय नहीं हो सकता। निर्णय होना तो दूर रहा, प्रश्नों का उत्तर देना ही कठिन हो जायगा। इसीको अनवस्था दोष कहते हैं।—न तद्० (पु०) वायु, अस्थायित्व, कुस्थायित्व, कुव्यवहार, अवस्थिति-शून्य, अस्थिर।—स्थित तद्० (गु०) अस्थिर, चञ्चल।—स्थिति तद्० (स्त्री०) वासरहित, अवस्थानाभाव, अस्थिरता।—स्थितचित्त तद्० (गु०) उन्माद, पागल, चाञ्चल्य, अनभिनिविष्ट।
अनशन तद्० (पु०) अनाहार, उपवास, अभोजन।—व्रत तद्० (गु०) उपवास करते करते शरीर छोड़ देना।
अनश्वर तद्० (गु०) अविनाशी, नित्य, सनातन।
अनसखरी दे० (स्त्री०) पकीरसोई निखरी।
अनसिखा दे० (गु०) अनपढ़ा, मूर्ख, अज्ञान, अशिक्षित।
अनसुन तद्० (गु०) आनाकानी, अमानित, न सुना हुआ।—ी (स्त्री०) न सुनी हुई।
अनसूया तद् (स्त्री०) असूया रहित, कलङ्क, एक ऋषि कन्या। महर्षि अत्रि से यह ब्याही गई थी, दक्ष प्रजापति की कन्या थी और इसकी माता का नाम प्रसूति था। महाकवि कालिदास कृत शकुन्तला नाटक में भी एक अनसूया का नाम आता है, जो उसी नाटक की नायिका शकुन्तला की सखी का नाम है।

अनहदनाद तत्० (पु०) योग का एक साधन । यह शब्द जो कान बंद करने पर भी भीतर सुनाई पड़ता है ।

अनहित तद्० (पु०) स्नेहरहित, वैरी, द्वेषी, शत्रु, बुरा करने वाला, बुरा, बुराई ।

अनहोना दे० (क्रि०) असम्भव, अचरज, अनहोनी, सम्भव पर नहीं ।

अनहोनी दे० (स्त्री०) असम्भाविता, अलौकिक ।

अन्हवाए (क्रि०) नहवाए, स्नान कराए, नहलाए ।

अन्हौरी दे० (स्त्री०) गरमी ऋतु की फुन्सियाँ, अमहौर, अम्हौरी ।

अनाकरण तद्० (पु०) व्यर्थ, योंही, निष्कारण, कारणाभाव, निर्निमित्त ।

अनागत तत्० (गु०) अनुपस्थित, अनायात, अज्ञात, भविष्यत्, आगे होने वाला ।

अनाघ्रात तत्० (गु०) विना सूंघा, आघ्राण नहीं किया, अस्पृष्ट, अभिनव, कोरा, नया ।

अनाचार तत्० (पु०) कुचाल, कुरीति, अशुचि, कदाचार, शुद्धाचार-हीन, श्रुति-स्मृति विरुद्ध कर्माचार ।—ी तत्० (पु०) कदाचारी, अशुद्धाचारी ।

अनाज तद्० (पु०) धान्य, शस्य, नाज, गल्ला ।

अनाड़ी दे० (गु०) मूर्ख, अचेतन, निर्बोध ।—पन तद्० (पु०) मूर्खता निर्बुद्धि, अनभिज्ञता ।

अनाढ्य तत्० (गु०) दरिद्र, दुःखी ।

अनातप तत्० (पु०) छाया, घर्माभाव, ताप रहित । —त्र तत्० (गु०) छत्ररहित ।

अनात्मवान् तत्० (गु०) अवशीभूतमना, जो अपने मन को वश नहीं कर सकता ।

अनात्म्य तत्० (गु०) आत्म-भिन्न, पर ।

अनाथ तत्० (गु०) स्वामी-हीन, दीन, दुःखी, अस्वामिक, सहायहीन ।—ा (स्त्री०) पतिहीना, विधवा, असहाया, रक्षक रहित ।—िनी तत्० (स्त्री०) अनाश्रिता, विधवा, पतिहीना, दुःखिनी ।

अनाथालय तत्० (पु०) यतीमख़ाना, अनाथों के रहने का स्थान, मुहताज खाना ।

अनादर तत्० (पु०) अपमान, असम्मान, अवज्ञा, अवहेलन ।—णीय (वि०) निन्द्य, अमाननीय ।

अनादि तत्० (गु०) आदि-रहित, उत्पत्ति-हीन, स्वयम्भू, नित्य ब्रह्म, बहुत दिनों से जो शिष्ट-परम्परा से चला आता हो, बहुत दिनों से सज्जनों में जिसका परस्पर व्यवहार होता चला आता हो ।

अनादिष्ट तत्० (गु०) अननुज्ञात, विना आज्ञा का ।

अनादृत तत्० (गु०) अपमानित ।

अनाद्यन्त [अन+आदि+अन्त] तत्० (गु०) नित्य, अनन्त, सनातन, सर्वकालीन, शाश्वत, ब्रह्म, अनादि ।

अनन्नास तत् (पु०) अनायास, आनारस, फल विशेष ।

अनाप्त तत्० (गु०) अनिपुण, अपारक, अविश्वासी ।

अनामक तत्० (पु०) रोगविशेष, अर्शरोग, बवासीर ।

अनामय तत्० (पु०) आरोग्य, नीरोग्य, पुष्ट, अरोग, स्वस्थता ।

अनामा तत्० (पु०) कनिष्ठा अँगुली के ऊपर वाली अँगुली, अनामिकाँगुलि, अनामिका ।

अनायक तत्० (गु०) स्वामि-रहित, रक्षाहीन ।

अनायत तत्० (गु०) अविस्तृत, अप्रशस्त ।

अनायत्त तत्० (गु०) अनधीन, अवशीभूत, उच्छृङ्खल ।

अनायास तत्० (पु०) अल्प परिश्रम, अक्लेश, अयत्न, सहज, सौकर्य, सुकरत्व ।

अनार तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, अनारफल, दाडिम ।

अनारम्भ तत्० (पु०) आरम्भाभाव, विना आरम्भ किया हुआ ।

अनारोग्य तत्० (पु०) अस्वस्थता, रुग्णावस्था ।

अनार्य तत्० (गु०) अश्रेष्ठ, अप्रधान, अनाड़ी, नीच, जातिविशेष । आर्यजाति के अतिरिक्त अमान्य अन्यान्य जातियाँ अनार्य या आर्येतर शब्द से विख्यात हैं । आर्यों से जिनका आचार व्यवहार नीति धर्म आदि में विरोध था, वे अनार्य कहे जाते थे । ऋग्वेद आदि मान्यतम ग्रन्थों में दस्यु या दास शब्द अनार्य के पर्याय में आते हैं ।—कर्मा तत्० (पु०) आर्यों से विरुद्ध कर्म करने वाले, निन्दिताचार, गर्हित ।—जुष्ट तत्० (गु०)—अनार्यों के कर्म, अनार्य-सेवित क्रिया ।—देश तत्० (पु०) अनार्यों का वास-स्थान, जहाँ चातुर्वर्ण्य की व्यवस्था न हो ।

अनावश्यक तत्० (वि०) अप्रयोजनीय, बेकाम का । —ता (स्त्री०) अप्रयोजनीयता ।

अनाविल तद्० (गु०) निर्मल, परिष्कार, स्वच्छ, साफ, सुथरा, आविलता यानी मैल रहित। [सूखा।
अनावृष्टि तद्० (स्त्री०) अवर्षण, वर्षाभाव, जल कष्ट,
अनाहार तद्० (पु०) भूखा, उपवास, लंघन।—ी तद्० (पु०) अभुक्त, उपवासी, अभोजन।
अनाहूत तद्० (गु०) अनिमन्त्रित, अकृताह्वान, नहीं बुलाया हुआ।
अनिकेता तद्० (गु०) अनिकेतन, निराश्रय, गृहशून्य, निर्वास, बिना घर का।
अनिगीर्ण तद्० (पु०) अनुक्त, अकथित।
अनित्य तद्० (गु०) विनाशी, झूठा, क्षणिक, अस्थायी, नश्वर, ध्वंसशाली।—ता तद्० (स्त्री०) अचिर-स्थायिता, क्षणविध्वंसिता।—तावादी तद्० (पु०) जो किसी पदार्थ को चिरस्थायी नहीं मानते, बौद्ध विशेष।—सम तद्० (पु०) न्यायशास्त्र कथित तर्क न करके केवल उदाहरण द्वारा तर्क करना।
अनिन्दित तद्० (गु०) अगर्हित, उत्तम।
अनिन्दनीय या अनिन्द्य तद्० (गु०) अनिन्दित।
अनिमित्तक तद्० (गु०) निष्कारण, अहेतुक, बिना कारण।
अनिमिष तद्० (पु०) देवता, मत्स्य। (गु०) निमिष-शून्य।—आचार्य तद्० (पु०) देवगुरु बृहस्पति।
अनियत तद्० (गु०) अस्थायी, अनित्य, अचिरस्थायी।
अनियन्त्रित तद्० (गु०) अनिवारित, अशासित, स्वेच्छाचारी।
अनियम तद्० (पु०) नियमाभाव, अनिश्चय।—ित तद्० (गु०) अनिर्धारित, अनियमबद्ध।
अनिरुद्ध तद्० (वि०) बेरोक, बाधा रहित। (पु०) श्री कृष्ण के पौत्र का नाम।
अनिर्णय तद्० (पु०) द्विविधा, सन्देह, संशय, दो बातों में से किसी का ठीक नहीं होना, अनिश्चय, अनवधारण।
अनिर्णीत तद्० (गु०) अनिर्धारित, अनिश्चित।
अनिर्दिष्ट तद्० (गु०) अनिश्चित, अनुद्देशित।
अनिर्देश्य तद्० (वि०) जिसके बारे में कुछ ठीक ठीक बतलाया न जा सके।
अनिर्लोचित तद्० (पु०) अपरिपक्व बुद्धि, अनालोचित, अविवेचित, अविचारित, ऊहापोह, ज्ञानशून्य।
अनिर्वचनीय तद्० (गु०) अवर्णनीय, अवाच्य, वचन के अगम्य, वर्णनारहित, असाध्य वर्णन, उत्तम, अत्युत्तम।
अनिल तद्० (पु०) (१) वायु, पवन, वसुविशेष, बतास, देवता विशेष। यह अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं, इन्द्र के छोटे भाई हैं, इनके पिता का नाम कश्यप है, भीम और हनुमान इनके पुत्रों का नाम है। (२) वायु ४९ उनचास हैं, इनका रथ १०० सौ और कभी कभी हजार घोड़ों से खींचा जाता है। अन्यान्य देवताओं के समान वायु को भी यज्ञ में भाग दिया जाता है। दमयन्ती के सतीत्व का साक्ष्य इन्होंने दिया था। त्वष्टा के ये जमाता हैं। (३) शरीर में पाँच वायु होते हैं जिनके नाम ये हैं, प्राण, अपान; समान, उदान और व्यान।—सक तद्० (पु०) विभीतक वृक्ष, बहेड़े का वृक्ष।—सखा तद्० (पु०) अग्नि, अनल, आग।—ात्मज तद्० (पु०) वायुपुत्र, हनुमान्, भीमसेन।—ामय तद्० (पु०) वातरोग, अजीर्ण।—ाशी तद्० (पु०) वायु भक्षण के द्वारा जीवन धारण करने वाला, तपस्वी, सर्प, मत विशेष।
अनिवारित तद्० (गु०) अप्रतिषेधित, अवारित, बाधा रहित, वारण-शून्य।
अनिवार्य तद्० (गु०) अवारणीय, दुरत्यय, वारण करने के अयोग्य, अवाच्य, कठिन, दुर्लंघ।
अनिश तद्० (अ०) निरन्तर, सतत, सर्वदा। (पु०) रात्रि का अभाव। [अनियत।
अनिश्चित तद्० (वि०) जिसका निश्चय न हो,
अनिष्ट तद्० (गु०) अनभिलषित, अनाप्सित, हानि, अपकार, बुरा।—कर (गु०) अपकारक, अहितकर।
अनिष्ठुर तद्० (गु०) अनिर्दय, सरलचित्त।
अनिष्णात तद्० (गु०) अप्रवीण, अकुशली, अदक्ष।
अनी तद्० (पु०) तीखा, पैना, नोक, तीक्ष्णधार, अणी।
अनीक (स्त्री०) सेना, भीड़, कटक, सैन्य, योद्धा, युद्ध।—स्थ तद्० (पु०) सेनारक्षक, हस्तिपक, राजरक्षक, चिन्ह।
अनीकिनी तद्० (स्त्री०) अक्षौहिणी सेना का दशांश, पद्मिनी।

अनीति तत्० (स्त्री०) कुचाल, अन्याय, दुर्नीति, अत्याचार। [बेजोड़।

अनीदृश तत्० (गु०) अतुल्य, असमान, बराबर नहीं,

अनीश तत्० या अनीस तद्० (गु०) अनधिकार, असामी, ईश्वर नहीं, जीव, स्वामी-रहित, जो किसी को भी ईश्वर न माने।

अनीश्वर तत्० (गु०) ईश्वर भिन्न, नास्तिक।—वाद तत्० (पु०) नास्तिक, जिस मत में ईश्वर न माना गया हो, चार्वाक।—वादी तत्० (पु०) देव-निन्दक, नास्तिक, अभक्त।

अनीह तत्० (गु०) आलसी, ढीला, बोदा, निरपेक्ष, निर्लोभ।—ा (स्त्री०) अनिच्छा, उदासीनता।

अनु तत्० (उपसर्ग) पीछे, पश्चात्, सह, सादृश्य, लक्षण, वीप्सा, इत्थम्भाव, भाग, हीन, आयास, समीप, अपरिपाटी, अनुसार, अधीन, कण, अत्यन्त छोटा, महीन, लघुतम, कम, थोड़ा।—कथन तत्० (पु०) कहने के बाद कथन, पश्चात् कथन, बारंबार कथन, आपस की बातचीत, किसी के अनुसार या अनुकूल कहना, कही हुई बात को फिर से कहना।—कम्पा तत्० (स्त्री०) दया, कृपा, करुणा, स्नेह, अनुग्रह।—कम्पित तत्० (गु०) अनुग्राह्य, कारुणिक, वेगवान्।—कम्प्य तत्० (गु०) अनुग्राह्य, कृपापात्र।—करण तत्० (पु०) अनुरूप, उतारा, सदृश करण, प्रतिरूपकरण, नकल।

अनुकरण (पु०) नकल, अनुरूप।—ीय (वि०) नकल करने योग्य।

अनुकर्षण तत्० (पु०) खींच, टान, घसीट, आकर्षण।

अनुकूल तत्० (गु०) सहाय सहकारी, अनुग्राहक, हितकर, प्रसन्न। (पु०) पतिभेद, काव्य के नायकों में से एक नायक। यथा—

दोहा

"निज नारी सन्मुख सदा विमुख विरानी वाम।
नायक सो अनुकूल है ज्यों सीता को राम॥"

—कविदेव।

—ता तत्० (स्त्री०) सहाय, आनुकूल्य।

अनुक्त तत्० (पु०) अकथित, दृष्टान्त। [आनुपूर्वी।

अनुक्रम तत्० (पु०) परिपाटी, रीति भाँति, यथाक्रम,

अनुक्रमणिका तत्० (स्त्री०) क्रमानुसार, प्रबन्ध, सूचीपत्र, निघण्टु, भूमिका, ग्रन्थों का सुप्रबन्ध, आभास।

अनुक्रोश तत्० (पु०) कृपा, दया, अनुकम्पा, स्नेह।

अनुक्षण तत्० (पु०) सर्वदा, सदा, नित्य, सर्वक्षण, सब समय, सब घड़ी।

अनुखाज तत्० (पु०) खाई, खाड़ी, नाला।

अनुग तत्० (पु०) पश्चाद्गामि सेवक, दास, भृत्य, अनुचर, पीछे चलने वाला, आज्ञाकारी, अनुसार चलने वाला। [हारा।

अनुगत तद्० (पु०) आश्रित, शरणागत, पीछे चलने-

अनुगतार्थ तत्० (वि०) प्रायः समान अर्थ वाला।

अनुगमन तत्० (पु०) पीछे जाना, पश्चाद्गमन, सहगमन।

अनुगामी तत्० (पु०) साथी, अनुवर्ती, सहचर, सेवक।

अनुगुण तत्० (पु०) एक प्रकार का काव्यालङ्कार जिसमें किसी वस्तु का गुण किसी वस्तु के योग से बना कर दिखाया जाय।

अनुगृहीत तत्० (पु०) उपकृत, प्रतिपालित, आश्वासित।

अनुग्रह तत्० (पु०) प्रसन्नता, दया, करुणा, दुःख दूर करने की इच्छा।

अनुग्राहक तत्० (गु०) दयावान्, करुणान्वित।

अनुचर तत्० (पु०) सङ्गी, दास, सहचर, साथी।

अनुचित तत्० (गु०) अयोग्य, अनुपयुक्त, अनरीत।

अनुच्छ्रित तत्० (गु०) उन्नति रहित, बहुत ऊँचा नहीं।

अनुज तत्० (पु०) कनिष्ठ, लहुरा भाई, छोटा भाई, लघुभ्राता।

अनुजीवी तत्० (गु०) पराधीन, आश्रित, परतन्त्र (पु०) दास, सेवक।

अनुज्झित तत् (गु०) अविचत अत्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ।

अनुज्ञा तत्० (स्त्री०) आज्ञा, आदेश, अनुमति, चितावनी।

अनुज्ञात तत्० (पु०) आज्ञा प्राप्त। [पछताने वाला।

अनुतप्त तत्० (गु०) अनुशोची, पश्चात्ताप विशिष्ट,

अनुताप तत्० (पु०) खेद, पश्चात्ताप, अनुशोचन।—न्ति तत्० (पु०) दुःखित, अनुशोचक।

अनुतारा तत्० (स्त्री०) उपग्रह, उपतारा।

अनुत्कण्ठा तत्० (स्त्री०) निरुद्वेग, उत्कण्ठा रहित।

अनुत्तर तद्० (गु०) अयुत्तरहीन, उत्तर नहीं मोगी, चुपचाप, श्रेष्ठ, स्थिर अच. दक्षिण दिशा हरामी।
अनुदय तद्० (पु०) उदय के पूर्वकाल, उदयरहित, भोर, सवेरा, बिहान।
अनुदात्त तद्० (पु०) स्वर विशेष, नीच स्वर, उत्तम नहीं, अनुदार।
अनुदार तद्० (पु०) अतिशय, दाता नहीं, अधम, कृपण, असमान, स्त्री के पराधीन।
अनुदिन तद्० (अ०) प्रतिदिन, प्रत्यह, नित्य, दिन दिन, सदा। [पन कुँआरपन।
अनुद्वाह तद्० (पु०) अविवाह, अनूढावस्था, कुमार-
अनुद्विग्न तद्० (गु०) निश्चिन्त, उद्वेग-रहित, स्वस्थ, स्थिर। [निश्चिन्त।
अनुद्वेग तद्० (गु०) उद्वेग-रहित, व्याकुल नहीं
अनुद्यमी तद्० (गु०) आलसी, सुस्त।
अनुनय तद्० (पु०) नम्र, कोमल, विनय, स्तव, स्तुति।
अनुनाद तद्० (पु०) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द।
अनुनासिक तद्० (गु०) नासिका संबन्धी। (पु०) सानुनासिक, अनुनासिक वर्ण, यथा—ङ ञ ण न म।
अनुप तत् (गु०) अनुपम, अनुत्तम, अपूर्व।
अनुपकारी तद्० (पु०) अहितकारी, अनुपकारक।
अनुपम तद्० (गु०) अतुल, उत्तम, उपमा रहित।
अनुपमेय तद्० (गु०) असदृश, अतुल, विषम।
अनुपयुक्त तद्० (पु०) अयुक्त, अयोग्य, अनुचित, अन्याय।
अनुपयोग तद्० (पु०) व्यवहार का अभाव, काम में न लाना, दुर्व्यवहार।—ी (पु०) बेकाम, व्यर्थ।
अनुपल तद्० (पु०) पल का साठवाँ हिस्सा, काल विशेष, सेकेण्ड।
अनुपलब्ध तद्० (गु०) अप्राप्त।
अनुपस्थित तद्० (गु०) उपस्थिति-रहित, उपस्थित नहीं, गैरहाज़िरी।—ि तद्० (स्त्री०) गैरहाज़िरी, अविद्यमानता।
अनुपात तद्० (पु०) सम, समान भाव, समान रूप से गिरना, त्रैराशिक, बराबर सम्बन्ध।
अनुपातक तद्० (पु०) महापातक के समान पाप, ब्रह्महत्या आदि बड़े पापों के समान पाप।
अनुपान तद्० (पु०) पथ्य, औषध का संयम, औषध के साथ सेवन करने योग्य पदार्थ।
अनुपाय तद्० (गु०) उपायहीन, निरवलम्ब, निराश्रय।
अनुप्राशन तद्० (पु०) खाना। (क्रि०) भक्षण करना, होना, देना।
अनुप्रास तद्० (पु०) यमक पद-विन्यास, काव्य का अलङ्कार विशेष, समान, वर्ण विन्यास मिश्राक्षर योजना। केवल वर्ण की सदृशता होने से अनुप्रास अलङ्कार माना जाता है। यह शब्दालङ्कार है। इसके पाँच भेद हैं, छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, लाटानुप्रास, और अन्त्यानुप्रास। विषय की कोमलता तथा कठोरता के अनुरोध से तत्सम वर्णों के प्रयोग होने के कारण इस अलङ्कार का नाम अनुप्रास पड़ा है।
अनुबन्ध तद्० (पु०) मित्र, सुहृद, सम्बन्ध, विनश्वर. मुख्यानुयायी, शिशु प्रकृति का अनुवर्तन, बन्ध, आरम्भ, क्लेश।
अनुभव तद्० (पु०) ज्ञान, बोध अनुमान, यथार्थज्ञान, विचार, सोचना, समझना, उपलब्धि।—ी तद्० (वि०) अनुभव रखने वाला।
अनुभाव तद्० (पु०) दृढ़ अनुमान, निश्चय, महिमा, बड़ाई, भाव का सूचक, प्रभाव, सज्जन के ज्ञान का निश्चय।
अनुभूत तद्० (गु०) बीती, मन से माना गया, अनुभव किया हुआ, विचार किया हुआ, प्रतीति किया हुआ, निश्चित।
अनुमत तद्० (गु०) सम्मत, स्वीकृत, अङ्गीकृत, अनुमोदित, सहमत, एक मत।
अनुमति तद्० (स्त्री०) अनुज्ञा, सम्मति, कलाहीन चन्द्रयुक्त पूर्णिमा।
अनुमती तद्० (स्त्री०) सहमता, अनुगामिनी।
अनुमरण तद्० (पु० एक संग मरण, सहमरण, पश्चात् मरण, सती। [निर्णय करना, तर्क, अनुभव, बोध।
अनुमान तद्० (पु०) अटकल, विचार, हेतु के द्वारा
अनुमापक तद्० (पु०) निर्णायक, अनुमान का हेतु, निश्चय का कारण।
अनुमेय तद्० (पु०) अनुमान करने योग्य।
अनुमोदन तद्० (पु०) आमोद करना, सन्तोष प्रकाश,

दूसरे के सुख से सुख, आनन्द युक्त सम्मति, प्रवृत्ति, प्रदान, प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार। [न्दित।

अनुमोदित तत्० (गु०) अनुमत, आह्लादित, आन-

अनुयायी तत्० (गु०) सदृश, अनुवर्ती, अनुगामी, पश्चाद्गामी, अनुसारी।

अनुयोग तत्० (पु०) ताड़ना, धमकी, घुड़की, तिरस्कार, आक्षेप, प्रश्न, जिज्ञासा, निन्दा, शिक्षा, उपदेश, प्रबोध, प्रशासन।—कारी तत्० (पु०) तिरस्कारक, आक्षेपक, प्रश्न कारक।—गी तत्० (पु०) निन्दित, तिरस्कृत।

अनुयोजक तत्० (पु०) अनुयोगकारी, उपदेशक।

अनुयोजन तत्० (पु०) प्रश्न, जिज्ञासा, पूँछ पाँछ।

अनुयोज्य तत्० (गु०) अनुयोगार्ह, आज्ञाप्य, निन्दा योग्य।

अनुरक्त तत्० (पु०) प्रेमी, अत्यन्त लीन, आसक्त, रत।

अनुरत दे० (गु०) आसक्त, लीन।

अनुराग तत्० (पु०) प्रीति, स्नेह, ममता, आसक्ति, रति, प्रशंसा, थोड़ी लाली।—ी तत्० (पु०) अनुराग युक्त, अनुरक्त।

अनुराधा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, यह सत्तरहवाँ नक्षत्र है, इसकी तीन ताराएँ हैं, इसका स्थान वृश्चिकराशि का मुख है।

अनुरूप तत्० (गु०) सदृश, तुल्य, एकसा, अनुसार।

अनुरोध तत्० (पु०) अपेक्षा, उपरोध, अनुवर्तन, पक्षपात, माफिक।

अनुलाप तत्० (पु०) पुनः पुनः कथन, मुहुः।

अनुलिप्त तत्० (गु०) अभिषिक्त, लिप्त, दिग्ध।

अनुलेप तत्० (पु०) लीपना, अङ्गलेप, उबटन, पोतन।—न तत्० (पु०) शरीर में सुगन्धित द्रव्य लगाना।—ी तत्० (पु०) अङ्गलेप।

अनुलोम तत्० (गु०) सीधा, क्रम से, यथाक्रम अभिलोम, जाति विशेष।—ज तत्० (पु०) ब्राह्मण के औरस और क्षत्रिय के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।

अनुलोमन तत्० (पु०) दस्त लाने वाली वह दवा जो पेट में बंधी गोटों को गिरा दे। कब्जियत दूर करने वाली दवा।

अनुवर्तन तत्० (पु०) अनुगमन, अनुसरण।

अनुवर्ती तत्० (वि०) अनुगामी।

अनुवृत्ति तत्० (स्त्री०) उपजीविका, सेवा मार्ग।

अनुवाक तत्० (पु०) ग्रन्थविभाग, ग्रन्थावयव।

अनुवाद तत्० (पु०) भाषान्तर करना, निन्दा, अपवाद, बार बार कहना।—क तत्० (पु०) भाषान्तर करने वाला।—ित तत्० (वि०) अनूदित, अनुवाद किया हुआ।

अनुवेदना तत्० (स्त्री०) सहानुभूति, समवेदना।

अनुशय तत्० (पु०) पश्चात्ताप, अनुताप, जिघांसा, द्वेष।—ी तत्०(पु०) पश्चात्तापी, रोगविशेष, वैरी।

अनुशासक तत्० (पु०) शासन करने वाला।

अनुशासन तत्० (पु०) आदेश, आज्ञा, महाभारत का एक पर्व।

अनुशास्ता तत्० (पु०) शिक्षक, उपदेष्टा, अनुशासक।

अनुशीलन तत्० (पु०) आन्दोलन, पुनः पुनः अभ्यास, मनन।

अनुशोक तत्० (पु०) पश्चात्ताप, खेद।

अनुशोचन तत्० (पु०) पश्चात्ताप करना।

अनुषङ्ग तत्० (पु०) मिलन, दया, सम्बन्ध, प्रसङ्ग।

अनुष्टुप् [अनु+स्तुभ] तत्० (पु०) छन्द विशेष, चार पाद का यह छन्द होता है। एक पाद में ८ आठ अक्षर होते हैं। सरस्वती।

अनुष्ठान [अनु+स्था+अनट्] तत्० (पु०) आरम्भ, उपक्रम, सूचना, कार्य, आचरण।—शरीर तत्० (पु०) लिङ्ग देह, आद्य देह। [आचरित।

अनुष्ठित [अ+स्था+क्त] तत्० (गु०) आरब्ध

अनुष्ठेय [अनु+स्था+य] तत्० (गु०) उपक्रान्त, कर्मारब्ध, किया जाने वाला, करने योग्य।

अनुसन्धान [अनु+सं+धा+अनट्] तत्० (पु०) अन्वेषण, चेष्टा, सन्धान करना, खोजना।—ी तत्० (पु०) अनुसन्धानकारी, खोज विषयों का अन्वेषण करने वाला।

अनुसरण [अनु+सृ+अनट्] तत्० (पु०) अनुवर्तन, पश्चाद्गमन, अनुसार।

अनुसरना (क्रि०) संग चलना, पीछे जाना।

अनुसरीं (क्रि०) अनुगमन करते हैं, पीछे चलते हैं, अनुसार चलते हैं। [अनुरूप।

अनुसार [अनु+सृ+घञ्] तत्० (पु०) अनुरूप,

अनुसूचन [[illegible]] [illegible] (पु०) [illegible]

दोनों गड्ढे में गिर पड़ते हैं, यही दशा अन्धगोलाङ्गूल की भी है।
अन्धड़ तद्० (पु०) आँधी, झड़, तूफान, प्रचंड वात।
अन्धतमस तद्० (पु०) अत्यन्त अन्धकार, निविड़ अन्धकार, नरक विशेष। [नरक विशेष।
अन्धतामिस्र तद्० (पु०) निविड़ान्धकार-युक्त
अन्धपरम्पराग्रस्त तद्० (पु०) अन्धों की परम्परा में मग्न, अज्ञानियों के अनुयायी। [का, काना।
अन्धला तद्० (गु०) अन्धा, नयनहीन, बिन आँख
अन्धस तद्० (पु०) भात, रीधे हुए चावल।
अन्धाधुन्ध तद्० (पु०) अधिक करना, अनियम, अन्धों के समान करना। [आदि।
अन्धसुत तद्० (पु०) अन्धे का पुत्र, राजा दुर्योधन
अन्धार दे० (पु०) अन्धेरा, तम।
अन्धारी दे० (स्त्री०) आँधी। [अन्धकार।
अन्धियर या अन्धियारा तद्० (पु०) अँधेरा,
अन्धिसन्धि तद्० (पु०) छिद्र, छेद, मौका, गढ़ा।
अन्धु दे० (पु०) कूआ।
अन्धेर तद्० (गु०) अन्याय, उपद्रव, उत्पात, अन्धाधुन्ध, अन्याय।—खाता दे० (पु०) अंडबंड हिसाब किताब, व्यतिक्रम, अन्याय, अनबन्ध अविचार।
अन्धेरा तद्० (पु०) अँधियारा, ध्वान्त।
अन्धेरिया दे० (स्त्री०) अन्धकारमयी रात, अंधेरा पाख, ऊख की पहिली गोड़ाई।
अन्धेरी दे० घोड़े की आँख मूदने की ढपनी। [ढपनी।
अन्धौरी दे० (स्त्री०) घोड़े या बैल के आँखों की
अन्ध्यार दे० (पु०) तम, अन्धकार।
अन्ध्यारी दे० (स्त्री०) अन्धकारमयी।
अन्ध्र तद्० (पु०) बहेलिया, चिड़ीमार, शिकारी। दक्षिण देश का एक प्रान्त विशेष। एक राजवंश।
अन्न तद्० (पु०) ओदन, भात, अनाज, सूर्य।—कष्ट तद्० (पु०) दुर्भिक्ष।—कूट तद्० (पु०) पर्व विशेष, दिवाली के दूसरे दिन भात का पर्वत के समान ढेर लगाया जाता है।—क्षेत्र तद्० (पु०) वह जगह जहाँ भूखों को अन्न मिलता हो।—जल तद्० (पु०) अन्न पानी, खाना पीना, दाना पानी।—दान तद्० (पु०) आहार दान, अन्नव्यय।—दास तद्० (पु०) पेट के लिये दास बनने वाले, पेटू।—दाता तद्० (पु०) पालने हारा, रक्षक, अन्न का दान करने वाला।—पानी तद्० भोजन और जल।—पूर्णा तद्० (स्त्री०) अन्नाधिष्ठात्री, देवी, काशीश्वरी, विश्वेश्वरी।—प्राशन तद्० (पु०) संस्कार विशेष, बालक बालिकाओं को प्रथम अन्न खिलाना। छठवें महीने यह संस्कार किया जाता है।—विकार तद्० (पु०) शुक्र, वीर्य, विष्ठा, मल।—ब्रह्म तद्० (पु०) अन्नस्वरूप ब्रह्म।—भाजन तद्० (पु०) भोजन करने का पात्र।—भिक्षा तद्० (स्त्री०) अन्न के लिये प्रार्थना।—भोक्ता तद्० (पु०) अन्न खाने वाला, जिसके साथ खान पान है।—मय तद्० (पु०) अन्नस्वरूप, अन्न द्वारा वर्धित।—रस तद्० (पु०) अन्न का सारभाग, मांड, अन्न से पेट में रस उत्पन्न होता है।—लिप्सा तद्० (स्त्री०) क्षुधा, बुभुक्षा।—वस्त्र (पु०) आच्छादन।—सत्र तद्० (पु०) अधिक अन्न, बहुत मनुष्यों का भोजन।—ाभाव तद्० (पु०) अन्न की असंस्थिति, दुर्भिक्ष, अकाल, महँगी।—ार्थी तद्० (पु०) भोजन के लिये अन्न माँगने वाला।—ाहारी तद्० (पु०) अन्नभोक्ता, अन्न भक्षक, अन्न खाने हारा।
अन्ना दे० (स्त्री०) उपमाता, धाय, धात्री।
अन्नी तद्० (स्त्री०) दाई, धाय, धात्री, उपमाता, एक आने का निकिलधातु का सिक्का।
अन्मोल तद्० (गु०) अमूल्य, अति उत्तम।
अन्य तद्० (गु०) भिन्न, पृथक्, और, अपर, पर।—कृत तद्० (गु०) अन्य द्वारा अनुष्ठित, अन्य द्वारा किया हुआ, भिन्न सम्पादित।—गामी तद्० (पु०) व्यभिचारी परिवर्तन, बदला किया हुआ, पारदारिक, परस्त्रीगामी, लम्पट।—चाली तद्० (पु०) स्वधर्मत्यागी, कुपथगामी।—ज तद्० (पु०) कुयोनि, हीनजाति।—तः तद्० (अ०) अन्यत्र, स्थानान्तर।—त्र (अ०) कहीं, दूसरा ठाँव।—था तद्० (अ०) विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध, अन्य प्रकार, विपर्यय, परार्थ, मिथ्या, दुष्ट, वितथ, और प्रकार, उलटा। (२)—ख्याति तद्० (स्त्री०) अख्याति, दुष्कीर्ति, दुर्नाम। दर्शनों

में इस शब्द का प्रयोग आत्मविषयक मिथ्याज्ञान के अर्थ में होता है। आत्मा का अयथार्थ ज्ञान। —चरण तत्० (पु०) उलटा चलन, विपरीत व्यवहार, विरुद्ध आचरण, विपर्ययकरण।— सिद्धि तत्० (पु०) अभावनीय कर्मों की उत्पत्ति, एक प्रकार का हेत्वाभास तर्कविशेष, जिसमें असत्य युक्तियों के द्वारा कोई विषय सिद्ध किया गया हो।

अन्यदेशी या अन्यदेशीय तत्० (पु०) दूसरे देश के वासी, भिन्न देशी।

अन्यपुरुष तत्० (पु०) दूसरा आदमी,, व्याकरण में तीसरा पुरुष, वह, कोई।

अन्यपुष्ट तत्० (पु०) कोकिल, कोइल, पिक, पर पालित, दूसरे के द्वारा पालित।

अन्यपूर्वा तत्० (स्त्री०) परपूर्वा, जिस कन्या का एक वार विवाह हो जाने के अनन्तर पति के मरने पर पुनर्वार विवाह होता है, द्विरूढ़ा, दो वार व्याही हुई।

अन्यभृत तत्० (पु०) काक, कौआ, कोइल, पिक।

अन्यादृश तत्० (गु०) अन्य प्रकार, भिन्नरूप, विसदृश।

अन्यमनस या अन्यमनस्क तत्० (पु०) अन्यचिन्तक, चपल, अन्यचित, अन्यमना।

अन्यमनस्कता तत्० (स्त्री०) अन्यमनस्क होना, दूसरी ओर मन लगाना, प्रस्तुत बात पर असावधानी।

अन्यान्य तत्०(गु०) अपरापर, भिन्न भिन्न, दूसरे दूसरे, और और।

अन्याय तत्० (पु०) उपद्रव, अविचार, न्याय वहिर्भूत अनुचित।—ी तत्० (पु०) अन्यायकारी। अत्याचारी, दुर्वृत्त, अधर्मी, न्यायशून्य, न्याय रहित, दुष्ट।

अन्योक्ति तत्० (स्त्री०) कथन विशेष जिसमें अन्य के विषय में कथन करते हुए वह कथन अन्य पर घटाया जाय।

अन्योन्य तत्० (गु०) परस्पर, उभयतः मिलाप। —भेद तत्० (पु०) परस्पर का भेद, आपस का भेद, विरोध।—ाश्रय तत्० (पु०) एक वस्तु के ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान, परस्पर ज्ञान सापेक्ष, ज्ञानाश्रय, अपने ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान और उस वस्तु के ज्ञान से अपना ज्ञान।

अन्वय तत्० (पु०) वंश, कुल, पदच्छेद, सन्तति।—ज्ञ तत्० (गु०) वंशावलि जानने वाला, वन्दी, भाट। —ी तत्० (गु०) संबन्ध विशिष्ट, सम्पर्की, पश्चाद्वर्ती।

अन्वह तत्० (पु०) नित्य, प्रत्यह, प्रतिदिन।

अन्वाचय तत्० (गु०) संयोजित, संयुक्त, द्वन्द्व, समास का एक भेद। [हुआ।

अन्वित तत्० (गु०) युक्त, संबन्धित, पूरा, मिला

अन्वीक्षण तत्० (पु०) ढूँढ़ना, पता लगाना, अनुसन्धान। [सन्धान करना।

अन्वेषण तत्० (पु०) खोजना, पता लगाना, अनु-

अन्हवाना तद्० (क्रि०) स्नान कराना, धुलाना।

अन्हान तद्० (पु०) स्नान, धोवन।

अन्होना तद्० (पु०) असाध्य, असम्भव, जो न हो सके।

अप तत्० (पु०) जल, पानी (उपसर्ग) नीच, अधम, बुरा, भ्रंस, असम्पूर्णता, विकृत, त्याग, वर्जनार्थ, अपकृष्टार्थ, वियोग, विपर्यय, चौर्यनिर्देश, यज्ञकर्म, हर्ष अनिर्देश्य प्रशा।—कर्म तत्० (पु०) दुष्कर्म, अनिष्टकर्म, कुकर्म, कुचलन।—कर्ष तत्० (पु०) जघन्यता, छुटाई, मुख्य काल के रहते अमुख्य काल में कर्म करना।—कर्षण तत्० (पु०) खींचना, टानना।—कलङ्क तत्० (पु०) अपयश, कलङ्क, मिथ्यापवाद, दुर्नाम।—काजी दे० (पु०) स्वार्थी, मतलबी।—कार तत्० (पु०) अनिष्ट, हानि क्षति, अनुपकार।—कारक—कारी तत्० (पु०) बुरा करने वाला, अनिष्टकारी।—कीर्त्ति तत्० (स्त्री०) अयश, अख्याति, दुर्नाम, अकीर्ति।—कृत तत्० (गु०) अपकार प्राप्त।—कृति तत्० (स्त्री०) अपकार, अनुपकार।—कृष्ट तद्० (गु०) अधम, न्यून, नीचा, बुरा, निकृष्ट।—कृष्टता तद्० (स्त्री०) जघन्यता, निकृष्टत्व, नीचता।—क्रम तत्० (पु०) भागना, छूटना, क्रमविपर्यय, पलायन।—क्रोश तत्० (पु०) निन्दन, भर्त्सन। —गत तत्० (गु०) दूर गया, मुवा, मरा, मृत, दूरीभूत।—घात तद्० (पु०) हत्या, वध, मारना —चार तत्० (पु०) टोटा, घाटा, क्षति, क्षीणता। —चय तत्० (पु०) उवाक, अजीर्ण।—छाया तद्० (स्त्री०) प्रेत, उपदेवता।

ध्यान।—ा तत्० (स्त्री०) आन्दोलन, सुचिन्ता, अनुष्ठान। [वर्षा।

अनुस्वार [अनु+स्व+घञ्] तत्० (पु०) एक बिन्दु

अनुहार [अनु+हृ+घञ्] तत्० (पु०) सादृश्य अनुकरण। [श्राद्ध।

अनुहार्य [अनु+हृ+ण्यत्] तत्० (पु०) मासिक

अनूठा तद्० (गु०) अपूर्व नया, निराला।—पन (पु०) अनोखापन, विचित्रता।

अनूढ़ा [अन्+ऊढ़ा] तत्० (स्त्री०) कुँआरी, अविवाहिता।—गामी तत्० (पु०) व्यभिचारी, गणिका सेवी, लम्पट।

अनूप तत्० (पु०) जलप्लावित देश, सजल देश, उपमारहित।—ज तत्० (पु०) आर्द्रक, आदी, अदरक।—म तत्० (गु०) उपमारहित, अनोखा।

अनृत तत्० (गु०) झूठा, मिथ्या, असत्य, वितथ। —वादी तत्० (पु०) मिथ्यावादी।

अनेक [न+एक] (गु०) अधिक, विस्तर, बहु, भूरि, ढेर।—ज तत्० (पु०) द्विज, पक्षी, बहुजात। —ता तत्० (स्त्री०) भेद, विरोध, आधिक्य। —धा तत्० (अ०) बारंबार।—शः (अ०) अनेक प्रकार, बहु प्रकार।

अनैक्य [न+ऐक्य] तत्० (पु०) परस्पर असम्मिलन, एकता का अभाव, विरोध, असंयोग, एकारहित।

अनैस तद्० (पु०) अहित, बुराई।

अनैसे तद्० (क्रि० वि०) कुदृष्टि से।

अनोखा तद्० (गु०) अपूर्व, अद्भुत दुर्लभ।—पन (पु०) विचित्रता, अनूठापन।

अनोना तद्० (गु०) अलोना, नोनरहित। [पुष्टा।

अनौचित्य तत्० (पु०) उचित का अभाव, अयुक्त

अन्त तत्० (पु०) नाश स्वरूप, प्रान्त, शेष, समाप्ति, सीमा, निश्चय, अवयव। (गु०) समीप, निकट, अतिमनोहर।—ःकरण तत्० (पु०) हृदय, मन, चित्त, स्वान्त।—ःपाती तत्० (पु०) अन्तर्गत, बीचवाला, मध्यवर्ती, अनुभूत।—पुर तत्० (पु०) अवरोध, रनवास कोठरी।—शय्या तत्० (स्त्री०) भूमिशय्या—शरीर तत्० (पु०) आत्मा, चिदात्मा, सविशेष।—संज्ञा तत्० (स्त्री०) अनुभव, चेतना, चैतन्य।—सत्वा तत्० (स्त्री०) गर्भवती।—सलिल तत्० (पु०) अन्तर्जल, पृथिवीस्थजल, सरस्वती नदी।—श्वेत तत्० (पु०) हाथी।

अन्तक तत्० (पु०) नाशकर्ता, यम, काल।

अन्तकर तत्० (पु०) नाशकर, विनाशक।

अन्तकाल तत्० (पु०) मरने का समय।

अन्तक्रिया तत्० (स्त्री०) अन्त्येष्टि कर्म, मृतक क्रिया।

अन्तज तद्० (पु०) अन्त्यज तत्० (पु०) अधम, शूद्र से भी नीच। द्विजाति जो संस्कार विहीन होते हैं उनकी " अन्त्यज " संज्ञा मानी गई है।

अन्तड़ी तद्० (स्त्री०) अतड़ी आँतें, नाड़ी।

अन्ततः तत्० (अ०) शेषतः, निकृष्टपक्ष।

अन्तर तत्० (अ०) भीतर, अभ्यन्तर, मध्य, माँझ प्रान्त, स्वीकार, (पु०) मध्यवर्ती स्थान, सीमा, अवसर, परिधान, अन्तर्द्धान, विभिन्न, सहाय, छिद्र, स्वीय, आत्मीय, भेद विना, बहि, अन्तरात्मा, सुयोग, अवकाश, तुल्य, अनुरूप, अन्य, दूरत्व।

अन्तरङ्ग [अन्तर+अङ्ग] तत्० (पु०) आत्मीय, स्वजन, स्वसम्पर्की, सुहृद।—ता (स्त्री०) आत्मीयता, सौहार्द। [ईश्वर, परमात्मा।

अन्तरजामी तद्० (पु०) मन का हाल जानने वाला

अन्तरज्ञ तत्० (पु०) देखो अन्तरजामी।

अन्तरस्थ तत्० (गु०) भीतर वाला, भीतरी।

अन्तरा तत्० (पु०) चरण, मध्य का पद, निकट, मध्य, बीच, विना।

अन्तरातप तत्० (स्त्री०) अन्तरिया, तिजारी।

अन्तरात्मा तत्० (पु०) जीवात्मा, प्राण।

अन्तरापत्या तत्० (पु०) गर्भवती, गर्भिणी, गुर्विणी, द्विजीवा।

अन्तराय तत्० (पु०) बाधा, विघ्न, रुकावट।

अन्तराल तत्० (पु०) फाँक, अन्तर, भेद, मध्य, बीच, घिरा हुआ स्थान, मण्डल।

अन्तरिक्ष }
अन्तरिच्छ } तद्० (पु०) आकाश, गगन।

अन्तरित तत्० (पु०) भीतरी, आन्तरिक।

अन्तरीप तत्० (पु०) भूमि भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो।

अन्तरीक्ष तत्० (पु०) आकाश, गगन, शून्य, नभ।

अन्तरीय [अन्तर+ईय] तद्० (पु०) भीतर का, बिचला, मध्य का, परिधान वस्त्र।

अन्तरीया तद्० (स्त्री०) तिजारी, तीसरे दिन आने वाला ज्वर, अंतरा ज्वर। [पहिनने का वस्त्र।

अन्तरौटा दे० (पु०) महीन साड़ी या लहँगा के भीतर

अन्तर्गत तद्० (स्त्री०) मन की बात, पैठा मध्यस्थ।

अन्तर्गति तद्० (स्त्री०) मन के तरङ्ग, विस्मरण।

अन्तर्दशा तद्० (स्त्री०) फलित ज्योतिष में एक ग्रह के अन्तर्गत दूसरे ग्रह की दशा। [ज्वाला।

अन्तर्दाह तद्० (पु०) छाती की जलन, शरीर की

अन्तर्द्धान तद्० (पु०) अदर्शन, लुकाव, छिप जाना।

अन्तर्ध्यान तद्० (पु०) मानसिक ध्यान, मन सम्बन्धी ज्ञान।

अन्तर्पट (पु०) ओट, आड़, टट्टी, पर्दा।

अन्तर्भूत तद्० (पु०) मध्य में स्थापित, मध्यगत।

अन्तर्मनस तद्० (गु०) उदास, घबराया, व्याकुल।

अन्तर्यामी तद्० अन्तर्यामी तद्० (पु०) मन की बात बूझने हारा।

अन्तर्लापिका तद्० (स्त्री०) वह पहेली जिस का उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो।

अन्तर्वत्नी तद्० (स्त्री०) गर्भिणी, द्विजीवा।

अन्तर्वेद तद्० (पु०) गङ्गा यमुना के बीच का देश, ब्रह्मावर्त। [अन्तर्द्धान।

अन्तर्हित तद्० (गु०) छिपाव, लुकाव, अदरस,

अन्तिक तद्० (पु०) समीप, पास, निकट, सन्निधान।

अन्तिम [अन्त+इम्] तद्० (पु०) शेष, चरम, अवसान, अन्त वाला।—यात्रा तद्० (स्त्री०) मृत्यु, मरण, महाप्रस्थान, महायात्रा।

अन्तेवासी [अन्ते+वस्+णिन्] तद्० (पु०) विद्यार्थी, ब्रह्मचारी, प्रान्तस्थायी।

अन्त्य तद्० (गु०) शेष का, नीच, अधम जाति, अन्तिम, शेषोत्पन्न, जघन्य। —कर्म तद्० (पु०) प्रेतकर्म, शवदाहादि कर्म। —ज तद्० (पु०) शूद्र, रजकादि सप्त जाति यथा—रजक, चर्मकार, चमार, बरुड़, कैवर्त, मेद, भील, (गु०) जघन्यज जाति, अवग्र।—जन्मा तद्० (पु०) शूद्र, अपरवर्ण, जघन्य जाति।—स्थ तद्० (पु०) य र ल व ये वर्ण।

अन्त्याक्षरी तद्० (स्त्री०) किसी श्लोक में अन्तिम अक्षर से आरम्भ होने वाले श्लोक का कहना। उर्दू फारसी की बैतबाजी की तरह।

अन्त्येष्टि [अन्त्य+इष्टि] तद्० (पु०) प्रेत कर्म, शवदाहादि कर्म, मृत देह का अन्तिम संस्कार। —क्रिया तद्० (स्त्री०) शवदाह।

अन्त्र तद्० (स्त्री०) आँत, आँतड़ी, नाड़ी।—वृद्धि तद्० (स्त्री०) कोष वृद्धि रोग।

अन्दर दे० अभ्यन्तर, भीतर।

अन्दरूनी दे० (गु०) भीतरी।

अन्दाज दे० (पु०) अटकल, अनुमान।

अन्दाजन दे० अनुमान से, लगभग।

अन्देशा दे० सन्देह, संशय।

अन्ध तद्० (गु०) (१) नेत्रहीन, अचक्षु, अन्धा, सूरदास, मुनि विशेष। धृतराष्ट्र, ये जन्मान्ध थे। (२) वैश्य जातीय एक मुनि यह अयोध्या में सरयू के तीर पर रहते थे। एक शूद्रा कन्या के साथ इन्होंने अपना व्याह किया था और आश्रम में रहते थे। अयोध्याधिपति राजा दशरथ ने हाथी के भ्रम से अन्ध मुनि के पुत्र को शब्दवेधी बाण से निहत किया। बाणविद्ध पुत्र को पिता माता ने देख के अपने प्राण छोड़ दिये और राजा को शाप दिया कि तुम भी पुत्रवियोग ही से मरोगे।

अन्धक तद्० (पु०) देश विशेष, मुनि विशेष, असुर विशेष। यह दैत्य, कश्यप के औरस और दिति के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। देवताओं के द्वारा जब सब दैत्य मारे गये, तब दिति ने कश्यप से वर माँगा कि मेरे पुत्र को अवध्य बनाइये। कश्यप ने कहा 'तथास्तु'। वही पुत्र अन्धक था। इसके हजार बाहु हजार मस्तक, दो हजार नेत्र, और दो हजार, चरण थे। यह संसार का अति उत्पीड़न करता था। अन्त में महादेव के द्वारा निहत हुआ।

अन्धकार तद्० (पु०) अन्धेर, अँधियारा, प्रकाशाभाव, ध्वान्त, तिमिर।) [कूप, अन्धा कुँआ।

अन्धकूप तद्० (पु०) अन्धकार मय कूप, जलरहित

अन्धगोलाङ्गूल तद्० (पु०) अन्धे द्वारा गौ की पूँछ पकड़ कर चलने की क्रिया। जो दशा अन्धे का सहारा अन्धे द्वारा पकड़े जाने पर होती है, अर्थात्

दोनों गड्ढे में गिर पड़ते हैं, यही दशा अन्धगोलाङ्गूल की भी है।
अन्धड़ तद्० (पु०) आँधी, झड़, बतास, प्रचंड वात।
अन्धतमस तद्० (पु०) अत्यन्त अन्धकार, निविड़ अन्धकार, नरक विशेष। [नरक विशेष।
अन्धतामिस्र तद्० (पु०) निबिडान्धकार-युक्त
अन्धपरम्पराग्रस्त तद्० (पु०) अन्धों की परम्परा में मग्न, अज्ञानियों के अनुयायी। [का, काना।
अन्धला तद्० (गु०) अचक्षु, नयनहीन, बिन आँख
अन्धस तद्० (पु०) भात, रीधे हुए चावल।
अन्धाधुन्ध तद्० (पु०) अधिक करना, अनियम, अन्धों के समान करना। [आदि।
अन्धसुत तद्० (गु०) अन्धे का पुत्र, राजा दुर्योधन
अन्धार दे० (पु०) अन्धेरा, तम।
अन्धारी दे० (स्त्री०) आँधी। [अन्धकार।
अन्धियर या अन्धियारा तद्० (पु०) अँधेरा,
अन्धिसन्धि तद्० (पु०) छिद्र, छेद, मौका, गढ़ा।
अन्धु दे० (पु०) कूआ।
अन्धेर तद्० (गु०) अन्याय, उपद्रव, उत्पात, अन्धाधुन्ध, अन्याय।—खाता दे० (पु०) गड़बड़ हिसाब किताब, व्यतिक्रम, अन्याय, क्रमभङ्ग अविचार।
अन्धेरा तद्० (पु०) अँधियारा, ध्वान्त।
अन्धेरिया दे० (स्त्री०) अन्धकारमयी रात, अँधेरा पाख, ऊख की पहिली गोड़ाई।
अन्धेरी दे० घोड़े की आँख मूँदने की ढपनी। [ढपनी।
अन्धारी दे० (स्त्री०) घोड़े या बैल के आँखों की
अन्ध्यार दे० (पु०) तम, अन्धकार।
अन्ध्यारी दे० (स्त्री०) अन्धकारमयी।
अन्ध्र तद्० (पु०) बहेलिया, चिड़ीमार, शिकारी। दक्षिण देश का एक प्रान्त विशेष। एक राजवंश।
अन्न तद्० (पु०) ओदन, भात, अनाज, सूर्य।—कष्ट तद्० (पु०) दुर्भिक्ष।—कूट तद्० (पु०) पर्व विशेष, दिवाली के दूसरे दिन भात का पर्वत के समान ढेर लगाया जाता है।—क्षेत्र तद्० (पु०) वह जगह जहाँ भूखों को अन्न मिलता हो।—जल तद्० (पु०) अन्न पानी, खाना पीना, दाना पानी।—दान तद्० (पु०) आहार दान, अन्नव्यय।—दास तद्० (पु०) पेट के लिये दास बनने वाले, पेटू।—दाता तद्० (पु०) पालने हारा, रक्षक, अन्न का दान करने वाला।—पानी तद्० भोजन और जल।—पूर्णा तद्० (स्त्री०) अन्नाधिष्ठात्री, देवी, काशीश्वरी, विश्वेश्वरी।—प्राशन तद्० (पु०) संस्कार विशेष, बालक बालिकाओं को प्रथम अन्न खिलाना। छठें महीने यह संस्कार किया जाता है।—विकार तद्० (पु०) शुक्र, वीर्य, विष्ठा, मल।—ब्रह्म तद्० (पु०) अन्नस्वरूप ब्रह्म।—भाजन तद्० (पु०) भोजन करने का पात्र।—भिक्षा तद्० (स्त्री०) अन्न के लिये प्रार्थना।—भोक्ता तद्० (पु०) अन्न खाने वाला, जिसके साथ खान पान है।—मय तद्० (पु०) अन्नस्वरूप, अन्न द्वारा वर्धित।—रस तद्० (पु०) अन्न का सारभाग, माँड़, अन्न से पेट में रस उत्पन्न होता है।—लिप्सा तद्० (स्त्री०) क्षुधा, बुभुक्षा।—वस्त्र (पु०) भोजनाच्छादन।—क्षेत्र तद्० (पु०) अधिक अन्न, बहुत मनुष्यों का भोजन।—भाव तद्० (पु०) अन्न की अनवस्थिति, दुर्भिक्ष, अकाल, महँगी।—र्थी तद्० (पु०) भोजन के लिये अन्न माँगने वाला।—हारी तद्० (पु०) अन्नभोक्ता, अन्न भक्षक, अन्न खाने हारा।
अन्ना दे० (स्त्री०) उपमाता, धाय, धात्री।
अन्नी तद्० (स्त्री०) दाई, धाय, धात्री, उपमाता, एक आने का निकिलधातु का सिक्का।
अनमोल तद्० (गु०) अमूल्य, अति उत्तम।
अन्य तद्० (गु०) भिन्न, पृथक्, और, अपर, पर।—कृत तद्० (गु०) अन्य द्वारा अनुष्ठित, अन्य द्वारा किया हुआ, भिन्न सम्पादित।—गामी तद्० (पु०) व्यभिचारी परिवर्तन, बदला किया हुआ, पारदारिक, परस्त्रीगामी, लम्पट।—चारी तद्० (पु०) स्वधर्मत्यागी, कुपथगामी।—ज तद्० (पु०) कुयोनि, हीनजाति।—तः तद्० (अ०) अन्यत्र, स्थानान्तर।—त्र (अ०) कहीं, दूसरा ठाँव।—था तद्० (अ०) विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध, अन्य प्रकार, विपर्यय, परार्थ, मिथ्या, झूठ, वितथ, और प्रकार, उलटा। (२)—ख्याति तद्० (स्त्री०) अख्याति, दुष्कीर्त्ति, दुर्नाम। दर्शनों

में इस शब्द का प्रयोग आत्मविषयक मिथ्याज्ञान के अर्थ में होता है। आत्मा का अयथार्थ ज्ञान। —चरण तत्० (पु०) उलटा चलन, विपरीत व्यवहार, विरुद्ध आचरण, विपर्ययकरण।—सिद्धि तत्० (पु०) अभावनीय कर्मों की उत्पत्ति, एक प्रकार का हेत्वाभास तर्क विशेष, जिसमें असत्य युक्तियों के द्वारा कोई विषय सिद्ध किया गया हो।

अन्यदेशी या अन्यदेशीय तत्० (पु०) दूसरे देश के वासी, भिन्न देशी।

अन्यपुरुष तत्० (पु०) दूसरा आदमी,, व्याकरण में तीसरा पुरुष, वह, कोई।

अन्यपुष्ट तत्० (पु०) कोकिल, कोइल, पिक, पर पालित, दूसरे के द्वारा पालित।

अन्यपूर्वा तत्० (स्त्री०) परपूर्वा, जिस कन्या का एक वार विवाह हो जाने के अनन्तर पति के मरने पर पुनर्वार विवाह होता है, द्विरूढा, दो वार व्याही हुई।

अन्यभृत तत्० (पु०) काक, कौआ, कोइल, पिक।

अन्यादृश तत्० (गु०) अन्य प्रकार, भिन्नरूप, विलक्षण।

अन्यमनस या अन्यमनस्क तत्० (पु०) अन्यचिन्तक, चपल, अन्यचित, अन्यमना।

अन्यमनस्कता तत्० (स्त्री०) अन्यमनस्क होना, दूसरी ओर मन लगाना, प्रस्तुत बात पर असावधानी।

अन्यान्य तत्०(गु०) अपरापर, भिन्न भिन्न, दूसरे दूसरे, और और।

अन्याय तत्० (पु०) उपद्रव, अविचार, न्याय वहिर्भूत अनुचित।—ी तत्० (पु०) अन्यायकारी। अत्याचारी, दुर्दान्त, अधर्मी, न्यायशून्य, न्याय रहित, दुष्ट।

अन्योक्ति तत्० (स्त्री०) कथन विशेष जिसमें अन्य के विषय में कथन करते हुए वह कथन अन्य पर घटाया जाय।

अन्योन्य तत्० (गु०) परस्पर, उभयतः मिलाप। —भेद तत्० (पु०) परस्पर का भेद, आपस का भेद, विरोध।—श्रय तत्० (पु०) एक वस्तु के ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान, परस्पर ज्ञान सापेक्ष, ज्ञानाश्रय, अपने ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान और उस वस्तु के ज्ञान से अपना ज्ञान।

अन्वय तत्० (पु०) वंश, कुल, पदच्छेद, सन्तति।—ज्ञ तत्० (गु०) वंशावलि जानने वाला, वन्दी, भाट। —ी तत्० (गु०) संबन्ध विशिष्ट, सम्पर्की, पश्चाद्वर्त्ती।

अन्वह तत्० (पु०) नित्य, प्रत्यह, प्रतिदिन।

अन्वाचय तत्० (गु०) संयोजित, संयुक्त, द्वन्द्व, समास का एक भेद।

अन्वित तत्० (गु०) युक्त, संबन्धित, पूरा, मिला [हुआ।

अन्वीक्षण तत्० (पु०) ढूँढ़ना, पता लगाना, अनुसन्धान।

अन्वेषण तत्० (पु०) खोजना, पता लगाना, अनु- [सन्धान करना।

अन्हवाना तद्० (क्रि०) स्नान कराना, धुलाना।

अन्हान तद्० (पु०) स्नान, धोवन।

अन्होना तद्० (पु०) असाध्य, असम्भव, जो न हो सके।

अप तत्० (पु०) जल, पानी (उपसर्ग) नीच, अधम, बुरा, भ्रंस, असम्पूर्णता, विकृत, त्याग, वर्जनार्थ, अपकृष्टार्थ, वियोग, विपर्यय, चौर्यनिर्देश, यशकर्म, हर्ष अनिर्देश्य प्रश्न।—कर्म तत्० (पु०) दुष्कर्म, अनिष्टकर्म, कुकर्म, कुचलन।—कर्ष तत्० (पु०) जघन्यता, छुटाई, मुख्य काल के रहते अमुख्य काल में कर्म करना।—कर्षण तत्० (पु०) खींचना, टानना।—कलङ्क तत्० (पु०) अपयश, कलङ्क, मिथ्यापवाद, दुर्नाम।—काजी दे० (पु०) स्वार्थी, मतलबी।—कार तत्० (पु०) अनिष्ट, हानि क्षति, अनुपकार।—कारक—कारी तत्० (पु०) बुरा करने वाला, अनिष्टकारी।—कीर्त्ति तत्० (स्त्री०) अयश, अख्याति, दुर्नाम, अकीर्ति।—कृत तत्० (गु०) अपकार प्राप्त।—कृति तत्० (स्त्री०) अपकार, अनुपकार।—कृष्ट तत्० (गु०) अधम, न्यून, नीचा, बुरा, निकृष्ट।—कृष्टता तत्० (स्त्री०) जघन्यता, निकृष्टता, नीचता।—क्रम तत्० (पु०) भागना, छूटना, क्रमविपर्यय, पलायन।—क्रोश तत्० (पु०) निन्दन, भर्त्सन। —गत तत्० (गु०) दूर गया, मुवा, मरा, मृत, दूरीभूत।—घात तत्० (पु०) हत्या, वध, मारना —चार तत्० (पु०) टोटा, घाटा, क्षति, चीखना। —चय तत्० (पु०) उदाक, अजीर्ण।—छाया तत्० (स्त्री०) प्रेत, उपच्छाया।

अपक तद्० (गु०) कच्चा, अनभ्यस्त ।

अपगत तद्० (गु०) चला गया हुआ, भागा हुआ, गत, दूर, नष्ट, मरा हुआ ।

अपगा तद्० (स्त्री०) नदी ।

अपघात तद्० (पु०) धोखा, हत्या, विश्वासघात, हिंसा ।—क (पु०) विश्वासघाती, घातक ।

अपच तद्० (पु०) अजीर्ण ।

अपञ्चीकृत तद्० (पु०) सूक्ष्मभूत, आकाश आदि पाँच भूतों के पृथक् पृथक् भाग ।

अपछरा तद्० (स्त्री०) अप्सरा ।

अपजय तद्० (स्त्री०) हार, पराजय ।

अपजस तद्० (पु०) बदनामी, अपयश ।

अपटक (पु०) अदोही पक्षपाती ।

अपटी तद्० (स्त्री०) वस्त्रावरण, कनात, तम्बू ।

अपटु तद्० (पु०) अचतुर, निर्बुद्धि, अकुशल, अनिपुण, व्याधित, रोगी ।

अपठ तद्० (पु०) अनभ्यास, अनपढ़ा, मूर्ख ।

अपठित तद्० (गु०) अशिक्षित, अध्ययन रहित ।

अपड दे० (पु०) स्थायी, अटल, पोढ़ा, दृढ़ ।

अपडर तद्० (पु०) मिथ्या भय, निष्कारण डर ।

अपढ़ दे० (गु०) अनाड़ी, मूर्ख, अनपढ़ा हुआ ।

अपत तद्० (गु०) पापी, अप्रतिष्ठित ।

अपति तद्० (स्त्री०) अनादर, अपमान ।

अपतियारा दे० (गु०) विश्वासघातक, कपटी ।

अपत्य तद्० (पु०) सन्तान, बेटा, लड़का, जिसकी स्थिति से पितर गिरने न पावें, पुत्र, कन्या ।—शत्रु तद्० (पु०) कर्कट; केकड़ा ।—स्नेह तद्० (पु०) पुत्र और कन्या के प्रति स्वाभाविक मोह ।

अपत्रप तद्० (गु०) लज्जाहीन, निर्लज्ज, नहीं लजाने वाला ।

अपथ तद्० (पु०) कुमार्ग, मार्ग-रहित ।

अपथ्य तद्० (गु०) अहितकारक भोजन, रोग बढ़ाने वाले पदार्थ ।—भोजी तद्० (पु०) कुपथ्य भोक्ता, कुपथ्यअभिलाषी ।

अपद् तद्० (गु०) पदरहित, पंगु, कर्मच्युत, (पु०) सर्प, कृमि ।—स्थ तद्० (गु०) स्थान भ्रष्ट, कर्मच्युत, पदच्युत, अपने पद से हटाया गया ।

अपदार्थ तद्० (पु०) अयोग्य वस्तु, अवस्तु, पदार्थ भिन्न, अनुपम पदार्थ । [देवता ।

अपदेवता तद्० (पु०) प्रेत, पिशाच आदि, निकृष्ट

अपदेश तद्० (पु०) छल, कपट, बहाना ।

अपध्वंसक तद्० (पु०) घिनौना, अपयशकारी ।

अपध्वस्त तद्० (पु०) अपमानित, परास्त ।

अपनयन तद्० (पु०) [अप+नी+अनट्] अपनय, खण्डन, दूरीकरण, मरण, निष्कृति ।

अपना तद्० (सर्व०) स्वकीय, निजका, स्व ।—पन दे० (पु०) स्वमतता, आत्मीयता । [ओढ़ना ।

अपनाना (क्रि० स०) अपनायना, अपना सम्बन्ध

अपनायत तद्० (स्त्री०) नाता, गोता, घराना, सम्बन्ध, भाईचारा । [अपमानित ।

अपनीत तद्० (गु०) हटाया गया, दूरीकृत,

अपवश तद्० (गु०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, अपने वश में ।

अपभय तद्० (पु०) भय, डर, अपना डर, निर्भय, विगत भय । [अपभ्रष्ट शब्द ।

अपभाषा तद्० (स्त्री०) गँवारी बोली, कुवाक्य,

अपभ्रंश तद्० (पु०) अपशब्द, प्राकृत, व्याकरण विरुद्ध शब्द, अशुद्ध शब्द, ग्राम्य भाषा ।

अपमान तद्० (पु०) अमर्यादा, तिरस्कार, अनादर, असम्मान ।—ित तद्० (पु०) अपमान प्राप्त, मानहीन, बेइज्जत किया हुआ ।

अपमृत्यु तद्० (स्त्री०) रोग के बिना मरण, अपघात मरण, अस्वाभाविक कारणों से अकाल मृत्यु । [दुर्नाम, अख्याति ।

अपयश तद्० अपजस तद्० (पु०) अपकीर्ति,

अपर तद्० (गु०) इतर, अन्य, पर, भिन्न, दूसरा ।

अपरञ्च तद्० (अ०) और भी, फिर भी ।

अपरग तद्० (पु०) अन्यमार्गी, अन्यगामी, व्यभिचारी ।

अपरना तद्० अपर्णा तद्० (स्त्री०) बिना पत्ते वाली, उमा, पार्वती, भवानी । [अशेष ।

अपरम्पार तद्० (पु०) अपार, अनन्त, असीम,

अपरस तद्० (गु०) अस्पृश्य, न छूने योग्य ।

अपरा तद्० (स्त्री०) लौकिक विद्या, पदार्थ विद्या, पश्चिम दिशा । एकादशी विशेष का नाम, (वि०) दूसरी । [पराभव हीनता ।

अपराजय तद्० (पु०) अपराभव, अजीत, जीत,

अपराजित तद्० (गु०) जो जीता न जाय, अजेय, अनिर्जित। (पु०) विष्णु, ऋषिविशेष, शिव। —ा तद्० (स्त्री०) दुर्गा, जयन्ती वृक्ष, शतपर्णी, स्वल्पफला, विष्णुक्रान्ता, शेफाली, शमी भेद, शङ्खिनी, ईशानकोण लता विशेष।

अपराध तद्० (पु०) दोष, अधर्म, पाप, अन्याय। —ी तद्० (पु०) पापी, दोषी, अन्यायी।

अपराधीन तद्० (गु०) स्वाधीन, जो परतन्त्र नहीं है। [पहर।

अपराह्न तद्० (पु०) दिन का शेष भाग, तीसरा

अपरिगृहीता तद्० (स्त्री०) कुलस्त्री, विवाहिता स्त्री, जो परिगृहीत न हो।

अपरिग्रह तद्० (पु०) अप्रतिग्रह, अस्वीकार।

अपरिचय तद्० (गु०) अज्ञात, अजान।

अपरिचित तद्० (गु०) अज्ञात, अदृष्ट जिसके साथ सम्भाषण न हुआ हो, जिससे जान पहिचान न हो।

अपरिच्छद तद्० (गु०) हीनवस्त्र, मलिन वसन, अनुपयुक्त वेश।

अपरिच्छिन्न तद्० (वि०) जुड़ा, अनन्त, मिला हुआ।

अपरिणत तद्० (वि०) अपरिपक्व, कच्चा, ज्यों का त्यों।

अपरिणीत तद्० (पु०) अविवाहित, कुमार, क्वारा, —ा (स्त्री०) अविवाहिता, कन्या, अनूढ़ा। [रहित।

अपरितुष्ट तद्० (गु०) असन्तुष्ट निरानन्द, तृप्ति-

अपरिपक्व तद्० (गु०) अपक्व, परिपाकहीन, अपटु।

अपरिपाटी तद्० (स्त्री०) अनरीति, कुढङ्ग।

अपरिमित तद्० (गु०) परिमाणहीन, अधिक, प्रचुर।

अपरिमेय तद्० (वि०) जिसका नाप या तौल न हो सके, अतुल्य।

अपरिम्लान तद्० (गु०) म्लानरहित, खिला हुआ।

अपरिष्कार तद्० (पु०) मलिन, मैला कुचैला, अनिर्मल, अशुद्ध, अस्पष्ट।

अपरिसर तद्० (गु०) सङ्कीर्ण, सङ्कोचित।

अपरीक्षित तद्० (गु०) अनजाँचा हुआ, जिसकी जाँच न हुई हो।

अपरुद्ध तद्० (गु०) भेजी, पदच्युत, पश्चात्तापी, क्रुद्ध अपमान। [रूप।

अपरूप तद्० (गु०) आश्चर्य रूप, अद्भुत रूप, विरूप

अपरोक्ष तद्० (गु०) प्रत्यक्ष, समक्ष, आँखों के सामने।

अपर्णा तद्० (देखो अपरना) पार्वती।

अपर्याप्त तद्० (गु०) स्वल्प, थोड़ा, न्यून।

अपलज्ज तद्० (पु०) बेहया, निर्लज्ज, नकचढ़ा।

अपलक्षण तद्० (पु०) कुलक्षण, अपशकुन।

अपलाप तद्० (पु०) असत्य, असत्य कहना, छिपाना, ऊटपटाँग बकना। [अपयश, दुर्गति।

अपलोक तद्० (पु०) अपना लोक, निज का लोक,

अपवर्ग तद्० (गु०) मोक्ष, परमगति, मुक्ति, क्रिया प्राप्ति, या क्रिया की समाप्ति, निर्जन।

अपवर्तन तद्० (पु०) अपवर्त, संक्षेप करण, अल्प करण, छेद देन, अंक काटना।

अपवाद तद्० (पु०) निन्दा, दोष, कुत्सा, कलङ्क। —क तद्० (गु०) निन्दक। —ित तद्० (गु०) दुर्नामग्रस्त, परिवाद युक्त। —ी तद्० (पु०) निन्दक। [कर्म, ओट।

अपवारण तद्० (पु०) रोक, हटाने या दूर करने का

अपवाहन तद्० (पु०) दुष्ट वाहन, फुसला के लाना, भगा देना, एक राज्य से भगा कर दूसरे राज्य में बसाना।

अपवित्र तद्० (गु०) अशुद्ध, पवित्रतारहित, कुलहारा। —ता तद्० (स्त्री०) अशुद्धता।

अपविद्ध [अप्+विध्+क्त] तद्० (गु०) प्रत्याख्यात, निराकृत, चूर्णित, त्यक्त। —पुत्र तद्० (पु०) बारह प्रकार के गौण पुत्रों में से एक पुत्र विशेष, मातृ पितृ-रहित पुत्र, पिता माता से छोड़ा हुआ पुत्र।

अपव्यय तद्० (पु०) वृथा व्यय, कुकर्म में धन फेंकना। —ी तद्० (गु०) निरर्थक. अर्थनाशक, बहुत ख़र्च करने वाला। [चिन्ह।

अपशकुन तद्० (पु०) अमङ्गल लक्षण, अशुभ-सूचक

अपशद तद्० (पु०) अपसद, नीच,। यह शब्द जिस शब्द के अन्त में आता है उस शब्द का नीच अर्थ कर देता है। यथाः—धृतराष्ट्रापशद = नीच धृतराष्ट्र, ब्राह्मणापशद = नीच ब्राह्मण।

अपशब्द तद्० (पु०) अशुद्ध शब्द, गाली, निन्दासूचक शब्द अपान वायु, दूसरी भाषाओं के शब्द, निन्दित शब्द।

अपसगुन दे० (पु०) (देखो अपशकुन)
अपसना दे० (क्रि०) सरकना, खसकना, भाग जाना।
अपसर तद्० (क्रि०) सटकना, दासकन्य दे० (पु०) मनमाना, अपने मन का।
अपसरण तद्० (पु०) प्रस्थान, चला जाना।
अपसव्य तद्० (गु०) शरीर का दाहिना हिस्सा, वाम इतर, बाँया हाथ।
अपसर्प तद्० (पु०) चर, प्रणिधि, गूढ़ पुरुष, हरकारा, दूत।
अपस्मार तद्० (पु०) मृगीरोग, मूर्छा, वायु रोग विशेष।
अपस्वार्थी तद्० (वि०) खुदगरज़, स्वार्थी, मतलबी।
अपहनन तद्० (पु०) हत्या, वध, घात।
अपहरई तद्० (क्रि०) चुराता है, नाश करता है, चुरा ले, छीन ले, नाश करे।
अपहरण तद्० (पु०) हर लेना, लूटना, चोरी, चौर्य।
अपहर्ता [अप+हृ+तृच्] तद्० (पु०) तस्कर अपहारक, चोट्टा, लुटेरा। [गया।
अपहरित तद्० (गु०) छीन लिया गया, हर लिया
अपहा तद्० (गु०) [अप्+हन्+आ] हन्ता, हत्याकारी, हिंसक, वधिक।
अपहार तद्० (पु०) [अप्+हृ+घञ्] अपचय, हानि, धन का निष्कारण व्यय।—ी तद्० (पु०) अपहारक।—क तद्० (गु०) अपहरण कर्ता। (पु०) तस्कर, चोर।
अपहास दे० (पु०) उपहास, मज़ाक, दिल्लगी।
अपह्नव तद्० (पु०) इनकार, कपट, छिपाव, गोपन, अपलाप।
अपह्नुति तद्० (स्त्री०) अपलाप, अपह्नव काव्य का अर्थालङ्कार विशेष। यथा—"आरोपिय जु भ्रम, (धर्म) दूरे आदि कवि शुद्धापह्नुति कहत ताही"।
अपहृत तद्० (गु०) छीना हुआ, चुराया हुआ।
अपांनिधि तद्० (पु०) समुद्र, सागर।
अपाक तद्० (गु०) अपचार, अजीर्णता, (पु०) उदरामय, अपक्व, आम, असिद्ध।
अपाकरण तद्० (पु०) पृथक् करना, अलगाना, हटाना, दूर करना, चुकता करना।
अपाङ्ग तद्० (पु०) नेत्र का अन्त भाग, नेत्रकोण, कटाक्ष।—दर्शन (पु०) टेढ़ा देखना, कटाक्ष अवलोकन।
अपाटव तद्० (पु०) अपटुता, अनिपुणता, अपटुताई, भोंदापन, मूर्खता। [निर्णय, जातिभ्रष्ट करना।
अपात्र तद्० (गु०) कुपात्र, अयोग्य, अनारी, असत्पात्र, अयोग्य।—ीकरण तद्० (पु०) नवविधि पापों में से एक पाप विशेष, अन्यथा निर्णय, जाति भ्रष्ट करना। [न्तरी करण।
अपादान तद्० (पु०) ग्रहण, कारक विशेष, स्थाना-
अपान तद्० (पु०) पाद, मलद्वारस्थ वायु, अपान देशीय पवन, अपान, वायु, गुह्यस्थान।—वायु तद्० (पु०) पाँच प्रकार के वायु में से एक गुदास्थ वायु।
अपाप तद्० (गु०) निर्दोष, धर्मी, निष्पाप।
अपामार्ग तद्० (पु०) चिचड़ा, चिचड़ी, अघाझारा, लटजीरा।
अपाय तद्० (पु०) नाश, क्षय, हानि, विश्लेष, अपचय, अनिष्ट पलायन।—ी तद्० (गु०) सृत, चलित, पलायित।
अपार तद्० (गु०) पारावार-हीन, असीम, कूलरहित, अनन्त।—क तद्० (पु०) अक्षम, क्षमता-शून्य।
अपार्थक्य तद्० (पु०) अभिन्नता, अभेद, पृथक्ता-शून्य, एकत्व।
अपावन तद्० (गु०) अशुद्ध, अपवित्र, अशुचि।
अपाश्रय तद्० (गु०) अनाथ, दीन, निराश्रय, आश्रय-रहित।
अपाश्रित तद्० (गु०) त्यागी, एकान्तसेवी। [आलसी।
अपाहिज या अपाहज दे० (गु०) लूला, लँगड़ा,
अपि तद्० (उपसर्ग) निश्चयार्थक।—च तद्० (अ०) और वाक्यान्तरद्योतक।—तु तद्० (अ०) किन्तु।
अपिधान तद्० (पु०) ढकना, आवरण।
अपीन तद्० (गु०) हलका, क्षीण, कृश।
अपीनस तद्० (पु०) नाक का रोग विशेष, पीनस।
अपील दे० (स्त्री०) पुनर्विचार के लिये निवेदन, किसी एक निम्न न्यायालय के किये हुए न्याय के पुनर्विचार के लिये उच्च न्यायालय में प्रार्थना।—न्ट अपील करने वाला।

अपुत्र तत्० (गु०) निर्वंश, पुत्रहीन, सन्तानरहित।
अपुनपो दे० (पु०) अपनापन, अपौती, अपनाइत।
अपूप तत्० (पु०) यज्ञीय हविष्यान्न विशेष, पुआ।
अपूर्ण तत्० (वि०) जो पूरा या भरा न हो, अधूरा, असमास।—भूत तत्० (पु०) क्रिया का वह भूत काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाय।
अपूर्व तत्० (गु०) आश्चर्य, उत्तम, अनुपम। तद्० (गु०) अपूत।—ता तत्० (स्त्री०) विलक्षणता, अनौखापन।
अपेक्ष तत्० (गु०) अदृश्य, अलक्ष, अदृष्ट।
अपेय तद्० (गु०) पीने के योग्य नहीं, पान निषिद्ध।
अपेल तद्० (गु०) अचल, न टालने योग्य, न हटाने योग्य, मानने योग्य।
अपेक्षा तत्० (स्त्री०) अन्य सम्बन्ध, अनुरोध, आकांक्षा, आशा।—कृत तत्० (गु०) अन्य के द्वारा तुलित, अन्य से विवेचित।—बुद्धि तत्० (स्त्री०) अनेक विषयों को एक करने वाली बुद्धि।
अपेक्षित तत्० (गु०) प्रतीक्षित, चाहा हुआ।
अपोहन तत्० (पु०) तर्क के द्वारा बुद्धि को परिमार्जित करना। [हीन, नपुंसक।
अपौरुष तत्० (पु०) कापुरुषत्व, अमानुस, पुरुषार्थ-
अप्रकाश तत्० (गु०) अप्रगट, अप्रसिद्ध, गुप्त, छिपा।
अप्रकाश्य तत्० (गु०) गोपनीय, न प्रकाश करने योग्य।
अप्रकृत तत्० (वि०) बनावटी, अस्वाभाविक, कृत्रिम।
अप्रगल्भ तत्० (वि०) अप्रौढ़, बच्चा, विरुत्साहित।
अप्रचलित तत्० (गु०) अप्रयुक्त, जिसका चलन न हो।
अप्रणय तत्० (पु०) प्रीतिच्छेद, विवाद भेद, अमीत, प्रकरण भिन्न, अप्रेम, अप्रीति।
अप्रताप तत्० (गु०) तेजहीन, अप्रबल, अप्रचण्ड।
अप्रतिम तत्० (गु०) असादृश्य, अतुल्य, निरुपम, अनुपमेय, असमान, बेजोड़। [अपमान।
अप्रतिष्ठा तत्० (स्त्री०) बेइज्जती, अनादर,
अप्रतिष्ठित तत्० (गु०) अपमानित, अनादृत, तिरस्कृत।
अप्रतिरथ तत्० (पु०) यात्रा गमन, सैनिक गमन, सामवेद, अप्रतिद्वन्द्व, योद्धा, योद्धारहित।
अप्रतिहत तत्० (गु०) अनाघात अवाधित, अव्याति क्रम।—त तत्० (वि०) जो प्रतिहत न हो, अपराजित।
अप्रतीति तत्० (गु०) विश्वास के अयोग्य, अज्ञान, अश्रद्धेय।
अप्रतुल तत्० (पु०) अभाव, असंगति।
अप्रत्यक्ष तत्० (गु०) प्रत्यक्ष का अगोचर, अदृष्ट, परोक्ष, अलक्षित, नहीं देखा।
अप्रत्यय तत्० (पु०) अविश्वास, सन्देह।
अप्रथा तत्० (स्त्री०) अव्यवहार, छिपाव।
अप्रधान तत्० (गु०) गौण, कनिष्ठ, जघन्य, क्षुद्र।
अप्रमाण तत्० (पु) अनिदर्शन, अदृष्टान्त, अग्राह्य।
अप्रसन्न तत्० (गु०) असन्तुष्ट, दुःखी, मलिन, गदला, मैला।
अप्रसाद तत्० (पु०) निग्रह, असम्मति। [ख्यात।
अप्रसिद्ध तत्० (गु०) गोप्य, अप्रकट, गुप्त, अवि-
अप्रस्तुत तत्० (वि०) अनुपस्थित, गैरहाज़िर।—प्रशंसा तत्० (पु०) एक अर्थालङ्कार जिसमें अप्रस्तुत के द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाता है।
अप्राकृत तत्० (गु०) अस्वाभाविक, असाधारण।
अप्राप्त तत्० (गु०) दुर्लभ, अनागत, अलभ्य।
अप्राप्य तत्० (गु०) अलभ्य, न मिलने लायक।
अप्रामाणिक तत्० (गु०) विश्वास न करने योग्य, प्रमाणशून्य।
अप्रासङ्गिक तत्० (वि०) प्रसङ्ग-विरुद्ध।
अप्रिय तत्० (गु०) अहित, अनचाहा, अनभीष्ट। (पु०) शत्रु।—वचन तत्० (पु०) निष्ठुर वाक्य कुवाक्य।—वक्ता तत्० (पु०) निष्ठुरभाषी, उग्रवक्ता।
अप्रीति तत्० (स्त्री०) अप्रणय, असद्भाव, अप्रेम, अरुचि, वैर। —कर तत्० (पु०) अरुचिकर, निठुर, कठोर।
अप्रैल दे० (पु०) अँगरेज़ी चौथे मास का नाम।
अप्सरा तत्० (स्त्री०) स्वर्ग की नर्तकी, स्वर्गवेश्या, तिलोत्तमा, घृताची, रम्भा आदि।
अफरा दे० (पु०) फूलना, पेट फूलना, अजीर्ण या वायु से पेट फूलने का रोग।
अफराई तद्० (स्त्री०) अघाना, अफरना, परितृप्ति।
अफराना तद्० (स्त्री०) अघाना, तृप्ति करना।
अफल तत्० (गु०) वृथा, निष्फल, फलरहित, बन्ध्या, झाड़ का वृक्ष।—ा तत्० (स्त्री०) आमलकी वृक्ष, घृतकुमारी, भेंड़यार।

अपसगुन दे० (पु०) (देखो असगुन)
अपसना दे० (क्रि०) सरकना, खसकना, भाग जाना।
अपसर तद्० (क्रि०) सरकना, खसकना दे० (पु०) मनमाना, अपने मन का।
अपसरण तद्० (पु०) प्रस्थान, चला जाना।
अपसव्य तद्० (गु०) शरीर का दाहिना हिस्सा, वाम दक्ष, बाँया हाथ।
अपसर्प तद्० (पु०) चर, प्रणिधि, गुप्त पुरुष, हरकारा, दूत।
अपस्मार तद्० (पु०) मृगीरोग, मूर्छा, वायु रोग विशेष।
अपस्वार्थी तद्० (वि०) मुदगरज़, स्वार्थी, मतलबी।
अपहनन तद्० (पु०) हत्या, वध, घात।
अपहरई तद्० (क्रि०) चुराता है, नाश करता है, चुरा ले, छीन ले, नाश करे।
अपहरण तद्० (पु०) हर लेना, लूटना, चोरी, चौर्य।
अपहर्ता [अप+हृ+तृच्] तद्० (पु०) तस्कर अपहारक, चोट्टा, लुटेरा। [गया।
अपहरित तद्० (गु०) छीन लिया गया, हर लिया
अपहा तद्० (गु०) [अप्+हन्+आ] हन्ता, हत्या-कारी, हिंसक, वधिक।
अपहार तद्० (पु०) [अप्+हृ+घञ्] अपचय, हानि, धन का निष्कारण व्यय।—ी तद्० (पु०) अपहारक।—क तद्० (गु०) अपहरण कर्ता। (पु०) तस्कर, चोर।
अपहास दे० (पु०) उपहास, मज़ाक, दिल्लगी।
अपह्नव तद्० (पु०) इनकार, मुकरना, छिपाव, गोपन, अपलाप।
अपह्नुति तद्० (स्त्री०) अपलाप, अपह्नव काव्य का अर्थालङ्कार विशेष। यथा—"आरोपित्ति शु भ्रम, (धर्म) दूरै आदि कवि शुद्धापह्नुति कहत ताही"।
अपहृत तद्० (गु०) छीना हुआ, चुराया हुआ।
अपांनिधि तद्० (पु०) समुद्र, सागर।
अपाक तद्० (गु०) अपचार, अजीर्णता, (पु०) उदरामय, अपक्व, आम, असिद्ध।
अपाकरण तद्० (पु०) पृथक् करना, अलगाना, हटाना, दूर करना, चुकता करना।
अपाङ्ग तद्० (पु०) नेत्र का अन्त भाग, नेत्रकोण, कटाक्ष।—दर्शन (पु०) टेढ़ा देखना, कटाक्ष अवलोकन।
अपाटव तद्० (पु०) अपटुता, अनिपुणता, अचतुराई, रोगादि, मूर्खता। [निर्णय, जातिभ्रष्ट करना।
अपात्र तद्० (गु०) कुपात्र, अयोग्य, अनारी, असत्पात्र, अयोग्य।—ीकरण तद्० (पु०) नवविधि पापों में से एक पाप विशेष, अथवा निर्णय, जाति भ्रष्ट करना। [न्तरी करण।
अपादान तद्० (पु०) ग्रहण, कारक विशेष, स्थाना-
अपान तद्० (पु०) पाद, मलद्वारस्थ वायु, अपान देशीय पवन, अपान, वायु, गुह्यस्थान।—वायु तद्० (पु०) पाँच प्रकार के वायु में से एक गुदास्थ वायु।
अपाप तद्० (गु०) निर्दोष, धर्मी, निष्पाप।
अपामार्ग तद्० (पु०) चिचड़ा, चिचड़ी, अघाझारा, लटजीरा।
अपाय तद्० (पु०) नाश, क्षय, हानि, विश्लेष, अपचय, अनिष्ट पलायन।—ी तद्० (गु०) गत, चलित, पलायित।
अपार तद्० (गु०) पारावार-हीन, असीम, कूलरहित, अनन्त।—क तद्० (पु०) अक्षम, क्षमता-शून्य।
अपार्थक्य तद्० (पु०) अभिन्नता, अभेद, पृथक्ता-शून्य, एकत्व।
अपावन तद्० (गु०) अशुद्ध, अपवित्र, अशुचि।
अपाश्रय तद्० (गु०) अनाथ, दीन, निराश्रय, आश्रय-रहित।
अपाश्रित तद्० (गु०) त्यागी, एकान्तसेवी। [आलसी।
अपाहिज या अपाहज दे० (गु०) लूला, लँगड़ा,
अपि तद्० (उपसर्ग) निश्चयार्थक।—च तद्० (अ०) और वाक्यान्तरद्योतक।—तु तद्० (अ०) किन्तु।
अपिधान तद्० (पु०) ढकना, आवरण।
अपीन तद्० (गु०) हलका, क्षीण, कृश।
अपीनस तद्० (पु०) नाक का रोग विशेष, पीनस।
अपील दे० (स्त्री०) पुनर्विचार के लिये निवेदन, किसी एक निम्न न्यायालय के किये हुए न्याय के पुनर्विचार के लिये उच्च न्यायालय में प्रार्थना।—न्ट अपील करने वाला।

अपुत्र तद्० (गु०) निर्वंश, पुत्रहीन, सन्तानरहित।
अपुनपो दे० (पु०) अपनापन, अपौती, अपनाहत।
अपूप तद्० (पु०) यज्ञीय हविष्यान्न विशेष, पुआ।
अपूर्ण तद्० (वि०) जो पूरा या भरा न हो, अधूरा, असमाप्त।—भूत तद्० (पु०) क्रिया का वह भूत काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाय।
अपूर्व तद्० (गु०) आश्चर्य, उत्तम, अनुपम। तद्० (गु०) अपूत।—ता तद्० (स्त्री०) विलक्षणता, अनोखापन।
अपेख तद्० (गु०) अदृश्य, अलक्ष, अदृष्ट।
अपेय तद्० (गु०) पीने के योग्य नहीं, पान निषिद्ध।
अपेल तद्० (गु०) अचल, न टालने योग्य, न हटाने योग्य, मानने योग्य।
अपेक्षा तद्० (स्त्री०) अन्य सम्बन्ध, अनुरोध, आकांक्षा, आशा।—कृत तद्० (गु०) अन्य के द्वारा तुलित, अन्य से विवेचित।—बुद्धि तद्० (स्त्री०) अनेक विषयों को एक करने वाली बुद्धि।
अपेक्षित तद्० (गु०) प्रतीक्षित, चाहा हुआ।
अपोहन तद्० (पु०) तर्क के द्वारा बुद्धि को परिमार्जित करना। [हीन, नपुंसक।
अपौरुष तद्० (पु०) कापुरुषत्व, असाहस, पुरुषार्थ-
अप्रकाश तद्० (गु०) अप्रगट, अप्रसिद्ध, गुप्त, छिपा।
अप्रकाश्य तद्० (गु०) गोपनीय, न प्रकाश करने योग्य।
अप्रकृत तद्० (वि०) बनावटी, अस्वाभाविक, कृत्रिम।
अप्रगल्भ तद्० (वि०) अप्रौढ़, कच्चा, निरुत्साहित।
अप्रचलित तद्० (गु०) अप्रयुक्त, जिसका चलन न हो।
अप्रणय तद्० (पु०) प्रीतिच्छेद, विषाद भेद, अप्रीत, प्रकरण भिन्न, अप्रेम, अप्रीति।
अप्रताप तद्० (गु०) तेजहीन, अप्रबल, अप्रचण्ड।
अप्रतिम तद्० (गु०) असादृश्य, अतुल्य, निरुपम, अनुपमेय, असमान, बेजोड़। [अपमान।
अप्रतिष्ठा तद्० (स्त्री०) बेइज्जती, अनादर,
अप्रतिष्ठित तद्० (गु०) अपमानित, अनादृत, तिरस्कृत।
अप्रतिरथ तद्० (पु०) यात्रा गमन, सैनिक गमन, सामवेद, अमङ्गल, योद्धा, योद्धारहित।
अप्रतिहत तद्० (गु०) अनाघात, अवज्ञित, अन्यतिक्रम।—त तद्० (वि०) जो प्रतिहत न हो, अपराजित।

अप्रतीति तद्० (गु०) विश्वास के अयोग्य, अज्ञान, अश्रद्धेय।
अप्रतुल तद्० (पु०) अभाव, असंगति।
अप्रत्यक्ष तद्० (गु०) प्रत्यक्ष का अगोचर, अदृष्ट, परोक्ष, अलक्षित, नहीं देखा।
अप्रत्यय तद्० (पु०) अविश्वास, सन्देह।
अप्रथा तद्० (स्त्री०) अव्यवहार, छिपाव।
अप्रधान तद्० (गु०) गौण, कनिष्ठ, जघन्य, क्षुद्र।
अप्रमाण तद्० (पु) अनिदर्शन, अदृष्टान्त, अशास्त्र।
अप्रसन्न तद्० (गु०) असन्तुष्ट, दुःखी, मलिन, गदला, मैला।
अप्रसाद तद्० (पु०) निग्रह, असम्मति। [ख्यात।
अप्रसिद्ध तद्० (गु०) गोप्य, अप्रकट, गुप्त, अवि-
अप्रस्तुत तद्० (वि०) अनुपस्थित, गैरहाज़िर।—प्रशंसा तद्० (पु०) एक अर्थालङ्कार जिसमें अप्रस्तुत के द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाता है।
अप्राकृत तद्० (गु०) अस्वाभाविक, असाधारण।
अप्राप्त तद्० (गु०) दुर्लभ, अनागत, अलभ्य।
अप्राप्य तद्० (गु०) अलभ्य, न मिलने लायक।
अप्रामाणिक तद्० (गु०) विश्वास न करने योग्य, प्रमाणशून्य।
अप्रासङ्गिक तद्० (वि०) प्रसङ्ग-विरुद्ध।
अप्रिय तद्० (गु०) अहित, अनचाहा, अनभीष्ट। (पु०) शत्रु।—वचन तद्० (पु०) निष्ठुर वाक्य कुवाक्य।—वक्ता तद्० (पु०) निष्ठुरभाषी, उग्रवक्ता।
अप्रीति तद्० (स्त्री०) अप्रणय, असद्भाव, अप्रेम, अरुचि, वैर।—कर तद्० (पु०) अरुचिकर, निठुर, कठोर।
अप्रैल दे० (पु०) अँगरेज़ी चौथे मास का नाम।
अप्सरा तद्० (स्त्री०) स्वर्ग की नर्तकी, स्वर्गवेश्या, तिलोत्तमा, घृताची, रम्भा आदि।
अफरा दे० (पु०) फूलना, पेट फूलना, अजीर्ण या वायु से पेट फूलने का रोग।
अफराई तद्० (स्त्री०) अघाना, अफरना, परितृप्ति।
अफराना तद्० (स्त्री०) अघाना, तृप्ति करना।
अफल तद्० (गु०) वृथा, निष्फल, फलरहित, वन्ध्या, भाऊ का वृक्ष।—ा तद्० (स्त्री०) आमलकी वृक्ष, घृतकुमारी, घीकुआर।

अमाजन तद्० (गु०) पात्ररहित, कुपात्र, अविश्वासी, अपात्र, अयोग्य।

अभार तद्० (गु०) हलका, लघु, अगुरु।

अभाव तद्० (पु०) अविद्यमान, नास्ति, असत्ता, ध्वंस।—नीय तद्० (गु०) अचिन्तनीय, अतर्क्य।

अभि तद्० (उपसर्ग) चौफेरा, आगे, समन्तात्, उभयार्थ, वीप्सा, इत्थम्भाव, धर्षण, अभिलाष, आभिमुख्य, चिन्ह, औत्सुक्य।

अभिक तद्० (पु०) कामुक, लम्पट, लुच्चा।

अभिख्या तद्० (स्त्री०) नाम, शोभा, उपाधि।

अभिगमन तद्० (पु०) निकटगमन, सहवासकरण।

अभिग्रह तद्० (पु०) अभिक्रमण, अभियोग, आक्रम, गौरव, सुकीर्ति, अपहार, लुण्ठन, चोरी, लड़ाई के लिये आह्वाहन, उत्साह बढ़ाने वाला योद्धाओं का परस्पर कथन।

अभिघात तद्० (पु०) डंडा आदि के द्वारा मारना, आघात, दाँत से काटना।

अभिचार तद्० (पु०) मारण मन्त्र विशेष, हिंसा कर्म, मारण उच्चाटन आदि उपपातक विशेष।—क तद्० (पु०) यन्त्र मन्त्र द्वारा मारण उच्चाटन आदि कर्म करने वाला।—री (पु०) हिंसाजनक-कर्मकर्ता, अनिष्टकारक।

अभिजन तद्० (पु०) वंश, गोष्ठी, परिवार, पालक, पोषी, रक्षक, पूर्वजों का निवासस्थान। [रूपवान्।

अभिजात तद्० (गु०) सद्वंशजात, कुलीन, सुन्दर,

अभिजित तद्० (पु०) मुहूर्त विशेष, दिवस का अष्टम मुहूर्त, नक्षत्र विशेष, इसमें चलने वाले तीन नक्षत्र होते हैं।

अभिज्ञ तद्० (गु०) ज्ञाता, विज्ञ, पण्डित।—ता तद्० (स्त्री०) विज्ञता, पाण्डित्य, नैपुण्य।—न तद्० (पु०) सम्यक् स्मरणार्थ चिन्ह विशेष।

अभिधा तद्० (स्त्री०) नाम, संज्ञा, शब्द की शक्ति विशेष, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा शब्द अपने ठीक ठीक अर्थों का बोधन करते हैं।

अभिधान तद्० (पु०) नाम, संज्ञा, शब्दों के अर्थ बतलाने वाले ग्रन्थ, कोश।

अभिधेय तद्० (पु०) अभिधान, नाम। (गु०) अभिधागम्य, प्रतिपाद्य, अर्थ।

अभिनन्दन तद्० (पु०) पुत्रविशेष। (गु०) आनन्दन, हर्षण।—नीय तद्० (वि०) वन्दनीय, प्रशंसा के योग्य।—पत्र तद्० (पु०) सम्मानसूचक पत्र, एड्रेस।

अभिनय तद्० (पु०) शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, नाट्यक्रिया, नर्तन, भाँड़, स्वाँग, नाटक का खेल।

अभिनव तद्० (गु०) नूतन, नवीन, नव्य।—गुप्त तद्० (पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध अलङ्कारवेत्ता, इनका धार्मिक मत शैव था, इनके बनाये संस्कृत के ८ ग्रन्थ हैं। ये ९९३ ई० से १०१५ ई० के बीच में हुए थे। [आविष्ट, अधिक लग जाना।

अभिनिविष्ट तद्० (गु०) मनोयोगी, प्रणिहित,

अभिनिवेश तद्० (पु०) मनोयोगी, मनोनिवेश, प्रणिधान, प्रवेश, पैठना, विचार। [मिश्रित, मिला।

अभिन्न तद्० (गु०) अपृथक्, संयुक्त, मिलित,

अभिप्राय तद्० (पु०) आशय, मनोरथ, तात्पर्य।

अभिप्रेत तद्० (गु०) अभिप्राय का विषय, वाञ्छित, अभीष्ट, ईप्सित। [दिखाना।

अभिभव तद्० (पु०) पराजय, हार, पराभव, नीचे

अभिभावक तद्० (पु०) तत्त्वावधायक, रक्षक, सहायक, आश्रय।—ता या त्व तद्० (स्त्री०) तत्त्वावधायकता, सहायता।

अभिभूत तद्० (गु०) अज्ञान, अचैतन्य, विह्वल, पराभूत, पराजित।

अभिमत तद्० (गु०) सम्मत, इष्ट, अनुमत, मनोनीत।

अभिमंत्रित तद्० (गु०) मन्त्र पढ़ कर पवित्र किया हुआ, आवाहन किया हुआ।

अभिमन्यु तद्० (पु०) (१) अर्जुन का पुत्र और श्रीकृष्ण का भाञ्जा। सुभद्रा के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था। जब कुरुक्षेत्र के युद्ध में कौरव सेना के सभी प्रधान प्रधान वीर इस षोडशवर्षीय वीर बालक के पराक्रम से निरस्त्र हो चुके थे, तब कौरवदल के सात महारथियों ने अन्याय से इसका वध किया था। इसकी स्त्री का नाम उत्तरा था, विराटराज की यह कन्या थी। इसी अभिमन्यु-पत्नी उत्तरा के पुत्र महाराज परीक्षित थे। वीर अभिमन्यु के साथ पैशाचिक दारुण अन्याय किया था। इस

अफवाह दे० (स्त्री०) जनश्रुति, उड़ती ख़बर, किंवदन्ती।
अफसर दे० (पु०) हाकिम, प्रधान।
अफसोस दे० (पु०) पश्चात्ताप, शोक।
अफीडेविट दे० (पु०) हलफ़नामा, शपथपूर्वक दिया हुआ लिखित बयान।
अफीम दे० (स्त्री०) मादक औषध विशेष, अहिफेन।
अफुल्ल तद्० (गु०) उदास, पुष्परहित, बिना फूल, कली।
अफंडा तद्० (पु०) मनमौजी, अभिमानी, अहङ्कारी।
अफेन तद्० (गु०) फेन रहित, झाग रहित, बिना फेन, कफ रहित।
अफैलावट तद्० (पु०) मड़ीर्णं, विस्तार नहीं।
अब दे० (क्रि० वि०) इस समय, अब ही, अभी। —तईं दे० (अ०) अबलग, अबतक, अबलौं।—तब दे० (अ०) तुरन्त, अभी मृतप्राय।—ते दे० (अ०) अभीतें, आजतें, अभू।—ताड़ी य तोली दे० (अ०) इस घड़ी तक, इस समय तक।
अबकर्तन तद्० (पु०) सूत्र यन्त्र, चरखा।
अबटन दे० (पु०) उपटन, देह साफ करने के लिये सरसों चिरौंजी आदि का लेप।
अबधू तद्० (गु०) मूर्ख, अनाड़ी, अज्ञानी।
अबधूत तद्० (पु०) योगी, संन्यासी, पाप रहित, जीवन्मुक्त, महात्मा।
अबध्य तद्० (गु०) मारने के योग्य नहीं, अपराधी होने पर भी जिसे प्राणदण्ड नहीं दिया जा सके। ब्राह्मण, गुरु, स्नातक आदि अवध्य हैं।
अबनी तद्० (स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, धरती।
अबन्धित तद्० (गु०) बन्धन रहित, स्वच्छन्द, स्वेच्छाचारी।
अबरक दे० (पु०) धातु विशेष।
अबरख दे० (पु०) अबरक।
अबरन तद्० (गु०) अवर्णनीय, अकथनीय।
अबरा दे० (पु०) उपल्ला, ऊपर का।
अबरी दे० (स्त्री०) (१) पुस्तकों की जिल्द के पुट्ठों पर लगाये जाने वाला कागज (२) पीले रंग का पत्थर विशेष। (३) एक प्रकार की खाद की रंगाई।
अबल तद्० (पु०) निर्बल दुबला, कृश, बल रहित। —ा तद्० (स्त्री०) बलहीना, नारी, स्त्री।
अबलखा दे० (वि०) कबरा, दोरंग। —ा (स्त्री०) पक्षीविशेष।
अबवाब दे० (पु०) वह अतिरिक्त कर जो सरकार की ओर से मालगुजारी (भूमिकर) पर लगाया जाता है।
अबलोकन तद्० (पु०) निरीक्षण, देखना।
अबार दे० (स्त्री०) विलम्ब, देर।
अबीर दे० (पु०) लाल रंग की बुकनी जो होली में लोग एक दूसरे के मुख पर मलते हैं।
अबुद्धि तद्० (स्त्री०) बुद्धिहीन, निर्बोध, अनसमझ।
अबुध तद्० (गु०) अबूझ, मूर्ख, असमझ अनाड़ी, अज्ञानी।
अबूझ तद्० (गु०) मूर्ख, असमझ, अनसमझ, अज्ञानी।
अबेर तद्० (स्त्री०) विलम्ब, देरी, देर, कुसमय, असमय।
अबोध तद्० (पु०) अज्ञान, मूर्ख।
अबोल तद्० (गु०) चुपचाप, अवाक्, मौन।
अब्ज तद्० (पु०) कमल, पद्म, शङ्ख, चन्द्र, धन्वन्तरी वैद्य, कपूर, अरब संख्या।—ा तद्० (स्त्री०) लक्ष्मी।
अब्द तद्० (पु०) वर्ष, साल, संवत्सर।
अब्धि तद्० (पु०) समुद्र, सागर, अर्णव, सिन्धु। —नगरी (स्त्री०) द्वारकापुरी।
अब्रह्मण्य तद्० (पु०) अब्राह्मणोचित कर्म।
अभक्त तद्० (पु०) शठ भक्तिहीन।
अभक्ष या अभक्ष्य तद्० (गु०) न खाने योग्य, अभोज्य।
अभङ्ग तद्० (गु०) अखण्ड, समूचा नाशरहित।—पद तद्० (पु०) श्लेषालङ्कार विशेष।
अभय तद्० (पु०) निर्भय, निडर, त्रास रहित।—ा तद्० (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, हर्रे या हरितकी विशेष।—दान तद्० (पु०) दुःख से उद्धार, शरण ग्रहण, "मा भै" कह कर अपनाना।
अभरण, अभरन तद्० (पु०) आभूषण, अलङ्कार, गहना।
अभरम तद्० (गु०) पदहीन, अमर्यादा।
अभाग तद्० (पु०) विपत्ति, दुर्दशा, विपद्।
अभागा तद्० (गु०) मन्दभागी, भाग्यहीन।
अभाग्य तद्० (पु०) दुर्भाग्य, दुरदृष्ट, मन्दभाग्य।

अमाजन तद्‌० (गु०) पात्ररहित, कुपात्र, अविरामी, अपात्र, अयोग्य।
अमार तद्‌० (गु०) हलका, लघु, अगुरु।
अभाव तद्‌० (पु०) अविद्यमान, नास्ति, असत्ता, ध्वंस।—नीय तद्‌० (गु०) अचिन्तनीय, आश्चर्य।
अभि तद्‌० (उपसर्ग) चौफेरा, आगे, समन्तात्, उभयार्थ, वीप्सा, इत्थम्भाव, पर्यय, अभिलाप, आभिमुख्य, चिन्ह, औत्सुक्य।
अभिक तद्‌० (पु०) कामुक, लम्पट, लुच्चा।
अभिख्या तद्‌० (स्त्री०) नाम, शोभा, उपाधि।
अभिगमन तद्‌० (पु०) निकटगमन, सहवासकरण।
अभिग्रह तद्‌० (पु०) अभिक्रमण, अभियोग, आक्रम, गौरव, सुकीर्ति, अपहार, लुण्ठन, चोरी, लड़ाई के लिये आह्वाहन, उत्साह बढ़ाने वाला योद्धाओं का परस्पर कथन।
अभिघात तद्‌० (पु०) डण्डा आदि के द्वारा मारना, आघात, दाँत से काटना।
अभिचार तद्‌० (पु०) मारण मन्त्र विशेष, हिंसा कर्म, मारण उच्चाटन आदि उपपातक विशेष।—क तद्‌० (पु०) यन्त्र मन्त्र द्वारा मारण उच्चाटन आदि कर्म करने वाला।—ी (पु०) हिंसाजनक-कर्म-कर्ता, अनिष्टकारक।
अभिजन तद्‌० (पु०) वंश, गोष्ठी, परिवार, पालक, पोषी, रक्षक, पूर्वजों का निवासस्थान। [स्वजन्।
अभिजात तद्‌० (गु०) सद्वंशजात, कुलीन, सुन्दर,
अभिजित तद्‌० (पु०) मुहूर्त विशेष, दिवस का अष्टम मुहूर्त, नक्षत्र विशेष, इसमें चलने वाले तीन नक्षत्र होते हैं।
अभिज्ञ तद्‌० (गु०) ज्ञाता, विज्ञ, पण्डित।—ता तद्‌० (स्त्री०) विज्ञता, पाण्डित्य, नैपुण्य।—न तद्‌० (पु०) सम्यक् स्मरणार्थ चिन्ह विशेष।
अभिधा तद्‌० (स्त्री०) नाम, संज्ञा, शब्द की शक्ति विशेष, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा शब्द अपने ठीक ठीक अर्थों का बोधन करते हैं।
अभिधान तद्‌० (पु०) नाम, संज्ञा, शब्दों के अर्थ बतलाने वाले ग्रन्थ, कोश।
अभिधेय तद्‌० (पु०) अभिधान, नाम। (गु०) अभिधागम्य, प्रतिपाद्य, अर्थ।

अभिनन्दन तद्‌० (पु०) युद्धविशेष। (गु०) आनन्दन, हर्षण।—ीय तद्‌० (वि०) वन्दनीय, प्रशंसा के योग्य।—पत्र तद्‌० (पु०) सम्मानसूचक पत्र, एड्रेस।
अभिनय तद्‌० (पु०) शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, नाट्यक्रिया, नर्तन, भाँड, स्वाँग, नाटक का खेल।
अभिनव तद्‌० (गु०) नूतन, नवीन, नव्य।—गुप्त तद्‌० (पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध अलङ्कारवेत्ता, इनका धार्मिक मत शैव था, इनके बनाये संस्कृत के ८ ग्रन्थ हैं। ये ९९३ ई० से १०१५ ई० के बीच में हुए थे। [आविष्ट, अधिक लग जाना।
अभिनिविष्ट तद्‌० (गु०) मनोयोगी, प्रणिहित,
अभिनिवेश तद्‌० (पु०) मनोयोगी, मनोनिवेश, प्रणिधान, प्रवेश, पैठना, विचार। [मिश्रित, मिला।
अभिन्न तद्‌० (गु०) अपृथक्, संयुक्त, मिलित,
अभिप्राय तद्‌० (पु०) आशय, मनोरथ, तात्पर्य।
अभिप्रेत तद्‌० (गु०) अभिप्राय का विषय, वाञ्छित, अभीष्ट, ईप्सित। [दिखाना।
अभिभव तद्‌० (पु०) पराजय, हार, पराभव, नीचे
अभिभावक तद्‌० (पु०) तत्त्वावधायक, रक्षक, सहायक, आश्रय।—ता या त्व तद्‌० (स्त्री०) तत्त्वावधायकता, सहायता।
अभिभूत तद्‌० (गु०) अज्ञान, अचेतन्य, विह्वल, पराभूत, पराजित।
अभिमत तद्‌० (गु०) सम्मत, इष्ट, अनुमत, मनोनीत।
अभिमन्त्रित तद्‌० (गु०) मंत्र पढ़ कर पवित्र किया हुआ, आवाहन किया हुआ।
अभिमन्यु तद्‌० (पु०) (१) अर्जुन का पुत्र और श्री कृष्ण का भांजा। सुभद्रा के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था। जब कुरुक्षेत्र के युद्ध में कौरव सेना के सभी प्रधान प्रधान वीर इस षोडशवर्षीय वीर बालक के पराक्रम से निरस्त्र हो चुके थे, तब कौरवदल के सात महारथियों ने अन्याय से इसका वध किया था। इसकी स्त्री का नाम उत्तरा था, विराट्राज की यह कन्या थी। इसी अभिमन्यु-पत्नी उत्तरा के पुत्र महाराज परीक्षित थे। वीर अभिमन्यु के साथ पैशाचिक दारुण अन्याय किया था। इस

अत्याचार के कारण ही कौरवसेना का नाम निर्मूल हुआ है।

(२) काश्मीर के राजा, यह राजा सूशब्द के दो हज़ार वर्ष पहिले काश्मीर का अधिपति था। इसके समय में काश्मीर राज्य में बौद्धधर्म की अत्यन्त प्रबलता थी। काश्मीर राज्य में अभिमन्युपुर नामक एक नगर इस राजा ने अपने नाम से बसाया था।—(महाभारत)।

अभिमर्षण तद्० (पु०) मनन, चिन्तन, पर-स्त्रीगमन।

अभिमान तद्० (पु०) अहंकार, मद, गर्व, आक्षेप।
—ी तद्० (पु०) घमण्डी, शेख़ीबाज़, अहंकारी, अभिमानयुक्त, आक्षेपान्वित, अनादर से खिन्न।
—जनक (गु०) अहंकारयुक्त, गर्वजनक।

अभिमुख तद्० (गु०) सम्मुख, समक्ष, आगे, सामने।

अभियुक्त तद्० (वि०) जिस पर मुकदमा लगाया गया हो, अपराधी, मुलज़िम, प्रतिवादी।

अभियोक्ता तद्० (गु०) अभियोगकर्त्ता, वादी, अर्थी, मुद्दई, फ़रियादी।

अभियोग तद्० (पु०) अपराधादि योजन, आवेदन, किसी का अपराध धर्माधिकरण में उपस्थित करना।
—ी (पु०) फ़रियादी।

अभिराम तद्० (गु०) सुन्दर, प्यारा, मनोहर, रमणीय। [अभिलाष, रसज्ञान, आस्वाद।

अभिरुचि तद्० (स्त्री०) तुष्टि, भलाई, चाह, मन का

अभिरूप तद्० (गु०) योग्य, उपयुक्त। (गु०) विद्वान्, कामदेव, चन्द्रमा, शिव, विष्णु, सदृश। [सुन्दर।

अभिलषणीय तद्० (गु०) वाञ्छनीय, मनोहर,

अभिलषित तद्० (गु०) इष्ट, वाञ्छित, इच्छित।

अभिलाख या अभिलाप तद्० (पु०) आकांक्षा, स्पृहा, कामना, आशा।—ी तद्० (पु०) अभिलाषयुक्त, सस्पृह, इच्छुक, वाञ्छान्वित।

अभिलाषुक तद्० (गु०) इच्छान्वित, सस्पृह।

अभिलास तद्० (स्त्री०) देखो अभिलाष।

अभिवाद तद्० (पु०) दुर्वचन, गाली।

अभिवादन तद्० (पु०) नमस्कार, वन्दना, पादग्रहणपूर्वक प्रणाम।—ीय तद्० (गु०) प्रणम्य, प्रणाम के योग्य।

अभिव्यक्त तद्० (गु०) प्रकाशित, विज्ञापित।—ि तद्० (स्त्री०) विज्ञापन, प्रकाश, स्पष्टकरण, घोषणा। [धान्य, क्रोध, अनिष्ट-प्रार्थना।

अभिशाप तद्० (पु०) शाप, बुरा मानना, दूषण

अभिषङ्ग तद्० (पु०) आलिङ्गन, सब प्रकार से सङ्ग, आक्रोश, पराभव। [पार्थिव द्रव्य, सोमलतापान।

अभिषव तद्० (पु०) यज्ञस्नान, चिरस्थापित मद्यो-

अभिषिक्त तद्० (पु०) कृताभिषेक, कर्म में नियुक्ति, पदस्थ, जिसका अभिषेक हुआ।

अभिषेक तद्० (पु०) मंत्रपूर्वक स्नान, कर्म में नियोग करना, पदस्थ करण, शान्ति स्नान, सिञ्चन।

अभिसम्पात तद्० (पु०) अभिशाप, संग्राम, क्रोध, मन्यु, रिस। [सहाय, मित्र।

अभिसर तद्० (पु०) साथी, संगी, सहचर, अनुचर,

अभिसार तद्० (पु०) नायक अथवा नायिका का सङ्केत (पूर्वक निर्दिष्ट) स्थान में गमन, बल, युद्ध, सहाय।

अभिसारिका तद्० (स्त्री०) नायिका विशेष, नायक के सहवासार्थ सङ्केत किये हुए स्थान में आने वाली नायिका यथा:—

दोहा

"जो घेरी मद मदन करि, आपहि पति पहँ जाइ।
सेव अङ्ग अभिसारिका, सबै समान बनाइ॥"
—कवि देवजी।

अभिसारिका दो प्रकार की होती हैं। एक कृष्णाभिसारिका और दूसरी शुक्लाभिसारिका। इनके ये भेद वेष के अनुसार हैं अर्थात् काले वस्त्र वाली कृष्णा और श्वेत वस्त्र वाली शुक्ला। कृष्णपक्ष में अभिसार करने वाली कृष्णाभिसारिका और शुक्लपक्ष में अभिसार करने वाली शुक्लाभिसारिका के नाम से परिचित होती है।

अभिषेचन तद्० (पु०) देखो अभिषेक।

अभिहित तद्० (गु०) उक्त, कथित, व्यक्त,प्रकाशित।

अभी (अ०) इसी समय, शीघ्र, वेगी।

अभीत तद्० (गु०) निडर, निर्भय, साहसी।

अभीक्ष्ण तद्० (पु०) पुनः पुनः, बार बार, भूयोभूयः।

अभीप्सित तद्० (गु०) अभीष्ट, वाञ्छित, प्रिय, मनोभिलषित। [भैरव, शतावरि।

अभीरु तद्० (गु०) निर्दोष, निर्भय। (पु०) महादेव,

अभीष्ट तद्० (गु०) इच्छित, वाञ्छित, अभिलषित।
अभुआना दे० (क्रि०) जोर से हाथ पैर और सिर हिलाना जिससे यह मालूम हो कि उसके शरीर में किसी देवी देवता का आवेश हुआ है।
अभुक्त तद्० (वि०) न खाया हुआ, न लीला हुआ।
अभू तद्० (अ०) अभी, अब, अबही, आज।
अभूखन तद्० (पु०) आभूषण, गहना।
अभूतपूर्व तद्० (गु०) अद्भुत, विलक्षण, आश्चर्य, जैसा कि पहले न हुआ हो, अनोखा, अपूर्व।
अभूतरिपु तद्० (पु०) अजातशत्रु, शत्रुहीन, रिपुहीन, जिसका कोई वैरी न हो।
अभेद तद्० (गु०) भेद रहित, अविशेष, ऐक्य, अभेद, परस्पर।—नीय तद्० (गु०) जिसका छेदन या भेदन न हो सके। (पु०) हीरा।—वादी तद्० (वि०) जीव और ब्रह्म में भेद न मानने वाला संम्प्रदाय, अद्वैतवादी।
अभेद्य तद्० (गु०) जो छेदा न जा सके, जिसका भेद न हो सके, अखण्डनीय। [अनशन।
अभोजन तद्० (पु०) भोजनाभाव, अनाहार, उपवास
अभोजी तद्० (पु०) अखादक, अभोगी। [मर्दन।
अभ्यङ्ग तद्० (पु०) आपाद-मस्तक-तैल-लेपन, तैल-
अभ्यञ्जन तद्० (पु०) तैललेपन, तैल, उपटन।
अभ्यन्तर तद्० (पु०) अन्तराल, मध्य, बीच, अन्तर, भीतर।—वर्ती तद्० (पु०) मध्यवासी।
अभ्यर्थना तद्० (स्त्री०) आदर, सम्मान, सम्भाषण।
अभ्यागत तद्० (पु०) पाहुन, अतिथि।
अभ्यास तद्० (पु०) साधन, चिन्तन, शिक्षा, आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार।
अभ्युत्थान तद्० (पु०) उठना, किसी आये हुए पुरुष के सम्मानार्थ उठ खड़े होना।
अभ्युदय तद्० (पु०) ऐश्वर्य, वृद्धि।
अभ्युदयिक तद्० (वि०) अभ्युदय सम्बन्धी, उन्नत, वृद्धि सम्बन्धी।—श्राद्ध तद्० (पु०) नान्दीमुख श्राद्ध।
अभ्र तद्० (पु०) आकाश, मेघ, बादल। [भोडर।
अभ्रक तद्० (पु०) अबरक, धातु विशेष, भोंडल,
अभ्रान्त तद्० (वि०) भ्रम रहित।—न्ति तद्० (स्त्री०) भ्रान्ति का न होना, स्थिरता।

अम तद्० (अ०) शीघ्रता, अल्प। (पु०) आँव रोग विशेष।
अमका ढमका (दे० वा०) फ़लाना, अमुक, अज्ञात, अथवा गोपनीय नाम के पुरुष का बोधक।
अमङ्गल तद्० (पु०) अशुभ, अकल्याण, दुर्लक्षण।—जनक (गु०) अशुभ-जनक, दुर्लक्षण-युक्त।
अमङ्गल्य तद्० (गु०) अशुभ-जनक, अनिष्ट-सूचक।
अमचूर तद्० (पु०) आम की फकिया, आम का चूर्ण, खटाई।
अमड़ा तद्० (पु०) अमारी, फल और वृक्ष विशेष।
अमत तद्० (पु०) असम्मत, अनभिप्रेत। (गु०) रोग, मृत्यु, काल।
अमत्सर तद्० (पु०) द्वेषाभाव, मत्सर-रहित।
अमन दे० (पु०) शान्ति, चैन, आराम।
अमनस्क तद्० (वि०) मन या इच्छा से रहित, उदासीन, अनमन।
अमनिया तद्० (वि०) शुद्ध, पवित्र, अछूता। (स्त्री०) सीधा, कच्चा रसोई का सामान।—करना तद्० (क्रि०) शाक को छीलना बनाना, अनाज को बीन फटक कर साफ़ करना।
अमनैक दे० (पु०) हक़दार, अधिकारी। अवध सूबे के एक क़िस्म के काश्तकार जिनको पुश्तैनी लगान के बारे में कुछ खास अधिकार प्राप्त है।
अमनोयोग तद्० (पु०) अनवधानता।
अमनोज्ञ तद्० (गु०) असुन्दर, कुरूप, घिनौना।
अमर तद्० (पु०) देवता, नित्य, चिरस्थाई, मरणरहित कुलिश वृक्ष, अस्थि-संहारक वृक्ष।—ज तद्० (गु०) देवजात, देव से उत्पन्न, देवमात्र।—त्व तद्० (पु०) देवभाव, देवत्व, देव-सायुज्य।—दारु तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, देवदारु।—द्विज तद्० (पु०) देवल ब्राह्मण, पुजारी।—पति तद्० (पु०) इन्द्र, देवों का राजा।—पुर तद्० (पु०) देवों का नगर।—बेल तद्० (स्त्री०) आकाश बेल, वृक्षों के ऊपर जो एक लता लगती है।—लोक तद्० (पु०) स्वर्ग, देवलोक।—सिंह तद्० (पु०) (१) उज्जयिनी-पति विक्रमादित्य की सभा के नौरत्नों में से एक रत्न, अमरकोष नामक संस्कृत कोष इन्होंने बनाया था। यही एक ग्रन्थ इनकी

कीर्ति को अमर रखने के लिये यथेष्ट साधन है। (२) प्रसिद्ध गोरखा सेनापति, १८१४-१५ खृष्टाब्द में नैपाल के युद्ध में अँग्रेज़ सेनापति आक्टरलोनी को इन्होंने खून छकाया था। जब बिलासपुर के राजा ने अँग्रेज़ सेनापति की सहायता की, तब अमरसिंह नैपाल की राजधानी काटमाँडू चले गये और युद्ध का अन्त हुआ। (३) राजपूताना के अन्तर्गत मेवाड़ के राजपूत कुल-गौरव प्रतापसिंह का पुत्र। यह बाल्यकाल ही से अपने पिता के समीप रहने के कारण उनके महनीय चरित्रों के अनुकरण करने में समर्थ हो सका था। यह अपनी युवावस्था में मेवाड़ का राजा हुआ। यह अपने पिता के समान तेजस्वी तथा न्यायी था, थोड़े ही समय में यह एक आदर्श राजा हो गया।

अमरस दे० (पु०) आम के रस को जमा कर जो सुखा लिया जाता है उसे अमरस या अमावट कहते हैं।

अमरा तद्० (स्त्री०) दूब, गुर्च, सेहुंड, थूहर, नीली कोयल, झिल्ली जो गर्भ के बालक के बदन में लपटी रहती है।

अमराई तद्० (स्त्री०) आम का वन, बाग़।

अमरावती तद्० (स्त्री०) इन्द्रपुरी, स्वर्ग, एक नगरी का नाम।

अमरु तद्० (पु०) एक राजा और कवि का नाम कहते हैं मण्डन मिश्र की स्त्री के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये शङ्कराचार्य जी इसी राजा के मृत शरीर में प्रविष्ट हुए थे और "अमरुशतक," नाम का एक शृङ्गार रस-का काव्य बनाया था।

अमरुन् तद्० (गु०) सुस्थिर, शान्त, अचञ्चल, निर्वात। (पु०) फल विशेष।

अमरू दे० (पु०) काशी का एक रेशमी वस्त्र विशेष।

अमरूद दे० (पु०) सफरी, बिही, फल विशेष।

अमरेश या अमरेश्वर तद्० (पु०) देवताओं का राजा, इन्द्र।

अमरैया दे० (स्त्री०) देखो अमराई।

अमर्यादा तद्० (स्त्री०) अनीति, असम्मान, मान-हानि।—तद्० (स्त्री०) अमर्याद।

[illegible] तद्० (पु०) क्रोध, कोप, रिस, असहमा।

अमर्षी तद्० (गु०) क्रोधी, रोगी, कोपान्वित।

अमल तद्० (पु०) निर्मल, राज्य, काम, नशीला मादक वस्तु।

अमलतास तद्० (पु०) औषध विशेष।

अमलदारी दे० (स्त्री०) अधिकार, शासन।

अमलपट्टा दे० (पु०) अधिकार पत्र।

अमलबेत दे० (पु०) लता विशेष।

अमला तद्० (स्त्री०) लक्ष्मी, सातला वृक्ष, पाताल (पु०) आँवला।

अमली दे० (वि०) व्यवहारिक, काम में आने वाला, नशेबाज़। (स्त्री०) इमली।

अमहर दे० (स्त्री०) आम की खटाई, अमचूर। [मन्त्री

अमात्य तद्० (पु०) प्रधान मन्त्री, दीवान, राज

अमान तद्० (गु०) मान रहित, निरहङ्कारी।

अमानत दे० (स्त्री०) धरोहर, थाती।—दार (पु०) थाती रखने वाला।

अमाना तद्० (क्रि०) समान भरना, खपना।

अमानुष तद्० (गु०) जो मनुष्य से न हो सके, मनुष्य की शक्ति से बाहर। [अस्वीकार।

अमान्य तद्० (गु०) मान रहित, त्याज्य, अनादृत,

अमाय तद्० (गु०) कपट-रहित, वास्तव, यथार्थ, माया रहित।

अमावट दे० (स्त्री०) आम का सुखाया हुआ रस।

अमावस तद्० (स्त्री०) तिथि विशेष, जिस तिथि चन्द्रमा सूर्य एक ही राशि पर वर्तमान हो चान्द्र मास का अन्तिम दिन।

अमावस्या तद्०
अमावास्या तद्० } (देखो अमावस)

अमिउ तद्० (पु०) अमृत, सुधा,

"कीन्हेसि अमिउ जीये जेहि पाई"—(पद्मावत)

अमिट तद्० (गु०) नित्य, दृढ़, अटल।

अमित तद्० (गु०) बहुत, अधिक, प्रचुर, असंख्यात।

अमितौजा तद्० (पु०) सर्वशक्तिमान्।

अमित्र तद्० (पु०) शत्रु, वैरी, अरि।—भूत (गु०) विरुद्ध, वैरी, अहितकारी

अमिय तद्० (पु०) अमृत, सुधा, पियूष।—[illegible] (स्त्री०) सञ्जीवनी बूटी।

अमिरती दे० (स्त्री०) इमरती, मिठाई, एक प्रकार का जल पीने का धातु का गिलास।

अमिश्रराशि (स्त्री०) एकाई से लेकर नौ तक के अंक, यह राशि जो इकाई से प्रकट की जाय।

अमी तद्० (स्त्री०) अमृत, सुधा, आसव। तद्० (गु०) [अम्+इन्] रोगी रोगार्त, पीड़ित।

अमीत तद्० (गु०) वैरी, शत्रु। [चारी।

अमीन दे० (पु०) अदालती एक अहलकार या कर्म-

अमीर दे० (पु०) धनवान, अफगानिस्तान के राजा की उपाधि।

अमुक तद्० (गु०) वह, कोई, अमका ढमका, बुद्धि-स्थव्यक्ति, सम्मुखागत।

अमुत्र तद्० (अ०) परकाल, परलोक।

अमूर्त तद्० (गु०) निराकार, मूर्तिहीन।—र्ति (गु०) मूर्तिहीन, आकृति रहित।

अमूल तद्० (गु०) मूलरहित, निर्मूल, जड़ शून्य।

अमूलक तद्० (गु०) मूलरहित, निर्मूल, अप्रामाणिक, मिथ्या।

अमूल्य तद्० (गु०) उत्तम, बढ़िया, श्रेष्ठ।

अमृत तद्० (पु०) समुद्रोत्पन्न द्रव्य विशेष, पियूष, सुधा, जल, घृत, मुक्ति वृष औषधि, विष, यज्ञशेष द्रव्य, अयाचित वस्तु, वत्सनाभ, भक्षणीय द्रव्य, सुस्वाद द्रव्य, पारद, अन्नधन, स्वर्ण दुग्ध। (गु०) मरण रहित (पु०) धन्वन्तरि, वाराही कन्द, वन-मूंग देवता, सुन्दर।—कर तद्० (पु०) चन्द्रमा, निशाकर।—कुण्ड तद्० (पु०) अमृत का पात्र।—जटा तद्० (स्त्री०) जटामांसी।—तरङ्गिणी तद्० (स्त्री०) ज्योत्सना, प्रकाशमयी रात्रि।—दीधिति तद्० (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क, शशधर।—धारा तद्० (स्त्री०) वर्ण विशेष जिसके पहले चरण में २० दूसरे में १२ तीसरे में १६ और चौथे में ८ अक्षर होते हैं।—ध्वनि (स्त्री०) यौगिक छन्द विशेष जिसमें २४ मात्राएं होती हैं। इसके आदि में एक दोहा होता है। दोहे को मिलाकर इसमें ६ चरण होते हैं और हरेक चरण में द्विरु समेत तीन यमक होते हैं।—फल तद्० (पु०) पटोल, परवर।—फला तद्० (स्त्री०) दाख, अंगूर, आमलकी।—वल्ली (स्त्री०) गुडूची लता।—वान (पु०) अचार आदि रखने का मिट्टी का एक बर्तन जिसमें लाख पुती होती है।—बिन्दु तद्० (पु०) एक उपनिषद का नाम।—रस तद्० (पु०) सुधा, अमृत।—लता तद्० (स्त्री०) गिलोय, गुर्च,—सार तद्० (स्त्री०) अंगूर।—सम्भवा तद्० (स्त्री०) गुडूची।—सार (पु०) घी, मक्खन, नवनीत।—स्रवा तद्० (स्त्री०) रुदन्ती वृक्ष, लता विशेष।

अमृतांशु तद्० (पु०) चन्द्रमा।

अमृता तद्० (स्त्री०) गुड़ीची, दुर्वा, तुलसी, मदिरा, आमलकी, हरीतकी, पिप्पली।

अमृती तद्० (स्त्री०) जुटिया, मिठाई विशेष।

अमृष्य तद्० (गु०) असह्य, असहनीय।

अमेधा तद्० (गु०) मूर्ख, मूढ़, अबोध।

अमेध्य तद्० (गु०) अपवित्र, अशुद्ध, दुष्ट।

अमोघ तद्० (गु०) अव्यर्थ, सफल।—वीर्य तद्० (पु०) अव्यर्थ वीर्य, अखण्ड तेज, अव्यर्थ प्रताप।

अमोर दे० (स्त्री०) आम के टिकोरे, अंबिया।

अमोल (गु०) अमूल्य। [रंग का होता है।

अमौआ दे० (पु०) रँगा कपड़ा। यह कई प्रकार के

अम्बक (पु०) चक्षु नेत्र, ताँबा, पिता।

अम्बत तद्० (पु०) खट्टा, अम्ल, चूक, खटाई।

अम्बर तद्० (पु०) आकाश, वस्त्र, कपास, स्वनाम-ख्यात सुगन्धद्रव्य विशेष।

अम्बरीष तद्० (पु०) युद्ध, विष्णु, शिव, शावक, भास्कर, सूर्य वंशीय राजा विशेष। अयोध्यानगरी इनकी राजधानी थी, इनके पिता का नाम नाभाग था, इस अंतिम बलशाली राजा ने दस लाख राजाओं के साथ एक समय युद्ध किया था, सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करके यथाविधि कई सौ यज्ञ इन्होंने संपादित किये थे, इसके प्रताप से इन्होंने दुर्लभ स्वर्ग प्राप्त किया था। नरक भेद, आम्रातक वृक्ष, अनु-ताप पश्चात्ताप।

अम्बल तद्० (स्त्री०) मादक वस्तु, खट्टा रस।

अम्बष्ठ तद्० (पु०) [अम्ब+स्थान+ड] जाति विशेष, ब्राह्मण पिता के औरस से वैश्या स्त्री के गर्भ में उत्पन्न, इस जाति को बङ्गाल में वैद्य जाति कहते हैं। मुनि विशेष, देश विशेष, हस्तिपक, महावत।

अम्बा तद्० (स्त्री०) [अम्ब+आ] माता, जननी, दुर्गा, काशिराज की जेठी कन्या, इसीने दूसरे जन्म में शिखण्डी का रूप धारण करके भीष्म पितामह को मारा था।

अम्बारी तद्० (स्त्री०) हौदा, चन्दवा।

अम्बालिका तद्० (स्त्री०) [अम्बाला+इक+आ] माँ, माता, जननी, काशिराज कि छोटी लड़की, प्रसिद्ध राजा पाण्डु के माने के अनन्तर यह अपनी सास सत्यवती के साथ वन को चली गई थी।

अम्बिका तद्० (स्त्री०) [अम्बा+इक+आ] दुर्गा, भगवती, माता, काशिराज की मध्यमा कन्या, यह विचित्र वीर्य्य से ब्याही गई थी, इसके पुत्र का नाम धृतराष्ट्र था, यह पाण्डु के मरने के बाद सत्यवती के साथ वन चली गई थी, और वहीं इसने तपस्या के द्वारा इस शरीर को छोड़ा।

अम्बिया तद्० (पु०) टिकोरा, छोटा आम।

अम्बु तद्० (पु०) [अम्ब+उ] जल, सलिल, पानी, नीर।—कण तद्० (पु०) ओस, शीत, तुषार।—ज तद्० (पु०) कमल, पद्म, कंज।—जन्म तद्० (पु०) पद्म, कमल, पङ्कज।—द (पु०) मेघ, घटा, वर्षा, वारिद।—धर तद्० (पु०) वारिद, मेघ, वारिधर।—धि तद्० (पु०) समुद्र, सागर, सिन्धु, जलधि।—निधि तद्० (पु०) जलधि, समुद्र।-वाह तद्० (पु०) मेघ, वारिद, बादल।

अम्भस् तद्० (पु०) अम्बु, जल, पानी।—ज तद्० (पु०) [अम्भस+जन+ड] पद्म, कमल, अम्बुज, चन्द्र, सारस पक्षी।—द तद्० (पु०) जलद, अभ्र, मेघ।—धर तद्० (पु०) जलधर, मेघ, जलद, समुद्र।—धि तद्० (पु०) समुद्र सागर, जलधि।—निधि तद्० (पु०) समुद्र, सागर, जलधि।

अम्मा तद्० (स्त्री०) माता, माँ, महतारी।

अम्मारी दे० (स्त्री०) अम्बारी, हाथी का हौदा।

[illegible] तद्० (स्त्री०) खट्टा, चूक, अम्लत।

[illegible] तद्० (पु०) रोग विशेष।

अम्लबेत दे० (पु०) अमलबेत।

अम्लान तद्० (पु०) म्लान रहित, हृष्ट, ताज़ा।—ता तद्० (स्त्री०) हृष्टभाव, प्रसन्नता।

अम्ली तद्० (स्त्री०) इमिली, तिन्तिड़ी, इमली।

अम्हौरी दे० (स्त्री०) अन्हौरी, बदन पर की छोटी छोटी फुंसियाँ जो गर्मी की ऋतु में निकल आती हैं।

अय पिण्ड तद्० (पु०) [अयस्+पिण्ड] लौहपिण्ड, लोहे का गोला।

अयत्न तद्० (पु०) दौर्बल्य, अयतन, अशक्तता।

अयथार्थ तद्० (पु०) मिथ्या, अन्याय, अन्धेर।

अयन तद्० (पु०) वर्ष का आधा भाग, सूर्य्य का उत्तर और दक्षिण दिशा का गमन, गमन, आश्रय, मार्ग।—ांश तद्० (पु०) सूर्य्य की गति विशेष के काल का भाग, अयनभाग।

अयश तद्० (पु०) अपकीर्ति, कलङ्क, निन्दा, अख्याति।—स्कर तद्० (पु०) [अ+अयस्+कृ+ अच्] दुर्नामजनक, अख्यातिकर।—ी तद्० (वि०) [अ+यस्+विन्] बदनाम, अख्यातियुक्त, प्रतिष्ठा रहित।

अयस तद्० (पु०) लोहा।

अयस्कान्त तद्० (पु०) [अयस्+कान्त] मणि विशेष, चुम्बक पत्थर।

अयाचक तद्० (पु०) याच्ञा रहित, अभिक्षुक।

अयाचित तद्० (पु०) याच्ञा बिना प्राप्त, अप्रार्थित।—व्रत तद्० (पु०) बिना माँगे प्राप्त हुए पदार्थों से जीविका निर्वाह करने वाला।

अयं तद्० (पु०) यह, ऐसा, इसका प्रयोग रामायण में आया है।

अयान तद्० (पु०) लड़काई, मूर्खता, अनजानपन।—प तद्० (पु०) लड़कपन, मूर्खता, बेसमझी।

अयाना तद्० (पु०) भोला, नासमझ, मूर्ख।

अयाल दे० (पु०) शेर अथवा घोड़े की गर्दन के बाल।

अयुक्त तद्० (पु०) अनिश्चित, अनुचित, असङ्गत।

अयुत तद्० (पु०) अयुक्त, असिलित, अमिश्रित। (पु०) दश सहस्र संख्या, दश हज़ार।

अयुध तद्० (पु०) आयुध, अस्त्र शस्त्र, हथियार।

अये तद्० (अ०) सम्बोधनार्थ, विषादार्थ, स्मरणार्थ, क्रोधार्थ।

अयोग तत्० (पु०) विश्लेष, विच्छेद, अनैक्य।
अयोगव तत्० (पु०) शूद्र के औरस से वैश्या कन्या के गर्भ से जात सन्तान, जाति विशेष। [अपात्र।
अयोग्य तत्० (वि०) अनुपयुक्त, अकुशल, बेकाम,
अयोघन तत्० (पु०) [अयस्+घन] एकत्रीभूत लौह पुञ्ज, निहाली, हथोड़ा, निहाई।
अयोध्या तत्० (स्त्री०) [अ+युध्य+आ] कोशला, अवधपुरी, सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी। —नाथ (पु०) (१) अयोध्याधिपति। (२) पण्डित केदारनाथ के पुत्र, ये काश्मीरी ब्राह्मण थे, इनके पिता एक धनाढ्य व्यवसायी थे। १८४० खृष्टाब्द में पण्डित अयोध्यानाथ का आगरे में जन्म हुआ था। फ़ारसी, अरबी और अँग्रेज़ी के यह विद्वान् थे। आगरे में उनकी वकालत खूब चली थी, जब सदर अदालत आगरे से इलाहाबाद आयी तभी प० अयोध्यानाथ जी इलाहाबाद आये। बहुत से लोकोपकारी कार्य इन्होंने किये थे। इन्होंने द्रव्योपार्जन भी खूब किया और उसका सदुपयोग भी, युक्तप्रदेश के सभी लोकोपकारी कार्यों में यह शामिल होते थे, अतएव ये यहाँ के नेता समझे जाते थे। "इण्डियन हेरल्ड" नामक दैनिक पत्र का कुछ दिन तक ये सम्पादन करते रहे। पुन उसके बन्द होने पर इण्डियन यूनियन" नाम का पत्र निकालते थे। इलाहाबाद म्यूनिसिपैल्टी के कमिश्नर और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के फेलो थे। युक्तदेशवासी हिन्दुस्तानियों में सर्व प्रथम छोटे लाट के कौंसिल में ये ही बैठे थे।
अयोनि तत्० (गु०) योनिभिन्न, अनुत्पन्न।—ज तत्० (पु०) जीव विशेष, योनिजात भिन्न, वृक्ष आदि।
अरई तद्० (पु०) मयानी, मई। [आँचानानी करना।
अरकना परकना दे० (अ०) इधर उधर करना।
अरगजा तत्० (पु०) अर्गजा, एक सुगन्धित द्रव्य विशेष प्रसिद्ध।
अरगनी दे० (स्त्री०) बांस, लकड़ी या रस्सी जो किसी घर में कपड़े आदि रखने के लिये लटकाई जाय।
अरघ तद्० (पु०) अर्घ्य, षोडशोपचार में से पूजन का एक उपचार।—ा तद्० (पु०) अरघ देने का पात्र।

अरचन तत्० (पु०) पूजन, सम्मान।
अरचना तद्० (क्रि०) पूजन करना।
अरज दे० (स्त्री०) विनय, प्रार्थना।—ी (स्त्री०) प्रार्थना पत्र।
अरझना तद्० (क्रि०) उलझना, फँसना, बझना।
अरणा तद्० (स्त्री०) जङ्गली भैंस।
अरणि तत्० (स्त्री०) काष्ठ विशेष, जिसे घिस कर आग निकालते हैं। अग्निधारक काष्ठ विशेष।
अरण्ड तत्० (पु०) रेंडी, अण्डी वृक्ष।
अरण्य तत्० (पु०) वन, कानन, विपिन, जङ्गल।—वासी तत्० (पु०) वनस्थ, वनवासी, तपस्वी, मुनि।—रोदन तत्० (पु०) निष्फल रोना।
अरदास दे० (पु०) भेंट सहित निवेदन, शुभकर्म में देवता के लिये कुछ भेंट। नानक पंथियों का यह विशेष व्यवहार का शब्द है।
अरब दे० (पु०) सौ करोड़, घोड़ा।
अरबराना तद्० (क्रि०) हड़बड़ाना, घबड़ाना।
अरवा दे० (पु०) बिना उबाले हुए धान से निकाला हुआ चाँवल।
अरविन्द तत्० (पु०) कमल, उत्पल, पङ्कज।
अरवी तत्० (स्त्री०) घुइयाँ, कच्चू, बंडा।
अरसट्टा तद्० (पु०) आँकाव, निरख, परख।
अरसन परसन दे० (पु०) एक प्रकार का लड़कों का खेल, आँख मिचौनी।
अरसा दे० (पु०) विलम्ब, देर।
अरसान तत्० (पु०) वृत्त विशेष जिसमें २४ अक्षर ७ भगण और १ रगण होता है।
अरसिक तत्० (गु०) नीरस, अविदग्ध।
अरसी दे० (स्त्री०) अलसी, तीसी।
अरसौंहा दे० (पु०) आलस्य से पूर्ण।
अरहट तत्० (पु०) अरघट्ट, रेहटा, पानी का चरखा, पानी निकालने का एक प्रकार का यन्त्र।
अरहर तद्० (स्त्री०) अन्न विशेष, तूर।
अराजक तत्० (गु०) [अ+राज+वुन्] राजशून्य देश।—ता (स्त्री०) राज का अभाव। अंधेर, अशान्ति।
अराति तत्० (पु०) शत्रु, रिपु, बैरी। [जपना।
अराधना तत्० (क्रि०) पूजना, सेवा करना मन्त्र

अरारा तद्० (पु०) दरोरारा, दरदरा।
अरि तद्० (पु०) शत्रु, वैरी, रिपु।—मण्डल तत् (पु०) शत्रु-समूह, शत्रु राज्य।—षड्वर्ग तद्० (पु०) छः शत्रुओं का समुदाय, छः शत्रु ये हैं—काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर।
अरिन्दम तद्० (गु०) [अरि+दम+अच्] शत्रुजयी, योधा, बली, शत्रुओं को दमन करने वाला।
अरियाना (क्रि०) तिरस्कार करना।
अरिष्ट तद्० (पु०) सूतिकागृह, तक्र, निशाफ, दुःख, मरण चिन्ह, उत्पात, उपद्रव, वृषभासुर। इसी असुर को कंस ने श्रीकृष्णचन्द्र जी को मारने के लिये ब्रज में भेजा था। इसका विशाल शरीर तथा भयङ्कर शब्द सुन कर ब्रजवासी भयभीत हो गये। भगवान् कृष्ण ने इसका अन्तिम संस्कार किया।—नेम तद्० (पु०) कश्यप प्रजापति का एक नाम। राजा सगर के ससुर का नाम, सोलहवाँ प्रजापति।
अरी तद्० (स्त्री०) स्त्रियों के लिये सम्बोधन।
अरीठा दे० (पु०) रीठा।
अरु तद्० (अ०) फिर, पुनः, और, औ।
अरुई तद्० (स्त्री०) अरवी, गर्भवती स्त्री का चिन्ह, उसकी अरुचि।
अरुचि तद्० (स्त्री०) रोग विशेष, भोजन के प्रति अभिलाषाभाव, अनिच्छा, वितृष्णा, अश्रद्धा, जी मचलाना।
अरुझाना तद्० (क्रि०) फाँसना फँसाना, उलझाना।
अरुण तद्० (पु०) अर्क, वृक्ष, सूर्य, अव्यक्त राग, ईषद्रक्त वर्ण, सन्ध्या राग, शब्द रहित, कुष्टभेद। सूर्य के सारथि का नाम। यह गरुड़ के ज्येष्ठ भ्राता थे। महर्षि कश्यप के औरस तथा विनता के गर्भ से इनकी उत्पत्ति हुई थी। इनके पैर नहीं हैं, क्योंकि जब इनका शरीर गठित नहीं हुआ था, तभी इनकी माता विनता ने अंडे फोड़ दिये। इनकी स्त्री का नाम श्येनी था, सम्पाति और जटायु इनके दो पुत्र थे।—ोदय तद्० (पु०) प्रातःकाल, विहान, प्रभात।—कमल तद्० (पु०) रक्त कमल।—लोचन तद्० (पु०) लाल नेत्र, कपोत, कबूतर, कोकिल।—सारथि तद्० (पु०) सूर्य, भानु, दिवाकर।—शिखा (पु०) मुर्गा।
अरुणाई तद्० (स्त्री०) भोर, लालरङ्ग।
अरुन्तुद तद्० (गु०) [अरु+तुद्+ख] मर्मस्पृक्, मर्मपीड़क, पीड़ाकारी, नाशक, अपथ्य।
अरुन्धति या अरुन्धती तद्० (स्त्री०) वसिष्ठ मुनि की पत्नी, अति सूक्ष्म, नक्षत्र विशेष, कर्दम मुनि की कन्या, वसिष्ठ के समान इनको भी नक्षत्रमण्डल में स्थान मिला है। कहते हैं मरने के छः महीने पहिले यह तारा नहीं दीखता।
अरूप तद्० (गु०) कुरूप, कुत्सित रूप, कुश्री।
अरे तद्० (अ०) नीच सम्बोधन, सक्रोध आह्वान।
अरेप तद्० (पु०) पाप, अपराध, दोष।
अरोग तद्० (गु०) रोगरहित, भला, चङ्गा।—ना दे० (क्रि०) (मेवाड़ी भाषा में) भोजन करना।
अरोचक तद्० (गु०) रोग विशेष, अरुचि रोग।
अरोड़ा दे० (गु०) क्षत्रियों की एक जाति जो पंजाब में विशेष संख्या में पायी जाती है।
अर्क तद्० (पु०) सूर्य, आदित्य, इन्द्र, ताम्र, स्फटिक, पण्डित, ज्येष्ठ भ्राता, रविवार, आक वृक्ष।—तनय तद्० (पु०) कर्णराज, सावर्णि मनु, शनि, यम।—ग्रहण तद्० (पु०) धारोष्ण सप्तमी का व्रत, सूर्य के जलग्रहण के समान राजाओं का प्रजा के निकट कर ग्रहण।
अर्कट तद्० (स्त्री०) सतर्कता, सावधानता।
अर्गनि तद्० (पु०) देखो अरगनी।
अर्गजा तद्० (देखो अरगजा)।
अर्गल तद्० (पु०) खोल, आगल, हुड़का, किवाड़ बन्द करने की लकड़ी।—ा तद्० (स्त्री०) सीत्र, हुड़का, दुर्गा, सप्तशती के पाठ के पहले पाठ किया जाने वाला एक स्तोत्र।—ी (स्त्री०) भेड़ की एक जाति जो मिस्र, स्याम आदि देशों में पायी जाती है। [पूजा में जल देना, मोल।
अर्घ तद्० (पु०) पूजा का द्रव्य, पूजा का उपहार,
अर्घा तद्० (स्त्री०) अर्घ देने का पात्र, तर्पण का पात्र विशेष, जलहरी जिसमें शिवलिङ्ग रहता है।
अर्घ्य तद्० (गु०) दर्शनी, भेंट, उपहार, उत्तम, पूज्य में आये हुए को जलादि देना।

अर्चक तद्० (पु०) पूजक, या याचक, अर्चनाकारी।
अर्चा या अर्चना तद्० (स्त्री०) पूजा, सेवा, आराधना, प्रतिमा, देवमूर्ति। [ज्योति।
अर्चिः तद्० (स्त्री०) अग्निशिखा, चमक, आँच,
अर्चित तद्० (गु०) पूजित, आराधित।
अर्चिराजमार्ग तद्० (पु०) देवयान, उत्तरमार्ग, वह मार्ग जिससे मुक्त जीव भगवान के पास आते हैं।
अर्चिष्मान् तद्० (पु०) [अर्चिस्+मत] अग्नि, सूर्य, (गु०) दीप्तिमान, देदीप्यमान।
अर्च्य तद्० (पु०) पूजनीय, पूज्य।
अर्ज़ दे० (पु०) प्रार्थना, विनती।—दाश्त (स्त्री०) प्रार्थना पत्र। [वाला।
अर्जक तद्० (पु०) उपार्जनकर्त्ता, अर्जयिता कमाने
अर्जन तद्० (पु०) उपार्जन, कमाई, प्राप्ति, लाभ, प्रतिपत्ति, सञ्चय करण, लाभ करण। [लब्ध।
अर्जित तद्० (गु०) अर्जित किया हुआ, सञ्चित,
अर्ज़ी दे० (स्त्री०) विनयपत्र।—दावा (पु०) प्रार्थना पत्र विशेष जो दीवानी आदालत में पेश किया जाता है।
अर्जुन तद्० (पु०) वृक्ष विशेष। तीसरा पाण्डव। देवराज इन्द्र के औरस तथा कुन्ती के गर्भ से इनका जन्म हुआ था, यह पाण्डु के क्षेत्रज पुत्र थे। उन दिनों इनके समान धनुर्विद्या-विशारद दूसरा नहीं था। साक्षात् भगवान् इनके सारथी थे। महादेव की आराधना करने से इन्हें पाशुपतास्त्र प्राप्त हुआ था। अस्त्रविद्या सीखने के लिये यह स्वर्ग में इन्द्र के निकट गये थे, अपना मनोरथ भङ्ग होने के कारण उर्वशी ने इन्हें नपुंसक हो जाने का शाप दिया था, जिसका उपयोग अज्ञातवास के समय विराट राजधानी में इन्होंने किया, अर्जुन की तीन स्त्रियाँ थीं—द्रौपदी, सुभद्रा और चित्राङ्गदा, इनके अतिरिक्त कौरव्य नाग की कन्या उलूपी को भी इन्होंने व्याहा था।
अर्णव तद्० (पु०) समुद्र, सागर, अब्धि।—पोत तद्० (पु०) जहाज़ वृहत् नौका, समुद्रयान। —यान तद्० (पु०) जहाज़।
अर्थ तद्० (पु०) अभिप्राय, तात्पर्य, मान, धन।—कर तद्० (वि०) लाभकारी, जिससे धन पैदा हो। —गौरव तद्० (पु०) अर्थ की गम्भीरता।—ज्ञ तद्० (गु०) भाव मर्मज्ञ।—ज्ञान तद्० (पु०) तात्पर्य—तः तद्० (अ०) फलतः, वस्तुतः। —दण्ड तद्० (पु०) जुर्माना, धन का दण्ड —दूषण तद्० (पु०) अपरिमित व्यय।—नाश तद्० (पु०) धननाश, निराश।—पति तद्० (पु०) राजा कुवेर, अति धनी।—पर तद्० (गु०) कृपण, व्यय, शङ्कित।—पिशाच तद्० (वि०) धनलोलुप, धन के सामने कर्त्तव्याकर्त्तव्य पर ध्यान न देने वाला।—प्रयोग तद्० (पु०) वृद्धि, निमित्त, धन दान।—प्राप्ति तद्० (स्त्री०) धन-लाभ, लभ्य।—वत्व तद्० (गु०) प्रयोजनार्हता, प्रयोजनीयता।—वाद तद्० (पु०) काल्पनिक, फलश्रुति, स्तुति, प्रशंसा, प्ररोचक वाक्य।—विज्ञान तद्० (पु०) शब्दार्थज्ञान।—वृद्धि तद्० (स्त्री०) धनवर्द्धन।—शाली तद्० (पु०) धनशाली, धनवान्।—शास्त्र तद्० (पु०) नीतिशास्त्र, दण्ड नीति, धन उपार्जक शास्त्र।
अर्थात् तद्० (अ०) वस्तुतः, अर्थतः, फलतः।
अर्थान्तर तद्० (पु०) अन्यार्थ, दूसरा अर्थ।—न्यास (पु०) अर्थालङ्कार विशेष, यथा—

"दृढ़ सामान्यते विशेष होय,
भूषन अर्थान्तर न्यास सोय"—भूषण।

अर्थापत्ति तद्० (पु०) प्रमाण विशेष जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात की सिद्धि अपने आप हो जाय।
अर्थालङ्कार तद्० (पु०) अलङ्कार विशेष जिसमें अर्थ का चमत्कार प्रदर्शित किया जाय। [रथी।
अर्थी तद्० (पु०) धनी, याचक, वादी, मुरदे की खाट,
अर्दावा तद्० (गु०) मोटा आटा, दलिया।
अर्दित तद्० (गु०) [अर्द+क्त] पीड़ित, यन्त्रणायुक्त, हिंसित, याचित, गत।
अर्द्ध तद्० (गु०) तुल्य विभाग, सम विभाग, आधा, मध्य।—चन्द्र तद्० (पु०) चन्द्रखण्ड, अर्द्धेन्दु, नखक्षत, गलहस्त, मयूर पुच्छस्थ, चन्द्रमा।—मारीश तद्० (पु०) शिव, महादेव, हरगौरि, मूर्ति विशेष।—निमेष तद्० (पु०) आधा पल —मागधी तद्० (स्त्री०) प्राकृत का एक भेद विशेष।

अररारा तद्० (पु०) दरोराहा, दरदरा।

अरि तद्० (पु०) शत्रु, वैरी, रिपु।—मण्डल तद्० (पु०) शत्रु-समूह, शत्रु राज्य।—षड्वर्ग तद्० (पु०) छः शत्रुओं का समुदाय, छः शत्रु ये हैं— काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर।

अरिन्दम तद्० (गु०) [अरि+दम+खच्] शत्रुजयी, योधा, वली, शत्रुओं के दमन करने वाला।

अरियाना (क्रि०) तिरस्कार करना।

अरिष्ट तद्० (पु०) सूतिकागृह, तक्र, विपाक, दुःख, मरण चिन्ह, उत्पात, उपद्रव, वृषभासुर। इसी असुर को कंस ने श्रीकृष्णचन्द्र जी के मारने के लिये व्रज में भेजा था। इसका विशाल शरीर तथा भयङ्कर शब्द सुन कर व्रजवासी भयभीत हो गये। भगवान् कृष्ण ने इसका अन्तिम संस्कार किया।—नेम तद्० (पु०) कश्यप प्रजापति का एक नाम। राजा सगर के ससुर का नाम, सोलहवाँ प्रजापति।

अरी तद्० (स्त्री०) स्त्रियों के लिये सम्बोधन।

अरीठा दे० (पु०) रीठा।

अरु तद्० (अ०) फिर, पुनः, और, औ।

अरुई तद्० (स्त्री०) अरवी, गर्भवती स्त्री का चिन्ह, उसकी अरुचि।

अरुचि तद्० (स्त्री०) रोग विशेष, भोजन के प्रति अभिलाषाभाव, अनिच्छा, वितृष्णा, अश्रद्धा, जी मचलाना।

अरुझाना तद्० (क्रि०) फाँसना फँसाना, उलझाना।

अरुण तद्० (पु०) अर्क, वृक्ष, सूर्य अव्यक्त राग, ईषद्रक्त वर्ण, सन्ध्या राग, शब्द रहित, कुष्ठभेद। सूर्य के सारथि का नाम। यह गरुड़ के ज्येष्ठ भ्राता थे। महर्षि कश्यप के औरस तथा विनता के गर्भ से इनकी उत्पत्ति हुई थी। इनके पैर नहीं हैं, क्योंकि जब इनका शरीर गठित नहीं हुआ था, तभी इनकी माता विनता ने अण्डे फोड़ दिये। इनकी स्त्री का नाम श्येनी था, सम्पाति और जटायु इनके दो पुत्र थे।—उदय तद्० (पु०) प्रातःकाल, विहान, प्रभात।—कमल तद्० (पु०) रक्त कमल।—लोचन तद्० (पु०) लाल नेत्र, कपोत, कबूतर, कोकिल।—सारथि तद्० (पु०) सूर्य, भानु, दिवाकर।—शिखा (पु०) मुर्गा।

अरुणाई तद्० (स्त्री०) मोर, लाल रङ्ग।

अरुन्तुद तद्० (गु०) [अरु+तुद्+श] मर्मस्पृक्, मर्मपीड़क, पीड़ाकारी, मारक, अपथ्य।

अरुन्धति या अरुन्धती तद्० (स्त्री०) वशिष्ठ मुनि की पत्नी, अति सूक्ष्म, नक्षत्र विशेष कर्दम मुनि की कन्या, वशिष्ठ के समान इनको भी नक्षत्रमण्डल में स्थान मिला है। कहते हैं मरने के छः महीने पहिले यह तारा नहीं दीखता।

अरूप तद्० (गु०) कुरूप, कुत्सित रूप, कुश्री।

अरे तद्० (अ०) नीच सम्बोधन, सक्रोध आह्वान।

अरेप तद्० (पु०) पाप, अपराध, दोष।

अरोग तद्० (गु०) रोगरहित, भला, चङ्गा।—ना दे० (क्रि०) (मेवाड़ी भाषा में) भोजन करना।

अरोचक तद्० (गु०) रोग विशेष, अरुचि रोग।

अरोड़ा दे० (पु०) खत्रियों की एक जाति जो पंजाब में विशेष संख्या में पायी जाती है।

अर्क तद्० (पु०) सूर्य, आदित्य, इन्द्र, ताम्र, स्फटिक, पण्डित, ज्येष्ठ भ्राता, रविवार, आक वृक्ष।—तनय तद्० (पु०) कर्णराज, सावर्णि मनु, शनि, यम।—व्रत तद्० (पु०) आरोग्य सप्तमी का व्रत, सूर्य के जलग्रहण के समान राजाओं का प्रजा के निकट कर ग्रहण।

अर्कट तद्० (स्त्री०) सतर्कता, सावधानता।

अर्गनि तद्० (पु०) देखो अरगनी।

अर्गजा तद्० (देखो अरगजा)।

अर्गल तद्० (पु०) खील, आगल, हुड़का, किवाड़ बन्द करने की लकड़ी।—ा तद्० (स्त्री०) खील, हुड़का, दुर्गा, सप्तशती के पाठ के पहले पाठ किया जाने वाला एक स्तोत्र।—ी (स्त्री०) भेड़ की एक जाति जो मिस्र, श्याम आदि देशों में पायी जाती है। [पूजा में जल देना, मोल।

अर्घ तद्० (पु०) पूजा का द्रव्य, पूजा का उपहार,

अर्घा तद्० (स्त्री०) अर्घ देने का पात्र, तर्पण का पात्र विशेष, जलहरी जिसमें शिवलिङ्ग रहता है।

अर्घ्य तद्० (गु०) दर्शनी, भेंट, उपहार, प्रणाम, गृह में आये हुए को जलादि देना।

अर्चक तद्० (पु०) पूजक, या याचक, अर्चनाकारी।
अर्चा या अर्चना तद्० (स्त्री०) पूजा, सेवा, आराधना, प्रतिमा, देवमूर्ति। [ज्योति।
अर्चिः तद्० (स्त्री०) अग्निशिखा, चमक, आँच,
अर्चित तद्० (गु०) पूजित, आराधित।
अर्चिराजमार्ग तद्० (पु०) देवयान, उत्तरमार्ग, वह मार्ग जिससे मुक्त जीव भगवान के पास जाते हैं।
अर्चिष्मान् तद्० (पु०) [अर्चिस्+मत] अग्नि, सूर्य, (गु०) दीप्तिमान, देदीप्यमान।
अर्च्य तद्० (पु०) पूजनीय, पूज्य।
अर्ज़ दे० (पु०) प्रार्थना, विनती।—दाश्त (स्त्री०) प्रार्थना पत्र। [वाला।
अर्जक तद्० (पु०) उपार्जनकर्त्ता, अर्जयिता कमाने
अर्जन तद्० (पु०) उपार्जन, कमाई, प्राप्ति, लाभ, प्रतिपत्ति, सञ्चय करण, लाभ करण। [लब्ध।
अर्जित तद्० (गु०) अर्जित किया हुआ, सञ्चित,
अर्ज़ी दे० (स्त्री०) विनयपत्र।—दावा (पु०) प्रार्थना पत्र विशेष जो दीवानी अदालत में पेश किया जाता है।
अर्जुन तद्० (पु०) वृक्ष विशेष। तीसरा पाण्डव। देवराज इन्द्र के औरस तथा कुन्ती के गर्भ से इनका जन्म हुआ था, यह पाण्डु के क्षेत्रज पुत्र थे। उन दिनों इनके समान धनुर्विद्या विशारद दूसरा नहीं था। साक्षात् भगवान् इनके सारथी थे। महादेव की आराधना करने से इन्हें पाशुपतास्त्र प्राप्त हुआ था। अस्त्रविद्या सीखने के लिये यह स्वर्ग में इन्द्र के निकट गये थे, अपना मनोरथ भङ्ग होने के कारण उर्वशी ने इन्हें नपुंसक हो जाने का शाप दिया था, जिसका उपयोग अज्ञातवास के समय विराट राजधानी में इन्होंने किया, अर्जुन की तीन स्त्रियाँ थीं—द्रौपदी, सुभद्रा और चित्राङ्गदा, इनके अतिरिक्त कौरव्य नाग की कन्या उलूपी को भी इन्होंने ब्याहा था।
अर्णव तद्० (पु०) समुद्र, सागर, अब्धि।—पोत तद्० (पु०) जहाज़ वृहत् नौका, समुद्रयान।—यान तद्० (पु०) जहाज़।
अर्थ तद्० (पु०) अभिप्राय, तात्पर्य, मांग, धन।—कर तद्० (वि०) लाभकारी, जिससे धन पैदा हो।—गौरव तद्० (पु०) अर्थ की गम्भीरता।—ज्ञ तद्० (गु०) भाव मर्मज्ञ।—ज्ञान तद्० (पु०) तात्पर्य—तः तद्० (अ०) फलतः, वस्तुतः।—दण्ड तद्० (पु०) जुर्माना, धन का दण्ड—दूषण तद्० (पु०) अपरिमित व्यय।—नाश तद्० (पु०) धननाश, निराश।—पति तद्० (पु०) राजा कुबेर, अति धनी।—पर तद्० (गु०) कृपण, व्यय, शङ्कित।—पिशाच तद्० (वि०) धनलोलुप, धन के सामने कर्त्तव्याकर्त्तव्य पर ध्यान न देने वाला।—प्रयोग तद्० (पु०) वृद्धि, निमित्त, धन दान।—प्राप्ति तद्० (स्त्री०) धनलाभ, लभ्य।—वत्व तद्० (गु०) प्रयोजनार्हता, प्रयोजनीयता।—वाद तद्० (पु०) काल्पनिक, फलश्रुति, स्तुति, प्रशंसा, प्ररोचक वाक्य।—विज्ञान तद्० (पु०) शब्दार्थज्ञान।—वृद्धि तद्० (स्त्री०) धनवर्द्धन।—शाली तद्० (पु०) धनशाली, धनवान्।—शास्त्र तद्० (पु०) नीतिशास्त्र, दण्ड नीति, धन उपार्जक शास्त्र।
अर्थात् तद्० (अ०) वस्तुतः, अर्थतः, फलतः।
अर्थान्तर तद्० (पु०) अन्यार्थ, दूसरा अर्थ।—न्यास (पु०) अर्थालङ्कार विशेष, यथा—
"कह सामान्यते विशेष होय,
भूषन अर्थान्तर न्यास सोय"—भूषण।
अर्थापत्ति तद्० (पु०) प्रमाण विशेष जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात की सिद्धि अपने आप हो जाय।
अर्थालङ्कार तद्० (पु०) अलङ्कार विशेष जिसमें अर्थ का चमत्कार प्रदर्शित किया जाय। [रथी।
अर्थी तद्० (पु०) धनी, याचक, वादी, मुरदे की खाट,
अर्दावा तद्० (गु०) मोटा आटा, दलिया।
अर्दित तद्० (गु०) [अर्द+क्त] पीड़ित, यन्त्रणायुक्त, हिंसित, याचित, गत।
अर्द्ध तद्० (गु०) तुल्य विभाग, सम विभाग, आधा, मध्य।—चन्द्र तद्० (पु०) चन्द्रखण्ड, अर्द्धेन्दु, नखक्षत, गलहस्त, मयूर पुच्छस्थ, चन्द्रमा।—नारीश तद्० (पु०) शिव, महादेव, हरगौरि, मूर्त्ति विशेष।—निमेष तद्० (पु०) आधा क्षण—मागधी तद्० (स्त्री०) प्राकृत का एक भेद विशेष।

मथुरा तथा पटना के बीच देश में बोली जाने वाली एक प्राचीन कालीन भाषा।—रथ तत्० (पु०) एक रथी से न्यून योद्धा, अर्द्धरथी।—रात्र तत्० (पु०) महानिशा, रात्रि का अर्द्धभाग, आधीरात।—वृत्ति तत्० (पु०) वृत्त का आधा भाग।—समवृत्त तत्० (पु०) वृत्त विशेष जिसमें पहिला तो तीसरे के और दूसरा चौथे चरण के बराबर हो।—ांश तत्० (पु०) अर्द्धभाग।—ाङ्ग तत्० (पु०) शीताङ्ग, रोग विशेष, पक्षाघात।—ाङ्गी, ाङ्गिनी तत्० (स्त्री०) स्त्री, पत्नी।

अर्पण तत्० (पु०) दान, समर्पण, भेंट।

अर्ब तद्० (पु०) दशकोटि, संख्या विशेष।—खर्ब तद्० असख्यात।—दर्ब दे० (पु०) धन, सम्पत्ति

अर्वाक तत्० (पु०) प्राक्, पूर्व, आदि, अग्र, अगर, निकट, पश्चात्।

अर्बुद तत्० (पु०) दश करोड़ संख्या विशेष, रोग विशेष, पर्वत विशेष, आबू पर्वत।

अर्भक तत्० (पु०) बालक, शिशु, शावक, मूर्ख, कृष, कृशतृण, स्वल्प, सदृश। [पितर विशेष।

अर्यमा तत्० (पु०) आदित्य, सूर्य, अर्कवृक्ष, मित्र,

अर्राटा तत्० (पु०) एक ही समय गिरना, अकस्मात् गिरना।

अर्राना तत्० (क्रि०) एक बेर आ पड़ना।

अर्वाचीन तत्० (गु०) नूतन, अज्ञान, विरुद्ध।

अर्श तत्० (पु०) पीड़ा, बवासीर, रोग विशेष।

अर्शपर्श तत्० (पु०) छुवाछूत, अशुद्ध।

अर्ह तत्० (पु०) योग्य, उत्तम पात्र, श्रेष्ठ उपयुक्त।

अर्हन्त तद्० (पु०) जैन विशेष, जैनियों के एक तीर्थङ्कर का नाम।

अल तत्० (अ०) भूषण, पर्याप्ति, वारण वृथा, शक्ति, निरर्थक।

अलक तत्० (पु०) घूँघट, छुरिया, केश घुघराले बाल।

अलकतरा दे० (पु०) पत्थर के कोयले से निकाला हुआ एक गाढ़ा काला पदार्थ, धूना कोलतार।

अलका तत्० (स्त्री०) कुबेरपुरी।—ाधिप तत्० (पु०) कुबेर, धनेश्वर।

अलकावली तत्० (स्त्री०) वेणी, घुंघराले बाल।

अलक्षण तत्० (पु०) बुरे चिन्ह, कुलक्षण।

अलक्ष तत्० (पु०) अगोचर, अनदेखा।

अलग तद्० (अ०) भिन्न, न्यारा, पृथक्।

अलगनी तत्० (स्त्री०) (देखो अरगनी)

अलङ्कार तत्० (पु०) भूषण, आभरण।—हीन तत्० (गु०) भूषण रहित, अशोभित।

अलङ्कृत तत्० (गु०) भूषित, शोभित, सजाया।

अलङ्ग तद्० (पु०) पार, ओर, छोर, एक तरफ।

अलडबलड तत्० (स्त्री०) जब, बकबक, निर्बुद्धि, अव्यवस्थित।

अलतानी तद्० (स्त्री० हाथी का बागडोर।

अलता तद्० (पु०) आलता लाख का रंग, महावर।

अलबेला तद्० (पु०) छैला, गुंडा, छैल छबीला।

अलम् तद्० (अ०) पूर्णता, सामर्थ्य, निषेध, निरर्थक, बहुत, बस, समूह, भीड़।

अलस तत्० (गु०) आलसी, मन्द, ढीला आलस्य युक्त, कर्मों में अनुत्साही।—ता तद्० (स्त्री०) आलस्य, शैथिल्य।

अलसाना (क्रि०) ऊँघना, झूमना, हिलना।

अलसी तत्० (स्त्री०) तीसी, मसीना।

अलसेट तत्० (पु०) ढिलाई, व्यर्थ की देर, भुलावा, टालमटोल, बाधा, अड़चन।—िया दे० (वि०) ढिलाई करने वाला।

अलहदा दे० (गु०) अलग, पृथक्। [रस्सी, सिक्कड़।

अलान तत्० (पु०) हस्तिबन्धन, हाथी बाँधने की।

अलाप तत्० (गु०) आलाप, स्वर, राग।

अलाव तद्० (पु०) आग का ढेर।

अलाव तद्० (पु०) धूनी, अङ्गीठा।

अलि तत्० (पु०) भँवरा, भ्रमर, मदिरा, सखी।—नि (स्त्री०) भ्रमरी।

अलीक तत्० (गु०) झूठ, मिथ्या, असार।

अलीन तत्० (गु०) अयोग्य, अमनोयोगी।

अलील दे० (गु०) बीमार, रोगी।

अलेख तत्० (पु०) लिखने के अयोग्य, दुर्बोध, अज्ञेय।

अलीकप्रलाप (पु०) अलीक प्रलाप, झूठ बोलना, मनमाना, बकवाद।

अलैया बलैया तत्० (स्त्री०) निछावर, लेव।

अलोकन तत्० (पु०) गुप्त होना, अदृश्यता, अस्त होना।

अलौना या अलोणा तद्० (गु०) अलुना, बिना नोन, स्वाद-रहित ।
अलोप तद्० (गु०) छिपा, बिगाड़, अप्रकट ।
अलोल तद्० (स्त्री०) चञ्चल नहीं, अटल, खेलकूद ।
अलौकिक तद्० (गु०) लोकोत्तर, अनोखा, अद्भुत, सर्वसुन्दर, सर्वश्रेष्ठ ।
अल्प तद्० (गु०) थोड़ा, कुछ, छोटा, किञ्चित्, लघु ।
—बुद्धि तद्० (पु०) मन्द बुद्धि, असमझ ।
—ायु तद्० (गु०) अल्पजीवी, शीघ्र मरने वाला ।
—ाहार तद्० (पु०) थोड़ा खाना, अल्प अहार ।
अल्पप्राण तद्० (पु०) जिन वर्णों के उच्चारण में प्राण-वायु का उपयोग थोड़ा किया जाय, व्यञ्जन ।
अल्लमगल्लम तद्० (पु०) प्रलाप, अंटसंट, बकवाद ।
अल्हड़ तद्० (गु०) अनाड़ी, अनसिखा, अनुभव-रहित ।
अव तद्० (उप०) विशेष, निश्चय, अनादर, आलम्बन, विज्ञान, व्यापन, शुद्धि, अल्प, परिभव, नियोग, पालन । यह जिस शब्द के पहले आता है उस शब्द का अर्थ प्रकरण के अनुसार, भेद, व्यापकता, अभाव और अनादर होता है ।
अवकथन तद्० (पु०) [अव+कथ्+अनट्] स्तुति, उपासना, प्रसादक वाक्य ।
अवकर्तन तद्० (पु०) [अव+कृत्+अनट्] सूत बनाने का यन्त्र, चरखा ।
अवकर्षण तद्० (पु०) [अव+कृष्+अनट्] उद्धार, निष्कर्षण, बाहर खींचना ।
अवकाश तद्० (गु०) [अव+काश+अल्] अवसर, समय, विश्रामकाल, सुभीता, छुट्टी का समय ।
अवकीर्ण तद्० (गु०) [अव+कृ+क्त] विक्षिप्त, अनादृत, इधर उधर फैलाया हुआ, बिखेरा गया ।
अवकीर्णी तद्० (गु०) [अव+कृ+क्त+इन्] क्षत-व्रत, नियमभ्रष्ट व्रत, निषिद्ध वस्तुओं के संसर्ग से जिसका व्रत भङ्ग हो गया हो, अयोग्य वस्तु सेवी मनुष्य ।
अवकुञ्चन तद्० (पु०) [अव+कुच्+अनट्] वक्री-करण, टेढ़ा करना, मोड़ना ।
अवकुण्ठन तद्० (पु०) [अव+कुठ+अनट्] साहस परित्याग, भीरु होना, असाहसी होना ।
अवकुण्ठित तद्० (गु०) [अव+कुठ+इत] असा-हसी, भीरु । [कथन के अयोग्य ।
अवक्तव्य तद्० (गु०) [अ+वच्+तव्य] अकथ्य,
अवकेशी तद्० (गु०) बाँझ, वन्ध्या, निष्पुत्र, पुत्रहीन, सन्तान रहित ।
अवक्रन्दन तद्० (पु०) [अव+क्रंद+अनट्] खूब ज़ोर से क्रन्दन, चिल्ला चिल्ला कर रोना ।
अवकुष्ट तद्० (गु०) [अव+कुश+क्त] भर्त्सित, निन्दित, मन्दध्वनित, कुशब्द युक्त, गाली दिया हुआ ।
अवखण्डन तद्० (पु०) [अव+खंड+अनट्] खनन, खोदना । [चित, विदित ।
अवगत तद्० (गु०) [अव+गम्+क्त] ज्ञात, परि-
अवगति तद्० (स्त्री०) [अव+गम्+क्ति] ज्ञान, बोध, विज्ञता, गमन ।
अवगाढ़ तद्० (गु०) [अव+गाह+क्त] निमज्जित कृतस्नान, घुसा, प्रविष्ट, छिपा ।
अवगाहन तद्० (पु०) [अव+गाह+अनट्] स्नान करण, निमज्जन, डुबकी, गोता, अथाह, अति गहरा, जिसका नीचे का तल मालूम न हो सके, अनन्त ।
अवगीत तद्० (पु०) निन्दा, दोषदुष्ट, अति निन्दित, विशेष लाञ्छित ।
अवगुण तद्० (पु०) अवगुन, दोष, खोट, औगुण, निन्दित गुण, दुर्गुण, दोष ।
अवगूहन तद्० (पु०) [अव+गूह+अनट्] आलि-ङ्गन, आश्लेष, प्रेम से परस्पर अङ्ग संस्पर्श ।
अवग्रह तद्० (पु०) अनावृष्टि, बहुकाल अवर्षण, ग्रहण, अपहरण, प्रतिबन्धक, हाथी का मस्तक, हाथियों का झुण्ड, हठमार, ज्ञानविशेष, शाप ।
अवघट तद्० औघट (गु०) कुघाट, अटपट, ऊँचा नीचा, टूटा फूटा । [अपकृष्टु ।
अवघात तद्० (पु०) [अव+हन्+घञ्] अपघात,
अवचट दे० (पु०) औचक, अचानक, संकट, कठिनाई ।
अवचर तद्० औचर (गु०) एक दृष्टि, औचक, अचा-नक, एकबारगी ।

अवचेष्टा तत्० (स्त्री०) [अव+चेष्टा] मन्द चेष्टा, धनाड़ीपना।

अवच्छिन्न तत्० (गु०) सीमाबद्ध, अवधि सहित युक्त, अलग न किया हुआ, विशेषण युक्त।

अवज्ञा तत्० (स्त्री०) अनादर, अपमान, उपेक्षा, असम्मानकरण, अवहेला।

अवज्ञात तत्० (गु०) उपेक्षित, अनादृत, अपमानित।

अवट तद्० औघट (अ०) औंदा वर, खोलाकार, गर्त गड्ढा, छिद्र, नटवृत्ति से जीवन काटने वाला।

अवडेरि तत्० (अ०) बहकाव, धोखा देकर यथा "प्रथम कहे शिव सती विवाही।

पुनि अवडेर मराइनि ताही" ॥—रामायण।

अवढर तत्० (गु०) नीच पर भी ढलने या दया करने वाला, बिना विचारे दया करने वाला।

अवतंस तत्० (पु०) कर्णभूषण, कर्णालङ्कार, शिरोभूषण, तिलक, माथे का गहना, चूड़ामणि, मुकुट माला।

अवतरण तत्० (पु०) [अव+तृ+अनट्] गमना, अवरोहण, अवतार, उतरना, भाषान्तर, अनुवाद करना। (स्त्री०) अवतरणिका, आभास, भूमिका, वक्तव्य विषय की सूचना। [पाना।

अवतरना (क्रि०) नीचे उतरना, प्रकट होना, प्रकाश

अवतार तत्० (पु०) [अव+तृ+घञ्] देहान्तर धारण, मनुष्य रूप में देवता का प्रकाशित होना। भगवान का लीलार्थ प्राकट्य। भगवान के चौबीस अवतार हैं, जिनमें प्रधान दस गिने जाते हैं। दस अवतार ये हैं—मत्स्य, कच्छप, वराह नरसिंह, वामन, परशुराम श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण, बुद्ध और कल्की।

अवतीर्ण तत्० (गु०) [अव+तृ+क्त] अवरूढ़, आविर्भूत, उपस्थित, उत्तीर्ण, जन्म हुआ, उत्पन्न, अवतार लिया हुआ। [स्वच्छ।

अवदात तत्० [अव+दा+क्त] शुभ्र, श्वेत, गौर,

अवदान तत्० (पु०) [अव+दा+अनट्] त्याग, उत्सर्ग, निवेदन, कुत्सित दान, वध, मार डालना, पराक्रम, उल्लंघन।

अवदीच तद्० (पु०) गुजराती ब्राह्मणों की एक शाखा विशेष, उत्तर भारत के रहने वाले ब्राह्मण जो गुजरात में रहने लगे वे औदीच्य या अवदीच कहे जाते हैं।

अवद्ध तत्० (गु०) [अ+बध+क्त] बन्धन शून्य, अनियन्त्रित।—मुख (गु०) अप्रियवादी, दुर्मुख, मुखर। [अतथ्य, अनिष्ट।

अवद्य तत्० (गु०) [अ+वद्+य] अधम, निन्दनीय,

अवद्योत तत्० (गु०) [अव+द्युत+घञ्] ईषदुज्ज्वल, किञ्चिद् दीप्त, अल्प प्रकाश, (पु०) संस्कृत व्याकरण का एक ग्रन्थ विशेष। [पुरी, अवध प्रदेश।

अवध तद्० (स्त्री०) वचन, सीमा, सीव, समय, अयोध्या

अवधान तत्० (पु०) [अव+धा+अनट्] मनोयोग, मन संयोजन, चौकसाई, सावधानी।

अवधारण तत्० (पु०) [अव+धृ+णिच्+अनट्] निश्चय, निर्णय, स्थिरीकरण। [सोचा गया।

अवधारी तत्० (क्रि० वि०) निश्चय किया गया,

अवधि तत्० [अव+धा+कि] पर्यन्त, सीमा, से, तक, लौं।

अवधार्य तत्० (अ०) [अव+धृ+ल्यप्] विचार कर, सोच कर, अवमानित कर।

अवधूत तत्० [अव+धू+क्त] कम्पित, कम्पायमान परिवर्जित, परित्यक्त। (पु०) उदासीन, योगी, सन्यासी गुरु दत्तात्रेय के समान साधु विशेष, वर्ण और आश्रमोचित धर्मों को छोड़ कर केवल आत्मा को देखने वाले योगी, अवधूत कहे जाते हैं। (स्त्री०) अवधूतनी।

अवध्य तत्० (गु०) [अ+वध्+य] वध के अयोग्य, जिसको प्राणदण्ड नहीं दिया जा सके।

अवनत तत्० (गु०) [अव+नी+क्त] नम्र, विनीत, अधःपतित, दुर्दशाग्रस्त।

अवनति तत्० (स्त्री०) [अव+नी+ति] विनय, नम्रता, अधःपात, दुर्दशा।

अवनि तत्० (स्त्री०) पृथिवी, रक्षण, पालन।—भू तत्० (पु०) [अवनि+भू+क्विप्] मङ्गलग्रह, भौम।

अवनिप तत्० (पु०) राजा, नृप, नरेश।

अवनी तत्० (स्त्री०) पृथिवी, मेदिनी, भूमि।—कुमारी तत्० (स्त्री०) सीता, मिथिलेश राजा जनक यज्ञ करने के अर्थ हल से पृथिवी जोतते थे।

वहाँ एक घड़ा निकला, उसी घड़े से जानकी जी उत्पन्न हुई हैं।—पति तद्० (पु०) भूपति, राजा। —परवनी तद्० (स्त्री०) रानी, राजा की पत्नी, राजा की स्त्री।

अवनेजन तत्० (पु०) धौतकरण, मार्जन।

अवन्ति तत्० (स्त्री०) देश विशेष का नाम, यह नर्मदा की उत्तर ओर वसा हुआ है, इसकी राजधानी उज्जयिनी थी। जिसे अवन्तीपुरी भी कहते थे, इसका दूसरा नाम विशाला है, यह चिप्रा नदी के तीर पर है। यह देश मालवा का पश्चिमी हिस्सा है। महाभारत के समय यह देश दक्षिण की ओर नर्मदा तक और पश्चिम की ओर माही नदी तक विस्तृत था। यही प्रसिद्ध महाराज विक्रमादित्य की राजधानी थी। [अयोग्य।

अवन्द्य तत्० (गु०) अपूज्य, अवन्दनीय, प्रणाम के

अवन्ध्य तत्० (गु०) सफल, फलवान्।

अवभास तत्० (पु०) [अव+भास+अल्] प्रकाशकरण, प्रकाशन, माया, प्रपञ्च।

अवभृथ तत्० (पु०) मत, यज्ञ आदि की समाप्ति का स्नान, यज्ञ शेष, औषधि आदि से लिप्त होकर कुटुम्ब परिजन सहित स्नान को अवभृथ स्नान कहते हैं।

अवम तत्० (पु०) तिथि का क्षय, नीच, तीन तिथि जिस दिन में हों। [अपमानित, तिरस्कृत।

अवमत तत्० (गु०) [अव+मन्+क्त] अवज्ञात,

अवमर्पण तत्० (पु०) [अव+मृष्+अनट्] अवमर्ष, अपचय, परिचय, लोप।

अवमान तत्० (पु०) [अव+मा+अनट्] अपमान, अमर्यादा, अपयश, दुर्नाम।

अवमानना तत्० (स्त्री०) अनादर, अपमान।

अवमानित तत्० (गु०) [अव+मन्+इत] अपमान ग्रस्त, असम्मानित।

अवमूर्द्ध तत्० (पु०) [अव+मूर्द्धन्] अध शिर अधो मस्तक।

अवयव तत्० (पु०) [अव+यु+अल्] अंश, अङ्ग, देह, शरीर, हस्त पाद आदि भाग एक देश।—ी तत्० (गु०) [अवयव+इन्] अङ्गी, अङ्ग सहित, हस्त पाद विशिष्ट, समस्त।

अवर तत्० (गु०) कनिष्ठ, अश्रेष्ठ, मन्द, क्षुद्र, चरम। —ज तत्० (पु०) कनिष्ठ भ्राता, अनुज, शूद्र। —जा तत्० (स्त्री०) कनिष्ठा, भगिनी, छोटी बहिन। [करने वाला, दास।

अवराधक तत्० (पु०) उपासक, सेवक, ध्यानी, सेवा

अवराधना तद्० (क्रि०) सेवना, सेवा, सेवा करना।

अवराधे तद्० (क्रि०) सेवा की, उपासना की, आराधना की, सेवा किये, उपासना किये। [रोका हुआ।

अवरुद्ध तत्० (गु०) [अव+रुध्+क्त] अटकाया गया,

अवरेख तद्० (स्त्री०) लेख लकीर, प्रतिज्ञा।—ना (क्रि०) लिखना, चिन्हित करना।

अवरोध तत्० (पु०) रोक, अटक, रनवास, अन्तःपुर, राजस्त्रीगृह, राजगृह, राजद्वारा।

अवर्ण तत्० (पु०) अ अक्षर, अकार, निन्दा, परिवाद।

अवर्त तद्० (पु०) पानी का चक्कर, भँवर।

अवर्तमान तत्० (गु०) अभाव, अनुपस्थित, मृत।

अवलम्ब तत्० (पु०) [अव+लम्ब्+अल] आश्रय, शरण, आसरा, आधार।

अवलम्बन तत्० (पु०) [अव+लब+अनट्] आश्रय, ठेस।—ीय तत्० (गु०) आश्रयणीय, अवलम्बन करने के योग्य। [निर्भर।

अवलम्बित तत्० (गु०) आश्रित, लटकता हुआ,

अवली तत्० (स्त्री०) पाँति, पंक्ति, लकीर।

अवलेह तत्० (पु०) चटनी, चाटने वाली कोई चीज, चाटने वाली कोई औषधि, भोज्य विशेष।—न तत्० जिह्वा से आस्वादन, चीखना, चाटना, चटनी। [देना।

अवलोकन तत्० (पु०) दर्शन, दृष्टि, ईक्षण, दृष्टि

अवलोकय तत्० (क्रि०) देख, देखो, देखिये, दृष्टि कीजिये, यह शब्द यद्यपि संस्कृत की क्रिया है तथापि इसका बहुतायत से प्रयोग रामायण में मिलता है।

अवश तत्० (गु०) असाध्य, अनायत्त, अनधीन, पराधीन, परवशीन, असमर्थ।

अवशिष्ट तत्० (गु०) अवशेष, शेष, उद्वर्त, बाकी उच्छिष्ट।

अवशेष तत्० (पु०) अन्त, शेष, बाकी।—ित तत्० (गु०) बाकी, बचा हुआ, जो बच रहा।

अवश्य तत्० (अ०) निश्चय करके, निस्सन्देह, निश्चित, उचित, कर्तव्य, सर्वथा कर्तव्य, नितान्त निश्चित।
—म्भावी तत्० (गु०) [अवश्यं+भू+णिनि] निस्सन्देह, होने के योग्य, एकान्त भावी, अटल।
—मेव तत्० (क्रि० वि०) निस्सन्देही, अवश्य ही, निश्चय ही। [होना, अनावृष्टि।
अवर्षण तत्० (पु०) वृष्टि का अभाव, वर्षा का न
अवसर तत्० (पु०) अवकाश, समय, विराम, विश्राम, प्रस्ताव, मन्त्रविशेष, प्रसंग, बरसर, क्षण।
अवसन्न तत्० (गु०) श्रान्त, क्लान्त, जड़ीभूत, गिरा हुआ, थका हुआ, उदास। [सीमा।
अवसान तत्० (पु०) अन्त, शेष, समाप्ति, मृत्यु,
अवसि तद्० (अ०) (देखो अवश्य)
"अवसि न देखिये, देखन योगू।"
अवसेरि तद्० देर, विलम्ब, चाह, आशा।
अवस्था तत्० (स्त्री०) [अव+स्था+अ] दशा, गति, समय, दुर्दशा।— त्रय (पु०) जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीन अवस्था हैं।
अवस्थाता तत्० (पु०) अवस्थानकारी, अधिष्ठाता।
अवस्थान तत्० (पु०) [अवस्था+अनट्] स्थिति, वास। [अवस्था, अन्य दशा।
अवस्थान्तर तत्० (पु०) [अवस्था+अन्तर] दूसरी
अवस्थापन तत्० (पु०)[अव+स्था+णिच्+अनट्] स्थापित करना। [दृढ़ावस्थान।
अवस्थित तत्० (गु०) [अव+स्था+क्त] स्थिरीभूत,
अवहित तत्० (गु०) [अव+धा+क्त] विज्ञात, अवधान, गत।
अवहित्था तत्० (स्त्री०) [अ+वहिर+स्था+क्विप्] छद्मवेश, चालाकी से अपने को छिपाना।
अवही तत्० (पु०) एक प्रकार का मयूर।
अवहेला तत्० (स्त्री०) अनादर, अश्रद्धा, अवज्ञा।
अवाई तद्० (स्त्री०) आगमन, आहट, अवाई।
अवाक् तत्० (गु०) [अ+वच्+णिच्] स्तब्ध, वाक्यरहित।
अवाङ्मुख तत्० (गु०) [अवाक्+मुख] अधोमुख, नत, लज्जित। [के अयोग्य।
अवाच्य तत्० (गु०) अकथ्य, मौनी, गुप्तचुप, कहने
अवाञ्ची तत्० [अवाच्+ई] दक्षिण दिशा।

अवाच्य तत्० (गु०) अतर्क्य, विना विधा (देखो अवाधी)। [सुखदाई
अवाधी तद्० (गु०) बाधाहीन, दुःखरहित, सुखरूप
अवाँ तद्० (पु०) आँवा, पजावा जिसमें कुम्हार मिट्टी के वर्तन पकाते हैं।
अवार तद्० (स्त्री०) विलम्ब, अत्याचार।
अवास तत्० (पु०) वास, घर, निवासस्थान।
अर्वाचीन तत्० (वि०) प्राचीन का उल्टा, नवीन।
अविकल तत्० (गु०) ज्यों का त्यों, वैसा ही, समस्त, सुविरहित, यथार्थ।
अविकल्प तत्० (पु०) असंशय, निस्सन्देह।—ल्पित तत्० (गु०) सन्देहरहित, असंशय।
अविकार तत्० (गु०) विकृतिशून्य, अविकल, जन्म मरणादि विकार शून्य, अज, अविनाशी, ईश्वर, अविकारी।
अविचल तत्० (गु०) अचल, स्थावर, स्थिर, भयशून्य, निष्कम्प, निडर।—लित तत्० (गु०) स्थिर, दृढ़, निश्चित।
अविचार तत्० (पु०) अत्याचार, अन्याय, भूल, अधर्म।—रित तत्० (गु०) अविवेचित, अकृतविचार।—री तत्० (गु०) विचार रहित, अन्यायकारक, अविचक्षण।
अविच्छिन्न तत्० (गु०) अभिन्न, संलग्न, युक्त, भेदरहित। [अवैदुष्य, अप्रवीणता अबोध।
अविज्ञ तत्० (गु०) अप्रवीण, अनभिज्ञ।—ता (स्त्री०)
अवितर्कित तत्० (गु०) निश्चित, निस्सन्देह।
अवितत तत्० (गु०) विस्तार-रहित, अविस्तृत, सङ्कुचित। [यथार्थ, विशिष्ट।
अवितथ तत्० (पु०) सत्य, यथार्थ (गु०) सत्यवान,
अविदग्ध तत्० (गु०) [अ+वि+दह+क्त] अपाण्डित्य, अचतुर, अनभिज्ञ।—ता (स्त्री०) अपाण्डित्य, अनिपुणता।
अविदित तत्० (गु०) अज्ञात, अनवगत, बेमालूम।
अविद्य तत्० (गु०) [अ+विद्य] मूर्ख, अनभिज्ञ, विद्यारहित।
अविद्यमान तत्० (गु०) अवर्तमान, अभाव, असत्ता।
अविद्या तत्० (स्त्री०) अज्ञान, माया, अज्ञानता, मूर्खता, मोह।

अविनय तत्० (पु०) नम्रतारहित, धृष्टता, ढिठाई।
अविनश्वर तत्० (गु०) नष्ट न होने वाला, स्थायी।
अविनासी तद्० या अविनाशी तत्० (पु०) नित्य, सर्वदा रहने वाला, जिसका कभी नाश न हो, नाशरहित, परमात्मा। [दुःशील, उद्दण्ड, दुष्ट।
अविनीत तत्० (पु०) अन्यायी, ढीट, चञ्चल, उच्छृ-
अविमुक्त तत्० (गु०) अव्यक्त, मुमुक्षु, मुक्त।—क्षेत्र तत्० (गु०) काशी।
अविरत तत्० (वि०) विरामशून्य, निरन्तर, लगा हुआ। (क्रि० वि०) निरन्तर। (पु०) विराम का अभाव। [घना।
अविरल तत्० (गु०) निरन्तर, सघन, अविच्छिन्न,
अविरोध तत्० (पु०) सुख, चैन, मिलाप, प्रीति, द्वेष का अभाव, एकता।—ी तत्० (पु०) मिलापी, धीर, शान्त।—िनी तत्० (स्त्री०) धीरज या शान्ति रखने वाली स्त्री।
अविलम्ब तत्० (पु०) शीघ्र, तुरन्त, झटपट।
अविवादी तत्० (गु०) मेली, सहज स्वभाव का, शान्त, झगड़ा न करने वाला।
अविवेक तत्० (पु०) विचारहीनता, मूर्खपन, विवेक शून्यता।—ी तत्० (पु०) अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारने वाला। [रहित।
अविशेष तत्० (पु०) सामान्य, तुल्य, सदृश, विशेषता
अविश्वास तत्० (गु०) विश्वास शून्य, अप्रतीति, प्रतीति-हीन। [समय।
अबेर तद्० (स्त्री०) विलम्ब, अबेर, देरी, अधिक
अवैतनिक तत्० (वि०) बिना वेतन के काम करने वाला, आनरेरी।
अव्यक्त तत्० (गु०) [अवि+अञ्+क्त] अस्फुट, अप्रकाशित। (पु०) विष्णु, शिव, कन्दर्प, मूर्ख, प्रकृति, आत्मा महदादि, परमात्मा, क्रियारहित।—राग तत्० (पु०) ईषत् लोहित वर्ण, हलका लाल, गौर, श्वेत।
अव्यग्र तत्० (गु०) घबराहट-रहित, अनाकुल।
अव्यय तत्० (पु०) शब्द विशेष, जो सर्वदा एक समान रहते हैं यथा—और, अथवा, फिर, पुनः, आदि, विष्णु, परमेश्वर। (गु०) नाशरहित, कृपण।—ीभाव तत्० (पु०) समास का एक भेद। इसमें अव्यय के साथ समस्त उत्तरपद होता है, जैसे प्रतिरूप, अतिकाल।
अव्यर्थ तत्० (वि०) अचूक, सार्थक, अमोघ।
अव्यवस्था तत्० (स्त्री०) असम्मति, अनरीति, अविधि, शास्त्र-विरुद्ध व्यवस्था।
अव्यवस्थित तत्० (गु०) नीति आदि शास्त्रों की व्यवस्था से अनभिज्ञ, अस्थिर-चित्त, सिद्धान्त-रहित, चञ्चल।
अव्यवहार्य तत्० (गु०) व्यवहार के अयोग्य, जाति-भ्रष्ट। [सन्निकट, अत्यन्त समीप।
अव्यवहित तत्० (गु०) व्यवधान-रहित, संस्कृत,
अव्याप्ति तत्० (स्त्री०) अप्राप्ति, न फैलना। न्याय के मत से लक्षण सम्बन्धी एक प्रकार का दोष। लक्ष्य के एक देश में लक्षण का नहीं जाना अव्याप्ति है। यथा—शिखासूत्र विशिष्ट ब्राह्मण है। शिखा सूत्र का रहना ब्राह्मण का लक्षण है। संन्यासी ब्राह्मण है, परन्तु वह शिखा सूत्र रहित है, अतएव पूर्वोक्त ब्राह्मण का लक्षण संन्यासी में अव्याप्त हुआ। अथवा अग्नि का लक्षण किया गया कि उष्णस्पर्शवान् धूम विशिष्ट अग्नि है। लोहे के गोले में अग्नि है, परन्तु उसमें धूम नहीं है। अतएव पूर्वोक्त अग्नि का लक्षण अव्याप्त हुआ, उसी को अव्याप्ति कहते हैं।
अव्याहत तत्० (पु०) बेरोक, अवरोध-रहित।
अव्वल दे० (गु०) प्रथम, पहिला।
अशकुन तत्० (पु०) बुरे सगुन, असगुन, अशगुन, भावी के लिये बुरे चिन्ह।
अशक्त या असक्त तत्० (गु०) शक्ति-रहित, असमर्थ निर्बल।—ता तत्० (स्त्री०) [अशक्त+ता] असमता, अपारगता, शक्तिहीनता।—ि (स्त्री०) शक्ति-हीनता, क्षीणता।
अशक्य तत्० (गु०) असाध्य, शक्ति के अयोग्य, शक्यरहित, असम्भव।—ता तत्० (स्त्री०) असाध्य, सामर्थ्यातिरिक्त। [निडर, निर्विघ्न।
अशङ्क तत्० (गु०) शङ्का-रहित, निश्चिन्त, निर्भय,
अशन तत्० (पु०) [अश्+अनट्] भोजन, भक्षण।—च्छादन तत्० (पु०) [अशन+आच्छादन] अन्न वस्त्र, रोटी कपड़ा।

अशनि तत्० (पु०) [अशन+ई] विद्युत, वज्र, इन्द्र का शस्त्र ।

अशम अप० (पु०) लुब्ध, विक्षुब्ध, अशान्ति ।

अशम्बल तत्० (गु०) अर्थहीन, मार्ग-व्यय-शून्य, पाथेय-हीन । [विश्रामभाव ।

अशाम्य तत्० (गु०) विराम-योग्य, अविश्रान्ति,

अशरण तत्० (गु०) निराश्रय, रक्षाहीन, निरावलम्ब ।

अशरफी दे० (स्त्री०) सुवर्णमुद्रा, मोहर ।

अशराफ दे० (गु०) भद्रपुरुष, भला आदमी ।

अशरीर तत्० (पु०) कन्दर्प, काम, मदन, (गु०) शरीर-रहित ।

अशान्त तत्० (गु०) अशिष्ट, दुरन्त, अधीर, असन्तुष्ट, भावित ।—ता तत्० (स्त्री०) अशिष्टता, दौरात्म्य, घबराहट ।—ि तत्० (स्त्री०) उत्पात, दौरात्म्य, असुखी, हलचल, खलबली, क्षोभ, विशेष असन्तोष ।

अशालीन तत्० (वि०) धृष्ट, ढीठ ।

अशासित तत्० (गु०) अकृत, शासन, शासनरहित ।

अशावरी या असावरी तत्० (स्त्री०) रागिनी विशेष ।

अशास्त्र तत्० (गु०) शास्त्र विरुद्ध, अवैध, विधिहीन ।—ीय तत्० (गु०) वेद विरुद्ध, अवैध ।

अशिक्षित तत्० (गु०) अनसीखा, मूर्ख, शिक्षावर्जित, असभ्य, अप्राप्त शिक्षा, अपठित, अनभिज्ञ ।

अशित तत्० [अश+क्त] भुक्त, खादित ।

अशिर तत्० (पु०) [अश्+इर] हीरक, हीरा । (पु०) अग्नि, राक्षस, सूर्य ।

अशिरस्क तत्० (गु०) मस्तक हीन, कबन्ध, धड़ ।

अशिव तत्० (गु०) अमङ्गल, अशुभ ।

अशिशिर तत्० (गु०) अशीतल, ग्रीष्म, उष्ण ।

अशिश्विका तत्० (स्त्री०) [अशिशु+इक्+आ] अनपत्या, पुत्र-कन्या हीना स्त्री ।

अशिष्ट तत्० (गु०) दुरन्त, अप्रगल्भ, असभ्य, उजड्ड, मूर्ख ।—ता तत्० (स्त्री०) दुरन्तता, असभ्यता, असाधुता, ढिठाई ।

अशुचि तत्० (गु०) अशुद्ध, अपवित्र, अशौच ।

अशुद्ध तत्० (गु०) ठीक नहीं, अपवित्र, अकृत-शोधन अपरिष्कृत, अशुचि, त्रुटि सहित, अशौचयुक्त, बेठीक गलत ।—ि तत्० (स्त्री०) अशुद्ध, अशोधन, भूल, अशौच ।

अशुभ तत्० (गु०) [अ+शुभ] अमङ्गल, पाप, बुरा ।—चिन्ता (स्त्री०) अनिष्ट सोचना, बुरा चिन्तन ।—दर्शन (पु०) अमङ्गल दर्शन, मन्द अपशकुन ।

अशून्यशयनव्रत तत्० (पु०) व्रत विशेष, श्रावण कृष्ण द्वितीया को यह व्रत किया जाता है ।

अशेष तत्० (पु०) शेषहीन, निःशेष, समग्र समूचा, तमाम ।—ज्ञ तत्० (गु०) [अशेष+ज्ञा+ड] सर्वज्ञ, सर्ववित्, सब जानने वाला ।—तः तत्० (अ०) [अशेष+तस्] सब प्रकार से, अनेक रूप से ।—विशेष तत्० (पु०) अनेक प्रकार, बहुत तरह ।

अशोक तत्० (गु०) [अ+शोक] शोक रहित, पुष्प वृक्ष विशेष, राजा विशेष, विख्यात मौर्य सम्राट् बिन्दुसार के पुत्र तथा चन्द्रगुप्त के पौत्र का नाम । महाराजा अशोक अपने शत्रुओं को परास्त करके २१ वर्ष की अवस्था में सिंहासनारूढ़ हुए थे । प्राचीन शिलालेखों से इनका दूसरा नाम प्रियदर्शी या प्रियदर्शी भी जाना जाता है । अपने अभिषेक के ८ वें वर्ष में इन्होंने कलिङ्ग देश को जीता था । राज्याभिषेक के समय महाराजा अशोक हिन्दू सनातन धर्म के अनुयायी थे । समय समय पर इन्होंने बौद्धों के विरुद्धाचरण भी किया था । बुद्धगया के "बोधिद्रुम" को इन्होंने कटवा दिया था । कपिलवस्तु के निकट बुद्ध भगवान् के स्मारक स्तूपों में से ८ को तोड़ देने के लिये इन्होंने आज्ञा प्रचारित की थी । अशोक २२७ खृष्टाब्द के पूर्व राज्यासन पर आसीन हुए थे । राजा होने के ७ वें वर्ष अर्थात् २६१ खृष्टाब्द के पूर्व वह बौद्धधर्म में दीक्षित हुए । राज्य पाने के १४ चौदह वर्ष के मध्य में भारत के आधे से अधिक भाग पर अपना अधिकार इन्होंने स्थापित किया था । यह बौद्धधर्म के प्रचार करने के लिये अत्यन्त सचेष्ट थे । इन्हीं के समय में बौद्ध महासभा का दूसरा अधिवेशन हुआ था । खृ० २२१ में उन्होंने राज्य किया था (देखो आदर्शमहात्मा) ।

अशौच तद्० (पु०) शान्ति, अविचार अपवित्रता, अशुद्धता।
अशोच्य तद्० (गु०) अशोचनीय, शोक के अयोग्य।
अशोभन तद्० (गु०) मन्द, कुदरश, दुर्दर्शन, अश्री।
—ीय (गु०) कुत्सित आकार, बुरा।
अशोभा तद्० (पु०) अनगढ़, कुरूप, बुरा।
अशौच तद्० (पु०) शुचिताभाव अशुद्धि।—न्त (पु०) [अशौच+अन्त] अशौच का अन्तिम दिन, देहशुद्धि का अवसान दिन।
अशौर्य तद्० (पु०) भीरुता, अविक्रम, अशूरत्व।
अश्म तद्० (पु०) [अश्+मन्] पत्थर, पर्वत, मेघ।
—ज तद्० (पु०) [अश्म+जन्+ड] शिलाजीत, लोह, पत्थर से उत्पन्न वस्तु।—दारण तद्० (पु०) [अश्मन्+दारण] पत्थर काटने वाला अस्त्र।
अश्मरी तद्० (स्त्री०) [अश्मर+ई] मूत्रकृच्छ्र रोग, पथरी रोग। [घिन।
अश्रद्धा तद्० (स्त्री०) अभक्ति, घृणा, अविश्वास,
अश्रद्धेय तद्० (गु०) घृण्य, घृणा के योग्य, अनादरणीय।
अश्रप तद्० (पु०) [अश्र+पा+ड] राक्षस, निशाचर।
अश्राद्ध तद्० (गु०) प्रेतकर्म रहित।
अश्रान्त तद्० (पु०) अनवरत, विश्राम रहित, श्रान्ति हीन।—न्ति (स्त्री०) अविश्राम, अनवरत।
अश्राव्य तद्० (गु०) सुनने के अयोग्य, अश्रोतव्य।
अश्रि तद्० (स्त्री०) [अ+श्रि+क्विप्] धार, पैना, तीखा, तीक्ष्ण।
अश्रु तद्० (पु०) [अ+श्रु+क्विप्] आँसू, नेत्रजल, नयनाम्बु।—पात तद्० (पु०) आँसू गिराना।
अश्रुत तद्० (गु०) नहीं सुना, अनाकर्णित।—पूर्व तद्० (गु०) पहले कभी नहीं सुना गया, अद्भुत, विलक्षण।
अश्रेयस तद्० (गु०) निर्गुण, अधम, अमङ्गल।
अश्रेष्ठ तद्० (गु०) बुरा, साधारण, उत्तम नहीं।
अश्लील तद्० (गु०) नीच अधम, ग्राम्यभाषा, फूहर, (पु०) घृणा अथवा लज्जासूचक बात, काव्यगत दोष। काव्य में ऐसे शब्दों का प्रयोग करना जो अर्थान्तर घृणा लज्जा अथवा अमङ्गल सूचक हों, यह शब्ददोष है घृणाव्यञ्जक, लज्जाव्यञ्जक और अमङ्गलव्यञ्जक, इसके भेद हैं।
अश्लेष तद्० (पु०) श्लेषरहित, असम्बन्ध, असंलग्न, अप्रीति, श्लेष भिन्न, अपरिहास।
अश्लेषा तद्० (स्त्री०) नवाँ नक्षत्र, इस नक्षत्र में छः तारे हैं—भव तद्० (पु०) केतुग्रह।
अश्व तद्० (पु०) [अश्+व] घोटक, तुरङ्ग घोड़ा।
—गन्धा तद्० (स्त्री०) [अश्वगन्ध+आ], औषध विशेष, असगन्ध।—तर तद्० (पु०) [अश्व+तर] गर्दभी के गर्भ और अश्व के औरस से उत्पन्न पशु, खच्चर, नागराजविशेष, अश्व विशेष। (स्त्री०) अश्वतरी।—पति तद्० (पु०) घोड़े का स्वामी।
—मेध तद्० (पु०) यज्ञ विशेष, जिसमें घोड़े का हवन किया जाता है। इस यज्ञ में विशेष लक्षणयुक्त अश्व को धोकर उसके सिर में जयपत्र बाँधकर स्वेच्छा से घूमने के लिये छोड़ देते थे, पुन एक वर्ष बाद यह घोड़ा घूम कर जब आता था, तब उसका बलिदान और हवन किया जाता था।
—वार तद्० (पु०) अश्वारोही, घुड़सवार।
—शाला तद्० (स्त्री०) अश्वगृह, अस्तबल, घुड़साल।—वैद्य तद्० (पु०) अश्वचिकित्सक।
—शिक्षक तद्० (पु०) चाबुक सवार।—सेवक तद्० (पु०) साईस।—रूढ़ (पु०) [अश्व+आरूढ़] असवार, घुड़चढ़ा।—रोही तद्० (पु०) घुड़सवार, घोड़े पर चढ़ा हुआ।
अश्वत्थ तद्० (पु०) [अश्व+स्था+ड] वृक्षविशेष, चलद्रुम, पीपल।
अश्वत्थामा तद्० (पु०) [अश्व+स्था+मन्] (१) द्रोणाचार्य का पुत्र। भूमि में पतित होते ही उच्चैःश्रवा घोड़े के समान शब्द किया था, उसके बाद ही आकाशवाणी हुई "कि इस पुत्र ने जन्म के समकाल ही में गम्भीर ध्वनि के द्वारा दिगन्त को प्रतिध्वनित किया है, अतएव इसका नाम अश्वत्थामा होगा"। (२) पाण्डव पक्षीय मालवराज इन्द्रवर्मा का हाथी। [सनत्कुमार।
अश्वसेन तद्० (पु०) तक्षक का पुत्र, नाग विशेष,
अश्विनी तद्० (स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में का पहला नक्षत्र, इसमें तीन तारे रहते हैं और मेषराशि के

असीम तद० (स्त्री०) अपार, अनन्त, बहुत, सीमारहित, निरवधिक।
असील दे० (पु०) अमल, खरा, सच्चा।
असु तद० (पु०) [अस्+उ] प्राण, जीवन।
असुर तद० (पु०) सुर विरोधी, दैत्य, दानव।
असूझ दे० (पु०) अदरय, भूल।
असुस्थ तद० (पु०) सुखस्थिति रहित, रोगी।—ता (स्त्री०) अस्वास्थ्य, अस्वच्छन्दता।
असूया तद० (स्त्री०) निन्दा, द्वेष, गुणों में दोषारोपण करना, परिवाद, क्रोध।
असूर्य्यम्पश्या तद० (स्त्री०) जिसको सूर्य भी न देखे, पर्दे में रहने वाली, पर्दे नशीन।
असेसर दे० (पु०) प्रजा के वे पुरुष जो फौजदारी मामलों के फैसले में राय देने के चुने जाते हैं।
असृक् तद० (स्त्री०) रक्त, रुधिर, लोहू।
असौं तद्० (पु०) यह साल, यह वर्ष, वर्तमान संवत्सर। [निर्मोही, प्रमादी, सुस्थिर।
असोच तद्० (पु०) अचेत, अविचारित।—ी (पु०)
असोज तद्० (पु०) आश्विन, क्वाँर का महीना।
अस्त तद० (पु०) [अस्+क्त] अस्ताचल, पश्चिमाचल। (पु०) क्षिप्त, अवसान, अन्तर्धान, ग्रास, निक्षिप्त, प्रेरित, त्यक्त (पु०) मृत्यु।—गत तद० (पु०) अस्तप्राप्त, अन्तर्हित।—गिरि तद० (पु०) अस्ताचल, चरम पर्वत।—व्यस्त तद० (पु०) सङ्कीर्ण, विक्षिप्त, आकुल।—चल तद० (पु०) पर्वत विशेष, जहाँ सूर्य अस्त होते हैं।
अस्तर दे० (पु०) दोहरे, वस्त्रों में नीचला वस्त्र, नीचे का पल्ला।
अस्तरकारी दे० (स्त्री०) चूने से सफेद कराई, लिपवाई, पलस्तर।
अस्त्र तद० (पु०) [अस्+त्र] आयुध, प्रहरण, शस्त्र, खड्ग, हथियार, धनुष।—चिकित्सक (पु०) [अस्त्र+किद्+सन्+क] शस्त्रवैद्य, अस्त्र के द्वारा रोग दूर करने वाला डाक्टर।—विद्या तद० (स्त्री०) अस्त्र चलाने की विद्या, धनुर्वेद।
अस्थायी तद० (पु०) [अ+स्था+य] स्थिति रहित, अगाध, अतलस्पर्श। [धातु विशेष।
अस्थि तद० (पु०) हाड़, शरीर का पञ्जर, शरीरस्थ,

अस्थिर तद० (पु०) चञ्चल प्रकृति, अस्थायी, अनिश्चित।—ता तद० (स्त्री०) अस्थैर्य, अनिश्चय।
—मनाः तद० (पु०) अस्थिरताभाव, अस्थिरान्तःकरण, चंचल चित्त वाला। [रता, चञ्चलता।
अस्थैर्य तद० (पु०) अनिश्चय, स्थिरताभाव, अधी
अस्मरण तद (पु०) भूल, विस्मृति। [आँसू।
अस्र तद० (पु०) कोण, एक देश, नोक, रुधिर, जल,
अस्व तद० (पु०) निर्धन, कङ्गाल, दरिद्री।
अस्वस्थ तद० (वि०) रोगी, बीमार।
अस्वर तद० (पु०) हल् व्यञ्जन, कुस्वर, निन्दित शब्द, बे स्वर। [कृत्रिम।
अस्वाभाविक तद० (वि०) प्रकृति विरुद्ध, बनावटी,
अस्वास्थ्य तद० (पु०) बीमारी, रोग।
अस्वीकार तद० (पु०) इन्कार, नामंजूरी, नाहीं।
अस्वीकृत तद० (वि०) नामञ्जूर किया हुआ।
अस्सी दे० (वि०) ८०, संख्या विशेष।
अहङ्कार तद० (पु०) अभिमान, दम्भ, अहङ्कृति।—ी (पु०) घमंडी, अभिमानी, गर्वीला।
अहद दे० (पु०) वादा, प्रतिज्ञा।—नामा दे० (पु०) सन्धिपत्र, प्रतिज्ञापत्र।—ी (पु०) आलसी, अकर्मण्य।
अहमक दे० (पु०) नादान, मूर्ख।
अहम्मति तद० (स्त्री०) मस्तरीजी, गर्व। [गड्ढा।
अहर तद्० (पु०) छोटा पोखरा, अहरा, पानी का
अहरह तद० (पु०) प्रतिदिन, दिन दिन। [आठ पहर।
अहर्निश तद० (अ०) [अहः+निशि] दिवा रात्रि,
अहर्मुख तद० (पु०) प्रातःकाल, सवेरा, भोर, प्रत्यूष।
अहर्पति तद० (पु०) अप्रसन्न, मलिन।
अहल्या तद० (स्त्री०) गौतम मुनि की स्त्री, अप्सरा विशेष, जोती भूमि।
अहह तद० (अ०) अद्भुत या खेद प्रकाशक शब्द।
अहहि (क्रि०) अस्ति, है, विद्यमान है।
अहा (अव्य०) खेद, दुःख आश्चर्य प्रकट करने के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है।
अहार तद्० (पु०) आहार, भोजन, खाना, थेई, माँड़ी।
अहिंसक तद० (पु०) अहिंस्र, अहिंसाकारक।
अहिंसा तद० (स्त्री०) अनिष्ट करने की अनिच्छा, मारपीट न करने की अभिलाषा।

अहि तत्० (पु०) साँप, सर्प, नाग ।—गति तत्० (स्त्री०) साँप की चाल, टेढ़ी चाल ।—नाद (पु०) शेषनाग ।—पति (पु०) सर्पराज ।—फेन (पु०) अफीम ।—भुक् (पु०) मोर, मयूर ।
अहिक्षार तत्० (पु०) साँप का विष ।
अहित तत्० (पु०) शत्रु, वैरी, विरुद्ध, अपथ्य, अनुपकार, अमङ्गल ।—कारी तत्० (पु०) अप्रिय करने वाला, शत्रु, बुरा चेतने वाला ।
अहिनी तद्० (स्त्री०) सर्पिणी, साँप की स्त्री, साँपिन ।
अहितुण्डिक तत्० (पु०) सपेरा, व्यालग्राही, कञ्जर ।
अहिनकुलता तत्० (पु०) स्वाभाविक शत्रुता ।
अहिवात तत्० (पु०) सुहाग, सौभाग्य, सधवा होने का चिन्ह ।—ी (स्त्री०) सुहागिन स्त्री ।
अहीर तद्० (पु०) ग्वाल, अभीर, गोपाल। अहीरिनी या अहीरिन (स्त्री०) ग्वालिन ।
अहीश तत्० (पु०) सर्पराज, शेषनाग, शेषावतार, लक्ष्मण, बलराम, रामानुजादि ।
अहे तद्० (अ०) सबोधन द्योतक, अहो ।
अहेतुक तत्० (गु०) अकारण, अनर्थक ।
अहेर तद् (स्त्री०) आखेट, मृगया, शिकार ।—ी (गु०) शिकारी ।
अहेरिया तद्० (पु०) बहेलिया, व्याधा, शिकारी ।
अहो तत् (अ०) आश्चर्य, अचम्भा, शोक, करुणा, विषाद बोधक सबोधन, प्रशंसा, विस्मय, अथवा आश्चर्य प्रकाशक शब्द ।
अहोरात्र तद्० (गु०)[अहन्+रात्रि+प्] दिन और रात ।
अहोरा बहोरा (दे०) (पु०) विवाह की रीति विशेष । हेराफेरी, भँवरी । (क्रि० वि०) बार बार, पुनः पुनः ।

आ

आ तत्० आना, दूसरा स्वरवर्ण है, शब्दों के आदि में इसका योग होने से यह अवधि का वाचक होता है, न्यून अथवा विपरीत भी इसका अर्थ होता है ।
आ तत्० (पुं०) पितामह, वाक्य, महेश्वर । (अ०) स्मृति ईषदर्थ, अभिव्याप्ति, सीमा, पर्यन्त, तक, वाक्य, अनुकम्पा, समुच्चय, निषिद्ध, सन्धिवर्ण, स्वीकार, कोप, पीड़ा स्पर्द्धा, तर्जन ।
आ तत्० (अ०) कष्टसूचक शब्द खेदोक्ति ।
आइन्दा दे० (गु०) आगामी, (पु०) भविष्य काल आगे।
आई तद्० (क्रि०) आकर, आनकर, (स्त्री०) आयु वय, अवस्था ।
आईन दे० (स्त्री०) कानून, विधि, व्यवस्था ।
आईना दे० (पु०) दर्पण, मुँह देखने का शीशा ।
आँक तद्० (पु०) अर्क, मदार अकौआ, अकवन, अङ्क, चिन्ह, संख्या । (क्रि०) अङ्कित करना, निश्चय करना, जाँच कर ।
आँकड़ी तद्० (स्त्री०) आँकुसी, काँटा अङ्कीर ।
आँकना तत्० (क्रि०) निरखना, परखना, परीक्षा करना ।
आँकरी तद्० (स्त्री०) वाण का कण्ठ, अङ्कुश ।
आँकुवे दे० (क्रि०) अङ्कुरित हुए, उत्पन्न हुए, जन्मा, उगे, पैदा हुए ।
आँकुस या आँकुश तद्० (पु०) अङ्कुश, अङ्कुशी ।
आँख तद्० (स्त्री०) नेत्र, नयन, चक्षु (बहुवचन आँखें, अँखियाँ) ।—चढ़ाना तद्० (क्रि०) क्रोध करना, कुपित होना ।—चुभना (क्रि०)—पसन्द आना, निगाह में बुरा ठहराना ।—चुराना (क्रि०) लज्जित होना (छिपाना) ।—ठंढी करना (क्रि०) इष्ट मित्रों के मिलने से चित्त की प्रसन्नता—तरेरना कुपित होकर देखना।—दिखाना (क्रि०)धमकाना, कुपित होना ।—पर परदा पड़ना (वा०) भ्रम में पड़ना ।—फूटी, पीर गयी किसी विवादग्रस्त पदार्थ के विनष्ट होने पर यह लोकोक्ति कही जाती है ।—फेरना (क्रि०) मित्रताभङ्ग, प्रेम तोड़ना ।—फैलाना (क्रि०) दूर तक देखना ।—फाड़ा (पु०) एक प्रकार का पतंगा ।—मूँदना (क्रि०) मृत्यु, मतवाली, मस्ती।—बचाना (क्रि०) छिपना, अपने दुष्कर्मों से लज्जित होना—बन्द हो जाना मर जाना।—बदल जाना पूर्ववत व्यवहार का न रह जाना।—मारना (क्रि०) आँख मटकाना,

सैन करना, इशारे से बात करना, इङ्गित करना।—बिछाना प्रेम पूर्वक स्वागत करना।—भर लाना रोना।—भौं टेढ़ी करना क्रुद्ध होना।—मिलाना (क्रि०) प्रेम करना, मित्रता करना।—रखना (क्रि०) अनुसन्धान करना, निरीक्षण करना, खोज पड़ताल करना।—लगना नींद आना, प्रीति का होना।—लगाना दे० (क्रि०) किसी की प्रीति में फँसना।—लालकरना क्रुद्ध होना।—से गिरना मन से उतरना।

आँखफोड़ा (पु०) पतङ्ग विशेष।

आँखमिचौनी (स्त्री०) बालकों का एक खेल।

आँग तद्० (पु०) अङ्ग, देह, शरीर।

आँगन तद्० (पु०) चौक, अँगनाई, प्राङ्गण।

आँगिरस तद्० (पु०) बृहस्पति।

आँच तद् (स्त्री०) अग्नि, आग, ताप, ज्वाला।

आँचल तद्० (पु०) अञ्चल किनारा, कपड़े का हिस्सा

आँजि (क्रि०) अञ्जन लगा कर, काजल लगा कर।

आँसू दे० (पु०) आँसू, अश्रु।

आँट तद्० (स्त्री०) गाँठ, विरोध, आड़ी।

आँटना तद्० (क्रि०) समाना, भरना, पैठना।

आँटसाँट तद्० (स्त्री०) साझा, हिस्सेदारी।

आँटी तद्० (स्त्री०) गुल्ली।

आँत तद्० (स्त्री०) अँतड़ी। (मुहा०)—कुलकुलाना बड़ी भूख का लगना।—का बल खुलना—भोजन द्वारा तृप्त होना।—सूखना—भूख से विकल होना।—गले में पड़ना—तङ्ग होना, झगड़े में पड़ना।

आँधी या आँधर दे० (स्त्री०) तेज़ हवा, झक्कड़, तूफ़ान।

आँय बाँय दे० (पु०) अण्डबण्ड, अनाप शनाप।

आँब तद्० (पु०) आम्रफल, आम, रसाल।

आँवठ दे० (पु०) धोती का छोर, किनारा।

आँवरा दे० (पु०) आँवला, धात्री फल।

आँवला सारगन्धक दे० (पु०) साफ़ गन्धक।

आँवा दे० (पु०) कुम्हार की भट्टी।

आँस दे० (पु०) सूत, रेशा।

आँसू } आँसूँ } दे० (पु०) अश्रु, नेत्र जल। (मुहा०)—पीकर रह जाना भीतर ही भीतर दुखना।—गिरना—रोना।—से मुँह धोना—बहुत रोना।

आकम्पन तद्० (पु०) [आ + कम्प् + अनट्] काँपना। थरथराहट, ईषत्कम्पन। [बात।

आकबाक दे० (पु०) बकबक, अंडबंड बात, ऊटपटाँग

आकर तद्० (पु०) [आ + कृ + अल्] धातु और रत्नों का उत्पत्ति स्थान, खान आदि, मूल, समूह, श्रेष्ठ। जिस स्थान से जो वस्तु बहुतायत से निकले वह स्थान उस वस्तु की आकर है।

आकर्ण तद्० (गु०) कर्णमूलावधि, कान तक।—चक्षु तद्० (पु०) कर्ण पर्यन्त विस्तृत चक्षु, दीर्घ नयन, विशाल नेत्र।

आकर्ष तद्० (पु०) खींच, टान रोक, पासक, पाशा, द्यूतक्रीड़ा, चौपड़ खेलना, आकर्षणी, आँकुसी।—क तद्० (पु०) [आ + कृष् + णक] शिलाविशेष, चुम्बक पत्थर, आकर्षणकर्त्ता।—ण तद्० (पु०) [आ + कृष् + अनट्] बलप्रयोगपूर्वक खींचना, टानना।—शक्ति तद्० (स्त्री०) खींचने की शक्ति।

आकलन तद्० (पु०) [आ + कल् + अनट्] एकत्र करण, संचय करण, बन्धन, बटोरना, अनुष्ठान, सम्पादन, जाँच, अनुसन्धान।

आकलित तद्० (पु०) [आ + कल + इत] बद्ध, परिसंख्यात, पकड़ा हुआ अनुष्ठित, कृत।

आकला तद्० (गु०) खटपटिया, उतावला, उच्छृङ्खल।

आकली दे० (स्त्री०) बेचैनी व्याकुलता।

आकस्मिक तद्० (वि०) अचानक, सहसा होने वाला।

आकाङ्क्षा तद्० (स्त्री०) इच्छा, चाहना, अभिलाष, वाञ्छा।

आकार तद् (पु०) स्वरूप, डील डौल, मूर्त्ति, आकृति, चेहरा, सङ्केत, इङ्गित।—गुप्ति तद् (स्त्री०) भय हर्ष आदि से उत्पन्न अङ्ग विकार को छिपाना।—गोपन तद्० (पु०) भय हर्ष आदि सूचक चिन्हों को छिपाना।

आकारतः तद्० (अ०) [आकार + तस्] स्वरूपतः, स्वरूप, मूर्तितः, आकृति से।

आकारान्त (पु०) वे शब्द जिनके अन्त में दीर्घ आ हो जैसे आपना, निरगा।

आकारादि तद्० (पु०) [आकार + आदि] जिस शब्द का आद्यक्षर आकार हो।

आकाल तद्० (पु०) अकाल, दुर्भिक्ष, दुःसमय, महँगी।

—लिक (गु०) [आ+काल+इक] अकाल सम्भव, असामयिक, अकाल-निमित, असमय में उत्पन्न।
आकाश तद्० (पु०) गगन, शून्य, अम्बर, पञ्चभूतों में से एक भूत विशेष व्योम, अन्तरिक्ष।—ग तद्० (गु०) आकाशगामी आकाशचर।—गङ्गा तद्० (स्त्री०) मन्दाकिनी, स्वर्गगङ्गा,नक्षत्र पथ विशेष।—गामी तद्० (गु०) [आकाश+गम्+णिनी] खेचर, आकाशचर, आकाश में चलने वाला।—दीप तद्० (पु०) बाँस के सहारे टाँगा हुआ दीपक, अन्तरीक्षस्थ प्रदीप, कार्तिक मास में जो दीपदान होता है।—वेल तद्० (स्त्री०) लता विशेष।—वाणी तद्० (स्त्री०) अशरीरिणी वाक्, देववाणी।—विद्या तद्० (स्त्री०) वायु निरूपण करने की विद्या।—वृत्ति तद्० (स्त्री०) निराश्रय, अनियमित वृत्ति, दरिद्रता। [ञ्चनता।
आकिञ्चन तद्० (पु०) दरिद्रता, प्रयास, यत्न, अकि-
आकीर्ण तद्० (गु०) व्याप्त विस्तारित, प्लुत सङ्कीर्ण, सङ्कुल, समाकुल, भरा हुआ।
आकुञ्चन तद्० (पु०) [आ+कुच्+अनट्] सङ्कोच, वक्रता, न्यायमत के पञ्च प्रकार के कर्मों में से एक कर्म।
आकुञ्चित तद्० (गु०) तिरछा, टेढ़ा, बाँका।
आकुण्ठित (गु०) लज्जित, अवाक्।
आकुल तद् (गु०) [आ+कुल+अच्] व्याकुलित, व्यस्त, कातर, आर्त, उद्विग्न, पूर्ण, आकीर्ण, घबराया।—लित तद्० (गु०) [आ+कुल+क्ति] व्याकुल, कातर, व्यस्तचित्त।
आकूत तद् (पु०) अभिप्राय, मतलब।
आकूति तद्० (स्त्री०) (१) मनु की तीन कन्याओं में से एक, जो रुचि नामक प्रजापति को ब्याही गई थी। (२) उत्साह, सदाचार।
आकृति तद्० (स्त्री०) [आ+कृ+क्ति] रूप, मूर्ति, शरीर, आकार, अवयव, डील डौल, शरीर का ढाँचा।
आकृष्ट तद्० (गु०) आकर्षित, खींचा गया, कृत आकर्षण।
आक्रन्द तद्० (पु०) [आ+क्रन्द+अल्] रोदन, आह्वान, भयङ्कर युद्ध।
आक्रन्दन तद्० (पु०) रोना, चिल्लाना।
आक्रम तद्० (पु०) [आ+क्रम+अच्] पराक्रम, आक्रमण, चढ़ाई अतिक्रम, क्रान्ति।—ण (पु०) [आ+क्रम्+अनट्] आक्रम, बलात्कार, चढ़ाई करना, ऊपर गिरना व्यापना, फैलना।
आक्रान्त तद्० (गु०) [आ+क्रम्+क्त] बलवान् के द्वारा गृहीत, कृत आक्रमण, जिसके ऊपर आक्रमण किया जाय, ग्रस्त, घेरा हुआ।
आक्रीड़ तद्० (पु०) राजा का उपवन, राजमहल के समीप का बाग, राजाओं का साधारण वन।—न (पु०) [आ+क्रीड+अनट्] मृगया, शिकार, आखेट।
आक्रोश तद्० (पु०) [आ+क्रुश्+अच्] क्रोधवश कर्तव्याकर्तव्य विचार का भूल जाना, आक्षेप, शाप, राग, कोप क्रोध।—न (पु०) [आ+क्रुश्+अनट्] अभिशाप, स्ट्रक, भर्त्सना अभिसम्पात।
आक्लान्त तद्० (गु०) [आ+क्लम्+क्त] आन्त अतिशय क्लान्तियुक्त [illegible], क्लान्तियुक्त।
आक्षेप तद्० (पु०) फेंकना गिराना, दोष लगाना, व्यङ्ग्य सुनाना।
आखण्ड तद्० (गु०) समुदय, अखण्डदित, सम्पूर्ण।
आखण्डल तद्० (पु०) [आ+खण्ड+ल] इन्द्र, सहस्राक्ष, शचीपति, देवराज।
आखत (पु०) अक्षत, नेग विशेष जो कमीनों या नेगियों को दिया जाता है।
आखता दे० (वि०) पुंसत्वहीन, बधिया किया हुआ।
आखा तद्० (पु०) चलनी मोटा गठिया।
आखात—तद्० (पु०) [आ+खन्+क्त] देवखात, देवनिर्मित जलाशय, झील।
आखातीज तद्० (स्त्री०) अक्षय तृतीया वैशाखशुक्ल३।
आखिर (अ०) अन्तिम, पिछला, समाप्त।
आखिरकार (गु०) अन्त में।
आखिरी (वि०) अन्तिम।
आखु तद्० (पु०) [आ+खन्+ड] मूँसा, चोर।
आखेट तद्० (पु०) मृगया, अहेर, शिकार।—क (पु०) व्याध, अहेरिया, (गु०) अन्वेषित, भयानक।
आख्या तद्० (स्त्री०) नाम, संज्ञा, अभिधान।—त (गु०) कथित, उक्त, प्रसिद्धि, व्याकरण का धातु

प्रकरण।—न (पु०) नाम, संज्ञा, इतिहास, उपन्यास, कथन।—नक (पु०) वर्णन, वृत्तान्त।

आख्यायिका तत्० (स्त्री०) [आ+ख्या+इक्+आ] उपलक्ष्यार्थ कथा, इतिहास, उपन्यास, उपकथा, कहानी।

आग तद्० अग्नि (स्त्री०) अग्नि, अनल, आगी। (मुहा०)—उठाना झगड़ा करना।—का पुतला महाक्रोधी।—खाना, अंगार हगना जैसी करनी वैसी भरनी।—देना (क्रि०) शव का अग्नि सत्कार करना।—पानी का बैर स्वाभाविक शत्रुता।—फाँकना—झूठी डींगे हाँकना।—बबूला होना—अत्यन्त कुपित होना।—बरसना कड़ी गर्मी पड़ना।—में पानी डालना—झगड़ा निपटाना।—लगाकर तमाशा देखना—दूसरों को लड़वा कर स्वयं प्रसन्न होना।—की आग भूख।—होना तद्० (क्रि०) गरमाना, क्रुद्ध होना।

आगत तत्० (गु०) [आ+गम्+क्त] पहुँचा, उपस्थित, सन्मुख, आयात, आया हुआ।—स्वागत (पु०) आदर सत्कार।

आगन्तुक तत्० (गु०) अनित्य स्थायी, अचानक आया हुआ, अतिथि।—ज्वर (पु०) पीड़ा विशेष, आकस्मिक ज्वर, धातु प्रकोप के बिना ज्वर।

आगम तत्० (पु०) [आ+गम्+अल्] आगमन, व्याकरण के मत से प्रकृति प्रत्यय के मध्य में होने वाले कार्य, तन्त्रशास्त्र, वेद, तन्त्र, भविष्यत्। कहते हैं कि शिव, दुर्गा और विष्णु के द्वारा प्रस्तुत शास्त्र आगम कहे जाते हैं।—ज्ञ तत्० (गु०) वेदज्ञ, तन्त्रवेत्ता।—न (पु०) [आ+गम्+अनट्] पहुँचना, उपस्थित होना, आना।—ोक्त तत्० (गु०) [आगम+उक्त] तन्त्रशास्त्र विहित कर्म, तान्त्रिक उपासना, शास्त्रोक्त।—वक्ता तत्० (पु०) आगमज्ञानी।—बाँधना तद्० (क्रि०) भावी को ठीक करना, भावी के लिये सोचना, आगम कहना, भावी कहना।—सोची (गु०) अग्रसोची, दूरदर्शी।

आगलान्त तत्० (गु०) गले तक, कण्ठपर्यन्त।

आगा तत्० (पु०) अग्र, सामना, अगवाड़ा।—"पीछा करना" (क्रि०) तद्० संशयित होना, दुविधा में पड़ना, हिचकना।

आगा दे० (पु०) काबुलिया।

आगामी तत्० (पु०) [आ+गम्+ई] आने वाला, आगे आनेवाला, भावी।

आगाड़ी तद्० (स्त्री०) घोड़े की गरदन की रस्सी।

आगर तद् (पु०) चतुर, जानकार, जानने वाला, नागर, सयाना, पूर्ण। (स्त्री०) आगरी।

आगार तत्० (पु०) घर, गृह, मकान।

आगिल तद्० (गु०) अगिला, होनहार, भविष्यत्, अग्रसर, अग्रगामी।

आगी तद्० (देखो आग) [टिहुना तक।

आगुल्फ तत्० (गु०) [आ+गुल्फ] गुल्फ पर्यन्त,

आगू तद्० (क्रि० वि०) सामने, सन्मुख, आगे, अगाऊ।

आगे (क्रि० वि०) पहिले, सामने, सन्मुख, तब, फिर, बढ़ कर।—पीछे अग्रपश्चात्, आगे, पीछे, पूर्वापर, एक आगे एक पीछे, क्रमशः। (मुहा०)—करना—अगुआ बनना।—आगे—थोड़े दिनों पीछे।—का क़दम पीछे पड़ना—अवनति होना, पीछे हटना।—रखना—भेंट करना।—से भविष्य में।

आग्नीध्र तत्० (पु०) [अग्नि+इन्ध+र] यज्ञ, अग्नि रखने का स्थान, होता का गृह, धन के द्वारा वरण किया जाने वाला ऋत्विक्।

आग्नेय तत्० (पु०) स्वर्ण, दिक् विशेष, रक्त, घृत, अगस्त्य मुनि, पाचक, अग्नि संबन्धीय, अग्नि तुल्य।—ास्त्र तत्० (पु०) [आग्नेय+अस्त्र] अग्निबाण, अग्न्यास्त्र, बन्दूक।—ी (स्त्री०) अग्निकोण, अग्नि की स्त्री स्वाहा।—गिरि तत्० (पु०) धधकने वाले पर्वत, ज्वालामुखी।

आग्रह तत्० (पु०) [आ+ग्रह+अल्] अतिशय यत्न, प्रयास, अनुग्रह, आसक्ति, आक्रमण, ग्रहण, उपकार, साहस।—ी (वि०) हठी।

आग्रहायण तत्० (पु०) [आ+ग्रह+अय्+अनट्] मार्गशीर्ष मास, अगहन मास, किसी के मत में वर्ष का पहला मास।—ेष्टि (स्त्री०) [आग्रहायण+इष्टि] नवान्न भक्षण, नूतन धान्य का प्रारम्भ।

आघात तत्० (पु०) [आ+हन्+णिच्+क्त] हनन, वध, चोट, कोप, अपचय, प्रहार, वधस्थान।

आघार तत्० (पु०) धूप, घृत, छिड़काव, हवि, मंत्र विशेष से किसी देव विशेष को घृत प्रदान।
आघूर्णन तत्० (पु०) [आ+घूर्ण+अनट्] चक्र के समान घूमना, फिरना, चक्कर खाना।
आघूर्णित तत्० (गु०) [आ+घूर्ण+क्त] घूमता हुआ, घुमाया हुआ।
आघोषण तत्० (पु०) [आ+घुष्+अनट्] प्रचारण, प्रकाश करण, घोषणा करना, मुनादी करना।
आघ्राण तत्० (पु०) [आ+घ्रा+अनट्] गन्धग्रहण, सूँघना, तृप्ति।—र्ह (गु०) [आघ्राण+अर्ह] गन्ध ग्रहण के योग्य, सुगन्ध लेने के उपयुक्त।
आघ्रात तत्० (गु०) [आ+घ्रा+क्त] सूँघा हुआ।
आघ्रेय तत्० (गु०) [आ+घ्रा+य] सूँघने के योग्य, सूँघने के लिये उपयोगी।
आङ्गिक तत्० (गु०) अङ्ग निष्पन्न भाव वाद्य विशेष, अङ्गों के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, शारीरिक, शरीर सम्बन्धी।
आचका तद्० अगणित, अकस्मात, हठात्।
आचातुर्य तत्० (पु०) अनाड़ीपना, अनिपुणता।
आचमन (पु०) नित्य किये जाने वाले कर्मों के पहले जल द्वारा थोड़ा जल हथेली पर रख कर पीना। —नी (स्त्री०) चमचिया। [अकस्मात्, दैवात्।
आचम्भित तद्० (गु०) हठात्, अद्भुत, अचरज,
आचरज दे० (पु०) आश्चर्य, अचम्भा।
आचरण तत्० (पु०) चलन, व्यवहार, रीति, चाल, आचार, लौकिक कर्म—ीय तत्० (गु०) [आ+चर+अनीय] अचार के योग्य, व्यवहार्य।
आचरित तत्० (गु०) [आ+चर+णिच+क्त] कृताचरण, व्यवहृत।
आचर्य तत्० (गु०) [आ+चर+य] आचरणीय, कर्तव्य, करणीय।
आचार तत्० (पु०) [आ+चर+घञ्] व्यवहार, चरित्र, वृत्त, शील, रीति, रहन, आचरन आदि। —वर्जित तत्० (गु०) आचाररहित अनाचारी। —विरुद्ध तत्० (गु०) व्यवहार विरुद्ध, कुरीति।
आचारी तत्० (पु०) शास्त्रीय आचार रखने वाला, शास्त्र के अनुसार चलने वाला, साम्प्रदायिक पुरुष विशेष, आचार विशिष्ट पुरुष, आचारान्वित पुरुष।
आचार्य तत्० (पु०) [आ+चर+ण्यत्] वेदाध्यापक, वेदोपदेष्टा, शिक्षादाता, पाठगुरु, शिक्षा-आचार और धर्म की शिक्षा देने वाला।—मिश्र तत्० (गु०) आर्य, पूजनीय, गुरु।—ा (स्त्री०) मन्त्रों की व्याख्या करने वाली, उपदेशदात्री। —ाणी तत्० (स्त्री०) आचार्य स्त्री, गुरुपत्नी।
आचोट तद्० (स्त्री०) आघात, चत, विक्षत, घाव, अनाकृष्ट, बिना जोती भूमि।
आच्छन्न तत्० (गु०) [आ+छद्+क्त] आच्छादित आवृत, व्याप्त, वेष्टित, रचित, छिपाए, ढका।
आच्छा तद्० (अ०) स्वीकारार्थक, उत्तम, अङ्गीकार, अच्छा।
आच्छादक तत्० (पु०) [आ+छद्+णक] आवरण-कर्ता, गोपनकारी, ढकने वाला।
आच्छादन तत्० (पु०) वस्त्र, परिधान, आवरण, ढकना।
आच्छादित तत्० (गु०) कृताच्छादन, आवृत, ढका हुआ।
आच्छाद्य तत्० (गु०) [आ+छद्+घ्यण्] आच्छादनीय, आवृत करने के योग्य, ढकने के योग्य।
आच्छिन्न तत्० (गु०) [आ+छिद्+क्त] छेदना, काटना, वर्तन।
आछत दे० (क्रि० वि०) होते हुए, रहते हुए।
आछना दे० (क्रि०) रहना, होना। [नीकी, भली।
आछी तद्० (स्त्री०) अच्छी, उत्तमा, सुघर, बढ़िया,
आज तद्० (अ०) अद्य, अब, अभी, वर्तमान दिन। —कल तद्० (अ०) इन दिनों में, कुछ दिनों। कल करना तद्० (क्रि०) हूँ हाँ, करना, टालमटोल करना।
आजन तद्० (पु०) काजल, सुरमा, अंजन आँख में लगाने की दवाई विशेष।
आजन्म तद् (गु०) [आ+जन्म] जन्मावधि, जन्म से लेकर, जन्म भर, उम्र भर, यावज्जीवन।
आज़माइश दे० (स्त्री०) परीक्षा, जाँच, परख।
आज़माना दे० (क्रि०) जाँचना, परखना।
आज़मूदा दे० (गु०) परीक्षित।
आजला तद्० पसर, दो हाथ भर, सम्मञ्जलि।
आजा तद्० (पु०) पितामह, दादा, पिता का पिता।
आज़ाद दे० (गु०) स्वतंत्र, मुक्त, स्वाधीन।

आजाना तद्० (गु०) अकस्मात् आना। [अवधि।
आजानु तद्० (गु०) घुटना तक, जानुपर्यन्त, जानु
—बाहु तद्० (गु०) जानपर्यन्त लम्बित बाहु, विशाल बाहु, सामुद्रिक शास्त्र में आजानु बाहु होना एक शुभ लक्षण समझा जाता है।
आजि तद्० (स्त्री०) युद्ध, समान भूमि, लड़ाई, संग्राम, रण, आक्षेप, आक्रोश, गमन, गति।
आजी तद्० (स्त्री०) दादी, पितामही, पिता की माता।
आजीव तद्० (पु०) जीविका, जीवनोपाय, वृत्ति, धन्धान।—विका तद्० (स्त्री०) वृत्ति, धन्धान, रोज़ी।
आजीवी तद्० (गु०) उपजीवी, उपजीवक।
आजु दे० (पु०) आज, वर्तमान दिवस।
आजू तद्० (स्त्री०) बिना वेतन के काम करने वाला, बेगार, अवैतनिक, अवेतन। [आदेशित, निदेशित।
आज्ञप्त तद्० (गु०) [आ+ज्ञप्+क्त] अनुमति प्राप्त,
आज्ञप्ति तद्० (स्त्री०) [आ+ज्ञप्+क्ति] आदेश, निदेश, विधि, आज्ञा।
आज्ञा तद्० (स्त्री०) आदेश, निदेश, अनुमति, शासन,
—कारी तद्० (पु०) आज्ञा के अनुसार काम करने वाला, आज्ञावह, आज्ञानुवर्ती, अनुमति पालक।—चक्र तद्० (पु०) षट्चक्रों में से छठवाँ चक्र।—तिक्रम तद्० (पु०) [आज्ञा+अति क्रम] आदेशातिक्रम, आज्ञालङ्घन, हुकुम अदूली।
—दायक तद्० (पु०) अनुमतिकारी, आदेशकर्त्ता।
—नुवर्तन तद्० (पु०) [आज्ञा+अनुवर्तन] आज्ञा के अनुसार चलना।—पत्र तद्० (पु०) आदेश-लिपि, निदेश लिपत, हुकुमनामा।—प्रतिघात तद्० (पु०) स्वामिद्रोह, राजशासन त्याग।
—वर्ती तद्० (गु०) आज्ञा के वश, आज्ञावह, आज्ञाधीन। [कारक, आज्ञा कर्त्ता, स्वामी।
आज्ञापक तद्० (गु०) [आ+ज्ञा+णिच्] आदेश-
आज्ञापन तद्० (पु०) [आ+ज्ञा+णिच्+अनट्] अनुमतिकरण, आदेश करना।
आज्य तद्० (पु०) [आ+अज्+य] घी, घृत, हवि।
—प (पु०) पितृलोक विशेष, घृतभोजी।
आञ्जनेय तद्० (पु०) अञ्जनी वानरी का पुत्र, हनुमान।
आटा तद्० (स्त्री०) पिसान, चून, चून। (मुहा०)

—दाल का भाव मालूम होना दुनियावी बातों से परिचय होना।
आटोप तद्० (पु०) [आ+तुप्+घञ्] दर्प, गर्व, अहङ्कार, वायुजन्य उदर शब्द।
आठ तद्० (गु०) संख्या विशेष, अष्ट, ८, चार का दूना।—पहर (पु०) आठयाम, दिनरात।—पाँ अष्टम्। [लँगोटी।
आड़ तद्० (स्त्री०) परदा, रोक, ओट।—बंद (पु०)
आड़ी तद्० (गु०) रपक, स्वरविशेष।
आड़ेआना तद्० (क्रि०) बचाव करना, बाधक होना, बाधा डालना, काम आना।
आढ दे० (पु०) चार सेर की तौल (स्त्री०) ओट, परदा।
आढ़क तद्० (पु०) परिमाण विशेष, चार सेर।
आढ़त तद्० (स्त्री०) अड्डा, माल का चालान, चालान करने का स्थान।
आढ़तिया तद्० (पु०) व्यापारी विशेष, वह व्यापारी जो दूसरे व्यापारी के बदले कुछ कमीशन लेकर माल खरीदे या खरिदा दे।
आढ्य तद्० (गु०) धनवान्, धनी, धनयुक्त, विशिष्ट, अन्वित, धनाढ्य, गुणाढ्य, सम्पन्न।
आणि तद्० (पु०) [आण्+इ] केल, अस्ति, सीमा।
आतङ्क तद्० (पु०) आतङ्क, आशङ्का, भय, रोग, पीड़ा।
आतत तद्० (गु०) आरोपित, विस्तारित।
आततायी तद्० (गु०) [आतत+अय्+णिन्] वधोद्यत, अनिष्टकारी। (पु०) महापापी, आग लगाने वाला, विष देने वाला शस्त्रोन्मादी, धनापहारी भूमि और परदार अपहारक ये छ आततायी कहे जाते हैं—(शुक्र० नी०) हत्यारा, डाँकू।
आतप तद्० (पु०) धूप, सूर्य की किरण, सूर्य का प्रकाश।—त्यय तद्० (पु०) [आतप+अत्यय] सूर्य की किरणों का नाश, धूप का अभाव।—भाव तद्० (पु०) [आतप+अभाव] छाया, धूप का अभाव।—दक तद्० (पु०) [आतप+उदक] मृगतृष्णा, मरीचिका, सूर्य की किरणों में जलज्ञान।—त्र, त्रक तद्० (पु०) [आतप+त्रै+ड, आतप+त्रै+ड+क] छत्र, छाता।
आतपन तद्० (पु०) [आ+तप+अट्] शिव का नाम।

आतर तद्० (पु०) [आ+तृ+अल्] अन्तर, बीच, उतराई।
आतर्पण तद्० (पु०) [आ+तृप्+अनट्] पीढन, तृप्ति, मङ्गलालेपन।
आतशक दे० (स्त्री०) रोगविशेष, उपदंश, गर्मी।
आतशबाज़ी दे० (स्त्री०) अग्नि क्रीड़ा। [शरीफ़ा।
आता तद्० (पु०) अत्ता, फल विशेष, सीताफल,
आतायी तद्० (गु०) धूर्त, शठ। (पु०) पक्षि विशेष, चील।
आतायीपन तद्० (पु०) धूर्तता, खलता, शठता।
आतिथेय तद्० (गु०) अतिथि सेवा कारक, अतिथि-पूजक, अतिथि सेवा की सामग्री, अभ्यागत का सम्मान करने वाला।
आतिथ्य तद्० (पु०) अतिथि के भोजन आदि के पदार्थ, अतिथि-सेवा।
आतिदेशिक तद्० (गु०) अतिदेश प्राप्त, दूसरे प्रकार से उपस्थित।
आतीपाती दे० (स्त्री०) लड़कों का एक देशी खेल।
आतिशय्य तद्० (पु०) आधिक्य, अतिरेक, बहुत ही।
आतुर तद्० (गु०) रोगी, पीड़ित, गति शक्ति रहित, कातर, व्याकुल, अस्थिर।—ता तद्० (स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट, बेचैनी।—ताई तद् (स्त्री०) व्यग्रता, उतावलापन।
आतू तद्० (स्त्री०) गुरुआयन, पण्डितायन।
आतोद्य तद्० (गु०) [आ+तुद्+य] वाद्य, वीणा, मुरज, वंश का शब्द, चतुर्विध वाद्य।
आत्त तद्० (गु०) [आ+दा+क्त] गृहीत, प्राप्त, पकड़ लिया गया।—गन्ध तद्० (गु०) गृहीत, गन्ध, हतदर्प, अभिभूत, पराजित।—गर्व तद्० (गु०) खण्डित गर्व, अहङ्कार चूर्ण, भग्नदर्प।
आत्म तद्० (पु०) निज, अपना, स्वीय, जीव।—कलह तद्० (पु०) [आत्मन्+कलह] मित्रों के साथ विवाद, गृहकलह।—कार्य तद्० (पु०) [आत्मन्+कार्य] अपना काम, गोपनीय कार्य।—गरिमा तद्० (स्त्री०) [आत्मन्+गरिमा] आत्मश्लाघा, दर्प, अहङ्कार।—ग्राही तद्० (गु०) [आत्मन्+ग्रह+णिन्] आत्मम्भरी, स्वार्थ पर, स्वार्थी।—घात तद्० (पु०) [आत्मन्+घात] आत्महत्या, स्वयंमरण, अपने किये उपाय से मरण।—ज तद्० (पु०) [आत्मन्+जन्+ड] पुत्र, सन्तान, बेटा। (पु०) स्वोत्पन्न।—जन्मा तद्० (पु०) [आत्मन्+जन्] पुत्र, तनय, सन्तान।—जा तद्० (स्त्री०) [आत्मन्+जन्+ड+आ] कन्या, पुत्री, दुहिता, बुद्धि।—ज्ञान तद्० (पु०) [आत्मन्+ज्ञा+अनट्] ब्रह्म विषयक ज्ञान, स्वानुभव।—तत्त्व तद्० (पु०) [आत्मन्+तत्त्व] ब्रह्मतत्त्व, आत्म यथार्थ्य।—ता तद्० (स्त्री०) [आत्मन्+ता] बन्धुता, प्रणय, सद्भाव, प्रेम, प्रीति।—नेपद तद्० (पु०) क्रिया का चिन्ह विशेष।—पञ्चक तद्० (पु०) [आत्मन्+वञ्च+ण्वुल्] कृपण, पापी, नास्तिक।—वत् तद्० (गु०) आत्मसदृश, अपने समान।—वश तद्० (गु०) [आत्मन्+वश] स्वाधीन, स्ववश, स्वप्रधान।—म्भरि तद्० (गु०) अपना पेट पालने वाला, स्वार्थी।—योनि तद्० (पु०) [आत्मन्+योनि] ब्रह्मा, विष्णु शिव, कामदेव।—रक्षा तद्० (स्त्री०) [आत्मन्+रक्षा] अपना रक्षण, आत्म-श्राण।—लाभ तद्० (पु०) [आत्मन्+लाभ] उत्पत्ति, स्वलाभ, स्वार्थ।—श्लाघा तद्० (स्त्री०) [आत्मन्+श्लाघा] आत्मगर्व, अपनी प्रशंसा।—सम्भव तद्० (पु० स्त्री०) [आत्मन्+सम्भव] पुत्र, कन्या,।—सात् तद्० (गु०) [आत्मन्+सात्] अपने अधीन, स्वहस्तगत।—सात करना (क्रि०) हज़म कर जाना, हड़प जाना।—हत्या तद्० (स्त्री०) [आत्मन्+हन्+क्यप्] आत्मघात, स्ववध।—हा तद् (पु०) [आत्मन्+हन्+क्विप्] अपने को मारने वाला, आत्मघाती, अपने प्रयत्न से मृत।—हिंसा (स्त्री०) आत्महत्या।
आत्मा तद्० (पु०) [आ+अत्+मन्] यत्न, धृति, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, देह, मन, पुत्र, जीव, अर्क, हुताशन, वायु।—भिमत (गु०) [आत्मन्+अभिमत] आत्मसम्मत, अपना मतानुयायी। [नोट संस्कृत में यह शब्द पुल्लिङ्ग है, किन्तु हिन्दी वाले इसका व्यवहार स्त्रीलिङ्ग में करते हैं]
आत्मिक तद्० (गु०) मन का, अपना, प्यारा।
आत्मीय तद्० (गु०) [आत्मन्+ईय] स्वकीय, अन्त-

रक्त, स्वभाव, आत्मसम्बन्ध।—ता तत्० (स्त्री०) हृदयता, घनिष्ठता, अन्तरङ्गता, सद्भाव, प्रणय।
आत्मोत्कर्ष तत्० (पु०) [आत्मन्+उत्कर्ष] अपनी श्रेष्ठता, अपनी प्रभुता, अपनी बड़ाई।
आत्मोद्धार तत्० (पु०) मोक्ष, अपना उद्धार।
आत्मोद्भवा तत्० (स्त्री०) [आत्मन्+उद्भवा] कन्या, पुत्री, आत्मजा।
आत्मोन्नति तत्० (स्त्री०) अपनी बढ़ती।
आत्यन्तिक तत्० (पु०) [अत्यन्त+इक्] अतिशय, विस्तार, प्रचुर, अधिक।
आत्रेय तत्० (पु०) अत्रि मुनि का पुत्र, दुर्वासा, चन्द्र, शरीरस्थ रस, धातु।—ी तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, ऋषिपत्नी विशेष।
आथर्वण तत्० (पु०) अथर्व वेदज्ञ ब्राह्मण, अथर्व [समूह।
आदत दे० (स्त्री०) स्वभाव, टेव, बान।
आदमियत दे० (पु०) मनुष्यत्व।
आदमी दे० (पु०) आदम का सन्तान, आदम की औलाद, नर, मनुष्य, मानव।
आद्यन्त तत्० (पु०) आरम्भ से समाप्ति पर्यन्त, आदि से अन्त तक।
आदर तत्० (पु०) [आ+दृ+अच्] आस्था, सम्मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा, खातिर।—णीय तत्० (पु०) सम्मानार्ह, मान्य, माननीय।—भाव तत्० (पु०) प्रतिष्ठा, मान, सम्मान।
आदर्श तत्० (पु०) [आ+दृश+अल्] दर्पण, मुकुर निदर्श, प्रतिपुस्तक मूल पुस्तक, टीका, चिन्ह, नमूना।
आदा तत्० (पु०) मूल विशेष, अदरख, अदरक।
आदान तत्० (पु०) [आ+दा+अनट्] ग्रहण लेना, स्वीकार, रोगलक्षण।—प्रदान, तत्० (पु०) [आदान+प्रदान] लेन देन, त्याग ग्रहण।
आदि तत्० (पु०) पूर्व, प्रथम, मूल, अग्र, पहिला आकार, उत्पत्तिस्थान, वगैरा।—क तत्० (अ०) पहिले से, इत्यादि, और सब।—कवि तत्० (पु०) वाल्मीकि मुनि, रामायणकर्ता, कहते हैं सर्वप्रथम छन्दोबद्ध कविता इन्होंने ही की थी, क्रौञ्च-युगल को देख अकस्मात इनकी छन्दोमयी वाणी प्रकाशित हुई, अतएव यह आदि कवि कहे जाते हैं।—कारण तत्० (पु०) पहला कारण, पूर्व निमित्त, आद्य हेतु, मूल हेतु, निदान।—देव तत्० (पु०) नारायण, विष्णु।—वराह तत्० (पु०) विष्णु का वराह अवतार।—राज तत्० (पु०) सर्व प्रथम राजा, पृथुराज।—शूर तत्० (पु०) राजा विशेष बङ्गाल के सेनवंशीय राजाओं का पहिला राजा, इस राजा का नाम वीरसेन था, परन्तु सेनवंश का यह प्रथम राजा था इसी से इसे आदिशूर भी कहते हैं। पुत्रेष्टि यज्ञ करने के लिये इसी राजा ने कन्नौज से पाँच वेदज्ञ ब्राह्मण बुलवाये थे, उस समय बौद्धधर्म की प्रबलता के कारण बङ्गाल में वेदज्ञ ब्राह्मणों का अत्यन्त अभाव हो गया था।
आदित्य तत्० (पु०) देवता, सूर्य, दिवाकर, अर्क वृक्ष, मदार या अकौआ का पेड़, रवि, भानु।—वार तत्० (पु०) सूर्यवार, सूर्य का दिन, सप्ताह का अन्तिम दिन, इतवार।—मण्डल तत्० (पु०) सूर्यमण्डल, सूर्यलोक।—सूनु तत्० (पु०) सुग्रीववानर, यम, शनैश्चर, सावर्णि मनु, वैवस्वत मनु, कर्ण।
आदितेय तत्० (पु०) अदिति के पुत्र, देवगण।
आदिम तत्० (पु०) [आदि+मद्] आद्य, प्रथम उत्पन्न वस्तु, पहिला।
आदिष्ट तत्० (पु०) [आ+दिश्+क्त] आदेशित, आज्ञप्त, अनुमत, कथित, प्राप्तोपदेश, गृहीत आज्ञा।
आदी दे० (पु०) अदरक (वि०) अभ्यस्त।
आदृत तत्० (पु०) [आ+दृ+क्त] आदरान्वित, सादर सम्मानित, पूजित, अर्चित।
आदेय तत्० (वि०) लेने के योग्य।
आदेश तत्० (पु०) [आ+दिश्+अल्] आज्ञा, मर्जी, हुक्म, अनुमति, व्याकरण में एक वर्ण के स्थान दूसरे वर्ण की उत्पत्ति, प्रकृति और प्रत्यय को मिलाने वाले कार्य, ज्योतिष-शास्त्र का फल, फलादेश।—ी तत्० (पु०) आज्ञापक, आज्ञाकारक गणक, दैवज्ञ।—ष्य तत्० (पु०) [आ+दिश्+ण्य] पुरोहित, याजक, आज्ञाकारक, आदेशकर्ता।
आदेस तत्० (पु०) देखो आदेश।
आदौ तत्० (अ०) प्रथम, आगे, आदि।
आद्य तत्० (अ०) प्रथम, अगला, पहिला, भोजनीय द्रव्य।—कवि (पु०) वाल्मीकि मुनि, ब्रह्मा।

आद्यन्त तत्० (पु०) [आदि+अन्+क] प्रथम और अन्त, प्रथम से लेकर शेष पर्यन्त, आद्योपान्त, आदि अन्त। [अन्त तक, समस्त, सम्पूर्ण।
आद्योपान्त तत्० (पु०) [आद्य+उपान्त] प्रारम्भ से
आर्द्रा तत्० (स्त्री०) छठे नक्षत्र का नाम।
आधा तद्० (पु०) आधा, अर्द्धक, अर्द्ध, बराबर भाग। —कपाली (पु०) शिरोरोग विशेष, अर्द्धशिरो वेदना, अधासीसी।
आधान तत्० (पु०) धारण, गर्भधारण, स्थापित द्रव्य, अन्याधान, गर्भाधान।—निक तत्० (पु०) [आ+धान+इक्] गर्भाधान संस्कार।
आधार तत्० (पु०) आश्रय, आहार, अधिकरण, पात्र, अम्बुधारण, वृक्ष का थालवाल।
आधासीसी तद्० (स्त्री०) अधकपाली, आधे सिर में पीड़ा, रोग विशेष।
आधि तत्० (पु०) [आ+धै+कि] मनःपीड़ा, व्यसन, बन्धक, प्रत्याशा, आधार। [अतिशय।
आधिक्य तत्० (पु०) बहुतायत, अधिक, अधिकता,
आधिदैविक तत्० (गु०) देवप्रयुक्त, दैवाधीन, बोद्ध-पदार्थ, बुद्धिसम्बन्धी। [अधिकार
आधिपत्य तत्० (पु०) स्वामित्व, प्रभुत्व, ऐश्वर्य
आधिभौतिक तत्० (गु०) जो भूतों या तत्त्वों के सम्बन्ध से उत्पन्न हो, व्याघ्र सर्पादि जीवों कृत।
आधिवेदनिक तत्० (गु०) द्वितीय विवाह के लिये, प्रथम स्त्री को दिया हुआ धन।
आधीन तत्० (गु०) आज्ञाकारी, वश, नम्र, स्वाधिकार युक्त, वशवर्ती।—ता तत्० (स्त्री०) वशवर्ती, आधीनाई।
आधीरात दे० (स्त्री०) वह समय जब रात का आधा समय बीत जाय।
आधुनिक तत्० (गु०) इदानीन्तन, साम्प्रतिक, अधुनातन, नवीन, नव्य, ब्यत्ता, अभी का, नया।
आधूत तत्० (गु०) [आ+धू+क्त] ईषत्कम्पित, व्याकुल-कम्पित, चालित। [या आधा।
आधेआध तद्० (पु०) आधी आध, अर्द्धार्द्ध, आधे
आधेक तद् (पु०) अर्द्धभाग, तुल्य दो भागों का एक भाग। [पूरक हो।
आधेय तद् (गु०) [आ+धा+य] जो आधार का
आधोरण तत्० (पु०) [आ+धोर+अनट्] हस्तिपक, महावत, हाथीवान, हाथी चलाने वाला।
आध्मात तत्० (गु०) [आ+ध्मा+क्त] शब्दित, दग्ध, अग्नि संयोगान्वित, (पु०) वात रोग विशेष, युद्ध, संयत।
आध्मान तत्० (पु०) [आ+ध्मा+अनट्] वायुरोग, वायु से पेट फूलना। [मनसम्बन्धी।
आध्यात्मिक तत्० (गु०) आत्माश्रित, आत्मासम्बन्धी,
आध्यान तत्० (पु०) [आ+ध्या+अनट्] ध्यान, चिन्ता, स्मरण, दुर्भावना, अनुशोचना, उत्कण्ठा पूर्वक स्मरण। [पान्थ, पाथेय, मार्गव्यय।
आध्वनीन तत्० (पु०) [अध्वन+ईन] पथिक,
आन तद्० (स्त्री०) और, अन्य, प्रतिज्ञा, उच्छ्वास, बहिर्मुख श्वास, भिन्न, शपथ, क़सम, सौगंद। (क्रि०) आकर।
आनक तत्० (पु०) [आन्+ण्वुल्] पटह, भेरी, मृदङ्ग, डंका, गरजता हुआ बादल।
आनक-दुन्दुभि तत्० (पु०) [आनक्+दुन्दुभि] श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव, वृहद भेरी, बड़ा नगाड़ा।
आनत तद्० लाता है, ले आता है, लाते हो।
आनत तत्० (गु०) [आ+नम्+क्त] अवनत, अत्यन्त झुका हुआ, लाता है, ले आता है, लाते ही।
आनद्ध तत् (पु०) [आ+नह्+क्त] चर्मावृत वाद्य, नगाड़ा आदि, वस्त्रमात्र, वेशरचना आदि, बद्ध, मिलित, जोड़ा हुआ।
आनन तत्० (पु०) [अन्+अन्] मुँह, मुख, आस्य, वदन, चेहरा।—फानन दे० (क्रि० वि०) फ़ौरन, अति शीघ्र, तुरन्त। [नैकट्य, सन्निकर्ष।
आनन्तर्य तत्० (पु०) पश्चाद्भाव, शेष, अनन्तरार्थ,
आनन्त्य तत्० (पु०) अपरिसीमता, असंख्यता, अत्यधिकता, बहुत ही।
आनन्द तत्० (पु०) [आ+नन्द+घञ्] ह्लाद, हर्ष, सुख। (गु०) हर्षयुक्त, सुखी।—कर (गु०) आह्लादकर, सुखजनक।—कानन (पु०) आनन्ददायक वन, काशीपुर का नाम।—चित्त तत्० (गु०) हर्ष से प्रफुल्लचित्त।—पट (पु०) नयी

विवाहिता स्त्री का वस्त्र, नवोढ़ा का कपड़ा। —पूर्ण तत्० (गु०) अधिक आनन्द, समस्त आनन्द।—प्रभव (पु०) रेत, वीर्य, शुक्र।—शय्या (स्त्री०) नवोढ़ा शयन।—र्णव (पु०) [आनन्द+अर्णव] आह्लाद सागर, सुख समुद्र। —वर्द्धन (पु०) यह कवि काश्मीरनिवासी और प्रसिद्ध अलङ्कार शास्त्री थे, अवन्तिवर्मा के राज्य काल में यह काश्मीर में वर्तमान थे, काव्यालोक, ध्वन्यालोक, सहृदयालोक नाम के ग्रन्थ संस्कृत में उन्होंने बनाये हैं। अवन्तिवर्मा सन् ८५५ से ८८० के बीच तक रहे, आनन्दवर्द्धन का भी यही समय है।—गिरि तत्० (पु०) प्रसिद्ध दार्शनिक पण्डित, यह शङ्कराचार्य के शिष्य थे, खृष्टीय नवम शताब्दी में यह उत्पन्न हुए थे, शङ्कर दिग्विजय नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया था, इसके अतिरिक्त उपनिषदों का भाष्य, और श्रीमद् भगवद्गीता की टीका इन्होंने बनायी थी।—श्रु तत्० (पु०) [आनन्द+अश्रु] आह्लाद, हर्ष। —मयकोष तत्० (पु०) पञ्चकोष के अन्तर्गत, कोषविशेष, सत्त्व, प्रधान, ज्ञान, कारण शरीर, सुषुप्ति। [सुख।

आनन्दि तत्० (पु०) [आनन्द+इ] हर्ष, आह्लाद,

आनन्दित तत्० (पु०) [आ+नन्द+क्त] आनन्द युक्त, हर्षान्वित, हृष्ट।

आनबान दे० (स्त्री०) सजावट, ठसक, बनावट।

आनयन तत्० (पु०) [आ+नी+अनट्] स्थानान्तर नयन, ले आना, लाना।

आनर्त तत्० (पु०) [आ+नृत+अल्] देश विशेष, द्वारकापुरी, नृत्यस्थान, युद्ध, आनर्त देशवासी मनुष्य।

आनर्तित तत्० (गु०) [आ+नृत+क] कम्पित, नृत्यविशिष्ट। [लेते आइये।

आनयौ तद्० (क्रि०) आइयो, ले आओ, ले आइये,

आनहु तद्० (क्रि०) लाओ, ले आओ, उपस्थित करो।

आना तद्० (पु०) चार पैसा, आना, पास आना, सोलह हिस्सा का एक हिस्सा, एक आना।

आनाकानी तद्० (स्त्री०) अवमन्त्रेज।

आनाड़ी तद्० (क्रि०) अनभिज्ञ, निर्बोध, अकर्मण्य, अनाड़ी।—पना तद्० मूर्खता, अनभिज्ञता।

आनाजाना तद्० (क्रि०) आवागमन, गतायत।

आनि (क्रि०) लाकर, ले आकर।

आनिहौं तद्० (क्रि०) लाऊँगा। [ले आना।

आनीत तत्० (गु०) [आ+नी+क्त] आनयन करना,

आनुकूल्य तत्० (पु०) अनुकूलता, सहायता।

आनुपूर्व तत्० (पु० स्त्री०) क्रमिक, अनुक्रम, क्रमागत, पर्याय, ढर्य।—ी (स्त्री०) परिपाटी, अनुक्रम, क्रमानुगत, क्रमानुसार, एक के बाद दूसरा।

आनुमानिक तत् (गु०) अनुमानसिद्ध, अनुमानगम्य, अन्दाजन। [चले आये हो।

आनुश्रविक तत्० (वि०) जिसको परम्परा से सुनते

आनुषङ्गिक तत्० (गु०) प्रसङ्गाधीन, साथ साथ होने वाला, प्रासङ्गिक।

आनृशंस्य तत्० (पु०) अनिष्ठुरता, दया, स्नेह।

आनेता तद्० (पु०) [आ+नी+तृच्] आनयन, कर्ता, आहरणकर्ता।

आन्तरिक तत्० (गु०) अन्तःकरण सम्बन्धी, अन्तरस्थ मनोगत, मानसिक।

आन्दू तद्० (पु०) हाथी बाँधने की जञ्जीर।

आन्दोलन तत्० (पु०) [आन्दोल+अन्ट्] मूलन, अनुशीलन, कम्पन, इधर उधर जाना, चलन, बार बार कथन, ध्यान पुन पुन।

आन्वीक्षिकी तत्० (स्त्री०) न्यायशास्त्र।

आब तद्० (क्रि०) आगमन करना, ले आना।

आप तद्० स्वयं, गुरु, तुम, जल, पानी।—आपः तत्० (पु०) [आप्+अस्] अष्ट वस्तुओं में एक, जल। [दे० (गु०) स्वार्थी।

आपकाज तद्० (गु०) आपकाजी स्वार्थी।—ी

आपगा तत्० (स्त्री०) [आप्+गम्+ड+आ] नदी, स्रोतस्विनी।

आपण तत्० (पु०) [आ+पण्+अल्] पण्य, विक्रयशाला, दूकान, हाट, बाजार।—िक (पु०) वणिक्, व्यवसाई, दूकानदार।

आपज्जनक तत्० (गु०) [आपद्+जनक] विपद् जनक, अनिष्टकारी। [कलेश।

आपत, आपत्ति तद्० (स्त्री०) विपत्ति, दुःख,

आपद या आपदा तद्० (स्त्री०) विपद, विपत्ति, दुःख का समय।—ग्रस्त तद्० (गु०) क्लिष्ट, आपत्ति में फँसा हुआ।
आपन दे० (सर्व) अपना, निज।
आपनिक तद्० (पु०) पन्नग, पन्ना, मरकत, इन्द्र, नीलमणि, देश विशेष।
आपन्न तद्० (गु०) प्राप्त शरण्य, अभागा, आपद्ग्रस्त, आपद्प्राप्त, सङ्कट में पड़ा हुआ।—सत्वा तद्० (स्त्री०) [आपन्न+सत्व+आ] गर्भवती।—नाश तद्० (पु०) [आप+नश्+घञ्] आपद नाश, विपत्ति नाश।
आपमित्यक तद्० (पु०) [अपमिति+अक्] विनिमय प्राप्त, बदला किया हुआ, गृहीत द्रव्य।
आपरूप तद्० (पु०) आप, ईश्वर, साक्षात्।
आपस तद्० (पु०) परस्पर, आप सब, निज, स्वयं।
आपसा तद्० (स्त्री०) आप समान, अपने जैसा।
आपा तद्० (स्त्री०) बड़ी बहिन, आपही, अपनी सत्ता, अहङ्कार, सुध बुध।
आपाक तद्० (पु०) अँवा, पजावा, कुम्हारों के मिट्टी के बर्तन पकाने का स्थान, आँवा।
आपाततः तद्० (अ०) सम्प्रति, इस समय के समान।
आपाद-पर्यन्त तद्० (अ०) चरणावधि मस्तक पर्यन्त, पैर से लेकर सिर तक।
आपादमस्तक तद्० (पु०) चरणावधि सिर पर्यन्त।
आपाधापी दे० (स्त्री०) अपनी अपनी धुन, लाग डाट, खैंचातानी।
आपान तद्० (पु०) [आ+पा+अनट्] मद्यपानार्थ गोष्ठी, मतवालों का झुण्ड, मद्यप, मतवाला।
आपामर-साधारण तद्० (अ०) [आ+पामर+साधारण] अन्य मनुष्यों से लेकर सभी मनुष्य, सर्वसाधारण।
आपिञ्जर तद्० (पु०) स्वर्ण, हेम, कनक, काञ्चन।
आपीड तद्० (पु०) शिखास्थित माला, शेखर, शिरोमाला, शिरोभूषण, मुकुट, कलगी।
आपीन तद्० (पु०) [आ+पा+क्त] गोस्तन, ईषत् स्थूल, गौ का थन, कठोर, मोटा, बड़ा।
आपु (सर्व०) अपना।
आपुस दे० (पु०) आपस, परस्पर।
आपूर्त्ति तद्० (स्त्री०) [आ+पूर+क्ति] ईषत् पूरण, सम्यक् पूरण।
आपोशान तद्० (पु०) कर्म विशेष, भोजन के पूर्व का आचमन।
आपृच्छा तद्० (स्त्री०) [आ+पृच्छ्+ङ+आ] आभाषण, आलाप, जिज्ञासा, प्रश्न।
आप्त तद्० (गु०) [आप्+क्त] विश्वस्त, लब्ध, सत्य, बन्धु, अभ्रान्त, सखा, विश्वासित, किसी भी कारण से कभी झूठ न बोलने वाला।—काम तद्० (वि०) पूर्ण काम, जिसकी समस्त कामनाएँ पूरी हो गयी हों।—कारी (पु०) [आप्त+कृ+णिन्] विश्वासी, विश्वस्त व्यक्ति।—गर्व तद्० (गु०) आत्माहङ्कार, दम्भ विशिष्ट, दाम्भिक।—ग्राही तद्० (पु०) स्वार्थपर, आत्मम्भरि, लोभी।—वर्ग तद्० (पु०) आत्मीय स्वजन, बन्धु बान्धव, माननीय मित्र।—सार (पु०) [आप्त+सृ+घञ्] आत्मरक्षण, स्वशरीर गोपन, स्वायत्त।
आप्तोक्ति तद्० (स्त्री०) [आप्त+उक्ति] सिद्धान्तवाक्य, आप्तवचन, विश्वस्त व्यक्ति का कथन।
आप्यायित तद्० (गु०) [आ+प्याय+क्त] तृप्त, प्रीत, सन्तुष्ट, आनन्दित, तर, बढ़ा हुआ, दूसरे रूप में बदला हुआ।
आप्रच्छन तद्० (पु०) [आ+प्रच्छ्+अनट्] आने या जाने के समय मित्रों में परस्पर कुशल प्रश्न जनित आनन्द।
आप्लव तद्० (पु०) [आ+प्लु+अच्] स्नान, अवगाहन, जलमय, सर्वत्र डुबाव।—व्रती तद्० (पु०) [आप्लव+व्रती] स्नातक ब्राह्मण, आप्लुत व्रती।
आप्लुत तद्० (पु०) [आ+प्लु+क्त] स्नान। (गु०) कृतस्नान, विहितावगाहन सिक्त, भीगा। (पु०) स्नातक।—व्रती तद्० (पु०) [आ+प्लुत+व्रत+इनि] ब्रह्मचर्य त्यागान्तर जो गृहस्थ आश्रम अवलम्बन करते हैं, स्नातक ब्राह्मण, समाप्त वेदाध्यन, स्नानशील।
आफत दे० (स्त्री०) आपत्ति, बला, कष्ट।
आफू तद्० (स्त्री०) अमल, अफ़ीम, अहिफेन।
आब दे० (स्त्री०) चमक, कान्ति, उत्कर्ष, महिमा,

प्रसिद्धि, गुण, छवि।—कारी दे० (स्त्री०) कलाबत्तू, दीवी—पाशी (स्त्री०) सींचाई।
आबगीरा (पु०) गिलास।
आबताब (स्त्री०) छवि, कान्ति, छटा।
आबदस्त (पु०) सीचना, पानी का स्पर्श करना।
आबदाना (पु०) दाना पानी।
आबदार दे० (वि०) चमकीला, सुदिगा।
आबनूस दे० (पु०) एक प्रकार का पेड़।
आबादी दे० (स्त्री०) बस्ती, जनस्थान।
आबू दे० (पु०) आबू नामक पहाड़।
आब्दिक तद्० (वि०) वार्षिक, सालाना।
आभ तद्० (स्त्री०) शोभा, कान्ति, पानी।
आभरण तद्० (पु०) [आ+भृ+अनट्] भूषण, अलङ्कार, गहना।
आभा तद्० (स्त्री०) प्रभा, शोभा, दीप्ति, द्युति, ज्योति, आलोक, उज्ज्वलता, चमक, प्रकाश, भलक।
आभार तद्० (पु०) बोझ, गृहप्रबन्ध की देख रेख की जिम्मेदारी, एहसान, उपकार।—ी तद्० (वि०) एहसान मानने वाला, उपकृत।
आभाष तद्० (पु०) [आ+भाष्+अल्] भूमिका, अनुष्ठान, उपक्रमणिका, प्रबन्ध, सम्भाष।
आभाषण तद्० (पु०) [आ+भाष्+अनट्] बोलना, कथन, सम्भाषण।
आभास तद्० (पु०) [आ+भास्+अल्] सदृश, प्रतिबिम्ब, छाया, भलक, पता, मिथ्याज्ञान, दीप्तिदोष, अभिप्राय, अवतरणिका। [विशेष।
आभास्वर तद्० (पु०) चौसठ संख्यक गण देवता
आभिचारक तद्० (पु०) [अभि+चर+अक] अभिचारकर्त्ता, हिंसा कर्म का प्रयोग करने वाला।
आभिजात्य तद्० (पु०) कुलसम्बन्धी, कौलीन्य, कुलीनता, सभ्यता, पाण्डित्य।
आभिधानिक तद्० (गु०) कोशवेत्ता, अभिधानोक्त अभिधान में प्रसिद्ध।
आभिमुख्य तद्० (पु०) सबोधन, अभिमुखकरण, सम्मुखीभाव, सम्मुखता, सामना।
आभीर तद्० (पु०) गोप, अहीर, ग्वाल, भील ब्राह्मण के औरस से अम्बष्ठ जाति की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष, छन्द विशेष, देश विशेष।
—पल्लि, पल्ली तद्० (स्त्री०) गोपग्राम, गोष्ठ घोष। (स्त्री०) आभीरी, ग्वालिनी।
आभूषण तद्० (पु०) अलङ्कार, गहना, भूषण।
आभ्यान्तर तद्० (वि०) भीतरी, अन्दर का।—िक तद्० (वि०) अन्तरङ्ग, भीतरी।
आभ्यासिक तद्० (गु०) श्रुतिधर, अभ्यासकर्त्ता।
आभ्युदयिक तद्० (पु०) श्राद्ध विशेष, अभ्युदय सम्पन्न, सौभाग्यवान्, शुभान्वित।
आम तद्० (गु०) [अम्+घञ्] पाकरहित, अपक्व, कच्चा, असिद्ध। (पु०) आमाशय रोग, आम्रफल।
—गन्धि तद्० (पु०) गन्धयुक्त, चिता का धूम प्रभृति, कच्चे माँस के गन्धयुक्त पदार्थ, दुर्गन्ध।
—चूर तद्० (पु०) आम का सूखा चूर्ण, आम की खटाई।
आमड़ा तद्० (पु०) एक खट्टा फल विशेष।
आमद दे० (स्त्री०) आमदनी, आय।
आमदनी दे० (स्त्री०) आय, प्राप्ति, आमद।
आमनाय तद्० (पु०) आम्नाय, अभ्यास परम्परा।
आमना सामना (पु०) भेंट, मुलाकात।
आमने सामने (पु०) एक दूसरे के सामने या मुकाबिले पर।
आमन्त्रण तद् (पु०) [आ+मन्त्र+अनट्] सम्बोधन, आह्वान, निमन्त्रण।
आमन्त्रित तद्० (गु०) [आ+मन्त्र+क्त] निमन्त्रित, आहूत, न्योता दिया हुआ।
आमय तद्० (पु०) [आ+मय्+अल्] रोग, पीड़ा, व्याधि। [पीड़ित।
आमयावी तद्० (गु०) [आमय+अस्+इन्] रोगी,
आमरक्त तद्० (पु०) उदर रोग विशेष, लाल मल निकलने की पीड़ा, अतिसार, उदर रोग।
आमर्श तद्० (पु०) [आ+मृश्+अल्] परामर्श, विवेचन, सुचिन्ता, सलाह। [रोष, राग।
आमर्ष तद्० (पु०) [आ+मृष्+अल्] क्रोध,
आमलक तद्० (पु०) आँवला।
आमला तद्० (पु०) आमलक, फल विशेष, धात्री फल, कार्तिक मास में इस वृक्ष की पूजा होती है।
आमवात तद्० (पु०) पित्त से उत्पन्न चर्म रोग।
आमशूल तद्० (पु०) रोग विशेष, अजीर्ण होने

के कारण उदर कि पीड़ा विशेष, वायुगोला, वायुशूल।

आमात्य तद्० (पु०) [आमा+त्यप्] प्रधान मन्त्री, पात्र।

आमान्न तद्० (पु०) [आम+अद्+क्त] अपक्वान्न तण्डुल, कच्चा अन्न, सीधा, कोरा अन्न।

आमाशय तद्० (पु०) [आम्+आ+शि+अच्] अपक्व स्थान, आमस्थली, उदरस्थ एक प्रकार की थैली, अतिसार, आमरोग।

आमिष तद्० (पु०) माँस, मत्स्य आदि भोजन की वस्तु, सम्भोग, घूँस, रिसवत, लोभ सन्चय, लाभ, काम के गुण, रूप, भोजन।—प्रिय (पु०) कङ्क पक्षी, बाज पक्षी। (गु०) मत्स्य माँस से सन्तुष्ट मनुष्य।—भुक् तद्० (पु०) माँस भोक्ता, माँसाशी।—शी (गु०) मत्स्यमाँस-भोजनशील, माँस भक्षक।

आमूल तद्० (पु०) मूल पर्यन्त, कारणावधि, मूलावधि, पहिले से, जड़ तक। [उच्छेदित, अपमानित।

आमृष्ट तद्० (गु०) [आ—मृष्+क्त] मर्दित,

आमोद तद्० (पु०) [आ+मुद्+घञ्] अति दूरगामी गन्ध, सौरभ, हर्ष, आनन्द, दिल बह लाव।—प्रमोद तद्० (पु०) आनन्द मङ्गल, आराम चैन।

आमोदित तद्० (गु०) [आ+मुद्+क्त] आनन्दित। प्रसन्न, जी बहला हुआ, सुगन्धित।

आमोदी तद्० (गु०) [आ+मुद्+णिन्] मुख को सुगन्धित करने वाली वस्तु, प्रसन्न रहने वाला।

आम्नाय तद्० (पु०) [आ+म्ना+य] वेद, निगम, उपदेश, प्राचीन परिपाटी, सम्प्रदाय।

आम्बर तद्० (स्त्री०) कहरुवा, वनारटी मूँसा।

आम्र तद्० (पु०) फल विशेष, आम, रसाल, सहकार।

आम्राई तद्० (स्त्री०) आम का बाग़, अमराई।

आम्रेडन तद्० (पु०) एक ही बात को पुनः पुन. कै कथन, पुनरुक्ति, द्विवार या त्रिवार कथित।

आय तद्० (पु०) लाभ, धनागम, उपार्जन, आमदनी।

आयत तद्० (गु०) [आ+यम्+क्त] दीर्घ, लम्बा, विस्तृत (स्त्री०) इञ्जील का या कुरान का वाक्य।

आयतन तद्० (पु०) [आ+यत्+अनट्] यज्ञस्थान, देवस्थान, घर, ठहरने की जगह, स्थान, मकान, ज्ञान के सञ्चार का स्थान।

आयति तद्० (स्त्री०) [आ+यम्+क्ति] उत्तर-काल, भविष्यत्काल।

आयत्ति तद्० (स्त्री०) [आ+यत्+क्त] अधीनता, परवशता।

आयदा (वि०) आगन्तुक, आगामी, भविष्य।

आयसु तद्० (पु०) आज्ञा, आदेश, प्रेरणा, यथा "पहुनाई कहँ आयसु दीजै"।—पद्मावत।

आया तद्० (स्त्री०) लड़कों को खिलाने वाली, उप-माता धात्री, धाय। (क्रि०) आना का भूत-काल। (प्र०) क्या! यथा—आया तुम वहाँ गये थे कि नहीं?

आयात तद्० (गु०) [आ+या+क्त] आगत, उपस्थित, आया। [विस्तार, नियमन।

आयाम तद्० (पु०) [आ+यम+घञ्] लंबाई,

आयास तद्० (पु०) [आ+यस्+घञ्] श्रान्ति, श्रम, क्लेश, परिश्रम, व्यायाम, प्रयास, यत्न।

आयु तद्० (पु०) [आ+अय्+उस्] वय, जीवन काल, जीवन समय, उम्र।

आयुध तद्० (पु०) [आ+युध्+क] हथियार, अस्त्र, शस्त्र, धनुष आदि।—गार तद्० (पु०) [आयुध+आगार] अस्त्रगृह। [धारी।

आयुधिक तद्० (गु०) अस्त्रजीवी, शस्त्रजीव, अस्त्र-

आयुधीय तद्० (गु०) अस्त्रधारी, शस्त्रजीव।

आयुर्वेद तद्० (गु०) [आयुस्+विद्+अच्] अष्टादश विद्यान्तर्गत धन्वन्तरि प्रणीत विद्याविशेष, अथर्ववेद का उपाङ्ग, चिकित्साशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, निदानशास्त्र।—ी तद्० (गु०) आयुर्वेदज्ञ, चिकित्सा व्यवसायी, वैद्य।

आयुष्कर तद्० (गु०) [आयुस्+कृ+अच्] परमा-युजनक, आयुवृद्धिकारक, आयुष्य, आयुवर्द्धक।

आयुष्काम तद्० (गु०) दीर्घजीवी, आयुप्रार्थी।

आयुष्टोम तद्० (पु०) [आयुस्+स्तोम्+अच्] यज्ञ विशेष, आयु वृद्धिकर यज्ञ।

आयुष्मान् तद्० (गु०) [आयुस्+मत्] चिर-जीवी, दीर्घजीवी, दीर्घायु, (पु०) ज्योतिष के सप्तविंशति योगों में तीसरा योग विशेष।

आयुष्य तत्० (गु०) आयु का हितकारक, आयु-वर्द्धक, (पु०) आयु, उम्र ।
आयोगव तत्० (पु०) शूद्र के औरस से वैश्या के गर्भ में उत्पन्न जाति विशेष, बढ़ई ।
आयोजन तत्० (पु०) [आ+युज्+अनट्] तैयारी, उद्योग, नियुक्ति । [रण, संग्राम ।
आयोधन तत्० (पु०) [आ+युध्+अनट्] युद्ध,
आर तद्० (पु०) काँटा, पैना, अङ्कुश, मङ्गल, शनि इच्छ, लुहार, चमार, तांबा, पीतल ।
आरचा तत्० (स्त्री०) मूर्त्ति, प्रतिमा, अर्चा, पूजा ।
आरज तद्० (गु०) आर्य्य, बड़ा, श्रेष्ठ, पूज्य, महाराज ।
आरजा दे० (पु०) बीमारी, रोग ।
आरत तद्० (गु०) आर्त्त, पीड़ित, दुःखित, व्याकुल, अत्यन्त दुःखी, दुःख का सताया हुआ, अति पीड़ित दुःखान्वित । [एक रीति विशेष ।
आरता तद्० (पु०) दुलहे की आरती, विवाह की
आरति तद्० (स्त्री०) देवता को दीप दिखाना, दीप-दर्शावन, नीराजन, निवृत्ति ।
आरती तत्० (स्त्री०) देव को दीप दिखाना ।
आरन तद्० (पु०) अरण्य, वन, कानन, यथा—"कॉन्ह्रेसी सावज आरन रहे"—पद्मावत ।
आरपार दे० (पु०) इस किनारे से उस किनारे तक, पल्लीपार ।
आरब्ध तत्० (गु०) उपक्रान्त, आरम्भ किया गया ।
आरम्भ तत्० (पु०) प्रारम्भ, उपक्रम ।
आरषी तद्० (गु०) ऋषी सम्बन्धी, आर्ष ।
आरसी दे० (स्त्री०) अगूठे में मुँदरी की तरह का एक आभूषण जिसमें दर्पण लगा होता है और जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं, आर्सी, दर्पण ।
आरा तद्० (पु०) चर्मभेदक अस्त्र, काष्ठभेदक अस्त्र, करांत, दरांत, क्रकच ।—कस (पु०) आरा चलाने वाला, लकड़ी चीरने वाला ।
आराज़ी दे० (स्त्री०) खेत, ज़मीन । [दुश्मन ।
आराती तत्० (पु०) शत्रु, विपक्ष, वैरी, अरि, रिपु,
आरात् तत्० (अ०) दूर, निकट, समीप ।
आरात्रिक तत्० (पु०) आरति नीराजन, नीराजन पात्र, आरति-प्रदीप ।
आराधक तत्० (गु०) [आ+राध्+णक्] पूजक, सेवक, अर्चक, पुजारी ।
आराधन तत्० (पु०) [आ+राध्+अनट्] साधना, उपासना, सेवा, परिचर्या तोषण ।—ा तत्० (स्त्री०) [आ+राध्+अन्+आ] उपासना, सेवा, परिचर्या, शुश्रूषा ।
आराधित तत्० (गु०) [आ+राध्+क्त] उपासित, साधित, पूजित ।
आराध्य तत्० (गु०) [आ+राध्+य] आराधना के योग्य, उपास्य, सेवनीय ।
आराम तत्० (पु०) [आ+रम्+घञ्] उपवन, बाग, विश्राम, आरोग्य, उपशम, पीड़ा की शान्ति, सुख ।—गाह दे० (स्त्री०) आराम की जगह, शयनागार ।—तलब (गु०) सुस्त, सुकुमार ।
आरि तत्० (स्त्री०) हठ, टेक, ज़िद ।
आरिया दे० (स्त्री०) एक प्रकारकी ककड़ी जो चौमासे में उत्पन्न होती है ।
आरी तत्० (स्त्री०) करौंती, क्षुरपत्र, काष्ठ भेदक अस्त्र, बढ़ई का वह औज़ार जिससे वह लकड़ी चीरता है ।
आरुँधना तत्० (क्रि०) गला दबाना, श्वास रोकना ।
आरूढ़ तत्० [आ+रुह्+क्त] कृत आरोहण, वृष आदि पर चढ़ा हुआ, असवार, सवार ।
आरोग तत्० (गु०) नीरोग, आराम, सुखी, सुस्थ, रोग रहित, तन्दुरुस्त ।
आरोगना दे० (क्रि०) खाना, भोजन करना ।

शबरी परम भक्ति रघुपति की,
बहुत दिनन की दासी ।
नीके फल आरोगे रघुपति,
पूरण भक्ति प्रकासी ॥—सूर ।

[नोट—मेवाड़ में भोजन करने के लिये "आरोगना" ही कहा जाता है ।]
आरोग्य तत्० (पु०) [आ+रुज्+ष्यञ्] रोगहीनता, रोगाभाव, अनामय, आराम, स्वास्थ्य, नीरोगता, तन्दुरुस्ती । [रचना, कल्पना, बनावट ।
आरोप तत्० (पु०) [आ+रुप+घञ्] मिथ्या
आरोपन तद्० (पु०) चढ़ाव, स्थापन, चढ़ाना, स्थापन करना । [स्थापना, चढ़ाना ।
आरोपण तत्० (पु०) [आ०+रुप+अनट्] चढ़ाव,

आरोपित तत्० (गु०) [आ+रुप+क्त] कृतारोपण, लगाया हुआ, मढ़ा हुआ।

आरोहण तत्० (पु०) [आ+रुह्+अनट्] उत्थान, चढ़ाव, सीढ़ी, सोपान, नीचे से ऊपर जाना, चढ़ना, अङ्कुर निकलना।

आरोही तत्० (वि०) चढ़नेवाला, सवार।

आर्जव तत्० (पु०) [आ+ऋजु+अ] सारल्य, सरलता, नम्रता, विनय।

आर्त्त तत्० (पु०) पीड़ित, असुस्थ, क्लेशित। -नाद तत्० (पु०) [आ+नद+घञ्] पीड़ित ध्वनि, क्लेशजन्य चीत्कार, कातर स्वर—स्वर तत्० (पु०) आर्त्तनाद।

आर्त्तव तत्० (पु०) स्त्री का रज, स्त्रियों का ऋतुकाल, मासिक पुष्प, ऋतु में उत्पन्न, सामयिक।

आर्त्विज्य तत्० (पु०) ऋत्विज का कर्म, पौरोहित्य, पुरोहित का कर्म।

आर्थिक तत्० (गु०) धनसम्बन्धी, रुपये पैसे का।

आर्द्र तत्० (गु०) सजल वस्तु, भींगा, गीला, सरस, सीला।

आर्द्रक तत्० (पु०) देखो आदा।

आर्द्रा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, सत्ताइस नक्षत्रों में छठवाँ नक्षत्र।—लुब्धक तत् (पु०) केतु। —वीर तत्० (पु०) वाममार्गी।—शनि तत्० (स्त्री०) बिजली, एक अस्त्र।

आर्य तत्० (गु०) सत्कुलोद्भव, श्रेष्ठ, पूज्य, वृद्ध, मान्य।—पुत्र (पु०) भर्ता, स्वामी, गुरुपुत्र। —भट्ट (पु०) विख्यात भारतीय ज्योतिर्वेत्ता विद्वान्, इनके बनाये ग्रन्थ का नाम आर्यसिद्धान्त है, कुसुमपुर नामक स्थान में ४७६ ई० में यह उत्पन्न हुए थे। इन्होंने ही भारतवर्ष में सौर-केन्द्रिय मत का प्रचार किया है। इन्होंने प्रमाणित किया है कि पृथ्वी तथा अन्यान्य ग्रह, सौर जगत् में अवस्थित होकर सूर्य की प्रदक्षिणा करते हैं। इन्होंने एक बीजगणित भी बनाया है।—मिश्र (गु०) गौरवान्वित, मान्य, पूज्य।—क्षेमीश्वर (पु०) संस्कृत का एक कवि, चण्डकौशिक नामक नाटक इन्हीं का बनाया है बङ्गाल के पाल वंशीय राजा महीपाल की आज्ञा से इन्होंने अपना नाटक लिखा था। इनका समय, १०२६—१०४० के लगभग समझना चाहिये।

आर्या तत्० (स्त्री०) पार्वती, सास, दादी।

आर्यावर्त तत्० (पु०) [आर्य+आवर्त] विन्ध्य और हिमालय पर्वत का मध्यवर्ती देश, पुण्य-भूमि, आर्यों का निवासस्थान।

आर्ष तत्० (वि०) [ऋषि+अ] ऋषि-सम्बन्धी, ऋषि प्रणीत, वैदिक, ऋषि सेवित।—प्रयोग तत्० (पु०) प्रचलित व्याकरण के नियमों के विरुद्ध शब्द प्रयोग।—विवाह तत्० (पु०) अष्टविध विवाह में एक विवाह। जिस विवाह में वर से एक या दो गोमिथुन लेकर कन्या दी जाती है वह आर्ष है।

आल तद्० (पु०) पीतवर्ण, हरिद्रावर्ण, हरताल, वृक्ष विशेष।

आलकस दे० (पु०) आलस्य, सुस्ती।

आलन तद् (पु०) पाक विशेष, अलौना, लवण-[रहित।

आलना दे० (पु०) घोंसला, खुंता, खोंता।

आलवाल तत्० (पु०) [आल+वल+घञ्] किआरी, थाला, थाँवला, घेरा जो वृक्षों के नीचे प्रायः जल ठहरने के लिये बनाया जाता है। जलाधार, गमला।

आलम दे० (पु०) संसार, जनसमूह।

आलम्ब तत्० (पु०) [आ+लम्ब+अल्] अवलम्ब, आश्रय, उपजीव्य।

आलम्बन तत्० (पु०) [आ+लम्ब+अनट्] अवलम्बन, आश्रय, शृङ्गारादि रसों का विभाग विशेष, जिसके आश्रय से रस का आविर्भाव होता है, नायक नायिका प्रतिनायक आदि, साधन, कारण।

आलय तत्० (पु०) [आ+ली+अल्] गृह, वास-स्थान, घर, गेह, मकान।

आलस तत्० (गु०) [आ+लस्+अल्] आलस्य-युक्त, कर्मानुत्साही (पु०) सुस्ती, ढील, काहिली। —ी (गु०) अकर्मण्य, सुस्त, ढीला।

आलस्य तत्० (गु०) [आ+लस्+य] अलसता, तन्द्रा, मन्दता, कार्यानुत्साहिता, सुस्ती।—त्याग तत्० जृम्भण, जँभाई, गात्रभङ्ग। [अरवा।

आला तद्० (पु०) दीवार का ताख, छोटा खोह, ताखा,

आलान तत्० (पु०) गजबन्धन स्तम्भ, गजबन्धनारज्जु, हाथी का खूँटा, बेड़ी, बन्धन, रस्सी।
आलाप तत्० (पु०) [आ+लप्+घञ्] कथोपकथन, सम्भाषण, कुशल, जिज्ञासा, बातचीत, तान।
आलापना तद्० (क्रि०) गाना, तान लड़ाना।
आलापिनी तत्० (स्त्री०) [आलाप+इन्+ई] बंसी बाँसुरी, मुर्ली।
आलापी तद्० (पु०) [आलाप+इन्] गानेवाला।
आलाबु तत्० (स्त्री०) लौकी, तुम्बी, कद्दू।
आलाय बलाय (या अलाय बलाय) तद्० (पु०) आपद, अशुभ, दुर्निमित्त, अशुभ सूचक चिन्ह।
आलारासी दे० (पु०) लापरवाह, बेफ़िक्र।
आलि तत्० (स्त्री०) सखी, वयस्या, सजनी, सहचारिणी, सहेली, सेतु, पंक्ति, (पु०) वृश्चिक, भ्रमर। (गु०) विशदाशय, निर्मलान्तःकरण, अनर्थ।
आलिखित तत्० (गु०) [आ+लिख्+क्त] चित्रित, लिखित, अङ्कित।
आलिङ्गन तत्० (पु०) [आ+लिग्+अनट्] अङ्कमिलन, प्रीतिपूर्वक परस्पर मिलना, भेंटना।
आली तत्० (स्त्री०) [आल्+ई] सखी, सहचरी, सहेली, पंक्ति, लकीर, वृश्चिक।
आलीढ़ तत्० (पु०) [आ+लिह+क्त] बाण छोड़ने के समय का आसन विशेष, बायाँ पैर पीछे की ओर और दाहिना पैर सामने रख कर बैठना (गु०) भक्षित, खादित चर्वित, युक्त लेहित।
आलीशान दे० (गु०) विशाल, भव्य। [हुआ न हो।
आलुलायित तद्० (गु०) बन्धन रहित, जो बाँधा
आलू तत्० (पु०) कन्द विशेष, स्वनामख्यात मूल विशेष।—बुखारा (पु०) एक फल विशेष।
आलूचा दे० (पु०) एक फलदार पहाड़ी वृक्ष।
आलेख्य तत्० (पु०) [आ+लिख्+य] चित्रपट, लिखन, लिपि।
आलेप तत्० (पु०) [आ+लिप्—घञ्] मलहम, लेप, लेपनी द्रव्य।
आलोक तत्० (पु०) दर्शन, दीप्ति, ज्योति, प्रकाश।
आलोकन तत्० (पु०) [आ+लोक+अनट्] दर्शन, ईक्षण, देखना।
आलोचन तत्० (पु०) [आ+लुच्+अनट्] विवेचन, जाँच, दर्शन। (स्त्री०) अनुशीलन, विवेचना, चर्चा, आन्दोलन।—ना (स्त्री०) विवेचना, विचार।
आलोचित तत्० (गु०) [आ+लुच्+क्त] अनुशीलित विवेचित जिसके गुणदोष का विचार किया गया हो। [विवेचनीय, विचारणीय।
आलोच्य तत्० (गु०) [आ+लुच्+य] आलोचनीय,
आलोड़न तद्० (क्रि०) मन्थना, बिलोना, हिलोरना, सोच विचार करना।
आलोल तत्० (गु०) चञ्चल, अति चञ्चल।
आल्हा तत्० (पु०) एक हिन्दू वीर का नाम, कवि विशेष, छन्द विशेष, ग्रन्थ विशेष। (मुहा०)—गाना किसी बात को बहुत बढ़ा कर कहना, अपना हाल सुनाना।
आव (क्रि०) आता है, आवे, आवा, आयु, उम्र।
आवइ } (क्रि०) आवै, आती है। [दायित्व।
आवति }
आवक तत्० (पु०) बीमा, झोंकी सहना, उत्तर-
आवदार दे० (गु०) आबदार, सुशोभन, मनोहरता युक्त चमकीला, स्वच्छ।
आवना तद्० (क्रि०) पहुँचाना पहुँचना, आना।
आवनी तद्० (स्त्री०) अवाई, निकट आना, आगामी।
आवनेहारा दे० (पु०) अवैया, आवनहार।
आवनो दे० (क्रि०) आना, उपस्थित होना।
आवभगत दे० (स्त्री०) आदर, मान, सत्कार।
आवभाव दे० (स्त्री०) आदर, मान्य।
आवरण तत्० (पु०) [आ+वृ+अनट्] ढाल, आच्छादन, ढकने की वस्तु।
आवर्जन तत्० (पु०) [आ+वृज्+अनट्] फेंकना, मना करना, रोकना।
आवर्त तत्० (पु०) भँवर, चक्र, फेर, घुमाव।
आवलि तत्० (स्त्री०) पङ्क्ति, श्रेणि, पाँति।
आवश्यक तत्० (गु०) अवश्यकर्तव्य, प्रयोजनीय। निश्चय उचित।—ता (स्त्री०) प्रयोजन, दरकार, अपेक्षा।
आवसथ तत्० (गु०) गृह, भवन, गेह, व्रत विशेष।
आवह तत्० (पु०) [आ+वह+अच्] सात वायु के

अन्तर्गत वायु विशेष भूवायु।—मान तत्॰ (गु॰) क्रमागत पूर्वोक्त, क्रमिक।
आया (क्रि॰) आया, आगया।
आयाई दे॰ (पु॰) आने की चर्चा, समाचार।
आवागमन या आवागवन तद्॰ (पु॰) आना जाना, जन्ममरण।
आवाजाई दे॰ (स्त्री॰) नित्य गमन, सतत आना जाना, "क्या आवाजाई करते हो?"
आवारगी दे॰ (स्त्री॰) लुच्चापन।
आवारा दे॰ (गु॰) गुण्डा, बदमाश। [धाम।
आवास तत्॰ (पु॰) [आ+वस्+घञ्] गृह, घर,
आवाहन तत्॰ (पु॰) आदर से बुलाना, षोडशोपचार पूजा का एक अङ्ग, मंत्र द्वारा देवता को बुलाना।
आविर्भाव तत्॰ (पु॰) प्रकटता, प्रत्यक्षता, प्रकाश उत्पत्ति।
आविर्भूत तत् (गु॰) [आविस्+भू+क्त] प्रकाशित, प्रादुर्भूत, प्रकटित, उत्पन्न।
आविष्कर्त्ता तत्॰ (पु॰) आविष्कार करनेवाला।
आविष्कार तत्॰ (पु॰) [आविस्+कृ+घञ्] प्रकाश, प्राकट्य। [शित, प्रकटित।
आविष्कृत तत्॰ (गु॰) [आविस्+कृ+क्त] प्रका-
आविष्ट तत्॰ (गु॰) [आ+विश्+क्त] आवेगयुक्त, मनोयोगी, लीन, किसी की धुन में लग जाना।
आवृत तत्॰ (गु॰) [आ+वृ+क्त] वेष्ठित, घेरा, कृतावरण, ढका हुआ, आच्छादित।
आवृत्ति तत्॰ (स्त्री॰) [आ+वृत्+क्ति] उद्धरणी, पुनः पुनः पाठ करके कण्ठ करना, बार बार किसी बात का अभ्यास।
आवेग (पु॰) जोश, उमंग।
आवेदक तत्॰ (पु॰) निवेदन करने वाला।
आवेदन तत्॰ (पु॰) [आ+विद्+अनट्] निवेदन, ज्ञापन, मनोगत भाव का प्रकाश करना।
आवेद्य तत्॰ (गु॰) निवेदन करने योग्य।
आवेश तत्॰ (पु॰) [आ+विश्+घञ्] प्रवेश, घुसना, सञ्चार, उदय, अहङ्कार विशेष, अपस्मार रोग। [शिल्पशाला, कारख़ाना।
आवेशन तत्॰ (पु॰) [आ+विश्+अनट्] प्रवेश,
आवो दे॰ (क्रि॰) आओ, आगे बुलाना।

आँश दे॰ (स्त्री॰) रेशा, सूत। [तेजस्वी।
आंशिक तत्॰ (गु॰) विभागी, हिस्सेदार, प्रतापी,
आशंसा तत्॰ (स्त्री॰) [आ+शंस्+अ+आ] प्रार्थना, आकांक्षा, अनुमान, सह, संशय, इच्छा, अभिलाष, चाह।
आशंसित तत्॰ (गु॰) [आ+शंस्+क्त] प्रार्थित, आकाङ्क्षित, अभिलषित, वर्णित।
आशङ्कनीय तत्॰ (गु॰) [आ+शङ्क+अनीय] आशङ्का का स्थान, भयावह, भयस्थान।
आशङ्का तत्॰ (स्त्री॰) [आ+शङ्क+आ] भय, डर, सन्देह, त्रास, आतङ्क, संशय।
आशङ्कित (गु॰) शङ्कित, भयभीत।
आशय तत्॰ (पु॰) [आ+शी+अल्] अभिप्राय, तात्पर्य, आधार, आश्रय, वासना इच्छा, गड्ढा, खात।
आशा तत्॰ (स्त्री॰) [आश+ड्+आ] दिशा, आश्रय, भरोसा, आसरा।—भङ्ग तत्॰ (पु॰) नैराश्य, भरोसा टूटना, नाउम्मेद।
आशातीत तत्॰ (गु॰) [आशा+अतीत] आशा से अधिक, चाह से अधिक।
आशिष तद्॰ (पु॰) देखो आशीस्। [मङ्गल प्रार्थना।
आशीस तद्॰ (स्त्री॰) आशीर्वाद, वर, शुभाशंसा,
आशीर्वचन तत्॰ (पु॰) [आशीस्+वच्+अनट्] शुभजनक वाक्य, कल्याण वाक्य।
आशीर्वाद तत्॰ (पु॰) [आशीस्+वद्+घञ्] आशीर्वचन, मङ्गल प्रार्थना, आसीस।—क (पु॰) आशीर्वादकर्त्ता, कल्याण प्रार्थक।
आशीविष तत्॰ (पु॰) [आशी+विष+अल्] सर्प, अहि, भुजङ्ग, साँप।
आशु तत्॰ (पु॰) शीघ्र, द्रुत, तुरन्त, तुर्त, झटपट, वर्षा काल में उत्पन्न होने वाला एक धान्य।—कवि (पु॰) शीघ्र कविता बनाने वाला।—ग (पु॰) शीघ्रगामी, बाण, शर, वायु, मन।—तोष (पु॰) शीघ्र तुष्ट, महादेव, शीघ्र प्रसन्न होने वाला।
आश्चर्य तत्॰ (पु॰) [आश्+चर+य] अपूर्व, विस्मय, अद्भुत, चमत्कार, विचित्र, अलौकिक।—ान्वित तत्॰ (गु॰) [आश्चर्य+अन्वित] चमत्कृत, विस्मित।

आश्चर्यित (गु०) चकित, विस्मित।

आश्रम तत्० (पु०) [आश्रम+अञ्] शास्त्रोक्त धर्म विशेष, ब्रह्मचारी, गृही, वानप्रस्थ, भिक्षु, ब्रह्मचर्य गार्हस्थ्य वानप्रस्थ संन्यस्त ये चार प्रकार की अवस्था, ऋषि मुनि के रहने का स्थान, वन, मठ, स्थान।—गुरु तत्० (पु०) कुलाचार्य, कुलपति। —धर्म तत्० (पु०) आश्रम के लिये शास्त्र कथित आचार और नियम।—भ्रष्ट तत्० (गु०) आश्रम विरुद्ध चलने वाला।—ी तत्० (वि०) आश्रम-युक्त, आश्रम में रहने वाला।

आश्रय तत्० (पु०) [आ+श्रि+अच्] शरण, अवलम्बन, रक्षा का स्थान, सहारा, आधार।—भूत तत्० (गु०) अवलम्बभूत, शरण, भरोसा-गीर।—स्थान तत्० (पु०) आश्रय का स्थान, सहारे का ठौर।

आश्रयण तत्० (पु०) [आ+श्रि+अनट्] आश्रय, शरण, अवस्थान।

आश्रयणीय तत्० (गु०) [आ+श्रि+अनीय] आश्रय के योग्य, आश्रमोपयुक्त।

आश्रित तत्० (गु०) [आ+श्रि+क्त] कृताश्रय, शरणागत, अधीन, सहारे पर टिका हुआ, सेवक, वश्य, वशीभूत, ।—स्वत्व (पु०) भृत्य का अधिकार, अधीन का अधिकार।

आश्लिष्ट तत्० (गु०) [आ+श्लिष्+क्त] आलिङ्गित, सटा हुआ, चिपटा हुआ, लपटा हुआ।

आश्लेष तत्० (पु०) [आ+श्लिष्+घञ्] आलिङ्गन, मिलन, जुड़ना, लगाव।

आश्वस्त तत्० (गु०) [आ+श्वस्+क्त] आश्वास प्राप्त आशायुक्त।

आश्वासित तत्० (गु०) [आ+श्वस्+णिच्+क्त] अनुनीत, आश्वस्त, दिलासा दिया हुआ।

आश्विन तत्० (पु०) मास विशेष, शरद् ऋतु का दूसरा मास, कुआर, असोज।

आषाढ़ तत्० (पु०) वर्षा ऋतु का प्रथम मास।—भू या भव तत्० (पु०) नक्षत्र मङ्गल, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ा तत्० (स्त्री०) [आ+षड्+क्त+आ] नक्षत्र विशेष, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्र।

आषाढ़ी तत्० (पु०) [आषाढ़+ई] आषाढ़ मास की पूर्णिमा।

आस तद्० (स्त्री०) आशा, भरोसा, आसरा।

आसकत (स्त्री०) आलस्य, सुस्ती।

आसक्त तत्० (गु०) [आ+सञ्ज+क्त] अनुरक्त, मोहित, लिप्त, मग्न, लीन।—ि तत्० (स्त्री०) अनुरक्ति, लगन, चाह, प्रेम, मोह, इश्क़।

आसङ्ग तत् (पु०) [आ+सञ्ज+घञ्] संसर्ग, संसक्ति, अनुराग।

आसत्ति तत्० (स्त्री०) [आ+सद्+क्ति) सङ्गम, मिलन, लाभ, न्याय मत से पदों का अत्यन्त सन्निधान, अव्यवहित, पदोच्चारण, यह शब्दबोध का एक हेतु है, समीपता।

आसन तत्० (पु०) [आस+अनट्] पूजन के समय बैठने का बिछावन, पीठ, पीढ़ा, चौकी, हाथी का कन्धा, शत्रु और जिगीषु का अवसर प्रतीक्षार्थ अवस्थान, कुश या ऊन का बना हुआ आसन जिस पर पूजा के समय बैठा जाता है। योगियों के बैठने का ८४ प्रकार, पद्मासन, स्वस्तिकासन आदि। सुरत की रीति।—ी (स्त्री०) छोटा आसन। मुहा०-तले आना दे० (क्रि०) अधीन होना, अनुगत होना।—उखड़ना (क्रि०) जगह से हिल जाना।—डिगना (क्रि०) स्थान से विचलित होना।—डोलना (क्रि०) मन का चञ्चल होना।—मारना (क्रि०) जमकर बैठना।

आसन्दी तद्० (स्त्री०) खटोली, कुरसी।

आसन्न तत्० (गु०) [आ+सद्+क्त] उपस्थित, निकटस्थ, निकटवर्ती, समीपस्थ, पास, शेष, अवसान।—काल तद्० (पु०) अन्तिम काल, मृत्यु का समय।—भूत तद्० (पु०) भूतकाल जो वर्तमान से मिला हुआ हो। [बगल बगल।

आसपास दे० (क्रि० वि०) चारों ओर, इधर उधर,

आसमान दे० (पु०) आकाश, गगन, स्वर्ग।—ी (वि०) ऊपर का आकाशीय, आसमान के रंग का या नीला फीका नील रंग।

आसव तत्० (पु०) [आ+सु+अच्] मद्य, मदिरा, मधु, मद।—वृक्ष तत्० (पु०) ताड़ वृक्ष।

आसरा दे० (पु०) भरोसा, सहारा, आश्रय।

आसा दे० (स्त्री०) देखो आशा।
आसादन तद्० (पु०) [आ+सद्+णिच्+अनट्] प्रापण, लाभकरण, मिलन।
आसादित तद्० (गु०) [आ+सद्+णिच्+क्त] प्राप्त, लब्ध, मिलित, मर्दित।
आसान दे० (पु०) सहज, सरल, सुगम।
आसाम दे० (पु०) भारतवर्ष में उत्तर पूर्व बंगाल का एक भाग, इस प्रान्त का प्राचीन नाम कामरूप है।
आसामी (गु०) आसाम प्रान्त का निवासी (पु०) अभियुक्त, देनदार, काश्तकार।
आसावरी तद्० (स्त्री०) रागिणी विशेष।
आसावसन तद्० नग्न, दिगम्बर, नंगा।
आसिख तद्० (स्त्री०) आशीस, आशीर्वाद।
आसिद्ध तद्० (गु०) [आ+सिध्+क्त] अवरुद्ध, बन्दीभूत, बन्धुआ, बन्दी।
आसिधार तद्० (पु०) [आस्+धृ+घञ्] युवा और युवती का एक स्थान में अविकृत चित्त से अवस्थान रूप व्रत।
आसीन तद्० (गु०) [आस+ईन] उपविष्ट, कृतासन, बैठा हुआ, आसन जमाये हुए।
आसीस (पु०) उसीस, तकिया।
आसुर तद्० (पु०) विवाह विशेष, असुर सम्बन्धी।
आसुरी तद्० (स्त्री०) असुर सम्बन्धिनी।—चिकित्सा (स्त्री०) शस्त्रचिकित्सा।
आसेचनक तद्० (गु०) [आ+सिच्+अनट्+क] प्रियदर्शन, जिसको देखने से तृप्ति नहीं होती।
आसोज दे० (पु०) क्वार का मास, आश्विन मास।
आसौ प्र० (पु०) इस वर्ष।
आस्कन्दित तद्० (गु०) [आ+स्कन्द्+क्त] घोड़ों की गति विशेष, घोड़ों की पाँचवीं गति तिरस्कृत।
आस्कत दे० (स्त्री०) आलस्य, ढीलापन, शिथिलता।—ी (गु०) आलसी, ढीला, ठढा, सुस्त।
आस्तर तद्० (पु०) [आ+स्तृ+अनट्] हाथी की झूल, उत्तम, आसन, शय्या।
आस्तिक तद्० (वि०) वेद, ईश्वर और परलोक आदि पर विश्वास करने वाला, ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाला, ईश्वरवादी।
आस्तीक तद्० (पु०) [अस्ति+कप्] मुनि विशेष, जरत्कारु मुनि का पुत्र, इनकी माता का जरत्कारी नाम था, इनकी माता सर्पराज वासुकी की बहिन थी, महर्षि आस्तीक ने पितृकुल और मातृकुल का त्रास दूर किया था, पाण्डववंशीय राजा जनमेजय के सर्पसत्र नामक यज्ञ में महात्मा आस्तीक ने अपने भाई तथा मातुल प्रभृति को भस्म होने से बचाया था।
आस्तीन (स्त्री०) बंग, कुर्ता या कोट की बाँह।
आस्था तद्० (स्त्री०) श्रद्धा, सभा, आदर।
आस्थान तद्० (पु०) [आ+स्था+अनट्] सभा, समाज, आश्रम, बैठने की जगह।
आस्पद तद्० (पु०) पद, स्थान, यत्न, वंश।
आस्फालन तद्० (पु०) [आ+स्फाल+अनट्] गर्व घमंड, अहङ्कार।
आस्फालित तद्० (गु०) [आ+स्फाल्+क्त] ताडित गर्वित, कम्पित।
आस्फोटन तद्० (पु०) [आ+स्फुट्+अनट्] प्रफुल्ल होना विकाश, प्रकाश, ताल ठोकना।
आस्माकीन तद्० (गु०) [अस्मक+ईन] हमारे पक्ष का हमारी तरफ का।
आस्य तद्० (पु०) [अस+ण्यत्] मुख, मुखमण्डल, चेहरा, आनन।—देश तद्० (पु०) मुख का स्थान।
आस्वाद तद्० (पु०) [आ+स्वद्+घञ्] रसानुभव स्वाद ग्रहण, रुचि, चस्का, रस, ज़ायका।
आस्वादन तद्० (पु०) [आ+स्वद्+अनट्] रसानुभव, स्वाद ग्रहण, स्वाद चखना।
आस्वादक तद्० (पु०) [आ+स्वद+अक्] स्वाद ग्रहण कर्त्ता, स्वाद लेने वाला, ज़ायका लेने वाला।
आस्वादु तद्० (गु०) सुरस, मिष्ट, स्वादिष्ट, स्वादी, सुस्वादु।
आह (अव्य०) शोक, हानि, कष्ट, पीड़ा आदि सूचक अव्यय, कहारना (पु०) बल, साहस। [होता है।
आहट दे० (स्त्री०) आने का शब्द जो चलने में
आहत (स्त्री०) ज़ख़्मी, घायल, पुराना, कम्पित।
आहर-जाहर दे० (स्त्री०) आना जाना।
आहरण तद्० (पु०) [आ+हृ+अनट्] छीनना, लूटना, खसोटना।

आहर्त्तव्य (वि०) ग्रहणीय ले जाने लायक।

आहव तत्० (पु०) [आ+हु+अप्] रण, युद्ध, यज्ञ, याग।

आहवनीय तत्० (पु०) [आ+हु+अनीय] अग्नि विशेष, कर्मकाण्ड के तीन अग्नियों में से एक।

आहर्त्तव्य तत्० (गु०) [आ+हृ+तव्य] ग्रहण करने के योग्य, ले जाने के योग्य, संगृहीतव्य।

आहर्त्ता तत्० (गु०) [आ+हृ+तृ] आनेता, आनयन या उपार्जन कर्त्ता, ले आने वाला।

आहा तत् (अ०) खेद या आक्षेप बोधक शब्द।

आहार तत्० (पु०) [आ+हृ+घञ्] अशन, भोजन, भक्षण।—क तत्० (पु०) आहरणकारी, संग्राहक।—विहार रहन सहन, खाना पीना, शारीरिक परिचर्या।

आहार्य तत्० (गु०) [आ+हृ+ण्यत्] गृहीत, पकड़ा हुआ, भोजन योग्य, बनावटी, कल्पित। (पु०) नेपथ्य, भूषण आदि के द्वारा निर्मित, नाटकों में व्यवहृत विशेष अङ्ग संस्कार।—शोभा तत्० (स्त्री०) कृत्रिम शोभा, चित्र अथवा भूषण आदि के द्वारा बनायी शोभा।

आहाव तत्० (पु०) [आ+हृ+घञ्] युद्ध अवकाश अथवा युद्ध आह्वान, आमन्त्रण।

आहि या आही तद्० (क्रि०) है।

आहित तत्० (गु०) [आ+धा+क्त] न्यस्त, अर्पित, स्थापित, रखा हुआ।—ाग्नि (पु०) [आहित+अग्नि] साग्निक, अग्निहोत्री।

आहितुण्डिक तत्० (पु०) [अहि+तुण्ड+ठिक्] व्यालग्राही, साँप पकड़ने वाला, कालबेलिया।

आहिस्ता दे० (क्रि० वि०) धीरे धीरे।

आहुक तत्० (पु०) राजा विशेष, प्राचीन समय में मृत्तिकावती नगरी के राजा भोज नाम से प्रसिद्ध थे, उसी भोजवंश में धर्मनिष्ठ नामक एक राजा उत्पन्न हुए, उनको युग्म सन्तति हुई पुत्र का नाम आहुक रखा गया, इनकी स्त्री का नाम काश्या था, इसी के गर्भ से महाराजा आहुक को देवक और उग्रसेन नामक दो पुत्र हुए थे, देवक श्रीकृष्ण चन्द्र के मातामह थे और उग्रसेन कंस का पिता।

आहुत तत्० (पु०) अतिथिसत्कार, भूतयज्ञ, बलि-वैश्य देव।

आहुति तत्० (स्त्री०) [आ+हु+क्ति] आवाहन, होम की वस्तु, देवता के उद्देश से अग्नि में हवि देना, देवयज्ञ, होम।

आहूत तत्० (गु०) [आ+हू+क्त] निमन्त्रित, आमन्त्रित, कृताह्वान, न्योता हुआ, बुलाया हुआ।

आहृत तत्० (गु०) [आ+हृ+क्त] अर्जित, आनीत, लाया हुआ।

आहे (क्रि०) है।

आहो तत्० (अ०) विकल्प, प्रश्न, सन्देह, विचार।

आहो पुरुषिका तत्० (स्त्री०) अहमिका, आत्म श्लाघा, आत्मगर्विता।

आहोस्विद् तत्० (अ०) विकल्प प्रश्न, जिज्ञासा।

आह्निक तत्० (गु०) दैनिक, दिन साध्य, दिन सम्बन्धी, दिवाकृत्य, (पु०) भोजन प्रकांड, समूह-ग्रन्थ, भाग, नित्यकर्म, इष्टदेवता की नित्य आराधना।

आह्ला तत्० (पु०) अजाशृंग।

आह्लाद तत्० (पु०) [आ+ह्लाद+घञ्] आनन्द, हर्ष, तुष्टि।—जनक (गु०) हर्षजनक, आनन्दवर्द्धक, तुष्टिकर।

आह्लादित तत्० (गु०) [आ+ह्लद+णिच्+क्त] आनन्दित, हर्ष युक्त, प्रसन्न।

आह्वय तत्० (पु०) [आ+ह्वे+अच्] नाम, संज्ञा।

आह्वान तत्० (पु०) [आ+ह्वे+ल्युट्] सम्बोधन, आवाहन, निमन्त्रण, बुलावा।

इ

इ, स्वर का तीसरा वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान तालु और प्रयत्न विवृत है।

इ तद्० (अ०) भेद, क्रोधित, अपाकरण, अनुकम्पा, खेद, कोप, सन्ताप, दुःख, भावना। (पु०) काम-देव, गणेश।

इक तद्० (गु०) एक, एक का दूसरा रूप।—अङ्ग तद्० (पु०) एक ओर का शरीर आधा अङ्ग, एक शरीर, एक अङ्ग, अर्द्धाङ्ग, शरीर का अर्ध भाग, एक ओर का, एक तरफ़ का, एक पक्ष।—आक (क्रि० वि०) निश्चय, स्थिर।—इस संख्या विशेष, २१ —छतराज तद् (पु०) एक छत्र राजा, चक्रवर्ती राज्य, समस्त संसार का राज्य, प्रतिद्वन्द्वी रहित राज्य।—टक तद्० (पु०) एक ताक, एकटकी, निस्पन्द नेत्र से देखना।—ट्टा तद्० (पु०) एक-ठौरा, एकत्र, जमात।—ठौर रा तद्० (पु०) एकट्ठा, समूह।—तरा (पु०) एक दिन का नागा करके आने वाला ज्वर।—ताई दे० (स्त्री०) अभेद एकता।—तारा दे० (पु०) एक प्रकार का सितारनुमा बाजा।—राम दे० (पु०) इनाम, पुरस्कार।—रार दे० (पु०) प्रतिज्ञा, ठहराव।—सठ दे० (पु०) संख्या विशेष, ६१। —सर दे० (पु०) सदृश, बराबर।—लौता तद्० (गु०) एक ही, केवल, एक होने से अधिक प्रीति पात्र।—सार (गु०) बराबर, सरीखा, समान, सदृश।—सङ्ग (गु०) एक साथ —हरा (गु०) एक पर्त का। [प्रनव का फिर पचा नै जने।

इकौज (स्त्री०) काकवन्ध्या, वह स्त्री जो एक बार

इकौसी (गु०) अकेला वास, एकान्त वास।

इक्का तद्० (गु०) एकाकी, अकेला, अद्वितीय, अनूठा, अनुपम, उत्तम, (पु०) एक घोड़ा या बैल की गाड़ी, इलाहाबादी इक्का, पटनाहा इक्का।

इक्कादुक्का दे० (वि०) अकेला दुकेला, एक या दो।

इक्की दे० (स्त्री०) [एक+ई] ताश का एक बूटी वाला पत्ता, एक बैल की गाड़ी।

इक्षु तद्० (पु०) [इष्+सु] ऊख, ईख, केतारी, गन्ना, गाँडा।—काण्ड तद्० (पु०) इक्षुक, काँश मूँज, रामशर।—प्रमेह (पु०) मूत्र सम्बन्धी रोग विशेष।—मती (स्त्री०) कुरुक्षेत्र के पास बहने वाली एक नदी।—रस तद्० (पु०) ईख का रस, राब।—रसोद तद्० (पु०) इक्षु रस का समुद्र।—सार तद्० (पु०) गुड़, खाँड़।

इक्ष्वाकु तद्० (पु०) वैवस्वत मनु का पुत्र, (१) सूर्य वंश का पहला राजा, इन्होंने सर्वप्रथम अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया, यह रामचन्द्र के पूर्व पुरुष थे, इनके पुत्र का नाम कुक्षि था। (२) काशी का राजा, इसके पिता का नाम सुनन्द था, यह इक्षु दण्ड फोड़ कर उत्पन्न हुआ था इसी कारण इक्ष्वाकु इसका नाम पड़ा था।

इक्ष्वालिका तद्० (स्त्री०) नरकट, नरकुल, सरपत, मूँज, काँश।

इङ्ग (पु०) संकेत, इशारा।

इङ्गला (स्त्री०) शरीर की एक नाड़ी का नाम इसका दूसरा नाम ईड़ा है। यह शरीर के वाम भाग में होती है।

इङ्गलैण्डीय तद्० (गु०) इङ्गलैण्ड देश सम्बन्धी।

इङ्गित तद्० (पु०) [इङ्ग+क्त] अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा, संकेत, इशारा, इङ्गित, भाव, चेष्टा।

इङ्गुदी तद्० (स्त्री०) [इङ्गुद+ई] वृक्षविशेष, इसके फल तैलमय होते हैं इसका दूसरा नाम व्रणवि-रोपण भी है, क्योंकि इसके तेल से व्रण बहुत शीघ्र अच्छे होते हैं। हिंगोट का पेड़, मालकँगनी, ज्योतिष्मती।

इंगुर दे० (पु०) सिंदूर का एक भेद।

इङ्गन तद्० (पु०) आँख, नेत्र, नयन, दृष्टि, देखना।

इच्छा तद्० (स्त्री०) वान्छा, मनोरथ, आकाङ्क्षा, स्पृहा, अभिलाष।—न्वित तद्० (गु०) इच्छुक, सस्पृह, अभिलाषी, स्वेच्छक, वासना विशिष्ट।—वती (स्त्री०) इच्छा युक्ता स्त्री, अभिलाषिणी, रमणी।—चारी (पु०) मनमौजी, अपने मन का, मन के अनुसार घूमने या करने वाला, स्वतन्त्र। —भेदी (स्त्री०) विरेचनवटी।—भोजन (पु०) मनमाना भोजन।

इच्छित तत्० (गु०) ईप्सित, वाञ्छित, मन के अनुसार, चाहा हुआ।
इच्छुक तत्० (गु०) इच्छान्वित, अभिलाषी, आकांक्षी, चाहने वाला।
इजराय दे० (पु०) उपयोग करना, जारी करना।
इजलास (पु०) अदालत, न्यायालय, कोर्ट।
इजहार (पु०) गवाही, बयान।
इजाजत (स्त्री०) सम्मति, हुक्म, आज्ञा।
इजाफा (पु०) वृद्धि।
इजारदार (गु०) ठेकेदार, इजारे पर कोई काम लेने वाला।
इजारा (पु०) ठीका, किराया, अधिकार।
इज्जत (स्त्री०) मान, सम्मान।
इज्य तत्० (गु०) [यज्+य] बृहस्पति, देवाचार्य, गुरु, शिक्षक, पूज्य।
इज्या तत्० (स्त्री०) [यज्+य+आ] दान, याग, यज्ञ, पूजा, अर्चा, अष्टविध धर्म का प्रथम धर्म। —शील तत्० (पु०) बार बार यज्ञ करने वाला, याजक, यज्ञकारी।
इठलाना दे० (क्रि०) इतराना, मटकाना, चुकाने के लिये जान बूझ कर अनजान बनना।
इड़ा तत्० (स्त्री०) शरीर के दक्षिण भागस्थित नाड़ी, सरस्वती, गौ, वचन, पृथ्वी, स्वर्ग, आशु गमन, वैवस्वत मनु की पुत्री, चन्द्रमा के पुत्र बुध के साथ इसका विवाह हुआ था, इसी के गर्भ से प्रसिद्ध राजा पुरूरवा की उत्पत्ति हुई थी।
इडुरी दे० (स्त्री०) ऐंडुरी, गेंडरी, बीड़ा। [ठौर।
इत तत्० (अ०) इधर, इस ओर, इस तरफ़, यहाँ, इस
इतः तत्० (अ०) नियम, पञ्चमी विभक्ति का अर्थ, विभाग, यहाँ से, इस हेतु।—पर (गु०) इसके बाद, इसके अनन्तर, इस पर।
इतना तत्० (अ०) अवधि का बोधक, इयत्तावाची, परिच्छेदक, एतना।
इतमीनान (पु०) विश्वास, भरोसा।
इतर तत्० (अ०) अन्य दूसरा, भिन्न, नीच, सामान्य। —विशेष (पु०) अन्य से भिन्न, विभिन्नता, प्रभेद।—लोक (पु०) छोटी जाति, दूसरा लोक।
इतरेतर (पु०) अन्यान्य, परस्पर, आपस में।
इतराजी (दे०) विरोध, बिगाड़, नाराज़ी।
इतरेतर तत्० (गु०) [इतर+इतर] अन्यान्य, परस्पर।
इतरेद्युः तत्० (अ०) दूसरे दिन, अन्य दिन।
इतराई दे० (स्त्री०) मचलाई मचल पड़ी। (क्रि०) मचल कर। [मचलाना।
इतराना दे० (क्रि०) अभिमत करना, मदान्ध होना,
इतराया दे० (क्रि०) चोंचला दिखाया, ठसक दिखायी, मचला।
इतवार दे० (पु०) रविवार, आदित्य वार।
इतस्ततः तत्० (अ०) [इतस्+तत+तस्] अत्र तत्र, इधर, उधर, चारो ओर।
इति तत्० (अ०) समाप्ति बोधक अव्यय, समाप्ति, इतना, पूरा, सम्पूर्ण।—कथा (स्त्री०) अर्थ शून्य वाक्य, अनुपयुक्त बात।—कर्त्तव्य (गु०) कर्म का अन्त, उचित कर्त्तव्य।—वृत्त तत्० (पु०) पुरावृत्त, पुरानी कथा या कहानी।
इतिहास तत्० (पु०) [इति+ह+आस्] पूर्व वृत्तान्त, अतीत काल की घटनाओं का विवरण, प्राचीन कथा, पुरावृत्त, उपाख्यान।
इतेक दे० (अ०) इतनाही, एताही, इतना।
इत्ती दे० (अ०) इतना नियम, अवधि।
इत्तफ़ाक़ तत्० (पु०) मेल, संयोग, अवसर।
इत्तफ़ाक़न दे० (क्रि०) संयोग से आकस्मिक।
इत्तफ़ाक़िया (क्रि० वि०) आकस्मिक।
इत्तला (स्त्री०) सूचना।
इत्ता दे० (वि०) इतना।
इत्ती दे० (वि०) इतना
इत्थम् तत्० (अ०) इस प्रकार, इस तरह, ऐसा, यों।
इत्यादि (अ०) प्रभृति, आदि, इससे लेकर और सब [पात्र।
इत्र (पु०) इतर, अतर।—दान दे० (पु०) इत्र रखने का
इदम् सर्व० (गु०) पुरोवर्ती, सन्मुखस्थ वस्तु, यही।
इदमित्थम् तत्० (अ०) यह, इतना, इस प्रकार, निश्चय। [अधुना।
इदानीं तत्० (अ०) इस काल में, इस समय में, सम्प्रति,
इदानीन्तन तत्० (गु०) आधुनिक, सम्प्रति आज, इस समय का, नवीन।

इधर दे० (अ०) यहाँ, इस ठौर, इस स्थान, इस ओर।
इध्म तद्० (पु०) आग सुलगाने की लकड़ी, ईंधन।
इन तद्० (पु०) सूर्य, समर्थ, राजा, पति, ईश्वर, प्रभु, हस्त नक्षत्र, १२ की संख्या।
इनकार (पु०) अस्वीकार।
इनाम (पु०) पुरस्कार।
इनारा या इन्दारा तद्० (पु०) कूप, पक्का कुआँ।
इनेगिने (वि०) कुछ, चुने हुए।
इन्दिरा तद्० (स्त्री०) [इन्दिर+आ] लक्ष्मी, कमला, रमा।—मन्दिर (पु०) नीलोत्पल, नील कमल।—लय (पु०) [इन्दिरा+आलय] पद्म, पङ्कज।—वर (पु०) विष्णु, नारायण।
इन्दीवर तद्० (पु०) [इन्दी+वर+अल्] नीलोत्पल, नील कमल।
इन्दु तद्० (पु०) [इन्द्+उ] शशी, चन्द्र, कर्पूर, एक की संख्या।—कला (स्त्री०) इन्दुलेखा, चन्द्रलेखा, चन्द्रकला।—कान्त (पु०) मणि विशेष, चन्द्रकान्त मणि।—कान्ता तद्० (स्त्री०) रात्रि, निशा, यामिनी।—व्रत (पु०) चान्द्रायण व्रत।—भृत् (पु०) महादेव, शिव।—मती (स्त्री०) चन्द्रयुक्त रात्रि, पौर्णमासी, अयोध्या के राजा अज की स्त्री, इसीके गर्भ से महाराजा दशरथ उत्पन्न हुए थे, यह विदर्भराज की कन्या थी।
इन्दुर तद्० (पु०) उन्दुर, मूस, चूहा, मूषिक।
इन्द्र तद्० (१) वेदोक्त देवता। भारतीय प्राचीन आर्य ऋषिगण जिन देवताओं की आराधना करते थे उनमें एक इन्द्र भी हैं। ऋग्वेद में लिखा है कि इन्द्र की माता ने बहुत वर्षों तक इन्हें अपने गर्भ में धारण कर रखा था, उत्पन्न होने के अनन्तर इन्द्र ने अपने पिता के पैर पकड़ के मार डाला। (२) पौराणिक देवता, अन्यान्य देवता इनके अधीन हैं, अतएव यह देवराज कहे जाते हैं। पुलोमा दानव की कन्या शची से इनका विवाह हुआ था, इनके पुत्र का नाम जयन्त था।—कील तद्० (पु०) मन्दर पर्वत, मन्दराचल।—कुञ्जर तद्० (पु०) इन्द्र का हाथी, ऐरावत हस्ति।—गोप तद्० (पु०) रक्त वर्ण कीट विशेष, खद्योत, जुगनू।—जाल तद्० (पु०) नटविद्या, फरफंद, धोखा, मन्त्र तंत्र योग द्वारा अचंभे की बातें दिखाने का ग्रन्थ। मायाकर्म, छल, कपट, माया।—जालिक तद्० (पु०) मायावी, मायिक, बाजीगर।—जित् तद्० (पु०) लंकेश्वर रावण का पुत्र, मेघनाद।—तुल्य तद्० (पु०) इन्द्र के समान सर्वश्रेष्ठ, अधिपति, सर्वोत्तम।—त्व तद्० (पु०) स्वर्ग का असाधारण धर्म, राजत्व प्रधान्य।—दमन (पु०) योग विशेष। वर्षाऋतु में गङ्गाजल पीपल के पत्तों को छू लेती है तब वह योग होता है।—धनुष तद्० (पु०) शक्रधनु, सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष के आकार का दीख पड़ता है।—नील (पु०) नीलम, नीलमणि।—नीलक तद्० (पु०) पन्ना, मरकत, पन्ना।—प्रस्थ तद्० (पु०) राजा युधिष्ठिर का बनाया हुआ नगर विशेष, हरिप्रस्थ, शक्रप्रस्थ, इत्यादि जिनके नाम हैं। इस समय दिल्ली के नाम से वह प्रसिद्ध है, यद्यपि दिल्ली यमुना के बाएँ किनारे पर स्थित है, तथापि इन्द्रप्रस्थ यमुना के दक्षिण तट पर स्थित था।—यव तद्० (पु०) औषधि विशेष।—वधू तद्० (स्त्री०) भृङ्गकीट, बीरबहूटी विशेष।—वज्रा तद्० (पु०) एक वर्णवृत्त का नाम जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं।
इन्द्राणी तद्० (स्त्री०) [इन्द्र+आनी] शची, इन्द्र की पत्नी, मातृका विशेष।
इन्द्रानुज तद्० (स्त्री०) [इन्द्र+अनुज] विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण। [नारायण, विष्णु।
इन्द्रावरज तद्० (पु०) [इन्द्र+अवर+जन्+ड]
इन्द्रायण तद्० (स्त्री०) औषधि विशेष।
इन्द्रायुध तद्० (पु०) [इन्द्र+आयुध] इन्द्र धनु, शक्र धनु। [आसन ऐरावत हस्ति।
इन्द्रासन तद्० (पु०) [इन्द्र+आसन] इन्द्र का
इन्द्रिय तद्० (पु०) [इन्द्र+इय] इन्द्री, ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, अन्तरेन्द्रिय, नेत्र, श्रोत, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन ये छः, ज्ञानसाधन, वाक् पाणि गुदा और उपस्थ ये पाँच कर्मेन्द्रिय और मन बुद्धि चित्त और अहङ्कार ये अन्तरेन्द्रिय हैं।—गण (पु०) इन्द्रिय समूह, एकादश इन्द्रिय।—गोचर

(गु०) इन्द्रियों का विषय, ज्ञानगम्य, ज्ञानपथवर्ती।—ग्राह्य (गु०) ज्ञानगम्य विषय, शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध आदि।—दोष (पु०) कामादि दोष, कामुकता, लंपटता।—निग्रह (पु०) कामादि इन्द्रिय दमन, चक्षु आदि इन्द्रियों को अपने वश में करना।—विषय (पु०) इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रिय गोचर, नेत्र आदि के पयस्थित। —गोचर (गु०) [इन्द्रिय+अगोचर] इन्द्रियों से अगोचर, जो इन्द्रियों से नहीं जाना जाय। —ार्थ (पु०) इन्द्रिय जन्य ज्ञान का विषय रूप रस गन्ध शब्द स्पर्श।

इन्द्री तद्० (स्त्री०) देखो इन्द्रिय। [लकड़ी।

इन्धन तद्० (पु०) [इन्ध्+अन्द्] ईंधन, जलावन,

इप्सु तद्० (गु०) ईप्सित, इच्छुक, लोभी।

इफरात (स्त्री०) अधिकता।

इबारत (स्त्री०) लेख।

इभ तत्० (पु०) गज, कुंजर, हस्ति, हाथी, समान, सदृश, नाईं, तरह।—पालक (पु०) महावत, हाथीवान। [धनी।

इभ्य तत्० (गु०) [इभ्+य] धनवान, धनशाली,

इमदाद दे० (स्त्री०) मदद, सहायता।

इमन दे० स्वर या मिलन, रागिनी विशेष।—कल्याण रागिनी विशेष।

इमामदस्ता (पु०) लोहे या पीतल का खल।

इमारत (स्त्री०) पक्का मकान, विशाल भवन।

इमि तद्० (अ०) ऐसे, इस प्रकार से, यों, इसतरह से।

इम्तहान (पु०) परीक्षा।

इमरती दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।

इमली दे० (पु०) वृक्ष विशेष, फल विशेष, तिन्तिड़ी, कुचिया, अमली।

इरा तत्० (स्त्री०) वाणी, भाषा, भूमि, जल, सरस्वती, कश्यप पत्नी।—वान् (पु०) [इरा+वत्] समुद्र मेघ, राजा, अर्जुन पुत्र, अर्जुन के औरस तथा ऐरावत की विधवा कन्या के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन पक्षीय आर्यश्टङ्ग नामक राक्षस के द्वारा यह निहत हुआ।

इरादा (पु०) विचार, मंशा, सङ्कल्प।

इर्दगिर्द (गु०) चारों ओर।

इलज़ाम (पु०) अपराध आरोप, अभियोग, कलङ्क दोष।

इलविला तत्० (स्त्री०) कुबेर की माता, विश्रवा मुनि की पत्नी।

इलशा दे० (पु०) हिलसा नामक मत्स्य विशेष।

इला तत्० (स्त्री०) वैवस्वत मनु की कन्या, यह विष्णु के प्रसाद से यद्यपि पुरुष हो गई थी, तथापि कुमार वन में जाने के कारण पुनः स्त्री हो गई, यह बुध से ब्याही गई थी, इसी के गर्भ से पुरूरवा उत्पन्न हुए थे—वर्त्त तत्० (पु०) जम्बुद्वीप के नव वर्षान्तर्गत वर्ष विशेष।

इलाक़ा दे० (पु०) रियासत, संसर्ग।

इलाज दे० (पु०) चिकित्सा, दवा करना।

इलायची दे० (स्त्री०) एलायची, एला।—दाना (पु०) एक प्रकार की मिठाई।

इल्ला दे० (पु०) मस्सा, माँस-वृद्धि।

इल्वल तत्० (पु०) एक दैत्य विशेष का नाम, मछली विशेष।—ा तत्० (पु०) मृगशिरा नक्षत्र के सिर पर रहने वाला ५ ताराओं का झुंड।

इव तत्० (अ०) सदृश, समान, उपमा, सरीखा, जैसे, नाईं, तरह।

इशारा दे० (पु०) सङ्केत, सैन।

इश्तहार दे० (पु०) विज्ञापन, सूचना।

इषु तत्० (पु०) [इष्+उ] बाण, शर, तीर, काण्ड।—धि या धी (पु०) तूण, बाणाधार, तरकस।—मान तत्० (वि०) तीरंदाज़, बाण चलाने वाला।

इषूपल तत्० (पु०) दुर्ग के द्वार पर की तोप जो पत्थर फेंकती है।

इष्ट तत्० (पु०) [इष्+क्त] यज्ञादि कर्म, कर्त्तव्य, यज्ञेश्वर, काम, संस्कार, गृहस्वामी इष्टदेव, अधिकार, वश। (गु०) चाहा हुआ, आशंसित, वाञ्छित, पूज्य, प्रिय।—गन्ध (गु०) सौरभ, सुगन्धित द्रव्य।—देव (पु०) अभीष्ट देवता, उपास्य देवता।—देवता (पु०) उपास्य देवता सब से बड़ा देवता, अपना देवता, अवश्य पूजनीय देवता। [आपत्ति विशेष।

इष्टापत्ति तत्० (स्त्री०) प्रतिवादी की दिखाई हुई

इष्टापूर्त्त तत्० (पु०) यज्ञखातादि कर्म, लोकोपकारार्थ यज्ञ कूप खनन आदि।
इष्टालाप तत्० (पु०) अभिलषित, कथोपकथन।
इष्टि तत्० (स्त्री०) याग, यज्ञ, अभिलाप, इच्छा।
इष्य तत्० (पु०) वसन्त ऋतु।
इष्वास तत्० (पु०) धनुष, कार्मुक, शरासन।
इस तद्० (सर्व०) यह।
इसपात दे० (पु०) एक प्रकार का लोहा।
इसबगोल दे० (पु०) औषधि विशेष।
इसलाम दे० (पु०) मुसलमानी धर्म।
इसाई दे० (वि०) क्रिस्तान, ईसाई।
इसे तद्० (सर्व) इसको। [सदा रहने वाला।
इस्तमरारी दे० (गु०) अपरिवर्तनशील, परम्परानुगत,
इस्तिरी दे० (स्त्री०) धोबी का एक यन्त्र विशेष जिससे धुले हुए कपड़ों की सकुड़न मिटाई जाती है।
इस्तीफा दे० (पु०) त्याग पत्र।
इस्तेमाल दे० (पु०) प्रयोग व्यवहार।
इस्त्रि या इस्त्री दे० (पु०) कपड़ा चिकनाने का यन्त्र, जिससे धोबी कपड़े पर कलप बनाते हैं।
इस्थिर तद्० (गु०) स्थिर, निश्चल, अचञ्चल।
इस्पात दे० (पु०) पक्का लोहा, मेड़ी, परिष्कृत लौह।
इस्पंज दे० (स्त्री०) सामुद्री पदार्थ जो पानी में डालने से फूल जाता और दबाने पर पानी गिरा देता है।
इह तत्० (अ०) यह सब, इस सब ने, इन्होंने। —लोक तत्० (पु०) यहाँ का लोक। —काल तत्० (पु०) यह काल; यह समय।
इहवाँ यहीं, इस स्थान।
इहाँ तद्० यहाँ, इस स्थान पर, इस जगह।
इहि तत्० (क्रि० वि०) यहाँ, इसमें, इस जगह।

ई

ई दीर्घ ईकार, चौथा स्वर वर्ण-ई, उच्चारण स्थान तालु।
ई तत्० (अ०) विषाद, अनुकम्पा, क्रोध, दुःख, भावना, प्रत्यक्ष, सन्निधि, (पु०) कन्दर्प, कामदेव, (स्त्री०) लक्ष्मी।
ईकार तत्० (पु०) अक्षर विशेष, ई-वर्ण।
ईक्ष तद्० (स्त्री०) दर्शन, ईक्षण देखना।
ईक्षक तत्० (पु०) [ईक्ष+अक्] अवलोकन कर्त्ता, दर्शक, दिखैया। [सर्प, चक्षुश्रवा।
ईक्षण तत्० (पु०) दृष्टि, दर्शन, चक्षु। —श्रवा (पु०)
ईक्षित तत्० (गु०) [ईक्ष्+क्त] दृष्ट, अवलोकित, देखा हुआ।
ईंगुर दे० (पु०) सिन्दूर का भेद।
ईख तद्० (पु०) ऊख, गन्ना।
ईंचना (क्रि०) खींचना।
ईंट या ईंटा (पु०) ईंटा, इष्टका।
ईठ तत्० (गु०) इष्ट, वाञ्छित, चाहा हुआ, दोस्त।
ईड़ा तत्० (स्त्री०) स्तुति, स्तव, प्रशंसा, नाड़ी विशेष, गुण कथन, प्रतिष्ठा। [खेलने का दंड।
ईठी (स्त्री०) भाला, बरछा। —दाड़ (पु०) चौगान
ईडा तत्० (स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा। [कृतस्तव।
ईडित तत्० (गु०) [ईड+क्त] स्तुत, प्रशंसित,
ईढ़ (स्त्री०) हठ, ज़िद।
ईद दे० (स्त्री०) मुसलमानों का एक तेवहार।
ईंदुरी दे० (स्त्री०) इंडुरी, सिर पर भार रखने की जो सन या कपड़े की बनती है।
ईंढूवा तद्० (पु०) उढकना, टेकना।
ईति तत्० (स्त्री०) क्रीड़ा, प्रवास, उपद्रव, आपदा, छः प्रकार की ईति—(अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी पड़ना, मूसों से खेती का नाश, पक्षियों से खेती का नाश, राज विद्रोह से क्लेश)।
ईदृक् तत्० (गु०) ईदृश, एतत् सदृश, इसके समान, इस प्रकार।
ईदृक्ष तत्० (गु०) एतत् सदृश, इस प्रकार।
ईदृश तत्० (गु०) ईदृक्, ऐसा, यह, इस रीति।
ईंधन दे० (पु०) बालने की लकड़ी या कंडा।
ईप्सा तत्० (स्त्री०) चाह, वाञ्छा, अभिलाषा।
ईप्सित तत्० (गु०) वाञ्छित, अभिलषित, अभीष्ट, चाहा हुआ। [कर देना।
ईफाय डिगरी दे० (स्त्री०) डिगरी का रुपया अदा

ईमान दे० (पु०) विश्वास, आस्तिकता।—दार (वि०) विश्वास पात्र। [वाली।

ईरान दे० (पु०) पारस देश।—ी (पु०) पारस देश

ईप्सु तत्० (वि०) चाहने वाला।

ईर्षा तत्० (स्त्री०) असमा, परश्रीकातरता, द्वेष, डाह, गर्जन, कुढ़न, हसद हिंसा, डाह।—लु ईर्षा विशिष्ट, परश्रीकातर, द्वेषयुक्त असहिष्णु।

ईर्षी तत्० (पु०) द्रोही, द्वेषी, दूसरे की श्रीवृद्धि से जलने वाला।

ईर्ष्या तत्० (स्त्री०) हिंसा पराश्रीकातर्य्य, द्वेष, द्रोह।—न्वित (गु०) हिंसक ईर्ष्याकारी।—वान् (गु०) ईर्ष्याकारी ईर्ष्यान्वित, हिंसक—लु—(गु०) हिंसा विशिष्ट असान्तियुक्त।

ईश तत्० (पु०) प्रभु स्वामी, राजा, ईश्वर, ऐश्वर्यशाली, महादेव ईशान कोण के अधिपति।—सखा (पु०) कुबेर, धनपति।

ईशा तत्० (पु०) ऐश्वर्य। (स्त्री०) दुर्गा।

ईशान तत्० (पु०) महादेव, रुद्र विशेष, शिव की अष्ट विध मूर्तियों के अन्तर्गत सूर्य मूर्ति, शमी वृक्ष, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा।—कोण (पु०) उत्तर-पूर्व के मध्य का कोन।—ी (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, ईश्वरी, शमी वृक्ष।

ईशिता तत्० (गु०) प्रधानता महत्व। (स्त्री०) अष्ट प्रकार की सिद्धियों में से वह सिद्धि जिसे प्राप्त कर साधक सब पर शासन करता है।

ईशित्व तत्० (पु०) प्रभुत्व, आधिपत्य।

ईश्वर तत्० (पु०) परमेश्वर, प्रभु अधिपति, समर्थ, सृष्टिकर्ता, धनी मालिक, स्वामी।—कृत तत्० (पु०) ईश्वर रचित, ईश्वर निर्मित।—ता तत्० (स्त्री०) प्रभुता।—निषेध तत्० (पु०) नास्तिकता।—निष्ठ तत्० (गु०) ईश्वर भक्त ईश्वर परायण, आस्तिक।—साधन तत्० (पु०) मुक्ति साधन, योग साधन।—ा (स्त्री०) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि शक्ति।—ाराधन तत्० (पु०) परमेश्वर की उपासना, ईश्वर सेवा, परमकर्त्ता का भजन।—ी तत्०(स्त्री०) परदेवता, दुर्गा, भगवती माया शक्ति, महारानी।—ोपासक तत्० (पु०) परमेश्वर की आराधना करने वाला, आस्तिक।—ोपासना तत्० (स्त्री०) परमेश्वर का भजन, ईश्वर की आराधना।

ईषण तत्० (पु०) देखना, दृष्टि, नेत्र, ईक्षण।

ईषणा तत्० (स्त्री०) लालसा, वासना चाह इच्छा।

ईषत् तत्० (अ०) अल्प, किञ्चित्, लेश, थोड़ा।—कट तत्० (पु०) अत्यल्प, किञ्चित्, लेश।—पाण्डु तत्० (पु०) धूसर वर्ण।—हास तत्० (पुं०) किञ्चित् हास्य, अत्यल्प मुख विकास, स्मित, मुसकान।—दृक (गु०) थोड़ा देखा।—रक्त (पु०) अल्प, लोहितवर्ण, अव्यक्त राग।

ईषन् तत्० (वि०) देखना।

ईस तद्० (पु०) ईश।

ईसबगोल दे० (पु०) इसबगोल, एक दवाई।

ईसवी दे० (स्त्री०) ईसा सम्बन्धी, अंगरेज़ी वर्ष।

ईसा दे० (पु०) ईसाई धर्म का प्रचारक।—ई (पु०) क्रिस्तान मज़हब का मानने वाला।

ईहर तद्० (पु०) कवि (डिंगल भाषा में)।

ईहा तत्० (स्त्री०) यत्न, चेष्टा उपाय, इच्छा, वाञ्छा।

ईहामृग तत्० (पु०) कुत्ता के समान छोटा धूसर वर्ण का जन्तु, मृग, वृकाख्यमृग, रूपक विशेष, अष्टविध रूपकों के अन्तर्गत सातवाँ रूपक, कुसुमशेखर विजय नामक ईहामृग संस्कृत में है।

ईहामृक तत्० (पु०) लकड़बग्घा।

ईहित तत्० (वि०) इच्छित, वाञ्छित।

उ

उ उकार, पञ्चम स्वरवर्ण है, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

उ तत् (पु०) शिव, ब्रह्मा, प्रजापति (अ०) सम्बोधन, रोषोक्ति, अनुकम्पा, नियोग, पादपूरण, प्रश्न, अङ्गीकार।

उँ दे० धीमेस्वर से उत्तर देना।

उअना (क्रि०) उदय होना, उगना।
उअहि दे० (क्रि०) उगते हैं, उदय होते हैं, निकलते हैं।
उआ दे० (गु०) उदित होना, उदय हुआ। यथा—
"चाँद उआ भुँई दिया प्रकासु" (पद्मावत)।
उऋण (वि०) ऋण से मुक्त। [प्रकाशित हुए।
उए दे० (क्रि०) उगे, निकले, उदय हुए, देख पड़े,
उकटना दे० (क्रि०) गड़ी हुई वस्तु निकालना, उखा-
ड़ना, भेद करना, गुणवान को प्रकाशित करना,
बार बार कहना।
उकठा दे० (वि०) सूखा, सूख कर ऐंठ हुआ।
उकठि दे० उठा कर, सहारा लेकर, उदघाटन, काठ,
गठीले या टेढ़े मेढ़े काठ करके, बिगड़ी हुई लकड़ी
की, कुञ्चित। [बैठना।
उकड़ू दे० (पु०) पाँव भर बैठना, घुटने मोड़कर
उकताना दे० (क्रि०) खिझाना, उबियाना, चिढ़ाना।
उकतारना दे० (क्रि०) सम्भालना, पक्ष करना।
उकताऊ दे० (पु०) उकसाऊ, प्रवर्तक।
उकलना दे० (क्रि०) उबलना, खलबलाना, ऊपर
उठना।
उकसना दे० (क्रि०) उठना, बढ़ना।
उकसैंहि (क्रि०) ऊपर उठते या निकलते हैं, उचकते हैं।
उकसाना दे० (क्रि०) उभड़ाना, उठाना, चढ़ाना,
आगे बढ़ाना।
उकसावा दे० (पु०) उत्साह, बढ़ावा।
उकालना दे० (क्रि०) उबालना।
उकेलना दे० (क्रि०) उधेरना खोलना।
उक्त तत्० (गु०) [वच्+क्त] कथित, भाषित, उदित,
निगदित, उल्लेखित, आख्यात, अभिहित।
उक्ति तत्० (स्त्री०) कथन, वचन, उपज, अनोखा
वाक्य। [तितर होना।
उखड़ना दे० (क्रि०) उजड़ना, नाश होना, तितर
उखड़ा दे० (स्त्री०) उजड़ा, नष्ट हुआ।
उखड़ाना दे० (क्रि०) उखड़वाना, उजड़वाना।
उखम (पु०) गर्मी, ताप, उष्ण।
उखमज दे० (पु०) ऊष्मजजीव छुद्रकीट।
उखर दे० (पु०) ईख बो जाने के बाद हल पूजने
का विधान।
उखरना दे० (क्रि०) ओकर लाना, थूकना।
उखल, उखली तत्० (पु० स्त्री०) उखली, ओखली,
जिसमें धान आदि कुटते हैं।
उखा दे० (स्त्री०) बटलोई, डेगची।
उखारी दे० (स्त्री०) ईख का खेत।
उगत तद्० (पु०) उपजना, उद्भव, जन्म, उत्पत्ति।
उगना तद्० (क्रि०) उत्पन्न होना, बढ़ना। [नाश होना।
उगते ही जलना (क्रि०) प्रारम्भ समय में ही कार्य का
उगलना तद्० (क्रि०) वमन करना थूकना, उलटी
करना, कै करना।
उंगली (स्त्री०) अँगुरी।
उगाल तद्० (पु०) पाहर, सीठी, थूक। [वसूल करना।
उगाहना तद्० (क्रि०) इकट्ठा करना, एकत्र करना,
उगाही दे० (स्त्री०) वसूलयाबी, (क्रि०) उगिलना
उगलना।
उगिलवाना या उगिलाना (क्रि०) कै कराना, उल्टी
करवाना।
उग्र तत्० (गु०) उत्कट, रौद्र, तीक्ष्ण, क्रोधी, कठिन,
(पु०) विष्णु, सूर्य, वत्सनाभ नामक विष, महादेव,
शिव की वायु मूर्ति, क्षत्रिय के औरस तथा शूद्रा
स्त्री के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष।—गन्ध (पु०)
उत्कट गन्धयुक्त, तीक्ष्ण गन्ध (पु०) लहसन, काय-
फल हींग।—1 (स्त्री०) आजवायन, अजमोदा,
वच, नकछिकनी।—चण्डा (स्त्री०) भगवती की
मूर्ति विशेष, इनके अठारह भुजा हैं। आश्विन
कृष्णा नवमी के कोटि योगिनी परिवेष्टित अष्टादश-
भुजा समन्वित इसी उग्रचण्डी की पूजा होती है।
—ता (स्त्री०) कठोरता।—तारा (स्त्री०) भग-
वती की मूर्ति विशेष, इनका दूसरा नाम मातङ्गिनी
है।—स्वभाव (गु०) कठोर चित्त, कठिन हृदय।
—सेन (पु०) यदुवंशी राजा, आहुक का पुत्र
और कंस का पिता मथुरा का राजा।
उघटना (क्रि०) किसी समय के उपकार का ताना के
रूप में कहना।
उघटवाना (क्रि०) एहसान जताना, ताना देना, एह-
सान को अन्य द्वारा कहलाना।
उघटा-पैंची दे० (स्त्री०) एहसान, उलाहना देना।
उघड़ना दे० (क्रि०) नङ्गा होना, व्यक्त होना, प्रका-
शित होना।

उघरहिं दे० (क्रि०) खुलते हैं, खुल जाते हैं, स्पष्ट हो जाते हैं, नगे हो जाते हैं। [हुए।
उघरे दे० (क्रि०) खुले, प्रकट हुए, प्रकाशित हुए, खुले
उघाड़ना दे० (क्रि०) नङ्गा करना, खोलना, व्यक्त करना।
उघाड़ू दे० (पु०) उघाड़नेहारा, प्रकाशक।
उघारी दे० (गु०) खुली हुई, नगी।
उच तद्० (अ०) उच्च, उन्नत, बड़ा।
उचनीच तद्० उच्चनीच, असमान, निम्नोन्नत, उच्चावच, ऊँचा नीचा।
उचकना दे० (क्रि०) कूद के उठना, उछलना, कूदना।
उचक्का दे० (पु०) ठग, गठकटा, चोर, छली, पाखण्डी।
उचटना दे० (क्रि०) उखड़ना, बिछुड़ना, बिलगना, उदास होना, मन नहीं लगना, नींद का टूटना।
उचटाना (क्रि०) विरह करना, बिलेरना, नोंचना, छुड़ाना, पृथक् करना, अलगाना।
उचरङ्ग तद्० (पु०) पतङ्ग, भुनगा।
उचरना तद्० (क्रि०) उच्चार करना, कहना, धीरे धीरे चलाना, शकुन विशेष, काक की गति विशेष से भावी आगमन का अनुमान—
"उचरहू काक पिया मोर आवत"।
उचलना तद्० (क्रि०) बिलगाना, अलग करना।
उचा दे० (क्रि० वि०) उठाय, ऊँचा कर, उभार उभार कर।
उचाट (पु०) विरक्ति, उदासीनता।
उचाटना तद् (क्रि०) पृथक् करना, अलग करना, उचाट होना, उदास होना, जी नहीं लगना, उचाटी लगना। [हुआ, उचटा, उखड़ा, हटा।
उचाटू तद्० (गु०) उखड़ा हुआ, व्यग्रचित, उचटा
उचाड़ना दे० (क्रि०) लगी हुई चीज़ को नोचना या अलग करना। [बराबर लेते रहना।
उचापत दे० (पु०) दूकानदार के यहाँ से चीज़ उधार
उचित तद्० (गु०) [उच+क्त] न्यस्त, विदित परिचित, योग्य पदार्थ, न्याय, लायक, मुनासिब, वाजिब।
उचेलना दे० (क्रि०) उधेरना, अलग करना।
उचोट दे० (पु०) ठोकर, ठेस, चोट।
उच्च तद्० (गु०) ऊर्ध्व, उन्नत, प्रांशु, ऊँचा, बड़ा, तुङ्ग, उत्तुङ्ग, उच्छ्रित।—तरु (पु०) नारिकेल वृक्ष, (गु०) ऊँचा वृक्ष।—ता (स्त्री०) ऊर्ध्व परिमाण, उच्च।—नीच (गु०) निम्नोन्नत, असमान।—भाषी (गु०) बहुवक्ता, उच्चवक्ता।—मना (गु०) सदन्तःकरण, महाशय।—शिक्षा, (स्त्री०) अधिक शिक्षा, उन्नत शिक्षा।—स्वर (पु०) बड़ा शब्द, दूर व्यापी स्वर।
उच्चाट तद्० (पु०) उचाटी, उदास, अरुचि। (पु०) एक तान्त्रिक प्रयोग, जिसके द्वारा मन उचट जाय।
उच्चार तद्० (पु०) [उत्+चर्+घञ्] विष्ठा मल मूत्र, पुरीष, (बहुत लोग उच्चारण के अर्थ में उच्चार शब्द का प्रयोग करते हैं, परन्तु यह प्रयोग अत्यन्त अशुद्ध है)।
उच्चारण तत्० (पु०) [उत्+चर+णि+अनट्] कथन, कहना, निकलना, उल्लेख, शब्द प्रयोग।
उच्चारणीय तत्० (गु०) [उत्+चर+णिच्+अनीय] उच्चारितव्य, कथनीय, उच्चारण करने के योग्य।
उच्चारित तद्० (गु०) [उत्+चर्+णिच्+क्त] कथित, उक्त, अभिहित, कहा हुआ। [लायक।
उच्चार्य तत्० (वि०) उच्चारण के योग्य, कहने
उच्चैः तत्० (अ०) ऊर्ध्व, ऊपर, ऊँचा, बड़ा—शब्द (पु०) उच्चस्वर, चीत्कार, चिचियाना चिल्लाना।—श्रवा (पु०) इन्द्र का घोड़ा, देवराज इन्द्र को यह समुद्रमन्थन के समय मिला है।
उच्छन्न तद्० (वि०) दबा हुआ, लुप्त। [उच्छरी है।
उच्छरना तद्० (क्रि०) उछरना, निकलना। जैसे पित्ती
उच्छलना दे० (क्रि०) उछलना उछाल मारना।
उच्छव दे० (पु०) उत्सव।
उच्छाह दे० (पु०) उत्साह, उमग, धूमधाम।
उच्छ्वास तत्० (पु०) [उत्+श्वस्+घञ्] श्वास, आशा, प्रकरण, उसाँस।
उच्छाह दे० (पु०) उत्साह।
उच्छिन्न तत्० (गु०) [उत्+छिद्+क्त] उच्छन्न, उखड़ा हुआ, निर्मूल हुआ, विनष्ट, खण्डित, कटा हुआ, छिन्न भिन्न।—ता (स्त्री०) नाश, खण्डन।
उच्छिष्ट तत्० (गु०) [उत्—शिष+क्त] भोजन का अवशिष्ट जूठा, त्यक्त।—भाजन (पु०) भुक्तावशिष्ट आहार, अवशिष्ट भोजन, किसी के खाये

से छुटा हुआ, जिसमें भोजन के लिये किसी ने मुँह लगा दिया हो, जूँठा भोजन।
उच्छू दे० (स्त्री०) एक प्रकार की खाँसी जो पानी या साँस के गले में रुक जाने से आने लगती है।
उच्छृङ्खल तत्० (गु०) [उत्+शृङ्खल] शृङ्खला रहित, अबाध, अनियन्त्रित निरङ्कुश, अनर्गल, विशृङ्खल, अंडबंड। [उत्पाटन, विनाश।
उच्छेद तत्० (पु०) [उत्+छिद्+अल] उन्मूलन,
उच्छ्राय तत्० (पु०) [उत्+श्रि+अल] पर्वत वृक्ष आदि की उच्चता, उच्च परिमाण।
उच्छ्रित तत्० (गु०) [उत्+श्रि+क्त] उन्नत, उच्च, ऊँचा, बढ़ा हुआ।
उच्छ्वास (पु०) उसाँस, श्वास विभाग, परिच्छेद।
उच्छ्वो दे० (पु०) देखो उत्सव। [थंक, उरु।
उछङ्ग तत्० (स्त्री०) गोदी, गोद, उत्सङ्ग, कनिया,
उछल कूद (स्त्री०) अधीरता, चञ्चलता। [मारना।
उछलना तत्० (क्रि०) कुदकना, कूदना, उछाल
उछाड़ दे० (पु०) वमन, ओकि, रद्द।
उछाल दे० (पु०) कुदान।
उछालना (क्रि०) ऊपर फेंक के लोकना।
उछाह तद्० (पु०) उत्साह, आनन्द, हर्ष।
उछीर दे० (पु०) अवकाश, जगह, छेद।
उजट दे० (पु०) झोंपड़ा, तृणों से बना गृह।
उजड़ दे० (गु०) उतावला, अप्रवीण, उच्छृङ्खल, चौगान, शून्य, पटपर, जनशून्य स्थान [होना।
उजड़ना दे० (क्रि०) उखड़ना, विनशाना, ध्वस्त
उजड़ा दे० (वि०) उजड़ा हुआ, विनष्ट, निकम्मा।
उजड्ड दे० (वि०) वज्र मूर्ख, असभ्य।—पन दे० (पु०) अशिष्टता, बेहूदापन।
उजबक दे० (वि०) मूर्ख, अनारी (पु०) तातारियों की एक जाति, घास विशेष।
उजयार दे० (पु०) उजेला, प्रकाश, चाँदनी, रोशनी।
उजरत दे० (स्त्री०) मज़दूरी, भाड़ा।
उजरे दे० (क्रि०) उजड़े, वीरान होने से नष्ट हुए।
उजल तत्० (पु०) निर्मल, चमक, भड़क, उज्ज्वल, स्वच्छ, श्वेत।
उजला (गु०) स्वच्छ, साफ़, सफ़ेद।
उजवाना दे० (क्रि०) दलवाना, उम्हालना।
उजागर दे० (गु०) चमकीला, यशस्वी, प्रसिद्ध, विख्यात, प्रतापी, मशहूर।
उजाड़ दे० (पु०) उच्छिन्न, सूना, पटपर, निर्जन स्थान, जंगल।—ना (क्रि०) नाश करना, चौपट करना, नष्ट विनष्ट करना।
उजान दे० (पु०) नदी का चढ़ाव, भाटे का उलटा ज्वार। [मिटा करके।
उजारि दे० (क्रि०) उजाड़कर, नाश करके, नष्ट करके।
उजारी (स्त्री०) नये अन्न के ढेर में से देवता के निमित्त अन्न निकालना।
उजाला तद्० (पु०) चमक, प्रकाश, तेज।
उजाली दे० (वि०) चाँदनी, चन्द्रिका।
उजियारा दे० (पु०) उजाला, प्रकाश, चाँदनी।
उजियारी दे० (स्त्री०) चाँदनी, उजियारी।
उजियाला दे० (पु०) प्रकाश, उजाला।
उजीता दे० (वि०) प्रकाशमान्, रोशन।
उजेरा दे० (पु०) उजाला, प्रकाश।
उज्जल तद्० (गु०) स्वच्छ, निर्मल, चमकीला, प्रकाशित, दीप्तियुक्त।
उज्ज्यल तत्० (गु०) देखो उज्जल।
उज्ज्वलन तत्० (गु०) [उत्+ज्वल्+अनट्] उद्दीपन, प्रकाश करना, चमकना, ऊपर की ओर ज्वाला जाना।
उज्जैन तद्० (पु०) उज्जयिनी नगरी, विशालापुरी, (देखो अवन्ती।)
उज्जैनी तद्० (स्त्री०) देखो उज्जैन।
उज्जृम्भित तत्० (गु०) [उत्+जृम्भ+क्त] प्रफुल्ल, विकसित, प्रस्फुटित। (पु०) चेष्टा, अन्वेषण।
उझकना दे० (क्रि०) उचकना, ताकना, झाँकना।
उझकुन दे० (पु०) ओट, ठेंगन, उचकन।
उझलना दे० (क्रि०) उँडेलना, रिक्त करना, खाली करना, एक पात्र की वस्तु दूसरे पात्र में रखना।
उझिला (स्त्री०) उबाली हुई सरसों जो उबटन के काम में आती है।
उञ्छ तत्० (गु०) [उञ्छ+अल्] हेय, क्षुद्र।—वृत्ति (स्त्री०) सामान्य जीविका, मुनि वृत्ति, कटे हुए खेत में गिरे हुए अन्न से वृत्ति निर्वाह।—शिल (पु०) उपेक्षित अन्न का संग्रह।

उञ्छशील तद्० (गु०) उञ्छजीवी, अति सामान्य कर्म से जीविका निर्वाह करने वाले, मुनि, ऋषि।
उज्झित तद्० (गु०) [उज्झ+क्त] उत्सृष्ट, त्यक्त, वर्जित।
उज्ज्वलित तद्० (गु०) छोड़ा हुआ, डाला हुआ।
उट तद्० (पु०) तृण, तिनका, कुश, पत्ता।—ज (पु०) पर्णशाला, पत्ररचित गृह, पत्तों से बना घर।
उटपटाङ्ग दे० (गु०) अविवेचक, उलटपुलट।
उटङ्ग (पु०) वह कपड़ा जो पहिनने में छोटा हो।
उट्टङ्कन तद्० (गु०) सङ्केत, इङ्गित, प्रसङ्ग, प्रस्ताव।
उट्टङ्कित तद्० (गु०) सङ्केतित, चिन्हित, उल्लेखित, उत्थापित।
उठँगन दे० (पु०) टेक, आधार, आश्रय, आड़।
उठना तद्० (क्रि०) उगना, चढ़ना, खड़ा होना, ऊँचा होना।
उठबैठ तद्० (स्त्री०) चिलबिली, चञ्चल, असुख, अधिक क्लेश, " उठबैठ के मैंने रात बिताई "।
उठवैया (पु०) उठल्लू, उठानेहारा।
उठल्लू तद्० (गु०) अस्थिर, चपल, चञ्चल, आवारा।
उठा दे० (क्रि०) उभरा, खड़ा हुआ, निकला, जमा, ऊँचा हुआ, उत्पन्न हुआ। [लपक, ठग, उचक्का।
उठाईगीर या उठाईगीरा तद्० (गु०) चोट्टा, हस्त
उठान तद्० (पु०) उदय, उठने की क्रिया।
उठाना तद्० (क्रि०) खड़ा करना, उधार देना, दूरी करना, खर्च करना।
उठा देना तद्० दूर करना, भाड़े पर देना।
उठौआ (वि०) उठौवा, जिसका कोई स्थान निर्दिष्ट न हो। [मजदूरी, दावनी।
उठौनी दे० (स्त्री०) उठाने की क्रिया, उठाने की
उड़ंकू दे० (गु०) उड़नेवाला, उड़ैया, चलने फिरने वाला।
उडगण तद्० (पु०) तारे, नक्षत्रगण, नक्षत्रसमूह।
उड़चलना तद्० (क्रि०) अस्कना, इतराना।
उड़ती तद्० (पु०) अस्थिर, अनिश्चित, अमूलक, जनश्रुति।
उड़नखटोला (पु०) विमान। [आकाशगमन।
उड़ना तद्० (क्रि०) पक्षी का आकाश में चलना,
उड़नी दे० (वि०) फैलनी, जैसे चेचक या हैज़े की बीमारी।
उड़ाऊ तद्० (पु०) अपव्ययी, लुटाऊ, वृथा धन नाशशील, अधिक खर्चीला। [हरणकर्ता।
उड़ाक या उड़ाकू (पु०) उड़ैया, जो भागने वाला, अप-
उड़ान तद्० (स्त्री०) कूदना, पक्षियों की चाल।
उड़ाना तद्० (क्रि०) उड़ा देना, भगाना लुटाना।
—पुड़ाना लुटाना, गँवाना, अपव्यय करना, नाश करना। [करते हैं।
उड़ावहिं तद्० (क्रि०) उड़ाते हैं, भगाते हैं, नाश
उड़ाहीं तद्० (क्रि०) उड़ते हैं, उड़ जाते हैं।
उड़िया दे० (पु०) उड़ीसा देशवासी।
उड़ियाना तद्० (पु०) एक मात्रिक छन्द विशेष।
उड़िस दे० (पु०) खटमल, खटकीरा।
उड़ीसा दे० (पु०) उत्कल देश।
उडु तद्० (पु०) नक्षत्र, राशि, तारा।—पथ (पु०) आकाश, गगन, नभस्थल।
उडुप तद्० (पु०) चन्द्र, नाव, घरनई, डोंगी।
उड़ेलना दे० (क्रि०) एक बर्तन से दूसरे बर्तन में ढालना।
उड़ूस दे० (पु०) खटमल, खटकीरा, उड़िस।
उड्डीन तद्० (पु०) उड़ना, परवाज़ होना। [नभचर।
उड्डीयमान तद्० (पु०) उड़नेवाला, आकाशगामी,
उढ़कना दे० (क्रि०) ओठँगाना, धँधाना, भिड़ाना, किसी के सहारे खड़ा करना।
उढ़ना दे० (पु०) कपड़ा लत्ता।
उढ़री दे० (स्त्री०) वह स्त्री जो विवाहिता न हो, रखुई, रखैला, उपपत्नी।
उढ़ाना दे० आच्छादन करना, ढकना, पहिनाना।
उढ़ेलना दे० (क्रि०) ढालना, उलझना।
उढ़ैया दे० (पु०) उठानेवाला, ढकने वाला।
उत तद्० (अ०) उधर, उस ओर, उस तरफ़।
उतथ्य तद्० (पु०) [उतथ्+य] मुनि विशेष, अङ्गिरा का पुत्र, बृहस्पती का ज्येष्ठ सहोदर।—नुज (पु०) [उतथ्य+अनुज] बृहस्पति।
उतना तद्० (अ०) उतना ही, उतना ही, इतना, परिमाण विशेष।
उतरन तद्० (स्त्री०) पहिने हुए पुराने वस्त्र।—पुतरन दे० (स्त्री०) पहिने हुए पुराने फटे वस्त्र।
उतरना तद्० (क्रि०) नीचे आना, घट जाना, टिकना,

विश्राम करना, किनारे पहुँचना, पार होना, लाँघना, घटना, कम होना, उदास होना, फीका पड़ना, यथा "आजकल उसका रङ्ग उतर गया है"।
उतरहा दे० (वि०) उत्तर दिशा के देश का वासी।
उतरहिं (क्रि०) उतरते हैं नीचे आते हैं ठहरते हैं, डेरा करते हैं, विश्राम करते हैं। [महसूल।
उतराई दे० (स्त्री०) महसूल, नदी के पार जाने का
उतराना (क्रि०) पानी के ऊपर तैरना, बाढ़ सी आना जैसे आजकल अमुक बहुत उतराए हैं।
उतरायल (गु०) छोड़ा हुआ, उतारा हुआ, काम में लाया हुआ।
उतराव दे० (पु०) उतार, ढाल।
उतला तद्० (वि०) उतावला, व्यस्त, व्याकुल, व्यग्र।
उतान (गु०) सीधा, चित्त, पीठ के बल।
उताना दे० (गु०) छिछला उलटा, औंधा विपरीत।
उतार तद्० (पु०) नीचे आना, घटी।
उतारन तद्० (पु०) न्योछावर, निकृष्ट वस्तु।
उतारना (क्रि०) ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना, नक़ल करना, लगी या लपटी वस्तु का अलगाना जैसे खाल उतारना, ठहराना, वारना, अदा करना, किसी प्रभाव को दूर करना जैसे नशा उतारना, निगलना, वज़न में पूरा करना, भोजन की पूरी आदि तैयार करना जैसे पूरियाँ उतार लीं।
उतारा तद्० (पु०) डेरा, नदी पार करने की क्रिया।
उतारि (क्रि०) उतार कर, गिरा कर, पदच्युत कर, नीचे रख कर।
उतारू दे० (वि०) तैयार, तत्पर।
उताल दे० (पु०) ढीठा, ऊँचा।
उतावल दे० (स्त्री०) शीघ्रता, वेग, तुर्ताई, कहीं कहीं उताहल भी कहा जाता है।
उतावला दे० (वि०) भड़भड़िया, जल्दबाज़।
उतावली दे० (गु०) शीघ्रता, फुर्तीलापन।
उत्क तद्० (गु०) उन्मना अन्यमनस्क, उद्विग्न, इच्छुक, उत्कण्ठित।
उत्कट तद्० (गु०) [उत्+कट+अच्] तीव्र, मत्त, विषम, सख्त, कठिन, दुस्सह, उद्दाम, कठोर, उग्र, अधिक, दु साध्य।
उत्कण्ठा तद्० (स्त्री०) अभिलाषा, इष्ट प्राप्ति के लिये विलम्ब का असहन, प्रियप्राप्ति के लिये उदासी, अन्यमनस्कता, व्याकुलता, व्यस्तता, भावना, चिन्ता औत्सुक्य, उद्वेग, विशेष चाह, पूर्णेच्छा, बड़ी अभिलाषा।
उत्कण्ठित तद्० (गु०) उत्कण्ठायुक्त, उत्सुक, उन्मना, उद्विग्न, भावित, चिन्तित।—ा तद्० (स्त्री०) चिन्तान्विता, उद्विग्ना, नायिका विशेष, सङ्केत स्थान में नायक के न आने से अनुतप्ता, इसे उत्का भी कहते हैं। यथा—"आप जाय सङ्केत में पीव न आयो होय, ताकी मन चिन्ता करे उत्का कहिये सोय"। —मतिराम
उत्कर्ष तद्० (पु०) [उत्+कृष्+अल्] प्रधानत्व, श्रेष्ठता, प्रशंसा, बड़ाई, उग्रता, जोर, उत्तमता, श्रेष्ठपन।—ता (स्त्री०) श्रेष्ठता, उत्तमता।
उत्कल तद्० (पु०) देश विशेष, इसका दूसरा नाम ओढ़ भी था, इस समय उड़ीसा देश के नाम से प्रसिद्ध है। ताम्रलिप्ती नदी के दक्षिण किनारे पर बसा है और कपिशा नदी तक चला गया है। इसके प्रसिद्ध नगर पुरी और कटक हैं। पुरी ही में जगन्नाथ जी का मन्दिर है।
उत्कलिका तद्० (स्त्री०) उत्कण्ठा, तरंग, फूल की कली, बड़े बड़े समास वाला गद्य। [खोदा हुआ।
उत्कीर्ण तद्० (गु०) क्षत, खोदित, उत्खनित, पेषित,
उत्कुण तद्० (पु०) मत्कुण, खटकीरा, खटमल।
उत्कृष्ट तद्० (गु०) [उत्+कृष्+क्त] उत्कर्ष विशिष्ट, अतिशय, प्रकृष्ट, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ।—ता (स्त्री०), उत्तमता, बड़ाई, श्रेष्ठता।
उत्क्रान्त तद्० (गु०) [उत्+क्रम+क्त] निर्गत, ऊपर गया हुआ, उल्लङ्घित।
उत्क्रान्ति तद्० (स्त्री०) मृत्यु, मरण, श्रेष्ठता और पूर्णता की ओर क्रमशः प्रवृत्ति।
उत्क्रोश तद्० (पु०) पक्षी विशेष, कुररी, टिट्टिभ, राजपक्षी, (क्रि०) चिल्लाना।
उत्खात तद्० (गु०) [उत्+खन्+क्त] उन्मूलित, उत्पाटित, विदारित, उखाड़ा हुआ।
उत्तङ्ग दे० (वि०) ऊँचा, बुलन्द।
उत्तंस तद्० (पु०) कर्णपूर, कर्णाभरण, शेखर, शिरोभूषण, कनफूल।

उत्तप्त तद्० (गु०) [उत्+तप्+क्त] तप्त, सन्तप्त, उष्ण, दग्ध, परिप्लुत, तापित, चिन्तित, भावित । —ता (स्त्री०) उष्णता, सन्ताप ।

उत्तम तद्० (गु०) [उत्+तम्+यत्] भद्र, उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, सब से अच्छा (पु०) नायक भेद, राजा उत्तानपाद का पुत्र, उत्तानपाद की प्रिया सुरुचि के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, अविवाहित अवस्था ही में उत्तम अहेर खेलने किसी वन में गया और वहाँ एक यक्ष ने उसे मार डाला ।—ता (स्त्री०) उत्कर्ष, सौन्दर्य ।—पद (पु०) श्रेष्ठपद, उच्चपद ।—पुरुष (पु०) सर्वनाम विशेष जिससे बोलने वाले का बोध हो ।—र्ण (पु०) [उत्तम+ऋण] ऋणदाता, महाजन ।—संग्रह (पु०) सम्यक् संग्रह, एकान्त में पर स्त्री के साथ परस्पर आलिङ्गन ।—साहस (पु०) दण्ड विशेष अस्सी हज़ार पण परिमित दण्ड, अतिशय साहस, दु.साहस ।—ा (स्त्री०) उत्कृष्टा नारी, श्रेष्ठा ।—ाङ्ग (पु०) [उत्तम+अङ्ग] मस्तक, सिर, मुण्ड ।—ोत्तम (गु०) [उत्तम+उत्तम] अतिशय उत्कृष्ट, अतिश्रेष्ठ, परमोत्कृष्ट ।—ौजा तद्० (वि०) उत्तम तेज या बल वाला । (पु०) युधामन्यु का भाई, मनु के दस पुत्रों में से एक ।

उत्तर तद्० (पु०) [उत्+तृ+अच्] प्रतिवचन, प्रतिवाक्य, बदला, पलटा, समाधान, दिशा विशेष, (गु०) अनन्तर, (अ०) पश्चात्, (पु०) विराट-राजपुत्र ।—काल (पु०) भविष्यत् काल, आगामी समय ।—काशी (स्त्री०) हरिद्वार के उत्तर एक स्थान विशेष ।—कुरु (पु०) जम्बुद्वीप के नव वर्षों के अन्तर्गत एक वर्ष ।—कोशला (स्त्री०) अयोध्या नगरी, सूर्यवंशी राजाओं की प्राचीन राजधानी ।—क्रिया (स्त्री०) प्रतिवचनदान, अन्त्येष्टिक्रिया, सांवत्सरिक श्राद्ध आदि पितृकर्म । —च्छद (पु०) प्रच्छदपट, आच्छादन वस्त्र, पलंगपोश ।—दाता (पु०) जवाबदेह ।—दायित्व (पु०) जवाबदेही ।—दायी (पु०) उत्तर देने वाला, जवाबदेह ।—पक्ष (पु०) सिद्धान्त, समाधान, विचार विशेष ।—प्रत्युत्तर (पु०) वादानुवाद, तर्क ।

उत्तरफाल्गुनी तद्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, बारहवाँ नक्षत्र ।

उत्तरभाद्रपद तद्० (पु०) छब्बीसवाँ नक्षत्र ।

उत्तरमीमांसा (स्त्री०) वेदान्त दर्शन ।

उत्तरा (स्त्री०) राजा विराट की कन्या का नाम जो अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से ब्याही गयी थी, इसीके गर्भ से राजा परीक्षित हुआ था ।—खण्ड (पु०) हिमालय के निकटवर्ती देश ।—धिकारी (पु०) वारिस ।

उत्तरायण तद्० (पु०) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन, विषुवत् रेखा के उत्तर भाग में सूर्य का स्थितिकाल, माघ से लेकर छः महीना, देवताओं का दिन ।

उत्तरार्द्ध तद्० (पु०) ऊत्तर का आधा हिस्सा, पिछला [आधा भाग ।

उत्तराषाढ़ा तद्० (स्त्री०) इक्कीसवाँ नक्षत्र ।

उत्तराहा तद्० (वि०) उत्तर दिशा का ।

उत्तरीय तद्० (गु०) उत्तर देशवासी, ऊपर रखने का कपड़ा, दुपट्टा, उत्तर दिशा का ।

उत्तरोत्तर तद्० (गु०) [उत्तर+उत्तर] क्रम से, एक के अनन्तर एक, आगे आगे ।

उत्तान तद्० (गु०) [उत्+तन+घञ] उन्मुख, ऊर्ध्वमुख, चित्त ।—पात्र (पु०) तावा, रोटी सेंकने का बर्तन ।—पाद (पु०) राजा विशेष, स्वायम्भुव मनु का पुत्र और ध्रुव का पिता । —शय (गु०) बहुत छोटा लड़का, चित्त सोने वाला । [सन्ताप, उष्णता, कष्ट, वेदना, क्षोभ ।

उत्ताप तद्० (पु०) [उत्+तप्+घञ्] तेज़ गरमी,

उत्ताल तद्० (गु०) उत्कट, महत्, श्रेष्ठ, भयानक, त्वरित ।

उत्तिष्ठमान तद्० (गु०) उत्थानशील, वर्द्धनशील, वर्द्धमान ।

उत्तीर्ण तद्० (गु०) [उत्त+तृ+क्त] पारप्राप्त, पारङ्गत, मुक्त, उपनीत ।

उत्तुङ्ग तद्० (गु०) उच्च, ऊर्ध्व, उन्नत, बहुत ऊँचा ।

उत्तू दे० (पु०) घुरात, कुर्सीत, पर्त, तह, भरी, औज़ार विशेष ।—करना (क्रि०) तह जमाना, चुनना, पर्त लगाना, शिथिल करना ।

उत्यक्त तद्० (गु०) वर्जित, परित्यक्त, खोया हुआ ।

उत्तेजना तत्० (पु०) प्रेरणा, बढ़ावा, वेगों को तीव्र करने की क्रिया।

उत्तेजित तत्० (गु०) [उत्+क्त] प्रेरित, पुनः पुनः आदेशित, उत्तेजना से भरा हुआ।

उत्तोलन तत्० (पु०) [उत्+तुल्+अनट्] ऊर्ध्व नयन, तोलना, ऊँचा करना, तानना।

उत्थान तत्० (पु०) [उत्+स्था+अनट्] उठान, आरम्भ, बढ़ती।—एकादशी (स्त्री०) कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की एकादशी, उसी दिन शेषशायी जाग्रत होते हैं, देवउठान एकादशी।

उत्थापन तत्० (पु०) [उत्+स्था+णिच्+अनट्] उठाना, जगाना, हिलाना, डुलाना।

उत्थित तत्० (गु०) [उत्+स्था+क्त] उत्पन्न, उठा हुआ।—ाङ्गुलि (स्त्री०) अँगुली फैलाया हुआ पंजा, थप्पड़। [पक्षी का उड़ना, ऊपर उड़ना।

उत्पतन तत्० (पु०) [उत्+पतन्+अनट्] ऊर्ध्वगमन

उत्पति तद्० (स्त्री०) देखो उत्पत्ति।

उत्पतित (गु०) [उत्+पत्+क्त] ऊपर गया हुआ, ऊर्ध्व गमन किया हुआ।

उत्पत्ति तत्० (स्त्री०) [उत्+पद्+क्ति] जनने, जन्म, उद्भव, आदि।—शाली (गु०) जन्म विशिष्ट, जो उत्पन्न होता है।

उत्पथ तत्० (पु०) कुमार्ग, कुमार्गगमन, सत्पथच्युत।

उत्पन्न तत्० (गु०) [उत्+पद्+क्त] उत्पत्ति विशिष्ट, जात, जन्मा हुआ।

उत्पन्ना तत्० (स्त्री०) अगहन बदी एकादशी का नाम।

उत्पल तत्० (पु०) नीलकमल, नीलपद्म, पद्ममूल से उत्पन्न होनेवाले पुष्प मात्र।—पत्र (पु०) पद्मपत्र, स्त्री-नखक्षत।

उत्पाटन तत्० (पु०) मूल सहित उखाड़ना, ऊधम, खोटाई, शैतानी, बदमाशी, उन्मूलन, जड़ से खोदना।

उत्पात तत्० (पु०) [उत्+पत्+घञ्] उपद्रव, दौरात्म्य, दुष्टता, बिगाड़, हानि, अन्धेर।—ग्रस्त (गु०) उपद्रव युक्त।

उत्पाती (गु०) उत्पात करने वाला, उपद्रवी।

उत्पादक (गु०) [उत्+पद्+णक्] जनक, उत्पत्ति कर्ता पैदा करने वाला।

उत्पादन तत्० (पु०) [उत्+पद्+णिच्+अनट्] जनन, उत्पन्न करना, जन्माना, उपजाना।

उत्पादिका तत्० (स्त्री०) [उत्+पद+इक्+आ] जननी, उत्पादन कारिणी, माता, प्रति पदार्थ में एक प्रकार की शक्ति जिसे उत्पादिका शक्ति कहते हैं।

उत्पीड़न तत्० (पु०) क्लेश पहुँचाना, दबाना।

उत्प्रेक्षा तत्० (स्त्री०) [उत्+प्र+ईक्ष्+आ] अनवधान, सादृश अनुमान, उपेक्षा, उपमा, ढील, अर्थालङ्कार विशेष, अतिशय सादृश्य होने के कारण उपमान गत गुण क्रिया आदि की उपमेय में सम्भावना।

उत्प्लवन तत्० (पु०) [उत्+प्लु+अनट्] कूदना, लाँघना, लाँफ मारना।

उत्फाल तत्० (पु०) लाँघना, कूदना, लाँफ मारना।

उत्फुल्ल तत्० (गु०) [उत्+फुल्ल्+क्त] प्रफुल्ल, विकसित, आनन्दित, फूला हुआ।

उत्सङ्ग तत्० (पु०) [उत्+सञ्ज्+घञ्] क्रोड़, अङ्क, कोला, गोदी, बीच का हिस्सा, ऊपर का भाग, (वि०) विरक्त, निर्लिप्त। [उत्थित, उत्पतित।

उत्सन्न तत्० (गु०) [उत्+सद्+क्त] हत, नष्ट,

उत्सर्ग तत्० (पु०) [उत्+सृज्+घञ्] त्याग, दान, विसर्जन।—पत्र (पु०) दान पत्र, कार्यत्यागपत्र।

उत्सर्जन तत् (पु०) [उत्+सृज्+अनट्] उत्सर्ग, त्याग, छोड़ना, दान, वितरण, वैदिक कर्म विशेष, जो वर्ष में दो बार यानी एक बार पूस में और दूसरी बार श्रावण में होता है।

उत्सव तत्० (पु०) [उत्+सु+घञ्] उच्छ्रय, प्रसन्नता का प्रकाश, आनन्द, उत्साह, यज्ञ, पूजा, अर्चा आदि।—जनक (गु०) आह्लाद जनक, प्रमोद जनक, आनन्दकारी।

उत्सादन तत्० (पु०) [उत्+सद्+णिच्+अनट्] उच्छेद करण, विनाश, छिन्न भिन्न करना।

उत्सादित तत्० (गु०) [उत्+सद्+णिच्+क्त] विनाशित, छिन्न भिन्न कृत, निर्मली कृत शरीर।

उत्सारक तत्० (पु०) द्वारपाल, चोबदार।

उत्सारण तत्० (पु०) [उत्+सृ+अनट्] दूरी करण, दूसरे स्थान में भेजना।

उत्साह तत्० (पु०) [उत्+सह्+घञ्] अध्यवसाय, उद्योग, उद्यम, वीर रस का स्थायी भाव, उमंग, उछाह, साहस।—वर्द्धन (पु०) उद्यमवृद्धि, उद्यमाधिक्य।—शील (गु०) उद्योगी, उद्यमी।—न्वित (गु०) उत्साह युक्त, उद्यमी।

उत्साहित तत्० (गु०) उत्साहशाली, प्रोत्साह।

उत्साही तत्० (गु०) [उत्+सह्+णिन्] उद्यमयुक्त, उद्योगी, हौसिले वाला।

उत्सुक तत्० (गु०) [उत्+सु+क्विप्] मनोरथ सिद्धि के लिये उत्कण्ठित, अत्यन्त इच्छुक।—ता तत्० (स्त्री०) व्याकुल इच्छा।

उत्सूर तत्० (पु०) सन्ध्या काल, शाम।

उत्सृष्ट तत्० (वि०) त्यागा हुआ।

उत्सेध तत्० (वि०) बढ़ती, उन्नति, ऊँचाई, सूजन।

उथलना दे० (क्रि०) उलट देना, औंधना, तले ऊपर करना।

उथल पुथल दे० (पु०) उलट पुलट, विपरीत, इधर का उधर, नीचे ऊपर, क्रमभङ्ग।

उथला दे० (गु०) छिछला, कम गहरा।

उद् तत्० (अव्य०) संस्कृत का उपसर्ग।

उदक तत्० (पु०) जल, सलिल, पानी।—क्रिया (स्त्री०) मृत मनुष्य के उद्देश करके जल देना, जलतर्पण क्रिया।

उदघाटी तद्० (क्रि०) खोली, उघारी, प्रकाश की, (स्त्री०) उदयाचल की घाटी।

उदधि तत्० (पु०) समुद्र, जलधि, सागर, घड़ा मेघ।—मेखला (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।—सुत तत्० (पु०) चन्द्रमा, अमृत, शङ्ख आदि जो समुद्र से उत्पन्न हो।—सुता तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, सीप।

उदन्त तत्० (गु०) बिना दाँतों वाला, पोपला, बुच्च।

उदन्वान तत्० (पु०) समुद्र, पयोधि, वारिनिधि।

उदपान तत्० (पु०) कूप के समीप का गड्ढा, कमण्डलु।

उदबेग तद्० (पु०) [देखो उद्वेग]।

उदभव तद्० (पु०) [देखो उद्भव]। [(वि०) पागल।

उदमाद तद्० (पु०) पागलपन, उन्माद।—ी तद्०

उदय तत्० (पु०) समुन्नति, दीप्ति, मङ्गल, प्राची, धनलाभ, उत्पत्ति, प्रादुर्भाव, उपग्म, उन्नति।—काल (पु०) प्रभातकाल, सर्प विशेष।—गिरि (पु०) उदयाचल, पूर्व का एक पर्वत, जिस पर प्रथम सूर्य उगते हैं।

उदयन तत्० (पु०) प्रकाश होना, ऊर्द्ध गमन, अगस्त मुनि, वत्सराज, शतानीक के पुत्र इनकी राजधानी प्रयाग के पास कौशाम्बी थी, वासवदत्ता इनकी रानी का नाम था, वत्सराज और उदयन दोनों नाम से ये प्रसिद्ध हैं। विख्यात, दार्शनिक पण्डित उदयनाचार्य द्वादश शताब्दी के मध्यभाग में मिथिला में उत्पन्न हुए थे। कहते हैं कि बौद्धों का नाश करने के लिये भगवान् मिथिला में उदयनाचार्य रूप से प्रकट हुए थे। प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रन्थ कुसुमाञ्जलि इन्हींका बनाया है। इसके अतिरिक्त वाचस्पति मिश्र के बनाये न्यायशास्त्र के कितने ग्रन्थों की टीका भी इन्होंने की है। इनकी कन्या लीलावती, उस समय विख्यात पण्डिता थी।

उदयाचल तत्० (पु०) उदयगिरि, पूर्वपर्वत, पुराणों के मत के अनुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से सूर्य भगवान् निकलते हैं।

उदयातिथि तत्० (स्त्री०) वह तिथि जो सूर्योदय काल में हो। (शास्त्रानुसार स्नान दान अध्ययनादि कर्म उदयातिथि ही में होना उचित है)।

उदयाद्रि तत्० (पु०) उदयाचल, उदयगिरि।

उदयास्त तत्० (पु०) प्रभात से सन्ध्या पर्यन्त, उदय से अस्त लों, पूर्व से पश्चिम तक।

उदर तत्० (पु०) पेट, जठर।—ज्वाला (स्त्री०) भूख जठराग्नि।—गडु (गु०) अतिसार, पेट की घुर्राई।—म्भरि (पु०) पेटार्थी, पेटू।—रस (पु०) उदरस्थित पाचक रस।—रोग (पु०) जठरव्याधि विशेष, पेट की पीड़ा।—वृद्धि (स्त्री०) जलोदर रोग, जलधर।—सर्वस्व (गु०) उदरपरायण पेटू।—ाग्नि (गु०) जठरानल, पचाने की शक्ति।—ावर्त (पु०) नाभी।—ामय (पु०) उदररोग, पेट की पीड़ा, उदरभङ्ग, अतिसार।

उदरिणी तद्० (स्त्री०) गर्भिणी, द्विजीवा, दुपस्था।

उदरी तद्० (गु०) उदरिय, उदरिल, तोंदीला, तोंद वाला।

उदवा दे० (क्रि०) निकलना, उगना।
"उदवत शशि नियराइ, सिन्धु प्रतीची बीच ज्यों।"
—गुमान कवि।
उदयना (क्रि०) प्रकट होना, उगना, निकलना।
उदवेग तद्० (पु०) [देखो उद्वेग]।
उदभव तद्० (पु०) [देखो उद्भव]। [होना।
उदसन दे० (क्रि०) अंडबंड होना, उजडना, क्रम भङ्ग
उदात्त तद्० (पु०) स्वरविशेष, वेदगान में उच्चस्वर, काव्यालङ्कार विशेष, नायक विशेष, (गु०) स्वरित, दया त्याग आदि गुण सम्पन्न, मनोहर, महान्, दाता, श्रेष्ठ, योग्य।
उदाता तद्० (गु०) दाता, दानशील, उदार।
उदान तद्० (पु०) कण्ठस्थवायु, प्राणवायु, उदरावर्त, नाभि, सर्पविशेष।
उदार तद्० (गु०) [उद्+आ+ऋ+अण्] दाता, महत्, सरल, महात्मा।—चरित (गु०) शीलयुक्त, उच्च विचार सम्पन्न।—ता (स्त्री०) सरलता, दानशीलता, वदान्यता।—त्व (पु०) दातृत्व, दानशीलता।—शय तद्० (गु०) महात्मा, उदार आशय वाला।
उदारना (क्रि०) चीरना, फाड़ना।
उदास तद्० (पु०) [उद्+आस्+अच्] एकान्ती, विरक्त, खिन्न चित्त, निरपेक्ष, दुःखी, सर्वस्व त्यागी, सुस्त, रंजीदा, व्यग्रचित।—ना (क्रि०) चित्त न लगना।
उदासी तद्० (पु०) वैरागी, एकान्तवासी, त्यागी पुरुष, एक सम्प्रदाय के साधु।—बाजा दे० (पु०) एक प्रकार का भौंपा बाजा।
उदासीन तद्० (पु०) निःसङ्ग, शत्रु मित्र को समान देखने वाला, तटस्थ, उपेक्षायुत, ममता रहित, वासना शून्य, विरह, संन्यासी, समदर्शी।—ता तद्० (स्त्री०) विरक्ति, त्याग, निरपेक्षता, खिन्नता।
उदाहर तद्० (स्त्री०) धुंधला रङ्ग, भूरा।
उदाहरण तद्० (पु०) दृष्टान्त, निदर्शन, उपमा।
उदाहृत तद्० (गु०) [उद्+आ+हृ+क्त] दृष्टान्त दिया हुआ, उत्प्रेक्षित, उक्त, कथित।
उदित तद्० (गु०) [उद्+इ+क्त] उद्गत, प्रकाशित, आविर्भूत, प्रकट, प्रफुल्लित, कहा हुआ।—यौवना तद्० (स्त्री०) मुग्धा नायिका के सात भेदों में से एक। [दिशा।
उदीची तद्० (स्त्री०) [उद्+अञ्च+ई] उत्तर
उदीच्य तद्० (पु०) शरावती नदी के पश्चिमोत्तर देश, उत्तर दिशा का रहने वाला। [उच्चारण, वाक्य।
उदीरण तद्० (पु०) [उद्+ईर्+अनट्] कथन,
उदीरित तद्० (गु०) उच्चारित, उक्त, कथित।
उदुम्बर तद्० (पु०) गूलर, डूमर।
उदूखल तद्० (पु०) उलूखल, ओखली, गूगल।
उद्गत तद्० (गु०) ऊर्ध्वगत, उदित, उत्थित, वर्धित।
उद्गम तद्० (पु०) उदय, आविर्भाव, विकास।
उद्गमन तद्० (पु०) ऊर्ध्वगमन, ऊपर जाना।
उद्गाता तद्० (पु०) सामवेदज्ञ, सामवेदवेत्ता ब्राह्मण, सामवेद-गायक।
उद्गाथा तद्० (स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद जिस के विषम पादों में १२ और सम में १८ मात्राएँ होती हैं और जिसके विषम गणों में जगण नहीं होता है।
उद्गार तद्० (पु०) डकार, वमन, ओकाई, कण्ठ उफान, गर्जन, वाद, घरघराहट, बहुत दिनों से मन में रखी किसी के विरुद्ध कोई बात का निकालना, किसी की गुप्त बातों का प्रकट करना।
उद्गीत तद्० (गु०) ऊँचे स्वर से गाया हुआ, छन्द विशेष। [ओंकार, सामवेद।
उद्गीथ तद्० (पु०) सामवेद का अंश विशेष, प्रणव,
उद्घाट तद्० (पु०) चौकी जहाँ किसी राज्य की ओर से माल को खोल कर उसकी जाँच की जाय।
उद्घाटन तद्० (पु०) उघाड़ना, प्रकाशित करना, कुएं से जल निकालने के लिये रस्सीसहित घट।
उद्घात तद्० (गु०) आरम्भ, उपक्रम, धक्का, ठोकर, आघात।
उद्दण्ड तद्० (गु०) अक्खड़, निडर, उजड्ड।
उद्दंश तद्० (पु०) मसा, मशक, डाँस मच्छर।
उद्दन्त तद्० (गु०) वृहद्दन्त, दँतुला, आगे निकला हुआ दाँत, वद्दन्ता। [बेकहा।
उद्दाम तद्० (गु०) निरङ्कुश, स्वतंत्र, महान्, गम्भीर,
उद्दालक तद्० (पु०) प्राचीन आर्य ऋषि, इनका प्रकृत नाम आरुणि है, इनके गुरु आयोदधौम्य

ने इनका उद्दालक नाम रक्खा। श्वेतकेतु इन्हीं के पुत्र थे। मत विशेष।

उद्दिम तद्० (पु०) उद्यम, उद्योग।

उद्दिष्ट तत्० (गु०) कृत उद्देश, लक्षित, दिखलाया हुआ, सम्मत, अभिप्रेत, मनस्थ। [हने वाला।

उद्दीपक तत्० (गु०) प्रकाशकर्ता, व्यक्तकारी, उभा-

उद्दीपन तत्० (पु०) प्रकाशन, तापन, रसों का विभाव विशेष, उभाड़ना, बढ़ाना।

उद्देश तत्० (पु०) अनुसन्धान, अन्वेषण, अभिप्राय, नाम निर्देशपूर्वक वस्तु निरूपण, इष्ट, मतलब, हेतु, कारण, न्याय में प्रतिज्ञा।

उद्देश्य तत्० (गु०) लक्ष्य, इष्ट, प्रयोजन।

उद्दोत तत्० (पु०) प्रकाश।

उद्धत तत्० (गु०) धृष्ट, अविनीत, दुरन्त, कुचाली, अभिमानी, मत्त।—पन (पु०) उजड्डपन, उग्रता।

उद्धरण तत्० (पु०) उद्धार, मुक्ति, त्राण, फँसे हुए को निकालना, ऊपर उठाना, पढ़े पाठ को अभ्यासार्थ पुनः पाठ करना, किसी पुस्तक या लेख के अंश विशेष को दूसरी पुस्तक या लेख में अविकल नकल कर देना।—ी (स्त्री०) आवृत्ति।

उद्धव तत्० (पु०) श्रीकृष्ण का मित्र और भक्त, उत्सव, आमोद, प्रमोद, यज्ञाग्नि। [मोचन।

उद्धार तत्० (पु०) बचाव, छुटकारा, मुक्ति, रक्षण,

उद्धृत तत्० (गु०) उद्धारित, रक्षित, किसी पुस्तक या लेख के अंश विशेष को दूसरे लेख या पुस्तक में ज्यों का त्यों नकल कर देना।

उद्बन्धन तत्० (पु०) [उत्+बन्ध+अनट्] ऊपर बाँधना, गले में रस्सी लगाना, फाँसी देना, टाँगना।—मृत (गु०) गले में रस्सी डाल कर मरा हुआ, फाँसी पाया हुआ।

उद्बाह तत्० (पु०) [उत्+वह्+घञ्] विवाह परिणय, दारक्रिया।—ोपयुक्त (गु०) विवाह उपयुक्त, परिणय योग्य, वयस्क।

उद्बोधन तत्० (पु०) [उत्+बुध्+अनट्] स्मरण, चेत, ज्ञापन, ज्ञान, जगाना।

उद्भट तत्० (पु०) अज्ञात नाम कवि के बनाये हुए श्लोक, प्रबल, उदार, महात्मा, बेजोड़, अनुपम वीर।

उद्भव तत्० (पु०) [उत्+भू+अल्] उत्पत्ति, जन्म, प्रादुर्भाव, पैदाइश।

उद्भावना तत्० (पु०) [उत्+भू+अनट्] कल्पना, प्रकाश। [प्रदीप्त, जो प्रकाशित हो, प्रकट।

उद्भासित तत्० (गु०) [उत्+भास्+क्त] उद्दीपित,

उद्भिज्ज तत्० (गु०) वृक्ष लता आदि, जो भूमि फोड़ कर निकलते हैं।—ज् (गु०) भूमिभेदन पूर्वक उत्पत्तिशील।

उद्भिद् तत्० (गु०) [उत्+भिद्+क्विप्] अङ्कुरित या प्रफुल्लित होना, वृक्ष लता आदि।—विद्या (स्त्री०) वृक्ष आदि रोपने की विद्या, माली का काम।

उद्भिन्न तत्० (गु०) [उत्+भिद्+क्त] भेदित, विद्ध, फोड़ा हुआ, उत्पन्न।

उद्भूत तत्० (गु०) [उत्+भू+क्त] उत्पन्न, निकला हुआ।—रूप (पु०) दृष्टिगोचर होने योग्य रूप।

उद्भ्रान्त तत्० (वि०) भ्रान्तियुक्त, भूला हुआ, भटका हुआ, घूमता हुआ, भौचक्का, चकित।

उद्यत तत्० (गु०) [उत्+यम्+क्त] तत्पर, प्रस्तुत, तैयार, मुस्तैद।

उद्यम तत्० (पु०) [उत्+यम्+अल्] उद्योग, उत्साह, अध्यवसाय, चेष्टा, यत्न, कामधन्धा, रोज़गार।—ी (गु०) उद्योगी, उत्साही, सतर्क, उद्यम करने वाला।

उद्यान तत्० (पु०) [उत्+या+अनट्] क्रीडावन, उपवन, बगीचा; आराम।—पाल (पु०) उद्यान-रक्षक, माली, बागबान। [समापन क्रिया विशेष।

उद्यापन तत्० (पु०) [उत्+या+णिच्+अनट्]

उद्युक्त तत्० (गु०) [उत्+युज्+क्त] उद्यमयुक्त, उद्योगविशिष्ट, उत्साहान्वित, यत्नवान्, लगा हुआ, परिश्रमी।

उद्योग तत्० (पु०) [उत्+युज्+घञ्] यत्न, चेष्टा, उत्साह, अध्यवसाय, उद्यम, प्रयास, आयोजन, उपाय।—ी (गु०) उद्योगविशिष्ट, यत्नवान्, उद्युक्त, उत्साही, उद्यम करने वाला।

उद्योत तत्० (पु०) प्रकाश, चमक, आभा, झलक, आलोक, उजियाला।

उद्र तत्० (पु०) ऊदबिलाव, जल की बिल्ली।

उद्रिक्त तत्० (गु०) स्फुट, स्पष्ट, व्यक्त, परिवृद्ध, बढ़ा हुआ। [उत्थान, प्रकाश।
उद्रेक तत्० (पु०) उपक्रम, आरम्भ, वृद्धि, बढ़ती,
उद्विग्न तत्० (गु०) [उत्+विज्+क्त] उद्वेगयुक्त घबड़ाया हुआ, व्यग्र।—ता तत्० (स्त्री०) घबड़ाहट, व्यग्रता।—मना (गु०) उद्विग्न चित्त, घबड़ाया हुआ।
उद्वेग तत्० (पु०) व्याकुलता, मनोवेग, चिन्ता, घबराहट, विरहजन्य दुःख।—कर (गु०) चिन्ताजनक, व्याकुलतावर्द्धक।—ी (गु०) उद्विग्न, उत्कण्ठित, भावनायुक्त चिन्तान्वित, घबड़ाया हुआ।
उधर तद्० (अ०) वहाँ, उस ठाँव, उस ठौर।
उधरा तद्० (गु०) खुला, मुक्त, छूटा।
उधरे दे० (गु०) प्रकाशित, फटे, खुले हुए।
उधार तत्० (पु०) कर्ज़, देना, ऋण।
उधारना तद्० (क्रि०) मुक्ति देना, छुटकारा करना, पार करना, बचाना, तारना।
उधेड़ना तद्० (क्रि०) पर्तों को अलगाना, टाँका खोलना, सिलाई खोलना, सुलझाना, खोलना।
उधेड़बुन तद्० (पु०) ऊहापोह, सोचविचार।
उन (सर्व०) उसका बहुवचन।
उनइस (स्त्री०) संख्या विशेष, १९।
उनचास (पु०) संख्या विशेष, ४९।
उनत्तीस संख्या विशेष, २९।
उनसठ संख्या विशेष, ५९।
उनहत्तर संख्या विशेष, ६९।
उनहार दे० (वि०) सदृश, समान।
उनासी संख्या विशेष, ७९।
उनींद (स्त्री०) कच्ची नींद, अधूरी निद्रा।
उनींदा दे० (गु०) नींद से भरा हुआ, ऊँघता हुआ।
उन्नत तत्० (गु०) [उत्+नम्+क्त] वर्द्धित, उच्च, उत्तुङ्ग, ऊँचा, श्रेष्ठ।—नाभि (गु०) उच्च नाभियुक्त।—ानत (गु०) ऊँचानीच स्थान आदि, ऊभड़खाभड़।
उन्नति तत्० (स्त्री०) [उत्+नम्+क्ति] समृद्धि वृद्धि, उच्चता, बढ़ती, उदय, गरुड़ भार्या।
उन्नमित तत्० (गु०) [उत्+नम्+क्त] उत्तोलित, ऊपर उठाया गया, ऊर्ध्वीकृत।
उन्नयन तत्० (गु०) ऊर्ध्वप्रयाण, उत्तोलन, ऊपर ले जाना। [निद्रा रहित।
उन्निद्र तत्० (गु०) प्रफुल्ल, विकसित, प्रकाशित,
उन्मत्त तत्० (गु०) [उत्+मद्+क्त] उन्मादयुक्त, वायु के द्वारा चित्त विभ्रमी, बौरहा, पागल, मतवाला।
उन्मद तत्० (गु०) [उत्+मद्+अल्] उन्मादयुक्त, प्रमादी, सिड़ी, उन्मत्त।
उन्मना तत्० (गु०) [उत्+मनस्] उत्कण्ठित चित्त, चिन्तित, व्याकुल, चञ्चल।
उन्माद तत्० (पु०) पागलपन, चित्तविभ्रम।—ी (गु०) उन्मादरोगयुक्त, विक्षिप्त।—क्षेत्र (पु०) वायुग्रस्त, पागल।
उन्मान तत्० (पु०) परिमाण, तौल, नाप।
उन्मिषित तत्० (गु०) [उत्+मिष+क्त] प्रफुल्ल, विकसित, फूला हुआ, खुला हुआ।
उन्मीलन तत्० (पु०) उन्मेष, प्रकाश, आँख खोलना।
उन्मीलित तत्० (गु०) प्रस्फुटित, खुला हुआ।
उन्मुख तत्० (पु०) ऊर्ध्वमुख, ऊपर मुँह किये हुए, उत्कण्ठित, उत्सुक। [देने वाला।
उन्मूलक तत्० (गु०) उन्मूलनकारी, समूल उखाड़
उन्मूलन तत्० (पु०) [उत्+मूलन+अनट्] उत्पाटन, उखाड़ना, ऊपर खींचना, मटियामेट करना।
उन्मेष तत्० (पु०) नयन उन्मीलन, विकाश, प्रकाश, ज्ञान, बुद्धि, पलक।
उन्मोचन तत्० (पु०) परित्याग करना, मुक्त करना।
उन्हारा तत्० (पु०) डील डौल, रूप।
उप तत्० (उपसर्ग) उपसर्ग विशेष। जिसमें यह लगती है, उनमें समीपता, सामर्थ्य, गौणता, या न्यूनता बोधक अर्थ का बोध होता है।—कण्ठ (गु०) निकट, समीप, (पु०) ग्राम के समीप, अश्वों की गति विशेष।—कथा (स्त्री०) आख्यायिका, इतिहास, पुराण, कहानी, कल्पित कथा।—करण (पु०) सामग्री, परिच्छेद, राजाओं का छत्र, चामर आदि, भोजन के लिये व्यञ्जन आदि, नैवेद्य पुष्प धूप आदि पूजा के लिये सामग्री, अप्रधान द्रव्य, साधक वस्तु सामग्री।
उपकार तत्० (पु०) [उप+कृ+घञ्] भलाई,

हित, नेकी, सलूक।—क (गु०) उपकारी, आनुकूल्यकारी, सहाय प्रदाता, कृपावन्त।
उपकारिका तद्० (वि०) [उप्+कृ+इक्+आ] उपकार करने वाली (स्त्री०) राजभवन, तम्बू।
उपकारी तद्० (वि०) उपकार करने वाला, उपकारविशिष्ट, उपकारक, नेकी करने वाला, सहायक, भला करने वाला। [दाता।
उपकारेच्छु तद्० (गु०) उपकार करने का अभिलाषी,
उपकार्य तद्० (गु०) [उप्+कृ+ध्यण्] उपकारोचित, जिसका उपकार किया जाय।—ा (स्त्री०) राजसदन, राजगृह, अन्न रखने का स्थान, गोला।
उपकुर्वाण तद्० (पु०) कुछ दिन के लिये ब्रह्मचारी, विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य समाप्त करने के अनन्तर जो गृहस्थ होते हैं।
उपकूप तद्० (पु०) कूप के समीप का जलाशय, जो पशुओं के जल पीने के लिये बनाया जाता है।
उपकूल तद्० (पु०) नदी, तालाब आदि का तीर।
उपकृत तद्० (गु०) कृतोपकार, जिसकी सहायता की गई है। [उद्योग, आद्यकृति, प्रथम आरम्भ।
उपक्रम तद्० (पु०) [उप+क्रम+घञ्] आरम्भ,
उपक्रान्त तद्० (गु०) समारब्ध, अनुष्ठित, कृतारम्भ, आरम्भ किया हुआ, प्रस्तुत।
उपक्रोश तद्० (पु०) [उप+क्रुश्+अच्] निन्दा, कुत्सा, भर्त्सना, गर्हण।
उपखान तद्० (पु०) कथा, इतिहास, उपाख्यान।
उपगत तद्० (गु०) [उप+गम्+क्त] प्राप्त, अङ्गीकृत, स्वीकृत।
उपगमन तद्० (पु०) आगमन, योग, प्रीति, अङ्गीकार, निकट गमन।
उपगुरु तद्० (पु०) छोटा अध्यापक, अप्रधान गुरु, उपदेशक, शिक्षागुरु। [अँकवार, भेंट।
उपगूहन तद्० (पु०) [उप+गुह+अनट्] आलिङ्गन,
उपग्रह तद्० (पु०) बँधुआ, कैदी, ग्रह विशेष, अप्रधान ग्रह। [आघात।
उपघात तद्० (पु०) [उप+हन्+घञ्] रोग, पीड़ा,
उपङ्ग तद्० (पु०) बाजा, वाद्यविशेष।
उपचय तद्० (पु०) [उप+चि+अल्] वृद्धि, उन्नति, आधिक्य, बढ़ती।

उपचरित तद्० (पु०) [उप+चर्+क्त] उपासित, सेवित, आराधित, उपाय से जाना हुआ।
उपचर्या तद्० (स्त्री०) [उप+चर्+क्यप्] चिकित्सा, रोगों का उपशम, प्रतिकार, शुश्रूषा।
उपचार तद्० (पु०) [उप+चर्+घञ्] उपाय, सेवा, रोगों की चिकित्सा, उपकरण, शुश्रूषा, उपक्रम, व्यवहार, उत्कोच, घूंस।—ी तद्० (गु०) उपचार करने वाला, चिकित्सा करने वाला। [सञ्चित, इकट्ठा।
उपचित तद्० (गु०) [उप+चि+क्त] समृद्ध, वर्द्धित,
उपज तद्० (पु०) सूझ, स्फूर्ति, फुरन, उत्पत्ति, पैदावार।
उपजत तद्० (पु०) उपार्जित, घटित, उत्पन्न।
उपजना तद्० (क्रि०) उगना, बढ़ना, अङ्कुर होना, उत्पन्न होना।
उपजहिं (क्रि०) उपजते हैं, उत्पन्न होते हैं, जन्मते हैं।
उपजाऊ तद्० (गु०) उपजनेहारा, उर्वर, ज़रखेज़।
उपजाना (क्रि०) उत्पन्न कराना, लिखना।
उपजाये (क्रि०) पैदा किये, निकाले, उत्पन्न किये।
उपजित तद्० (गु०) उत्पन्न हुआ, उपजा।
उपजिह्वा तद्० (स्त्री०) छुद्रा जिह्वा, छोटी जीभ।
उपजीविका तद्० (स्त्री०) जीविका, वृत्ति जीवनोपाय, अवलम्ब। [दूसरे के सहारे रहने वाला।
उपजीवी तद्० (गु०) अवलम्बी, आश्रयी, अनुगत,
उपज्ञा तद्० (स्त्री०) आद्य ज्ञान, प्रथम ज्ञान, उपदेश के बिना ईश्वरदत्त प्रथम ज्ञान।
उपटन (पु०) उबटन। [उखड़ना।
उपटना तद्० (पु०) आघात, निशान पड़ना,
उपड़ना तद्० (क्रि०) उखड़ना, उपटना।
उपढौकन तद्० (पु०) [उप+ढौक्+अनट्] पारितोषिक द्रव्य, उपहार, भेंट।
उपतन्त्र तद्० (पु०) [उप+तन्त्र] यामल आदि तन्त्रशास्त्र, सूक्ष्म सूत्र। [दुःखित, खेदित।
उपतप्त तद्० (गु०) [उप्+तप्+क्त] सन्तापित,
उपतारा तद्० (स्त्री०) क्षुद्र नक्षत्र, नेत्रगोलक।
उपत्यका तद्० (स्त्री०) पर्वतों के समीप की भूमि, तराई। [रोग, मद्यपान, सर्पदंश।
उपदंश तद्० (पु०) गर्मी सुज़ाक, रोग विशेष, भेद

उपदल तद्० (पु०) मुकुल, पत्ता, पान, पुष्प दल, फूल की पत्ती।

उपदर्शक तद्० (पु०) द्वारपाल, प्रहरी।

उपदा तद्० (स्त्री०) उपढौकन, भेंट, उपायन, दर्शन।

उपदिशा तद्० (स्त्री०) कोण, दो दिशाओं के बीच की दिशा।

उपदिष्ट तद्० (गु०) [उप+दिश्+क्त] उपदेश प्राप्त, [कृतोपदेश, ज्ञापित।

उपदेवता तद्० (पु०) भूत, प्रेत, छोटे देवता विशेष।

उपदेश तद्० (पु०) [उप+दिश्+अल्] शिक्षा, मंत्रदान, दीक्षा, हित कथन, सीख, सिखावन, नसीहत।—कारी (पु०) उपदेशकर्त्ता, उपदेश करनेवाला, उपदेष्टा, शिक्षक।

उपदेशक तद्० (पु०) उपदेश देनेवाला, नसीहत देने [वाला।

उपदेश्य तद्० (गु०) [उप+दिश्+य] उपदेष्टव्य, उपदेश योग्य, उपदेश के अधिकारी।

उपदेष्टा तद्० (पु०) [उप+दिश्+तृच्] उपदेश-कर्त्ता, आचार्य, शिक्षक, शिक्षागुरु।

उपद्रव तद्० (पु०) उत्पात, अन्याय, बखेड़ा, उपाधि, ऊधम, अन्धेर, विद्रोह।—ी (गु०) उपद्रव करने वाला, बखेड़िया।

उपद्वीप तद्० (पु०) छोटा द्वीप, जलव्याप्त स्थान, [जलमध्यवर्ती स्थान।

उपधर्म तद्० (पु०) पाखण्ड, पाप, नास्तिकता।

उपधातु (स्त्री०) अप्रधान धातु, तूतिया, सोना मक्खी, कासा आदि, शरीर के अंदर रस से बने पसीना, चर्बी आदि।

उपधान तद्० (पु०) [उप+धा+अनट्] तकिया, उसीसा, सिरहाना।

उपधायक तद्० (गु०) [उप+धा+णक्] जन्म-दाता, स्थापनकर्त्ता।

उपाधि तद्० (पु०)[उप+धा+कि] कपट, छल, जान बूझ कर और का और कहना।

उपनीत तद्० (गु०) [उप+नम्+क्त] उपस्थित, प्राप्त, समीप, आनीत।

उपनय तद्० (पु०) [उप+नी+अल्] समीप ले जाना, उपनयन, गृह्योक्त विधान के अनुसार वेदाभ्यास के लिये बालक को गुरु के समीप ले जाना, न्यास का एक पारिभाषिक शब्द, (व्याप्ति विशिष्ट हेतु में पक्षगतधर्मों का प्रतिपादक वाक्य।)

उपनयन तद्० (पु०) [उप+नी+अनट्] त्रिवर्ण का यज्ञसूत्र धारण संस्कार, उपवीत संस्कार।

उपनाम तद्० (पु०) पदवी, पद्धति, उपाधि, अल्ल, अटक।

उपनिधि तद्० (पु०) थाती, धरोहर, न्यस्त वस्तु, [स्थापित द्रव्य।

उपनिवेश तद्० (पु०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ बसना, अन्य स्थान से आकर बसने वालों की बस्ती, कालोनी।

उपनिषद् तद्० (स्त्री०) [उप+नि+पद्+क्विप्] धर्म, वेदान्त-शास्त्र, निर्जन स्थान, तत्त्व ज्ञान, वेद का शिरोभाग, ब्रह्मविद्या, वेदरहस्य।

उपनिषध तद्० (स्त्री०) देखो उपनिषद्।

उपनीत तद्० (पु०) कृतोपनयन (गु०) निकट प्राप्त, उपस्थित, समीपागत, उपवीती।

उपनेता तद्० (पु०) [उप+नी+तृच्] आनयनकारी, उपस्थापक, लानेवाला, गुरु, आचार्य।

उपनेत्र तद्० (पु०) चश्मा, नेत्रों का सहायक।

उपन्ना दे० (पु०) उपरना, ओढ़ने का दुपट्टा। [हुआ।

उपन्यस्त तद्० (गु०) निक्षिप्त, न्यासीकृत, धरोहर रखा

उपन्यास तद्० (पु०) [उप+नी+अस्+घञ्] वाक्योपक्रम, प्रस्तावना, उपकथा, कहानी, गद्य काव्य विशेष।

उपपति तद्० (पु०) जार, गुप्तपति, अगुवा, नायक विशेष, यथा—

"जो परनारी के रसिक उपपति ताहि बखान।"

—रसराज

उपपत्ति तद्० (स्त्री०) [उप+पद्+क्ति] सङ्गति, समाधान, घटना, प्राप्ति, सिद्धि, चरितार्थ होना, हेतु, युक्ति।

उपपत्नी तद्० (स्त्री०) वेश्या, परस्त्री, रखनी।

उपपन्न तद्० (गु०) [उप+पद्+क्त] पहुँचा हुआ प्राप्त, लब्ध, युक्त, मुनासिब।

उपपातक तद्० (पु०) छोटा पाप, साधारण पाप, (मनुस्मृति में परस्त्रीगमन, गुरुसेवा, त्याग, आत्म-विक्रय, गोवध आदि को उपपातकों में माना है।)

उपपादन तद्० (पु०) [उप+पद्+णिच्+अनट्] साधन, सिद्ध करना, ठहराना, युक्ति देकर समाधान करना।

उपहृत तद्० (गु०) [उप+हन्+क्त] नष्ट उत्पात ग्रस्त, आघात प्राप्त हत, अशुद्ध द्रव्य।

उपहसित तद्० (गु०) [उप+हस्+क्त] उपहास प्राप्त, विद्रूप। [ढौकन द्रव्य, सौगात।

उपहार तद्० (पु०) [उप+हृ+घञ्] भेंट, नज़र, उप

उपहास तद्० (पु०) [उप+हस्+घञ्] परिहास, निन्दार्थ वाक्य, विद्रूप, हँसी, ठट्ठा, दिल्लगी, बेइज्ज़ती।

उपहास्य तद्० (गु०) [उप+हस्+ण्यत्] हँसनीय, निन्दनीय।—ता (स्त्री०) निन्दा, गर्हा, कुत्सा, दुष्कीर्ति।

उपहित तद्० (गु०) [उप+धा+क्त] स्थापित।

उपहृत तद्० (गु०) [उप+हृ+क्त] आनीत, दत्त।

उपांशु तद्० (पु०) जपविशेष, निर्जनस्थ, असङ्ग।

उपाइ दे० (क्रि०) उपजाई, गढ़ी, बनाई, रची।

उपाऊ (पु०) उपाय, इलाज, यत्न।

उपाकर्म तद्० (पु०) आरम्भ, वर्षाकाल के बाद वेद प्रारम्भ करने का समय, संस्कार विशेष।

उपाख्यान तद्० (पु०) [उप+आ+ख्या+अनट्] पूर्व वृत्तान्त कथन, आख्यान, इतिहास, कथा के भीतर की कथा। [क्षुद्रभाग, अवयव।

उपाङ्ग तद्० (पु०) अप्रधान भाग, तिलक टीका,

उपाड़ना तद्० (क्रि०) उखाड़ना, उखलना, नोचना।

उपात्त तद्० (गु०) गृहीत, प्राप्त।

उपादान तद्० (पु०) [उप+आ+दा+अनट्] ग्रहण, स्वीकार, ज्ञान, परिचय, बोध, अपने अपने विषयों की ओर इन्द्रियों का जाना, प्रत्याहार, प्रवृत्तिजनक ज्ञान, न्यायमत में समवायी कारण।

उपादेय तद्० (गु०) [उप+आ+दा+य] ग्राह्य उत्तम, ग्रहण योग्य, उत्कृष्ट, विधेयकर्म।—ता (स्त्री०) उत्तमता, उत्कर्षता।

उपाधा तद्० (पु०) उपद्रव, अन्याय, उत्पात।

उपाधि तद्० (पु०) छल, पदवी, ख़िताब, चिह्न उपनाम, यत्न।

[illegible] तद्० (गु०) [illegible], उपद्रवी, अधर्मी।

[illegible]) [उप+अधि+इङ्+घञ्] [illegible] का एक भेद।

उपाध्यायी तद्० (स्त्री०) अध्यापकभार्या, पढ़ाने वाली, अध्यापिका, गुरु पत्नी।

उपानत तद्० (स्त्री०) उपानह, पादुका, जूती।

उपानह (पु०) पादुका, जूता।

उपाना तद्० (क्रि०) उपार्जन करना, पैदा करना।

उपान्त तद्० (गु०) निकट, समीप, अन्तिक, पास।

उपारी (क्रि०) उखाड़ी, नोचली। [चेष्टा, प्रतीकार।

उपाय तद्० (पु०) [उप+आ+इ+अल्] साधन,

उपायन तद्० (पु०) [उप+अय्+अनट्] उपहार, उपढौकन, भेंट, सौगात, नज़राना, व्रत की प्रतिष्ठा, समीप गमन।

उपाया दे० (क्रि०) देखो उपराग।

उपायी तद्० (गु०) उपाय करने वाला, उपार्जक, खोजी, सन्धानी, यत्नी।

उपारना (क्रि०) देखो उपाड़ना।

उपार्जन तद्० (पु०) [उप+अर्ज+अनट्] अर्ज्जन, धनादि सञ्चय, धनआहरण, लाभकरण, एकत्रित करण।

उपार्ज्जित तद्० (गु०) [उप+अर्ज्ज+क्त] सञ्चित, कमाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ।

उपालम्भ तद्० (पु०) [उप+आ+लभ्+अञ्] उलहना, निन्दा, शिकायत।

उपास तद्० (पु०) उपवास, अनाहार, भोजनाभाव।

उपासक तद्० (पु०) [उप+आस्+णक्] उपासनाकर्त्ता, आराधक, भक्त।

उपासन तद्० (पु०) [उप+आस+अनट्] शुश्रूषा, सेवा, आनुगत्य, आराधना, धनुर्विद्या।

उपासना तद्० (पु०) [उप+आस्+अन्+आ] सेवा, शुश्रूषा, परिचर्या, आराधना, टहल, भक्ति।

उपासित तद्० (पु०) [उप+आस्+क्त] आराधित, सेवित, पूजित। [भक्त उपासना करने वाला।

उपासी तद्० (गु०) उपासा, भूखा, उपवासी, सेवक,

उपास्य तद्० (गु०) [उप+आस्+य] आराध्य, सेव्य, पूजने योग्य। [त्याग, अनादर, तिरस्कार।

उपेक्षा तद्० (स्त्री०) [उप+ईक्ष्+अ] अस्वीकार,

उपेक्षित तद्० (गु०) [उप+ईक्ष्+क्त] तिरस्कृत, निन्दित, परित्यक्त। [एकत्रित, समागम, आसक्त।

उपेत तद्० (गु०) [उप+इ+क्त] युक्त, मिश्रित,

उपेन्द्र तत्० (पु०) वामन, इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार, जो अदिति के गर्भ से हुआ था।—वज्रा तत्० (स्त्री०) वृत्त विशेष।
उपोद्घात तत्० (पु०) [उप्+उद्+हन्+घञ्] ग्रन्थ के आरम्भ का वक्तव्य, भूमिका, नव्य न्याय की ६ सङ्गतियों में से एक। [कड़ाका, उपवास।
उपोषण तत्० (पु०) [उप्+वस्+अनट्] अनाहार,
उफनना दे० (क्रि०) उबलाना, उथलना, उफनाना।
उफान दे० (पु०) उबाल, उफाल।
उबकना दे० (पु०) वमन करना, ओकना, कै करना, उलटी करना, रद्द करना।
उबका दे० (पु०) वमन, कै, (क्रि०) वमन की, कै की।
उबकाई दे० (स्त्री०) वर्षाट, वक्षाल, मचलाई।
उबटन दे० (पु०) उपटन, मज्जन, बाँटना, अभ्यङ्ग, उपटन।
उबटि (क्रि०) उबटन लगा कर।
उबरण तद्० (पु०) उद्वर्तन, बचाव, आड़।
उबर दे० (क्रि०) बचकर, शेष रह कर, बढ़ कर।
उबरा तद्० (वि०) बचा हुआ, फालतू।
उबलना दे० (क्रि०) सींजना, खलबलाना पड़ना ऊपर की ओर आना, उफनाना।
उबसना दे० (क्रि०) सड़ना, गलना, पचना।
उबहन (स्त्री०) कुएं से पानी खींचने की रस्सी।
उबाना तद्० (क्रि०) बोना, रोपना, लगाना, तंग करना (गु०) बिना जूतों का नंगे पैर।
उबारना तद्० (क्रि०) छोड़ना, बचाना, राखना।
उबारा (क्रि०) बचा लिया, उद्धार किया।
उबालना दे० (क्रि०) उसीजना, उसेवना, रींधना।
उबासी दे० (स्त्री०) जंभाई।
उभ (पु०) ऊर्ध्व, ऊपर, द्वि, दो।
उभइ तद्० (गु०) उभय, दोनों।
उभक तद्० (पु०) रीछ, भालू, भल्लूक। [परस्पर।
उभय तत्० (गु०) युगल, युग्म, दो, दोनों, द्वि,
उभयतः तत्० (अ०) पार्श्वतः, पार्श्वद्वय, दोनों ओर से।
उभयत्र तत्० (अ०) दोनों स्थानों में, दोनों तरफ़।
उभरना तद्० (क्रि०) उठना बढ़ना, उवरना, निकलना, निकल आना।
उभराई तद्० (पु०) इतराई, फुलाहट।
उभराना तद्० (क्रि०) बहुत भराना, छकाना।
उभाड़ना तद्० (क्रि०) उकसाना, उत्तेजित करना।
उभाना तद्० (क्रि०) उठाना, खड़ा करना, उत्थित करना, ऊपर उठाना।
उभार तद्० (पु०) गुमड़ा, फुलावट, उठान [करना।
उभारना तद्० (क्रि०) फुलाना, उरकाना, उत्तेजित
उभौ तत्० (गु०) दो, दोनों, आपस में।
उमगत (गु०) प्रसन्न होते हुए। [आनन्दाधिक्य, हृष्टता।
उमङ्ग तद्० (पु०) मस्तता, मौज, उल्लास, लहर,
उमङ्गना तद्० (क्रि०) आनन्द से आगे जाना, उत्साह पूर्वक आगे बढ़ना।
उमङ्गी तद्० (गु०) उच्चपदाभिलाषी।
उमड़ना तद्० (क्रि०) उभरना, परिवृद्ध होना उमड़ना, बढ़ कर रहना वेग से बढ़ना।
उमर दे० (स्त्री०) आयु, वय।
उमरी तद्० (स्त्री०) वह पौधा जिसे जलाकर सज्जी खार तैयार किया जाता है। [लगती है।
उमस तद्० (स्त्री०) गरमी जो हवा न चलने पर
उमहना तद्० (क्रि०) उमड़ना, उभड़ना, उठना।
उमा तत्० (स्त्री०) [उ+मा+आ] दुर्गा, अतसी, कीर्ति, हरिद्रा, कान्ति, शान्ति, भगवती, पार्वती, महादेव की स्त्री पार्वती, यह हिमालय की कन्या थी मैना के गर्भ से इसका जन्म हुआ था, पूर्व जन्म में यह दक्ष प्रजापति की कन्या थी, दक्ष से महादेव की निन्दा सुन इसने अपना देह त्याग किया, तदनन्तर हिमालय के यहाँ उत्पन्न हुई। शिव को पति पाने के लिये इसने कठोर तपस्या की, इसकी कठोर तपस्या देख माता ने "उमा" तपस्या मत करो, वारण किया, इसी कारण इसका नाम उमा हुआ।—पति (पु०) शिव, महादेव। —सुत (पु०) कार्तिकेय और गणेश।
उमेठन (स्त्री०) ऐंठन, पेंच, मरोड़।
उमेश (पु०) [उमा+ईश] महादेव, शिव।
उम्दा दे० (गु०) उत्तम, बढ़िया, अच्छा।
उम्मी दे० (स्त्री०) जौ गेहूँ की हरे दाने की बाल।
उम्मेद दे० (स्त्री०) आशा, भरोसा।—वार नौकरी पाने की आशा करने वाला।—वारी भरोसा आशा।

उपपुराण तत्० (पु०) छोटे पुराण। ये भी अठारह हैं इनके नाम ये हैं—सनत्कुमार, नारसिंह, नारदीय, शिव, दुर्वासा, कपिल, मानव, औशनस्, वारुण, कालिका, शाव, नन्दा, सौर, पराशर, आदित्य, माहेश्वर, भार्गव, वाशिष्ठ।

उपवर्ह तत्० (पु०) तकिया, बालिश, उपधान।

उपवर्हण या उपवहन (देखो उपवर्ह)।

उपवीत तत्० (पु०) जनेऊ, यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत ग्रहण, स्वीकार। [हुआ, भक्षित, भोगकृत, अधिकृत।

उपभुक्त तत्० (गु०) [उप+भुज्+क्त] भोग किया

उपभोक्ता तत्० (पु०) [उप+भुज्+तृच्] भोगकारी, स्वत्वाधिकारी।

उपभोग तत्० (पु०) [उप+भुज्+घञ्] भोजनातिरिक्त भोग, निर्वेश, विलास, विषयों का सुख आस्वादन।

उपमा तत्० (स्त्री०) समानता, बराबरी, सादृश्य, दृष्टान्त, तुल्यता, समानता, अर्थालङ्कार विशेष, जो सादृश्य होने से होता है।

उपमाता तत्०(स्त्री०) दूध पिलाने वाली, धाय, धात्री, माता के समान (गु०) उपमा करने वाला, चित्रकार।

उपमान तत्० (पु०) दृष्टान्त, सादृश्य, तुल्यता, प्रतिमूर्ति, जिस पदार्थ से उपमा दी जाये, (जैसे चन्द्र मुख में चन्द्र उपमान है), प्रमाण विशेष।

उपमित तत्० (गु०) उत्प्रेक्षित, तुल्यकृत, सम्भावित, जिसकी उपमा दी गयी हो।

उपमिति तत्० (स्त्री०) उपमा सादृश्य ज्ञान से उत्पन्न ज्ञान।

उपमेय तत्० (गु०) समतुल्य, दृष्टान्तयोग्य, उपमान के समान गुणयुक्त, वर्णनीय।

उपयम तत्० (पु०) विवाह, संयम।

उपयुक्त तत्० (गु०) योग्य, उचित, मुनासिब।

उपयोग तत्० (पु०) काम, व्यवहार, लाभ, प्रयोजन, आवश्यकता। [आने की योग्यता।

उपयोगिता तत्० (स्त्री०) फलसाधनता, काम में

उपयोगी तत्० (गु०) उपयुक्त, प्रयोजनीय, लाभकारी, अनुकूल।

उपर तत्० (गु०) ऊर्ध्व, ऊँचा। [राहुग्रस्त चन्द्र या सूर्य।

उपरक्त तत्० (गु०) विपद्, पीड़ा ग्रस्त, (पु०)

उपरत तत्० (पु०) विरत, शान्त, उदासीन, हटा हुआ, मरा हुआ।

उपरति तत्० (स्त्री०) विरति, निवृत्ति, मृत्यु, परित्याग, उदासीनता, उदासी। [ओढ़ने का वस्त्र।

उपरना तद्० (पु०) दुपट्टा, उत्तरीय वस्त्र, ऊपर से

उपरवार दे० (पु०) बाँगर ज़मीन, नदी के किनारे के ऊपर की ज़मीन।

उपराग तत्० (पु०) सूर्य या चन्द्र ग्रहण, राहुग्रहण, परिवाद, व्यसन, यंत्रणा, निन्दा।

उपराचढ़ी दे० (स्त्री०) एक ही चीज़ लेने के लिये कई आदमियों का प्रयत्न या उद्योग।

उपराजा तत्० (पु०) छोटे राजा, युवराज। (क्रि०) उगाया, उपजाया, उत्पन्न किया, बनाया, रचा, पैदा किया। [अनन्तर।

उपरान्त तत्० (अ०) पीछे, परे, पश्चात्, इसके

उपराम तत्० (पु०) निवृत्ति, विरति, विराम, आराम।

उपराला तद्० (पु०) सहायक, साथी।

उपरि तत्० (अ०) ऊर्ध्व, ऊपर।—दृष्टि (स्त्री०) तुच्छ देवता की दृष्टि, वायु का प्रकोप।

उपरिष्टात् तत्० (अ०) ऊपर, ऊर्ध्व।

उपरिस्थ तत्० (गु०) ऊर्ध्वस्थित, उपरस्थित, ऊपर का।

उपरी तद्० (गु०) ऊपर का, ऊपर सम्बन्धी, जोते खेत के ऊपर की मिट्टी, भूमि से उखाड़ी हुई माटी। (दे०) उपला, कंडी, छाता।

उपरुद्ध तत्० (गु०) रक्षित, प्रतिरुद्ध।

उपरोक्त (गु०) [उपरि+उक्त] ऊपर कथित, प्रथम उक्त, पहले कहा हुआ, उपर्युक्त।

उपरोध तत् (पु०) अटकाव, आड़, ढकना।

उपरोहित तत्० (पु०) कुलगुरु, पुरोधा, पुरोहित।

उपर्ना तद्० (पु) देखो, उपरना।

उपर्युक्त (गु०) उपरोक्त, प्रथम कहा हुआ।

उपर्य्युपरि तत्० (अ०) ऊर्ध्व ऊर्ध्व, ऊपर ऊपर, ऊपर के ऊपर।

उपर्ला तद्० (पु०) ऊपर का, बाहिर का। [बालू।

उपल तत्० (पु०) पाषाण, ओला, रत्न, मेघ, चीनी,

उपलक्ष तत्० (पु०) सङ्केत, चिन्ह, दृष्टि, उद्देश्य।

उपलक्षण तत्० (पु०) दृष्टान्त, सङ्केत अन्यार्थ बोधक।

उपलक्ष्य तत्० (गु०) देखो उपलक्ष ।
उपलब्ध तत्० (गु०) [उप+लभ्+क्त] प्राप्त, जाना हुआ।—ब्धि (स्त्री०) आख्यायिका, उपकथा।
उपलब्धि तत्० (स्त्री०) [उप+लभ्+क्ति] ज्ञान, अनुभव, मति, प्राप्ति। [गुहड़ा।
उपला या उपली तद्० (पु०) कंडा, छाना, उपरी,
उपल्ला तद्० (पु०) ऊपर का, ऊपर वाला भाग।
उपवन तत्० (पु०) उद्यान, आराम, कृत्रिम वन, मकान के निकट का छोटा बाग। [दिन विशेष।
उपवसथ तत्० (पु०) ग्राम, निवासस्थल, यज्ञ का
उपवास तत्० (पु०) [उप+वस्+घञ्] लङ्घन, अनाहार, दिनरात भोजनाभाव, कड़ाका, फ़ाक़ा।
उपवासी तत्० (गु०) [उप+वस्+णिन्] उपवास युक्त, अहोरात्र भोजनाभावविशिष्ट, उपोषी, व्रती।
उपविद्य तत्० (पु०) [उप+विद्+क्यप्] नाटक चेटक आदि शिल्पकारादि, शिल्पी।—ा (स्त्री०) शिल्प आदि विज्ञान शास्त्र। [कुचला आदि।
उपविष तत्० (पु०) कृत्रिम विष, न्यून विष, अफ़ीम,
उपविष्ट तत्० (गु०) [उप+विश्+क्त] आसीन, गृहीतासन, कृतोपवेशन, आसनस्थ, बैठा हुआ।
उपवीत तत्० (पु०) यज्ञसूत्र, जनेऊ।
उपवेद तत्० (पु०) प्रधान चार वेदों के अतिरिक्त वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, स्थापत्यवेद, ये ही चार उपवेद हैं। आयुर्वेद ऋग्वेद से, गान्धर्ववेद सामवेद से, धनुर्वेद यजुर्वेद से, और स्थापत्यवेद अथर्ववेद से निकले हैं। आयुर्वेद के आदि आचार्य ब्रह्मा इन्द्र धन्वन्तरि आदि हैं, गान्धर्ववेद के प्रचारक भरत मुनि, विश्वामित्र ने धनुर्विद्या का उपदेश किया, स्थापत्य वेद का विश्वकर्मा ने प्रचार किया, स्थापत्यवेद बहुत बृहत् था।
उपवेष्टन तत्० (पु०) [उप+विश्+अनट्] लपेटना, बसना, बस्ता, थामा।
उपवेशन तत्० (पु०) स्थिति, उपविष्ट होना, बैठना।
उपशम तत्० (पु०) [उप+शम्+अच्] शान्ति, समताई, समाई, समता, इन्द्रिय निग्रह, बदला, मनौवार।
उपशय तत्० (पु०) [उप+शी+अच्] निदान पञ्चक के अन्तर्गत रोगज्ञापक अनुमान।

उपशल्य तत्० (पु०) [उप+शल्+य] ग्रामान्त, ग्राम की सीमा, भाला।
उपश्रुत तत्० (गु०) [उप+श्रु+क्त] प्रतिश्रुति, अङ्गीकृत, स्वीकृत, वाग्दत्त।
उपसंहार तत्० (पु०) [उप+सं+हृ+घञ्] शेष, नाश, निष्कर्ष, मीमांसा, आक्रम, संग्रह, संक्षेप, व्यतीत।
उपस तद्० (पु०) दुर्गन्धि।
उपसत्ति तत्० (स्त्री०) [उप+सद्+क्ति] उपासना सेवा विनय पूर्वक गुरु समीप गमन।
उपसना तद्० (क्रि०) सड़ना, पचना।
उपसर्ग तत्० (पु०) [उप+सृज्+घञ्] रोगभेद, उपद्रव, पीड़ा, दैवी उत्पात, अव्यय विशेष, जो शब्द के पूर्व जोड़ने से उस शब्द में अर्थ की विशेषता करता है। [उपद्रव, गौणवस्तु, त्याग।
उपसर्जन तत्० (पु०) [उप+सृज्+अनट्] ढालना,
उपसर्पण तत्० (पु०) [उप+सृप्+अनट्] उपासना, अवगमन, अनुसृति।
उपसागर (पु०) खाड़ी।
उपसाली तत्० (स्त्री०) रखेली, उपपत्नी।
उपस्थ तत्० (पु०) [उप+स्था+क] स्त्री एवं पुरुष का चिन्ह विशेष, निचला या मध्य शरीर का भाग, पेड़ू, गोद।—निग्रह (पु०) जितेन्द्रियत्व, कामदमन। [पेड़ू।
उपस्थल या उपस्थली तत्० (पु०) चूतड़, कूल्हा,
उपस्थाता तत्० (पु०) [उप+स्था+तृच्] भृत्य, सेवक।
उपस्थान तत्० (पु०) [उप+स्था+अनट्] निकट आना, उपासना, जो खड़े होकर की जाय, पूजा का स्थान, सभा, समाज।
उपस्थापन तत्० (पु०) [उप+स्था+णिच्+अनट्] उपस्थित करण, निकट आनयन।
उपस्थित तत्० (गु०) [उप+स्था+क्त] समीप, स्थित, आगत, आनीत, उपनीत, उपसन्न, वर्तमान, हाज़िर।—वक्ता (पु०) सद्वक्ता, वचन पटु।—कवि (पु०) शीघ्र कवि, आशुकवि।
उपस्थिति तत्० (स्त्री०) [उप+स्था+क्ति] उपस्थान, निकट होना, हाज़िरी, प्राप्ति, मौजूदगी।

उम्र दे० (पु०) उमर, वय, अवस्था ।

उयेउ (क्रि०) उगा, उदय हुआ, निकला, देख पड़ा, प्रकाशित हुआ ।

उर तद्० (पु०) वक्षस्थल, छाती, हिया, हृदय ।—क्षत (पु०) [उरस्+क्षत] फुप्फुस की पीड़ा, हृदय व्याधि, छाती का घाव । [नाग, भुजङ्ग ।

उरग तद्० (पु०) [उरस्+गम्+ड] अहि, सर्प,

उरगना तद्० (क्रि०) सहना, सहन करना, भोगना ।
यथा—
" आइ शरण कहाँपी करे जिय, भाव सुनो
जो दुख देय, सो ले उरगो बात सुनो "
—रामचन्द्रिका ।

उरभ्र तद्० (स्त्री०) भेड़ी । [वाहन ।

उरगाद तद्० (पु०) सर्पभक्षक, गरुड़, विष्णु का

उरगारि तद्० (पु०) [उरग+अरि] गरुड़, नागरिपु, वैनतेय, सर्पों के खाने वाला, सर्पशत्रु ।

उरज तद्० (पु०) कुच, स्तन, पयोधर ।

उरझना तद्० (क्रि०) अटकना, लगना, सक्त होना, आसक्त होना ।

उरद (पु०) माष, अन्न विशेष ।

उरबसी तद्० (स्त्री०) संस्कृत में उर्वशी, अतिप्रिय, हृदय में वास करने वाली, देवाङ्गना विशेष, एक अप्सरा का नाम, नारायण की जङ्घा से यह उत्पन्न हुई थी, श्वेतद्वीप में नर नारायण की तपस्या भङ्ग करने के अर्थ इन्द्र की अप्सरायें वहाँ गयीं, तब नारायण ने उर्वशी की सृष्टि की उर्वशी की सौन्दर्य देख कर और अप्सरायें लज्जित हो गयीं और लौट गयीं ।

उरमिला तद्० (स्त्री०) ऊर्मिला, लक्ष्मण जी की स्त्री का नाम, राजा सीरध्वज जनक की कन्या ।

उरविजा तद्० (स्त्री०) भूमिसुता, पृथ्वी से उत्पन्न, जानकी, पृथ्वी की कन्या, सीता, रामप्रिया ।

उररी तत् (अ०) स्वीकार, अङ्गीकार ।—कार (पु०) स्वीकार ।—कृत (गु०) अङ्गीकृत, स्वीकृत ।

उरस (पु०) छाती, हृदय, वक्षस्थल । (गु०) नीरस, फीका । [त्राण, कवच, बख्तर ।

उरस्त्राण तत्० (पु०) [उरस्+त्रै+अनट्] वक्ष-

उरहना दे० (पु०) उलहना, शिकायत ।

उरा तद्० (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि ।

उराहना दे० (पु०) देखो उरहना । [छुटकारा ।

उरिण या उरिन दे० (वि०) उऋण, ऋण से

उरु तत्० (गु०) [उर्+उ] विशाल, श्रेष्ठ, बड़ा । (पु०) जङ्घा, जाँघ ।—पथ (पु०) महापथ, राजमार्ग । —व्यघा (पु०) राक्षस, निशाचर ।

उरुगाद तद्० (पु०) गरुड़, सर्प शत्रु ।

उरुगाय तत्० (पु०) [उरु+इ+घञ्] श्रीकृष्ण, विष्णु, स्तुति, प्रशंसा, सूर्य । [तीसरा वर्ण ।

उरुज तत्० (पु०) [उरु+जन्+ड] वैश्य, बनियाँ,

उरेय दे० (स्त्री०) उत्सवप्रथा, बजना ।

उरेह (पु०) चित्रकारी, नक्काशी ।

उरेहना (क्रि०) खींचना, रचना, रङ्गना, लगाना ।

उरोज तत्० (पु०) [उरस्+जन्+ड] स्तन, कुच, पयोधर । [उत्कृष्ट ।

ऊर्जित तत्० (गु०) [ऊर्ज+क्त] वर्द्धित, उन्नत,

ऊर्णा तत्० (स्त्री०) भेड़ आदि का रोम, ऊन ।

उर्द तद्० (पु०) उड़द, उरद, माष, कलाई ।

उर्दबिम्बी तद्० (स्त्री०) अन्तःपुर-रक्षिका, रनिवास की पहरुई ।

उर्दू (स्त्री०) मुसलमानी भाषा ।

उर्वर तत्० (गु०) [उरु+ऋ+अच्] शस्ययुक्त स्थान, शस्यान्वित देश, उपजाऊ भूमि ।

उर्वरा तत्० (स्त्री०) उपजाऊ भूमि ।

उर्वशी तत्० (स्त्री०) देखो उरबसी ।

उर्विजा (स्त्री०) भूमिसुता, जानकी, सीता ।

उर्वी तत्० (स्त्री०) [उरु+ई] पृथ्वी पृथिवी, धरणी, धरती ।—धर (पु०) पर्वत, शेषनाग ।

उलङ्ग तत्० (गु०) नग्न, विवस्त्र, दिगम्बर, वस्त्र रहित ।

उलचना तद्० (क्रि०) छानना, घुसाना, धसाना ।

उलझन तद्० (स्त्री०) फँसना, अटकाव, असमावेश ।

उलझना तद्० (क्रि०) फँसना, लिपटना, झगड़ना ।

उलझेड़ा तद्० (क्रि०) उलझन, उलझाव ।

उलटना तद्० (पु०) पलटना, औंधाना, विपरीत करना, दोहराना, मोड़ना, नीचे ऊपर करना ।

उलट पलट, उलट पुलट या उलटा पलटी तद्० (क्रि० वि०) गटपट, तले ऊपर, इधर का उधर, हेर फेर, गड़बड़ी ।

उलटा तद्० (गु०) औंधा, पलटा हुआ, विपरीत, फेरा हुआ।

उलथना तद्० (क्रि०) लहराना, डुलना।

उलथा दे० (पु०) अनुवाद, भाषान्तरकरण, अनुकरण, रागिनी विशेष।

उलरना दे० (क्रि०) लेटना, शयन करना।

उललना दे० (क्रि०) ढरकना, उतरना।

उलहना तद्० (पु०) निन्दा, दोष, उपालम्भ, गिल्ला, उगना।—देना (क्रि०) उपालम्भ करना, पुकारना, शिकायत करना, निन्दा करना।

उलार दे० (वि०) जिसका भाग भारी हो।

उलाहना तद्० (पु०) उलहना, उपालम्भ, शिकायत।

उलीचना दे० (क्रि०) उँडेलना, जल फेंकना।

उलीचा दे० (क्रि०) उलचा, थोड़ा थोड़ा करके जल निकालना, जलनिस्सारण, उछालकर जल निकालना।

उलूक तत्० (पु०) उल्लू, पेचक, उलुआ।

१—कौरव पक्षीय योद्धा विशेष, महाभारत युद्ध के पहले दुर्योधन का दूत होकर यह युधिष्ठिर के पास गया था, शकुनि की अनुमति से दुर्योधन ने पाण्डवों को युद्धार्थ आह्वान किया था, युद्ध के अठारहवें दिन यह सहदेव के द्वारा मारा गया था।

२—वैशेषिक दर्शन प्रणेता, इनका दूसरा नाम कणाद था, इसी कारण वैशेषिक दर्शन को औलूक्य और काणाद दर्शन कहते हैं। यह खृष्टाब्द के १०० वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए थे।

उलूखल तत्० (पु०) ओखली, उलूखल, ओखरी।

उलूपी तत्० (स्त्री०) नागकन्या अर्जुन की पत्नी और कौरव्य नामक नाग की कन्या। [परामठे।

उलेटा दे० (पु०) पराठा, परतदार मोटी पूरी, पलटा,

उलेड़ना दे० (क्रि०) ढरकाना, ढालना, खाली करना।

उल्का तत्० (स्त्री०) लूका, तारे का गिरना, आकाश से जो एक प्रकार का अङ्गार सा गिरता है, अग्निपिण्ड।—पात (पु०) तारा टूटना, लूका गिरना, अशुभसूचक चिन्ह, आश्चर्य।—मुखी (स्त्री०) श्रृगाली, गीदड़ी, सियारिन।

उल्मुक तत्० (पु०) लूका, कोयला, अङ्गारा।

उल्लङ्घन तत्० (पु०) लाँघना, न मानना।

उल्लास तत्० (पु०) [उत्+लस्+घञ्] हुलास, प्रसन्नता, हर्ष।

उल्लू तद्० (पु०) देखो उलूक।—पन (उ०) मूर्खता, गँवारपन, उजड्डपन।

उल्लेख तत्० (पु०) [उत्+लिख+अल्] लेख, वर्णन, चर्चा कथन, प्रसङ्ग।

उल्लेखन तत्० (पु०) [उत्+लिख्+अनट्] वमन, खनन, कथन, उच्चारण।

उल्लेखित तत्० (गु०) [उत्+लिख्+क्त] प्रस्तावित, कथित, उक्त, कहा हुआ। [चाँदनी, उजियारी।

उल्लोच तत्० (पु०) [उत्+लुच्+अल्] चन्द्रातप,

उल्लोल तत्० (पु०) महातरङ्ग, कल्लोल, बड़ी भारी लहर, हिलोर। [का एक पुत्र।

उल्वण तत्० (पु०) गर्भावेष्टन, झाली, जरायु, वशिष्ठ

उशना तत्० (पु०) शुक्राचार्य, भार्गव, दैत्यगुरु।

उशीनर तत्० (पु०) देश विशेष, चन्द्रवंशीय राजा विशेष।

उशीर तत्० (स्त्री०) खसखस, सुगन्धितृण।

उषा तत्० (स्त्री०) बाणराज की कन्या, अनिरुद्ध की स्त्री, भोर, पौह, तड़का, प्रभात —काल (पु०) प्रत्यूष समय, प्रभातकाल।—पति (पु०) अनिरुद्ध, कामदेव का पुत्र।

उषित तत्० (पु०) [वस्+क्त] पर्युषित, दग्ध, त्वरित, स्थित, आश्रित।

उष्ट्र तत्० (पु०) ऊँट, पशु विशेष।

उष्ण तत्० (पु०) तप्त, गरम ग्रीष्मकाल, निदाघकाल, फुर्तीला, प्याज, एक नरक का नाम।—कटिबन्ध तत्० (पु०) कर्क और मकर रेखाओं के बीच वाला पृथिवी का भाग जहाँ गर्मी अधिक पड़ती है।—नदी (पु०) वैतरणी नदी, यमराज के द्वार पर तपी हुई नदी।—वाष्प (पु०) स्वेद, पसीना, भाफ।—वीर्य (पु०) तीक्ष्ण, तेज युक्त द्रव्य, उष्ण, उग्र।—रश्मि (पु०) दिवाकर, सूर्य, उग्र किरणें।

उष्णता तत्० (स्त्री०) गर्मी, उमस।

उष्णिक् तत्० (पु०) सप्ताक्षर छन्दोविशेष।

उष्णीष तत्० (पु०) शिरोवेष्टन वस्त्र, पगड़ी, पाग, साफा, टोपी, मुकुट।

उष्मा तद्० (स्त्री०) ताप, धूप, गरमी, क्रोध।
उस (सर्व) सर्वनाम विशेष।
उसकाना (क्रि०) उत्तेजित करना।
उसता दे० (पु०) नाई, नापित।
उसरना तद्० (क्रि०) टलना, हटना, उपसरण करना।
उसलपसल दे० (गु०) पथराया, दबधवाया।
उसारा दे० (पु०) ओसारा, मरान्दा, दालान।
उसास या उसासु तद्० (पु०) श्वास, साँस, पवन, प्राण वायु, दीर्घ निःश्वास, ठंढी साँस।
उसिनना (क्रि०) उमालना, आटा भिगाकर रोटी बनाने योग्य गूँधना।
उसीउलल दे० (क्रि०) एक उलल, मुलस उलल।
उसीसा दे० (पु०) सिरहाना, तकिया।
उसूल दे० (पु०) सिद्धान्त।
उसेना (क्रि०) उबालना, पसाना।
उसेधना दे० (क्रि०) मारना, छानना, पसाना।
उस्काना दे० (क्रि०) उकसाना, उभारना।
उस्तरा दे० सेवमेंत, बिन मोल, छुरा, अस्तुरा।
उस्ताद (पु०) शिक्षक, गुरु।
उस्ताना दे० (क्रि०) चलाना, सुलगाना।
उस्तुरा दे० (पु०) अस्तुरा, छुरा, छुरा, छुर।
उस्र तद्० (पु०) वृष, साँड, किरण।—धन्धा तद्० (पु०) इन्द्र, देवराज।
उस्रा तद्० (स्त्री०) धेनु, गो, गाय।
उहदा (पु०) पद, स्थान।—दार (गु०) पदाधिकारी। अफ़सर।
उहरना दे० (पु०) बैठना, दबाना, गिराना।
उहवाँ (गु०) उस ठौर, वहाँ। [गिलाफ़, ढक्कन।
उहार दे० (पु०) आच्छादन, बेठन, ओहार,
उहाँ (अ०) वहाँ।
उहार दे० (पु०) उघार, खोल, पट, परदा।
उहिया दे० (पु०) कनफटा, योगियों के पहनने का धातु का छल्ला, यथा—"कर उहिया काँधे छाला" (पद्मावत)
उही (सर्व०) वही।
उहूल तद्० (स्त्री०) तरंग, लहर, उमंग।

ऊ

ऊ नागरी वर्णमाला का छठवाँ अक्षर। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
ऊ तद्० (अ०) वाक्यारम्भ, रक्षा, महादेव, ब्रह्मा, प्रश्नवाक्य, बन्धन, मोक्ष, प्रधान, चन्द्र।
ऊख तद्० (पु०) ईख, इक्षुदण्ड, गन्ना, पौंडा।
ऊखली तद्० (स्त्री०) उलूखल, ओखली।
ऊगर तद्० (पु०) उदुम्बर, गूलर, ऊमर।
ऊँगना दे० (पु०) चतुष्पाद पशुओं का वह रोग जिसमें उनके कान बहते हैं और शरीर ठंढा पड़ जाता है।
ऊँगा दे० (पु०) चकला भार, अपामार्ग, चिचड़ा।
ऊँघ दे० (स्त्री०) ऊंघाई, नींद, निंदास।
ऊँघना दे० (क्रि०) झपकी लेना, नींद आना।
ऊँघाई दे० (स्त्री०) ऊंघास, नींद, ऊंघ।
ऊँच दे० (पु०) ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर की श्रेणी वाला।
ऊँचा तद्० (गु०) उच्च, उन्नत, बड़ा, श्रेष्ठ।
ऊँचाई तद्० (स्त्री०) उत्थान, उन्नति, बड़ाई, श्रेष्ठता, गौरव।
ऊँचा बोलने वाला (गु०) घमंडी, अभिमानी, अहङ्कार से बोलने वाला।
ऊँचा सुनना (क्रि०) कम सुनना, बहरापन।
ऊँचकानी (सं०) बहरापन।
ऊँचे दे० (क्रि० वि०) ऊपर की ओर।
ऊँचे बोल का बोल नीचा अहङ्कारियों का अन्तिम पराजय, बुरा परिणाम।
ऊँछ दे० (पु०) एक राग का नाम।
ऊँछना (क्रि०) कंघी करना, केश झारना।
ऊँट तद्० (पु०) जन्तु विशेष, उष्ट्र।
ऊँटनी (स्त्री०) साँडिनी।
ऊँटकटारा दे० (पु०) औषधि विशेष, ऊँट का भोजन विशेष, भरभाड़, उटकटाई।
ऊँटवान दे० (पु०) ऊँट हाँकनेवाला।
ऊँदर दे० (पु०) इन्दूर, चूहा, मूसा।

ऊँहँ (अव्य०) नहीं।
ऊअना (क्रि०) उदय होना, उगना।
ऊक तद्० (पु०) उल्का, तारा।
ऊकना (क्रि०) चूकना, लक्ष्य भ्रष्ट होना।
ऊख तद्० (पु०) ईख, गन्ना, पौंड़ा।
ऊखम (पु०) गर्मी, ताप, उष्णता।
ऊखज तद्० (पु०) ओखली, उलूखल।
ऊगरा तद्० (पु०) केवल उबला हुआ।
ऊजड़ दे० (वि०) उजड़ा हुआ, ध्वस्त।
ऊजर, ऊजरा, ऊजा दे० (वि०) उजला, साफ़।
ऊटना दे० (क्रि०) उमंग में आना।
ऊटपटाङ्ग दे० (पु०) अनर्थक, फ़जूलियात।
ऊढ़ (वि०) विवाहित।
ऊढ़ा तद्० (स्त्री०) विवाहिता स्त्री।
ऊत दे० (पु०) मूर्ख, निर्वंश, पुत्ररहित, मृत मनुष्य।
ऊद, ऊदबिलाव तद्० (पु०) जलजन्तु विशेष, जिसका आकार बिल्ली से कुछ मिलता है।
ऊदबत्ती (स्त्री०) अगरबत्ती, धूपबत्ती।
ऊदल (पु०) महोबा के एक परमाल राजा के एक प्रधान का नाम, एक वृक्ष विशेष।
ऊदा दे० (पु०) भूरा, धुंधला रंग, लैरा।
ऊधट दे० (पु०) औघट, विकट रास्ता, बुरा रास्ता।
ऊधम दे० (पु०) उत्पात, उपद्रव, बलवा।
ऊधो तद्० (पु०) (सं० उद्धव) उद्धव, श्रीकृष्ण का मित्र और भक्त।
ऊन तद्० (पु०) ऊर्णा, भेड़ बकरी आदि का रोंआ, न्यून, कम, थोड़ा, उदास, सुस्त।—ी (पु०) ऊन से बनी हुई वस्तु, ऊन रचित।
ऊनता तद्० (पु०) कमी, न्यूनता। [उदास, सुस्त।
ऊना दे० (पु०) ऊन, कम, थोड़ा, (वि०) घटा,
ऊपर तद्० (अ०) ऊर्ध्व, ऊँचे स्थान, अधिक।
ऊपरी तद्० (पु०) विदेशी, परदेशी, ऊपर का।
ऊब (स्त्री०) घबराहट, उद्वेग।
ऊबट दे० (पु०) औघट, अगम्य।
ऊबड़ खाबड़ (पु०) अटपट, ऊँचीनीची।
ऊम दे० (पु०) ग्रीष्मता, दुर्बलता।
ऊमर दे० (पु०) उदुम्बर, गूलर।
ऊयो दे० (स्त्री०) बाँबी, वाल्मीक, कीट।
ऊरु तद्० (पु०) जङ्घा, जाँघ।
ऊर्ज तद्० (पु०) [उर्ज+अस्] बल, शक्ति, एक काव्यालङ्कार, कार्तिकमास।
ऊर्ज्जस्वल तद्० (पु०) [ऊर्ज्जस्+वल्] अतिशय बलवान्, उग्र, अत्यन्त बली।
ऊर्ज्जस्वी तद्० (पु०) [ऊर्ज्जस्+विन्] अधिक बलशाली, तेजस्वी, (पु०) रसालङ्कार विशेष।
ऊर्ण तद्० (पु०) ऊन, भेड़ या बकरी के रोएँ।
ऊर्णनाभ तद्० (पु०) मकरी, कीट विशेष, रेशम का कीड़ा। [स्त्री का नाम।
ऊर्णा तद्० (पु०) भेड़ी के रोम, चित्ररथ गन्धर्व की
ऊर्णायु तद्० (पु०) कंबल, ऊनी वस्त्र।
ऊर्ध्व तद्० (पु०) ऊपर, ऊँचा, उच्च, उन्नत, उच्छ्रित, तुङ्ग, लम्बा।—गामी (पु०) ऊर्ध्वगमनकर्त्ता, पुण्यात्मा।—जानु (पु०) उपरिस्थ जङ्घा।—तिक्त (पु०) चिरायता।—देव (पु०) विष्णु, नारायण।—पाद (पु०) जीव विशेष, शरभ।—पुण्ड्र (पु०) वैष्णवी तिलक।—बाहु (पु०) उन्नत हस्त, मतविशेष, साधुविशेष।—रेखा (स्त्री०) हस्तरेखा विशेष, शुभसूचक हस्त रेखा।—रेता (पु०) अस्खलित वीर्य, कामत्यागी, आजन्म ब्रह्मचारी, भीष्म, महादेव, मुनिविशेष।—लोक (पु०) स्वर्ग, सुरलोक, देवलोक।—श्वास (पु०) रोग विशेष, दमा, ऊर्ध्व वायु, शीघ्र गमन से उच्चश्वास।—स्थ (स्त्री०) उपरिस्थित, उच्चस्थ।
ऊर्वशी तद्० (स्त्री०) देखो उरबसी।
ऊर्मि तद्० (पु०) तरङ्ग, लहर, वेदना, पीड़ा।—माला (स्त्री०) तरङ्ग समूह, अधिकतरङ्ग।—माली (पु०) समुद्र, जलधि।
ऊलजलूल दे० (वि०) असम्बद्ध, अंडबंड, अनाड़ी।
ऊलुषा तद् (पु०) तृण विशेष।
ऊषण तद्० (पु०) कालीमिर्च।
ऊषर तद्० (पु०) क्षारभूमि, खारी भूमि, नोनी भूमि।
ऊषा तद्० (स्त्री०) देखो उषा।
ऊष्म तद्० (पु०) गरमी की ऋतु, भाप।—धर्म

तद्० (पु०) श, ष, स, ह, ये अक्षर ऊष्म कहलाते हैं।—ा तद्० (स्त्री०) तपन, गर्मी, ग्रीष्मकाल।

ऊसन दे० (पु०) तरमिरा, पौधा विशेष, जिससे जलाने का तेल निकाला जाता है, यह सरसों की जाति का है।

ऊसद दे० (वि०) फीका मीठा।

ऊसर तद्० (पु०) पत्थरभूमि, क्षारभूमि, बिना उपज की भूमि।

ऊह तद्० (पु०) आह, दुःख या विस्मयसूचक शब्द, दुःख में कराहने का शब्द।

ऊहापोह तद्० (पु०) तर्क वितर्क, विचार योग्य।

ऋ

ऋ, सातवाँ स्वर वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

ऋ तद्० (अ०) गर्हणवाक्य, निन्दावचन। (स्त्री०) अदिति, देवमाता, परिहास वाक्य, धिक्कार। (पु०) सूर्य, गणेश।

ऋक तद्० (पु०) वेद विशेष, ऋगवेद, मन्त्र विशेष।

ऋक्थ तद्० (पु०) धन, सम्पत्ति, सुवर्ण, पितृधन, हिस्सा।

ऋक्ष तद्० (पु०) रीछ, भालू, नक्षत्र, मेष, वृष आदि राशि, भिलावाँ, रैवतक पर्वत का एक अंश। श्यौनक वृक्ष।—ेश (पु०) चन्द्र, शशधर।—जिह्वा तद्० (पु०) कुष्ट या कोढ़ का एक भेद।—पति तद्० (पु०) चन्द्रमा, जाम्बवान।—वान तद्० (पु०) पर्वत विशेष जो नर्मदा के किनारे से गुजरात तक है।

ऋग्वेद तद्० (पु०) वेद विशेष।—ी तद्० (वि०) ऋग्वेद का जानने वाला या परम्परागत जिसके ऋग्वेद का पाठ ही मुख्य हो।

ऋचा तद्० (स्त्री०) वेदमन्त्र, वेद, कायड़ी, कण्डिका।

ऋचीक तद्० (पु०) यमदग्नि के पिता।

ऋच्छ दे० (पु०) रीछ।—रा (स्त्री०) वेश्या।

ऋजीष तद्० (पु०) सोमलता की सीठी या फोक, लोहे का तसला।

ऋजु तद्० (गु०) अवक्र, सरल, सीधा, सुधा।—काय (पु०) कश्यपमुनि, (गु०) सीधा शरीर। भुज (गु०) सीधी रेखा या भुजा।—भुजक्षेत्र (पु०) वह क्षेत्र जो कोई सीधी रेखाओं से घिरा हो।—स्वभाव (पु०) सरलान्त करण, सदन्त करण विशिष्ट।

ऋण तद्० (पु०) उधार देना, कर्ज़।—ग्रहण (पु०) उधार लेना, कर्ज़ा करना।—दाता (गु०) महाजन, ऋण देने वाला।—पत्र (पु०) ऋणग्रहण सूचक पत्र, तमस्सुक।—मत्कुण (पु०) ज़ामिन, प्रतिभू।—मुक्त (गु०) ऋण परिशोधित, भार रहित।—मुक्तिपत्र (पु०) ऋण परिशोध सूचक पत्र, फ़ारिगख़ती।—मार (पु०) जो कर्ज़ा नहीं चुकाता।—मार्गण तद्० (पु०) प्रतिभू, ज़ामिन, ज़मानतदार।—ापनयन (पु०) ऋण शोधन, उधार चुकाना, कर्ज़ा दे देना।

ऋणार्ण तद्० (पु०) एक कर्ज़ा अदा करने को जो दूसरा कर्ज़ा काढ़ा जाय।

ऋणिक तद्० (पु०) कर्ज़दार।

ऋणिया तद्० (पु०) ऋण, धारता।

ऋणी तद्० (पु०) देनदार, कर्ज़दार, उपकृत।

ऋत तद्० (पु०) सत्य, यथार्थ, वृत्ति विशेष, उञ्छ वृत्ति के द्वारा निर्वाह, जल, मोक्ष, (गु०) दीप्त, पूजित।—धामा (पु०) विष्णु नारायण।

ऋतपर्ण या ऋतुपर्ण तद्० (पु०) अयोध्या के राजा।

ऋतदेय तद्० (पु०) छोटा, यज्ञ विशेष।

ऋति तद्० (स्त्री०) निन्दा, स्पर्धा, मार्ग, गति, मङ्गल।

ऋतु तद्० (पु०) वसन्त आदि छः प्रकार का काल।—मती (स्त्री०) स्त्री-कुसुम, रजोदर्शन दीप्ति, रजस्वला, स्त्री धर्मिणी, पुष्पवती।—राज (पु०) वसन्तकाल।—स्नाता (स्त्री०) रजोदर्शन के अन न्तर चतुर्थ दिन स्नाता स्त्री।—स्नान (पु०) रजोदर्शनान्त चतुर्थ दिन का स्नान। [याजक।

ऋत्विज तद्० (पु०) यज्ञ कराने वाला पुरोहित,

ऋद्ध तद्० (गु०) सम्पन्न, धनाढ्य, समृद्ध, श्रीसंपन्न।

ऋद्धि तद्० (स्त्री०) समृद्धि, धन, सम्पत्ति, विभव,

वृद्धि, एक औषध का नाम, पार्वती, गिरिजा। —सिद्धि तत्० (स्त्री०) समृद्धि और सफलता।
ऋनिया या रिनिया (पु०) कर्ज़दार, धरता।
ऋनी दे० (पु०) देखो ऋणी।
ऋभु तत्० (पु०) एक गण देवता।
ऋभुक्ष तत्० (पु०) इन्द्र, स्वर्ग, वज्र।
ऋभुक्षा तत्० (स्त्री०) इन्द्राणी, शची।
ऋषभ तत्० (पु०) श्रेष्ठ, ऋषिश्रेष्ठ, बैल, वृष। —देव तत्० (पु०) राजा नाभि के पुत्र जिनकी गणना विष्णु के चौबीस अवतारों में है। —ध्वज तत्० (पु०) शिव, महादेव।
ऋषभी तत्० (स्त्री०) पुरुष के रंगरूप वाली स्त्री।
ऋषि तत्० (पु०) मुनि, तपस्वी, तपसी, तापस। —राज (पु०) प्रधान ऋषि। —मित्र (पु०) शान्ति प्रिय, रामचन्द्रिका में विश्वामित्र के लिये इसका प्रयोग किया गया है।
ऋषिकुल्या तत्० (स्त्री०) नदी विशेष।
ऋषिक तत्० (पु०) वाल्मीकीय रामायण में वर्णित दक्षिण का एक देश।
ऋषीक तत्० (पु०) ऋषि का पुत्र।
ऋषीश तत्० (पु०) ऋषियों में प्रधान, ऋषिश्रेष्ठ।
ऋष्टिक (पु०) दक्षिण का एक देश। इसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है।
ऋष्य तत्० (पु०) मृग विशेष, चितकबरा मृग।
ऋष्यकेतु तत्० (पु०) अनिरुद्ध, ऊषापति।
ऋष्यप्रोक्ता तत्० (स्त्री०) सतावर, औषधि।
ऋष्यमूक तत्० (पु०) पर्वत विशेष, जो किष्किन्धा के पास है।
ऋष्यशृङ्ग तत्० (पु०) तपःप्रभाव सम्पन्न महर्षि, लोमपाद राजा की कन्या शान्ता इनसे ब्याही गई थी, इन्हीं के द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ करा कर राजा दशरथ ने चार पुत्र प्राप्त किये थे। ये महर्षि विभाण्डक के पुत्र थे। स्वर्गीय अप्सरा उर्वशी को देखने से विभाण्डक महर्षि का रेतस्खलन हुआ। संयोगवश वह जल में गिरा, जिसे एक हरिणी ने जल के साथ पी लिया। उसी गर्भ से ऋष्यशृङ्ग उत्पन्न हुए थे।

ॠ ऌ-ॡ

ॠ तत्० (स्त्री०) स्वर या आठवाँ वर्ण, देवमाता, शव, असुर, दिति, भय।
ऌ ॡ स्वर का नवम और दशम वर्ण। इन अक्षरों का प्रयोग वेदों में होता है, भाषा में नहीं।

ए

ए नागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर जिसका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है।
ए तत्० (अ०) अनसूया, आमन्त्रण, अनुकम्पा, आह्वान, सम्बोधनार्थक। (पु०) विष्णु।
एँड़ा बेंड़ा (गु०) उलटा सीधा।
एँड़ी (स्त्री०) रेशम का कीड़ा विशेष।
एक तत्० (गु०) अद्वितीय, प्रथम, मुख्य, अन्य, केवल, प्रथम संख्या।
एक आध तत्० कुछ थोड़ा, एक या आधा।
एकाई तत्० अनन्य, वही, अभिन्न, तुल्य, समान।
एकएक तत्० पृथक् पृथक्, भिन्न भिन्न, प्रत्येक।
एकक तत्० एकाकी, अकेला, निराला, असहाय।
एककाल तत्० (गु०) समान समय, एक समय, युगपत्। [एक बार, एक ही बार।
एक कालीन तत्० (गु०) समकाल उत्पन्न, एक समय,
एक की दस सुनाना दे० (वा०) स्वल्पापराध का अधिक दण्ड, एक गाली देनेवाले को दस गाली सुनाना।
एकगाछी (स्त्री०) नाव विशेष जो एक लंबी लकड़ी को खुलका कर बनायी जाती है।

एकचक्र तत्० (पु०) सूर्य, सूर्य का रथ।
एकचक्रा तद्० (स्त्री०) प्राचीन नगरी जो आरा के पास बतलाई जाती है।
एकचर (वि०) अकेला चलने वाला, इका। [मना।
एकचित्त तत्० (गु०) एकाग्र, एक मन, अनन्य-
एकछत्र तत्० (वि०) पूर्ण प्रभुत्व, अकण्टक।
एकजन्मा तत्० (पु०) शूद्र राजा।
एकजाई तद्० (स्त्री०) सकृत् प्रसूता, पहिलौठी।
एकटक दे० (पु०) एक तार से देखना, सतृष्ण दृष्टि।
एकट्ठा दे० एक स्थान में संग्रह किया गया। [विशेष।
एकड़ दे० (पु०) १½ बीघा का पृथ्वी का नाप
एकडाल (गु०) एकसा, एक समान, बराबर। (पु०) छुरा, कटार। [तन्त्रयुक्त, एक मतावलम्बी।
एकतन्त्री तद्० (गु०) एक प्रभु के वशवर्ती, एक
एकतरा तद्० (पु०) अँतरिया ज्वर, तिजारी।
एकतही तद्० (पु०) एक जगह। (स्त्री०) मिरजई।
एकता (स्त्री०) एकाई, समानता, मेल, एकत्व, ऐक्य, मिलान, अनन्यता, (बहुत लोग एकता के स्थान में ऐक्यता कहा करते हैं जो अशुद्ध है)।
एकतान तत्० (गु०) एकाग्र, एक विषयासक्त चित्त, लीन, तन्मय, बराबर तान, एक स्वर।
एकताल तत्० (पु०) समन्वित ताल, समताल, सुरलय, मेलताल, एकस्वर। [गुरुभाई।
एकतीर्थी तत्० (पु०) [एक+तीर्थ+इन्] सतीर्थ,
एकतीस दे० एक ऊपर तीस, ३१। [यन्त्र विशेष।
एकतुम्बी तत्० (स्त्री०) तानपूरा, तम्बूरा, बाद्य
एकत्र तत्० (अ०) एक स्थान में, एक ठौर, एक संग में मिलित, इकट्ठा।
एकत्रा तत्० (पु०) टोटल, कुल जोड़, इकट्ठा।
एकत्रित तत्० (वि०) इकट्ठा हुआ, सगृहीत।
एकदा तत्० (अ०) एक समय, एक बार, किसी समय।
एकदिक् तत्० (गु०) एक देश, एक भाग, समदेश।
एकदेशस्थ तत्० (गु०) एक देशी, समदेशीय।
एकदेशीय तत्० (वि०) एक देश का, जो एक ही अवसर या स्थान के लिये हो। [तौल, बरा।
एकदेह तत्० (पु०) बुधग्रह, एक शरीर, अभिन्न,
एकधा दे० (अ०) केवल, एक बार, एक प्रकार।

एकन, एकन्ह तद्० एक ने, किसी ने, एक को, किसी को। [दूसरा।
एक न एक (वा०) एक नहीं तो दूसरा, एक या
एकपट्टा दे० (पु०) ओढ़नी, पिछौरी।
एकपत्नी तत्० (स्त्री०) पतिव्रता, सती, साध्वी।
एकपरामर्श तत्० (पु०) एकतन्त्र, एकमत।
एकपलिया दे० (पु०) घर जिसमें ओसार न हो।
एकपाश तत्० (पु०) एकपार्श्व, एक तरफ़।
एकप्रभुत्व तत्० (पु०) एक राजत्व, एकाधिपत्य।
एकबारगी दे० (क्रि० वि०) एक साथ, एक दफ़ा।
एकबाल दे० (पु०) तेज़, प्रताप, स्वीकारोक्ति।
एकमत दे० (गु०) एक सम्मति वाला।
एकमुँहा दे० (गु०) एक मुँह वाला।
एकयोनि तत्० (गु०) सहोदर, एक माँ के।
एकरंग दे० (वि०) समान।
एकरार दे० (पु०) स्वीकार, वादा।
एकरूप तत्० (पु०) समभाव, एकसा।
एकलव्य तत्० (पु०) निषादराज हरधनु का पुत्र और द्रोणाचार्य का शिष्य, यह अपनी गुरुभक्ति के कारण विख्यात है। द्रोणाचार्य ने इसे नीच जाति समझकर अस्त्रविद्या सिखलाना अस्वीकार किया, तब यह मिट्टी की द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर और उसीको अपना अध्यापक समझ, स्वयं अस्त्रविद्या सीखने लगा, कुछ दिन में यह ऐसा अस्त्रविद्या में चतुर निकला कि इसकी लक्ष्यवेधना चातुरी देख अर्जुन को भी चकित होना पड़ा।
एकला तद्० अकेला, एकाकी, निराला, एकल, सहायहीन। [बसन, चादर।
एकलाई तद्० (पु०) ओढ़नी, एकपटा, उत्तरीय
एकला दुकेला तद्० एकाकी, द्वितीय रहित, एक या दो।
एकलिङ्ग (पु०) मेवाड़ राजघराने के प्रधान इष्टदेव।
एकलौटा, एकलौता तद्० (पु०) एकौआ अद्वितीय, एक मात्र पुत्र, अकेला ही पुत्र।
एकवचन (पु०) बहुवचन का उल्टा, जिससे एक वस्तु का ज्ञान हो।
एकवार तद्० एकदा, एककाल।
एकशफ तत्० (पु०) घोड़ा, एक खुर के जन्तुमात्र।

एकसङ्ग तद्० (पु०) [एक+सङ्ग+अच्] विष्णु, एक साथ, सहवास।

एकसङ्गी तद्० (पु०) साथी, सहवासी, समभिव्यवहारी, संगी, मित्र जो सुख दुःख में साथ दे।

एकसर तद्० (गु०) अकेला, एक परत्ले का।

एकसाँ तद्० (गु०) समान, बराबर, समथल, एकधार, एक समान।

एकसार तद्० (गु०) समान, एकरसा, एकसा।

एकहरा दे० (पु०) पतला, झीना, एक परत।

एकहत्तर (पु०) संख्या, विशेष, ७१ [हुए एक वर्ष हुए।

एकहायन तद्० (गु०) एक वर्ष का, जिसको उत्पन्न

एकहारा दे० (गु०) दुर्बल शरीर, कृश, चीण, एक परत्ले का, एक परत का।

एका तद्० (स्त्री०) दुर्गा भगवती, एकाकी, तद्० (पु०) मेल मिलाप, ऐक्य, एकता, एकोद्देश्य, सम्मति, सहमति।

एकाई तद्० (स्त्री०) एकता, एक का भाव, अङ्कों की गणना में प्रथम अङ्क का स्थान या उस स्थान का अङ्क।

एकाएक (क्रि० वि०) अकस्मात्, अचानक, सहसा।

एकाएकी तद्० (अ०) अकस्मात्, सहसा, अचानक।

एकाकार तद्० (गु०) [एक+आकार] एक समान, तुल्य आकृति, एक रूप, सदृश, एक धर्म, भेद रहित, एकमय, एकाचार, पशु समान आचार।

एकाकिन्द तद्० (पु) अकेले को, असहाय को।

एकाकी तद्० (गु०) अकेला, एक ही साथ, केवल एक, आपही आप, सहाय रहित। (शुक्राचार्य।

एकाक्ष तद्० (पु०) एक आँख वाला, काना, कौआ,

एकाक्षर तद्० (पु०) मन्त्र विशेष।—ी तद्० (वि०) एक अक्षर का मन्त्र विशेष।

एकाग्र तद्० (गु०) [एक+अग्+र] अनन्यचित्त, एकमना, अभिनिविष्ट, मनोयोगी, एकचित्त, आविष्ट, जिसका मन एक ही ओर लगा हो।—ता (स्त्री०) एकाग्र चित्तता, अभिनिवेश प्रणिधान, विशेष सावधानी से ध्यान, अचञ्चलता।—चित्त तद्० (वि०) स्थिर चित्त।

एकातपत्र तद्० (गु) [एक+आतपत्र] सार्वभौम, महाराज, चक्रवर्ती, एकच्छत्र।

एकात्मता तद्० (स्त्री०) [एक+आत्मन्+ता] अभेद, एक स्वरूपता, अभिन्नता। [एक देह, अभिन्न।

एकात्मा तद्० (पु०) [एक+आत्मन्] एक प्राण,

एकादश तद्० (पु०) [एक+दशन्+डट्] संख्या विशेष, ११ ग्यारह।—ी (स्त्री०) तिथि विशेष, पक्ष का ग्यारहवाँ दिन, चन्द्रमा की एकादश कला की क्रिया विशेष, हरिवासर, वैष्णवों का व्रत विशेष।

एकादिक्रम तद्० (गु०) [एक+आदि+क्रम+अल्] आनुपूर्विक, अनुक्रम, क्रमानुरूप, क्रमिक।

एकाधिपति तद्० (पु०) [एक+अधिपति] चक्रवर्ती राजा, सम्राट्। [प्रभुत्व।

एकाधिपत्य तद्० (पु०) पूर्ण अधिकार, पूर्ण

एकाङ्ग तद्० (वि०) एक अङ्ग का। (पु०) बुधग्रह, चन्दन।—ी तद्० (वि०) एक ओर का, एक पक्ष का, एकतरफ़ा, हठी।

एकान्त तद्० (गु०) [एक+अन्त] निभृत, निर्जन, निराला, अलग, भिन्न, अत्यन्त, नितान्त।—कैवल्य तद्० (पु०) जीवनमुक्ति, मुक्ति विशेष।—ता तद्० (स्त्री०) अकेलापन, तनहाई।—ी तद्० (पु०) भक्तविशेष।—वास तद् (पु०) अकेला रहना, सब से न्यारा रहना।—वासी तद्० (वि०) निर्जन स्थान में रहने वाला।—स्वरूप तद्० (वि०) निर्लिप्त, असङ्ग।

एकान्तर तद्० (पु०) एक ओर, अलगंट।—कोण तद्० (पु०) एक ओर का कोना।

एकायन तद्० (गु०) एकमति, एकमार्ग, एकविषयासक्त चित्त, एक स्थान।

एकार तद्० (पु०) [ए+कार] ए अक्षर, एकादश स्वर वर्ण।—न्त जिसके अन्त में ए हो।

एकार्णव तद्० (पु०) [एक+अर्णव] एकाकार, एक समुद्र। [तात्पर्य वाला, एक अर्थवाला।

एकार्थ तद्० (गु०) [एक+अर्थ] समानार्थ, तुल्य-

एकाश्रित तद्० (गु) [एक+आश्रित] अनन्यगतिक, एक के ही आश्रित।

एकाह तद्० (पु०) एक दिन, केवल एक ही दिन जीने वाला कीट, एक दिन में पूरा होने वाला।

एकाह्निक तद्० (गु०) [एक+अह+ठक्] एक दिन

ऐपीक तद्० (पु०) स्वष्टदेव का मन्त्र पढ़ कर चलाया जाने वाला शस्त्र विशेष।

ऐसा तद्० (गु०) इस प्रकार, इसके समान।

ऐसा तैसा तद्० तुच्छ पोंही, न भला न बुरा, न वाह वाह, न छी छी।

ऐसे (क्रि० वि०) इस प्रकार, इस ढब से।—हि इसी प्रकार से, इसी तरह से।

ऐहिक तद्० (गु०) इस लोक के भोग, यहाँ होने वाला, यहाँ उत्पन्न, सांसारिक, दुनियावी।

ऐहैं दे० (क्रि०) आवेंगे, आवेगा।

ओ

ओ अयोदश स्वरवर्ण, इसका उच्चारण ओष्ठ और कण्ठ से होता है, (अ०) करुणा सूचि, सम्बोधन, यथा विष्णु, आह आहा।

ओं (अ०) हाँ, अच्छा, तथास्तु, प्रणव।

ओंइछना (क्रि०) वारना, न्योछावर करना।

ओंठ तद्० (पु०) ओठ, ओष्ठ, अधर, होंठ।

ओंड़ा दे० (पु०) गहरा, गम्भीर।

ओंधा तद्० (पु०) औंधा, उलटा, तले-ऊपर।

ओंआ दे० (पु०) हाथी फँसाने का गड्ढा।

ओई दे० (पु०) वृक्ष विशेष।

ओक तद्० (पु०) घर, मकान, गृह, स्थान, आश्रय।—ना तद्० (क्रि०) कै करना।—पति तद्० (पु०) सूर्य, चन्द्र।—ाई दे० (स्त्री०) वमन, कै।

ओकारान्त (वि०) वे शब्द जिनके अन्त में ओ हो।

ओखली तद्० (स्त्री०) ऊखल, उलूखल।

ओगरा तद्० (पु०) खिचड़ी, पथ्यविशेष।

ओघ तद्० (पु०) समूह, ढेरी, थोक, राशि।

ओङ्कार तद्० (पु०) [ओम्+कार] प्रणव, आद्य बीजमन्त्र।

ओछा तद्० (गु०) छिछोरा, हलका, उतावला, नीच।

ओज तद्० (पु०) बल, दीप्ति, तेज, पराक्रम, प्रताप।

ओजस्वी तद्० (पु०) प्रतापी, बली, तीक्ष्णचित्त, तेजस्वी।

ओझ तद्० (पु०) पेट की थैली, पेट, आँत।

ओझड़ तद्० (पु०) झोंक, धक्का, ठोकर, पचौनी, आँत।

ओझल तद्० (स्त्री०) आड़, ओट, छिपाव, परदा, टट्टी, एकान्त।—करना (क्रि०) छिपाना परदा करना।

ओझा तद्० (पु०) ओझल, टोनहा, यन्त्री, मान्त्रिक उपाध्याय, उपाध्याय शब्द का ही यह अपभ्रंश है, इसका प्राकृतरूप उवज्झाओ है, उवज्झाओ ही से ओझा निकला है। सरयूपारी, मैथिल ब्राह्मणों की एक जाति।—ई या यत तद्० (स्त्री०) झाड़ फूँक।

ओट तद्० (स्त्री०) आड़, पट, टट्टी, छिपाव, बचाव।—करना (क्रि०) छिपाना।—होना (क्रि०) छिपना।

ओटना तद्० (क्रि०) बार बार करना, रेटना, रूई से बिनौला निकालना।

ओटनी दे० (स्त्री०) कपास ओटने की चरखी।

ओटा तद्० (पु०) आड़, शुश्रूव, पैठन, परदे की दीवाल।

ओठ तद्० (पु०) ओष्ठ, औंठ, होंठ, अधर।

ओठगना (क्रि०) आराम करना।

ओड़ब्रहिं (क्रि०) रोकेंगे, बचावेंगे।

ओड़न तद्० (पु०) ढाल, फरी।—खाँड़े पटेवाज़ ढाल, तलवार।

ओड़ा तद्० (पु०) साँचा, टोकरा, दौरा।

ओढ़न दे० (पु०) चादर, चदरा।

ओढ़ना तद्० (क्रि०) पहनना, पहिरना। (पु०) रजाई, ओढ़ने की वस्तु, पट्टू, लोई।

ओढ़नी तद्० (पु०) स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा।

ओढ़र तद्० (प्रा० पु०) बहाना।

ओत तद्० (गु०) आराम, आलस्य, बुना हुआ, गुथा हुआ। (पु०) ताने का सूत।

ओतप्रोत तद्० (गु०) आड़ा टेढ़ा, ताना बाना, लम्बाई में ग्रथित, चौड़ाई। (पु०) ताना बाना।

ओता दे० (वि०) उतना।

"मोहि कुराज का साथ न ओता।"—जायसी

ओतु तद्० (स्त्री०) बिल्ली, बिलाई।

ओतुप्लुत तद्० (गु०) उलटा, विपरीत।

ओथज पोथज दे० उलटा, चित्त, उलट पलट।

ओद दे० (पु०) नमी, तरी, सील।

ओदक तद्० (पु०) पानी, जल।
ओदन तद्० (पु०) भात, राँधे हुए चावल, अन्न।
ओदनी दे० (पु०) परियारी, बीजवन्ध।
ओदर दे० (पु०) उदर, पेट।
ओदा तद्० (पु०) गीला, भींगा, भींजा, आर्द्र।
ओधे तद्० (पु०) लगे हुए, अधिकारी, भीतरिया, वल्लभ सम्प्रदाय में ठाकुर जी की रसोई बनाने वाले को भी कहते हैं।
ओना तद्० (पु०) तालाब में पानी निकलने का मार्ग, पानी का निकास।
ओनाड़ दे० (वि०) ज़ोरावर, बली।
ओनामासी तद्० (स्त्री०) अक्षरारम्भ।
ओप तद्० (स्त्री०) सुन्दरता, चमचमाहट, घोंट, जिलह।
ओपची तद्० (पु०) कवचधारी, ज़िलमी, योद्धा।
ओपना तद्० (क्रि०) घोटना, साफ़ करना, जिलह करना।
ओपार तद्० (पु०) नदी के उस पार।
ओम् तद्० (अ०) प्रणव, ओङ्कार। [छोर, सीमा।
ओर तद्० (स्त्री०) पार्श्व, तरफ़, दिशा, अलग, पार,
ओरमा दे० (पु०) एकहरी सिलाई।
ओरहना (पु०) उलहना, शिकायत।
ओरी दे० (पु०) पक्षपाती, ओलती, (अव्य०) स्त्रियों को सम्बोधन के लिये शब्द।
ओरे दे० (पु०) ओले, उपल, वर्षा के पत्थर।
ओरेहा दे० (पु०) निर्माण सृष्टि, रचना।
ओल दे० (पु०) सूरण, मनौती जमीकन्द।
ओलती दे० (स्त्री०) ओरौनी, ओरी छाजने छप्पर का वह हिस्सा जिससे होकर बरसाती पानी नीचे गिरता है।
ओला दे० (पु०) शिलावृष्टि, पत्थर, बिनौली, इन्द्रोपल, मिठाई विशेष।—हो जाना (क्रि०) खूब ठंढा होना।
ओली दे० (स्त्री०) गोद, अञ्चल, पल्ला।
ओलौना तद्० (पु०) उदाहरण, तुलना।
ओषधि तद्० (स्त्री०) वनस्पति, तृण, घास, पौधा।
ओषधीश तद्० (पु०) चन्द्र, शशधर, चन्द्रमा, कपूर।
ओष्ठ तद्० (पु०) होंठ, ओठ, अधर, रदच्छद, दन्त च्छद।—रोग (पु०) मुखरोग विशेष, ओष्ठव्रण।
ओष्ठी तद्० (स्त्री०) बिम्बाफल, कुँदरू।
ओष्ठ्य तद्० (पु०) ओष्ठ द्वारा उच्चारित वर्ण। उ ऊ प फ ब भ म—ये ओष्ठ्य वर्ण हैं।
ओस तद्० (स्त्री०) पाला, शीत, शबनम।
ओसर दे० (स्त्री०) कलोर, जवान गौ, कलोर गाय या भैंस। [क्रम से।
ओसरा दे० (पु०) बारी, पाली, दाँव, पाला पाली,
ओसरी दे० (पु०) देखो ओसरा। [क्रिया।
ओसाई दे० (स्त्री०) अन्न को भूसे से अलगाने की
ओसारा दे० (पु०) दालान, बरामदा।
ओसीसा दे० (पु०) सिरहाना, तकिया।
ओह या ओहो तद्० (अ०) सम्बोधनवाचक, वाह वाह, हा, आहा।
ओहर दे० (स्त्री०) ओट, ओझल।
"ओहर होइ रे भाट भिखारी।"—जायसी।
ओहरना (क्रि०) कम होना, घटना।
ओहरी दे० (स्त्री०) थकावट, शिथिलता।
ओहा तद्० (पु०) गाय का थन।
ओहार तद्० (पु०) रथ या पालकी के ऊपर का कपड़े का परदा।
ओहि दे० (सर्व०) उसको, उसे।
ओहो (अव्य०) हर्ष या विस्मयसूचक शब्द।

औ

औ चतुर्दश स्वरवर्ण इसके उच्चारण का स्थान कण्ठ और ओष्ठ है। (अ०) आह्वान, सम्बोधन, विरोध, निर्णय और (पु०) अनन्त, निश्चल।
औं तद्० (अ०) शूद्रों का प्रणव।
औंगी दे० (पु०) चुप, मौन, गूँगापन।
औंघाई (स्त्री०) निद्रा, झपकी।
औंघना दे० (क्रि०) झपकी आना।
औंजना दे० (क्रि०) अकुलाना, ऊबना।
औंद दे० (पु०) बेलदार, मिट्टी खोदने वाला मजदूर।
औंठ दे० (स्त्री०) किनारा, छोर।

साध्य, एक दिन में ही उत्पन्न होने वाला, प्रति दिन उत्पत्तिशील।

एकीकरण तत्० (पु०) एक करना, गड्ड मड्ड करना।

एकीकृत तत्० (वि०) मिलाया हुआ, मिश्रित किया।

एकीभाव तत्० (पु०) मिलना, मिलाना, इकट्ठा होना, एकत्र होना।

एकेला तद्० (पु०) एकाकी, अकेला।

एकैक तद्० (गु०) प्रत्येक, प्रति एक।

एकोतरसो (वि०) १०१।

एकोतरा (वि०) एक दिन छोड़कर आने वाला। (पु०) रुपये सैकड़े ब्याज।

एकोद्दिष्ट तत्० (पु०) श्राद्ध विशेष, जो एक पितृ के उद्देश्य से वर्ष में एक ही बार किया जाय। [व्यक्ति।

एकौ तद्० (गु०) एक भी, कोई भी, अनिर्धारित

एकौभा दे० (वि०) अकेला, एकाकी।

एकौतना दे० (क्रि०) धान गेहूँ में उस पत्ते का निकलना जिसके गाभा से बाल निकलती है, गर-भाना।

एका दे० (वि०) एक वाला, अकेला, एक घोड़े की गाड़ी विशेष, इक्का।—वान दे० (पु०) इक्का हाँकने वाला।—वानी दे० (स्त्री०) इक्का हाँकने का काम।

एक्यानवे दे० (पु०) ९१।

एक्यावन दे० (पु०) ५१।

एक्यासी दे० (स्त्री०) ८१। [पश्चाद् भाग।

एड़ दे० (स्त्री०) घोड़े को चलाने का काँटा, चरण का

एड़क तत्० (पु०) मेढ़ा, मेड़ा, मेष।

एड़ी (स्त्री०) पैर का पिछला भाग।

एढ़ा तद्० (वि०) बली, बलवान।

एढ़ा टेढ़ा दे० बाँका, तिरछा, टेढ़ा।

एण तत्० (पु०) हरिण, मृग, हिरन।—ी (स्त्री०) हिरन, मृगी।—ीन (स्त्री०) हिरन का बहुवचन। —मद (पु०) कस्तूरी।

एतत् तद्० (सर्व०) यह, पुरोवर्ती, सम्मुखस्थित। —काल (पु०) उपस्थित काल, इस समय, सम्प्रति।—कालीन (पु०) [एतद्+काल+ईन] इस कालवर्ती, आधुनिक।

एतदर्थ तत्० (अ०) इसलिये इस कारण।

एतद्देशीय तत्० (वि०) इस देश का, इस स्थान का।

एतना तद्० (गु०) इतना, इत्ता, एत्ता।

एतादृक् तद्० (गु०) एतादृश, ऐसा, एसा ही।

एतादृश तत्० (गु०) ऐसा, इसके जैसा, इस प्रकार का, ऐसा ही।

एतावत् तद्० (अ०) इतनाही, यहाँ तक।

एतावता तत्० (अ०) इस करके, इस कारण, इस हेतु, इसलिये।

एतावन्मात्र तद्० (अ०) इतना ही, यही, केवल।

एतिक दे० (वि०) इतना, इतना ही।

एनस तद्० (पु०) पाप, अपराध।

एनी दे० (पु०) एक बहुत बड़ा वृक्ष, जो दक्षिण के पश्चिमी घाट में पाया जाता है।

एमन दे० (पु०) एक राग विशेष।

एरण्ड तत्० (पु०) अरण्डी, रेंडी।—खरबूजा (पु०) पपीता।—सफेद दे० (पु०) मोगली, बागरेंडा, —ी तद्० (स्त्री०) एक प्रकार की झाड़ी, जिसे तुंगा, आमी और दरेंगढ़ी कहते हैं।

एराफेर या एराफेरी दे० (पु०) हेराफेरी, सट्टा बट्टा।

एरी दे० (स्त्री०) सम्बोधन। [छाना जाता है।

एलक दे० (पु०) चलनी जिसमें मैदा या महीन आटा

एला तत्० (स्त्री०) इलायची, एलाची।

एलुवा दे० (पु०) औषध विशेष, मुसब्बर।

एलोई दे० (पु०) हे हमारे ईश्वर!

एलोहि (अव्य०) यह देखो, व्यङ्ग सूचक शब्द।

एलोक तद्० (पु०) यह लोक, यह संसार।

एव तत्० (अ०) ऐसा, इस प्रकार का, निश्चय करके, मात्र, केवल। [कार।—अस्तु (अ०) ऐसा ही हो।

एवम् तत्० (अ०) ऐसा ही, इस प्रकार, और, अङ्गी-

एह (सर्व०) यह।

एहतियात दे० (पु०) सावधानी, चौकसी, परहेज़।

एहसान दे० (पु०) कृतज्ञता।—मन्द दे० कृतज्ञ।

एहा तद्० (गु०) यह, ऐसा, यहो।

एहि तद्० (गु०) इस, इसको।

एहु या एहू तत्० यह भी और भी, यही।

एहेतुक तत्० (गु०) इस लिये, इस कारण।

एहो (अव्यय) अरे, हे, सम्बोधनवाची शब्द।

ऐ

ऐ द्वादश स्वरवर्ण है, सम्बोधन, श्राह्वान, स्मरणार्थ, आनन्दवाच्य, (पु०) महेश्वर, शिव।
ऐंच (पु०) खिचाव, तान, सङ्कोच।
ऐंचना (क्रि०) खींचना, तानना।
ऐंचाताना (गु०) देखने में जिसके आँख की पुतली दूसरी ओर हो जाय।
ऐंठ (स्त्री०) मरोड़, गाँठ, लपेट, पेच।—न (स्त्री०) मरोड़न, लपेट।—ना (क्रि०) बटना, मरोड़ना —वाना (क्रि०) दूसरे से मरोड़वाना।
ऐंठा (पु०) रस्सी बटने का एक पेंच।
ऐंडबेंड (गु०) टेढ़ामेढ़ा, तिरछा।
ऐंड़ा (गु०) टेढ़ा।
ऐंडुरी (स्त्री०) गेंडुरी, बीड़ा। [सम्मति, सहमति।
ऐक तद्० (पु०) [सं० ऐक्य] एकता, एकमत, एक
ऐकमत्य तत्० (पु०) सम्मति, एकता, एकमत।
ऐकान्तिक तत्० (गु०) नितान्त, अत्यन्त निर्जन, एकान्त, एकान्तवासी, वैष्णव सम्प्रदाय के भक्त विशेष। [एक दिन के अन्तर से उत्पन्न, अन्तरिया।
ऐकाहिक तत्० (गु०) एक दिन का, एकाहनिष्पन्न,
ऐक्य तत्० (पु०) समानता, एकता, मेल।
ऐगुण तद्० (पु०) औगुण, अनाड़ीपन, दोष।
ऐंच दे० (पु०) सङ्कोच, ईंच, खैंच, टान।
ऐंचना दे० (क्रि०) ईंचना, खींचना, टानना।
ऐच्छिक तत्० (गु०) इच्छापूर्वक, स्वेच्छाधीन।
ऐंठ दे० (स्त्री०) बल, मरोड़, गाँठ, अकड़।
ऐठना दे० (क्रि०) मरोड़ना, बल देना, बलखाना, मचल जाना।
ऐंडुरी दे० (स्त्री०) गेंडुरी, इडुरी, बीड़ा।
ऐतरेय तत्० (पु०) ऋग्वेद का एक ब्राह्मण, वानप्रस्थों के लिये एक आरण्यक।
ऐतिहासिक तत्० (वि०) इतिहास सम्बन्धी, जो इतिहास से सिद्ध हो।
ऐतिह्य तत्० (पु०) परम्परा प्राप्त प्रमाण, पौराणिक, इतिहास प्रसिद्ध प्रवाद कथा।
ऐन तद्० (पु०) [सं० अयन] घर, मकान, स्थान। (वि०) ठीक, ज्यों का त्यों, "ऐन समय पर पहुँचूँगा।"
ऐनक दे० (स्त्री०) चश्मा, उपनेत्र।
ऐना दे० (पु०) आइना, दर्पण।
ऐनि तद्० (पु०),सूर्यपुत्र। [हरिण मारने वाला।
ऐणिक तत्० (पु०) मेषनाशक, भेड़ों के मारने वाला,
ऐन्द्रजालिक तत्० (पु०) इन्द्रजालकारक, मायावी, मायावान्, याजीगर।
ऐपन तद्० (पु०) चावल हलदी को एक साथ बट कर तैयार की हुई माङ्गलिक द्रव्य जो देवकर्म में काम आती है।
ऐब दे० (पु०) दोष, दूषण।
ऐबी दे० (वि०) खोटा, बुरा, दुष्कर्मी।
ऐवारा ग्रा० (पु०) भेड़ बकरियों का बाग।
ऐया दे० (स्त्री०) दादी, सास, बड़ी बूढ़ी स्त्री।
ऐयार दे० (पु०) चालाक, धूर्त्त, चलतापुर्ज़ा।
ऐरागैरा (वि०) बेगाना, इधर ऊधर का तुच्छ।
ऐरापति तद्० (पु०) ऐरावत हाथी।
"धवल, बरन, ऐरापति देख्यो,
तरगगन ले धरणि धसावत।"—सूर
ऐरावण तत्० (गु०) ऐरावत हस्ति, रावण के एक पुत्र का नाम।
ऐरावत तत्० (पु०) इन्द्र के हाथी जो समुद्र से निकला था, इन्द्र का सीधा धनुष, इरावान मेघ, बिजली, एक नाग का नाम, नारङ्गी बड़हर।—ी (स्त्री०) ऐरावत की हथिनी, एक पौधे का नाम, एक नदी का नाम, रावी जो पञ्जाब में है, बिजली।
ऐरेय तत्० (पु०) मद्य विशेष।
ऐल तत्० (पु०) इलापुत्र, पुरुरवा।
ऐश दे० (पु०) भोग विलास, चैन, आराम।
ऐशानी तत्० (वि०) ईशान कोण सम्बन्धी।
ऐशू दे० (पु०) चौपाये जानवरों का एक रोगविशेष जिसमें वे पागुर नहीं करते, क्योंकि इसमें उनका मुँह बँध जाता है।
ऐश्वर्य तत्० (पु०) विभव, सम्पदा गौरव, महिमा, महत्व।—शाली,—वान् (गु०) भाग्यवान्, प्रतापी। [साल।
ऐषम तत्० (अ०) वर्तमान, सवत्सर, एसों, इस

ओंड़ा दे० (गु०) अथाह, गहिरा, गम्भीर।
ओंधना दे० (क्रि०) उलट जाना, पलट जाना।
ओंधा तद्० (गु०) उलटा, पेट के बल, पट।
ओरा (पु०) चौखटा, आलमारी।
ओला तद्० (पु०) धात्रीफल, आमलकी आँवरा।—सार (पु०) गन्धक विशेष।
ओकन दे० (स्त्री०) राशि, ढेर।
औगात (पु०) हैसियत, समय।
औकारान्त तद्० (गु०) ऐसे शब्द जिनके अन्त में औकार हो।
औखद या औखध तद्० (पु०) औषधि, दवा।
औगा दे० (पु०) गाय का चमड़ा या परसा।
औगत तद्० (स्त्री०) दुर्दशा, दुर्गति।
औगाहना तद्० (क्रि०) अवगाहना।
औगी दे० (स्त्री०) कड़ा कोड़ा, चाबुक।
औगुन या औगुण तद्० (पु०) अवगुण, दोष, खोट, कलङ्क।—ी (गु०) गुणहीन, निर्गुणी, मूर्ख।
औघट तद्० (गु०) अगम्य, दुर्गम, दुस्तर।
औघड़ दे० (पु०) अघोरी, मौजी, अण्डबण्ड।
औचक तद्० (अ०) औचट, इचाक, अकस्मात्, अचानक, सहसा।
औचट दे० (स्त्री०) संकट, अड़स, कठिनाई।
औचित्य तत्० (पु०) उपयुक्तता, उचित का भाव।
औछ तद्० (पु०) दारहल्दी की जड़।
औज़ार (पु०) बढ़ई, लुहार आदि के हथियार।
औझड़ तद्० (पु०) ठेल, धक्का, झोंक।
औटन तद्० (पु०) जलाव, उबाल, ताव।
औटना तद्० (क्रि०) जलाना, सुखाना, उबालना।
औडुलोमि तत्० (पु०) वेदान्तवेत्ता वे ऋषि या आचार्य जिनका मत वेदान्तसूत्रों में उद्धृत है।
औढर दे० (वि०) मनमौजी, हरवरी, हार, वे समझी की ढरन, बिना विचार की प्रसन्नता।
औतार तद्० (पु०) अवतार, प्रकट, जन्म, अवतीर्ण होना (देखो अवतार)।
औत्तमि तत्० (पु०) १४ मनुओं में तीसरे मनु।
औत्तानपादी तत्० (पु०) उत्तानपाद के पुत्र, प्रसिद्ध भक्त ध्रुव, देखो ध्रुव।
औत्कर्ष्य तत्० (पु०) श्रेष्ठता, उत्तमता।
औत्सुक्य तत्० (पु०) उत्सुकता, अभिलाषा, चाह।
औथरा दे० (वि०) छिछला, कम गहरा।
" अति अगाध अति औथरौ नदी कूप सरवाय।" —बिहारी।
औदनिक तत्० (गु०) सूपकार, पाचक, रन्धनकर्ता, रसोइया। [पेटार्थी, पेटू, उदर सम्बन्धी।
औदरिक तत्० (गु०) उदरमात्र पोषक, पेटपोसू,
औदात तत्० (गु०) अवदात, श्वेत, गौर, शुक्ल, सफेद, धौला।
औदान दे० (पु०) पलुवा, सेंत का, सेंत मेंत का।
औदार्य तत्० (पु०) महत्व, श्रेष्ठत्व, सरलता, अकापट्य, दातृत्व, सात्विक नायक का गुण विशेष।
औदास्य तत्० (पु०) उदासीनता, वैराग्य, अनिच्छा, मनोमालिन्य।—भाव (पु०) वैराग्य भाव उदासीनता।
औदीच्य तत्० (पु०) गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।
औदुम्बर तत्० (वि०) गूलर का बना, ताँबे का बना हुआ।
औद्दालिक तत्० (पु०) दीमक और विलनी आदि की बाँबी के कीड़ों के बिल का चेप या मधु तीर्थ विशेष।
औद्धत्य तत्० (पु०) पराये गुण को न सह सकने का भाव, धृष्टता, दौरात्म्य, उजड्डपन, उग्रता, अक्खड़पन।
औद्वाहिक तत्० (गु०) विवाह सम्बन्धी धन, विवाह में प्राप्त धन।
औने पौने तद्० (गु०) अपूर्ण, न्यूनाधिक, घटी बढ़ी।
औपचारिक तत्० (गु०) उपचार सम्बन्धी, जो केवल कहने सुनने के लिये हो और यथार्थ न हो।
औपयिक तत्० (गु०) न्याय्य, उपयुक्त, योग्य।
औबट तद्० (गु०) अवघाट, बुरा या कठिन मार्ग, औघट, औघट, दुर्गम।
और दे० (अ०) औ, फिर, अधिक, विशेष, वाक्यान्तर च्छेदक।—एक, दूसरा कोई, और कोई।—ही; बिलकुल दूसरा अत्यन्त भिन्न।
औरत दे० (स्त्री०) नारी, महिला, स्त्री।
औरस तत्० (पु०) पुत्रविशेष, स्वउत्पादित पुत्र, सवर्णा स्त्री के गर्भ से उत्पन्न पुत्र, स्वपुत्र।
औरस्य तत्० (पु०) औरस पुत्र, स्वपुत्र।

और्द्धदैहिक तद्० (पु०) प्रेत-क्रिया, अग्निसंस्कार आदि, अन्त्येष्टि क्रिया, श्राद्ध।
औलाद दे० (पु०) सन्तान, सन्तति।
औवल दे० (पु०) सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट प्रधान, मुख्य।
और्व तद्० (पु०) वाडवानल, निमक, पुराणों के मतानुसार भूगोल का दक्षिण भाग जहाँ सब नरक है। मुनि विशेष, भृगुवंशीय ऋषि।
और्वशेय तद्० (पु०) वशिष्ठ, अगस्त्य, उर्वशी का पुत्र।
औषध तद्० (पु०) अगद, भेषज, दवा।—ालय (पु०) वैद्यगृह, दवाख़ाना।
औसना तद्० (क्रि०) उवसना, सड़ना, पचना।
औसर तद्० (पु०) अवसर, अवकाश, छुट्टी। [लान।
औसान तद्० (पु०) चेतना, बोध, साहस, समाधि, अव-
औसेर तद्० (पु०) चिन्ता, भ्रमर, खटका।
औहन तद्० (स्त्री०) अपमृत्यु, कुगति।
औहाती दे० (स्त्री०) अहिवाती, सुहागिन।

क

क व्यञ्जन का प्रथम वर्ण। इसका उच्चारण कण्ठ से होता है।
क तद्० (पु०) सिर, जल, सुख, केश, अग्नि, आत्मा, कामदेव, काम, ग्रन्थि, दक्ष, धन, प्रकाश, ब्रह्मा, वायु, विष्णु, मयूर, मन, यम, राजा, शब्द, शरीर, सूर्य।
कंस तद्० (पु०) ताँबा और राँगा मिश्रित धातु विशेष, काँसा, मथुरा का स्वनामख्यात राजा, कंसराज, भोजवंशीय राजा उग्रसेन का क्षेत्रज पुत्र, जरासन्ध का दामाद, दानवराज दुर्मिल के औरस और उग्रसेन की पत्नी के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा यह मथुरा में मारा गया।
कंसकार तद्० (पु०) ब्राह्मण के औरस तथा वेश्या के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष, कंसारी, कंसेरा, बर्तन बेचने वाला।
कंसताल (पु०) एक प्रकार का बाजा।
कइकई कैकेयी तद्० (स्त्री०) राजा दशरथ की रानी, भरत की माता, केकय देश के राजा की कन्या।
कई तद्० (अ०) कितेक, कितने, कई एक, कति, कियत्।
कएक तद्० कुछ थोड़ा, एकाध, अल्प, कतिपय।
ककई दे० (स्त्री०) कंघी, ककही। [ककरी।
ककड़ी तद्० (स्त्री०) खीरा, एक प्रकार का फल,
ककना दे० (पु०) कङ्कन, स्त्रियों का आभूषण।
ककनी तद्० (स्त्री०) पहुँची, कङ्कण, स्त्रियों के हाथ में पहिनने का गहना।
ककराली तद्० (स्त्री०) कँखौरी, काँख का फोड़ा।
ककवा दे० (पु०) कंघा।
ककरेजा तद्० (पु०) बैंजनी रङ्ग, बैंजनी।
ककरौंदा तद्० (पु०) छोटा औषधि का पौधा विशेष।
ककहरा तद्० (पु०) क से लेकर ह तक वर्ण, बारखड़ी, वर्णमाला। [कपास विशेष।
ककही तद्० (स्त्री०) कंघी, चौपगला, लाल रङ्ग का
ककुत्स्थ तद्० (पु०) इक्ष्वाकु राजा का पौत्र, इसका दूसरा नाम पुरञ्जय था, देवासुर संग्राम में युद्ध के लिये देवताओं की प्रार्थना इसने स्वीकार की और इन्द्र को वाहन बनाकर, समरक्षेत्र से अवतीर्ण होना स्थिर किया, इन्द्र ने वृषभ रूप धारण किया। उस पर चढ़ कर पुरञ्जय ने युद्ध किया, तभी से इसका नाम ककुत्स्थ पड़ा, और इसीसे इसके वंशधर काकुत्स्थ कहे जाते हैं।
ककुद तद्० (पु०) राजचिन्ह, पर्वत विशेष, शिखा, बैल के कंधे का कुब्बड़।
ककुभ् तद्० (पु०) अर्जुन का पेड़, वीणा के ऊपर का झुका हुआ टेढ़ा भाग, एक राग, दिशा, छन्द विशेष।
ककोरना दे० (क्रि०) खरोचना, खोदना, उखाड़ना।
कक्कड़ दे० (पु०) सेकी हुई तमाखू की पूर, क्षत्रियों की एक जाति।
कक्का दे० (पु०) काका, केकय देश, नगाड़ा।
कक्ष तद्० (पु०) बगल, काँख।
कखरी तद्० (पु०) काँख, दोख, बगल।
कखौरी तद्० (स्त्री०) काँख का फोड़ा। [निकास।
कगर तद्० (पु०) छोर, मेंड़, किनारा, पार्श्व, निकास,
कगार या कगारा तद्० (स्त्री०) करारा, टीला।
कङ्क तद्० (पु०) [कङ्क+अच्] मांसभक्षी पक्षी, बक,

बनाना पगराग, ब्राह्मण वेषधारी युधिष्ठिर का नाम क्योंकि विराट् के यहाँ युधिष्ठिर ने ब्राह्मण वेष बनाया था, क्षत्रिय।

कङ्कण तत्० (पु०) [कं+कण्+अल] कँगना, हाथ का आभरण विशेष, बाजा, कड़ा, वलय।

कङ्कपत्र तत्० (पु०) बाण विशेष, एक प्रकार का बाण जो उड़ता है [टूटे

कङ्कर तद्० (पु०) कँकर, रोड़ा, पत्थर के छोटे छोटे

कङ्काल तत्० (पु०) [कङ्क+अल] ठठरी, अस्थि पंजर।—माला (स्त्री०) हाड़ों की माला।—माली (पु०) अस्थिमय माला पहिनने वाला, महादेव, भैरव।

कङ्कालिनी तद्० (स्त्री०) डाकिनी, डायन।

कङ्केला तद्० (पु०) पथरेला, पथरीला, किरकिरा, बलुवा।

कङ्कोल तद्० (पु०) शीतल चीनी के वृक्ष का एक भेद।

कङ्कन तद्० (पु०) स्त्रियों के पहुँचे में पहनने का गहना, कड़ा।

कङ्कनी तद्० (स्त्री०) चूड़ी, कङ्कन, कँगना, कंकनी, छन्द, काँगनी, अन्नविशेष।

कङ्करोह तद्० (पु०) रीछ, पक्षी विशेष।

कङ्कार तद्० (पु०) भार वहन करने वाला।

कङ्गाल तद्० (पु०) दीन, दरिद्र, दुःखी।—ी (स्त्री०) दरिद्रता, दीनता।

कङ्गाल बाँका दे० (पु०) दरिद्र और अभिमानी।

कङ्गूरा दे० (पु०) शिखर, उच्चप्रदेश, पर्वत अथवा ऊँचे मकान का ऊपरी भाग।

कङ्गूडी दे० (स्त्री०) छप्पर का निकला भाग।

कङ्घा दे० (पु०) कंघा, केशमार्जनी।

कच तत्० (पु०) केश, बाल, रोम, लोम मेघ, सूखे फोड़े का खूँट या पपड़ी झुंड अँगरखे का पल्ला, सुगन्धवाला, मल्लविद्या का एक दाँव। धसने या चुभने का शब्द जैसे सुई कच से चुभी, कच का अर्थ विशेष न पक्के का भी होता है—जैसे कच लोहू। बृहस्पति का पुत्र, यह देवताओं के आदेश से मृतसञ्जीवनी नामक विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य के समीप गया था, वहाँ अनेकानेक यहाँ तक कि तीन तीन बार प्राण संहार तक का कष्ट उठा कर इसने विद्या सीखी, पुन स्वर्ग में उस विद्या का इसने प्रचार किया।

कचक दे० (स्त्री०) कसक, किरकिर, कुचलने से जो चोट लगे वह चोट। [करना।

कचकच दे० (स्त्री०) वाग्युद्ध, झगड़ा, व्यर्थ कोलाहल

कचकना दे० (क्रि०) मुरकना, फिरना, दबना, ठेस लगना।

कचकचाना दे० (स्त्री०) दाँत पीसना, कचकच शब्द करना, खूब ज़ोर लगाना—जैसे उसने कचकचा कर खा लिया।

कचकड़ दे० (पु०) कछुआ का खोपड़ा।

कचका दे० (पु०) कछुआ का छिलका।

कचकेला दे० (पु०) कच्चा केला, अपक्व कदली।

कचकैया दे० (पु०) धक्का, ठोकर, ठेस।

कचनार दे० (पु०) वृक्ष विशेष।

कचपच दे० (स्त्री०) सघामच, सघन, घना, निविड़, गिचपिच।—ी दे० (स्त्री०) कृत्तिका नक्षत्र, "तेहि पर ससि जो कचिपचि भरा"—जायसी।

कचपचिया दे० (पु०) गुच्छा समूह, कृत्तिका नक्षत्र।

कचपन दे० (पु०) कचाहट, कचाई।

कचबच्च दे० (पु०) लड़के बाले अधिक सन्तान।—ी दे० (स्त्री०) चमकीली कटोरी नुमा बने सितारे जो स्त्रियाँ शृङ्गार के लिये कनपटी और गाल पर लगाती हैं, चमकी। [सघन।

कचमच दे० (स्त्री०) पदपदा, धकधक, गुत्थम गुत्था,

कचरकूट दे० (पु०) मारकूट।

कचरना (दे०) रौंदना, दबाना, कुचलना।

"कीच बीच नीच तो कुटुम्ब को कचरिहै।"
—पद्माकर।

कचरपचर दे० (पु०) गिचपिच।

कचरा दे० (पु०) कच्चा खरबूजा, कूड़ा करकट।

कचरी दे० (पु०) शुष्क फल विशेष, फल सहित चने की टहनियाँ।

कचला दे० (पु०) गीली मिट्टी, पङ्कला, कीचड़।

कचलोंदा दे० (पु०) लोई, कच्चे आटे का लोंदा।

कचलोन दे० (पु०) विट लवण, काला नमक।

कचलोहिया दे० (स्त्री०) मढ़िया छोटा कच्चा लोहा।

कचलोहू दे० (पु०) घाव का पानी।
कचवना दे० (क्रि०) स्वलम्पना पूर्वक खाना, निश्चिन्त भाव से भोजन करना।
कचवाँसी दे० (स्त्री०) बीघे का आठ हजारवाँ भाग, २० कचवाँसी की १ बिसवाँसी। [कमानेवाला।
कचहरी दे० (स्त्री०) विचारस्थान, सभा, समाज,
कचाई दे० (स्त्री०) कच्चापन, कचापन।
कचात दे० (पु०) झगड़ा, विवाद, कलह।
कचालू दे० (पु०) कच्चू, अंश, घुँइयाँ, मसाला डाल कर एक प्रकार से बनाये हुए आलू, कन्द विशेष।
कचिया दे० (पु०) हँसुआ, दाँती।
कचियाहट दे० (स्त्री०) कचापन। [होना।
कचियाना दे० (क्रि०) हिचकना, सहमना, डरपोक
कचूमर दे० (पु०) अचार विशेष, कुचला।—निकालना (क्रि०) नष्ट कर देना, भुरकुस कर डालना, खूब मारना।
कचूर दे० (पु०) सुगन्धित कन्द विशेष।
कचेरा दे० (पु०) जाति विशेष। [चेड़हि।
कचौड़ी दे० (स्त्री०) पीठी या चोई भरी हुई पूरी,
कच्चा दे० (गु०) अपक्व, काचा, कचिया।—घड़ा तद्० (पु०) आवें पर अनपकाया घड़ा।—चिट्ठा तद्० (पु०) पूरा और ठीक ब्योरा।
कच्ची दे० (स्त्री०) कच्चा का स्त्रीलिङ्ग।—रसोई दे० (स्त्री०) केवल जल में सिद्ध किया हुआ अन्न, सिद्धान्न।
कच्चू दे० (पु०) घुँइयाँ, अरुई, कन्द विशेष।
कच्छ दे० (पु०) देश विशेष जो गुजरात के पास है, कछार, लाँग (धोती की)।
कच्छप तद्० (पु०) कछुआ, कूर्म, कमठ, मदिरा खींचने का एक यंत्र, नवनिधियों में से एक, एक नाग, विश्वामित्र का एक पुत्र, तुन का वृक्ष, दोहा विशेष, तालु का रोग विशेष।—ी तद्० (स्त्री०) कछुवी, छोटी वीणा।
कच्छा तद्० (पु०) दो पतवार की चपटी बड़ी नाव।—ी दे० (गु०) कच्छ देशवाली या उत्पन्न।
कछु दे० (पु०) कच्छप, निहत्य, कोड़।
कछुना दे० (पु०) घुटने के ऊपर तक बँधी धोती।
कछुनी दे० (स्त्री०) देखो कछुना।
कछुजम्पट दे० (गु०) अजितेन्द्रिय, लुच्चा।
कछुवाहा दे० (पु०) राजपूतों की जाति विशेष, कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र जी के पुत्र कुश के ये वंशधर हैं।
कछार दे० (पु०) खादर, तिरारा, नदी या तालाब का तट।
कछारना दे० (क्रि०) छाँटना, धोना, पँचारना।
कछु दे० (गु०) कुछ, थोड़ा, एकाध, किञ्चित्।
कछुक दे० (गु०) कुछ, थोड़ा सा, कुछ एक, इसका प्रयोग रामायण में बहुत आया है।
कछुवा दे० (पु०) कूर्म, कच्छप, कमठ।
कछौटी तद्० (स्त्री०) लंगोटी, कौपीन, कछनी।
कज तद्० (पु०) कजा, काजल, ऐब, दोष।
कजाक दे० (पु०) हाथी का अङ्कुश।
कजरा तद्० (पु०) काजल, वह बैल जिसके नेत्र काले हों।—ी दे० (वि०) काजल वाला, काला।
कजरी दे० (स्त्री०) कजली, बरसाती गीत विशेष।
कजरौटा दे० (पु०) काजल रखने का पात्र।
कजला तद्० (गु०) काला, काजल लगाये, धान की एक जाति जो जौनपुर में उत्पन्न होती है।—ी दे० (स्त्री०) देखो कजरी।
कजलौटी तद्० (स्त्री०) काजल पारने का पात्र।
कज्जल तद्० (पु०) काजल, अञ्जन, सुरमा।—गिरि (पु०) काला पहाड़, काजल का पर्वत, सुरमे का पहाड़।
कज्जा (स्त्री०) मार, काँजी।
कज्ञा (स्त्री०) मौत, मृत्यु। [कच्चा।
कञ्चन तद्० (पु०) सुवर्ण, सोना, जाति विशेष, धन,
कञ्चनक तद्० (पु०) कचनार, मैनफल।
कञ्चनी दे० (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, गौंची, कञ्चन जाति की स्त्री, सुवर्ण की पुतली। [चोली।
कञ्चु तद्० (पु०) चोली, अँगिया।—की (स्त्री०)
कञ्ज तद्० (पु०) पद्म, कमल, ब्रह्मा, अमृत, सिर के बाल।
कञ्जड़ दे० (पु०) डोरी बेचने वाली जाति।
कञ्जा दे० (पु०) भूरी आँख वाला।
कञ्जियाँ दे० (स्त्री०) आँखों की जननी।
कञ्जूस दे० (पु०) सूम, कृपण, लालची।—ी (स्त्री०) कृपणता। [गाय की घास, दरी, चास।
कट तद्० (पु०) कटि, कमर, गण्डस्थल, एक तरह

कटक तत्० (पु०) वलय पर्वत का मध्य भाग, नितम्ब, मेखला चक्र, सेना के रहने का स्थान, समुद्री निमक, पहिया, समूह, हाथी के दाँतों पर लगे पीतल के बन्द, देश विशेष, पर्वत की समभूमि, दल, सेना, कटक। [पर्वत, फौज, पहाड़।

कटकी तद्० (पु०) कटक नगर की बनी हुई वस्तु,

कटकना तद्० (क्रि०) बाँधना, ढाँचा, उपाय।

कटकाई दे० (पु०) दल, सेना, झुण्ड।

कटकटहि दे० (क्रि०) कटकटाते हैं, किचकिचाते हैं, क्रोध का शब्द करते हैं।

कटखना तद्० (पु०) कटहा, हकिंगा, कटौता।

कटघरा तद्० (पु०) कटहरा, कठरा, लकड़ी का घेरा।

कटती (स्त्री०) बिक्री, खपत।

कटन दे० (पु०) काट, कतरन।

कटना दे० (पु०) कट जाना, रीझना।

कटनि दे० (स्त्री०) काट, प्रीति, रीझना।

कटनी दे० (स्त्री०) कटाई, सोनाकाज, काटने का हथियार, दराती।

कटफल दे० (पु०) कायफल, कैफल।

कटरा दे० (पु०) चौक, हाट, निकास, शहर का बीच, शहर के मध्यस्थान जहाँ हाट बाजार हो।

कटहर दे० (पु०) कटहल, फल विशेष।

कटहरा दे० (पु०) काठ का घेरा, पिंजरा, कटघरा।

कटहल दे० (पु०) देखो कटहर।

कटहा दे० (पु०) कटौता, कटखना, हकिंगा।

कटा दे० (पु०) हत्या, वध, मारकाटी।—ई दे० (स्त्री०) काटने का काम, काटने की उजरत।—कटी दे० (स्त्री०) मारकाट। [ऑंख का संकेत।

कटाक्ष दे० (पु०) तिरछी चितवन, भावयुक्त दृष्टि,

कटान दे० कट जाना, पैना।

कटार दे० (पु०) कटारी, खञ्जर।

कटाल दे० (पु०) ज्वार, समुद्र का चढ़ाव।

कटाव दे० (पु०) नदी का किनारा, नदी के वेग से बहा भूभाग।

कटाह तत्० (पु०) कड़ाही, कड़ाह।

कटि तत्० (पु०) कमर, शरीर का मध्य भाग।—तट (पु०) कटिदेश, नितम्ब।—देश (पु०) शरीर का मध्यावयव।—पट (पु०) धोती।

कटिबन्ध तत्० (पु०) कमरबन्द, पृथ्वी का ठंडा गर्म आदि भाग। [प्रस्तुत।

कटिबद्ध तत्० (पु०) कमर बाँधे हुए, तैयार, उद्यत,

कटिया तद्० (स्त्री०) सन का बना हुआ वस्त्र विशेष, रत्नों के नगों को काट छाँट कर सुडौल करने वाला, कारीगर, कुट्टी, गाय बैल का कटा हुआ घास।

कटिसूत्र तत्० (पु०) कटिभूषण विशेष, करधनी, कमर का डोरा।

कटीला दे० (पु०) पौधा विशेष, कंटकयुक्त, काँटे वाला, आकर्षक, कटार, कतीरा गोंद।

कटु तत्० (पु०) अप्रिय दुर्गन्ध, कटुरस युक्त, मत्सर, तीक्ष्ण सुगन्धि, चरपरा, कड़ुआ।

कटुआ (पु०) मुसलमान, मदारों के बैल, काले रङ्ग का एक कीड़ा।

कटुक तत्० (पु०) कड़ुआ, तिक्त, तीखा।

कटुकी तत्० (स्त्री०) कुटकी, औषधि। [सोंठ।

कटुग्रन्थि तत्० (स्त्री०) औषध विशेष, पिपरामूल,

कटुकंद या कटुभद्र तत्० (स्त्री०) सोंठी।

कटुम्भी तत्० (स्त्री०) मालकाँगुनी।

कटुरोहिणी तत्० (स्त्री०) कटुकी औषधि।

कटूक्ति तत्० (स्त्री०) कुवचन, दुर्वचन।

कटेहर दे० (पु०) खोंपा, हल की लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है।

कटैया (पु०) काटने वाला, मरकटैया।

कटैला (पु०) एक क़ीमती पत्थर।

कटोरदान (पु०) ढक्कनादार पात्र विशेष।

कटोरा दे० (पु०) बेला, पान पात्र विशेष।

कटोरिया दे० (स्त्री०) कटोरी।

कटोरी दे० (स्त्री०) अँगिया, छोटा बेला या कटोरा।

कटौल दे० (पु०) बड़हल, फल विशेष। [गुलमेंहदी।

कट्टर दे० (पु०) काटने वाला, कठोरता, हठी,

कट्टहा (पु०) महाब्राह्मण।

कट्टहि दे० (क्रि०) काटते हैं, काट देते हैं।

कट्ठा दे० (पु०) मापने की वस्तु, बिसवा, जिससे खेत नापे जाते हैं।

कठ तत्० (पु०) [कठ्+अच्] मुनि विशेष, वेद का एक भाग या शाखा। (वि०) जंगली, निकृष्ट जैसे "कठ बदल।"—शाखा (स्त्री०) यजुर्वेद का

एक भाग।—ोपनिषत् (स्त्री०) पुस्तक विशेष, वेदान्त शास्त्र, दशोपनिषद् में एक उपनिषद्।
कठघरा तद्० (पु०) कटहरा, घेरा, बेड़ा, काठ की बनी हुई चारदिवारी। [कठड़ी।
कठ दे० (पु०) कड़ा, कठौता, कठौती, (स्त्री०)
कठम्दर दे० (पु०) काष्ठोदर, रोगविशेष, पेट का कड़ापन।
कठविड़की दे० (स्त्री०) मेढ़, कठखोंदा।
कठरा दे० (पु०) काठ का बना पात्र विशेष, आढाव, डोंडी, कठवचा (स्त्री०) कठरी।
कठला दे० (पु०) देखो कठुला।
कठवता दे० (स्त्री०) काठ का बर्तन विशेष, कठौता।
कठहँसी तद्०' (स्त्री०) शुष्कहास्य, काष्ठहास्य, बिना कारण हास्य।
कठारी दे० (पु०) काठ का बना कमण्डलु।
कठिन तद्० (गु०) [कठ्+इन्] कर्कश, कठोर, निष्ठुर, कड़ा, दृढ़, सख्त, दुष्कर, दुस्साध्य।—ता (स्त्री०) कठोरता, निठुरता दुष्करता।—त्व (पु०) कड़ापन, कठिनता।—पृष्ठक (पु०) कूर्म, कच्छप, कछुआ।—न्तःकरण (गु०) निष्ठुर, दृढ़ अन्तःकरण, निर्दय। [कठिनी।
कठिनिका तद्० (स्त्री०) [कठ्+इक्+आ] खड़ी,
कठिनी तद्० (स्त्री०) खड़ी मिट्टी, खुई।
कठिया दे० (पु०) कठौती, फाँदा, जाला, काठ की माला, काठ का छोटा पात्र। (वि०) कड़ा, कड़े छिलके का, जैसे कठिया बादाम।
कठिल्ल दे० (पु०) करेला, तरकारी। [विशेष।
कठुला दे० (पु०) गले में पहनने का एक आभूषण
कठेठा दे० (स्त्री०) कड़ी, कठोर, दृढ़।
कठेठी देखो कठेठा।
कठोदर तद्० (पु०) पेट की एक बीमारी।
कठोर तद्० (गु०) कठिन, कठोर, दृढ़, निष्ठुर।—ता या ताई या पन (स्त्री०) निठुरता, निठुराई।
कठोरा देखो कठोर। [भोज्य पात्र।
कठौलिया दे० (स्त्री०) काष्ठनिर्मित पात्र, काठ का
कठौत या कठौता (पु०) देखो कठवता। [छुआ पात्र।
कठौती (स्त्री०) काठ की ऊँची कोर का लमका-
कड़ दे० (पु०) कुसुम या वरण बीज, (डिंगल भाषा में) कमर, बरें।

कड़क दे० (पु०) धड़ाका, चटक, गर्जन, कड़कड़ाहट, कड़ाका, गाज, दरद, कसक।
कड़कना दे० (क्रि०) चटकना, धड़कना, गरजना।
कड़क कर दे० गर्ज्जन के साथ, साभिमान।
कड़कच्च दे० (पु०) खोल, लवण, खार, समुद्र का लवण विशेष। [शब्द।
कड़का दे० (पु०) बिजली, तड़ित, गर्जन, भयङ्कर
कड़खा दे० (पु०) युद्ध में बढ़ावा देना, उत्साहित करना, गान विशेष जिसमें शूरवीरों का यश वर्णित हो।
कड़खैत दे० (पु०) भाट, बढ़ावा देने वाला, चारण, इन जाति के लोग राजपुताने में अधिक पाये जाते हैं; वहाँ इनको जागीरें मिली हुई हैं; ये लड़ाई में वीर राजाओं को अपनी ओजस्विनी कविता से उत्साहित किया करते थे।
कड़वी दे० (स्त्री०) सोंठी, कड़ू, जुवार बाजरे की डाँठी।
कड़ा दे० (गु०) कठोर, दृढ़, सख्त, उत्कट। (पु०) हाथ का आभूषण, वलय, कड़ाही को पकड़ने के लिये छल्ला, बेंट, एक प्रकार का कबूतर।—ई तद्० (स्त्री०) कठोरता, सख्ती।
कड़ाका दे० (पु०) उपवास, लंघन, निर्जल उपवास, किसी वस्तु के टूटने की आवाज। [करार।
कड़ाड़ा दे० (पु०) नदी का ऊँचा तीर, किनारा,
कड़ाह या कड़ाही तद्० (पु०) लोहे का पात्र, लोहे की बड़ी "कड़ाही" जिसमें दूध औटाया जाता है।
कड़ाही तद्० (स्त्री०) छोटा कड़ाह।
कड़िहार दे० (पु०) कर्णधार, मल्लाह, केवट, माँझी।
कड़ी दे० (स्त्री०) छोटी धरन, जंजीर की लड़ी, छोटा छल्ला जो किसी वस्तु के लटकाने के लिये हो, गीत का एक टुकड़ा।—दार दे० (वि०) छल्लेदार, जिसमें कड़ी हो।
कड़ुआ तद्० (गु०) कटु, तीता, गुस्सैल।
कडू दे० (वि०) कड़ुआ।
कड़ेर दे० (पु०) कहोड़, संख्या विशेष, सौ लाख।
कढ़ना दे० (क्रि०) निकलना, उखाड़ना, बढ़ जाना।
कढ़ाई दे० (स्त्री०) कढ़ाही।
कढ़ाना, कढ़वाना (क्रि०) निकलवाना।
कढ़ाव दे० (पु०) कसीदे का काम, निकास। [हुई वस्तु।
कढ़ी दे० (स्त्री०) भोजन विशेष, बेसन और दही से बनी

कड़ुआ दे० (पु०) उधार, ऋण निकाला हुआ जातिच्युत।
कढ़ेरना दे० (क्रि०) घसीटना।
कढ़ैया दे० (स्त्री०) कड़ाही।
कढ़ोरना दे० (क्रि०) घसीटना।
कण तद्० (पु०) [कण्+अल] अतिसूक्ष्म, कणा, अणुपरिमिका, किनका।—जीरा (पु०) सफेद जीरा।—भक्षक या भोजी (पु०) कणभोजी, कणादमुनि, पक्षि विशेष।
कणा तद्० (स्त्री०) पीपल।
कणाद तद्० (पु०) [कण्+अद्+अण्] सुवर्णकार, मुनि विशेष, वैशेषिक दर्शनकर्त्ता, यह तण्डुलकणा खाकर अपनी जीविका करते थे, इसी कारण इनका कणाद नाम हुआ है। इनका दूसरा नाम उलूक था, अतएव वैशेषिक दर्शन को औलुक्य दर्शन भी कहते हैं। यह परमाणुवादियों में थे। इनका बनाया दर्शन षड्दर्शन के अन्तर्गत समझा जाता है।
कणमात्र तद्० (पु०) एकबिन्दु,किञ्चिन्मात्र,बहुतथोड़ा।
कणिका तद्० (स्त्री०) [कणिक+आ] लेश, बिन्दु, कणा, छोटा भाग, चावल के टुकड़े।
कणिश (पु०) गेहूँ आदि अनाज की बाल। [टुकड़ा।
कणी तद्० (स्त्री०) छिलका, टुकड़ा, भाग, बहुत पतला
कण्टक तद्० (पु०) [कण्ट+ण्वुल्] काँटा, क्षुद्र शत्रु, रोमाञ्च दोष, विघ्न, बाधक, कवच।—द्रुम (पु०) काँटा युक्त वृक्ष, शाल्मलीवृक्ष।—फलुला (स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुमारी।—फल (पु०) कटहर, सिंघाड़े।—भुक् (पु०) ऊँट, उष्ट्र।—मय (पु०) काँटे से भरा, बहुत काँटे वाला।—लता (स्त्री०) खीरा, फल विशेष।—ारि भटकटैया, सेमल। [—िका (स्त्री०) भटकटैया।
कण्टार दे० (पु०) कटीला, खारवा, कण्टकमय।—
कण्टिया दे० (स्त्री०) काँकड़ी, छोटी कील, मछली पकड़ने की वंसी की पैनी कील।
कण्ठ तद्० (पु०) गला, घाँटी, गर्दन।—ा (स्त्री०) माला, कण्ठी, गजरा, गले का आभूषण।—स्थ (पु०) मुखस्थ, मुखाग्र। [रस्सी।
कण्ठपाशक तद्० (पु०) हाथी के गले में बाँधने की
कण्ठभूषा तद्० (स्त्री०) कण्ठाभरण, ग्रैवेयक, हार।
कण्ठमाला तद्० (स्त्री०) कण्ठ में पहनने की माला, रोग विशेष।
कण्ठा दे० (पु०) कण्ठभूषण विशेष, बड़े दाने की माला।—गत (पु०) [कण्ठ+आगत] शरीर त्याग के उद्योगी, गतजीवन।—ग्र (पु०) [कण्ठ+अग्र] मुखाग्र, कण्ठस्थ, मुखस्थ। [मात्रा।
कण्ठिधारी तद्० (पु०) वैरागी, भगत, कण्ठी पहनने
कण्ठी तद्० (स्त्री०) कण्ठाभरण, कण्ठमाला, तुलसी की माला।
कण्ठीरव तद्० (पु०) सिंह, व्याघ्र, शेर।
कण्ठ्य तद्० (पु०) कण्ठ से उच्चारित होने वाले अक्षर, कण्ठोच्चारित।
कण्डा दे० (पु०) कण्डा, उपली, गोहरी।
कण्डी दे० (स्त्री०) छोटी उपली।
कण्डुपर्णी तद्० (स्त्री०) शंखाहुली, औषधि विशेष।
कण्डु तद्० (पु०) रोग विशेष, खुजलाहट, खुजली, खाज।—घ्न (पु०) परवँर औषधि, कण्डु रोग दूर करने की औषधि। [होना।
कण्डूति तद्० (स्त्री०) कण्डूयन, खुजलाहट, खाज
कण्डेरा तद्० (पु०) काण्डकार, बाण बनाने वाली जाति, धुनियाँ। [पात्र।
कण्डोल दे० (पु०) बाँस का बना अन्न रखने का
कण्व तद्० (पु०) मुनि विशेष, एक प्राचीन ऋषि का नाम, यह शकुन्तला के पालक पिता थे, मालिनी नदी के तीर पर इनका आश्रम था, कुलपति की उपाधि इन्हें मिली थी, क्योंकि इनके आश्रम में अनेक सहस्र बालक शिक्षा पाते थे।
कत तद्० (अ०) कहाँ, क्योंकर, क्या, कैसा, किस वास्ते, किस लिये। (पु०) क़लम की नोक का आड़ी कटन।
कतक तद्० (पु०) रीठा, निर्मली।
कतनाई तद्० (स्त्री०) सूत कातने की मजूरी।
कतना तद्० (क्रि०) काता जाना। (अ०) कितना किस परिमाण में।
कतनी (स्त्री०) सूत कातने की टिकुली।
कतरनी दे० (स्त्री०) कैंची, कतरनी।
कतर छाँट (स्त्री०) काट छाँट, कतर ब्योंत।
कतरन तद्० (स्त्री०) कतरन, छाँटन।

कतरना (क्रि॰) काटना, छाँट करना, छाँट छूट करना।
कतरनी तद्॰ (स्त्री॰) कैंची, काटने का शस्त्र।
कतरव्योंत (पु॰) कतर छाँट, काट छाँट, हेर फेर, उलट फेर। [किया हुआ।
कतरा तद्॰ (वि॰) भिन्न भिन्न किया हुआ, टुकड़ा
कतराना तद्॰ (क्रि॰) कटवाना, अलग कराना, पृथक् होना, अलग होना।
कतरी दे॰ (स्त्री॰) कोल्हू का एक विशेष भाग, जमी हुई मिठाई का टुकड़ा, एक औज़ार।
कतरवाना (क्रि॰) कातने में सहायता देना।
कतवार (पु॰) कूड़ा करकट, घास फूस। [ठौर भी।
कतहूँ दे॰ (अ॰) कहीं भी, किसी जगह भी, किसी
कतल दे॰ (पु॰) वध, हत्या।—करना (क्रि॰) मार डालना।—आम (पु॰) घोर वध।
कताई तद्॰ (स्त्री॰) कातने की उजरत। [क्रमान्वय,
कतार दे॰ (पु॰) पाँत की पाँत, धारी, क्रमिक,
कति तद्॰ (गु॰) केतिक, कितने, कितने एक।—पय (गु॰) थोड़े, कम, कुछ एक।
कतिक (वि॰) कितना।
कतिपय (वि॰) अल्प, कितने ही, थोड़े।
कतीरा दे॰ (पु॰) निर्यास, गोंद विशेष।
कतुआ दे॰ (पु॰) तकुआ, तकुवा, सूवा।
कतेक दे॰ (गु॰) कति, कितने, दो एक।
कत्त दे॰ (अ॰) कहाँ, क्यों कर।
कत्तल दे॰ (पु॰) कटा हुआ, टुकड़ा, पत्थर की गढ़ाई में निकले पत्थर के छोटे टुकड़े।
कत्ता तद्॰ (पु॰) बाँस फोड़ने वालों का एक औज़ार, बाँका बाँस, बाँकी छोटी तलवार।
कत्ती तद्॰ (स्त्री॰) छुरी, कटारी।
कत्तान दे॰ (पु॰) छुरा, कटार, धनधार।
कत्थ दे॰ (पु॰) लोहे की स्याही।
कत्थई दे॰ (वि॰) कत्था के रङ्ग का, खैरा रङ्ग।
कत्थक तद्॰ (पु॰) गाने बजाने वाली हिन्दू जाति विशेष। [जाता है।
कत्था दे॰ (पु॰) खैर, खदिर, जो पान के साथ खाया
कथक तद्॰ (गु॰) [कथ्+अक्] वक्ता, पुराण की कथा बाँचने वाला, बाँचने वाला, पुराण वक्ता।
कथक्कड़ तद्॰ (पु॰) बहुत कथा कहने वाला।

कथञ्चन तद्॰ (अ॰) किस प्रकार।
कथञ्चित् तद्॰ (अ॰) किसी प्रकार, अधिक कष्ट से।
कथन तद्॰ (पु॰) बोल, कहन, उच्चारण, उक्ति, विवरण करण।
कथनी (स्त्री॰) देखो कथन।
कथनीय तद्॰ (गु॰) वर्णनीय, कहने योग्य, वक्तव्य, कहने के लायक, निन्दनीय। [सम्भावना।
कथम् तद्॰ (अ॰) हर्ष, गर्हा, प्रकारार्थ, सम्भ्रम प्रश्न,
कथरी तद्॰ (स्त्री॰) गुदड़ी।
कथहिं तद्॰ (क्रि॰) कहते हैं, वर्णन करते हैं, गान करते हैं, बखान करते हैं।
कथा तद्॰ (स्त्री॰) बात, इतिहास, पँवारा, वृत्तान्त।—प्रबन्ध (पु॰) आख्यायिका, कहानी, क़िस्सा, गल्प।—प्रसङ्ग (पु॰) कथोपकथन, बातचीत सँपेरा, मदारी, विषवैद्य।—प्राण (पु॰) नाटक वक्ता, कथक।—मुख (पु॰) कथा का प्रारम्भ, ग्रन्थ की प्रस्तावना, आख्यायिका।—वार्ता (स्त्री॰) कथोपकथन, बातचीत, संभाषण, आलाप।—सचिव (पु॰) सम्मतिदाता, मन्त्री, बातचीत करने में सहायक। [सारांश, कहानी।
कथानक तद्॰ (पु॰) बड़ी कथा का संक्षेप या
कथित तद्॰ (गु॰) [कथ्+क्त] उक्त, कहा हुआ।
कथितव्य तद्॰ (गु॰) [कथ्+तव्य] वक्तव्य, कथनीय, कथनाई, कहने के योग्य।
कथीर तद्॰ (पु॰) राँगा।
कथोद्घात तद्॰ (पु॰) कथा आरम्भ, प्रस्तावना।
कथोपकथन तद्॰ (पु॰) [कथ्+उप्+कथन] आलाप, बातचीत। [कथनाई।
कथ्य तद्॰ (गु॰) [कथ्+य] वक्तव्य, कथितव्य,
कद् तद्॰ (अ॰) कब, कहिया, किस समय, कदा।
क़द दे॰ (पु॰) डीलडौल, ऊँचाई।
कदक्षर तद्॰ (पु॰) कुत्सित वर्ण, ख़राब अक्षर।
कदध्वा तद्॰ (अ॰) [कद्+अध्वन्] निन्दित पथ, कुत्सित मार्ग, कुपथ।
कदन तद्॰ (गु॰) [कद्+अनट्] पाप, युद्ध, मारक, मर्दन, वधिक, नाशक, दुःख।
कदन्न तद्॰ (पु॰) [कद्+अन्+क्त] कुत्सित अन्न, अपवित्र अन्न—जैसे कोदो, केसारी, मसूर आदि।

कदम तद्० (पु०) कदम्ब वृक्ष, वृक्ष विशेष, चरण, पाद।)

कदम्ब तद्० (पु०) [कद्+अम्ब] वृक्ष विशेष, समूह, कदम वृक्ष।—क (पु०) समूह।—कुसुमाकार (गु०) गोलाकार, वर्तुलाकार।

कदर (पु०) चौकी सफ़ेद करथा, गोखरू, अङ्कुश, आरा।

कदराई या कदाई सद्० (स्त्री०) कादरता, कादरपन, भीरुता कापरता, दरपोकपना।

कदर्थ तद्० (गु०) [कद्०+अर्थ] तिरस्कृत, बुरा, कुत्सित। (पु०) निकम्मी चीज़, कूड़ा करकट।—ना तद्० (स्त्री०) दुर्गति, दुर्दशा।

कदर्य तद्० (पु०) कुत्सित, निन्दित, अदाता, मन्द, क्षुद्र कञ्जूस, सूम, मक्खीचूस।

कदली तद्० (स्त्री०) कदलक, केले का वृक्ष, काले और लाल रङ्ग का मृग। [कर, कभी।

कदा तद्० (अ०) [किम्+दा] कब, किस समय,

कदाकार तद्० (गु०) [कद्+आ+कृ+अञ्] कुत्सित आकृति, कुरूप, बदसूरत।

कदाकृति तद्० (स्त्री०) कुत्सित आकृति, कुरूप।

कदाख्य तद्० (वि०) कदनाम। [समय।

कदाच तद्० (अ०) कदाचित्, कदाचन, कभी, किसी

कदाचन तद्० (अ०) किसी समय, कभी।

कदाचार तद्० (पु०) बुरा व्यवहार, कुचलन, निन्दित कर्म असदाचार, दुराचार।

कदाचित् तद्० (अ०) क्या जाने, कभी, कभी, कभू, किसी समय, शायद। [भी, कभूं।

कदापि तद्० (अ०) [कदा+अपि] कभी भी, कभी

कदीम दे० (गु०) पुराना, प्राचीन।

कदीमा दे० (पु०) आवक, खोहाँगी।

कदुदू दे० (पु०) कद्दू, लौका लौकी, घीई।

कद्रु तद्० (पु०) धूम्रवर्ण। (स्त्री०) नागमाता का नाम, कश्यप मुनि की स्त्री दक्ष प्रजापति की कन्या। इन्हीं के गर्भ से सर्पों की उत्पत्ति हुई है।— पुत्र (पु०) सर्प, भुजङ्ग।—सुत (पु०) नाग, सर्प, भुजङ्ग।

कधी दे० (अ०) कभू, किसी समय।

कन तद्० (पु०) कण, अणु, अनाज का दाना, प्रसाद, बूँद, चावलों की धूल, हीर, बल, शरीर सम्बन्धी शक्ति यौगिक शब्दों में कान को भी कन ही कहते हैं जैसे कनफटा कनटोप आदि।

कनई (स्त्री०) नूतन शाखा।

कनअगुली (स्त्री०) कनुलिया, सब से छोटी उँगली।

कनक तद्० (पु०) १६.र्ण, सुवर्ण, धतूरा पलाशवृक्ष, नागकेसर वृक्ष, गेहूँ का आटा (कनक की रोटी)। —कशिपु हिरण्यकशिपु, प्रह्लाद के पिता का नाम। —चम्पक (पु०) वृक्ष विशेष, कनकचंपा।—रस (पु०) हरिताल।—लोचन (पु०) हिरण्याक्ष, एक राक्षस का नाम।—ध्वज (पु०) सुमेरु पर्वत, अगस्त गिरि, स्थान विशेष।

कनकक्षार (पु०) सुहागा।

कनकटा दे० (गु०) बूचा, कर्णरहित।

कनकी दे० (स्त्री०) किनकी, टूटे चाँवल।

कनखजूरा दे० (पु०) कनसलाई, गोजर।

कनखी दे० (स्त्री०) सैन, संकेत, इशारा, कटाक्ष।

कनगुरिया (स्त्री०) छिगुनिया, सबसे छोटी हाथ की उँगली।

कनछेदन (पु०) कर्ण वेध संस्कार, कान छिदाना।

कनटोप (पु०) टोप, कानों को ढकने ऐसी टोपी विशेष। [समीप का भाग।

कनपटी दे० (स्त्री०) पटपटी, गण्डस्थल, कान के

कनफटा दे० (पु०) साधु विशेष, नाथसम्प्रदायी साधु।

कनफूल (पु०) कर्णफूल, कान में पहिनने का आभूषण विशेष। [गीत सुनने का इच्छुक।

कनरसिया दे० (पु०) कर्णरसिक, गीतज्ञ, गान-

कनल तद्० (पु०) मिलाना।

कनवई } कनवा } चूटाँक।

कनधाई दे० (स्त्री०) कर्णवेध, कान छेदना।

कनसलाई दे० (स्त्री०) कनखजूरा, गोजर।

कनहार दे० (पु०) पतवार, कर्ण।

कनहा दे० (पु०) अन्न की जाँच करने वाला।

कना देखो कन।

कनागत तद्० (पु०) पितृपक्ष, श्राद्धपक्ष, कन्यागत।

कनात दे० (पु०) मोटे कपड़े की दीवार जिससे आड़ करने के लिये स्थान घेरा जाता है, तम्बू।

कनिक दे० (पु०) गेहूँ का पिसान, आटा।

कनिया दे० (स्त्री०) गोद, वक्षस्थ।
कनियाना तद्० (क्रि०) कतराना, आँख बचाकर [निकल जाना।
कनियोहट तद्० (स्त्री०) भड़क, सङ्कोच, खींच।
कनिष्ठ तद्० (गु०) छोटा, लहुरा, अनुज, अति युवा, पश्चात् उत्पन्न, हीन, निकृष्ट।
कनिष्ठा तद्० (स्त्री०) छोटी, सबसे छोटी, नीच, निकृष्ट।
कनिष्ठिका तद्० (स्त्री०) छिगुनी, हाथ की सब से छोटी उँगली।
कनिद्दा दे० (पु०) घुना, प्रतिहिंसक।
कनी (स्त्री०) कण्णा, कणिका, छोर, सिरा, अति सूक्ष्म भाग। [अँगुरी।
कनीनिका तद्० (स्त्री०) आँखों की तारा, छोटी
कनीयान् तद्० (गु०) कनिष्ठ, अनुज, छोटा, अति-युवा, अल्पतर।
कने दे० (अ०) पास, समीप, साथ, सङ्ग।
कनेकी (पु०) कीनका मात्र या भी।
कनेठी दे० (स्त्री०) कान मरोड़ना, थप्पड़ मारना।
कनेर दे० (पु०) कनेल, करवीर, हस्तिपेश्या, पहले जिसको प्राण दण्ड की राजाज्ञा होती थी, उसे कनेर के फूलों की माला पहनाई जाती थी। "अधीन विग्रह करवीरमालाम्।" (मृच्छकटिक) —कनैया तद्०(पु०) कर्णवेधन, कनछेदौनी।
कनौज तद्० (पु०) नगर विशेष, एक नगर का नाम।
कनौजिया तद्० (पु०) कनौज के वासी, ब्राह्मण विशेष, कान्यकुब्ज ब्राह्मण।
कनौड़ा दे० (गु०) सङ्कोची, मुखचोर, अपंग, कौंडा, कलङ्कित, तुच्छ, दबैल।
कन्त तद्० (पु०) स्वामी, प्रियतम, भर्तार, प्रिय, ईश्वर।
कन्था तद्० (स्त्री०) गुदड़ी, कथरी, पुराने वस्त्र से बना ओढ़ना।—धारी (पु०) भिक्षुक, सन्यासी, संसारत्यागी, गूदड़ बाबा।
कन्द तद्० (पु०) [कन्द + अच्] गूदेदार और बिना रेशे की जड़ जैसे—ज़मीकन्द, सूरन, शकरकन्द बिदारी कन्द, सूरण, ओल, गाजर, लहसुन, मूल, जड़।—वर्द्धन (पु०) मूल, ओल।—मूल (पु०) मुनिभोजन विशेष।
कन्दरा तद्० (स्त्री०) [कन्दर + आ] खोह, गुफा, गुहा, पर्वत की सुरंग।—न (पु०) पकंटी वृक्ष, अखरोट वृक्ष, पाकर का पेड़।
कन्दराल (पु०) पाकर, हिंगोट, पकंटी।
कन्दर्प तद्० (पु०) [क + दृप् + अच्] काम, मदन, कामदेव, अनङ्ग, सङ्गीतशास्त्र में ११ प्रतालों में से एक ताल।
कन्दल तद्० (गु०) [कन्द + ला + ड्] उपराग, नवीन अङ्कुर, विवाद, कलह, झगड़ा, लड़ाई, सोना, कपाल।—कन्द (पु०) ज़िमीकन्द, सूरन, मूल विशेष।
कन्दला तद्० (पु०) पाँसा, रैनी, गुल्ली, चाँदी की लम्बी छड़ जिससे तारकश तार तैयार करते हैं। [प्राप्त।
कन्दलित तद्० (गु०) प्रस्फुटित, अङ्कुरित, अङ्कुर
कन्दसार तद्० (पु०) मृग, हरिण, कुरङ्ग, नन्दन वन।
कन्दासी तद्० (पु०) पुष्प और औषधि विशेष, प्रियवांसा। [कड़ा ताँबा, साँकल, बड़ी बेदी।
कन्दु तद्० (पु०) [कन्द + उ] लोहमय पाकपात्र,
कन्दुक तद्० (पु०) गोल तकिया, सुपारी, वर्णवृत्त विशेष, गेंद।
कन्ध तद्० (पु०) काँधा, कन्धा, डाली, शाखा।
कन्धनी दे० (स्त्री०) करधनी, कमर में पहनने का आभूषण, मेखला, किङ्किणी।
कन्धर तद्० (पु०) ग्रीवा, घेटुवा, गला, गर्दन, मेघ, मोथा, मुस्ता।
कन्धा तद्० (पु०) कंधा, स्कन्ध।
कन्धार तद्० (पु०) अफ़ग़ानिस्तान के एक नगर का नाम, कन्दहार, गान्धार, कहार, मल्लाह।
कन्धि तद्० (पु०) समुद्र, मेघ।
कन्धियाना तद्० (क्रि०) कान्ध पर रखना, कन्धे का बल देना, कन्धे का सहारा देना।
कन्धेली तद्० (स्त्री०) ज़ीन, खोगीर गद्दी, यह वस्तु जो बैलों की पीठ पर रखी जाती है और उस पर बनिये अन्न लादते हैं।
कन्धैया तद्० (पु०) कन्हैया, श्रीकृष्ण का नाम।
कन्यका तद्० (स्त्री०) अविवाहिता कन्या, पुत्री, दस वर्ष की लड़की।
कन्या तद्० (स्त्री०) कुमारी, लड़की, बेटी, दुहिता बारह राशियों में से छठी राशि, घीकुवार, बड़ी

इलायची, झाँझ ककोरी, बाराहीकन्द, चार गुद पाछे वर्णवृत्त का नाम।—कात (पु॰) कन्या की दश वर्ष की अवस्था, रजोदर्शन की पहली अवस्था।—कुमारी तद्॰ (स्त्री॰) रास कुमारी, केप कुमारी, रामेश्वर के समीप का एक अन्तरीप।—गत (पु॰) कन्यानिष्ठा, कन्या राशिस्थित, कन्यागत।—दाता (पु॰) विवाह में कन्यादान करने का अधिकारी।—दान (पु॰) विवाह, वर को कन्या समर्पण।—पति (पु॰) जामाता, उपपति, व्यभिचारी।—भाव (पु॰) कुमारिकापन, कुमारीत्व।—राशि (पु॰) षष्ट राशि, निकम्मी वस्तु, लज्जित, सलज्ज।

कन्दरीया दे॰ (पुं॰) कनहारी, माँझ, कर्णधार, मल्लाह।

कन्हाई दे॰ (स्त्री॰) कनवाई, भेन, फूलना। (पु॰) श्रीकृष्ण का प्यार से बुलाने का नाम।

कन्हैया दे॰ (पु॰) श्रीकृष्ण का नाम, अत्यन्त प्रिय।

कपकपी तद्॰ (स्त्री॰) थरथरी, कुरकुरी।

कपट तद्॰ (पु॰) [क+पट्+अच्] अयथार्थ व्यवहार, छल, प्रतारण, चातुरी।—ता (स्त्री॰) धूर्तता, शठता।—वेश (पु॰) छल वेष, मिथ्या, कल्पित वेष।—वेशधारी (पु॰) छद्म वेशधारी, प्रतारक, धोखा देने वाला, ठग।—भू (स्त्री॰) माया की भूमि, जादू की धरती, माया से उत्पन्न भूमि, माया जनित भूभाग। [छद्मवेशी।

कपटी तद्॰ (गु॰) छली, बहुरूपिया, खोटा, कपटकारी,

कपड़कोट दे॰ (पु॰) खीमा, तम्बू, डेरा।

कपड़छन दे॰ (पु॰) कपड़े में किसी पीसी बारीक बुकनी को छानना।

कपड़द्वार तद्॰ (पु॰) वस्त्रागार, तोशखाना।

कपड़धूलि (स्त्री॰) करेब, रेशमी महीन वस्त्र विशेष।

कपड़विया तद्॰ (पु॰) दरज़ी, रफ़ूगर।

कपड़ा दे॰ (पु॰) वस्त्र, लुगा, लत्ता।

कपड़े से होना दे॰ रजस्वला होना।

कपना तद्॰ (क्रि॰) काँपना, थरथराना।

कपड़ौटी दे॰ (स्त्री॰) धातु या किसी औषधि को भस्म करने को उसके सम्पुट पर गीली मिट्टी और कपड़ा लपेटे जाने की क्रिया।

कपरिया तद्॰ (पु॰) एक नीच जाति।

कपर्द या कपर्दक तद्॰ (पु॰) महादेव की जटा, वराटिका, कौड़ी।

कपर्दिका तद्॰ (स्त्री॰) वराटिका, कौड़ी।

कपर्दिनी तद्॰ (स्त्री॰) दुर्गा, शिवा, भवानी।

कपर्दी तद्॰ (पु॰) शिव, महादेव, जटाधारी।

कपाट तद्॰ (पु॰) किवाड़, सिवाड़ी, द्वार, देहली, घर, आवरण।

कपार तद्॰ (पु॰) देखो कपाल।

कपाल तद्॰ (पु॰) [क+पाल+अच्] ललाट, भाल, कपार, अदृष्ट, भाग्य।—क्रिया (स्त्री॰) संस्कार विशेष, अधजले मुर्दे के सिर को बाँस से फोड़ना।—ी (पु॰) शिव, महादेव।—मोचन (पु॰) काशी के एक तालाब का नाम।—भृत् (पु॰) शिव, महादेव, महेश्वर।

कपालिका तद्॰ (स्त्री॰) [कपाल+इक्+आ] दन्त रोग विशेष, खोपड़ी, घड़े के नीचे या ऊपर का हिस्सा। [धारिणी।

कपालिनी तद्॰ (स्त्री॰) दुर्गा, भगवती, कपाल-

कपाली तद्॰ (पु॰) शिव, महादेव, द्वार के ऊपर का काठ, सरदल, वर्णसङ्कर जाति जिसकी उत्पत्ति कहार और ब्राह्मणी के योग से होती है, कपरिया।

कपालीय तद्॰ (गु॰) भाग्यवान्, कपार के बली।

कपास या कपासु तद्॰ (पु॰) रुई, कर्पास।

कपासी (वि॰) कपास के फूल का रंग, यानी हल्का पीला रङ्ग।

कपि तद्॰ (पु॰) [कप्+इ] बन्दर, मर्कट, हाथी, कंजा, सूर्य, शिलारस नाम्नी औषधि जो सुगन्धित होती है, यन्त्र विशेष।—कच्छू (स्त्री॰) गुल्म विशेष, केवाँच।—कुञ्जर (पु॰) वानरों का राजा, प्रधान, राजा, हनुमान्।

कपिञ्जल तद्॰ (पु॰) चातक पक्षी, तित्तिर पक्षी, गौरा पक्षी, भरद्वाज, कादम्बरी कथा के उपनायक का एक मित्र, मुनि विशेष।

कपित्थ तद्॰ (पु॰) कैथा, कैथ, फल विशेष।

कपिध्वज तद्॰ (पु॰) अर्जुन, तीसरा पाण्डव।

कपिप्रिय तद्॰ (पु॰) कैथ, कैथा।

कपिवक्त्र तद्॰ (पु॰) बानर के समान मुख वाला। कहते हैं कि नारद जी ने विवाह करने की इच्छा

से सुन्दर बनने के लिये—सो भी भगवान् के समान—भगवान् से प्रार्थना की, भगवान् ने उनके आध्यात्मिक कल्याण की ओर ध्यान देकर सुन्दर बनाना तो दूर रहा, उनका मुँह बन्दरों का सा बना दिया कि आप अब बड़े सुन्दर हो गये। नारद जी भी स्वयम्बर स्थान में पहुँचे और कन्या के सामने इस अभिलाषा से खड़े हुए कि वह मुझे देखे और वरण करे। परन्तु वैसा होना नहीं था; किन्तु उनको सामने खड़ा देख, कन्या उधर से अपना मुँह फेर लेती थी। परन्तु नारद जी कब मानने वाले थे, जिधर वह मुँह फेरती थी, उधर ही आप भी खड़े हो जाते थे। इनकी लीला देख वहाँ के लोगों ने कहा, यह वानरमुँह इधर उधर क्यों दौड़ता है? अब नारद जी को सन्देह हुआ और जल के समीप आकर अपना मुँह उन्होंने देखा, तब तो उनको निर्णय हो गया।

कपिरथ तद्० (पु०) श्री रामचन्द्र जी, अर्जुन।

कपिल तद्० (पु०) भूरा रंग, मटमैला रङ्ग का, तामड़ा वर्ण, अग्नि, कुत्ता, बन्दर, चूहा, शिलाजीत, विष्णु, सूर्य, महादेव, बरना पेड़। मुनिविशेष जिन्होंने सगर के लड़कों को भस्म किया था। कुशद्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष का नाम। विख्यात साङ्ख्य शास्त्र प्रणेता कपिल मुनि, वह कर्दम प्रजापति के औरस से और देवहूती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, वह भगवान् के पाँचवें अवतार हैं, उनका बनाया हुआ साङ्ख्यदर्शन षड्दर्शन की श्रेणी में समझा जाता है। साङ्ख्यदर्शन को लोग निरीश्वर दर्शन कहते हैं। इस दर्शन में प्रकृति और पुरुष का निरूपण बहुत ही अच्छी रीति से किया है।—धारा (स्त्री०) गङ्गा, तीर्थ विशेष, काशी और गया का एक स्थान विशेष।

कपिलता तद्० (स्त्री०) भूरापन, ललाई, पिलाई, सफेदी, केवाँच, कौंछ, घुँटिया। [का नाम।

कपिलवस्तु तद्० (पु०) गौतम बुद्ध की जन्मभूमि

कपिला तद्० (स्त्री०) भूरे रङ्ग की गाय, धेनु, दक्ष राजा की एक कन्या का नाम। (वि०) सीधी। (स्त्री०) जोंक, चींटी, पुण्डरीक दिग्गज की स्त्री का नाम, मध्य प्रदेश की एक नदी का नाम।

कपिलागम तद्० (पु०) सांख्य शास्त्र।

कपिश तद्० (पु०) काला पीला रङ्ग, बदामी, कृष्ण पीत मिश्रित वर्ण।

कपिशा (स्त्री०) कश्यप मुनि की स्त्री का नाम, मेदनी पुर के दक्षिण में बहने वाली कसाई नदी का प्राचीन नाम।

कपीश तद्० (पु०) कपिस्वामी, वानरराज, वानरों का राजा, सुग्रीव।

कपीश्वर तद्० (पु०) सुग्रीव, वानरों का राजा।

कपुत्र तद्० (पु०) कपूत, कुपूत, कुबुद्धि पुत्र।

कपूत तद्० (पु०) निन्दित पुत्र, दुराचारी पुत्र।—ी (स्त्री०) दुष्ट पुत्रवाली माता। (वि०) अयोग्यता।

कपूर तद्० (पु०) कपूर, सुगन्धि द्रव्य विशेष।—तिलक (पु०) एक हाथी का नाम जो महावर्द-विहूर में था।

कपूरी तद्० (स्त्री०) पान, पत्र विशेष, रङ्ग विशेष।

कपोत तद्० (स्त्री०) कबूतर, परेवा, परावत।—पालिका (स्त्री०) घर के बाहर की ओर काठ का बना हुआ पक्षियों के रहने का स्थान, छतरी, चिड़िया-खाना।—वर्णी (स्त्री०) छोटी इलायची।—वल्ला तद्० (स्त्री०) महदी बूटी।—वृत्ति तद्० (स्त्री०) आकाश वृत्ति, रोज़ कमाना रोज खाना।—व्रत तद्० (पु०) दूसरे के अत्याचारों को चुप-चाप सहना।—सार तद्० (पु०) सुरमा (धातु)।—ांजन तद्० (पु०) सुरमा (धातु)।—ारि तद्० (पु०) बाज पक्षी।—ाक्ष (पु०) नद विशेष।

कपोतिका या कपोती तद्० (स्त्री०) कबूतरी, मूली, तरकारी।

कपोल तद्० (पु०) गाल, गण्डस्थल, रुखसार।—कल्पना तद्० (स्त्री०) गप्प, मनगढन्त।—कल्पित तद्० (वि०) बनावटी, मनगढन्त, मिथ्या।—गेंदुआ दे० (पु०) गलतकिया, गाल के नीचे रखने की तकिया।

कप्पर दे० (पु०) कपड़ा, सुप्पा।

कप्यास तद्० (पु०) कमच, बन्दर का चूतड़। (वि०) लाल, रक्त वर्ण।

कफ तद्० (पु०) श्लेष्मा, खखार, बलग़म, शरीरस्थ

धातु विशेष, कमीज़ के बाँह के आगे की मोरी कपड़े की पट्टी जिसमें बटन लगाये जाते हैं, माड़।
—घ्न (गु॰) कफनाशक, श्लेष्मानाशक।—वर्द्धक (गु॰) कफ बढ़ाने वाला, तगर वृक्ष।—विरोधी (पु॰) मरिच।—ारि (पु॰) सुण्ठी, सोंठ।
कफन या कप्फन दे॰ (पु॰) वह कपड़ा जिसमें लपेट कर मुर्दा भस्म किया जाय या गाड़ा जाय।—ी दे॰ (स्त्री॰) साधुओं के पहिनने का वह कपड़ा जिसे गले में लटका कर पहना करते हैं।
कफोणि तत्॰ (पु॰) बाँह के बीच की गाँठ, कोहनी, टिहुनी।
कब दे॰ (अ॰) कदा, कदिया, किस समय।—तक (अ॰) अवधिवाचक अव्यय, किस समय तक।—लों (अ॰) कितनी देर तक।
कबहुँ दे॰ (अ॰) कभी भी, किसी का।
कबकब दे॰ (अ॰) किस किस समय।
कबड्डी दे॰ (स्त्री॰) भारतीय एक खेल।
कबन्ध तत्॰ (पु॰) रुंड, मस्तकहीन देह, बिना सिर का धड़, एक राक्षस का नाम, पीपा, बादल, पेट, जल।
कब्र दे॰ (स्त्री॰) जिसमें मुसलमानों के मुर्दे गाड़े जाते हैं।
कबरा तद्॰ (स्त्री॰) कर्बुर, चितकबरा, चितला।
कबहुँ तद्॰ (अ॰) कभी भी, किसी समय भी, कदलिक भूल।
कबाड़ दे॰ (स्त्री॰) अंगड़ खंगड़, रद्दी चीज़।
कबाड़िया या कबाड़ी (पु॰) टूटी फूटी वस्तुओं का सौदागर
कबाहत दे॰ (पु॰) काम, उद्यम, गुण, प्रपञ्च, हुनर।
कबित्त दे॰ (पु॰) एक प्रकार के हिन्दी भाषा के छन्द का नाम।
कबीर दे॰ (पु॰) एक वैरागी का नाम।—पन्थी (वि॰) कबीर के मतानुयायी।
कबीला दे॰ (स्त्री॰) स्त्री, जोरू, पत्नी।
कबूतर दे॰ (पु॰) कपोत, परेवा।
कबूली दे॰ मानी हुई, मंजूर की।
कब्ज़ा दे॰ (पु॰) दस्ता, मूठ, लोहे के बने हुए दो टुकड़े जो किवाड़ों या सन्दूक आदि में लगाये जाते हैं।
क़ब्ज़ियत (स्त्री॰) मलावरोध, साफ़ दस्त न होना।
कव्य तत्॰ (पु॰) पितृश्राद्ध, पितृदान।
कभी दे॰ (अ॰) कदापि, कधी, कभू।
कभू दे॰ (अ॰) कब, कभी, कधू, कदापि।
कम (वि॰) थोड़ा, न्यून।—असल (वि॰) दोगला।
कमची (स्त्री॰) पतली लचीली सांट या छड़ी।
कमच्छा (स्त्री॰) गोहाटी की एक देवी का नाम।
कमज़ोर (वि॰) शक्तिहीन, बलरहित।
कमठ तत्॰ (पु॰) कछुवा, दैत्य विशेष, मुनि भाजन, बाँस, सलई का वृक्ष, प्राचीन बाजा विशेष।
कमठा दे॰ (पु॰) बाँस का धनुष, कमान।
कमठी तत्॰ (स्त्री॰) कच्छपी, कछुई, धनुही।
कमण्डल या कमण्डलु तद्॰ (पु॰) करवा, कलशी, साधुओं का जलपात्र, साधु संन्यासियों का मिट्टी या काठ से बनाया जलपात्र, पाकर का पेड़।
कमदा दे॰ (पु॰) पैंठ, कुदाल, कोदला।
कमती (स्त्री॰) न्यूनता, कमी।
कमनीय तत्॰ (गु॰) सुन्दर, सुथरा, सुघड़, मनोहर, रम्य।
कमनैत (पु॰) तीर कमान चलाने वाला।—ी (स्त्री॰) तीरकमान चलाने की विद्या।
कमर दे॰ (स्त्री॰) कटि, शरीर का मध्य भाग।
कमरकस दे॰ (पु॰) ढाक का गोंद, चिनिया गोंद।
कमरख तद्॰ (पु॰) एक प्रकार का खट्टा फल और वृक्ष विशेष।
कमरटूटा (वि॰) कुब्जा, कुबड़ा।
कमरबंद (पु॰) इज़ारबंद, पैजामा या लहंगा बाँधने की डोरी।
कमरा (पु॰) कोठरी, तसवीर उतारने का यंत्र, बड़ा कंबल।
कमरिया (स्त्री॰) छोटा कंबल, कमर, हाथी विशेष, एक रोग विशेष, चरखी की लकड़ी विशेष।
कमल तत्॰ (पु॰) पद्म, जलज, अम्बुज।—ज (पु॰) ब्रह्मा।—नाभ (पु॰) पद्मनाभ, भगवान् विष्णु।—बाय या बाई (पु॰) कामला रोग, पाँडर, एक रोग विशेष जिसमें शरीर और आँखें पीली हो जाती हैं।—भव तत्॰ (पु॰) ब्रह्मा।—मूल तत्॰ (पु॰) भसीड़ा, मुरार।—योनि तत्॰ (पु॰) ब्रह्मा।
कमलगट्टा (पु॰) कमल का बीज।
कमला तत्॰ (स्त्री॰) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, ...

नारङ्गी फल, तिरहुत की एक नदी, वर्णवृत्त विशेष, ओला, लट।—कर (पु०) तालाब जिस तालाब में कमल पुष्प अधिकता से पाये जाते हैं।—कान्त (पु०) कमल के समान कान्ति से सम्पन्न, विष्णु।—पति (पु०) विष्णु भगवान, नारायण।—सन (पु०) [कमल+आसन] ब्रह्मा, योग का एक आसन।—सना (स्त्री०) लक्ष्मी, सरस्वती।

कमलाक्ष तत्० (पु०) कमल नयन, पद्मनेत्र, पद्म-पत्र के समान आँखों वाला, कमलगट्टा।

कमलिनी तत्० (स्त्री०) कुमोदिनी, कमलों का समूह।

कमली तत्० (पु०) ब्रह्मा, छोटा कंवल।

कमाई दे० (स्त्री०) उपार्जित धन।

कमाऊ दे० (गु०) कमानेवाला, उद्यमी, परिश्रमी, यत्नी, उत्पन्न करने वाला।

कमान दे० (पु०) धनुष, कमठा। [साफ़ करना।

कमाना दे० (क्रि०) प्राप्ति करना, निर्मल करना,

कमानी (स्त्री०) लोहे की तीली।—दार (पु०) कमानी लगा हुआ, कमानी वाला।

कमाल (वि०) परिपूर्णता, निपुणता। [उद्यमी, साहसी।

कमासुत दे० (पु०) कमेरा, श्रमी, कमाने वाला,

कमेरा दे० (पु०) मजूर, सहायक, कामकर।

कमेला दे० (पु०) क़साईख़ाना, वधस्थान।

कमोदिनी दे० (स्त्री०) कुमुदिनी, कमल विशेष, कोई का फूल यह रात को विकसित होता है।

कमोरी दे० (स्त्री०) मटकी, गगरी, बड़ा घड़ा।

कम्प तत्० (पु०) कपकपी, थरथराहट, गात्रादि सञ्चालन।—ज्वर (पु०) कम्प सहित ज्वर, ज्वर जिससे शरीर काँपता है, जूड़ी। [चलन।

कम्पन तत्० (पु०) थरथर, डगडग, स्पन्दन, काँपन,

कम्पवायु तत्० (पु०) रोग विशेष, शरीर की चपलता।

कम्पमान् तत्० (पु०) कम्पन युक्त, सकम्प।

कम्पित तत्० (गु०) कम्पायमान, डगमगा।

कम्बल तत्० (पु०) कामरी, लोई, ऊनी कपड़ा, दोशाला।

कम्बु तत्० (पु०) शङ्ख, घोंघा, हाथी।—ग्रीव (गु०) शङ्ख के समान कण्ठ वाला।

कयरी दे० (स्त्री०) टिकोरा, अंबिया, बहुत छोटा आम।

कया दे० (स्त्री०) काया, देह, शरीर।

क़यामत दे० (पु०) अन्तिम दिवस, प्रलय।

क़यास दे० (पु०) अनुमान, विचार, ध्यान, ख़याल।

कर तत्० (पु०) हाथ, राजस्व, महसूल, राजधन, हस्तिशुण्ड, हाथी की सूँड, ओला, किरण, हस्त-नक्षत्र। 'कर' का अर्थ 'का' भी होता है, जैसे "राम तें अधिक राम कर दासा"।—तुलसी। (क्रि०) करके, करना।

करइ दे० (क्रि०) करे, करैं, करते हैं।

करई दे० (क्रि०) मोलुआ, मटकैना, कुल्हड़।

करउ दे० (क्रि०) करो, करौ, करिये, कीजिये।

करक दे० (स्त्री०) पीड़ा, दर्द, कड़क, रह रह कर उठने वाली पीड़ा, कमण्डलु, करवा, पलास, मोलसिरी, करील, ठठरी, नारियल का खोपड़ा, अनार, जैसे —"धोज्यो कम्कपाश शुक सुन्दर करक बीज गहि चूँच"।—सूर।

करकच दे० (पु०) समुद्री लोन, लवण, निमक।

करकट दे० (पु०) कूड़ा, बटोरन, कतवार।

करकचि दे० (पु०) किचकिचाहट, इसा गुञ्जा, अपुष्ट, कोमल। [करकराती है।

करकना (क्रि०) रह रह कर दर्द का होना, जैसे आँख

करकर (पु०) समुद्र से निकलने वाला निमक।

करकरा दे० (पु०) करकरिया पक्षी (वि०) खुरखुरा।

करका तत्० (स्त्री०) शिला, ओला, पत्थर पड़ना, शिलावृष्टि।

करकाना दे० (क्रि०) चचकाना, मुरकाना।

करख तद्० (पु०) खैंच, खिचाव, हठ, अधिक द्रव्य, माप विशेष। [दाग़, सींट, कालिख, कालौंछ।

करखा दे० (पु०) छन्द विशेष, उत्तेजना, बढ़ावा,

करखी तद्० (क्रि०) खींची, आकर्षित की, अपनी ओर खींच ली, (स्त्री०) कजली।

करगत तत्० (गु०) हस्तगत, हाथ, लगा हुआ, प्राप्त, लब्ध, हाथ में आया हुआ, (पु०) हस्तनक्षत्र स्थित चन्द्रमा।

करगता तद्० (पु०) करधनी, कटि बन्धन।

करगही (स्त्री०) धनहन, मोटा धान।

करग्रह तत्० (पु०) विवाह, पाणि ग्रहण, परिणय, तद्० कर गहना।

करङ्ग दे० (पु०) पञ्जर; पाँसुरी, हड्डी।
करघा (पु०) हाथ से कपड़ा बिनने का यंत्र विशेष।
करछा या करछी दे० (स्त्री०) कलछी।
करछुल } कलछी।
करछुली }
करज तद्० (पु०) हाथ से उत्पन्न, अँगुलियाँ, नख
नख नख।
करञ्ज तद्० (पु०) करिञ्जा, वृक्ष विशेष।
करट तद्० (पु०) कुकवास, गिरगिट, काक, कौआ,
हाथी का गाल, कुत्सित जीवी, नास्तिक।
करटी तद्० (पु०) हाथी, राँगा। (स्त्री०) काक
पत्नी, कौआ की स्त्री।
करण तद्० (पु०) [कृ+अनट्] साधन, निर्माण,
इन्द्रिय, योगियों का आसन भेद। व्याकरण का
तीसरा कारक। ज्योतिष में एक प्रकार के समय
विभाग को करण कहते हैं, वे करण ११ हैं, इनमें
७ सात चल और ४ स्थिर हैं, दो करण एक चन्द्र
दिन के बराबर होता है।
करणी तद्० (स्त्री०) [कृ+अनट्+ई] छुरी,
राँपी, गणित शास्त्र में वह राशि जिसका मूल
निश्चित न हो।
करणीय तद्० (गु०) अवश्य कर्तव्य, कर्तव्य कर्म।
करणेच्छा तद्० (स्त्री०) [करण+इच्छा] निर्मा-
णेच्छा, करने की इच्छा। [पेटिका।
करण्ड तद्० (पु०) काक पक्षी, कौआ, डिब्बा, डिबिया,
करत् या करत (क्रि०) करता है, करते ही।
करतब तद्० (गु०) करामत, काम, करनी, कला,
गुण।—ी (गु०) गुणी, करामाती, पुरुषार्थी, निपुण।
करतल तद्० (पु०) हस्ततल, हथेली, हाथ का ताल।
करतार तद्० (पु०) ईश्वर, विधाता।
करतारी दे० (स्त्री०) हाथ की ताली, थपोड़ी, ताल।
करताल तद्० (पु०) एक बाजे का नाम, कठताल,
झाँझ, मजीरा। [शब्द, ताली, थपोड़ी।
करताली तद्० (स्त्री०) हाथ बजाना, हाथ बजाने का
करतूत दे० (स्त्री०) करनी, कला, गुण।
करतूति या करतूती दे० (स्त्री०) काम, करनी, यथा
—"करतूती कहि देत, आप कहिये नहिं साई"।
—उद्‌भट
करतोया तद्० (स्त्री०) नदी विशेष, यह नदी बङ्गाल
में है। [तद्० (पु०) पटा, राजस्व सूचक पत्र।
करद तद्० (वि०) कर देने वाला, अधीनस्थ।—पत्र
करदा तद्० (पु०) बिक्री के माल में मिला हुआ
कूड़ा करकट, बट्टा। [गुज़ार, कर देने वाले।
करदायी तद्० (गु०) [कर+दा+णिन्] माल-
करधृत तद्० (गु०) करनिहित, हस्तगत। [विशेष।
करधनी दे० (स्त्री०) कमर पर पहनने का आभूषण
करनधार तद्० (पु०) कर्णधार, मल्लाह। [विशेष।
करनफूल तद्० (पु०) स्त्रियों के कान का आभूषण
करनवेध तद्० (पु०) बालक के कान छेदने का
संस्कार, कनछेदन।
करन (कर्ण) तद्० (पु०) कान, करण।
करना दे० (क्रि०) बनाना, रचना, सुधारना।
करनाटक (पु०) दक्षिण भारत का एक प्रान्त विशेष,
मैसूर, मंगलौर, मंगलौर, आदि करनाटक प्रान्त ही में हैं।
करनाल (पु०) नरसिंहा, भोंपू, एक प्रकार का ढोल,
एक प्रकार की तोप, पंजाब का एक नगर।
करनी दे० (स्त्री०) करतूत, पूर्वकृत कर्म, करने वाली।
—य करने के योग्य।
करपत्र तद्० (पु०) करौत, आरा, कवच।
करपीड़न तद्० (पु०) पाणी ग्रहण, विवाह।
करपुट तद्० (पु०) कृताञ्जलि, बद्धाञ्जलि।
करबला (स्त्री०) निर्जल निर्जन स्थान, ताज़ियों के
दफ़नाने की जगह।
करबाल तद्० (पु०) असि, खड्ग, खांड, तलवार।
करबालिका तद्० (स्त्री०) छुरी, कटारी।
करबी दे० (स्त्री०) नारी, छोटी ज्वार या बाजरे की
डाँठी, पशु भक्ष्य तृण।
करभ तद्० (पु०) ऊँट, हाथी का बच्चा, कपूर,
कमर, दोहे के एक भेद का नाम।
करमीर तद्० (पु०) सिंह, मृगराज।
करभूषण तद्० (पु०) कङ्कना, कंगन, पहुँची, कड़ा।
करम तद्० (पु०) कर्म, काम धंधा, भाग, भाग्य।—
कल्ला (पु०) गाँठगोभी, बँधी गोभी।—नाशा
तद्० (स्त्री०) एक नदी का नाम।
करमठ (वि०) कर्म कारकी, कर्मप्रिय।
करमाला तद्० (स्त्री०) जपमाला, जप करने की

छोटी माला स्मरणी या उंगलियों के पोरों की माला। (पु०) अमलतास।
करमैती (स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक भक्त ब्राह्मणकन्या।
कररुह तत्० (पु०) नाखून, नख।
करलगुआ दे० (पु०) स्त्रीजय, स्त्रीजीत।
करवट दे० (स्त्री०) पंसवाड़ा, पांजर, पार्श्व परिवर्तन।
करवारे दे० (पु०) विपदा, अरट, होनदार।
करवीर तत्० (पु०) कंडीर का फूल या पेड़, कनेर का वृक्ष या पुष्प, खड्ग, श्मशान, चेदि देश का एक नगर।
करशाला तत्० (स्त्री०) चुंगीघर, महसूल घर।
करषा दे० (पु०) ईर्ष्या, वैर, क्रोध, रिस, अनख, कालिमा, उत्तेजना, बढ़ावा यथा —
"एकहि एक बढ़ावहि "करषा"
—तुलसीकृत रामायण
करषि (क्रि०) खींच कर, घींच कर।
करसम्पुट तत्० (पु०) हाथ जोड़न, बद्धाञ्जलि।
करसी दे० (पु०) जंगली गोहरा, गोबरी, कंडों का चूर।
करहा दे० (पु०) कहरा, कटि, कमर।
करहार तत्० (पु०) शिफाकन्द, मैनफल, [विशेष।
करहाटक तत्० (पु०) शिफाकन्द, मैनफल, औषधि
करई (क्रि०) करते हैं, करें।
करांत दे० (पु०) क्रकच, आरा, करपत्र। [वाला।
करांती दे० (गु०) आरे से चीरने वाला, लकड़ी काटने
करा दे० (गु०) कड़ा, कठिन, खोटा, मूठा। (स्त्री०) कला, किया।
कराइहि तद्० (क्रि०) करावेगा, करवावेगा।
कराई दे० (स्त्री०) भूसी, दाल का छिलका।
करात (पु०) तौल विशेष।
कराना (क्रि०) करने में लगाना, करवाना, निर्माणकराना।
करामात(स्त्री०) करश्मा, चमत्कार।—ी(वि०)चमत्कार दिखाने वाला।
करार दे० (पु०) करार, किनारा, ठहराव, क़ौल, शर्त।
करारा दे० (पु०) नदी का ऊँचा तट, टीला, कठोर, दृढ़, उग्र, तेज, चोखा, अधिक गहरा, घोर, हट्टा कट्टा, बलवान्।—पन दे० (पु०) कड़ाई, कड़ापन।
कराल तत्० (गु०) भयङ्कर, भयानक, डरावना।—ाकृति (स्त्री०) भयङ्कर स्वरूप, डरावनी सूरत।
कराली तत्० (स्त्री०) भयङ्कर, कठिन, अग्नि के सप्त-जिह्वाओं के अन्तर्गत जिह्वा विशेष।
करावली तत्० (स्त्री०) किरणों का समूह।
कराह दे० (पु०) बड़ी कड़ाही, दुःख में निकला हुआ शब्द। [लेना, पीड़ा में आहें भरना।
कराहना दे० (क्रि०) साँस भरना, दुःख करना, उसासें
करि तद्० (पु०) हाथी, हस्ति, रामायण में इसका प्रयोग। आया है। (क्रि०) करके।—कुम्भ (पु०) गजकुम्भ, हाथी का मस्तक।—गर्जित (पु०) हाथी का गर्जन, हाथी का शब्द।—ज (पु०) हस्तिशावक, करभ, हाथी का बच्चा। —नी (स्त्री०) हथिनी। [कृष्णता।
करिखई दे० (स्त्री०) श्यामता, कालापन, कालिमा,
करिखा दे० (पु०) कालौंच, कालिख।
करिण तद्० (पु०) हाथी, शुण्डवाला।
करिणी तत्० (स्त्री०) हथिनी, वैश्य पिता और शूद्र माता के गर्भ से उत्पन्न लड़की।
करिया दे० (पु०) पतवार, कर्णधार, मल्लाह। (गु०) काला, श्याम, साँवर। [विशेष।
करियादः तत्० (पु०) सूस, जलहस्ति, जलजन्तु
करिष्णु तत्० (गु०) कर्तव्य, करणीय, करणशील।
करिष्यमाण तत्० (गु०) करिष्यत, उद्यत, यत्नवान्।
करिहाँ या करिहाँव तद्० (पु०) कमर, कटि।
करी तद्० (पु०) हाथी, गज, मातङ्ग (स्त्री०) कड़ी, धरन, कली, छन्द विशेष।—न्द्र (पु०) [करी+इन्द्र] प्रधान हस्ति, ऐरावत हस्ति।
करीना (पु०) टाँकी, किराना, मसाला, ढंग, पद्धति।
करीजे दे० (क्रि०) करिये, कीजिये, करें, करना योग्य है, करना ही चाहिये।
करीर तत्० (पु०) वंशाङ्कुर, बाँस का कोपड़, रेतीले भूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष विशेष जिसे ऊँट खाते हैं, टेंटी का पेड़, घड़ा।
करील या करीला तद्० (पु०) देखो करीर।
करीष तत्० (पु०) सूखा गोमय, वनकंडा, अरनाकंडा।
करुआई या करुआाई दे० (स्त्री०) कड़ुआपन, तिताई, तिक्तता।
करुणा तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, करुणा, उचित दया, बुद्धिविशेष, रसविशेष।—विप्रलम्भ (पु०) शृङ्गार

रस का भेद विशेष, नायिका या नायक में से कोई एक लोकान्तर चला जाय, परन्तु पुनः सम्मिलन की आशा हो, ऐसी अवस्था का नाम करुण-विप्रलम्भ है।

करुणा या करुना तद्० (स्त्री०) दया, कृपा, अनुग्रह, अनुकम्पा, रामायण में इस के स्थान में करुना का प्रयोग प्राय किया गया है।—कर (पु०) दयालु, कृपावान् दया की राशि।—निधान (पु०) दया धार, दया का आधार, सानुकम्प, अतिशय दयालु। —रहित (पु०) करुणाशून्य, दयाशून्य।—मय (पु०) दया के रूप, दयामय, दया करने वाला, कृपालु, दयालु।—यतन (पु०) दया के स्थान। —र्द्र (पु०) करुणानिधान, दयालु, करुणामय।

करुवा तद्० (पु०) कमण्डलु, करवा, घटारी, मिट्टी का कोरा बर्तन।—चौथ दे० (स्त्री०) एक पर्व या त्योहार जो कार्तिक बदी चौथ को होता है।

करेकर दे० (अ०) एकत्र, बराबर, संग संग।

करेत दे० (पु०) सर्प विशेष।

करेणु तद्० (पु०) हाथी, गज, कर्णिकार वृक्ष।

करेरा दे० (पु०) दृढ़, कठोर, कड़ा।

करेला तद्० (पु०) तरकारी विशेष।

करैत तद्० (पु०) देखो करेत।

करोड़ दे० (पु०) करोर, कोटि, सौ लाख की एक संख्या, १०००००००।—पती (वि०) एक करोड़ रुपये रखने वाला।

करोड़ा दे० (पु०) उगाहने वाला, प्रधान।

करानी दे० (स्त्री०) खुर्चन, दूध का मलाई।

करोर दे० (पु०) करोरी, देखो करोड़।

करोरी (पु०) रोकड़िया, खजानची, करोड़ का स्वामी।

करोदना (क्रि०) खुरचना, खसोटना।

करौं दे० (क्रि०) करता हूँ, बनाता हूँ, करूँ, रचूँ।

करौंदा तद्० (पु०) करमर्दक, एक खट्टे फल का नाम।

कर्क तद्० (पु०) केकड़ा, कर्क राशि, चतुर्थ राशि, अग्नि, दर्पण, घड़ा, कात्यायनसूत्र के एक भाष्यकार।

कर्कट तद्० (पु०) केंकड़ा, चौथी राशि, नाग विशेष, करकटिया, लौकी, वृत्त की त्रिज्या, नृत्य विशेष, कमल मूल, तुम्बी।—ी तद्० (स्त्री०) ककड़ी, ककरी, तरोई, कच्कारौती।

कर्कन्धु तद्० (पु०) बदरी वृक्ष, बेर का पेड़।

कर्कश तद्० (पु०) कठोर, कठिन, कड़ा, निर्दय। (पु०) ऊख, खाँड़। (स्त्री०) कर्कशा।—वाक्य (पु०) निष्ठुर वचन, परुष वाक्य।

कर्च्चूर तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, सुगन्ध द्रव्य का भेद, सुवर्ण, कर्पूर। [का एक बर्तन।

कर्छनी दे० (स्त्री०) गोरोचनी, सुचंग, पाक बनाने

कर्छा दे० (पु०) कलुछा, डब्बु, कर्छुल।

कर्छांज दे० (स्त्री०) कुलाँच, कूद, चौकड़ी।

कर्छुल दे० (पु०) कर्छा, करछुली।

कर्ज़ } (पु०) ऋण उधार लिया हुआ धन।—दार
कर्ज़ा } (पु०) ऋणी।

कर्ण तद्० (पु०) कान, श्रवण, पतवार, अङ्गराज, राधेय, युधिष्ठिर का बड़ा भाई, सूर्य के औरस से कुन्ती के गर्भ में यह उत्पन्न हुआ, अपनी वीरता के कारण यह प्रसिद्ध था, इसने परशुराम से अस्त्र विद्या सीखी थी। त्रिभुज क्षेत्र में भुज और कोटि की रेखा के अतिरिक्त तीसरी रेखा का नाम, चतुष्कोण क्षेत्र में उस कोने का नाम जो सामने के कोनों से खींची हुई होती है।—कण्डू (पु०) कर्ण रोग विशेष, कान की खुजलाहट।—कुहर (पु०) कान की गोलाई, गोलक।—गोचर (पु०) श्रवणज्ञान, किसी बात को सुन लेना।—धार (पु०) माँझी, नाविक, नाव चलाने वाला, पतवारदार।—पिशाची (पु०) एक तान्त्रिक सिद्धि जिसके द्वारा दूसरे मनुष्य के मन की बात बतला सकता है।—फूल (पु०) कान का भूषण विशेष, कर्णालङ्कार, कनफूल।—मल (पु०) कर्णगूथ, कान का मैल।—वेध (पु०) संस्कार विशेष, कनछेदन।—वेष्टन (पु०) कुण्डल, कान में पहनने का गहना।

कर्णाकर्णी तद्० (स्त्री०) काना कानी, सोहरत।

कर्णाट तद्० (पु०) देशविशेष, स्वनाम प्रसिद्ध देश। —क (पु०) कर्णाट देश में उत्पन्न मनुष्य।

कर्णाटी तद्० (स्त्री०) रागिनी विशेष, कर्णाट देश में उत्पन्न मनुष्य या वस्तु।

कर्णानुज तद्० (पु०) कर्ण का छोटा भाई, राजा युधिष्ठिर।

कर्णाभरण तत्० (पु०) कर्णालङ्कार, कर्णभूषण, कर्णफूल।
कर्णिका तत्० (स्त्री०) कान का एक प्रकार का गहना, हाथी के शुण्ड का अतिशय पतला भाग, हाथ की मध्यमा अङ्गुली।
कर्णिकाचल तत्० (पु०) सुमेरु पर्वत।
कर्णिकार तत्० (पु०) वृक्ष और पुष्प विशेष।
कर्णीरथ तत्० (पु०) क्रीडार्थ छोटी गाडी, स्त्रियों के थाने जाने के लिये पर्दादार रथ, एक्का।
कर्णेजप तत्० (पु०) पिशुन, दुर्जन, ठग, इधर की बात उधर कहने वाला, चुगलख़ोर।
कर्णीसुत तत्० (पु०) कंसराज।
कर्तन तत्० (पु०) कतरन, काटन, छाँटन।
कर्तनी तत्० (स्त्री०) कत्तरी, कतरनी, कैंची।
कर्त्तव्य तत्० (पु०) करणीय, करणाई, करने योग्य, उपयुक्त, उचित।—ता (स्त्री०) उपयुक्तता, उपयुक्त।
कर्त्तरिका तत्० (स्त्री०) कैंची, काटने के लिये अस्त्र [विशेष, छुरी।
कर्त्तरी तत्० (स्त्री०) काटने का अस्त्र, कैंची।
कर्त्ता तत्० (पु०) प्रभु, स्वामी, ईश्वर, अधिकारी, करने वाला, अधिपति, प्रथम कारक। [सिरजनहार।
कर्त्तार तत्० (पु०) ईश्वर, सृष्टि करने वाला,
कर्त्तित तत्० (गु०) काटा हुआ, छिन्न, खण्डित काता हुआ सूत। [बनाया हुआ।
कर्तृक तत्० (पु०) कारक, साधक, कार्य, साध्य,
कर्तृ कर्मभाव (पु०) कर्त्ता और कर्म का सम्बन्ध।
कर्तृत्व (पु०) कर्त्ता का धर्म, प्रभुता, स्वामित्व, अधिकार।
कर्तृप्रधान तत्० (गु०) जिस वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता हो, जिस वाक्य में कर्त्ता क्रिया के अनुसार हो। [वाची क्रिया।
कर्तृवाचक या वाची (गु०) कर्त्ता कारक को कहने
कर्तृवाच्य तत्० (पु०) जिस वाक्य से कर्त्ता का बोध प्रधान रूप से हो।
कर्दम तत्० (पु०) काँदो, कीचड, चहला, पाँक, पाप, पाप, स्वायंभुव मन्वन्तर के एक प्रजापति।
कर्धनी दे० (पु०) कटिसूत्र, सूत या चाँदी सोने का बना हुआ कमर में पहनने का गहना।

कर्पास तत्० (पु०) कपास, रुई, वांगा।
कर्पासी तत्० (पु०) कपड़ा, सूत, वस्त्र, सूती कपड़ा।
कर्पूर तत्० (पु०) कपूर, श्वेत वर्ण सुगन्ध द्रव्य विशेष, चन्द्र।
कर्बुरा तत्० (स्त्री०) वनतुलसी, कृष्ण तुलसी।
कर्म तत्० (पु०) क्रिया, करनी, भाग्य, दूसरा कारक, कार्य, प्रयोजन, व्यवहार, लग्न से दसवाँ लग्न।—कर (गु०) जो मज़दूरी लेकर काम करता है, भृत्य, नौकर, समस्त काम करने वाला।—काण्ड (पु०) संस्कार विशेष, जप यज्ञ होम आदि, वेद का एक अङ्ग जिसमें कर्म करने की विधि लिखी है।—कार (पु०) जाति विशेष, शूद्रा के गर्भ और विश्वकर्मा के औरस से उत्पन्न एक जाति, लुहार, बैल, बेगार।—कारक (पु०) दूसरा कारक, कर्त्ता के व्यापार से जिसको लाभ पहुँचे।—धारय (पु०) विशेषण, और विशेष्य के सदृश अधिकार वाला, वह समास जिसमें दोनों का समान अधिकार हो।—च्युत (गु०) काम से बाहर किया हुआ, कर्मभ्रष्ट, पदच्युत।
कर्मचारी तत्० (पु०) कार्यकर्त्ता, काम करने वाला।
कर्मठ तत्० (पु०) कार्यपटु, कर्मनिष्ठ, कर्मकाण्डी।
कर्मण्यता तत्० (स्त्री०) कार्यकुशलता, तत्परता।
कर्मनाशा तत्० (स्त्री०) नदी विशेष जो चौसा के पास है, कहते हैं कि उसके जलस्पर्श से मनुष्य के धर्म नष्ट हो जाते हैं। [में निष्ठावान।
कर्मनिष्ठ तत्० (वि०) क्रियावान्, शास्त्रविहित कर्मों
कर्म निपुणाई तत्० (स्त्री०) कर्मकुशलता, कर्म करने की चतुराई। [अपना उद्देश्य।
कर्मपथ तत्० (पु०) कर्म मार्ग, वेद की रीति,
कर्मप्रधान तत्० (पु०) जहाँ कर्म की प्रधानता हो।—क्रिया (स्त्री०) कर्मवाच्य क्रिया।
कर्मफल तत्० (पु०) कर्मों का फल, कर्मविपाक, सुख दुःख, करनी का फल।
कर्मभूमि तत्० (स्त्री०) आर्यावर्त, भारतवर्ष, जहाँ कर्म करने से विशेष फल हो।
कर्मभोग तत्० (पु०) प्रारब्ध का भोग, कर्म से उत्पन्न फलों का भोग। [पहिली अवस्था।
कर्ममूल तत्० (पु०) कर्मों की जड़, कुश, कर्म की

कर्मयुग तद्० (पु०) कलियुग, चौथायुग, शेषयुग।
कर्मरङ्ग तद्० (पु०) कमरख, वृक्ष विशेष।
कर्मरेख तद्० (स्त्री०) प्रारब्ध का लेख, कर्म की रेखा।
कर्मवाच्य या कर्मवाचक क्रिया तद्० (स्त्री०) कर्म की प्रधानता सूचक क्रिया विशेष।
कर्मवाद तद्० (पु०) कर्मयोग, मीमांसा जिसमें कर्म प्रधान माना गया है।—ी तद्० (पु०) मीमांसक, कर्म को प्रधान मानने वाला।
कर्मविपाक तद्० (पु०) कर्म का फल, दुःख सुख, कर्मफल बताने वाले एक ग्रन्थ का नाम।
कर्मशील तद्० (गु०) स्वभाव ही से कर्म करने वाला, उत्साही, उद्यमी, परिश्रमी।
कर्मशूर तद्० (गु०) कर्मठ, कर्मनिपुण, कर्मदक्ष, उद्योगी। [मन्त्री, सामान्य दीवान।
कर्मसचिव तद्० (पु०) काम करने के उपयोगी,
कर्मसंन्यास तद्० (पु०) कर्मों का फल त्याग, निष्काम कर्म।—ी (पु०) कर्म त्यागी।
कर्मसमाधि तद्० (पु०) कर्मों से विरक्ति, किसी काम को नहीं करना।
कर्मसाक्षी तद्० (पु०) दुष्कर्म सुकर्म के द्रष्टा, सूर्य चन्द्र यम काल, पृथिवी, जल, अग्नि वायु, आकाश। [करने का उद्योग।
कर्मसाधन तद्० (पु०) कार्य सम्पादन, कर्मसिद्ध
कर्मस्थान (पु०) ज्योतिष मतानुसार जन्म कुण्डली में ० म स्थान।
कर्माधर्मी तद्० (गु०) जपतपिया, भाग्यवान, स्वधर्म निष्ठ, स्वकर्म नरत्त। [कमरख, फल विशेष।
कर्मार तद्० (पु०) कर्मकार, लोहकार, वश, बाँस,
कर्मिष्ठ तद्० (गु०) कर्मतत्पर, वैदिक कर्म करने वाला, कर्मकाण्डी, क्रियावान्।
कर्मी तद्० (पु०) कर्मसंपन्न, कर्म करनेवाला, काम काजू, शुभकर्मयुक्त, भाग्यवान, कर्मनिष्ठ।
कर्मेन्द्रिय तद्० (पु०) कर्मसम्पादन करनेवाली पाँच इन्द्रियाँ, यथा—वाक्, पाणि, पायु, पाद, और उपस्थ। [विशेष।
करो (वि०) कड़ा, कठोर, (पु०) जुलाहों का यन्त्र
कर्ष तद्० (पु०) सोलह माशे की तौल, अस्सी रत्ती, खींचना, खेती, विरोध, ताव, क्रोश, यथा—

"मातहि मात कर्ष यदि भावा"।

रामायण

कर्षक तद्० (पु०) किसान, हरजोता, खेत करने वाला, कृषिजीवी, खींचने वाला।
कर्षण तद्० (पु०) [कृष्+अनट्] खींच, टान, जोतना, कृषिकर्म। [आकर्षणी, लगाम, रास।
कर्षणी तद्० (स्त्री०) खिरनी का वृक्ष, अंकुशी, वंशी,
कर्षणीय तद्० (गु०) [कृष्+अनीय] कर्षण करने योग्य, जोतने योग्य खेत, खींचने योग्य।
कर्षफला तद्० (स्त्री०) [कर्ष+फल्+इ] आमलकी वृक्ष, बहेड़ा।
कर्षा दे० (पु०) ईर्षा, उत्साह, विरोध, क्रोध।
कर्हिचित् तद्० (अ०) किसी काल, किसी समय, कदाचित्, अनियमित काल में, अनिर्दिष्ट काल में।
कल तद्० (पु०) गम्भीर और मधुर शब्द, अव्यक्त ध्वनि, प्रिय, सुन्दर, कल, चैन, तुष्टि, । दे० व्यतीत या आगामी दिन, सुस्थता, आराम, सुख शान, अंकुर, यन्त्र।
कलई दे० (स्त्री०) राँगा, मुलम्मा, भेद।
कलक (पु०) रंज, दुःख, चिन्ता, बेकली।
कलकण्ठ तद्० (पु०) हंस, कबूतर, कोकिल, कोइल, मधु स्वर युक्त।
कलकल तद्० (पु०) [कल+कल+अल्] अस्फुट शब्द, कोलाहल, राल।
कलकानि (स्त्री०) हैरानी, परेशानी, चिन्ता।
कलकी तद्० (पु०) भगवान के अवतारों में से दसवाँ अवतार, भावी भगवान् का अवतार।
कलगी दे० (पु०) कलङ्गी, चूड़ा, शेखर, पगड़ी या मुकुट में लगाने का एक आभूषण विशेष।
कलङ्क तद्० (पु०) अपवाद, अपयश, दुष्कीर्ति, दाग, चिन्ह, दोष, मिथ्या अपराध। [कलङ्किनी।
कलङ्की तद्० (गु०) दोषी, पापी, अपराधी, (स्त्री०)
कलजईंवा दे० (गु०) कलमुहा कलमुँहा।
कलञ्जिन तद्० (गु०) द्वेषी, हिंसक, दुर्जन, पापी, पापात्मा, कालजिह्वा।
कलञ्ज तद्० (पु०) [कल+अन्+इ] तमाकू का पौधा, हिरन, एक चिड़िया, पक्षी का माँस, १० पल का तौल।

कलत्र तत्० (पु०) [कल+त्र] भार्या, स्त्री, नितम्ब, किला, दुर्ग।—लाभ (पु०) पत्नी-लाभ, भार्या-प्राप्ति, विवाह। [हुआ रुपया।

कलदार (वि०) पेंच लगा हुआ, मैशीन द्वारा बना

कलधौत तत्० (पु०) सोना, चाँदी, सुवर्ण, रजत, मधुर शब्द। [मधुरशब्द।

कलध्वनि तत्० (पु०) कबूतर, कोइल, अव्यक्त

कलन्दर तद्० (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, रीछ बन्दर नचाने वाला, मदारी।

कलप तद्० (पु०) खिज़ाब, कलफ़, कल्प का अपभ्रंश। —अर्थ ब्रह्म का दिन, प्रलय, मनोरथ, सामर्थ्य, कल्पना, पलट, बदल, (क्रि०) बना कर, दुःखी हो कर।—तरु (पु०) कल्पवृक्ष, देववृक्ष।

कलपना दे० (क्रि०) अनुताप करना, पश्चात्ताप करना, दुःखित होना, कुढ़ना।

कलपाना दे० (क्रि०) दुःखित करना, कुढ़ाना।

कलपित तद्० (कल्पित) मिथ्या, बनावटी, कृत्रिम।

कलफ दे० (पु०) कलप, माँड।

कलबल दे० (पु०) दाँव पेंच, छल, कपट। [का बचा।

कलभ तत्० (पु०) करभ, हस्तिशावक, हाथी या ऊँट

कलम तद्० (पु०) स्वनाम ख्यात लिखने की वस्तु, लेखनी, पेड़ की डाली जो अन्यत्र लगाने या किसी दूसरे वृक्ष में पैबंद लगाने को काटी जाय, साठी धान।—कार (पु०) चित्रकार, रङ्ग भरने वाला, कलम की दस्तकारी, करने वाला।—तराश कलम बनाने की छुरी।—दान मसी और कलम रखने की पेटिका।

कलमकल दे० (स्त्री०) घबराहट, दुःख।

कलमल तद्० (पु०) पाप, दोष, लांछन, दाग़।

कलमलाना दे० (क्रि०) छटपटाना, कुलबुलाना, चञ्चलता प्रकाश करना।

कलमी दे० (स्त्री०) लिखा हुआ, वे फल जो दो वृक्षों के संयोग से उत्पन्न किये जाते हैं कलम या रवादार। [हिलेडुले।

कलमले दे० (क्रि०) चञ्चल हुए, छटपटाये, रेंगे,

कलमुँहा (वि०) काले मुँह वाला, दोषी, लांछित।

कलरव तत्० (पु०) मधुर और अस्फुट शब्द, जन-समूह का शब्द, कोकिल कबूतर आदि का शब्द।

कलल तत्० (पु०) गर्भ के आच्छादन करने वाला चर्म, जरायु।

कलवरिया (स्त्री०) शराब की दूकान।

कलवार दे० (पु०) जाति विशेष, मद्य बनाने वाली जाति, शुण्डी, कलाल, कलार।

कलविङ्क तत्० (पु०) पक्षि विशेष, गौरैया पक्षी।

कलश तत्० (पु०) घट, घड़ा, गगरी, मिट्टी का जल पात्र, मन्दिर का शिखर, चोटी, सिरा, प्रधान अङ्ग, उत्कृष्ट व्यक्ति जैसे रघुकुल कलश। [वाला।

कलशिरा दे० (गु०) कृष्ण मस्तक विशेष, काले सिर

कलशी तत्० (स्त्री०) छोटा जलपात्र, गगरी।

कलस तद्० (पु०) घट, घड़ा, परिमाण विशेष, मन्दिर आदि का मुकुट।

कलसा तद्० (पु०) शिखर, शृङ्ग, चूड़ा, धातु का बना घड़ा। [या उसका अनादर कर पीछे पछतावे।

कलहंतरित (स्त्री०) वह नायिका, जो पति से झगड़ा

कलहंस तत्० (पु०) सुन्दर हंस, राजहंस।

कलह तत्० (पु०) [कल्+हन्+ड्] विरोध, विवाद, झगड़ा, द्वन्द्व, तलवार का म्यान, रास्ता। —कारी (गु०) विवाद करने वाला, झगड़ालू। प्रिय—(पु०) विवादप्रिय, विवादसन्तोषी, नारद।

कलहान्तरिता तत्० (स्त्री०) [कलह+अन्तरित+आ] नायिका विशेष, स्त्री पहले अपने पति का अपमान करती है, और पीछे उसके चले जाने पर दुःखित होती है यथा—

"कह्यो न माने कंत को, पुनि पीछे पछताय
कलहान्तरिता नायिका ताहि कहत कविराय"
—मतिराम।

कलहारा तत्० (गु०) लड़ाका, झगड़ालू, कलहप्रिय।

कलही तत्० (गु०) झगड़ालू, विरोध करने वाला, (स्त्री०) नखरा करने वाली स्त्री।

कला तत्० (स्त्री०) चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग, अंश, भाग, हिस्सा, राशिचक्र का अत्यन्त सूक्ष्मभाग, एक राशि के तीस भाग होते हैं, उनमें एक भाग का साठवाँ भाग समय का परिमाण। शिल्प आदि विद्या, इसके चौसठ भेद होते हैं, वे ये हैं। (१) गीत (पु०) गाना, यह चार प्रकार होता है, स्वरग, पदग, लयग और अवधानग। (२) वाद्य

बाजन, इसके अनेक भेद हैं। (३) नृत्य नाच, प्रधानतः इसके दो भेद हैं। नाट्य और अनाट्य, किसी के कार्यों का अनुकरण करना नाट्य है और केवल भाव बताना तथा रस उत्पन्न करना अनाट्य है। (४) आलेख्य चित्र, तसवीर, इसके छः अङ्ग होते हैं:—रूप भेद, प्रमाण, भाव और सुन्दरता की योजना, जिसका चित्र हो उससे मिलान, लिखने की विशेषता, और रङ्गों का यथास्थान सन्निवेश। यह ग्रन्थ और बातें चित्रविनोद के लिये बनाया जाता है (५) विशेषकच्छेद्य मस्तक में तिलक लगाने के लिये भूर्जपत्र आदि के विविध प्रकार के साँचे बनाना। (६) तण्डुल कुसुमबलि विकार बिना टूटे हुए चाँवलों से अनेक प्रकार की देवमन्दिर में साँची काढ़ना, और फूलों के सन्निवेशविशेष से विविध वस्तु बनाना। (७) पुष्पास्तरण जो अनेक प्रकार के पुष्पों से वस्तु बनायी जाती है, जिसे पुष्पशय्या भी कहते हैं। (८) दशनवसनाङ्गराग दाँत, कपड़े, और शरीर रंगने की विधि। (९) मणिभूमिकाकर्म ग्रीष्मकाल में सोते रहने के लिये स्थान बनाना। (१०) शयनरचन शय्या बिछाना, इसमें यह ध्यान रखना पड़ता है कि जिस पर सोने से अन्न पच जाय (११) उदकवाद्य जल में मृदङ्ग आदि के समान ध्वनि निकालना, जलतरङ्ग बजाना। (१२) उदकघात हाथ या यन्त्र—कल से जल फेंक कर मारना। (१३) चित्रयोग प्राकृतिक बातों में विशेषता उत्पन्न करना काले बाल को सफ़ेद, या सफ़ेद को काला करना आदि। (१४) माल्यग्रन्थविकल्प माला गूथने के अनेक प्रकार की रीति। (१५) शेखरक-पीडयोजन शिर के आगे की ओर लटकने वाले फूलों से बने हुए एक प्रकार के गहने को शेखरक कहते हैं। चोटी के चारों ओर गोलाकार फूलों की माला को आपीड कहते हैं। इन दोनों को विविध वर्णों के पुष्पों से बनाना, और यथास्थान पहिनना। (१६) नेपथ्यप्रयोग देश काल के अनुसार वस्त्र, आभूषण आदि से अपने शरीर को सजाना। (१७) कर्णपत्रभङ्ग हाथी दाँत और शङ्ख आदि के गहने बनाना। (१८) गन्धयुक्ति सुगन्ध पदार्थ बनाने की रीति। (१९)—अलङ्कारयोग संयोज्य और असंयोज्य दो प्रकार के अलङ्कार होते हैं। जिनका संयोग किया जाय—कण्ठी, बचठा, चन्द्रहार आदि संयोज्य हैं। कड़ा, कुण्डल आदि असंयोज्य है—इनके बनाने की प्रक्रिया। (२०) ऐन्द्रजाल इन्द्रजाल आदि शास्त्रों के बताये हुए कर्म, अद्भुत कर्म दिखाना। (२१) कौचुमारयोग सुन्दर बनने और बनाने की रीति। (२२) हस्तलाघव सभी कामों में शीघ्रता। (२३) चित्रशाकापूपभक्ष्यविकारक्रिया अनेक प्रकार के शाक, पूए, पेय भक्ष्य बनाने की प्रक्रिया, आचार बनाना। (२४) पानकरसरागासवयोजन विविध प्रकार के शर्बत, आसव, अर्क, आदि बनाना। (२५) सूचीवानकर्म इसके सीवन, ऊतन, और विरचन ये तीन भेद हैं। अंगरखा, कोट, कमीज़, कुरता, आदि का सीना सीवन है। फटे कपड़ों का सीना ऊतन और कथरी आदि सीना विरचन है। (२६) सूत्रक्रीड़ा एक ही सूत को अनेक प्रकार बना कर दिखाना। २७) वीणाडमरुकवाद्य वीणा और डमरू बजाना, यद्यपि ये भी वाद्य हैं, तथापि इनमें अधिक कठिनता होने के कारण ये अलग कहे गये हैं। (२८) प्रहेलिका विनोद के लिये पहेलियाँ, ये प्रसिद्ध हैं। (२९) प्रतिमाला इसे अन्त्याक्षरिका भी कहते हैं। एक प्रकार का शास्त्रार्थ, क्रम से एक के कहे हुए श्लोक के अन्तिमाक्षर जिस श्लोक के आदि में हो उसको कहना। (३०) दुर्वाचकयोग उच्चारण और अर्थ में कठिन शब्दों का प्रयोग करना जिसे कूट कहते हैं (३१) पुस्तकवाचन महाभारत आदि को स्वर लय के साथ गाना। (३२) नाटकाख्यायिकादर्शन नाटक और आख्यायिका का ज्ञान प्राप्त करना। (३३) काव्यसमस्यापूरण सामान्य अभिप्राय जान कर कविता बनाना या कठिन अभिप्राय समझ कर श्लोक बना देना। त्रिपद समस्या मूक समस्या आदि इसके अनेक भेद हैं। (३४) पट्टिकावानविकल्प पलङ्ग, कुरसी आदि को बेत का और किसी वस्तु से अनेक प्रकार का बुनना

(३५) तक्षकर्म बिगड़ी हुई चीज़ों को सुधारना। (३६) तक्षण बढ़ई के काम। (३७) वास्तुविद्या गृह बनाने और सजाने की रीति। (३८) रूप्यरत्न परीक्षा सोना, चाँदी, हीरा, आदि का परखना। (३९) धातुवाद मिट्टी, पत्थर, तथा अन्यान्य धातुओं को पृथक् करने शोधन करने और मिलाने आदि की विद्या। (४०) मणिरागाकर ज्ञान हीरा आदि रत्नों को रंगने की विद्या, इन मणियों के उत्पत्तिस्थान का ज्ञान करना (४१) वृक्षायुर्वेदयोग वृक्षों को रोपना, बढ़ाना, उनके दोषों को हटाना और कलम आदि करने की विधि। (४२) मेषलावक कुक्कुटयुद्धविधि भेड़ा, लावा और कुक्कुट (मुर्ग़े) के युद्ध की प्रक्रिया, इसे सजीवद्यूत कहते हैं, यह किसी प्रकार के ठहराव से किया जाता है। (४३) शुकसारिकाप्रलापन शुक, सारिका को पढ़ाना, ये पढ़ाने पर मनुष्य भाषा में बोलते हैं। (४४) उत्सादन शरीर दबाना और तेल लगाना। (४५) अक्षरमुष्टिकाकथन गुप्त बात को कहने के लिये संक्षेप में कहना। (४६) म्लेच्छितविकल्प शुद्ध शब्दों में लिखी हुई भी बात को अक्षरों के उलटने पलटने से अर्थ समझना, या साङ्केतिक शब्दों का अर्थ समझना। (४७) देशभाषाविज्ञान अन्य देशियों के साथ व्यवहार करने के लिये उनकी भाषा जानना। (४८) पुष्पशकटिका पुष्पों से निर्मित छोटी गाड़ी। (४९) निमित्तज्ञान प्राकृतिक लक्षणों से, अथवा पशुओं की चेष्टा बोलने आदि से भावी शुभाशुभ फल का जानना। (५०) यन्त्रमन्त्रिका गमन वृष्टि लड़ाई आदि के लिये सजीव या निर्जीव यन्त्रों के लक्षण बताने वाला शास्त्र, जिसे विश्वकर्मा ने बनाया है। (५१) धारणमात्रिका पढ़े हुए ग्रन्थों को स्मरण रखने के शास्त्र। (५२) संपाठ्य बिना सुनी हुई बात को उसके जाननेवाले के साथ पढ़ना। (५३) मानसी मन की बातें जानने की विद्या। (५४) काव्यक्रिया संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं में कविता करना। (५५) अभिधानकोष शब्दों का अर्थ निरूपण करना। (५६) छन्दोज्ञान छन्द बताने वाले शास्त्रों का ज्ञान। (५७) क्रियाकल्प काव्य बनाने की विधि। (५८) छलित दूसरों को ठगने का उपाय। (५९) वस्त्रगोपन अच्छे प्रकार से वस्त्र पहिनना, फटे हुए कपड़े को भी ऐसा पहिनना जिससे उसका फटना मालूम न पड़े, बड़े वस्त्र को भी पहन कर छोटा बना लेना। (६०) द्यूतविशेष निर्जीव द्यूत खेलना (६१) आकर्षक्रीड़ा पासे का खेल, चौपड़। (६२) बालक्रीडनक गुड़िया आदि के द्वारा लड़कों को प्रसन्न रखना। (६३) वैनयिकी स्वयं नम्र होना और दूसरे को नम्र होने की शिक्षा देना, घोड़े और हाथियों के चाल सिखाना। (६४) वैजयिकी व्यायामिकी विजय प्राप्त करने और व्यायाम करने की विद्या।—ये ही चौसठ कलायें हैं।

कलाई दे० (स्त्री०) पहुँचा, दाल विशेष।

कलाकन्द दे० (पु०) मिष्टान्न विशेष बरफ़ी।

कलाकर तत्० (पु०) चन्द्रमा, वृक्ष विशेष।

कलाधर तत्० (पु०) चन्द्रमा, दण्डकछन्द का भेद विशेष, शिव।

कलाना दे० (क्रि०) भूनना, अकोरना।

कलानाथ (पु०) चन्द्रमा, गन्धर्व विशेष।

कलानिधि तत्० (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क।

कलाप तत्० (पु०) [कला+पा+ड्] समूह, ढेर, राशि, प्रचलित संस्कृत व्याकरणों में से एक व्याकरण। मोर की पूंछ, मुट्ठा, पूला, बाण, तरकश, कमरबन्द, करधनी, चन्द्रमा, व्यापार, ग्राम विशेष, वेद शाखा अर्द्धचन्द्राकार अस्त्र, रागिनी विशेष, भूषण।—क (पु०) कविताओं के अर्थ करने की रीति, चार श्लोकों का एक साथ अन्वय। समूह, मुट्ठी हाथी के गले का रस्सा, मयूर।

कलापट्टी (स्त्री०) जहाज़ों की पटरियों में की सन्धियों को सन आदि से बन्द करने की क्रिया।

कलापिन् (स्त्री०) मोरनी रात्रि, नागर मोथा।

कलापी तत्० (पु०) मयूर पक्षी, बरगद का वृक्ष, कोकिल, वैशम्पायन का एक शिष्य।

कलापूर्ण तत्० (पु०) पूर्णिमा का चन्द्रमा, प्रसिद्ध शिल्पी।

कलाबत्तू दे० (पु०) सोना चाँदी का पतला तार जो रेशम के साथ बटा जाय।

कलाबाज़ (पु०) दे० कला खेलने वाला, नट।

कलाम (पु०) वाक्य, वचन, उक्ति

कलार दे० (पु०) जाति विशेष, कलवार, शुण्डी।
कलारिन दे० (स्त्री०) कलवारिन, कलवार की स्त्री।
कलाल दे० (पु०) देखो कलार।
कलावन्त तद्० (पु०) कथक, गायक, गानेवाला, गीत नृत्य से जीविका करने वाली जाति।
कलि तद्० (पु०) [कल्+इ] चौथा युग, कलह, पाप, सूरमा, वार, शिव का नाम।—काल (पु०) कलियुग।—मल (पु०) कलिकाल के कुकर्म।—मलसरि (स्त्री०) कर्मनासा नदी।
कलिका तद्० (स्त्री०) [कलिक+आ] अविकसित पुष्प, कोंपल, कलौंजी, मुहूर्त्त, अंश।
कलिङ्ग तद्० (पु०) देश विशेष, यह देश उड़ीसा से दक्षिण की ओर गोदावरी नदी के मुहाने पर है। इस देश की राजधानी का नाम कलिङ्ग नगर है, एक मटीले रंग का पक्षी, कुटज, इन्द्रजौ, सिरस, पाकर, तरबूज़, रागविशेष।
कलिङ्गड़ा (पु०) राग विशेष जो रात में गाया जाता है। (वि०) कलिङ्ग देश का वासी।
कलिञ्जर तद्० (पु०) एक पर्वत का नाम, यह पर्वत पुराण प्रसिद्ध है, आज भी यह अपने पुराने नाम से विख्यात है, यह बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत करवी के पास कालिञ्जर नाम से प्रसिद्ध है। [दुर्ग।
कलित (वि०) सुन्दर, रुचिर, मनोहर रचित, बनाया
कलिन्द (पु०) सूर्य, बहेड़ा, पर्वत विशेष, जिससे यमुना निकलती है।—जा (स्त्री०) यमुना। (पु०) पाप, कलुष, दोष।
कलियाना (क्रि०) कलियों का लगना, चिड़ियों के नये पंख निकलना, पुष्पित होना, फूलना।
तद्० (पु०) कर्मयुग, चौथायुग।—ी (वि०) का, दुराचारी, बुरा।
(दे०) पंक, कीचड़, दलदल, दलदल।
तद्० (स्त्री०) कलिका, बोंड़ी, अर्द्धविकसित पुष्प यथा—
"अलि कलीहिं पै लगैं आगे कौन हवाल"
—बिहारी सतसई।
कलौंदा दे० (पु०) तरबूज़, हिनवाना।
कलुष तद्० (पु०) मैल, मलिनता, दोष, पाप।
कलुषित तद्० (गु०) मलदूषित, पापमल, मलपूर्ण, पातकी, दुष्कर्मी।
कलूटा दे० (गु०) काला, कुरूप, कलौंहा।
कलेऊ तद्० (पु०) प्रातःकाल का भोजन, कलेवा, जलपान।
कलेजा दे० (पु०) अंग विशेष, यकृत् उत्साह साहस, हृदय की दृढ़ता छाती।—उलटना अधिक कै करना।—फटना अधिक दुःख से व्याकुल होना।—ठण्ढा करना मनोरथ सिद्धि अभिलाषा की पूर्ति।—जलना दुःखी होना, दूसरे की उन्नति न सहना, अनुताप करना।—काँपना भयभीत होना।—पर साँप लोटना अनुतप्त होना।—से लगा रखना अत्यन्त प्रेम करना।—में डाल रखना बहुत चाहना, किसी वस्तु को छिपा रखना।
कलेवर तद्० (पु०) देह, शरीर, काय, अङ्ग।
कलेवा तद्० (पु०) प्रातःकाल का जलपान।
कलेस (क्लेश) तद्० (अ०) (पु०) दुःख, कष्ट, आपत्ति, विषाद।
कलोर दे० (पु०) नयी गाय, ओसर।
कलोल तद्० (पु०) खेलकूद, क्रीड़ा, कल्लोल विनोद।
कलोलिनी तद्० (स्त्री०) कल्लोलिनी, प्रवाह से बहने वाली नदी, तरङ्गिणी, खेलने वाली नदी।
कलौंजी दे० औषधि विशेष कच्चे आमकी भाजी विशेष।
कल्क तद्० (पु०) मल, चूर्ण, पीठी, गूदा, पाखण्ड, शठता, कान का मैल, विष्ठा, पाप, औषधि की घनी चटनी, अवलेह, बहेड़ा।—फल तद्० (पु०) अनार।
कल्की तद्० (पु०) विष्णु का दसवाँ अवतार, कलियुग में होने वाला। (गु०) पापी, अपराधी।
कल्प तद्० (पु०) [क्लृप्+घञ्] उपाय, अभिप्राय, विधि, प्रलय, ब्रह्मा का दिन, शास्त्र विशेष, कर्मकाण्ड, विभाग, ब्रह्मा का एक दिन।—क (पु०) काटने वाला, नाई, कल्पना करने वाला।—तरु (पु०) देववृक्ष, कल्पवृक्ष, दाता।—द्रुम (पु०) अभिलषित फल देने वाला, सुरद्रुम।—पादप (पु०) कल्पवृक्ष।—वास माघ भर प्रयाग वास।—सूत्र (पु०) वैदिक कर्मकाण्ड, सृष्टि के आरम्भ का समय।—न्त (पु०) [कल्प+अन्त] ब्रह्मा का दिनावसान, युगान्त,

प्रलयकाल, संहार काल।—न्तस्थायी (पु०) नित्य स्थायी, अव्यय।
कल्पना तद्० (स्त्री०) रचना, बनावट।
कल्पित तद्० (पु०) [क्लृप्+क्त] रचित, आरोपित, कृत्रिम, मिथ्या प्रकाशित, कल्पना सम्भूत।—ोपमा (स्त्री०) उपमा विशेष। [फुदकना।
कल्मलाना दे० (क्रि०) मलमलाना, कुलबुलाना,
कल्मष तद्० (पु०) पाप, अधर्म, अपराध, नरक विशेष। [चितकबरा, रङ्ग बिरङ्गा।
कल्माष या कलमाष तद्० (पु०) [कल्+मष्+घञ्]
कल्य तद्० (पु०) [कल्+य] प्रातःकाल, प्रत्यूष, आने वाला दिन या व्यतीत दिन।
कल्याण तद्० (पु०) कुशल, मङ्गल, शुभ।—भार्य (पु०) वह पुरुष जो बार बार विवाह करे किन्तु उसकी स्त्री मर मर जाय।
कल्याणवर्मन् तद्० (पु०) यह एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और देवग्राम के रहने वाले बघेल क्षत्रिय थे इनका बनाया साराली नामक ज्योतिष का ग्रन्थ विद्यमान है। यह प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिर के समकालीन थे, ऐसा विद्वानों का अनुमान है। म० म० सुधाकर द्विवेदी जी के मतानुसार इनका समय सन् ५७८ ई० अनुमान होता है।
कल्याणी (पु०) आनन्द करने वाली, सुन्दरी।
कल्ल तद्० (पु०) बधिर, श्रवणेन्द्रिय रहित, बहिरा।
कल्लर दे० (पु०) ऊसर, क्षारभूमि क्षार।
कल्ला दे० (पु०) पेटुवा, गला, अङ्कुर, गोंफा।
कल्लाना दे० (क्रि०) जलन, दहन, जलन पड़ना, पीड़ा होना।
कल्लादराज दे० (पु०) एक प्रकार का भुंजा चबेना।
कल्लोल तद्० (पु०) महातरङ्ग, बड़ी लहर, गर्जन, क्रीड़ा, अति हर्ष की हिलोर।
कल्लोलिनी तद्० (स्त्री०) तरङ्ग वाली नदी, धारा के साथ बहने वाली नदी।
कल्ह तद्० (अ०) कल्य, आगामी या अतीत दिन। यह शब्द अतीत या अगले आने वाले दिन के अर्थ में प्रयोग किया गया है, यह बात प्रसङ्ग से जानी जाती है।
कल्हारना (क्रि०) भूनना, तलना।
कल्हण तद्० (पु०) एक संस्कृत कवि का नाम, यह काश्मीर निवासी थे और महाराजा जयसिंह के समय में विद्यमान थे, इन्होंने काश्मीर के राजाओं का इतिहास लिखा है, जिसका नाम राजतरङ्गिणी है। राजतरङ्गिणी से ११४८ ई० कल्हण का समय निश्चित किया जाता है।
कवच तद्० (पु०) सनाह, बख्तर, वर्म, झिलम।
कवन दे० कौन।—ी कौनसी।
कवयी दे० (स्त्री०) मत्स्य विशेष। [घ, ङ।
कवर्ग तद्० (पु०) ककारादि पाँच अक्षर, क, ख, ग,
कवल तद्० (पु०) ग्रास, कौर, निवाला, लुक़्मा।
कवलित तद्० (पु०) [कवल+क्त] ग्रसित, भुक्त, खादित।
कवलीकृत तद्० (पु०) अधीनी कृत, ग्रसित, भुक्त।
कवष तद्० (पु०) ढाल, एक ऋषि का नाम।
कवायद दे० (स्त्री०) व्यवस्था, व्याकरण, नियम।
कवि तद्० (पु०) [कव्+इन्] कविता करने वाला, काव्यकर्त्ता, ब्रह्मा, व्यास, वाल्मीकि आदि, शुक्राचार्य, सूर्य, पण्डित, उल्लू।—क तद्० (पु०) लगाम।—ता (स्त्री०) कवित्त, पद्य, श्लोक छन्द, हृदय के भावों को लौकिक पदार्थों के साथ मिलान करके नियमित छन्द में प्रकाशित करना।
कविका तद्० (स्त्री०) [कविक+अ] लगाम, घोड़े की रास, केवड़ा, कवई मछली।
कविताई दे० (स्त्री०) पद्य, पद्य रचना, काव्य।
कवित्त (पु०) एक छन्द विशेष, काव्य भाट, बंगाली वैद्य।
कविनासा तद्० (स्त्री०) कर्मनाशा नदी, इसका प्रयोग रामायण में किया गया है। [की भूमि।
कविमाता तद्० (स्त्री०) शुक्राचार्य की माता, काश्मीर
कविराज या कविराय तद्० (पु०) प्रधान कवि, एक संस्कृत कवि का नाम। बङ्गाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मण सेन की सभा में ये सभा पण्डित थे। अतएव इनका समय भी लक्ष्मण सेन का समय ही मानना उचित है। लक्ष्मण सेन का समय १११६ ई० निश्चित हुआ है। इनके बनाये ग्रन्थ का नाम राघवपाण्डवीय है। इसमें रामायण और महाभारत की कथा साथ ही साथ लिखी गई है। भाट, बंगाली वैद्यों की उपाधि।

कविशेखर तद्० (पु०) महान् कवि।
कव्य तद्० (पु०) पितरों को दिया जाने वाला अन्न।—पाद (पु०) अग्नि विशेष जिससे पितृपक्ष में आहुति दी जाती है। [दुसमंजस।
कशमकश दे० (स्त्री०) खींचातानी, भीड़भाड़, दुविधा,
कशर दे० (पु०) वृक्ष विशेष, कचनार।
कशा तद्० (स्त्री०) [कश्+अ] घोड़ा आदि को मारने का चाबुक, कोड़ा, साँटी।—घात (पु०) कशा प्रहार, कोड़ा मारना।—र्ह (पु०) [कशा+अर्ह] कशाघात योग्य, कोड़ा मारने के उपयुक्त, अपराधी, दोषी। [कपड़ा।
कशिपु (पु०) तकिया, बिछौना, अन्न, भात, आसन,
कशेरु तद्० (पु०) कन्द विशेष, जल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का कन्द, तृण कन्द।
कश्चित् तद्० (अ०) कोई अनिर्दिष्ट मनुष्य।
कश्मल तद्० (पु०) मूर्च्छा, अचैतन्य, पाप।
कश्मीर तद्० (पु०) देश विशेष, कारमीर।—ज (पु०) केशर।
कश्मीरि (वि०) कश्मीर देश का निवासी।
कश्य तद्० (गु०) कोड़ा मारने योग्य, दमन करने योग्य, घोड़े का तङ्ग शराब।
कश्यप तद्० (पु०) एक मुनि का नाम, यह महर्षि मरीच के पुत्र थे, देवता दानव मनुष्य आदि इन्हीं से उत्पन्न हुए हैं। अदिति और दिति दो इनकी स्त्रियाँ थीं।
कश्यपमेरु तद्० (पु०) एक पर्वत और एक देश का नाम, उसी पर्वत पर बसने के कारण कारमीर को कश्यपमेरु भी कहते हैं।
कष तद्० (पु०) [कष्+अल्] सोने चाँदी की परीक्षा करने का पत्थर, कसौटी [पाकरंध्र, तर्जन।
कषण तद्० (पु०) परखना, परीक्षा, आँच, खींचना,
कषा तद्० (स्त्री०) चाबुक, कोड़ा।
कषाय तद्० (पु०) कसैला, कसाव, क्वाथ, काढ़ा।
कष्ट तद्० (पु०) [कष्+क्त] पीड़ा, क्लेश, कृच्छ्, विपद।—कर (गु०) कष्टदायक, पीड़ा देने वाला।—कल्पना (स्त्री०) खींचतान की कल्पना, निष्प्रयोजन कल्पना, दुःख की कल्पना करना।—साध्य (पु०) कष्ट से साधन करने योग्य।
कष्टित तद्० (पु०) [कष्ट+इत] दुःखित, पीड़ित, कष्टयुक्त।
कष्टी तद्० (स्त्री०) प्रसववेदना से दुःखी स्त्री।
कस दे० (अ०) कैसे, किस तरह से, क्यों, किस लिये, काहे को, कैसा, क्या, प्रश्नार्थक अव्यय।
कसक दे० (पु०) पीड़ा, दुःख, धीरे धीरे पीड़ा होना, खटका। (क्रि०) कसकना, दरकना, फटना, पीड़ा होना। [स्वाद रहित।
कसकला दे० (गु०) किरकिरापन, कंकरीलापन,
कसन दे० (पु०) कसने की क्रिया, घोड़े का तंग।
कसना दे० (क्रि०) बाँधना, खींचना, परखना, जाँचना, परीक्षा करना।—नी (स्त्री०) बाँधने की वस्तु, बेठन चोली, कसौटी, परीक्षा।
कसमसात दे० (क्रि०) घबराते हो, व्याकुल होते हैं।
कसमसाना (क्रि०) हिचकिचाना, आगा पीछा करना, सोचना, विचारना।
कसया (पु०) बड़ा गाँव।
कसवाना दे० (क्रि०) ज़ोर से बँधवाना, कसाना।
कसबिन या कसबी (स्त्री०) रंडी, वेश्या।
कसर (स्त्री०) कमी, न्यूनता।
कसरत (स्त्री०) व्यायाम, परिश्रम।
कसा दे० (गु०) संकुचित, सङ्कीर्ण बंधा हुआ।
कसाई दे० (स्त्री०) खैंचाव, बाँधन, खैंचाहट (पु०) घातक की जाति।
कसार दे० (पु०) गेहूँ के आटे को घी में भूंजकर उसमें चीनी मिलाने से जो मिठाई बनती है उसे कसार कहते हैं, पंजीरी।
कसाला दे० (पु०) कष्ट, तकलीफ।
कसि (क्रि०) कस कर, दबा कर, परीक्षा करके।
कसी दे० (स्त्री०) हलकी कुसी, भूमि नापने की रस्सी विशेष, पाला।
कसीदा दे० (पु०) कपड़े पर सुईकारी।
कसून (पु०) कंधी घाँस का फोड़ा।
क़सूर (पु०) अपराध, ऐब, दोष।
कसे (क्रि०) कसने से, दबाने से, परीक्षा करने से।
कसेरा तद्० (पु०) जाति विशेष, ठठेरा, कांस्यकार, भारतीया।
कसेरु (पु०) फल विशेष जो तालाबों में उत्पन्न होता है।

कसैया दे० (गु०) बाँधने वाला, कसने वाला, परखैया।
कसैला दे० (गु०) कषाय, कसाव।
कसैली (स्त्री०) कसैली वस्तु, सुपारी।
कसोरा दे० (पु०) मिट्टी का प्याला।
कसौटी तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर सोना चाँदी आदि परखे जाते हैं।
कसौंदी दे० (स्त्री०) कसौंजा, एक प्रकार का पौधा।
कस्तुरा दे० (स्त्री०) शङ्ख सहित एक प्रकार की मछली।
कस्तूरी तद्० (पु०) सुगन्धि द्रव्य, औषधि विशेष, मृगमद, हरिण के नाभि से उत्पन्न होने वाली सुगन्धित वस्तु। [कालिक क्रिया।
कह तद्० (क्रि०) कहता है, कहकर, कहै, पूर्व
कहत तद्० (क्रि०) कहते हुए, कहते हो, कहता है।
कहतूती दे० (स्त्री०) कथा आख्यायिका, कहावत, लोकोक्ति, कहनूत। [करना।
कहना दे० (क्रि०) बोलना, प्रकाश करना, आज्ञा
कहदेना दे० (क्रि०) जता देना, बता देना, बतला देना, प्रकाशित करना।
कहनावत दे० (स्त्री०) दृष्टान्त, बात, लोकोक्ति, यथा—
" राई से पहाड़ होत साँची कहनावत है।"
कहनूत (स्त्री०) कहावत, कहनावत, बात।
कहरत दे० (क्रि०) कहरता है, कराहता है, पीड़ा सूचक शब्द करता है। [चिल्लाना, काँखना, कराहना।
कहरना दे० (क्रि०) आह भरना, चीख मारना,
कहलाना दे० (क्रि०) सन्देशा भेजना, बुलवाना, जतलाना, जनवाना। [निर्भीक।
कहवैया दे० (गु०) ढीठ, निर्भय, निडर, स्पष्ट-वक्ता,
कहँ (प्रत्यय) के लिये, वास्ते।
" हम कहँ रथ गज वाजि बनाये।"—तुलसी।
कहा, कहा तो, को।
कहहि दे० (क्रि०) कहता है, कहैं।
कहाँ दे० (अ०) किधर, जिस स्थान में अधिकरण, प्रश्नवाची अव्यय [विलम्ब तक।
कहाँतक दे० (अ०) कबतक, कितनी दूरतक, कितने
कहाँ से दे० किस स्थान से, किस ओर से।
कहा दे० (पु०) कथन, वचन, आज्ञा, आदेश।—सुनी (स्त्री०) वाद विवाद, झगड़ा।

कहाकही दे० (स्त्री०) कथोपकथन, उक्ति प्रत्युक्ति बाताबाती, झगड़ा। [गढ़ी बात।
कहानी दे० (स्त्री०) कथा, क़िस्सा, कहावत, वर्णन,
कहार दे० (पु०) धीवर, पालकी ढोने वाला, काम करने वाला, शूद्र वर्ण की एक जाति।
कहावत दे० (स्त्री०) कथा, वार्ता, दृष्टान्त।
कहाव दे० (पु०) वचन, वर्णन, कहावत, कथा, वार्ता, बयान।
कहि दे० कहकर, कहैं, कविता में प्रयोग किया जाता है।—जात कहा जाता है, वर्णन किया जाता है।
कही (क्रि०) कह दी, वर्णन की, बयान की।
कहीं दे० (अ०) कहाँ, किधर, किसी स्थान में, अनिश्चित, अधिकरण वाचक अव्यय। [किसी स्थान पर।
कहीं न कहीं दे० किसी न किसी स्थान पर, जिस
कहुँ (अ०) कहीं, किसी ठौर, कहैं।
कहूँ दे० कही, किसी स्थान पर, किसी ठौर पर।
कहेउ दे० (क्रि०) कहा, वर्णन किया, कह दिया।
कहेउँ दे० (क्रि०) मैंने कहा, मैंने वर्णन किया।
कहेऊ (क्रि०) मैंने कहा, बयान किया।
काँइयाँ (गु०) धूर्त, चालाक, फरेबी।
काँकर दे० (पु०) कङ्कड़, रोड़ा, पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े।—ी छोटी कंकड़ी। [आकाङ्क्षा।
काँक्षा तद्० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ, चाह,
काँख तद्० (स्त्री०) पार्श्व, कक्ष, कोख, पाँजर, चाह, ओर, बाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा।
काँखना तद्० (क्रि०) कहरना, कूँथना, आह भरना, मलावरोध होने पर उसे निकालने के लिये पेट की वायु को दबाना।
काँगन तद्० (पु०) कङ्कण, कँगना, हाथ की कलाई में पहनने का स्त्रियों का भूषण विशेष, एक प्रकार का अन्न, जिसे कङ्गुनी भी कहते हैं।
काँगनी तद्० (स्त्री०) देखो काँगन।
काँगड़ी दे० (स्त्री०) धूनी, अँगीठी, आग रखने का बर्तन। [शीशा, दर्पण, रोग विशेष।
काँच दे० (पु०) अपक्व, बिना पका हुआ कच्चा,
काँचा दे० (गु०) कच्चा, बिना पका, प्रसिद्ध, बिना सिद्ध हुआ, यह शब्द व्रज भाषा की कविता में प्रायः प्रयोग किया जाता है।

काँचरी या काँचुली तद्० काँचली, केंचिया, चोली, कञ्चुकी, सनाती छाती, साँप की केंचुल।

काँजी तद्० (पु०) पेय विशेष, माँड मिश्रित, अंबिया से भात का बनाया हुआ जल।

काँट या काँटा तद्० (पु०) कण्टक, नाल, शूल, तौलने के लिये छोटी तराजू, वंशी जिसमें मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। शरीर में चुभने वाली वस्तु।—सा निकल जाना दुःखों से छुटकारा पाना, सङ्कट से उबरना, किसी आपत्ति से बचना। काँटों पर घसीटना गम्भीरतासूचक वाक्य अपनी प्रशंसा सुनकर नम्रता प्रकट करने के लिये ऐसा कहा जाता है। काँटे बोना अपने या दूसरों को दुःख पहुँचाने का प्रयत्न करना, आप ही आप दुःख में फँसना, दुःख का सामना करना।

काँठा तद्० (पु०) गला, उपकण्ठ, समीप, पास, यथा—

"यमुना के काँठे कन्हैया मेरो यार"

काँड़ना दे० (क्रि०) पीटना, मारना, कुचलना, रौंदना।

काँड़ी दे० (स्त्री०) उसकी, भारी चीजें ढकेलने का काठ का डंडा, जहाज़ के लंगर की डाँड़ी, बाँस या लकड़ी की थुनिया जो छप्पर या छत को सहारने को लगाई जाती है। अरहर का सूखा डंठल।

काँथरी (स्त्री०) कंथा, कथरी, गुदड़ी।

काँदव (पु०) पङ्क, कीचड़।

काँदा दे० (पु०) प्याज, पलाण्डु, अरवी, मूल विशेष।

काँदू तद्० (पु०) जाति विशेष, भड़भूजा, हलवाई, भोली या हाँडा।

काँदो दे० (पु०) कीचड़, पङ्कला, पङ्क, कादा, कीच।

काँधना दे० (क्रि०) उपाय करना, स्वीकार करना, अङ्गीकार करना, मानना, भार सहना, ठानना।

काँध या काँधा तद्० (पु०) स्कन्ध, काँध, कन्धा, कंध।—देना सहायता देना, कार्य करा लेना।

काँप दे० (पु०) दुःख, दबाव, व्याकुलता।—दबाना दुःखित करना, व्याकुल करना, दबाना।

काँपना तद्० (क्रि०) हिलना, थरथराना, डुलना, कम्पित होना, कपना।

काँवर (स्त्री०) गङ्गाजल ले जाने की बहँगी विशेष।

काँवरिया (पु०) काम्यार्थी, काँवर ले जाने वाला।

काँस तद्० (पु०) तृण विशेष, धातु विशेष।

काँसा तद्० (पु०) एक प्रकार की धातु जो पीतल और राँगे के मेल से बनती है, कसकुट।

काँस्य तद्० (पु०) देखो काँसा।—कार (पु०) कसेरा, ठँठारी।

का प्रत्यय—सम्बन्धसूचक या षष्ठी विभक्ति का चिन्ह।

काई दे० (स्त्री०) कीट, जलमैल, शैवाल, सिवार, तृण विशेष जो जल में उत्पन्न होता है, किसी को।

काऊ दे० (क्रि० वि०) कभी, कबहूँ, किसी ने, किसी से, कोई।

काक तद्० (पु०) कौवा, काग, वायस, पक्षी विशेष।—जङ्घा (स्त्री०) औषधि विशेष, चकसेनी, घुंघची, एक प्रकार की बूटी।—पुष्पी (स्त्री०) औषधि विशेष, महाशुण्डी।—तालीय अकस्मात् किसी कार्य का होना।—तिक्ता (स्त्री०) काकजङ्घा।—दन्त (पु०) असम्भव, अद्भुत बात।—पक्ष या पक्ष पटा, जुल्फी, सामने के बाल कतवाना और कनपटी की ओर छोड़ देना, कौवे के पर।—पदी औषधि विशेष।—वन्ध्या (स्त्री०) सकृत्प्रसूता जो जिसके एक ही बार सन्तान उत्पन्न हुआ हो।

काकड़ा दे० (पु०) चर्मविशेष, एक प्रकार का चमड़ा। —सिंघी (पु०) औषधि विशेष।

काकभुशुण्डि या काकभुशुण्ड तद्० (पु०) एक मुनि का नाम जिसका मुँह काक के समान था, रामायण का प्रसिद्ध वक्ता।

काकरी दे० (स्त्री०) ककड़ी।

काकली (स्त्री०) मधुर ध्वनि, साठीधान, गुञ्जा, सङ्गीत का स्थान विशेष, सेंध लगाने की सबरी।

काका दे० (पु०) पितृव्य, चाचा, पिता का छोटा भाई, मसी, काकोली, कठमूर, घुंघची, मकोय। कूआ (पु०) पक्षी विशेष।

काकिणी या काकिनी तद्० (स्त्री०) बीस कौड़ी, पाँच गण्डा, कौड़ी, छदाम, माशे का चौथाई भाग, घुंघची। [पक्षी, कौए की मादा।

काकी दे० (स्त्री०) काका की स्त्री, चाची, पितृव्य-

काकु तद्० (पु०) व्यङ्ग वचन, वक्रोक्ति, टेढ़ी बोली, स्वर विशेष के द्वारा निषेध वाक्य की विधि और

विधि वाक्य से नये का अर्थ निकालना।—क्ति (स्त्री०) [काकु+उक्ति] कातरोक्ति, व्यङ्गय वचन। [राजा।
काकुत्स्थ (पु०) श्रीरामचन्द्र, ककुत्स्थ वंशोद्भव एक
काकोदर तद्० (पु०) [काक+उदर] भुजङ्ग, सर्प, पन्नी, साँप, कौवा का पेट। [विषैली धातु।
काकोल तद्० (पु०) नरक विशेष, एक प्रकार की
काकोली तद्० (स्त्री०) ओषधि विशेष, ज्वर-नाशक ओषधि।
काकोलूकिका तद्० (स्त्री०) काक और उल्लू के समान शत्रुता, अधिक शत्रुता।
काख तद्० (स्त्री०) काँख, कच, पार्श्व।—अलाई (स्त्री०) कखौरी, पार्श्वव्रण, काँख का घाव।—सोती काँख से कन्धे तक
काग दे० (पु०) काक, कौआ, वृक्ष विशेष, बोतल में लगायी जाने वाली डाट।—ासुर (पु०) एक दैत्य का नाम जिसे श्री कृष्णचन्द्र ने मारा था। कंस की प्रेरणा से काक का रूप धारण करके श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल में गया था, वहाँ इसे श्रीकृष्ण ने मारा।—ावासी (स्त्री०) भाँग जो प्रातःकाल छानी जाय, मोती विशेष।
कागद या कागज़ दे० (पु०) कागज़, पत्र।
काँच तद्० (पु०) स्वच्छमृत्तिका विशेष, मणि, स्फटिक, शीशा, आईना।—मणि (पु०) स्फटिक मणि।
काँचक तद्० (पु०) पाषाण विशेष, स्फटिक, काँच।
काँचा दे० (पु०) कच्चा, अधूरा, असिद्ध।
काचरी (स्त्री०) केंचुली, सूखी सेंध, कचरी।
काचा (वि०) कच्चा, भीरु, कायर।
काची (स्त्री०) दुधैंडी, दूध रखने की हाँड़ी।
काचो (वि०) असार, मिथ्या।
काछ तद्० (पु०) निकट, समीप, नदी का किनारा, लाँग, धोती का अन्तिम छोर।
काछन दे० (स्त्री०) काछी की स्त्री, काछिन।
काछना दे० (क्रि०) काछ मारना, बटोरना, बनाना, पहनना।
काछनी दे० (स्त्री०) कस कर और कुछ ऊपर चढ़ा कर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों कांछें पीछे खोंस ली जाती हैं।
काछिय दे० काछना चाहिये, पहनना उचित है, पहनो, परिधान करो, काछिये, पहनिये। यथाः—"जस काछिय तस नाचिय नाचा" रामायण।
काछी दे० (पु०) जाति विशेष, तरकारी बोने और बेचने वाली हिन्दू जाति विशेष का मनुष्य, मुराउ।
काछे दे० (क्रि०) पहने हुए, बनाये हुए, बनाने से, काछने से। (क्रि० वि०) निकट, पास।
काज तद्० (पु०) कार्य, कर्म, काम, धन्धा, क्रिया, कारज।—कर्म, क्रिया कर्म, क्रिया और दूसरे व्यापार। [सुरमा, आँख में लगाने का आँजन।
काजर या काजल तद्० (पु०) कज्जल, अञ्जन,
काजलि तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, मत्स्य विशेष।
काजी दे० (पु०) उद्योगी, परिश्रमी, मुसलमान जाति के विचारक या व्यवस्थापक, क़ाज़ी।
कांजी दे० (स्त्री०) सड़ा हुआ राई का जल।
काजू दे० (पु०) एक प्रकार की सूखी मेवा।
काजे दे० लिये, निमित्त, हेतु।
काञ्चन तद्० (पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, हेम, सोना, पद्म, केशर, स्वनामख्यात पुष्प, वृक्ष विशेष।—क (पु०) धातुविशेष, हरताल।—कदली (पु०) सुवर्णकदली, चम्पा, केला।—गिरि (पु०) सुमेरु पर्वत, सुवर्ण पर्वत।—पद्म (पु०) सुवर्ण पर्वत, सुमेरु।—पुष्पिका (स्त्री०) मुसली, ओषधि विशेष।—मय (पु०) [काञ्चन+मयट्] कनकमय, सुवर्ण का।—ाचल (पु०) सुवर्ण का पर्वत, सुमेरु पर्वत।
काञ्चनार तद्० (पु०) कचनार का वृक्ष।
काञ्चनी तद्० (स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी। [भाग।
काञ्चि तद्० (पु०) मेखला, चन्द्रहार, करधनी, मध्य
काञ्ची तद्० (स्त्री०) [कञ्चि+ई] मेखला, स्त्रियों के कटि देश में पहनने का गहना। सप्त पुरियों में से एक पुरी, तीर्थ विशेष, इसके दो भाग हैं, एक का नाम विष्णुकाञ्ची और दूसरे का नाम शिव-काञ्ची है।—पद (पु०) जघन, नितम्ब।
काञ्जिक तद्० (पु०) पासी भात से निकाला हुआ जल, माण्ड, पसाया जल।
काट दे० (पु०) चीरा, कटा हुआ, मैल, मलीनता, काटा-पटक करण।

काटकूट दे० (स्त्री०) छाँट छूट, कतर ब्योंत, छेदन भेदन।—करना कतरना, काटना, काट डालना।

काटखाना दे० (क्रि०) काटना, दंशन करना, आक्रमण करना।

काटना दे० (क्रि०) छेदन करना, तोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना, कतरना, चीरना, काटखाना, खा जाना, खा लेना, कुल्हाड़ी या आरे आदि से काटना, कम करना।

काटि दे० (पु०) कमर, कटि, मध्यभाग, रामायण में कटि का काटि प्रयोग किया गया है।

काटू दे० (पु०) काटने वाला, छेदक, लकड़िहारा या लकड़हार, कटहा।

काठ तद्० (पु०) काष्ठ, लकड़ी, दारु, काठी।—कबाड़ (वा०) काष्ठ की वस्तु।—का उल्लू (वा०) मूर्ख, नासमझ, अनाड़ी।—चबाना (वा०) दुःख से निर्वाह करना, काल काटना, समय बिताना।—में पाँव देना स्वयं दुःख भोगने के लिये उद्यत होना।—पुतली (वा०) लकड़ी की मूर्ति के समान दूसरों की इच्छा से चलने वाला, नितान्त अनभिज्ञ, मूर्ख।

काठ-कीड़ा दे० (स्त्री०) खटमल, उड़ीस, खाट का कीड़ा, खटकिरवा। [कठौता।

काठड़ा दे० (पु०) काठ का बना हुआ बर्तन,

काठमांडू तद्० (पु०) नैपाल राज्य की राजधानी।

काठिन्य तत्० (पु०) कठिनता, दृढ़ता, निष्ठुरता, कठोरपन। [भाग विशेष।

काठियावाड़ (पु०) देश विशेष, गुजरात का एक

काठी दे० (स्त्री०) खोल, शरीर का गठन, काठ, डौल, घोड़े पर रखने की चीज़, काठियावाड़ में रहने वाले क्षत्रियों की एक जाति।

काढ़ा दे० (पु०) भुवा जैसा।

काढ़त (क्रि०) निकालता है, निकालते ही।

काढ़ना दे० (क्रि०) निकालना, खदेड़ना, बाहर करना, निर्माण करना, बेल बूटे निकालना, घोड़े को चाल सिखाना।

काढ़ा दे० (पु०) क्वाथ, कषाय, कथ। [(स्त्री०)काढ़ी। तद्० (पु०) एक आँख वाला, एकाक्ष, काना,

काण्ड तत्० (पु०) खण्ड, प्रकरण, खेल, बाण, शर, व्यापार, दण्ड, वर्ग, परिच्छेद, अवसर, प्रस्ताव।—कार (पु०) बाण बनाने वाला।—ग्रह (पु०) प्रकरण ज्ञान।—पट जवनिका, पर्दा।—पृष्ठ शस्त्र से जीने वाला, व्याध।—रुहा (स्त्री०) कड़ुकी वृक्ष। [एक, मुनि विशेष।

काण्डर्षि तत्० (पु०) वेद की एक शाखा का अध्या

कातना तद्० (क्रि०) सूत कातना रुई से सूत बनाना, चरखे से सूत बनाना।

कातर तत्० (गु०) भयभीत, व्याकुल, डरपोक, किसी वस्तु में आसक्ति के कारण घबराहट, अधीर चाल।—ता (स्त्री०) व्याकुलता, उद्वेग।

काता (पु०) काता हुआ सूत, डोरा

कातिक तद्० (पु०) आठवाँ महीना, देवताओं के उठने का मास, कार्तिक मास।

कातिकी तद्० (स्त्री०) कातिक की वस्तु, कार्तिक पूर्णिमा। [वाला

काती दे० (स्त्री०) छोटी तलवार। (पु०) सूत कातने

कात्यायन तत्० (पु०) विख्यात धर्म शास्त्रकार, (१) विश्वामित्र के कुल में इनका जन्म हुआ था, कात्यायन-श्रौतसूत्र और कात्यायन गृह्यसूत्र नामक दो ग्रन्थ इनके बनाये सर्वमान्य हैं। (२) प्रसिद्ध स्मृतिकर्ता, यह महर्षि गोभिल के पुत्र थे, "कर्मप्रदीप" नामक इनका बनाया एक स्मृति ग्रन्थ है। (३) प्रसिद्ध वैयाकरण, पाणिनी के सूत्रों पर इन्होंने वार्तिक बनाया है। इनके पिता का नाम सोमदत्त था, ये वत्सवंशियों की राजधानी कौशाम्बी में रहते थे। इनका दूसरा नाम वररुचि था।

कात्यायनी (स्त्री०) देवी विशेष, स्मृतिविशेष, कात्यायनवंशी भगवती की एक मूर्ति, कात्यायन ने सब से पहले इनकी पूजा की थी। इसी कारण इनको कात्यायनी कहते हैं। इनकी कथा मार्कण्डेय पुराण में विस्तार से लिखी है, भगुवा वस्त्र पहनने वाली अधेड़ विधवा स्त्री, याज्ञवल्क्य की स्त्री का नाम।

कादम्ब तत्० (पु०) कलहंस, राजहंस, सुन्दर हंस, कदम्ब का पेड़, ईख, बाण, दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश।

कादम्बरी तद्० (स्त्री०) मदिरा, मद्य, सुरा, सरस्वती, मैना या कोयल की वाणी, ग्रन्थ विशेष, बाणभट्ट के द्वारा निर्मित कादम्बरी नामक ग्रन्थ की नायिका। [समूह।

कादम्बिनी तद्० (स्त्री०) मेघमाला, मेघश्रेणी, मेघ-

कादर दे० (पु०) कातर, डरपोक, भीरु, डुब्ल, नामर्द, अधीर, घबराया हुआ।—ता (स्त्री०) भय, डर, व्याकुलता।

कदराई दे० (स्त्री०) भय, व्याकुलता, डर, भीरुताई।

कादा दे० (पु०) काँदो, कीचड़, पङ्क, चहला।

कान (पु०) कर्ण, श्रवण, श्रवणेन्द्रिय (स्त्री०) शान, लज्जा, शपथ, भ्रम।—पेंठना या अमेठना कान खींचना, तर्जन करना, भर्त्सन करना।—भरना (वा०) विरोध बढ़ाना, किसी के विरुद्ध भड़काना। —पर जूँ न चलना असावधानता, प्रमाद। —पर रखना (वा०) स्मरण रखना, उत्सुक रहना।—पर हाथ धरना अस्वीकार करना, नहीं मानना।—पकड़ना (वा०) अपनी भूल समझ लेना, अच्छे उपदेश मानना।—फूटना बहरा होना, किसी की न सुनना, कानों को दुःख पहुँचना।—फोड़ना (वा०) बड़ा शब्द, भयानक ध्वनि।—फूँकना अपने अधीन करना, मन्त्र देना।—सुरुकाना (वा०) सुनने की अभिलाषा। —दबा कर चला जाना (वा०) भाग जाना, किसी बात का निपटारा किये बिना या उत्तर सुने बिना चले जाना।—धरना (वा०) सावधानी से सुनना।—दे सुनना (वा०) सावधानी से सुनना। —देना सुनने की ओर सावधानी करना।—काटना (वा०) पराजित करना, झुकाना।—खड़े होना (वा०) सावधान होना, सजग हो जाना। —खोल देना (वा०) सावधान करना, सजग करना।—लगाना (वा०) ध्यान देना।—मलना (वा०) ताड़ना करना, सज़ा देना।—में उंगली देकर रहना (वा०) उदासीन होना।—में तेल डालना, नहीं सुनना, उपेक्षा करना।—में तेल डालकर सो रहना (वा०) बिलकुल उदासीनता दिखाना, असावधानी।—न हिलाना उफ उत्तर न देना, उपेक्षा की दृष्टि से देखना।—फूँसी मन्त्रणा करना।—कानी करना (वा०) चर्चा करना, अफवाह उड़ाना।—कान कहना (वा०) अति गुप्त रूप से कहना। [देशवासी।

कानकुब्ज (पु०) कनौजिया ब्राह्मण, कान्यकुब्ज

कानड़ा (वि०) काना, एक आँख वाला, एक राग विशेष।

कानन तद्० (पु०) वन, अरण्य, कान का बहुवचन, दो कान, ब्रह्मा का मुँह।

काना (वि०) एक आँख वाला।

कानाफूसी (स्त्री०) कान के पास धीरे धीरे कही हुई बात। [वाली, ग्लानि।

कानि दे० (पु०) लज्जा, मान, सङ्कोच, शर्म एक आँख

कानी दे० (स्त्री०) एक आँख वाली स्त्री, सब से छोटी जैसे कानी उंगली, शर्म, लज्जा, सङ्कोच।

कानीन तद्० (पु०) कर्ण और व्यास, अविवाहिता स्त्री से उत्पन्न पुत्र, कन्याजात, अनूढ़ापुत्र, अविवाहिता गर्भज।

कानून (पु०) विधि, नियम, आईन।

कान्त तद्० (पु०) [कम्+क्त] पति, कुङ्कुम, लौह विशेष, श्रीकृष्णचन्द्र, स्वामी, प्रिय, चन्द्रमा, विष्णु, शिव, कार्तिकेय, वसन्त ऋतु।—लौह (पु०) अयस्कान्त, शुद्ध लौह, कान्तिसार लौह।

कान्ता (स्त्री०) नारी, सर्वाङ्गसुन्दरी स्त्री।

कान्तार तद्० (पु०) महावन, कुपथ, दुर्गम पथ।

कान्ताह्वा तद्० (स्त्री०) औषधि विशेष, प्रियङ्गु।

कान्ति तद्० (स्त्री०) शोभा, दीप्ति, चन्द्रमा की एक कला।—दायक (पु०) शोभादायक, दीप्तिकारक।—पाषाण (पु०) चुम्बक पत्थर।

कान्दा तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, जल का कन्द, कल कुंदरा।

काँधी दे० (क्रि०) कन्धे पर उठा कर स्वीकार।

कान्यकुब्ज तद्० (पु०) [कान्य+कुब्ज] देश और ब्राह्मण विशेष, इसका नाम और प्रचलित अपभ्रंश कनौज है, यह नगर कुछ दिनों तक भारत की राजधानी रह चुका है।

कान्ह } कान्हर } दे० (पु०) भगवान् श्री कृष्णचन्द्र का एक नाम।

कान्हड़ा दे० (पु०) एक रागिनी का नाम।

कापट्य तद्० (पु०) कपटता, शठता, धूर्तता, छल, प्रतारण।

कापड़ी (पु०) काठियावाड़ प्रान्त में बसने वाली एक जाति। [रास्ता, बुरा रास्ता।

कापथ तद्० (पु०) कुपथ, कुत्सित मार्ग, दुर्गम

काँपा दे० (क्रि०) डरा, थर्राया।

कापाल तद्० (पु०) प्राचीन अस्त्र विशेष, वायविडंग, एक प्रकार की सुलह या सन्धि।—ी (पु०) शिव, वर्ण सङ्कर विशेष।

कापालिक तद्० (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, वाममार्गी, अघोर सम्प्रदाय के मनुष्य, कोढ़ का एक भेद विशेष, यह बड़ा विषम है और कष्ट-साध्य होता है। [पेशा, मूरा।

कापिल तद्० (पु०) साङ्ख्य शास्त्र, साङ्ख्यशास्त्र

कापुरुष तद्० (पु०) कुत्सित पुरुष, निन्दित पुरुष, कायर, निकम्मा।—त्व (पु०) अधमत्व, नीचता।

क़ाफ़िया दे० (पु०) तुक, लय, अन्तिम अनुप्रास।

क़ाफ़िर दे० (वि०) निर्दयी, कठोर, काफ़िर देशवासी, नास्तिक, जो मुसलमान न हो।

काफ़ी दे० (वि०) पर्याप्त, पूर्ण, बस, पूरा, पर्याप्त, मतलब भर के लिए।

काफ़ूर (पु०) कपूर।

काबा दे० (पु०) मुसलमानों के एक तीर्थ का नाम जो अरब में है और जहाँ हज़रत मोहम्मद रहा करते थे।

क़ाबिज़ (वि०) अधिकार प्राप्त, अधिकार रखने वाला।

काबुल (पु०) नदी विशेष, अफ़ग़ानिस्तान का एक प्रधान नगर या उसका पुराना नाम।

काबुली (पु०) काबुल देशवासी।

क़ाबू (पु०) कब्ज़ा, इख़्तियार, वश, चारा, शक्ति।

काम तद्० (पु०) [कम्+घञ्] मदन, कन्दर्प, इच्छा, वासना, अभिलाष, रमणेच्छा, कार्य, काम्य, चार पदार्थों में (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) से एक, धन्धा, सुन्दर, विषय, धन्धा।—आना (वा०) काम में आना, व्यवहार में आना, रण में हत होना।—पूरा करना (वा०) समाप्त करना, समाप्ति।—चलाना किसी प्रकार काम निकालना।—में लाना (वा०) उपयोग करना।—निकालना (वा०) इच्छापूर्ण करना।—काज कारोबार, कामधन्धा।—कला (स्त्री०) कामदेव-पत्नी, चन्द्रमा की सोलह कला, कामशास्त्र, मैथुन, रति।—कामी (पु०) कामासक्त, सम्भोगी।—कार (पु०) कामेच्छु, सम्भोगी।—केलि (स्त्री०) सुरत, रमणक्रिया।—चर (वि०) इच्छानुसार घूमने फिरने वाला।—चलाऊ (वि०) कुछ कुछ उपयोगी।—चारी (पु०) कामुक, स्वतन्त्र, उच्छृङ्खल।—चोर (वि०) कामचोर।—द (पु०) कामदाता, मनोरथपूरक।—तरु (पु०) कल्पवृक्ष, सुरतरु।—द गाई (स्त्री०) कामधेनु।—दा (स्त्री०) कामधेनु, भगवती।—दुघा (स्त्री०) कामधेनु, अभिलाषा पूर्ण करनेवाली गौ—दूती (स्त्री०) वसन्त ऋतु-लक्ष्मी।—देव (पु०) मदन, कन्दर्प।—धेनु (स्त्री०) देवताओं की गौ।—रूप (पु०) इच्छानुसार रूपधारण करने वाला, देश विशेष जो आसाम में है।—तरु तद्० (पु०) कल्पवृक्ष, देववृक्ष, स्वेच्छानुसार चलने वाला, अप्रतिहत मनोरथ।—शास्त्र (पु०) मैथुन शास्त्र।

कामन्दक तद्० (पु०) भारतीय एक नैतिक विद्वान का नाम, इनके बनाये ग्रन्थ का नाम कामन्दकीय नीति है, ये चाणक्य के पीछे उत्पन्न हुए थे।

कामदानी (स्त्री०) कलाबत्तू अथवा सलमा सितारे के कढ़े हुए बूटे व बेल। [मनोरथ, चाह, मुराद।

कामना तद्० (स्त्री०) ईप्सा, वासना वाञ्छा,

कामपत्नी तद्० (स्त्री०) रति, कामदेव की स्त्री।

कामपाल तद्० (पु०) बलदेव, बलराम, महादेव।

कामपीड़ित तद्० (पु०) कामसन्तप्त, काम से दुःखी।

कामभक्ष तद्० (पु०) इच्छानुसार भोजन करनेवाला, भक्ष्याभक्ष्य विचाररहित।

कामयाब (पु०) सफल, कृतार्थ।

कामरी दे० (स्त्री०) कम्बल, लोई, कमरी।

कामरूप तद्० (पु०) इच्छानुसार रूप धरने वाला, स्वेच्छाचारी, सुन्दर, देशविशेष।

कामरूपी तद्० (पु०) विद्याधर, बहुरूपिया।

कामला तद्० (स्त्री०) पाण्डु रोग।

कामलोल तद्० (पु०) चञ्चल, चलचित्त।

कामशर तद्० (पु०) कन्दर्प बाण।

कामाद्या तद्० (स्त्री०) देवी विशेष, इन देवी का स्थान डिबरूगढ़-आसाम में है।

कामातुर तद्० (गु०) कामार्त, काम पीड़ित, कामुक, समागम की इच्छा से व्याकुल।

कामात्मा तद्० (गु०) कामुक, लम्पट, व्यभिचारी।

कामाधिकार तद्० (पु०) प्रेम की उत्पत्ति, स्वेच्छाधीन, काम का अधिकारी।

कामाधिष्ठि तद्० (गु०) कामाभिभूत, कामवशग।

कामान्ध तद्० (गु०) [काम+अन्ध] काम के वशीभूत, काम के द्वारा हिताहित ज्ञानशून्य, विवेक भ्रष्ट।

कामायुद्ध तद्० (पु०) [काम+आयुद्ध] कामदेव के बाण, कामदेव का आयुद्ध, आम।

कामारण्य तद्० (पु०) [काम+अरण्य] मनोहर वन, उत्तम बगीचा।

कामारि तद्० (पु०) [काम+अरि] काम के शत्रु, शिव, महादेव।

कामार्त तद्० (गु०) [काम+आर्त] काम-पीड़ित, कामातुर, काम के वशीभूत।

कामार्थी दे० (पु०) कामरिया, गङ्गाजलिया।

कामासक्त तद्० (गु०) [काम+आसक्त] कामातुर, काम पीड़ित।

कामिका तद्० (स्त्री०) श्रावण कृष्ण की एकादशी का नाम।

कामिनी तद्० (स्त्री०) [कामिन्+ई] अतिशय कामयुक्ता स्त्री, भीरु स्त्री, स्त्री, सर्वसाधारण स्त्री, युवती, मदिरा, दारुहल्दी, पेड़ों का बाँदा, मालकोष, राग की एक रागिनी, वाद्यविशेष।

कामी तद्० (पु०) [काम+इन्] कामातुर, इच्छुक, अभिलाषी, चक्रवाक पक्षी, कबूतर, चिड़ा, सारस, चन्द्रमा, ऋक्षशृंगी, विष्णु का एक नाम। (स्त्री०) कमानी, तीली, सोने का टुकड़ा।

कामुक तद्० (पु०) [कम्+उकञ्] कामी, कामातुर, लम्पट, कामासक्त, चाहने वाला।

कामोदा तद्० (स्त्री०) रागिणी विशेष।

काम्बोज तद्० (पु०) देश विशेष, म्लेच्छ जाति विशेष, काम्बोज देश के घोड़े, वङ्ग के दक्षिण पूर्व का देश।

काम्य तद्० (गु०) [कम्+ण्यत्] कमनीय, सुन्दर कामनायुक्त, अभिलाषा का विषय।—कर्म (पु०) इच्छित फलसिद्धि के लिये धर्म कार्य।—त्व (पु०) आकांक्षा, अभिलाष।—दान (पु०) कामना सहित दान, नैमित्तिक दान, किसी पर्व विशेष में दान।

काम्येष्टि तद्० (स्त्री०) वह यज्ञ जो किसी कामना की सिद्धि के लिये किया जाय।

काय तद्० (पु०) प्रजापत्य तीर्थ, कनिष्ठा और अनामिका अँगुली के नीचे का भाग, मूर्ति, देह, शरीर, तनु, वपु, तन, डील।—स्थित (गु०) शरीरस्थ। जीव, शारीरिक।

कायक तद्० (गु०) शरीर सम्बन्धी, देही, शरीरी,

कायक्लेश तद्० (पु०) [काय+क्लेश] शरीर सम्बन्धी दुःख, देह का कष्ट।

कायथ तद्० देखो, कायस्थ।

कायफल दे० (पु०) एक औषधि का नाम, यह सुपारी जैसे स्वरूप का होता है।

कायम (वि०) स्थिर, उपस्थित।

कायमनोवाक्य तद्० (गु०) [काय+मनस्+वच +ष्यञ्] शरीर मन और वचन।

कायर दे० (गु०) कातर, भीरु, डरपोक, आलसी, कादर।—ता (स्त्री०) भीरुता।

कायल (वि०) मानने वाला।

कायस्थ तद्० (पु०) जाति विशेष, कायथ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति।

कायस्था तद्० (स्त्री०) हरीतकी, धात्रीवृक्ष आँवला, आमलकी, छोटी बड़ी इलायची, तुलसी, ककोली।

काया दे० (पु०) शरीर, देह, तनु, काय।—कल्प (पु०) शरीर का संशोधन करना।—पलट तद्० (पु०) बहुत बड़ा परिवर्तन, भारी अदलाबदली, नये रूप की प्राप्ति।

कायिक तद्० (गु०) शारीरिक, दैहिक, शरीर सम्बन्धी।

कायोढज तद्० (पु०) प्रजापत्य विवाह से उत्पन्न पुत्र।

कार (पु०) [कृ+घञ्] व्यापार करने वाला, कर्ता, यत्न, काम, व्यापार, उपाय, काम काज।

कारक तद्० (पु०) [कृ+ण्वुल्] कर्ता, हेतु, करने वाला, वैयाकरणों के मत से क्रिया से सम्बन्ध रखने वाले विभक्ति के अर्थ, क्रिया, निमित्त।—दीपक (पु०) अलङ्कार विशेष।

कारकुन (पु०) कारिन्दा, प्रबन्धकर्ता।
कारखाना दे० (पु०) कार्यालय, कर्मालय, वह जगह जहाँ व्यापार के लिये कोई वस्तु बनाई जाती है।
कारगर (वि०) उपयोगी, असर करने वाला।
कारगुजार (वि०) भली भाँति काम करने वाला।
कारचोबी दे० (पु०) वस्त्र विशेष, चाँदी सोने के तारों द्वारा जिस वस्त्र पर वेल बूटे बनाये हों।
कारज दे० (पु०) कार्य, कर्म, काम, काज, काम, धन्धा, कारबार।
कारण तत्० (पु०) [कृ+णिच+अनट्] जिसके बिना किसी कार्य की सिद्धि नहीं वह उस कार्य का कारण है। हेतु, बीज, निमित्त, प्रयोजन, निदान, वास्ते, लिये।—कारण (पु०) कारण का कारण, परमेश्वर, संसार की सृष्टि करने वाला।—गुण (पु०) हेतु के गुण, कारण के धर्म—ता (स्त्री०) हेतुता निमित्तता।—वादी (पुं०) प्रदोस करने वाला, निवेदक, अभियोग उपस्थित करने वाला, फरयादी —वारि (पु०) सृष्टि उत्पन्न करने वाला जल, सृष्टि के प्रथम का जल—विशिष्ट (स्त्री०) युक्ति सिद्ध, उचित।—माला (स्त्री०) कारण समूह, घटना परम्परा।—शरीर (पु०) सत्वप्रधान, अज्ञान, आनन्दमय कोष, सुषुप्ति शरीर।—भूत (पु०) मूल कारण, हेतुभूत।
कारण्डव तत्० (पु०) पक्षी विशेष, हंस विशेष।
कारपरदाज (वि०) कारकुन, प्रतिनिधि कारिन्दा।
कारबार दे० (पु०) व्यवसाय, वाणिज्य, व्यापार, कर्म काम।
कारबारी (वि०) कामकाजी।
काररवाई (स्त्री०) कृत्य, काम, विवरण।
कारवल्ली या कारवेल्ल तत्० (स्त्री०) कटुफल, करेला, तरकारी विशेष।
कारवाई दे० (स्त्री०) काम, कृत्य, प्रयत्न।
कारवी तत्० (स्त्री०) [कारव+ई] मयूर शिखा, रद्रजटा, अजमोद, कलौंजि, औषधि विशेष।
कारस्तानी (स्त्री०) गुप्त कारवाई।
कारा तत्० (स्त्री०) [कार+आ] बन्धन, पीड़ा, पराधीनता नाश।—गार (पु०) [कारा+आगार] जेलखाना, बन्दागृह, अवरोधस्थान।—गृह (पु०) बन्धनगृह, कारागार। [पुर्गों के शासन में था।
कारापथ तत्० (पु०) देश विशेष, जो लक्ष्मण जी के
कारावास तत्० (पु०) क़ैद, जेहल।
कारिका तत्० (स्त्री०) नटी, किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या। [कलङ्क, दोष।
कारिख दे० (पु०) कालिमा, कालस, स्याही, श्यामता,
कारी तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, कार्यकर्ता, करने वाला, (स्त्री०) काली, श्यामा, काले रङ्ग की, यथार्थ, भरपूर।
कारीगर दे० (स्त्री०) शिल्पी, शिल्पकार, काम करने वाला।—री दे० (स्त्री०) हुनर, कार्य शिल्पकारी।
कारु, कारुकर तत्० (पु०) विश्वकर्मा, शिल्पी, शिल्पकार, निर्माता, सुवर्णकार, बढ़ई।
कारुकादि तद्० (पु०) कारीगरी, हुनर।
कारुणिक या कारुणीक तत्० (पु०) दयालु, कृपालु, करुणा युक्त कृपावान, मेहरबान।
कारुण्य तत्० (पु०) दया, कृपा।
कारो (वि०) काला, स्याह।
कारोबार दे० (पु०) व्यवसाय, व्यौपार, काम काज।
कार्कश्य तत्० (पु०) कठोरता, कठिनता, कर्कशता, परुषता, नीरसता, क्रूरता।
कार्त्तवीर्य तत्० (पु०) कृतवीर्य राजा का पुत्र, सहस्रबाहु अर्जुन ये नर्मदा तीरस्थ हैहयराज्य के अधिपति थे, कार्तवीर्य का दूसरा नाम हैहय भी था, इन्हीं के नामानुसार इनके राज्य का भी नाम पड़ा है। इनकी राजधानी का नाम माहिष्मती नगरी है। त्रिलोकविजयी रावण को भी इनके पराक्रम के सामने नीचा देखना पड़ा था। रावण इनके यहाँ बन्दी हुआ था। परशुराम ने कार्तवीर्य को मारा था। यह राजा तन्त्रशास्त्र का एक राजा समझा जाता है। इसका बनाया कार्तवीर्य तन्त्र का शास्त्रों में विशेष आदर है। [विशेष।
कार्त्तस्वर तत्० (पु०) सुवर्ण, हेम, सोना, पुष्प
कार्त्तान्तिक तत्० (पु०) ज्योतिर्वेत्ता, ज्योतिःशास्त्रज्ञ, दैवज्ञ।
कार्त्तिक तत्० (पु०) शरद् ऋतु का दूसरा महीना, कातिक मास इस मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र के समीप रहता है।

कार्त्तिकेय तत्० (पु०) षडानन, महादेव का ज्येष्ठ पुत्र, चन्द्रमा की स्त्री कृतिका के दूध से यह पाला गया था, इसी कारण देवताओं ने इसका कार्त्तिकेय नाम रखा। यह देवताओं का सेनापति था। तारकासुर के वध के लिये यह उत्पन्न किया गया था। इसने देवसेना का परिचालन किया और तारकासुर को मारा। तारकासुर के मारने के बाद इसका नाम तारकारि पड़ा था, इसकी स्त्री का नाम देवसेना था जो ब्रह्मा की पुत्री थी। देवसेना का दूसरा नाम षष्ठीदेवी है। (ब्रह्मवैवर्त)

कार्पण्य तत्० (गु०) कृपणता, दीनता, अत्यन्त धनलोभ, कम खर्च करना, अमुक्तहस्त, इस शब्द के प्रयोग के स्थान में, " कार्पण्यता " का प्रयोग करना अनुचित और अशुद्ध है। [कायदे।

कार्पास तत्० (पु०) रुआ का पेड़, कपास, रुई, सुती

कार्मण तत्० (पु०) कर्मदक्ष कर्मठ, मूलकर्म, औषधि मन्त्र आदि के द्वारा मोहन वशीकरण उच्चाटन आदि कर्म, शत्रुपराजय आदि के लिये मन्त्र तन्त्र की योजना।

कार्मिक तत्० (गु०)- विचित्र वस्त्र, जड़ाऊ वस्त्र, कारचोबी के कपड़े, वह वस्त्र जिसकी बुनावट में ही शङ्ख चक्र स्वस्तिक आदि के चिन्ह बनाये गये हों।

कार्मुक तत्० (पु०) धनुष, चाप, कर्मसम्पादन करने वाला।—भृत् (पु०) धनुर्द्धारी, धानुष्क, वीर योद्धा।

कार्य तत्० (पु०) [कृ+ण्यत्] कर्म, काम, काज, हेतु प्रयोजन, फल, ऋण सम्बन्धी विवादादि, जन्मकुण्डली का दसवाँ स्थान, आरोग्यता। —कर्त्ता तत्० (पु०) कर्मचारी काम करने वाला।—कार (पु०) कर्मचारी, उपकारक, सहायक।—कारक (पु०) कार्य कर्त्ता, कर्म सम्पादन करने वाला।—कलाप (पु०) कार्य समूह, अनेक कार्य, कार्याधिक।—कुशल (गु०) कर्मठ, कार्यदक्ष, चतुरता से काम करने वाला। —क्षम (गु०) कार्य करने के योग्य, गुणी, क्षमता वान्।—त (अ०) यथार्थ रूप से, निश्चित रूप से, मिथ्या के रूप से।—दक्ष (गु०) कर्म में निपुण, कर्मठ, कर्मकुशल।—निष्ठ (गु०) काम में लगा हुआ, कार्यासक्त, कामकाजी।—पटु (गु०) कर्मदक्ष, कर्मकुशल।—प्रद्वेष (पु०) आलस्य, अलसता।—वाही (स्त्री०) कारवाई। —विवरण (पु०) कार्यों का वर्णन।—हन्ता (पु०) प्रतिबन्धक, बाधक, कार्यनाशक।—ाध्यक्ष (पु०) अफ़सर।—ाधिकारी (पु०) काम करने वाला, प्रतिनिधि, कर्मचारी।—ाधिष्ठाता (पु०) श्रेष्ठ, सेठ, कार्यासक्त, व्यापारलग्न।—ाधीश (पु०) कार्याध्यक्ष, स्वामी, प्रभु। [सम्बन्ध।

कार्य-कारण भाव तत्० (पु०) कार्य और कारण का

कार्यालय तत्० (पु०) दफ़्तर, कारख़ाना।

कारवाई देखो कारखाई।

कार्श्य तत्० (स्त्री०) क्षीणता, कृशता, दुर्बलता।

कार्षक तत्० (पु०) [कृष्+अक्] कृषक, किसान, कर्षणक, खेतिहर।

कार्षापण तत्० (पु०) सिक्का विशेष।

काल तत्० (पु०) [कल्+घञ्] समय क्षण, मुहूर्त, अवसर, बेला, मृत्यु मारण, शिव, शनि, यम, ऋतु, महँगी, दुष्काल, अकाल, साँप, सर्प मृत्यु कारक जन्तु या द्रव्य, आगामी या व्यतीत दिन, नियत समय।—काटना (वा०) व्यर्थ समय नष्ट करना, निरर्थक बैठे रहना।—गँवाना (वा०) उचित समय पर काम न करना।— बिताना (वा०) काल काटना।—कूट (पु०) हलाहल, विष ज़हर।—क्षेप (पु०) समय बिताना, दिन काटना, भगवान के गुणानुवाद करके या सुनके समय व्यतीत करना।

कालक तत्० (पु०) तैंतीस प्रकार के केतुओं में से एक, आँख की पुतली, बीजगणित की दूसरी अव्यक्त राशि, पानी का साँप, देशविशेष, यकृत।

कालकील तत्० (पु०) कलकलाहट, कोलाहल, हलचल।

कालकेय तत्० (पु०) राक्षस विशेष, इस नाम के राक्षसों का एक समूह जो वृत्रासुर का साथी था।

कालकोठरी (स्त्री०) अँधेरी छोटी कोठरी।

कालक्रम तत्० (पु०) समयानुसार।

कालख दे० (पु०) कलङ्क, तिल, मस्सा।

कालज्ञ तत्० (पु०) समय ज्ञाता, समयानुसार काम करने वाला। [का बड़ा महन्त।
कालञ्जर तत्० (पु०) शिव का एक नाम, वाममार्गियों
कालधर्म तत्० (पु०) समय के धर्म मृत्यु, मरण।
कालनाभ तत्० (पु०) हिरण्याक्ष का एक पुत्र। [गुग्गुल।
कालनिर्यास तत्० (पु०) सुगन्धित द्रव्य विशेष
कालनिशा तत्० (स्त्री०) प्रलय की रात्रि, दिवाली की रात, अत्यन्त अँधेरी रात, मरन समय, अन्त की रात।
कालनेमि तत्० (पु०) दैत्य विशेष, कपटी मुनि। (१) यह दैत्य देवासुर संग्राम में कुबेर आदि को जीत कर अन्त में भगवान के द्वारा मारा गया। (२) राक्षस विशेष, यह विष्णु के तेज से डर कर रावण के नाना सुमाली के साथ पाताल में भाग गया था। (३) रावण का मामा, सञ्जीवनी बूटी लाने के समय हनुमान् को रोकने अथवा मारने के लिये रावण ने इसी को भेजा था। यह कथा रामायण में है।
कालपालक तत्० (पु०) समय की अपेक्षा करने वाला गूढ़ नीतिज्ञ। [पाश, मरण रज्जु।
कालपाश या कालपास तत्० (पु०) यमपाश, मृत्यु
कालफ दे० (पु०) किसी सवाद पत्र का स्तम्भ।
कालपुरुष तत्० (पु०) यमराज के अनुचर, ज्योतिष शास्त्र, शुभाशुभ जानने के लिये कल्पित द्वादश राशियों का पुरुषाकार, यमराज, ये ब्रह्मा के पौत्र और सूर्य के पुत्र हैं। इनका स्वरूप अत्यन्त भयङ्कर है। इनके ६ मुख, १६ हाथ, २४ आँखें, और ६ पैर हैं। इनका रङ्ग काला है और ये लाल रङ्ग के वस्त्र पहनते हैं।
कालपर्णी तत्० (स्त्री०) औषधि विशेष, काला निसोत।
कालप्रभात तत्० (पु०) शरद् ऋतु शरत्काल।
कालवेला तत्० (स्त्री०) अयोग्यकाल किसी काम करने के लिये निन्दित समय। [विष वैद्य।
कालबेलिया दे० (पु०) सर्प का विष उतारने वाला,
कालभैरव तत्० (पु०) शिव के अंश से उत्पन्न, उनका अनुचर, ब्रह्मज्ञान शून्य, ब्रह्मा का पाँचवाँ मस्तक काटने के लिये इनकी उत्पत्ति हुई थी।
कालमा दे० (पु०) सशय, सन्देह, दुविधा, खटका।
कालमूल तत्० (पु०) लाल चित्रक, औषध विशेष।
कालमेषिका तत्० (स्त्री०) मजीठ, बाकुची, औषधि विशेष।
कालमेषी तत्० (स्त्री०) मजीठ, काला निसोत।
कालयवन तत्० (पु०) प्रसिद्ध बली यवनराजा, यह महर्षि गर्ग के औरस से गोपाली नामक किसी अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। महर्षि गर्ग ने पुत्र पाने के लिये लोह चूर्ण खाकर बारह वर्ष तक तपस्या की थी, उसी का फलस्वरूप कालयवन हुआ। घटनावश कालयवन को पुत्रहीन यवराज ने पाला और अपने बाद इसे ही अपना उत्तराधिकारी भी बनाया। मगधराज जरासन्ध तथा उसके पक्षवालों ने कालयवन को कृष्ण से लड़ने को भेजा था।
कालरा दे० (पु०) विसूचिका रोग, हैजा।
कालरात्रि तत्० (स्त्री०) प्रलय काल की रात दिवाली की रात्रि, भगवती का नाम, मृत्यु समय, अँधेरी रात।
कालशाक तत्० (पु०) पटुआ साग, करेमू सरफोंका।
कालसार तत्० (पु०) तेंदुआ का पेड़।
कालसूत्र तत्० (पु०) नरक विशेष।
कालसूर्य तत्० (पु०) प्रलय काल का सूर्य।
कालस्कन्ध तत्० (पु०) तमाल वृक्ष, तिन्दुक वृक्ष।
कालस्वरूप तत्० (पु०) मृत्यु का आकार, मृत्यु के समान भयङ्कर, घातक, हिंसक।
काला दे० (गु०) काले रङ्ग का, कृष्णवर्ण, कलौटा। —गुरु (पु०) [काल+अगरु] सुगन्धि द्रव्य विशेष कृष्णवर्ण सुगन्धित काष्ठ।—ग्नि (पु०) प्रलय काल की आग, कालानल, सहारकारक अग्नि।—चोर (वा०) अपरिचित मनुष्य, अनजान, बेजान।—त्यय (पु०) समयनाश, समय का दुरुपयोग।—न्तक (पु०) यमराज, धर्मराज।—न्तर (पु०) समयान्तर, दूसरे समय।—मुँह करना (वा०) अमर्यादित करना, अप्रतिष्ठा करना, डाँटना, लज्जित होना या करना, मुँह में कालिख लगाना।
कालाकलूटा (वि०) अत्यन्त काले रंग का
कालाचार (पु०) भारी चोर, तुच्छ पुरुष।
कालाप तत्० (गु०) कलाप व्याकरण जानने वाला।
कालापानी दे० (पु०) देश विशेष, जहाँ का जल

अत्यन्त खराब होता है। एक द्वीप, जिसे पुरडमन टापू कहते हैं। इसके चारों ओर का जल अत्यन्त खारा है और काला है इस से इसे कालापानी कहते हैं। जिन्हें देश निकाले का दण्ड दिया जाता है, वे यहीं भेजे जाते हैं। [इस्पात लोहा।

कालायस तद्० (पु०) [काल+आयस] लोह विशेष

कालिक तद्० (गु०) कालसम्बन्धी, सामयिक, (पु०) माघत्र मास, काला चन्दन, क्रौंच पक्षी।

कालिका तद्० (स्त्री०) काली देवी, महाकाली देवी, कालिख, रोमराजी, जटामाँसी, काकोली शृगाली, कौवे की मादा, मेघ, सुवर, स्याही, मदिरा, हर विशेष, एक नदी, आँख की काली पुतली, दक्ष की एक बेटी, कुहरा, हलकी झड़ी, बिच्छू, सिर मलने की काली मिट्टी, चार वर्ष की कन्या, रणचण्डी।

कालिकला (क्रि० वि०) कदाचित्, कभी, किसी समय।

"कालिकला काशीनाथ कहे निवरत हौ।"

—तुलसी।

कालिख (स्त्री०) कलौंच, स्याही। [नामक एक वृक्ष।

कालिख्या तद्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, किन्दवाली

कालिङ्ग तद्० (पु०) फल विशेष, तरबूज।

कालिञ्जर (पु०) पर्वत विशेष जो बाँदा जिले में है।

कालिदास तद्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध संस्कृत के महाकवि, विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में के प्रधान रत्न। इनका समय ५८८ ई० से पूर्व का बताया जाता है। सीलोन का राजा और महाकवि कुमारदास इनका मित्र हो गया था। कालिदास विक्रमादित्य की मृत्यु होने पर, कुमारदास के पास सीलोन गये थे, और वहीं इनकी समाधि हुई। (२) दूसरे कालिदास को पाश्चात्य लोग महाकवि भवभूति के समय का मानते हैं। इनका समय ७४८ ई० निश्चित हुआ है। (३) तीसरे कालिदास प्रसिद्ध विद्वान् और ग्रन्थकार राजा भोज के समय में थे। इनके विषय में बहुत सी किंवदन्तियाँ भी प्रचलित हैं। राजा भोज ११ वीं शताब्दी में हुए थे, अतएव इनके समकालीन कालिदास का भी वही समय बताया जाता है। इनके अतिरिक्त और भी कई कालिदास हुए हैं।

कालिन्दी तद्० (स्त्री०) कलिन्द पर्वत से उत्पन्न, यमुना, यह सूर्य की कन्या है। यमराज और शनिश्चर ये दोनों इसके भाई हैं।—भेदन (पु०) बलराम।

कालिमा तद्० (स्त्री०) [काल्+इमन्] कृष्णता, मलिनता, मालिन्य, कलङ्क, कालापन।

कालिय या कालीय तद्० (पु०) सर्पराज, कालीनाग, गरुड़ के भय से समुद्र में रहना छोड़ ब्रज में दह रहने लगा था, वहाँ कृष्ण के द्वारा पराजित हुआ और उन्हीं के आज्ञानुसार पुनः समुद्र में जा कर रहने लगा।

कालियक तद्० (पु०) मलय चन्दन।

काली तद्० (स्त्री०) श्यामवर्ण, काले रङ्ग वाली, आद्या प्रकृति, शान्तनु राजा की पत्नी, कालिका, भगवती, हिमालय की एक नदी, अग्निदेव की सात जिह्वाओं में से प्रथम।

कालीदह तद्० (पु०) ब्रज के एक सरोवर का नाम, जहाँ कालीनाग रहता था।

कालीन कालीना तद्० (गु०) सामयिक, समयगत निर्दिष्ट समय का, चिरकालिक, बहुत पुराना, अति वृद्ध।

कालीन दे० (पु०) गलीचा। [लेने वाला भेगी।

कालेश्वर तद्० (पु०) महादेव, शिव, मृत्यु को जीत

कालौ (पु०) काल भी, मृत्यु भी, समय भी, [illegible] भी।

काल्पनिक तद्० (गु०) कल्पना से उत्पन्न मनगढ़न्त, कल्पित, मिथ्या आरोपित, कृत्रिम, अस्वाभाविक। (पु०) कल्पना करने वाला।—ता (स्त्री०) कृत्रिमता, बनावटी।

कावा दे० (पु०) काठियावाड़ में एक लुटेरी जाति जिसने अर्जुन और श्रीकृष्ण की रानियों को लूटा था। [चक्कर देना घोड़ा फिराना।

कावा देना दे० (क्रि०) घोड़े को चक्र सिखाना,

कावेरी तद्० (स्त्री०) नदी विशेष।

काव्य तद् (पु०) रसयुक्त वाक्य जिसमें चित्त आकृष्ट हो कविता —चोर (पु०) दूसरे की कविता का भाव या पाद आदि हरण करने वाले।—त्व (पु०) काव्य का धर्म काव्य का विशेष लक्षण, काव्य का स्वरूप।—लिङ्ग (पु०) अलङ्कार विशेष।

काश्या तद्० (स्त्री०) पूतना, बुद्धि।
काश तद्० (पु०) तृण विशेष, खाँसी, खोखी, श्वाँस का रोग, एक प्रकार का चूहा, मुनिविशेष। तद्० कास।—मर्दी (स्त्री०) भारंगी औषधि।
काशि तद्० (पु०) सूर्य, रवि, दिवाकर।—राज (पु०) काशी का राजा, दिवोदास, धन्वन्तरि।
काशिका तद्० (स्त्री०) वाराणसी क्षेत्र, काशीधाम, व्याकरण के एक ग्रन्थ का नाम।—प्रिय (पु०) विश्वनाथ।—राज (पु०) विश्वनाथ, वाराणसी का राजा, दिवोदास, धन्वन्तरि आदि।
काशी तद्० (स्त्री०) शिवपुरी, वाराणसी।—(पु०) कासरोगी, दीप्तिमान्, तेजोमय।—नाथ (पु०) शिव, विश्वेश्वर।—राज (पु०) काशी का राजा, दिवोदास, धन्वन्तरि।—फल तद्० (पु०) लाल कुम्हड़ा, कद्दू।—करवट (पु०) काशी में एक तीर्थ स्थान, जहाँ पर आरे के नीचे लोग अपना शरीर चिरवाया करते थे।
काशीश तद्० (पु०) उपधातु विशेष, कसीस, हीराकस।
काश्मरी तद्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, गँभार का वृक्ष।
काश्मीर तद्० (पु०) स्वनामख्यात देश, कश्मीर का रहने वाला, पुष्करमूल, केसर, सुहागा।—ज (पु०) औषधि विशेष, कूट, कश्मीर में उत्पन्न होने वाला पदार्थ, कुङ्कुम।—ी (वि०) काश्मीर वासी। [प्रकार का अगुर।
काश्मीरा दे० (पु०) मोटा ऊनी वस्त्र विशेष एक
काश्यप तद्० (पु०) कणाद मुनि, मृगविशेष, गोत्र विशेष, कश्यप मुनि का वंश।
काश्यपमेरु तद्० (पु०) कश्यप मुनि का वासस्थान पर्वत विशेष जिस पर कश्यप मुनि रहते थे। प्रसिद्ध काश्मीर देश। [पृथ्वी, धरित्री, प्रजा।
काश्यपि (पु०) अरुण, सूर्य का सारथी।—ी तद्०
काषाय तद्० (पु०) गेरुआ रंग का कपड़ा।
काष्ठ तद्० (पु०) इन्धन, दारु, लकड़ी, काठ।—विक्रेता (पु०) लकड़ी बेचने वाला, लकड़हारा।
काष्ठा तद्० (स्त्री०) हद, सीमा, अवधि, उत्कर्ष, एक कला का ३० वाँ भाग, दिशा, स्थिति, दक्ष की एक कन्या, चन्द्र की एक कला, दौड़ लगाने की सड़क।
काष्ठी तद्० (स्त्री०) फटकी, फिटकिरी।
कास (पु०) खास, श्वाँस का रोग, सरपत, सरहरी, एक प्रकार की घास।
कासनी (पु०) एक पौधा विशेष, रंग विशेष।
कासत्री दे० (पु०) ताँती, कपड़ा बिनने वाला, तन्तुवाय, जुलहा, कोरी।
कासा (पु०) प्याला, आहार।
कासार तद्० (पु०) छोटा सरोवर, छोटा तालाब, दण्डक वृत्त विशेष, कसार, पञ्जीरी।
कासी (काशी) (स्त्री०) एक पुरी का नाम, आनन्द वन अविमुक्त क्षेत्र।
कासु दे० (सर्व०) किसको, किसका। [कौन काम।
काह दे० (पु०) किसको किससे, क्या, कौन वस्तु,
काहनी दे० (स्त्री०) कहानी, आख्यायिका, कथा।
काहण तद्० (पु०) कार्षापण, सोलह पण, मान विशेष।
काहार दे० (पु०) भृत्य, कर्मकर, धीवर, कहार।
काहि (स्त्री०) किसको, किसे, किससे।
काहिल (वि०) सुस्त, आलसी।—ी (स्त्री०) सुस्ती।
काहू दे० किसी, कोई, किसीको।
काहे दे० क्यों, किस लिये, किस प्रयोजन से।
कि दे० (अ०) दो वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध सूचक अव्यय, यथा, क्यों, किस लिये।
किंकर्त्तव्य विमूढ़ तद्० (वि०) हक्का बक्का, भौंचक्का, आकुल, व्याकुल, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय।
किंवदन्ती तद्० (स्त्री०) उड़ती खबर, अनिश्चित समाचार, जनश्रुति, अफ़वाह।
किंवा (अ०) वा, या, अथवा, यद्वा।
किंशुक तद्० (पु०) पलाश वृक्ष, टेसू, छिउल, ढांक।
किएहू दे० किये से भी, करने से भी।
किकियाना दे० चिल्लाना, रोना, पुकारना, दुहाई देना, ज़ोर से आवाज़ देना।
किङ्कर तद्० (पु०) [किं+कृ+अ] दास, भृत्य, नौकर, चाकर, सेवक, चाकर।—त्व (पु०) दासत्व, अधीनता। (स्त्री०) किङ्करी, दासी।
किङ्किणी तद्० (स्त्री०) कटि का आभरण, क्षुद्र, घण्टिका, करधनी विशेष।
किचकिच दे० (पु०) कच पच, चें चें, व्यर्थ कोलाहल

अव्यक्त शब्द विशेष, एक पक्षी का शब्द, किच किच करना। [पीसना, अधीर होना।

किचकिचाना दे० (क्रि०) क्रोध के वश होना, दाँत

किचड़ाना या किचराना दे० (क्रि०) आँख का रोग विशेष, आँख आना।

किचपिच दे० (पु०) काँदा, कीचड़, पाँक, स्पष्ट उत्तर न देना, अव्यक्त ध्वनि, वानर आदि का शब्द।

किचपिचाना दे० (क्रि०) गड़बड़ाना, किसी प्रकार का कर्तव्य स्थिर नहीं करना, दोलायमान चित्त, मन की दुविधा।

किचिरपिचिर दे० (पु०) गिचपिच, कीचड़। [द्योतक

किञ्च तत्० (अ०) और भी दूसरा भी, वाक्यान्तर

किञ्चित् तत्० (अ०) अल्प, ईषत्, कुछ थोड़ा।

किञ्चिन्मात्र तत्० (अ०) कुछ, स्वल्प, अल्पतर, बहुत थोड़ा, यत्किञ्चित्।

किञ्जल्क तत्० (पु०) सिफाकन्द, फूल की पाँखड़ी, फूल का रज, केशर, पराग, कमल के बीच की जटा।

किटकिट दे० (पु०) वादविवाद, किचकिच।

किटि तत्० (पु०) शूकर, सूअर, वराह।

किटिभ तत्० (पु०) जूं, केशकीट, ढील।

किट्ट तत्० (पु०) मल, विष्ठा, कीट, मैला।—वर्जित (गु०) मल-रहित, शुद्ध, स्वच्छ। [शब्द।

किड़किड़ दे० (पु०) दाँतों की रगड़ से उत्पन्न

किड़किड़ाना दे० (क्रि०) अतिशय क्रोध युक्त होना, क्रोध से सन्तप्त होना, क्रोध के आवेग से दाँत पीसना। [मादकता उत्पन्न होती है।

किण्व तत्० (पु०) मदिरा, बीज जिससे मद्य में

कित तद्० (अ०) कितनी, कहाँ, किधर, य, कुत्र।

कितई दे० (अ०) लौं, तक, तलक, पर्यन्त।

कितना दे० (पु०) परिमाण विषयक प्रश्नार्थक।

—ही (वा०) बहुत अधिक, प्रचुर परिमाण।

कितव तत्० (पु०) धूर्त, वञ्चक, प्रतारक, जुआ खेलने वाला, जुआरी, धतूर, गोरोचन।

किता दे० (पु०) सीने के लिये कपड़े की काँट छाँट।

किताब (स्त्री०) पुस्तक, ग्रन्थ।

कितिक (वि०) कितना, किस प्रकार।

कितेक दे० (गु०) बहुत अधिक, प्रचुर, कितना ही।

किते दे० (अ०) कहाँ, किधर, किस ओर।

कितो (वि०) कितना।

कित्ता (वि०) कितना।

कित्ति तद्० (स्त्री०) यश, कीर्ति यथाः—

"अखण्ड कित्ति लेय, देयमान लेखिये"

—रामचन्द्रिका।

किदारा दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष, यह गरमी के दिनों में आधीरात को गायी जाती है।

किधर दे० (अ०) कहाँ, किस ओर।

किधौं (अ०) या, अथवा।

किन दे० (अ०) किस का बहुवचन, क्यों नहीं, किमने, कौन, किसको।

किनका (पु०) अन्न का छोटा दाना।

किनवैया दे० (गु०) ग्राहक, खरीदने वाला, गाहक, लेने वाला। [मोल लेना।

किनना दे० (क्रि०) मूल्य देकर लेना, खरीद करना,

किनहा (वि०) जिसमें कीड़े लग गये हों। [वाला।

किनार (पु०) कोर, किनारी।—दार (वि०) किनारी

किनारा (पु०) तीर, तट, समीप, पार्श्व, धोती आदि का प्रान्त, कोर।—खींचना (वा०) अलग होना, धोखा देना, विश्वासघात करना।

किनारी दे० (स्त्री०) गोटा, गोट, मगज़ी, कोर, वस्त्र का प्रान्त, अन्त।

किन्तु तत्० (अ०) तो क्या, पहले कही हुई बात के विरुद्ध बात, परन्तु, अथच।—वादी (गु०) दूसरों से कही हुई बात को काटने वाला औरों की न सुनने वाले।

किन्नर तत्० (पु०) [किं+नर] स्वनामख्यात देव-योनि विशेष, किम्पुरुष, जैन विशेष, गन्धर्व देवताओं के गवैया। किन्नर दो तरह के होते हैं, एक का शरीर आदमियों का सा, परन्तु मुँह घोड़े के समान होता है, दूसरे का मुँह आदमी का सा और धड़ घोड़े का सा होता है।

किन्नरी तत्० (स्त्री०) विद्याधरी, स्वर्गीय वेश्या, अप्सरा।

किन्नरेश्वर तत्० (पु०) [किन्नर+ईश्+वरच्] कुबेर, यक्षपति, देवताओं के कोषाध्यक्ष।

किफ़ायत (स्त्री०) कमखर्ची। [प्रकार।

किम् तद्० (सर्व०) क्या, क्यों, कैसा, क्योंकर, किस

किमपि तद्० (अ०) कुछ भी, जो कुछ, यत्किञ्चित् ।
किमर्थ तद्० (अ०) किसलिये, क्यों, काहे को, किस निमित्त से, किस प्रयोजन से ।
किमाँच दे० (पु०) खजुहाँ, कौंच या वृक्ष और फल विशेष, किवाँच । [से, किस तरह ।
किमि तद्० (सर्व०) क्योंकर, किस भाँति, किस उपाय
किमुत तद्० (अ०) प्रश्न, वितर्क, विकल्प, अतिशय, सम्भावना ।
किम्पच तद्० (गु०) अदाता, कृपण, सूम ।
किम्पुरुष तद्० (पु०) किन्नर, विद्याधर, स्वर्गीय गायक । (गु०) कुत्सित पुरुष, निन्दित मनुष्य, दुराचारी ।
किम्भूत तद्० (गु०) [किं+भू+क्त] किस प्रकार कैसा, कीदृश ।—किमाकार (वा०) कुत्सित आकृति विशिष्ट, अनभिज्ञता । [समुच्चय ।
किम्वा तद्० (अ०) अथवा, वा, विकल्प, यदि, या,
कियत् तद्० (गु०) कितना, कितना परिमाण ।
कियारी दे० (स्त्री०) मेंड़, क्यौर मेंवला, क्यारी, खेत, लहता, चमन ।
किये दे० (क्रि०) करने से, करे । [लकड़ी, किरकिरी ।
किरकिट दे० (स्त्री०) आँख में की कणिका, छोटी
किरकिरा दे० (गु०) रेतीली, कंकरीला ।
किरकिरी दे० (स्त्री०) किरकिटी, मिट्टी या तिनका जो आँख में गिर कर पीड़ा उत्पन्न करता है ।
किरच (स्त्री०) नोंकदार टुकड़ा खड्गविशेष ।
किरण तद्० (स्त्री०) दीप्ति, रश्मि, मयूख सूर्य का तेज, प्रकाशमान पदार्थों का तेज ।—माली (पु०) सूर्य, चन्द्रमा ।—हस्त (पु०) चन्द्रमा, सूर्य ।
किरन (स्त्री०) रश्मि, किरण ।
किरपा (स्त्री०) कृपा, दया ।
किरमिजी (वि०) हिरमिजी ।
किरराना (क्रि०) दाँत पीसना ।
किरवान तद्० (पु०) कृपाण, तलवार, खड्ग ।
किरात तद्० (पु०) भील, जाति विशेष, निषाद, देश विशेष, एक प्रकार की जाति, चिरायता, साईस ।—र्जुनीय तद्० (पु०) कवि भारविकृत १८ सर्गों का एक काव्य ।—पति तद्० (पु०) शिव, महादेव ।
किरातक तद्० (पु०) चिरायता, औषधि विशेष ।
किरान (वि०) पास, निकट । [आदि ।
किराना दे० (पु०) वस्तु विशेष, अन्न आदि, मसाला
किरिच दे० (पु०) टुकड़ा, खपर, एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।
किरिया दे० (स्त्री०) शपथ, सौंह, किरा, सौगन्द ।
किरीट तद्० (पु०) शिरोभूषण विशेष, मुकुट, राजाओं की पगड़ी या टोपी, ताज, वर्णवृत्त विशेष ।
किरीटी तद्० (पु०) अर्जुन का एक नाम, इन्द्र राजा ।
किरोर (पु०) करोड़, कोटि ।
किरौं दे० (पु०) छिदहा दाँत, टूटा दाँत ।
किरौना (पु०) कीड़ा, कीट ।
किर्च दे० (स्त्री०) काँस, किरीच, खड्ग, खपाच, अस्त्र विशेष, छोटी तलवार के आकार का एक शस्त्र, राजाओं की पगड़ी या टोपी, वर्णवृत्त विशेष ।
किर्मीर तद्० (पु०) राक्षसविशेष, वक नामक राक्षस का भाई, द्यूत में पराजित होकर जब पाण्डव वन में गये तब वहाँ इसी राक्षस ने उनका रास्ता रोका था । भीम आगे बढ़े और इसके साथ युद्ध करने लगे । अन्त में भीम ने इसे मार डाला ।
किल तद्० (अ०) निश्चय, दृढ़, स्थिर ।
किलक दे० (स्त्री०) चटक, चमक, प्रभा, दीप्ति, प्रकाश, एक प्रकार का नरकुल जिसकी कलम बनाई जाती है ।
किलकना (क्रि०) किलकारी मारना, चिल्ला कर हँसना ।
किलकिञ्चित् तद्० (पु०) स्त्रियों का हाव विशेष, शृङ्गार की एक क्रिया विशेष, यथा—
"श्रम, गरव, अभिलाष श्रम, हास रोष अरु भीत ।
होत एक ही संग हैं, किलकिञ्चित् यह रीत ॥"
—मतिराम ।
किलकिला (पु०) किलकार का शब्द, वानरों की एक प्रकार की बोली ।
किलकिलाना दे० (क्रि०) किलकिल शब्द करना, गर्जन करना, गुर्राना ।
किलकिलाहट दे० (पु०) वानरों का एक प्रकार का शब्द, गर्जन का शब्द ।
किलनी दे० (पु०) क्षुद्र जन्तु विशेष, कुत्ते का लुंवा ।
किलबिलाना (क्रि०) कुलबुलाना ।

किलवाना (क्रि०) कील ठुकवाना, तंत्र या मंत्र द्वारा किसी भूत प्रेत के उत्पातों को रुकवा देना, जादू या टोना करवाना। [रचना।
किला दे० (पु०) कोट, गढ़, दुर्ग।—बंदी (स्त्री०) व्यूह
किलाना दे० (क्रि०) देखो किलवाना।
किलकारी दे० (स्त्री०) चीख मारना, बहुत ज़ोर से गर्जन करना।—मारना प्रसन्नता के साथ हँसना, प्रसन्नता जताने की उद्दण्ड चेष्टायें।
किलोल (पु०) कल्लोल, कलोल।
किल्ली दे० (स्त्री०) अर्गल, कीली, बेंडा।
किल्विष तद्० (पु०) पाप, दोष, अपराध, अशुभ, अनिष्ट, रोग।—ी (पु०) अपराधी, अधर्मी, पापी, रोगी।
किवाड़ दे० (पु०) कपाट, द्वार बन्द करने के पल्ले।
किवार दे० (पु०) देखो किवाड़।
किशलय तद्० (पु०) नवीन पत्ते, कोमल पत्ते, फूलों की पखुड़ियाँ।
किशोर तद्० (पु०) अवस्था विशेष, बाल्यावस्था के बाद की अवस्था। १० से १५ वर्ष की अवस्था तक का बालक, बाल और युवा की मध्य की अवस्था। [युवती स्त्री।
किशोरी तद्० (स्त्री०) कुमारी, अविवाहिता युवती,
किष्किन्धा तद्० (पु०) पर्वत विशेष, वानरराज बालि की राजधानी का नाम, यह पर्वत दक्षिण भारत में है।
किसलय तद्० (पु०) देखो किशलय।
किस दे० (सर्व०) कौन, किसको, किसी को।
किसनई दे० (स्त्री०) किसान का काम, खेती बारी।
किसमत (स्त्री०) भाग्य, अदृष्ट, नसीब।
किसमिस तद्०(पु०)मेवा विशेष।—ी (वि०)रंगविशेष।
किसान दे० (पु०) खेती करने वाला, कृषक।
किसी दे० (सर्व०) किसको, जिसका, किसी को।
किसु दे० (सर्व०) कविता में किस की जगह किसु प्रायः आता है।
किसे दे० देखो किस।
किस्त या किश्त दे० (पु०) भाग, जैसे ऋण चुकाने को थोड़ा थोड़ा रुपया देना, किस्तों में देना।
किस्ती या किश्ती दे० (स्त्री०) नौका, छोटी सी सुन्दर नाव, पनसुइया।
किस्म (स्त्री०) जाति, श्रेणी।
किस्मत (स्त्री०) देखो "किसमत"।
किस्सा दे० (पु०) कहानी, आख्यायिका।
किहुनी दे० (स्त्री०) कुहनी, ठिहुँनी।
की दे० (क्रि०) करी, कर दी, कर डाली. प्रत्यय, षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, "का" का स्त्रीलिङ्ग।
कीक (स्त्री०) चीख, चीत्कार, चिल्लाहट।
कीकट तद्० (पु०) देश विशेष, मगध देश, कृपण, दरिद्र, पापी।
कीकड़ या कीकर दे० (पु०) बबूल, कटीला पेड़।
कीकस तद्० (पु०) हाड़, अस्थि, हड्डी।
कीका (पु०) घोड़ा।
कीच दे० (पु०) पङ्क, काँदो, चहला।
कीचक तद्० (पु०) वायु के संयोग से बोलने वाला बाँस, फटा हुआ बाँस, केकय राजा का पुत्र, राक्षस विशेष, दैत्य विशेष। मत्स्यदेश के राजा विराट का साला। यह बड़ा पराक्रमी था। इसके भय से उस समय के प्रायः सभी बलवान् डरते थे, यहाँ तक कि दुर्योधन भी इसके भय से मत्स्य देश पर चढ़ाई नहीं करता था। यह द्रौपदी को बुरी दृष्टि से देखने लगा, इसका समाचार सुन कर भीम ने इसे मार डाला।
कीचड़ दे० देखो कीच। [चाहिये, करिये।
कीजिय या कीजिये दे० (क्रि०) करो, कीजिये, करना
कीजै दे० (क्रि०) करिये, कीजिये. करना उचित है।
कीट तद्० (पु०) रेंगने व उड़ने वाला कृमि, कीड़ा, कीरा, पाखी, मैल, बींट।—घ्न (पु०) गन्धक, औषध विशेष।—भृङ्ग तद्० (पु०) न्याय विशेष जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब दो व अधिक वस्तुएं एक रूप की हो जाती हैं।—मणि तद्० (पु०) जुगनू। [डुआ, घुना।
कीटदष्ट या किरहा दे० (पु०) कीटयुक्त, कीड़ा खाया
कीड़ा दे० (पु०) कीट, पिलुआ, ढोर।—ी (स्त्री०) छोटी कीड़ी। [फैला हुआ।
कीर्ण तद्० (पु०) आच्छन्न, विक्षिप्त, व्याप्त, प्रसारित,
कीननक तद्० (पु०) मुलहटी, मीठी मधु।
कीर्ति (स्त्री०) कीर्ति यश, प्रशंसा।
कौटुक तद्० (पु०) किस प्रकार का, कैसा, किसतरह।

कीदृक्ष तत्० (पु०) कैसा, किस प्रकार का।
कीना दे० (क्रि०) किया, पूर्ण किया, (पु०) वैर शत्रुता।
कीनिया (वि०) कपटी।
कीना या कीनना दे० (क्रि०) किनना, खरीदना, मूल्य देकर लेना।
कीन्ह दे० (क्रि०) किया, बनाया, रचा, सिरजा।
कीन्हे दे० (क्रि०) करे, किये, करने से। [दामों का।
कीमत (स्त्री०) मूल्य।—ी (वि०) मूल्यवान् अधिक
कीमिया दे० (स्त्री०) रसायन।
कीमियागर (पु०) रसायन बनाने वाला।
कीर तत्० (पु०) शुक, पक्षी, तोता, सुग्गा, सुआ बहेलिया, काश्मीर देश, काश्मीर देशवासी।
कीरत, कीरती तद्० (स्त्री०) कीर्ति, यश, बड़ाई, प्रशंसा।
कीरा तद्० (पु०) कीड़ा, साँप, सर्प, कीड़ा, सुग्गा।
कीर्त्तन तत्० (पु०) कथन, वर्णन, गुणगान, यशो वर्णन। [गाने से उपार्जन कर जीने वाला।
कीर्त्तनिया तद्० (पु०) गायक, कथक, गाने वाला,
कीर्त्ति तत्० (स्त्री०) सत्क्रिया, सत्कार, स्मरण करने योग्य काम, सुख्याति, यश, मातृका विशेष।—कर (पु०) ख्याति करने वाले कर्म, प्रसिद्धि बढ़ाने वाले काम।—पताका (पु०) सत्कर्म की प्रसिद्धि यश का चीन्ह।—प्रिय (पु०) यश चाहने वाला कीर्त्तिकामी।—मान् या वान् (पु०) कीर्त्ति विशिष्ट, यशस्वी।—शेष (पु०) मरण, यश की समाप्ति दुष्कर्म के द्वारा सुयश का दब जाना।
कीर्त्तित तत्० (पु०) कथित, ख्याति, उक्त, प्रसिद्ध, कहा हुआ।
कील तत्० (पु०) खूटा, मेख, काँटा, खूटी, कीलक, लोहे का काँटा, परेग, तिनुका, तृण, स्तम्भन मंत्र। —काँटा (पु०) साज समान, औजार प्रभृति।
कीलक तत्० (पु०) परेग, खूँटा, खूँटी, कील, मंत्र का मध्य भाग, दूसरे मंत्र के प्रभाव को रोकने वाला मंत्र, ६० वर्षों में से एक वर्ष का नाम, केतु विशेष, रोक, किवाड़ की किल्ली, स्तोत्र विशेष।
कीलना दे० (क्रि०) मन्त्र फूँकना, बन्द करना, दम्मबट बाधना।
कीला दे० (स्त्री०) लोहे की खूटी, खवा मूँटा।
कीलाल तत्० (पु०) जल, रस, अमृत, मधु।—धि (पु०) समुद्र, सागर।
कीलित तत्० (पु०) बन्द, रुद्ध, स्तम्भित, वशीकृत।
कीली तद्० (स्त्री०) चक्र या पहिये के बीचो बीच की वह कील या लकड़ी जिस पर वह घूमे।
कीश तत्० (पु०) वानर, बन्दर, मर्कट, कपि, लंगूर, सूर्य। (पु०) नङ्गा, विवस्त्र।—पर्णी (स्त्री०) अपामार्ग, चिरचिरा।
कीस दे० (पु०) गर्भ की थैली, जरायुज, बन्दर।
कु तत्० (अ०) पाप, कुत्सा, न्यूनता, अल्पार्थक, मन्द, कुत्सित, अधर्म, खोटा, निन्दा या न्यूनता बोधक, जिन शब्दों के पहले यह आता है उनका अर्थ कभी बुरा, कभी न्यून, कभी निन्दित हो जाता है। (स्त्री०) पृथ्वी।
कुंअर (पु०) लड़का, पुत्र, राजपुत्र।
कुआँ दे० (पु०) कूप, इनार, इनारा।
कुँवर तद्० (पु०) राजा का बेटा राजकुमार, राजपुत्र।
कुँवरि या कुँवारी तद्० (स्त्री०) राजपुत्री, राजकन्या।
कुँवारा तद्० बिन ब्याहा।
कुवाँरी तद्० बिन ब्याही, अविवाहिता कन्या।
कुकर्म तत्० (पु०) [कु+कृ+मन्] बुरा कर्म, कुत्सित कर्म, दुराचार, अन्याय, पाप, अनुचित, अधर्म।—ी (पु०) कुत्सित कर्मचारी, पापात्मा, दुरात्मा, दुराचारी।
कुकुर (पु०) यादव क्षत्रियों की एक जाति।—खाँसी (स्त्री०) सूखी खाँसी।—दन्ता (वि०) टेढ़े और आगे निकले हुए दाँतों वाला।—माछी (स्त्री०) मक्खी विशेष जो पशुओं के चिपट जाती है।—मुता (पु०) कुकरौंधा।—ी (स्त्री०) कुतिया।
कुकुरोंछी (स्त्री०) कुकुरमाछी।
कुकुही (स्त्री०) बनमुर्गी, मुकुही, उसके दाग जो बाजरे की बाली पर लगते हैं।
कुक्कुट, कुक्कट तत्० (पु०) अरुणशिख, ताम्रचूड़, मुर्गा, कुक्कड़, दिनगारी, लूक, जटाधारी। —नाड़ी तत्० (स्त्री०) नली या यन्त्र जिससे भरे बरतन का जल रीते बरतन में जाय।—पाद

तद्० (पु०) पर्वत जिसे अब कुर्किहार कहते हैं और जो गया से आठ कोस उत्तर पूर्व की ओर है। —मस्तक तद्० (पु०) चव्य, चाव।—व्रत तद्० (पु०) भाद्रशुक्ला सप्तमी को किया जाने वाला व्रत विशेष।—शिख तद्० (पु०) कुसुम का पेड़ या फूल।

कुक्कुटक तद्० (पु०) शूद्रा पिता और निषादी माता से उत्पन्न वर्णसङ्कर जाति विशेष, वनमुर्गी।

कुक्कुर तद्० (पु०) कूकर, कुत्ता, श्वान। (वि०) गाँठदार। [टेढ़ी मेढ़ी लकड़ी।

कुकाठ तद्० (पु०) बुरी लकड़ी, सड़ी घुनी लकड़ी,

कुक्रिया तद्० (स्त्री०) दुष्कर्म, निन्दितकर्म, निन्दिताचरण, विपरीत क्रिया।

कुक्ष तद्० (पु०) पेट, उदर।

कुक्षी तद्० (स्त्री०) कोख, पेट, गुहा, सन्तति।

कुख्याति तद्० (स्त्री०) अपयश, दुर्नाम, निन्दा।

कुग्रह तद्० (पु०) मन्दग्रह, खोटे ग्रह, दुःखदायी ग्रह, अशुभ ग्रह। [अधिक नीच लोग रहते हों।

कुग्राम तद्० (पु०) निन्दित गाँव, जिस गाँव में

कुघाट दे० बेडौल, कुरूप।

कुघात दे० कुसमय में मारना, मर्मस्थान में मारना।

कुङ्कुद दे० (पु०) एक में एक सङ्कुचित, पुष्ठा।

कुङ्कड़ा दे० (गु०) बलवान्, सबल मुसण्डा, स्वास्थ्य युक्त, हृष्टपुष्ट।

कुङ्कुम तद्० (पु०) केशर, सुगन्ध द्रव्यविशेष, रोरी।

कुङ्कुमा दे० (पु०) गुलाल रखने के लिये लाख का बना हुआ पात्र। [वरोज, छाती।

कुच तद्० (पु०) [कुच+अच्] स्तन, थन, चूची,

कुचकुचवा (पु०) उल्लू।

कुचकुड्मल तद्० (पु०) स्तन के ऊपर का भाग, थन का मुँह, ढौंढी।

कुचन दे० (पु०) कुचियाना, संग्रह करना, कुच का बहुवचन। [सुगन्धि का चन्दन।

कुचन्दन तद्० (पु०) लाल चन्दन, रक्त चन्दन, बिना

कुचर दे० (पु०) निन्दक, दोषानुसन्धित्सु, दोष ढूँढ़ने वाला। [दिना, टुकड़े टुकड़े कर देना।

कुचलना दे० (क्रि०) चूर करना, मसलना, पीस

कुचला दे० (पु०) औषध विशेष, विष विशेष।

कुचाग्र तद्० (पु०) स्तन का अग्रभाग, चूची का ढौंढी भिटनी, भेहुला। [व्यवहार।

कुचाल दे० (पु०) कुरीति, बुरा चलन, कुटेव, कुव्य-

कुचाली दे० (पु०) उपद्रवी, खोटे चाल चलन वाला।

कुचाह दे० (पु०) अनिच्छा, अशुभ इच्छा, प्रेम रहित, कपट स्नेह, अशुभ बात, अमङ्गल।

कुचि या कुची दे० (पु०) बुहारी, बढ़नी, मार्जनी, शोधनी, झाड़ू, कूची जिससे दीवार पर सफेदी पोती जाती है। [भाग, छोटी छोटी टिकिया।

कुचिया दे० (पु०) लोलकी, कान के नीचे का कोमल

कुचिलना (क्रि०) देखो कुचलना। [कन्याधारी।

कुचेला तद्० (गु०) मलीन, मलीन वस्त्रधारी, गूदड़ी,

कुचेष्ट तद्० (पु०) बुरी चेष्टा वाला। [बुरा भाव।

कुचेष्टा तद्० (स्त्री०) कुप्रयत्न, बुरी चाल, मुख का

कुचैला दे० (वि०) मैले कपड़े वाला, मैला, गंदा।

कुचोद्य तद्० (पु०) कुत्सित प्रश्न, कुतर्क, खुचुर, वितण्डा।

कुछ दे० (गु०) अल्प, थोड़ा, एक भाग।—और गाना (वा०) झूठी बात करना, दूसरे के स्थान में दूसरी बात।—एक (वा०) थोड़ा बहुत, कुछ कुछ।—से कुछ होना—का कुछ होना (वा०) उलटा पलटी, विपरीतता।—कुछ (वा०) थोड़ा थोड़ा।—न कुछ (वा०) थोड़ा बहुत, यत्किञ्चित्।—नहीं हो (वा०) निष्प्रयोजन, व्यर्थ।—हो (वा०) जो कुछ हो, इसका प्रयोग उस वस्तु के लिये किया जाता है, जो जानी हुई न हो और उसके जानने की आवश्यकता भी न हो।

कुज तद्० (पु०) मङ्गलग्रह, नरकासुर, मङ्गल वार, वृक्ष, पेड़।—ा तद्० (स्त्री०) सीता, कात्यायनी का एक नाम।

कुञ्जरवन तद्० (पु०) कुञ्जरवन, हाथियों का वन, जिस वन में अधिक हाथी हों।

कुजाति तद्० (गु०) नीच जाति, अधम जाति, जातिच्युत, जाति-भ्रष्ट, दुराचारी, पतित व अधम पुरुष। [अशुभ योग।

कुजोग तद्० (पु०) अनमेल संयोग खोटा योग,

कुञ्चकी तद्० (स्त्री०) चोली, अँगिया, काचली, गूबा।

कुञ्चि दे० (पु०) कूर, अञ्जलि।
कुञ्चिका तत्० (स्त्री०) कुंजी, ताली।
कुञ्चित तत्० (गु०) घूमा हुआ, टेढ़ा, छल्लेदार, घूंघर वाले।
कुञ्ची तत्० (स्त्री०) ताली, कुंजी।
कुञ्ज तत्० (पु०) लता आदि से ढका हुआ स्थान, वृक्ष के द्वारा बना हुआ अकृत्रिम गृह। तत्० (स्त्री०) लताच्छादित, उद्यान का स्थान, तङ्ग जगह।
कुञ्जड़ा दे० (पु०) एक मुसलमान जाति जो तरकारी फल मूल आदि बेचती है।
कुञ्जर तत्० (पु०) हाथी, बलवान, श्रेष्ठता। यह शब्द जिस जातिवाचक शब्द के आगे जोड़ा जाता है, उसकी प्रधानता बतलाता है। जैसे—नरकुञ्जर, प्रधान मनुष्य। यथा—
"कपिकुञ्जरहि बोलि लै आये"
—रामायण।
एक नाग का नाम, केश, देश विशेष, पर्वत विशेष, हनुमान की माता अञ्जना के पिता का नाम, छप्पय विशेष, पौराणिक वृद्ध, शुकपक्षी विशेष जिसने महर्षि च्यवन को उपदेश दिया। हस्त नक्षत्र, पीपल, आठ की संख्या।
कुञ्चिका तत्० (स्त्री०) कुंजी, काला जीरा।
कुञ्जी दे० तत्० (स्त्री०) चाबी, ताली, स्याह जीरा, वह पुस्तक जिसमें किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ मालूम हो, 'की'।
कुट तत्० (पु०) समूह, शिखर, साङ्केतिक शब्द, पर्वत तोड़ने वाली हथौड़ी, घर।
कुटकी दे० (स्त्री०) एक औषध का नाम, मसाला।
कुटज तत्० (पु०) कुरैया का नाम, इन्द्रयव, अगस्त्य मुनि, द्रोणाचार्य, पुष्प विशेष।
कुटनई दे० (स्त्री०) कुटनापन, कुटना के गुण।
कुटना दे० (क्रि०) कूटना, स्पष्ट करना, छोड़ना, चूर्ण करना। (पु०) भड़ुआ, भड़वा, कुकर्म के लिये बहकाने वाला।—पन (पु०) स्त्री के पर पुरुष के पास और पर पुरुष को पर स्त्री के पास पहुँचाने का काम।
कुटनाना दे० (क्रि०) फुसलाना, वश में करने व आज्ञाकारी बनाने का उद्योग करना।
कुटनी तत्० (स्त्री०) कुट्टनी, दूती, सन्देश ले जाने वाली।—पना दूती कर्म।
कुटाई (स्त्री०) कूटने का काम।
कुटिया तत्० (स्त्री०) पर्णगृह, तृण निर्मित गृह, घास फूस का बना घर।
कुटिल तत्० (गु०) [कुट्+इल्] वक्र, बाँका, टेढ़ा, क्रूर, दुष्ट, दगाबाज, कपटी, छली खोटा।—ता (स्त्री०) कुटिलत्व, वक्रता, शठता, क्रूरता।—अन्तःकरण (गु०) कपटी, खल, असत् अन्तःकरण, क्रूर। [टेढ़ापन।
कुटिलाई तत्० (स्त्री०) छल, कपट, वक्रता,
कुटिहा तत्० (वि०) व्यंग्य से हँसी उड़ाने वाला, कूट कहने वाला।
कुटी तत्० (स्त्री०) झोंपड़ी, मढ़ी, छोटा घर।—चक्र (पु०) पुत्र के अन्न से जीने वाला, चार प्रकार के संन्यासियों में से प्रथम, त्रिदण्डी संन्यासी।—चर (पु०) यति, विशेष संन्यास की प्रथम अवस्था, कुटिल, छली, चुगलखोर।
कुटीर तत्० (पु०) क्षुद्रगृह, कुटी।
कुटुम तद्० (पु०) जाति बान्धव, सन्तान, सन्तति, परिजन, परिवार, कुनबा, खानदान।
कुटुमी तत्० (पु०) कुटुम्ब विशिष्ट।
कुटुम्ब तत्० (पु०) देखो कुटुम।
कुटुम्बी तत्० (पु०) कुनबेवाला, नातेदार।
कुटौनी (स्त्री०) धान कूटने की मजदूरी।
कुटेव दे० (पु०) बुरी आदत, बुरी बात।
कुट्टनी तत्० (स्त्री०) कुटनी, दूती।
कुट्टमित तत्० (पु०) [कुट्ट+मा+क्त] स्त्रियों की एक प्रकार की शृङ्गार चेष्टा। यथा—
"जहाँ सुक्ख यह दुःख की, प्रगट, करे जो बाम
परम ललित यह हाव है, होत कुट्टमित नाम"
रसराज।
कुठला दे० (पु०) नाज रखने की मिट्टी का बना पात्र, चूने की भट्ठी।
कुठाउ, कुठाँय दे० (स्त्री०) बुरी जगह, कुठाँव।
कुठाट दे० (पु०) बुरा साज, बुरा प्रबन्ध।
कुठार तत्० (पु०) फरसा, कुल्हाड़ी, कुल्हाड़ा।
कुठारी तत्० (स्त्री०) कुल्हाड़ी, अन्न रखने का स्थान।

कुठाहर दे० (स्त्री०) असमय, बेठिकाने, मर्मस्थान, नीच स्थान ।

कुड़कना दे० (क्रि०) कुड़कुड़ करना, घूरना, गुर्राना ।

कुड़मा या कुरमा दे० (पु०) कुटुम्ब, परिवार, कुनबा ।

कुड़व तद्० (पु०) एक सेर का पाँचवाँ भाग, अनाज नापने का चार अंगुल चौड़ा और चार अंगुल गहरा माप ।

कुढ़ङ्ग दे० (पु०) अशिष्ट व्यवहार, हानिकारी आचरण ।

कुढ़ना दे० (क्रि०) मन ही मन क्रोध करना, दूसरों की उन्नति देख मन ही मन दुःखित होना, डाह ।

कुढ़ब दे० (पु०) बेढब, कठिन, दुस्तर ।

कुढ़न (स्त्री०) चिढ़ना, मन ही मन कुपित होना ।

कुढ़ाना दे० (क्रि०) चिढ़ाना, खिजाना, जलाना ।

कुण्ठित तद्० (पु०) [कुण्ठ+क्त] भौंथरा, गुठला, मन्द, निकम्मा ।

कुण्ड तद्० (पु०) [कुण्ड+अच्] परिमाण विशेष, जलाशय, खड्ड, जलाधार विशेष, चौबच्चा । बारह प्रकार के पुत्रों में से एक प्रकार का पुत्र । पति के रहते उपपति से उत्पन्न सन्तान को कुण्ड कहते हैं । हवन करने का गड्ढा, यज्ञगर्त ।

कुण्डल तद्० (पु०) कर्णभूषण विशेष, पहिये के आकार का गोल गहना जो सींग, लकड़ी, काँच या गैंड़े की खाल या सोने का बना होता है और जिसे गोरखनाथी साधु कानों में पहनते हैं ।

कुण्डलिया दे० (पु०) एक भाषा के छन्द का नाम, इस छन्द में १४४ मात्रा होती हैं, जिस शब्द से प्रारम्भ किया जाय, उसी शब्द से इसे समाप्त करना चाहिये, इस छन्द में एक वाक्य कुण्डलवत् दुबारा पढ़ा जाता है, इसीसे इसका नाम कुण्डलिया है ।

कुण्डली तद्० (स्त्री०) वृक्षविशेष, कचनार, गुरुच, जलेबी, कुण्डलाकार, चक्र विशेष जो किसी के जन्मकाल स्थित ग्रहों को बतलाने के लिए बनाया जाता है । गेंडुरी, साँप के बैठने का आसन ।—कृत (पु०) साँप, वरुण, मयूर, चित्तल हिरन, विष्णु, कुण्डलधारी ।

कुण्डिन तद्० (पु०) एक मुनि का नाम, नगर विशेष, विदर्भ नगर, बरार प्रदेश के मध्यवर्ती एक नगर का नाम, इसका दूसरा नाम विदर्भ भी है । वरदा नदी के किनारे पर यह बसा हुआ था । यह दो भागों में विभक्त था, उत्तरीय कुण्डिन की राजधानी अमरावती थी, और दक्षिण कुण्डिन की राजधानी प्रतिष्ठाननगर था । [अजीर ।

कुण्डी दे० (स्त्री०) किवाड़ बन्द करने की साँकल,

कुतका (पु०) डण्डा, सोंटा ।

कुत तद्० (अ०) प्रश्नार्थक, कहाँ से, क्यों । [वनराज ।

कुतनु तद्० (अ०) कुत्सित शरीर । (पु०) कुबेर,

कुतप तद्० (पु०) दिन का आठवाँ भाग, दिन का आठवाँ मुहूर्त्त, एकोद्दिष्ट नामक श्राद्ध आरम्भ करने का समय, मध्याह्न, सूर्य, अग्नि, द्विज, अतिथि, भाँजा ।—काल (पु०) गरमी का समय मध्याह्न समय ।

कुतरना तद्० (क्रि०) दाँत या चोंच से छोटे छोटे टुकड़े करना । [चिथा ।

कुतर्क तद्० (पु०) काटने वाला, पिल्ला, कुत्ते का

कुतर्क तद्० (पु०) कुत्सित तर्क, निन्दित तर्क, दुर्बल युक्तियों के सहारे का तर्क, विरुद्ध विचार ।—ी (गु०) कुतर्क करने वाला, हुज्जती ।

कुतल तद्० (पु०) पृथ्वीतल, भूतल ।

कुतवार (पु०) कूतने वाला, अन्दाज़ा करने वाला ।

कुतार दे० (पु०) असुविधा, अँडस ।

कुतिया दे० (स्त्री०) कुकुरी, कुत्ती, कुत्ते की मादा ।

कुतुबख़ाना दे० (पु०) पुस्तकालय ।

कुतुबनुमा (पु०) दिशाएँ बताने वाला यंत्र विशेष ।

कुतूहल तद्० (पु०) अपूर्व वस्तु देखने की लालसा, आमोद, कौतुक, परिहास, उत्सुकता ।—ी (गु०) अपूर्व, अद्भुत, प्रशस्त, आमोदी, कौतुकी, उद्योगी ।

कुतृण तद्० (पु०) निन्दित तृण, बुरी घास ।

कुत्ता दे० (पु०) कुक्कुर, ग्राममृग (स्त्री०) कुत्ती ।

कुत्र तद्० (अ०) कहाँ, किस स्थान पर ।—ापि (अ०) कहीं भी, किसी ठिकाने । [स्थानिकस्थ ।

कुत्सन तद्० (पु०) [कुत्स+अनट्] निन्दन, भर्त्सन,

कुत्सा तद्० (स्त्री०) निन्दा, कुत्सा, गर्हा, बुराई, अवज्ञा, अपमान ।—जनक (पु०) निन्दा कराने वाला, अपमानकर ।

कुत्सित तद्० (पु०) [कुस+क्त] औषधि विशेष, कुट, घोरैया । (गु०) निन्दित, मलीन, नीच ।

कुथ तद्० (पु०) [कुथ्+अल] हाथी पर का सिंहासन आभरण, हाथी की मूल रथ का ओहार, श्रम काल स्नान करने वाला आदमी ।

कुथरी या कुथली दे० (स्त्री०) झोली, कोथली ।

कुदकना तद्० (क्रि०) कूदना, फाँदना, उछलना कुदकना । [द्विक, देवी ।

कुदरत (स्त्री०) प्रकृति, दैवी, शक्ति ।—ी स्वाभा-

कुदरना तद्० (क्रि०) फाँदना, कूदना, उछलना ।

कुदरा तद्० (पु०) छोटा कुदार जिससे मिट्टी खोदी जाती है, कुदारी ।

कुदान तद्० (पु०) बुरा दान, खोटा दान, अनुचित दान, दे० उछलने का स्थान, कूदने का स्थान ।

कुदाना तद्० (क्रि०) कुदवाना, लँघवाना, उछलवाना ।

कुदार या कुदारी तद्० (पु०) भूमि खोदने का साधन, बेलचे, कुदारी, कुदाल ।

कुदाल, कुदाली तद्० (पु०) देखो कुदार ।

कुदिन तद्० (पु०) दुर्दिन, मेघाच्छादित दिन, खोटे दिन, दुःख के दिन ।

कुदृश्य तद्० (गु०) असभ्य, कुरूप, कदरूप ।

कुदृष्टि तद्० (स्त्री०) पापदृष्टि, बुरी नज़र, बुरे आशय से देखना । [रहित देश ।

कुदेश तद्० (पु०) असुखकर देश, कुत्सित देश, गङ्गा

कुद्दाल तद्० (पु०) देखो कुदार ।

कुधर तद्० (पु०) शैल, पर्वत, पहाड़, शेषनाग ।

कुधातु तद्० (पु०) बुरी धातु, लोहा, लोह, यथा — " पारस परसि कुधातु सोहाई । "—रामायण

कुधारा तद्० (स्त्री०) दुर्व्यवहार, कुरीति, असभ्य आचरण ।

कुध्र तद्० (पु०) देखो कुधर ।

कुनकुना दे० (वि०) गुनगुना, कुछ गरम ।

कुनख तद्० (पु०) रोग विशेष, कुत्सित नख युक्त । —ी (गु०) नख रोगी, चिपटे नख वाला ।

कुनबा दे० (पु०) कुटुम्ब, परिवार, कुल ।

कुनबी (पु०) एक हिन्दू जाति जो अधिक तर खेती बारी करती है । [दुश्चरित्रा रमणी ।

कुनारी तद्० (स्त्री०) दुष्टा स्त्री, भ्रष्टचरिता स्त्री,

कुनाल तद्० (पु०) प्रसिद्ध महाराजा अशोक के एक पुत्र का नाम, पटरानी पद्मावती के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, यह अतिशय सुन्दर था, अतएव इसकी सौतेली मा तिष्यरक्षा इस पर आसक्त हुई और अपना दुष्ट अभिप्राय उससे प्रकाशित किया । परन्तु कुनाल ने उसे साफ़ साफ़ जवाब दे दिया । इस कारण क्रुद्ध होकर उसने प्रतिज्ञा की कि कुनाल की आँखें मैं निकलवा लूँगी । एक समय महाराजा अशोक विद्रोह शान्त करने के लिये तक्षशिला गये और तब तक के लिये देख रेख तिष्यरक्षा, (उनकी दूसरी स्त्री) को सौंप गये । तिष्यरक्षा ने इसे सुयोग समझ कर, अपने प्रधान कर्मचारी को कुनाल की आँखें निकालने के लिये आदेश दिया । इसे राजाज्ञा समझ कर, कुनाल ने अपनी आँखें स्वयं निकाल दीं । इसकी ख़बर जब अशोक को लगी, तब उन्होंने तिष्यरक्षा के वध की आज्ञा दी, परन्तु कुनाल ने बड़ी प्रार्थना करके अपनी विमाता सौतेली माँ की रक्षा की । [व्यवहार ।

कुनीति तद्० (स्त्री०) अन्याय, कुविचार अनुचित

कुन्त तद्० (पु०) भाला, बरछी, पानी, पवन, राजा विशेष, कुन्ती का पिता, गवेधुक, गौरैया, जूँ, अनल ।

कुन्तल तद्० (पु०) केश, बाल, शिखा, देशविशेष का नाम जो चोल देश के उत्तर की ओर है । कुरुगढ़ के दक्षिणस्थ कल्याणदुर्ग नामक नगर कुन्तल देश की राजधानी थी । इस समय के हैदराबाद राज्य के दक्षिण पश्चिम का भाग ही किसी समय कुन्तल देश था । प्याला, जौ, सुगन्धवाला, हल, सूत्रधार रागविशेष, बहुरूपिया, श्रीरामचन्द्र जी की सेना का एक बानर ।— वर्द्धन (पु०) भृङ्गराज वृक्ष, भंगरिया ।

कुन्तवर्द्धन (पु०) भँगरैया, भृङ्गराज ।

कुन्तिभोज तद्० (पु०) एक राजा का नाम, ये राजा सूरसेन के पिता की बहिन के लड़के थे, ये निस्सन्तान थे, इसी से इन्होंने शूरसेन की कन्या पृथा को गोद लिया था । इसी कारण पृथा का कुन्ती नाम हुआ था । महाभारत के युद्ध में यह सम्मिलित हुए थे ।

कुन्ती तत्० (स्त्री०) राजा शूरसेन या वसु की कन्या, पाण्डु के साथ इसका विवाह हुआ था। नारद मुनि ने इसे वशीकरण मन्त्र बतलाया था, जिसके प्रसाद से कुन्ती देवताओं को बुला लिया करती थी। यह युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता थी।

कुन्द तत्० (पु०) पुष्पवृक्ष विशेष, कुन्द का फूल, एक प्रकार का श्वेत पुष्प, कमल, पर्वत का नाम, नव निधियों में से एक, नौ की संख्या, विष्णु, खराद। (वि०) मौथरा, गुट्ठल, मन्द, स्तब्ध।

कुन्दन दे० (पु०) बढ़िया खालिस सोने का पतला पत्तर जो नगीनों के जड़ने में काम आता है। अच्छा सोना, विशुद्ध सोना।

कुपढ़ दे० (वि०) अनपढ़, मूर्ख।

कुपति तत्० (पु०) दुष्ट पति, दुष्ट स्वामी।

कुपथ तत्० (पु०) कुपंथ, कुमार्ग, विपथ, कुत्सित मार्ग, दुर्व्यवहार, दुराचरण।—गामी (गु०) दुराचारी, पापात्मा, पापी।

कुपथ्य तत्० (गु०) अपथ्य, अनुचित भोजन, समय और प्रकृति के विरुद्ध भोजन, बदपरहेजी।

कुपरामर्श तत्० (पु०) कुत्सित मन्त्रणा, खोटा सिखावन, बुरी सलाह।

कुपात्र तत्० (गु०) अयोग्य, अपात्र, अनुपयुक्त।

कुपित तत्० (गु०) क्रोधित, कोपित, कोपयुक्त।

कुपुत्र तत्० (पु०) कुसन्तान, दुराचारी पुत्र, कपूत।

कुपुरुष तत्० (पु०) निकृष्ट मनुष्य, अधम मनुष्य, समाज बहिष्कृत पुरुष।

कुपूत तत्० (पु०) कपुत्र, कपूत, कुसन्तान।

कुप्पा दे० (पु०) चर्मभाण्ड, चाम का बना हुआ घी या तेल रखने का बरतन, (स्त्री०) कुप्पी।

कुब या कूब दे० (पु०) कूबड़,कुब्ज पीठ पर का ढील।

कुबड़ा तद्० (पु०) कूबड़ मनुष्य।

कुबड़ या कुबड़ा दे० (पु०) टेढ़ा, कुब्ज।

कुबड़ी (स्त्री०) झुकी या टेढ़ी मूठ की छड़ी।

कुबत तत्० (स्त्री०) निन्दित वार्ता, निकृष्ट वार्ता।

कुबरी (स्त्री०) कंस की एक दासी का नाम जिसका कुबड़ापन श्रीकृष्ण ने दूर किया था, कुब्जा।

कुबुद्धि तत्० (वि०) मूर्ख, दुर्बुद्धि।

कुब्ज तत्० टेढ़ी पीठ, अपामार्ग, लटजीरा।

कुब्जक तत्० (पु०) मालती। [चारिका का नाम।

कुब्जा तत्० (स्त्री०) कूबड़ी स्त्री, राजा कंस की परि-

कुब्जिका तत्० (स्त्री०) दुर्गा का नाम, आठ वर्ष की लड़की।

कुभार्या तत्० (स्त्री०) कलही स्त्री, झगड़ने वाली स्त्री, कुलटा भार्या। [कुस्वभाव।

कुभाव तत्० (पु०) निन्दित अभिप्राय, कुदृष्टि,

कुभृत तत्० (पु०) बुरा नौकर, शेषनाग, पहाड़, सात की संख्या।

कुमक दे० (स्त्री०) साहाय्य, मदद।

कुमकुम तद्० (पु०) केशर, कुमकुमा।

कुमकुमा तद्० (पु०) लाख का बना पोला तथा गोल या चिपटा लट्टू जिसमें अबीर या गुलाल भरा जाता है। इसे होली में लोग एक दूसरे पर मारने के काम में लाते हैं।

कुमण्डल तत्० कुत्सित मनुष्यों का समूह, धरामण्डल, पृथिवीमण्डल।

कुमति तत्० (स्त्री०) अल्प बुद्धि, दुर्बुद्धि, दुर्मति।

कुमद तद्० (पु०) कुत्सितमद, दुरभिमान, कमल विशेष। [होने वाला कमल।

कुमदिनि तद्० (स्त्री०) कमल विशेष, रात को विकसित

कुमन्त्रणा तत्० (स्त्री०) असत्परामर्श, अधम सम्मति।

कुमन्त्री तत्० (पु०) असत्परामर्श देने वाला।

कुमाच दे० (पु०) एक प्रकार की रोटी, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, गंजीफ़े के पत्ते के एक रंग को भी कुमाच कहते हैं।

कुमार तत्० (पु०) कार्तिकेय, नाट्योक्ति में युवराज, पाँच वर्ष का लड़का। जैन विशेष, कुँआरा, अविवाहित बालक, राजपुत्र, सिन्धुनद, सुग्गा, चोखा सोना, सनक सनन्दन आदि बालखिल्य ऋषिगण। ग्रह विशेष, मंगलग्रह, साईस, अग्निपुत्र, अग्नि, प्रजापति विशेष, वृक्ष विशेष।—पाल (पु०) शालिवाहन राजा, देखो शालिवाहन।

कुमारिका तत्० (स्त्री०) कुमारी कन्या, अविवाहिता, भारतवर्ष का एक भाग विशेष, उपद्वीप विशेष, जो भारत के दक्षिण की ओर है, जो भारत का एक खण्ड समझा जाता है। सिद्ध राज की कन्या का

नाम, सिञ्जेश्वर शतश्रृङ्ग की कन्या और भरत राजा की कन्या। इसका शरीर साधारण स्त्रियों का सा था, परन्तु मुँह पशु का। इसने अपने प्रयत्न से पुनः मनुष्य का मुख प्राप्त किया। (स्कन्द पुराण देखो)।

कुमारिल तद्० (पु०) विख्यात दार्शनिक पण्डित और वेदों पर भाष्यकार। ये आदि शङ्कराचार्य के समय में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने मीमांसावार्तिक और तन्त्रवार्तिक नाम के ग्रन्थ लिखे हैं और येही शबर-भाष्य तथा श्रौत सूत्रों के टीकाकार भी हैं। जिस समय यह उत्पन्न हुए थे, उस समय भारत की स्थिति विचित्र थी। बौद्ध धर्म का बोलबाला था। कुमारिल ने बौद्ध शास्त्र का अध्ययन बौद्ध साधुओं से किया, पुनः उसका खण्डन किया। गुरु-द्रोह के पाप से छुटकारा पाने के लिये प्रयाग में तुषानल में उन्होंने अपने शरीर को भस्म कर डाला। जिस समय ये अग्नि में अपना शरीर भस्म कर रहे थे उस समय शङ्कराचार्य इनके पास भेंट करने के लिये पहुँचे थे। यह दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे। इनका समय सन् ६२० से ७०० ई० के बीच निश्चित किया गया है।

कुमारी तद्० (स्त्री०) दस वर्ष की कन्या, बिनब्याही, अविवाहिता, जम्बूद्वीप, घीकुवार, नवमल्लिका, बड़ी इलायची, श्यामा पक्षी, जानकीजी का नाम, पार्वती, दुर्गा, भारतवर्ष का एक अन्तरीप चमेली, सेवती, भूमि का मध्य भाग। शाकद्वीपी सप्त सरिताओं में से एक, अपराजिता।—पूजा या पूजन (स्त्री०) तन्त्रशास्त्रोक्त आराधना।

कुमार्ग तद्० (पु०) कुपथ, कुचाल, दुराचरण, दुर्गम पथ, अधर्म।—गामी (वि०) दुराचारी, अधर्मी।

कुमार्गी (वि०) देखो कुमार्गगामी।

कुमद या कुमुद तद्० (पु०) श्वेत कमल, रक्त कमल, कुमोदिनि, कोईं, चाँदी, विष्णु, राम की सेना का एक बन्दर। आठ दिग्गजों में से नैऋत्य कोण का दिग्गज। दैत्य विशेष, द्वीप विशेष, कपूर, नाग विशेष, विष्णुपरिषद विशेष, केतु तारा, सङ्गीत का एक ताल। (वि०) कंजूस, लालची।—बन्धु (पु०) चन्द्रमा, कमल का मित्र।

कुमुदिनी या कुमोदिनी तद्० (स्त्री०) कुमुदयुक्त सरोवर, कमलिनी, पद्मिनी, निशोपर।—पति तद्० (पु०) चन्द्रमा।

कुम्भ तद्० (पु०) घड़ा, कलश, घट, हाथी का मस्तक, एक राशि का नाम, मान जो ६४ सेर का होता है। एक पर्व का नाम, गुग्गुल, वेश्यापति, प्राणायाम के तीन मार्गों में से एक, एक राजा का नाम, यह मेवाड़ के राजा मुकुल के पुत्र थे। महाराणा मुकुल के छल से मारे जाने पर १४१६ ई० में कुम्भ मेवाड़ के महाराणा हुए। यह विख्यात शूर और पण्डित थे। जयदेव के गीतगोविन्द की एक टीका इन्होंने लिखी है। मालवा का राजा महमूद अपनी और गुजरात के राजा की सेना लेकर चित्तौर पर चढ़ आया। कुम्भ ने बड़ी योग्यता के साथ अपनी वीरता प्रकाशित की। शत्रुसेना को हराकर, महमूद को इन्होंने कैद कर लिया। पुन उसके साथ राणा कुम्भ का व्यवहार दयापूर्ण ही रहा। महमूद ६ महीने तक चित्तौर में कैद रहा। दिल्ली के बादशाह ने जब चित्तौर पर चढ़ाई की उस समय महमूद ने अपनी जाति के विरुद्ध तलवार उठाई थी।—क तद्० (पु०) प्राणायाम की एक प्रक्रिया जिससे साँस खींच कर वायु को शरीर के भीतर रोकते हैं। - कर्ण (पु०) राक्षस विशेष, रावण का छोटा भाई।—कार (पु०) शूद्रा के गर्भ से और विश्वकर्मा के औरस से उत्पन्न जाति विशेष, कुम्हार मुर्गा।—कारी (स्त्री०) कुम्हारिन, कुलथी, मैनसिल।—ज (पु०) कुम्भ से उत्पन्न वशिष्ठ और अगस्त्य मुनि, द्रोणाचार्य।—धीर्य (पु०) रीछ।—सम्भव (पु०) कुम्भ से उत्पन्न महर्षि वशिष्ठ, अगस्त्य मुनि, द्रोणाचार्य। [वेश्या।

कुम्भा तद्० (पु०) छोटा घड़ा, एक राजा का नाम, कुम्भिका तद्० (स्त्री०) जल का एक प्रकार का तृण, तृण विशेष, वेश्या, कायफल, नेत्ररोग विशेष, परवल का पेड़, लिङ्ग का रोग विशेष।

कुम्भिनी दे० (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, जमाल गोटा।

कुम्भी तद्० (स्त्री०) तृणविशेष, जो पानी पर जमा हुआ होता है। (पु०) हाथी, मगर, गुग्गुल का

वृक्ष, एक विषैला कीट, मछली विशेष, बालकों को क्लेश देने वाला राक्षस।
कुम्भीनस तत्० (पु०) फणधर, सर्प, साँप, रावण।
कुम्भीपाक तत्० (पु०) नरक विशेष। [मगर।
कुम्भीर तत्० (पु०) जलजन्तु विशेष, नक्र, मकर,
कुम्भीरुणा तत्० (स्त्री०) औषध विशेष, निसोत।
कुम्हड़ा तद्० (पु०) फल विशेष, पेठा। यह दो प्रकार का होता है। सफेद रङ्ग का और पीले रङ्ग का, पीले रङ्ग के कुम्हड़े को कद्दू या काशीफल भी कहते हैं।
कुम्हड़ौरी या कुम्हरौरी तद्० (स्त्री०) पेठे की बरी।
कुम्हलाना दे० (क्रि०) मुरझाना, सूखना, रङ्ग बदल जाना।
कुम्हार तत्० (पु०) कुलाल, कुम्भकार, घड़ा आदि मिट्टी का बर्तन बनाने वाला। (स्त्री०) कुम्हारी, जन्तु विशेष, कुम्हार जाति की स्त्री।
कुयश तत्० (पु०) दुर्नाम, अपयश, दुष्कीर्ति।
कुयोग तत्० (पु०) दुष्प्रयोग, दुःखदायक ग्रह।
कुयोगी तत्० (पु०) विषयानुरक्त, विषय भोगी। यथा—।

"पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारि,
मोह विटप नहिं सकत उपारि"
—रामायण।

कुरकुरी, या कुर्कुरी दे० (वि०) मुरमुरी।
कुरङ्ग तत्० (पु०) बादामी रङ्ग का हिरन, मृग, पशु (वि०) बुरा रङ्ग।—नयना या नयनी (स्त्री०) मृगनयनी, मृगलोचनी।—नाभि (पु०) कस्तूरी, मृगनाभि।
कुरण्टक तत्० (पु०) औषधि विशेष, पियवाँसा।
कुरता दे० (पु०) पुरुषों के पहिनने का सिला हुआ वस्त्र विशेष।
कुरती दे० (स्त्री०) स्त्रियों की फतुही।
कुरवक तत्० (पु०) औषधि का नाम, कटसरैया।
कुरमा दे० (पु०) कुनबा, घराना।
कुरर तत्० (पु०) कुररपक्षी, उत्क्रोश, बक, बगला, क्रौंच।
कुररी तत्० (स्त्री०) पक्षी विशेष, टुंब, जल के किनारे रहने वाली एक चिड़िया, चील्ह, मेढ़, भेड़ी।
कुरसी (स्त्री०) काठ की बनी बैठकी विशेष।—नामा (पु०) वंशावली। [करना, देर लगाना।
कुराई दे० पाव फँसने योग्य, विलम्ब, ढलरना, रानी
कुरान (पु०) मुसलमानों का धर्म ग्रन्थ।
कुराह तद्० (स्त्री०) कुमार्ग, बुरी राह।
कुरिया दे० (स्त्री०) फूस की झोपड़ी।
कुरी तत्० (पु०) जाति, कुल, घराना, सब जाति, अनेक जाति, अरहर की फली। [कुव्यवहार, कुचाल।
कुरीति तत्० (स्त्री०) निषिद्ध आचरण, कदाचार,
कुरीर तत्० (पु०) मठी, मढ़ी, रतिक्रिया, रमण, मैथुन।
कुरु तत्० (पु०) चन्द्रवंशी राजकुल, देश विशेष, जो उत्तर भारत में है। पृथ्वी के नवखण्ड में से एक खण्ड, कर्त्ता, भरत।—केतु (पु०) दुर्योधन, युधिष्ठिर, परीक्षित।—क्षेत्र (पु०) दिल्ली के पास का एक मैदान, जहाँ कौरव पाण्डव की लड़ाई हुई थी, यहाँ इसी नाम का एक झील भी है जो थानेश्वर के दक्षिण की ओर है। यह सरस्वती नदी के दक्षिण, और दृषद्वती नदी के उत्तर है।—जाङ्गल तत्० (पु०) एक प्राचीन देश जो पाञ्चाल देश के पश्चिम था।—पति,-राय (पु०) कुरुराज, दुर्योधन, युधिष्ठिर।—वंश (पु०) राजा कुरु की सन्तति। [अजीर्ण।
कुरुचि तत्० (स्त्री०) नीच वासना, दुरभिलाष,
कुरुवक तत्० (पु०) औषधि विशेष, कुरबक।
कुरूल दे० (पु०) घुंघुर, चिकुर।
कुरूप तत्० (पु०) कुत्सित आकृति, कदाकार, कुडौल भद्दा, बदसूरत, बेढंगा।
कुरेदना तत्० (क्रि०) खुरचना, करोदना।
कुर्कुट दे० (पु०) कूड़ा, झाड़न, बुहारन।
कुर्कुटी तत्० (पु०) सेमर वृक्ष।
कुर्द्राज दे० (स्त्री०) कूद, कुलाँच, चौकड़ी।
कुर्पा दे० (पु०) कुब्ज, कुबड़। [करती है।
कुर्मी दे० (पु०) एक जाति का नाम जो खेती का काम
कुर्मुक तद्० (पु०) सुपारी।
कुर्राज दे० (स्त्री०) सुख, आराम, चिन्ता-रहित।—में गुलेज जगाना (वा०) निराश होना, सुख के समय दुःख।
कुर्रा दे० (स्त्री०) ढंगा, पटरा, सुहागा, कुरकुरी, हड्डी।
कुर्री तत्० (स्त्री०) कोमल अस्थि, उप-अस्थि।
कुल तत्० (पु०) गोत्र, वंश, जाति, वर्ग, स्वजातीय

गण, धन समूह, घर, मकान जैसे ऋषिकुल। दे० (वि०) समस्त, सब, सारा, पूरा।—कण्टक (पु०) कुपुत्र।—कन्या (स्त्री०) कुलीना कन्या। —कर्म (पु०) परम्परा का व्यवहार, कुलाचार, कुलक्रिया।—कानि तद्० (स्त्री०) कुल की मर्यादा, कुल की लज्जा।—घाती (पु०) कुल नाशक।—ज (पु०) कुलीन, सत्कुलोद्भव, सद्वंशीय।—तारण (पु०) सुपुत्र।—द्रोही (पु०) कुमार्गी, वंशदूषक।—धर्म (पु०) कुल व्यवहार कुलाचार।—नाश (पु०) सन्तानहीनता, कुलभ्रष्टता।—पूजक (पु०) पुरोहित, कुलदेव। —वधू (स्त्री०) पतिव्रता, कुलस्त्री।—बोरन (पु०) कुलनाशक, घरघालू।

कुलकुला दे० (पु०) कुल्ला, कुलकुची, गण्डूष।

कुलकुलाना (क्रि०) कुलकुल शब्द करना। (वा०) *आँतों का कुलकुलाना, अत्यन्त भूखा होना।*

कुलकुली दे० (स्त्री०) सुरसुरी, गुदगुदी।

कुलचा दे० (पु०) मूल धन, पूंजी। [मूल विशेष।

कुलञ्जन दे० (पु०) औषधि विशेष, पान की जड़,

कुलच्छन तद्० (पु०) कुचाल, बुरा लक्षण।

कुलच्छनी तद्० (स्त्री०) दुराचारी, दुराचारिणी।

कुलज्ञ तद्० (पु०) राय, भाट, कुलाचार्य।

कुलटा तद्० (स्त्री०) असती, व्यभिचारिणी।

कुलथी तद्० (स्त्री०) अन्नविशेष, कलाई विशेष।

कुलबुलाना दे० (क्रि०) सुलबुलाना, कलमलाना, चुलबुलाना। [चुलाहट।

कुलबुलाहट दे० (स्त्री०) कीड़े का चक्र फेर, चुल-

कुलमा दे० (पु०) लड्डुआ, भोजन विशेष।

कुलवन्त तद्० (पु०) कुलवान्, कुलीन, श्रेष्ठ।

कुलवन्ती तद्० (स्त्री०) अच्छे घराने की स्त्री, पतिव्रता, बड़े घर की बेटी।

कुलवान् तद्० (पु०) कुलीन, सद्वंशज।

कुलह तद्० (पु०) टोपी, कुलाह, सिर पर पहनने का एक कपड़ा।—ी (स्त्री०) टोपी।

कुला तद्० (स्त्री०) मनशिल, औषधि विशेष।

कुलाँच दे० (पु०) कूदना, फाँदना।—मारना चौकड़ी, छलाँगना, फाँदना।

कुलाङ्गना तद्० (स्त्री०) कुलीन स्त्री।

कुलाङ्गार तद्० (पु०) सत्यानाशी, कुलनाशकारी।

कुलाचार तद्० (पु०) वंशधर्म कुलरीति, तान्त्रिक रीति।

कुलाचार्य तद्० (पु०) वंशगुरु, पुरोहित।

कुलाल तद्० (पु०) कुम्हार, कुम्भकार।

कुलाह तद्० (पु०) देखो कुलह।

कुलाहल तद्० (पु०) कोलाहल, हुल्लड़, शोर।

कुलि (अ०) सम्पूर्ण, कुल, सब।

कुलिया दे० (स्त्री०) कुल्हड़, सारा, पुरवा।—में गुड़ फोड़ना (वा०) गुप्त काम करना।

कुलिश तद्० (पु०) हीरा, वज्र, श्रीरामकृष्णादि भगवदवतारों के पैर का चिन्ह।—धर तद्० (पु०) इन्द्र, वज्र करने वाला।

कुली दे० (पु०) रेल के स्टेशनों पर जो मज़दूर असबाब उठाने को रहते हैं, मज़दूर, बोझ ढोने वाला।

कुलीन तद्० (पु०) श्रेष्ठवंशोद्भूत, सद्वंशजात।

कुलीनाई तद्० (स्त्री०) कुलीनता, उत्तम कुल।

कुलुफ दे० (पु०) ताला।

कुलू दे० (पु०) एक प्राचीन देश।

कुलेल (स्त्री०) खेल, क्रीड़ा। [करने की एक क्रिया।

कुल्ला दे० (पु०) मुँह में पानी भर कर मुख को साफ

कुल्लाकुल्ली दे० (पु०) मुखारी, कुलाची, गरारा।

कुल्हड़ दे० (पु०) करई, भोलुआ।

कुल्हाड़ी दे० (स्त्री०) कुठार, टाँगी, बसूला।

कुल्हिया देखो कुल्हड़।

कुवलय तद्० (पु०) श्वेत कमल, नीलोफर।—श्व (पु०) एक राजा का नाम, यह, महाराजा श्रावस्त का पौत्र और बृहदश्व का पुत्र था, इसके पितामह श्रावस्त ने श्रावस्ती नामक नगरी बसायी थी। महाराज कुवलयाश्व ने उतङ्क महर्षि की आज्ञा से धुन्धु नामक राक्षस को मार डाला, तब से इनका धुन्धुमार नाम पड़ा। (२) शत्रुजित् नामक राजा का पुत्र, इनका नाम ऋतुध्वज था। कुवलय नामक एक तेज घोड़ा इनके पास था, इसी कारण इनको कुवलयाश्व कहते थे। गन्धर्व राज की कन्या मदालसा इनसे ब्याही गयी थी।

कुवलयापीड तद्० (पु०) [कुवलय+आ+पीड] हस्ति रूपी एक दैत्य, कंसराज का एक हाथी।

कुवाक्य या कुवाच्य तद्० (पु०) परुष वाक्य, कठोर बात, गाली।
कुवादी तद्० (गु०) दुष्ट, कुवचन वक्ता, मुँहफट।
कुवार (पु०) कुआर, आश्विन, असोज।
कुवारी (स्त्री०) आश्विन में होने वाला धान, कुमारी।
कुविक्रम तद्० (पु०) अत्याचार, उपद्रव, शठता। —ी (गु०) उपद्रवी, दुर्जन, दुरात्मा, शठ।
कुविचार तद्० (पु०) अन्याय विचार, अयथार्थ विचार, नीच विचार।
कुविन्द तद्० (पु०) तन्तुवाय, कपड़ा बनाने वाला, शूद्रा के गर्भ और विश्वकर्मा के औरस से जाति विशेष, जुलाहा। [पुत्र।
कुविन्दु तद्० (गु०) नीचवीर्य, अधमपुत्र, दुष्ट का
कुविहङ्ग तद्० (पु०) अधम पक्षी, बाज पक्षी।
कुवृत्ति तद्० (पु०) अधम व्यापार, नीच कर्म, निन्दित वासना।
कुवेर तद्० (पु०) यक्षराज, धनेश, किन्नरेश, धन का देवता, देवताओं का कोषाध्यक्ष, महर्षि पुलस्त्य का पोता और विश्रवा के ये पुत्र थे। यक्ष नामक भूतयोनि विशेष के ये राजा और चौथे लोकपाल हैं। इनकी राजधानी का नाम अलका है। इनका नाम वैश्रवण है। परन्तु इनके अतिशय कुरूप होने के कारण इनका नाम कुवेर पड़ा। इनके तीन पैर और आठ दाँत हैं और देखने में भी अत्यन्त कुरूप हैं। महर्षि भरद्वाज की कन्या देववर्णिनी के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे।
कुश तद्० (पु०) [कुश्+अल्] स्वनाम प्रसिद्ध तृण विशेष, दर्भ, कुशा, द्वीप विशेष, महाराजा श्री रामचन्द्र का पुत्र, यह महर्षि वाल्मीकि के तपोबल से सीता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनकी राजधानी का नाम, कुशावती है, जल, सप्तद्वीपों में से एक द्वीप, दुखी, फाल।—ध्वज (पु०) मिथिला के राजा का नाम, राजा ह्रस्व रोमपाद के यह पुत्र थे, सीतादेवी के यह चाचा और सीरध्वज जनक के छोटे भाई थे। माण्डवी और श्रुतकीर्ति नाम की इनकी दो कन्यायें थीं, जो यथाक्रम भरत और शत्रुघ्न से ब्याही गई थीं। —केतु (पु०) राजा जनक के भाई का नाम। —नाभ (पु०) महाराजा कुश का पुत्र, प्रजापति ब्रह्मा का एक पराक्रमी पुत्र को कुश नाम था, उसके चार पुत्र थे, उनमें एक का नाम कुशनाभ था। कुशनाभ ने महोदय नाम का एक नगर बसाया था।
कुशकण्डिका तद्० (स्त्री०) सब प्रकार के होमों के लिये अग्नि का संस्कार करने की विधि, इससे हवनकर्ता कुशासन पर बैठ दहिने हाथ से कुश लेकर और कुश की नोक से वेदी पर रेखा खींचता है। [मुंदरी।
कुशमुद्रिका तद्० (स्त्री०) कुश की पैती, कुश की
कुशल तद्० (पु०) भलाई, कल्याण, मङ्गल, पुण्य, (गु०) शिक्षित, निपुण, दक्ष।—ता कुशलक्षेम, कल्याण, निपुणता, दक्षता।—क्षेम (पु०) मङ्गल, कल्याण। [णता, चौकसी, दुरस्ती।
कुशलाई तद्० (स्त्री०) मङ्गलमय, चतुराई, निपु-
कुशलता तद्० (स्त्री०) कुशलक्षेम, मङ्गल।
कुशस्थली तद्० (स्त्री०) द्वारका, श्री कृष्ण की पुरी।
कुशा तद्० (स्त्री०) कुश, रस्सी, एक प्रकार का मीठा नीबू।—ग्र तद्० (वि०) तीव्र, तेज़, नुकीला। —वर्त तद्० (पु०) हरिद्वार के एक तीर्थ का नाम, एक ऋषि का नाम।—श्व तद्० (पु०) इक्ष्वाकुवंशी एक राजा।
कुशासन तद्० (पु०) कुशनिर्मित आसन, कुत्सित शासन, अत्याचार सहित शासन।
कुशिक तद्० (पु०) मुनि विशेष, एक राजा का नाम, ये राजा महर्षि विश्वामित्र के पितामह और गाधिराजा के पिता थे। [सिखावन।
कुशिक्षा तद्० (स्त्री०) असदुपदेश, हानिकारी
कुशी तद्० (पु०) कुशघाला, वाल्मीकि ऋषि, फाल।
कुशील तद्० (गु०) दुरात्मा, दुष्ट स्वभाव।
कुशीलव तद्० (पु०) नटविशेष, कथक, देश विदेशों में कीर्तिगान करने वाले।
कुशूल धान्यक तद्० (पु०) गृहस्थ जिसके पास तीन वर्ष तक खाने के लिये अन्न का सञ्चय हो।
कुशूला तद्० (स्त्री०) देहरी, कुठिली, अन्न रखने के लिये मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा भाण्ड।
कुशेशय तद्० (पु०) कमल, पद्म, सारसपक्षी। —कर (पु०) सूर्य।

कुशोदक तद्० (पु०) [कुश+उदक] कुश सहित जल, सपंक।
कुश्ती (स्त्री०) मल्लयुद्ध।
कुषीद तद्० (पु०) कृषि, जीविका, सूद लेकर धन देना, ब्याज, रुपैया, वार्धुषिक। (पु०) जड़, चेष्टा-रहित, निर्दय।
कुष्ठ तद्० (पु०) [कुष+क] कोढ़, रोगविशेष, महाव्याधि, इस रोग के अठारह भेद हैं। जिनमें सात महाकुष्ठ और कष्ट साध्य अथवा असाध्य हैं। शेष ग्यारह उतने भयङ्कर नहीं हैं तो भी कष्ट-दायी अवश्य हैं। एक प्रकार की लता।—कृन्तन (पु०) पँवर।—नाशिनी (स्त्री०) एक प्रकार की बेल जिससे कुष्ठ रोग छूटता है, सोमराजी, सोमराज बल्ली।—सूदन (पु०) औषधि विशेष, किरवाली।
कुष्ठी तद्० (पु०) कोढ़ी, कुष्ठरोगी।
कुष्माण्ड तद्० (पु०) फल विशेष, कोंहड़ा, कुम्हड़ा, भतुआ।
कुसगुन (पु०) असगुन।
कुसङ्ग तद्० (पु०) दुर्जन सहवास।
कुसङ्गत तद्० (पु०) बुरा साथ, दुर्जन सङ्ग।
कुसमङ तद्० (पु०) अनवसर में भी, बुरे दिनों में भी, आपत्ति का सामान।
कुसमय तद्० (पु०) कठिन समय, खोटे दिन।
कुसाइत दे० (पु०) बुरा मुहूर्त, कुसमय।
कुसीद तद्० (पु०) सूद, ब्याज, ब्याज पर दिया हुआ धन।—कि तद्० (वि०) सूद पर रुपये देने वाला, महाजन।—पथ तद्० (पु०) ब्याज पर रुपये लगाना।
कुसुम तद्० (पु०) पुष्प, फूल, एक प्रकार का लाल फूल, जो कपड़ा रंगने के काम में आता है। छोटे छोटे वाक्यों का गद्य, नेत्ररोग, स्त्रीदर्शन, रज।—पुर (पु०) नगर विशेष, पाटलीपुत्र, पटना।—बाण (पु०) कामदेव।—शर (पु०) कामदेव, मदन।—स्तबक (पु०) पुष्पगुच्छ, फूलों का गुच्छा।—कर (पु०) ऋतु विशेष, वसन्तऋतु।—ाञ्जलि (पु०) पुष्पाञ्जलि, ग्रन्थ विशेष, न्याय शास्त्र का एक ग्रन्थ।—ायुध (पु०) कन्दर्प, मदन।
कुसुमित तद्० (पु०) पुष्पित, प्रफुल्लित।
कुसुम्भ तद्० (पु०) पुष्पविशेष, कुसुम फूल।—ा (पु०) रङ्ग विशेष, अफीम और भांग को मिला कर बनाया हुआ एक नशा विशेष। (स्त्री०) अपक्व शुक्ल मद्य।—ी तद्० (स्त्री०) लाल रङ्ग।
कुसूर (पु०) अपराध, चूक।
कुस्वप्न तद्० (पु०) दुःस्वप्न, अरिष्ट दर्शन।
कुह तद्० (पु०) कुबेर।
कुहक तद्० (पु०) माया, इन्द्रजाल, जाल, मायावी, कुटिल, फरेबी, छली, मेंढक, मुर्गे की बाँग।
कुम्हड़, कुम्हड़ा तद्० (पु०) कुष्माण्ड, कोंहड़ा।
कुहनी (स्त्री०) बाँह का जोड़।
कुहबर, कोहबर दे० (पु०) स्थान विशेष विवाह के अनन्तर वर दुलहिन के बैठने के लिये सजा हुआ घर।
कुहर तद्० (पु०) गह्वर, छिद्र, गुहा, कान के बीच का भाग, कण्ठ शब्द।
कुहरा दे० (पु०) कोहरा, कुहासा।
कुहराम दे० (पु०) बिलबिलाना, विलाप, रोना, रोदन, हलचल, खलबली।
कुहासा दे० (पु०) कुहेलिका, कुहरा।
कुही दे० (पु०) पक्षीविशेष, बाज पक्षी।
कुहु तद्० (स्त्री०) अमावस्या, जिस अमावस्या को चन्द्रमा नहीं दीख पड़े, कोकिल ध्वनि, कोइल का शब्द।
कुहुक तद्० (पु०) कोकिल का शब्द।
कुहुकना दे० (क्रि०) पक्षियों का मीठे स्वर में बोलना।
कुहू तद्० देखो कुहु।
कूआ दे० (पु०) कूप, इनारा।
कुआर दे० (पु०) आश्विन मास, सातवाँ महीना।
कूंच दे० (पु०) रत्ती, बीज विशेष, जुलाहे का ब्रुश।
कूंची दे० (स्त्री०) बुहारी, बुधारा, बढ़नी, तूलिका।
कूंजड़ी (स्त्री०) कुंजड़ा की औरत। (पु०) कूजड़ा।
कूतना दे० (क्रि०) मोल ठहराना, मूल्यनिर्धारण करना।
कूक दे० (स्त्री०) शब्द, ध्वनि, आर्त ध्वनि, दुःखित शब्द। [धाड़ मारना, विलाप करना।
कूकना दे० (क्रि०) चिल्लाना, बोलना, कुहुकुहू करना,
कूकर तद्० (पु०) कुत्ता, कुकुर, श्वान।—निंदिया (स्त्री०) कुत्ते की नींद के समान नींद।—मुत्ता

(पु०) एक बरसाती पौधा।—लेंड़ (पु०) कुत्तों का मैथुन, व्यर्थ की भीड़।

कूकरी दे० (स्त्री०) सूत की गट्टी, कुतिया।

कूकू दे० (पु०) कबूतर का शब्द।

कूच (पु०) यात्रा, रवानगी प्रयाण, सेना के प्रस्थान के लिये प्रायः कूच कहते हैं।

कूचा दे० (पु०) गली, छोटा रास्ता।

कूचिका दे० (स्त्री०) तूलिका, तूली, कूची, सलाई।

कूचिया (स्त्री०) डम्ली, कानपट्टी।

कूची दे० (स्त्री०) तृणनिर्मित तूलिका जिससे दीवार में चूना लगाया जाता है।

कूजन तत्० (पु०) शब्द, स्वर, ध्वनि, पक्षी का शब्द।

कूजना तद्० (क्रि०) शब्द करना, बोलना।

कूजित तत्० (गु०) पक्षी की ध्वनि, विहङ्गध्वनि।

कूजहिं तद्० (क्रि०) कूजते हैं, गूँजते हैं।

कूट तद्० (पु०) पर्वत, पहाड़ की चोटी, शिखर, कपट समूह, राशि, छल, सड़ा हुआ, धोखा, दो मानी बात, कागज, व्यङ्ग्योक्ति, श्लेषयुक्त बात। (क्रि०) कुचल कर, कूट कर।—कर्म तत्० (पु०) छल, कपट, धोखा।—कर्मा तत्० (वि०) छली धोखेबाज।—ता तत्० (स्त्री०) कठिनाई, झुठाई, छल, कपट।—नीति अधर्मनीति, धोखेबाज़।—पाश (पु०) पक्षी, पकड़ने का फंदा।—लेख (पु०) झूठा या बनावटी लेख, जाली दस्तावेज।—लेखक (पु०) जाली दस्तावेज बनाने वाला।—साक्षी (पु०) मिथ्या साक्षी, झूठागवाह।

कूटस्थ (पु०) अविनाशी अटल, अचल, आत्मा, परमात्मा। सांख्य मतानुसार परिणाम रहित आत्मा पुरुष जो जागृत स्वप्न और सुषुप्त तीनों दशाओं में समान रहता है।

कूटना दे० (क्रि०) पीसना, रौंदना कुचलना, पीटना, [मारना।

कूटार्थ तत्० (पु०) गूढ़ार्थ, क्लेशार्थ।

कूटी तद्० (स्त्री०) व्यंगवचन (क्रि०) कुचली, कुचल [डाली।

कूट्ट (पु०) एक प्रकार का पौधा। इसके दाने का आटा फलाहार के काम में आता है।

कूड़ा दे० (पु०) स्वादन, बुहारन, कतवार, घास पात, अगड़ बगड़। [अथरी, कूँड़ी।

कूढ़ि तत्० (स्त्री०) लड़ाई में पहिरने की लोहे की टोपी,

कूढ़ दे० (पु०) मूर्ख, अहमक, अनभिज्ञ।

कूत दे० (पु०) अटकल, अद्दाव, परख अन्दाज।

कूतना दे० अन्दाज़ करना, परखना।

कूदना दे० (क्रि०) महरना।

कूद तत्० (स्त्री०) कूदने की क्रिया।

कूदना दे० (क्रि०) उछलना, फाँदना, हस्तक्षेप करना, क्रमभङ्ग करके एक जगह से दूसरी जगह जा पड़ना, शेखी मारना।

कूप तत्० (पु०) स्वनाम ख्यात जलाशय, कुआँ, इनारा, नदी के मध्यस्थ पर्वत या वृक्ष।—मण्डूक (पु०) कुए का मेंडक, अल्पज्ञ वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहिर न गया हो।

कूपार तत्० (पु०) समुद्र, जलधि।

कूबरी दे० (स्त्री०) कंस की दासी, काठ की या बाँस की मुड़ी हुई लकड़ी।

कूर तद्० (गु०) कपटी, कठोर, टेढ़ा, दुष्ट, अकर्मण्य।

कूरता } कूरपन } (स्त्री०) क्रूरता, निर्दयीपन।

कूरन (पु०) कूर्म, कच्छप, कछुआ।

कूर्च तत्० (पु०) भौंहों के मध्य का स्थान, मयूरपुच्छ, अँगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान, मूठ, पाखण्ड, कूँची, मस्तक।

कूर्नी तत्० (स्त्री०) हत्था, करछी करछुल।

कूर्म तत्० (पु०) कच्छप, कछुआ, वायु वायुविशेष, पृथिवी, नाभि चक्र के पास की एक नाड़ी।—चक्र (पु०) कृषि सम्बन्धी एक चक्र विशेष, पूजा के लिये यन्त्र विशेष।—पुराण (पु०) १८ पुराणों में से एक।—पृष्ठ (पु०) कछुवे की पीठ।—राज (पु०) कच्छपराज, भगवान् का अवतार विशेष।

कूल तत्० (पु०) तीर, किनारा, तट नदी आदि के जल का समीप वाला तालाब।—क (पु०) कृत्रिम पर्वत।—द्रुम (पु०) तीरस्थित वृक्ष।

कूल्हा दे० (पु०) कोख के नीचे कमर में पेड़ू के दोनों ओर की निकली हुई हड्डियाँ।

कूष्माण्ड तत्० (पु०) गणदेवता विशेष, कोहड़ा, एक ऋषि, शिव के पिशाचगण, बाणासुर का प्रधानअमात्य।

कूष्माण्डा तत्० (स्त्री०) देवी विशेष, भगवती।

कृकर या कृकल तद्० (पु०) मस्तक का वह स्थान जिसके वेग से छींक आती है, शिव, पपीहा, पक्षी विशेष, कनेर का वृक्ष। [कार्तिकेय, षडानन।

कृकवाकु तद्० (पु०) मयूर, मोर।—ध्वज (पु०)

कृकलास तद्० (पु०) गिरगिट, सरट।

कृच्छ्र तद्० (पु०) तपस्या, कष्ट, पीड़ा पापनिवारणार्थ सन्तापनादि व्रत, रोग विशेष।—गत (गु०) कष्टग्रस्तायुक्त, दुःखी, पापी, रोगी।

कृच्छ्रातिकृच्छ्र तद्० (पु०) प्रायश्चित्ताङ्ग व्रत विशेष।

कृत तद्० (गु०) क्रिया, पर्याप्त, रचित, कथित, संचित, (पु०) सतयुग, चार की संख्या, एक प्रकार का पाँसा, एक प्रकार का दाम।—क (गु०) काल्पनिक, कृत्रिम, नकली।—कर्मा (गु०) कार्यक्षम, प्रवीण, निश्चित, निपुण, दक्ष।—कार्य (गु०) सम्पादित कार्य, चरितार्थ, सफलमनोरथ, कामयाबी।—काल (पु०) अनिश्चित समय।—कृत्य, पूर्णकाम, कृतकार्य, प्राप्त मनोरथ।—घ्न (पु०) उपकार न मानने वाला, नमकहराम।—घ्नता (स्त्री०) अकृतज्ञता, नमकहरामी।—घ्नताई (स्त्री०) हितैषी के प्रति अहिताचरण। अकृतज्ञता, नमकहरामी—ज्ञ (पु०) उपकार मानने वाला।—ज्ञता तद्० (स्त्री०) निहोरा मानना, एहसानमन्दी।

कृतकृत्य (वि०) सफलमनोरथ, सम्मान प्रदर्शित करने के लिये इसका व्यवहार किया जाता है।

कृतयुग तद्० (पु०) सत्ययुग, उत्पत्ति का समय, आदि युग, १७२८००० वर्ष का यह युग होता है।

कृतवर्मा तद्० (पु०) यदुवंशी राजा कनक का पुत्र, यह कृतवर्मा महाभारत के युद्ध के कृतवर्मा से भिन्न है।

कृतविद्य तद्० (पु०) शास्त्रज्ञ, शास्त्रदक्ष, जानकार।

कृतवीर्य तद्० (पु०) नृपविशेष, यदुवंशी एक राजा का नाम।

कृताञ्जलि (वि०) जिसने हाथ जोड़े हों।

कृतात्मा (पु०) ज्ञानी, शुद्धाचारी।

कृतान्त तद्० (पु०) अन्त करने वाला, यमराज, मृत्यु, काल, सिद्धान्त, शुभाशुभ, पाप, शनिवार, भरणी नक्षत्र, दो की संख्या।

कृतार्थ तद्० (पु०) सम्पादित कार्य, सिद्ध मनोरथ, निश्चय, मनोरथ को पाये हुए, कामयाब।

कृति तद्० (स्त्री०) कार्य, काम, आचरण, उपकार, करण, करनी, आघात, इन्द्रजाल, वर्गसंख्या, डाकिनी, छन्दविशेष, कटारी, बीस की संख्या। [भोजपत्र।

कृत्ति तद्० (स्त्री०) चमड़े की रस्सी, कृत्तिका नक्षत्र,

कृत्तिका तद्० (स्त्री०) तीसरा नक्षत्र, छकड़ा, गाड़ी।

कृत्य तद्० (पु०) कर्तव्य, कर्म, वेदविहित कर्तव्य, कार्य, करतब। [भयानक काम कर सकती है।

कृत्यका तद्० (स्त्री०) वह स्त्री जो हत्या आदि बड़े

कृत्या तद्० (स्त्री०) तंत्रानुसार किसी शत्रु को नष्ट करवाने के लिये मन्त्र द्वारा उत्पन्न की हुई स्त्री अभिचारिणी, दुष्टा स्त्री।

कृत्रिम तद्० (वि०) बनावटी, जाली, बारह प्रकार के पुत्रों में से एक। (पु०) कचिया नोन, रसौत।

कृदन्त तद्० (पु०) वे शब्द जो धातु में कृत प्रत्यय के जोड़ने से बनें। [राजर्षि।

कृप तद्० (पु०) कृपाचार्य, वैदिक काल के एक

कृपण तद्० (पु०) कंजूस, नीच, क्षुद्र।—ता तद्० (स्त्री०) कंजूसी, मक्खीचूसी।

कृपनाई तद्० (स्त्री०) कृपणता, सूमड़ापन।

कृपया (क्रि० वि०) कृपापूर्वक, दयापूर्वक।

कृपा तद्० (स्त्री०) अनुग्रह, दया, क्षमा।—चार्य तद्० (पु०) द्रोणाचार्य के साले।—पात्र तद्० (पु०) कृपा का अधिकारी।

कृपाण तद्० (पु०) तलवार, असी।

कृपाणिका (स्त्री०) कटारी, छोटी तलवार।

कृपाल या कृपालु (वि०) दयालु।—ता दयाभाव।

कृपिया (वि०) कृपण, कंजूस।—ता कंजूसी।

कृमि तद्० (पु०) छोटा कीट, कीड़ा, किरवा।—घ्न (पु०) वायबिडङ्ग।—जग्धा (पु०) काला अगरु।

कृमिल तद्० (गु०) कीड़ों से भरा, कीटयुक्त।

कृश तद्० (गु०) दुर्बल, दुबला, क्षीण, पतला, सूक्ष्म।—ता (स्त्री०) दुर्बलता, क्षीणता।—दृष्टि (गु०) मन्ददृष्टि। [क्षीणाङ्गी।

कृशाङ्गी तद्० (स्त्री०) पतली स्त्री, दुर्बलाङ्गी,

कृशानु या कृसानु तद्० (पु०) अग्नि, अनल, आग, वह्नि, चीता।

कृशाश्व तद्० (पु०) मुनि विशेष, राजा विशेष।
कृशोदरी तद्० (पु०) पतली कमर वाली।
कृश्न (वि०) श्याम, काला, श्रीकृष्ण भगवान, वेदव्यास, छप्पय छन्द का एक भेद, अर्जुन, कोयल, कौवा, कृष्ण पक्ष, कलियुग, नील, लोहा, सुरमा, करौंदा, वृक्ष विशेष।
कृषक तद्० (पु०) किसान, कर्षक, हल की फाल।
कृषाण दे० (पु०) किसान, खेतिहर।
कृषि तद्० (स्त्री०) खेती, चास, वैश्यवृत्ति विशेष।
—कर्म (पु०) हल चलाना, खेती करना।
—जीवी (पु०) कृषक, किसान। [कृषिजीवी।
कृषी तद्० (स्त्री०) खेती।—वल (पु०) किसान।
कृष्ण तद्० (वि०) काला। (पु०) विष्णु का पूर्णावतार। यह माता देवकी और पिता वसुदेव से उत्पन्न हुए थे, इन्होंने अनेक प्रजापीडक, राक्षस प्रभृति, दानवों को मार कर धर्म स्थापित किया था।—द्वैपायन (पु०) महर्षि पराशर के औरस और दासराज की पालित कन्या सत्यवती के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे। इनकी माता ने अपना गर्भ द्वीप में फेंक दिया था, इस कारण इनका नाम द्वैपायन पड़ा था। इन्होंने वेदों का विभाग किया था, इस कारण इनको व्यास नाम से लोगों ने प्रसिद्ध किया। इन्हीं महर्षि ने अष्टादश पुराण बनाये हैं। कोई कोई कहते हैं कि व्यास नाम के अनेक महर्षि हुए हैं। अतएव अष्टादश पुराणों के कर्त्ता व्यास नामधारी भिन्न भिन्न ऋषि हैं।—मिश्र (पु०) प्रबोधचन्द्रोदय नाटक के कर्त्ता ये ही कृष्ण मिश्र थे। ये राजा कीर्तिवर्मा के सभासद् थे। यह कीर्तिवर्मा चन्देल राजा था। इसने चेदि के राजा कर्णदेव का पराजय किया था। इसका समय सन् १०५० ई० से ११११ ई० के बीच में निश्चित होता है, अतः कृष्णमिश्र का भी यही समय मानना पड़ता है।
कृष्णकर्मा तद्० (पु०) निन्दित कर्मकारी, पापाचारयुक्त, पापविशिष्ट, अपराधी, पापी, दुष्कृति।
कृष्णगन्धा तद्० (स्त्री०) शोभाञ्जनवृक्ष, सहिजन का वृक्ष। [भूतचतुर्दशी।
कृष्णचतुर्दशी तद्० (स्त्री०) कृष्णपक्ष की चतुर्दशी,
कृष्णचन्द्र (पु०) देखो कृष्ण।
कृष्णजीरा तद्० (पु०) काला जीरा, कलौंजी।
कृष्णता तद्० (स्त्री०) कृष्णवर्ण, कालापन, घुघुची, श्यामता।
कृष्णतुलसी तद्० (स्त्री०) काली तुलसी।
कृष्णपक्ष तद्० (पु०) अंधेरा पाख, बदी, चन्द्रमा के ह्रास का काल।
कृष्णफला तद्० (स्त्री०) वाकुची, करौंदा, कामर्दक।
कृष्णभद्रा तद्० (स्त्री०) औषध विशेष, कुटकी।
कृष्णभूमि तद्० (स्त्री०) काले वर्ण की मृत्तिका युक्त देश।
कृष्णमय तद्० (पु०) कृष्ण में लीन, अधिक कृष्ण।
कृष्णलोह तद्० (पु०) अयस्कान्त मणि, चुम्बक पत्थर।
कृष्णवक्त्र तद्० (पु०) काले मुँह वाला वानर, लंगूर।
कृष्णवर्त्मा तद्० (पु०) अग्नि, हुताशन, चित्रक वृक्ष।
कृष्णवानर तद्० (पु०) काला वानर, कृष्णवर्ण कपि।
कृष्णवृन्तिका तद्० (स्त्री०) कम्भारी औषधि का नाम। [कृष्ण के आश्रित।
कृष्णाश्रित तद्० (पु०) कृष्ण के भक्त, वैष्णव, श्री
कृष्णसख तद्० (पु०) कृष्ण का मित्र, अर्जुन।
कृष्णसर्प तद्० (पु०) कालासर्प, करइट साँप।
कृष्णसार तद्० (पु०) हिरन विशेष, यज्ञीय मृग, काला हिरन।
कृष्णसारङ्ग तद्० (पु०) कृष्णवर्ण मृग, हरिण।
कृष्णा तद्० (स्त्री०) काले रङ्ग की स्त्री, द्रौपदी, यह जन्म के समय काली थी, इसी कारण इसका नाम भी कृष्णा पड़ा था। यमुना, नदी का नाम, यह नदी दक्षिण भारत में इसी नाम से प्रसिद्ध है। काली सरसों। [बलराम।
कृष्णाग्रज तद्० (पु०) श्रीकृष्ण का बड़ा भाई, बलदेव,
कृष्णागरु तद्० (पु०) काला अगरु।
कृष्णाचल तद्० (पु०) काला पहाड़, रैवतक पर्वत, यह गिरना के नाम से इस समय प्रसिद्ध है, काठियावाड़ में जूनागढ़ के पास है।
कृष्णाजिन तद्० (पु०) कृष्णसार मृग का चर्म, कालामृग चर्म।
कृष्णाफल तद्० (पु०) कालीमिर्च।

कृष्णार्पण तत्० (पु०) निष्काम कर्म, अपने कर्म फल श्रीकृष्ण भगवान् को निवेदन करना, फलाकाङ्क्षा से रहित कर्म सम्पादन।

कृष्णाष्टमी (स्त्री०) भाद्र कृष्णपक्ष की अष्टमी, श्रीकृष्ण की जन्मतिथि।

कृष्णोपकुल्या तत्० (स्त्री०) औषध विशेष, पीपरी।

कृष्णाभिसारिका (स्त्री०) अँधेरी रात में अपने प्रेमी के पास निर्दिष्ट स्थान पर जाने वाली नायिका विशेष।

कृसर तत्० (पु०) खीचड़ी। [(पु०) जटाधारी।

कल्प्त तत्० (पु०) रचित, स्थिरीकृत, निर्मित।—केश

के दे० (अ०) सम्बन्धबोधक, प्रश्नार्थक, कौन का छोटा रूप, सम्बन्ध बोधक विभक्ति का बहुवचन।

केंओड़ा दे० (पु०) केतकी, पुष्प विशेष।

केंचुवा दे० (पु०) कीट विशेष।

केंकड़ा दे० (पु०) कर्कट, गँगटा।

के (प्रत्यय) सम्बन्ध सूचक "का" का बहुवचन।

केउ (सर्व) कोई। [देश की सीमा पर स्थित है।

केकय तत्० (पु०) राजा विशेष, यह देश जो सिन्धु

केकयी तत्० (स्त्री०) अयोध्या के अधिपति महाराजा दशरथ की स्त्री और भरत की माता। केकय या कैकेय राज्य के राजा की यह कन्या थी। केकय देश पंजाब में विपाशा शतद्रु के बीच में है, प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर है।

केकर तत्० (पु०) शर, भेंगा, वक्र, टेढ़ा।

केका तत्० (स्त्री०) मयूरध्वनि, मोर की बोली।

केकी तत्० (पु०) मोर, मयूर, शिखी, केकावल।

केचित् तत्० (अ०) कोई। [पौड़ा, कोड़ा, काम, चिन्ह।

केत, केतन तत्० (पु०) गृह, ध्वजा, निमन्त्रण,

केतिक दे० (पु०) थोड़े, दो चार, अल्प परिमाण, कितना, कितना एक, किस क़दर।

केतकी तत्० (स्त्री०) केवड़ा का वृक्ष, केवड़े के फूल।

केता दे० (अ०) कितना।

केतु तत्० (पु०) ज्ञान, दीप्ति, निशान, ध्वजा, पताका, नवग्रह, राहु का शरीर, पापग्रह, डापान चिन्ह, दानवविशेष, [समुद्र मन्थन के अनन्तर देवतागण पंक्ति से बैठकर अमृत पान करते थे, केतु दानव भी देवरूप धारण कर वहाँ बैठ गया, चन्द्रमा और सूर्य ने यह बात प्रकाशित कर दी। उसी समय भगवान ने यद्यपि उनका सिर काट डाला, तथापि अमृत पान करने के कारण वे मरे नहीं, किन्तु एक के दो हो गये। मस्तक भाग का नाम राहु और शरीर का नाम केतु हुआ। ये दोनों ग्रह माने जाते हैं। केतु की दशा सात वर्ष तक रहती है। ये दोनों पापग्रह हैं।]

केतुतारा तत्० (स्त्री०) धूमकेतु, अशुभ सूचक तारा, पुच्छल तारा। [एक खण्ड।

केतुमाल तत्० (पु०) जम्बु द्वीप के नवखण्डों में से

केते दे० (पु०) कितने, कै, कतिक।

कदली तत्० (स्त्री०) रम्भा, कदली, केला, एक बार फूलने वाला पेड़।

केदार तत्० (पु०) क्यारी, खेत, क्षेत्र, पर्वतविशेष जो बद्रीनारायण के पास है, तीर्थस्थान, शिव, भूमिविशेष, मेघराज का चतुर्थ पुत्र।—खण्ड (पु०) खण्ड विशेष, स्कन्दपुराण के अन्तर्गत एक भाग या खण्ड।—नाथ (पु०) केदार पर्वत के स्वामी, महादेव।

केन (सर्व०) किससे।

केन्द्र तत्० (पु०) लग्न का चौथा, पाँचवाँ और दशवाँ स्थान, गोलाकार वस्तु का मध्यस्थान, गोलाकार या वृत्तक्षेत्र का वह स्थान जहाँ से परिधि तक खींची गयी रेखाएँ आपस में बराबर हों।

केन्द्रीभूत तत्० (पु०) राशिकृत, एकत्रित, संकुचित, सङ्कीर्ण, असम्पूर्ण।

केमद्रुम तत्० (पु०) जन्मकाल का ग्रह, योग विशेष, दरिद्रयोग। [अलङ्कार, बहुँटा।

केयूर तत्० (पु०) अलङ्कार विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द,

केर तत्० (अ०) सम्बन्धार्थक, का, की, के।—ा (पु०) केला वृक्ष, सम्बन्ध द्योतक का स्त्रीलिङ्ग।

केरल तत्० (पु०) देश विशेष, मालाबार देश, पश्चिमी घाट नामक पर्वत और समुद्र के बीच का एक भाग जो कावेरी नदी के उत्तर की ओर है। इस देश की मुख्य नदियाँ नेत्रवती, शरावती और काली नाम की हैं। सम्भव है इसी काली नदी का पहले मुरला नाम रहा हो। आज केरल कनाड़ा का एक भाग समझा जाता है।

केला या केरा तद्० (पु०) वृक्ष और फल विशेष, कदली।

केलि तत्० (स्त्री०) परिहास, खेल, विहार, क्रीड़ा। —कला (स्त्री०) रतिक्रिया, सरस्वती की वीणा।

केलिगृह तत्० (पु०) नाटकशाला, रङ्गशाला, नाटक खेलने का स्थान। [सेज।

केली तत्० (स्त्री०) सुरतशयन, आनन्द, सुख, क्रीड़ा,

केवट तद्० (पु०) क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से उत्पन्न जाति विशेष। कैवर्त, धीवर, मलुआ, मल्लाह। [का वास।

केवड़ा दे० (पु०) वृक्षविशेष, फूलविशेष, एक प्रकार

केवल तत्० (गु०) मात्र, असहाय, अन्यहीन, एकाकी, एक प्रकार का ज्ञान, निर्णीत, उत्तम। —व्यतिरेकी (पु०) अनुमान विशेष, शेषवत्। —ान्वयी (पु०) पूर्ववत् अनुमान विशेष। [मुक्ति, जन्मपत्री।

केवली तत्० (गु०) एकाकी, ग्रन्थविशेष, जैनियों की

केवाड़, केवाड़ा दे० (पु०) द्वार, कपाट।

केवा, केवान दे० (पु०) कँवल, कमल (पु०) आना-कानी, सङ्कोच।

"केवा जनि कीजै, मोरि सेवा सब भाँति लीजै"

—रघुराजसिंह।

केश तत्० (पु०) बाल, रोम, लोम, सिर के बाल, कच, किरण, ब्रह्मा की एक शक्ति, वरुण, विश्व, विष्णु, सूर्य। —कलाप (पु०) केशसमूह, चोटी, चूड़ा। —ग्रह (पु०) केशाकर्षण, केश पकड़कर खींचना। —पाश (पु०) केशसमूह, बालों की लट। —विन्यास (पु०) चोटी बनाना। —मार्जनी (स्त्री०) कंघी, ककही।

केशर तत्० (पु०) नागकेशर वृक्ष, फूलों की पखुड़ियाँ, स्वनाम प्रसिद्ध सुगन्ध द्रव्य विशेष, केसर। सिंह और घोड़ों के गरदन पर के बाल।

केशरञ्जन तत्० (पु०) भँगरा, पौधा, वृक्ष विशेष।

केशरिया, केसरिया तद्० (पु०) पीलारङ्ग विशेष, केसर का रङ्ग एक प्रकार का पहनावा जिसे राजपूत युद्ध के समय पहनते थे, यह पहनावा एक प्रकार का शपथ समझा जाता था, अर्थात् केशरिया पहनकर युद्ध से हट नहीं सकते, मर भले ही जाँय।

केशरी तत्० (पु०) सिंह, मृगराज एक बानर का नाम, हनुमानजी का पिता।

केशव तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु। भगवान् के केशव नाम पड़ने का कारण भगवान् ने स्वयं कहा है कि सूर्य चन्द्र या आदि प्रकाशशील पदार्थों को केश कहते हैं, वे हमारे हैं, अतएव हमारा नाम केशव है। यथा—

" अंशवो ये प्रकाशन्ते मम ते केशसञ्ज्ञिता"।

सर्वज्ञा" केशवं तस्मान्मामाहुर्मां द्विजसत्तमा ॥"

—महाभारत।

केशाकेशी तत्० (पु०) परस्पर बाल पकड़ के लड़ना, झोंटाझिंचौवल, झोंटा झोटी।

केशिनी (स्त्री०) जटामासी, अप्सरा, सुन्दर बालों वाली स्त्री, राजा सगर की रानी का नाम, रावण की माता, एक प्राचीन नगरी का नाम, पार्वती की सहचरी, दमयन्ती की एक दूती।

केशि या केशी तत्० (गु०) उत्तम केश युक्त। (पु०) यह राजा कंस का अनुचर था, कंस की आज्ञा से घोड़े का रूप बनाकर वृन्दावन गया और अनेक गोपाल तथा गौओं को इसने मार डाला, पुनः भगवान् कृष्ण ने इसकी शास्ति की और इसे मार डाला। घोड़ा, सिंह, केवाँच। [पर के बाल, अयाल।

केसर तत्० (पु०) कुंकुम, नागकेसर, घोड़े के गरदन

केसरी तत्० (पु०) सिंह, घोड़ा।

केसू तद्० (पु०) ढाक, टेसू, पलास।

केहरि तद्०, केहरी तद्० } (पु०) सिंह, एक बानर का नाम।

केहु दे० (स०) कौन मनुष्य, कोई, कोई व्यक्ति, अनिर्दिष्ट व्यक्ति।

केका (पु०) मयूर, मोर।

केहि दे० किसे, किसको।

केहूँ (वि०) किसी प्रकार। [किचुली।

कैंचली दे० (स्त्री०) साँप का खोल, सर्पचर्म, कैंचुल,

कैंची दे० (स्त्री०) कतरनी, अस्त्र विशेष।

कै दे० (सर्व०) कितना, कितेक बहुत, कौन।

कैकेयी तत्० (स्त्री०) देखो केकयी। [भक्ति का एक अङ्ग।

कैङ्कर्य तत्० (पु०) किङ्करत्व, भृत्यता, दासत्व, नवधा

कैकसी तत्० (स्त्री०) लङ्केश्वर रावण और कुम्भकर्ण आदि की माता का नाम, सुमाली राक्षस की कन्या और विश्रवा मुनि की पत्नी थी।

कैटभ तत्० (पु०) एक दैत्य का नाम, शेषशायी भगवान के कर्णमल से इसकी उत्पत्ति बतलायी जाती है, यह बहुत बड़ा वीर था भगवान् ही ने इसे मारा था।—ारि (पु०) नारायण, भगवान्, विष्णु।—ेश्वरी (स्त्री०) दुर्गा, भगवती।

कैत दे० (पु०) फल विशेष, कैथा, कैथ। (स्त्री०) [ओर, तरफ।

केतक तत्० (पु०) केवड़े के वृक्ष, केतकी पुष्प।

कैतव तत्० (पु०) छल, कपट, जुआ, मूँगा, धतूरा। —वाद (पु०) छलना, ठगना, प्रवञ्चना, औषध विशेष, चिरायता।

कैतवापह्नुति (स्त्री०) अलङ्कार विशेष।

कैथ, कैथा दे० (पु०) वृक्षविशेष, कैत।

कैथी दे० (स्त्री०) मुड़िया अक्षर, विहार के कायस्थों के द्वारा कल्पित एक प्रकार की नागरी लिपि।

कैद (स्त्री०) बन्धन, कारागार।—खाना (पु०) बन्दीगृह, कारागार।—ी (पु०) बँधुआ, बन्दी।

कैधौं (अव्य०) अथवा।

कैमुतिकन्याय तत्० (पु०) न्यायविशेष, अनायाससिद्धि, एक की सिद्धि से दूसरे की अनायास सिद्धि।

कैयट तत्० (पु०) व्याकरण महाभाष्य के टीकाकार, ये काश्मीर के रहने वाले थे, ये अपने समय के व्याकरण के विद्वानों में प्रधान समझे जाते थे। इनका समय ग्यारहवीं सदी विद्वानों के मत से निश्चित है। (१) ये भी काश्मीर निवासी थे। १०७ ई० में इन्होंने आनन्दवर्द्धन के देवीशतक की टीका लिखी है। इनके पिता का नाम चन्द्रादित्य और पितामह का नाम वल्लभदेव था।

कैर दे० (पु०) करील। [कोई।

कैरव तत्० (पु०) सफेद कमल, पद्म, ज्वारी, कुमुद,

कैरवि तत्० (पु०) चन्द्रमा।

कैरवी तत्० (स्त्री०) चाँदनी, मैत्री। [रंग की।

कैरी दे० (स्त्री०) छोटा आम, कच्चा आम। (वि०) भूरे

कैल दे० (पु०) अङ्कुर, कोपल, शाखा, एक प्रकार का बैलों का वर्ण, मटमैला रङ्ग।

कैलास तत्० (पु०) पर्वतविशेष, शिव और कुबेर का वासस्थान।—निकेतन (पु०) महादेव, कुबेर। —वास तत्० (पु०) मरण, मृत्यु।

कैवर्त तत्० (पु०) मल्लाह, मछुआ, कर्णधार।

कैवल्य तत्० (पु०) मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण, परित्राण, परमधाम प्राप्ति। [बड़े बालों वाला।

कैशिक तत्० (स्त्री०) बालों की लट। (वि०) बड़े

कैसा दे० (अ०) किस प्रकार, किस भाँति।—ही (वा०) किसी प्रकार का।

कैसे दे० (अ०) किस प्रकार से, क्योंकर, किस प्रकार के।

कैसो दे० कैसहू, किसी तरह भी।

कैहौं दे० कहूँगा, कहूँगा। [का चिन्ह, कौन।

को दे० (अ०) कर्मवाचक, द्वितीयाविभक्ति, सम्प्रदान

कोआ दे० (पु०) रेशम के कीड़े का घर, टसर नामक रेशम का कीड़ा, कटहल के पके बीज, महुए का पका फल, कोया।

कोइरी दे० (पु०) एक छोटी जाति।

कोइ या कोई दे० (अ०) अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, कई में से एक, परिचय।—सा (वा०) कोई आदमी। —न कोई (वा०) यह अथवा वह।

कोऊ दे० (स०) कोई मनुष्य, अनिश्चित व्यक्ति।

कोयरी दे० (पु०) जाति विशेष, काछी, खेती करने वाली जाति।

कोंचना दे० (क्रि०) खींचना, भेदना, चुभाना।

कोंहड़ा दे० (पु०) कुष्माण्ड, कोहड़ा, कुंदा जिसमें साँकल लगायी जाती है।

कोंपल दे० (पु०) अंकुर, कल्ला, कनखा।

कोक तत्० (पु०) चक्रवाक पक्षी, चकवा, बघेरा, इस नाम का एक व्यभिचारी कवि जिसका बनाया ग्रन्थ कोकशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध है, अङ्कुशी मेंढ़िया, संकेत का उल्लू, मेंढ़, विष्णु, मेंढक, रेरिया।—नद (पु०) लाल कमल।—शास्त्र तत्० (पु०) कोकपुत्र रतिशास्त्र।

कोका दे० (पु०) चक्रवाक, चकई, चकवा, धायभाई, फरिया, फकत, वस्त्रविशेष। [आम्रवृक्ष।

कोकिल तत्० (पु०) कोयल, पिक।—ावास (पु०)

कोकिला तत्० (स्त्री०) देखो कोकिल।

कोकी तत्० (स्त्री०) चक्रवाकी, चकई।

कोङ्कण तत्० (पु०) शस्त्रविशेष, देशविशेष, यह देश दक्षिण भारत में है।

कोख तद्० (पु०) कुक्षि, गर्भ, जठर, पेट, पार्श्व।—बन्द (पु०) बन्ध्या, सन्तानहीन।

कोचीन (पु०) दक्षिण भारत का एक देशी राज्य।
कोछा, कोछी दे० (स्त्री०) गोदी, लड़कों की झुलाने की झोली। [घँघरा।
कोछे दे० (पु०) कोख, कुक्षि, उत्सङ्ग, गोदी, घँघरा,
कोजागर तत्० (पु०) आश्विन मास की पूर्णिमा, शरद का पर्व, महोत्सव।
कोट या कोट्ट तत्० (पु०) गढ़, क़िला, दुर्ग। (दे०) एक प्रकार का सिला वस्त्र जो कमीज़ के ऊपर पहना जाता है।—धारण (पु०) चार दीवारी।
कोटर तत्० (पु०) वृक्ष का खोंखला, खोंदरा, खोड़र, क़िले के आसपास का बनावटी वन जो दुर्गरक्षा के लिये लगाया जाय।
कोटवी तत्० (स्त्री०) नग्न स्त्री, विवस्त्रा नारी। [राज्य।
कोटा दे० (पु०) एक नगर का नाम, राजपूताने का एक
कोटि तत्० (पु०) करोड़, सौलाख १०००००००, एक ओर का भुज, शस्त्रों का अग्रभाग, पतला भाग, धनुष का सिरा, श्रेणी, पूर्वपक्ष, उत्तमता, अर्धचन्द्र का सिरा, समूह, करोड़।—कल्प (पु०) सर्वदा, सर्वक्षण।—वर्ष (पु०) करोड़ वर्ष, बाणासुर के नगर का नाम।
कोटिक तत्० (वि०) करोड़, बहुत अधिक, अमित।
कोटिर तत्० (पु०) जटा, क़िरीट, मुकुट।
कोटिशः तत्० (क्रि० वि०) बहुत तरह से, अनेकानेक।
कोटीश तत्० (गु०) कोटि रुपये का धनी, महाधनी, करोड़पती।
कोट्याधीश (वि०) करोड़पती।
कोठर तद्० (पु०) देखो कोटर।
कोठरी तद्० (स्त्री०) छोटा गृह।
कोठा तद्० (पु०) घर, गृह। [भण्डारी।
कोठार दे० (पु०) भण्डार।—ी तद्० (पु०)
कोठी तद्० (स्त्री०) महाजनी घर, जहाँ देन लेन होता है।—वाल दे० (पु०) साहूकार।—वाली (स्त्री०) साहूकारी।
कोड़ना दे० (क्रि०) खोदना, खखोरना, खेत गोड़ना।
कोड़ा दे० (पु०) चाबुक, कशा।—करना (वा०) वश में करना, अधीन करना।
कोड़ी दे० (स्त्री०) बीस संख्या से परिमित कोई वस्तु।
कोढ़ दे० (पु०) कुष्ट रोग।—में खाज निकलना (वा०) एक दुःख में दूसरा दुःख, दुःख पर दुःख पड़ना।
कोढ़ी दे० (गु०) कुष्टरोगी, कुष्ठी।
कोण तत्० (पु०) गृह का एक कोना, शस्त्रों का अग्र भाग, वीणा आदि बजाने का साधन, कमानी, गज, मङ्गलग्रह, शनिग्रह, दो रेखाओं का सन्धिस्थान।
कोतल दे० (पु०) अश्वभेद, बिना सवारी का सजा हुआ घोड़ा, जलूसी घोड़ा, खाली अश्व।
कोतवाल (पु०) नगरपाल, पुलिस का नगर में बड़ा अफ़सर। [कोतवाल का दफ़्तर।
कोतवाली (स्त्री०) कोतवाल का काम या उसका पद,
कोथमीर दे० (पु०) कच्ची धनियाँ, धनियाँ की हरी पत्तियाँ।
कोद दे० (स्त्री०) पक्ष, ओर, कोना।
कोदण्ड तत्० (पु०) धनुष, धन्वा, धनुही।
कोदों तद्० (पु०) अन्न विशेष, कोद्रव।
कोद्रव तद्० (पु०) अन्न विशेष।
कोद्रम्ग तत्० देखो कोटी।
कोन कोना तद्० (पु०) रुख, कोण।
कोना कतरा दे० (वा०) कोण किनारा, छोर, गोशा।
कोन्त तत्० (पु०) कुन्त, भाला, बर्छी, बल्लम।
कोप तत्० (पु०) क्रोध, राग, तामस, रिस।—न्ध (पु०) अत्यन्त क्रुद्ध, क्रोध में बावला।
कोपना तद्० (क्रि०) क्रोधित होना, कुपित होना, कोप करना।
कोपर या कोंपल तद्० (पु०) कटोरा, कटोरी, तर्पण करने का पात्र, तष्टी, नरम पत्ते, नवीन दल, ताज़े निकले हुए पत्र, फूलों की पंखड़ियाँ।
कोपान्वित तत्० (गु०) क्रुद्ध, क्रोधित।
कोपित तद्० (गु०) क्रोधशील, ग़ुस्सा।
कोपी तत्० (गु०) क्रोधी, कुपित हुआ, कोई भी।
कोपीन तद्० (स्त्री०) लंगोट, लंगोटी।
कोविद तद्० (पु०) पण्डित, कवि।
कोवी दे० (स्त्री०) एक तरकारी का नाम, क्षुत्रा
कोमल तद्० (गु०) नरम, मृदु, मुलायम मनोज्ञ, मनोहर।—ता (स्त्री०) मृदुता
कोमलताई तत्० (स्त्री०) मृदुलता, कोमलता

कोय (सर्व०) कोई।
कोयर (पु०) सब्जी, सागपात।
कोयल तद्० (पु०) कोकिल, कोइल पक्षी।
कोयला दे० (पु०) अङ्गारा सीरा, केला।
कोया तद्० (पु०) आँख का ढेला, आँख का कोना।
कोये दे० (पु०) आँख के ढेले, आँखों के बीच का श्वेत ढेला या डेंडर।
कोर दे० (पु०) किनारा छोर, कगार, प्रान्तभाग।
कोरक तद्० (पु०) कली, मुकुल, अविकसित द्रव्य, मृणाल, शीतलचीनी।
कोरकसर (स्त्री०) कमी, त्रुटि।
कोरङ्गी दे० (स्त्री०) छोटी इलायची।
कोरा दे० (पु०) नया, नवीन, बिनबर्ता, बिना उपयोग में आया हुआ, (इसका प्रयोग बर्तन कपड़ा कागज़ आदि के लिये होता है)। [न होना।
कोरे रहना (वा०) निराश होना, मनोरथ सिद्ध
कोरि दे० (अ०) खुरच कर, खोद कर, कोड़ कर।
कोरी दे० (स्त्री०) सादी, बिनबर्ती, हिन्दू जुलाहा, कपड़ा बिनने वाली जाति विशेष।
कोल दे० (पु०) खाली, खाल, सकड़ी गली, पहाड़ियाँ, सूकर, सूअर, एक जङ्गली जाति, गोद, चित्रक, शनिग्रह, बेरफल, कालीमिर्च, कोरा गोद।
कोला दे० (पु०) देखो कोल।
कोलाहल तद्० (पु०) रौला, कलरव, शोरगुल, बहुत दूर तक जाने वाला, अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द।
कोलियाना दे० (क्रि०) गोद में लेना कोला लेना।
कोली दे० (पु०) तन्तुवाय तांती कपड़े बनाने वाली एक जाति, छोटी गली, साकड़ गली।
कोल्हू दे० (पु०) घरखी, तेल निकालने या ऊख से रस निकालने की कल। -
कोविद तद्० (पु०) पण्डित, बुध, निपुण, ज्ञानी।
कोश तद्० (पु०) कमल का मध्यभाग, तलवार की म्यान, अस्त्रों के रखने का घर, अण्डकोश, भण्डार, ख़ज़ाना, शब्दसमूह, अभिधान।
कोशल या कोशला तद्० (स्त्री०) अयोध्या नगरी, देश विशेष का नाम, इसका वर्णन रामायण में आया है। यह सरयू नदी के किनारे है। पहले इसके दो भाग थे। उत्तरकोशला और दक्षिणकोशला। यह सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी थी।—पुरी (स्त्री०) अयोध्या।—धीश (पु०) श्रीरामचन्द्र, कोशल के राजा।—वृद्धि (स्त्री०) अण्डवृद्धि का रोग, धन की बढ़ती।
कोष तद्० (पु०) धनागार, ख़ज़ाना।
कोषाध्यक्ष तद्० (पु०) कोषाधीश, कोषाधिपति, भण्डारी, खजांची।
कोष्ठ तद्० (पु०) गृहमध्य, कोठमध्य, पाकाशय, खाना, खात।—क तद्० (पु०) दीवार, लकीर, चिन्ह विशेष, ( ) एक प्रकार का चिन्ह [ ]—बद्ध (पु०) मलावरोध, मल की रुकावट, रोगविशेष।
कोष्ठागार तद्० (पु०) भण्डार, कोष, ख़ज़ाना।
कोस तद्० (पु०) मार्ग की लम्बाई का परिमाण, प्राचीन काल का कोस आठ हज़ार या चार हज़ार हाथ की लम्बाई का होता था। वर्तमान काल का कोस २ मील या ३५२० गज़ या ७०४० हाथ का होता है, दो मील। [करते रहना।
कोसना दे० (क्रि०) शाप देना, बातों से दुःखी
कोसा दे० (पु०) छीमी, फली, रेशम विशेष।
कोसिला (स्त्री०) देखो कोशला।
कोसी (स्त्री०) नदी विशेष, कौशिकी।
कोह तद्० (पु०) क्रोध, रोष, कोप, (इस अर्थ में कोहु और कोहू का भी प्रयोग रामायण में किया गया है)।
कोहनी तद्० (स्त्री०) बाँह के बीच की गाँठ।
कोहबर दे० (पु०) कौतुक गृह, देवगृह।
कोहरा (पु०) कुहासा, कुहरा।
कोहाना दे० (क्रि०) कोप करना, क्रोध करना, खिसियाना। [मान करना रूस जाना।
कोहाब दे० (पु०) क्रोध, कोप, रूठना, कोहाना,
कोही दे० (पु०) क्रोध, कोपी, यथा—
"कर कुठार मैं अकरुण कोही"
आगे अपराधी गुरु द्रोही।
—रामायण।
कोहु, कोहू तद्० (पु०) देखो कोह।
कौ दे० (अ०) का, को।

कौश्रा दे० (पु०) काग, काक।—ना (क्रि०) चकचकाना, सोते में बर्राना, स्वप्न में बकना।
कौंध दे० (स्त्री०) प्रकाश, प्रताप, दीप्ति, चमक।
कौंधना दे० (क्रि०) चमकना, प्रकाशित होना।
कौंधा दे० (पु०) बिजली, विद्युत, चमक।
कौंला दे० (पु०) कमला, संतरा, नीबूविशेष, नारङ्गी।
कौटिल्य तत्० (पु०) कुटिलता, चालाकी, कपट, टेढ़ापन।
कौटुम्बक तत्० (गु०) कुटुम्ब सम्बन्धी।
कौड़ा दे० (पु०) बड़ी कौड़ी, शङ्खविशेष।
कौड़ियाला दे० (पु०) सर्पविशेष, पैसेवाला, धनी, नदी विशेष, सरयूनदी। [धन, कमाई।
कौड़ी दे० (स्त्री०) बरायक, वराटिका, छोटा शङ्ख,
कौणप तत्० (पु०) राक्षस, रात में चलने वालों की एक जाति। [गुप्त, चाणक्य।
कौण्डिन्य तत्० (पु०) कुण्डिन मुनि का पुत्र, विष्णु-
कौतुक तत्० (पु०) कुतूहल, उत्सव, हर्ष, परिहास, अचम्भा, दिल्लगी, तमाशा, खेलकूद।—ी (गु०) हर्षाभिलाषी, परिहास करने वाला, रसिक।
कौतुकिया तद्० (पु०) कौतुक करने वाला, खेल करने वाला, खिलवाड़ी, नट, विवाह कराने वाला नाई या पण्डित।

" सौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं,
वर कन्या अनेक जग माहीं।"
—रामायण।

कौतुकी तत्० (वि०) विनोद शील।
कौतूहल तत्० (गु०) अपूर्व वस्तु देखने का अभिलाष, हर्ष, कौतुक।
कौथ दे० (वि०) कौन सी तिथि।
कौथा दे० (वि०) किस संख्या का, गिनती में किस संख्या या स्थान का। [किस प्रकार का।
कौन दे० (सर्व) प्रश्नार्थक।—सा (वा०) कैसा,
कौन्ता तद्० (स्त्री०) कुन्ती, पाण्डव की माता।
कौन्ती तत्० (स्त्री०) कुन्तधारी, भाला धारण करने वाला।
कौन्तेय तत्० (पु०) कुन्ती के पुत्र, पाण्डव, अर्जुन।
कौप तत्० (गु०) कूप सम्बन्धी जल, कूपोदक।
कौपीन तत्० (पु०) कोपीन, लँगोटी, शरीर के वे अङ्ग जो कोपीन से ढक जाँय, पाप, अनुचितकर्म।
कौम (स्त्री०) वर्ग, जाति, नस्ल।
कौमार तत्० (पु०) कौमारावस्था, जन्म से लेकर पाँच वर्ष की अवधि तक।—ी (स्त्री०) मातृका-विशेष, कार्तिक की शक्ति, वाराही कन्द, प्रथम विवाह की स्त्री, पार्वती का नाम।
कौमुदी तत्० (स्त्री०) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, चन्द्रमा का प्रकाश, कीर्तिकोत्सव, कार्तिकी पूर्णिमा, आश्विन की पूर्णिमा, व्याकरण का एक ग्रन्थ।
कौमोदकी तत्० (स्त्री०) विष्णु की गदा का नाम, श्री कृष्ण की गदा।
कौर तत्० (पु०) कवल, ग्रास, गिरास। [रहने वाला।
कौरव तत्० (पु०) कुरुराज का वंश, कुरुदेश में
कौरव्य तत्० (पु०) कुरुराज का वंश, मुनिविशेष, महाभारत में वर्णित एक नगर।
कौरा दे० (पु०) द्वार का वह भाग जिससे दरवाजा खुले रहने पर किवाड़ चिपटे रहते हैं।
कौरी दे० (पु०) कोना, गोदी, आलिङ्गन।
कौल तत्० (गु०) सत्कुलोद्भव, कुलीन, तान्त्रिकों के अनुसार कुलाचार नामक वाममार्ग के उपासक, सद्वंशज, महाज्ञानी, कवल। (पु०) प्रण, वादा।
कौलव तत्० (पु०) एकादश करणों में का तीसरा करण।
कौलिक तत्० (गु०) कुलपरम्पराप्राप्त, कुलपरम्परानुसार कार्यकारी। (पु०) शाक्त मतानुयायी, तन्तुवाय, ताँती, पाखण्डी।
कौली दे० (स्त्री०) अँकवार, गोदी।
कौलेय तत्० (पु०) कुकुर, कुत्ता।
कौलेली दे० (पु०) गन्धक।
कौवा दे० (पु०) काग, कौआ, कव्वा।
कौवाली दे० (स्त्री०) एक प्रकार का गान विशेष।
कौवेर तत्० (पु०) कुवेर सम्बन्धी, कुवेर का, कूट नाम औषधि, उत्तर दिशा।
कौवेरी तत्० (स्त्री०) उत्तरदिशा, कुवेर की शक्ति।
कौशल तत्० (गु०) अवधपुरवासी, निपुणता, दक्षता, मङ्गल, चतुराई।
कौशली तत्० (स्त्री०) कुशलात, जुहार, कुशल प्रश्न।
कौशल्या तत्० (स्त्री०) राजा दशरथ की पटरानी, श्रीरामचन्द्र जी की ये माता थीं, ये दक्षिण

कोशल के राजा की कन्या थीं और रामचन्द्र जी के अश्वमेध यज्ञ समाप्त होने पर इन्होंने परलोक यात्रा की, (२) पुरुराज की स्त्री, (३) सत्यवान् की स्त्री, (४) धृतराष्ट्र की माता, पञ्चमुखी आरती।

कौशाम्बी तत्० (स्त्री०) वत्सदेश की राजधानी का नाम, प्रयाग से ३० मील दक्षिण पश्चिम की ओर है।

कौशिक तत्० (पु०) महर्षि विश्वामित्र का दूसरा नाम, ये महाराज कुशिक के वंश में उत्पन्न हुए थे, गाधिराज इनके पिता का नाम है, इन्द्र, उल्लू, नेवला, रेशमीवस्त्र, मज्जा।

कौशिकी तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम जो दरभङ्गा के पूरब की ओर बहती है, भागलपुर के उत्तरी भाग में जो पुरनिया के पश्चिम की ओर है। आज कल इसको कुशी कहते हैं। इसी नदी के तीर पर महर्षि ऋष्यशृङ्ग का आश्रम था, चण्डिका, एक रागिनी, काव्य की प्रथम वृत्ति।

कौशेय तत्० (पु०) पटवस्त्र, पीताम्बर, रेशमी धोती आदि।

कौसुम्भ तत्० (पु०) वनकुसुम, कोमल शाक विशेष।

कौस्तुभ तत्० (पु०) विष्णु वक्ष:स्थित मणि मुद्रा विशेष।

क्या दे० (अ०) प्रश्नार्थक, किं, वाह।

क्यारी दे० (स्त्री०) घेरा, मेंड़, उपवन, चमन।

क्यों दे० (अ०) किस लिये, काहे को, कैसा।

क्योंकर दे० (अ०) किस प्रकार, कैसा, किस तरह।

क्योंकि दे० (अ०) इसलिये, इस कारण, किन्तु।

क्रकच तत्० (पु०) करपत्र, आरा, करांती, करील का पेड़, नरक विशेष, गणित की एक विशेष क्रिया।

क्रतक तत्० (पु०) वासुदेव के एक पुत्र का नाम।

क्रतु तत्० (पु०) यज्ञ, याग, पूजा, वैदिककर्म विशेष, निश्चय, सङ्कल्प, इच्छा, विवेक, इन्द्रिय, जीव, विष्णु, आषाढ़, ब्रह्मा के एक मानस पुत्र विश्वेदेवों में से एक, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, प्लक्ष द्वीप की एक नदी।—द्वेषी (पु०) असुर, दानव, दैत्य, नास्तिक।—ध्वंसी (पु०) शिव, महादेव, इन्होंने दक्षप्रजापति का यज्ञ ध्वंस किया था।—पुरुष (पु०) नारायण, विष्णु। —भुज (पु०) देवता, अमर, देव।—विक्रय (पु०) धन लेकर यज्ञ के फल बेचने वाला।

क्रतुमाली दे० (स्त्री०) ओषधि विशेष, किरवाली।

क्रथन तत्० (पु०) सफेद चन्दन, ऊँट।

क्रन्दन तत्० (पु०) अश्रुपात, रोदन, कांदना, रोना। —कारी (गु०) विलाप करने वाला, रोदन करने वाला।

क्रन्दित तत्० (गु०) अनुशोचित, विलपित, रोदित।

क्रम तत्० (पु०) परिपाटी, रीति, वैदिक विधान, कल्पविधि, अनुक्रम, भाँति, शक्ति, आक्रमण, चलन, तुलसीदास जी ने क्रम को कर्म का अपभ्रंश बना कर प्रयोग किया है। जिसका अर्थ है, कर्मणा।

यथा—"मन क्रम वचन चरन रत होई।"

—क्रम (पु०) शनै: शनै:।—भङ्ग (पु०) अनियम, विधिहीनता, साहित्य का एक दोष। —योग (पु०) विधि नियोग।—संन्यास (पु०) आश्रम क्रम से लिया हुआ संन्यास।—गत (गु०) क्रम प्राप्त, क्रमान्वय, परम्परागत।—ानुयायी (गु०) विहित, व्यवस्थित, नियमानुकूल।—ानुसार (अ०) क्रम क्रम से, नियमानुसार।—ान्वय (गु०) क्रमानुयायी, यथाक्रम, क्रमागत, एक के बाद एक।

क्रमण तत्० (पु०) पैर, पाँव, पारे के जो अठारह संस्कार किये जाते हैं उन में से एक। [थोड़ा करके।

क्रमश: (वि०) धीरे धीरे, क्रम से, सिलसिलेवार, थोड़ा

क्रमिक तत्० (वि०) क्रमश:।

क्रमुक तत्० (पु०) सुपारी कसैली, नागरमोथा, कपास का फल, पठानी लोध, एक देश का नाम।

क्रमेल, क्रमेलक, तत्० (पु०) ऊँट, उष्ट्र।

क्रय तत्० (पु०) द्रव्य देकर वस्तु लेना, मूल्य द्वारा पदार्थ ग्रहण, मोल लेना, ख़रीदना।—क्रीत ख़रीदा हुआ।—विक्रय (पु०) लेन देन, व्यापार।

क्रयणीय तत्० (गु०) क्रेय, क्रेतव्य, मोल लेने योग्य।

क्रयिक तत्० (पु०) क्रेता, मोल लेनेवाला, ख़रीदार।

क्रयी तत्० (गु०) क्रयकर्ता, मोल लेने वाला।

क्रय्य तत्० (गु०) बेंचने के लिये बाज़ार में फैलाई हुई वस्तु।

क्रव्य तत्० (पु०) मांस, गोश्त।

क्रव्याद तद्० (पु०) चिता की आग, माँस खाने वाला।

क्रान्त तद्० (गु०) आक्रमित, पददलित, दग्दबा, ढका हुआ।

क्रान्ति तद्० (स्त्री०) आक्रमण, उपद्रव, अत्याचार गति, खगोल के बीच में किञ्चित् वक्र रेखा, सूर्य पथ, दीप्ति प्रकाश, फेरफार, हेरफेर, उलटफेर। —वृत्त (स्त्री०) सूर्य का मार्ग।—मण्डल (पु०) राशिचक्र। [उत्पन्न हो जाते हैं।

क्रिमि (पु०) कीड़ी, पेट का रोग जिसमें पेट में कीड़े

क्रिय तद्० (पु०) मेषराशि।

क्रियमाण तद्० (गु०) व्यवहारान्वित, प्रारब्धकर्म, चार प्रकार के कर्मों का एक भेद।

क्रिया तद्० (स्त्री०) व्यवहार, कृत्य, कार्य, कर्म, शपथ, व्यापार, श्राद्ध, व्याकरण का वह भाग जिससे किसी कर्म का होना या किया जाना विदित हो, उपाय, विधि।—न्वित (गु०) कर्मान्वित।—पटु (गु०) चतुर, प्राज्ञ, दक्ष, विदग्ध।—पर (गु०) कर्मठ, सुकर्मा, पटु। —पाद (पु०) चतुष्पाद, व्यवहार का तीसरा पाद, साक्षियों का शपथ करना।—वसन्त (गु०) पराजित।—वान् (गु०) कर्मोद्यत, कर्मउद्योगी, कर्म में नियुक्त।—विशेषण (पु०) अव्ययशब्द।—रूप (पु०) धातुरूप आख्यात। —लोप (पु०) कर्म में विरक्ति, कर्म निवृत्ति।

क्रीट (पु०) मुकुट, किरीट, सिर पर धारण किया जाने वाला गहना।

क्रीडनक तद्० (पु०) खेल, खेलने की वस्तु।

क्रीडा तद्० (पु०) खेल, केलि, कौतुक, कर्म परिहास।—वन (पु०) प्रमोदवन, केलिकानन।— मृग (पु०) खेल के पशु, वानर आदि।

क्रीत तद्० (पु०) मूल्य द्वारा गृहीत, ख़रीदा हुआ। —पुत्र (पु०) बारह प्रकार के पुत्रों में से एक पुत्र।

क्रुद्ध तद्० (गु०) क्रोधित, कोपान्वित

क्रुमुक तद्० (पु०) सुपारी, पुंगीफल।

क्रुष्टा तद्० (पु०) शृगाल, सियार।

क्रूर तद्० (वि०) परद्रोही, निर्दय, नृशंस, कठिन। (पु०) प्रथम, तृतीय, पञ्चम, सप्तम, नवम और एका दश राशि, मति, लाल, कनेर, बाज पक्षी, सफ़ेद चील, रवि, मङ्गल, शनि, राहु केतु।—कर्मा (गु०) भयङ्कर कर्म करने वाला, दुरात्मा, निष्ठुर-कर्मकारी। (पु०) सूरजमुखी, तितलौकी का पेड़। —गन्ध (पु०) उग्रगन्ध, तीखा गन्ध, गन्धक। —ग्रह (पु०) रवि, मङ्गल, शनि, राहु, केतु क्रूर ग्रह माने गये हैं, विषम राशि।—ता (स्त्री०) खलता, निष्ठुरता, निर्दयता।—लोचन (पु०) शनिग्रह, शनैश्चर।—स्वरा (पु०) कर्कश ध्वनियुक्त भयङ्कर शब्द।—कार (पु०) रावण, भयङ्कर आकार।—चार (गु०) भयानक, नृशंस, निठुर। [योग्य।

क्रेतव्य तद्० (गु०) क्रेय वस्तु, क्रयणीय, ख़रीदने

क्रेता तद्० (गु०) क्रयकर्ता, ख़रीदार।

क्रेय तद्० (गु०) क्रयणीय, ख़रीदने योग्य।

क्रोड तद्० (पु०) दोनों बाहु के बीच का भाग, अङ्क कोला, वक्षस्थल।—पत्र (पु०) अतिरिक्त पत्र, प्रधान पत्र के साथ दूसरा पत्र।

क्रोध तद्० (पु०) कोप, रोष, अमर्ष, ब्रह्मा के भौंह से उत्पन्न, शरीरधारियों के स्वाभाविक छ शत्रुओं के अन्तर्गत एक शत्रु, साठ सम्वत्सरों में उनसठवाँ सम्वत्सर।—मूर्च्छित (पु०) सुगन्ध द्रव्य विशेष, (गु०) अतिकोपी।—तुर (गु०) क्रोधी।— न्ध (गु०) क्रोध से अन्धा।

क्रोधन तद्० (पु०) क्रोधी, क्रोधयुक्त, क्रोधान्वित (१) कौशिक के एक पुत्र का नाम। (२) अयुत के पुत्र और देवातिथि के पिता का नाम। (३) एक सम्वत्सर का नाम।

क्रोधित तद्० (गु०) प्रकुपित, क्रोध दीप्त क्रुद्ध।

क्रोधी तद्० (गु०) क्रोधयुक्त, रागी, रिसहा।

क्रोश तद्० (पु०) चार हज़ार या आठ हज़ार हाथ के मार्ग की लम्बाई, कोस।

क्रोष्टा तद्० (पु०) शृगाल, सियार, गीदड़।

क्रौञ्च तद्० (पु०) बकपक्षी, पर्वतविशेष, जिसके लिये परशुराम और कार्तिकेय दोनों लड़े थे। द्वीपभेद, एक राक्षस का नाम जो यमदानव का पुत्र था, एक प्रकार का शस्त्र।—द्वीप (पु०) सात महाद्वीपों के अन्तर्गत एक द्वीप।

क्रौर्य तत्० (पु०) क्रूरता, निष्ठुरता।
क्लान्त तत्० (पु०) श्रान्त, थका हुआ, थका माँदा, थकित।—मना (पु०) श्रान्तमन, उद्विग्नचित्त, विपद्युक्त।
क्लान्ति तत्० (स्त्री०) श्रान्ति, श्रम, परिश्रम, थकावट।—कर (गु०) श्रमजनक, श्रान्तिकर।—च्छिद (गु०) विश्राम, रात्रय। [मैला।
क्लिन्न तत्० (गु०) आर्द्र, भीगा, सजल, गीला, क्लेदयुक्त,
क्लिशित तत्० (गु०) क्लेशयुक्त, दुःखी पीड़ित, क्लिष्ट।
क्लिश्यमान तत्० (गु०) सन्तापित, पीड़ित।
क्लिष्ट तत्० (पु०) पूर्वापर विरुद्ध वाक्य, दुःखी, कठिनता से सिद्ध होने वाला।—ता (स्त्री०) कठिनाई, आपत्ति।—कर्मा (पु०) नृशंस कर्म करने वाला, पीड़ित।
क्लीब तत्० (पु०) नपुंसक, पुरुषार्थ हीन, निर्बल, हिजड़ा, कायर, डरपोक। [गीलापन, मैल।
क्लेद तत्० (पु०) आर्द्रता, स्वेद, पसीना, भोदापन
क्लेदन तत्० (पु०) पसीना लाने की क्रिया, पाँच प्रकार के कफ़ के अन्तर्गत कफ़ विशेष।
क्लेदित तत्० (गु०) भींगा हुआ, आर्द्र, स्वेदित।
क्लेश तत्० (पु०) दुःख यन्त्रणा, उत्पात, पीड़ा, कष्ट, आयास, भय।—कर (गु०) दुःखदायक, कष्टदायक।—द (गु०) दुःखकर, व्यथा देने-वाला।—वान् (गु०) आपत्तिग्रस्त, आपन्न, दुर्गत।—पह (गु०) क्लेशनाशकारी।
क्लेशित तत्० (गु०) क्लेश विशिष्ट, दुःखयुक्त, क्लिष्ट।
क्लैव्य तत्० (पु०) दुर्बलता, मानसिक निर्बलता, अनुत्साह। [बहुत कम।
क्वचित् तत्० (क्रि० वि०) कभी, कुछ नहीं, कोई,
क्वण तत्० (पु०) ध्वनि, वीणा आदि का शब्द।
क्वाथ तत्० (पु०) काढ़ा, निर्यास। [(पु०) कुमारपन।
क्वार (पु०) आश्विनमास, आसोज महीना।—पन
क्वारा तत्० (वि०) बिन ब्याहा, कुँआर।
क्षई तत्० (स्त्री०) क्षयरोग, कफ़ और रक्त का निकलना, सूखी खाँसी।
क्षण तत्० (पु०) कालविशेष, तीस कला परिमित समय, दशपल परिमित समय, उत्सव, पर्व, अवसर, सूक्ष्मकाल, छन, लहमा।—द तत्० (पु०) जल, ज्योतिषी, रतौंधिया, जिसे रात में न दीखे।—दा (स्त्री०) रात्रि, निशा।—दाकार तत्० (पु०) चन्द्रमा।—दान्ध (पु०) रात के अन्धे, प्राणीविशेष, उल्लू।—द्युति (स्त्री०) विद्युत्, चपला, बिजली।—ध्वंसी (गु०) अतिशय अस्थिर, क्षणमात्र ही में नष्ट होने वाला।—भंगुर (गु०) क्षण ही में नष्ट होने वाला, विनाशी।
क्षणक तत्० (पु०) क्षण, काल।
क्षणमति तत्० (अ०) सतत, अनवरत बराबर।
क्षणरुचि तत्० (स्त्री०) बिजली, चमक प्रकाश।
क्षणिक तत्० (गु०) क्षणमात्र स्थायी, अल्पकाल स्थितिशील।
क्षणिका तत्० (स्त्री०) बिजली, तड़ित।
क्षणिनी तत्० (स्त्री०) रात, निशा।
क्षत तत्० (पु०) घाव, चोट, व्रण, फोड़ा। (वि०) जिसे चोट लगी हो, जिसके घाव लगा हो।—कास (पु०) कास रोगविशेष।—ज (पु०) रक्त, शोणित, रुधिर, लोहू।—व्रत (गु०) नष्ट व्रत।—व्रण (पु०) चोट लगे हुए स्थान को चीरने से जो घाव होता है, उसे क्षतव्रण कहते हैं।
क्षतघ्नी तत्० (स्त्री०) लाख, लाह।
क्षतज तत्० (वि०) क्षत से उत्पन्न, जाला। (पु०) रुधिर, वह प्यास जो शरीर में घाव लगने पर लगती है।
क्षतयोनि तत्० (वि०) वह स्त्री जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका है।
क्षतरानी दे० (स्त्री०) क्षत्रियानी।
क्षतविक्षत तत्० (वि०) बहुत चुटीला, लहू लुहान।
क्षता (स्त्री०) विवाह होने के पूर्व पर पुरुष से भोगी हुई कन्या। [क्षय।
क्षति तत्० (स्त्री०) अपकार, अनिष्ट, हानि, अपचय,
क्षत्ता तत्० (पु०) सारथि, दरबान, मछली, शूद्र के औरस से क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष, दासी पुत्र, नियोग करने वाला पुरुष।
क्षन्तव्य (वि०) माफ़ करने योग्य क्षमा करने योग्य।
क्षत्र तत्० (पु०) बल, राष्ट्र, धन शरीर, जल।—कर्म (पु०) क्षत्रियोचित कर्म।—बन्धु (पु०) निन्दित क्षत्रिय।—धारी (पु०) राजा, भूपाल।—पति (पु०) नृप, राजा।—न्तक (पु०) परशुराम।

क्षत्रिय तत्० (पु०) ब्रह्म के बाहु से उत्पन्न वर्ण विशेष, क्षत्री, राजन्य, दूसरा वर्ण।—ा (स्त्री०) क्षत्रिय जाति की स्त्री।—ाणी (स्त्री०) क्षत्रिय स्त्रीजाति, क्षत्रिय पत्नी।

क्षत्रिन दे० (स्त्री०) क्षत्रिय जाति की स्त्री।

क्षत्री तत्० (पु०) देखो क्षत्रिय।

क्षपणक तत्० (वि०) निर्लज्ज। (पु०) बुद्धविशेष, संन्यासी, उन्मत्त, राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों का दूसरा रत्न। इसका बनाया कोई ग्रन्थ अब तक न देखा गया है और न सुना ही गया है। अभी तक इसका भी पता नहीं लगा है कि किस नाम का ग्रन्थ इसने बनाया था। परन्तु फुटकल श्लोक इसके नाम से पाये जाते हैं। यह विक्रम के समकालीन था, इसका भी समय खृष्टीय छठी शताब्दी माना जाता है।

क्षपा तत्० (स्त्री०) रजनी, रात्रि, निशा, हल्दी।—कर (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क, कपूर।—नाथ (पु०) चन्द्रमा, कपूर।

क्षपान्त (पु०) प्रातःकाल, सवेरा, भोर।

क्षम तत्० (गु०) योग्य, समर्थ, उपयुक्त।—ता (स्त्री०) सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता।

क्षमना तद्० (क्रि०) सहना, क्षमा करना, मुआफ़ करना।

क्षमा तत्० (स्त्री०) सहिष्णुता, सहन करने की शक्ति, पृथ्वी, अपराध-मार्जन, दया, रात्रि, दुर्गा, कृपा, अपराधशुद्धि, एक वर्णवृत्ति, राधिका की एक सखी।—वान् (गु०) दयालु, क्षमा करनेवाला, धैर्यशील, सहिष्णु।—शील (वि०) क्षमावान्।

क्षमापन तत्० (पु०) क्षमा करना, अपराध मार्जन कराना।

क्षमिय दे० (गु०) क्षमा कीजिये, मुआफ़ कीजिये।

क्षमिता तत्० (गु०) क्षमाशील, सहिष्णु।

क्षमी तत्० (गु०) क्षमाशील, क्षमावान्।

क्षम्य तत्० (वि०) माफ़ करने योग्य।

क्षय तत्० (पु०) रोगविशेष, यक्ष्मारोग, घर, विनाश, प्रलय, अपचय, धीरे धीरे घटना, साठ संवत्सरों में अन्तिम संवत्सर, ज्योतिष मतानुसार एक मास विशेष।—काल (पु०) प्रलयकाल। कास (पु०) यक्ष्माकास, राजरोग।—थु (पु०) खांसी।—पक्ष (पु०) कृष्णपक्ष।—मास, मलमास, अधिमास।

क्षयी तत्० (वि०) नष्ट होने वाला, क्षयरोग का रोगी। (पु०) चन्द्रमा।

क्षरण तत्० (पु०) स्रवण, स्राव, चूना, झड़ना, टपकना।

क्षान्त तत्० (गु०) सहनशील, सन्तोषी, धीर, सहिष्णु, क्षमान्वित।

क्षान्ति तत्० (स्त्री०) शक्ति रहने पर भी किसी का अपकार न करना।

क्षात्र (वि०) क्षत्रिय सम्बन्धी।

क्षाम तत्० (गु०) क्षीण, दुर्बल, निर्बल।—कण्ठ (गु०) सूखा कण्ठ, मन्दशब्द।

क्षार तत्० (पु०) खार, भस्म, नोना, सज्जी, काँच, गुड़, लवणविशेष, समुद्रीलवण।—पत्र (पु०) बथुआ, शाक विशेष।—भूमि (स्त्री०) खारी भूमि, ऊसर खेत।—मृत्तिका (स्त्री०) खारी-मिट्टी।—श्रेष्ठ (पु०) ढाकवृक्ष, पलास।—सिन्धु (पु०) लवण समुद्र।

क्षालन तत्० (पु०) प्रक्षालन, धोना, स्वच्छ करना।

क्षिति तत्० (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, मेदनी, अवनि, धरती, गोरोचन, क्षय, प्रलयकाल।—ज (पु०) भौमासुर, मङ्गल ग्रह, धातु उपधातु आदि जो पृथ्वी से निकलते हैं, नरकासुर, केंचुआ, वृक्ष। मैदान में खड़े होने या और चारों ओर देखने पर चारों ओर दिखलाई पड़ने वाला वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी मिली जान पड़े।—नाथ (पु०) राजा, शासक, रक्षक।—पाल (पु०) राजा, नृपति।—मण्डन (पु०) भद्र, आदर्श पुरुष।

क्षितीश तत्० (पु०) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल।

क्षितीश्वर तत्० (पु०) प्रभु, स्वामी, महीश।

क्षिप्त तत्० (गु०) फैलायी गयी, त्यक्त, अपमानित, पतित, वात रोग ग्रस्त, पागल।

क्षिप्र तत्० (पु०) शीघ्र, उतावला, अविलम्ब।—हस्त (वि०) फुर्तीला, फुर्ती से काम करने वाला।

क्षीण तत्० (गु०) निर्बल, दुर्बल, कृश, दुबला पतला।—ता (स्त्री०) कमी, घटी, हानि।—ाङ्ग (गु०) दुर्बलाङ्ग।

क्षीर तत्० (पु०) दूध, दुग्ध, पय।—कण्ट (पु०)

यथा, दुग्धमुहाँ याळक।—नीर (न०) अभेद-भाव, गाढ़ मैत्री।—घृत (पु०) मक्खन।—धि (पु०) समुद्र।—समुद्र (पु०) दूध का समुद्र
क्षीरस्वामी तद्० (पु०) प्रसिद्ध संस्कृत कवि, ये काश्मीर के महाराज जयापीड़ के राज्यकाल में विद्यमान थे, राजतरङ्गिणी में जयापीड़ का समय ७०० शाके अर्थात् ७७६ ई० से लेकर सन् ८१२ ई० तक दिया गया है और यह भी लिखा है कि क्षीरस्वामी जयापीड़ के गुरु थे। क्षीरस्वामी ने अमरकोश की टीका लिखी है तथा और भी व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे हैं।
क्षीरी तद्० (स्त्री०) वृक्ष और फल विशेष, खीरी, थन।
क्षीरोद,तत्० (पु०) क्षीर समुद्र।—तनया (स्त्री०) लक्ष्मी, रमा, कमला। [चित्त, खेदयुक्त मन।
क्षुण्ण तद्० (पु०) चूर्णीकृत, दुःखित, सन्तापयुक्त
क्षुत् (स्त्री०) भूख, क्षुधा।
क्षुत्पिपासा तद्० (स्त्री०) भूख प्यास।
क्षुत (पु०) छींक।
क्षुद्र तद्० (पु०) चावल के छोटे टुकड़े। (वि०) अल्प, थोड़ा, नीच, अधम।—घण्टिका (स्त्री०) कटि-भूषण, करधनी।—ता (स्त्री०) अल्पता, नीचता, अधमता।—बुद्धि (वि०) नीच बुद्धि।
क्षुद्रा (स्त्री०) नीच स्त्री वेश्या, रंडी, जटामाँसी, माल-घर, मधुमक्खी विशेष, कौड़ियाला, हिचकी।
क्षुद्राशय (वि०) कमीना, नीच।
क्षुधा तद्० (स्त्री०) क्षुधा, बुभुक्षा, खाने की इच्छा, भूख।—तुर (पु०) क्षुधा से व्याकुल, क्षुधापीड़ित।—लु (वि०) भुक्खड़।—वन्त (पु०) भूखा, अत्यन्त भूखा।
क्षुधित तद्० (पु०) क्षुधान्वित, बुभुक्षित, भूखा।
क्षुप (पु०) कटीला वृक्ष, रतिबंध, श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। [क्षुब्ध।
क्षुब्ध तद्० (वि०) चञ्चल, अधीर, विह्वल, भयभीत,
क्षुभित (वि०) क्षुब्ध।
क्षुर तद्० (पु०) अस्तुरा, छुर, खुरा, खुर, मूँज।—क (पु०) गोखरू, वृक्ष विशेष।—धार (पु०) नरक विशेष, वाण विशेष।
क्षुरप्र (पु०) खुरपा, पैना वाण।
क्षुरिका (स्त्री०) छुरी, पालकी का शाक।
क्षुरी (पु०) नाई, खुर वाला पशु, छुरी।
क्षुल्लक तद्० (पु०) थोड़ी, नीच, क्षुद्र।
क्षेत्र तद्० (पु०) खेत, पुण्य भूमि, शरीर, राशि, स्त्री, तीर्थ, सिद्धस्थान, द्रव्य, प्रकृति, गृह, नगर।—गणित तद्० (पु०) क्षेत्रों के मापने और उनके क्षेत्रफल निकालने की विधि विशेष बतलानेवाली गणित विद्या विशेष।—ज (पु०) अपनी स्त्री से दूसरे के द्वारा उत्पादित पुत्र।—ज्ञ (पु०) आत्मा, जीव, शरीर का देवता।—देवता (पु०) खेतों के अधिष्ठाता देवता।—फल (पु०) खेत की लंबाई-चौड़ाई।—पाल (पु०) देवता विशेष, खेत का रक्षक, किसान।—वित (पु०) कृषिशास्त्र वेत्ता।—जीव (पु०) कृषक, कर्षक।—धिप (पु०) खेत के अधिष्ठाता देवता, मेघ आदि, बारह राशियों के स्वामी, खेत का स्वामी ज़मींदार।
क्षेप तद्० (पु०) त्याग, फेंकना, ठोकर, शर, निन्दा, छुरी, बिताना।
क्षेपक तद्० (पु०) क्षेपकर्ता, त्यागी, क्षेपकारक, ग्रन्थों में मिला हुआ, उपकथाओं का भाग, ग्रन्थों का अतिरिक्त या अशुद्ध अंश, निन्दनीय भाग।
क्षेपण तद्० (पु०) प्रेरण, फेंकना, गुज़ारना, अपवाद।
क्षेपणी (स्त्री०) नाव का डंडा और बल्ली।
क्षेम तद्० (स्त्री०) कुशल मङ्गल, भलाई, धर्मशासन के द्वारा उत्पन्न किया सुख, प्राप्त-वस्तु की रक्षा।—कृत (पु०) कल्याणकारक, मङ्गलकर्ता।—कर शुभकर, मङ्गलकर।—कर्ण (पु०) अर्जुन का पुत्र जन्मेजय का सखा।—कुशल (पु०) आरोग्य मङ्गल।
क्षेमकरी (स्त्री०) देवी का नाम, कुशल करने वाली।
क्षेमेन्द्र तद्० (पु०) ये कश्मीर निवासी एक प्रसिद्ध कवि हैं, कश्मीर के राजा अनन्तदेव के समय में ये कश्मीर में वर्तमान थे। इनका समय ग्यारहवीं शताब्दी निश्चित हुआ है। कम से कम इनके बनाये २६—३० ग्रन्थ इस समय प्रसिद्ध हैं। इनकी कविता शक्ति और लौकिक ज्ञान विलक्षण था। इनके ग्रन्थों में एक का नाम "अवदान कल्पलता" है। इसमें बौद्ध महात्माओं का हाल दिया है।
क्षोणि तद्० (स्त्री०) पृथ्वी, मेदिनी, अवनी, एक

की संख्या।—ग (पु०) चितिग। (पु०) मङ्गल। —प (पु०) राजा, नरपति।—देव (पु०) ब्राह्मण, भूसुर।

क्षोणी तद्० (स्त्री०) पृथिवी, भूमि।—पति (पु०) नरेश, राजा।

क्षोद (पु०) बुकनी, चूर्ण, चूर्ण करने की क्रिया।

क्षोभ या क्षोभू तद्० (पु०) क्रोध, पश्चात्ताप, विचलता रंज, क्षोभ, मोह, ममता।

क्षोभित तद्० (वि०) व्याकुल, चलायमान, रंजीदा।

क्षौणि, क्षौणी तद्० (स्त्री०) देखो क्षोणी।

क्षौद्र (पु०) मधु, शहद, जल, धूल, चंपा का पेड, एक वर्णसङ्कर जाति।—ज (पु०) मधु से उत्पन्न पदार्थ।

क्षौम तद्० (पु०) कपड़ी, पट्टवस्त्र, घर या अटारी के ऊपर का कोठा, अटा।

क्षौर तद्० (पु०) क्षुरकर्म, बाल बनाना, मुण्डन।

क्षौरक या क्षौरिक तद्० (पु०) छुरा, नाई, नापित।

क्ष्मा तद्० (स्त्री०) धरणी, धरा, पृथिवी, एक की संख्या।—तल (पु०) धरातल, भूतल, पृथिवी-तल।—भुक् (पु०) भूमिभोक्ता, राजा।—भृत् (पु०) राजा, नृपति, पर्वत, पहाड़।

ख

ख नागरी वर्णमाला में प्रथम कवर्ग का दूसरा अक्षर जिसका उच्चारण कण्ठ से होता है।

ख तद्० (पु०) आकाश, गगनमण्डल, शून्य, बिन्दु गृहछिद्र, देवलोक, इन्द्रिय, सुख, ब्रह्म।

खई तद्० (स्त्री०) मुर्चा, मैल, जङ्ग, तकरार, लड़ाई।

खखारना दे० (क्रि०) खाँसना, कफ़ निकालना, दूसरे का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने को शब्द विशेष करना।

खखोरना दे० (क्रि०) कुरचना, कोड़ना, खोदना, छिप कर कोई अज्ञात वस्तु तलाश करना।

खग तद्० (पु०) पक्षी चिड़िया, आकाशगामी वायु, ग्रह, खेचर, तारा, बादल, देवता, सूर्य, चन्द्रमा गन्धर्व।—केतु (पु०) गरुड़ध्वज, श्रीविष्णु।—नाथ, नायक (पु०) सूर्य चन्द्रमा, गरुड़।—नाह (पु०) वैनतेय, गरुड़, पक्षिराज।—पति (पु०) गरुड़सूर्य, चन्द्रमा।—माला (स्त्री०) पक्षी समूह।—हा (पु०) पक्षिघाती, गैंडा, बाज, व्याध।

खगेन्द्र तद्० (पु०) पक्षिराज, गरुड़।

खगेश तद्० (पु०) पक्षियों का स्वामी गरुड़, चन्द्रमा।

खगोल तद्० (पु०) आकाश-मण्डल।—विद्या तद्० (स्त्री०) ग्रह आदि की गति का ज्ञान करानेवाली विद्या विशेष।

खग्ग तद्० (स्त्री०) खड्ग, तलवार, खाँड़ा [घटना।

खङ्गना दे० (क्रि०) कम होना, घटना (पु०) न्यूनता,

खङ्गर दे० (पु०) झामा, लोहे का मैल, लोहचून।

खङ्गार या खकार दे० (पु०) थूक, कफ़।

खङ्गालना या खगारना दे० (क्रि०) धोना, बर्तन साफ़ करना, अचाँसना।

खङ्गैल (गु०) दँतैला, बड़े बड़े दाँत वाला।

खचना दे० (क्रि०) सम्मिलन करना, जोड़ना, सटाना, रेखा करना।

खचर तद्० (पु०) आकाशगामी, नभचर, पक्षी, नक्षत्र, वायु, तीर, राक्षस कसीस, ताल या रूपक विशेष।

खचरा तद्० (वि०) दोगला, दुष्ट।

खचा दे० (गु०) खचित, जड़ित, जड़ाऊ, जड़ा हुआ, खींचा हुआ। [खींचकर।

खचाई दे० (स्त्री०) बनवाई, निर्मित कराई, खींची,

खचाखच दे० (पु०) ठसाठस।

खचित तद्० (गु०) जड़ित, जड़ाऊ, निर्मित, लिखित।

खचिया (स्त्री०) टोकरी, झौआ।

खची दे० (स्त्री०) बनी, निर्मित।

खचीना दे० (स्त्री०) लकीर, रेखा।

खच्चर दे० (पु०) पशु विशेष, गदही और घोड़े के संयोग से उत्पन्न पशु।

खजरा दे० (गु०) मिला हुआ, मिलावटी, मगरा, बयडेरी छप्पर के बीच का उठा हुआ भाग।

खजला (पु०) खाजा।

खज़ानची (पु०) कोषाध्यक्ष, रोकड़िया।

खजाना (पु०) कोष, धनागार।
खजुआ, खजुवा दे० (पु०) खाजा, मिठाई।
"दोनों मेलि धरे हैं खजुआ"—सूरदास। घास विशेष, मटनास।
खजुली (स्त्री०) खाज, खुजली, छोटा खाजा।
खजूर तद्० (पु०) छुहारे का एक भेद। [विशेष।
खजूरा दे० (पु०) गोजर, कनगोजर, विषैला कीट
खजूरिया दे० (पु०) खजूर। [की ज्योति।
खज्योति तद्० (पु०) आकाश का प्रकाश, आकाश
खञ्ज तद्० (पु०) लङ्गड़, लूला, पगु, विकलगति।—ता (स्त्री) चलने का अभाव, पंगुत्व, लूलापन।
खञ्जन तद्० (पु०) खञ्जरीट, पक्षी विशेष, खड़ैचा, खड़लीच।
खञ्जर दे० (पु०) कटारी, अस्त्र विशेष, दाव।
खञ्जरी दे० (स्त्री०) वाद्य विशेष, खञ्जरी।
खञ्जरीट या खञ्जरीर तद्० (पु०) खञ्जन पक्षी।
खञ्जा (स्त्री०) वृत्त विशेष जिसके सम चरणों में २८ लघु और अन्त में १ गुरु होता है, तथा विषम पदों में ३० लघु और अन्त में १ गुरु होता है।
खट दे० (स्त्री०) खाट, कफ, अंधा कुआँ, धूसा, कुल्हाड़ी, षट्, छः, खटखट ध्वनि।
खटक दे० (पु०) खटका, शङ्का, सन्देह, संशय।
खटकना दे० (क्रि०) बजाना, झगड़ना, खलना, सन्देह हो जाना, शब्द होना, चिन्ता होना।
खटका तद्० (पु०) सन्देह, भय, चिन्ता, पेच, कील, कमानी जिसके दबाने से किवाड़ या पल्ला खुले मुंदे। [ध्वनि के द्वारा सूचना, बजना, ठुकराना।
खटकाना दे० (क्रि०) आहट देना, शब्द करना,
खटकीरा (पु०) खटमल।
खटखट (स्त्री०) झगड़ा, झंझट, बखेड़ा। [ध्वनि करना।
खटखटाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, ठोकना, खट खट
खटखप्पर दे० (पु०) खप्पर खट, खाट का एक भेद, शय्या।
खटना दे० (क्रि०) चलना, ठहरना, टिक रहना।
खटपट दे० झगड़ा, लड़ाई विरोध।
खटपटिया (वि०) झगड़ा, टटारी, बखेड़िया।
खटपाटी लेना दे० (स्त्री०) हठ दिखाने को स्त्रियों का काम धन्धा खाना पीना आदि छोड़ना।
खटबुना दे० (पु०) खाट बुनने वाला, जटबुनवा।
खटमल दे० (पु०) खटकीरा, मत्कुण।
खटमिट्ठा (वि०) कुछ खट्टा और कुछ मीठा। [बखेड़ा।
खटराग दे० (पु०) अनमेल, विरोध, बेजोड़, झंझट,
खटला दे० (पु०) परिवार, बाला, स्त्रियों के कानों के वे छेद जिसमें वे बालियाँ पहिनती हैं।
खटवा तद्० (स्त्री०) खाट, खटूला, पलङ्ग, शय्या।
खटाई दे० (स्त्री०) खट्टापन, अम्लता, अमचूर, इमली।
खटाका दे० (पु०) भयङ्कर ध्वनि, धड़ाका, धटाका।
खटापटी दे० (स्त्री०) अनबन, विरोध, बैर, झगड़ा, लड़ाई।
खटाव दे० (पु०) निर्वाह, नाव बाँधने का खूँटा।
खटास दे० (स्त्री०) खटाई, खट्टापन, (पु०) चार पैर का बिल्ली की जाति का जन्तु विशेष, गन्धबिलाव।
खटाहि दे० (क्रि०) स्थिर रहते हैं, ठहरे रहते हैं, पड़े रहते हैं, खर्च होते हैं।
खटिक, खटीक दे० (पु०) जाति विशेष, बहेलिया।
खटिका तद्० (स्त्री०) लड़कों के लिखने की खटी, सेलखड़ी।
खटिया दे० (स्त्री०) खाट, शय्या, चारपाई।
खटोला दे० (पु०) पालना, मंझा, छोटी खटिया।
खट्टा दे० (गु०) अम्ल, अम्वत, तुरसाई, अम्लता।
खट्टिक दे० (पु०) खटीक, बहेलिया।
खट्टू दे० (पु०) बनिहार, मजूर, चाकर।
खट्वा तद्० (स्त्री०) खाट, पलङ्ग, खटवा।
खट्वाङ्ग तद्० (पु०) सूर्यवंशी एक राजा, चारपाई का पाया या पाटी, शिव का एक अस्त्र, प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा माँगने का एक पात्र, तांत्रिक मुद्रा विशेष।
खड़ दे० (स्त्री०) पयाल, तृण, खर। [स्थान।
खड़क दे० (पु०) गोशाला, गोठ, गौ के रहने का
खड़कना दे० (क्रि०) झनझनाना, बजाना, अव्यक्त ध्वनि। [करना।
खड़खड़ाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, खड़ खड़ ध्वनि
खड़खड़िया दे० (स्त्री०) पालकी, डोली, पीनस।
खड़बड़ (स्त्री०) खटपट
खड़बड़ाना (क्रि०) घबड़ाना, तितर बितर होना।
खड़बीड़ा (वि०) ऊँचा नीचा।

खड्गोद्द (वि०) उभयसामद।
खड्गमण्डल (पु०) गदमद।
खड्गीन्न तद्० (पु०) खञरीट, खञ्जन।
खड्सान दे० (पु०) शान, पत्थर विशेष, शस्त्र तेज़ करने का पत्थर। [दण्डायमान।
खड़ा दे० (गु०) उठा, सीधा, ऊपर को उठा हुआ,
खड़ाऊँ दे० (पु०) पादुका।
खड़ाका (पु०) खटका।
खड़िया दे० (स्त्री०) दुधिया मिट्टी, सेलखड़ी, गुर्जी।
खड़ी दे० (स्त्री०) श्वेतवर्ण मृत्तिका, दंडायमान।
खड़ुवा दे० (पु०) वाला, वलय, कड़ा।
खड़े खड़े दे० (अ०) शीघ्र, तत्क्षण, तुरन्त।
खड़ैचड़ दे० (पु०) पक्षीविशेष, खञरीट, खञ्जन।
खड्ग तद्० (पु०) असि, तलवार, गैंडा, जन्तुविशेष, चोर, तांत्रिक मुद्रा विशेष।
खड्ड दे० (पु०) गढ़ा, गड्ढा। [या चिन्ह।
खड्ढा दे० (पु०) गढ़ा, अधिक रगड़ से उत्पन्न दाग
खण्ड तद्० (पु०) टुकड़ा, खाँड़, अध्याय, भाग, हिस्सा, देश, वर्ष, नौ की संख्या, गणित विद्या में समीकरण की एक क्रिया, खाँड़, काला निमक, दिशा। (वि०) अधुरा, लघु, छोटा।—कथा तद्० (स्त्री०) कथा विशेष। इसमें चार प्रकार का विरह वर्णित रहता है और रसों में करुण रस की प्रधानता रहती है। इसमें मंत्री अथवा ब्राह्मण नायक रखा जाता है और कथा पूरी होने के पहले ही इसका ग्रन्थ पूर्ण हो जाता है।—काव्य तद्० (पु०) जिस काव्य में काव्य के सब लक्षण न पाये जायँ, जैसे मेघदूत।—खण्ड (पु०) टुकड़ा टुकड़ा, भाग का भाग।
खण्डन तद्० (पु०) दूषण, तोड़ना, छिन्न भिन्न करना, अशुद्ध प्रमाणित करना, काट देना।
खण्डना तद्० (स्त्री०) दूषण देना, खण्डन करना, काटना। [काटने के लिये।
खण्डनार्थ तद्० (गु०) खण्डन करने के लिये,
खण्डपरशु तद्० (पु०) शिव, महादेव।
खण्डप्रलय तद्० (पु०) छोटा प्रलय, वह प्रलय जो ब्रह्मा का एक दिन पूरा होने पर हो, किसी देश या खण्ड का नाश, महाकल्प।
खण्डर दे० (पु०) उजाड़, वीरान, गड्ढा, गढ़ा, कतवार खाना, खण्डहर। [करना, काटना।
खण्डरना दे० (क्रि०) टुकड़े टुकड़े करना, खण्डन
खण्डशः तद्० (अ०) खण्ड खण्ड, टुकड़ा टुकड़ा।
खण्डसार दे० (पु०) शक्कर का कारख़ाना।
खण्डित तद्० (गु०) छेदित, भिन्न, अपूर्ण, काटा गया।—करना, बात काटना, खण्डन करना।
खण्डिता तद्० (स्त्री०) नायिका विशेष, पति की अन्यासक्ति के कारण दुःखिता, यथा दोहा—
"पति तन और नार के रति के चिन्ह निहार।
दुःखित होय सो खण्डिता बरनत सुकवि विचार"॥
रसराज
ख़त (पु०) चिट्ठी, हजामत।
ख़तम (वि०) समाप्त, पूर्ण, इति।
ख़तरा (पु०) डर, भय, ख़ौफ़।
खतरानी दे० (स्त्री०) खत्री जाति की स्त्री।
ख़ता (स्त्री०) अपराध, कसूर, दोष। [हिसाब।
खतान दे० (स्त्री०) जमाख़र्च की खतौनी, लेखा
खतियाना दे० (पु०) दैनिक हिसाब लिखना।
खतियौनी (स्त्री०) वह खाता जिसमें व्यक्तिगत पृथक् पृथक् हिसाब हो।
खत्ता दे० (पु०) अन्न रखने का गढ़ा, खत्ती।
खत्तिल दे० (पु०) पोस्त।
खत्ती दे० (पु०) अन्न रखने का छोटा खत्ता।
खत्री दे० (पु०) जाति विशेष, पञ्जाब की रहने वाली एक व्यापारी जाति।
खदखदाना } किसी वस्तु को उबालने के समय जो
खदबदाना } शब्द होता है।
खदान (स्त्री०) खान।
खदिर तद्० (पु०) खैर, कत्था।
खदेड़ दे० (पु०) दौड़, अहेर।
खदेड़ना या खदेरना दे० (क्रि०) दौड़ाना, भगाना, खेदना।
खद्योत तद्० (पु०) जुगनू, पटबीजना।
खन तद्० (पु०) खण्ड, भाग, क्षण, समय, तुरन्त यथा—
"चेरी धाँय सुनत खन धाईं"।—जायसी
खनक तद्० (पु०) खोदने वाला, मूँसा, चूहा, सेंध

खगाने वाला, भूतत्वविद्या वेत्ता, सोने आदि की खानि। [ध्वनि, खनखनाना।
खनकना दे० (क्रि०) खनखन शब्द करना, ठनठा
खनकाना (क्रि०) खनखन शब्द करना।
खनखनाना (क्रि०) खनकना। [खोदना, गोड़ना।
खनन तद्० (पु०) विदारण, खानकरण, गड़ा
खनना तद्० (क्रि०) खोदना, कोड़ना, खनन करना, गोड़ना।
खनद्दन (वि०) हलका, पतला, दुबला, सुन्दर।
खना तद्० (स्त्री०) प्रसिद्ध ज्योति शास्त्र विदुषी स्त्री। यह विक्रमादित्य के नवरत्न सभा के एक रत्न बराहमिहिर की स्त्री थी। यह मिहिर वररुचि के पुत्र नहीं थे किन्तु इनके पिता का नाम बराह था। बराह भी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। खना ने लङ्का में राक्षसों से ज्योतिर्विद्या पढ़ी थी। इस विद्या में यह इतनी बढ़ी चढ़ी थी कि समय समय पर उसके पति और श्वसुर को भी नीचा देखना पड़ता था।
खनि तद्० (स्त्री०) धातुओं का उत्पत्ति स्थान, आकर, खानि। (क्रि०) खोद कर, खोद करके।
खनिज (वि०) खान से निकला हुआ, खान का।
खनित्र तद्० (पु०) अस्त्र विशेष खोदने का यन्त्र, खन्ती।
खन्ती दे० (स्त्री०) मिट्टी खोदने का औज़ार, वह गड्ढा जिसमें से मिट्टी निकाली गयी हो।
खपची (स्त्री०) कमाची, बाँस की तीली।
खपटा दे० (पु०) ठीकरा, खपरा, खपरे के टुकड़े।
खपड़ा (पु०) टिकरा, खपरैल। [घर।
खपड़ैल या खपरैल (स्त्री०) खपरे से छाया हुआ
खपत दे० (स्त्री०) बिकाव, कटती, बिक्री, समाई, गुंजायश।
खपती दे० (स्त्री०) देखो खपत।
खपना दे० (क्रि०) बिकना, बिक्री होना, घटना, कम होना, लगना, निभना, चल जाना, नष्ट होना। यह खेप बदन की है खपनी—नज़ीर
खपरा दे० (पु०) गृहाच्छादन की सामग्री, खपरा।
खपरिया (स्त्री०) एक उपधातु, रसक, दर्विका, कीट विशेष। [छोटा खपरा।
खपरी दे० (स्त्री०) घड़ा आदि का पृष्ठ भाग,
खपरैल दे० (पु०) खपरा से बना हुआ, खपरा निर्मित, खपड़ा से छाया हुआ।
खपाच दे० (स्त्री०) चैला, काठ या बाँस का टुकड़ा।
खपाँची दे० (स्त्री०) खपाँच, चैली।
खपाना दे० (क्रि०) बेचना, बिकवाना, समाप्त करना, लगाना काम में लाना।
खपुआ दे० भगोड़ा, डरपोक।
खपुर तद्० (पु०) सुपारी का पेड़, स्वर्ग, आकाश, भद्रमोथा, बघनखा। [अप्रसिद्ध, मिथ्या।
खपुष्प तद्० (पु०) असम्भव काम, आकाश पुष्प,
खप्पर या खप्पड़ तद्० (पु०) साधुओं का पात्र विशेष, खोपड़ी, कपाल, मुर्दे की खोपड़ी का पात्र।
खफ़ा (वि०) रुष्ट, अप्रसन्न, क्रुद्ध।
खफ़ीफ़ (वि०) तुच्छ, हल्का, थोड़ा। [चाल।
खबर, खबर दे० (स्त्री०) सम्वाद, समाचार, हाल
खबरगीरी (स्त्री०) सम्हाल, देखभाल।
खबरदार (पु०) सजग, सावधान।
खबरदारी (स्त्री०) सावधानी।
खबला दे० (पु०) कींदा, चहला, पङ्क।
खब्बा दे० (पु०) बाँयाहत्था, बाँया, डेढ हत्था।
खब्त (पु०) पागलपन, उन्मत्तता, सनक।
खब्ती (वि०) सनकी, पागल।
खम तद्० (पु०) ताल, भुजा, खम्भ।—ठोंकना ताल ठोंकना, पहलवानों की एक प्रकार की मुद्रा।
खमस दे० (पु०) निर्वात, वायुरहित, ग्रीष्म, ऊमस, ऊष्म, घमस।
खमार दे० (पु०) क्षोभ, मोह, हलचल, खदबद। [हठ।
खमारू दे० (पु०) पेट की जलन, घबराहट, हड़बड़ा-
खमीजन दे० (पु०) थकावट, क्लान्ति, अवसाद, श्रान्ति।
खम्बा तद्० (पु०) थम्भा, थुनि, स्तम्भ।
खम्भा तद्० (पु०) स्तम्भ, खम्बा, थाँभा।
खमाच (स्त्री०) रागिनी विशेष जो रात में दूसरे पहर गायी जाती है।
खयानत (स्त्री०) बेईमानी, धरोहर हड़प जाना।
खयाल (पु०) ध्यान, याद, स्मरण।
खर तद्० (वि०) तीक्ष्ण, तेज़, कड़ा, (पु०) तृण, घास, गर्दभ, खच्चर, बगला, कौवा, राक्षसों में

पचीसवाँ, कंक, उत्तम, एक राक्षस का नाम, यह रामायण की प्रसिद्ध सूर्पनखा का भाई था सुमाली राक्षस की कन्या विसश्रवामुनि से ब्याही गयी थी, उसीसे खर उत्पन्न हुआ, चौदह हज़ार राक्षसों को लेकर यह रावण की आज्ञा से जनस्थान की रक्षा करता था। सूर्पनखा के नाक कान काटने के बाद यह अपनी सेना के साथ रामचन्द्रजी से लड़ने गया। वहीं अपनी सेना और दूषण आदि वीर सेनापतियों के साथ मारा गया।

खरक दे० (पु०) गोशाला, खड़क।

खरकना दे० (क्रि०) खसकना, गिरना, स्खलित होना, धमकाना, भगाना।

खरका (पु०) दाँत करोदने का तिनका।

खरखर या खरखरा दे० (गु०) खरहरा, दरदरा, शीघ्र, द्रुत।

खरखशा (पु०) खटका, बखेड़ा, टंटा।

खरगोश (पु०) खरहा।

खरच या खरचा (पु०) व्यय, खपत।

खरचना (क्रि०) व्यय करना।

खरछरा दे० (गु०) खदबद, अदबद, दरदरा।

खरञा दे० (पु०) पटाव, पक्का बनाया हुआ, पक्की सड़क, बहुत पकने से जलती हुई ईंट।

खरतल दे० (वि०) खरा, स्पष्टवादी साफ़ दिलवाला।

खरदूषण तत्० (पु०) रावण के खर और दूषण नाम के दो भाई जो दण्डकारण्य की चौकी पर नियत थे, धतूरा।

खरपत्र तत्० (पु०) सुगन्धित पौधा, मरुवा।

खरपा दे० (पु०) खराऊँ, खड़ाऊँ, डर्भा, स्त्रियों के पहनने का जूता, चौवगला।

खरब (पु०) संख्या विशेष।

खरबर दे० (स्त्री०) खड़बड़ ध्वनि, अदबद।

खरबा (पु०) जूती, पैर के तलुवा में खाल के फट जाने से दरारें हो जाती हैं। [गोल फल।

खरबूज़ा दे० (पु०) ककड़ी की जाति का एक

खरभर दे० (स्त्री०) क्षोभ, चोभ, अवसाद, खलबली, उथल पुथल, शोर हलचल।

खरमञ्जरी तत्० (स्त्री०) ऊंग, अपामार्ग।

खरमिटाव (पु०) जलपान, खुजलाहट दूर करना।

खरयष्टिका तत्० (स्त्री०) तिरहरी, ओषधि विशेष।

खरल दे० (पु०) औषध कूटने का पत्थर का पात्र, खल।

खरहरा दे० (पु०) घोड़ा आदि को साफ़ करने का ऊषा, अरहर के डंठलों का झाड़ू।

खरहरी (स्त्री०) मेवा विशेष।

खरहा दे० (पु०) शशक, खरगोश।

खरहारना दे० (क्रि०) बुहारना, झाड़ना, बटोरना।

खरही दे० (पु०) टाल, ढेर, राशि, खरगोश की मादा।

खरा दे० (पु०) चोखा, श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया, तेज़, तीखा, पैना, गरम।

खराई दे० (स्त्री०) सत्यता, सचाई, उत्तमता।

खराऊ (स्त्री०) पादुका।

खराका दे० (पु०) धड़ाका, खड़खड़ाहट।

खराद (पु०) लकड़ी चिकनाने का यन्त्र विशेष।

खरापन (पु०) सत्यता, निर्भयता।

खराब (वि०) बुरा, नीच, हीन, तुच्छ। [श्रीरामचन्द्र।

खरारि या खरारी तत्० (पुं०) खरदैत्य के शत्रु,

खरहिन्द दे० (स्त्री०) जली घास, दुर्गन्ध।

खरिक दे० (पु०) गोशाला, सड़क, ऊख जो खरीफ़ की फ़सल के बाद बोई जाय।

खरिहान (पु०) वह स्थान जहाँ खेत से काट कर अनाज एक किया जाता है। [गधी, गर्दभी।

खरी दे० (गु०) उत्तम, अच्छी, चोखी, भली। (स्त्री०)

खरीद दे० (पु०) क्रय, कीनना।

खरीदा दे० (गु०) क्रयकिया मूल्य देकर लिया।

खरीदार दे० (गु०) क्रेता, क्रयकर्त्ता।

खरीफ़ (स्त्री०) आषाढ़ से अगहन भर में काटी जाने वाली फसल।

खरे दे० (गु०) उत्तम, अच्छे, चोखे, खड़े।

खरो दे० (गु०) चोखा, खरा, उत्तम, तीखा।

खरोंचना दे० (क्रि०) खुरचना, खसोटना, बकोटना।

खरोंट दे० (स्त्री०) खरोंच, बकोट, खसोट। [वाला।

खर्च (पु०) व्यय, खपत।—ीला अधिक व्यय करने

खर्ज तत्० (पु०) षड्ज राग उच्चारण का स्थान विशेष।

खर्ज्जूर तत्० (पु०) खजूर, छुहारा।

खर्ज्जूरिका तत्० (स्त्री०) पिण्डी खजूर, पिण्ड खजूर।

खर्ज्जूरी तत्० (स्त्री०) मूसली, औषध विशेष।

खर्पर तत्० (पु०) खप्पर, खोपड़ी, सिर, कपाल।

खर्व तत्० (पु०) कुबेर का धन विशेष, संख्या विशेष 10000000000 (गु०) क्षुद्र, वामन, छोटा, ह्रस्व, नाटा, बौना। [पर्वत पर बसा हुआ गाँव।
खर्वट (पु०) चार सौ गाँवों के बीच बसा हुआ गाँव,
खर्बूज़ा दे० (पु०) देखो खरबूजा। [चिट्ठा, कमरा।
खर्रा दे० (पु०) पाण्डुलिपि, मसविदा, टट्टर, खरखरा,
खर्राटा दे० (पु०) साने में घुर्राना, गाढ़निद्रा, शीघ्रता।
खल तत्० (गु०) दुष्ट, नीच, अधम, भूमिस्थान, डण्ठों से अन्न निकालने का स्थान, खलिहान, क्रूर, दुर्जन, औषधि कूटने का पत्थर का पात्र।—कथा (स्त्री०) धूर्तों की कथा, चापलूसी बात।—ता (स्त्री०) दुष्टता, नीचता, धूर्तता, क्रूरता।
खलई (क्रि०) खलता है।
खलक (पु०) सृष्टि, जगत, संसार।
खलकत (स्त्री०) सृष्टि, समूह, भीड़।
खलखल दे० (पु०) खलबल, खड़बड़, नदी के वेग में जल की ध्वनि।
खलट्टा दे० (पु०) उपवन, रमणीय बाग, मनोहरवन।
खलड़ा दे० (पु०) चमड़ा, छाल, खाल। [अधीरता।
खलबल दे० (पु०) हलचल, कुतूहल, उत्सुकता,
खलबलाना दे० (क्रि०) उफ़नना, ऊपर उठना, उबलना।
खलबली दे० (स्त्री०) भीत, भय से घबड़ाहट।
खलल (पु०) बाधा, विक्षेप, रुकावट। [पतुरिया।
खला तत्० (स्त्री०) दुष्टा स्त्री, अधम, वेश्या, पातुर,
खलाना दे० (क्रि०) खाली करना।
खलार दे० (स्त्री०) नीची भूमि, नीचान।
खलारि तत्० (पु०) नारायण, विष्णु, सज्जन।
खलास (वि०) मुक्त, समाप्त, ख़तम। [पोर्टर।
खलासी दे० (स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा, छुट्टी, कुली,
खलार दे० (पु०) नीचान, खलार। [स्थान।
खलियान दे० (पु०) खता, खल, अन्न साफ़ करने का
खलियाना दे० (क्रि०) छीलना, उधेड़ना, रिक्त करना खाली करना।
खलिहान दे० (पु०) देखो खलियान।
खली तत्० (स्त्री०) खल, नीच, अधम, सरसों, तिल आदि का तैल रहित चूर्ण।—कार (पु०) अपकार, अनिष्ट।
खलीन तत्० (पु०) कविका, लगाम।
खलीता दे० (स्त्री०) थैली, पत्र, चिट्ठी पत्री।
खलीफ़ा (पु०) अध्यक्ष, वृद्ध दर्जी।
खलु तत्० (अ०) निश्चय, निःसन्देह, संशय रहित।
खलेल दे० (पु०) फुलेल, गदा।
खलै दे० (क्रि०) अखरना, भारी मालूम होना। (पु०) दुष्टों को, खलों को, यह शब्द रामायणमें प्रयुक्त हुआ है।
खल्लिय तत्० (गु०) चन्दला, गञ्जा, खल्वाट।
खल्वाट तत्० (पु०) जिसके सिर पर बाल नहीं, गञ्जा, चन्दला।
खवा दे० (पु०) कन्धा, स्कन्ध, काँध।
खवाना (क्रि०) खिलाना, भोजन कराना।
खवास (पु०) राजाओं का वह नौकर जो उनको पान खिलाता है, हुक्का पिलाता है और पोशाक पहिनाता है।
खवैया (पु०) खाने वाला।
खश या खस तत्० (पु०) एक प्रकार का सुगन्धित तृण, उशीर, देश विशेष, यह देश पर्वत प्रधान है और भारतवर्ष के उत्तर की ओर है। यहाँ के अधिवासी को भी खस कहते हैं।
खसकन्त दे० (स्त्री०) चम्पत होना, गुम होना, भाग जाना, भागने को उद्यत।
खसकना दे० (क्रि०) नीचे आना, गिरना, हटना, एक स्थान से हट जाना, चाहे नीचे या ऊपर सरकना।
खसकाना दे० (क्रि०) सरकाना, हटाना, बढ़ाना।
खसखस दे० (पु०) पोस्ता का दाना, उशीर, खस।
खसखसा दे० (पु०) गला सूखना, गले की सुरसुराहट।
खसटा दे० (पु०) घटी, घाटा, खूटी, खुजली।
खसना दे० (क्रि०) धसना, गिर पड़ना, नीचे आना।
खसम (पु०) पति, भर्ता, स्वामी।
खसरा (पु०) बरी, खरी, छोटी चेचक, खुजली।
खसाना दे० (क्रि०) गिरना, पश्चात्पद करना।
खसिया (पु०) बधिया, नपुंसक बकरा।
खसी दे० (स्त्री०) गिरी, सरकी, नीचे आयी रामायण में इस शब्द का प्रयोग किया गया है। यथा—"खसी माल मूरति मुसकानी"
खसोटना दे० (क्रि०) निकलना, अन्याय से किसी का धन लेना, नोचना।

खस्फटिक दे० (पु०) काँच, सूर्य मणि, आकाश की मणि ।
खस्सी (पु०) बकरा ।
खाँग दे० (पु०) बड़ा दाँत, नोकीली वस्तु ।
खाँगड़ (पु०) शस्त्रधारी, झगड़ालू ।
खाँगना (क्रि०) घटना, कम होना ।
खाँच दे० (पु०) कीचड़, काँदा ।
खाँचना दे० (क्रि०) लिखना, चिह्न बनाना ।
खाँचा दे० (पु०) टोकरा ।
खाँड़ दे० (पु०) शक्कर, चीनी ।
खाँड़ना दे० (क्रि०) छाँटना, कूटना, आघात के द्वारा धान्यादि को साफ करना, निस्तुषीकरण ।
खाँडा दे० (पु०) खड्ग विशेष, अस्त्रविशेष, तेगा ।—खाँडे की धार पर चलना (वा०) दुष्कर न्याय, अतिशय कठिन, उचित मार्ग पर चलना ।
खाँसना तद्० (क्रि०) खोखना, खखारना, खों खों करना, ठों ठों करना ।
खाँसी तद्० (स्त्री०) रोग विशेष, कासरोग, खोखी ।
खाइ दे० (क्रि०) खाकर, भोजन कर ।
खाइय दे० (क्रि०) खाइये, भोजन कीजिये ।
खाई दे० (क्रि०) खाली, भोजन कर लिया । (स्त्री०) किले के या नगर के चारों ओर की नहर, गर्त, गड्ढा, खात, नाला ।
खाऊ दे० (पु०) पेटू, पेटार्थी, भोजन लोलुप, आलसी,
ख़ाक (स्त्री०) राख, धूल ।
ख़ाका (पु०) ढाँचा ।
ख़ाकी (वि०) भूरा (पु०) मुसलमान फकीरों का [एक फ़िर्क़ा ।
खाग दे० (पु०) गैंडे की सींग ।
खागा दे० (पु०) खड्ग, तलवार, खाँड़ा ।
खाज दे० (स्त्री०) खुजलाहट, खुजली, दद्रु ।
खाजा दे० (पु०) एक प्रकार की मिठाई ।
खाजा दे० (पु०) काठ का बड़ा पात्र ।
खाट तद्० (स्त्री०) खटूला, पलङ्ग, चारपाई ।
खाड़ (पु०) गढ़ा, गर्त ।
खाण्डव तद्० (पु०) वन विशेष, इन्द्र का वन, जिसे अर्जुन ने जलाया था और उसे जलाकर अग्नि का अजीर्ण रोग दूर किया ।—प्रस्थ (पु०) नगर विशेष ।
खात तद्० (पु०) पोखरा, गढ़ा, गड्ढा, खाद, गोबर ।
खातक तद्० (पु०) ऋणी, धरता, अधमर्ण, क़र्ज़मन्द ।
ख़ातमा (पु०) मृत्यु, अन्त ।
खाता दे० (पु०) एक साथ बँधे हुए पत्र, हिसाब, बही, [लेन देन ।
ख़ातिर दे० (पु०) बावर, कारण, लिये ।—जमा (स्त्री०) विश्वास, सन्तोष ।—दारी (स्त्री०) आदर, आवभान ।—ी (स्त्री०) आदर सम्मान ।
खातेऊ दे० (क्रि०) खा जाता, खाता, खा लेता, मैं खा लेता, खाते हुए भी, रामायण में इस शब्द का प्रयोग किया गया है ।
खाती दे० (स्त्री०) खंती, भू खोदने वाली एक जाति । (पु०) जाति विशेष, बढ़ई । [आदि, पाँस ।
खाद दे० (पु०) गोबर, कतवार, सड़ी वस्तु, मल
खादक तद्० (पु०) खाने वाला, खवैया, ऋणी, कर्ज़ी, अधमर्ण ।
खादन तद्० (पु०) भोजन, भक्षण ।
खादि दे० (पु०) वस्त्र विशेष, हाथ के बने सूत का वस्त्र विशेष, खद्दर, खाद्य, कवच, दस्ताना ।
ख़ादिम (पु०) सेवक, दास ।
खादुक (पु०) हिंसक, हिंसालु ।
खाद्य, खाद्य तद्० (पु०) भोजनीय वस्तु, भक्षणीय, खाने योग्य वस्तु, खाने के उपयुक्त पदार्थ ।
खान तद्० (पु०) भोजन का ढङ्ग, यथा—उनका खान पान तो देखो ।—पान तद्० (पु०) खाना पीना, खाने पीने का आचार, खाने पीने का सम्बन्ध, यथा—हमारा उनका खान पान बंद है ।
खानखर दे० (पु०) गर्त, सुरङ्ग, खोह ।
ख़ानख़ाना (पु०) मुगल सरदारों की एक उपाधि, सरदारों का सरदार ।
ख़ानगी (वि०) घरेलू, निजका (स्त्री०) रंडी, पतुरिया ।
ख़ानदान (पु०) कुल, वंश ।—ी (वि०) कुलीन, सद्कुलोद्भव, परम्परागत, पुश्तैनी । [नाम ।
ख़ानदेश (पु०) बम्बई हाते के अन्तर्गत एक प्रदेश का
ख़ानसामा (पु०) अँगरेज़ों का बबर्ची या भंडारी ।
खाना दे० (पु०) भोजन, भक्षण, आहार ।—तालाशी (स्त्री०) घर में किसी चोरी गयी हुई वस्तु के लिये पुलिस द्वारा खोज ।

खानि तद्० (स्त्री०) खान, उत्पत्तिस्थान, आकर, तरह।
" त्रिता चारा खानि। "
तरह, ढङ्ग ' चारि खानि जग जीव जहाना। "
—तुलसीदास।
खानिक तद्० (गु०) खानि सम्बन्धी, खानि का, आकर का, खदान का।
खानी तद्० (पु०) खान आकर, चोरी।
खाप दे० (स्त्री०) तलवार की खोल, म्यान, केस।
खाबड़ दे० (पु०) ऊँच नीच अटपट।
खार तद्० (पु०) क्षार, खौना, सज्जी मिट्टी।
खारका दे० (पु०) छुहारा।
खारच दे० (क्रि०) खाली करें, पार निकालें, साफ करें।
खारा दे० (पु०) नोना, क्षार, तीखा।
खारी दे० (स्त्री०) कडुवा निमक नीरस नोन।
खारुवा दे० (पु०) एक प्रकार का लाल मोटा कपड़ा।
खाल दे० (स्त्री०) चमड़ा, धौंकनी, भाथा चर्म, खाली जगह गहराई अन्धकार।—खींचना (क्रि०) शरीर पर का चमड़ा उतार लेना, खलड़ी उधेरना।
खालसा (वि०) सरकारी, जिस पर राज का माल काना हो।
खाला (गु०) नीचा।
खाला (स्त्री०) मौसी।
खालिस (गु०) शुद्ध, बेमेल।
खाली दे० (गु०) रीता रिक्त, शून्य।
खालु दे० (पु०) देह का चर्म खोदना।
खाले दे० खोदे, पाला करै, नीचे गढ़हे में।
खाविंद (पु०) पति, भर्ता स्वामी।
खास (वि०) प्रधान, मुख्य, निजी प्रिय। [कृपार।
खिचड़ी दे० (स्त्री०) खिचरी मिश्रित भोजन विशेष,
खिचना दे० (क्रि०) तानना, ऐंचना।
खिचाय दे० (क्रि०) खिचवाकर, तना कर इस शब्द का प्रयोग व्रजभाषा में होता है।
खिचाव दे० (पु०) तनाव, खैंचाव, ऐंचाव।
खिंचावट दे० (पु०) ऐंचावट, तनाव, तानना, ऐंठना।
खिजड़ी दे० (स्त्री०) योगी का आसन, योगी की खटिया। [चिढ़ना।
खिजजाना दे० (क्रि०) कुपित होना क्रुद्ध होना,
खिजाना दे० (क्रि०) क्रुद्ध करना, कुपित करना।
खिज़ाब (पु०) केशकल्प, सफ़ेद बालों को काले करने की दवा।
खिझ दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप खिसियाहट।
खिझाना या खिझजाना दे० (क्रि०) चिढ़ाना, तंग करना, खिजाना।
खिन्नी दे० (स्त्री०) खरोखा, गवाक्ष, गौख, दरीची।
खिडाटाना दे० (क्रि०) बिथराना, बिखेरना, छितराना।
खिताब (पु०) उपाधि, पदवी। [सेवा, टहल।
खिदमत (स्त्री०) सेवा —गार (पु०) सेवक।—गारी
खिन्न तद्० (गु०) खेदित, विषाद प्राप्त, उदास, दुःखित, दुःखी दुखिया।
खिरनी दे० (स्त्री०) फल विशेष, खिन्नी।
खिराज (पु०) कर, मालगुज़ारी।
खिल दे० (पु०) खाली ज़मीन, परती।
खिलखिलाना दे० (क्रि०) खूब ज़ोर से हँसना, ठट्ठा मारना हँसना। [हर्षित होना।
खिलजाना दे० (क्रि०) विकसित होना प्रफुल्ल होना,
खिलना दे० (क्रि०) विकसित होना फूलना, पुष्पित होना।
खिलवाड़ (स्त्री०) खेल, तमाशा।
खिलाईदाई दे० (स्त्री०) धात्री धाय, खिलाने पिलाने वाली, प्रतिपालन करने वाली।
खिलाऊ दे० (गु०) खिलाने वाला, फूँकने वाला, अधिकव्ययी अपव्ययी। [आवारा उच्छृङ्खल।
खिलार, खिलाड़ी दे० (पु०) चञ्चल, खेलने वाला,
खिलाना दे० (क्रि०) भोजन कराना।
खिलाफ (वि०) विरुद्ध, विपरीत।
खिलैया दे० (पु०) खेल करने वाला, खिलाड़ी।
खिलौना दे० (पु०) गुड़िया पुतली, खेलने की वस्तु।
खिल्ली दे० (स्त्री०) हँसी ठठोली, परिहास, ठट्ठा, पान की बीड़ी, खील।
खिल्लू दे० (गु०) खिलाड़ खिलाड़ी, खेलने वाला।
खिल्ला दे० (स्त्री०) अत्यधिक हँसने वाली।
खिसकना दे० (क्रि०) चम्पत होना, सरकना, चला जाना भागना। [काना।
खिसकाना दे० (क्रि०) हटाना, भगाना, सर
खिसना दे० (क्रि०) नम्र होना, नवना, झुकना, शरणागत होना।

खिसलना दे० (क्रि०) सरकना, फिसलना, पिछलना, गिरना।

खिसलहा दे० (गु०) चिकना, फिसलहा, चिक्कण।

खिसलाहट दे० (स्त्री०) खीमना, क्रोध, कोप।

खिसाना दे० (क्रि०) हटना, टालना, अनुत्साहित होना, क्रुद्ध होना। [करना, टलना।

खिसाय रहना दे० (क्रि०) अप्रसन्न हो जाना, हिच-

खिसियाना दे० (क्रि०) चिड़चिड़ाना, क्रोध करना, खिसाना, शर्माना।

खिसियानि दे० (स्त्री०) लज्जित होना, लज्जा, रुखाई।

खिसियानी (स्त्री०) शर्मायी हुई, लजानी हुई, हारी हुई।

खिसियाहट दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप, खीस, खीज।

खींच दे० (स्त्री०) अप्रसन्नता, अनबन।—तान दे० (स्त्री०) ईंचातान, किसी शब्द का क्लिष्ट कल्पना के सहारे अन्यथा अर्थ करना। [देखो खैंचाखैंची।

खींचातान, खींचातानी खींचाखींची दे० (स्त्री०)

खीज दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप, झुंझलाहट।

खीजना दे० (क्रि०) क्रोधित होना, कुपित होना, खिझलाना।

खीझ दे० (स्त्री०) खीज, क्रोध, झुंझलाहट।

खीन तद्० (गु०) क्षीण, दुर्बल, दुबला पतला, नाजुक, सुकुमार। [(गु०) बंगाली मिठाई विशेष।

खीर तद्० (पु०) क्षीर, पायस, तसमई।—मोहन

खीरा दे० (पु०) फलविशेष, चौमासे की ककड़ी।

खीरी दे० (स्त्री०) मेवाविशेष, पिस्ता, गौ, भैंस आदि का ऐन। [लावा।

खील, खीला दे० (स्त्री०) धान का लावा, मङ्गलार्थ

खीली दे० (स्त्री०) पान की बीड़ी।

खीस दे० (स्त्री०) टोटा, घाटा, न्यूनता, कमी, क्रोध, दाँत का निकास।

खीसना दे० (क्रि०) क्रोध करना, खीस निकालना।

खीसा दे० (पु०) खलीता, जेब, थैली। (क्रि०) घटा, उतरा, सरका, गिरा।

खोह दे० (स्त्री०) रेह, सज्जी मिट्टी। [बनें वाला।

खुँटकढ़वा (पु०) कान मैलिया, कान का मैल निका-

खुँदलना दे० (क्रि०) कुचलना, रौंदना, पदाहत करना।

खुआर (वि०) ख़राब, अप्रतिष्ठित, आपद्ग्रस्त।

खुआरी (स्त्री०) नाश, ख़राबी। [भिक्षुक, छूछा।

खुख, खुक्ख दे० (गु०) अकिञ्चन, दरिद्र, दीन, कङ्गाल,

खुचर या खुचुर (स्त्री०) व्यर्थ दोष निकालना।

खुजलाना दे० (क्रि०) खजुआना, सुहलाना, सुहराना, खुलखुलाना।

खुजलाहट दे० (स्त्री०) खुजली, गुदगुदी सुरसुरी।

खुजली दे० (स्त्री०) खाज, कण्डू। [हिस्सा।

खुज्झा (पु०) मैल, तलछट, फलादि का रेशेदार

खुझराहा दे० (गु०) कृपण, अर्थ पिशाच, लीचड़।

खुटकना दे० (क्रि०) सन्देह करना, कुतरना, सशं-यित होना।

खुटका दे० (पु०) सन्देह, शङ्का, व्यग्रचित्तता।

खुटचाल (स्त्री०) नीचता, बुरी चाल, उपद्रव।

खुटाई दे० (स्त्री०) दुष्टता, अधमता, खोटापन, नट-खटी, बदमाशी।

खुटाना दे० (क्रि०) बराबर करना, तुल्य करना, समान करना, निःशेष होना, क्षीण होना, नष्ट होना।

खुटानी दे० (क्रि०) पूरी हुई, निःशेष हो गई।

खुट्टी दे० (स्त्री०) पूंजी, रोकड़, मूलधन। [वास, बेहड़।

खुड़ला दे० (पु०) पक्षियों के रहने का स्थान, मुर्गों का

खुड्डी दे० (स्त्री०) पायखाने में पैर रखने का पायदान।

खुड़ड़ा दे० (पु०) कोटर, वृक्ष का छिद्र, खोखर।

खुत्थ (पु०) पेड़ के ऊपर का भाग।—ी (स्त्री०) खूटी, बच, धरनी।

खुद स्वयं, आप।

खुदरा दे० (वि०) छोटा, फुटकर। [गुड़वाना।

खुदवाना दे० (क्रि०) फोड़वाना, माटी निकलवाना,

खुदा (पु०) ईश्वर। [टुकड़ा, तलछट।

खुदी, खुद्दी दे० (स्त्री०) कणिका, कण, चावल का

खुद्दे दे० (स्त्री०) अन्तर, व्यवधान। [अनख।

खुनस, खुनुस दे० (पु०) क्रोध, कोप, रोष, ताव,

खुनसाना दे० (क्रि०) क्रोध करना, डाह रखना, रिसाना, खिसाना।

खुनसी दे० (गु०) क्रोधी, कोपी, रिसहा।

खुन्दलना दे० (क्रि०) खुरचना, पैर से दबाना।

खुफिया (वि०) छिपा हुआ, गुप्त। [अमाना।

खुपना दे० (क्रि०) घुसना, बिंधना, पैठना, समाना

खानि तद्० (स्त्री०) खान, उत्पत्तिस्थान, आकर, तरफ।
" फिरत चारो खानि। "
तरह, ढङ्ग " चारि खानि जग जीव जहाना। "
—तुलसीदास।
खानिक तद्० (पु०) खानि सम्बन्धी, खानि का, आकर का, खदान का।
खानी तद्० (पु०) स्थान, आकर, मोदी।
खाप दे० (स्त्री०) तलवार की खोल, म्यान, कोष।
खाबड़ दे० (पु०) ऊँच नीच ऊबड़।
खार तद्० (पु०) क्षार, खोना सज्जी मिट्टी।
खारका दे० (पु०) छुहारा।
खारय दे० (क्रि०) खाली करें, पार निकालें, साफ करें।
खारा दे० (पु०) नोना, क्षार, लोखा।
खारी दे० (स्त्री०) कड़ुआ निमक, नीला नोन।
खारुवा दे० (पु०) एक प्रकार का लाल मोटा कपड़ा।
खाल दे० (स्त्री०) चमड़ा, धौंकनी, भाथा, चर्म, खाली जगह गहराई, अन्धकार।—खींचना (क्रि०) शरीर पर का चमड़ा उतार लेना, खलड़ी उधेरना।
खालसा (वि०) सरकारी, जिस पर राज्य का मालकाना हो।
खाजा (पु०) नीचा।
खाला (स्त्री०) मौसी।
खालिस (पु०) शुद्ध, बेमेल।
खाली दे० (पु०) रीता रिक्त, शून्य।
खालु दे० (पु०) देह का चर्म, खोदना।
खाले दे० खोदे, पाला करे, नीचे गड्ढे में।
खाविंद (पु०) पति, भर्ता, स्वामी।
खास (वि०) प्रधान, मुख्य, निजी, प्रिय। [ज्वार।
खिचड़ी दे० (स्त्री०) खिचरी, मिश्रित भोजन विशेष,
खिचना दे० (क्रि०) तानना, ऐंचना।
खिचाय दे० (क्रि०) खिचवाकर, तना कर, इस शब्द का प्रयोग ब्रजभाषा में होता है।
खिचाव दे० (पु०) तनाव, खैंचाव, ऐंचाव।
खिचावट दे० (पु०) ऐंचावट, तनाव, तनना, ऐंठना।
खिजड़ी दे० (स्त्री०) योगी का आसन, योगी की खरिया। [चिढ़ना।
खिजलाना दे० (क्रि०) कुपित होना, क्रुद्ध होना,
खिजाना दे० (क्रि०) क्रुद्ध करना, कुपित करना।
खिज़ाब (पु०) बेराफ्ता, सफ़ेद बालों को काले करने की दवा।
खिझ दे० (स्त्री०) क्रोध, रोष खिसियाहट।
खिझाना या खिझलाना दे० (क्रि०) चिढ़ाना, तंग करना, खिझाना।
खिड़की दे० (स्त्री०) झरोखा, गवाक्ष, गौख, दरीची।
खितराना दे० (क्रि०) बिथराना, बिखेरना, छितराना।
खिताब (पु०) उपाधि, पदवी। [सेवा, टहल।
खिदमत (स्त्री०) सेवा —गार (पु०) सेवक।—गारी
खिन्न तद्० (पु०) खेदित, विषाद प्राप्त, उदास, दुःखित, दुःखी, दुखिया।
खिरनी दे० (स्त्री०) फल विशेष, खिरी।
खिराज (पु०) कर, मालगुज़ारी।
खिल दे० (पु०) आगन, अर्गल, धन्नी।
खिलखिलाना दे० (क्रि०) खूब ज़ोर से हँसना, ठट्ठा करना हँसना। [हर्षित होना।
खिलजाना दे० (क्रि०) विकसित होना, प्रफुल्ल होना,
खिलना दे० (क्रि०) विकसित होना, फूलना, पुष्पित होना।
खिलवाड़ (स्त्री०) खेल, तमाशा।
खिलाईदाई दे० (स्त्री०) धात्री, धाय, खिलाने पिलाने वाली, प्रतिपालन करने वाली।
खिलाऊ दे० (पु०) खिलाने वाला, फूँकने वाला, अधिकव्ययी अपव्ययी। [आवारा, उच्छृंखल।
खिलाड़, खिलाड़ी दे० (पु०) चञ्चल, खेलने वाला,
खिलाना दे० (क्रि०) भोजन कराना।
खिलाफ (वि०) विरुद्ध, विपरीत।
खिलैया दे० (पु०) खेल करने वाला, खिलाड़ी।
खिलौना दे० (पु०) गुड़िया, पुतली, खेलने की वस्तु।
खिल्ली दे० (स्त्री०) हँसी ठठोली, परिहास, ठट्ठा, पान की बीड़ी, खील।
खिल्लू दे० (पु०) खिलाड़ खिलाड़ी, खेलने वाला।
खिल्ला दे० (स्त्री०) अत्यधिक हँसने वाली।
खिसकना दे० (क्रि०) चम्पत होना, सरकना, चला जाना भागना। [करना।
खिसकाना दे० (क्रि०) हटाना, भगाना, सर
खिसना दे० (क्रि०) नम्र होना, नवना, झुकना, शरणागत होना।

खिसलना दे० (क्रि०) सरकना, फिसलना, पिछलना, गिरना।
खिसलहा दे० (गु०) चिकना, फिसलहा, पिच्छिल।
खिसलाहट दे० (स्त्री०) खीमना, क्रोध, कोप।
खिसाना दे० (क्रि०) हटना, टालना, अनुत्साहित होना, क्रुद्ध होना। [करना, टलना।
खिसाय रहना दे० (क्रि०) अप्रसन्न हो जाना, हिच-
खिसियाना दे० (क्रि०) चिढ़चिढ़ाना, क्रोध करना, खिसाना, शर्माना।
खिसियानि दे० (स्त्री०) लज्जित होना, लज्जा, लजाई।
खिसियानी (स्त्री०) शर्मायी हुई, लजानी हुई, हारी हुई।
खिसियाहट दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप, खीस, खीज।
खींच दे० (स्त्री०) अप्रसन्नता, अनबन।—तान दे० (स्त्री०) ईंचातान, किसी शब्द का क्लिष्ट कल्पना के सहारे अन्यथा अर्थ करना। [देखो खेंचाखेंची।
खींचातान, खींचातानी खींचाखींची दे० (स्त्री०)
खीज दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप, मुँझलाहट।
खीजना दे० (क्रि०) क्रोधित होना, कुपित होना, खिजलाना।
खीझ दे० (स्त्री०) खीज, क्रोध, मुँझलाहट।
खीन तद्० (गु०) क्षीण, दुर्बल, दुबला पतला, नाजुक, सुकुमार। [(गु०) बंगाली मिठाई विशेष।
खीर तद्० (पु०) क्षीर, पायस, तसमई।—मोहन
खीरा दे० (पु०) फलविशेष, चौमासे की ककड़ी।
खीरी दे० (स्त्री०) मेवाविशेष, पिस्ता, गौ, भैंस आदि का थन। [लावा।
खील, खीला दे० (स्त्री०) धान का लावा, मङ्गलार्थ
खीली दे० (स्त्री०) पान की बीड़ी।
खीस दे० (स्त्री०) टोटा, घाटा, न्यूनता, कमी, क्रोध, दाँत का निकास।
खीसना दे० (क्रि०) क्रोध करना, खीस निकालना।
खीसा दे० (पु०) खलीता, जेब, थैली। (क्रि०) घटा, उतरा, सरका, गिरा।
खोह दे० (स्त्री०) रेह, सज्जी मिट्टी। [लने वाला।
खुँटकढ़वा (पु०) कान मैलिया, कान का मैल निका-
खुँदलना दे० (क्रि०) कुचलना, रौंदना, पदाहत करना।

खुआर (वि०) ख़राब, अप्रतिष्ठित, आपद्ग्रस्त।
खुआरी (स्त्री०) नाश, ख़राबी। [भिक्षुक, छूछा।
खुख, खुक्ख दे० (गु०) अकिंचन, दरिद्र, दीन, कङ्गाल,
खुचर या खुचुर (स्त्री०) व्यर्थ दोष निकालना।
खुजलाना दे० (क्रि०) खजुआना, सुहलाना, सुहराना, चुलचुलाना।
खुजलाहट दे० (स्त्री०) खुजली, गुदगुदी सुरसुरी।
खुजली दे० (स्त्री०) खाज, कण्डू। [हिस्सा।
खुज्मा (पु०) मैल, तलछट, फलादि का रेशेदार
खुझराहा दे० (गु०) कृपण, अर्थ पिशाच, लीचड़।
खुटकना दे० (क्रि०) सन्देह करना, कुतरना, सशङ्कित होना।
खुटका दे० (पु०) सन्देह, शङ्का, व्यग्रचित्तता।
खुटचाल (स्त्री०) नीचता, बुरी चाल, उपद्रव।
खुटाई दे० (स्त्री०) दुष्टता, अधमता, खोटापन, नटखटी, बदमाशी।
खुटाना दे० (क्रि०) बराबर करना, तुल्य करना, समान करना, निःशेष होना, क्षीण होना, नष्ट होना।
खुटानी दे० (क्रि०) पूरी हुई, निःशेष हो गई।
खुट्टी दे० (स्त्री०) पूँजी, रोकड़, मूलधन। [वास, बेहद।
खुड़ला दे० (पु०) पक्षियों के रहने का स्थान, मुर्गों का
खुड्डी दे० (स्त्री०) पायखाने में पैर रखने का पायदान।
खुखड्डा दे० (पु०) मोटर, वृक्ष का छिद्र, खोखर।
खुत्थ (पु०) पेड़ के ऊपर का भाग।—ी (स्त्री०) खूटी, बन्द, बसली।
खुद स्वयं, आप।
खुदरा दे० (वि०) छोटा, फुटकर। [गुड़वाल।
खुदवाना दे० (क्रि०) फोड़वाना, माटी निकलवाना,
खुदा (पु०) ईश्वर। [टुकड़ा, तलछट।
खुदी, खुद्दी दे० (स्त्री०) कणिका कण, चावल का
खुद्दे दे० (स्त्री०) अन्तर, व्यवधान। [अनख।
खुनस, खुनुस दे० (पु०) क्रोध, कोप, रोष, ताव,
खुनसाना दे० (क्रि०) क्रोध करना, डाह रखना, रिसाना, खिसाना।
खुनसी दे० (गु०) क्रोधी, कोपी, रिसहा।
खुन्दलना दे० (क्रि०) खूँदना, पैर से दबाना।
खुफिया (वि०) छिपा हुआ, गुप्त। [धसाना।
खुभना दे० (क्रि०) चुभना, बिधना, पैठना, प्रवेश

खुयाफ दे० (पु०) बिगड़ा हुआ, नष्ट।
खुभना दे० (क्रि०) खुबना, चुभना, बिधना।
खुभी दे० (स्त्री०) कर्णभूषण, कान का गहना, लौंग।
खुमारी दे० (स्त्री०) मद, नशा, नशा उतरने की दशा, जिसमें बदन में थकावट और सुस्ती मालूम होती है। रात भर जागने की थकावट, शरीर की शिथिलता। [घर घर का शब्द।
खुर तद्० (पु०) गाय के पैर का नख।—खुर (पु०)
खुरखुरा, खरखर (वि०) समतल नहीं, रूखर।
खुरचन दे० (स्त्री०) दूध को उतार कड़ाही से उसकी जलन खरोच कर और उसमें कन्द डाल कर जो मिठाई मथुरा में बिकती है।
खुरचना दे० (क्रि०) छीलना, उधेड़ना।
खुरण्ड दे० (पु०) खूँटी, सूखे घास की पपड़ी।
खुरपा दे० (पु०) घास छीलने का शस्त्र, खुर्पा खुर्पी।
खुरपी दे० (स्त्री०) छोटा खुरपा।
खुरमा दे० (पु०) खजूर, एक प्रकार की मिठाई।
खुरहर (स्त्री०) खुर का चिन्ह, खुर से बना रास्ता।
ख़ुराक (पु०) भोजन, खाना।
ख़ुराफ़ात (स्त्री०) गालीगलौज, उपद्रव।
खुर्राट दे० (पु०) बहुत पुराना, जीर्ण, चालबाज़।
खुरिया दे० (पु०) घुटने की चकति घेट्ट। [रपेटना
खुरेरना दे० (क्रि०) खदेड़ना, भगाना, रगेदना, खेदना
खुलना दे० (क्रि०) प्रकट होना, छिपाने या रोक वाली वस्तु का अलग होना, बिखरना, बादलों का छितर बितर होना। [करवाना।
खुलवाना दे० (क्रि०) खुलवा देना चुकवाना, मुक्त
खुला (वि०) स्पष्ट, प्रकट, मुक्त।—सा (पु०) संक्षेप, सारांश। [कौथली।
खुली दे० (स्त्री०) थैली, तोड़ा, रुपया रखने की
खुलेबन्द दे० (वा०) प्रकट रूप से प्रकाश रूप से निर्भीकता। [खुले आम, प्रकट रूप से।
खुल्लमखुल्ला दे० (वा०) प्रकाश भाव से, निर्भीकता से,
खुश (वि०) प्रसन्न, मग्न।—ी (स्त्री०) प्रसन्नता।
खुशामद (स्त्री०) चापलूसी।
खुश्की, खुशगी दे० (पु०) निर्जल मार्ग, सूखा, नीरस, पैदल मार्ग।
खुसर फुसुर दे० (पु०) कानाकानी।
खूँच दे (स्त्री०) नाड़ी विशेष, जानु की नाड़ी।
खूँट दे० (पु०) कोन, कोना, छोर, ओर, भाग, कान का मैल।
खूँटना दे० (क्रि०) सङ्कुचित करना, सङ्कीर्ण करना, औषध विशेष, उद्यत होना।
खूँटला दे० (पु०) औषध विशेष।
खूँटा दे० (पु०) खम्भा, मेख, खम्भला, खम्भा, काठ का ठेकना, जिसमें गाय भैंस बाँधी जाती हैं।
खूँटी दे० (स्त्री०) छोटा खूटा नील, अरहर, ज्वार, के पौधे की वह सूखी डण्ठल जो फसल काट ली जाने पर खेत में खड़ी रहती है। गुल्ली, बालों के डण्ठल जो बाल मूँड़ने पर रह जाते हैं।
खूटना दे० (क्रि०) खोदना, खसोटना, उखाड़ना, उधेड़ना।
खूटी दे० (स्त्री०) खुटी, पपड़ी।
खूड दे० (पु०) रेखारी, खड्ड, खाई, खान।
खूद या खुद दे० (पु०) स्वयं, आप, तलछट, खाद।
खूदराना दे० (क्रि०) कुल्की चलना।
खूदना दे० (क्रि०) पैरों से रौंदना, टाप मारना, खोदना, रौंदना, कुचलना।
खून दे० (पु०) लोहू, रुधिर। [औषधि विशेष।
खून खराबा या खून खराबी दे० (स्त्री०) मारकाट।
खूब दे० (वि०) अच्छा, भला, उत्तम।—ी दे० (स्त्री०) भलाई, अच्छाई।—सूरत (वि०) सुन्दर, सुघड़।
खूसना दे० (क्रि०) पुराना होना, अजीर्ण होना।
खूसा (पु०) उल्लू (वि०) मनहूस आसिक।
खेकसा दे० (पु०) चिन्ह, पहिचान, लक्षण परवल के आकार का फल जिस पर काँटे काँटे होते हैं।
खेचर तद्० (पु०) आकाशगामी, शिव, पक्षी, विद्याधर, सूर्य चन्द्रादि ग्रह, वायु, देवता, विमान, बादल, पारा, कसीस।
खेचरी गुटिका तद्० (स्त्री०) योग सिद्ध एक गोली जिसको मुँह में रखने से आकाश में उड़ने की शक्ति आ जाती है।—मुद्रा तद्० (स्त्री०) योग की एक मुद्रा विशेष।
खेजड़ी दे० (स्त्री०) शमी का पेड़।
खेट तद्० (पु०) ग्रह, अहेर, नक्षत्र, ढाल, कफ, लाठी, चमड़ा, तृण, घोड़ा, खेरा।
खेटक तद्० (पु०) ग्राम विशेष, छोटा नगर, गढ़ा,

बलराम की गदा, अहेर, अस्त्रविशेष, ग्राम, गाठ, तारा।

खेटकी तद्० (पु०) मदारी, भर्दौला, शिकारी, बधिक।

खेटिक तद्० (पु०) बधिक, व्याध, बहेलिया।

खेड़ा दे० (पु०) छोटा गाँव, ग्राम, पुरवा।

खेड़ी दे० (स्त्री०) लौहविशेष, कान्तिसार, इस्पात।

खेढ़ी दे० (स्त्री०) गर्भावरण, झिल्ली।

खेत तद्० (पु०) क्षेत्रभूमि, पुण्यभूमि, पावनभूमि, समरभूमि, कृषिभूमि, पशुओं के उत्पन्न होने का स्थान, योनि।—छोड़ना युद्ध से भाग जाना। —रहना लड़ाई में हत होना, मारा जाना।

खेतज तद्० (पु०) आकाशमण्डल।

खेतिहर दे० (पु०) किसान, खेती करने वाला।

खेती तद्० (स्त्री०) किसान का कर्म, जोताई, कृषि, काश्तकारी, किसानी।—बारी (वा०) खेत का काम, किसानी।

खेद तद्० (पु०) सन्ताप, दुःख, शोक, पश्चात्ताप, पछतावा, मनस्ताप।—ान्वित (गु०) शोकान्वित, खेदयुक्त, दुःखी।

खेदना दे० (क्रि०) हाँकना, भगाना, सताना।

खेदा दे० (पु०) हाथी पकड़ने का स्थान, शिकार।

खेदित तद्० (गु०) दुःखित, पीड़ित, क्लेशित, सताया गया।

खेना दे० (क्रि०) नाव चलाना, बिताना, काटना।

खेप दे० (स्त्री०) एक बार का भार, बोझ जो एक बार उठाया जा सके, एक बार में उठाकर कहीं ले जाया जाय, जैसे "तुम कितनी खेपें लाये," "तुम एक दिन में के खेप ला सकते हो?"—हारना (वा०) हानि उठाना।

खेपा दे० (गु०) उन्मत्त, पागल, बातुल, बकवादी।

खेम दे० (पु०) क्षेम, कुशल।

खेमटा दे० (पु०) ताल विशेष, जिसमें बारह मात्राएँ होती हैं।

खेमा (पु०) डेरा, तंबू, कनात।

खेरा दे० (पु०) उजड़ गाँव, डीह।

खेरी दे० (स्त्री०) बंगाल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का गेहूँ, एक प्रकार का पक्षी।

खेरे दे० (पु०) गाँव, छोटी बस्ती।

खेल तद्० (पु०) क्रीड़ा, कौतुक, मनोरञ्जन, विनोद। —करना या समझना तद्० तुच्छ समझना। —खेलना (वा०) बहुत तंग करना।—बिगड़ना (वा०) रंग में भंग होना, काम बिगड़ना।

खेलना दे० (क्रि०) खेल करना, क्रीड़ा करना।—खाना (वा०) मजे में दिन बिताना।

खेलवाड़ दे० (पु०) खेल, तमाशा, दिल्लगी।

खेला दे० (पु०) खिलवाड़, खेल।

खेलाउब दे० (क्रि०) खेलाना, तङ्ग करना, सताना।

खेवक, खेवट तद्० (पु०) माँझी, डाँड़ी, कर्णधार, मल्लाह।

खेवट दे० (पु०) पटवारी का एक कागज़ जिसमें हर एक ज़मींदार की मालगुज़ारी आदि का विवरण रहता है।—दार दे० (पु०) हिस्सेदार पट्टीदार।

खेवटिया दे० (पु०) नौका चलाने वाला, मल्लाह, खेवट।

खेवना दे० (क्रि०) डाँड़ मारना, नाव चलाना।

खेवा दे० (पु०) नौका, नाव का शुल्क, नाव की उतराई, भाड़ा, बार, दफ़ा, नाव से नदी पार करने का काम।

खेवाई दे० (स्त्री०) नाव चलाने की क्रिया, नाव खेने की उजरत, रस्सी जो नाव को डाँड़ बाँधने का काम देती है।

खेस, खेसड़ा दे० (पु०) कपड़ा विशेष।

खेसारी दे० (स्त्री०) अन्न विशेष।

खेह दे० (स्त्री०) धूली, खाक, भस्म।

खैंच दे० (स्त्री०) उखाड़, ऐंच, टान।

खैंचना दे० (क्रि०) ऐंचना, कसना, टानना, तानना, चित्र बनाना।

खैंचखैंच दे० (वा०) विरोध, लड़ाई, खैंचातानी।—ी झगड़ा, विद्वेष।

खैर दे० (पु०) कथ, कत्था, खदिर, कुशल, भलाई। (अ०) अपेक्षा सूचक अव्यय, अस्तु।

खैरख्वाह (वि०) शुभ चिन्तकता।—ी (स्त्री०) शुभ चिन्तकता।

खैरा दे० (पु०) भूरा रंग, मछली विशेष।

खैरात (पु०) दान पुण्य।

खैरियत (स्त्री०) राजी खुशी।

खैला दे० (पु०) दोदान, बछड़ा, नया बैल।

खोआ दे० (पु०) मावा विशेष, खोया।

खोआना दे० (क्रि०) हार जाना, ठगा जाना, भूल जाना, हरा जाना।

खोई दे० (क्रि०) नष्ट कर, खोकर। [कंवल की बोधी।
खोई दे० (स्त्री०) छिलका, ऊख की सीठी, खाई,
खोऊ दे० (गु०) उड़ाऊ खर्चीला, अपव्ययी।
खोंखना दे० (क्रि०) खाँखना, खखारना, कफ निकालना, खाँसना।
खोंखी दे० (पु०) खाँसी, कास, रोग विशेष।
खोंच दे० (पु०) चीर, खोप, किसी चीज़ से कपड़े का फट जाना, छेद होना।
खोंचना दे० क्रि०) घुसेड़ना, ठेलना, चुभोना।
खोंचा दे० (पु०) चीरा, भराव, ढेस।
खोंची दे० (स्त्री०) अन्न, फल, तरकारी आदि से वह थोड़ा सा भाग जो धर्मार्थ में भिखमंगों को और छोटी सेवाओं के लिये इतरजनों को दिया जाय।
खोंडकल दे० (पु०) गड्ढा, गढ़ा, कोटर।
खोंता दे० (पु०) खोंधा, घोंसला, नीड़, पक्षियों के रहने का स्थान। [गोफे।
खोंप दे० (पु०) सलंगा, सिलाई के दूर दूर टाँकों के
खोंपा दे० (पु०) गाद, खाद, जूड़ा, अन्न रखने के लिये तृण निर्मित गृह विशेष।
खोंसना दे० (क्रि०) ठोसना, भरना, घुसेड़ना।
खोंसला दे० (पु०) पोला, छूछा, शून्य, रिक्त, थोथा।
खोंसा दे० (पु०) रुपये सुर्कों हुई हुण्डी, बालक, बच्चा।
खोज दे० (पु०) टोह, ढूँढ़ना, अनुसन्धान करना, अन्वेषण, पता, चिन्ह।—ी (पु०) खोजनेवाला।
खोजा (पु०) ज़नखे, बादशाही ज़नानखाने के नौकर विशेष।
खोजाना (क्रि०) हिरा जाना, न मिलना।
खोट दे० (स्त्री०) दुर्गुण, अवगुण, भूल, बुराई, ऐब, हानि, बट्टा।
खोटा दे० (गु०) दुर्गुणी, कूटा, पापी, दुराचारी।
खोटी दे० खोटा का स्त्रीलिङ्ग। [दुर्गुण।
खोटाई या खोटापन दे० (स्त्री०) अधर्म, दुराचार,
खोखडला दे० (गु०) पोपला, अदन्त, दाँत रहित।
खोड्स सं० (गु०) सोलह, सोरह, संख्या विशेष, १६।
खोद दे० (पु०) पोंच, खुदाव, कोमल, झोंक, कटा हुआ, खोदा हुआ।
खोदना दे० (क्रि०) खनना, गाड़ना, कोड़ना, गोड़ना।
खोदर दे० (गु०) खड़बड़, ऊँचा नीचा, अड़बड़, दपट, खोह।

खोदरा दे० (गु०) दरदरा, खड़बड़।
खोदविनोद छानबीन, पूँछ ताँछ, छेड़छाड़।
खोदै दे० (क्रि०) खोद डाले, उखाड़े, नष्ट कर डाले, निर्मूल कर डाले। [नाशना।
खोना दे० (क्रि०) गँवा देना, दगा देना, नष्ट करना,
खोन्चा (पु०) फेरीवालों का पचमेल मिठाई या निमकीन से भरा थाल।
खोप दे० (पु०) खोंच, छेद, छिद्र, चीर।
खोपड़ा (पु०) सिर, कपाल, सिर की हड्डी, गरी।— (स्त्री०) खोपड़ी। [श्रीफल, गोला, बड़ा सिर।
खोपरा दे० (पु०) नारियल की गरी, फल विशेष,
खोपरी दे० (स्त्री०) सिर की हड्डी, कपाल।
खोपा दे० (पु०) मल, मैल, खूद।
खोबार दे० (पु०) सुअरों के रहने का घर।
खोया दे० (पु०) नारियल का गोला, चूरा, खोवा। (क्रि०) खोने का भूतकाल। [मार्गं।
खोरि दे० (स्त्री०) ऐब, दोष, दुर्गुण, गली, सङ्कुचित
खोरिया (स्त्री०) छोटा कटोरा, एक उत्सव जो स्त्रियाँ लड़कों के विवाहोत्सव के अवसर पर करती हैं जिसमें वे तरह तरह के रूप बनाती और गालियाँ गाती हैं।
खोरे दे० (गु०) दुर्गुणी, दोषी, ऐबी, लङ्गड़ा।
खोल या खोलो दे० (स्त्री०) गिलाफ़, खोलला, म्यान, रजाई, दोहर, शरीर। [गढ़ा, गर्त।
खोलड़ा दे० (पु०) कोटर, खोखला, खोह, गड्ढा,
खोलना दे० (क्रि०) छोड़ देना, मुक्त करना, फैलाना, उधेड़ना। [अन्न रखने की वस्तु।
खोली दे० (स्त्री०) खोल, चोंगी, नलिका, गिलाफ़,
खोवा (पु०) मावा, खोया। [खो डाले।
खोवै दे० (क्रि०) हिरवावे, विनाश करे, नष्ट करे,
खोह दे० (पु०) गुफा, गुहा, कन्दरा।
खौड़ दे० (पु०) तिलक, चन्दन करण, खौर।
खौफ़ (पु०) भय, डर।
खौर दे० (पु०) लहरियादार, चन्दन का आड़ा टीका। यथा—"खौर भाल तो सोहत नीके"।
खौरा दे० (पु०) पशुओं का रोग विशेष, जिससे उनके बाल गिर जाते हैं।
खौलना (क्रि०) उबालना, गरम करना, उष्ण होना।

ख्यात तत्० (पु०) ख्यातियुक्त, कीर्तिमान्, प्रसिद्ध, यशस्वी ।—व्य (पु०) प्रतिष्ठा योग, प्रशंसा योग्य ।
ख्याति तत्० (स्त्री०) प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, नाम, यश, कीर्ति ।—घ्न (पु०) दुर्नाम जनक, अपवादी ।
—मत्व (पु०) यशस्विता, विश्रुति, प्रतिष्ठा ।
ख्यात्यापन्न तत्० (पु०) कीर्तिमान, यशस्वी, प्रतिष्ठित । [फैलाने वाला ।
ख्यापक तत्० (पु०) प्रकाशक, व्यञ्जक, द्योतक,
ख्यापन तत्० (पु०) प्रकाश, विज्ञापन, प्रसिद्धि होना ।
ख्याल दे० (पु०) कौतुक, स्वाँग, खेल, तमाशा, एक प्रकार की लावनी ।—ी (स्त्री०) कल्पित, वहमी, सनकी, कौतुकी ।
खीष्ट दे० (पु०) ईसा क्राइस्ट ।
खीष्टियान दे० (पु०) ईसाई ।
ख्वाही (स्त्री०) नाश, बर्बादी, अपमान ।
ख्वाहिश (स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

ग

ग यह कवर्ग का व्यञ्जन तीसरा वर्ण है । इसका उच्चारण कण्ठ से होता है ।
ग तत्० (पु०) गीता, गणेश, गन्धर्व ।
गइया दे० (स्त्री०) गाय, गौ, धेनु ।
गई दे० (क्रि०) जाना क्रिया का स्त्रीलिङ्ग रूप, गमन किया, जाती रही चली गई ।
गईबहोर दे० (पु०) गयी हुई को लौटा ले आने वाला, बिगड़ी बात को बनाने वाला ।
गँठकटा (पु०) चोर, जेबकतरा, स्तेन । [करने वाला ।
गँवाऊ (पु०) उड़ाने वाला, खोने वाला, नाश
गँवाना (क्रि०) खोना, नष्ट करना, निस्मृत होना, भूलना ।
गँवार (पु०) गवँई का, अनपढ़ मूर्ख, असमझ ।
गँवी (स्त्री०) गाँव, ग्राम, देहात, ग्राम्य ।
गकार तत्० (पु०) कवर्ग का तीसरा वर्ण ग अक्षर ।
गगन तत्० (पु०) आकाश, व्योम, शून्य, नभ ।—कुसुम (पु०) खपुष्प असम्भव, मिथ्या ।—गामी (पु०) आकाशगामी, नक्षत्र आदि ।—चारी (पु०) आकाशगामी ।—विहारी (पु०) चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, पक्षी ।—मण्डल (पु०) आकाश मण्डल, खगोल ।—स्पर्शी (पु०) आकाश छू लेने वाला, बहुत ऊँचा ।
गगनभेड़ दे० (पु०) हड़गीला, गिद्ध, गीध ।
गगरा (पु०) पीतल, लोहा आदि का घड़ा, कलसा ।
गगरी (स्त्री०) मिट्टी का छोटा घड़ा ।
गङ्ग तत्० (स्त्री०) गङ्गा नदी, देवनदी ।—कवि हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि ।
गङ्गा तत्० (पु०) जान्हवी, भगीरथी, सुरनदी, स्वनामप्रसिद्ध नदी ।—जल (पु०) गङ्गा का जल, गङ्गोदक ।—जमुनी (पु०) दो धातुओं का बना हुआ, ताँबे व पीतल का बना हुआ, चाँदी व सोने का ।—जलिया-जली (स्त्री०) सीसा, ताँबा, पीतल अथवा काँच की बनी सुराही। (पु०) गङ्गाजल स्पर्श करके शपथ खाने वाला ।—दास (पु०) एक संस्कृत कवि का नाम, इन्होंने छन्दोमञ्जरी-नामक छन्दः शास्त्र की एक पुस्तक बनायी है। गोपालदास वैद्य के ये पुत्र थे, इनकी माता का नाम सन्तोष था । छन्दोमञ्जरी के अतिरिक्त अच्युतचरित्र, कृष्णशतक और सूर्यशतक नाम के और भी ग्रन्थ बनाये हैं । ये कवि १२ शताब्दी के इधर ही के मालूम होते हैं । यह कवि वैष्णव थे ।—द्वार (पु०) हरिद्वार ।—धर (पु०) शिव महादेव, समुद्र, इस नाम का एक संस्कृत कवि, गोविन्दपुर के शिला लेख से मालूम होता है कि सन् ११३७ ई० में यह कवि वर्तमान था । इसके प्रपितामह का नाम दमोदर, पितामह का नाम चक्रपाणि, पिता का नाम मनोरथ, चचा का नाम दशरथ और भाइयों का नाम महीधर तथा पुरुषोत्तम था । यह नहीं कहा जा सकता कि विरहय के समकालीन यही गङ्गाधर हैं या दूसरे ।—प्राप्ति (पु०) गङ्गालाभ, मरण, मृत्यु ।—यमुनी (पु०) श्वेत कृष्ण वर्ण का मिश्रण, दो वर्ण की धातुओं का सम्मिलन ।—यात्रा (स्त्री०) मरणासन्न पुरुष को मरने के लिये गङ्गा [illegible] ले जाना ।—लाभ (पु०) मृत्यु,

बनाने का परिश्रम। (क्रि०) गढ़ना, गढ़वाना, गढ़ाना।
गढ़िया दे० (स्त्री०) भाला, बरछी, बल्लम, कुन्त, प्रास।
गढ़ी दे० (स्त्री०) छोटा कोट, गढ़। [खोदा हुआ गढ़ा।
गढ़ेला दे० (पु०) गड़हा, खड्डर, गढ़ा, गड़ा हुआ,
गढ़ैया दे० (पु०) छोटा पोखर, तलाई।
गण तत्० (पु०) समूह, थोक, जाति, झुण्ड यूथ, रुद्र का अनुचर, प्रथम रुद्र का गण, सेना, संख्या विशेष, २१ रथ, ८१ घोड़े, १३५ सिपाही इस सेना में होते हैं। छन्द शास्त्र के आठ गण, १ भगण, २ जगण, ३ सगण, ४ रगण, ५ यगण, ६ तगण, ७ मगण, ८ नगण इनका लक्षण ऐसा है "आदि मध्य अवसान में भ ज स होंहिं गुरु जान, य र त होंहिं लघु क्रमहिं सो म न गुरु लघु सब जान।"
गणक तत्० (पु०) गणना करने वाला, ज्योतिषी, दैवज्ञ, ज्योतिर्वेत्ता, गणनाकारी।
गणता तत्० (स्त्री०) गण का धर्म समूदत्व, पक्षपातिता, धूर्तमण्डली। [मिले हुए अनेक देव।
गणदेवता तत्० (पु०) मिलितदेवता, संहतदेवता,
गणन तत्० (पु०) संख्या करण।
गणना तत्० (स्त्री०) संख्या, गिनना, पक्षपात।
गणनाथ, गणनायक तत्० (पु०) गण स्वामी, गणेश।
गणनीय (वि०) गिनने योग्य, प्रख्यात। [संख्या के माफ़िक।
गणपति तत्० (पु०) गणेश, समाजपति, सम्मिलित,
गणपाठ (पु०) ग्रन्थ विशेष।
गणराऊ तद्० (पु०) गणराज, गणनाथ।
गणाधिप तत्० (पु०) शिवपुत्र, गणेश, गजानन।
गणाध्यक्ष (पु०) गणेश, शिव। [स्वैरिणी, कुलटा।
गणिका तत्० (स्त्री०) वाराङ्गना, वेश्या, पतुरिया, पातुर,
गणित तत्० (पु०) अङ्कविद्या, ज्योति शास्त्र, संख्यात, गणना किया हुआ।—कार (पु०) गणक, ज्योतिर्वेत्ता, अङ्कवेत्ता।—ज्ञ (पु०) ज्योतिषी।
गणेश तत्० (पु०) शिवपुत्र, हेरम्ब, लम्बोदर, गजानन, ये पार्वती के पुत्र हैं, इनका सम्पूर्ण शरीर देवों का सा परन्तु मुख हाथी का है। शिवजी की आज्ञा से पार्वती ने पुण्यक व्रत का अनुष्ठान कर विष्णु को प्रसन्न किया, विष्णु ने पुत्र के लिये वरदान दिया जिसके फल से गणेश का जन्म हुआ, गणेश जी को देखने के लिये सभी आये, उनमें शनिश्चर अपनी दृष्टि की महिमा जानते थे इसी कारण गणेश को देखने की उनकी इच्छा न थी परन्तु पार्वती ने अनुरोध किया, अतएव उन्होंने भी अपनी दृष्टि उठायी, उनके देखते ही गणेश का मस्तक ऊपर उड़ गया, देवताओं ने विष्णु की स्तुति की, विष्णु ने हाथी का माथा जोड़ दिया।—क्रिया (स्त्री०) योगाभ्यास की एक क्रिया, इसमें क्रिया विशेष द्वारा मलद्वार से मल साफ़ किया जाता है।—चतुर्थी (स्त्री०) भादों, माघ और फागुन शुक्ला ४ चतुर्थी। इन तिथियों में स्मार्त लोग गणेश जी का धूम धाम से पूजा करते तथा व्रत उपवास करते हैं।
गण्ड तत्० (पु०) कपोल, गाल, कनपुटी, फोड़ा, चिन्ह, गाँठ, नाटक का वीथी नामक एक अङ्ग, जिसमें अचानक प्रश्नोत्तर हों, गजकुम्भ।
गण्डक तत्० (पु०) गैंडा, गाँठ, चिन्ह।
गण्डकी तत्० (स्त्री०) स्वनामख्यात नदी, जो विहार में है और नैपाल से आई है, जिसमें शालिग्राम निकलते हैं।
गण्डमाला (स्त्री०) कण्ठमाला, गले के नीचे का रोग जिसमें माला की तरह गाँठें गर्दन में उठ आती हैं।
गण्डमूर्ख तत्० (वि०) बड़ा मूर्ख, भारी बेवकूफ़।
गण्डशैल तत्० (पु०) पर्वत से टूटा हुआ बड़ा पत्थर, छोटा पहाड़।
गण्डस्थल (पु०) कनपटी, गाल, कपोल।
गण्डा दे० (पु०) संख्या विशेष, चार कौड़ी, चार पैसा, चार रुपया, चार आम आदि, तन्त्र मन्त्र किया हुआ, सूत, हँसली, कण्ठा।—न्त (पु०) ज्योतिष मतानुसार योग विशेष। [शस्त्र विशेष।
गँड़ासा दे० (पु०) कुट्टी काटने का बड़ा गँड़ासा,
गँड़ासी दे० (स्त्री०) छोटा गँड़ासा।
गण्डिका तद्० (स्त्री०) नदी विशेष, गण्डकी।
गण्डि दे० (पु०) रोग विशेष, गण्डमाला। [स्थान।
गण्डी दे० (स्त्री०) घेरा, रेखा आदि के द्वारा सीमाबद्ध
गण्डीर तत्० (पु०) सेंहुड़ वृक्ष, गन्ना, ऊख।
गण्डूत तद्० (पु०) प्रफुल्ल, विकसित।
गण्डूष तत्० (स्त्री०) पानी का कुल्ला, हाथी की सूँड़ की नोक, हाथ के अँगूठे का गड्ढा।

गराडेरी तद्० (स्त्री०) ऊख के टुकड़े, कटे हुए ऊख के गुल्ले। [करने योग्य।
गराय तद्० (गु०) गणनीय, गणनार्ह, माननीय, संख्या
गत तद्० (गु०) अतीत, व्यतीत, विज्ञात, हत, नष्ट, भिन्न गया, निकृष्ट, मुक्त, क्षीण, प्राप्त।—ड्डु (वि०) गया, बीता, जिसमें सत्पुरुषोचित कोई चिन्ह न हो।—क्लम (गु०) विश्रान्त, श्रमरहित।—त्रप (गु०) निर्लज्ज, लज्जा रहित।—प्रभ (गु०) प्रभा हीन, निष्प्रभ।—वित्त (गु०) गत विभव, निर्धन, दरिद्र।—वैर (गु०) निरुपद्रव, शत्रुरहित, अजातशत्रु।—व्यथ (गु०) अक्लेश, क्लेश रहित, सुखी।—ागत (पु०) यातायत, गमनागमन, आना जाना, पक्षियों की गतिविशेष, आवागमन, जन्म मरण, आया गया।—ाधि (गु०) सुखी।—ानुगतिक (गु०) अनुकरण करने वाला, अनुकारी, पिछलग्गू।—ायुः (गु०) व्यतीत आयु, जीवन का अवसानकाल, मरणासन्न, मुमुर्षु।—ार्थ (गु०) अभिप्रायसिद्धि, एक से दूसरे का निष्प्रयोजन होना।
गति तद्० (स्त्री०) यात्रा, दशा, चाल, हरकत, पहुँच, सहारा, विधान, ढंग, रीति, जीव का एक शरीर छोड़ कर दूसरे शरीर में जाना, मरने के बाद जीव की दशा, मोक्ष, पैंतरा, ग्रहों की चाल, सितार आदि के वादन की क्रिया विशेष।—क्रिया (स्त्री०) विलम्ब, कालक्षेप, शिथिलता।—विहीन (गु०) गतिहीन, गमनशक्ति रहित।
गत्ता दे० (पु०) दफ्ती, कुट।
गथ तद्० (पु०) पूँजी, माल, मोल, धन, भेंड।
गद तद्० (पु०) व्याधि, रोग, श्रीकृष्ण के एक भाई का नाम, श्रीरामचन्द्र की सेना का एक बन्दर, असुर विशेष।
गदका दे० (पु०) पटा, दण्ड विशेष।
गदकारी तद्० (गु०) रोग उत्पन्न करने वाला (पदार्थ)।
गदगदा दे० (गु०) मोटा, स्थूल, तुन्दिल, तोंदैला।
गदर (पु०) बलवा, हलचल।
गदरा दे० (वि०) गद्दर, अधपका।
गदराना (क्रि०) पकने पर होना, जवानी में अंगों का पूर्णता को प्राप्त होना। [या कीचड़ मिला हुआ।
गदला दे० (गु०) मैला, धुमैला, मलिन, गदा, मिट्टी
गदलाई दे० (स्त्री०) मैलापन, धुमैलापन, कालुष्य।
गदशत्रु तद्० (पु०) वैद्य, औषध।
गदह तद्० (पु०) गधा, खर, गदहा।—पचीसी दे० (स्त्री०) १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था, जिसमें इस अवस्था वाले को अनुभव नहीं रहता और उसकी बुद्धि कच्ची रहती है।—पन दे० (पु०) मूर्खता, अनसमझ, बेवकूफ़ी।—पूरना (स्त्री०) पुनर्नवा बूटी, औषधि विशेष।—लोटना (स्त्री०) वह स्थान जहाँ गदहा लोटे हों।
गदहा तद्० (पु०) वैद्य, रोग मिटाने वाला, गंधर्व।
गदहिया (स्त्री०) गदही।
गदा तद्० (स्त्री०) लोहे का अस्त्र विशेष, लोहे का मुग्दर या लाठी।—धर (पु०) विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण।—युध (पु०) यष्टि, लाठी, गदा।—युद्ध (पु०) युद्ध विशेष।—रि (पु०) रोगशत्रु, रोगनाशक वैद्य। [का औज़ार विशेष।
गदाला दे० (पु०) हाथी पर का गद्दा, मिट्टी खोदने
गदाग्रज तद्० (पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, भगवान्।
गदित तद्० (पु०) उक्त, कथित, भाषित, कहा हुआ।
गदी तद्० (पु०) विष्णु नारायण (गु०) गदा विशिष्ट, रोगयुक्त, रोगी।
गदेला दे० (पु०) शिशु, बच्चा, मा का दूध पीने वाला बच्चा, कोरे का बच्चा, मोटा बिछौना।
गद्गद् तद्० (गु०) पुलकित, प्रसन्न।
गद्द दे० (पु०) कोमल स्थान पर किसी वस्तु के गिरने की आवाज़, अजीर्ण, अनपच।
गद्दर दे० (गु०) अर्ध पक्व, अधपका, गदरा।
गद्दा दे० (पु०) रुई या घास आदि से भरा मोटा बिछौना, हाथी के हौदे के नीचे कसा जाने वाला गद्दा।
गद्दी दे० (स्त्री०) बिछौना, मोटा बिछौना, सिंहासन, रोज़गारी के बैठने का स्थान, अधिकारी का पद, किसी राजा या आचार्य की शिष्य परम्परा।—नशीन (वि०) सिंहासनासीन, गद्दी पर बैठने वाला, उत्तराधिकारी।
गद्य तद्० (पु०) छन्द रहित वाक्य, प्रबन्ध।—ात्म तद्० (वि०) गद्य का गद्यमय, गद्य सम्बन्धी।
गधा दे० (पु०) गदहा, गर्दभ, खर।

करण।—सागर (पु०) गङ्गा और सागर का जहाँ सगम होता है उस स्थान का नाम गङ्गा सागर है।—स्नान (पु०) गङ्गा जी का स्नान।—सुत (पु०) भीष्म, कार्तिकेय।—स्नायी (पु०) गङ्गास्नान शील।

गङ्गीभूत तद्० (गु०) पवित्र, पावन।

गङ्गोदक तद्० (पु०) गङ्गाजल।

गच दे० (पु०) पक्की छत, स्थूल, मोटा।

गचमीना दे० (गु०) ठींगना, छोटा मोटा।

गचपच दे० (स्त्री०) भीड़भाड़, गोलमाल, घनता, उलट पलट।

गच्छ तद्० (पु०) स्थान, बौद्धों का स्थान, मठ विशेष, स्वीकृत, न्यास यन्धक वृक्ष।

गज तद्० (गु०) कुञ्जर, हाथी, दो हाथ का परिमाण, वास्तुस्थानभेद, धातु आदि मारने के लिये गढ़ा।—कुम्भ (पु०) हाथी का सिर।—गमनी (स्त्री०) हाथी के समान धीरे धीरे चलने वाली स्त्री, गज गामिनी।—गाह (पु०) हाथी घोड़े का आभूषण।—गौनी (पु०) गजगामिनी।—चिर्भटी (पु०) इन्द्रवारुणी, इनारुन—च्छाया (स्त्री०) श्राद्ध का नियमितकाल, आश्विन मास की मघा नक्षत्र युक्त त्रयोदशी।—ता (स्त्री०) गज समूह, हाथी का यूथ।—दन्त (पु०) हस्ति सम्बन्धी दाँत, हाथी के दाँत।—दन्ती (गु०) हाथी दाँत का।—दान (पु०) हाथी का मद जल, हाथी के मस्तक से निकला जल।—पति (पु०) हाथियों के यूथ का स्वामी, राजा, गजस्वामी।—पादल (पु०) कज्जल, काजल, सुरमा।—पाल (पु०) हाथीवान, महावत, फीलवान।—पिप्पली (स्त्री०) पीपर विशेष, गज-पीपर।—पुङ्गव (पु०) मुख्य गज, प्रधान हाथी पुट (पु०) औषध पकाने के लिये एक प्रकार का गढ़ा।—भिषक् (पु०) साठि।—मुख (पु०) हाथी, गणेश।—मुक्ता (स्त्री०) हाथी के मस्तक का सम्पत्थ मोती।—मोती (स्त्री०) गजमुक्ता।—यूथ (पु०) हाथियों की टोली, हाथियों का झुण्ड, हस्तिसमूह।—राज (पु०) बड़ा हाथी—रि तद्० (पु०) शेर, बाघ, सिंह, व्याघ्र।—वदन (पु०) गजमुख, हस्तिमुख, गणेश।—वरी (पु०) बड़ा हाथी, ऐरावत।—ाध्यक्ष (पु०) हाथी का अधिपति, हस्तिस्वामी।—ानन (पु०) गणेश, गजवदन।—ारि (पु०) सिंह, मृगराज, वृक्ष विशेष।—ाशन (पु०) पीपल वृक्ष, पीलुवृक्ष।—ास्य (पु०) लम्बोदर, गणेश।—ाह्वय (पु०) नगर विशेष, हस्तिनापुर।—ेन्द्र (पु०) ऐरावत, दिग्गज।

गज़ब (पु०) रिस, कोप, आफ़त, जुल्म अन्धेर।

गजर तद्० (पु०) गाजर, एक मूल विशेष।

गजर बजर (पु०) घालमेल, गिचपिच।

गज़ल (स्त्री०) उर्दू फ़ारसी की एक प्रकार की कविता जिसमें शृङ्गार रस ही प्रायः रहता है।

गजरा तद्० (पु०) गाजर के पत्ते, फूलों की मोटी माला।

गजाना दे० (स्त्री०) सड़ाना, पचाना, गन्ध देना, बसाना। [पिट्, केरा, केला।

गजबुसा तद्० (पु०) कदली, कदलीवृक्ष, केले का

गजा दे० (पु०) सुर्मा, खजूर, मिष्ठान्न विशेष।

गझ दे० (पु०) रोग विशेष, एक रोग जो सिर में होता है, राशि, ढेर, समूह, हाट बज़ार, ख़ज़ाना।

गझना दे० (क्रि०) यातना, वेदना, पीड़ा, दुःख, ग्लानिसूचक वाक्य।

गञ्जा तद्० (वि०) जिसके सिर में बाल न हों, रोग विशेष, गाँजा, मयगृह। [कौंधित, पीड़ित।

गञ्जित दे० (गु०) अपमानित, कलङ्कित, दुःखित,

गञ्ज दे० (पु०) जय में प्राप्त धन, जीता धन।

गञ्झीन दे० (गु०) घन, सघन, घना, निविड़।

गटई (स्त्री०) गर्दन, गला।

गटकना (पु०) निकालना, खाना।

गटपट दे० (गु०) उलट पुलट, एकत्रित करना, झगड़ा।

गटागट (वि०) धड़ाधड़, बराबर, लगातार।

गटापारचा (पु०) एक प्रकार का गोंद।

गटी दे० (स्त्री०) समूह, राशि, यूथ, यथा—"जब ज्ञान फटी दुःख की दुपटी, न रहे जहँ एक घटी बिथुरी रुचि, मोच घटी हु घटी जगजीव यतीन की छूटी चटी, अघ ओघ की बेरी कटी बिकटी, निकटी प्रकटी गुरु ज्ञान गटी, पहुँ ओरन नाचत मुक्ति नटी, गुण धूर जटी जटि पञ्चवटी।"

रामचन्द्रिका।

गट्ट (पु०) गले से निकला हुआ निगलने का शब्द।
गट्टा दे० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध मिठाई, गुरफ।
गट्ठर दे० (पु०) गट्ठा, बड़ी गठरी।
गट्ठा दे० (पु०) बड़ी गठरी, प्याज का गट्ठा।
गठकटा (वि०) धाँई, गिरहकट।
गठन तद्० (पु०) निर्माण करण, रचन।
गठना तद्० (क्रि०) जुड़ना, मिलना, सम्मिलित होना, एकत्रित होना, परस्पर प्रेमी बनना। [को बाँधना।
गठबंधन (पु०) गठ जोड़ा, वर वधू के वस्त्रों के छोर
गठर दे० (पु०) बड़ा गाँठ, गठिला।
गठरी दे० (स्त्री०) गाँठ, मोट, गठर, बोझ, भार।
गठवाना दे० (क्रि०)गठाना, गाँठ बाँधना, बँधवाना, जूता गठवाना। [छुगवाना।
गठाना दे० (क्रि०) गठवाना, सिलवाना, पैवन्द
गठित तद्० (गु०) रचित।
गठिया दे० (स्त्री०) गठरी, ग्रन्थि, गाँठ, वात रोग विशेष, ग्रन्थियुक्त।
गठियाना (क्रि०) गाँठ में बाँधना।
गठिहा दे० (गु०) गाँठों वाला, ग्रन्थियुक्त।
गठीला दे० (गु०) सख्त, पुष्ट, हृष्टपुष्ट, हट्टाकट्टा, सपडसुसपड।
गठुवा दे० (गु०) कपड़ों की गाँठ, सूत की ग्रन्थि।
गड़ (पु०) ओर, रोक, आड़, चारदीवारी, खाँई, गढ़।
गडंत दे० (पु०) गण्डा, टोना, एक खेल का नाम।
गड़क दे० (पु०) एक प्रकार की मछली।
गड़गड़ाना दे० (क्रि०) गरजना, गर्जन करना, मेघ या नगारे की ध्वनि। [आवाज़।
गड़गड़ाहट दे० (स्त्री०) धड़क, गर्जन, गुड़गुड़ाने की
गड़गड़ी दे० (स्त्री०) नगाड़ा।
गड़गूदर दे० (पु०) चिथड़ा, फटा पुराना कपड़ा।
गड़न दे० (पु०) धसान, दलदल, गढ़त, निर्माण, मूर्ति, आकार। [पैठना आसक्त होना, छिदना।
गड़ना दे० (क्रि०) धसना, धसजाना, रहजाना,
गड़प (पु०) जल में किसी वस्तु के अचानक गिरने का शब्द।—ना (क्रि०) निगलना, किसी वस्तु का चपा जाना।
गड़प्पा (पु०) धोखे का स्थान, बड़ा गहरा गड्ढा।
गड़बड़ दे० (स्त्री०) गटपट, उलट पुलट।
गड़बड़ाहट दे (स्त्री०) खड़बड़ी, भय, डर, भीति, अनियमित, अनिश्चित।
गड़बड़ी दे० (पु०) खलबली, मदोरा, मिलाव।
गड़बल दे० (पु०) परिहास में इस नाम से पुकारना, बानर का दूसरा नाम।
गड़रिया दे० (पु०)मेषपाल, भेड़िहार, जातिविशेष, भेड़ पालनेवाली जाति।
गड़लवण दे० (पु०) साँभर नोन।
गड़हा दे० (पु०) गर्त, गढ़ा, ताल।
गड़ही दे० (स्त्री०) तलैया, छोटा गढ़ा।
गड़ाना दे० (क्रि०) बिंधना, चुभाना, खोसना।
गड़ारी (स्त्री०) गोल लकीर, घेरा।—दार (वि०) घेरदार, क्यारियाँ। [हथियार।
गड़ासा (पु०) करबी आदि की कुट्टी काटने का
गड़ियार दे० (गु०) मगरा, मचला, अड़हठी, आलसी, अनुद्योगी, जड़।
गड़ी दे० (क्रि०) धसी, डूबी, धस गयी, डूब गई।
गडुआ दे (पु०) टोंटीदार लोटा इथहर।
गडुर तद्० (पु०) गरुड़, पक्षिराज, वैनतेय।
गडुवा दे० (पु०) जलपात्र विशेष, कलश, गडुआ।
गड़ेरिया दे० (पु०) गड़रिया, चरवाहा, मेषपाल, भेड़ आदि पालने वाला।
गड़ोना दे० (क्रि०) छेदना, खोसना, चुभाना, बिंधना।
गड्ड (पु०) तह पर तह, एक ही वस्तु का तर ऊपर रखा हुआ ढेर, बहुत वस्तुओं का मेल।
गड्डालिका तद्० (स्त्री०) देखा देखी कार्य में प्रवृत्ति होना, अविचारित कर्म में प्रवृत्ति, भेड़िया धसान।
गड्डी दे० (स्त्री०) आँटी, पुला, दसदस्ते कागज़।
गढ़ दे० (पु०) दुर्ग, कोट, क़िला, गढ़ी, राजमहल।
गढ़न दे० (पु०) बनावट, रचना, निर्माण। [सुधारना।
गढ़ना दे० (क्रि०) निर्माण करना, बनाना, रचना, टाँसना,
गढ़नि दे० (स्त्री०) बनावट, रचना, गढ़ का बहु वचन।
गढ़न्त (वि०) बनावटी, कल्पित।
गढ़वार दे० (गु०) मोटा, स्थूल, गाढ़ा।
गढ़पाल दे० (पु०) क़िले का रक्षक, गढ़ रक्षक, गाढ़ा, साठा, एक नगर का नाम जो उत्तर भारत में है।
गढ़ा दे० (पु०) गड़हा, गर्त।
गढ़ाई दे० (स्त्री०) गढ़ने की मजूरी, गढ़ने की बनाई

बनाने का परिश्रम। (क्रि०) गढ़ना, गढ़वाना, गढ़ाना।

गढ़िया दे० (स्त्री०) भाला, बरछी, बल्लम, कुन्त, प्रास।

गढ़ी दे० (स्त्री०) छोटा कोट, गढ़। [खोदा हुआ गढा।

गढेला दे० (पु०) गड्ढा, खड्ढर, गढ़ा, गढ़ा हुआ,

गढ़ैया दे० (पु०) छोटा पोखर, तलाई।

गण तत्० (पु०) समूह, थोक, जाति, झुण्ड यूथ, रुद्र का अनुचर, प्रथम रुद्र का गण, सेना, सख्या विशेष, २१ रथ, ८१ घोड़े, १३५ सिपाही इस सेना में होते हैं। छन्द शास्त्र के आठ गण, १ मगण, २ भगण, ३ सगण, ४ रगण, ५ यगण, ६ तगण, ७ मगण, ८ नगण इनका लक्षण ऐसा है "आदि मध्य अवसान में भ ज स होहिं गुरु जान, य र त होहिं लघु क्रमहिं सो म न गुरु लघु सब जान।"

गणक तत्० (पु०) गणना करने वाला, ज्योतिषी, दैवज्ञ, ज्योतिर्वेत्ता, गणनाकारी।

गणता तत्० (स्त्री०) गण का धर्म समूहत्व, पक्षपातिता, धूर्तमण्डली। २ [मिले हुए अनेक देव।

गणदेवता तत्० (पु०) मिलितदेवता, सहतदेवता,

गणन तत्० (पु०) सख्या करण।

गणना तत्० (स्त्री०) सख्या, गिनना, पक्षपात।

गणनाथ, गणनायक तत्० (पु०) गण स्वामी, गणेश।

गणनीय (वि०) गिनने योग्य, प्रख्यात। [सख्या के मालिक।

गणपति तत्० (पु०) गणेश, समाजपति, सम्मिलित,

गणपाठ (पु०) ग्रन्थ विशेष।

गणराऊ तद्० (पु०) गणराज, गणनाथ।

गणाधिप तत्० (पु०) शिवपुत्र, गणेश, गजानन।

गणाध्यक्ष (पु०) गणेश, शिव। [स्वैरिणी, कुलटा।

गणिका तत्० (स्त्री०) वाराङ्गना, वेश्या, पतुरिया, पातुर,

गणित तत्० (पु०) अङ्कविद्या, ज्योति शास्त्र, सख्यात, गणना किया हुआ।—कार (पु०) गणक, ज्योतिर्वेत्ता, अङ्कवेत्ता।—ज्ञ (पु०) ज्योतिषी।

गणेश तत्० (पु०) शिवपुत्र, हेरम्ब, लम्बोदर, गजानन, ये पार्वती के पुत्र हैं, इनका सम्पूर्ण शरीर देवों का सा परन्तु मुख हाथी का है। शिवजी की आज्ञा से पार्वती ने पुण्यक व्रत का अनुष्ठान कर विष्णु को प्रसन्न किया, विष्णु ने पुत्र के लिये वरदान दिया जिसके फल से गणेश का जन्म हुआ, गणेश जी को देखने के लिये सभी आये, उनमें शनिश्चर अपनी दृष्टि की महिमा जानते थे इसी कारण गणेश को देखने की उनकी इच्छा न थी परन्तु पार्वती ने अनुरोध किया, अतएव उन्होंने भी अपनी दृष्टि उठायी, उनके देखते ही गणेश का मस्तक ऊपर उड़ गया, देवताओं ने विष्णु की स्तुति की, विष्णु ने हाथी का माथा जोड़ दिया।—क्रिया (स्त्री०) योगाभ्यास की एक क्रिया, इसमें क्रिया विशेष द्वारा मलद्वार से मल साफ किया जाता है।—चतुर्थी (स्त्री०) भादों, माघ और फागुन शुक्ला ४ चतुर्थी। इन तिथियों में स्मार्त लोग गणेश जी का धूम धाम से पूजन करते तथा व्रत उपवास करते हैं।

गण्ड तत्० (पु०) कपोल, गाल, कनपुटी, फोड़ा, चिन्ह, गाँठ, नाटक का वीथी नामक एक अङ्ग, जिसमें अचानक प्रश्नोत्तर हों, गजकुम्भ।

गण्डक तत्० (पु०) गैंडा, गाँठ, चिन्ह।

गण्डकी तद्० (स्त्री०) स्वनामख्यात नदी, जो विहार में है और नैपाल से आई है, जिसमें शालिग्राम निकलते हैं।

गण्डमाला (स्त्री०) कण्ठमाला, गले के नीचे का रोग जिसमें माला की तरह गाँठें गर्दन में उठ आती हैं।

गण्डमूर्ख तत्० (वि०) बड़ा मूर्ख, भारी बेवकूफ।

गण्डशैल तत्० (पु०) पर्वत से टूटा हुआ बड़ा पत्थर, छोटा पहाड़।

गण्डस्थल (पु०) कनपटी, गाल, कपोल।

गण्डा दे० (पु०) सख्या विशेष, चार कौड़ी, चार पैसा, चार रुपया, चार आम आदि, तन्त्र मन्त्र किया हुआ, सूत, हँसली, कण्ठा।—न्त (पु०) ज्योतिष मतानुसार योग विशेष। [शस्त्र विशेष।

गँड़ासा दे० (पु०) कुट्टी काटने का बड़ा गँड़ासा,

गँड़ासी दे० (स्त्री०) छोटा गँड़ासा।

गण्डिका तद्० (स्त्री०) नदी विशेष, गण्डकी।

गण्डि दे० (पु०) रोग विशेष, गण्डमाला। [स्थान।

गण्डी दे० (स्त्री०) घेरा, रेखा आदि के द्वारा सीमाबद्ध

गण्डीर तत्० (पु०) सेंहुँड़ वृक्ष, शाक, क्षुप।

गण्डूल तद्० (पु०) मृकुल, विकसित।

गण्डूष तत्० (स्त्री०) पानी का कुल्ला हाथी की सूँड़ की नोक, हाथ के अङ्गुठे का गड्ढा।

गण्डेरी तद्० (स्त्री०) ऊख के टुकड़े, कटे हुए ऊख के गुल्ले। [करने योग्य।

गण्य तत्० (गु०) गणनीय, गणनार्ह, माननीय, संख्या

गत तत्० (गु०) अतीत, व्यतीत, विज्ञात, हत, नष्ट, भिन्न गया, निकृष्ट, मुक्त, लीन, प्राप्त।—ङ्क (वि०) गया, बीता, जिसमें सत्पुरुषोचित कोई चिन्ह न हो।—क्लम (गु०) विश्रान्त, श्रमरहित।—त्रप (गु०) निर्लज्ज, लज्जा रहित।—प्रभ (गु०) प्रभा हीन, निष्प्रभ।—वित्त (गु०) गत विभव, निर्धन, दरिद्र।—वैर (गु०) निरुपद्रव, शत्रुरहित, अजातशत्रु।—व्यथ (गु०) अक्लेश, क्लेश रहित, सुखी।—ागत (पु०) यातायत, गमनागमन, आना जाना, पक्षियों की गतिविशेष, आवागमन, जन्म मरण, आया गया।—ाधि (गु०) सुखी।—ानुगतिक (गु०) अनुकरण करने वाला, अनुकारी, पिछलग्गू।—ायुः (गु०) व्यतीत आयु, जीवन का अवसानकाल, मरणासन्न, मुमुर्षु।—ार्थ (गु०) अभिप्रायसिद्धि, एक से दूसरे का निष्प्रयोजन होना।

गति तत्० (स्त्री०) यात्रा, दशा, चाल, हरकत, पहुँच, सहारा, विधान, ढंग, रीति, जीव का एक शरीर छोड़ कर दूसरे शरीर में जाना, मरने के बाद जीव की दशा, मोक्ष, पैंतरा, ग्रहों की चाल, सितार आदि के बादन की क्रिया विशेष।—क्रिया (स्त्री०) विलम्ब, कालक्षेप, शिथिलता।—विहीन (गु०) गतिहीन, गमनशक्ति रहित।

गत्ता दे० (पु०) दफ़्ती, कुट।

गथ तद्० (पु०) पूँजी, माल, मोल, धन, झुँड।

गद तत्० (पु०) व्याधि, रोग, श्रीकृष्ण के एक भाई का नाम, श्रीरामचन्द्र की सेना का एक बन्दर, असुर विशेष।

गदका दे० (पु०) पटा, दण्ड विशेष।

गदकारी तत्० (गु०) रोग उत्पन्न करने वाला (पदार्थ)।

गदगदा दे० (गु०) मोटा, स्थूल, तुन्दिल, तोंदैला।

गदर (पु०) बलवा, हलचल।

गदरा दे० (वि०) गहर, अधपका।

गदराना (क्रि०) पकने पर होना, जवानी में अंगों का पूर्णता को प्राप्त होना। [या कीचड़ मिला हुआ।

गदला दे० (गु०) मैला, धुमीला, मलिन, गंदा, मिट्टी

गदलाई दे० (स्त्री०) मैलापन, धुमीलापन, मालिन्य।

गदशत्रु तत्० (पु०) वैद्य, औषध।

गदह तद्० (पु०) गधा, खर, गदहा।—पचीसी दे० (स्त्री०) १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था, जिसमें इस अवस्था वाले को अनुभव नहीं रहता और उसकी बुद्धि कच्ची रहती है।—पन दे० (पु०) मूर्खता, नासमझ, बेवकूफ़।—पूरना (स्त्री०) पुनर्नवा बूटी, ओषधि विशेष।—लोटना (स्त्री०) वह स्थान जहाँ गदहा लोटे हों।

गदहा तद्० (पु०) वैद्य, रोग मिटाने वाला, गंधर्व।

गदहिया (स्त्री०) गदही।

गदा तत्० (स्त्री०) लोहे का अस्त्र विशेष, लोहे का मुग्दर या लाठी।—धर (पु०) विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण।—युध (पु०) यष्टि, लाठी, गदा।—युद्ध (पु०) युद्ध विशेष।—रि (पु०) रोगशत्रु, रोगनाशक वैद्य। [का औज़ार विशेष।

गदाला दे० (पु०) हाथी पर का गद्दा, मिट्टी खोदने

गदाग्रज तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, भगवान्।

गदित तत्० (पु०) उक्त, कथित, भाषित, कहा हुआ।

गदी तत्० (पु०) विष्णु नारायण (गु०) गदा विशिष्ट, रोगयुक्त, रोगी।

गदेला दे० (पु०) शिशु, बच्चा, मा का दूध पीने वाला बच्चा, कोरे का बच्चा, मोटा बिछौना।

गद्गद तत्० (गु०) पुलकित, प्रसन्न।

गद्द दे० (पु०) कोमल स्थान पर किसी वस्तु के गिरने की आवाज़, अजीर्ण, अनपच।

गद्दर दे० (गु०) अर्ध पक, अधपका, गदरा।

गद्दा दे० (पु०) रुई या घास, आदि से भरा मोटा बिछौना, हाथी के हौदे के नीचे कसा जाने वाला गद्दा।

गद्दी दे० (स्त्री०) बिछौना, मोटा बिछौना, सिंहासन, रोज़गारी के बैठने का स्थान, अधिकारी का पद, किसी राजा या आचार्य की शिष्य परम्परा।—नशीन (वि०) सिंहासनासीन, गद्दी पर बैठने वाला, उत्तराधिकारी।

गद्य तत्० (पु०) छन्द रहित वाक्य, प्रबन्ध।—त्मक तत्० (वि०) गद्य का गद्यमय, गद्य सम्बन्धी।

गधा दे० (पु०) गदहा, गर्दभ, खर।

गन तद्० (पु०) गण, समूह, यूथ, सखीयों का समूह।
गनई तद्० (स्त्री०) गिनता है, गिनती करता है।
गनगौर (स्त्री०) चैत्रसुदी ३ जिस दिन गणगौरी का पूजन होता है। [का ग्रह योग देखना।
गनना तद्० (स्त्री०) गणना, गिनती विवाह में वरवधू
गनी (वि०) धनवान, शत्रु।—मत बड़ी बात, धन्यवाद देने योग्य बात, मुफ्त का माल।
गन्तव्य तद्० (पु०) गमन योग्य, सुगम, जाने का स्थान, गमनशील।
गन्दना दे० (पु०) कन्द मूल विशेष, लहसुन की गाँठ में जौ डाल कर बोने से पैदा होने वाली घास विशेष।
गन्दा दे० (वि०) मैला, घिनौना, अशुद्ध।
गन्ध तद्० (पु०) नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की बास, महक, आमोद, सौरभ, घ्राण सम्बन्ध, प्रणय।—गर्भ (पु०) बेलवृक्ष।—द्रव्य (पु०) सुगन्धित वस्तु सुवासित द्रव्य।—द्विप (पु०) उत्तम हस्ति।—पुष्प (पु०) चन्दन और फूल।—प्रिय (पु०) घ्राणलुब्ध, गन्धग्राही।—वणिक् (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, अत्तार।—मादन पर्वत विशेष, वानर सेनापति।—राज (पु०) चन्दन, सुगन्धित फूल।—वह (पु०) वायु पवन।—वाह (पु०) पवन, कस्तुरिया हरिन, नाक, नासिका।—सार (पु०) चन्दन, श्रीखण्ड।
गन्धर्व तद्० (पु०) स्वर्गगायक, यक्ष, देवयोनि-विशेष, घोड़ा, कस्तूरीमृग, एक गायक जाति की कथाएँ।—विद्या (स्त्री०) गीत, वाद्य, नृत्य।—विवाह (पु०) अष्टविवाह का एक भेद, उत्सवहीन विवाह।—वेद (पु०) सङ्गीत-विद्या, गीतशास्त्र।—नगर (पु०) अलका, गन्धर्वों का वासस्थान, असत्य नगर, मिथ्या नगर, कल्पित नगर। (स्त्री०) गन्धर्वी।
गन्धक तद्० (स्त्री०) एक खनिज पदार्थ।
गन्धान तद्० (पु०) सुवर्ण, सोना।
गन्धाना दे० (क्रि०) बसाना, गन्ध देना, मँहकना।
गन्धाश्मा तद्० (पु०) गन्धक, उपधातु विशेष।
गन्धार तद्० (पु०) स्वरों में रागिनी विशेष, देश विशेष, कन्धार, तीसरा स्वर, गान्धार।
गन्धारी तद्० (स्त्री०) देखो गान्धारी, पार्वती की एक सखी का नाम, जवासा, गाँजा, बाएँ नेत्र से निकलने वाला श्वास। यथा—

गन्धारी वामच निवासी,
दक्षिणा दक्षिण दिग्वासी"

—ज्ञानतरङ्ग

गन्धि तद्० (स्त्री०) गन्ध, बास, गन्धक।
गन्धिका तद्० (स्त्री०) बाहुतेर, गन्धक। [लाजवन्ती।
गन्धकारिणी तद्० (स्त्री०) लजालु, औषधि विशेष,
गन्धिपर्ण तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके पत्तों में गन्ध हो, छतिवन वृक्ष। [लोलुप।
गन्धिलुब्ध तद्० (पु०) सुगन्धाभिलाषी, सुगन्ध-
गन्धी दे० (पु०) सुगन्धि वस्तुविक्रेता, अतर बेचने वाली जाति, एक घास, एक कीड़ा।
गन्दीला तद्० (वि०) मैला, गँदला।
गन्य तद्० (पु०) गिनने के योग्य, गण्य, गिनती में, गिनती करने लायक।
गप दे० (पु०) गपशप, इधर उधर की बातें, निरर्थक बातें, झूठी बातें, गपोड़ा, कहानी। [निगल जाना।
गपकना दे० (क्रि०) खा जाना, शीघ्रता से खा जाना,
गपड़ दे० (पु०) मिलावट, व्यर्थ, निरर्थक।—चौथ (सा०) अज्ञात, अनिश्चित, अनियमित।
गपशप दे० (सा०) झूठी सच्ची बात, मनोरञ्जन की बात।
गपोड़ (वि०) गप्पी, डींग हाँकनेवाला।
गपोड़ा (पु०) मिथ्या कथन, गपशप।—बाज़ी (स्त्री०) निरर्थक बकवाद।
गप्प दे० (स्त्री०) कहानी उपकथा, झूठी बातें।
गप्पी दे० (पु०) बकवादी, असत्यवादी, बातुल, अविश्वसनीय वक्ता।
गप्फा (पु०) बड़ा ग्रास, लाभ।
गफ़लत (स्त्री०) भूल, असावधानी, प्रमाद।
गबन (पु०) अमानत, धरोहर हड़पना।
गबरगंड (वि०) जड़, मूर्ख, अनारी। [पति, दूल्हा।
गबरू दे० (वि०) जवान, युवा, पट्ठा, सीधा (पु०)
गबरून दे० (वि०) वस्त्र विशेष, ट्वीन।
गबाशन दे० (पु०) चर्मकार, चण्डाल, म्लेच्छ।
गभस्ति तद्० (पु०) किरन, रश्मि, प्रकाश, सूर्य, बाँह, हाथ। (स्त्री०) स्वाहा, अग्नि की स्त्री।—मत (पु०) सूर्य, पाताल विशेष, तलातल।

गभीर तद्० (गु०) गहरा, गम्भीर, अथाह, अगाध, सूक्ष्म।—ता (स्त्री०) अगाधता, नीचे की ओर का परिमाण।—त्व (पु०) गम्भीरता, निम्नता।

गभुआरे दे० (गु०) गर्भ शिशु बालकों के जन्म के बाल, झगुलिया बाल, घुंघेदार बाल, जडूले केश, घूँघरवाले बाल। [(गम) रंज, दुःख।

गम तद्० (पु०) [गम्+अल] गमन, रास्ता,

गमक दे० (पु०) तबले या मृदङ्ग की गम्भीर ध्वनि. राग का स्वर विशेष, जतानेवाला सूचक।

गमकीला दे० (गु०) गन्धवान, सुगन्धित, सुवास, गमकदार, महकने वाला। [महकशीलता।

गमखोर (वि०) सहिष्णु, सहनशील।—ी (स्त्री०)

गमन (दे० (पु०) मार्ग रास्ता, व्यवसाय।

गमन तद्० (पु०) [गम्+अनट्] प्रयाण, यात्रा, जाना चलना, चाल, गति, विदाई, निमर्जन, प्रस्थान, पूजना अमरण सम्भोग मैथुन।—ागमन (पु०) आना जाना आवागमन।

गमना दे० (क्रि०) जाना, चलना।

गमला दे० (पु०) मिट्टी का एक बरतन जिसमें छोटे पेड़ लगाये जाते हैं, (कमोड) मथना।

गमाना (क्रि०) खोना।

गमार दे० (पु०) गँवार देहाती।

गमी तद्० (गु०) [गम्+ईन्] गमनकर्ता, जाने वाला, चलने वाला।

गमी दे० (स्त्री०) मौत मरनी, मृत्यु।

गम्भारी तद्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, गम्भीर का वृक्ष।

गम्भीर तद्० (गु०) गभीर, अगाध, अतलस्पर्श, अथाह।—ता (स्त्री०) गाम्भीर्य, गभीरता। —वेदी (पु०) [गम्भीर+विद्+णिन्] मत्त हस्ति दुर्दमनीय हाथी, हस्ति विशेष जो हस्तिपक की शिक्षा न माने।

गम्मत दे० (स्त्री०) विनोद और बहार, हँसी दिल्लगी।

गम्य तद्० (गु०) [गम्+य] [illegible] [illegible] करने योग्य [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] योग्य।—मान (पु०) [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] का वर्तमान [illegible] —[illegible] (पु०) [illegible] [illegible], बहुप्रकार, [illegible] कठिन, कष्टसाध्य।

गय तद्० (पु०) घर, आकाश धन प्राण, पुत्र, हाथी।

"हय गय बसह हंस मृग आवत"

—सूरदास।

(१) धर्मनारायण मतकर्मों एक राजा का नाम, ये अमूर्तरय के पुत्र थे. इन्होंने १०० वर्ष तक यज्ञ का अन्न खाया था. अग्नि के वर से वेद पाठ का अधिकार इन्हें प्राप्त हुआ था. शत्रुनाश पूर्वक इन्होंने अपना राज्य विस्तार किया था। ये प्रति दिन एक लाख साठ हजार गौ दस हजार घोड़े और एक लाख निष्क (मुद्रा विशेष) दान करते थे इन्होंने एक यज्ञ किया था, जिस की वेदी की लम्बाई ६२ योजन थी, वह वेदी सोने की बनी थी।

(२) एक असुर का नाम इसी असुर के नाम पर हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ गया स्थापित हुआ है। यह असुर होने पर भी विष्णुभक्त था विष्णु की प्रसन्नता के लिये कोलाहल पर्वत पर इसने कठोर तपस्या की थी इसके दर्शन मात्र से पापों के छूटने और स्वर्ग जाने का वर विष्णु ने इसको दिया था।

(३) श्रीराम की वानरी सेना का एक सेनापति वानर।

गयल (स्त्री०) रास्ता पथ, गली वीथी।

गयन्द तद्० (पु०) गजेन्द्र, प्रधान हस्ति, बड़ा हाथी।

गया तद्० (स्त्री०) [गय+आ] गय नामक राजा की पुरी, तीर्थ विशेष।—वाल (पु०) गया के वासी, गया के पण्डा।—सुर (पु०) असुर विशेष।

ग्यारस तद्० (स्त्री०) व्रतविशेष, एकादशी, एकादशी तिथि।

ग्यारह तद्० (पु०) संख्या विशेष, दस और एक, एकादश ११।—वाँ (वि०) ग्यारहवीं संख्या का ग्यारहें स्थान का।

गर तद्० (पु०) [गृ+अच्] एकादश करणों में का एक करण, रोग विष, हलाहल, गरल, उपविष नामक विष का भेद। (व्य०) गला कण्ठ। —घ्न (पु०) [गर+हन्+टक्] विषघ्न, रोग नाशक।—द (पु०) विषदाता।

गरई दे० (क्रि०) गल जाता है, मरता है, शिथिल होता है, नष्ट होता है।

गन तद्० (पु०) गण, समूह, यूथ, सजीवों का समूह।
गनई तद्० (स्त्री०) गिनता है, गिनती करता है।
गनगौर (स्त्री०) चैत्रसुदी ३ जिस दिन गणगौरी का पूजन होता है। [का ग्रह योग देखना।
गनना तद्० (स्त्री०) गणना, गिनती विवाह में वरवधू
गनी (वि०) धनवान, शत्रु।—मत बड़ी बात, धन्यवाद देने योग्य बात, मुफ़्त का माल।
गन्तव्य तद्० (पु०) गमन योग्य, सुगम, जाने का स्थान, गमनशील।
गन्दना दे० (पु०) कन्द मूल विशेष, लहसुन की गाँठ में जौ डाल कर बोने से पैदा होने वाली घास विशेष।
गन्दा दे० (वि०) मैला, घिनौना, अशुद्ध।
गन्ध तद्० (पु०) नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की बास, महक, आमोद सौरभ, प्राण सम्बन्ध, प्रणय।—गर्भ (पु०) बेलवृक्ष।—द्रव्य (पु०) सुगन्धित वस्तु सुवासित द्रव्य।—द्विप (पु०) उत्तम हस्ति।—पुष्प (पु०) चन्दन और पुष्प।—प्रिय (पु०) घ्राणलुब्ध, गन्धग्राही।—वणिक् (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, अत्तार।—मादन पर्वत विशेष, वानर सेनापति।—राज (पु०) चन्दन, सुगन्धित पुष्प।—वह (पु०) वायु पवन।—वाह (पु०) पवन, कस्तूरिया हरिन, नाक, नासिका।—सार (पु०) चन्दन, श्रीखण्ड।
गन्धर्व तद्० (पु०) स्वर्गगायक, यक्ष, देवयोनि-विशेष, घोड़ा, कस्तूरीमृग, एक गायक जाति की कथाएँ।—विद्या (स्त्री०) गीत, वाद्य, नृत्य।—विवाह (पु०) अष्टविवाह का एक भेद, उत्सवहीन विवाह।—वेद (पु०) सङ्गीत विद्या, गीतशास्त्र।—नगर (पु०) अलका, गन्धर्वों का वासस्थान, असत्य नगर, मिथ्या नगर, कल्पित नगर। (स्त्री०) गन्धर्वी।
गन्धक तद्० (स्त्री०) एक खनिज पदार्थ।
गन्धान तद्० (पु०) सुवर्ण, सोना।
गन्धाना दे० (क्रि०) बसाना, गन्ध देना, महकना।
गन्धाश्मा तद्० (पु०) गन्धक, उपधातु विशेष।
गन्धार तद्० (पु०) स्वरों में रागिनी विशेष, देश विशेष, कन्धार, तीसरा स्वर, गान्धार।
गन्धारी तद्० (स्त्री०) देखो गान्धारी, पार्वती की एक सखी का नाम, जवासा, गाँजा, बाएँ नेत्र से निकलने वाला स्थान। यथा—

गन्धारी वामक निवासी,
हस्तजिह्वा दक्षिण दिग्वासी"
—ज्ञानतरङ्ग

गन्धि तद्० (स्त्री०) गन्ध, घास, गन्धक।
गन्धिका तद्० (स्त्री०) श्राहुवेर, गन्धक। [कामवन्ती।
गन्धकारिणी तद्० (स्त्री०) लजालू, औषधि विशेष,
गन्धिपर्ण तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके पत्तों में गन्ध हो, सप्तपर्ण वृक्ष। [लोलुप।
गन्धिलुब्ध तद्० (पु०) सुगन्धाभिलाषी, सुगन्ध-
गन्धी दे० (पु०) सुगन्धि वस्तुविक्रेता, अत्तर बेचने वाली जाति, एक घास, एक कीड़ा।
गन्धीला तद्० (वि०) मैला, गँदला।
गन्य तद्० (पु०) गिनने के योग्य, गण्य, गिनती में, गिनती करने लायक़।
गप दे० (पु०) गपशप, इधर उधर की बातें, निरर्थक बातें झूठी बातें, गपोड़ा, कहानी। [निगल जाना।
गपकना दे० (क्रि०) खा जाना, शीघ्रता से खा जाना,
गपड़ दे० (पु०) मिलावट, व्यर्थ, निरर्थक।—चौथ (वा०) अज्ञात, अनिश्चित, अनियमित।
गपशप दे० (वा०) झूठी सच्ची बात, मनोरञ्जन की बात।
गपोड़ (वि०) गप्पी, डींग हाँकनेवाला।
गपोड़ा (पु०) मिथ्या कथन, गपशप।—बाज़ी (स्त्री०) निरर्थक बकवाद।
गप्प दे० (स्त्री०) कहानी उपकथा, झूठी बातें।
गप्पी दे० (पु०) बकवादी, असत्यवादी, वातुल, अविश्वसनीय वक्ता।
गफ्फा (पु०) बड़ा ग्रास, लाभ।
गफ़लत (स्त्री०) भूल, असावधानी प्रमाद।
गबन (पु०) अपहरण, धरोहर हड़पना।
गबरगण्ड (वि०) जड़, मूर्ख अनारी। [पति, दूल्हा।
गबरू दे० (वि०) जवान, युवा, पट्ठा, सीधा (पु०)
गबरून दे० (वि०) वस्त्र विशेष, दूबीन।
गबाशन दे० (पु०) चर्मकार, चण्डाल, म्लेच्छ।
गभस्ति तद्० (पु०) किरन, रश्मि, प्रकाश, सूर्य, बाँह, हाथ। (स्त्री०) स्वाहा, अग्नि की स्त्री।—मत (पु०) सूर्य, पाताल विशेष, तलातल।

गभीर तत्० (गु०) गहरा, गम्भीर, अथाह, अगाध, सूक्ष्म।—ता (स्त्री०) अगाधता, नीचे की ओर का परिमाण।—त्व (पु०) गम्भीरता, निम्नता।

गभुआरे दे० (गु०) गर्भ शिशु बालकों के जन्म के बाल, अंगुलिया बाल, झुपेदार बाल, झडूले केश, घूँघरवाले बाल। [(गम) रंज, दुःख।

गम तत्० (पु०) [गम्+अल] महवास, रास्ता,

गमक दे० (पु०) तबले या मृदङ्ग की गम्भीर ध्वनि, राग का स्वर विशेष, जानेवाला सूचक।

गमकीला दे० (गु०) गन्धवान, सुगन्धित, सुवास, गमकदार, महकने वाला। [सहनशीलता।

गमखोर (वि०) सहिष्णु, सहनशील।—ी (स्त्री०)

गमत (दे० (पु०) मार्ग, रास्ता, व्यवसाय।

गमन तत्० (पु०) [गम्+अनट्] प्रयाण, यात्रा, जाना, चलन, चाल, गति, विदाई, विसर्जन, प्रस्थान, घूमना, भ्रमण, सम्भोग, मैथुन।—गमन (पु०) आना जाना, यातायात।

गमना दे० (क्रि०) जाना, चलना।

गमला दे० (पु०) मिट्टी का एक बरतन जिसमें छोटे पेड़ लगाये जाते हैं, (कमोड) पाखाना।

गमाना (क्रि०) खोना।

गमार दे० (पु०) गंवार देहाती।

गमी तत्० (गु०) [गम्+इन्] गमनकर्त्ता, जाने वाला, चलने वाला।

गमी दे० (स्त्री०) सोग, मरनी, मृत्यु।

गम्भारी तत्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, गम्भीर का वृक्ष।

गम्भीर तत्० (गु०) गभीर, अगाध, अतलस्पर्श, अथाह।—ता (स्त्री०) गाम्भीर्य, गभीरता।—वेदी (पु०) [गम्भीर+विद्+णिन्] मत्त हस्ति दुर्दमनीय हाथी, हस्ति विशेष, जो हस्तिपक की शिक्षा न माने।

गम्मत दे० (स्त्री०) विनोद और बहार, हँसी, दिल्लगी।

गम्य तत्० (गु०) [गम्+य] गन्तव्य, गमन करने योग्य जाने योग्य स्थान, प्राप्य, भोग में योग्य।—मान (गु०) वर्तमान, गमन क्रिया का वर्तमान व्यापार।—मत्व (गु०) साध्या-साध्य, सदुपचार, दुस्तर कठिन, कर्तव्याकर्तव्य।

गय तत्० (पु०) घर, आकाश धन, प्राण, पुत्र, हाथी।

"हय गय वसह हंस मृग जावत"

—सूरदास

(१) धर्मपरायण सत्कर्मी एक राजा का नाम, ये अमूर्तराय के पुत्र थे, इन्होंने १०० वर्ष तक यज्ञ का अन्न खाया था, अग्नि के वर से वेद पाठ का अधिकार इन्हें प्राप्त हुआ था, शत्रुनाश पूर्वक इन्होंने अपना राज्य विस्तार किया था। ये प्रति दिन एक लाख साठ हज़ार गौ, दस हजार घोड़े और एक लाख निष्क (मुद्रा विशेष) दान करते थे। इन्होंने एक यज्ञ किया था, जिस की वेदी की लम्बाई ६९ योजन थी, यह वेदी सोने की बनी थी।

(२) एक असुर का नाम इसी असुर के नाम पर हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ गया स्थापित हुआ है। यह असुर होने पर भी विष्णुभक्त था विष्णु की प्रसन्नता के लिये कोलाहल पर्वत पर इसने कठोर तपस्या की थी इसके दर्शन मात्र से पापों के छूटने और स्वर्ग जाने का वर विष्णु ने इसको दिया था।

(३) श्रीराम की वानरी सेना का एक सेनापति वानर।

गयल (स्त्री०) रास्ता पथ, गली वीथी।

गयन्द तद्० (पु०) गजेन्द्र, प्रधान हस्ति, बड़ा हाथी।

गया तत्० (स्त्री०) [गय+आ] गय नामक राजा की पुरी, तीर्थ विशेष।—वाल (पु०) गया के वासी, गया के पण्डा।—सुर (पु०) असुर विशेष।

ग्यारस तद्० (स्त्री०) व्रतविशेष, एकादशी, एकादशी तिथि।

ग्यारह तत्० (पु०) संख्या विशेष, दश और एक, एकादश, ११।—वाँ (वि०) ग्यारहवीं संख्या या ग्यारहे स्थान का।

गर तत्० (पु०) [गॄ+अच] एकादश करणों में का एक करण, रोग विशेष, हलाहल, गरल, उपविष नामक विष का भेद। (तद्०) गला कण्ठ।—द (गु०) [गर+दा+क] विषद, रोग-दायक।—ल (गु०) विषदाता।

गरई दे० (क्रि०) गल जाता है, मरता है, विनष्ट होता है, नष्ट होता है।

गरगराना दे० (क्रि०) गर्जना, कोलाहल करना, ज़ोर से बोलना।
गरज़ (ग़रज़्) दे० (पु०) प्रयोजन, आशय, कार्य (तद्०) चिंघाड़, गर्जन, घोरनाद, भयानक शब्द।
ग़रज़ या ग़रज़ी (वि०) इच्छुक, मतलबी, प्रयोजन, आशय, आवश्यकता।—मंद (वि०) इच्छुक, आवश्यकता रखनेवाला। [या सिंह का नाद।
गरजना दे० (क्रि०) घड़घड़ाना, भयानक ध्वनि, मेघ
गरद (गर्द) दे० (स्त्री०) रज, धूर, गरदा (पु०) विष देने वाला।
गरदन दे० (पु०) गला, कण्ठ, ग्रीवा।
गरदनियाँ दे० (स्त्री०) अर्द्धचन्द्र, किसी को किसी स्थान से गरदन पकड़ कर निकालना।
गरदा दे० (स्त्री०) गरद, रज, धूर, धूलि।
गरब (पु०) घमंड, अभिमान।
गरबीला दे० (वि०) घमंडी, अभिमानी।
गरभ तद्० (पु०) गर्भ, कुक्षि, पेट, उदर, अन्तर, भीतर, अहङ्कार, अभिमान।
गरम दे० (गु०) उष्ण, तप्त, सन्तप्त, क्रुद्ध, क्रोध, कोप।
गरमाई या गरमी दे० (स्त्री०) उष्णता, ताप, एक रोग विशेष।
गरल तद्० (पु०) [गर+ल] विष, सर्प विष, घास का पूला।—रि (गु०) मरकत मणि, पन्ना।
गरवा दे० (गु०) भारी, बोझदार, धीर, प्रतिष्ठित।—पन (पु०) बोझाई, मान्यता।
गरगरी दे० (स्त्री०) देवदाली, देवदालवृक्ष, देवताड़।
गरारी, गराड़ी दे० (स्त्री०) रस्सी बटने का यन्त्र, घर्री, टकुआ, कुएँ से जल निकालने के लिये काठ-निर्मित गोलाकार वस्तु विशेष, घिर्री।
गरिमा तद्० (स्त्री०) गुरुता, बड़ाई, दम्भ, अहङ्कार, योगी की आठ प्रकार की सिद्धियों में की एक सिद्धि।—न्वित (गु०) दाम्भिक, अभिमानी।
गरियाना (क्रि०) गाली देना, अपशब्द कहना।
गरिष्ठ तद्० (गु०) [गुरु+इष्ठ] अतिगुरु भारी, गरवा, अतिप्रतिष्ठायुक्त अतिशय माननीय। [गोला।
गरी दे० (स्त्री०) नारियल के भीतर का अंश, खोपरा,
गरीब दे० (वि०) दीन, हीन।—नेवाज़, निवाज़, निवाज़ (वि०) दीनों पर दया करने वाले।—परवर (वि०) दीन प्रतिपालक।—मऊ (वि०) भला बुरा, गरीब के योग्य।
गरीयान् तद्० (गु०) [गुरु+ईयस्] अतिगुरु, गरिष्ठ। (स्त्री०) गरीयसी।
गरुआ दे० (गु०) भारी, बोझा, बोझीला, बोझवाला।
गरुआई दे० (स्त्री०) भारीपन।
गरुड़ तद्० (पु०) पक्षिराज, गरुत्मान्, वैनतेय, विष्णु का वाहन पक्षी, प्रजापति ऋषि कश्यप के औरस और विनता के गर्भ से उनका जन्म हुआ था। इनके ज्येष्ठ भ्राता अरुण सूर्य के सारथी का काम करते हैं। गरुड़ ने स्वर्ग से अमृत लाकर अपनी माता का दासत्व छुड़ाया था। एक बार बुभुक्षित गरुड़ ने अपने पिता से भोजन के लिये कहा, एक तालाब में लड़ते हुए गज और कच्छप को खाने के लिये पिता ने प्रेरणा की, ये गज कच्छप पहले विभावसु और सुप्रतिक नामक सहोदर तपस्वी थे, परस्पर के शाप से इस योनि में आये थे, गरुड़ ने अपने चंगुल में उन्हें पकड़ लिया, और एक बरगद के पेड़ पर खाने की इच्छा से बैठे, उनके बैठते ही, उस पेड़ की डाल टूट गयी, गरुड़ चिन्तित हुए क्योंकि उसी डाल में समाधिनिरत बालखिल्य ऋषि थे, अतएव गरुड़ उस वृक्ष शाखा को लेकर अपने पिता के पास कर्तव्य स्थिर करने के लिये गये। पिता के अनुरोध से बालखिल्य वहाँ से दूसरी जगह गये, गरुड़ भी एक पर्वत पर जाकर सुख पूर्वक भोजन करने लगे।—[महा भा० आदि प०।]—ध्वज० (पु०) विष्णु, नारायण।—ग्रज (पु०) अरुण, सूर्य सारथि।—सन (पु०) गरुड़ पर का आसन, विष्णु। [गरुड़।
गरुत् तद्० (पु०) पक्ष, पाँख, पर।—मान् (पु०)
गरुता तद्० (स्त्री०) भारीपन, गुरुता, गौरव, बड़ाई।
गरुव (वि०) भारी, गुरु, बोझिल।
गरुवाई दे० (स्त्री०) भारीपन, गरुआई।
गरूर (पु०) घमंड, अभिमान, गर्व।—री (वि०) घमंडी।
गर्ग तद्० (पु०) मुनि विशेष ब्रह्मा के पुत्र, विख्यात ज्योतिर्वेत्ता ऋषि ये यदुवंशियों के कुल पुरोहित थे, गर्ग संहिता तथा ज्योतिष के और कई ग्रन्थ

इनके बनाये हैं; इनके पुत्र का गार्ग्य और कन्या का गार्गी नाम था। बैल, गगोरी, बिच्छू, केंचुआ।

गर्गज दे० (पु०) गुमट, शिखर।

गर्गया (दे०) पक्षी विशेष, गैरैया।

गर्गरी दे० (स्त्री०) माठा, दहेड़ी, गगरी, मथानी।

गर्ज तद्० (पु०) [गर्ज+अल्] शब्दध्वनि, नाद, रव।

गर्जन तद्० (पु०) [गर्ज+अनट्] शब्द नाद, उत्कट ध्वनि, भर्त्सन, कोप, युद्ध, मेघनाद, सिंहनाद, सर्पध्वनि, क्रुद्ध वीर की ध्वनि।

गर्जना (क्रि०) नाद करना, दहाड़ना।

गर्जित तद्० (गु०) [गर्ज+क्त] मेघ शब्द, मत्त हस्ति कृत शब्द।

गर्त्त तद्० (गु०) गड्ढा, भूमिरन्ध्र, विवर, घर, रथ, जलाशय, एक नरक का नाम, देश विशेष, त्रिगर्त, यह देश शतद्रु नदी के पूर्व की ओर था। आजकल के पटियाला के उत्तर है। इसे आज शतलज के नाम से पुकारते हैं।

गर्द (स्त्री०) धूल, खाक।—खोर (वि०) धूल पड़ने पर भी जो खराब सा न जान पड़े।

गर्दन (स्त्री०) गरदन, गला।

गर्दभ तद्० (पु०) पशु विशेष, रासभ, खर, गदहा, गधा।—ी (स्त्री०) गधी, क्षुद्ररोग विशेष, एक कीड़ा, सफेद कंट कर्म, अपराजिता लता।

गर्द्ध तद्० (पु०) [गर्द्ध+अल] लिप्सा, स्पृहा, पलक्षा, पाकर।

गर्भ तद्० (पु०) भ्रूण, अन्तरापत्य, शिशुकुक्षि, मध्य, अन्तर, उदर, पेट।—कण्टक (पु०) पनसफल, कटहल।—काल (पु०) गर्भ धारण के लिये उपयुक्त समय, ऋतुकाल।—गृह (पु०) सूतिकागृह, सौर। घातिनी— (स्त्री०) लाङ्गलिका वृक्ष गर्भनाश कारिणी स्त्री।—च्युत (गु०) गर्भ से पतित, अपूर्ण गर्भ से उत्पन्न।—ज (गु०) गर्भजात, पेत्रस पुत्र विशेष।—दास (पु०) दासी पुत्र, जन्म से ही दास, गर्भ में से ही पराधीन।—धारिणी (स्त्री०) जननी, माता, गर्भवती।—पात (पु०) गर्भनाश, पेट गिरना।—वती(स्त्री०) गर्भधारिणी, गुर्विणी ससत्वा अन्तरापत्यसहिता, गाभिन, दुर्हीमा।—स्राव (पु०) गर्भपात, गर्भ गिरना।—ागार तद्० (पु०) गृह के मध्य का स्थान, वासगृह, सूतिकागृह, प्रसवगृह।—ाङ्क (पु०) नाटक का अङ्क विशेष।—ाधान (पु०) गर्भ धारण करने के लिये संस्कार विशेष, प्रथम संस्कार, विशेष क्रिया।—ाशय (पु०) जरायू।—ाष्टम (पु०) गर्भ होने से आठवां मास या आठवां वर्ष।

गर्भिणी तद्० (स्त्री०) [गर्भ+इन्+] गर्भवती, गुर्विणी, द्विजीवा, दुपस्था।

गर्भित तद्० (गु०) [गर्भ+क्त] गर्भस्थित, उदर मध्यस्थ, पूर्ण, भरा हुआ, काव्य का एक दोष।

गर्रा दे० (वि०) लाख के रङ्ग का, रुहेलखण्ड की एक नदी।

गर्व तद्० (पु०) [गर्व+अल्] दर्प, अहङ्कार, अभिमान।—जनक (गु०) अहङ्कार जनक, दर्पान्वित।—ान्वित (गु०) अहङ्कारी, दर्पी, दम्भी।

गर्वित तद्० (गु०) [गर्व+इतच्] गर्वयुक्त, दर्पी, अहङ्कृत, जातगर्व, गरूरी।—ा (स्त्री०) नायिका जिसे अपने रूप, गुण अथवा प्रेम का घमंड हो।

गर्विष्ठ (वि०) अभिमानी, घमंडी।

गर्वी तद्० (गु०) [गर्व+ईन्] अहंकारी, घमंडी।

गर्वीला तद्० (वि०) घमंडी, अहङ्कारी।

गर्हण तद्० (पु०) [गर्ह+अनट्] कुत्सन, निन्दन, दोष देना, निन्दा करना।

गर्हणीय तद्० (गु०) [गर्ह+नीय] निन्दनीय, तिरस्करणीय, दूषणीय, दूष्य, निन्दा करने योग्य बुरा, अपवाद के योग्य। [निन्दा, दुर्वचन, बुराई।

गर्हा तद्० (स्त्री०) [गर्ह+ङ] तिरस्कार, अपवाद,

गर्हित तद्० (गु०) [गर्ह+इतच्] निन्दित, तिरस्कृत, प्राप्तगर्हा, जुगुप्सित।

गर्ह्य तद्० (गु०) [गर्ह+य] अधम, नीच, निन्दनीय, निन्द्य।—वादी (गु०) निकृष्टवादी, अपभाषी, दुर्वचन वक्ता।—वृत्ति (स्त्री०) अधम जीवन, निन्दित जीविका।

गल दे० (पु०) गला, कण्ठ, राल, गड़ाकू मछली, प्राचीन वाद्य विशेष (पंजाबी भाषा में बात—यह कैसी गल है)।—बहियां (वा०) परस्पर

कन्धे पर हाथ धर कर चलना, प्रणय का मुद्रा विशेष, परस्पर गले में बाह डालना।
गलका दे० (पु०) फोड़ा, रोग विशेष।
गलगण्ड सद्० (पु०) गण्डमाला, कण्ठमाला, गले में अतिरिक्त मांस लटकना।
गलगल दे० (पु०) चकोतरा, पक्षी विशेष।
गलगला दे० (वि०) भींगा हुआ, तर।
गलगुच्छा दे० (पु०) गलमुच्छा, गालों तक मोंछ।
गलग्रह सद्० (पु०) अनध्याय तिथि विशेष, श्वासावरोध, कष्टरोध, आपत्ति जो कठिनाई से टले, मछली का कांटा।
गलजन्दड़ा दे० (पु०) गलासटी, गले का हार, वह जो कभी पिंड न छोड़े, गले में लटकती हुई पट्टी. जिसमें चुटीला या घायल हाथ रखा जाता है.।
गलथड़ा (पु०) धक्का, हाँक, पुकार, गुहार।
गलतंस (स्त्री०) वह व्यक्ति अथवा उसकी सम्पत्ति, जिसके कोई सन्तान न हो।
गलत दे० (वि०) अशुद्ध, असत्य।—ी अशुद्धि, भूल।
गलतनी दे० (स्त्री०) गलबन्धन, गले का बधान।
गलना दे० (क्रि०) पिघलना, नरम होना, घुलना, घुल जाना, क्षीर्ण होना, दुबला होना, बेकाम होना, पुराना होना, नष्ट होना।
गलन्दा (पु०) कटुभाषी, मुखर, दुर्मुख। [अपनी प्रशंसा।
गलफटाकी दे० (स्त्री०) बड़ाई, घमण्ड, अपने मुँह
गलफड़ा दे० (पु०) कपोल, गाल, जबड़ा, गालों पर का मांस।
गलफांसी दे० (स्त्री०) गले की फाँसी, जजाल।
गलबाँह दे० (स्त्री०) गोदी, आलिङ्गन।
गलभङ्ग दे० (पु०) स्वरभङ्ग, बैठा हुआ कण्ठ।
गलसुआ दे० (पु०) एक रोग जिसमें गालों के नीचे के भाग में सूजन आ जाती है। [तकिया, बालिश्त।
गलसुई दे० (स्त्री०) तकिया, सिरहाना, छोटा
गलस्तने सद्० (पु०) गलथन, बकरियों के गले के नीचे की थन जुमा दो छोटी पाली थैलियाँ।
गलस्तनी दे० (स्त्री०) बकरी, अजा।
गलहँड़ दे० (पु०) *गलगण्ड घेघा, गलरोग।*
गलहस्त दे० (पु०) गलमहृष, गला घोंटना, गला दबाना, गले में हाथ लगाकर निकाल देना।

गलही दे० (स्त्री०) नाव के आगे का भाग।
गला दे० (पु०) गल, गर, कण्ठ, गरदन।—पड़ना (वा०) भारी शब्द होना, गला पनपाना।—फाँसना (वा०) उद्बन्धन करना, फाँसी देना।—बैठना (वा०) शब्द का भारी होना, गला पड़ना, एक प्रकार का रोग।—घोंटना (वा०) गला दबाकर मार डालना, फाँसी देना।
गलाना दे० (पु०) पिघलाना, द्रव करना, घुलाना।
गलाव दे० (पु०) पिघलना, बहाव, द्रव।
गलासी दे० (पु०) पशु बाँधने की रस्सी, पगहा।
गलित सद्० (पु०) [गल+इतच्] पतित, भ्रष्ट, च्युत, द्रवीभूत, सड़ियल।—कुष्ठ (पु०) असाध्य कुष्ठ रोग, महाव्याधि।
गलियाना दे० (क्रि०) गाली देना, बुरा कहना, अभिशाप देना, भोजन करने पर भोजन कराना, गले में ठूँसना। [गलियारी।
गलियारा दे० (पु०) छोटी गली, पैंडा, रथ्या। (स्त्री०)
गली, दे० (स्त्री०) छोटा मार्ग।—गली (वा०) एक गली से दूसरी गली में, गली गली में, प्रत्येक गली में यथा—"गली गली शासन हो रहा है, वह गली गली भाग गया"।
गलीचा या गलैचा दे० (पु०) कालीन, मोटा बुना हुआ गुदगुदा बिछौन, रोंयेदार बिछौना।
गलीज (वि०) मैला कुचैला।
गले दे० (पु०) गले में, गर में।—पड़ना (वा०) खुशामद बिलैया दण्डवत्, मिथ्या प्रशंसा।—पड़ो बजाये सिद्ध (वा०) अनिच्छा पूर्वक किसी काम को करना, अरुचि पूर्वक कर्म करना।—का हार होना (वा०) अतिशय प्रिय, अत्यन्त प्यार।—लगाना आलिङ्गन, अङ्कवार।
गलेफ दे० (स्त्री०) दोहर, दुहरा ओढ़ने का चादरा।
गलौआ दे० (पु०) गाल, बन्दरों के गालों के अन्दर की थैली। [गढ़ानी आख्यायिका।
गल्प दे० (स्त्री०) उपन्यास कल्पित कथा, उपकथा,
गल्ला दे० (पु०) चारो, धन राशि, ढेरा।
गल्लाना दे० (पु०) *कुल्ली का धन्धा।* [प्रयोजन, औसर।
गवँ दे० (पु०) घात, दाव, अवसर, मौका, गरज,
गवन दे० (पु०) गमन, चलन, गति।

गवना दे० (पु०) गौना, वधूप्रवेश, स्त्री का पति के घर दुबारा आना, द्विरागमन।
गवनि या गवनी दे० (स्त्री०) गमन करने वाली, चलने वाली, गई, चली गयी। [समान पशु।
गवय तत्० (पु०) जङ्गली पशु विशेष, गाय के
गवर्नमेण्ट दे० (स्त्री०) राजकीय शासक मण्डली, शासन पद्धति, राज्य।
गवनी दे० (क्रि०) गई, चली गयी।
गवहिं दे० (अ०) गौं से, प्रयोजन से, अवसर से, मौके से, मतलब से, चुपके से। (क्रि०) जाते हैं, गमन करते हैं।
गवाक्ष तत्० (पु०) [गव+अक्ष] झरोखा, मोखा, खिड़की, एक वानर का नाम।
गवावना दे० (क्रि०) गान कराना।
गवाम्भा तद्० (पु०) गोभक्षक, कसाई आदि।
गवाह दे० (पुं०) साक्षी, साखी।—ी (स्त्री०) साक्षी का बयान, साक्ष्य।
गवेधुका तत्० (स्त्री०) तृण, धान्य विशेष, गंगेरुआ।
गवेषणा तत्० (स्त्री०) खोज, छान बीन, अन्वेषण।
गवैया दे० (पु०) गायक, गाने वाला।
गवैहाँ दे० (वि०) ग्रामीण, देहाती, गँवार।
गव्य तत्० (पु०) गोसम्बन्धी द्रव्य, दुग्ध, घी गोबर आदि। [कोस, चार मील।
गव्यूति तत्० (स्त्री०) दो हजार धनुष की दूरी, दो
गशा (पु०) बेहोशी, मूर्छा।
गश्त (पु०) दौरा, भ्रमण, घूमना।
गसना दे० (क्रि०) अकड़ना, गाँठना, बाँधना, ठमना।
गसाग (स्त्री०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी नारी।
गस्सा दे० (पु०) ग्रास, कौर। [कर, धर, धर कर।
गह दे० (पु०) बेंट हत्था, दस्तकड़ा, पकड़ो, पकड़
गहई दे० (क्रि०) स्वीकार करते हैं, धरते हैं, पकड़ते हैं, ग्रहण करते हैं। [(क्रि०) लपकना, लहकना।
गहक दे० (स्त्री०) मत्तता, उन्मत्तता, धमक।—ना
गहगड्ड (वि०) गहरा, भारी, घोर।
गहगह दे० (पु०) नगर का आनन्द शब्द, सर्वत्र प्रसन्नता, यथा—"इस समय वहाँ गह गह हो रहा है"—। (वि०) प्रफुल्लित। [बहुत प्रसन्न होना।
गहगहाना दे० (क्रि०) हिलोरना, उमगना

गहगहे (क्रि० वि०) बड़े हर्ष के साथ।
गहन तत्० (पु०) गहराई, थाह, कुञ्ज, दुःख जल, ग्रहण, कलङ्क। (वि०) घना, दुर्भेद्य, वन, कानन, दुर्गम, गहरा।
गहनकर दे० (पु०) मत्त होना, उमगना, आनन्दित होना, पकड़ कर।
गहना दे० (क्रि०) पकड़ लेना, ग्रहण करना। (पु०) भूषण, अलङ्कार, गिरवी, बन्धक, न्यास। (ब० व०) गहने।
गहना दे० (स्त्री०) सन, पलास, काली पत्ती।
गहबर तद्० (गु०) सघन, शोचयुत, भरा हुआ कण्ठ, दुर्गम, व्याकुल, बेसुध, ध्यानमग्न।
गहरवार दे० (पु०) क्षत्रियों में एक जाति विशेष।
गहरा दे० (गु०) गभीर, गम्भीर, अगाध।
गहरु दे० (पु०) ढील, देर, विलम्ब, अतिकाल, अरसा।
गहलौत दे० (पु०) क्षत्रियों की एक जाति जो मेवाड़ में है।
गहवा दे० (पु०) चिमटा, सण्डासी, पकड़ने की वस्तु।
गहवार दे० (पु०) क्षत्रिय जाति का एक भेद, गहवार क्षत्री, क्षत्रियों की जाति विशेष।
गहवारा दे० (पु०) झोलन, हिण्डोला, पालना।
गहिरा (वि०) गम्भीर, अथाह।—ई (स्त्री०) गम्भीरता, गहरापन।
गह्वर तत्० (पु०) गर्त, गुहा, वन, कानन, खोह।
गा दे० (क्रि०) गया, चला गया, जाता रहा, गाओ।
गाई दे० (स्त्री०) गौ, गाय, धेनु। [गाऊँ, गान करूँ।
गाँऊ दे० (पु०) गाँव, ग्राम, नगर, पुर, पुरवा, (क्रि०)
गाछना (क्रि०) गूथना, पिरोना।
गाँजना दे० (क्रि०) पूँजी करना, विलोड़ना, राशि करना, एकत्रित करना, बटोरना।
गाँजा दे० (पु०) भङ्ग की पत्ती, गाँजा, सन, भङ्ग, सब्जी, मादक तृण विशेष।
गाँझा दे० (पु०) गाँजा देखो।
गाँठ दे० (पु०) सन्धि, जोड़, ग्रन्थ, गिरह, गिलटी, मोटरी।—उखड़ना (वा०) जोड़ खुल जाना, हड्डी या नस का बिचलना।—का पूरा (वा०) धनी, धनवन्त धनशाली।—का खोना (वा०) अपनी हानि (वा०) खर्च

करना।—गठीला (वा०) हट्टा कट्टा, खूब बलवान् और कठोर अङ्ग वाला मनुष्य।—पड़ना (वा०) किसी के साथ विरोध होना, मनोमालिन्य पड़ना। [प्रभुत्व जमाना, अधिकार करना।

गाँठना दे० (क्रि०) बाँधना, वश में करना, अपना

गाँड़ (स्त्री०) गुदा, अपान।—ू गुदा मैथुन कराने वाला।

गाँडर दे० (पु०) गद्दरा, गद्दे का।

गाँडर दे० (पु०) कासँ, तृण विशेष सरसों का साग।

गाँड़ा दे० (पु०) ईंख, ईख, ऊख, गन्ना। [भीत उठाना।

गाँथना दे० (क्रि०) गूथना, बनाना, श्रेणिबद्ध करना,

गाँव दे० (पु०) बस्ती, पुरवा, नगर, ग्राम।

गाँसना दे० (क्रि०) धरमाना, छिद्र बन्द करना, पिरोना, गूँथना। [तीक्ष्णता।

गाँसी दे० (स्त्री०) शस्त्रों के आगे का भाग, धार,

गागर दे० (स्त्री०) घड़ा, गगरी, कलस, कलसी, घट।

गाङ्गेय तत्० (पु०) गङ्गापुत्र, कार्तिकेय, भीष्म पितामह, सुवर्ण। [खाद्य मिर्च।

गाछ दे० (पु०) वृक्ष, पेड़, रूख, तरु।—मिर्च (पु०)

गाज दे० (पु०) गर्जन, शोर, झाग, फेन, विद्युत्, बिजली। [होना, गरजना।

गाजना दे० (क्रि०) गर्जना, सिंहनाद करना, हर्षित

गाजर दे० (पु०) गजरा, गञ्जन, मूल विशेष, इसका खाना धर्मशास्त्र से निन्दित है।

गाजाबाजा दे० (पु०) बहुविध वाद्य, अनेक बाजे, सर्वाङ्ग पूर्ण उत्सव।

गाड़ दे० (पु०) गड्ढा, गढ़ा।—तोप (स्त्री०) मिट्टी देना, कसूर करना, अश्लील या निन्दित बात को छिपाना, गाड़ कर छिपाना।

गाड़ना दे० (क्रि०) तोपना, मिट्टी देना, छिपाना।

गाडर दे० (पु०) भेड़, मेष, भेड़ी, सरसों।

गारुड़ तद्० (पु०) गारुड़, सर्प का विष झाड़ने का मन्त्र, (गु०) सर्प का विष उतारने वाला।

गाड़हीं दे० (क्रि०) गाड़ते हैं, गढ़े में दबाते हैं।

गाड़ा दे० (पु०) खाई, दाँव, गाड़ी, छोटी गाड़ी, गढ़ा, टोटका का गढ़न्त।

गाड़ी दे० (स्त्री०) शकट, रथ, इक्का, छकड़ा।

गाड़ीवान दे० (पु०) सारथी, गड़वान, रथवा॰

गाढ़ तत्० (पु०) घन, तरल नहीं, गाढ़ा, अत्यन्त दृढ़, कष्ट, आपद, वेदना, विपत्ति, कठिनाई, जञ्जाल, झंझट।—ता (स्त्री०) घनता, गाढ़ापन।

गाढ़ा दे० (गु०) जो पतला न हो, कठिन, दृढ़, पांक के समान, मोटा, पोढ़ा, घना, वस्त्र विशेष।

गाढ़ालिङ्गन तत्० (पु०) आलिङ्गन, अकवार, भेंट।

गाणपत्य तत्० (पु०) गणेश के उपासक, गणेश के भक्त स्मार्त, उपासना का एक भेद। [दल, पतुरिया।

गाणिका तत्० (पु०) गणिकासमूह, वेश्याओं का

गाण्डीव तत्० (पु०) अर्जुन के धनुष का नाम, यह धनुष अर्जुन को अग्नि की प्रसन्नता से मिला था, चाप, कार्मुक।—धर (पु०) अर्जुन, तीसरा पाण्डव।—ी (पु०) अर्जुन, गाण्डीव नामक धनुष का धारण करनेवाला। [बदन।

गात तद्० (स्त्री०) गात्र, देह, तन, शरीर, तनु, अङ्ग,

गाता तत्० (गु०) [गै+तृण] गायक, गानकर्ता, गान कारक।

गाता दे० (पु०) पुट्ठा, पिठौता, जिल्द।

गाती दे० (स्त्री०) चादर ओढ़ने की एक प्रक्रिया, जैसा साधु बाँधा करते हैं, पट्टू, ऊर्णवस्त्र।

गातु दे० (पु०) गायक, गवैया, गानेवाला, कोकिल, भ्रमर, गन्धर्व, गान, पथिक, पृथिवी।

गात्र तत्० (पु०) काय, देह, शरीर, वपु, गात, अङ्ग।—कण्डू (स्त्री०) शरीर की खुजलाहट। —वेदना (स्त्री०) शरीर की व्यथा, अङ्गपीड़ा।—भङ्गी (पु०) शरीर की विकृति, विकार, अङ्ग की बनावट।—लेपनी (स्त्री०) शरीर में लगाने का सुगन्धित द्रव्यविशेष, उबटन।—संवाहन (पु०) शरीर दबाना, अङ्गों की पीड़ा निकालना।

गाथक तत्० (गु०) [गै+थक] गायक, गानकारक, गवैया, कथक।

गाथना तत्० (क्रि०) ग्रन्थन करना, गूँथना, बनाना।

गाथा तत्० (स्त्री०) [गै+था] श्लोक, छन्द, गीत, पंवारा, कहानी, गीत, गान, पद्य, छंद।

गाथे तद्० (क्रि०) गुथे, पिरोये, इसका प्रयोग व्रजभाषा में किया जाता है और रामायण में भी।

गाद दे० (पु०) तलछट, मैल, काईट।

॰ (क्रि०) दृढ़ करना

गादर दे० (पु०) राशि, थोक, ढेर, टाल। (वि०) डरपोक, सुस्त। [कायरी।

गादा दे० (पु०) कचा अन्न, चना मटर का होरहा,

गादी दे० (स्त्री०) सिंहासन, राज्यासन, अधिकारासन, गद्दी।—पति (पु०) सम्प्रदाय का एक बड़ा महन्त, संन्यासी।

गादुर दे० (पु०) चमगीदड़, चमगादुर।

गाध तद्० (पु०) लिप्सा, स्पृहा, अभिलाषा, स्थान, थाह, नदी का बहाव, कूल।—ा तद्० (स्त्री०) गायत्री स्वरूपा महादेवी।

गाधि तद्० (पु०) चन्द्रवंशीय कुशिक राजा के पुत्र, प्रसिद्ध तपस्वी विश्वामित्र के पिता। महाराज कुशिक की रानी पौरकुत्सी के गर्भ से देवराज गाधिरूप से उत्पन्न हुए थे, गाधि की कन्या सत्यवती का विवाह महर्षि भृगु के साथ हुआ था। इसी सत्यवती के गर्भ से महर्षि जमदग्नि उत्पन्न हुए थे।—ज (पु०) विश्वामित्र मुनि, —नन्दन (पु०) विश्वामित्र मुनि।—पुर (पु०) कान्यकुब्ज देश।—सुवन (पु०) विश्वामित्र मुनि, राजा गाधि के पुत्र। [मुनि।

गाधेय तद्० (पु०) [गाधि+ढक्] विश्वामित्र

गान तद्० (पु०) [गै+णिच्+ल्युट्] गीत, गाना, बखान, कीर्तन, ध्वनि, सङ्गीत।

गाना दे० (क्रि०) अलापना, राग।

गान्धर्व तद्० (गु०) गन्धर्व सम्बन्धी। (पु०) घोड़ा, विवाह विशेष, स्त्री पुरुष की इच्छा के अनुसार विवाह।—विद्या (स्त्री०) सङ्गीतशास्त्र।—विवाह (पु०) केवल वर कन्या की इच्छा से विवाह।

गान्धार तद्० (पु०) सिन्दूर, स्वर विशेष, जम्बू द्वीप का उत्तरीय भाग जिसकी प्रसिद्धि कन्धार के नाम से है।—राज (पु०) शकुनि, दुर्योधन के मामा।

गान्धारी तद्० (पु०) [गान्धार+ई] जैनियों का शासक देवता विशेष, जवासा, मादक द्रव्य विशेष, (१) राजा क्रोष्टु की पत्नी और अनमित्र की माता, मृत्तिकावती नगरी में रहने वाले राजाओं को भोज कहते हैं। इसी भोजवंशीय राजा क्रोष्टु की एक पत्नी का नाम। (२) राजा धृतराष्ट्र की रानी। गान्धार देश के राजा सुबल की कन्या और दुर्योधन की माता। इनके छोटे भाई का नाम शकुनि था। गान्धारी ने तपस्या द्वारा एक सौ पुत्र प्राप्त करने का वर पाया था, भीष्मपितामह ने धृतराष्ट्र से गान्धारी का विवाह कर देने के लिये राजा सुबल से अनुरोध किया। सुबल ने इसे स्वीकृत किया, यह बात गान्धारी को भी मालूम हुई। गान्धारी का भावी पति अन्धा था अतएव उन्होंने भी अपनी आँखों में पट्टी बाँध ली, ये पतिव्रता थीं, उन्होंने श्रीकृष्ण को शाप दिया था, जो सच निकला। जवासा, गाँजा। [अत्तार, कीड़ा।

गान्धिक तद्० (पु०) सुगन्ध द्रव्य व्यवहारी,

ग़ाफ़िल दे० (गु०) लापरवाह, असावधान, अचेत, जड़, आलसी।

गाभ दे० (पु०) गर्भ, पेट, हौंदा।

गाभा दे० (पु०) नवीन वस्त्र, कोमल पत्र, केले की नयी बतियाँ, रजाई से निकली पुरानी रूई, कच्चा अनाज हाथ की अंगुलियों की संधि।

गाभिन, गाभिनी दे० (स्त्री०) गर्भिणी, अन्तरापत्न, गुर्विणी, दुपस्था।

गाम तद्० (पु०) ग्राम, गाँव।

गामिनि, गामिनी तद् (स्त्री०) गमनकर्त्री, गमन करनेवाली, जानेवाली चलनेवाली।

गामी तद्० (गु०) [गम्+णिन्] गमनशील, गमन करने वाला, प्रस्थानकारी, चलने वाला, जानेवाला।

गामुक तद्० (गु०) चलने वाला गमनकर्त्ता। [गन्ता।

गाम्भीर्य तद्० (पु०) गम्भीरता, गभीरता धीरता,

गाय दे० (पु०) गौ, धेनु, गया, गऊ।—गोठ तद्० (पु०) गोशाला, गौओं के रहने का स्थान, गोष्ठ।—गोरु या गोरू (पु०) गैया, गोरू, गो समूह, गौशाला, गो गोष्ठ।

गायक तद्० (गु०) गवैया, गाने वाला।

गायत्री तद् (स्त्री०) वेदमाता, मन्त्रविशेष, छन्दोविशेष, दुर्गा, भगवती, छः अक्षर के पादवाला छन्द, इसके तीन पाद होते हैं। वेदों में लिखा है कि बृहस्पति ने एक समय गायत्री का सिर छेद दिया, परन्तु इससे गायत्री की मृत्यु नहीं हुई,

किन्तु गायत्री के मतलब से पापरूपी मार्ग देखना की उत्पत्ति हुई। बहुत लोग इसको स्पष्ट समझते हैं, गायत्री हिन्दू धर्म का बीजमन्त्र है। बृहस्पति या चार्वाक नास्तिक मत के प्रचारक थे, हिन्दूधर्म के साथ भी इन्होंने बहुत चेष्टा की, परन्तु सफल नहीं हुए। पद्म पुराण में लिखा है कि यह भी ब्रह्मा की स्त्री है। (पु०) खैर का पेड़।

गायन तद० (पु०) [गै+ल्युट्] गायक, गानकारी, गाने से जीने वाला।

गायब (वि०) गुम, गुप्त, लापता।

गार दे० (स्त्री०) गाली, अभिशाप।

यथा—"जैसे बरसत युद्ध में, ज्यों विवाह में गार" —वृन्दसतसई।

गारत (वि०) मटियामेट, बरबाद। [का एक दस्ता।

गारद (स्त्री०) सिपाहियों की एक टोली, सिपाहियों

गारना दे० (क्रि०) निचोड़ना, दुहना, निकालना।

गारा दे० (पु०) चहला, सानी हुई मिट्टी, ईंट जोड़ने के लिये मिलावा।

गारि दे० (स्त्री०) देखो गारी। [माषा।

गारी दे० (स्त्री०) गाली, दुर्वाक्य, अपशब्द, अप-

गारुड़ तद० (पु०) मरकतमणि, पन्ना, एक पुराण का नाम, गारुड़पुराण, स्वर्ण, विषमन्त्र, विषवैद्य, कालबेलिया, सपेरा, सपहा।

गारुड़ी तद० (स्त्री०) देखो गारुड़।

गार्ग्यमत (पु०) मत्ता, गर्ग का मत।

गार्हपत्याग्नि तद० (पु०) यज्ञीय अग्निविशेष, यज्ञ के त्रिविध अग्नियों में एक अग्नि। [गृहस्थ सम्बन्धी।

गार्हस्थ्य तद० (पु०) गृहस्थाश्रम, गृहस्थ का धर्म,

गाल दे० (पु०) कपोल, गण्डदेश, कपर, मुख।—बजाई (स्त्री०) बकवाद करके, बात बनाकर, व्यर्थ की बहुत सी बातें बकना, मुँहजोरी।

गालव तद० (पु०) मुनि विशेष, गालव मुनि के पुत्र।

गाला दे० (पु०) रुई की पाली, धुनी हुई रुई का गोला।

गाली तद० (स्त्री०) अपमान बोधक शब्द, दुर्वाक्य।
—गलौज या गुफ्ता (या०) बुरी गाली।

गाल्हु दे० (पु०) गाल, ढेंट।

यथा—"एक संग नहिं होहि, भुआल्हु। हँसब ठठाय फुलाउब गाल्हु"।

गावचप्पू दे० (पु०) चापलूस, फुसलाऊ, स्वार्थी।

गावदी दे० (पु०) घबड़क, भोला, गेगला, अज्ञान, जड़, मूर्ख, नासमझ।

गावदुम (पु०) चढ़ाव उतार, ढलुवाँ। [हैं, गाते हैं।

गावहिं दे० (क्रि०) गाता है, गान करता है, गान करते

गाह तद० (पु०) ग्राह, कुम्भीर, मगर, नक्र, जलजन्तु विशेष, गहन, दुर्गम।

गाहक तद० (पु०) ग्राहक, क्रेता, खरीदनेवाला, चाहनेवाला, लेनेवाला, खरीदार।

गाहना दे० (क्रि०) ढूँढ़ना, पकड़ना।

गाहा तद० (स्त्री०) गाथा, कथा, कहानी, मथन करना, खेना। [टोह लगा कर।

गाहिगाहि दे० (पु०) ढूँढ़ ढूँढ़ कर, खोज खोज कर,

गाही दे० (स्त्री०) पाँचकी संख्या, पाँच संख्या परिमित।

गिजाई दे० (स्त्री०) कीट विशेष।

गिचपिच दे० (पु०) कचपच, भीड़भाड़।

गिचपिचिया दे० (पु०) गिचपिच करने वाला, भीड़-भाड़ करने वाला।

गिटकारी दे० (स्त्री०) गिटगिरी, गिट्टी। [के टुकड़े।

गिटकौरी दे० (स्त्री०) पथरी, पत्थरनिर्मित, पत्थर

गिटपिट दे० (स्त्री०) निरर्थक शब्द।

गिट्टी दे० (स्त्री०) पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े, फिरकी।

गिड़गिड़ाना दे० (क्रि०) अनुनय करना, विनती करना, घिघियाना।

गिनती दे० (स्त्री०) गणित, गणना, संख्या हिसाब।

गिनना दे० (क्रि०) गणना करना, गिनती करना।

गिन्नी दे० (स्त्री०) गिनी, टका, निष्क।

गिद्ध तद० (पु०) गीध, शकुनि, पक्षीविशेष।

गिर तद० (पु०) पहाड़, शाङ्कर आम्नाय के दश प्रकार के गुसाइयों में से एक।—जा तद० (स्त्री०) पार्वती।—धारी तद० (पु०) श्रीकृष्ण।—वर तद० (पु०) पहाड़, बड़ा पहाड़।

गिरगिट दे० (पु०) शरट, कृकलास, गिरगिटान।

गिरत दे० (क्रि०) गिरते ही, गिरता है।

गिरना दे० (क्रि०) पड़ना, खसना, झड़ना।

गिरपड़ना दे० (क्रि०) टूट पड़ना, झुक पड़ना, फिसल जाना, पतित होना। [परिश्रम से।

गिरते पड़ते दे० (वा०) बहुत कठिनता से बहुत

गिरा तद्० (स्त्री०) वचन, वाणी, वाक्। (दे०) गिर पड़ा, फिसल गया, खसा।—ग्राम (पु०) ग्राम भाषा, गँवारू बोली, उजाड़ ग्राम, नष्ट ग्राम।

गिराना दे० (क्रि०) औंधाना, पटकना, ढलकाना।

गिरि तद्० (पु०) पर्वत, पहाड़, भूधर, अचल, संन्यासियों की एक जाति।—कण्टक (पु०) वज्र, अशनि।—कदम्ब (पु०) महानींब, बहुल कदम्बी।—कदली (स्त्री०) कदली विशेष, पहाड़ी केला।—ज (पु०) शिलाजीत, पर्वत से उत्पन्न धातु।—जा (स्त्री०) पार्वती, पर्वत से उत्पन्न, पर्वत की कन्या, भवानी।—आनन्द (पु०) गणेश, कार्तिकेय।—धारी (पु०) श्रीकृष्णचन्द्र, हनुमान्।—न्द्र (पु०) गिरीन्द्र, पर्वतराज, हिमालय, सुमेरु।—नन्दिनी (स्त्री०) पार्वती, गिरजा, भवानी।—नाथ (पु०) शिव, महादेव, भव, शङ्कर, हिमालय, पर्वतराज।—राज (पु०) हिमालय, सुमेरु।—वर (पु०) पर्वत श्रेष्ठ, सुमेरु, हिमालय, विन्ध्य।—सृष्ठ (स्त्री०) मेरु, उपत्यका विशेष।—साह्वय (पु०) शिलाजीत।

गिरिर (पु०) अकड़ा, कनकव्वा।

गिरीन्द्र तद्० (पु०) गिरि इन्द्र, पर्वतराज, हिमालय।

गिरीश तद्० (पु०) महादेव, शिव, कैलासपति, हिमालय, सुमेरु। [जाता है।

गिलई दे० (क्रि०) निगल जाय, बील जावे, बील

गिलटी दे० (स्त्री०) गाँठ, ग्रन्थि, सूजन, फुलाव, फोड़ा। [भक्षण।

गिलन तद्० (पु०) [गृ+अनट्] निगरण, खाना,

गिलन या गेलन दे० (पु०) छः बोतल का परिमाण।

गिलहरा दे० (पु०) पान का डब्बा।

गिलहरी दे० (स्त्री०) रुखी, चीखुर, एक प्रकार का जानवर, गिल्ली, चिखुरी।

गिलाफ दे० (पु०) आच्छादन, ढाँकन, खोल।

गिलित तद्० (पु०) [गृ+क्त] भुक्त, भक्षित, खादित। [ढीला।

गिलियर दे० (पु०) आलस, आलसी, शिथिल,

गिलोय दे० (स्त्री०) अमृता, अमृतलता, गुरुच, गुडुची।

गिलौ दे० (स्त्री०) गिलोय, लता विशेष, गुरुच।

गिलौरी दे० (स्त्री०) बीड़ी, खीली, पान की खीली।

गिल्ली दे० (स्त्री०) मकई की डुबी, गिलहरी, गिल्ली।

गी तद्० (स्त्री०) सरस्वती, वाणी, बोलने की शक्ति।

गीज़ दे० (स्त्री०) मुसलमानों का भोजन विशेष।

गीजना दे० (क्रि०) मसलना, मोड़ देना, मईन करना।

गीत तद्० (पु०) गान, ताल बाजे के अनुसार गाना।—वाद्य (पु०) गानकीर्तन।—मोदी (पु०) [गीत+मुद+इन] किन्नर, स्वर्गगायक।

गीता तद्० (स्त्री०) गान, अध्यात्म विद्या का ग्रन्थ, रामगीता, भगवद्गीता, गणेशगीता आदि।

गीति तद्० (स्त्री०) [गै+क्ति] गान, गीत, आर्या छन्द का एक भेद, यह मात्रावृत्त है।

गीतिका तद्० (पु०) एक मात्रिक छन्द विशेष, गीत, गाथा।

गीदड़ दे० (पु०) सियार, शृगाल, जम्बुक।—भभकी (वा०) मन में डरते हुए भी ऊपर से दिखावटी क्रोध जतलाना।

गीध दे० (पु०) गिद्ध, शकुनि, पक्षी विशेष।

गीर्वाण तद्० (पु०) [गीर्+बाण] देवता, देव, सुर, अमर।—कुसुम (पु०) मन्दार पुष्प, लवङ्गपुष्प।—ी (स्त्री०) संस्कृत भाषा, हिन्दुस्थान की प्राचीन भाषा, शास्त्रीय भाषा।

गीला दे० (पु०) भीगा, आर्द्र, ओदा, तर।

गीष्पति तद्० (पु०) [गीः+पति] बृहस्पति, देवगुरु, देवों के गुरु, विद्वान्, पण्डित।

गु दे० (पु०) विष्ठा, मल।

गुआलिन दे० (स्त्री०) ग्वालिन, ग्वाला की स्त्री।

गुइयाँ दे० (स्त्री० पु०) सखी, सखा, साथी, सहचरी, सहचर।

गुखरू दे० (पु०) गोखरू, गुरखुल।

गुगुलिया दे० (पु०) मदारी।

गुग्गुर दे० (पु०) गुग्गुल। [द्रव्य विशेष।

गुग्गुल तद्० (पु०) गूगल, गोंद विशेष, सुगन्धित

गुच्छा तद्० (पु०) गुच्छक, स्तबक, झब्बा, झब्बा।—गुच्छे (बहु०) झब्बे, फुँदना।

गुच्छेदार दे० (स्त्री०) झब्बेदार, गुच्छयुक्त।

गुजर या गूजर दे० (पु०) अहीर, अहीर, गोप, जाति विशेष, ग्वाला, निर्वाह।

गुजरात दे० (पु०) भारत के एक प्रान्त का नाम।
—ी (गु०) गुजरात के वासी, गुजरात सम्बन्धी (पु०) एक रोग का नाम, यक्ष्मा।
गुजिया दे० (स्त्री०) कर्णफूल, कान का भूषण विशेष।
गुञ्ज तद्० (पु०) पुष्पस्तवक। [शब्द।
गुञ्जन तद्० (पु०) गुन गुन करना, भ्रमर आदि का
गुञ्जा तद्० (स्त्री०) लता विशेष, घुंघची, लालरत्ती, परिमाण विशेष। [समाई।
गुञ्जाइश या गुञ्जाइश (पु०) सावकाश, सुविधा,
गुञ्जान तद्० (गु०) गाढ़ा, मोटा, घना।
गुञ्जार या गुजार (पु०) भौंरों का गूँजना।
गुञ्झा तद्० (पु०) गोझा नाम के बाँस की कील, कटीली घास, गोझा गूदा। (वि०) गुप्त, छिपा हुआ। (गु०) ढीला, शिथिल।
गुझिया तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का पक्वान, एक प्रकार की मैदे की मिठाई।
गुटकना दे० (क्रि०) गूं गूं करना, निगल जाना, कबूतर की तरह गुटरगूँ करना।
गुटका दे० (स्त्री०) छोटे आकार की पुस्तक, औषध विशेष, लड्डू, गुपचुप मिठाई।
गुटरगूँ दे० (पु०) कबूतर की बोली। [गोली।
गुटिका तद्० (स्त्री०) वटिका, गोली, औषध की
गुट्ट तद्० (पु०) समूह, यूथ, दल, मण्डली।
गुट्ठल दे० (वि०) बड़ी गुठली (का फल), मूर्ख, गुठली के आकार का। (पु०) गुलथी, गिलटी।
गुठलाना दे० (स्त्री०) फलों में गुठली होना, दाँत का खट्टा होना।
गुठली दे० (स्त्री०) बीज, आम का बीज। [शक्कर।
गुड़ तद्० (पु०) [गुड+घञ्] ईख का विकार, खांड
गुड़गुड़ाना दे० (क्रि०) गुड़गुड़ शब्द करना।
गुड़गुड़ी दे० (स्त्री०) छोटा हुक्का।
गुड़ाकू दे० (पु०) गुड़ मिला हुआ पीने का तमाकू।
गुड़ाकेश तद्० (पु०) अर्जुन, निद्रा को अपने वश में करने के कारण अर्जुन का यह नाम पड़ा है, शिव।
गुड़ाना दे० (क्रि०) खोदना खुदवाना, बनाना।
गुड़िया दे० (स्त्री०) कपड़े की बनी लड़कियों के खेलने की पुतली।

गुड़ी दे० (स्त्री०) गुड्डी, पतङ्ग, कनकौवा, गुड़िया। तद्० (स्त्री०) गाँठ, ढेप, कीना।
गुडूची तद्० (स्त्री०) गुरुच, गिलोय। [खेलती हैं।
गुड्डा दे० (पु०) कपड़े का बना पुतला जिससे लड़कियाँ
गुड्डी दे० (पु०) कनकौवा, पतङ्ग, चंग।
गुन्दी दे० (स्त्री०) छिपने का स्थान।
गुण तद्० (पु०) स्वभाव, विशेषण, सद्विद्या विनय आदि, सत्व रज और तम, शुक्ल, कृष्ण, रक्त, पीत आदि, निपुणता, पक्ष, शील, तीन की संख्या, राजनीति के अनुसार दूसरे राष्ट्रों से व्यवहार की ६ रीतियाँ। [यथा—सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय] प्रकृति, व्याकरणानुसार अ—ए—ओ—को गुण कहते हैं। धनुष का रोदा, नाव खींचने की रस्सी।—कथन (पु०) यशोवर्णन, स्तुति, प्रशंसा करना।—करना (क्रि०) भला करना, लाभ पहुँचाना।—का पलटा देना (वा०) प्रत्युपकार करना, भलाई के बदले भलाई करना।—कारी तद्० (वि०) लाभदायक।—गान (पु०) स्तुति, प्रशंसा।—गृह्य (पु०) सद्गुणयुक्त गुणी।—ग्राम (पु०) गुण समूह, गुणाकार।—ग्राहक (गु०) गुण ग्रहणकर्ता।—ज्ञ (गु०) गुणवेत्ता।—ज्ञान (पु०) बुद्धिमत्ता।—दर्शी (पु०) सारग्राही।—दाता (गु०) शिक्षक, गुरु।—धर्म (पु०) उत्तम पदार्थ, सारपदार्थ।—न (पु०) अङ्क वृद्धि करना, हिसाब विशेष।—निधि (गु०) गुणसिन्धु, गुणसागर।—वन्त (गु०) गुणवान्, गुणी, प्रवीण।—वान् (गु०) प्रवीण, निपुण, विद्वान्।—वाचक तद्० (वि०) विशेषण, जो गुण को बतलावे।
गुणन तद्० (पु०) गुणा, तत्व, गुण का बहुवचन।
गुणनफल तद्० (पु०) संख्या जो एक संख्या को दूसरी संख्या के साथ गुणा करने से निकले।
गुणना (क्रि०) गुणा करना, मनन करना। [गुणवाली।
गुणवन्त (वि०) गुणी गुणवाला।—ी (स्त्री०)
गुणा तद्० (पु०) अङ्क गणित की एक प्रक्रिया। ज़रब बार, घेर पाला।
गुणाकर तद्० (पु०) गुणों का समुद्र, गुणनिधि।
गुणागुण तद्० (पु०) गुण दोष, भला बुरा।

गुणाढ्य तत्० (पु०) एक संस्कृत का कवि, इस कवि ने बृहत्कथा नामक एक पिशाच भाषा का ग्रन्थ लिखा था। कथा सरित्सागर में कात्यायन और व्याडी के समकालीन इनको बताया गया है। कात्यायन का समय सन् ३५० ई० से पूर्व माना जाता है। अतएव गुणाढ्य का भी वही समय निश्चित होता है। बृहत्कथा को दूसरी वड्डाह कथा भी कहते हैं। ये कवि अति-प्राचीन और सत्कवि थे। इस बात को गोवर्द्धनाचार्य ने अपनी आर्या सप्तशती में लिखा है।

गुणातीत तत्० (पु०) [गुण+अतीत] गुणों से परे, निर्गुण, गुणशून्य, परमब्रह्म।

गुणानुवाद (पु०) बड़ाई, प्रशंसा।

गुणित तत्० (पु०) [गुण+क्त] पूरित, गुणा किया हुआ, पूरण किया हुआ।—ा (स्त्री०) गुणवत्ता, गुणयुक्त।

गुणी तत्० (पु०) [गुण+ईन्] गुणवाला, गुणशील, सद्गुणान्वित, पण्डित, निपुण मनुष्य, गायक, ओझा।—कृत (पु०) गुणित, पूरित।—भूत (पु०) अप्रधान।—भूतव्यङ्ग (पु०) ध्वनि विशेष, काव्य विशेष।

गुणेश्वर तत्० (पु०) परमेश्वर, चित्रकूट पर्वत।

गुणोपेत तत्० (वि०) गुणी, कलानिपुण।

गुणोत्कर्ष तत्० (पु०) [गुण+उत्कर्ष] गुण की प्रधानता, गुण की सुन्दरता, गुणव्याख्या।

गुणोत्कीर्तन तत्० (पु०) [गुण+उत्कीर्तन] गुण कथन, गुणगान, स्तुति, यशगान।

गुणौघ तत्० (पु०) [गुण+ओघ] गुणसमूह।

गुण्डा तत्० (पु०) लम्पट, दुष्ट, दुरात्मा, दुराचारी, निर्लज्ज, लुच्चा।

गुण्य तत्० (पु०) [गुण+य] गुण्यङ्क, गुनीय, जो अङ्क गुणा किया जाय, पूरणीयाङ्क।

गुत दे० (पु०) उदासीन, मौन, गम्भीरता, चुपचाप, लापरवाही।

गुत्थमगुत्था (पु०) हाथापाई।

गुत्थी (स्त्री०) उलझन।

गुद (स्त्री०) गुदा। [कोमल, मोटा, पुष्ट।

गुदगुदा दे० (पु०) मांसल, गूदेदार, मुलायम,

गुदगुदाना दे० (क्रि०) सहलाना, गुलगुलाना, गुदगुदी करना।

गुदगुदी दे० (स्त्री०) सुहराहट, गुलगुली।

गुदगुदाहट दे० (स्त्री०) गुदराहट, सुहराना।

गुदड़ी दे० (स्त्री०) कन्था, कथरी, जीर्ण वस्त्र।—बाज़ार दे० (पु०) बाज़ार जिसमें फटे पुराने कपड़े तथा अन्य टूटी फूटी चीज़ें मिलें। [चलते हैं।

गुदरत दे० (क्रि०) जानता है, जनाता है, जाते हैं,

गुदरना दे० (क्रि०) जानना, जाना। यह शब्द रामायण में प्रयुक्त हुआ।

गुदाना (क्रि०) गोदने की क्रिया कराना।

गुदाम दे० (पु०) गोला, वस्तुओं का भण्डार, जहाँ बहुत सी वस्तु जमा रहें।

गुदारा दे० (पु०) घटहा, एक स्थान पर इस पार से उस पार ले जाने वाली नौका, खेवानाव, उतारा।

गुदी दे० (स्त्री०) नाव बनाने का स्थान, मीना।

गुदा दे० (पु०) अन्तःसार, सारभाग, गूदा, पेड़ की मोटी डाल।

गुद्दी दे० (स्त्री०) गर्दन, ग्रीवा, अंतःसार।

गुन तद् (पु०) गुण, स्वभाव, विशेषण, फल, कला, रस्सी।—गुना (पु०) कुनकुना, थोड़ा गरम।—गाहक (पु०) गुणग्राहक, गुण का आदर करने वाला, यथा—"गुन न हिरानो गुणगाहक हिरानो है—गुनाना (क्रि०) गुनगुन करना, भ्रमर आदि का शब्द।—द (पु०) गुणदायक, लाभकार फ़ायदेमंद।—ह (पु०) दोष, पाप, कसूर, अपराध।—हु (क्रि०) विचारो, गुणन करो, समझो।

गुनहु दे० (क्रि०) विचारो, गुणन करो, समझो, (पु०) लाभ भी, फायदा भी।

गुनानि दे० (स्त्री०) मानसिक कल्पना, अभिलाष।

गुनिये दे० (क्रि०) सोचिये, विचारिये, गुणन कीजिये।

गुनी दे० (पु०) गुणी, गुणवान्, ओझा।

गुप्त तत्० (पु०) [गुप्+क्त] कृतरक्षण, रक्षित, गूढ़, छिपा हुआ। (पु०) वैश्य जाति का अल्ल विशेष।—गति (पु०) चर, चार, दूत, सन्देसी, वार्ताहारी।—चर (पु०) गोपनीय दूत, गूढ़चर, जासूस, भेदिया, सुफिया।—वेश (पु०) छली, कपटी।

गुप्तार दे० (पु०) छिपना, लुकना, लुकाव।—घाट (पु०) अयोध्याजी के एक घाट का नाम।

गुप्ती दे० (स्त्री०) अस्त्र विशेष, एक प्रकार की छड़ी जिसमें छोटी तलवार छिपी रहती है।

गुफना तद्० (पु०) घुमाकर पत्थर फेंकने की एक प्रकार की गुलेल, गोफन।

गुफा दे० (स्त्री०) गुहा, खोह, कन्दरा, बिल, गह्वर। —गुभाना दे० (क्रि०) चुभाना, गड़ाना, गाड़ना, बींधना।

गुबार (पु०) गर्दा, धूल।

गुब्बारा (पु०) कागज का थैला, जो आकाश में [उड़ाया जाता है।

गुम (वि०) गुप्त, छिपा हुआ।

गुमटा दे० (पु०) बड़ा कीड़ा, मच्छ, गुमटा, कपास को नष्ट करने वाला एक कीड़ा।

गुमटी दे० (स्त्री०) गुम्मट, छाट, कलस, शिखर, छोटी कोठरी; हस्र विशेष, यह मिथिला में बनता है, तथा अत्यन्त सम्मान सूचक समझा जाता है, प्रायः राजा की ओर से यह पण्डितों को दिया जाता है।

गुमड़ी (स्त्री०) छोटी फुड़िया।

गुमसना दे० (क्रि०) दुर्गन्ध होना, सड़ना।

गुमसा दे० (गु०) सड़ा, गला।—हट दे० (पु०) सड़ाइन, पचाइन।

गुमान दे० (पु०) अभिमान, मान, अहङ्कार।—ी (गु०) अहङ्कारी, अभिमानी, एक कवि का नाम, ये कवि कुमायूँ प्रदेश के रहने वाले थे और संस्कृत तथा भाषा के कवि थे।

गुमाश्ता (पु०) व्यापारियों का कारकुन।

गुम्फ तत्० (पु०) [गुम्फ+अल्] ग्रन्थन, माथना, गूथना, बाहुभूषण विशेष।

गुम्फित तत्० (गु०) ग्रंथित, ग्रथीत, गुहा हुआ।

गुम्मा (पु०) बड़ी ईंट।

गुर तत्० (पु०) मूलमंत्र, सार, वह प्रक्रिया जिससे कोई काम शीघ्र हो जाय। तत्० (पु०) तीन की संख्या। [मेथिया, गुड़ज्विर

गुरगा तद्० (गु०) शिष्य, नौकर, अनुचर, जासूस

गुरच दे० (पु०) गिलोय गुड़ची।

गुरजना दे० (क्रि०) गुरना, घुरकना, गर्जन करना

गुरिया दे० (स्त्री०) मनिया, माला के दाने, दाने।

गुरु तत्० (पु०) [गुर+उ] मन्त्रदाता, उपदेशक, शिक्षक, आचार्य, पुरोहित, द्विमात्रिक अक्षर, आ, ई, आदि गुरु पाँच प्रकार के होते हैं, पिता, उपनयन करने वाला, विद्यादाता, अन्नदाता और भय से रक्षा करने वाला। बृहस्पति, वह पुरुष जो अपने से विद्या, बुद्धि, बल, वय या पद में बड़ा हो। (गु०) भारी, वोझैल।—कुल तत्० (पु०) गुरु या आचार्य का स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को रख कर पढ़ावे।—कार्य (पु०) आवश्यक कार्य, फलवान् कार्य।—जन (पु०) उपदेशक, बड़े लोग, माननीय।—तर (गु०) बहुत बड़ा, बहुत भारी, माननीय।—तल्पग (गु०) सौतेली मा के साथ सम्बन्ध करनेवाला, गुरु की स्त्री को हरने वाला।—तल्पव्रत (पु०) गुरुपत्नी हरण का प्रायश्चित।—ता या त्व (स्त्री०) भारीपन भार, गौरव।—दशा (स्त्री०) गुरु की दशा, बृहस्पति की दशा—दक्षिणा तत्० (स्त्री०) गुरु की भेंट, शिक्षा हो चुकने पर आचार्य को जो भेंट दी जाय।—दार (स्त्री०) गुरु की स्त्री, वेदाध्यापक अथवा मन्त्रदाता की स्त्री।—देव (पु०) अभीष्ट देव, पिता, आचार्य।—दैवत (पु०) पुष्य नक्षत्र।—द्वारा तत्० (पु०) गुरु, आचार्य के रहने का स्थान, गुरु का स्थान।—पत्नी (स्त्री०) गुरु की स्त्री।—पाक (गु०) दुष्पच, जिसका विलम्ब से परिपाक हो।—पाप (गु०) कठिन पाप, महा पाप अतिपातक।—प्रमोद (पु०) अतिशय आनन्द, अत्यंतहर्ष।—भाई तद्० (पु०) एक ही गुरु के शिष्य।—मुख (गु०) प्राप्त मन्त्र, दीक्षित, गृहीत मन्त्र।—मुख होना (क्रि०) मन्त्र लेना, चेला होना गुरु करना।—मुखी तत्० (स्त्री०) पंजाब में प्रचलित एक लिपि।—मन्त्र (पु०) इष्ट मन्त्र, दीक्षा में प्राप्त मन्त्र।—लघु (गु०) मान्य अमान्य; प्रधान अप्रधान, ह्रस्व दीर्घ।—वार तत्० (पु०) बृहस्पतिवार।—शुश्रूषा (स्त्री०) गुरुसेवा, गुरु की आराधना।—सेवा (स्त्री०) गुरुपूजा।

गुरुआइन तद्० (स्त्री०) गुरुपत्नी, माता।

गुरुवार तद्० (पु०) वृहस्पतिवार।
गुरूपदिष्ट तद्० (पु०) [गुरु+उपदिष्ट] गुरु से शिक्षा या उपदेश ग्रहण।
गुरूपदेश तद्० (पु०) गुरु के समीप की शिक्षा।
गुर्गा दे० (पु०) बासन माँजने वाला, भृत्य, भेदिया।
गुर्गाबी दे० (स्त्री०) मुंडा जूता।
गुर्गरी दे० (स्त्री०) कमरख्यर, जूड़ी, अरहया।
गुर्जर तद्० (पु०) देशविशेष, गुजरात, गुजरात के वासी, एक जाति विशेष। [विशेष।
गुर्जरी तद्० (स्त्री०) गुजरात की स्त्रियाँ, रागिनी
गुर्री दे० (स्त्री०) भुंजा हुआ तथा कूटा हुआ अन्न।
गुर्वङ्गना दे० (स्त्री०) गुरुपत्नी, सपत्नी, माता, सौतेली माँ, माननीय स्त्री।
गुर्वादित्य दे० (पु०) योग विशेष, सूर्य और वृहस्पति के एक राशिस्थ होने पर यह योग होता है, इस योग में विवाह आदि मङ्गल कृत्य नहीं होते।
गुर्विणी तद्० (स्त्री०) गर्भवती, गर्भिणी।
गुर्वी तद्० (वि०) गर्भवती, भारी। (स्त्री०) बड़ी या श्रेष्ठ स्त्री।
गुल दे० (पु०) अङ्गार का गोला, दीपक की बत्ती का अग्रभाग, पुष्प।—करना (क्रि०) बुझाना, शोर करना, हल्ला मचाना, हौरा करना।—गुला (पु०) मीठी, पकौड़ी, पकवान विशेष। (वि०) मुलायम, कोमल।—गुलाना (क्रि०) पिघलाना, नरमाना, नरम करना, हँसाने के लिये वदन को सहलाना।—गूथना गालफूला, रूकना, कोहाना। —झटी (स्त्री०) उलझन, गाँठ।—दुली (स्त्री०) गीला भात, नये चावल का भात।
गुलकंद (पु०) मिश्री या चीनी में मिली हुई गुलाब के फूल की पखुरियां।
गुलगपाड़ा (पु०) हल्ला, शोर।
गुलगुल (वि०) कोमल, नरम। [महार।
गुलचा (पु०) प्रेम पूर्वक गाल पर अँगुलियों का
गुलछर्रा (पु०) भोग विलास में मौज मारना।
गुलाब दे० (पु०) पुष्पविशेष, गुलाब के फूलों का सार, (अतर) पाटल पुष्प। [का खुशबूदार पानी।
गुलाबजल तद्० (पु०) गुलाब का आसव, गुलाब
गुलाबजामुन दे० (स्त्री०) मिठाई व फल विशेष।
गुलाल दे० (पु०) अबीर, रङ्ग विशेष।
गुलिक दे० (पु०) मोती की माला के दाने।
गुलिया दे० (स्त्री०) सिर के पीछे का गद्दा।
गुली दे० (स्त्री०) गुठली, बाजरे की भूसी।
गुलेल दे० (पु०) एक प्रकार का धनुष।
गुल्फ तद्० (पु०) फीली, पैर की गाँठ।
गुल्म तद्० (पु०) रोगविशेष, झाड़ी, सेना की संख्या विशेष।—शूल (पु०) रोग विशेष।
गुल्लर दे० (पु०) उदुम्बर, ऊमर, गूलर। [छोटी गोली।
गुल्ला दे० (पु०) गुलेल या गोफन की गोली, माटी की
गुल्लाला दे० (पु०) फूल विशेष।
गुल्ली तद्० (स्त्री०) किसी फल की गुठली, लकड़ी का अंगोतरा छोटा टुकड़ा।
गुवा दे० (पु०) सुपारी, पुंगीफल।
गुवाक दे० (पु०) सुपारी का वृक्ष।
गुवैया दे (स्त्री०) सखी, सहेली, वयस्या।
गुवालिन दे० (स्त्री०) अहीरिन, गोप स्त्री।
गुवालियर दे० (पु०) मध्यभारत की एक राजधानी का नाम, ग्वालियर।
गुष्टि तद्० (स्त्री०) सम्मति, सलाह, मित्रता।
गुसाँई या गोसाँई तद्० (पु०) स्वामी, जितेन्द्रिय, बङ्गाली, पञ्जाबी और कुछ ब्राह्मणों की अल्ल।
गुह तद्० (पु०) [गुह+अच्] कार्तिकेय, निषाद, निषादाधिपति का नाम, कायस्थों की एक पद्धति का नाम, विष्ठा, मल।—षष्ठी (स्त्री०) अगहन मास की शुक्ल षष्ठी।
गुहक तद्० (पु०) एक अनार्य राजा का नाम, इसका अयोध्या के समीप राज्य था। इसकी राजधानी का नाम, शृङ्गवेरपुर था, यह महाराज दशरथ का मित्र था इसी कारण रामचन्द्र जी भी इसका आदर करते थे। वनवास के समय इसी अनार्य राजा की सहायता से रामचन्द्र जी ने गङ्गा को पार किया था।
गुहर दे० (गु०) गुप्त, छिपा, ढका, लुका।
गुहनौ दे० (क्रि०) गाँथना, गूथना, पिरोना। [करना।
गुहराना दे० (क्रि०) पुकारना, समीप बुलाना, सहाय
गुहांजनी दे० (स्त्री०) आँख पर की फुंसिया, गुहेरी, बिलनी।

गोंठा दे० (पु०) उपला, उपरी, कंडा, छाना, गोइरी।
गोंठी दे० (स्त्री०) चेचक, सीतला, रोग विशेष।
गोंद दे० (पु०) लासा, चेंप, निर्यास।
गोंदनी दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष, नरकट।
गोंदा दे० (पु०) पक्षी के खाने की लोई जिससे पक्षी फँसाये जाते हैं, लसेरा, लसोड़ा।
गोंदी दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष।
गोआल तद्० (पु०) गोपाल, गोप, अहीर।
गोई दे० (पु०) गुप्त की, छिपाई, छिपाई हुई।
गोए दे० गुप्त किये, छिपे हुए।
गोकर्ण तद्० (पु०) परिमाण विशेष, एक पसर, मृग विशेष, खच्चर, अश्वतर, सर्पविशेष, गणदेवता विशेष, तीर्थविशेष, पर्वतविशेष, गाय का कान, बालिश्त।—नाथ (पु०) एकतीर्थ का नाम, जिस के प्रधान देवता शिव हैं।
गोकुल तद्० (पु०) गौओं का समूह। व्रज में मथुरा के पास का एक गाँव, यहीं नन्दजी रहते थे, यहीं भगवान् श्रीकृष्ण ने अपना बाल्यकाल बिताया था।
गोकुलेश तद्० (पु०) गोकुल का अधिपति, श्रीकृष्ण-चन्द्र। [भूषणविशेष।
गोखरू तद्० (पु०) गोक्षुरक, एक औषधि का नाम,
गोखुर दे० (पु०) गौ का खुर, एक पौधे का नाम।
गोग्रास तद्० (पु०) भोजन करने के पूर्व, गौ के लिये निकाला हुआ भाग।
गोघात (स्त्री०) गोहत्या।
गोचना दे० (पु०) धरना, पकड़ लेना, गेहूँ और चना।
गोचर तद्० (पु०) इन्द्रियों से जानने योग्य, इन्द्रियों का विषय, प्रत्यक्ष, सम्मुख, सामने, गौओं के चरने का स्थान, *जन्म राशि से लेकर कतिपय राशियों के नाम*।
गोचर्म तद्० (पु०) [गो+चर्मन्] गौ का चमड़ा।
गोचा दे० (पु०) दबाना, धोखा देना।—गोची (वा०) धोखे पर धोखा, दबाव पर दबाव, बलात्कार से धोखा देना।
गोचारण तद्० (पु०) गोपालन, गौ को चराना।
गोचिकित्सा तद्० (स्त्री०) गौ की औषधि, गौ की दवा।
गोछ दे० (पु०) मूँछ, गोंछ, गौंछा।
गोजल तद्० (पु०) गोमूत्र।
गोजई दे० (पु०) मिश्रित अन्न, गेहूँ और जव।
गोजर दे० (पु०) कनखजूरा, काँतर, कानसलाई।
गोजिका दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष, एक प्रकार का पौधा।
गोजिह्वा तद्० (स्त्री०) गोभी, कोबी।
गोझा तद्० (पु०) गूझा, गुझिया, पकवान विशेष।
गोट दे० (पु०) किनारा, मगजी, भोज, जातीय भोजन, चौपड़ खेलने की गोटी।
गोटा दे० (पु०) किनारा, किनारी, कोर, चाँदी सोने के तारों से जो बनते हैं।
गोटी दे० (स्त्री०) चेचक, शीतला, माता।
गोठ तद्० (पु०) गोष्ठ, पशुओं के रहने का स्थान, सभा, समूह।
गोड़ दे० (पु०) पाद, पाँव, पिंडली, टाँग, पैर।
गोड़ना दे० (क्रि०) खोदना, सुरचना।
गोड़िया दे० (पु०) जाति विशेष, कहार।
गोड़ी दे० (स्त्री०) प्राप्ति, लाभ, प्राप्ति का आयोजन।
गोण या गौन तद्० (पु०) बोरा, थैला, झोला, अन्न रखने का थैला।
गोणी तद्० (स्त्री०) गौन, थैला।
गोत तद्० (पु०) गोत्र, वंश, जाति, कुल।
गोतम तद्० (पु०) ऋषिविशेष, गोतममुनि, न्याय-दर्शन कर्त्ता, देखो अक्षपाद।—ान्वय (पु०) शाक्यमुनि, बुद्धदेव।—नारी (स्त्री०) गोतम मुनि की स्त्री, अहल्या।
गोतमी तद्० (स्त्री०) दुर्गा, कण्व मुनि की भगिनी।
गोता तद्० (पु०) गोत्र, वंश, कुल, जल में डुबकी लगाना।—खोर दे० (पु०) डुबकी लगाने वाला।
गोतिया तद्० (पु०) परिवार, कुटुम्बी, भाईभाई, सम्बन्धी, स्वगोतीय।
गोती तद्० (पु०) गोत्रज, वंशज, कुटुम्बी।
गोतीत तद्० (पु०) इन्द्रियों से परे, इन्द्रियों से न जानने योग्य, इन्द्रियातीत।
यथा—"गिराज्ञान गोतीत"। —रामायण।
गोत्र तद्० (पु०) वंश, कुल, जाति, गोत, आदि पुरुष, पर्वत, पहाड़।—ज (पु०) गोत्र में उत्पन्न, ज्ञाति, कुलज, वंशीय, पर्वतीय धातु।—धन (पु०) पैत्रिक धन, पिता का धन।—शत्रु (पु०) इन्द्र, शक्र, वृत्रासुर

गोद् दे० (स्त्री०) देखो गोद्‌री।
गोदना दे० (क्रि०) चुभाना, गोदना, शरीर पर तिल के आकार के चिन्ह बनाना, चेचक का टीका लगाना।
गोदन्त दे० (पु०) हरिताल, पीले रंग की एक धातु।
गोदा दे० (पु०) पीपल व बड़ के पके फल। (स्त्री०) गोदावरी नदी, श्रीरङ्गनाथ की विवाहिता स्त्री, गोदा अम्मा। [पुण्य कर्म विशेष।
गोदान तत्० (पु०) गौदान, गौ को अर्पण करना,
गोदाम दे० (पु०) माल असबाब रखने का बड़ा घर।
गोदावरी तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, इस नाम की प्रसिद्ध एक नदी, यह पवित्र नदियों में से है और दक्षिण में है।
गोदी दे० (स्त्री०) अँकवार, गोद, कनिया, सूजन, पैर का मोटा होना, दत्तक पुत्र लेना।—पसारना (वा०) माँगना, जाँचना, याञ्चा करना।—लेना (वा०) पोसना, पालना, दत्तक बनाना पोस पूत करना।
गोदोहन तत्० (पु०) गाय दुहना, गाय से दूध निकालना। [दोहनी घूंचा।
गोदोहनी तत्० (स्त्री०) गोदोहन पात्र• दुधेड़ी
गोधन तत्० (पु०) गोसमूह, गोरूप धन दीवाली के समय की एक पूजा, गोवर्द्धन पूजा।
गोधा तत्० (स्त्री०) धनुष के ज्या के आघात को रोकने के लिये चर्मपट्टिका, हाथ की कलाई पर बाँधने का चमड़ा, जिसे धनुर्धारी लोग बाँधते हैं।
गोधिका तत्० (स्त्री०) गोह, जल जन्तु विशेष।
गोधूम तत्० (पु०) शस्यविशेष, एक अन्न का नाम, नारङ्गी, गेहूँ, औषधि विशेष।
गोधूली तत्० (स्त्री०) सूर्य के अस्त और उदय होने के इधर १ घड़ी और उधर १ घड़ी का समय।
गोधेनु तत्० (स्त्री०) दुग्धवती गौ दुधार गाय।
गोधौरा दे० (स्त्री०) सायङ्काल, सन्ध्याकाल।
गोन तद्० (स्त्री०) टाट, कंबल, चमड़े आदि की बनी बड़ी खुर्जी, जिसमें अनाज आदि भर कर बैल या ऊँट की पीठ पर लादते हैं।
गोनर्दीय तत्० (पु०) पतञ्जलि मुनि, व्याकरण महाभाष्यकार। (गु०) गोनर्द देश का, गोनर्द देश सम्बन्धी।
गोना (क्रि०) छिपाना।
गोप तत्० (पु०) [गो+पा+ड्] जातिविशेष, अहीर, ग्वाला, ग्वाल, राजा, ज़मींदार, एक कीड़े का नाम।—कन्या (स्त्री०) अहिरिन। [स्वामी।
गोपक तत्० (पु०) [गोप+क] बहुत ग्रामों का
गोपति तत्० (पु०) साँड़, वृष, बैल, गोरक्षक, अहीर, आभीर।
गोपद तत्० (पु०) गोष्पद, गाय के खुर का ज़मीन पर बना हुआ चिन्ह, गौओं के रहने का स्थान।
गोपन तत्० (पु०) [गुप्+अनट्] छिपाव, लुकाव, अप्रकाश, रक्षण, तेजपात।—ईय (गु०) छिपाने योग्य, गोप्य, गुह्य।—ीय (गु०) गोप्य, अप्रकाश्य।—पल्ली (स्त्री०) गोपों का वासस्थान।—वधू। (स्त्री०) गोप स्त्री, गोपाङ्गना।
गोपर तत्० (वि०) गोतीत, इन्द्रियों से परे।
गोपा तत्० (स्त्री०) [गोप+आ] लताविशेष, श्यामलता, सिद्धार्थ बुद्धदेव की स्त्री का नाम, कपिलवस्तु नगर के समीपस्थ कलिराज्य के अधिपति की ये कन्या थीं, इन्हीं के गर्भ से बुद्ध देव का एक पुत्र उत्पन्न हुआ था, उस पुत्र का नाम राहुल था, गोपा असाधारण विदुषी और पतिभक्ता स्त्री थी, पति के वनगमन के बाद गोपा ने भी पुत्र के साथ, बुद्धाश्रम में प्रवेश किया था, बुद्ध के मरने पर ये ही उनके आश्रम का सञ्चालन करती रहीं।
गोपाल तत्० (पु०) गोप, अहीर, विष्णु का पूर्ण अवतार, यह वसुदेव के पुत्र थे परन्तु व्रज में नन्द के यहाँ इनका बाल्य समय बीता था अतएव इन्हें नन्दनन्दन भी कहते हैं। पद्मपुराण में लिखा है कि यह सर्वदा बाल्यावस्था के समान योग्य वेष ही में रहते थे।
गोपालक तत्० (पु०) } गोप, अहीर, ग्वाला,
गोपग्वाल दे० (पु०) } गोआला, गौपालनेवाला।
गोपालय तत्० (पु०) गोपगृह, ग्वालों का घर, व्रज।
गोपाष्टमी तत्० (स्त्री०) कार्तिक शुक्ल अष्टमी, इस दिन गो की पूजा की जाती है।
गोपिका तत्० (स्त्री०) [गोप+इक्+आ] गोपी, गोपस्त्री, गोपाङ्गना, अहीरिन।

गुहा तत्० (स्त्री०) गुफा, कन्दरा, खोह पर्वत आदि का गह्वर।—गृह (पु०) कन्दरा, गर्त।—शय (पु०) विष्णु, व्याघ्र, सिंह। [को आह्वान, पुकार।

गुहार दे० (पु०) आर्तस्वर से सहायता के लिये किसी

गुहारी दे० (पु०) गुहार करने वाला, गुहराने वाला।

गुहिल तत्० (पु०) धन, वित्त, विभव, निधि, मेवाड़ के प्रथम राज्य स्थापक का नाम, सिसोदिया कुल के राजाओं का पहला राजा, इसी राजा के नाम से सिसोदिया क्षत्री अपने को गुहिलोत कहते हैं।

गुहेरी दे० (स्त्री०) गुहाँजनी, आँख की पलकों पर की फुड़िया। कहते हैं यह गिरा को देखने से होती है, इसीसे इसका नाम गुहेरी पड़ा है।

गुह्य तत्० (वि०) गुप्त, गोपनीय, गूढ़। (पु०) छल, कपट, दम्भ, गोपनीय अंग, विष्णु, शिव। [यक्ष।

गुह्यक तत्० (पु०) देवयोनि विशेष, कुबेर के अनुचर,

गुह्यकेश्वर तत्० (पु०) कुबेर, यक्षराज।

गू दे० (पु०) गुह, मल, विष्ठा। [का, शब्द रहित।

गूँगा दे० (पु०) मूक, मौन, अनबोल, बिना वाणी

गूँज दे० (पु०) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द।

गूँजना दे० (क्रि०) गूँज करना, भिनभिनाना, भ्रमर आदि का शब्द करना।

गूँडा दे० (पु०) नाव का आगा काठ।

गूँथना दे० (क्रि०) गुहना, पिरोना।

गूँदना दे० (क्रि०) सानना, एकत्रित करना, गोला बनाना, माँड़ना। [लसोरा, लभेरा।

गूँदनी दे० (स्त्री०) गुँदिला, वृक्ष विशेष, गोंदा,

गूदा दे० (पु०) अन्तःसार।

गूँधन दे० (पु०) कोई, पेड़।

गूँधना दे० (क्रि०) सानना, गूँदना, माड़ना।

गूगल, गुग्गुल दे० (पु०) गोंदविशेष, सुगन्धितद्रव्य।

गूगला तद्० (स्त्री०) घोंघा, सीप। [एक भेद।

गूजर तद्० (पु०) जाति विशेष, जाट, अहीर का

गूजरी दे० (स्त्री०) गूजर की स्त्री, एक रागिनी, स्त्रियों के एक आभूषण का नाम।

गूझा तद्० (पु०) एक पकवान जो अक्सर होली के त्योहार पर बनाया जाता है, गुझा।

गूढ़ तद्० (पु०) [गुह+क्त] गुप्त, छिपा हुआ, गुप्त, अप्रकाश्य, कठिन, सूक्ष्म, एकान्त, गुहा, निर्जन स्थान।—चार (पु०) गुप्त पुरुष, गोइन्दा।—ज (पु०) जारज पुत्र।—पत्र (पु०) करवीर वृक्ष, करील वृक्ष, नागफनी।—पथ (पु०) अन्तःकरण, चित्त।—पाद (पु०) सर्प, भुजङ्ग, आदि।—पुरुष (पु०) चर, दूत, गुप्तचर।—भाषित (पु०) गुप्तवाद, गुप्त विज्ञापन।—अर्थ (पु०) गुप्त अर्थ, कठिन अर्थ, जिसका अर्थ जल्दी समझ में न आवे।

गूथ दे० (पु०) सूत की लच्छी।

गूथना दे० (क्रि०) गाथना, गूँथना, तागना।

गूदड़ दे० (पु०) पुराना वस्त्र, कन्था। (पु०) कन्थाधारी।

गूदड़ी दे० (स्त्री०) कन्था, रजाई, सुजनी।

गूदड़, गूदर दे० (पु०) फटा पुराना कपड़ा। [भेजा।

गूदा दे० (पु०) फलों का सारांश, मिंगी, अन्तःसार,

गूदिया दे० (पु०) लोभी, इच्छुक।

गूप तद्० (पु०) गुप्त, छिपा।

गूमड़ा दे० (पु०) फोड़ा, सूजन, गिलटी, व्रण।

गूमड़ी दे० (स्त्री०) गाँठ, ग्रन्थि।

गूलर दे० (पु०) डूमर, उदुम्बर, ऊमर।

गूदड़िया दे० (पु०) घूरा, कूड़ा, कतवार, गोबर।

गृञ्जन तत्० (पु०) गाजर, लहसुन, प्याज।

गृध्नु तत्० (पु०) लालची, लोभी, इच्छुक।—ता (स्त्री०) लोलुपता, लोभ, आकांक्षा, अभिलाषा।

गृध्र तत्० (पु०) गीध, गिद्ध, पक्षीविशेष।—राज (पु०) जटायुपक्षी।

गृध्रा तद्० (पु०) मरभूखा, लोभी, लालची।

गृष्टी तत्० (स्त्री०) एकबार की ब्यायी गौ, लता विशेष, वराही कन्द।

गृह तत्० (पु०) ईंटा आदि से बनाया हुआ स्थान, घर, गेह, भवन, निकेतन, आगार, कुटुम्ब, वंश।—कन्या (स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुमारी।—कर्म (पु०) गृह सम्बन्धी कार्य।—गोधिका (स्त्री०) विसतुइया, छिपकली।—छिद्र (पु०) गृहदोष, घर की गुप्त बातें, गृहकलह।—तटी (स्त्री०) गली, वीथी, घर के बाहर का चौतरा।—दास (पु०) गृह का भृत्य।—दाहक (पु०) आततायी, घर में आग लगाने वाला, गृहनाशक।

—निर्माता (पु०) घर बनाने वाला ।—पति (पु०) गृहस्वामी, घर का मालिक ।—पालक (पु०) कुकुर, गृहरक्षक ।—वाटिका (स्त्री०) घर के समीप का बगीचा ।—वासी (पु०) घर में रहने वाला ।—भङ्ग (पु०) गृहभेदक, प्रवास । —भेदी (पु०) घर का दोष प्रकाशित करने वाला, दूत, सूचक ।—मणि (पु०) प्रदीप, दीपक ।—मेधी (पु०) गृही, गृहपति, घर वाला। —विच्छेद (पु०) कुटुम्बकलह, परिवार के साथ विवाद ।—स्थ (पु०) द्वितीयाश्रमी, ज्येष्ठाश्रमी, गृही, संसारी ।—स्थता (स्त्री०) गृह व्यापार, गृहस्थ का धर्म ।—स्थाश्रम (पु०) चार आश्रमों के अन्तर्गत दूसरा आश्रम ।—गत (पु०) आगन्तुक, अतिथि, पाहुन ।—र्थ (पु०) घर के लिये, गृह के निमित्त ।

गृहिणी तद्० (स्त्री०) गृहस्वामिनी, भार्या, स्त्री, पत्नी ।

गृही तद्० (पु०) गृहस्वामी, घर का मालिक, गृहस्थ, घरबारर । [ग्रहण किया हुआ ।

गृहीत तद्० (.गु०) पकड़ा हुआ, स्वीकृत, अङ्गीकृत,

गृह्य तद्० (गु०) गृहासक्त, गृहस्थों के कर्त्तव्य कर्म, कर्मोपदेशक शास्त्र विशेष, ग्रहण करने योग्य । —ग्रन्थ (पु०) धर्म संहिता, कर्मकाण्ड ग्रन्थ । —सूत्र (पु०) स्मृति, शास्त्र ।—ग्नि (पु०) गृह सम्बन्धी अग्नि, अग्निहोत्र का अग्नि । संस्कृत में अग्नि पुलिङ्ग है, किन्तु हिन्दी में यह शब्द कहीं कहीं स्त्रीलिङ्ग भी मान लिया गया है ।

गेँगरा दे० (पु०) केंकड़ा, मर्कट ।

गेँड़ा दे० (पु०) एक जन्तु का नाम, इसी के चमड़े की ढाल बनती है ।

गेँद दे० (पु०) खेलने की एक वस्तु गेँदा ।

गेँदा दे० (पु०) पुष्प विशेष, गेंद ।

गेँदी दे० (स्त्री०) खेलने की गोली ।

गे दे० (स्त्री०) गये, चले गये, बीत गये ।

गेगली दे० (गु०) घोंघली, फूहड़, कुरूप स्त्री ।

गेडुआ दे० (पु०) तकिया, सिरहाना, उपधान, टोंटीदार लोटा ।

गेडुरी दे० (स्त्री०) एँडुरी, बींड़ा, इंडुरी ।

गेदरा दे० (पु०) अनबूझ, अज्ञान, भोंदू, अबोध ।

गेदा दे० (पु०) पक्षरहित चिड़िया, परहीन, बच्चा ।

गेय तद्० (पु०) [गै+या] गान योग्य, सङ्गीत करने के उपयुक्त, गाने योग्य ।

गेया (पु०) मिटकी, चोटा, प्रचण्ड ।

गेरु दे० (पु०) देखो गेरू ।

गेरुआ दे० (गु०) गेरू से रंगा हुआ वस्त्र विशेष ।

गेरू दे० (पु०) गैरिक, पहाड़ की लाल मिट्टी, उपधातु ।

गेह तद्० (पु०) गृह, भवन, घर ।—शूर (पु०) गृह प्रिय, गृहासक्त, घर ही में वीरता दिखानेवाला ।

गेहनी तद्० (स्त्री०) घरवाली, स्त्री ।

गेही तद्० (पु०) गृही, गृहस्थाश्रमी ।

गेहूँ दे० (पु०) गेहूँ, गोधूम, अन्नविशेष । [बादामी ।

गेहुँआ, गेहुँवाँ दे० (पु०) गेहूँ के रंग का, गेहूँ बरन,

गैंड़ा दे० (पु०) गैंडा, एक जन्तु, जिसकी पवित्र हड्डी की अँगूठियाँ अर्घा आदि पितृतर्पण में काम आते हैं।

गैंती, गैती दे० (स्त्री०) कुदाल, मिट्टी खोदने का अस्त्र विशेष ।

गैन या गैना दे० (पु०) नाटा बैल ।

गैया दे० (स्त्री०) गाय, धेनु, गो ।

गैर दे० (वि०) अन्य, दूसरा ।—मामूली (वि०) असाधारण ।—मुनासिब (वि०) अनुचित ।—मुमकिन (वि०) अयोग्य, अनुचित ।—वाजिब (वि०) अयोग्य, अनुचित ।

गैरा दे० (पु०) घास का पूला, आँटी, मुट्ठा ।

गैरिक तद्० (पु०) लाल रङ्ग की मिट्टी, गेरू ।

गैरेय तद्० (पु०) शिलाजीत ।

गैल दे० (पु०) मार्ग, राह, रास्ता, गली, रथ्या, पथ ।

गैहरी दे० (स्त्री०) दबड़, रोकने का दण्ड, अर्गल, बेंड़ा ।

गो तद्० (स्त्री०) गौ, धेनु, गैया, पशु, किरण, दिशा, वचन, पृथ्वी, माता, वृषराशि, इन्द्रिय, सरस्वती, वागीश, आँख, बिजली, जीभ, दूध देने वाले जानवर बकरी भेड़ आदि, ऋषभ नामक औषधि विशेष । (पु०) बैल, घोड़ा, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, गवैया, प्रशंसक, आकाश, स्वर्ग, जल, वज्र, शब्द, नौ का अङ्क, शरीर के रोम ।

गोइंठा तद्० (पु०) जलाने के लिये सुखाया हुआ गोबर, कंडा, उपला ।

गोंठा दे० (पु०) उपला, उपरी, कंडा, छाना, गोहरी।

गोंठी दे० (स्त्री०) चेचक, सीतला, रोग विशेष।

गोंद दे० (पु०) लासा, चेप, निर्यास।

गोंदनी दे० (स्त्री०) तृणविशेष, नरपट।

गोंदा दे० (पु०) पक्षी के खाने की लोई जिससे पक्षी फँसाये जाते हैं, लमेरा, लसोड़ा।

गोंदी दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष।

गोआल तद्० (पु०) गोपाल, गोप, अहीर।

गोई दे० (पु०) गुप्त की, छिपाई, छिपाई हुई।

गोए दे० गुप्त किये, छिपे हुए।

गोकर्ण तद्० (पु०) परिमाण विशेष, एक पसर, मृग विशेष, खच्चर, अश्वतर, सर्पविशेष, गणदेवता विशेष, तीर्थविशेष, पर्वतविशेष, गाय का कान, बालिश्त।—नाथ (पु०) एकतीर्थ का नाम, जिस के प्रधान देवता शिव हैं।

गोकुल तद्० (पु०) गौओं का समूह। व्रज में मथुरा के पास का एक गाँव, यहीं नन्दजी रहते थे, यहीं भगवान् श्रीकृष्ण ने अपना बाल्यकाल बिताया था।

गोकुलेश तद्० (पु०) गोकुल का अधिपति, श्रीकृष्ण-चन्द्र। [भूषणविशेष।

गोखरू तद्० (पु०) गोक्षुरक, एक औषधि का नाम,

गोखुर दे० (पु०) गौ का खुर, एक पौधे का नाम।

गोग्रास तद्० (पु०) भोजन करने के पूर्व, गौ के लिये निकाला हुआ भाग।

गोघात (स्त्री०) गोहत्या।

गोचना दे० (पु०) घरना, पकड़ लेना, गेहूँ और चना।

गोचर तद्० (पु०) इन्द्रियों से जानने योग्य, इन्द्रियों का विषय, प्रत्यक्ष, सन्मुख, सामने, गौओं के चरने का स्थान, जन्म राशि से लेकर कतिपय राशियों के नाम।

गोचर्म तद्० (पु०) [गो+चर्मन्] गौ का चमड़ा।

गोचा दे० (पु०) दबाना, धोखा देना।—गोची (धा०) धोखे पर धोखा, दबाव पर दबाव, बलात्कार से धोखा देना।

गोचारण तद्० (पु०) गोपालन, गौ को चराना।

गोचिकित्सा तद्० (स्त्री०) गौ की औषधि, गौ को दवा।

गोछ दे० (पु०) मूँछ, गोंछ, गौंछा।

गोजल तद्० (पु०) गोमूत्र।

गोजई दे० (पु०) मिश्रित अन्न, गेहूँ और जव।

गोजर दे० (पु०) कनखजूरा, कनँतर, कानसलाई।

गोजिका दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष, एक प्रकार का पौधा।

गोजिह्वा तद्० (स्त्री०) गोभी, कोबी।

गोझा तद्० (पु०) गूझा, गुझिया, पकवान विशेष।

गोट दे० (पु०) किनारा, मगजी, भोज, जातीय भोजन, चौपड़ खेलने की गोटी।

गोटा दे० (पु०) किनारा, किनारी, कोर, चाँदी सोने के तारों से जो बनते हैं।

गोटी दे० (स्त्री०) चेचक, शीतला, छाले।

गोठ तद्० (पु०) गोष्ठ, पशुओं के रहने का स्थान, सभा, समूह।

गोड़ दे० (पु०) पाद, पाँव, पिंडली, टाँग, पैर।

गोड़ना दे० (क्रि०) खोदना, खुरचना।

गोड़िया दे० (पु०) जाति विशेष, कहार।

गोड़ी दे० (स्त्री०) प्राप्ति, लाभ, प्राप्ति का आयोजन।

गोण या गौन तद्० (पु०) बोरा, थैला, खाला, अन्न रखने का थैला।

गोणी तद्० (स्त्री०) गौन, थैला।

गोत तद्० (पु०) गोत्र, वंश, जाति, कुल।

गोतम तद्० (पु०) ऋषिविशेष, गोतममुनि, न्याय-दर्शन कर्त्ता, देखो अक्षपाद।—न्वय (पु०) शाक्यमुनि, बुद्धदेव।—नारी (स्त्री०) गोतम मुनि की स्त्री, अहल्या।

गोतमी तद्० (स्त्री०) दुर्गा, कण्व मुनि की भगिनी।

गोता तद्० (पु०) गोत्र, वंश, कुल, जल में डुबकी लगाना।—खोर दे० (पु०) डुबकी लगाने वाला।

गोतिया तद्० (पु०) परिवार, कुटुम्बी, जातभाई, सम्बन्धी, स्वगोतीय।

गोती तद्० (पु०) गोत्रज, वंशज, कुटुम्बी।

गोतीत तद्० (पु०) इन्द्रियों से परे, इन्द्रियों से न जानने योग्य, इन्द्रियातीत।

यथा—"गिराज्ञान गोतीत"। —रामायण।

गोत्र तद्० (पु०) वंश, कुल, जाति, गोत, आदि पुरुष, पर्वत, पहाड़।—ज (पु०) गोत्र में उत्पन्न, ज्ञाति, कुलज, वंशीय, पर्वतीय धातु।—धन (पु०) पैत्रिक धन, पिता का धन।—शत्रु (पु०) इन्द्र, शक्र, वृत्रासुर

गाद दे० (स्त्री०) देखो गोदी।

गादना दे० (क्रि०) चुभाना, गोदना, शरीर पर तिल के आकार के चिन्ह बनाना, चेचक का टीका लगाना।

गादन्त दे० (पु०) हरिताल, पीले रंग की एक धातु।

गादा दे० (पु०) पीपल व बड़ के पके फल। (स्त्री०) गोदावरी नदी, श्रीरङ्गनाथ की विवाहिता स्त्री, गोदा अम्मा। [पुण्य कर्म विशेष।

गोदान तत्० (पु०) गौदान, गौ को अर्पण करना,

गोदाम दे० (पु०) माल असबाब रखने का बड़ा घर।

गोदावरी तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, इस नाम की प्रसिद्ध एक नदी, यह पवित्र नदियों में से है और दक्षिण में है।

गादी दे० (स्त्री०) अँकवार, गोद, कनिया, सूजन, पैर का मोटा होना, दत्तक पुत्र लेना।—पसारना (वा०) माँगना, जाँचना, याञ्चा करना।—लेना (वा०) पोसना, पालना, दत्तक बनाना पोस पूत करना।

गोदोहन तत्० (पु०) गाय दुहना, गाय से दूध निकालना। [दोहनी चूंचा।

गोदोहनी तत्० (स्त्री०) गोदोहन पात्र, दुधे.ी

गोधन तत्० (पु०) गोसमूह, गोरूप धन दीवाली के समय की एक पूजा, गोवर्द्धन पूजा।

गोधा तत्० (स्त्री०) धनुष के ज्या के आघात को रोकने के लिये चर्मपट्टिका, हाथ की कलाई पर बाँधने का चमड़ा, जिसे धनुर्धारी लोग बाँधते हैं।

गोधिका तत्० (स्त्री०) गोह, जल जन्तु विशेष।

गाधूम तत्० (पु०) शस्यविशेष, एक अन्न का नाम, नारङ्गी, गेहूँ, औषधि विशेष।

गोधूली तत्० (स्त्री०) सूर्य के अस्त और उदय होने के इधर १ घड़ी और उधर १ घड़ी का समय।

गोधेनु तत्० (स्त्री०) दुग्धवती गौ सुधार गाय।

गोधौरा दे० (स्त्री०) सायङ्काल, सन्ध्याकाल।

गान तद्० (स्त्री०) टाट, कंबल, चमड़े आदि की बनी बड़ी खुर्जी, जिसमें अनाज आदि भर कर बैल या ऊँट की पीठ पर लादते हैं।

गानर्दीय तत्० (पु०) पतञ्जलि मुनि, व्याकरण महाभाष्यकार। (गु०) गोनर्द देश का, गोनर्द देश सम्बन्धी।

गोना (क्रि०) छिपाना।

गोप तत्० (पु०) [गो+पा+ड] जातिविशेष, अहीर, ग्वाला, ग्वाल, राजा, ज़मींदार, एक कीड़े का नाम।—कन्या (स्त्री०) अहिरिन। [स्वामी।

गोपक तत्० (पु०) [गोप+क] बहुत ग्रामों का

गोपति तत्० (पु०) साँड़, वृष, बैल, गोरक्षक, अहीर, आभीर।

गोपद तत्० (पु०) गोष्पद, गाय के खुर का ज़मीन पर बना हुआ चिन्ह, गौओं के रहने का स्थान।

गोपन तत्० (पु०) [गुप्+अनट्] छिपाव, लुकाव, अप्रकाश, रक्षण, तेजपात।—ईय (गु०) छिपाने योग्य, गोप्य, गुह्य।—ीय (गु०) गोप्य, अप्रकाश्य।—पल्ली (स्त्री०) गोपों का वासस्थान। —वधू। (स्त्री०) गोप स्त्री, गोपाङ्गना।

गोपर तत्० (वि०) गोतीत, इन्द्रियों से परे।

गोपा तत्० (स्त्री०) [गोप+आ] लताविशेष, श्यामलता, सिद्धार्थ बुद्धदेव की स्त्री का नाम, कपिलवस्तु नगर के समीपस्थ कलिराज्य के अधिपति की ये कन्या थीं, इन्हीं के गर्भ से बुद्ध देव का एक पुत्र उत्पन्न हुआ था, उस पुत्र का नाम राहुल था, गोपा असाधारण विदुषी और पतिभक्ता स्त्री थी, पति के वनगमन के बाद गोपा ने भी पुत्र के साथ, बुद्धाश्रम में प्रवेश किया था, बुद्ध के मरने पर ये ही उनके आश्रम का सञ्चालन करती रहीं।

गोपाल तत्० (पु०) गोप, अहीर, विष्णु का पूर्ण अवतार, यह वसुदेव के पुत्र थे परन्तु व्रज में नन्द के यहाँ इनका बाल्य समय बीता था अतएव इन्हें नन्दनन्दन भी कहते हैं। पद्मपुराण में लिखा है कि यह सर्वदा बाल्यावस्था के समान योग्य वेष ही में रहते थे।

गोपालक तत्० (पु०) } गोप, अहीर, ग्वाला,
गोपग्वाल दे० (पु०) } गोआला, गौपालनेवाला।

गोपालय तत्० (पु०) गोपगृह, ग्वालों का घर, व्रज।

गोपाष्टमी तत्० (स्त्री०) कार्तिक शुक्ल अष्टमी, इस दिन गो की पूजा की जाती है।

गोपिका तत्० (स्त्री०) [गोप+इक्+आ] गोपी, गोपस्त्री, गोपाङ्गना, अहीरिन।

गोपित तद्० (गु०) रक्षित, पालित, गुप्त, अप्रकाशित।

गोपी तद्० (स्त्री०) [गोप+ई] गोपस्त्री, गोपाङ्गना, ग्वालिन।—नाथ (पु०) श्रीकृष्ण, गोपियों के पति।

गोपीचन्द् (पु०) एक प्राचीन राजा का नाम जिसके जीवन की घटनाएँ जोगी लोग सारंगी पर गाया करते हैं। [पीत वर्ण चन्दन विशेष।

गोपीचन्दन तद्० (पु०) एक प्रकार का चन्दन,

गोपुच्छ तद्० (पु०) हार विशेष, गौ की पूँछ के समान बना हुआ हार, गौ की पूँछ।

गोपुर तद्० (पु०) नगर द्वार, शहर का फाटक, पुरद्वार, क़िले का फाटक, मन्दिर का फाटक।

गोप्ता तद्० (पु०) [गुप्+तृच्] रक्षक, पालक, रक्षाकर्त्ता, अप्रकाशक।

गोप्य तद्० (गु०) [गुप्+य] रक्षणीय, गोपनीय, छिपने योग्य छिपाने लायक।

गोप्रकाण्ड तद्० (पु०) श्रेष्ठ गौ, उत्तम गौ।

गोफणा तद्० (स्त्री०) गोफन, पत्थर फेंकने का यन्त्र विशेष, भिन्दिपाल, ढेलवाँस, गुफना, अत्रम की पट्टी।

गोफन तद्० (पु०) ढेलवाँस, गुफना।

गोफिया दे० गोफन, ढेलवाँस।

गोबर दे० (पु०) गोमय, गौ का मल, गोविष्ठा।—गनेश (पु०) अकर्मण्य, आलस, जड़, स्थूल, महा मूर्ख।

गोबरी दे० (स्त्री०) गोबर का लिपाव, गोमयलेपन।

गोबरौंदा दे० (पु०) गोबर का कीड़ा।

गोबरौला दे० (पु०) गोबरौंदा, कीट विशेष।

गोभिल तद्० (पु०) मुनि विशेष, सामवेदी सन्ध्या के सूत्रकार, गोभिलगृह्यसूत्र नाम का कर्मकाण्ड ग्रन्थ इन्हीं का बनाया है, इस ग्रन्थ का कर्मकाण्डी समाज में विशेषतः सामवेदियों में बड़ा आदर है।

गोभी दे० (स्त्री०) फली, अङ्कुर, नया शाखा, पौधा विशेष, गोजिह्वा, कोबी।

गोमका तद्० (पु०) कुन्दरा, कोदरा।

गोमती तद्० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध नदी विशेष, वैदिक मन्त्र विशेष।

गोमन्त तद्० (पु०) पर्वत विशेष, एक पहाड़ का नाम।

गोमय तद्० (पु०) [गो+मयट्] गोबर।

गोमक्षिका तद्० (स्त्री०) दंस, डाँस।

गोमायु तद्० (पु०) [गो+मा+उण्] शृगाल, सियार, गीदड़, उल्कामुखक।

गोमिथुन तद्० (पु०) दो गौ, गौ की जोड़ी।

गोमुख तद्० (पु०) सेंध, सुरङ्ग, चोरी करने के लिये एक प्रकार से मकान में बिल करना, गौ का मुख, नरसिंहा बाजा, नाक नाम का जलजन्तु, योगासन, टेढ़ामेढ़ा घर, ऐपन, एक यक्ष का नाम, इन्द्रपुत्र जयन्त के सारथी का नाम।—व्याघ्र तद्० (पु०) वह मनुष्य जो देखने में तो सीधा और भोला भाला धर्मात्मा दीखे, किन्तु मन का बड़ा ख़राब और दुष्ट हो।

गोमुखी तद्० (स्त्री०) [गोमुख+ई] हिमालय पर्वत से गङ्गाजी के गिरने का स्थान जो गोमुख के समान बना हुआ है, तीर्थ विशेष, जपमाली, जपमाला रखने की झोली। [अज्ञान, अबोध।

गोमूढ़ तद्० (गु०) गौ के समान मूर्ख, अतिशय

गोमूत्र तद्० (पु०) गोमूत, गौ का मूत।

गोमूत्रिका तद्० (स्त्री०) तृणविशेष, काव्य का एक भेद, चित्र काव्य विशेष, पद्य बनाने का एक प्रकार, एक बन्ध का नाम।

गोमेद तद्० (पु०) [गो+मिद्+अल्] पीले रङ्ग का गौ के मस्तकस्थित पदार्थ विशेष, गौलोचन, शीतलचीनी, कबाबचीनी, गोमेदक मणि।

गोमेध तद्० (पु०) [गो+मिध्+अल्] यज्ञ विशेष।

गोर तद्० (गु०) गौर वर्ण, (पु०) गौर, फरसा, क़ब्र, समाधिस्थान।—मदायन इन्द्रधनु।

यथा—"धनु है यह गोरमदायन नहीं शरधार बहै जलधार वृथाही"।

गोरखधन्धा दे० (पु०) एक प्रकार का गोरखधन्धा, गोरखपन्थी साधुओं के पास होता है। यह वह कि एक छड़े में बहुत सी कड़ियाँ पड़ी रहती हैं। कोई ऐसा काम जिसमें बड़ी बड़ी उलझनें या दाँव पेंच हों, झगड़ा, उलझन, पेंच।

गोरस तद्० (पु०) गव्य दूध, दही, मठा तक्र आदि।—I तद्० (पु०) गाय के दूध से पला हुआ बच्चा।

गोरसी तद्० (स्त्री०) दूध गरम करने की अंगीठी ।

गोरक्ष तद्० (पु०) [गो+रक्ष+अच्] गोपाल, गौ रखने वाला ।—नाथ (पु०) प्रसिद्ध सिद्ध और धर्मप्रवर्तक, खृष्टीय १५ वीं शताब्दी में ये महात्मा उत्तर पश्चिम प्रदेश में उत्पन्न हुए थे। ये कबीर साहब के समकालीन थे। इनके अनेकों शिष्य थे, शिष्य इनको गुरु गोरखनाथ या गुरु गोरखनाथ कहते थे। इनका कहना है कि सब से श्रेष्ठ संसार में योगी येही हैं। इन्होंने उदार धर्म का प्रचार किया है, सभी श्रेणी के मनुष्यों को ये अपने सम्प्रदाय में लेते थे। उदारवादी होने के कारण राजा रङ्क सभी इनका आदर करते थे। इन्होंने गोरक्ष-संहिता नामक योग का ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा है।

गोरा तद्० (पु०) गौर वर्ण, गोर, उजला, फिरङ्गी पल्टन के जवान । (स्त्री०) गोरी।

गोराई (स्त्री०) सौन्दर्य, खूबसूरती।

गोरुत तद्० (पु०) दो कोश, क्रोशद्वय।

गोरू दे० (पु०) गो, गौ, वृषभ, पशु।

गोरोचन, गोरोचना तद्० (स्त्री०) स्वनाम ख्यात पीतवर्ण द्रव्य विशेष, गोमस्तक स्थित शुष्कपित्त।

गोल तद्० (पु०) वर्तुल, गोलाकार, मण्डलाकार।

गोलक तद्० (पु०) पति के न रहने पर जार से उत्पन्न पुत्र, उपपति के द्वारा उत्पन्न विधवा पुत्र कूंडा, कुन्न, आँख की पुतली, गुंबद, सन्दूक या थैली जिसमें किसी कार्य विशेष के लिये थोड़ा थोड़ा धन डाला जाय, फंड, इन्द्रियों का स्थान।

गोलचला दे० (पु०) गोलन्दाज़, तोप चलानेवाले।

गोलमाल दे० (पु०) गड़बड़।

गोलमिर्च दे० (स्त्री०) कालीमिर्च।

गोला दे० (पु०) अंड, कन्दुक, गेंद, घेरा, मण्डल, वृत्त, तोप का गोला, लोहे का गोलाकार पिण्डा, नारियल, अन्न रखने का स्थान, मंडी, जहाँ अन्न बिकता है।—लाङ्गूल तद्० (पु०) एक प्रकार का बन्दर जिसकी पूँछ गाय जैसी होती है।

गोलाई दे० (स्त्री०) गोलापन।

गोलाकार तद्० (पु०) गोलरूप, गोल।

गोलाध्याय तद्० (पु०) ज्योतिषविद्या, ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम।

गोलार तद्० (पु०) गोलाई, गोलता, हेर फेर।

गोलार्द्ध तद्० (पु०) पृथिवी का आधा भाग।

गोली दे० (स्त्री०) छोटा गोला, बन्दूक की गोली।—मारना (धा०) बन्दूक चलाना, बन्दूक मारना।

गोलोक तद्० (पु०) श्रीकृष्ण का स्थान, नित्यधाम, वैकुण्ठ।—प्राप्ति (स्त्री०) वल्लभाचार्य जी के सम्प्रदाय की मुक्ति, गतिविशेष।—वासी (पु०) भगवान्, श्रीकृष्ण, राजा।

गोलोमा तद्० औषध विशेष, वच।

गोवध (पु०) गोहत्या, गौ का वध करना।

गोवना दे० (क्रि०) छिपाना, लुकाना, ढाँकना।

गोवर्द्धन तद्० (पु०) वृन्दावन के एक पर्वत का नाम, स्वनाम प्रसिद्ध पर्वत, पूजा न पाने के कारण जब इन्द्र ने व्रज को वृष्टि से नष्ट करना चाहा था, तब श्रीकृष्ण ने इसी पर्वत को उठाकर व्रजवासियों की रक्षा की थी। इस पर्वत को श्रीकृष्ण ने अपनी कनिष्ठा अंगुली पर धारण किया था, वल्लभाचार्य जी ने इसी पर्वत से श्रीनाथ जी का आविष्कार किया था।—धारी (पु०) गोवर्द्धन पर्वत को धारण करनेवाला, श्रीकृष्ण।

गोवर्द्धनाचार्य तद्० (पु०) संस्कृत के कवि, शृङ्गार के प्रसिद्ध आर्यासप्तशति नामक ग्रन्थ का कर्ता, अपने गीतगोविन्द में जयदेव ने इनका उल्लेख और बड़ी प्रशंसा की है। शृङ्गाररस की कविता लिखने में यह सिद्धहस्त थे। इनके पिता का नाम नीलाम्बर था। उमापतिधर के समसामयिक होने के कारण १२ वीं शताब्दी का प्रारम्भ और मध्य इनका समय सिद्ध होता है।

गोवशा तद्० (स्त्री०) वन्ध्या गौ, बहिला गाय।

गोविन्द तद्० (पु०) वेद को जानने वाला, ज्ञान-सिन्धु, गोपाल, श्रीकृष्ण, गोअधिपति, बृहस्पति, वेदान्तवेत्ता, शङ्कराचार्य के गुरु का नाम। सिक्खों के दस गुरुओं में से एक, परब्रह्म।—ठक्कुर (पु०) यह मिथिलावासी संस्कृत पण्डित थे, काव्य प्रकाश की कारिकाओं की टीका इन्होंने लिखी है, जिसका नाम काव्यप्रदीप है। इनका समय अभी तक निश्चित नहीं हुआ है परन्तु अनुमान से १२ वीं शती का अन्तिम भाग ही विद्वानों ने इनका समय

सिद्ध किया है।—राज (पु०) मनुस्मृति के एक टीकाकार का नाम, इन्हीं की बनायी टीका का अवलम्ब करके कल्लूक भट्ट ने मन्वर्थमुक्तावली नाम की टीका बनायी है। इनके पिता का नाम माधव था। ग्यारहवीं सदी के अन्तिम भाग में इन्होंने मनुस्मृति का भाष्य बनाया था।

गोशाला तद्० (स्त्री०) गोगृह, गाय बाँधने का स्थान, गोसाला।

गोष्ठ तद्० (पु०) बाड़ा, गौओं के रहने का स्थान, मनुस्मृति के अनुसार एक श्राद्ध जो कई मनुष्य मिलकर करते हैं। परामर्श, दल, मण्डली।—विहार (पु०) गौ चराने के समय श्रीकृष्ण के केलि।

गोष्ठी तद्० (स्त्री०) मण्डली, वार्तालाप, परामर्श, रूपक या नाटक विशेष, परिवार, सभा, कुटुम्ब, ज्ञाति। [खुर का प्रमाण।

गोष्पद तद्० (पु०) गौ के रहने का स्थान, गौ के

गोसदृक्ष तद्० (पु०) चमरी गाय व बनगौ।

गोसाईं या गुसाईं तद्० (पु०) संन्यासियों की जाति, ईश्वर, महन्त, गुरु, यतीत, जितेन्द्रिय, प्रभु, स्वामी।

गोसैंया दे० (पु०) ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु।

गोस्तन तद्० (पु०) गौ की थन, गुच्छ, घौद, स्तवक।

गोस्तनी तद्० (पु०) द्राक्षा, दाख, अंगूर।

गोस्थान तद्० (पु०) [गो+स्था+अनट्] गोष्ठ, गोठ, गोकुल, गोशाला।

गोस्वामी तद्० (पु०) गोपति, गोरक्षक, वल्लभाचार्य के वंशीय, जितेन्द्रिय, वल्लभ सम्प्रदाय के गुरु।

गोह दे० (पु०) विसखोपरा, गोधा, विषखपरा।

गोहत्या तद्० (स्त्री०) गोवध, गोहिंसा।

गोहरी दे० (स्त्री०) उपरी, कण्डा, छाना।

गोहार दे० (पु०) हुल्लड़, रौला, गुल गपाड़ा, दुहाई, सहाय, सहायतार्थ आह्वान।

गोही दे० (स्त्री०) गाँठ, गुठली।

गोंहुवन दे० (पु०) सर्प विशेष, लाल रङ्ग का साँप।

गोहूँ दे० (पु०) गेहूँ, गोधूम।

गौं दे० (स्त्री०) दाव, सुभीता, अवसर, मौका।

गौ दे० (स्त्री०) गाय, गौ, गैया, धेनु।

गौख दे० (पु०) गवाक्ष, खिड़की।

गौंचा दे० (स्त्री०) साक, भाजी, दियरवा।

गौगा (पु०) किंवदन्ती, अफवाह।

गौड़ई दे० (स्त्री०) अङ्कुर, कैरी, फुनगी।

गौड़ तद्० (पु०) स्वनाम ख्यात देश, बङ्गाल का पूर्वी भाग, गौड़ देश का वासी, कायस्थ विशेष दशविध ब्राह्मणों के अन्तर्गत एक ब्राह्मण।—पाद (पु०) शङ्कराचार्य के गुरु के गुरु। इन्होंने सांख्य का टीका का भाष्य और माण्डूक्योपनिषद् की व्याख्या लिखी है।

गौड़ा दे० (पु०) उड़ीसा, कहार। [के मतानुयायी।

गौड़िया दे० (पु०) गौड़ देश के वासी, प्रभु चैतन्य

गौड़ी तद्० (स्त्री०) गुड़ की मदिरा, रागविशेष, काव्यरीति विशेष। [प्रभु।

गौड़ेश्वर तद्० (पु०) कृष्ण चैतन्य स्वामी, गौराङ्ग

गौण तद्० (पु०) अप्रधान, अधीन, गौणीवृत्ति के द्वारा बोधित अर्थ।—काल (पु०) अप्रधान काल।

गौणी तद्० (स्त्री०) अस्सी प्रकार के लक्षणों के अन्तर्गत एक लक्षण का नाम।

गौतम तद्० (पु०) (१) बुद्धदेव का दूसरा नाम, ये कपिल वस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र थे। इनकी माता का नाम मायादेवी था। ये अपनी माता की ४९ वर्ष की अवस्था में उत्पन्न हुए थे, इनके जन्म के ७ दिन के बाद इनकी माता परलोक गामिनी हुई। यह अपनी माता के एक मात्र पुत्र थे। ये स्वभाव से ही दयालु थे, संसार के दुःखों से उद्विग्न होकर इन्होंने राज्य छोड़ दिया और वन चले गये। पीछे येही बुद्ध नाम से प्रसिद्ध हुए।

(२) गोत्र प्रवर्तक भरद्वाज मुनि का नामान्तर, ये महर्षि गोतम के पुत्र थे।

(३) कृपाचार्य का नामान्तर, ये गौतमगोत्रीय शरद्वान के पुत्र थे। इसी कारण इनका गौतम नाम पड़ा था।

(४) न्याय दर्शन के प्रसिद्ध प्रणेता और आचार्य। यह ईसा से ६०० वर्ष पहले हुए।

(५) अहल्या के पति।

(६) सप्तर्षियों में से एक।

(७) पर्वत का नाम जिससे गोदावरी निकलती है और जो नासिक के पास है।

(८) गौतम स्मृति नामक स्मृति के निर्माता ऋषि।

गौतमी (स्त्री०) अहल्या, गौतम की बनाई स्मृति, गोदावरी नदी, शकुन्तला के साथ राजा दुष्यन्त के पास गयी हुई एक तपस्विनी।
गौतम नारि तत्० (स्त्री०) अहल्या।
गौन तद्० (स्त्री०) बोरे के थैले जिसमें अन्न भर कर बैल पर लादे जाते हैं। [प्रथमवार आगमन।
गौना दे० (पु०) द्विरागमन, वधूप्रवेश, पति के घर
गौनहार या गौन्हार दे० (पु०) गौने के बराती, वधू-प्रवेश में दूल्हे के साथ जाने वाले या वह स्त्री जो दूल्हे के साथ ससुराल जाय।
गौर (वि०) गोर, श्वेत, उज्ज्वल। (पु०) धव वृक्ष, चन्द्रमा, सुवर्ण, केसर, माप विशेष, पर्वत विशेष।
ग़ौर (पु०) ध्यान, सोच विचार।
गौरव तत्० (पु०) [गुरु+ष्यञ्] गुरुता, प्रभाव, मर्यादा, गुरुत्व, भार, आदर, सम्मान, पूज्यबुद्धि, प्रतिष्ठा, यश, प्रशंसा, बड़ाई, भारीपन, बड़प्पन, झुकाव।—जनक (गु०) मर्यादाजनक, सम्मान सूचक।—ान्वित (गु०) प्रतिष्ठित, मान्य, गौरवयुक्त, पूज्य।
गौरा तद्० (स्त्री०) पारवती, दुर्गा, पक्षी विशेष।
गौराङ्ग तत्० (गु०) श्वेतवर्ण, सुन्दर, पीतवर्ण, यूरोपियन, विष्णु, श्रीकृष्ण, चैतन्य देव, गौर अङ्गवाला।
गौरि तत्० (स्त्री०) देखो गौरी। [की कन्या।
गौरिका तत्० (स्त्री०) [गौरी+इक्+आ] आठ वर्ष
गौरिया दे० (स्त्री०) चटक, गौरा, मिट्टी का हुक्का।
गौरिला तत्० (स्त्री०) पृथिवी, धरणी, धरती।
गौरी तत्० (स्त्री०) [गौर+ई] पार्वती, उमा, अष्टवर्षीया कन्या, हरदी, दारुहरदी, गोरोचना, प्रियंगु-वृक्ष, पृथ्वी, नदी विशेष, वरुण की स्त्री, बुद्ध की एक शक्ति का नाम, श्वेतदूर्वा, रागिनी विशेष, मालव राग की पत्नी, जटामाँसी।—पति (पु०) शिव, महादेव।—पुत्र (पु०) कार्त्तिकेय, गणेश।
गौरीश या गौरीस तत्० (पु०) शिव, महादेव, भवानीपति, उमापति। [या घर, गोष्ठ।
गौशाला तद्० (स्त्री०) गौओं के रहने का स्थान,
ग्यारस दे० (स्त्री०) एकादशी तिथि, व्रतविशेष।
ग्यारह दे० (पु०) एकादश संख्या, दश और एक, ११।

ग्रथित तत्० (गु०) [ग्रथ+क्त] कृतग्रंथन, गुथा हुआ, पिरोया हुआ।
ग्रन्थ तत्० (गु०) प्रबन्ध, शास्त्र, पुस्तक, सिक्खों की धर्मपुस्तक का नाम, अनुष्टुपछन्द, श्लोक।—कर्त्ता (पु०) [ग्रन्थ+कृ+तृच्] ग्रन्थकार, निबन्धकार, शास्त्रकर्त्ता।—कार (पु०) [ग्रन्थ+कृ+अण्] ग्रन्थकर्त्ता।
ग्रन्थक तत्० (पु०) [ग्रन्थ+ण्वुल्] निर्माण कर्त्ता, निबन्धकार, रचयिता, माला का सूत्र।
ग्रन्थन तत्० (पु०) [ग्रन्थ+अनट्] गुम्फन, ग्रथितकरण, गाँथन, रचन, गूँथना, निर्माण।
ग्रन्थि तत्० (स्त्री०) [ग्रन्थ+ई] बाँस आदि की गिरह, डोरी आदि की गाँठ, मायाजाल, कुटिलता, आलू, भद्रमोथा।
ग्रन्थिक तत्० (पु०) दैवज्ञ, गणक, सहदेव नामक पाण्डव, पीपरामूल, करीर, गुग्गुल, गठिवन।
ग्रन्थित तत्० (गु०) [ग्रन्थ+इत] ग्रथित, गाँथा हुआ, रचित, निर्मित।
ग्रन्थिमान तत्० (पु०) [ग्रन्थि+मत्] हरसिंगार, अब, हड़ जोड़, वह औषधि जिसे टूटी हड्डी जुड़ जाती है।
ग्रन्थिज तत्० (पु०) पीपरामूल, अदरख, आदी, काँकई वृक्ष, करील, आलू।
ग्रसन तत्० (पु०) [ग्रस+अनट्] भक्षण, खादन, निगलना, आक्रमण, ग्रहण।
ग्रस्त तत्० (गु०) [ग्रस्+क्त,] भुक्त, खादित, आच्छादित, आक्रान्त, राहु ग्रास, अस्पष्ट वाक्य, गृहीत, खाया गया।—स्त (पु०) चन्द्र सूर्य का ग्रहण के अन्तर अस्त होना।—ोदय (पु०) [ग्रस्त+उदय] राहु ग्रस्त (ग्रहण लगे) सूर्य और चन्द्र का उदय होना।
ग्रह तत्० (पु०) [ग्रह+अच्] सूर्य आदि नवग्रह, नौ की संख्या, अनुग्रह, निर्बन्ध, आग्रह, हठ, अध्यवसाय, राहु, स्कन्द, शकुनि आदि रोग।—कल्लोल (पु०) आठवाँ ग्रह, राहु।
ग्रहण तत्० (पु०) [ग्रह+अनट्] स्वीकार, लेना, उपलब्धि, प्राप्ति, चन्द्र और सूर्य का उपराग।—ान्त (पु०) ग्रहण की समाप्ति, मोक्ष, उमह।

ग्रहणी तद्० (स्त्री०) अतिसार रोग, संग्रहणी रोग।
ग्रहणीय तद्० (गु०) [ग्रह्+अनीय] ग्रहण करने योग्य, ग्राह्य।
ग्रहस्थापन तद्० (पु०) नवग्रहों की स्थापना, पूजा विशेष।
ग्रहीत दे० (वि०) गृहीत, पकड़ा।
ग्रहीता तद्० (गु०) ग्रहणकर्त्ता, ग्राहक, पकड़ा हुआ।
ग्राम तद्० (पु०) समूह, मनुष्यों का समूह, गाँव, बस्ती, पुरवा, खेड़ा।

यथा—गिरि ग्राम लै लै हरि ग्राम मारे,
मनौ पद्मनीपत्र दन्ती बिदारे।
—रामचन्द्रिका।

सप्तक, शिव।—कुक्कुट (पु०) पोसा मुर्गा।—कूट (पु०) शूद्रजाति।—गृहा (गु०) गाँव का बाहर।—तक्षा (पु०) गाँव का बढ़ई।—याजक (पु०) गाँव के पुरोहित।—वासी (गु०) गाँव का रहने वाला।

ग्रामणी तद्० (गु०) ग्राम के मुखिया (पु०) ग्रामाधिपति, गाँव के स्वामी, विष्णु, मण्डल, नापित, यक्ष। (स्त्री०) वेश्या, नील का पेड़।
ग्रामिक तद्० (गु०) ग्राम्य, दिहाती, गँवइयाँ।
ग्रामीण तद्० (गु०) [ग्राम+इन्] ग्राम में उत्पन्न, ग्रामवासी, गँवार, गँवइयाँ। (पु०) गाँव का सूकर कुक्कुर आदि। [गाँव के मुखिया।
ग्रामपक्ष तद्० (पु०) गाँव के झगड़े मिटाने वाले,
ग्रामेश तद्० (पु०) [ग्राम+ईश] गाँव का मालिक, ज़मींदार।
ग्राम्य तद्० (गु०) [ग्राम+य] ग्राम सम्बन्धी ग्राम जात, मूर्ख, गँवार, छल कपट रहित। (पु०) काव्य का एक दोष, अश्लील शब्द, मैथुन, मिथुन राशि, गधा घोड़ा सूअर, बैल आदि पशु जो गावों में पाले पोसे जाते हों।—देवता (पु०) ग्रामरक्षक देवता।—धर्म तद्० (पु०) मैथुन, स्त्रीप्रसङ्ग।
ग्राव तद्० (पु०) पर्वत, पत्थर, ओला, बिनौरी।
ग्रास तद्० (पु०) [ग्रस्+घञ्] कवल, कौर, पकड़ सूर्य या चन्द्र में ग्रहण लगना।—च्छादन (पु०) अन्न, वस्त्र, रोटी कपड़ा।

ग्रासक तद्० (गु०) भक्षक, खादक, घेरनेवाला, रोकने वाला, छिपाने वाला, दबाने वाला।
ग्रासना तद्० (क्रि०) रोकना, घेरना, दबाना, छिपाना, भक्षण करना।
ग्राह तद्० (पु०) [ग्रह्+घञ्] ग्रहण, जल जन्तु-विशेष, सूँस, जलहाथी, ग्राहक, सान, नक्र, मगर।
ग्राहक तद्० (गु० ग्रहण करनेवाला, ग्राहक, ख़रीदने वाला, ग्यारामाही, सपेरा।—ता (स्त्री०) लोभ, ग्रहण करने की अभिलाषा।
ग्राही तद्० (गु०) [ग्रह्+णिन्] मल रोधक, धारक, ग्रहणकर्त्ता, कैथ। [मनोनीत, अभिलषित।
ग्राह्य तद्० (गु०) [ग्रह्+ण्यत्] ग्रहण के योग्य,
ग्रीवा तद्० (स्त्री०) गला, गर्दन, कण्ठ, गले के नीचे का भाग, किसी शब्द के पीछे जुड़ने पर इसका रूप "ग्रीव" रह जाता है यथा—"हयग्रीव" "सुग्रीव"।—भरण (पु०) कण्ठभूषण, कण्ठा।
ग्रीष्म तद्० (पु०) ऋतुविशेष, ऋतुओं के अन्तर्गत एक ऋतु का नाम, उष्ण, निदाघ, गरमी के दिन।—काल (पु०) निदाघ, उष्णकाल।
ग्रैवेय तद्० (पु०) [ग्रीवा+ढक्] कण्ठभूषण, गले का गहना कण्ठा, हँसुली इत्यादि।
ग्लपित तद्० (गु०) [ग्लप्+क्त] अवसन्न, थकित, श्रान्त, थकावट।

ग्लह तद्० (पु०) जुए की बाज़ी, पण, दाव।
ग्लान तद्० (गु०) [ग्लै+क्त] रोग द्वारा दुर्बल शरीर, रोगी, खिन्न, कमज़ोर।
ग्लानि तद्० (स्त्री०) [ग्लै+क्ति] श्रान्ति, निन्दा, मानसी व्यथा, मन की थकावट, अरुचि।
ग्वार (स्त्री०) एक पौधा जिसकी फली शाक के काम में आती है।—पाठ (पु०) घीकुमार।
ग्वाल तद्० (पु०) अहीर।
ग्वाला दे० (पु०) अहीर, गोपाल, गोप।
ग्वालिन दे० (स्त्री०) अहिरिन, गोपी।
गँवैंडा दे० (अ०) समीप, निकट, आसपास, ग्वार के समीप, नियरेही।
गँवैंडे दे० (अ०) पास समीप, निकट।
ग्लौ तद्० (पु०) चन्द्रमा, शशि, विष्णु, कपूर।

घ

घ व्यञ्जनों में से कवर्ग का चौथा अक्षर । इसका उच्चारण जिह्वामूल या कण्ठ से होता है ।
घ तत्० (पु०) घटा, घर्घर शब्द, मेघ, धूप ।
घँच दे० (पु०) गला, कण्ठ, नरेटी, ग्रीवा ।
घँघोरना दे० (क्रि०) मलिन करना, कलुषित करना, कलारना, गँदला करना ।
घंघरा, घंघरी दे० (स्त्री०) लहँगा, साया, चरणातक, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र ।
घचाघच दे० (वा०) ठसाठस, मचामच, अत्यन्त सङ्कीर्णता, लबालब भरा ।
घट तत्० (पु०) कलस, कुम्भ, गगरी, घड़ा, परिमाण विशेष, देह, अन्तःकरण, मन ।—ज (पु०) कुम्भज ऋषि, अगस्त्यमुनि ।—दासी (स्त्री०) कुटनी, दूती, सङ्गमकारिणी ।—योनि (पु०) अगस्त्यमुनि, कुम्भज ।
घटक तत्० (पु०) योजक, योजनकारी, कुटना, दूत, मध्यस्थ, बिचवैया, बिचवनिया, दलाल, चारण, घड़ा, मध्यस्थ ।—ता (स्त्री०) योजकता, दौत्य, कुटनापन ।
घटकर्पर तत्० (पु०) राजा विक्रमादित्य की सभा के एक सभासद पण्डित, इनकी बनायी एक छोटी सी पुस्तिका है, जिसका नाम घटकर्पर है, इसके अतिरिक्त नीतिसार नामक एक और भी ग्रन्थ इनका बनाया है । घटकर्पर काव्य बना कर इन्होंने अपनी यमकप्रियता का परिचय देना चाहा है, घटकर्पर के समान एक राक्षस काव्य भी यमकप्रधान है । सम्भव है वह भी इन्हीं प्रकाण्ड पण्डित का बनाया हो । विक्रमादित्य के समकालीन होने से इनका समय भी छठवीं शताब्दी माना जाता है ।
घटका (पु०) मरते समय की स्थिति, घर्रा ।
घटती तद्० (स्त्री०) कमी, न्यूनता, अल्पता, अवनति ।
घटना तत्० (स्त्री०) योजन, मिलन, संघटन, अकस्मात्, कार्य, अद्भुत, कर्म, विलक्षण दृश्य, (क्रि०) कम होना, न्यून होना ।
घटनीय तत्० (गु०) [घटन+अनीय] योजनीय, सम्भाव्य, घटने योग्य, होने योग्य ।
घटन्त दे० (स्त्री०) ह्रास, हीनता, उतार, अल्पता, न्यूनता । [निर्माण करना ।
घटब दे० (पु०) कम होना, क्षीण होना, न्यून होना,
घटबढ़ दे० (स्त्री०) कमीवेशी, न्यूनाधिक्ता ।
घटवार, घटवारिया, घटवालिया दे० (पु०) घाट वाला, जो नदी के पार उतारने का काम करता है, घाट पर बैठकर दान लेने वाला ब्राह्मण, घाट का देवता, घाटिया ।
घटहा दे० (पु०) घाट का ठेका लेने वाला, नदी के इस पार से उस पार जाने वाली नियत नाव, अपराधी, दोषी ।
घटा दे० (स्त्री०) मेघ, बादल, मेघों का उमड़ना, भीड़ । (गु०) कम हुआ, घट गया, न्यून हुआ ।
घटाटोप तत्० (पु०) [घट+आटोप] ओहार, पालकी का आच्छादन, पर्दा, यवनिका, दम्भ, अभिमान, बादलों की चारों ओर से उमड़ी हुई घटा, अत्यन्धकार, गहरी बदली ।
घटाना दे० (क्रि०) कम करना, न्यून करना, बाकी निकालना, काटना, अपमान करना । यथा—"उसने अपने आप अपने को घटा दिया है ।"
घटाव दे० (पु०) उतार, कमती, न्यूनता ।
घटिक तत्० (पु०) घड़ियाली या वह व्यक्ति जो घंटा पूरा होने पर घंटा बजावे ।
घटिका तत्० (स्त्री०) घड़ी, मुहूर्त, दण्ड, गुल्फ, घड़ी यंत्र, २४ मिनट का समय, गगरी, एड़ी के ऊपर का भाग । [संयुक्त, बना हुआ, रचा हुआ ।
घटित तत्० (गु०) [घट+इत] मिलित, योजित,
घटिया दे० (गु०) निकृष्ट, अधम, अल्प मूल्य की वस्तु ।—ई (स्त्री०) नीचता ।
घटिहा दे० (वि०) चालाक, घात पाकर अपना मतलब साधनेवाला, धोखा देनेवाला, दुष्ट, लम्पट ।
घटी तत्० (स्त्री०) [घट+ई] दण्ड, घड़ी, क्षुद्र घट, समयसूचक यन्त्र । (दे०) हानि, घाटा, टोटा ।—कार (पु०) घड़ी बनाने वाला, घड़ीसाज़, कुम्हार ।—यन्त्र (पु०) समयसूचक यन्त्र, घड़ी, जल निकालने का यन्त्र ।

घटे दे० (क्रि०) बने, बनाये गये, कम हुए, घोटे हुए।
घटोत्कच तद्० (पु०) राक्षस विशेष, हिडिम्बा राक्षसी का पुत्र, द्वितीय पाण्डव भीम के औरस से और हिडिम्बा के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था। महाभारत के रणक्षेत्र में इसने पाण्डवों की ओर से युद्ध किया था। कर्ण ने अर्जुन का वध करने के लिये जो इन्द्रदत्त शक्ति रक्षित की थी, उसी शक्ति से इसे कर्ण को मारना पड़ा, दूसरी गति ही नहीं थी। क्योंकि इसके पराक्रमानल में कौरव सेना दग्ध हो रही थी। यदि कर्ण उस शक्ति को काम में न लाते, तो समस्त कौरव सेना नष्ट भ्रष्ट हो जाती। परन्तु इससे अर्जुन दुर्जय हो गये और कर्ण को भी उसी समय यह निश्चय हो गया कि मैं अर्जुन के द्वारा अवश्य ही मारा जाऊँगा।
घटोत्कर्ण तद्० (पु०) (१) शिव के एक अनुचर का नाम, यह मङ्गल का पुत्र था, इसकी माता का नाम मेघा था। इसका दूसरा नाम घण्टेश्वर था। शाप के कारण मनुष्य योनि में इसे उत्पन्न होना पड़ा था, उज्जयिनी नगरी में इसका जन्म हुआ। विक्रमादित्य के नवरत्नों को परास्त करने की इच्छा से इसने तपस्या की थी, परन्तु कालिदास के अतिरिक्त अन्य रत्नों को जीतने का इसे वर मिला।
(२) हरिवंश में लिखा है कि घटोत्कर्ण विष्णुद्वेषी एक राक्षस था, हरि का नाम न सुन पड़े इसके लिये यह सर्वदा कानों में घण्टा बाँधकर बजाया करता था। शिवजी की आज्ञा से बदरिकाश्रम में जाकर हरि रूपी श्रीकृष्ण की इसने स्तुति की और मुक्त हुआ।
घट्ट, घट्टा तद्० (पु०) घाट, नदी का या तालाब का किनारा, स्नान करने का स्थान। [हिलना, ऐंठ।
घट्टा दे० (पु०) मिखरी, काम करने से चाम का मोटा
घड़घड़ाना दे० (क्रि०) गरजना, तड़कना, घड़घड़ करना, गड़गड़ाना।
घड़त दे० (स्त्री०) बनावट, साँचा, आकृति, डील।
घड़ना दे० (क्रि०) गढ़ना, बनाना, निर्माण करना।
घड़ा तद्० (पु०) गगरा, कलस, घट, कुम्भ।
घड़िया दे० (स्त्री०) कुल्हिया, पुरवा, मिट्टी का छोटा बरतन, जिसमें रखकर सुनार सोना चाँदी गलाते हैं शहद का छत्ता, गर्भाशय, पानी के रहँट की छोटी छोटी टिलियाँ। [घण्टा वाद्य विशेष।
घड़ियाल दे० (पु०) मगर, नक्र, जलजन्तु विशेष,
घड़ियाली दे० (पु०) घण्टा बजाने और बनाने वाला।
घड़ी दे० (स्त्री०) समय का परिमाण, साठ पल, समय बताने वाला यन्त्र।—में तोला घड़ी में माशा (वा०) चञ्चलचित्त, जिसका चित्त क्षण क्षण बदलता रहे। [पलहँडा।
घड़ौंचा, घड़ौंची दे० (पु०) तिपाई, ढाटन,
घण्टा दे० (पु०) घड़ी, वाद्य विशेष, कांस्यनिर्मित, वाद्ययन्त्र, घड़ियाल।—पथ (पु०) गाँव का प्रधानमार्ग।—शब्द (पु०) घण्टा का शब्द, समयसूचक ध्वनि। [कोसातकी।
घण्टालि तद्० (स्त्री०) छोटा घण्टा, वृक्ष विशेष,
घण्टिका तद्० (स्त्री०) तालु के ऊपर की छोटी जीभ, घाँटी, लोलक।
घण्टी दे० (स्त्री०) लुटिया, छोटा लोटा, छोटा घंटा।
घण्टू दे० (पु०) हाथी का घण्टा, प्रताप, उत्ताप, घण्टीमाला। [घटोत्कर्ण, मङ्गल का पुत्र।
घण्टेश्वर तद्० (पु०) देवता विशेष, शिव का गण,
घतिया तद्० (पु०) घातक, नृशंस, क्रूरकर्मा, हत्यारा।
घन तद्० (पु०) तरलता रहित, गाढ़, निविड़, अविरल, मेघ, बादल, ठोस, थोड़ा, दृढ़, मोटा, अधिक, सजातीय, तीन अङ्कों का पूरण करना, गणित विशेष, हथौड़ा कपूर।—काल (पु०) वर्षाऋतु।—गोलक (पु०) सोना और चाँदी का मिलान।—गरज (पु०) मेघ शब्द, मेघ गर्जन।—घन (पु०) सर्वदा, सदा।—घनाना (क्रि०) घन घन शब्द करना।—घेरा (पु०) घवरा, लहँगा।—घोर (पु०) मेघ की गम्भीर ध्वनि, घनघनाहट।—ज्वाला (स्त्री०) विद्युत, बिजुली।—ता (स्त्री०) गाढ़ता, निबिड़ता।—ध्वनि (पु०) मेघगर्जन, मेघ शब्द।—निहार (पु०) तुषारराशि, अधिक तुषार।—नाद (पु०) मेघ का शब्द, मेघनाद, रावण का पुत्र, इन्द्रजित्।—पदवी (स्त्री०) आकाश, अन्तरिक्ष, व्योम, नभ।—फल (पु०) अङ्कविद्या विशेष, गणित विशेष।—मूल (पु०) पूर्ण करने योग्य स्वभावीय तीन अङ्कों का मूल

अङ्ग।—रस (पु०) सघन, गोंद, अवलेह, सम्यक् पकाया रस।—श्याम (पु०) अधिक कृष्ण वर्ण, मेघ के सदृश काला, श्रीकृष्ण।—समय (पु०) वर्षा ऋतु।—सार (पु०) कपूर, पारद विशेष। [गर्दिश, चक्कर, फेरफार, जंजाल।
घनचक्कर तद्० (पु०) चञ्चलमना पुरुष, मूर्ख निठल्ला,
घना दे० (गु०) गहरा, सघन, बहुत देर, अधिक प्रचुर।
घनासन दे० (पु०) भैंसा, महिष।
घनाक्षरी तत्० (पु०) मनहर छन्द, कवित्त।
घनात्मक तत्० (वि०) जो लंबाई चौड़ाई मोटाई अथवा ऊँचाई व गहराई में बराबर हो।
घनाहु तत्० (पु०) [घन+आहु] औषध विशेष, नागरमोथा।
घनिष्ठ तत्० (वि०) गाढ़ा, घना, निकटस्थ।
घने तद्० (वि०) बहुत, अनेक।
घनेरा या घनेरे दे० (गु०) बहुल से, बहुत, अधिक, (बहु व०) घनेरे (स्त्री०) घनेरी।
घन्नई दे० (स्त्री०) घड़ों को लकड़ियों में बाँधकर बनाया गया बेड़ा, जिससे छोटी नदियाँ पार की जाती हैं।
घपची दे० (स्त्री०) लिपट, दो हाथ की चिपट।
घपला दे० (पु०) गड़बड़, गोलमाल।
घबराना, घबड़ाना दे० (क्रि०) व्याकुल होना, हड़बड़ाना, उद्विग्न होना। [उद्वेग, व्याकुलता।
घबराहट, घबड़ाहट दे० (स्त्री०) दुःख, क्लेश
घबरी दे० (स्त्री०) गुच्छा, स्तवक।
घमण्ड दे० (पु०) दर्प, अभिमान, अहङ्कार, गर्व।
घमण्डी दे० (गु०) अहङ्कारी, अभिमानी, दाम्भिक।
घमरौल दे० (स्त्री०) रौला, कोलाहल, भीड़भाड़।
घमस दे० (स्त्री०) निर्वात, वायुरहित, ऊमस।
घमसान, घमासान दे० (पु०) भयङ्कर, घोर, भयानक, लड़ाई, युद्ध।
घमाघम दे० (गु०) कचाकच, धमधम शब्द, आघात का शब्द, अधिक धूप, धूप ही धूप।
घमाना दे० (क्रि०) धूप में बैठना, धूप दिखाना, तापना, पसीने में डूब जाना। [पौधा, मदमाँद।
घमोई या घमोर दे० (स्त्री०) एक प्रकार का कँटीदार
घमौरी दे० (स्त्री०) घम्मौरी, अंधौरी।
घर तद्० (पु०) गृह, मकान, वासस्थान।—घालना (क्रि०) गृह में रख लेना, उपपत्नी करना, गृह नाश करना।—चलाना (वा०) गृह का प्रबन्ध करना, घर का खर्चवर्च चलाना।—जाना (वा०) घर पर किसी आपत्ति का पड़ना, उजड़ना, बिगड़ना।—डुबोना (वा०) घर में कलह उत्पन्न करना, अन्य का या अपना घर नष्ट करना।—फोरी दे० (स्त्री०) घर फोड़नेवाली, घर में फूट कराने वाली, इधर की उधर लगाने वाली, चुगल खोरिन।—डूबना (वा०) नाश होना, घर का नाश होना।—बैठना (वा०) निकम्मा बैठना, काम काज न करना, घर का टूटना।—बैठ जाना (वा०) निश्चिन्त होना, काम न रहने से घर बैठ जाना, घर का टूटना, विनष्ट होना।—होना (वा०) स्त्री पुरुष में आपस का प्रणय होना।
घरऊ दे० (गु०) घरेला, घरुवा, घर सम्बन्धी, घर का।
घरनई दे० (स्त्री०) चौघड़ा, बेड़ा, घेर, घन्नई।
घरना दे० (क्रि०) गढ़ना, बनाना, घर्षण करना, घिसना। [गृहिणी।
घरनी दे० (स्त्री०) स्त्री, भार्या, पत्नी, घरवाली,
घरबराव दे० (पु०) घर का असबाब, चीज, वस्तु।
घरबार दे० (पु०) कुटुम्ब, परिवार। [की एक अल्ल।
घरबारी दे० (गु०) गृहस्थी, कुटुम्बी, माथुर ब्राह्मणों
घररा दे० (पु०) खरखराहट, दुःख, पीड़ा।
घरराटा दे० (पु०) ध्वनिविशेष, नासिकाध्वनि।
घरवाला दे० (पु०) गृही, गृहस्थी, गृहस्वामी।
घराऊ दे० (वि०) घर का, आपस का।
घराती दे० (पु०) विवाह में दुलहिन के कुटुम्बी या कन्या की ओर के नेवतरिया। [वर्ग, खानदानी।
घराना दे० (पु०) कुटुम्ब, वंश, घर के लोग, परिवार
घरामी दे० (पु०) छवैया, घर छाने वाला।
घरिक दे० (अ०) एक घड़ी, घड़ी भर, थोड़ी देर।
घरिया दे० (स्त्री०) अघटी, मिट्टी की बनी छोटी कटोरी जिसमें रखकर सुनार सोना, चाँदी गलाते हैं।
घरी दे० (स्त्री०) तह, लुघट, तहलगई, एक नियत समय, घड़ी। [सम्बन्धी, घर का।
घरेला दे० (गु०) घर का पोसा, घर में उत्पन्न, घर
घरौंदा, घरौंधा दे० (पु०) खेल के लिये लड़कों का

घर्घर तत्० (पु०) शब्द विशेष, घूरर का शब्द, चक्की का शब्द।

घर्घरा दे० (स्त्री०) घागरा, एक नदी का नाम, सरयू।

घर्म तत्० (पु०) घाम, धूप, गरमी, श्रमवारि, स्वेद, पसीना।—द्युति (पु०) दिवाकर, सूर्य।—बिन्दु (पु०) स्वेदबिन्दु, स्वेदकणिका, पसीना।—क्त (गु०) पसीना से भींगा, स्वेद से लथपथ।

घर्षण तत्० (पु०) [घृष्+अनट्] मार्जन, मर्दन, घिसान, रगड़, घिस्सा।

घर्षित तत्० (गु०) [घृष्+क्त] घृष्ट, घिसा हुआ।

घलुआ, घलुवा दे० (पु०) सेंत, बिना दाम का खरीदार जो दूकानदार से लेता है, रूँग।

घवरि दे० (पु०) घौर, घौंद, गुच्छा, समूह (क्रि०) एकत्र होकर।

घसना दे० (क्रि०) घर्षण करना, रगड़ना।

घसिटना (क्रि०) किसी वस्तु का भूमि से रगड़ खाते हुए खिंचना। [वाला।

घसियारा दे० (पु०) घास काटने वाला, घास बेचने

घसीटना दे० (पु०) खदेरना, खींचना।

घसीला दे० (गु०) अधिक घास, तृणमय, हरियाली।

घस्मर तत्० (गु०) पेटू, खाऊ, पेटार्थी।

घस्र तत्० (पु०) दिन, दिवस, प्रहर।

घस्त्र तत्० (पु०) हिंसक, अपकार, नृशंस, क्रूर।

घहरात दे० (क्रि०) टूटते पड़ते हैं, टूटते ही, गरजते ही।

घहराना दे० (क्रि०) गर्जना, घर्घराना, चिग्घाड़ना।

घाई दे० (स्त्री०) घात, दाव, मौका, अगुली का मध्यस्थान, ओर, तरफ, अलग, बार, पानी का भँवर।

घाईन दे० (स्त्री०) पाला, वार, बेर, ओसरी।

घाउ, घाऊ } दे० (पु०) घाव, चोट, क्षत, व्रण, फोड़ा।

घाऊघप दे० (वि०) खाने वाला, हड़प जाने वाला।

घाँटी दे० (स्त्री०) टेंटुवा, नर्कंस, नरेटी, कंठ।

घाघ दे० (गु०) चतुर, अनुभवी, बुद्धिमान, पक्षी विशेष, एक चतुर अनुभवी पण्डित जिसकी कही खेती, ऋतु काल आदि के सम्बन्ध की कहावतें उत्तर भारत के देहातों में प्रचलित हैं और ठीक उतरती हैं।

घाँघरा दे० (पु०) लहँगा, एक नदी का नाम।

घाट दे० (पु०) नदी का तट, जहाँ नाव से उतरते या चढ़ते हैं, नग पहाड़ी मार्ग, पहाड़, ओर, नई दुलहिन का लहँगा, डौल रूप, मूरत, आकृति, बनावट, न्यून, कम, घटत, अपराध, दोष धोखा देना।

घाटा दे० (पु०) घटी, हानि, चढ़ाव, पहाड़ी, मार्ग, बड़ी घाटी।—रोह दे० (पु०) घटबंदी, घाट का रोकना, घाट पर चढ़ना।

घाटि दे० (स्त्री०) नीचकर्म, नीचता, घाटियाई, बम्बई में कुलियों की एक जाति।

घाटिया दे० (पु०) घाट पर रहनेवाला, गङ्गापुत्र, गङ्गा तट पर दान लेने वाले ब्राह्मण।

घाटी दे० (स्त्री०) पहाड़ का मार्ग, पर्वत पर चढ़ने का सङ्कीर्ण पथ। [भाग, मस्तक के नीचे का भाग।

घायड दे० (पु०) घाँटी, ग्रीवा, गला, गले का पिछला

घात तत्० (पु०) [हन्+घञ्] प्रहार, आघात, चोट पहुँचना, अङ्कपुरण, अवसर, दाव।—करना (वा०) प्रतिज्ञा भ्रष्ट होना, कहे काम को पूरा न करना, अवसर पा धोखा देना।—ताकना (वा०) समय देखना, अवसर देखना।

घातक तत्० (पु०) नृशंस, क्रूरकर्मा, हत्यारा, वधिक।

घाता दे० (पु०) अनुकूलता, लत्तेभाव में किसी वस्तु का मिलना, मोल या तौल से अधिक मिलना।

घातिनि या घातिनी तत्० (स्त्री०) हत्यारिन, मारने वाली स्त्री, क्रूर स्त्री।

घातिया या घाती तत्० (गु०) [हन्+इन्] वधकारी, प्राणनाशक, दाव लेने वाला, छली, कपटी, अपवादी। [क्रूर, अपकारी, निठुर, हत्यारा।

घातुक तत्० (गु०) [हन्+उकन्] हिंसक, मारक,

घात्य तत्० (गु०) [हन्+ण्यत्] हनन योग्य, मारने के योग्य। [वार डालने का परिमाण।

घान दे० (पु०) कोल्हू, चखली, चक्की आदि में एक

घानी दे० (स्त्री०) देखो घान, समूह।

घायरा दे० (गु०) व्याकुल, उद्विग्न, अस्थिरचित्त, घबड़ाया हुआ।

घाम दे० (पु०) धूप, गरमी, घर्म, स्वेद, पसीना।

घामड़ दे० (गु०) सीधा, भद्दू, भोलाभा

घाय दे० (पु०) फोड़ा, घाव, चत, व्रण, चोट।
घायल दे० (गु०) आहत, चत, चोट खाया हुआ, आघात प्राप्त, चोटिल, चोटैल, ज़ख्मी।
घाये दे० (क्रि०) दिये, दे दिये। [घलुआ, रूँक।
घाल दे० (स्त्री०) बुराई, बिगाड़, हानि, अपकार,
घालक दे० (पु०) नाशक, अपकारक, घातक, वधिक।
घालन दे० (पु०) हनन, बधन, मारण।
घालना दे० (क्रि०) डालना, फेंकना, बिगाड़ना, उजाड़ना, रखना, रख लेना, मारना, पटकना, तोप दागना, तोप का गोला छोड़ना।
घालमेल दे० (गु०) मिश्रण, मिलावट, पचमेल, खिचड़ी, गड्डबड्ड, मेलजोल।
घाला दे० (क्रि०) नाश किया, मिलाया, रखा, डाला, गड़बड़ किया, मारा, धोखा दिया, धोखे से मारडाला। [नष्टकर, मार कर।
घालि दे० (क्रि०) डालकर, रखकर, फेंककर
घालित दे० (गु०) मारा हुआ, नष्ट किया हुआ, उजाड़ा हुआ।
घाली दे० (क्रि०) डाल दी, फेंक दी, ये शब्द रामायण में प्रयुक्त हुए हैं, बुन्देलखण्ड की भाषा में इनका विशेषतः प्रयोग होता है।
घाव दे० (पु०) चोट, आघात, छत, चत।
घास दे० (पु०) तृण, खर, तृम, पशुओं के खाने का तृण विशेष। [खींचकर पेट पालने वाला।
घासी, घासू दे० (गु०) घास वाला, घसियारा, घास
घिग्घी दे० (स्त्री०) हिचकी, डर के मारे मुँह से स्पष्ट शब्द का न निकलना।—बँध जाना दे० (क्रि०) अस्पुट बोलना, भय से शब्द न निकलना।
घिघियाना दे० (क्रि०) स्वर भङ्ग होना, लड़खड़ाना, आक्रन्दन करना, चिल्लाना, खुशामद करना, अनुनय विनय करना। [भाड़, भीड़ भड़क्का।
घिचपिच दे० (अ०) घना सघन, पास पास, भीड़
घिन तद्० (स्त्री०) घृणा, घिनान, अरुचि, ग्लानि, अपघृणा, बीभत्स। [अरुचि होना।
घिनाना तद्० (क्रि०) घृणा करना, नफरत करना
घिनौना दे० (गु०) घृणाकारी, घोरोत्पक, घृणाजनक।
घिनौरी (स्त्री०) श्वाक्रिम नाम का बरसाती एक कीट विशेष।

घिया दे० (स्त्री०) घिया तुरई नेनुआँ, एक तरकारी का नाम।
घिरत दे० (पु०) घी, घृत, आज्य।
घिरना दे० (क्रि०) घिर जाना घेरे में आना, रखना, फँस जाना, परवश होना, मेघ का उमड़ना।
घिरनी दे० (स्त्री०) गरारी, कुएँ से जल निकालने की चरखी।—खाना घूम जाना, चक्कर खाना।
घिराना दे० (क्रि०) घेरा करवाना, बेड़ा बनाना, हदबन्दी करना।
घिराव (पु०) घेरा।
घिव (पु०) घी।
घिसघिस दे० (स्त्री०) अनावश्यक विलम्ब, गड़बड़ी।
घिसना दे० (क्रि०) रगड़ना, घिसाना, मर्दन, मलना।
घिसाव दे० (पु०) रगड़, घर्षण, घिसाव।
घिसावट दे० (स्त्री०) रगड़, रगड़ाहट, घिसान।
घिसियाना दे० (क्रि०) घसीटना, घर्षण करना।
घिस्सा दे० (पु०) रगड़ा, धक्का, बालकों का एक प्रकार का खेल,-बहलाना।
घी तद्० (पु०) घृत, घीव, आज्य, सर्पि।
घीकुआर या घीकुवार तद्० (स्त्री०) घृतकुमारी, घीक्वार, औषध विशेष, एक पौधे का नाम।
घुग्घु दे० (पु०) पक्षी विशेष पण्डुक, पेचापेचक।
घुघुआ (पु०) उल्लू, स्वय चित्त लेट कर बालकों को घुटनों पर रख खिलाने की एक क्रिया।
घुटकना (क्रि०) पी जाना।
घुटकी (स्त्री०) घोंटने वाली नली।
घुटना दे० (पु०) ठेहना, ठेहुना गोड़, जानु। (क्रि०) साँस रुकना। [चलते हैं।
घुटनों चलना दे० (पु०) ठेहुने से चलना जैसे बालक
घुटन्ना दे० (पु०) घुटनों तक का पायजामा।
घुटाई दे० (स्त्री०) चिकनाहट, सफाई, गढ़ाई, चिकनता। (क्रि०) रगड़ाई। [करना।
घुटाना दे० (क्रि०) मुड़ाना, क्षौर कराना, चिकना
घुट्टी या घुट्टी (स्त्री०) बच्चों को पाचनार्थ पिलाने योग्य दवाई विशेष।
घुड़ दे० (पु०) घोड़ा घोटक, अश्व, हय।—चढ़ा (गु०) घोड़े पर चढ़ने वाला, सवार, चाबुक सवार।

—दौड़ (स्त्री०) घोड़ों को दौड़ाना, बाजी रख कर घोड़ा दौड़ाना।—बहल (स्त्री०) घोड़ों का रथ, चार पहिये का रथ, घोड़ा गाड़ी।—मुंहा (गु०) घोड़े के समान मुँहवाला, किन्नर विशेष। —साल (पु०) तबेला, अस्तबल, घोड़ों के रहने का स्थान।—सना (गु०) घुँगर करना, पेंच देना।

घुड़कना, घुड़ुकना दे० (क्रि०) दबाना, धमकाना, धमकी देना, रोष जमाना। [तिरस्कार।

घुड़की दे० (स्त्री०) धमकी, समझी, झिड़की

घुण तत० (पु०) कीड़ा, कृमि विशेष।—क्षर (पु०) [घुण+क्षर] घुन के बनाये अक्षर, घुन के चलने से जो अक्षर बन जाते हैं, अकस्मात् सिद्ध, बिना प्रयत्न के प्राप्त, इङ्गित, बिना परिश्रम के प्राप्त।

घुण्डी दे० (स्त्री०) बटन, बुताम या बोताम, बन्द।

घुन तद्० (पु०) काष्टकीट, काष्टकृमि, घुण, वे जन्तु जो काठ वा अनाज का भीतर से खाकर पोला कर देते हैं। [खोखला, पोला।

घुना तत० (गु०) घुना हुआ, घुन का खाया,

घुनाक्षर तत० (पु०) घुन के काटे हुए चिन्ह, घुनों की काट कर बनाई हुई रेखाएँ।

घुनघुना दे० (पु०) एक खिलौना जो हाथ में लेकर हिलाने से झनझन करता है।

घुनिया दे० (गु०) घुना, कपटी।

घुप दे० (पु०) अन्धकार, अँधियारा।

घुमघुमा दे० (पु०) घुमाव, टालना, फिर फिर वहीं।

घुमघुमाना दे० (क्रि०) घुमाना, फिराना, बात फेरना, बात उलटना।

घुमड़ना दे० (स्त्री०) मेघों का घिर आना, दुर्दिन होना।

घुमरी, घुमड़ी दे० (स्त्री०) तिर्मिरी, चक्कर, घुर्नी, एक रोग, मूर्च्छा, परिक्रमा।

घुमटा दे० (पु०) चक्कर, घुमरी।

घुम्मरहिं दे० (क्रि०) घुमरी खाते हैं, चक्कर खाते हैं।

घुमाना दे० (क्रि०) फिराना, बहकाना, धोखा देते रहना, टहलाना।

घुरकना दे० (क्रि०) घुड़कना, धमकाना, दबाना।

घुरकी दे० (स्त्री०) धमकी, झिड़की, घुड़की।

घुरघुरा दे० (पु०) कीट विशेष, एक प्रकार का रोग गलगण्ड का भेद।

घुरना दे० (क्रि०) खर्राटा मारना, नाक का खरखर शब्द।

घुरनी दे० (स्त्री०) घुमरी, तिर्मिरी, चक्कर। [देखो।)

घुरुका तद्० (पु०) भीमसेन का एक पुत्र, (घटोत्कच

घुलना दे० (क्रि०) गलना, पकना, पिघलना, सड़ना।

घुलमिल दे० (गु०) मिल गया, घुल गया, पक गया।

घुलाऊ दे० (गु०) पिघलाऊ, गलाऊ, सड़ने योग्य।

घुलाना दे० (क्रि०) पिघलाना, गलाना, सड़ाना, नरम करना, पकाना।

घुलावट दे० (स्त्री०) पिघलावट।

घुवा दे० (पु०) सेमर की रुई।

घुसना दे० (क्रि०) पैठना, प्रविष्ट होना, भीतर जाना।

घुसपैठ दे० (पु०) आना जाना, पहुँच, पैसार, प्रवेश।

घुसाना दे० (क्रि०) पैठाना, घुसेड़ना, डालना, गाड़ना, लगाना। [खोंसना।

घुसेड़ना दे० (क्रि०) ठोंसना, पैठाना, घुमाना,

घुस्की दे० (स्त्री०) कुलटा, दुराचारिणी, व्यभिचारिणी स्त्री।

घुसृण तत्० (पु०) गन्ध द्रव्य विशेष, कुङ्कुम।

घुँइया (स्त्री०) अरुई, अरवी। [आदि।

घुँघनी (स्त्री०) घी या तेल में तला हुआ, चना मटर

घुँघरारे (वि०) छल्लेदार, घुँगरियाँ, कुञ्चित केशों के लिये यह विशेषण प्रयुक्त होता है।

घूँघची दे० (स्त्री०) लाल रत्ती, गुञ्जा।

घूँघट तद्० (पु०) ओढ़नी का वह भाग जिससे स्त्रियों का मुँह ढका रहता है, घोमटा।

घूँघर दे० (पु०) बालों के छल्ले या मरोड़।

घूँघरू दे० (पु०) पैर का एक गहना जो झुनझुन शब्द करने के लिये नाचने के समय पहना जाता है।

घूँट दे० (पु०) एक बार में पीने योग्य पानी आदि, यथा—एक घूँट पीलो मैं खून का घूँट पीकर रह गया। [करना।

घूँटना दे० (क्रि०) निगलना, लील जाना, पेट में

घूँटी दे० (स्त्री०) छोटा घूँट, बालकों को औषध देने की मात्रा, बालकों की औषधि।

घूँस दे० (पु०) मूँसा, चूहा, मूषिक, रिशवत।

घूँसा दे० (पु०) मुक्का, हूक, मुष्टिका, मूका।

घूघू दे० (पु०) घुग्घू, पेचापेचक।

घून दे० (गु०) द्वेषी, विरोध, क्रोध, अनबनाव, खटपट, झगड़ा।
घूना दे० (गु०) कपटी, क्रोधी, छली, घुन्ना।
घूम दे० (पु०) घुमाव, घेर, फेर।
घूम दे० (या०) घुमाव, चक्कर। [फिरना।
घूमना दे० (क्रि०) टहलना, फिरना, लुढ़कना, उद्योग
घूर्मि (क्रि०) घूम कर, चक्कर खाकर।—त घूमा हुआ।
घूर दे० (पु०) ताक, देख, निहार, कूड़ा, कतवार, कूड़ा डालने की जगह, घूरा।
घूरची दे० (स्त्री०) उलझेड़ा, फँसाव, उलझन।
घूरना दे० (क्रि०) ताकना, देखना, क्रोध से आँखें दिखाना।
घूरिया दे० (पु०) घूरा, कूड़ा।
घूर्णन तत्० (पु०) [घूर्ण+अनट्] भ्रमण, चाक के समान घूमना, भ्रम, भ्रान्ति, घेरा, सिर हिलाना।
घूर्णित तत्० (गु०) [घूर्ण+क्त] भ्रमित, घुमाया गया।
घूस दे० (पु०) बड़ा मूसा, घूस, रिशवत, उत्कोच।
घूसत दे० (पु०) उल्लू का बच्चा, घूंसना।
घृणा तत्० (स्त्री०) जुगुप्सा, अत्यन्त अवहेला, अवज्ञा, घिन, ग्लानि।—ई (गु०) गर्हित, कुत्सित, घृणा के योग्य।—स्पद (गु०) घृणाकर, घिनौना, कुत्सित, निन्दित। [अवज्ञात, निन्दित, कुत्सित।
घृणित तत्० (गु०) [घृण+क्त] अश्रद्धान्वित,
घृण्य तद्० (गु०) [घृण्+य] गर्ह्य, गर्हणीय, तिरस्कार के योग्य।
घृत तत्० (पु०) [घृ+क्त] घीव, घी।—कुमारी (स्त्री०) घीकुवारी।—क्त (गु०) घृत सिञ्चित, घृत में डुबोया।
घृताची तत्० (स्त्री०) स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम।
घृष्ट तत्० (गु०) [घृष्+क्त] घर्षित, पिसा हुआ।
घृष्टि तत्० (पु०) [घृष्+ति] घिसना, मारना, शूकर, सुअर (स्त्री०) विष्णुक्रान्ता नाम की औषधि।
घेंघा दे० (पु०) घेघा, फूली गर्दन वाला।
घेंट दे० (पु०) गला, गर्दन।
घेंटा दे० (पु०) शूकर का बच्चा।
घेगा, घेघा दे० (पु०) गलगण्ड रोग, घेघुआ।
घेतल, घेतला दे० (पु०) जूती विशेष।
घेपना दे० (क्रि०) मिलाना, मिश्रण करना।
घेर दे० (पु०) मण्डल, परिधि, घेरा।—घार (पु०) विस्तार, खुशामद, चौतरफ़ा घेरना।
घेरना दे० (क्रि०) चारों ओर से छेकना।
घेरनी दे० (स्त्री०) रहँट का हत्था। [मण, मुहासरा।
घेरा दे० (पु०) परिधि, घुमाव, वृत, हाता, पेटा, आक्र-
घेलवा दे० (पु०) घलुआ, रूँग।
घेवर दे० (पु०) मिठाई विशेष, गुपचुप।
घोंघा दे० (पु०) शम्बूक, खोखला, सीप।
घोंटना दे० (क्रि०) रगड़ना, मलना। (पु०) सोंटा व लोढ़ा, भंग घुटना। [रहने का स्थान।
घोंसला दे० (पु०) खाता, वासा, नीड, पक्षियों के
घोंसुआ दे० (पु०) देखो घोंसला।
घोखना (क्रि०) कण्ठाग्र करने को बारबार पढ़ना।
घोघी दे० (स्त्री०) जेब, थैली, झोली, घोंघी।
घोटक तत्० (पु०) अश्व, घोड़ा, तुरङ्ग, गाजी।
घोटना दे० (क्रि०) परिश्रम करना, अभ्यास करना, डाँटना, मूँड़ना, मरोड़ना, पीसना।
घोटनी दे० (स्त्री०) लुढ़िया, लोढ़िया, लोढ़ा, घोटना।
घोटा दे० (पु०) घोटने की लकड़ी, पीसने का सोंटा, कपड़े पर चमक पैदा करने की वस्तु।
घोटाला दे० (पु०) घपला, गड़बड़।
घोट्टू दे० (गु०) नम्र, मीठा मधुर।
घोट्टू दे० (पु०) गुठना, गिठुआ।
घोड़ा दे० (पु०) अश्व, घोटक, तुरङ्ग।—गाड़ी दे० (स्त्री०) वह गाड़ी जो घोड़े से खींची जाय। (स्त्री०) घोड़ी, घुड़िया।
घोपा दे० (पु०) खोदने की एक चीज़, गुप्त स्थान।
घोर तत्० (गु०) [घुर+अल्] भयङ्कर, भयानक, विकट, अन्धकार।—तर (गु०) अत्यन्त भयानक, डरावना।—रूपी (गु०) भयानक, भीषण, भयङ्कर।
घोल दे० (पु०) मट्ठा, छाछ, मही, तक्र। [कृत्रिमता।
घोलघुमाव दे० (पु०) टालमटोल, बनावट,
घोलना दे० (क्रि०) मिलाना, घोरना।
घोला दे० (गु०) गंदला, धुमिला, गाढ़ा, घोला हुआ।
घोष तत्० (पु०) अहीरों की बस्ती, अहीरों का गाँव, तट, ईशानकोण का एक देश, शब्द, ताल का एक भेद, बँगाली कायस्थों की एक अल्ल।

घोषणा तत्० (स्त्री०) [घुष्+णिच्+अनट्+आ] उच्चैः शब्द प्रकाश, ढिंढोरा, विज्ञापन, मुनादी, डुग्गी।—पत्र तत्० (पु०) वह पत्र जिसमें राजा की ओर से प्रजामात्र की विज्ञप्ति के लिये कोई आज्ञा लिखी हो।
घोषणीय तत्० (पु०) [घुष्+अनीय] प्रचारित करने योग्य, प्रकाशित करने योग्य।
घोसी तत्० (पु०) मुसलमान अहीर।
घौद, घौर दे० (पु०) गुच्छा, स्तवक।
घौदा (पु०) चुड़ेल।
घ्राण तत्० (स्त्री०) नासिका, नाक।—तर्पण (पु०) सुगन्धि सौरभ।
घ्राणेन्द्रिय तत्० (पु०) [घ्राण+इन्द्रिय] नासिका, नाक, सुगन्धि लेने वाली इन्द्री।
घ्रात तत्० (पु०) [घ्रा+क्त] गृहीत गन्ध, पुष्प आदि का गन्ध लेना।
घ्रायक तत्० (पु०) [घ्रा+ण्वुल्] गन्ध ग्राहक, गन्ध ग्रहण करने वाला, सूँघनेवाला।

ङ

ङ कवर्ग का पञ्चम वर्ण, जिह्वामूल से इसका उच्चारण होता है, इस कारण इसे जिह्वामूलीय कहते हैं।
ङ तत्० (पु०) विषयस्पृहा, विषय, शिव, भैरव।

च

च व्यञ्जनों में से चवर्ग का पहला वर्ण है, तालु से इसका उच्चारण होता है।
च तत्० (अ०) समाहार अन्योन्यार्थ, समुच्चय, पक्षान्तर, पादपूरण, अवधारण, हेतु, और, पुन, भी, (पु०) कछुआ, चन्द्रमा, चोर, दुर्जन।
चइ (अव्य) हाथी हाकने का एक इशारा।
चइत (पु०) चैत्र मास।
चउक (पु०) चौका, वेदी।—ी (स्त्री०) चौकी सिपाहियों का नाका।
चउर तत्० (पु०) चामर, मोरछल, राजचिन्ह विशेष चौर, चवँर।
चउतरा (पु०) चबूतरा।
चउरा (पु०) ग्रामदेवतादि का चबूतरा, चावल का एक प्रकार का चबैना।
चक तद्० (पु०) चकवा पक्षी, अपने अधिकार की भूमि, क्रयविक्रयस्थान, खेतों की सीमा का भेद, —नामा (पु०) पट्टा, अधिकारपत्र।
चकई तद्० (स्त्री०) खिलौना, गोल काठ या टीन की बनी चकई में लम्बी डोरी बाँध कर ऐसे फेंकते हैं कि वह चकई अपने आप डोर लपेट लेती है, पक्षीविशेष, चकवा की मादा।
चकचका तद्० (पु०) गहरा, उज्वल, स्वच्छ, निर्मल, प्रकाश मय, दीप्तिमान।
चकचौंध (पु०) चकचौंध, हक्का बक्का।
चकचकी दे० (स्त्री०) करताल नाम का बाजा।
चकछुंदरी दे० (स्त्री०) छछुन्दरि।
चकडवा दे० (पु०) चकव्यूह।
चकताना दे० (क्रि०) डुबचौरा, बैठना।
चकती दे० (स्त्री०) गेंड़े की खाल, फाँक, पैवन्द।
चकत्ता दे० (स्त्री०) चिन्ह, शरीर पर के गोल दाग, दाँत से काटने का दाग।
चकन (क्रि०) चकित होना, चकपकाना, विस्मित होना।
चकनाचूर दे० (पु०) टूक टूक होना, चूर्ण होना, टूटना। (वि०) अत्यन्त श्रान्त।
चकपक तत्० (वि०) चकित, स्तम्भित।
चकपकाना (क्रि०) विस्मित होकर चारों ओर ताकना।
चकमा दे० (पु०) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, मोज़ा, धोखा, जाति विशेष।
चकरबा दे० (पु०) हल्ला गुल्ला, बखेड़ा, फेर, चक्कर। —मचाना (वा०) धूमधाम करना।
चकरा दे० (पु०) दाल का बड़ा, पानी का भँवर। (वि०) चौड़ा।
चकराना (क्रि०) चक्कर खाना, भ्रान्त होना, चकपकाना, घबड़ाना।
चकरानी दे० (स्त्री०) टहलुई, टहलनी, नौकरानी, दासी, मजूरिन।

चकरी तद्० (स्त्री०) चक्की, चक्की का पाट, लड़कों का खिलौना विशेष।

चकर्जाई दे० (स्त्री०) चौड़ाई, चकलाई।

चकला दे० (पु०) पतुरियों का महल, वेश्यालय, पाट और सूत से बना कपड़ा, देश का प्रान्त, प्रदेश, सूबा, काठ या पत्थर का चका जिस पर रोटी पूरी बेली जाती है। (वि०) चौड़ा।—दार (पु०) शासक, कर वसूल करनेवाला अधिकारी।

चकलाई दे० (स्त्री०) चौड़ाई, फैलाव, विस्तार।

चकलाना दे० (क्रि०) चौड़ा करना, चौड़ाना, फैलाना।

चकवा तद्० (पु०) चक्रवाक, हंस जाति का एक पक्षी।

चकवी तद्० (स्त्री०) चकवा की मादा।

चका तद्० (पु०) चक्र, पहिया, कुम्हार का चाक, रोटी पूरी बेलने का चकला।

चकाचक दे० (स्त्री०) पूर्णता, पूर्ण, तृप्तिकारक, जैसे—"चकाचक बनी है, चकाचक है।"

चकाचौंध दे० (स्त्री०) उजास, जगमगर, उजाला, तिलमिलाहट, तिलमिली।

चकाबू तद्० (पु०) चक्रव्यूह युद्ध के समय सैनिकों को रणक्षेत्र में विशेष ढङ्ग से खड़ा करना।

चकार तत्० (पु०) वर्णमाला का छठवाँ व्यञ्जन।

चकावी दे० (स्त्री०) मैंसिया दाद।

चकित तत्० (पु०) चमत्कृत, विस्मित, आश्चर्यान्वित, व्याकुल, हैरान।

चकेरा दे० (पु०) बड़ी आँख वाला, बड़आँखा।

चकोत्रा, चकोतरा दे० (पु०) नीबू विशेष, बड़ा नीबू।

चकोर तत्० (पु०) पक्षी विशेष तीतर का एक भेद, यह चन्द्रमा को देख बहुत प्रसन्न होता है। यह आग खाता है। लोग कहते हैं की यह पूर्णिमा के दिन यदि किसी तिजारी ज्वर के रोगी की ओर प्रसन्नता से ताक दे, तो उसका ज्वर छूट जाता है और पुनः ज्वर नहीं आता।

चकौड़ दे० (पु०) चकौदा, एक प्रकार का पौधा, जिससे दाद छूट जाती है, चकाचौंध।

चक्क तत्० (पु०) पहिया, चक्का, चाक चक्कर, चक्र। (पद्य में) चकवा, कुम्हार का चाक, दिशा।

चक्कर तद्० (पु०) चाक, गोलाकार घेरा, मण्डलाकार रास्ता, चक्र पर घूमना, जटिलता, घुमरी, जंजाल, अस्त्र विशेष।

चक्कस दे० (पु०) चिड़ियों का अड्डा।

चक्का दे० (पु०) चक्र, गाड़ी का पहिया, बड़ा, चिपटा टुकड़ा, थक्का, अँथरी, ईट पत्थर या कंकड़ का ढेर जो नाप के लिये क्रम से लगाया गया हो।

चक्कान दे० (पु०) गाढ़ा, थका, श्रमित, थकित।

चक्की दे० (स्त्री०) पाट, जाँता, आटा पीसने के लिये पत्थर का यन्त्र।

चक्कू दे० (स्त्री०) छुरी, चाकू।

चक्कवै दे० (पु०) चक्रवर्ती राजा, उदयास्त पर्यन्त राज्य शासन करने वाला। इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया गया है।

चक्र तत्० (पु०) रथाङ्ग, रथ का पहिया, कुम्हार का चाक, अस्त्र विशेष, सुदर्शनचक्र, जल का घुमाव, तगर का फूल, मण्डल, व्यूहरचना विशेष, हस्तरेखा विशेष, राष्ट्र, देश, योगानुसार शरीरस्थ ६ पद्म रेखाओं से बने चौखूटे या गोल खाने। सामुद्रिक के अनुसार हाथ पैर में महीन रेखाओं के घूमे हुए शुभाशुभ फलप्रद चिन्ह, भ्रमण, दिशा, वर्णवृत्त विशेष, धोखा जाल।—धर (पु०) विष्णु, राजेश्वर।—पाणि (पु०) विष्णुनारायण, श्रीकृष्ण।—वत् (अ०) चक्राकार अस्त्र, चक्र के समान।—वर्ती (पु०) सार्वभौम, समुद्र पर्यन्त प्रजा पालन करने वाला, सम्राट्, बथुआ का साग। —वाक (पु०) पक्षी विशेष, चकवा।—वात तद्० (पु०) हवा का चक्कर, बवण्डर।—वाल (पु०) लोकालोक पर्वत, मण्डलाकार दिक् समूह। —वृद्धि (स्त्री०) वृद्धि पर वृद्धि, नाद पर नाद, सूद दर सूद।—व्यूह (पु०) युद्ध के लिये मण्डलाकार सेना को सजाना, चक्रव्यूह के युद्ध ही में सोलह वर्ष के वीरश्रेष्ठ अर्जुनपुत्र अभिमन्यु को नराधम दुर्योधन के पक्ष के राजाओं ने मिल कर मारा था।—लक्षणा (स्त्री०) गुरुच, अमृतलता।

चक्रा तत्० (स्त्री०) समूह, गिरोह, टोली।—कार (पु०) गोलाकार, घेरा।—ङ्ग (पु०) हंस।

चक्राङ्कित तत्० (वि०) जिसने अपने बाहुमूल पर चक्र का चिन्ह लगवाया हो। श्रीवैष्णव, श्रीरामा

मुमाचार्य तथा श्रीमध्वाचार्य सम्प्रदाय के चक्र अङ्कित कराने का नियम है।

चक्रित तद्० (गु०) चकित, विस्मित।

चक्री तद्० (पु०) विष्णु, चक्रवाक पक्षी, कुम्भकार, कुम्हार, सर्प, तेली, ज़िलेदार, मन्त्री। (गु०) चक्रविशिष्ट।

चक्रोला तद्० (गु०) गोलाकार, चक्राकार, गोल, वर्तुल।

चक्षु तद्० (पु०) आँख, नयन, नेत्र, लोचन।
  (१) अजमीढ़ वंशी एक भूपति,
  (२) एक नदी का नाम जिसे आक्सस कहते हैं।

चक्षुष्य (वि०) आँखों का हितकारी, मनोहर।

चख तद्० (पु०) चक्षु, आँख, नेत्र।

चखन तद्० (पु०) आँख, चख चक्षु, यथा—"चपल चखन वाला चाँदनी में खड़ा था" (ख़ानख़ाना)।

चखना दे० (क्रि०) स्वाद लेना, चीखना।

चखाचखी दे० (स्त्री०) बैर, विरोध, झगड़ा, टंटा, लागडाँट। [लगना चाखना।

चखाना दे० (क्रि०) खिलाना, भोजन कराना, चखना

चगलाना दे० (क्रि०) चबलाना, दाँतों से पीस कर खाना।

चङ्क्रमण तद्० (पु०) [चं+क्रम्+अनट्] पुन पुन भ्रमण, बारबार भ्रमण, चक्कर लगाना।

चङ्ग तद्० (वि०) शोभन, सुन्दर, दक्ष, पटु, रोगहीन, सुस्थ। दे० (पु०) गुड्डी, पतङ्ग, दुरभिलाषा से मत्त होना यथा—"वह चङ्ग पर चढ़ा है" 'जब वह चङ्ग पर चढ़ेगा, तो आप ही उसकी दुर्गति हो जायगी," "उसे तो मैंने चङ्ग पर चढ़ा लिया।"

चङ्गा दे० (वि०) भला, सुखी निरोग, स्वस्थ।

चङ्गेर दे० (पु०) उत्तम श्रेष्ठ, सरस चोखा बढ़िया, मनोहर। [डलिया, फूल रखने का पात्र।

चङ्गेर, दे० (पु०) बाँस आदि की बनी छोटी

चङ्गेरा दे० (पु०) खाँचा, टोकरा दौरी।

चङ्गेरी दे० (स्त्री०) टोकरी डलिया, तृण आदि का बना पात्र विशेष।

चचा दे० (पु०) पिता का भाई काका, ताऊ, पितृव्य। (स्त्री०) चाची, चाचा की स्त्री, काकी।

चचीर दे० (पु०) रेखा, लकीर, लकीर।

चचुआई दे० (स्त्री०) चचेड़ा, तरकारी विशेष।

चचेरा दे० (पु०) चाचा का, चाचा सम्बन्धी, चाचे सम्बन्धी से सम्बन्ध रखने वाला।

चचोरना दे० (क्रि०) चूसना निचोड़ना, निकालना।

चञ्चनाना दे० (क्रि०) चिल्लाना, चनचन करना, बकना।

चञ्चनाहट दे० (पु०) टीस, झुँझुनाहट, चसक।

चञ्चरीक तद्० (पु०) [चञ्चरी+क] भ्रमर, मधुकर, अलि।

चञ्चल तद्० (वि०) चलित, उतावला चपल, घबराया हुआ नटखट। (पु०) हवा, कामुक, रसिक, लम्पट। —ता (स्त्री०) अस्थिरता, चञ्चलत्व, नटखटी।

चञ्चला तद्० (स्त्री०) विद्युत, चपला बिजुरी, लक्ष्मी, पिपली, चटपटी। [चालता चुलबुलाहट।

चञ्चलाई तद्० (स्त्री०) चपलता, ढिठाई, तड़फड़ाना,

चञ्चलाना तद्० (क्रि०) चञ्चल होना, अस्थिर होना।

चञ्चलाहट तद्० (स्त्री०) अस्थिरता, चपलता।

चञ्चा तद्० (स्त्री०) सरकट की चटाई।—पुरुष (पु०) तृण का मनुष्य जो पशु पक्षी आदि को डरवाने के लिये खेतों में गाड़ा जाता है।

चञ्चु तद्० (स्त्री०) पक्षी का चोंठ, पक्षी का ठोंठ, ठोर, चोंच (पु०) चोंच, रेंड का वृक्ष, हिरन।

चट दे० (अ०) तुरन्त, शीघ्र, त्वरित, झटिति झटपट।

चटक तद्० (स्त्री०) पक्षी विशेष, गौरैया पक्षी, चमक, धड़ाका, कड़क कड़ाका, फुरती, जल्दी भड़क, शोभा, सौन्दर्य कल्पित शोभा।—मटक (स्त्री०) चमार, श्रृङ्गार, नाज़नख़रा ठमक चमकदमक।

चटक तद्० (पु०) संस्कृत भाषा के एक कवि का नाम। कल्हण ने राजतरङ्गिणी में लिखा है कि "मनोहर, शङ्खदत्त और सन्धिमान्, जयापीड़ की सभा के कवि थे। इससे चटक का समय भी जयापीड़ का राज्यकाल अर्थात् सातवीं सदी का अन्तिम भाग ही निश्चित माना जा सकता है। यह काश्मीर निवासी थे। इनके बनाये ग्रन्थ अभी तक नहीं पाये गये हैं। अतएव यह नहीं कहा जा सकता कि इनके बनाये ग्रन्थ हैं कि नहीं। कुछ अनुसन्धित्सु (खोजी) इनका नामान्तर चालक बतलाते हैं।

चटकदार दे० (वि०) चटकीला, भड़कीला।

चटकना दे० (क्रि०) कड़कड़ाना, तड़कना, टूटने या फूटने का शब्द, दरार पड़ना, उँगली फोड़ना, अनबन होना, खटकना। (पु०) थप्पड़, थप्प, थप्पा, धौल, तमाचा।
चटकनी (स्त्री०) किवाड़ बन्द करने की कुंडी विशेष।
चटकमटक (स्त्री०) शृङ्गार, चमक, सजधज।
चटकरना दे० (क्रि०) तुरत करना, झट निगल जाना।
चटका दे० (पु०) टोटा, घटी, पपड़ा, दाग, भौंरा, गरगौआ पक्षी, गौरैया। [चिढ़ाना, कुपित करना।
चटकाना दे० (क्रि०) तोड़ना, उचाटना, छोड़ना,
चटकारना दे० (क्रि०) पशुओं का उत्तेजित करने का शब्द विशेष। [चमकदार।
चटकीला दे० (गु०) चमकीला, सुन्दर, मनोहर,
चटखना दे० (क्रि०) बीच से टूटना, चटकना।
चटचटिया दे० (गु०) हड़बड़िया, चञ्चल, उतावला।
चटना दे० (पु०) चटोरा, पेटू।
चटनी दे० (स्त्री०) भोजन का भेद, चाटने की वस्तु, छोटे शिशु के खेलने की वस्तु।
चटपट दे० (अ०) झटपट, शीघ्र, तुरन्त।
चटपटा दे० (स्त्री०) फुर्तीला, तेज़, शीघ्र काम करना भोजन का एक भेद विशेष। [तड़फड़ाना,
चटपटाना दे० (क्रि०) व्याकुल होना, फड़फड़ाना,
चटपटाहट दे० (स्त्री०) व्याकुलता, शीघ्रता।
चटपटिया दे० (गु०) फुर्तीला, चतुर।
चटपटी दे० (स्त्री०) उतावली, हड़बड़ी, घबड़ाहट, फुर्तीली, चञ्चल, चपल।
चटवाना दे० (क्रि०) चटाना, साम धराना।
चटशाल दे० (स्त्री०) छोटे बालकों की पाठशाला।
चटसार दे० (स्त्री०) पाठशाला।
चटं तद्० (वि०) चतुर, चालाक, सयाना, धूर्त, छटा हुआ। [तिनकों का बना बिछौना।
चटाई दे० (स्त्री०) आस्तरण विशेष, पाटी, साथरी,
चटाक दे० (स्त्री०) धड़ाका, खड़ाका, घोरनाद।
चटाका दे० (पु०) धड़ाका, कड़का, तड़ाका।
चटाचट दे० (पु०) शीघ्र शीघ्र, लगातार, चटाचट शब्द, प्रतिध्वनि। [विरोध, वैर।
चटान दे० (स्त्री०) शिला, पत्थर, पाषाण, क्रोध,
चटापटी दे० (स्त्री०) चटपटी, शीघ्रता, फुरती, किसी फैलाने वाले रोग के कारण बहुत से लोगों की शीघ्र शीघ्र मृत्यु का होना। [चाटने वाला।
चटिया दे० (पु०) विद्यार्थी, शिष्य, छात्र, चेला। (गु०)
चटी दे० (स्त्री०) ध्यान, स्थिरता। यथा —निघटी रुचि मीचु घटी हु घटी जगजीव जतीन कि छूटी चटी।
—रामचन्द्रिका।
चटु तत्० (पु०) खुशामद, उदर, यतियों का एक आसन, सुन्दर, मनोहर। [तत्० (स्त्री०) बिजली।
चटुल तत्० (गु०) चपल, सुन्दर, मनोहर।—।
चटोर या चटोरा दे० (पु०) स्वादलोलुप, लोभी।—
पन दे० (पु०) अच्छी अच्छी चीज़ें खाने का व्यसन, स्वादलोलुपता।
चटोरी दे० (स्त्री०) चाटने वाली, स्वादी स्त्री।
चट्ट (वि०) तुरन्त, समाप्त, लुप्त। (मुहा०)—करना समाप्त करना। [चटाई, खुला मैदान, दाग।
चट्टा दे० (पु०) विद्यार्थी, पाठशाला का लड़का, चेला,
चट्टान दे० (पु०) पत्थर का छोटा टुकड़ा, चटान, शिलाखण्ड।
चट्टावट्टा दे०(पु०) एक प्रकार का खिलौना।
चट्टी दे० (स्त्री०) चटका, घटती, टोटा, हानि, पड़ाव, स्लीपर जूती, पैर का ज़नाना गहना।
चड़ दे० (पु०) लकड़ी या वृक्ष की डाली टूटने का शब्द, तमाचा, थप्पड़।
चड़चड़ दे० (पु०) चटचट, पटपट, टेंटें, बकबक।
चड़चड़ाना दे० (क्रि०) फाटना, तड़कना, टूटना, फूटना
चड़पड़ाना दे० (क्रि०) फटना, फूटना।
चड़बड़ दे० (पु०) बड़बड़ बकबक।
चड़बड़िया दे० (पु०) बकी, बकवादी, गप्पी, लबार।
चड्ढी दे० (स्त्री०) लड़कों का खेल जिसमें जीता हुआ लड़का हारे हुए लड़के की पीठ पर लदकर पूर्व निर्दिष्ट स्थान तक जाता है।
चढ़इ दे० (क्रि०) चढ़ता है, ऊपर जाता है, सवार होता है, धावा मारता है।
चढ़के दे० (क्रि०) जान बूझ के, चढ़कर, बलात्कार से।
चढ़त दे० (स्त्री०) देवता की भेंट चढ़ता है।
चढ़ती दे० (स्त्री०) लाभ, बढ़वारी, वृद्धि।
चढ़ना दे० (क्रि०) आरोहण करना, ऊपर जाना, धावा करना।

चढ़नी दे० (स्त्री०) लड़ाई की तैयारी, शत्रु पर चढ़ाई करना ।
चढ़न्दार दे० (पु०) चढ़नेवाला, आरोही, घुड़सवार ।
चढ़वैया दे० (पु०) सवार, अश्वारोही, घुड़चढ़ा ।
चढ़ाई दे० (स्त्री०) चढ़ाव, धावा, शत्रु पर चढ़ जाना, उन्नति, चढ़ने का भाव ।
चढ़ाना दे० (क्रि०) उठवाना, बलिदान करना, अर्पित करना, ढोलक आदि बाजों का कसना ।
चढ़ावौ दे० (क्रि०) निवेदन करना, बलिदान, इस शब्द का प्रयोग विशेषतः व्रजभाषा में होता है ।
चढ़ाव दे० (पु०) उठाव, पहाड़ की चढ़ाई, धावा, ऊपर जाना, बढ़ती, वृद्धि, साधुओं की स्नान यात्रा जो विशेष पर्वों में होती है ।
चढ़ावा दे० (पु०) वर की ओर से कन्या के लिये विवाह के दिन दिया हुआ गहना कपड़ा आदि, पुजापा, देवता पर चढ़ाई वस्तु, उत्साह ।
चढ़ै दे० (क्रि०) चढ़ जाय, सवार हो ऊपर आवे, धावा मारे, चढ़ाई करे । [अभिमान में चूर ।
चढ़ैत दे० (पु०) चढ़वैया, चढ़ने वाला, चढ़ा हुआ,
चढ़ैता दे० (पु०) चढ़वैया दूसरों के घोड़े फेरने वाला, चाबुक सवार ।
चढ़ौवाँ (पु०) एड़ी चढ़ा जूता ।
चणक तत्० (पु०) चना, चूर, अन्न विशेष, अश्व भोजन, घोड़े का दाना, एक मुनि का नाम—त्मज (पु०) चाणक्य मुनि ।
चण्ड तत्० (पु०) प्रबल प्रचण्ड, उग्र, तीव्र, तेजस्वी, तेजिष्ठ, भयानक, डरावना अतिक्रोधी, तीखा, तीक्ष्ण । (पु०) ताप, कार्त्तिकेय, इमली का वृक्ष कुबेर का एक पुत्र, शिव का एक गण, विष्णु का एक पार्षद, राम की सेना का एक वानर, सम्राट् पृथिवीराज का एक सूरसामन्त, एक दैत्य का नाम ।—ता (स्त्री०) उग्रता, कठोरता, कड़ुवाहट, तीक्ष्णता ।
चण्ड तत्० (पु०) विख्यात शुम्भासुर का प्रधान सेनापति । इसके छोटे भाई का नाम मुण्ड था । चण्ड के मारने ही से भगवती का चण्डी या चण्डिका नाम पड़ा है । (२) मेवाड़ के राना लाखा के एक पुत्र । राजपूतों के इतिहास में यह दूसरे भीष्म समझे जाते हैं । मारवाड़ के राजा ने चण्ड को लड़की देने की इच्छा से नारियल भेजा था । लाखा ने हँसी में कहा कि हमारे लिये ये थोड़े ही नारियल लाये होंगे । इस बात की खबर उसी समय चण्ड को लगी, चण्ड ने प्रतिज्ञा की कि मैं इस लड़की से ब्याह न करूँगा । पिता ने बहुत कहा, परन्तु चण्ड अपनी प्रतिज्ञा से बाल भर भी नहीं टले, अन्त मे राना ने कहा कि यदि विवाह नहीं करोगे, तो राज्य से भी तुम्हें हाथ धोना पड़ेगा, दृढ़ प्रतिज्ञ चण्ड ने इस बात को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किया, उस लड़की से आगे पीछे सोचकर राना ने विवाह किया । नयी महारानी के हृदय का खटका दूर करने के लिये चण्ड अपनी प्राणोपमा मातृभूमि छोड़ने को उद्यत हुए और नयी रानी से कहते गये कि दुःख पड़ने पर मुझे स्मरण करना । हुआ भी ऐसा ही । नयी रानी के पिता रणमल और भाई जोधा के आचरणों पर मेवाड़ के सरदार सन्देह करने लगे, कुछ दिनों के बाद रानी की भी आँखें खुलीं, उसी समय उन्होंने चण्ड के पास पत्र भेजा । चण्ड आये और मेवाड़ की पवित्र राजगद्दी को बड़े भयानक पङ्क में फँसने से बचाया ।
चण्डकर (पु०) सूर्य ।
चण्डकौशिक (पु०) विश्वामित्र का नाम ।
चण्डता (स्त्री०) प्रबलता, तीक्ष्णता, अधिक क्रोध ।
चण्डमुण्ड (पु०) चण्ड और मुण्ड नामक दो राक्षस थे । [किरण, कठिन ।
चण्डांशु तत्० (पु०) [चण्ड+अंशु] सूर्य, दिनकर,
चण्डा तत्० (स्त्री०) नायिका विशेष, भगवती के शक्तिभूत, अष्टविध नायिकाओं के अन्तर्गत नायिका विशेष, सुगन्धि द्रव्य विशेष, शङ्खपुष्पी, श्वेतदूर्वा, एक नदी का नाम । [चोली, अंगिया ।
चण्डातक तत्० (पु०) पहनने का वस्त्र, कञ्चुकी,
चण्डाल तत्० (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, शूद्र और ब्राह्मणी से उत्पन्न, अधम, पञ्चमवर्ण, पतित, अन्त्यज, डोम । (स्त्री०) चण्डालिन, चण्डाली ।
चण्डावल दे० (पु०) सेना का पिछला भाग, पीछे रहनेवाला सिपाही, वीर सिपाही, सन्तरी ।

चण्डिका तत्० (स्त्री०) दुर्गा, लड़ाकी स्त्री, गायत्री देवी। (वि०) कर्कशा, लड़ाकी।
चण्डी तत्० (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, गौरी, पार्वती, गिरिजा, क्रोध करने वाली स्त्री, कोपना स्त्री, कलही।—कुसुम (पु०) लाल कनैर का फूल।—मण्डप (पु०) भगवती की पूजा का स्थान, देवीगृह।
चण्डु तत्० (पु०) मूषक, मर्कट, छोटा बन्दर।
चण्डू, चंडू दे० (पु०) नशे के लिये नली के द्वारा पिया जाने वाला अफ़ीम का किवाम
चण्डूल, चंडूल दे० (पु०) एक खाकी रंग का पक्षी।
चण्डोल दे० (पु०) एक प्रकार की पालकी, पक्षी विशेष, डोला।
चतुःपार्श्व तत्० (पु०) चतुर्दिक्, चारों तरफ।
चतुःशाल तत्० (पु०) गृहविशेष, मुनियों का आश्रम।
चतुःषष्टि तत्० (स्त्री०) चार अधिक साठ, चौसठ, ६४, कलानामक उपविद्या (देखो कला) सङ्गीत विद्या।
चतुर तत्० (गु०) कार्यक्षम, आलस्य रहित, दक्ष, पटु, निपुण, धूर्त, बुद्धिमान, होशियार, चालाक।—ता (स्त्री०) प्रवीणता, दक्षता, स्यानापन।
चतुरई तद्० (स्त्री०) चतुरता, प्रवीणता, दक्षता, धूर्तता, होशियारी।
चतुरङ्ग तत्० (पु०) हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल इन चार भागों में बटी सेना, शतरंज का खेल।—ङ्गिनी (स्त्री०) चार अंगों वाली सेना, चतुरङ्ग सेना, सेना की संख्या विशेष।
चतुरङ्गुल तत्० (गु०) चार अंगुल का, चार अंगुल परिमाण विशिष्ट, अमलतास।
चतुरभुज (पु०) विष्णु, चार भुजावाले।
चतुरमुख (पु०) चार मुँहवाला, ब्रह्मा।
चतुरस्र तत्० (गु०) चतुष्कोण, चौकोना, चौखूंटा।
चतुरवस्था तत्० (स्त्री०) चार अवस्थाएं, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। बाल्य, प्रौढ, यौवन और वृद्ध।
चतुरा तत्० (स्त्री०) सयानी, प्रवीणा, दक्षा।
चतुराई तद्० (स्त्री०) दक्षता, निपुणता, चालाकी।
चतुरानन तत्० (पु०) [चतुर+आनन] चार मुख वाला, ब्रह्मा, आत्मभू, विधि, विधाता।
चतुराश्रम तत्० (पु०) चार आश्रम, ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।
चतुरास तत्० (स्त्री०) चारों ओर, चहुँओर।
चतुरासी तद्० (गु०) अस्सी चार, ८४, संख्या विशेष।—योनि (गु०) चौरासी प्रकार के प्राणी, यथा— दोहा

"नव जलचर दश व्योमचर, कृमि ग्यारह वन बीस,
ये चौरासी जानिये, मनुज चार पशु तीस।"

चतुरुपवेद तत्० (पु०) चार उपवेद, वे ये हैं, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद और धर्मशास्त्र।
चतुर्गुण तत्० (पु०) चारगुणा, चौगुना, एक को चार से गुणन।
चतुर्थ तत्० (पु०) चार को पूरा करने वाली संख्या, चौथा, चौथी।—काल (पु०) चौथा काल, उपवास के दूसरे दिन की रात्रि।—वस्था (स्त्री०) बुढ़ापा, बुढ़ाई, मरणकाल।
चतुर्थी तत्० (स्त्री०) तिथि विशेष, चौथा।
चतुर्दश तत्० (गु०) चार और दस की संयुक्त संख्या। (गु०) चार अधिक दस, चौदह, १४।—विद्या (स्त्री०) चौदह विद्या, यथा—छः अङ्गों से युक्त चार वेद, धर्मशास्त्र, पुराण, मीमांसा और न्याय ये चतुर्दश विद्या हैं।—रत्न (पु०) चौदह रत्न जो समुद्र से निकाले गये थे, वे ये हैं, अमृत, चन्द्रमा, लक्ष्मी, धन्वन्तरि, ऐरावत, कौस्तुभमणि, उच्चैःश्रवा, शङ्ख, अप्सरा, कामधेनु, कल्पद्रुम, मदिरा और विष।—मनु (पु०) चौदह सृष्टिकर्ता मनु। यथा—स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि और इन्द्रसावर्णि।—लोक (पु०) चौदह लोक, सप्त स्वर्ग और सप्त पाताल, यथा—भूतल, भुवः, स्वः, महः, जन, तप, सत्य, ये सात स्वर्ग लोक हैं। अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल, ये सात पाताल हैं। [तिथि, चौदस।
चतुर्दशी तत्० (स्त्री०) [चतुर्+दश] चौदहवीं
चतुर्भुज तत्० (पु०) चारभुजाधारी, विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण, रेखागणित का एक स्वरूप, जो चार रेखाओं से घिरा रहता है।—क्षेत्र (पु०) चौमेड़ा खेत।

चन्द्रमा तत्० (पु०) चन्द्र, चन्द, चन्दा, निशाकर, विधु, शशि, शशाङ्क । [चँदवा, गुर्चं, इलायची।

चन्द्रा तत्० (गु०) मुण्डला, गञ्जा, बुद्धिमान्। (स्त्री०)

चन्द्रातप तत्० (पु०) चाँदनी, चन्द्रिका, चन्द्रमा का प्रकाश, आच्छादन विशेष, वितान, चँदवा, जोत्स्ना, उजियारी, चन्द्रकिरण ।

चन्द्राना दे० (क्रि०) सूखना, मुरझाना, सूकना, पश्चात्ताप होना, परिताप होना ।

चन्द्रापीड़ तत्० (पु०) बाणभट्टकृत संस्कृत गद्य काव्य कादम्बरी के नायक। इनके पिता उज्जयिनी के राजा तारापीड़ थे, इनकी माता का नाम विलासवती था। कादम्बरी में लिखा है कि शाप के कारण चन्द्रमा ही को महारानी विलासवती के गर्भ से उत्पन्न होना पड़ा था, इनके मित्र और मन्त्रिपुत्र वैशम्पायन थे ।

चन्द्रावली तत्० (स्त्री०) एक गोपी का नाम । यह राधा की चचेरी बहिन थी, राधा के पिता वृषभानु के जेठे भाई चन्द्रभानु की यह लड़की थी। चन्द्रावली गोवर्द्धनमल्ल से ब्याही गयी थी, यह गोवर्द्धनमल्ल करहा नामक गाँव का रहने वाला था ।

चन्द्रिका तत्० (स्त्री०) ज्योत्स्ना, चन्द्रमा की किरण, चाँदनी, प्रकाशविशेष, व्याकरण की पुस्तक का नाम, चकोर, मोर के पङ्ख की गोल गोल आँख, बड़ी छोटी इलायची, एक मछली, कनफोड़ा घास, जूही, चमेली, मेथी, चनसुर, एक देवी, एक वर्णवृत्त, चालसुगा, माथे का एक भूषण ।

चन्द्रोदय तत्० (पु०) चन्द्रमा का उदय, रात्रि का प्रथम प्रहर, औषधि विशेष, चँदवा ।

चन्द्रोपल तत्० (पु०) [चन्द्र+उपल] चन्द्रकान्त मणि, माणिक्य विशेष ।

चनसुर दे० (पु०) हालम, एक शाक विशेष ।

चपकन दे० (पु०) एक प्रकार का अँगरखा, लम्बा अङ्गरखा । [मिलना, सटना ।

चपकना दे० (क्रि०) चिपटना, जुड़ना, संयुक्त होना,

चपकाना दे० (क्रि०) सटाना, जुटाना, मिलाना, जोड़ाना, सटाना, लपटाना ।

चपटना दे० (क्रि०) चपटा होना, मिल जाना, सट जाना, लग जाना, लपटना ।

चपटा दे० (गु०) समान, बराबर, तुल्य, चौरस, चौड़ा, चौगूँठा ।

चपटाना दे० (क्रि०) चपटा करना, मिलाना, लपटाना ।

चपटी दे० (स्त्री०) बैठी वस्तु, चपटी वस्तु, मिली हुई स्त्रियाँ, संयुक्ता, किलनी जो पशुओं के चिपटती हैं, ताली, योनि ।

चपड़गट्टू (वि०) विपद्ग्रस्त ।

चपड़चपड़ दे० (पु०) श्वान के खाने का शब्द ।

चपड़ा दे० (पु०) एक प्रकार की लाख ।

चपड़ाऊ दे० (गु०) निर्लज्ज, ढीठ, धृष्ट ।

चपड़ाना दे० (क्रि०) खोटा करना, ढीठ करना, बहकाना, धरना ।

चपड़ी दे० (स्त्री०) गोबरी, कड़ी, तख्ती, पटिया ।

चपत तत्० (पु०) चड़ तमाचा, थप्पड़, तही ।

चपना दे० (क्रि०) दबाना, लज्जित होना, अधीन होना, मर्दित होना, मसल जाना ।

चपनी दे० (पु०) ढकनी, ढपनी, ढक्कन, कटोरी।

चपरगट्टू (वि०) चौपटचरन, अभागा ।

चपरास दे० (स्त्री०) कमर में बाँधने का चिन्ह, स्वामी और भृत्य के पद का सूचन करता है ।

चपरासी दे० (पु०) नौकर, दूत, हरकारा ।

चपरि दे० (अ०) शीघ्र, तुरन्त, दबकर, दबककर, भूमि से मिलकर, घुस कर ।

चपल तत्० (गु०) चञ्चल, अस्थिर, तरल, विकल, उद्विग्न । (पु०) पारा, मछली, बुलबुला, जल्दबाज़, चातक, पत्थर विशेष, सुगन्धिद्रव्य विशेष, राई, एक प्रकार का चूहा ।—ता (स्त्री०) चञ्चलता, चाञ्चल्य, चापल्य, अस्थिरता ।

चपला तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, विद्युत्, चञ्चला, पुंश्चली, वेश्या, अस्थिरा, कुलटा, व्यभिचारिणी, पीपल, जीभ, मदिरा, प्राचीन समय की एक नाव ।

चपलाई तद्० (स्त्री०) चञ्चलता, चिलबिलापन, चुलबुलाहट ।

चपाती दे० (स्त्री०) रोटी, फुलका । [लज्जित करना ।

चपाना दे० (क्रि०) दाबना, चाँपना, लजाना,

चपेट तत्० (पु०) तमाचा, थप्पा, थप्पड़, हथेली, झोंक, धोखा । [थप्पड़, धोखा ।

चपेट, चपेटिका तत्० (स्त्री०) वर्णसङ्कर, धौल,

चपेटी (स्त्री०) माद्र द्वक पक्षी।

चपौटी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की छोटी पगड़ी, पुरानी पगड़ी। [पानी उठी न हो।

चपौरा दे० (पु०) जूता जिसकी एड़ी ज़मीन पर घुमा हो

चप्पन दे० (पु०) ढकना, ढक्कन, ढपना, चपनी, छिछला, कटोरा।

चप्पल दे० (पु०) एक प्रकार का एड़ी बैठा जूता।

चप्पा दे० (पु०) चार अँगुलियों का निशान, किसी रङ्ग से दीवार या कपड़े पर बनाया जाता है, चतुर्थांश, थोड़ा भाग, चार अँगुल जगह, थोड़ी जगह।

चप्पी दे० (स्त्री०) देह दबाना, अङ्ग मर्दन, शरीर दबाना। [का डाँड़ दबाने वाला।

चप्पू दे० (पु०) कलवारी, डाँड़, दपड़, नाव खेवने

चफाल दे० (स्त्री०) पङ्क परिपूर्ण द्वीप, जिस द्वीप के चारों ओर दलदल हो। [कुचलना, भुभजाना।

चबजाई दे० (स्त्री०) चबलाना, दाँतों से पीसना,

चबलाना दे० (क्रि०) चबाना, कुचलना, पीसना।

चबाई दे० (स्त्री०) कुचलाई, चर्वण।

चबाउ दे० (पु०) मुखर, बतबढ़ाउ, कहासुनी, निन्दा।

चबाना दे० (क्रि०) चाबना, चिबलाना।

चबूतरा दे० (पु०) चौतरा, चत्वर, अथाई, चौपड़, बैठक, चौकी, थाना।

चबैना दे० (पु०) चर्वणक, दाना, चबाकर खाने का दाना, भुजैना, भार में भूने अन्न।

चबैनी दे० (स्त्री०) मिठाई या जलपान जो बरातियों को रास्ते में दिया जाता है।

चव्य तत्० (स्त्री०) ओषधि विशेष, चाव।

चभक दे० (पु०) डंक, काँटा, पानी में किसी वस्तु के गिरने की आवाज़।

चभोरना दे० (क्रि०) गोता देना, भिगोना, तर करना। " खाते घुरत चभोरे घी के "। सूरदास।

चमक दे० (स्त्री०) चिलक, भड़क, चटक, उज्ज्वलता, प्रभा, दीप्ति, दमक, शोभा, लचक, चिक।

चमकता दे० (गु०) उजागर, उजला, जगमग, जगरमगर। [चाना।

चमकना दे० (क्रि०) झलकना, चौंकना, प्रकाश हो

चमकाना दे० (क्रि०) प्रकाश करना, झलकाना, साफ़ करना, चिढ़ाना, मटकाना, धोवना।

चमकार दे० (वि०) चमक, उजार, उजागर।

चमकाहट दे० (स्त्री०) झलक, झलाझल। [गादुर।

चमगादड़, चमगीदड़ दे० (पु०) शादुर, चमगादुर,

चमगादुर दे० (पु०) देखो चमगादड़।

चमगुदरी दे० (स्त्री०) रात में चलनेवाली चिड़िया।

चमचड़क दे० (गु०) चीथ, कृश, दुर्बल, सकरा।

चमचमाना दे० (क्रि०) शोभना, अधिक शोभा देना, चमकाना।

चमचमाहट दे० (स्त्री०) चमकाहट, शोभा, दीप्ति।

चमचा दे० (पु०) चम्मच, करछी।

चमची दे० (स्त्री०) छोटा चम्मच।

चमटा दे० (पु०) चिमटा।

चमड़ा दे० (पु०) चर्म, त्वच्, छाल, खाल।

चमत्कार तत्० (पु०) [चमत्+कृ+घञ्] विस्मय, आश्चर्य ज्ञान, करामात, कमरू, खिचड़ा।—ी (गु०) विस्मयजनक, विचित्र, आश्चर्य।

चमत्कारक (वि०) अद्भुत, आश्चर्यप्रद।

चमत्कृत तत्० (गु०) आश्चर्यान्वित, विस्मित।—ि (स्त्री०) विस्मय।

चमर तत्० (पु०) चँवर, चामर, व्यालव्यजन, राज चिन्ह विशेष, चमर नामक पशु विशेष।

चमरख दे० (पु०) रहटा की सामग्री, एक प्रकार का लट्टा फल। [सुरागाय।

चमरी तत्० (स्त्री०) सुरा गौ, चमर नामक गौ,

चमरू दे० (पु०) चमड़, खाल, चरसा।

चमस तत्० (पु०) [चम्+अस्] यज्ञपात्र विशेष, चमचा, करछी, चम्मच, दर्वी, पापड़, लड्डू, उर्द का आटा, एक ऋषि का नाम, नव योगीश्वरों में से एक।

चमाई दे० (स्त्री०) झौंस, पीला।

चमाऊ दे० (स्त्री०) खड़ाऊ, चरणपादुका, चमर।

चमाचम दे० (वि०) झलते हुए, चमकते हुए। " बरतन चमाचम माँजना। "

चमार तद्० (पु०) चर्मकार, मोची, जूता बनाने वाला।

चमू तत्० (स्त्री०) सेना, दल, कटक, सेना विशेष, ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े, ३६४५ (किसी के मतानुसार ३६४५) पैदल यह चमू है।—चर (पु०) सेनापति, सिपाही।—पति (पु०) सेनापति।

चतुर्भुजा, चतुर्भुजी तत्० (स्त्री०) चार भुजावाली अर्थात् देवी भगवती।

चतुर्भोजन तत्० (पु०) चार प्रकार का भोजन, यथा—भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चंष्य।

चतुर्मुख तत्० (पु०) चतुरानन, ब्रह्मा, विधाता, विधि।

चतुर्मुक्ति तत्० (स्त्री०) चार प्रकार की मुक्ति, सायुज्य, सालोक्य, सामीप्य और सारूप्य।

चतुर्योनि तत्० (पु०) चार प्रकार से उत्पन्न जीव, स्वेदज, अण्डज, उद्भिज और जरायुज।

चतुर्वेद तत्० (पु०) चारों वेद, साम, यजु, ऋक् और अथर्व।—ी (पु०) चार वेद जाननेवाला, चतुर्वेद-वक्ता, ब्राह्मण भेद, माथुर, ब्राह्मण, ब्राह्मणों का वंश विशेष।

चतुर्वर्ग तत्० (पु०) पुरुषार्थ चतुष्टय, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। [क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वर्ण तत्० (पु०) ब्राह्मणादि चार वर्ण, ब्राह्मण,

चतुर्विंश तत्० (गु०) चौबीसवाँ, चार और बीस।

चतुर्विंशति तत्० (गु०) चौबीस, २४।

चतुर्विध तत्० (गु०) चार प्रकार, चार तरह।

चतुष्क (वि०) चौपहला। (पु०) एक प्रकार का भवन।

चतुष्कोण तत्० (गु०) चौकोन, चौरस।

चतुष्टय तत् (गु०) चार की संख्या, चार वस्तुओं का समूह।

चतुष्पथ तत्० (पु०) चौराहा, चौक, चार मार्गों के मिलने का स्थान।

चतुष्पद तत्० (पु०) पशु, चौपाया चार पैर वाला।—धर्म (पु०) चार अङ्गों से युक्त धर्म, धर्म के चार अङ्ग ये हैं—विद्या, सत्य, तपस्या, दान।

चतुष्पदी तत्० (स्त्री०) चौपाई छन्द, चार पाद का गीत, चार पाँव वाली।

चतुस्सम्प्रदाय तत्० (पु०) वैष्णवों के चार प्रधान सम्प्रदाय रामानुज, श्रीमाध्व, रुद्र और सनक। श्रीरामानुज, श्रीमाध्व, श्रीनिम्बार्क, श्रीवल्लभीय।

चतुस्सहस्र तत्० (गु०) चार हज़ार, संख्याविशेष, ४०००। [यज्ञवेदी।

चत्वर तत्० (पु०) [चत्+वर] चौरस्ता, यज्ञस्थान,

चदरा दे० (पु०) चादर, चद्दर।

चद्दिर तत्० (पु०) कपूर, चन्द्रमा, हाथी, साँप।

चद्दर दे० (स्त्री०) चादर, किसी धातु का लंबा चौड़ा चौकोर पत्तर। [जाना, सिलना, चटकना।

चनकना दे० (क्रि०) चटक जाना, फट जाना फूट

चना तद्० (पु०) चणा, चणक, बूट, अन्न विशेष।

चन्द तद्० (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, चाँद, शशधर, निशाकर।

चन्दन तत्० (पु०) [चन्द्+अनट्] स्वनाम प्रसिद्ध वृक्ष विशेष, श्रीखण्ड, मलयागिर, गन्धसार, सुगन्धि काष्ठ, चन्दन विशेष, रक्तचन्दन, पक्षी तोता।

चन्दना दे० (पु०) तोता, सुआ, शुक, पक्षीविशेष।

चन्दला दे० (गु०) गंजा, खल्वाट, जिसके सिर पर बाल नहीं।

चन्दवा दे० (पु०) चाँदनी, छाया, मेघाडम्बर, गोल आकार की चकती, पैचंद मोर पङ्ख की चन्द्रिका।

चन्दा तद्० (पु०) कर, दान, उगाही संवादपत्रों का वार्षिक मूल्य, सहायता, चन्द्र, चन्द्रमा।

यथा—" देखति रही खिलौना चन्दा
आरि न कीजिये बालगोविन्दा"

—व्रजविलास

चन्दिया दे० (स्त्री०) चाँदी, खोपड़ी, छोटी रोटी।

चन्दिहा दे० (गु०) रुपहला, रुपये का बना, चाँदी का बनाया, सफेद, श्वेत।

चन्देला दे० (पु०) चन्देल क्षत्री, क्षत्रियों की एक जाति, चन्देल नगर के रहने वाले, चन्दवा।

चन्देली, चन्देरी दे० (स्त्री०) एक नगर विशेष। (वि०) चन्देल नगर के कपड़े।

चन्द्र तत् (पु०) [चन्द्+र] शशाङ्क, चन्द्र, चन्द्रमा, सुवर्ण द्वीप विशेष, कपूर, बिंदी, जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जाय, हीरा, मृगशिरा नक्षत्र। (वि०) कमनीय, सुन्दर, आनन्ददायक।—कला (स्त्री०) चन्द्रमा की सोलह कला, इनके नाम ये हैं—अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अङ्गदा, पूर्णा, पूर्णा।—कान्त (पु०) मणि-विशेष।—कुण्ड (पु०) कामरूप का प्रसिद्ध एक तीर्थ, सरोवर।—गुप्त (पु०) भारतीय प्राचीन प्रसिद्ध मौर्यवंशीय एक राजा। सन् ३०० ई० में सर्वार्थसिद्धि या महानन्द नाम के एक राजा राज्य

करते थे। इनका दो स्त्रियाँ थीं। मुरा के लड़के का नाम मौर्य, और सुनन्दा के नौ पुत्रों को नवनन्द कहते थे। पिता ने नवनन्दों को राज्यासन का भार सौंपा और मौर्य को उनका मन्त्री बनाया। मन्त्री मौर्य के अनेक पुत्र उत्पन्न हुए, उन्हें होनहार देखकर नवनन्द ईर्ष्या और अपनी आपत्ति की उत्प्रेक्षा करके काँप गये, अतएव उन्होंने मौर्यों को बन्दी किया, परन्तु किसी कारणवश चन्द्रगुप्त को उन्होंने छोड़ दिया, चन्द्रगुप्त थोड़े ही दिनों में अपने सद्गुणों के कारण सर्वप्रिय हो गया। यह देख नव नन्द भयभीत हुए, उसे मारने की चेष्टा करने लगे, इसकी खबर पाते ही चन्द्रगुप्त ने सोच विचार कर अपनी रक्षा का उपाय ढूँढ़ निकाला, दृढ़ प्रतिज्ञ, अध्यवसायी और राजनीतिज्ञ चाणक्य को कौशल से अपने पक्ष में करके चन्द्रगुप्त राजा हुआ। —ग्रहण (पु०) चन्द्रमा का ग्रहण, राहुग्रास। —घण्टा (स्त्री०) देवी विशेष, नवदुर्गा के अन्तर्गत तीसरी दुर्गा।—चूड़ (पु०) शिव, महादेव। —प्रभा (स्त्री०) चन्द्रकिरण, ज्योत्स्ना।—भागा (स्त्री०) नदी विशेष, चिनाव नदी, पञ्जाब की एक नदी का नाम।—भाल (पु०) श्रीमहादेव, गणेशजी।—मणि (पु०) चन्द्रकान्त मणि, शिव। —मण्डल (पु०) चन्द्रबिम्ब, चन्द्रमा की परिधि। —मल्लिका (स्त्री०) पुष्प विशेष, लताविशेष, इलायची।—मुखी (स्त्री०) चन्द्रमा के समान मुँह वाली, सुन्दरी, सुमुखी, वरवर्णिनी।—मौलि (पु०) महादेव, शिव।—रेखा (स्त्री०) चन्द्रकला, चन्द्रमा की एक कला।—रेणु (पु०) काव्यचोर, शब्दचोर, भावापहारी।—लोक (पु०) चन्द्रमा का लोक, चन्द्रमण्डल।—लौह (पु०) चाँदी, रूपा, रजत।—वंश (पु०) प्रसिद्ध राज सन्तान विशेष चन्द्रमा के कुल में उत्पन्न राजा।—वाला (स्त्री०) बड़ी इलायची।—व्रत (पु०) प्रायश्चित विशेष, व्रत विशेष, राजधर्म, राजधर्म का पालन रूप व्रत। —शाला (स्त्री०) अट्टालिका, अटारी।—शिखा (स्त्री०) चन्द्रकला, चन्द्रमा की कला का अग्रभाग। —शेखर (पु०) शिव, महादेव, पर्वत विशेष।—सिता (स्त्री०) कपूर।—सेन (पु०) प्राचीन भारत का एक पराक्रमी राजा का नाम, इनके पिता का नाम समुद्रसेन था, कुरुक्षेत्र में पाण्डवों की ओर से यह लड़ते थे और उसी युद्ध में अश्वत्थामा द्वारा यह सदा के लिये रणभूमि में सो गये। (२) चम्पावती नगरी का एक राजा। यह शिकार खेलने वन में गया था और मृग के धोखे से एक मुनि पर इसने बाण छोड़ा। मालूम होने पर इसने मुनि का अनेक प्रकार का अनुनय विनय किया, परन्तु किसी प्रकार मुनि का क्रोध कम नहीं हुआ, मुनि के शाप से राजा काना और बूढ़ा हो गया। शापमुक्त होने के लिये राजा ने अनेक यत्न किये, किन्तु सभी निष्फल हुए। अन्त में एक मुनि की सम्मति से वसन्तपुर (जयपुर राज्य के अन्तर्गत एक नगर) में आने से इनका शाप नष्ट हुआ, सृष्टाब्द की प्रथम शताब्दी में इन्होंने चन्द्रावती नगरी स्थापित की। यह नगरी चन्द्रभागा नदी के तीर पर है, यह झालावार की राजधानी है। (३) परशुराम के द्वारा यह राजा मारा गया था, इसकी गर्भवती रानी ने महर्षि दालभ्य के आश्रम में जाकर अपने प्राणों की रक्षा की थी।—हार (पु०) अलङ्कार विशेष।—हास (पु०) [चन्द्र+हस्+घञ्] खड्ग विशेष, (१) रावण के खड्ग का नाम, (२) एक धार्मिक राजा का नाम इनके माता पिता बाल्यावस्था ही में इन्हें अकेला छोड़ परलोकयात्री हुए। उस राज्य का प्रधान मन्त्री, षड्यन्त्र रच कर, इन्हें मरवाने की चेष्टा करने लगा। अतः चन्द्रहास को अपनी राजधानी छोड़ वन में जाकर छिपना पड़ा। इस समय भी स्वर्गीय-वात्सल्यभाव-पूर्ण हृदया इनकी उपमाता ने इनको नहीं छोड़ा, किन्तु उसीने इन्हें वन में जाकर आत्मरक्षा करने का सत्परामर्श दिया और स्वयं भी वह साथ आयी। किसी अवसर पर राजमन्त्री से इनकी भेंट हुई। राजमन्त्री ने इन्हें पहचाना और इन्हें मारने के लिये इसने अपने गुप्त दूत उनके पीछे लगाये। परन्तु भगवान् को चन्द्रहास का मारा जाना उचित नहीं मालूम होता था। इसी कारण मन्त्री के सभी प्रयत्न निष्फल हुए और यही राजा हुआ और मन्त्री अपने ही कर्मों से निःसन्तान होकर दुर्गति के साथ मर गया।

चमूकन दे० (पु०) किलनी, पशुओं का जूँआ।

चमेटा तद्० (पु०) चपेटा, थपेड़ा, चोट।

चमोटा दे० (पु०) चमड़े की थैली जिसमें नाई छुरा रखता है, या वह चमड़े का टुकड़ा जिस पर छुरा की धार पक्की की जाती है।

चम्मच दे० (पु०) देखो चमचा।

चम्पक तद्० (पु०) पुष्प विशेष, चम्पा का फूल। —कलिका (स्त्री०) चम्पा की कली।

चम्पत दे० (वि०) छिपा, अदृश्य, अन्तर्धान, भगना। —होना (क्रि०) भग जाना, छिप जाना, चला जाना, अलक्ष्य होना। [गया हुआ।

चम्पई दे० (स्त्री०) पीत रङ्ग, पीत वर्ण, पीले रङ्ग से

चम्पा तद्० (स्त्री०) कर्णपुरी, अङ्गदेश की राजधानी, भागलपुर का प्रदेश, चम्पारण्य, चम्पारन, एक प्रकार का मीठा केला, एक जाति का घोड़ा, रेशम का एक क़िस्म का कीड़ा, बहुत बड़ा सदा बहार पेड़ जो दक्षिण में होता है। —धिप दे० (पु०) चम्पारण्य नामक प्रदेश के अधिपति कर्णराज, (दे०) एक वृक्ष और पुष्प का नाम।

चम्पाकली दे० (स्त्री०) भूषण विशेष, एक प्रकार का गहना, यह गले में पहना जाता है। [नगरी।

चम्पावती तद्० (स्त्री०) नगरी विशेष, चम्पा नामक

चम्पू तद्० (स्त्री०) काव्य विशेष, गद्य पद्य मय काव्य। यथा भोज+चम्पू।

चम्भा दे० (पु०) मुँहचिरा, एक भिक्षुकों की जाति।

चम्बू दे० (पु०) जलपात्र विशेष, टोंटीदार पात्र, यह देवपूजन के काम में आता है। [चमेली का फूल।

चम्बेली दे० (स्त्री०) एक प्रकार की लता और पुष्प,

चम्मल दे० (पु०) चमला, कुम्भा, एक नदी का नाम।

चय तद्० (पु०) [चि+अच्] समूह, राशि, ढेर, प्राचीर, प्राकार, चार दीवारी, टीला, गढ़, नींव, चबूतरा, चौकी, ऊँचा आसन, यज्ञ का अग्नि संस्कार (चयन) विशेष।

चयन तद्० (पु०) संग्रह करना, आहरण, बटोरना, एकत्र करना, एकट्ठा करना। (दे०) आनन्द, कुशल, क्षेम, चैन।

चर तद्० (पु०) हटाने योग्य, चालक, रेङ्ग, छिप कर राजकीय बातों को जानने के लिये नियुक्त किया गया पुरुष, दूसरों की बात जानने के लिये घूमने वाला, कपट वेशधारी, दूत, खाना, भोजन, खंजन पक्षी, कौड़ी, मङ्गल, पाँसे का जूआ, नदियों के किनारे या सङ्गमस्थान की वह भूमि जो नदियों की लाई हुई मिट्टी से बनी हो (डेल्टा) दलदल, नदियों के बीच बालू का टापू, छिछला पानी। (पु०) चलनेवाला, चलनेयोग्य, जङ्गम, जानेवाला।

चरई दे० (स्त्री०) जानवरों के पानी पीने के लिये पानी जिसमें भरा जाय वह कुण्ड।

चरक तद्० (पु०) वैद्यक ग्रन्थ विशेष, कुष्ठ रोग का भेद, मुनि विशेष, विख्यात वैद्यक ग्रन्थ चरक संहिता के रचयिता, अनन्त देव चर रूप से छिप कर पृथिवी पर आये और उन्होंने देखा कि यहाँ के वासी अनेक रोगों से अधिक कष्ट उठा रहे हैं। मनुष्यों का कष्ट देखकर उन्हें दया आयी और षडङ्ग वेद ज्ञाता महर्षि का रूप उन्होंने धारण किया तथा सांसारिक व्याधियों से मनुष्यों की रक्षा करके प्रसिद्धि प्राप्त की। अनन्त देव चर रूप (गुप्तवेश) से पृथिवी पर अवतीर्ण हुए थे। इसी कारण उनका नाम चरक पड़ा। इन्होंने अत्रि के पुत्र भरद्वाज से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की थी। दूत, भेदिया, बटोही, पथिक, बौद्धों का एक सम्प्रदाय, भिखारी। [ग्रन्थ विशेष।

चरकसंहिता तद्० (स्त्री०) चरकमुनि प्रणीत वैद्यक का

चरकटा दे० (पु०) ऊँट या हाथी का चारा काटने वाला, तुच्छ मनुष्य। [दागने का निशान, हानी, धक्का।

चरका दे० (पु०) फोड़, कुष्ठ रोग विशेष श्वेत कुष्ठ,

चरकी दे० (पु०) कुष्ठ रोग ग्रस्त, श्वेत कोढ़ी।

चरख दे० (पु०) चक्र, चका, घेरा, चौफेर, पहिया, खराद, रहँट।

चरखा दे० (पु०) सूत कातने का यन्त्र, रहँटा।

चरखी दे० (स्त्री०) रहँटी रहँटा, घिरनी, एक प्रकार का यन्त्र जिस पर आदमी को बैठा कर घुमाया जाता है, एक प्रकार की आतिशबाज़ी। [चन्दन लगाना।

चरचना तद्० (क्रि०) लेपना, लेपन करना, अङ्गों में

चरचर दे० (पु०) बकबक, गप, निरर्थक बोल।

चरचरा दे० (पु०) बक्की, बकबकिया, निरर्थक बोलने वाला, मज़बूत।

चरचराना दे० (क्रि०) चटकना, कड़कड़ाना, क्रुद्ध होना, कुपित होना।
चरचा तद्० (स्त्री०) चर्चा, कीर्ति, जिकिर।
चरचेला दे० (गु०) गप्पी, बक्की, मुखर, बकवकहा।
चरचैत दे० (गु०) चरचा करनेवाला, कीर्तिमान्।
चरट तद्० (पु०) खञ्जनपक्षी, खञ्जरीट, खञ्जरीच।
चरण तद्० (पु०) पद, अङ्घ्रि, पैर, पशु, पक्षी, आदि के आहार के लिये घूमना, छन्द का चौथा हिस्सा वर्णों का सान्निध्य, चतुर्थांश, मूल, गोत्र, क्रम, आचार, घूमने का स्थान, किरण, अनुष्ठान, गमन, चरने का काम।—कमल (पु०) कोमल चरण, कमल के समान चरण।—दासी (स्त्री०) चरण सेविका, स्त्री, भार्या पैर पर गिरा हुआ, जूता, खड़ाऊँ।—पदवी (स्त्री०) पदाङ्क, चरण का चिन्ह।—पीठ (पु०) पादपीठ पैर के पीछे का भाग, खड़ाऊँ, पाँवरी, चरण रखने का पीढ़ा, चरणासन।—व्यूह (पु०) एक ग्रन्थ का नाम, यह वेदव्यास का बनाया है। इसमें वेदों का विवरण लिखा गया है।—युगल (पु०) पदयुगल, चरणयुग, दोनों पैर।—सेवा (स्त्री०) उपासना, आराधना, अर्चना, सेवा, शुश्रूषा।—मृत (पु०) चरणोदक, पादोदक, मान्यों का पैर धोया हुआ जल।—युध (पु०) कुक्कुट, मुर्गा।—रविन्द (पु०) चरण कमल, पादपद्म।—ोदक (पु०) पादप्रक्षालन जल, चरणामृत, देवता आदि का चरण धोया हुआ जल।—ोपान्त (पु०) चरण के समीप पदप्रान्त।
चरणि तद्० (पु०) मनुष्य।
चरती दे० (गु०) व्रत न करनेवाला, व्रतनी।
चरना दे० (क्रि०) चुगना, घूमघूमकर घास खाना। (पु०) पैर, चरण।
चरनी दे० (स्त्री०) ठहरा, ठाँव, स्थान, बैलों को घास खिलाने के लिये जो मिट्टी का बहुत लम्बा बनाया जाता है।
चरपी दे० (स्त्री०) चार आने, चौअन्नी, सूकी।
चरपरा दे० (गु०) तीखा, तेज़, चुनचुना, तीता, फुर्तीला, साहसी। [दर्द होना झनझनाना।
चरपराना दे० (क्रि०) चरपराना, वेदना मालूम होना,
चरपराहट दे० (स्त्री०) चरपराहट, झनझनाहट।
चरपरिया दे० (गु०) मनचला, सुन्दर, सुघर।
चरफर दे० (पु०) प्रवीणता, निपुणता, दक्षता।
चरफरा दे० (गु०) दक्ष, निपुणता, दक्षता।
चरफराहि दे० (क्रि०) चरचराते हैं, तड़पते हैं, फरांते हैं। [साहस, उत्साह।
चरफराहटी दे० (स्त्री०) फुर्तीलापन, चतुरता,
चरबाना दे० (क्रि०) ढोल को रस्सी कसना या चमड़े से मढ़ना।
चरबी दे० (स्त्री०) मेद, वसा, पीह।
चरम तद्० (गु०) अन्तिम, शेष, अवसान पराकाष्ठा का। (पु०) चाम, चमड़ा, ढाल, फरी।—काल (पु०) शेष काल, अन्तिम समय, मरने का समय।—ाचल (पु०) अस्त पर्वत, अस्तगिरि।—ाद्रि (पु०) अस्त पर्वत, अस्ताचल। [रखने या चराने का
चरवाई दे० (स्त्री०) चराई का मूल्य, चराने का या
चरवाहा दे० (पु०) चराने वाला, रखने वाला, गुआला, गड़रिया।
चरस दे० (पु०) मादक द्रव्य विशेष, पुरवट, मोट, पानी निकालने का चमड़े का बड़ा एक प्रकार का बरतन, चमड़े का बड़ा डोल।
चरसा दे० (पु०) खधौड़ी, खाल, चमड़ा, चरस, मोट।
चराई दे० (स्त्री०) चराने की मजूरी, चराई का काम, चराई की क्रिया। [का पक्षी।
चराक दे० (पु०) चरानेवाला, चरवाहा, एक प्रकार
चराचर तद्० (गु०) [चर+अचर] स्थावर जङ्गम, चल-अचल, जड़ चैतन्य, सजीव निर्जीव, चलने वाले न चलने वाले। (पु०) जगत्, आकाश, नभोमण्डल, जड़ चेतन, सजीव निर्जीव, कौड़ी।
चरान दे० (पु०) चराई, चौगान, पटपर, पशुओं के चराने का स्थान। [चुगाना।
चराना दे० (क्रि०) पशुओं को घुमाकर घास खिलाना,
चराव दे० (पु०) चरने योग्य खेत।
चरि तद्० (पु०) पशु, चौपाये।
चरित तद्० (गु०) [चर्+क्त] गत, प्राप्त, लब्ध, अधिगत। (पु०) चरित्र, व्यवहार, आचरण, रीति नीति, उपाख्यान, कथा वार्ता, वृत्तान्त, हाल, अहवाल।—ार्थ (गु०) प्राप्त प्रयोजन,

जिसका इष्ट सिद्ध हो चुका है, कृतकार्य, कृतार्थ, जो पूरी तरह घटे, जो ठीक ठीक उतरे।—र्थता (स्त्री॰) कृतार्थता, प्रयोजन सिद्धि, इष्ट लाभ।

चरित्र तत्॰ (पु॰) [चर्+इत्र] स्वभाव, आचरण, व्यवहार।—बन्धक (पु॰) भाट, कवि, ग्रन्थकार, चरित्र लेखक।

चरी दे॰ (स्त्री॰) ज़मींदारों से किसानों को जो भूमि उनके पशुओं को चराने के लिये मिलती है, पशुओं के खाने योग्य करबी।

चरु तत्॰ (पु॰) यज्ञपात्र, यज्ञ का शेष अन्न, खीर, होम करने की वस्तु।

चरुआ दे॰ (पु॰) मिट्टी का चौड़े मुँह का बरतन जिसमें प्रसूता स्त्री का गरम जल किया जाता है।

चर्चक तत्॰ (गु॰) चर्चा करनेवाला।

चर्चना दे॰ (क्रि॰) विचारना, प्यार करना लेपना।

चर्चर दे॰ (पु॰) शब्द विशेष, टूटी गाड़ी के शब्द, गमनशील।

चर्चरी तत्॰ (स्त्री॰) [चर्च+र+ई] वाद्य विशेष, रागविशेष, तानविशेष, केशरचना, होली का उत्सव।

चर्चरीक तत्॰ (पु॰) शिव, महादेव, महाकाल, केश विन्यास शाक।

चर्चा तत्॰ (स्त्री॰) वार्तालाप ज़िक्र अपवाद।

चर्चित तत्॰ (गु॰) [चर्च+क्त] चन्दन के द्वारा लेपन करना, लिप्त, सुगन्धित, विलेपित, निर्णीत।

चर्पट तत्॰ (पु॰) चपेट चपेटा थप्पड़। (वि॰) अधिक, विपुल।—ी (स्त्री॰) एक प्रकार का रोटी।

चर्म तत्॰ (पु॰) खाल, त्वक, चाम, चमड़ा खाल, अस्त्रविशेष, ढाल।—कार (पु॰) चमार, मोची जूता बनाने वाला।—घटिका (स्त्री॰) चमगुदड़ी।—ज (पु॰) रुधिर, केश बाल, चराम, ऊन।—दण्ड (पु॰) कशा, चाबुक, कोड़ा।—पात्र (पु॰) चमड़ा का खोल।—पादुका (स्त्री॰) चमड़े का जूता।—पुटक (पु॰) चर्म निर्मित पात्र विशेष, कुप्पा जिसमें घी, तेल आदि रखा जाता है।—वस्त्र (पु॰) चमड़े का बना वस्त्र।

चर्मी तत्॰ (गु॰) ढाल रखनेवाला, चर्मधारी, ढाल वाला।

चर्य तत्॰ (वि॰) चरने योग्य।

चर्या तत्॰ (स्त्री॰) वह जो किया जाय, आचरण, काम काज, व्यापार, जीविका, भक्षण, गमन।

चर्वण तत्॰ [चर्व+अनट्] दाँतों से चूर किया वा पीसा हुआ, चबाना, चबैना।

चर्वित तत्॰ (गु॰) कृतचर्वण, भक्षित, खाया हुआ।

चर्वितचर्वण (पु॰) पिष्टपेषण, किये हुए काम को बार बार करना कही हुई बात को बार बार कहना।

चर्व्य तत्॰ (वि॰) चबाने योग्य। (पु॰) जो चबा कर खाया जाय।

चल तत्॰ (गु॰) चञ्चल, अस्थिर, अस्थायी, गमन, कंप, भिन्न भिन्न।—कर्ण (पु॰) पृथिवी से ग्रहों की यथार्थ दूरी।—केतु (पु॰) पुच्छलतारा विशेष।—चलाव (पु॰) यात्रा की तैयारी।—चित्त (गु॰) अस्थिर मन, चञ्चल।—देना (क्रि॰) भाग जाना, उपेक्षा करना।—निकलना (क्रि॰) निकल पड़ना, सीमा को अतिक्रम करना।

चलत दे॰ (क्रि॰) चलते हैं, चलते ही।

चलता दे॰ (पु॰) फिरता हुआ, घूमता हुआ।

चलदल तत्॰ (पु॰) पीपल का पेड़, अश्वत्थ।

चलन तत्॰ (पु॰) [चल+अनट्] गमन, भ्रमण, कम्पन, सरण, वहन, आचरण, व्यवहार, धारा, प्रचार, रीति, चाल।

चलना दे॰ (क्रि॰) जाना, गमन करना।

चलनी दे॰ (स्त्री॰) हँसिया चाँदी, पीतल के तार अथवा चमड़े से बना अनेक छेद वाला एक बर्तन, जिससे आटा चाला जाता है, आटा की छलनी।

चलपत्र तत्॰ (पु॰) अश्वत्थवृक्ष, चलदल, पीपल।

चलपूंजी तद्॰ (स्त्री॰) चल धन, एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने लायक धन, सुवर्ण, सोना, रुपया पैसा आदि।

चलफेर दे॰ (पु॰) घूमघाम, गमन, गति, घुमाव।

चलविचला दे॰ (गु॰) चलिदल, चलचलने वाला, चालाक, अवसर जानने वाला। [अव्यवस्थित।

चलविचल दे॰ (गु॰) अपने स्थान से चला हुआ,

चला तत्॰ (स्त्री॰) लक्ष्मी, पृथिवी, बिजली, पीपल। (क्रि॰) चल निकला, चल पड़ा, प्रचलित हुआ, जाया चाहता है, मरा चाहता है। [घूमने वाला।

चलाऊ दे॰ (गु॰) टिकाऊ, मज़बूत, बहुत

चलाचल तद्० (गु०) [चल+अचल] चलाचली चाल, चलेचलो। [चलने के समय की हड़बड़ी।
चलाचली दे० (स्त्री०) चलने की तैयारी या समय,
चलान दे० (पु०) भेजाव, पहुँचाव, प्रेषित करण, मार्ग दिखाना, अपराधी को न्याय के लिये न्यायालय में भेजना।
चलाना दे० (क्रि०) दौड़ाना, हाँकना, गमन कराना।
चलायमान तद्० (पु०) चञ्चल, अस्थिर, अस्थायी।
चलाव दे० (पु०) चलन, रीति, व्यवहार, चाल।
चलावा दे० (पु०) चलाया, हाँका, प्रचलित किया।
चलित तद्० (गु०) [चल्+क्त] कम्पनगत, चलन, व्यवहारी, चपल, व्यवहारिक, हिलता हुआ।
चलितव्य तद्० (गु०) [चल्+तव्य] चलने योग्य, गमन करने के उपयुक्त।
चलित्री दे० (गु०) खिलाड़ी, रसिक, चञ्चल।
चले दे० (क्रि०) चल निकले, प्रचलित हुए, जाने लगे।
चलेन्द्रिय तद्० (गु०) अजितेन्द्रिय, इन्द्रियपरवश, इन्द्रियाधीन, लम्पट, असदाचारी, इन्द्रिय सुखासक्त।
चलो दे० (क्रि०) आव, उठो, दौड़ो, फिरो।
चलौना दे० (पु०) चरखे का लपड़ा। [चूता है।
चवई दे० (क्रि०) चुवै, बहै, टपकै, टपकता है,
चवय दे० (क्रि०) चुवै, बहै, टपकै, (इन दोनों शब्दों का प्रयोग रामायण में हुआ है)।
चवाई दे० (पु०) निन्दक, दुर्जन, पिशुन, लबालुबरा, चुगलख़ोर। [झूठा कलङ्क।
चवाव दे० (पु०) निन्दा, दुर्यश, अपवाद, चुगली,
चष तद्० (पु०) नेत्र, आँख।
चषक तद्० (पु०) जलपात्र, आबख़ोरा, पीने का पात्र, मदिरा पीने का पात्र, गिलास, शहद, मदिरा।
चषणि तद्० (पु०) भोजन, खाना, मारण। (स्त्री०) मूर्छा, मदान्धता, क्षय दुर्बलता, दुबलाई, वध, हत्या।
चषाल तद्० (पु०) यज्ञ के खम्भे के ऊपर रखा हुआ एक प्रकार का काठ, मधुस्थान, मधुकोष।
चसक दे० (स्त्री०) टपक, पीड़ा, टीस, वेदना।
चसकना दे० (क्रि०) टीसना, टपकना, व्यथा करना।
चसका दे० (पु०) शौक, लालसा, चाट, स्वाद, रुचिकारक, टेव।
चसना दे० (क्रि०) मसकना, चमकना, गड़ना, मरना।
चसमी दे० (स्त्री०) अपरस, रोगविशेष। [चाहिए।
चह तद्० (पु०) चाहता है, दरकार है, अपेक्षित है,
चहकना दे० (क्रि०) चमकना, चहचहाना, शोभित होना, चिड़ियों की चहचहाहट।
चहका दे० (पु०) जलन, व्यथा, आग देना, अँगीठी।
चहकार दे० (स्त्री०) चिचियाना, चहचहाहट, चिड़ियों का शब्द।
चहकैंट दे० (गु०) चौकन्ना साँप, बलवान्, बलिष्ट।
चहचहा दे० (गु०) ख़ूब गहरा रङ्गा हुआ, अति मनोहर।
चहचहाना दे० (क्रि०) चिड़ियों का रव।
चहचहाहट दे० (स्त्री०) पक्षी समूह का शब्द।
चहबचा दे० (पु०) हौदा, कुण्ड, पानी का गढ़ा।
चहटो दे० (स्त्री०) चुटकी काटना। [चकित होना।
चहलना दे० (क्रि०) कींड़ना, कूँदना, श्रान्त होना,
चहलपहल दे० (स्त्री०) आनन्द, हँसी ख़ुशी, हर्ष, उत्सव, मङ्गल।
चहसि दे० (क्रि०) तू चाहता है। [है, अपेक्षित है।
चहिय दे० (क्रि०) चाहिये, आवश्यकता है, दरकार
चहला दे० (पु०) कीचड़, पाँक, पङ्क, काँदा, काँदो, कीच।
चहुँ दे० (गु०) चारो।—चक दे० (गु०) चारों ओर, सब ओर, चहुँदिश, चारों खूँट। दिश—दे० (अ०) सब ओर, चारों ओर, चहुँ ओर।—धा दे० (पु०) चारों ओर।—युग दे० (पु०) चारों युग, चारों युग में, चतुर्युग।
चहुँक (स्त्री०) चौंक, चिहुक।
चहुँ दे० (गु०) चार, चतुः,चौथा। [ममसूया करता हूँ।
चहौं दे० (क्रि०) चाहता हूँ, इच्छा करता हूँ।
चाँई दे० (पु०) छोटी जात, कञ्जर। बहुधा इस जाति को चोर जाति भी कहते हैं अतएव इस शब्द का अर्थ भी चोर ही हो गया है) चोर, ठग, उचक्का।
चाँईंचूँई दे० (स्त्री०) गञ्जरोग।
चाँकना (क्रि०) हद बाँधना, सीमा में करना, गोड़ना।
चाँचर तद्० (पु०) गीत विशेष। दे० (स्त्री०) परती छोड़ी ज़मीन, मटियार भूमि विशेष। दे० (पु०) बड़ी, परदा जो किवाड़ों की जगह लगाया जाय।

चोंचु (पु०) चोंच।
चोंटना दे० (क्रि०) चापना, दाबना, चिन्ह करना।
चोंटा (पु०) थप्पड़, चपत।
चोंटी (स्त्री०) चींटी।
चोड़ दे० (स्त्री०) भूमि, थम्बा, खम्बा, टेकन, टेक। तद्० (वि०) बलवान् उग्र, श्रेष्ठ, मुख्य।
चाँद तद्० (पु०) चन्द्रमा,चन्द्र, सोम।—रात (स्त्री०) पूर्णिमा की रात।—मारना। (क्रि०) लक्ष्यवेध, निशाना मारना। —ने खेत किया (वा०) चन्द्र उदय हुआ।—मारी (स्त्री०) निशाना बाजी, बन्दूक से लक्ष्य वेध का अभ्यास।
चाँदना दे० (पु०) प्रकाश, ज्योति, तेज।—पक्ष (पु०) शुक्ल पक्ष, सुदि उजेला पाख।
चाँदनी दे० (स्त्री०) चन्द्रिका, उजियाली अँजोरी रात बिछाने की चादर, स्वच्छता।—चौक (पु०) चौड़ा बाज़ार, चौक, दिल्ली के चौक को चाँदनी चौक कहते हैं।
चाँदी दे० (स्त्री०) रूपा, रजत।
चाँप दे० (स्त्री०) बन्दूक का कल, काठ, दबाव।
चाँपना दे० (क्रि०) दाबना दबाना, जोड़ना।
चा दे० (स्त्री०) पौधा विशेष, जिसकी पत्ती भात और सन्ध्या पी जाती है। आसाम की ओर यह बहुत होती है चाय।
चाउर दे० (पु०) चाँवल।
चाऊ दे० (पु०) चाव, शौक़, उत्साह। (वि०) मनोहर, मन भावन, पसन्दीदा।
चाक तद्० (पु०) चक्र कुम्हार की चकरी,पाट, चकरी, जिससे कुम्हार बासन बनाता है।
चाकचक्य तद्० (पु०) दीप्ति उज्ज्वलता, स्वच्छता।
चाकना दे० (क्रि०) हद खींचना, पहचान के लिये चिन्ह लगाना छापना। (स्त्री०) बिजुली। (रामायण में यह शब्द मिलता है)।
चाकर दे० (पु०) भृत्य, कर्मचारी नौकर।
चाकरानी (स्त्री०) नौकरानी, दासी।
चाकरी दे० (स्त्री०) नौकरी, टहल।
चाका दे० (पु०) चक्र रथ का पहिया।
चाकी दे० (स्त्री०) चकरी पाट, जाँता।
चाकू दे० (पु०) छुरी, असिपुत्रि, क़लमतराश।
चाक्रायण तद्० (पु०) चक्रऋषि के वंशज, जिनका नामोल्लेख छान्दोग्य उपनिषद् में पाया जाता है।
चाक्षुष (पु०) नेत्र सम्बन्धी, प्रत्यक्ष।
चाख दे० (क्रि०) चख कर स्वाद लेकर।
चाखना दे० (क्रि०) स्वाद लेना, चखना।
चाङ्गला दे० (पु०) घोड़े का रङ्ग विशेष।
चाचा दे० (पु०) पिता का भाई काका, चाचा।—ी (स्त्री०) काकी, चचा की स्त्री। [चापल्य।
चाञ्चल्य तद्० (पु०) चञ्चलता, अस्थिरता, चपलता,
चाट दे० (स्त्री०) चसका हवसुकता, लालसा, लोभ लालच, मादक पदार्थों में रुचि होने के लिये खाद्य वस्तु, रसास्वाद।
चाटक तद्० (पु०) मयदली, विद्या इन्द्रजाल।
चाटकी तद्० (पु०) चाटक विद्या जानने वाला, ऐन्द्रजालिक।
चाटना दे० (क्रि०) चोखना, रसास्वाद लेना।
चाटी दे० (स्त्री०) मथानि, मथनिया।
चाटु तद्० (पु०) प्रियवाक्य, मीठा वचन स्तुति, मसखरा खुशामद, लोह का पात्र विशेष।—कार (पु०) प्रियभाषी, अनुनय विनय करने वाला, चापलूस।—पटु (पु०) भड़ेड़, भाँड़, ठगनेवाला, मसख़रा, विदूषक, खुशामदी।—वादी (पु०) स्तुति करनेवाला प्रशंसा करनेवाला, खुशामदी।
चाड़ दे० (स्त्री०) सहारा, आश्रय, आवश्यकता, प्रयोजन, चोट, ढेंकली, दबाव।
चाणक तद्० (पु०) मुनिविशेष, गोत्रविशेष, उभाड़ने वाली बात क्रोध उत्पन्न करने वाली बात।
चाणक्य तद्० (पु०) एक नीति के ग्रन्थ का नाम, मुनिविशेष, नीति शास्त्र के प्रसिद्ध पण्डित, ये चणक गोत्र में उत्पन्न हुए थे अतएव इन्हें चाणक्य गोत्र कहते थे। इनका प्रकृत नाम विष्णुगुप्त था। इनका बना अर्थशास्त्र और चाणक्यनीति दो ग्रन्थ पाये जाते हैं। यह पाटलीपुत्र के चन्द्रगुप्त के मन्त्री थे। मुद्राराक्षस में इनकी नीति कुशलता का वर्णन है। गुणाढ्य ने बृहत्कथा में इनको स्मरण किया है। अतएव चन्द्रगुप्त का समय, ३१० ई० से पूर्व का मानना चाहिये।

चाणूर तत्० (पु०) दानव विशेष, यह कंसराज का योधा था, जो कृष्ण द्वारा मारा गया।
चाण्डाल तत्० (पु०) एक अन्त्यज वर्णसङ्कर जाति विशेष, चाण्डाल, श्वपच।—ी (स्त्री०) चाण्डाल की स्त्री, चण्डाली, चण्डालिन।
चातक तत्० (पु०) स्वनाम ख्यात पक्षी, पपीहा। —ानन्दन (पु०) मेघों के आने का समय, वर्षा ऋतु, बरसात का मौसम।
चातकिनी तत्० (स्त्री०) चातकी।
चातर दे० (पु०) महाजाल, दुर्जनों का समाज, दुश्चरित्रों का समुदाय, षड्यन्त्र।
चातुर तत्० (गु०) चतुर, चलाक, धूर्त, प्रवीण, बुद्धिमान्, कुशल, चार, चौथा, प्रियभाषी नियन्ता।
चातुराश्रम्य तत्० (पु०) ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास, इन चार आश्रमों का धर्म।
चातुर्मास्य तत्० (पु०) चार मास में समाप्त होने वाला व्रत। [वृक्ष, रठना।
चातुरी तत्० (स्त्री०) दक्षता, नैपुण्य, कौशल, चतुरता,
चातुर्य तत्० (पु०) चतुराई, चतुरता, धूर्तता।
चातुर्वर्ण्य तत्० (पु०) चतुर्वर्णों के धर्म।
चातुर्वेद्य तत्० (पु०) चार वेदों के ज्ञाता, चतुर्वेदज्ञ, चतुर्वेदी ब्राह्मणों का भेद विशेष।
चातृक दे० (पु०) पपीहा, चातक। [की सामग्री।
चात्वाल तत्० (पु०) गर्त, गढ़ा, गड्ढर, अग्निहोत्र
चादर दे० (स्त्री०) एकलाई, ओढ़ने का एक प्रकार का वस्त्र, पिछौरा, पिछौरी।
चादरा दे० (पु०) मरदानी चादर।
चान्द्र तत्० (गु०) चन्द्र सम्बन्धीय, चन्द्रमा का, सौम्य।
चान्द्रमास तत्० (गु०) चन्द्रमा का महीना, कृष्ण प्रतिपदा से पूर्णिमा को समाप्त होने वाला मास।
चान्द्रायण तत्० (पु०) व्रत विशेष, चन्द्रव्रत, एक प्रकार का प्रायश्चित्त, इस व्रत में चन्द्रमा की कला की घटती और बढ़ती के अनुसार भोजन में घटाव बढ़ाव किया जाता है। यह व्रत एक महीने का होता है।
चाप तत्० (पु०) धनुष, कोदण्ड, धनुही, दाब, दबाव, एक वृक्ष का नाम।—कर्ण (पु०) धनुष का रोदा, धनुष की प्रत्यंचा।
चापत दे० (क्रि०) दबाता है, दबाते ही।
चापन दे० (पु०) दबाना, दाबन।
" मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई,
लगे चरण चापन दोउ भाई "—रामायण।
चापल तत्० (पु०) चञ्चलाई, चपलाहट।
चापलूस दे० (पु०) खुसामदी, प्रशंसक, स्तुतिकर्त्ता, हाँ में हाँ मिलानेवाला। [मद, अनुनय।
चापलूसी दे० (स्त्री०) लल्लोपत्तो, फुसलाहट, खुशा-
चापल्य तत्० (पु०) चपलता, अधीरता, जल्दी बाज़ी।
चापी दे० (पु०) दबाई, छिपाई, लुकाई। [पकड़ते हैं।
चाफन्द दे० (स्त्री०) जाल, महाझ जिससे मछली
चाबना दे० (क्रि०) दाँतों से कुचलना, पीसना।
चाबी दे० (स्त्री०) कुञ्जी, ताली, कूची, ताले की कुञ्जी।
चाबुक दे० (पु०) कोड़ा।—सवार दे० (पु०) घोड़े की चाल सम्हालने वाला।
चाम तद्० (पु०) चर्म, चमड़ा, त्वक्, खाल।
चामर तत्० (पु०) चमर, चँवर, राजा का एक चिन्ह।
चामर पाटना दे० (क्रि०) दाँतों से होठ काटना, दाँत कटकटाना।
चामीकर तत्० (पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, सोना, धतूरा।
चामुण्डराय दे० (पु०) पृथिवी राज के एक सामन्त राजा का नाम।
चामुण्डा तत्० (स्त्री०) दुर्गा, देवी, काली, योगिनी, चण्डमुण्ड राक्षसों को मारने वाली देवी, मातृका भेद, एक देवी का नाम, योगिनी का नाम।
चाम्पेय तत्० (पु०) चम्पा पुष्प, चम्पा का फूल, नागकेशर।
चाय तत्० (पु०) [चि+घञ्] सञ्चय, समूह, हर्ष, स्वाद, आस्वाद चोष, चाहना। दे० (स्त्री०) चा, टी, एक वनस्पति जो आसाम में पैदा होती है।
चार तत्० (पु०) गूढ़ पुरुष, दूत, खोजी, अनुसन्धानकारी कारागार, दास, आचार, कृत्रिमविष, संख्याविशेष, ४।—कर्म (पु०) छिपकर देखना।—चक्षु (पु०) राजा, नृपति।—टुक (वा०) टुकड़े टुकड़े, साफ़ साफ़, छल रहित।
चारक तत्० (पु०) साईस, चरवाहा, चराने वाला।
चारण तत्० (पु०) जाति विशेष, भाट, वन्दी, स्तुति करने वाली जाति, भ्रमणकारी।
चारपाई दे० (स्त्री०) खाट, खटिया, चरपाई।

चारपाया दे० (पु०) चौपाया, जानवर, पशु।
चारा दे० (पु०) पौधे घास वृक्ष, पशुओं के खाने की चीज़ घास आदि।—नाई (स्त्री०) फरियाद दोहाई देना।
चारि दे० (पु०) चार की संख्या, चतुर, सभी, सुगम, सवार।—अवस्था (स्त्री०) चार अवस्थाएँ यथा जागत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय। [निकाला हुआ।
चारित (पु०) चलाया हुआ, खींचा हुआ अर्क
चारित्र (पु०) चाल चलन स्वभाव।
चारी तत्० (पु०) चलनेवाला, गानी, चारों चार।
चारु तत्० (पु०) सुन्दर, सुहावना, मनोहर, रमणीय, मनोज्ञ। (पु०) बृहस्पति, कुङ्कुम, केसर, कृष्ण के पुत्र का नाम। ता—(स्त्री०) सौन्दर्य, सुन्दरता, शोभा।—पर्णी (स्त्री०) गन्धपत्रा लता औषधि विशेष।—फला (स्त्री०) दाख, अङ्गूर, किस मिस।—बाहु (पु०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।—विक्रम (पु०) बलवान्, बली, बलिष्ठ मनोहर, गति विशिष्ट।—मती (स्त्री०) श्रीकृष्ण जी की एक कन्या का नाम, बुद्धिमान्।—लोचन (पु०) सुन्दर आँख वाला। (पु०) हरिण, मृग।—शिला (स्त्री०) मणि विशेष, हीरा।—शील (पु०) सुरूप, सुन्दरस्वभाव।—हासिनी (स्त्री०) सुन्दर मुसक्यान वाली।
चारेक्षण तत्० (पु०) [चार+ईक्षण] राजमन्त्री, राजनीतिज्ञ। [रूपलावण्य युक्ता रमणी।
चार्वङ्गी तत्० (स्त्री०) सुन्दरी नारी, सुरूपा स्त्री
चार्वाक तत्० (पु०) बार्हस्पत्य, लौकायतिक, तर्किक नास्तिक भेद, नास्तिक मत प्रवर्तक ऋषी। किसी का कहना है कि यह देव गुरु बृहस्पति ही थे। किसी के मत में चार्वाक बृहस्पति के शिष्य थे। किसी किसी का कहना है कि चार्वाक इस नाम का कोई था ही नहीं। यह न्याय मत के समान एक दार्शनिक मत है। चार्वाक स्वर्ग, मुक्ति, ईश्वर आदि को नहीं मानते। ये लोग स्वर्ग, मुक्ति यज्ञ, तप दान, आदि का खण्डन किया करते हैं। वेद के विषय में इनकी सम्मति अत्यन्त निन्दित है। चार्वाक दर्शन का दूसरा नाम लोकायत दर्शन है, क्योंकि लौकिक विषय ही इस दर्शन का सर्वस्व है। चार्वाक के मत से परलोक एक असम्भव वस्तु है, अतएव वे उसे नहीं मानते। किस समय इस मत का प्रचार हुआ था यह निश्चय करना कठिन है। विष्णुपुराण में भी इस मत का उल्लेख किया गया है। महाभारत के शान्ति पर्व में चार्वाक को दुर्योधन का मित्र बतलाया गया है। वाल्मीकीय रामायण और तैतिरीय ब्राह्मण में भी इस मत का पता चलता है।
चाल दे० (स्त्री०) चलन, गति रीति व्यवहार, परि-पाटी, धोखा देने की युक्ति ढङ्ग, छप्पर, छाँह।—चलन (पु०) आचरण, बर्ताव, चरित्र—पकड़ना (क्रि०) फैलना, चलना, प्रचलित होना, कोई की गति सिखाना।—चलना (क्रि०) निबाहना, व्यवहार करना, धोखा देना, धूर्तता करना।—ढाल (स०) चाल चलन, रीति भाँति, व्यवहार।
चालक तत्० (पु०) [चल्+णक्] चालन कर्त्ता, चलाने वाला, भेदक, रेचक, नटखट हाथी।
चालति (क्रि०) चालती है छानती है।
चालन तत्० (पु०) स्थानान्तर, नयन, प्रेरण, दूरी करण, सारण।
चालना दे० (क्रि०) छानना, पछोड़ना, हालना, चाल चालना, फटकना, देखना, झारना।
चालनी दे० (स्त्री०) चलनी, झरना, छानने का पात्र, आटा आदि का मोटा भाग निकालने वाला पात्र, आटा छानने का पात्र, चलनी। [छल,कपट धोखा।
चालबाज दे० (पु०) धूर्त कपटी छली—ी (स्त्री०)
चाला दे० (पु०) गति, यात्रा, प्रस्थान, मुहूर्त।
चालाक दे० (पु०) धूर्त, निपुण, दक्ष, कुशल।
चालाकी दे० (स्त्री०) धूर्तता, निपुणता।
चालान दे० (पु०) भेजे हुए माल की मूल्य सहित सूची, बीजक, रवन्ना, अपराधी का अपराध प्रमाणित किये जाने के लिये पुलिस द्वारा न्यायालय में उप स्थित करने को भेजना।
चालिया दे० (वि०) धूर्त, छली, कपटी। [रसिक।
चाली दे० (पु०) नटखट, चञ्चल, चपल, रसिया,
चालीस दे० (पु०) दो बीस चत्वारिंशत्, संख्या विशेष, ४०।—वाँ (पु०) चालीस संख्या का (पु०) मुसलमानों का मृतक सम्बन्ध विशेष, चहल्लुम।

चालीसा दे० (गु०) चालीस वर्ष की अवस्था वाला, चिह्न, ४० पद का कोई काव्य जैसे "हनुमान चालीसा।"
चालुक्य (पु०) दक्षिण का एक प्रबल पराक्रमी राजवंश।
चाव दे० (पु०) चाह अकुल, चाह, उत्कण्ठा, रुचि, अभिलाषा, उमंग, दुलार, प्रेम। [का स्थान।
चावड़ी दे० (स्त्री०) पड़ाव, चट्टी, मुसाफ़िरों के उतरने
चावल दे० (पु०) तण्डुल, चाँवल, अन्न विशेष।
चाष तत्० (पु०) स्वर्ण चातक, लहटोरया, नीलकण्ठ, यथा— " चारा चाष, वाम दिसि लेई, मनौ सकल मङ्गल कहि देई। "—रामायण।
चाषु तद्० (पु०) नीलकण्ठ।
चास तद्० (पु०) खेती, कृषि, जोताई।
चासा तद्० (पु०) किसान, खेतहा, हरवाह, जोतहा।
चाह दे० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, प्रीति, मनोरथ, लालसा, माँग, आदर। [हितू।
चाहक दे० (पु०) चाहनेवाला, स्नेही, प्रणयी, हितकारी,
चाहत दे० (स्त्री०) चाह, इच्छा, प्रीति, अभिलाषा प्रेम, स्नेह। [लाषा करना, प्रयत्न करना।
चाहना दे० (क्रि०) प्रेम करना, इच्छा करना, अभि-
चाहा दे० (पु०) जल के समीप बसने वाला बगले की जाति की एक चिड़िया, इच्छित।
चाहाचाही दे० (स्त्री०) परस्पर प्रीति, अन्योन्य मैत्री।
चाहि दे० (अ०) देखकर, निहार कर, इच्छा से, लालसा से, प्रेम से, चाह कर।
चाहित दे० (गु०) इच्छित, अभिलषित, प्रिय, मनभावन—चाहिता (स्त्री०)।
चाहिये दे० (अ०) उपयुक्त है, उचित है, योग्य है। [की।
चाही दे० (क्रि०) देखी, देखने की इच्छा थी, चाहना
चाहे, चाहो दे० (अ०) अथवा, किम्वा, या, या, वाक्यान्तर सूचक।
चिआँ तद्० (पु०) चिंचा, इमली का बीज।
चिंउटा दे० (पु०) चींटा, एक कीड़ा जो मीठे को बहुत पसन्द करता है।
चिंउँटी दे० (स्त्री०) चींटी, पिपीलिका।
चिउड़ा चिउरा दे० (पु०) च्योरा, चिड़वा, चूरा।
चिक दे० (पु०) यवनिका परदा, बाँस का बना हुआ परदा, रोग विशेष, कण्ठाभरण विशेष, कपड़ा विशेष, कसाई, हुंडी।

चिकटा दे० (पु०) वस्त्र विशेष, टसर का बना कपड़ा। (गु०) चिक्कट, तेल का मैल।
चिकठा दे० (पु०) तेली, तेल बनाने वाली एक जाति विशेष।
चिकन दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, महीन सूती कपड़ा जिस पर हाथ से बेल बूटे काढ़े जाते हैं।
चिकना दे० (गु०) साफ़, सुथरा सुन्दर, स्निग्ध, तेलहा, तेलौस, घोंटा हुआ, निर्लज्ज, लम्पट। —घड़ा (वा०) जिसके मन पर किसी के कहने का कुछ भी प्रभाव न पड़े, क्षुद्र स्वभाव का।— चाँद (वा०) सुन्दर, रमणीय, मनोहर, मनोज्ञ, सुहावना।
चिकनाई दे० (स्त्री०) चिकनापन, स्निग्धता, फिसलन।
चिकनाना दे० (क्रि०) उज्ज्वल करना, साफ़ करना, चिकना बनाना, घोंटना।
चिकनापन (पु०) चिकनाई, चिकनाहट।
चिकनाहट दे० (स्त्री०) चिकनापन, चिकनाई।
चिकनिया दे० (पु०) छैला, विसनी, सौखीन, लम्पट।
चिकलना दे० (क्रि०) मसलना, पीसना, दबाना, चूर करना। [जाति, बकरकसा।
चिकवा दे० (पु०) जाति विशेष, माँस बेचने वाली
चिकार दे० (पु०) गुल, कोलाहल, चिल्लाहट।
चिकारना दे० (क्रि०) चें चें करना, गाली देना, कोलाहल करना, गुल करना, शोर करना, चिल्लाना।
चिकारा दे० (पु०) वाद्य विशेष, एक प्रकार की सारंगी, चीख़, डरावना शब्द।
चिकारी दे० (स्त्री०) मसा, फूहड़ाई, फूहड़पन।
चिकित्सक तत्० (पु०) [कित्+सन्+अक] चिकित्सा करने वाला, रोग दूर करने वाला, भिषक्।
चिकित्सा तत्० (स्त्री०) [कित्+सन्+आ] पीड़ा प्रतीकार, व्याधि का अपनय, रोग हटाना, वैद्य कर्म, औषध करना, बैदकी।—लय (पु०) [चिकित्सा+आलय] चिकित्सा करने का स्थान, औषधालय, दवाख़ाना।—शास्त्र (पु०) आयुर्वेदविद्या, चिकित्सा करने का शास्त्र।
चिकित्सित तत्० (गु०) [चिकित्सा+इत] चिकित्सा किया हुआ। [की इच्छा, अभिलाष।
चिकीर्षा तत्० (स्त्री०) [कृ+सन्+आ] करने

चिकीर्षित तद्० (गु०) [कृ+सन्+क्त] अभिलाषित, वाञ्छित, अभिप्रेत, इष्ट, चाहा हुआ।
चिकीर्ष तद्० (पु०) करने की इच्छा रखनेवाला अभिलाषी।
चिकुर तद्० (पु०) केश, कुन्तल, मूर्द्धज, बाल, पक्षी विशेष, वृक्ष विशेष, रेंगने वाले साँप आदि छुछुँदर, गिलहरी। (वि०) चपल।—पाश (पु०) केश समूह। [चिखोरना, खखोरना।
चिकोरना दे० (क्रि०) चोंचियाना, चोंच से बिखेरना
चिकोरा दे० (गु०) चञ्चल, चपल, तरल।
चिक्क दे० (गु०) छछुन्दर, बकरी, अजा, छाग, चिपटी नाक वाला। यथा—
"पाछे खेत चिक्क घन अरु बिटियन बढ़वारि,
येते पर जो नहीं नसै सो जाइ करै अधवारि"
चिक्कट दे० (गु०) चिकना, मलीन, मैला, तेलहा।
चिक्कण तद्० (गु०) स्निग्ध, चिकना, चिक्कन, सचिक्कन, फिसलनेवाला। (पु०) सुपारी, हड़, कुछ तेज अग्नि।
चिक्कन (वि०) चिकना, मैला।
चिक्कना दे० (वि०) चिकना, फिसलनदार।
चिक्कनी तद्० (स्त्री०) दक्खिनी सुपारी।
चिक्करना (क्रि०) चिल्लाना चिघाड़ मारना।
चिक्करहिं दे० (क्रि०) चिकारते हैं, चिघारते हैं, हाथी का भयङ्कर शब्द करना।
चिक्कस दे० (पु०) आटा, जव का मैदा, जव या गेहूँ का महीन आटा। हल्दी मिला हुआ जव का आटा।
चिक्कहा दे० (पु०) चिकवा, कसाई।
चिक्कार दे० (स्त्री०) छुछुन्दरी, चूही, मूस की एक जाति जिसे सर्प नहीं पकड़ता।
चिक्कार दे० (पु०) चिघाड़, हाथी का भयङ्कर शब्द।
चिक्की दे० (स्त्री०) सड़ी सुपारी।
चिखुरन दे० (पु०) कड़ुवा घास, खेत निराने पर निकली हुई घास। [घास निकालना।
चिखुरना दे० (क्रि०) निराना, जोते हुए खेत से
चिङ्गड़ा, चिङ्गड़ी दे० (स्त्री०) कीटविशेष, पतिङ्गा, झींगा, झींगा मछली।
चिङ्गनो दे० (स्त्री०) मुरगी का बच्चा।
चिङ्गा दे० (पु०) मुरगी का बच्चा।
चिङ्गी दे० (स्त्री०) चिङ्गारी, पतङ्ग, कीट।
चिङ्घाड़ दे० (पु०) चिक्कार, भयङ्कर शब्द, हाथी का शब्द।—मारना (वा०) भयङ्कर शब्द करना, चिक्कारना, हाथी का शब्द करना।
चिङ्घाड़ना दे० (क्रि०) किलकारना, चिङ्घाड़ मारना।
चिचड़ी दे० (स्त्री०) किलनी, एक घास विशेष।
चिचिंड़ा दे० (पु०) तरकारी विशेष। [शब्द करना।
चिचियाना दे० (क्रि०) चिल्लाना, पुकारना, ज़ोर से
चिट दे० (स्त्री०) टुकड़ा, अंश विशेष, एक छोटा भाग, धज्जी। [हुआ, (पद्य में) चिता।
चिटका दे० (पु०) रेंटा, कीचड़, क्रुद्ध हुआ, कुपित
चिटकारा दे० (पु०) चिन्ह, पङ्क, दाग, धींटा।
चिटकी दे० (स्त्री०) धूप, घाम, ताप, गर्मी।
चिट्टा दे० (गु०) गोरा, गौर वर्ण, श्वेत, सुन्दर रुपया, मुद्रा। दे० (पु०) साल भर के नफा नुकसान के हिसाब की फ़र्द, चन्दे की सूची, उजरत, मज़दूरी, पूरा तथा ठीक ठीक वृत्तान्त।
चिट्ठी दे० (स्त्री०) पाती, पत्री, ख़त, छाटरी, पत्ती, पत्र।—पत्री (वा०) लिखा पढ़ी, ख़तो किताबत।—रसा दे० (पु०) डाँक बाँटने वाला, डाँकिया।
चिट्टा दे० (पु०) धान्यचमस, चिपिरक, गौरैया।
चिड़ दे० (पु०) अरुचि, क्रोध, घृणा, ग्लानि, कुढ़न, जलन, खिझाव, चिढ़।
चिड़चिड़ा दे० (गु०) क्रोधी तुनसाह, चिढ़कने वाला।—ना (क्रि०) तरकना, दरकना, चटकना, झुंझलाना।
चिड़वा (पु०) चिउरा।
चिड़ा दे० (पु०) चटक, पक्षी विशेष, गौरैया।
चिड़ाना दे० (क्रि०) सताना, खिजाना, क्रुद्ध करना, छेड़ना।
चिड़िया दे० (पु०) पक्षी, अण्डज, पखेरू, पक्षी।—खाना (पु०) चिड़ियों की नुमायशगाह।
चिड़ी (स्त्री०) पंछी, पखेरू, तास का एक रङ्ग का पत्ता।
चिड़ीमार दे० (पु०) बहेलिया, व्याध, हत्याकारी, वधिक।
चिढ़ दे० (स्त्री०) देखो चिड़। [खीझना।
चिढ़ना दे० (क्रि०) अप्रसन्न होना, झल्लाना, कुढ़ना,

चिगिड दे० (स्त्री०) नृत्य विशेष।
चित् तत्० (स्त्री०) ज्ञान, चेतना, चैतन्य, चित्त की वृत्ति। (संस्कृत का एक प्रत्यय है जो अनिश्चयवाची है जैसे कश्चित्, किञ्चित्)।
चित तद्० (पु०) मन, चित्त, हृदय, अन्तःकरण, सुध, स्मरण, औंधे का उलटा।—चाय (वा०) अभीष्ट, मनभावना, मन को अच्छा मालूम होने वाला।—चेता (वा०) मनमाना, उचित मालूम होना, जँचना, पसन्द आना। (क्रि०) सावधान हुआ, चौकन्ना हुआ।—चोर (वा०) मन हरने वाला, अत्यन्त प्रिय।—देना (वा०) ध्यान देना, मन लगाना, अधिक उत्सुकता से करना।—लगना (वा०) मनोहर, सुहावना, मनभावना।—लाना (वा०) सावधान हो जाना, सचेत हो जाना। (स्त्री०) दृष्टि, दीठ अवलोकन, समझ बूझ। (गु०) अघटाचित, सीधा लेटना, मुँह ऊपर करके सोना, उत्तान पड़ना।—करना (वा०) उलटना, उत्तान गिराना, जीतना, हराना, पराजित करना।
चितकबरा दे० (गु०) चितला, सतरंगा रङ्गबिरङ्गा, कबरा कर्बुर, अबलक। [अवलोकन करना।
चितना दे० (क्रि०) रङ्ग जाना, ताकना, देखना,
चितरना दे० (क्रि०) चित्रित करना, रङ्ग देना, रङ्गना, चित्र बनाना।
चितला दे० (गु०) चितकबरा, कर्बुर।
चितव (क्रि०) देखता है, घूरता है।
चितवत (क्रि०) देखता है, ताकता है। [नज़र, देखना।
चितवन दे० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, झाँकी, अवलोकन,
चितवना दे० (क्रि०) देखना, दर्शन करना, कटाक्ष करना।
चितहट दे० (स्त्री०) खींच, अनिच्छा घृणा।
चिता तत्० (स्त्री०) मुर्दे को फूँकने के लिये चुनी हुई लकड़ियों का ढेर।—भूमि तत्० (स्त्री०) मरघट, श्मशान।—शायी (गु०) मुर्दा, मरा हुआ।
चिताग्नि दे० (स्त्री०) चिता, मृतक शय्या।
चिताङ्ग दे० (गु०) चित, उत्तान। [सूचित करना।
चिताना दे० (क्रि०) जनाना, बताना, सावधान करना,
चितावना दे० (क्रि०) बताना, चौकस करना।
चितावनी दे० (स्त्री०) बतावनी, सावधान करने का उपदेश।
चितेरा तद्० (पु०) चित्रकार, चित्र बनानेवाला रंगसाज़।
चितै (क्रि०) देखकर, ताककर। [करना।
चितौना दे० (क्रि०) देखना, विलोकन करना, दर्शन
चित्कार तद्० (पु०) चिल्लाना, चिचियाना, उच्चैःशब्द।
चित्त तत्० (पु०) [चित्+क्त] अनुसन्धान करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति, मन, हृदय, ज्ञान, सुधि।—ताप (पु०) मन की पीड़ा, मानसिक दुःख।—प्रसाद (पु०) आह्लाद, हर्ष, चित्त के सात्विक भाव का प्रकाश।—वान (पु०) अनुग्राहक कृपावान्, दयालु।—विभ्रम (गु०) उन्माद, चित्त का ज्ञान शून्य हो जाना।—विक्षेप (पु०) मन की चञ्चलता, उद्विग्नता, व्याकुलता।—वृत्ति (स्त्री०) चित्त का विकार, चित्त की दशा।—समुन्नति (स्त्री०) दम्भ, अहङ्कार, मन का बढ़ना।
चित्तल तद्० (पु०) एक जाति का हिरन, चीतल।
चित्ता तद्० (पु०) औषधि पौधाविशेष।
चित्ति तत्० (स्त्री०) अथर्व ऋषि की पत्नी का नाम, ख्याति, कर्म, बुद्धि की वृत्ति।
चित्ती तद्० (स्त्री०) बुँदकी, छोटा दाना।
चित्तोद्वेग तत्० (पु०) चित्त का उद्वेग, विरक्ति, व्याकुलता।
चित्तोन्नति तत्० (स्त्री०) गर्व, अभिमान, अहङ्कार।
चित्तौर (पु०) मेवाड़ की प्राचीन राजधानी राजपूताने का यह एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है और इसे गहलोतवंशी बप्पारावल ने बसाया था।
चित्य तत्० (पु०) समाधि का स्थान।
चित्र तत्० (पु०) [चित्र+अच्] तिलक, छवि, पट, आलेख्य, अद्भुत, विस्मय, मनोहर, अनेक प्रकार का रंग, तसवीर, बेलबूटे।—कण्ठ (पु०) कबूतर, पारावत, परेवा।—कन्दुक (पु०) ज़िमींकन्द।—कार (पु०) चित्र बनानेवाले, चितेरा।—कारी (स्त्री०) चित्रकार का काम, चितेरापन।—काय (पु०) बाघ, व्याघ्र, शेर, चीता।—कूट (गु०) पर्वत विशेष, बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत कामता पहाड़ के नाम से यह प्रसिद्ध है।—केतु (पु०) इस नाम का एक राजा हो गया है।—

गुप्त (पु०) यमराज के लेखक का नाम, जो सब के पाप पुण्य लिखा करते हैं कायस्थों के आदि पुरुष हैं। पुराणों में इनके विषय में लिखा है कि इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अङ्ग से हुई है। सृष्टि करने के पश्चात् जब ब्रह्मा ध्यान में मग्न थे उस समय कलम दवात लिये अनेक वर्णों से चित्रित एक मनुष्य उत्पन्न हुआ। उसने उत्पन्न होते ही ब्रह्मा से पूँछा "क्या करना है"? ब्रह्मा की आज्ञा पाकर ये प्राणियों के पाप पुण्य लिखने लगे इनका लिखा विचित्र लेख गुप्त रहता है, इस कारण इनका नाम चित्रगुप्त पड़ा। ब्रह्मा की आज्ञा ही से कायस्थ इनकी उत्पत्ति निश्चित हुई। अम्बष्ट श्रीवास्तव, माथुर, गौड़, भटनागर आदि नाम के नव पुत्र इनके थे। ये यमराज के मन्त्री हैं। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को इनकी पूजा होती है।—देवी (स्त्री०) इन्द्रा, वारुणी।—पक्ष (पु०) तीतर नाम का पक्षी।—पट (पु०) प्रति, मूर्त्ति फोटो। —भानु (पु०) सूर्य, अग्नि, अनल, दिवाकर। भेषज (पु०) कठूमरी, एक औषधि का नाम। —रथ (पु०) गन्धर्व विशेष। इनका नाम अङ्गार-पर्ण था। इनके पास एक अनेक रत्नों से चित्रित रथ था इसी कारण इनको लोग चित्ररथ कहने लगे। इनकी स्त्री का नाम कुम्भीनसी था। पाण्डवों के वनवास के समय में अर्जुन ने इनके उस रथ को जला डाला। तब से इनका नाम दग्धरथ हो गया था। (२) धर्मरथ नामक राजा के पुत्र का नाम। बलिराज के ज्येष्ठ पुत्र का नाम अनन्ताम था, येही अङ्गदेश के राजा थे। राजा अङ्ग के पुत्र का नाम दधिवाहन था, धर्मरथ के पिता दिविरथ इन्हीं के पुत्र थे। धर्मरथ के ही चित्ररथ पुत्र थे।—लिखित (पु०) चित्र में लिखा हुआ, निश्चेष्ट, चेष्टाहीन, चेष्टा रहित।—लेखा (स्त्री०) अप्सरा विशेष, छन्दो विशेष। दैत्यराज बाणासुर की कन्या उषा की सखी का नाम। यह बाणासुर के मन्त्री कुम्भाण्ड की कन्या थी। इसीने उषा की प्रार्थना और देवर्षि नारद की सहायता से अनिरुद्ध को श्रीकृष्ण के भवन से हर लिया था।—लोचना (स्त्री०) मदन पक्षी, मैना पक्षी।—विचित्र (पु०) नानावर्ण का, बहुरङ्गी, अनेक प्रकार का, नाना-विध।—शाला (स्त्री०) चित्र बनाने का स्थान, जिस स्थान में अधिक चित्र हों।—शिखण्डिज (पु०) बृहस्पति, देवगुरु।—सारी (स्त्री०) अटारी, सजाया हुआ कमरा।—सेन (पु०) गन्धर्व विशेष द्वैत वन के एक सरोवर के निकट इनका वास था। पाण्डव भी निर्वासित होकर, इसी वन में रहते थे। एक समय दुर्योधन अपनी सेना और मित्र के साथ अपने वैभव को दिखाकर, युधिष्ठिर आदि को दुःखित करने की इच्छा से चला। इस तालाब के निकट जब वह पहुँचा। तब चित्रसेन को वहाँ से हट जाने के लिये उसने कहा। चित्रसेन ने भी उचित उत्तर दिया। अब दोनों दल में युद्ध होने लगा। दुर्योधन की सेना हार गयी, कर्ण आदि वीरपुरुष पकड़े जाने लगे दुर्योधन का एक सेवक युधिष्ठिर के समीप गया और उसने अत्यन्त नम्रता से सहायता माँगी। भीम सहायता देने के बिल-कुल विरुद्ध थे। परन्तु युधिष्ठिर ने समझा बुझा कर, भीम अर्जुन नकुल और सहदेव को दुर्योधन की सहायता के लिये भेजा। इनके पराक्रम से गन्धर्व सेना के छक्के छूट गये वह इधर उधर भागने लगी। इन लोगों ने दुर्योधन उनकी स्त्रियाँ तथा कर्ण आदि रथियों को क़ैद से छुड़ाया। गन्धर्व राज, दुर्योधन आदि को लेकर युधिष्ठिर के समीप आये, और उन्होंने अपना अपराध क्षमा कराया। दुर्योधन ने भी "चौबे गये छब्बे बनने

दूबे बन के घर आये"।

की लोकोक्ति चरितार्थ की।

चित्रा तद० (स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक सखी का नाम, चौदहवाँ नक्षत्र, एक नदी का नाम, अप्सरा विशेष चितकबरी गाय।

चित्राङ्ग तद० (पु०) [चित्र+अङ्ग] साँप, रक्त चित्रक, हरताल, चीतल, ईंगुर।

चित्राङ्गद तद० (पु०) चन्द्रवंशीय राजा विशेष। महाराज शान्तनु का राजकुमार, महावीर भीष्म पितामह का सौतेला भाई था। सत्यवती के गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी। इसके छोटे भाई का नाम विचित्रवीर्य था। शान्तनु के अनन्तर यह

राजा हुआ था। इससे प्रजा प्रसन्न थी। चित्राङ्गद नामक गन्धर्व के साथ इसका तीन वर्ष तक घोर युद्ध होता रहा, उसी युद्ध में शन्तनु कुमार चित्राङ्गद मारा गया।

चित्राङ्गदा तत्० (स्त्री०) अर्जुन की स्त्री, मनीपुर के राजा चित्रवाहन की यह कन्या थी। इसके गर्भ से बभ्रुवाहन नामक पराक्रमशाली पुत्र उत्पन्न हुआ था। अपने नाना के वंश में उनका कोई उत्तराधिकारी न रहने के कारण, उनके राज्य का मालिक हुआ। [प्रकार की स्त्री।

चित्रिणी तत्० (स्त्री०) चार प्रकार की स्त्रियों में दूसरे

चित्रित (वि०) चित्र में खींचा हुआ, रंगा हुआ।

चित्रोक्ति (स्त्री०) अलङ्कार युक्त भाषा में कहना, व्योम, आकाश।

चिथड़ा दे० (पु०) फटा हुआ कपड़ा, गूदड़।

चिथड़िया दे० (गु०) गूदड़िया, गूदड़बाबा, चिरकुटिया, चिथड़े वाला। [चीरना, धज्जी धज्जी करना।

चिथाड़ना दे० (क्रि०) फाड़ना, लताड़ना, लथाड़ना,

चिथोड़ना (क्रि०) फाड़ खाना, भभोरना।

चिद् तत्० (पु०) चैतन्य, सजीव, जीवधारी।

चिदाकाश तत्० (पु०) चैतन्य, आकाश, ब्रह्म, परमात्मा।

चिदात्मा तत्० (पु०) ज्ञानमय आत्मा, ज्ञानस्वरूप, परमात्मा। [परमात्मा।

चिदानन्द तत्० (पु०) ज्ञान और आनन्दस्वरूप

चिदाभास तत्० (पु०) ज्ञान, ज्ञान का प्रकाश, जीवात्मा। [(वि०) स्फूर्तीमान्, मनोहर।

चिद्रूप तत्० (गु०) ज्ञानमय या ज्ञानस्वरूप परमात्मा,

चिनक दे० (पु०) चुनचुनाहट, जलन सहित दर्द, मूत्र नली की जलन और पीड़ा।

चिनग दे० (पु०) जलन, मूत्रकृच्छ्ररोग।

चिनगना दे० (क्रि०) टीसना, जलन होना, चिल्लाना।

चिनगारी, चिनगी दे० (स्त्री०) लूका, अग्नि स्फुलिङ्ग।

चिनचिनाना दे० (क्रि०) चिल्लाना, चीखना, धाड़ मारना। [चिनिया केला, चिनिया बादाम्।

चिनिया दे० (वि०) चीनी, सफ़ेद, छोटा, जैसे—

चिन्त तत्० (स्त्री०) चिन्ता, चिन्तना, ध्यान, सोच, फ़िक्र, स्मरण, सुध।

चिन्तन तत्० (पु०) अभ्यास, ध्यान, स्मरण।

चिन्तना तत्० (क्रि०) अभ्यास करना, मनन करना, ध्यान करना। [फ़िक्र करने योग्य, सोचने योग्य।

चिन्तनीय तत्० (वि०) चिन्ता करने योग्य, भावनीय,

चिन्तपन तत्० (पु०) चिन्तन देखो।

चिन्ता तत्० (स्त्री०) चिन्तन, ध्यान, भावना, उद्वेग, उत्कण्ठा, विषाद, कातरता, भय, त्रास, सोच, हित वस्तु की प्राप्ति न होने का दुःख।—की मुद्रा (वा०) ध्यानमग्नता, सोच की अवस्था।—कुल या तुर (गु०) [चिन्ता+आकुल या आतुर] उद्विग्न, व्याकुल, चिन्तित।—न्वित (गु०) चिन्तायुक्त, उदास, उन्मनस्क।—पर (गु०) भावनायुक्त चिन्तित।—मणि (पु०) ब्रह्मा, कल्पित मणि, परमेश्वर, एक बुद्ध का नाम, कण्ठ में चिन्तामणि, भँवरी वाला घोड़ा, एक गणेश विशेष, यात्रा का एक योग, सरस्वती देवी का मंत्र।—वेश्म तत्० (पु०) मंत्रणगृह, गोष्ठीगृह।

चिन्तित तत्० (गु०) [चिन्ता+इतच्] चिन्तान्वित, भावनायुक्त, सोची।

चिन्त्य तत्० (वि०) विचारणीय, विचार करने योग्य।

चिन्दी दे० (स्त्री०) टुकड़ा, कपड़े का टुकड़ा।

चिन्मय तत्० (पु०) चैतन्यमय, परमात्मा।

चिन्ह तत्० (पु०) लक्षण, पहचान, अङ्क, दाग, परिचय, पताका।

चिन्हवाना (क्रि०) पहिचान कराना।

चिन्हानी दे० (स्त्री०) निशानी, सहिदानी।

चिन्हार तत्० (पु०) परिचित, पहचाना हुआ, लक्षित, अङ्कित, ज्ञात पहिचान।

चिन्हारी तत्० (स्त्री०) परिचय, ज्ञान पहिचान।

चिन्हित तत्० (गु०) चिन्हयुक्त, अङ्कित, मनोनीत, सङ्केतित, दागी।

चिपकना दे० (क्रि०) लगना, सटना, चिपक जाना, सटजाना, दो वस्तुओं का आपस में मिल जाना।

चिपकाना दे० (क्रि०) सटाना, लगाना। [लिबलिबा।

चिपचिपा दे० (गु०) लसदार, लसलसा, सटनेवाला,

चिपचिपाना दे० (क्रि०) लसलसाना।

चिपटना दे० (क्रि०) लिपटना, चिपकना, सटना।

चिपटा दे० (गु०) सटा हुआ, चिपका, लिपटा, बैठा व धँसा हुआ, चपटा।

चिपटाना दे० (क्रि०) सटाना, लिपटाना, चिप्पी लगाना, आलिङ्गन करना।

चिपड़ाहा दे० (गु०) चिपचाई या कियाई हुई आँख, कीचड़ भरी आँख। [चपड़ी, गोइठी।

चिपड़ी, चिपरी दे० (स्त्री०) उपरी, गोइठी, उपला,

चिपरक दे० (पु०) धान्य चमस, चिह्ना।

चिपरा दे० (पु०) गोंद, लासा।

चिप्पक दे० (गु०) चिपचिपाहा। (पु०) पक्षीविशेष।

चिप्पा दे० (पु०) चीप, पैबन्द जोड़।

चिप्पी दे० (स्त्री०) टिकिया, पैबंद थिगरी, टिकरी, फूटी और फटी वस्तुओं में जो जोड़ी जाती है।

चियावला दे० (पु०) लड़कपन, लड़केकासा खुलडुला।

चिबिल्ला दे० (गु०) नटखट, सिबिल, चिलबिला।

चिबुक तत्० (पु०) ओठ के नीचे का भाग, ठुड्डी, ठोढ़ी दाढ़ी, वृक्षविशेष, मुचकुन्द वृक्ष।

चिमचिमा दे० (पु०) तेलछट, तेल का मैल, जमा हुआ तेल। [सटना।

चिमटना दे० (क्रि०) चिपकना, चिपटाना, लिपटना,

चिमटा दे० (पु०) मोंचना, चीमटा, आग उठाने के लिये लोहे या पीतल का एक प्रकार का बर्तन सँड़सी, चिमटा। [लगाना।

चिमटाना दे० (क्रि०) लिपटाना चिपटाना, गले

चिमटी दे० (स्त्री०) चुटकी, सँड़सी छोटा चिमटा।

चिमड़ा दे० (गु०) लचीला, कड़ा, चीमड़।

चिमड़ी दे० (स्त्री०) बरी, सूखी हुई, शुष्क।

चिमसा दे० (पु०) पानी का सरेस, लसलसा।

चिर तत्० (अ०) बहुत काल, दीर्घकाल, बहुत दिन का, बहुत दिन तक, विलम्ब, देरी, अरसा।—कारी (गु०) विलम्ब से काम करने वाला, आलसी, दीर्घसूत्री, शिथिल, ढीला।—काल (पु०) दीर्घकाल, अनेक दिन, सदा, सब समय।—चिराना (क्रि०) चिड़चिड़ाना, कटकटाना।—जीवक (गु०) चिरजीवी, बहुत दिनों तक जीने वाला एक वृक्ष विशेष।—जीवी दीर्घजीवी, विष्णु, काक, जीवक वृक्ष, शाल्मली वृक्ष, मार्कण्डेय मुनि, अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृप और परशुराम, ये चिरजीवी हैं।—स्थायी (पु०) नित्य, सर्वदा रहने वाला।

चिरई (स्त्री०) पक्षी, पंछी, चिड़िया।

चिरकना (क्रि०) थोड़ा थोड़ा पाखाना फिरना।

चिरकारी (गु०) दीर्घ सूत्री, आलसी।

चिरम् तत्० (अ०) देर, देरी, अरसा, अतिकाल।

चिरञ्जीव तत्० (गु०) दीर्घायु, यह आशीर्वाद के अर्थ में कहा जाता है। [वाला, दीर्घायु।

चिरञ्जीवी तत्० (वि०) चिरजीवी, बहुत दिनों जीने

चिरकुट दे० (पु०) चिट, चिथड़ा, फटा, पुराना।

चिरकुटिया दे० (गु०) गुदड़िया, चिथड़िया, गुदड़ वाला, योगियों का एक भेद, स्थायी झोपड़ी।

चिरचिरा दे० (पु०) अपामार्ग, पौधा विशेष, एक औषध का नाम।

चिरचिराना दे० (क्रि०) चरचराना, चरचर शब्द होना, बकवाद करना, कटकटाना, कटकना।

चिरचिराहट दे० (स्त्री०) चरचरापन, झनझनाहट।

चिरजीव तत्० (गु०) दीर्घ जीवन, दीर्घायु।

चिरण्टी तत्० (स्त्री०) युवती स्त्री, पिता के घर रहने वाली युवती, विवाहिता या अविवाहिता कन्या।

चिरन्तन तत्० (गु०) पुरानी, प्राचीन।

चिरवाना दे० (क्रि०) चिराना, फड़वाना।

चिराद दे० (पु०) माँस भूनने की गन्ध।

चिराग दे० (पु०) दिया, दीपक, प्रदीप, यथा—"चिराग जलाओ"। चिराग बुझ गया," "चिराग तले अँधेरा।

चिराना दे० (क्रि०) फड़वाना, चिरवाना। (वि०) चिरकालीन, पुराना, फटा हुआ, चिर गया, तड़क गया, चटक गया। [दीर्घजीवी।

चिरायु तत्० (पु०) देवता। (गु०) चिरजीवी,

चिरु तत्० (पु०) बाहु और कन्धे का जोड़, मोढ़ा।

चिरैया दे० (स्त्री०) चिड़िया, पक्षी, वर्षा का पुष्य नक्षत्र।

चिरौंजी दे० (स्त्री०) पियाला, शुष्कफल विशेष।

चिरौरी दे० (स्त्री०) विनती, प्रार्थना, विनय, अनुनय, खुशामद। [कीच।

चिर्मटी तत्० (स्त्री०) ककड़ी।

चिल दे० (पु०) पक्षी विशेष, अतायी, अबाद पक्षी,

चिलक दे० (स्त्री०) चमक, झलक, प्रकाश, दीप्ति।

चिलकना दे० (क्रि०) चमकना, झलकना, रह रह कर दर्द की टीस होना।

चिलगोज़ा (पु०) मेवा विशेष ।
चिलचिल (स्त्री०) अबरक, अभ्रक । [चिल्लाना]
चिलचिलाना दे० (क्रि०) शोर मचाना, किकियाना,
चिलड़ाहा दे० (गु०) जुओं से भरा हुआ, जुयेंला, चिल्लर भरा ।
चिलबिला दे० (वि०) चिलबिल्ला, चपल, नटखट ।
चिलम या चिलिम दे० (स्त्री०) मिट्टी का एक बर्तन जिसमें तम्बाकू और आग रख कर हुक्का पीते हैं ।—बरदार (पु०) चिलम भरने वाला नौकर ।—बरदारी (स्त्री०) चिलम भरना, चिलम पिलाना, चिलम पिलाने वाले का काम ।—तमाकू (स्त्री०) चिलम और तमाकू । —चट (गु०) अधिक चिलम पीने वाला ।
चिलमची दे० (स्त्री०) हाथ आदि धोने का देग के आकार का पात्र, छोटी पतली चिलिम ।
चिलमन, चिलवन दे० (स्त्री०) चिक, झंझरी । यथा-
दोहा
" आयो पिया मेरे नैन में पुतली देउँ बिछाय ।
पलकन चिलवन डार दूँ, बैठे बीन बजाय ॥"
चिलहला दे० (गु०) पङ्किल, किचड़ाहा, पकेला ।
चिलहोरना दे० (क्रि०) ठोगाना, ठोकराना ।
चिलिक दे० (स्त्री०) मोंच, हेंच, मोचड़, व्यथा, दर्द ।
चिल्लड़ दे० (पु०) चीलर, जूँई, ढील ।
चिल्लपों दे० (स्त्री०) चिल्लाना, शोरगुल, पुकार, दुहाई ।
चिल्ला दे० (पु०) धनुष का रोदा, ज्या, पगड़ी का छोर जो कलाबत्तू का होता है, चालीस दिन का समय, चालीस दिन का विकट जाड़ा,
"चिल्ला जाड़े दिन चालीस,
घन के पन्द्रह मकर पचीस ।"
चिल्लाना दे० (क्रि०) चिग्घारना, पुकारना, शोर करना, ऊँचे स्वर से बोलना ।
चिल्लाहट दे० (स्त्री०) पुकार, चिंघार शोरगुल ।
चिल्ली दे० (स्त्री०) लोध्र बथुआ का शाक, कपड़े का बना भोजन विशेष । [वाला लड़कों का एक खेल ।
चिल्हवाड़ा दे० (पु०) पेड़ों पर चढ़ कर खेला जाने
चिबुक (पु०) ठोढ़ी ।
चिहाना दे० (क्रि०) सग होना, विराग उत्पन्न होना ।
चिहिकना दे० (क्रि०) चहकना, सनसनाना, पक्षियों का बोलना, चाहिकना ।

चिहुर तद्० (पु०) चिकुर, बाल, केश ।
चिहुँकना (क्रि०) चौंकना ।
चिहुँटना (क्रि०) चुटकी काटना ।
चिहुँटनी दे० (स्त्री०) घुँघची ।
चिहुँटी दे० (स्त्री०) चुटकी ।
चींटी दे० (स्त्री०) चिंवटी, चिंऊटी, पिपीलिका ।
चींचपड़ दे० (स्त्री०) किसी बड़े या सबल के सामने प्रतिकार या विरोध में किया जाने वाला कार्य ।
चींथना दे० (क्रि०) फाड़ना, चिथड़ा करना, थिल थिला होना ।
चीऊटा दे० (पु०) कीट विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध कीट ।
चीक दे० (पु०) चिल्लाहट ।
चीकट दे० (पु०) तैल का मैल, लसार मिट्टी ।
चीकन दे० (वि०) चिकना, फिसलन ।
चीख दे० (पु०) चिंघाड़, चिल्लाहट ।
चीखना दे० (क्रि०) चिल्लाना, चखना, स्वाद लेना ।
चीखर, चीखला दे० (पु०) कीच, गारा ।
चीखा दे० (क्रि०) चखा स्वाद लिया ।
चीखुर दे० (पु०) गिलहरी, कठबिल्ली ।
चीज दे० (स्त्री०) सत्तात्मक पदार्थ वस्तु द्रव्य । आभूषण, [जैसे, वह चीज गिरों रख कर आये हैं, लड़की हुबड़ी है उसे कोई चीज बनवा दो ।
चीठी दे० (स्त्री०) चिट्ठी पत्री ।
चीड़ दे० (पु०) देशी लोहा विशेष, काष्ठ जाति ।
चीत तद्० (पु०) चित्त, मन, दिल ।
चीतना दे० (क्रि०) चाहना, इच्छा करना, मनोरथ करना, चित्र बनाना, चित्र करना, चितेरना ।
चीतल दे० (पु०) तेंदुआ, चीता, बाघ, सर्प भेद ।
चीता दे० (पु०) चाह, इच्छा, मनोरथ, बुद्धि एक जाति का व्याघ्र ।
चीत्कार तद्० (पु०) चिल्लाहट, चिग्घाड़, पुकार ।
चीथड़ा दे० (पु०) लत्ता, पुराने रद्दी कपड़े का टुकड़ा ।
चीथना दे० (क्रि०) चिथेड़ना, बकोटना, फाड़ना, खरोचना, टुकड़े टुकड़े करना ।
चीन तद्० (पु०) देश विशेष, भारत के उत्तर पूर्वस्थित देश, वस्त्र विशेष, जिसका मांडी बनता है, झंडा, सून, सीसा, धातु । [देश की वस्तु ।
चीनी दे० (स्त्री०) खाँड, शक्कर, शर्करा । (गु०) चीन

चीनांशुक तद्० (पु०) रेशमी वस्त्र, चीन का बना वस्त्र विशेष । [करना, जानना ।

चीन्हना तद्० (क्रि०) पहचानना, परिचय (मुहावरा)

चीन्हा तद्० (क्रि०) पहिचाना । (पु०) चिन्ह, निशानी ।

चीपड़ दे० (पु०) आँख का मल, आँख का कीचड़।

चीमड़ दे० (वि०) जो खींचने मोड़ने झुकाने से न तो टूटे न फटे । [कपड़ा, साड़ी, खींच।

चीर तद्० (पु०) पेड़ की छाल, पुराने वस्त्र का टुकड़ा।

चीरना दे० (क्रि०) फाड़ना, फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े कर देना ।

चीरफाड़ दे० (स्त्री०) चीरना फाड़ना ।

चीरा दे० (स्त्री०) पगड़ी. गाँव की सीमा का पत्थर, चीर कर बनाया हुआ घाव ।—उतारना (क्रि०) किसी पुरुष का किसी स्त्री के साथ प्रथम समागम। —बन्द दे० (पु०) चीरा बाँधनेवाला । (वि०) कुमारी, क्वारी।

चीरी दे० (स्त्री०) झींगुर एक कीट विशेष ।

चीरैता दे० (पु०) भूनिम्ब, औषधि विशेष ।

चीर्ण तद्० (पु०) विदीर्ण फटा हुआ, खण्डित ।—पर्ण (पु०) निम्ब वृक्ष, पुराने पत्ते ।

चील दे० (पु०) एक पखेरू का नाम ।—झपट्टा मारना (वा०) बलात्कार से छीन लेना, झपट लेना ।

चीलर दे० (पु०) ढील, जूई जूँ, चीलड़ ।

चीला दे० (पु०) मूँग की पीठी या मीठे आटे के घी में सिके एक प्रकार के कड़ाई में हाथ से पसार कर बनाये गये पुरामठे ।

चीवर तद्० (पु०) सन्यासी का वस्त्र कौपीन।

चुआन दे० (स्त्री०) चरण, झरना, जल निकलने की भूमि, नहर, गढ्ढ सोता।

चुआना दे० (क्रि०) निकालना, टपकना ।

चुकती दे० (स्त्री०) निपटारा, समाप्ति, न्याय, फैसला।

चुकना दे० (स्त्री०). समाप्त होना, चुकता होना, भरण होना, घटना, न्यून होना ।

चुकाई दे० (स्त्री०) चुकौती, चुकती, चुकौता ।

चुकाना दे० (क्रि०) निपटाना, मोल ठहराना ।

चुकौता दे० (पु०) निपटारा, निपटन ।

चुक्कड़ दे० (पु०) कुल्हिया पुरवा, मोलुवा ।

चुक्कार दे० (पु०) गर्जन, गरज ।

चुक्की दे० (स्त्री०) धूर्त्तता, धूर्ताई धोखा, चाईपन ।

चुक्ती दे० (स्त्री०) निमम, निपटारा, परिमित, परिणाम, समाधान, निष्पत्ति, फैसला । [अम्लशाक ।

चुक्र तद्० (पु०) चूक, खट्टा, अम्लरस, खटाई,

चुगन दे० (स्त्री०) चुनन, बिनन, चुनत ।

चुगना दे० (क्रि०) दूँगना, चुगना, बिनना।

चुङ्गी दे० (स्त्री०) महसूल, अश्वदान, भिक्षा, एक प्रकार का सरकारी कर, जो दूसरी जगह से आने वाली नई वस्तुओं पर लगता है ।—घर (पु०) जहाँ चुङ्गी वसूल की जाती है । [देना, चुमकारना ।

चुचकारना दे० (क्रि०) आश्वासन करना, सान्त्वना

चुचकारी दे० (स्त्री०) चुमकारी, फुसलाई, पुचकारी ।

चुचाना दे० (क्रि०) चूना, टपकना, टपटपाना, गिरना, बहना ।

चुचाड़ दे० (पु०) बड़ी चूँची, मोटा स्तन, बड़ी छाती।

चुञ्चु तद्० (पु०) मुनि विशेष, चोंच ।

चुञ्चुक तद्० (पु०) भेंड, मेष ।

चुटकी (स्त्री०) नोंच, दो अङ्गुलियों के मिलाने से जो मुद्रा बनती है । मुट्ठी भर, पचास रहने के लिये बाँध जिससे कपड़ा सफेद ही रह जाता है । एक प्रकार का गोटा जिसे बिछियाँ भी कहते हैं । एक प्रकार का चूरन, सीए हुए कपड़े को फैलाना, स्त्रियों के अँगूठे में पहनने की अँगूठी । बधाई, चुटकी बजाना ।—चलाना (वा०) रुपया परखना। अँगुलियों से कपड़ा चीरना ।—लगाना (वा०) जेब काटना ।—लेना (वा०) दबाना, नोचना, आशा करना गलाना, गरम करना, उपहास करना, काम करना, दिक करना ।—में (वा०) शीघ्र बहुत शीघ्र ।—बजाते में (वा०) अत्यन्त शीघ्र ।—यों में उड़ाना (वा०) हँसी में उड़ा देना ।—यों में काम होना (वा०) शीघ्र काम होना ।

चुटकुला दे० (पु०) विलक्षण बात, लटका।—छोड़ना (वा०) विलक्षण बात कहना, कोई ऐसी बात कहना जिससे कोई नयी बात पैदा हो ।

चुटफुट दे० (स्त्री०) फुटकर चीज़ । [चुटीला ।

चुटला दे० (पु०) चुटिया, जूड़ा, चोटी । (वि०)

चुटाना दे० (क्रि०) घाव लगना, चुटैल होना।
चुटिया दे० (पु०) चोरों का भेद जानने वाला।(स्त्री०) चोटी, शिखा। [चोटिल करना, ज़ख़मी करना।
चुटियाना दे० (क्रि०) घाव करना, आक्रमण करना,
चुटीला दे० (गु०) घायल, आहत, क्षत विक्षत।
चुड़िहार, चुड़ीहारा दे० (पु०) चूड़ी बनाने और बेचने वाला।
चुड़ूवा दे० (पु०) चीऊड़ा, चर्वण, चौरा।
चुड़ैल दे० (स्त्री०) प्रेतनी, डाकिनी, फूहड़।
चुनचुनी दे० (स्त्री०) खजुलाहट, चरपट्ट, कृमि, खजूं।
चुनत या चुनट दे० (स्त्री०) चुनन, तह, परत, वल।
चुनरी दे० (स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का रङ्गीन वस्त्र।
चुनाना दे० (क्रि०) बिनवाना, ईंटे चुनवाना, ईंटे चुनवा कर दवा देना, गाड़ देना, तोपना।
चुनावट दे० (स्त्री०) चुनट, तह, परत।
चुनौटी दे० (स्त्री०) चूना रखने का पात्र, चूनादानी।
चुनौती दे० (स्त्री०) ललकार, प्रचार, बढ़ावा, चिढ़, धिक्कार।
चुन्धला दे० (गु०) तिरमिरा, चकचौंधा, नेत्ररोगी।
चुन्धलाना दे० (क्रि०) चौंधियाना, तिरमिरा होना।
चुन्धा दे० (गु०) जिसे न सूझे, छोटी आँखोंवाला।
चुना दे० (क्रि०) चुगना चुगलेना चुनना, बिनना।
चुन्नी दे० (स्त्री०) छोटी पद्मराग मणि, लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े। [गोपन, अवाक्।
चुप दे० (गु०) निःशब्द, नीरव, मौन, अनबोल,
चुपचाप दे० (गु०) मौन, बिन बोले चाले, निःशब्द, गुप्त रीति से, शब्द रहित।
चुपड़ना दे० (क्रि०) चिकनाना, मलना, मसलना।
चुपाचुप दे०(गु०)चुप होकर,गुप्तरूप से,अकस्मात्,सहसा।
चुप्पा दे० (गु०) कम बोलने वाला, घुन्ना।
चुप्पी दे० (स्त्री०) मौनता, निःशब्दता, शब्दहीनता, ख़ामोशी [गाहन।
चुभकी दे० (स्त्री०) डुबकी, बुड़की, गोता, अव
चुभना दे० (क्रि०) घूमना, पैठना बिधना, छिदना, हृदय में खटकना, चित्त में बना रहना, मग्न, लीन।
चुभाना या चुभोना दे० (क्रि०) घुसेड़ना, पैठालना, छेदना, बेधना।

चुमकार दे० (पु०) चुचकार शब्द, फुसलाना, आश्वासन देकर वश में करना। [जन करना।
चुमकारना दे० (क्रि०) टिटकारना, फुसलाना, उत्ते-
चुमाना तद्० (क्रि०) चूमा दिलवाना, विवाह की एक रीति।
चुम्बक तद्० (पु०) एक प्रकार का लोहा, पत्थर विशेष, लोहा खींचने वाली एक धातु।
चुम्बन तद्० (पु०) मुखसंयोग, चुम्मा, चूमा।
चुम्बा तद्० (पु०) चुम्बन, चूमा।
चुम्बित तद्० (गु०) कृत चुम्बन, चुम्मा लिया हुआ।
चुम्मा तद्० (पु०) चुम्बा, मिट्ठी, ओठ से ओठ छूना।
चुरकी दे० (स्त्री०) चिकुर, शिखा, चोटी।
चुरकुट दे० (पु०) फटा कपड़ा, चूरचार, चूरन बुकनी।
चुरगाना दे० (क्रि०) बकना, चिल्लाना, चें चें करना।
चुरमुरा दे० (गु०) चुर चुर करनेवाला, चर्वण विशेष।
चुराना दे० (क्रि०) चोरी करना, अपहरण करना, हरना।
चुरी दे० (स्त्री०) चूड़ी, काँच की कँगनी।
चुरुगाना दे० (क्रि०) बड़बड़ाना, बकना।
चुर्त दे० (स्त्री०) तन्द्रा, आलस, ऊँघ, ऊँघाई।
चुल दे० (स्त्री०) खुजलाहट, खुजली, खाज, कण्डु।
चुलकना दे० (क्रि०) बिलबिलाना, चुलचुल करना, खुजाना।
चुलचुल दे० (पु०) चञ्चलता, चपलता।
चुलचुलाना दे० (क्रि०) गुदगुदाना, कुलबुलाना, खुजलाना, चुलचुल करना।
चुलचुली दे० (क्रि०) गुदगुदी, कुलमुली।
चुलबुला दे० (गु०) चञ्चल, चतुर, चपल, नटखट।
चुलबुलाहट दे० (स्त्री०) चञ्चलता, छटपटिया।
चुलबुलिया (गु०) चुलबुल, चञ्चल।
चुलहाई दे० (गु०) कामातुर, कामी, लम्पट, व्यभिचारी।
चुलहारा दे० (गु०) कामुक, कामातुर।
चुलाना दे० (क्रि०) चुवाना, टपकाना, गिराना।
चुल्ला दे० (गु०) चुन्धला, चुन्धा, तिरमिरा।
चुल्लू दे० (पु०) पसर, पसर भर एक हाथ का सम्पुटाकार।
चुवाना दे० (क्रि०) टपकाना, धीरे धीरे गिराना।
चुसकी दे० (स्त्री०) घूँटभर, मुर्च्छा।

घुसफर दे० (गु०) पियक्ड़, खूब पीने वाला, अधिक घूमने वाला।
घुसाना (क्रि०) घुसवाना।
घुस्त (गु०) फंसा हुआ, तत्पर, चलता।
घुस्सी दे० (स्त्री०) किसी फल का रस।
घुहचुहा दे० (गु०) शोभायमान, मनोहर, गहरा रंगा गया, रसीला। [चुहं चुह करना।
घुहचुहाना दे० (क्रि०) अधिक रंग, पक्षियों का
घुहल दे० (स्त्री०) ठठोली, ठट्ठा, विनोद।
घुहला दे० (गु०) मसखरा, ठठोला, हँसोड़।
घुहली दे० (गु०) देखो घुहला।
घूचहाट दे० (स्त्री०) चिड़ियों का शब्द। [पयोधर।
घूँची दे० (स्त्री०) कुच, स्तन, थन, छाती, भिटनी,
घूँटा दे० (पु०) चींटा, कीड़ा विशेष, जो ज़मीन में रहता है। [पकौड़ना।
घूँटना दे० (क्रि०) तोड़ना, नष्ट करना, फोड़ना,
घूआना दे० (क्रि०) घुलाना, चुवाना, निकालना, झारना, टपकाना।
घूक दे० (गु०) भूल, भ्रम, अज्ञात अपराध, ग़लती। एक प्रकार की खटाई का सत्त। (वि०) खट्टा।
घूकना दे० (क्रि०) भूल, भ्रम करना, लक्ष्य भ्रष्ट होना।
घूका दे० (गु०) भूला, भ्रान्त, लक्ष्य भ्रष्ट। (पु०) इस नाम का एक खट्टा शाक।
घूड़ तद्० (पु०) चोटी, कलँगी, शङ्खचूड़ नामक दैत्य, खम्भे या घर का ऊपरला हिस्सा, छोटा कूप, आभरण विशेष, सोना या चाँदी की चूड़ी जिसे विधवा पहनती हैं। हाथी के दाँतों में पहिनाने की चूड़ी, खाट की पाटी का सिरा या नोक।
घूड़ा तद्० (स्त्री०) मयूरशिखा, सिर के बीच की शिखा, बाहुभूषण, मस्तक, मस्तकस्थ, धन्धाकेश। दशविध संस्कारान्तर्गत संस्कार विशेष, मुण्डन। यह संस्कार विषम वर्ष ही में होता है। यथा प्रथम तृतीय और पञ्चम।—करण (पु०) संस्कार विशेष मुण्डन,मूड़न।—मणि (पु०) शिरोरत्न,शिरोभूषण, अलङ्कार विशेष, बीज, सब में श्रेष्ठ, मुखिया, गुञ्जा। (गु०) प्रधान, श्रेष्ठ, मान्य।—मणियोग (पु०) जब रविवार को सूर्यग्रहण अथवा सोमवार को सूर्यग्रहण हो, तब यह योग लगता है।

चूड़ी दे० (स्त्री०) आभूषण विशेष, इस अलङ्कार का पहनना सधवा का चिन्ह है। [मांग, चुड़ा।
चूतड़ या चूतर दे० (पु०) नितम्ब, जंघा का ऊपरी
चूतिया दे० (पु०) उल्लू, वज्रमूर्ख, नासमझ, मूर्ख।—चयार दे० (वि०) चूतिया।—पन्थी दे० (स्त्री०) मूर्खता, बेवकूफ़ी। [वस्तु।
चून दे० (पु०) गेहूँ का चूरन, आटा, पिसान, पीसी
चूना दे० (पु०) चूर्ण जो कङ्कड़ पत्थर या सीप को जला कर बनाते हैं, जो मकान बनाने या पोतने के काम में आता है। (क्रि०) टपकना, झरना, गिरना।—लगाना (वा०) बड़ा भारी धोखा देना, हानि पहुँचाना, लज्जित करना। (क्रि०) पके हुए फल का पेड़ से टूट कर नीचे गिरना, टपकना। [आदि की कणिका।
चूनी दे० (स्त्री०) अन्न की चुनी, केराई, चावल
चूम दे० (पु०) टीस, व्यथा, चमक, वेदना, दर्द, पीड़ा। [करना।
चूमना तद्० (क्रि०) चूमा लेना, मिट्ठी लेना, प्रेम
चूमा तद्० (पु०) चुम्बन, चुम्मा, मिट्ठी।
चूमाचाटी दे० (स्त्री०) चूम और चाटकर प्रेम दिखाने की एक क्रिया।
चूर तद्० (पु०) चूर्ण, बुकनी, भुरभुरा, खण्ड खण्ड किया हुआ, निमग्न, तल्लीन, नशे में मदमस्त। —चूर (वा०) टूक टूक, खण्ड खण्ड।—रहना (वा०) मस्त रहना, मग्न रहना, फूले रहना, अतिशय आसक्त होना।—करना (वा०) टुकड़े टुकड़े करना, दबाना।—होना (वा०) फँसना, आसक्त होना।
चूरन तद्० (पु०) बुकनी, रज, पाचन की औषधि।
चूरा दे० (पु०) रेत, भुरभुर, चूर, रेतन, बुरादा।
चूरी दे० (स्त्री०) घी चुपड़ी हुई रोटी, चूड़ी, स्त्रियों का गहना विशेष।
चूर्ण तद्० (पु०) चूर, बुकनी, रेणु, धूल, रेत, चूना, आटा, पिसान, चूरन, सक्तु, सतुआ।—कार (गु०) चूना बनाने वाला, वर्णसङ्कर जाति विशेष। —कुन्तल (पु०) अलक, ज़ुल्फ़, केश विन्यास विशेष।
चूर्णा तद्० (पु०) आर्य छन्द का एक भेद।

चूर्णिका तद्० (स्त्री०) पद्य, सतुवा, चूरन, गद्य का एक भेद, सक्षेप, श्रीमद्भागवत की एक टीका का नाम, फुटकल बातें, पुष्पिका कूट।
चूर्णित (गु०) चूर्ण किया हुआ।
चूर्मा दे० (पु०) मिठाई विशेष, घी चीनी मिलाया हुआ बाटी का चूरा, चूर्मा लड्डू।
चूल दे० (पु०) चोटी, रीछ के बाल, लकड़ी का जोड़, कील, लोह का फोला जो किवाड़ को चौखट से सटाये रहता है, पाटी का नुकीला भाग जो पावे में कसा रहता है।
चूलिका तद्० (स्त्री०) हाथी के कान का मैल, हाथी की कनपटी खम्भे का ऊपरी भाग, नाटक का एक अंग जिसमें किसी घटना को दिखाने के बजाय पर्दे की आड़ से उसकी सूचना मात्र दे दी जाती है।
चूल्हा दे० (पु०) मिट्टी की बनी वह वस्तु जिसमें आग रखकर रसोई बनाते हैं।
चूल्ही दे० (स्त्री०) छोटा चूल्हा।
चूधना दे० (क्रि०) चूअना, झरना, टपकना, झड़ना।
चूसना दे० (क्रि०) पीलेना, खींचलेना, चुरालेना।
चूसनी दे० (स्त्री०) चूसने वाली वस्तु या जो वस्तु चूसी जाय। [चूहड़ी (स्त्री०) भङ्गिन।
चूहड़, चूहड़ा दे० (पु०) मेहतर, भंगि, अधम जाति।
चूहना दे० (क्रि०) चूसना, चूस लेना, पचोदना।
चूहा दे० (पु०) मूषिक, मूसा, इन्दुर।
चूही दे० (स्त्री०) छोटी मूस, मूषिका, मूसे की मादा।
चेंचपेंच दे० (वा०) कचपच, चिचपिच, शोरगुल।
चेंची दे० (स्त्री०) सूई रखने का घर।
चेंचें दे० (वा०) चुहचुहाना, चेंचें करना, चूँचाँ, पक्षियों का शब्द।
चेंचपड़ दे० (वा०) नाकानुकर, स्पष्ट नहीं कहना, चिचपिच। यथा—'चेंचपड़ करने से क्या लाभ", "सच्ची बात यह थी, अभी तो यह चेंचपड़ कर रहा है।" "उसका चेंचपड़ न चलेगा।" [युवा, तरुण।
चेंडा दे० (पु०) यौवन, युवा अवस्था, छोटा, जवान,
चेंप दे० (पु०) गोंद, लासा, चिप, चिपकने वाली वस्तु, लसलसा, वृक्ष का फल।
चेनउ दे० (स्त्री०) सीतला माता का एक राग।
चेट तद्० (पु०) क्रीतदास, दास, भृत्य, कर्मकार, नौकर, सेवक, चेला, लौंडा, नफर, नाटकों में मसखरे को चेट कहते हैं।
चेटक तद्० (पु०) दास, भृत्य, उपपति, नायक विशेष, इन्द्रजाल विद्या, ठगने की विद्या।
चेटका तद्० (स्त्री०) श्मशान, मरघट।
चेटकी तद्० (पु०) इन्द्रजाली, जादूगर।
चेटिका तद्० (स्त्री०) दासी, नायिका विशेष।
चेटिकी तद्० (स्त्री०) दासी, उपपत्नी।
चेड़क, चेड़ा तद्० (पु०) दास, भृत्य, चेला।
चेत तद्० (पु०) सुधि, याद, स्मरण, बोध, ज्ञान, चेतनता।
चेतन तद्० (पु०) [चित्+अनट्] आत्मा, प्राण, जीव, बुद्धि, अनुभव, बोध। (गु०) प्राणयुक्त, ज्ञानवान। —ता (स्त्री०) चेतन के धर्म।
चेतना तद्० (स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, चेतनता, चेत। (क्रि०) स्मरण करना, सुध करना, मन में रखना, सोचना, याद आना, ध्यान करना।
चेतन्य तद्० (वि०) देखो चैतन्य। [चैतन्य हुआ।
चेता तद्० (पु०) मन, चित्त, चेतना, सावधान हुआ,
चेतावनी तद्० (स्त्री०) सावधान होने की सूचना।
चेतौनी दे० (स्त्री०) चेतावनी, सूचना।
चेदि तद्० (पु०) एक प्राचीन नगर जिसका स्मारक चँदेरी नाम का अब भी बुन्देलखण्ड में है।—राज तद्० (पु०) शिशुपाल।
चेप (पु०) चिपचिपाहट, लसलसाहट, लस। [जोड़ना।
चेपना दे० (क्रि०) सटाना, लगाना, चिपकाना,
चेय दे० (वि०) संग्रहणीय, चुनने योग्य। [गुलाम।
चेरा दे० (पु०) सेवक, दास, भृत्य, कर्मकार, किङ्कर,
चेरी दे० (स्त्री०) किङ्करी लौंडी, भृत्या। [कपड़ा, लुगा।
चेल तद्० (पु०) [चिल्+घञ्] वस्त्र, वसन,
चेला तद्० (पु०) संन्यासी आदि के पालित पुत्र, उनकी गद्दी का उत्तराधिकारी, शिष्य। (स्त्री०) चेली।
चेघली दे० (स्त्री०) रेशमी वस्त्र विशेष, चेली का बना वस्त्र।
चेष्टा तद्० (स्त्री०) कायिक व्यापार, यत्न, उद्योग, श्रम अन्वेषण, अनुसन्धान।—नाश (पु०) प्रलय, सृष्टि का अन्त।

चेहरा (पु०) मुखड़ा, शक्ल, मुँह पर लगाने की मिट्टी का राक्षस वानरादि का मुखड़ा।
चेँटा दे० (पु०) काला चीउँटा।
चैत तद्० (पु०) चैत्र महीना, वर्ष का पहिला मास
चैतन्य तत्० (पु०) जीवात्मा, परमात्मा, ब्रह्मा, बुद्धि, ज्ञान, विचार, विवेचना, चेत, चेतना, प्रकृति। (गु०) सचेत, चेत में, चौकस, चेतन, चेतन्तता। (पु०) किसी किसी के मत से भगवान् का आविर्भाव विशेष। यह महात्मा १४८६ ई० में बंगाल के नवद्वीप नगर में उत्पन्न हुए थे। श्रीहट्ट निवासी जगन्नाथ मिश्र के यह पुत्र थे। इनकी माता का नाम शची देवी था, इनका नाम निमाई और इनके बड़े भाई का नाम विश्वरूप था। ये दोनों भाई यथा ज्ञान लाभ करके विरक्त हो गये। उस समय के नवद्वीप पण्डितों में, ये सर्वश्रेष्ठ समझे जाते थे। धीरे धीरे यह ज्ञान राज्य में अग्रसर होने लगे। थोड़े दिनों में इनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल गयी। इनके अनेक शिष्य हो गये। कहा जाता है कि इन्होंने बड़े बड़े चमत्कारिक काम किये हैं। इन्होंने अपना अन्तिम जीवन पुरी और वृन्दावन में बिताया। उत्कल देश के मन्दिरों में विष्णु मूर्त्ति के साथ इनकी भी प्रतिमा स्थापित है। ये गौड़िया वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य माने जाते हैं।
चैता (पु०) पक्षी विशेष, गाना विशेष।
चैती (स्त्री०) चैत्र में काटी जाने वाली फसल, रबी, राग विशेष। (गु०) चैत मास सम्बन्धी।
चैत्य तत्० (पु०) देवायतन, मसजिद, गिर्जा, चिता, गाँव का पूज्य वृक्ष, अश्वत्थ वृक्ष, मकान, यज्ञशाला बेल का पेड़, बौद्ध संन्यासी, बौद्धों का मठ।
चैत्र तत्० (पु०) चैत, वसन्त ऋतु का पहला महीना, इस महीने की पूर्णिमा, चित्रा नक्षत्र से युक्त होती है। मधु मास, बुद्ध संन्यासी, किन्नरों के एक पर्वत का नाम, चित्रा के गर्भ से बुद्ध के एक पुत्र का नाम, यज्ञभूमि, मन्दिर।
चैत्ररथ तत्० (पु०) चित्ररथ नामक गन्धर्व के बनाये हुए कुबेर के एक बाग़ का नाम, कुबेर का उद्यान।
चैद्य तत्० (पु०) चेदी देश का राजा शिशुपाल, दमघोष सुत।
चैन दे० (पु०) सुख, आनन्द, कल।
चैल तत्० (पु०) वस्त्र, वसन, कपड़ा। [जलावन।
चैला दे० (पु०) चीरी लकड़ी, जलाने की लकड़ी,
चोँकना दे० (क्रि०) चौंकना, गोभन, गड़ना, घबड़ाना, आश्चर्यित होना, अचम्भित होना, अचरज में आना, सोते सोते वर्रा उठना, गौ का दूध पीना।
चोँगला दे० (पु०) बाँस की नली, जिसमें काग़ज़ या पुस्तकें रखी जाती हैं।
चोँगा दे० (पु०) नली, नलुआ, नल।
चोँगी दे० (स्त्री०) नली, पोला नली। [का चोंच।
चोँच दे० (पु०) चञ्चु, ठोर, ठोंठ, चोच, चिड़ियों
चोँचला, चोचला दे० (पु०) हँसी दिल्लगी, हाव भाव, नखरा, विलास, नाज़। "धनिकों के चोंचले।"
"होश की अपने कुछ दवा कीजै।
मुझसे नाहक न चोंचला कीजै॥
चोँटला दे० (पु०) चुटीला, चँवरी, बाल गूँथने की डोरी, जिससे चोटी गूँथते हैं।
चोँड़ा तद्० (पु०) चूड़ा, जूड़ा, बाल का जूड़ा।
चोँथना दे० (क्रि०) चीरना, फाड़ना, चीथना, बकोटना, नोचना।
चोँप दे० (पु०) उत्साह, उछाह, चाह, इच्छा, सोने का एक गहना जिसे स्त्रियाँ दाँतों में पहनती हैं, हठहठी। [पक कर गिरा फल।
चोआ दे० (पु०) सुगन्धित द्रव्य विशेष, टपका फल,
चोआड़ दे० (पु०) पहाड़ी जाति विशेष, पहाड़ी डाँकू।
चोकर दे० (पु०) भूसी, सीठी, तुष, असार, आटे की भूसी, रई, रवा।
चोखा दे० (गु०) उत्तम, श्रेष्ठ, खरा, सच्चा, शुद्ध, तीक्ष्ण, तेज़ धार वाला। (स्त्री०) चोखी।
चोखाई दे० (स्त्री०) खराई, श्रेष्ठता, शुद्धता, तीक्ष्णता।
चोगा दे० (पु०) चारा, चिड़ियों का खाना, कामदार एक प्रकार का जामा।
चोचला दे० (पु०) हाव भाव, नखरा, नाज़।
चोज़ दे० (पु०) दूसरों को हँसानेवाली युक्ति युक्त बात, सुभाषित, व्यङ्ग पूर्ण उपहास।
चोट दे० (स्त्री०) घाव, थपे, धुस्सा, पटकन, मुक्का, धक्का, आघात, पछाड़—खाना (वा०) मार खाना, आहत होना, हानि उठाना, चूक जाना।—पर

चोट (वा०) दुःख पर दुःख, एक विपत्ति पर दूसरी विपत्ति।

चोटा दे० (पु०) बट्टा, जूसी, छोआ, गुड़ का मैल, सूद। [लँगड़ा करना।

चोटियाना दे० (क्रि०) चुटालना, चोटी पकड़ना,

चोटी दे० (स्त्री०) शिखा, पहाड़ का ऊपरी हिस्सा, सिर के मध्य का बाल समूह, झोंटा, झोंटी।—आकाश पर घिसना (वा०) अहङ्कार करना, अत्यन्त घमण्ड करना, अभिमान करना।—कट (वा०) दास, शिष्य, अपने अधीन का।—कटवाना (वा०) दास होना, अनुगत होना, अधीन बन जाना।—किसी के हाथ में आना (वा०) किसी को अपने अधीन करना, अपने वश में करना आज्ञावर्ती बनाना, दबाना, प्रभाव जमाना, अधिकार जमाना।

चोट्टा दे० (पु०) चोर, तस्कर, बटमार।

चोड़ दे० (पु०) जनानी कुरती, अँगिया, काँचली, झूला। तत्० (पु०) उत्तरीय वस्त्र, चोल नाम का प्राचीन देश।

चोत, चोथ दे० (पु०) गोबर, गोमय।

चोथना दे० (क्रि०) फाड़ना, चीरना, चोंथना, नोचना, खसोटना, उधेड़ना।

चोन्धला दे० (पु०) चुन्धला, अन्धा, तिरमिरा।

चोन्धलाना दे० (क्रि०) चुन्धलाना। [अन्धापन।

चोन्धी दे० (स्त्री०) धुन्ध, चुन्धलाई, तिरमिरी,

चोप दे० (पु०) चोंप, चाव, इच्छा, हर्ष, मनोरथ, उत्साह, उछाह, हौसला, लगन।—ना (क्रि०) मुग्ध होना।

चोबकारी (स्त्री०) कलाबत्तू का काम।

चोबदार (पु०) असाबरदार, चोब लेने वाला नौकर।

चोभा दे० (पु०) खोंच, खोल, मीना।

चोभी दे० (स्त्री०) छोटा चोभा। [दम्भ।

चोया दे० (पु०) चोआ, एक प्रकार का सुगन्धित

चोर तत्० (पु०) [चुर्+अच्] तस्कर, दूसरे धन चुराने वाला, चोट्टा, अपहारक, अपहरण कर्ता, बिना कहे सुने वस्तु ले जानेवाला।—खाना, घर (वा०) गुप्तगृह तहखाना, छिपा हुआ मकान।—मार्ग (पु०) छिपी राह, सिंद का मार्ग।

चोर कवि तत्० (पु०) यह संस्कृत के कवि काश्मीर निवासी थे। इनका दूसरा नाम विल्हण था। "विक्रमाङ्कदेव चरित" "कर्ण सुन्दरी" नाटिका और "चौर पञ्चाशिका" ये तीन ग्रन्थ इनके आज तक उपलब्ध हुए हैं। सुभाषित ग्रन्थों में इनके नाम से और भी उद्धृत श्लोक पाये जाते हैं, इसी से विद्वानों का अनुमान है कि इन्होंने और भी कोई ग्रन्थ बनाये होंगे। चौरपञ्चाशिका के निर्माण का हेतु बड़ा ही अद्भुत सुना जाता है। गुजरात के राजा वीरसिंह की पुत्री शशिकला को यह पढ़ाते थे, उस की सुन्दरता पर यह मोहित हो गये। इनका गान्धर्व विवाह भी हो गया। इसको सुनकर राजा ने इनको वध करने की आज्ञा दी। वध्य-स्थान तक पहुँचते पहुँचते, अपनी प्रेमिका के वर्णन में इन्होंने पचास श्लोक बना डाले। इनकी काव्य रचना का हाल सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। इस अद्भुत शक्ति और शुद्ध प्रेम को देख कर राजा ने अपनी लड़की विल्हण को ब्याह दी। ये कल्याण के राजा विक्रमादित्य की सभा के पण्डित थे। इनका समय ११ वीं सदी का अन्तिम और बारहवीं सदी का आदि व ... निश्चित जान पड़ता है।

चोरी तत्० (स्त्री०) अपहरण, हरन, चो... करना।

चोल तत्० (पु०) औषध विशेष, मजीठ, एक देश का नाम, यह देश कावेरी नदी के किनारे पर है। इस समय मैसूर राज्य का दक्षिण भाग। चोल देश को कर्नाटक भी कहते हैं।

चोला दे० (पु०) वस्त्र, काय, शरीर, यथा—यमुनादास ने चोला बदल दिया, अर्थात् उनका शरीरान्त हो गया, यथा उन्होंने कपड़े बदल दिये।—छोड़ना, बदलना (वा०) प्राण त्यागना।

चोली दे० (स्त्री०) अँगिया, काँचली। [विशेष।

चोवा दे० (पु०) चोआ ..., सुगन्धित द्रव्य

चोष (पु०) रोग विशेष। [रस का स्वाद लेना।

चोषण तत्० (पु०) [चुष्+अनट्] चूसना, चाभना,

चोष्य तत्० (पु०) [चुष्+य] चूसने योग्य, रस लेने योग्य, छः प्रकार के भोजन के अन्तर्गत एक प्रकार का भोजन।

चोमा दे० (पु०) वह रेती जिससे लकड़ी रेती जाती है।
चोदह दे० (पु०) वबदा, हनु, ठोढ़ी, ठुड्डी, गले का ऊपरी भाग।
चोदला दे० (पु०) लोंचा, चोभा, फीला, फील।
चोद्दाड़ दे० (पु०) एक पहाड़ में रहने वाली जाति।
चोंदान (पु०) पत्रियों की एक जाति। [काल।
चौ दे० (पु०) चार संख्या, ४, पिछले दाँत, हल का
चोअन्नी दे० (स्त्री०) चार आना, ।) रुपये का चौथाई भाग।
चोंक दे० (स्त्री०) झिझक, भटक, आशङ्का, चिहुँक।
चौंकना दे० (क्रि०) झिझकना, ठिठकना, अचम्भा करना, अचरज करना, आश्चर्यित होना।
चौंकैल दे० (गु०) झिझकने वाला, भड़कने वाला, बनैला, जङ्गली।
चौंगा दे० (पु०) कपट, छल, व्याज, फुसलाहट।
चौंगी दे० (स्त्री०) फुसलाहट, छल, कपट।
चौंट्ठ दे० (पु०) मूढ़, निर्बोध, अनसमझ, बेसमझ।
चौंतरा दे० (पु०) चबूतरा, ओटा, थाला, अथाई चौपाल। [तीस १४।
चौंतीस दे० (गु०) संख्या विशेष, चार अधिक
चौंध दे० (पु०) आँख तिरमिराना, साफ साफ नहीं दीखना, तिलमिली।
चौंधियाना दे० (क्रि०) दृष्टि का मन्द पड़ जाना, व्याकुल होना, घबड़ाना, उद्विग्न होना।
चौंरा दे० (पु०) अन्न का तलघर, खाद, अन्न रखने के लिये ज़मीन में किया हुआ गढ़ा।
चौंरी दे० (स्त्री०) चँवरी, छोटा चँवर, चामर, राज चिन्ह विशेष।
चौंसर दे० (पु०) खेल विशेष, चौपड़, यह खेल पासों से खेला जाता है, लुप का एक भेद, फूलों की माला।
चौक दे० (पु०) आँगन, मैदान, नगर का प्रधान बाज़ार।—ी (स्त्री०) तख़्त, काष्ठ निर्मित ४ पाये वाली बैठने की वस्तु, बाज़ार, हाट, पैठ, चौराहा, चौहट्टा, छोटा भाता, नाका।
चौकठा दे० (पु०) चौखटा, चौकोर बनी वस्तु।
चौकड़ दे० (गु०) सुन्दर, मनोहर, उत्तम, रमणीय, श्रेष्ठ, भला, बली, बलवान्, दृढ़ पुष्ट।
चौकड़ा दे० (पु०) भूषण विशेष, दो मोतियों का बाला, जिसे लड़के कानों में पहनते हैं। कर्ण-भूषण।
चौकड़ी दे० (स्त्री०) उछल कूद, फलाँग, उछाल, चार आदमियों का गुट, आभूषण विशेष, चतुर्युगी, पलथी। चार वस्तुओं का समूह, चार घोड़ों की गाड़ी।—भरना (वा०) कूद कूद कर चलना, जैसे हरिण चलते हैं। उछलना, कूदना।—भूलना (वा०) अपना काम भूलना, मोह में पड़ जाना, भौचक्का रह जाना।—मार बैठना (वा०) चारों पैर मोड़ कर बैठना, पशुओं का सुखासन, संकुचित होकर बैठना, सिमिट कर बैठना।
चौकन्ना दे० (गु०) सतर्क, सावधान, चौकस, सचेत, निपुण, जाग्रत, जागा हुआ, सचेष्ट, उद्योगी।
चौकपूरना दे० (वा०) वेदी बनाना, कुल परम्परा के व्यवहारानुसार वेदी पर बेल बूटे बनाना।
चौकभरना दे० (वा०) विवाह आदि मङ्गल कार्यों में चौक बनाना, चौक को मिठाई से भरना।
चौकस दे० (गु०) सावधान, चौकन्ना, सतर्क, पटु, दक्ष। यथा "दीनेश अपने काम में चौकस है।"
चौकसाई दे० (स्त्री०) सावधानी, सतर्कता।
चौकसी दे० (स्त्री०) धुन, रक्षा, कर्त्तव्यज्ञान, सावधानी।
चौका दे० (पु०) लीपा हुआ स्थान जहाँ रसोई बनायी जाती है, चौखूटा स्थान, चौकोनी भूमि, रसोई बनाने या ब्राह्मणों के सन्ध्या पूजन करने का स्थान, चौखूँटा पत्थर, चकला, सीसफूल, चार सींग वाला जङ्गली बकरा, चार वस्तुओं का समूह, चार बूटियों वाला ताश का पत्ता।
चौकी दे० (स्त्री०) चौकोनी काठ की बनी हुई वस्तु, कुरसी, रक्षा, पहरा, चौकसी, चौकीदारों के रहने का स्थान, भूषण विशेष जिसे लड़के या स्त्रियाँ गले में पहनते हैं।—दार (पु०) चौकी देने वाला, रक्षा करने वाला, पहरुआ।—दारी (स्त्री०) चौकीदार की मजूरी, चौकीदार की तनख़ाह।—देना (क्रि०) रखवारी करना, रक्षा करना, पहरा देना।—मारना (क्रि०) छिपकर महसूल को न चुकाना, महसूल मारना। [स्थान।
चौके दे० (पु०) चकले, कुरसे, पवित्र लीपा हुआ।

चौकोना दे० (गु०) चतुष्कोण, चौखूँटा, चार कोने का।
चौकोर दे० (गु०) चौकोना। [द्वार का ढाँचा।
चौखट दे० (पु०) द्वार के चारों ओर का काठ,
चौखटा दे० (पु०) चौफ्ठा, चौकोर काठ का ढाँचा।
चौखना दे० (वि०) चारमंज़िला, चार खण्ड वाला।
चौखा (पु०) वह स्थान जहाँ पर चार गाँवों की सीमा मिले। [मण्डल, चतुर्दिश।
चौखूँट (वि०) चारों ओर, चारों तरफ़। (पु०) पृथिवी
चौखूँटा दे० (गु०) चौकोना, चौकोर, चतुष्कोण।
चौगड़ा दे० (पु०) खरहा, शशक, खरगोश, शसा।
चौगड्डा दे० (पु०) स्थान जहाँ पर चार गाँवों की सरहद मिले, चौहट्टा, चार वस्तुओं का समूह।
चौगान दे० (पु०) मैदान, एक खेल विशेष, गेंद खेलने का स्थान, नगाड़ा बजाने की लकड़ी। [हैं, सटक।
चौगानी दे० (स्त्री०) हुक्के की नली जो सीधी होती
चौगिर्द दे० (वि०) चतुर्दिक्। [करना, चतुर्गुण।
चौगुना, चारगुना दे० (गु०) एक को चार बार
चौघड़ा दे० (पु०) पात्र विशेष, जिसमें चार घर या चार खूद हों, पत्ते की खोंगी जिसमें पान के चार बीड़े हों। बड़ी जाति की गुजराती इलायची।
चौड़ तत्० (पु०) चूड़ाकरण संस्कार। तद्० (वि०) चौपट, सत्यानाश।
चौड़ा दे० (गु०) फैला हुआ, प्रस्थ, चकला, पन्हा।
चौड़ाई दे० (स्त्री०) पाट, चकलाई, फैलाव, विस्तार, विस्तृति।
चौड़ान दे० (पु०) विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, चकलाई।
चौड़ाना दे० (क्रि०) चकलाना, फैलाना, विस्तृत करना, चौड़ा करना। [पालकी।
चौडोल दे० (पु०) पालकी विशेष, चौपलिया
चौतनी दे० (स्त्री०) छोटे बालकों की चारसमी दार टोपी, चौगोशिया टोपी, चौकलिया टोपी।
चौतरका दे० (पु०) पटमण्डप, वस्त्रगृह, तम्बू, कनात, रावटी।
चौतरा दे० (पु०) चौंतरा, चबूतरा।
चौतही दे० (स्त्री०) मोटा चार तह का बिछौना।
चौतारा दे० (पु०) वाद्य विशेष, चार तार का बाजा, यह तम्बूरे के समान होता है। [ताल।
चौताल दे० (पु०) रागिनी विशेष, मृदङ्ग का एक

चौथ दे० (पु०) चतुर्थांश, चौथा हिस्सा, ख़िराज़, एक प्रकार का कर जो मराठों के समय में लिया जाता था, चतुर्थी तिथि।—पन दे० (पु०) बुढ़ाई, बुढ़ापा।
चौथा दे० (गु०) चतुर्थ, चार संख्या की पूर्त्ति।—पन (पु०) चौथी अवस्था, बुढ़ाई।
चौथाई दे० (स्त्री०) चौथा हिस्सा, चौथा भाग।
चौथि दे० (स्त्री०) चतुर्थी तिथि।
चौथिया दे० (पु०) चौथे भाग का मालिक, चौथ लेने वाला।—ज्वर (पु०) चौथे दिन आने वाला ज्वर, चातुर्थिक ज्वर। [जो चौथे दिन की जाती है।
चौथी दे० (गु०) चौथा भाग, विवाह की एक रीति
चौदन्त दे० (गु०) चार दाँत का बचा, पशुओं की अवस्था विशेष, बली, हृष्ट पुष्ट। [उद्दण्डता।
चौदन्ती दे० (स्त्री०) शूरता, वीरता, अक्खड़पन,
चौदस या चौदश तद्० (स्त्री०) चतुर्दशी, चौदहवीं तिथि।
चौदह दे० (गु०) चतुर्दश, संख्या विशेष, १४।
चौदनिया, चौदानी दे० (स्त्री०) कर्णभूषण विशेष, बाला या बाली विशेष जिसमें चार मोती लगाये जाते हैं। [हृष्ट पुष्ट।
चौधर दे० (गु०) बलवान्, बली, मोटा ताज़ा,
चौधराई दे० (स्त्री०) चौधरी का काम, प्रधानता, मोटी, मोटपन, मुखियापन, अगुआपन, नेतृत्व।
चौधरी दे० (पु०) समाज का अगुआ, नेता, प्रधान, सरपञ्च, बाज़ार का मुखिया, अड्डे का मुखिया।
चौपई तत्० (स्त्री०) एक छन्द का नाम। अहीरों की होली की वह मण्डली जिससे वे फगुआ गाते घर घर घूमते हैं।
चौपट दे० (गु०) उजाड़, नष्ट, बरबाद टूटा, फूटा।—करना (वा०) उजाड़ना, उजाड़ देना, नष्ट करना, बिगाड़ना।
चौपटहा (वि०) चौपट करने वाला, सत्यानाशी।
चौपटा (वि०) सत्यानाशी, सर्वनाशी। [खेल, द्यूत।
चौपड़ दे० (पुं०) चौसर, खेल विशेष, पाँसों का
चौपतिया चौपत्ती दे० (स्त्री०) छोटी पुस्तक, लिखने की छोटी कापी, इत्यादि, गेहूँ के खेत में उत्पन्न होने वाली यह घास जो गेहूँ की फसल को

पड़ी हानि पहुँचाती है, उत्तान, मगजीड़े की चार पांसियों पाली गोटी, तास का एक खेल विशेष।
चौपज (पु०) पेपर विशेष।
चौपहला दे० (गु०) चौपाला, चारों ओर से समान, वह वस्तु जिसकी लम्बाई चौड़ाई बराबर हो।
चौपाई दे० (स्त्री०) हिन्दी का एक छन्द, जिसमें चार पद होते हैं। यथा—" मङ्गलभवन, अमङ्गलहारी द्रवहु सुदशरथ, अजिरबिहारी।"
—रामायण
चौपाड़ दे० (पु०) बैठक, बैठका, गृह विशेष।
चौपाया दे० (पु०) पशु, जन्तु, चार पैर के जन्तु, खटूला, खटिया।
चौपाला दे० (पु०) पालकी, चौडोला, यान विशेष।
चौपुरा दे० (पु०) चार पुरों के चलने के लिये चार घाटों वाला कुआँ। [बयी ऊँट गाड़ी।
चौपैया दे० (पु०) एक छन्द विशेष, चार पहियों की
चौरखा दे० (पु०) चौकोना गढ़ा, कुण्ड, कृत्रिम कुण्ड।
चौबरसी तद्० (स्त्री०) श्राद्ध या उत्सव जो चौथे वर्ष किया जाय। [दालान।
चौबारा दे० (पु०) उसारा, दाबा, चार दरवाजे का
चौबीस दे० (गु०) चार अधिक बीस, चार और बीस, २४।
चौबे दे० (पु०) चतुर्वेदी, चतुर्वेदज्ञाता, ब्राह्मणों की एक अल्ल, माथुर ब्राह्मण। (स्त्री०) चौबाइन।
चौबोला दे० (पु०) एक मात्रिक छन्द विशेष।
चौभड़ दे० (स्त्री०) दाढ़, जिससे खाद्य पदार्थ चबाया जाता है या कुचला जाता है।
चौमासा दे० (पु०) पावस, वर्षाऋतु, चतुर्मासा, आषाढ़ से कुआर तक के चार महीने।
चौमुख दे० (गु०) चार मुँह वाला, चौमुहा, चार बत्तियों का दिया, वह मकान जिसमें चारों ओर द्वार हों।
चौमुखी दे० (स्त्री०) ब्रह्माणी देवी, चारमुख वाली दुर्गा।
चौमुहानी दे० (स्त्री०) चौराहा, चौरस्ता।
चौर तद्० (पु०) चोर, चोरी करने वाला।—कर्म (पु०) चोर का काम, चोरी करना, अपहरण करना।—भय (पु०) चोर का भय, चोर से डर।
चौरंग दे० (पु०) चित, उत्तान, चार अंग, दाँव पेच।
चौरस दे० (गु०) समान, तुल्य, समभूमि, बराबर, एकसा, एक रूप, एक सूत में, सीधा।
चौरसाई दे० (स्त्री०) समता, बराबरी, तुल्यता, सीधाई।
चौरा दे० (पु०) चबूतरा, सती की चिता, वीरों की चिता, ग्राम देवता का स्थान।
चौराई दे० (स्त्री०) चौलाई नाम का शाक। [६४।
चौरानवे दे० (गु०) नब्बे और चार, चार अधिक नब्बे
चौरासी दे० (गु०) अस्सी चार, ८४, चार अधिक अस्सी। [चतुष्पथ, चौमुखापथ, चौहट।
चौराहा दे० (पु०) चारों ओर जाने का मार्ग, चौक
चौरी दे० (स्त्री०) चार चार घोई हुई लाल, चौपाड़, चौबारा, छोटा चँवर जो घोड़े की पूँछ के बालों का बनता है, छोटा चबूतरा।
चौलड़ा दे० (गु०) चार लर वाला, चार लर की माला।
चौला दे० (पु०) अन्न विशेष, बोड़ा, बोरो।
चौलाई दे० (स्त्री०) शाक विशेष, चौराई का शाक।
चौवर दे० (गु०) बलवान, साहसी, उद्योगी, उत्साही।
चौवा दे० (पु०) चार उँगलियों का विस्तार या माप, चार बूटियों वाला ताश का पत्ता, पशु, चारपाया, चौपाया। [से चलने वाली हवा।
चौवाई दे० (स्त्री०) आँधी, झक्कड़, अन्धड़, चारों तरफ
चौवार दे० (पु०) सर्वसाधारण या वह स्थान जहाँ किसी उत्सव या विचार के लिये लोग इकट्ठे होते हैं, पञ्चायती घर, सर्वसाधारण की बैठक।
चौस दे० (पु०) आटा, मैदा, पिसान, चार चार जोता हुआ खेत।
चौसर दे० (पु०) चौसर, चौपड़, खेल विशेष। [साठ।
चौसठ दे० (पु०) चार और साठ, ६४, चार अधिक
चौहट दे० (पु०) चौराहा, चौमुखा पथ, चौमुहानी, चौहट्ट।
चौहट्टा दे० (पु०) चौराहा, बाज़ार, चौक बाज़ार।
चौहड़ दे० (पु०) बावला। [अधिक सत्तर।
चौहत्तर दे० (गु०) सत्तर और चार, ७४, चार
चौहरा दे० (पु०), चार तह वाला, चार परत वाला, चौगुना।
चौहान दे० (पु०) राजपूतों की एक जाति, किसी समय ये भारत के सम्राट् थे, इनका पहला चतुर्बाहु और अन्तिम राजा सम्राट् पृथ्वीराज थे

च्यवन तत्० (क्रि०) चूना, टपकना, झरना। (पु०) प्रसिद्ध एक प्राचीन ऋषि,पुलोमा के गर्भ और भृगु के औरस से इनका जन्म हुआ था। गर्भवती पुलोमा को कोई राक्षस बलात्कार पूर्वक हर कर लिये जाता था, इस अत्याचार से पीड़ित होने के कारण उसका गर्भ गिर पड़ा। अतएव उनका नाम च्यवन पड़ा। क्योंकि संस्कृत च्यु धातु का अर्थ गिरना है। च्यवन एक दिन देवसभा में बैठे थे कथोपकथन में इन्हें मालूम हुआ कि महाराज कुशिक के वंश से हमारा वंश संयुक्त हुआ है। इससे कुशिकराज को नष्ट करने की ये चेष्टा करने लगे। परन्तु महाराज की असीम योग्यता और सहनशीलता देख इनको अपने विचार बदलने पड़े। च्यवन के पौत्र ऋचीक से कुशिक की पौत्री ब्याही गयी थी।

किसी सरोवर के तीर पर च्यवन तपस्या कर रहे थे। उनका शरीर मिट्टी से ढका हुआ था। केवल दो आँखें दीखती थीं। शर्याति की पुत्री सुकन्या को बड़ा कुतूहल हुआ। उसने उनकी आँखें फोड़ डालीं। च्यवन के क्रोध से शर्याति की सेना का मलमूत्र बन्द हो गया। बहुत अनुसन्धान करने पर इसका कारण मालूम हुआ। शर्याति की प्रार्थना से मुनि प्रसन्न हुए। राजा ने सुकन्या का विवाह च्यवन से कर दिया। यह सुकन्या प्रसिद्ध पतिव्रताओं में से है।—प्राश तत्० (पु०) आयुर्वेदीय एक प्रसिद्ध अवलेह जिसे खाकर च्यवन ऋषि युवा हो गये थे।

च्युत तत्० (गु०) पतित, पड़ा, भ्रष्ट, गिरा, नष्ट।—**संस्कारता** (स्त्री०) काव्य में व्याकरण का दोष।

च्युति तत्० (स्त्री०) पतन, स्खलन, गिरन, हानि, क्षियता।

च्यूड़ा दे० (पु०) चिउड़ा या चूरा।

छ

छ व्यञ्जन का सातवाँ वर्ण, इसका स्थान तालु है, अर्थात् तालु के द्वारा इसका उच्चारण होता है। अतएव इसे तालव्य कहते हैं।

छ तत्० (पु०) छेदन, काटना। (गु०) निर्मल, तरल, (दे०) छः, संख्या विशेष, षट्, ६।

छई तद्० (स्त्री०) क्षयी, रोगविशेष, राजरोग, एक रोग जिसमें मुँह के द्वारा कलेजे से रक्त निकलता है। शरीर दुबला हो जाता है। नाव का छप्पर, गद्दी।

छकड़ा दे० (पु०) गाड़ी, बैलगाड़ी, शकट,लद्दू, लढ़ढू।

छकड़ाना दे० (क्रि०) चौंधियाना, घबराना, चकराना, प्रजा का गर्भ संस्कार कराना। [कहार लगते हों।

छकड़िया दे० (स्त्री०) पालकी जिसे उठाने को छः

छकना दे० (क्रि०) अघाना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, सशङ्कित होना।

छकाई दे० (स्त्री०) अघाई, तृप्ति, सन्तुष्टता।

छकाछक दे० (वि०) परिपूर्ण, भरापूरा, तृप्त, अघाता।

छकाना दे० (क्रि०) सन्तुष्ट करना, खिलाना, तृप्त करना, अघवाना, निरुत्तर करना, अचम्भित करना, शङ्कित करना।

छकाड़ दे० (पु०) धौल, थप्पड़, पेटू, खाने वाला।

छक्का दे० (पु०) छः का समूह, वह समूह जिसमें छः हों। एक प्रकार का पिंजड़ा जिसमें जाली लगी रहती है। जुए का एक दाव, छः बुन्दकी का ताश का पत्ता, सुध, संज्ञा, औसान।—छूटना (क्रि०) होश उड़ना, हिम्मत हारना।—पंजा करना (वा०) इधर उधर करना,छलना,ठगाना,धोखादेना,प्रतारणा।

छग तत्० (पु०) छाग, बकरा, अज, भेंड़ा।

छगरी तत्० (स्त्री०) बकरी, छेरी, छिरिया। [छागल।

छगल तत्० (पु०)-नीला वस्त्र, बकरी, छेरी, अजा, छाग,

छगुनी दे० (स्त्री०) चूमनी, लोपणी, छगना, कनिष्ठिका, कानी उँगली, छः गुणा।

छँगुली दे० (स्त्री०) छः अँगुलिया, कनिष्ठिका।

छछिया या छछिया दे० (स्त्री०) छाछ पीने या नापने का छोटा बरतन, छाछ, मट्ठा, मठा, तक्र।

छछूँदर या छछूँदर दे० (स्त्री०) मूसे की एक जाति प्रायः यह रात को निकलती है। इसकी दुर्गन्धि दूर दूर तक फैलती है। कहते हैं कि इसे रात ही को सूझता है दिन को नहीं।

छन देे० (गु०) झाड़झंखड़ी, झाड़ पताई, घना जङ्गल।
छजना दे० (क्रि०) शोभा देना, सजना, ठीक जँचना।
छज्जा दे० (पु०) बरामदा, ढसारा, द्वार के ऊपर की लकड़ी, खम्भों के ऊपर की पटरी।
छटना दे० (पु०) एक प्रकार की चलनी। (क्रि०) पृथक् होना, समूह से अलग होना, घटना, न्यून होना, बिछुड़ना।
छटपटाना दे० (क्रि०) छटपट करना, तलफना, विवश होकर लोटना, मूर्च्छित होकर भूमि में लोटपोट करना।
छटपटी दे० (स्त्री०) घबड़ाहट, विकलता, चाह विशेष।
छटघाँ दे० (गु०) निकृष्ट, अलग किया हुआ, चीन्हा, पराया, समाजच्युत, समाज से निकाला हुआ।
छटड्डा दे० (गु०) चिड़चिड़ा, कड़ुआ, एकान्त अनुरागी, विलक्षण प्रकृति का।
छटाँक दे० (स्त्री०) सेर का सोलहवाँ भाग, मान विशेष, पाँच तोला, कनवाँ, तौल विशेष।
छटा तद्० (स्त्री०) उजाला, उजास, शोभा, दीप्ति, प्रकाश, सद्य, समाहार, समूह, चुना हुआ, बना हुआ, चालाक।—फल (पु०) नारियल वृक्ष ताल वृक्ष, सुपारी का पेड़।—या (स्त्री०) विद्युत्, बिजली, तड़ित, सौदामिनी।
छटाना दे० (क्रि०) छटवाना, अलग करवाना, चुनवाना, बनवाना।
छटे दे० (पु०) चुने हुए, बने हुए, पृथक् हुए, चतुर चालाक, अपना मतलब साधने वाले।
छठ दे० (स्त्री०) षष्ठी, छठ षष्ठी तिथि।
छठी दे० (स्त्री०) छठवीं, षष्ठी लड़के के जन्म से छठवाँ दिन, संस्कार विशेष, जो जन्म के छठें दिन होता है, तिथि विशेष, व्रत विशेष, इस व्रत में सूर्यदेव की उपासना की जाती है।
छठ दे० (स्त्री०) षष्ठी, तिथि विशेष।
छठा (वि०) छ नम्बर का, छठवाँ।
छठी दे० (स्त्री०) षष्ठी, तिथि विशेष।
छठे दे० (गु०) छठें, छठयें, छ छठवाँ।
छड़ दे० (स्त्री०) बड़े की लकड़ी, लोहे की छड़, लोहे का सींकचा, डंडा, धारी, तिनका, धार, आँख का दाग जो सफेद होता है।
छड़ना दे० (क्रि०) धान के छिलके निकालना, छाटना, चावल छाँटना।
छड़ा दे० (पु०) मोतियों का गुच्छा, पैर में पहनने की चूड़ी के आकार का एक गहना। (वि०) अकेला जैसे छड़ी सवारी।
छड़ाना दे० (क्रि०) चावल साफ करना, बकला छुड़ाना, भूसी अलग करना।
छड़िया दे० (पु०) पहरेदार, दरबान, आसाबरदार, कञ्चुकि, राजा का परिचारक, संकेत गली, कोलिया।
छड़ियाना दे० (क्रि०) छड़ी मारना, छड़ी के समान करना, मार करके लम्बा करना।
छड़ी दे० (स्त्री०) बेंत, लकड़ी, डण्डा, हाथ में रखने का डण्डा, छड़ी के आकार की एक वस्तु, जो फूलों से बनायी जाती है। गुलछड़ी, फूलछड़ी, बाँस की सूखी लकड़ी, छिकुनी, साकुन।—बरदार (पु०) चोबदार।
छड़ीला, छरीला दे० (पु०) बारामासी, पुष्प विशेष, एक प्रकार का सुगन्धित सेवार, काई, पत्थर की मिट्टी। (वि०) एकाकी, अकेला।
छण तद्० (पु०) क्षण, पल, मुहूर्त, छिन, अल्पकाल।
छँटवाना दे० (क्रि०) किसी वस्तु का फालतू भाग कटवा देना, चुनवाना, कटवाना, छिलवाना।
छँटाई दे० (स्त्री०) छाँटने की मजूरी, छाँटने का काम।
छँटाव दे० (पु०) धान की कुटाई, कूटना, बकला निकलाई। [छुड़ाना।
छँड़ना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्याग करना, तजना,
छँडुआ दे० (पु०) छूटा, छोड़ा हुआ त्यागा हुआ।
छँड़ौती दे० (स्त्री०) छुट्टी, छोड़ना, अवकाश युक्त, सांडवय, देवता के उद्देश्य से छोड़ा हुआ, छूट।
छत तद्० (पु०) क्षत, फोड़ा, घाव, चिन्ह, निशान, दाग (वि०) छुआ हुआ। (स्त्री०) पाख, पाट, पटाव, पाटन।—कुम्भज (पु०) कनेर, करवीर, कन्देल।—ज (पु०) रक्त, रुधिर, लोहू, पीव, मवाद।—छोट (स्त्री०) छत पर चोट लगाना।
छतना दे० (पु०) छत्ता, छत्र, आतपवारण, छाता।
छतनार दे० (गु०) फैला हुआ विस्तृत, सघन, छायादार।
छतरी तद्० (स्त्री०) छाता, मण्डप, राजाओं की चिता या साधुओं के समाधि स्थान पर बनाया गया

स्मारक भवन। कबूतरों के बैठने के लिये बाँस का टट्टर जो एक ऊँचे बाँस पर बाँधा जाता है। हुक्के या बादल का छाजन, कुकुरमुत्ता।

छता दे० (पु०) छाता।

छति तद्० (स्त्री०) क्षति, हानि, घाटा, नुकसान, टोटा।

छतिया दे० (स्त्री०) छाती, हृदय।—ना (क्रि०) छाती से लगाना।

छतियन दे० (पु०) वृक्ष विशेष।

छतीसा दे० (वि०) चतुर, सयान, चालाक। (पु०) नाई।—पन दे० (पु०) मक्कारी। [छत्र, छत्ता।

छत्तर तद्० (पु०) छत्र, भोजन स्थान, सत्र, अन्न

छत्ता दे० (पु०) मधुमक्खी का घर, मधुमक्खियों का छाता या छत्ता, चाक, गद्दार, छाता।

छत्तीस दे० (पु०) तीस छः, ३६, छः अधिक तीस।

छत्तीसी दे० (स्त्री०) छिनाल, व्यभिचारिणी, दुराचारिणी, परपुरुषरता स्त्री।

छत्र तद्० (पु०) वृष्टि और धूप रोकने के लिये आवरण विशेष, आतपत्र, छाता, छतरी, राजाओं के लगाने का खास छत्ता जो राजचिन्ह समझा जाता है।—चक्र (पु०) चक्रविशेष, नक्षत्र मण्डल।—छाँह (स्त्री०) रक्षा, शरण।—धर (पु०) छत्रपति, राजा, महाराजा।—पति (पु०) तिलकधारी राजा, महाराज, स्वाधीन नरपति।—भङ्ग (पु०) वैधव्य, उपद्रव, नृपनाश, राजनाश, अराजक।—बन्धु (पु०) नीच क्षत्रिय, क्षत्रियाधम, क्षत्रिय के समान, क्षत्रियों का हित। [वृक्ष, कुकुरमुत्ता, छताक।

छत्रक तद्० (पु०) तृण विशेष, भूईंफोर, धरती का

छत्रा तद्० (स्त्री०) धनिया, धरती का फूल, सुमी, सोवा, मजीठ, रासन।

छत्राक (पु०) खिगरी, सुमी, कुकुरमुत्ता, अलखबूला।—ी (स्त्री०) एक दवा का नाम।

छत्री तद्० (पु०) क्षत्रिय, दूसरा वर्ण, वीर जाति, राज जाति, नाई, नापित। (स्त्री०) छोटा छत्ता, मृत मनुष्यों का एक प्रकार का स्मारक, श्मशान में निर्मित गृह विशेष, भारत की पुरानी प्रथा के अनुसार ये अभी भी पुराने हिन्दू राज्यों में बनायी जाती हैं। [कुटीर, पर्णकुटी।

छत्वर तद्० (पु०) घर, गृह, कुञ्ज, लताच्छादित गृह,

छत्तर दे० (पु०) एक स्थान पर राशीकृत अन्न, अन्न की राशि, गोला, ढेर।

छद तद्० (पु०) पत्र, पत्ता, पत्ती, पक्ष, पंख, आच्छादन, ढकना, छपना, तमालवृक्ष, पुनर्नवा औषध, गदहपूरना, हारा, चाल, रीति।

छदन तद्० (पु०) पत्र पत्ता, पक्ष, तमालवृक्ष, तेजपात आच्छादन, ढकना, छान छत, खोल, गिलाफ। [भाग।

छदाम दे० (पु०) टुकड़ा, दो दमड़ी, पैसे का चौथा

छदि तद्० (स्त्री०) छप्पर, छानी, गृहाच्छादन, पाटन।

छदिकारिपु तद्० (पु०) छोटी इलायची, वमन रोकने की औषधि।

छद्म तद्० (पु०) कपट, छल, धोखा, स्वरूपाच्छादन अपने को छिपाना, अन्य वेश।—तापस (पु०) झूठा तपस्वी, कपटी मुनि।—वेश (पु०) गुप्तरूप, दूसरा रूप।

छद्मिका तद्० (स्त्री०) गुडूची, मजीठ।

छद्मी तद्० (वि०) छली, कपटी, बहुरूपिया।

छनना दे० (क्रि०) निथुड़ना, गलना, साफ होना, बनना। यथा—मरने से छनछन कर पानी आता है। पूड़ियाँ छन रही हैं।

छनकाना दे० (क्रि०) आँच पर रख जल को जलाना, भड़काना, सचेत करना, सावधान करना। "वैठा तो अचेत था परन्तु हम लोगों ने उसे छनका दिया।" [घी या तेल में पानी पड़ने का शब्द।

छनाक दे० (पु०) किसी वस्तु के टूटने का शब्द, गरम

छनाका दे० (पु०) शीघ्र जल जाना, पानी या दूध का आग में शीघ्र जलना, खनाना, टनाका, रुपयों के बजने का शब्द। [क्षणिक विचार वाला।

छनिक तद्० (पु०) क्षणिक, अव्यवस्थित, चपला,

छनेक तद्० (पु०) क्षणिक, एक क्षण, एक मुहूर्त।

छन्द तद्० (पु०) अक्षरों की गणना के अनुसार वेद वाक्यों का भेद, यह भेद सात प्रकार का है। वेद, वह विद्या जिसमें छन्दों के भेद और लक्षणादि हों, काव्य प्रबन्ध। अभिलाषा, स्वेच्छाचार, [illegible], मान, कपट, रंग, ढंग, अभिप्राय, एकान्त, विष ढकना, पत्ती, एक प्रकार का हाथ का आभूषण।—गति (स्त्री०) छन्दों की चाल, छन्द बनाने की रीति।—यद्ध (वि०) पद्यात्मक, श्लोकयुक्त।—

शास्त्र (पु०) पिङ्गल मुनि प्रणीत शास्त्र, जिसमें छन्दों का वर्णन किया है। [मैं पड़ना।
छन्दना दे० (क्रि०) रुठना, बन्धना, उलझना, उलझन
छन्दपातन तद्० (पु०) कपटी तपस्वी, छद्म तापस, धूर्त तपस्वी, तापस वेशधारी धूर्त।
छन्दबन्द दे० (पु०) छलबल, कपट, प्रतारण, मक्कर।
छन्दानुवर्त्ती तद्० (गु०) आज्ञानुवर्त्ती, आज्ञाधीन, आज्ञापालक।
छन्दी दे० (गु०) कपटी, धूर्त, प्रतारक, छली, ठग।
छन्दोग तत्० (पु०) सामवेदी, सामवेदवेत्ता, सामग, सामवेदाध्यायी।—परिशिष्ट (पु०) सामवेदी गोभिल आदि सूत्रों का परिशेष शास्त्र, जिसे महर्षि कात्यायन ने बनाया है। उसमें सामवेदियों के कर्म बताये गये हैं। सामवेद सम्मत शास्त्र विशेष।
छन्दोभङ्ग (पु०) अशुद्ध पद्य, दूषित पद्यमयी रचना।
छन्न तद्० (गु०) [छद्+क्त] आच्छादित, नष्ट, उन्मत्त, गूढ़, गुप्त रहस्य, छिपा हुआ, ढाँपा हुआ, एकान्त। [छनना।
छन्ना दे० (पु०) दूध आदि छानने का कपड़ा, गालना,
छन्नी दे० (स्त्री०) छोटा छनना, भूषण विशेष।
छन्यू दे० (गु०) छानने वाला। [जल से निकलता है।
छप दे० (पु०) शब्द विशेष, जो आघात पहुँचने पर
छपई दे० (स्त्री०) छः पद का छन्द, छः कड़ी का छन्द, छप्पय, छ: पैर वाला।
छपकली दे० (स्त्री०) जन्तु विशेष, बिसतुइया।
छपकाना दे० (क्रि०) पानी डालना या पानी में डालना। [मारता है।
छपकी दे० (स्त्री०) एक जन्तु का नाम, जो छिप कर
छपना दे० (क्रि०) छापा होना, मुद्रित करना, छप जाना, छिपाना।
छपरा दे० (पु०) छप्पर, घर छाने का छप्पर।
छपरिया दे० (स्त्री०) छोटा छपरा।
छपरी दे० (स्त्री०) मढ़ी, झोंपड़ी।
छपवाना दे० (क्रि०) छापा कराना, अङ्कित कराना, चितवाना, मुद्रित कराना।
छपा तद्० (स्त्री०) रात, निशा। [काम।
छपाई दे० (स्त्री०) छापने की मजूरी या छापने का
छपाका दे० (पु०) शब्द विशेष जो जल में किसी वस्तु के डालने से होता है।
छप्पन दे० (गु०) पचास छ., ५६, छः अधिक पचास।
छप्पय दे० (पु०) छः पद का छन्द, छपाई, षट् पदी छन्द।
छप्पर दे० (पु०) आच्छादन, छाँद, छावन।—खट (पु०) पलंग खाट, मसहरीदार पलंग।
छप्परबन्द दे० (पु०) छप्पर बनाने वाला, चाल बाँधने वाला। [सौन्दर्य, शोभा, प्रभा।
छब दे० (स्त्री०) डौल, आकृति, आकार, रूप, रूप,
छबि दे० (पु०) आकार, शोभा, सौन्दर्य, तसवीर, चित्र। [शोभित मुँह, मनोहर।
छबीला दे० (गु०) रसिक, रसिया, रूपवान्, सुन्दर,
छब्बीस दे० (गु०) बीस छः, २६।
छम दे० (गु०) क्षम, समर्थ, योग्य, शक्तिमान्।—हु (क्रि०) क्षमा करो, माफ़ करो। [दुराचारी।
छमकट दे० (पु०) कपटी, व्यभिचारी, छिनरा,
छमछम दे० (पु०) शब्द विशेष, भूषणों का शब्द।
छमछमाना दे० (क्रि०) चमचमाना, झमकना, शोभित होना। [बालक।
छमण्ड दे० (पु०) निराधार, निरवलम्ब, अनाथ
छमा (स्त्री०) क्षमा, दया, सहिष्णुता, माफ़ी धरणी, सहन।—पन (पु०) दयालुता, मिहरबानी, क्षमापन।
छमासी (स्त्री०) छठवें मास का श्राद्ध, कृत्य विशेष, छःमाही।
छमाही (स्त्री०) प्रत्येक छः छः मास का।
छमि (क्रि०) क्षमा करके।—हहिं (क्रि०) क्षमा करेंगे।
छमिच्छत (स्त्री०) इशारा, सङ्केत, चिन्ह, समस्या।
छय तद्० (पु०) क्षय, नाश, विनाश, घटी, हानि, रोग विशेष, घई।—कारी (पु०) नाश, बिगाड़।—रोग (पु०) घई, घई।
छर दे० (पु०) छड़ामाँसी, फफदफदा। [पोखरा, पाखाना।
छरछवि दे० (स्त्री०) भाड़े फिरने का स्थान, शौचस्थान,
छरस दे० (पु०) छः रस, षट्रस।
छरिन्दा दे० (गु०) एकाकी, असहाय, अकेला, रिक्त हस्त, शून्य हाथ, रीते हाथ।
छरी दे० (स्त्री०) देखो छड़ी।
छरे दे० (गु०) छड़े, धुले हुए, धराधे हुए, उत्तम उत्तम साफ़ किये हुए, बीने हुए।

छर्दन तत्० (पु०) [छर्द+अनट्] छाँट, क्रय, वमन, उलटी।
छर्दायन तत्० [छर्द+आयन] खीरा, ककरी।
छर्दि तत्० (स्त्री०) वमन, छाँट, खाँसी।
छर्रा दे० (पु०) छोटी छोटी गोली, जो बन्दूक में भरी जाती हैं, एक नवीन तरह का तिलक जो अङ्गुलियों से खींच कर लगाया जाता है।
छल तत्० (पु०) छद्म, व्याज, कपट, शठता, प्रतारणा, ठगई, फरेब, धोखा, बहाना, चातुरी।—कारी (गु०) छल करनेवाला, ठग, धूर्त्त, धोखेबाज़।—ग्राही (गु०) छल ढूँढ़ने वाला, प्रतारक, शठ, धूर्त।
छलक दे० (स्त्री०) उछाल, उफान, उमड़, आघात से जल आदि द्रव पदार्थों का पात्र से बाहर निकलना।
छलकना दे० (क्रि०) उमड़ना, ढलकना, उछलना, जल आदि का पात्र से बाहर निकलना।
छलकाना दे० (क्रि०) उफनाना, उछेलना, गिराना।
छलङ्गना दे० (क्रि०) कूदना, फाँदना, उछलना, छलाँग मारना।
छलछलाना दे० (क्रि०) जल की गति, बे रोक टोक गति, सशब्द गति, भरी हुई गङ्गा आदि नदियों का शीघ्रगामी प्रवाह। [(गु०) कपटी, छली।
छलछिद्र तत्० (पु०) छलबल, कपट, धोखा।—ी
छलबल तत्० (पु०) कपट, धोखा, शठता, शाठ्य।
छलविनय तत्० (पु०) कपट से बड़ाई, धोखा देने के लिये प्रशंसा।
छलना तत्० (क्रि०) छल करना, ठगना, झटकना।
छली दे० (स्त्री०) चलनी, आटा चालने का छेद-दार पात्र।
छलाँग दे० (स्त्री०) कुदान, फलाँग, उछाल, फाँद।—मारना दे० (क्रि०) उछलना, कूदना, कुलाँच मारना, हर्षित होना, आनन्दित हो कूदना।
छलावा दे० (पु०) लू, लूक, लूका, मशालूक, भूत-प्रेतादि का उपद्रव।
छलिया दे० (गु०) धूर्त्त, छलकारी, धोखा देने वाला।
छली तत्० (गु०) कपटी, धूर्त्त, शठ, धोखेबाज़।
छल्ला दे० (पु०) आभूषण विशेष, अँगूठी, मुन्दरी, अंगुलीयक। [खाँचा।
छपड़ा दे० (पु०) बाँस आदि की बनी टोकरी, दौरा,
छवि तत्० (स्त्री०) शोभा, सौन्दर्य, कान्ति, प्रभा।
छवैया दे० (पु०) छप्पर छाने वाला, छप्पर बनाने वाला, ठाट बनाने वाला। [होने का शब्द।
छहरछहर दे० (पु०) शब्द विशेष, अधिक वृष्टि
छहराना दे० (क्रि०) छितराना, बिखरना, टूटना, फैलना। यथा—
कन्चुक चूर चूर भई तानी।
टूटी तार मोती छहरानी —पद्मावत।
छाई दे० (स्त्री०) मुँह पर का लहसन, छीप, रोग विशेष जिससे मुँह का चमड़ा काला हो जाता है।
छाँ दे० (स्त्री०) छाँह, छाया, प्रतिबिम्ब।
छाँट दे० (स्त्री०) सीठी, वान्ति, उबकाई, खूद, छिल्का, काटने का ढङ्ग, पृथक् की गयी निकम्मी वस्तु।—करना (वा०) उगाल करना, वमन करना, कै करना।—लेना (वा०) बीछ लेना, बराय लेना, चुनना, चुन लेना।
छाँटन दे० (स्त्री०) उलटी करना, वमन करना, भूसे से अन्न निकालना, कतरन, काटकूट, फटकना, साफ करना, सुधारना, अलग करना, चुनना, टुकड़ा, छिलका, बरावन। [खिच करना, पछारना।
छाँटना दे० (क्रि०) वमन करना, कूटना, कतरना
छाँड़ना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्यागना।
छाँद दे० (स्त्री०) पगहा, पशुओं के पैर बाँधने की रस्सी, पैकड़ा, जाल, नोंई। [जकड़ना।
छाँदना दे० (क्रि०) बाँधना, गति रोकना, रोकना,
छाँदस तत्० (वि०) वेदपाठी, वेद सम्बन्धी, रद्द, मूर्ख।
छाँदा दे० (पु०) भाग, अंश, खण्ड, टुकड़ा, हिस्सा।
छाँदोग्य तत्० (पु०) सामवेद का एक ब्राह्मण विशेष, छांदोग्य ब्राह्मण का उपनिषद्।
छाँपड़ा दे० (पु०) जानवर का बच्चा, छोटा बच्चा।
छाँहा दे० (स्त्री०) छाया, परछाईं, प्रतिबिम्ब, छाँ। यथा—"कीन्हेसि, धूप सेव औ छाँहा।
कीन्हेसि, मेघु बीजु तेहि माँहा॥"
—पद्मावत।
छाँहारा दे० (गु०) छायावान्, छायेला, छायायुक्त, छायान्वित।
छाँहीं दे० (स्त्री०) छाँह, परछाईं।

छाई दे० (क्रि०) छाय गयी, छा गयी, फैल गयी, व्याप्त हो गई, पाटी, पाट दी, विस्तृत हो गयी, (स्त्री०) राख, पाँस।

छाक दे० (पु०) कलेवा, जलपान, गलखवा, स्वल्प। (स्त्री०) तृप्ति, दुपहरिया, नशा, मस्ती, माठ।

"छिन छाके उछकै न फिर खरी विषम छवि छाक॥" —बिहारी।

छाकना दे० (क्रि०) फटकना, निर्मल करना, साफ़ करना, शुद्ध करना, मल दूर करना, मल हटाना, तृप्ति होना, अफरना, अघाना।

छाके दे० (पु०) मतवाले, उन्मत्त, विमत्त, पिया हुआ, हैरान, तन्मय, तृप्ति, अघाये हुए।

छाग तद्० (पु०) बकरा, अज, पशु विशेष।—वाहन (पु०) अग्नि, वह्नि, अनल देवता।—भोजी (पु०) छाग भक्षक, बकरा खाने वाला, बघेरा, भेड़िया।—मुख तद्० (पु०) कार्तिकेय का वह छठवाँ मुख जो बकरे का सा है, कार्तिकेय का एक गण।—मांस (पु०) बकरे का मांस।—रथ (पु०) अग्नि, अनल, वह्नि।

छागल तद्० (पु०) छाग, अज, पाठा, एक आभूषण। —गोत्री (पु०) व्यभिचारी, वह कामुक जिसे गम्यागम्य का कुछ भी विचार न हो।

छागी तद्० (स्त्री०) बकरी, छेरी, पाठी, अजा।

छाछ या छाछी दे० (पु०) तक्र, मट्ठा।

यथा—"अपनी छाछ को कौन खट्टा कहता है।"

छाछठ (पु०) संख्या विशेष, ६६।

छाज दे० (पु०) शोभा, छप्पर, मार्ग, छज्जा, सूप, कोचबक्स।

छाजा दे० (पु०) सोहा, शोभा, शोभित हुआ, सजा, सूप, डगर, छप्पर, छाँद। यथा—

"मुकुतानिकी झालरनि मिलि, मनिलाल छज्जा छाजही।
सन्ध्या समय मानहु नखतगन, लाल अम्बर राजहि॥
जहाँ तहाँ उरध उठे, हीरा किरन घन समुदाय हैं।
मानो गगन तम्बू तन्यौ, ताके सपेत तनाय हैं॥" —भूषण।

"छाज बोले तो बोले, चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर सौ छेद।"

छाजन तद्० (स्त्री०) वस्त्र, कपड़ा, छप्पर, छवाई, एक चर्मरोग।

छाजना दे० क्रि०) शोभना, फबना, सजना, सुजना, उचित मालूम होना, योग्य होना।

छाड़ दे० (पु०) त्याग, त्याग कर, तज के, छोड़ कर, नदी का छोड़ा हुआ स्थान, भिन्न, बिना।

छाड़े दे० (क्रि०) छोड़े, त्यागे, छोड़े हुए।

छात दे० (स्त्री०) छाता, आधार, छत्र। तद्० (वि०) छिन्न, दुर्बल, कृश।

छाता दे० (पु०) छत्र, छत्ता, आतपत्र, मधुमक्खियों का छत्ता, पहलवानों की छाती, विशाल वक्ष स्थल।

छाती दे० (स्त्री०) छोटा छाता, उर, हृदय, वक्षःस्थल, सीना।—पर धर के कोई नहीं ले जायगा (वा०) अपने साथ परलोक ले जाना अर्थात् आप क्यों घबड़ाते हैं, इस वस्तु को कोई ले नहीं जा सकता, अथवा यह वस्तु ऐसी अच्छी नहीं है जिसे कोई ले जाय। (तुच्छ सी वस्तु का ज़्यादे आदर करते देख इस वाक्य का प्रयोग किया जाता है।)—पर तो हाथ रक्खो (वा०) इस बात की सत्यता या औचित्य को तुम्हारा हृदय स्वीकार करता है।—पर चढ़ कर कौन पी जायगा (वा०) किसी वस्तु को रक्षित होने के विषय में यह कहा जाता है।—पर पत्थर रखना (वा०) सन्तोष करना, किसी वस्तु की अभिलाषा छोड़ देना, धीरज बाँधना, धैर्य धरना।—पर मूँग दलना (वा०) दुःख देने के अभिप्राय से उसके सामने ही अप्रिय काम करना, चिढ़ाना, कुढ़ाना, मर्म बेधना।—फटना (वा०) चिन्ता से घबराना। —पीटना (वा०) विलाप करना, दुःखित होना, शोकित होना, बिलबिलाना, यथा—"राम के वियोग से सीता छाती पीट पीट कर रह जाती है"।—ठोंकना (वा०) उत्साहित होना, साहस प्रकाश करना, प्रतिज्ञा करना, भरोसा देना, अभय देना, यथा—"छाती ठोंक कर भीम अखाड़े में उतर गये" "मैं छाती ठोंक कर इसके लिये प्रतिज्ञा करता हूँ।"—ठंढी होना (वा०) आनन्दित होना, प्रसन्न होना, "तुमको देख कर छाती ठंढी हुई।" "फिर हमारी छाती कब ठंढी होगी," ।—का पत्थर (वा०) दुःखद, शत्रु, कण्टक। "छाती का पत्थर हटना ही उचित

है।" "आज कल तो हमारी छाती पत्थर की हो गयी है"।—खोल कर मिलना (वा०) प्रेम से मिलना, उत्साह से मिलना, यथा—"लङ्का से लौटकर श्रीरामचन्द्र जी छाती खोलकर भरत से मिले"।—लगाना—से लगाना (वा०) प्रीति करना, प्रेम करना, प्रेम से मिलना, छोटों के प्रति बड़ों का प्रेम, 'जनक ने रामचन्द्र को छाती से लगाया, पिता ने पुत्र को छाती से लगाया'।—निकाल कर चलना (वा०) अकड़ना, अकड़ कर चलना, अहङ्कार से चलना, ऐंठ कर चलना।—भर (वा०) परिमाण विशेष, छाती के बराबर, छाती जितना, "यह पेड़ छाती भर का हो गया, छाती भर पानी में नहाओ"।—भर आना (वा०) कहते कहते कण्ठ रुक जाना, आँसू निकल पड़ना, मुग्ध हो जाना, मोह के विवश होने से बात का न निकलना।—पर बाल होना (वा०) साहस वीरता और दृढ़ता का अनुमान होना, सामुद्रिक का चिन्ह विशेष, यथा—

" जिसके छाती एक न बार
सौ ऐबों का वह सरदार।"

छात्र तद्० (पु०) शिष्य, अन्तेवासी, शिक्षार्थी, विद्यार्थी, चेला, मधु, मधुमक्खिका विशेष, सरघा।—लय तद्० (पु०) वह स्थान जहाँ विद्यार्थी बसें, बोर्डिङ्गहाउस।—गण्ड तद्० (पु०) तीक्ष्ण बुद्धि वाला विद्यार्थी।—वृत्ति (स्त्री०) पढ़ने के लिये खर्चा, वह वृत्ति जो विद्या अर्जन के निमित्त दी जाती है। पारितोषिक, प्रशंसा पूर्वक परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को जो दिया जाता है।

छादन तद्० (पु०) ढपना ढकना, ढक्कन, आच्छादन, ढाँकने का वस्त्र।

छादान दे० (पु०) जल रखने का पात्र विशेष, मशक, जल रखने के लिये चमड़े का बनाया पात्र, जलथैली।

छादित (वि०) ढका हुआ, आच्छादित।

छान दे० (स्त्री०) छप्पर, छाँद, छाज, छत।—बिन (वा०) खोज, अनुसन्धान, जाँच।—बीन (वा०) भली प्रकार विचार, परिपूर्ण अनुसन्धान, भ्रम, अनुशीलन, अन्वेषण, तदारुक करना, तहकीकात करना।—मारना (वा०) खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़ मारना। [देखभाल करना।

छानना (क्रि०) चलनी से छान कर साफ करना,

छानवें दे० (गु०) नब्बे और छः, ९६, छः अधिक नब्बे।

छानस दे० (स्त्री०) भूसी, चोकर, तुष, अन्न की भुस्सी, केरायी। [ढकना।

छाना दे० (क्रि०) छाया भरना, पाटना, पाट करना,

छाजाना दे० (क्रि०) ढक जाना, छाया होना, पट जाना, घिर जाना, विस्तृत होना, व्याप्त होना, फैलना।

छाता दे० (क्रि०) निखारना, मारना, ढूँढ़ना, खोजना।

छाप दे० (स्त्री०) टिकट, दाग, अँगूठे का चिन्ह, छपाई, मुद्रण, नक्ल करना, मोहर, चिन्ह, अङ्क, हस्ताक्षरी, कार्यालय की मुहर, बाँट का चिन्ह विशेष जिसमें उसके विषय की बातें छपी रहती हैं, धार्मिक चिन्ह विशेष, तिलक। यथा—

जपमाला छापा तिलक सरें न एकौ काम।
मन काँचें नाचें वृथा, साँचे राँचे राम॥
—बिहारी।

छापना दे० (क्रि०) छापा करना, अङ्कित करना, मोहर लगाना, मुद्रित करना।

छापा दे० (पु०) छपाई, चिन्ह, मुद्रा, तिलक।—खाना (पु०) प्रेस, छापने की कल जिसमें किताबें छापी जाती हैं।—मारना (वा०) धावा करना, डाँका डालना।—लगाना (क्रि०) टिकट लगाना, मोहर लगाना, चिन्ह विशेष से अङ्कित करना।—हासिल (वा०) कपड़े छापने वालों का कर, छीपों से कपड़े छापने के लिये जो कर लिया जाता है, कपड़े छापने के व्यवसायियों से लिये जाने वाला कर।

छापी दे० (पु०) कपड़े छापने वाला, जाति विशेष, जो कपड़े छापने का काम करती है, छीपी।

छाम तद्० (गु०) क्षाम, दुर्बल, बलहीन, बलरहित, क्षीण, पतला, कृश।—उदरी तद्० (वि०) छोटे पेट वाली।

छायल दे० (पु०) एक जनाना पहनावा।

" छायल बँद लाए गुजराती"
—जायसी।

छाया तद् (स्त्री०) छाँह, अंश, शरण, रक्षा साया, धूप रहित स्थान, अनातप देश, अक्स, प्रतिबिम्ब,

प्रतिच्छाया, परछाईं, अनुकाया सूर्य की स्त्री का नाम। सूर्य की स्त्री का नाम संज्ञा था, संज्ञा के गर्भ से यम और यमुना दो सन्तान उत्पन्न हुए थे। संज्ञा सूर्य का तेज नहीं सह सकती थी, अतएव उसने अपनी छाया को सजीव बनाकर अपने स्थान पर बैठा दिया और स्वयं पिता के घर चली गयी। उसकी यह करतूत पिता को पसन्द नहीं आयी। पिता ने बहुत समझा बुझा कर पति के पास जाने के लिये आज्ञा दी, परन्तु संज्ञा ने पिता की आज्ञा न मानी, वह उत्तर देश में जाकर घोड़ी के रूप में रहने लगी, छाया के गर्भ से भी सावर्ण्य और शनैश्चर नाम के दो पुत्र हुए थे। अपने और सौतेले पुत्र के पालने में भेद देखने से सूर्य को मालूम हुआ कि यह संज्ञा नहीं है। पुनः छाया से सब बातें मालूम हुईं। सूर्य विश्वकर्मा के समीप गये। विश्वकर्मा ने कहा कि मेरे पास संज्ञा आयी तो थी परन्तु मैंने पुनः उसे तुम्हारे ही पास लौटा दिया। सूर्य ने उसे बहुत ढूँढ़ा। पता लगने पर घोड़े के रूप में उससे जाकर मिले। उसी समय अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति हुई। सूर्य ने अपने तेज का धीमा करने की प्रतिज्ञा की। (क्रि० वि०) अच्छादित किया, ढाँक दिया।—ग्राही (पु०) आकर्षक, आकर्षण करने वाला। —ग्राहिणी (स्त्री०) एक राक्षसी, छाया ग्रहण करने वाली स्त्री।—दान तद्० (पु०) एक प्रकार का दान। (काँसे के कटोरे में घी या तेल भर दान देने वाला अपने मुख को देख उस पात्र में कुछ द्रव्य डालकर यजमान को देता है।—नट (पु०) एक रागिनी।—पाद (पु०) छाया से समय मालूम करना, अपनी छाया के परिमाण से समय स्थिर करना।—पथ (पु०) देवपथ, आकाश, अन्तरिक्ष, नभोमण्डल।—पुरुष (पु०) आकाश में देखी गयी पुरुष की छाया, अपना छायारूपी पुरुष।—मण्डप (पु०) चन्द्रकान्तयुक्त स्थान, चाँदनी के नीचे का स्थान, विवाह के लिये बनाया हुआ मण्डप। —मित्र (पु०) छाता, छत्र, आतपत्र।—सिद्ध तद् (पु०) एक प्रकार के तान्त्रिक जो छाया के द्वारा शुभाशुभ ज्ञान करने की शक्ति प्राप्त करते हैं।—सुत (पु०) ग्रह विशेष, शनिश्चर, शनैश्चर।

छार तद्० (स्त्री०) क्षार, भस्म, दग्ध, राख, धूलि, खाक, खार, खारी निमक, खारी पदार्थ। यथा—
"छारते सवाँरिके पहाड़ हू ते भारी कियो, गारो भयो पाँत में पुनीत पक्ष पाइके।"
तुलसीदास।

छारछबीला दे० (पु०) सुगन्धित वस्तु विशेष, एक प्रकार का जल का सेवार जो सुगन्धित होता है, जो धूप के काम में आता है।

छारी तद्० (पु०) क्षारी, क्षार करने वाला, दाहक, भस्म करने वाला, महादेव, रुद्र।

छारु दे० (पु०) निनरवाँ, निनवाँ, रोग विशेष, जिसमें मुँह पक जाता है।

छाल दे० (पु०) छिलका, वक्कला, बोकला, त्वक्, चर्म, वल्कल, एक प्रकार की मिठाई।
"मतलड्डू छाल और मरकोरी।
माठ पिराकें और सुँदौरी"— , जायसी।
चीनी जो अच्छी तरह साफ़ न की गयी हो।—टी दे० (स्त्री०) छाल का बना कपड़ा, सन या पटसन का बना वस्त्र विशेष।

छाला दे० (पु०) फफोला, फुन्सी, फोड़ा, फुल्का, घाव, चमड़ा जैसे मृगछाला। [का पात्र।

छालिया दे० (पु०) एक प्रकार की सुपारी, छायादान

छाली दे० (स्त्री०) कटे हुए सुपाड़ी के टुकड़े, सुपारी।

छालेना दे० (क्रि०) ढक लेना, छा जाना, अँधेरा करना।

छावना दे० (क्रि०) छाना, पाटना, छाया करना, छप्पर बनाना।

छावनी दे० (स्त्री०) शिविर, सिपाहियों के रहने का स्थान, पल्टन के रहने का स्थान, पड़ाव छाने का काम, पाटने का काम।

छावा दे० (गु०) छाया गया, छादिया, आच्छादित किया, ढाँपा हुआ। (पु०) बच्चा, पुत्र, १० से १० वर्ष तक का हाथी, युवा हाथी।

छासठ (पु०) संख्या विशेष, साठ और छ। ६६।

छाह (स्त्री०) माठा, दही, छाछ।

छिउल (पु०) ढाक, पलाश।

छिकनी (स्त्री०) नकछिकनी नामक घास।

छिकुनी दे० (स्त्री०) छड़ी, कमची बाँस की छड़ी, संटी, चिरा हुआ बाँस या बेंत का टुकड़ा।

छिक्का तद्० (स्त्री०) छुरा, छींक। [सूँघने से छींकें आती हैं।
छिक्किका तद्० (स्त्री०) नकछिकनी, एक पौधा जिसको
छिगुनिया, छिगुनी, छिगुली दे० (स्त्री०) छोटी अँगुली, कनिष्ठिका, कनअँगुली।
छिचड़ा दे० (पु०) फोड़े की पपड़ी, घाव का नया चमड़ा, मल की थैली।
छिछड़ैल दे० (पु०) दुबला, दुर्बल, चमचिचड़।
छिछड़ा दे० (पु०) सछड़ा, चर्म, चमड़ा, छेवर।
छिछला दे० (पु०) उथला, कम गहरा, उठी हुई भूमि।—ई (स्त्री०) उथलाई, छिछलापन।
छिछली दे० (स्त्री०) एक प्रकार का लड़कों का खेल, थोड़ी गहरी नदी आदि। [पन, नीचता।
छिछोरपन, छिछोरापन दे० (पु०) क्षुद्रता, ओछा-
छिछोरा, छिछोड़ा दे० (पु०) प्रभाव रहित, हीन, ओछा, अविश्वासी, नीच, हलका, अधम।
छिटकना दे० (क्रि०) फैलना, बिखरना, व्याप्त होना, विस्तृत होना, फैल जाना, "चाँदनी छिटक रही है।" (पु०) विकाश, प्रफुल्लता, मनोहरता, रमणीयता, "वसन्त में फूलों का छिटकना क्या भला मालूम होता है।" [बिलियाँ।
छिटकनी दे० (स्त्री०) सिटकिनी, किवाड़ों की बिल्ली,
छिटकाना दे० (क्रि०) बिखेरना, बिसराना, फैलाना सींटना। [हिस्सा।
छिटका (पु०) परदा, आड़, पालकी या अगाल
छिटकी दे० (स्त्री०) फैली हुई, खिली हुई।
छिटफुट दे० (पु०) बिखरा, इधर उधर पड़ा हुआ।
छिड़काई दे० (स्त्री०) सिंचाई, सींचने की मजदूरी।
छिड़कना दे० (क्रि०) छिटना सींचना, भिगाना, आर्द्र बनाना, पानी छिड़कना। [सींचना।
छिड़काना दे० (क्रि०) छिटवाना, सिंचवाना,
छिड़काव दे० (पु०) सींच, सिंचाव, छिटाव।
छिड़ना दे० (क्रि०) आरम्भ होना, चल पड़ना (जैसे झगड़ा छिड़ा)। [चिढ़वाना, दुखाना, दुःख देना।
छिड़ाना दे० (क्रि०) छिनाना, छिनवाना, चिढ़ाना,
छितनिया, छितनी दे० (स्त्री०) डलिया, बाँस की बनी हुई छूछ डाली, दौरी, चङ्गेली, चङ्गेरी, डाला।
छितरना दे० (क्रि०) फैल जाना, बिखर जाना, विस्तृत होना।

छितरबितर (पु०) फैले हुए, तितर बितर।
छितराना दे० (क्रि०) बिसराना, फैलाना, फरना, विस्तृत करना।
छिति तद्० (स्त्री०) क्षिति, पृथिवी, धरती, धरा, भूमि, ज़मीन। यथा—
"छिति जल पावक गगन समीरा।
पञ्च रचित यह अधम सरीरा॥"
—पाल (पु०) राजा।—रुह (पु०) वृक्ष, पेड़।
छिदना दे० (क्रि०) बिधना, चुभना, गड़ना होना, रोकना, रुकावट डालना, रोकने की करना। (पु०) दरिच्छा, फलदान, मँगनी।
छिदनी दे० (स्त्री०) यन्त्र विशेष, जिससे छेद किया जाता है।
छिदरा दे० (वि०) छितराया हुआ, छेददार, जर्जर।
छिदवाना दे० (क्रि०) छेद करवाना।
छिद्र तद्० (पु०) छेद, विवर, बिल, रन्ध्र, दूषण, दोष, कुचाल, ऐब।—नुसन्धान (पु०) दोष का अनुसन्धान, दोष ढूँढ़ना।—न्वेषण तद्० (पु०) दोष ढूँढ़ना, खुचड़ निकालना।—न्वेषी (पु०) छिद्र का अनुसन्धान करने वाला, दोष ढूँढ़ने वाला।—दर्शी (वि०) दोष ढूँढ़ने वाला।
छिद्रित तद्० (पु०) [छिद्र+क्त] कृतछिद्र, वेधित, छेद किया हुआ, बिल बनाया हुआ, दूषित।
छिन दे० (पु०) क्षण, खिन, छन, अल्प समय, अल्पकाल, थोड़ी देर, स्वल्प समय विशेष का परिमाण।—छिन (अ०) प्रति क्षण, पलपल, प्रत्येक पल, सर्वदा, सदा।—भर में (वा०) एक पल में, बहुत ही शीघ्र।
छिनकना दे० (क्रि०) साँस को ज़ोर से निकाल कर नाक का मल या रेंट निकालना। भड़क कर भागना। (बन्दूक का) रंजक चाट जाना।
छिनरा दे० (पु०) पर-स्त्री गामी, व्यभिचारी, लम्पट।
छिनवाना दे० (क्रि०) लुटवाना, छुड़ाना, छीन लेना, बलपूर्वक ग्रहण करना।
छिनाना दे० (क्रि०) छिनवाना, दाएँ कराना।
छिनार, छिनाल दे० (स्त्री०) वेश्या वेश्याइ गामी की, कुचाली व्यभिचारिणी, दुष्टा।

छिनाला दे० (पु०) व्यभिचार, कुलटापन, कुचाल।
छिनैक दे० (पु०) क्षणैक, एक क्षण, एक पल।
छिन्न तत्० (पु०) [छिद्+क्त] खण्डित, छेदित।
—धन्वा (पु०) रणस्थल में जिस योद्धा का धनुष टूट गया हो।—नासिका (गु०) नकटा, जिसकी नाक कट गयी हो।—भिन्न (गु०) खण्डित, कटाकुटा, टूटाफूटा, तितरबितर, अस्तव्यस्त, नष्टभ्रष्ट।—मस्तक (गु०) कबन्ध, कटा मूँड़, मस्तक रहित, मस्तक हीन।—मस्ता (स्त्री०) देवी विशेष, दश महाविद्या के अन्तर्गत छठवीं महाविद्या।—संशय (गु०) संशय शून्य, सन्देह शून्य, सन्देह रहित।—रुहा (स्त्री०) गुर्च,गिलोय।
छिन्ना तत्० (स्त्री०) [छिन्न+आ] गुरुची, गुड़ची, वेश्या, पुंश्चली, व्यभिचारिणी, छिन्नमस्ता देवी।
छिप दे० (पु०) बनसी, बडिश, मछली पकड़ने का यन्त्र। [टिकटिकी।
छिपकली दे० (स्त्री०) गृहगोधिका, बिसतुइया,
छिपका दे० (स्त्री०) लुपका, गुप्त, छिद्रकाव, सिचाव।
छिपना दे० (क्रि०) लुकाना, गुम होना, गुप्त होना, दबकना।
छिपा दे० (गु०) लुका, गुप्त, अप्रकट, अप्रकाशित गुम।
—रुस्तम दे० (पु०) अप्रसिद्ध गुणी, गुप्त गुंडा।
छिपाना दे० (क्रि०) गुप्त करना, गुम करना, छिपाना, लुकाना।
छिपाव दे० (पु०) गोपन, दुराव, लुकाव।
छिपी दे० (स्त्री०) छिद्र बन्द करने की लकड़ी, काग, मेढी चाबी। [जल्दी, शितावी।
छिप्र तद्० (स्त्री०) क्षिप्र, शीघ्र, तुरन्त, त्वरित,
छिप्रोद्भवा तद्० (स्त्री०) गुड़ूची, अमृता, अमृत लता, गुरच।
छिमा तद्० (स्त्री०) क्षमा, अपराध माफ़ करना।—योग्य (गु०) क्षमा योग्य, माफ़ करने लायक, क्षमा करने के योग्य।
छियाजीस दे० (गु०) चालीस और छः, ४६, छः अधिक चालीस, षट् चत्वारिंशत्।
छियासठ दे० (गु०) साठ और छ, ६६, षाष्ठ, छः अधिक साठ, षट्षष्टी। [अस्सी, षडशीति।
छियासी दे० (गु०) अस्सी और छः, ८६, छः अधिक

छिलका दे० (पु०) बकला, वल्कल, छाल, त्वक्, त्वचा, फल आदि के ऊपर का छाल।
छिलना दे० (क्रि०) रगड़ना, घिसना, चमड़ा उखड़ जाना, रगड़ से चमड़ा छिल जाना।
छिलाना दे० (क्रि०) कटवाना, रगड़वाना, छाल उतरवाना, रगड़ लगजाना, कटवाना।
छिलैया दे० (गु०) छीलने वाला, रगड़नहार।
छिलौरी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, मोटी अंगुली के कोर पर का घाव, बिनही, कुरी। [सत्तर, षट्सप्तति।
छिहत्तर दे० (गु०) सत्तर और छः, ७६, छः अधिक
छिहना (क्रि०) ढेर लगाना, एका करना।
छिहरना (क्रि०) छितरना, बिखरना।
छिहानी दे० (पु०) श्मशान, मसान, मरघट। [अव्यय।
छी दे० (अ०) धिक्कारार्थ अव्यय, कुत्सित अर्थ वाचक
छींक दे० (स्त्री०) वेग के साथ नासिका और मुख से सहसा बहिर्गत होने वाली वायु का झोंका या स्फोट।
छींकना दे० (क्रि०) नासिकामुख द्वार से ज़ोर के साथ वायु को इस प्रकार निकालना कि शब्द हो।
छींका तद्० (पु०) रस्सी या लोहे के पतले तारों की बनी एक प्रकार की जाली जिसको ऊपर टाँग कर उसमें दूध घी आदि रखे जाते हैं, सिकहर, शिक्य।
छींट दे० (स्त्री०) दरेस, छपे कपड़े, एक प्रकार का कपड़ा जिसमें बेलबूटे छापे जाते हैं, जलकण, जल की बूँद।
"राधे छिरकत छींट छबीली" —सूरदास।
छींटना दे० (क्रि०) बिखराना, खेत में अन्न फैलाना, छितराना, बीज बोना।
छीटा दे० (पु०) छींटा, जल के छोटे छोटे अनुद्द कण।
छीछड़ा दे० (पु०) घृणित मांस, अभक्ष्य मांस, चमड़े के समान अभक्ष्य।
छीछालेदर दे० (स्त्री०) दुर्दशा, दुर्गति, ख़राबी।
छीज दे० (स्त्री०) घाटा, कमी, हानि, क्षति। [होना।
छीजना दे० (क्रि०) घटना, कम होना, सूखना, न्यून
छीजे दे० (क्रि०) घटे, कम हो, थोड़ा हो, क्षीण हो, कट जाय, दुबला हो।
छीट दे० (स्त्री०) छपा हुआ कपड़ा, छींट, छींटा।
छीटना दे० (क्रि०) फेंकना, बिगाड़ना, बिखराना, नष्ट करना, फैलाना, विस्तारित करना, पानी छिड़कना, ख़र्चे ख़र्चों आदि छोटे छोटे अन्न बोना।

छीन तद्० (गु०) क्षीण, दुर्बल, दुबला, बलहीन।

छीनना दे० (क्रि०) झटक लेना, खींच लेना, ले लेना, टानना, हस्तगत करना, ग्रहण करना।

छीना तद्० (गु०) क्षीण, दुबला, रहित, हीन, अत्यन्त दुबला, कमज़ोर, थोड़ा, कम, छीन लिया, काट डाला।

छीना छीनी दे० (स्त्री०) छीनाझपटी।

छीनाझपटी दे० (स्त्री०) बलपूर्वक किसी वस्तु को किसी से छीन लेने की क्रिया। [कतर कर।

छीनि दे० (क्रि०) छीन कर, बलपूर्वक लेकर, काट कर,

छीने दे० (क्रि०) छीने हुए, बरबस लिये हुए, न्यून हुए, नष्ट हुए, कम हुए, बलात्कार से छीन ले, कोटे काटे।

छीप दे० (स्त्री०) छुँआई, लहसन, लहसुन, लकड़ी विशेष, जिसमें मछली पकड़ने के लिये सूत बाँधा जाता है। (वि०) तेज़, वेगवान्।

छीपना दे० (क्रि०) कपड़ा छापना, छींट बनाना।

छीपी दे० (पु०) जाति विशेष, जो कपड़ा छापती है।

छीबर दे० (स्त्री०) मोटी छींट।

छीमी दे० (स्त्री०) फली, किसी पेड़ की फली, कोया, त्वक्, छिलका, छाल।

छीर तद्० (पु०) क्षीर, दूध, दुग्ध, पय।—फेन तद्० (पु०) मलाई, फेना।—समुद्र (पु०) दूध का समुद्र, क्षीरसागर। यथा—

"खानि धवार पानी तहँ काढ़ा
छीर समुद्र निकस तहँ ठाढ़ा"

पद्मावत।

छीलन दे० (स्त्री०) काटन, कतरन, ब्योंतन, छाँटन।

छीलना दे० (क्रि०) कतरना, काटना, छाल उतारना फल आदि का छाल निकालना।

छुअत दे० (क्रि०) छूते ही, छूने ही से, स्पर्श करते ही, हाथ लगाते ही, छूता है, स्पर्श करता है।

छुआछूत दे० (पु०) अपवित्र, अधम का स्पर्श, स्पर्शास्पर्श।

छुईमुई दे० (स्त्री०) एक पौधा विशेष, जिसको छूने से उसकी पत्तियाँ मुरझा जाती हैं, लजवन्ती, लजारी।

छुङ्गलिया दे० (पु०) कनिष्ठिका अंगुली, छिगुली, छोटी अंगुली। [फटकारना।

छुछकारना दे० (क्रि०) लहकराना, झिड़कना, डाँटना,

छुछली दे० (स्त्री०) ठिठली, विनोद, कलोल, खेल।

छुछुआना दे० (क्रि०) व्यर्थ इधर उधर घूमना।

छुछुन्दर दे० (स्त्री०) एक आतशबाज़ी, छछूंदर विशेष।

छुछहड़ (स्त्री०) खाली हाँडी।

छुट दे० (अ०) बिना, छोड़के, अतिरिक्त, छोटा।

छुटकाना दे० (क्रि०) छोड़ना, मुक्त करना, उद्धार करना।

छुटकारा दे० (पु०) मुक्ति, छुटाव, छुड़ाव, उद्धार।

छुटखेलना दे० (क्रि०) मनमानी करना, उच्छृङ्खलता का व्यवहार, गुंडई, बदमाशी।

छुटखेला दे० (गु०) उच्छृङ्खल, गुंडा, बदमाश, लुचा।

छुटखेली दे० (स्त्री०) लुचपन, छिनाल, व्यभिचार।

छुटना दे० (क्रि०) मुक्ति पाना, उद्धार पाना, छूट जाना, निकलना।

छुटपन दे० (पु०) छुटाई, लघुता, बालकपन, लड़काई।

छुटान, छुटानी दे० (स्त्री०) छुट्टी, अवकाश, अनध्याय।

छुटाया दे० (पु०) छुटाई, लघुता, छुटपन, छोटापन।

छुट्टा दे० (वि०) जो बंधा न हो, अकेला, निहत्था।

छुट्टी दे० (स्त्री०) छुटकारा, अवकाश, अनध्याय, विश्रान्ति समय, विश्राम, विदा।

छुटे दे० (क्रि० वि०) छूट गये, बाकी बचे, अलग हुए।

छुड़वाना दे० (क्रि०) मुक्त करना, छुड़वा देना, छुटकारा कराना।

छुड़ाना दे० (क्रि०) उद्धार करना, कृपा करना, दया दिखाना, बंधी, फँसी, उलझी या लगी हुई किसी वस्तु को अलगाना, दूसरे के कब्जे से अलग करना।

छुड़ावा दे० (पु०) मुक्ति, छुटकारा। [महसूल।

छुड़ौती दे० (स्त्री०) छुड़ाने का मूल्य, दाम, कर,

छुतिहर दे० (पु०) कुपात्र, नीच मनुष्य, अशुचि वस्तु के संसर्ग से अशुद्ध हुआ बरतन या घड़ा।

छुतहरा दे० (गु०) अशुद्ध, अपवित्र, शुद्ध रहित।

छुतिहा दे० (वि०) छूत वाला, अस्पृश्य, दूषित, पतित, निकृष्ट।

छुद्र तद्० (गु०) क्षुद्र, अविश्वसनीय, छोटा, अधम, नीच, अल्प, थोड़ा सा।—घण्टिका (स्त्री०) करधनी, मेखला।—मेखला (स्त्री०) क्षुद्रघण्टिका, करधनी। [छुहारा, भटाई नाम का एक पौधा।

छुद्रा तद्० (स्त्री०) नीच स्त्री, कुलटा, वेश्या, व्यभिचारि-

छिनाला दे० (पु०) व्यभिचार, कुलटापन, कुचाल।
छिनेक दे० (पु०) क्षणैक, एक क्षण, एक पल।
छिन्न तत्० (पु०) [छिद्+क्त] खण्डित, छेदित। —धन्वा (पु०) रणस्थल में जिस योद्धा का धनुष टूट गया हो।—नासिका (गु०) नकटा, जिसकी नाक कट गयी हो।—भिन्न (गु०) खण्डित, कटाहुआ, टूटाफूटा, तितर बितर, अस्तव्यस्त, भ्रष्टभ्रष्ट।—मस्तक (गु०) कबन्ध कटा मूँड, मस्तक रहित, मस्तक हीन।—मस्ता (स्त्री०) देवी विशेष, दश महाविद्या के अन्तर्गत छठवीं महाविद्या।—संशय (गु०) संशय शून्य, सन्देह शून्य, सन्देह रहित।—रुहा (स्त्री०) गुर्च,गिलोय।
छिन्ना तत्० (स्त्री०) [छिन्न+आ] गुरचो, गुड़ची, वेश्या, पुंश्चली, व्यभिचारिणी, छिन्नमस्ता देवी।
छिप दे० (पु०) वनसी बढ़िश, मछली पकड़ने का यन्त्र। [टिकटिकी।
छिपकली दे० (स्त्री०) गृहगोधिका, बिसतुइया,
छिपका दे० (स्त्री०) छुपका, गुप्त, छिद्रकाव, सिचाव।
छिपना दे० (क्रि०) लुकाना, गुम होना, गुप्त होना, दबकाना।
छिपा दे० (गु०) लुका, गुप्त, अप्रकट, अप्रकाशित गुम। —रुस्तम दे० (पु०) अप्रसिद्ध गुणी, गुप्त गुंडा।
छिपाना दे० (क्रि०) गुप्त करना, गुम करना, छिपाना, लुकाना।
छिपाव दे० (पु०) गोपन, दुराव लुकाव।
छिपी दे० (स्त्री०) छिद्र बन्द करने की लकड़ी, डाग, छोटी थाली। [जल्दी, शिताबी।
छिप्र तद्० (स्त्री०) क्षिप्र, शीघ्र, तुरन्त, त्वरित,
छिन्नरुहा तद्० (स्त्री०) गुड़ूची, अमृता, अमृत लता, गुरुच।
छिमा तद्० (स्त्री०) क्षमा, अपराध माफ़ करना।— योग्य (गु०) क्षमा योग्य, माफ़ करने लायक, क्षमा करने के योग्य।
छियालीस दे० (गु०) चालीस और छ, ४६, छ अधिक चालीस, षट् चत्वारिंशत्।
छियासठ दे० (गु०) साठ और छ, ६६, छाछठ छ अधिक साठ, षट्षष्ठी। [अस्सी, षडशीति।
छियासी दे० (गु०) अस्सी और छ, ८६, छः अधिक

छिलका दे० (पु०) वक्कल, वल्कल, छाल, त्वक्, त्वचा, फल आदि के ऊपर का खाल।
छिलना दे० (क्रि०) रगड़ना, घिसना, चमड़ा उखड़ जाना, रगड़ से चमड़ा छिल जाना।
छिलाना दे० (क्रि०) कटवाना, रगड़वाना, छाल उतरवाना, रगड़ लगजाना, कटजाना।
छिलैया दे० (गु०) छोलने वाला, रगड़नहार।
छिलौरी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, मोटी अंगुली के कोर पर का घाव, बिनही, कुयी। [सत्तर, षट्सप्तति।
छिहत्तर दे० (गु०) सत्तर और छ, ७६, छ अधिक
छिहना (क्रि०) ढेर लगाना, एका करना।
छिहरना (क्रि०) छितरना, बिखरना।
छिहानी दे० (पु०) *श्मशान, मसान, मरघट।* [*अव्यय।*
छी दे० (अ०) धिक्कारार्थ अव्यय, कुत्सित अर्थ वाचक
छींक दे० (स्त्री०) वेग के साथ नासिका और मुख से सहसा बहिर्गत होने वाली वायु का झोंका या स्फोट।
छींकना दे० (क्रि०) नासिकामुख द्वार से ज़ोर के साथ वायु को इस प्रकार निकालना कि शब्द हो।
छींका तद्० (पु०) रस्सी या लोहे के पतले तारों की बनी एक प्रकार की जाली जिसको ऊपर टाँग कर उसमें दूध घी आदि रखे जाते हैं, सिकहर, शिक्य।
छींट दे० (स्त्री०) दरेस, छपे कपड़े, एक प्रकार का कपड़ा जिसमें बेलबूटे छापे जाते हैं, जलकण, जल की बूँद। " राधे छिरकत छींट छबीली " —सूरदास।
छींटना दे० (क्रि०) बिखराना, खेत में अन्न फैलाना, छितराना, बीज बोना।
छींटा दे० (पु०) छींटा, जल के छोटे छोटे अम्बुद कण।
छीछड़ा दे० (पु०) दूषित मांस, अभक्ष्य मांस, चमड़े के समान अभक्ष्य।
छीछालेदर दे० (स्त्री०) दुर्दशा, दुर्गति, ख़राबी।
छीज दे० (स्त्री०) घाटा, कमी हानि, क्षति। [होना।
छीजना दे० (क्रि०) घटना, कम होना सूखना, न्यून
छीजे दे० (क्रि०) घटे, कम हो, थोड़ा हो, क्षीण हो, कट जाय, दुबला हो।
छीट दे० (स्त्री०) छपा हुआ कपड़ा, छींट, छींटा।
छींटना दे० (क्रि०) फेंकना, बिगाड़ना, बिखराना, नष्ट करना, फैलाना, विस्तारित करना, पानी छिड़कना, सरसों आदि छोटे छोटे अन्न बोना।

छीन तद्० (गु०) चीण, दुर्बल, दुबला, बलहीन।
छीनना दे० (क्रि०) झटक लेना, खींच लेना, ले लेना, टानना, हस्तगत करना, ग्रहण करना।
छीना तद्० (गु०) चीण, दुबला, रहित, हीन, अत्यन्त दुबला, कमज़ोर, थोड़ा, कम, छीन लिया, काट डाला।
छीना छोनी दे० (स्त्री०) छीनाझपटी।
छीनाझपटी दे० (स्त्री०) बलपूर्वक किसी वस्तु को किसी से छीन लेने की क्रिया। [कतर कर।
छीनि दे० (क्रि०) छीन कर, बलपूर्वक लेकर, काट कर,
छीने दे० (क्रि०) छीने हुए, बरबस लिये हुए, न्यून हुए, नष्ट हुए, कम हुए, बलात्कार से छीन ले, कोट काटे।
छीप दे० (स्त्री०) छुँडाई, लहसन, लहसुन, लकड़ी विशेष, जिसमें मछली पकड़ने के लिये सूत बाँधा जाता है। (वि०) तेज, वेगवान्।
छीपना दे० (क्रि०) कपड़ा छापना, छींट बनाना।
छीपी दे० (पु०) जाति विशेष, जो कपड़ा छापती है।
छीवर दे० (स्त्री०) मोटी छींट।
छीमी दे० (स्त्री०) फरी, किसी पेड़ की फली, कोषा, त्वक्, छिलका, छाल।
छीर तद्० (पु०) चीर, दूध, दुग्ध, पय।—फेन तद्० (पु०) मलाई, फेना।—समुद्र (पु०) दूध का समुद्र, चीरसागर। यथा—

"खानि पतार पानी तहँ काढ़ा
छीर समुद्र निकस तहँ ठाढ़ा"

पद्मावत।

छीलन दे० (स्त्री०) काटन, कतरन, ब्योंतन, छाँटन।
छीलना दे० (क्रि०) कतरना, काटना, छाल उतारना फल आदि का छाल निकालना।
छुअत दे० (क्रि०) छूते ही, छूने ही से, स्पर्श करते ही, हाथ लगाते ही, छूता है, स्पर्श करता है।
छुआछूत दे० (पु०) अपवित्र, अधम का स्पर्श, स्पर्शास्पर्श।
छुईमुई दे० (स्त्री०) एक पौधा विशेष, जिसको छूने से उसकी पत्तियाँ मुरझा जाती हैं, लज्जावन्ती, लजारी।
छुङ्गलिया दे० (पु०) कनिष्ठिका अंगुली, छिगुली, छोटी अंगुली। [फटकारना।
छुड़कारना दे० (क्रि०) लड़काना, झिड़कना, डाँटना,
छुछुली दे० (स्त्री०) छिबली, विनोद, कल्लोल, खेल।
छुछुआना दे० (क्रि०) व्यर्थ इधर उधर घूमना।
छुछुन्दर दे० (स्त्री०) एक आतशबाज़ी, छछूंदर विशेष।
छुछुहंड़ (स्त्री०) खाली हाँड़ी।
छुट दे० (अ०) बिना, छोड़के, अतिरिक्त, छोटा।
छुटकाना दे० (क्रि०) छोड़ना, मुक्त करना, उद्धार करना।
छुटकारा दे० (पु०) मुक्ति, छुटान, छुड़ाव, उद्धार।
छुटखेलना दे० (क्रि०) मनमानी करना, उच्छृङ्खलता का व्यवहार, गुंडई, बदमाशी।
छुटरीला दे० (गु०) उच्छृङ्खल, गुंडा, बदमाश, लुच्चा।
छुटलेली दे० (स्त्री०) लुचपन, छिनाल, व्यभिचार।
छुटना दे० (क्रि०) मुक्ति पाना, उद्धार पाना, छुट जाना, निकलना।
छुटपन दे० (पु०) छुटाई, लघुता, बालकपन, लड़काई।
छुटान, छुटानी दे० (स्त्री०) छुट्टी, अवकाश, अनध्याय।
छुटाया दे० (पु०) छुटाई, लघुता, छुटपन, छोटापन।
छुट्टा दे० (वि०) जो बंधा न हो, अकेला, निहत्था।
छुट्टी दे० (स्त्री०) छुटकारा, अवकाश, अनध्याय, विश्रान्ति समय, विश्राम, विदा।
छुटे दे० (क्रि० वि०) छूट गये, बाकी बचे, अलग हुए।
छुड़वाना दे० (क्रि०) मुक्त करना, छुड़वा देना, छुटकारा कराना।
छुड़ाना दे० (क्रि०) उद्धार करना, कृपा करना, दया दिखाना, बंधी, फँसी, उलझी या लगी हुई किसी वस्तु को अलगाना, दूसरे के कब्जे से अलग करना।
छुड़ावा दे० (पु०) मुक्ति, छुटकारा। [महसूल।
छुड़ौती दे० (स्त्री०) छुड़ाने का मूल्य, दाम, कर,
छुतिहर दे० (पु०) कुपात्र, नीच मनुष्य, अशुचि वस्तु के संसर्ग से अशुद्ध हुआ बरतन या घड़ा।
छुतहरा दे० (गु०) अशुद्ध, अपवित्र, शुद्ध रहित।
छुतिहा दे० (वि०) छूत वाला, अस्पृश्य, दूषित, पतित, निकृष्ट।
छुद्र तद्० (गु०) क्षुद्र, अविश्वसनीय, छोटा, अधम, नीच, अल्प, थोड़ा सा।—घण्टिका (स्त्री०) करधनी, मेखला।—मेखला (स्त्री०) छुद्रघण्टिका, करधनी। [छुहारा, कटाई नाम का एक पौधा।
छुद्रा तद्० (स्त्री०) नीच स्त्री, कुलटा, वेश्या, पतुरिया,

छुद्रघंटा तद्० (पु०) आभरण विशेष, कमर में पहिनने का गहना, करधनी, छुद्रघंटिका । यथा—
"कटि छुद्रघंटा अमरन पूरा ।
पाँयन पहिरे पायल चूरा ॥"—पद्मावत

छुधा तद्० (स्त्री०) क्षुधा, भूख, बुभुक्षा, खाने की इच्छा ।

छुधित तद्० (गु०) क्षुधित, भूखा, बुभुक्षित, क्षुधापीड़ित ।

छुप तद्० (पु०) स्पर्श, झाड़ी, वायु । (वि०) चञ्चल ।

छुपना दे० (क्रि०) छिपना, लुकना, लुकाना, अदृश्य होना, आँखों की ओट में होना, गुप्त होना ।

छुपाना दे० (क्रि०) छुपाना, छिपाना, ढाकना ।

छुपा दे० (गु०) लुका, छिपा, गुप्त, अप्रकट । तद्० (स्त्री०) पौधे, तृण विशेष ।

छुभित तद्० (गु०) क्षुभित, क्षोभ को प्राप्त, मानसिक व्यथा से दुःखी, भयभीत, मोहित ।

छुभे दे० (गु०) डरे, भयभीत हुए ।

छुर तद्० (पु०) क्षुर, छुरा, छुरी, उस्तरा ।

छुरा तद्० (पु०) बड़ी छुरी, उस्तरा, बाल मूड़ने का अस्त्र, नाइयों का अस्त्र विशेष ।

छुरिका तद्० (स्त्री०) छुरी, चक्कू ।

छुरित (पु०) बिजली की चमक, नृत्य विशेष ।

छुरी तद्० (स्त्री०) अस्त्र विशेष, चक्कू, छुरिका ।

छुलकना दे० (क्रि०) छलक के गिरना, पानी आदि का छलक के गिरना, कष्ट से मूत्र प्रस्रवण ।

छुलछुलाना दे० (क्रि०) छलक छलक के गिरना, थम थम के गिरना । [चकला उतारना ।

छुलाना दे० (क्रि०) छुवाना, स्पर्श कराना, झीलना,

छुलहला दे० (गु०) चञ्चल, चपल, छिछिल्ला ।

छुवाना (क्रि०) छुआना ।

छुवाव दे० (पु०) लगाव, सम्बन्ध, प्रतिमूर्ति, प्रकृति-कृति, रूप, सनारूप, उपमा ।

छुहाना दे० (क्रि०) चमकाना, उजाला करना, साफ करना, चूना फेरना । [पेड़ और उसका फल ।

छुहारा दे० (पु०) खजूर विशेष खजूर के समान एक

छुहारट दे० (स्त्री०), लगावट, स्पर्श, छूत ।

छुहेदे० पोते, लीपे हुए, लीपने से, पोतने से ।

छू दे० (पु०) मंत्र की फूंक, फुंको ।

छूआना दे० (क्रि०) छुलाना, स्पर्श कराना, छूने के लिये प्रेरित करना ।

छुआनी दे० (स्त्री०) फोड़ा फुन्सी, घाव, ददोरा ।

छूई दे० (स्त्री०) दुधिया मट्टी, खड़िया मट्टी, जिससे बच्चे लिखते हैं ।

छूईमूई दे० (स्त्री०) लजवन्ती, लज्जवन्ती, छुपनी, एक पौधा, जो छूने से कुम्हला जाता है ।

छूछ, छूछा दे० (गु०) खाली, रीता, रिक्त, शून्य ।

छूछरा दे० (गु०) बोदा, बोदला, बावला, निर्बोध, अनभिज्ञ ।

छूछा दे० (गु०) रिक्त, खाली, खोखला, शून्य ।

छूछी, छुछ्री दे० (स्त्री०) कुत्सित, नीच, शून्य, रिक्त ।

छूट दे० (स्त्री०) घटा, छुड़ाव, छुड़ाने का कर, चमक, दीप्ति, दमक, भ्रात्र अपराध, स्वातन्त्र्य । [उद्धार पाना ।

छूटना दे० (क्रि०) छुटना, निकलना, मुक्त होना,

छूटे (क्रि० वि०) देखो छुटे ।

छूत दे० (स्त्री०) अपवित्रता, अशुद्धता, अस्पृश्य से छुआ, अस्पृश्य, अस्पृष्ट ।

छूना दे० (क्रि०) स्पर्श करना, छुवा, छुआना, हाथ रखना, चूना पोतना ।

छेक दे० (पु०) छेद, कटाव, विभाग । तद्० (पु०) घर के पालतू पशु पक्षी, नागर, छेकानुप्रास । दे० (स्त्री०) रोक, रुकावट प्रतिबन्ध, अटकाव ।—ानुप्रास (पु०) अलङ्कार विशेष ।—ापन्हुति (पु०) अलङ्कार विशेष जिसमें युक्ति द्वारा सत्य अनुमान का विच्छेद किया जाता है ।

छेकना दे० (क्रि०) रोकना, अटकाना, घेरना, टुकड़े टुकड़े करना, खण्ड खण्ड करना ।

छेकवैया दे० (पु०) रुकवैया, रोकने वाला, अटकाने वाला, घेरने वाला, रुकावट डालने वाला ।

छेकाव दे० (पु०) छेक, रुकाव, अटकाव, घिराव ।

छेकोक्ति तद्० (स्त्री०) चतुर की उक्ति, चतुर का कथन, परिहास, व्यङ्ग्य, काव्यालङ्कार विशेष । यथा—

कहै क्षत उपमान है छेकउकहि तेहि मान,
(उदाहरण)" जे गुदात सिवराज को वे कवित्त रसमूल
के परमेसुर को चढ़ें सेई जाके फूल ।"
भूषण ।

छेदा तद्० (स्त्री०) छेदा, बाधा, कष्ट ।

छेड़ दे० (स्त्री०) छुआव, पीड़ा, खिजावट ।—खानी (स्त्री०) छेड़छाड़ ।—छाड़ (स्त्री०) छेड़खानि, चिढ़ाने वाली बात ।
छेड़ना दे० (क्रि०) चिढ़ाना, कुपित करना, खिजाना ।
छेड़ा (पु०) रस्सी, साँठ, व्यङ्ग, उपहास द्वारा तंग करने की क्रिया ।
छेत्र तद्० (पु०) क्षेत्र, खेत, भूमि, युद्धस्थान, युद्ध करने के लिये मैदान, तीर्थ, पुण्यस्थान, सदावर्त, अन्नसत्र ।—फल (पु०) क्षेत्रफल, स्थान का नाप घन फुट में । [(जैसे वंशछेद्), खण्ड, दोष, ऐब ।
छेद तद्० (पु०) छिद्र, बिल, फाँक, मुँह, नाश, ध्वंश
छेदक तद्० (पु०) छेद करने वाला, छेदनकर्त्ता, वेधक, विभाजक, नाश करने वाला । [करना, वेधना ।
छेदन तद्० (पु०) [छिद्+अन्ट्] छेदना, छिद्र
छेदना तद्० (क्रि०) गड़ाना, चुभाना, घलाना, बेंधना, पार करना । [पनीर, पेवस ।
छेना दे० (पु०) खिरसा, छेवना, फाड़ा हुआ दूध,
छेनी दे० (स्त्री०) रुखानी, पत्थर या लोहा काटने के लिये अस्त्र, टाँकी, छेवनी ।
छेम या छेमा तद्० (स्त्री०) सुख, आनन्द, मङ्गल ।—कुशल (स्त्री०) आनन्दमङ्गल, कुशलमङ्गल ।
छेमकरी तद्० (स्त्री०) क्षेमकारी, मङ्गलदायक, मङ्गल करने वाला, एक पक्षी का नाम । [चाहने वाली ।
छेमङ्करी तद्० (स्त्री०) कल्याणकारी, मङ्गलकारी, भला
छेमण्ड तद्० (पु०) बिना माँ बाप का पुत्र, टूअर, मुरहा, अनाथ, रक्षकहीन [पतला दस्त होना ।
छेरना दे० (क्रि०) अपच रोग होना, दस्त होना,
छेरी दे० (स्त्री०) बकरी, छागी । [एक बार का घटाव ।
छेव दे० (पु०) घाव, छोटा घाव, कुदाली आदि का
छेवना दे० (क्रि०) दागना, अङ्कित करना, काटना ।
दे० (स्त्री०) ताड़ी, मादक वस्तु विशेष ।
छेवनी दे० (स्त्री०) टाँकी, पछना, रुखानी ।
छेवर दे० (पु०) चमड़े की तह, छिलका, त्वक्, त्वचा ।
छेवा दे० (पु०) लकीर, चिन्ह, पाई, चोट, घाव, किसी अस्त्र से चिन्ह करना, सीमा जानने के लिये कुदारी आदि से लकीर कर देना । यथा—
"का जानेसि सुमानसर केवा,
सुवि सुमेर भा छिव पर छेवा ।" —पद्मावत ।
छैइ (पु०) निश्चल, नृत्य का भेद विशेष, नाश (स्त्री०) राख, मिटी, छाया, सीरक ।
छैहर तद्० (स्त्री०) छाया, साया ।
छै दे० (स्त्री०) षष, षट्, छै संख्या ।
छैना (क्रि०) छीजना, कम होना, नष्ट होना ।
छैया दे० (पु०) बालक, शिशु, छोकरा, लड़का ।
छैल या छैला दे० (पु०) बनाठना, सजाधजा, अहङ्कारी, अभिमानी, शोहदा, बाँका, अकड़ैत, बाहरी दिखावे में बनठन कर रहने वाला ।—चिकनिया (पु०) छैला, शोहदा ।—छबीला दे० (पु०) रँगीला ।
छो तद्० (पु०) छोह, प्रेम, दया, क्षोभ, कोप । (बिल्ली को भगाने के लिये भी 'छो छो' कहा जाता है ।)
छोआ दे० (पु०) चोटा, गुड़ की मैल, जूसी, चीनी बनाने के लिये गुड़ से जो मैल निकाला जाता है ।
छोई दे० (स्त्री०) गन्ने के ऊपर का छिलका जो छील कर फेंका जाता है । गड़ेरी का वह भाग जिसका रस चूस कर फेंक दिया जाता है ।
छोंक दे० (पु०) बघार, बघार डालना, तरकारी या दाल आदि का छोंका जाना ।
छोंकन दे० (पु०) बघार के मसाले, बघार ।
छोंघला दे० (पु०) प्रेम, प्यार, पियार, स्नेह, चोचला ।
छोंछा दे० (स्त्री०) बड़ी सुई, सुई की खोल जिसमें वह रखी जाती है ।
छोकरा, छोकड़ा दे० (पु०) शिशु, लड़का, बालक ।
छोकरी, छोकड़ी (स्त्री०) कन्या, लड़की, पुत्री ।
छोकला (पु०) छिलका, वल्कल, छाल ।
छोछी दे० (स्त्री०) अची, गोदी, कोला, उत्सङ्ग ।
छोटका (गु०) छोटा ।
छोटा दे० (गु०) कनिष्ठ, लघु, कनीयान्, लहुरा ।
छोटाई या छोटापन दे० (स्त्री०) लघुता, छोटापन, लहुरापन ।
छोड़ना दे० (क्रि०) त्यागना, त्याग करना, अपने यहाँ से हटा देना, मुक्त करना, स्वतन्त्र कर देना ।
छोड़ा दे० (पु०) छुड़ाव, छुटकारा, मुक्ति ।
छोड़वाना दे० (क्रि०) छुटकारा कराना, मुक्ति कराना, किसी प्रकार बन्धन कटवाना ।

छुड़ौती दे० (स्त्री०) छुटकारे का दाम, उतराई, उतारे का दाम।
छोनिप तद्० (पु०) क्षोणिप, भूपाल, भूमिपति, पृथिवी-पति, भूप, भुआल, भूपाल, राजा।
छोनी तद्० (स्त्री०) क्षोणी, पृथिवी, धरती भूमि, यथा—"छोनी में के छोनीपति छाजे जिन्ह छत्र छाया, छोनी छानी, छाये छिति आये निमि राजा के; प्रबल प्रचण्ड बरबण्ड बानैत बाहु, बाँके बी बाँकी बैदेही बर काज के, बोले बंदी बिरद बजाये बर बाजनऊ, बाजे बाजे बीर बाहु छुवत समाज के, तुलसी मुदित मन पुर नर नारी जेते, बार बार हेरें मुख अवध मृगराज के।" कवित्त रामायण।
छोप दे० (पु०) एक बार का किया हुआ रङ्ग, किसी वस्तु पर एक बार रङ्ग चढ़ाना, रङ्ग भरना।
छोपना दे० (क्रि०) भरना, रङ्गना, रङ्ग देना। [अस्थिरता।
छोभ तद्० (पु०) क्षोभ, घबराहट, मन की चञ्चलता,
छोभा दे० (पु०) देखो छोभ। [इधर उधर का सिरा।
छोर दे० (पु०) किनारा, आर पार, एक किनारा,
छोरना दे० (क्रि०) खोलना, छोड़ना शुरू करना।
छोरा दे० (स्त्री०) लड़का, छोकरा, बालक। (क्रि०) खोला, खोल दिया, गाँठ खोला।
छोरा छोरी दे० (स्त्री०) लड़का लड़की, पुत्र पुत्री।
छोरी दे० (स्त्री०) कन्या, पुत्री, बालिका। (क्रि०) खोल दी, छोड़ दी।
छोलदारी (स्त्री०) खेमा छोटा तम्बू।
छोलना दे० (क्रि०) छीलना, खाल उतारना।
छोलना दे० (पु०) घास, छटी घास, चना, ईख को काट कर छीलने वाला।
छोलनी दे० (स्त्री०) खुर्पी, घास छीलने का शस्त्र।
छोली (वि०) छील डाली, छील कर।
छोह दे० (पु०) स्नेह, मोह, प्रेम, प्रीति, मुहब्बत।
छोहू दे० (पु०) प्यार, प्रीति, प्रेम, उल्फत।
छोहरा दे० (पु०) लड़का, बालक।—छोहरी (स्त्री०) बालिका, लड़की।
छोही दे० (पु०) प्रेमी, प्रणयी, अनुरागी, अभिलाषी।
छौंक दे० (पु०) बघार, तड़का।
छौंकन दे० (पु०) बघार, छौंक।
छौंकना दे० (क्रि०) बघारना, छौंकना।
छौनन दे० (पु०) छीनाछीनी, झपटाझपटी। [झपटना।
छौनना दे० (क्रि०) झपटाझपटी करना, चौकसी के साथ
छौनल दे० (पु०) झपटाझपटी करना।
छौना दे० (पु०) शावक, शिशु, बच्चा, जानवर का बच्चा, लड़का, छोरा, बालक, छोटा बच्चा। यथा—
छोनी में न छाँड्यो छप्यो छोनिप को छौनो, छोटो छोनिप छपन ताकौ बीरद बड़ुत हौं।
—कवित्त-रामायण।
छौर तद्० (पु०) मुण्डन, माथा मुँड़वाना, बाल बनवाना।
छौरा (पु०) कोयर, ज्वार बाजरे का डंठल। [आनन्दी।
छौलिया दे० (पु०) हर्षित, प्रसन्न, रसिक, विलासी,

ज

ज, व्यञ्जन का आठवाँ अक्षर, इसका उच्चारण तालु द्वारा होता है। अतएव यह तालव्य वर्ण कहा जाता है।
ज तद्० (पु०) किसी शब्द के साथ संयुक्त होने पर यह उत्पत्ति अर्थ का वाचक हो जाता है। यथा—मित्रज, आत्मज, देहज, इत्यादि। विष्णु, विष, मुक्ति, तेज, वेग, जन्म, पिता, मृत्युञ्जय, छन्द शास्त्र का तीन अक्षरों का गण। (वि०) वेगवान्, वेग, वेता।
जई दे० (स्त्री०) जौ का छोटा अङ्कुर, जौ की जाति का एक अन्न, धँसुआ।
जईफ (पु०) वृद्ध, बुड्ढा।—ी (स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढ़ाई।
जक दे० (पु०) यक्ष, रक्षित धन का रक्षक, गाड़े धन का रखवारा, कंजूस आदमी।
जकड़ना दे० (क्रि०) कसना, बाँधना, खींच खींच कर बाँधना, दृढ़ बाँधना।
जकड़बन्द दे० (पु०) जकड़बाद, रोग विशेष, वायु जनित रोग, कुश्ती का पेच।
जकुट तद्० (पु०) कुत्ता, बैंगन का फूल, मलयाचल।
जक्की दे० (स्त्री०) बुलबुल की एक जाति।
जग दे० (पु०) जगत्, संसार, दुनिया।
जच्छ तद्० (पु०) यक्ष, देव योनि विशेष।

जदमा दे० (पु०) यक्ष्मा, इस नाम का एक रोग।
जखनाचार्य दे० (पु०) यह राजवंशीय प्रधान शिल्पी थे, मैसूर के राजघराने में इनकी उत्पत्ति हुई थी, ख्रीष्टीय बारहवीं शताब्दी में ये विद्यमान थे। चित्र रचना की निपुणता इनमें अलौकिक थी। कहते हैं इस समय मैसूर राज्य में जो बड़े बड़े प्रधान मन्दिर वर्त्तमान हैं, वे सब इन्हीं के बनाये हैं।
जखनी तद्० (स्त्री०) यक्षिणी।
ज़ख़म दे० (पु०) घाव, क्षत, चोट।—ी (वि०) घायल।
ज़ख़ीरा दे० (पु०) कोष, ढेर, समूह, पेड़ों की पौदर का भण्डार।
जखेड़ा दे० (पु०) जमाव, बखेड़ा।
जखैया (पु०) भूतयोनि विशेष।
ज़ख़्म (पु०) घाव, फोड़ा।
जग तद्० (पु०) जगत्, भुवन, संसार, दुनिया, जङ्गम, चलने वाले, जनसमुदाय। [सूरज, दिनकर।
जगचक्षु तत्० (पु०) सूर्य, दिवाकर, भानु, मार्त्तण्ड,
जगजगा दे० (पु०) दीप्ति, सुन्दरता, प्रकाश, शोभा, पीतल का मुलम्मा। [लावण्य।
जगजगाहट दे० (स्त्री०) चमक, प्रकाश, उजलाई,
जगजागो दे० (स्त्री०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात, संसार में विदित।
जगज्जीवन तद्० (पु०) जगत् का आधार, जगत् का प्राण, रक्षक, पानी, ईश्वर, मेघ, वायु।
जगड्वाल तद्० (पु०) व्यर्थ का आयोजन, आडम्बर।
जगण तत्० (पु०) गणविशेष, पद्यरचना विषयक रीति विशेष, छन्दों का सन्निवेश और पहचान कराने वाले अष्टविध गणों में का एक गण। जगण में बीच का अक्षर गुरु और आदि अन्त के लघु होते हैं। यथा।—"सवार" इसका देवता जल है।
जगत् तद्० (पु०) संसार, जग, टेक, थाह, कुएँ का पनघटा, कुएँ का चबूतरा, वायु, महादेव, जङ्गम।—कर्त्ता (पु०) ब्रह्मा, विधाता, सृष्टिकर्त्ता, परमात्मा।—त्राता (पु०) जगतारक, जगरक्षक।—प्राण (पु०) वायु, अनिल, वात।—साक्षी (पु०) सूर्य, दिनमणि, भास्कर, दिवाकर, भानु।
जगत्सेठ दे० (पु०) इतिहास प्रसिद्ध मुर्शिदाबाद निवासी एक धनकुबेर, इनका नाम फतेहचन्द था। १७२२ ई० में दिल्ली के बादशाह ने इनको जगत्सेठ की उपाधि दी थी, यह जैनी थे। इनके पुरखा मरवाड़ से बङ्गाल आये थे। इनके पिता का नाम उदयचन्द और माता का नाम धनबाई था। धनबाई के भाई माणिकचन्द को कोई लड़का नहीं था, अतएव इन्होंने अपनी बहिन के लड़के फतेहचन्द को गोद लिया। प्रसिद्ध धनी माणिकचन्द के अतुल ऐश्वर्य के मालिक फतेहचन्द हुए थे। बङ्गाल के नवाब मीरकासिम के क्रोध में पड़कर जगत्सेठ को अन्त में अपने प्राण गवाने पड़े। जिस धन के लिये उन्होंने कितने छलकपट किया, कितने षड्यन्त्र रचे, परन्तु मौके पर उस धन से उनको कुछ भी सहायता नहीं मिली।
जगती तद्० (स्त्री०) भुवन, लोक, पृथिवी, धरती भूमि।—तल संसार, ब्रह्माण्ड, समस्त भूमण्डल, पृथ्वीतल।
जगद् तद्० (पु०) पालक, रक्षक।
जगदम्बा या जगदम्बिका तद्० (स्त्री०) सब जगत् की माता, जगमाता, वैष्णवी, शक्ति, आदिशक्ति, भवानी, दुर्गा। [का प्रारम्भ, परमेश्वर, ब्रह्मा।
जगदादि तद्० (पु०) जगत् का आरम्भ समय, सृष्टि
जगदाधार तद्० (पु०) जगत् के आधार, अनन्त, शेषनाग, संसार का अवलम्ब, वायु परमात्मा, धर्म।
जगदानन्द तद्० (पु०) ईश्वर।
जगदीश तद्० (पु०) जगत् का स्वामी, परमात्मा, (१) जगन्नाथ। (२) नवद्वीप निवासी न्यायशास्त्र के एक विख्यात विद्वान्, १७वीं सदी के प्रारम्भ में यह उत्पन्न हुए थे। इनका बाल्यकाल खेलने ही में बीत गया। अट्ठारह वर्ष की अवस्था में एक संन्यासी से इनकी भेंट हुई। वे संन्यासी इनकी बुद्धिमानी देख प्रसन्न हुए और इनको पढ़ाने लगे। जगदीश बड़े दरिद्र के पुत्र थे तथापि अनेकों कष्टों को सहकर भी विद्योपार्जन इन्होंने किया। इनकी बुद्धि तीव्र थी ही, यह एक बड़े भारी विद्वान् हो गये हैं। न्यायशास्त्र के १२ उपादेय ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं।
जगदीश्वर तद्० (पु०) परमात्मा।
जगदीश्वरी तद्० (स्त्री०) भगवती, लक्ष्मी।
जगद्गुरु तद्० (पु०) अत्यन्त पूज्य वा प्रतिष्ठित पुरुष, शङ्कराचार्य के सम्प्रदायाचार्यों की उपाधि, परमेश्वर, शिव, नारद।

जगद्धर तद्० (पु०) संस्कृत के एक पण्डित, ये न्याय वैशेषिक और व्याकरण के बड़े पण्डित थे। वेणी संहार, वासवदत्ता, मालती माधव आदि संस्कृत ग्रन्थों की टीकाएँ इन्होंने बड़ी योग्यता से लिखी हैं। उनके अन्त में इन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है। द्विजातिकुलतिलक चण्डेश्वर नामक एक प्रसिद्ध मीमांसक पण्डित थे, उनके पुत्र रामेश्वर पण्डित भी प्रसिद्ध मीमांसक थे। रामेश्वर के पुत्र गदाधर, गदाधर के पुत्र विद्याधर और विद्याधर के पुत्र रत्नधर हुए। इन्हीं रत्नधर ही के पुत्र जगद्धर थे। जगद्धर के पिता की उपाधि "श्रीमन्महोपाध्याय, पण्डितराज, महाकविराज, धर्माधिकारी" थी, इससे इनके कुल की उच्चता जान पड़ती है। पण्डितवर रामकृष्ण भण्डारकर के निर्णयानुसार इनका समय १४ वीं सदी के पहिले नहीं हो सकता।

जगद्धात्री तद्० (स्त्री०) चतुर्भुजा, सिंहवाहिनी, भगवती, शरत्काल की दुर्गापूजा के अनन्तर इनकी पूजा होती है। कहते हैं एक समय देवताओं को यह अभिमान हुआ कि हम लोगों से कोई दूसरा बड़ा नहीं है। ईश्वर या परमेश्वर कोई वस्तु नहीं है। देवताओं के ऐसे उद्धत विचारों को समझ कर, भगवती ज्योतिरूप में उनके सामने आविर्भूत हुईं। देवता इस ज्योति का निश्चय नहीं कर सके, अत एव इसके परिचय के लिये, सर्वसम्मति से वायु भेजे गये। ज्योति के मध्यस्थित भगवती दुर्गा उनके सामने एक तृण रख कर बोलीं, यदि तुम इसको उठा लो तब हम तुमको शक्तिमान् समझेंगी, परन्तु पहाड़ों को उखाड़ने वाले वायु से वह तृण नहीं उठ सका, इसी प्रकार अग्नि आदि और देवता भी आये, परन्तु उनमें कोई भी सफल नहीं हुआ, तब उनका अभिमान दूर हुआ और उन्होंने समझा कि हम लोगों से भी बढ़ कर कोई प्रतापी है। उसी मूर्त्ति को परमेश्वरी समझ कर, देवता पूजने लगे। यह भगवती रक्ताम्बरा, त्रिनयना और चतुर्भुजा हैं। सरस्वती।

जगना तद्० (क्रि०) उठना, प्रबुद्ध होना, जागृत होना, निद्रा त्याग करना, नींद से उठना, उत्साहित होना, उत्तेजित होना, देवी देवता या भूत का, अधिक प्रभाव दिखाना, उमड़ना, उमड़ना, बढ़ना, प्रज्वलित होना, कार्य करने के लिये तैयार होना।

जगन्नाथ तद्० (पु०) श्री क्षेत्र के देवता, जगदीश। (देखो इन्द्रद्युम्न), ईश्वर।—पण्डितराज (पु०) यह अलङ्कार शास्त्र के बड़े प्रसिद्ध विद्वान् थे। दिल्ली के बादशाह के दरबार में थे। यह अपने विषय में लिखते हैं "दिल्लीवल्लभपाणिपल्लवतले नीतं नवीनं वयः" यह तैलङ्ग ब्राह्मण थे, परन्तु काशी में रह कर इन्होंने विद्याभ्यास किया था। इनके पिता का नाम पेरुभट्ट था, माता का नाम लक्ष्मी और ज्ञानेन्द्रभिक्षु गुरु का नाम था। जयपुर के राजा जयसिंह की आज्ञा से इन्होंने जयपुर और काशी में वेधशालायें बनायी थीं। दिल्ली के बादशाह ने इन्हें पण्डितराज की पदवी दी थी। इन्होंने संस्कृत की बहुत सी पुस्तकें बनायी थीं। रसगङ्गाधर, मनोरमाकुचमर्दन, गङ्गालहरी, करुणालहरी, अमृतलहरी काव्य, भामिनी विलास, प्राणाभरण, आसफविलास, आदि इनके बनाये ग्रन्थों के नाम हैं। किसी मुसल्मानिन से इनका प्रणय हो गया था। अतएव काशी के पण्डितों ने इनको जाति बाहर कर दिया। उन्होंने अपनी शुद्धि प्रमाणित करने के लिये गङ्गा के किनारे बैठ कर गङ्गा लहरी बनाते बनाते प्राण त्याग किये। बुढ़ापे में कुछ दिनों तक ये मधुपुरी में भी रहे थे।

जगन्निवास तद्० (पु०) ईश्वर, विष्णु।

जगन्नियन्ता तद्० (पु०) विष्णु, ईश्वर।

जगन्मय तद्० (पु०) विष्णु।—ी (स्त्री०) लक्ष्मी।

जगन्माता तद्० (स्त्री०) लक्ष्मी दुर्गा, आदि शक्ति।

जगन्मोहिनी तद्० (स्त्री०) महामाया।

जगमग या जगमगा दे० (गु०) चमकीला, चमकदार, प्रभायुक्त, प्रभावान्।

जगमगित दे० (क्रि०) चमचमाता हुआ, दीप्तिमान।

जगमगाना दे० (क्रि०) शोभना, चमकना, दीपना।

जगमाता तद्० (स्त्री०) जगत की माता, देवी, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती।

जगजोनी तद्० (स्त्री०) ब्रह्मा, विधाता।

जगरमगर (गु०) जगमग, चमकीला।

जगमल्लामा तद्० (स्त्री०) वेश्या, पातुर, पतुरिया।

जगवाना (क्रि०) उठवाना, सावधान करवाना।
जगह दे० (स्त्री०) स्थान, भूमि, धरती, ठौर, समाई, स्थिति, पद, चौक।—सिर करना (वा०) अवसर पर व्यय करना, उचित खर्च करना। —सिर होना (वा०) किसी काम पर नियुक्त होना, कामयाब कार्य का मिल जाना, यथोचित होना, यथा योग्य नियोग।
जगहर दे० (पु०) जागरण, प्रबोध, निद्रा त्याग,जगाई।
जगज्ज्योति तद्० (स्त्री०) जगजगाहट, प्रकाशमान प्रकाशशील, सर्वदा प्रकाशित रहनेवाली ज्योति, श्रखयदीप, प्रभावशाली देव।
जगाना दे० (क्रि०) उठाना, सचेत करना, सोते से उठाना, जागृत करना, मंत्र आदि का सिद्ध करना।
जगार दे० (स्त्री०) जागरण।
जगावहु दे० (क्रि०) जगाओ, उठाओ, जागृत करो।
जगेसर तद्०(पु०) यज्ञेश्वर,यज्ञपुरुष,यज्ञ स्वामी,विष्णु।
जघन तद्० (पु०) कमर के नीचे का भाग, कमर, कटि, उपस्थ, कटिदेश।—कूप (पु०) चूतड़ों पर का गड्ढा।—चपला (स्त्री०) नृत्य विशेष, नृत्य का एक भेद, व्यभिचारिणी दुराचारिणी, वेश्या।
जघन्य तद्० (गु०) अन्तिम, चरम, पीछे का, निन्दित, गर्हित, कुत्सित, अधम, नीच, अन्त्यज। —ज (पु०) छोटा, कनिष्ठ, शूद्र, चौथा वर्ण।
जङ्गम तद्० (पु०) चलने वाला, स्थावर, गति शक्ति विशिष्ट, चरिष्णु, शैवों का एक भेद।—कुटी (स्त्री०) छत्र, आतपत्र।—ता (स्त्री०) जङ्गम का धर्म या स्वभाव, चाञ्चल्य, चपलता, अस्थिरता।
जङ्गल तद्० (पु०) वन, कानन, अरण्य, बिना जल का देश, निर्जन स्थान, वृक्षों का समूह।—सेतु (पु०) चलने वाला सेतु, जो बाँध चल सके, हटने वाला पुल। [विशेष, गवाक्ष, गौख, खिड़की।
जङ्गला तद्० (पु०) जङ्गला, जन्म, पटपर, रागिनी
जङ्गलात तद्० (पु०) वनसमूह, घोरवन, वन्य, वनमय। [उपवन, वनवासी।
जङ्गली तद्० (गु०) वन्य, वनोद्भव, वनैला, वन में
जङ्गाल तद्० (पु०) रोध विशेष, एक प्रकार की रुकावट, बाँध, सेतु, पुल, डाँड़, पगार, भगौना, कदादार बड़ा सब्बल।

जङ्घा तद्० (स्त्री०) जाँघ जानु के नीचे का भाग।
जङ्घिया दे० (पु०) वस्त्र विशेष, जिसे कसरत करने के समय पहलवान पहनते हैं। आच्छादन वस्त्र, कटिपट, जङ्घा पर पहनने का वस्त्र।
जचना दे० (क्रि०) पसन्द होना, अटकल होना, अटकला जाना, किसी वस्तु की अच्छाई बुराई और दाम का मालूम होना, परीक्षित होना।
जचाना दे० (क्रि०) अटकल कराना, परीक्षा कराना खोटे खरे की परीक्षा कराना, पहचनवाना, अनुसन्धान करना।
जचावट दे० (स्त्री०) जाँच, परीक्षा, अनुसन्धान।
जच्चा दे० (स्त्री०) प्रसूता स्त्री।
जच्छ (पु०) यक्ष।
जजमान (पु०) यजमान।
जञ्जाल दे० (पु०) उलझन, झंझट, प्रपञ्च, दुःख, क्लेश, उलझाव, उद्विग्नता, व्याकुलता, घबराहट, कठिनता।
जञ्जालिया दे० (गु०) उत्पाती, उपद्रवी, झंझटिया।
जञ्जाली दे० (गु०) क्लेशी, दुःखी, घबराया हुआ, प्रपञ्ची, उलझन में फँसा हुआ।
जञोपवीत तद्० (पु०) यज्ञोपवीत, ब्रह्मसूत्र, जनेऊ, उपवीत, संस्कार विशेष, बरुआ, व्रतबन्ध, इस संस्कार के अधिकारी त्रिवर्ण हैं। यथाक्रम ८-११ और १२ वर्ष की अवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार होता है।
जजाति तद्० (पु०) ययाति, एक राजा का नाम, एक चन्द्रवंशी राजा (ययाति देखो)।
जट तद्० (स्त्री०) जटा, मिले हुए बाल,बच्चों की लटुरी।
जटना दे० (क्रि०) मूँड़ना, मूसना, ठगना, धोखा देकर ले लेना।
जटल तद्० (स्त्री०) जटिल, कठिन, गप, बकवाद।
जटला दे० (पु०) समूह, समुदाय, भीड़, बैठका, जनता।
जटा तद्० (स्त्री०) एक में सटे हुए बहुत से बाल, साधुओं की जटा, ग्रथितकेश, जटामांसी नामक औषधि विशेष, शठ.गरि, वर्वांघमूल, वेदपाठ का एक भेद।—जूट (पु०) जटा का समूह, ग्रथित केश, शिव की जटा।—ज्वाल (पु०)

प्रदीप, दीपक, महादेव का तीसरा नेत्र।—टङ्क (पु०) महेश, महादेव, एक ।—धर (पु०) महादेव, याजक, योगी। एक दीपकार का नाम, बुद्धभेद।—धरी (स्त्री०) महादेव की जटा, जन्म मासी नामक एक औषधि।—भार (पु०) जटा का भार, जटा समूह, जटा समुदाय बहुत लम्बी लम्बी जटा।—मांसी (स्त्री०) औषधि विशेष, सुगन्ध द्रव्य विशेष, बालछड़।

जटायु तद्० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध पक्षी विशेष, सम्पाति नामक पक्षिराज का छोटा भाई, महाराज दशरथ का मित्र, सूर्य सारथि अरुण का पुत्र, यह महाराज अयोध्याधिपति दशरथ के मित्र थे। जब पञ्चवटी से रावण सीता को ले कर के लिये जाता था तब जटायु ने सीता का विलाप सुन कर उनको रावण के हाथ से छुड़ाने के बहुत यत्न किये थे जटायु ने बड़ी वीरता से युद्ध किया रावण का रथ टूट गया, परन्तु अन्त में रावण के खड्गप्रहार से जटायु के पक्ष कट गये, वे भूमि पर गिर गये। जब राम लक्ष्मण, सीता को ढूँढ़ने निकले थे, तब उनकी भेंट जटायु से हुई थी। सीता का समाचार सुनाकर जटायु परलोकगामी हुए। श्रीरामचन्द्र ने अपने पिता के मित्र की अन्तिम क्रिया स्वयं की थी।

जटाल तद्० (गु०) जटायुक्त, जटाधर, जटाधारी। (पु०) कचूर, वटवृक्ष बरगद, बड़ का पेड़, गुग्गुल।

जटाला तद्० (स्त्री०) जटावती, जटावाली, जटामासी, वृक्ष हर।

जटासुर तद्० (पु०) एक राक्षस का नाम, युधिष्ठिर आदि जब बदरिकाश्रम में रहते थे, उस समय यह राक्षस द्रौपदी को हरण करने की इच्छा से वहाँ आया और अपने को बड़ा बुद्धिमान् पण्डित बता कर रहने लगा। एक दिन भीमसेन शिकार के लिये वन गये हुए थे। राक्षस युधिष्ठिर नकुल और सहदेव के साथ द्रौपदी को बाँध कर ले जाने लगा। संयोगवश भीमसेन से मार्ग में भेंट हो गयी, उन्होंने राक्षस को मारकर अपने भाई और द्रौपदी का उद्धार किया।

जटित तद्० (गु०) जड़ित, जड़ा हुआ, संबद्ध, बैठाया।

जटिया दे० (गु०) जटायुक्त, जटाविशिष्ट, जटाधारी।

जटिल तद्० (गु०) जटाविशिष्ट, जटाधारी, जो सरलतापूर्वक न समझा जाय, कठिन, कठोर उलझन की बातें, दुर्बोध। वटवृक्ष, ब्रह्मचारी, साधु। एक विष्णुभक्त बालक, इसके विषय में विलक्षण बात कही जाती है। यह पाठशाला जाते डरता था। इसकी माता गोविन्द गोविन्द भजने को कहा करती थी। माता के उपदेशानुसार यह गोविन्द नाम का स्मरण करता हुआ पाठशाला जाने लगा। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान् बालक के रूप में उसके साथ खेला करते थे। एक दिन जटिल पाठशाला में ठीक समय पर नहीं जा सका। गुरु के कारण पूँछने पर उसने ठीक ठीक बता दिया, परन्तु उन्होंने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया, उसको बेंत से पीटा, परन्तु उसकी देह पर बेंत का दाग नहीं पड़ा। यह देख गुरु को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दिन गुरु के यहाँ उत्सव था, उन्होंने दही ले आने के लिये जटिल को कह रक्खा था। ब्राह्मण भोजन के समय एक हुंडिया दही लेकर बालक पहुँचा, लोग उसको झिड़की सुनाने लगे। उसने कहा कि 'मेरे मित्र गोविन्द ने कहा है कि चाहे कितने ही आदमी इसमें से खायँ परन्तु दही में कमी न होगी"। ऐसा ही हुआ। तब लोगों को विश्वास हुआ। जटिल के साथ गोविन्द के दर्शन करने के लिये गुरु वन में गये।

जटिला तद्० (स्त्री०) राधा की सास का नाम, यह आयन घोष की माता थी। दुर्मद नाम का एक और इसके पुत्र था और एक कन्या थी जिसका नाम कुटिला था। कृष्ण प्रणयिनी राधा के चरित्र को यह अत्यन्त कलङ्कित समझती थी। ब्रह्मचारिणी, पीपल, वच, दोना, गौतम वंश की एक ऋषिकन्या जो सप्तऋषियों के पुत्र को ब्याही गयी थी।

जटी तद्० (पु०) वटवृक्ष, बरगद का पेड़, शिवजी, महादेव, पाकर। [एक चिन्ह।

जटुल दे० (पु०) तिल, मसा लहसन, शरीर में का

जठर तद्० (पु०) उदर, पेट। (गु०) बद्ध, कठिन, कठोर —अग्नि (पु०) पेट की आग, अन्न पचा

वाली अग्नि, क्षुधा, बुभुक्षा।—नल (पु०) उदराग्नि, क्षुधा, बुभुक्षा।—मय (पु०) अतीसार, जलोदर, जलोदररोगी।

जठर तद्० (गु०) सख़्त, दृढ़, कठिन, कठोर।—ग्नि (स्त्री०) पेट की आग, जठराग्नि।

जठराम तद्० (पु०) जलोदर, जठरामय, जलन्धर।

जठेरा दे० (पु०) बड़ा, जेठा, अग्रज। (स्त्री०) जठेरी बड़ी, बूढ़ी, मान्या, पूज्या।

जड़ तद्० (गु०) मूर्ख, बहरा, मूढ़, निर्बोध, निर्बुद्धि, चलन शक्ति हीन, दुष्ट, अकार्यकारी, जो वेद पढ़ने में असमर्थ हो। (पु०) जल, पर्वत, वृक्ष, सीसा नाम का धातु। (स्त्री०) मूल, पेड़ या पौधों का वह भाग जो ज़मीन के भीतर रहता है। नींव।—क्रिय (गु०) दीर्घसूत्री आलसी, अलस, निरुत्साही।—ता (स्त्री०) शून्यता, अचलपन, मूढ़ता, स्तब्धता, मूर्खता, बेवकूफ़ी।—जन्तु (पु०) मूढ़जीव, मूर्ख जीव, निर्बोध पशु पक्षी आदि।—बुद्धि (गु०) अज्ञान, निर्बोध, मूर्ख, मूढ़।—मति (गु०) निर्बुद्धि, मूर्ख।

जड़न दे० (पु०) गहने जड़ने का काम, गहनों में मोती पत्थर आदि जड़ना।

जड़ना दे० (क्रि०) लगाना, बैठाना, मटकाना, मारना, सटना, नग बैठाना।

जड़पेड़ दे० (स्त्री०) मूल सहित पेड़, समस्त पेड़, समूचा वृक्ष।—से उखाड़ना (वा०) समूल से उखाड़ना, समूल नष्ट कर देना, निर्मूल कर देना, मूल समेत उखाड़ डालना।

जड़वट दे० (स्त्री०) सूम्य, ठूंट, ठूठा, बरगद की जड़।

जड़भरत तद्० (पु०) शालग्राम नामक स्थान के भरत नामक राजा किसी वन में वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करके रहते थे। एक दिन गङ्गा के निकट, एक दुःखी मृगशिशु को इन्होंने देखा। दया परवश होकर यह उसे अपने आश्रम में ले आये। उसको पालने पोसने लगे। यों ही थोड़े दिन बीत गये। भरत का प्रेम उस मृगशिशु से बहुत अधिक हो गया। यहाँ तक कि मरते समय तक भी भरत उसे नहीं भूल सके। उसी का स्मरण करते करते भरत का प्राण छूट गया। मृगयोनि में भरत का जन्म हुआ। परन्तु इनको अपने पूर्व की बातें स्मरण थीं। अतएव अपने पूर्व आश्रम में आकर सूखी घास आदि से इन्होंने अपना जीवन बिताया। दूसरे जन्म में यह ब्राह्मण हुए। विषयोपभोग आदि से सांसारिक विषयों में न फँसने के लिये, यह उन्मत्त के वेश में रहने लगे। अपनी विद्या या बुद्धि का परिचय यह किसी को नहीं देते थे। अतएव इनको मूर्ख समझ कर, गाँव वाले काम करा लिया करते थे और कुछ भोजन के लिये इन्हें दे दिया करते थे। पिता की मृत्यु के बाद भाइयों के व्यवहार से यह वन में आकर भगवद्भजन करने लगे।

जड़हन दे० (पु०) अगहनिया धान, कातिक में कटने [वाला धान।

जड़हनिया दे० (पु०) पतिका धान।

जड़ाई दे० (स्त्री०) जड़ने का काम, जड़ने की मजूरी, [पच्चीकारी।

जड़ाऊ दे० (गु०) जड़ा हुआ, खचित, जड़ाई किया हुआ, पची किया हुआ, नग जड़ा हुआ, खचित, मण्डित, सलग्न।

जड़ाना दे० (क्रि०) जड़ाई करना, जड़वाना, पच्ची का काम कराना, नग बैठाना, शीत खाना।

जड़ाव दे० (पु०) जड़ने का काम, पच्चीकारी।—ट (स्त्री०) जड़ने का काम या उसका भाव।

जड़ावर दे० (स्त्री०) जाड़े की सामग्री, जाड़े के [कपड़े।

जड़ित तद्० (गु०) जड़ा हुआ, जड़ाई का काम किया हुआ इत्यादि जड़े हुए।

जड़िनी दे० (स्त्री०) जड़ की, दुष्टा, मूर्खा।

जड़िया (पु०) जड़ने वाला, सुनार की एक जाति।

जड़ी दे० (स्त्री०) मूल, मूरि, जड़ी बुटी, जड़ दी गई।—बूटी (स्त्री०) दवाई, औषधि, दवारी, मूल।

जड़ीभूत तद्० (गु०) स्तम्भित, चकित, आश्चर्यित, स्तब्धीकृत।

जत दे० (स्त्री०) चाल, भाँति, रीति, आकृति, [डौल। (सर्व०) जो, जितने, जेते।

जतन तद्० (पु०) यत्न, उपाय, उद्योग, परिश्रम।

जतनी तद्० (गु०) यत्नी, उद्योगी, उपायी, परिश्रमी सुचतुर, चालाक।

जताना दे० (क्रि०) चेताना, बताना, बतलाना, पहले [से सूचना देना।

जती तद्० (पु०) यती, सन्यासी योगी, भिखारी।

जतु तद्० (स्त्री०) लाख, लाक्षा, लाह, पीपल का गोंद।

जतुक तद्० (पु०) लाख, हींग, बढ़ुआ।
जतुगृह तद्० (पु०) लाखागृह, लाह का गृह, (जतुगृह ही में दुर्योधन ने पाण्डवों को बन्द कराके आग लगवा दी थी।)
जत्रु तद्० (पु०) गले की हड्डी, हँसली, गले के ऊपरी भाग की हड्डी, कन्धे की जड़।
जथा तद्० (अ०) यथा, जैसे, जिस प्रकार से, ज्यों।
जत्था तद्० (पु०) यूथ, मण्डली, दल, समूह, समाज, टोली, झुंड।—बाँधना (क्रि०) यूथ बनाना, दल बाँधना, दलबन्दी करना।
जथास्थित तद्० (अ०) यथास्थित, ज्यों का त्यों, जहाँ का तहाँ, समुचित, योग्य, पूर्ववत्, जैसे का तैसा, पहिले ही सा।
जथार्थ तद्० (अ०) यथार्थ, ठीक ठीक, बिलकुल ठीक, बहुत ही ठीक, उचित, बहुत उत्तम।
जथोचित तद्० (अ०) यथायोग्य, यथोचित, जैसा उचित हो, उचित, योग्य, जैसा योग्य हो, वाजिबी।
जद तद्० (अ०) जब, यदा, जिस समय।
जदपि तद्० (अ०) यद्यपि, भले ही, पूर्व कथित वाक्य के अर्थ में कुछ विशेष अर्थ इसके द्वारा कहा जाता है। "फूलै फरै न बेंत, जदपि सुधा बरसहिं जलद॥" —रामायण।
जदु तद्० (पु०) यदु, यादव, चन्द्रवंशीय क्षत्रिय।
जदुनाथ तद्०, जदुनायक तद्०, जदुपति तद्० } भगवान् श्रीकृष्ण।
जदुबंसी तद्० (पु०) यदुवंशी, यादव, यदुकुल के।
जदुराइ या जदुराई तद्० (पु०) श्रीकृष्ण, यादवपति।
जदुराय, जदुबर, जदुबीर } तद्० (पु०) श्रीकृष्णचन्द्र।
जद्दपि तद्० (अ०) जदपि, यद्यपि, जो भी, तथापि।
जद्दबद्द तद्० (पु०) अकथनीय बात, दुर्वचन।
जन तद्० (पु०) मनुष्य, मानव, आदमी, व्यक्ति, दास, अनुयायी, प्रजा, देहाती, समुदाय, भवन, सत महाव्याहृतियों में पाँचवीं, एक राक्षस का नाम। —लोक महर्लोक के ऊपर का लोक।
जनक तद्० (पु०) पिता, जन्मदाता, उत्पन्न करने वाला, मिथिला पुरी के राजघराने की उपाधि। जनक वंश के पूर्वपुरुष का नाम निमि था। निमि के पुत्र का नाम मिथि। मिथि के राजत्व-काल में विदेह का नाम मिथिला पड़ा था। जनक मिथि के पुत्र थे। इन्हीं जनक के नाम पर कुल का भी नाम जनक पड़ा। सीता के पिता का नाम सीरध्वज जनक था। सीरध्वज के छोटे भाई का नाम कुशध्वज था। —तनया (स्त्री०) जनक की कन्या, सीता, जानकी।—पुर (पु०) जनक की राजधानी, मिथिला।—नन्दिनी (स्त्री०) सीता।—सुता (स्त्री०) सीता, जानकी।
जनकौरा तद्० (पु०) जनक राजा के सम्बन्धी, जनक के कुटुम्बी, जनक के पक्ष का।
जनखा (पु०) हिजड़ा, नामर्द, जनाना।
जनङ्गम तद्० (पु०) चाण्डाल, अधम जाति, नीच जाति, श्वपच।
जनता तद्० (स्त्री०) लोक समूह, जनसमुदाय, सर्वसाधारण।
जनन तद्० [जन्+अनट्] जन्म, उत्पत्ति, वंश, कुल, पिता, परमेश्वर, प्रसव।—शौच (पु०) बालक उत्पन्न होने का सूतक।
जनना दे० (क्रि०) जन्म देना, उत्पन्न करना, प्रसव करना, उत्पत्ति करना, सन्तति उत्पन्न करना।
जननि तद्० (स्त्री०) माँ, माई, अम्मा।
जननी तद्० (स्त्री०) माता, माँ, अम्मा, जुही का वृक्ष, अलक्तक, दया, गन्ध द्रव्य विशेष।
जनपद तद्० (पु०) देश, प्रान्त, प्रदेश, जनस्थान, लोकालय, मनुष्यों का वासभूमि।
जनप्रवाद तद्० (पु०) लोकापवाद लोकनिन्दा, निन्दा की चर्चा, तिरस्कार, अनादर।
जनम तद्० (पु०) उत्पत्ति, जीवन।—घूँटी (स्त्री०) बालक को जन्मते ही दी जाने वाली घूँटी।—दिन (पु०) जन्म होने का दिन।—धरती (स्त्री०) जन्मभूमि।—पत्री (स्त्री०) जन्मकुण्डली। —शौच तद्० (पु०) वृद्धि जनित अशौच, अशौच जो घर में किसी बालक या कन्या के उत्पन्न होने पर लगता है।
जनमाना (क्रि०) प्रसव कराना, उत्पन्न कराना।
जनमे तद्० (क्रि०) जन्मे, उत्पन्न हुए, पैदा हुए।
जनमेजय तद्० (पु०) राजा परीक्षित के पुत्र, कुरु वंश के पुत्र।

जनयिता तद्० (पु०) पिता, जनक, बाप, जन्मदाता।
जनयित्री तद्० (स्त्री०) माता, जननी, महतारी अम्मा, मैया, माँ।
जनरव तद्० (पु०) लोकापवाद, जनप्रवाद, जनश्रुति, ख्याति, प्रसिद्धि, किसी भी बात की चर्चा।
जनलोक तद्० (पु०) लोकविशेष, ऊर्ध्वस्थ सप्त पवित्र लोकों में से एक लोक, स्वर्गभेद।
जनवाद तद्० (पु०) सम्वाद, समाचार, घर घर की चर्चा, लोगों की अफवाह।
जनवास, जनवाँसा तद्० (पु०) बरातियों के ठहरने का स्थान, नगर, ग्राम, पुर।
जनवासे दे० जनवासे में।
जनश्रुति तद्० (स्त्री०) किंवदन्ती, अफवाह।
जनस्थान तद्० (पु०) दण्डकारण्य, दण्डकारण्य के समीपस्थ एक स्थान, जहाँ श्रीरामचन्द्र रहते थे।
जनहाई दे० (अ०) मनुष्य सहित, प्रत्येक मनुष्य, प्रति मनुष्य, हर एक, प्रत्येक व्यक्ति।
जना दे० (पु०) जन, मनुष्य, लोग। (क्रि०) पैदा किया।
जनाई दे० (स्त्री०) जनाने वाली स्त्री, दाई, दाई की मजदूरी। जता कर, सूचित कर।
जनातिग तद्० (पु०) अतिमानुष, मनुष्य से अधिक, मनुष्य की शक्ति से बाहर की।
जनाधिनाथ तद्० (पु०) नरपति, राजा, विष्णु।
जनाना दे० (क्रि०) जन्माना, उत्पन्न कराना। दे० (वि०) स्त्रीसम्बन्धी, नपुंसक, निर्बल, डरपोक, स्त्री।
जनान्तिक तद्० (पु०) अप्रकाश, गोपन, छिपा सम्वाद। नाटक में आपस में बात करने की एक मुद्रा। हस्त सङ्केत से केवल एक मनुष्य को अपने पास बुला कर धीरे धीरे बात करना जनान्तिक कहा जाता है।
जनाब दे० (पु०) महाशय, माननीय, श्रेष्ठ, मान्य पूज्य, सैन, सङ्केत, जताव, चेताव, सूचना।—ा (क्रि०) जता दिया, सूचित कर दिया। [श्रीकृष्ण।
जनार्दन तद्० (पु०) विष्णु, भगवान्, नारायण,
जनावर (पु०) जानवर, पशु, मूर्ख।
जनि तद्० (स्त्री०) जन्म, उत्पत्ति, उद्भव, नारी, स्त्री, माता, पुत्रवधू, भावी, जतुका, जन्मभूमि। दे० नहीं, मत, निषेधार्थक (सर्व०) जिन।
जनिका दे० (स्त्री०) छेकोक्ति, पहेली, दो अर्थ कहने वाले शब्द।
जनित तद्० (पु०) जन्मा हुआ, उत्पन्न हुआ।
जनिता तद्० (पु०) पिता, पैदा करने वाला।
जनित्र तद्० (पु०) जन्मभूमि, उत्पत्ति स्थान।
जनित्री तद्० (पु०) उत्पन्न करने वाली, माता, माँ।
जनियाँ (पु०) प्रेयसी, प्यारी, प्राणप्यारी।
जनी दे० (स्त्री०) स्त्री, दासी, माता, कन्या पैदा की।
जनु दे० (क्रि० वि०) मानों, जैसे, यथा, जिस तरह, जिस भाँति। तद्० (स्त्री०) उत्पत्ति, जन्म।
जनुक दे० (अ०) मानो, जानो, विशेषतः, उपमार्थक।
जनेऊ दे० (पु०) यज्ञोपवीत, रस्त का दोष, यज्ञसूत्र।
जनेत दे० (स्त्री०) बरात, बराती, विवाहयात्री, वरयात्रा।
जनेश तद्० (पु०) राजा, नृपति।
जनेषु तद्० मनुष्यों, जन समाज में।
जनैया (वि०) जानने वाला, जन्म देने वाला।
जनोदाहरण तद्० (पु०) यश, गौरव, कीर्ति, मान, प्रतिष्ठा।
जन्तर तद्० (पु०) यन्त्र, तान्त्रिक यंत्र, कल, औज़ार। —मन्तर (पु०) यंत्रमंत्र, जादू टोना, मानमन्दिर।
जन्ता दे० (पु०) तार खींचने का यन्त्र, बालक जनने की क्रिया।—घर दे० (पु०) वह घर जिसमें बच्चा जना जाय, सौरी।
जन्ताना दे० (क्रि०) निचोड़ना, कुचला जाना, पिसजाना।
जन्तु तद्० (पु०) प्राणी, जीव, देही, पशु। [जन्य विशेष।
ज़न्द दे० (पु०) पारसियों का अत्यन्त प्राचीन धर्म
जन्दा दे० (पु०) खेती का एक यन्त्र।
जन्ना दे० (पु०) जन्मना, उपजना, उत्पन्न होना।
जन्त्र तद्० (पु०) कल, यन्त्र, बाजा, गण्डा, तावीज़, जन्तर, टोटका।
जन्म तद्० (पु०) उत्पत्ति, जनम, उद्भव।—द (पु०) जन्मदाता, पिता, जनक।—दिन (पु०) वर्षगाँठ, वर्ष दिन, जन्म की तिथि।—पत्री (स्त्री०) लग्न कुण्डली, जन्मकुण्डली।—भूमि (स्त्री०) उत्पत्ति-स्थान।—शोध (पु०) मरण, मृत्यु, जीव धर्म की समाप्ति।—स्थान (पु०) उत्पत्तिस्थान, स्वदेश।
जन्माना दे० (क्रि०) उपजाना, उत्पन्न करना

जन्मान्तर तद्० (पु०) दूसरा जन्म, द्वितीय जन्म, अन्य जन्म। [जन्म सम्बन्धी।
जन्मान्तरीय तद्० (पु०) दूसरे जन्म का, अन्य
जन्मान्ध तद्० (पु०) [जन्म+अन्ध] जन्म से अन्धा, आजन्म नेत्रहीन, जन्मावधि दृष्टिविहीन।
जन्माष्टमी तद्० (स्त्री०) [जन्म+अष्टमी] श्रीकृष्ण की जन्मतिथि, भादों कृष्ण पक्ष की अष्टमी, मतान्तर में श्रावण की कृष्णाष्टमी।
जन्मोत्सव तद्० (पु०) [जन्म+उत्सव] जन्म दिन का उत्सव, जन्म उछाह, वर्ष गाँठ।
जन्य तद्० (वि०) उत्पत्तिशील, उत्पन्न होने वाला, (पु०) ज्ञाति, पुत्र, युद्ध, हाट, निन्दा, दूल्हा, बराती, दामाद, पिता, देहजन्मा, जनसाधारण, राष्ट्र। —जनकभाव (पु०) उत्पाद्य उत्पादक भाव, पिता पुत्र भाव, नैयायिकों में एक सम्बन्ध विशेष।
जन्या तद्० (स्त्री०) माता की संगिनी, वधू की सखी, वधू, प्रीति।
जन्यु तद्० (पु०) अग्नि, ब्रह्मा, प्राणी, जन्म, सप्तर्षियों में से एक।
जप तद्० (पु०) पुनः पुनः धीरे धीरे कथन, पुनःपुनः मन्त्रोच्चारण, बार बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, जप करना, जपना।—कारी (पु०) जापक, जप करने वाला।—तप (पु०) पूजा अर्चा, भजन, सदाचार, पूजा पाठ।—नीय (पु०) जप करने योग्य, जप्य मन्त्र।—परायण (पु०) उपासक, जापक, जप करने वाला, जपनशील। —माला (स्त्री०) जप करने की माला, जपमाला (रुद्राक्ष, स्फटिक, तुलसी, १०८ दाने की माला)। —माली (स्त्री०) गोमुखी, एक प्रकार की थैली जिसमें माला रखकर जप किया जाता है।—याम तद्० (पु०) जप,(वाचिक, उपांशु और मानसिक ये जप के तीन प्रकार हैं)।
जपत तद्० (पु०) जपता है, जप करता है।
जपन तद्० (पु०) देवता का नाम स्मरण, जप।
जपना तद्० (क्रि०) जप करना, मन्त्र का उच्चारण करना।
जपन्ता तद्० (पु०) जप करने वाला, जापक।
जपन्ति तद्० (क्रि०) जपते हैं, भजते हैं।
जपा तद्० (स्त्री०) जवा पुष्प का वृक्ष, गुड़हल का फूल।
जपीतपी तद्० (पु०) पूजक, अर्चक, भजनानन्दी जपतपपरायण, तपसी, तपस्वी।
जप्त तद्० (पु०) [जप्+त] जपित, जप किया हुआ।
जब दे० (अ०) यदा, जिस समय, जिस काल।—तक (अ०) यावत्, जिस समय तक।—तलक (अ०) जब तक।
जबड़ा दे० (पु०) मसूड़ा, मुँह के भीतर ऊपर नीचे की हड्डियाँ जिसमें दाढ़े जड़ी होती हैं।
जबदना दे० (क्रि) पूर्ण होना भर जाना, भरा रहना, सुन न पड़ना, कान का जबदना।
जबद्दा दे० (पु०) अनाड़ी, भोंदू, नासमझ, जड़।
जबदिया दे० (पु०) कुरूप, असुन्दर, भद्दा, कुश्री, कुत्सित आकार वाला। [सदा, सर्वदा।
जब न तब दे० (अ०) अनियमित, बिना समय से,
जबलग दे० (अ०) जिस समय तक, जब तक, जब लौं। [बरजोरी, बरयायी।
जबराई दे० (स्त्री०) ज्यादती, सख्ती, अन्याय, प्रबलता,
जबरदस्त दे० (वि०) बली, मजबूत। [ज्यादती।
जबरदस्ती दे० (स्त्री०) अन्याय, अत्याचार, प्रबलता,
जबरा दे० (वि०) बलवान्। (पु०) एक जानवर जो दक्षिण अफ्रिका के जङ्गलों में पाया जाता है।
जभा दे० (पु०) जबड़ा, चौड़ह।
जभाई दे० (स्त्री०) जम्हाई।
जभीरी दे० (पु०) एक प्रकार का बड़ा नीबू।
जम तद्० (पु०) यम, यमराज, कृतान्त, योग का एक अङ्ग।—ी (पु०) संयमी। [चमकाना।
जमकना दे० (क्रि०) जम जाना, सख्त होना,
जमकाना दे० (क्रि०) सख्त करना, बैठाना।
जमघट, जमघटा, जमघट्ट दे० (पु०) भीड़, जमावड़ा, ठट्ठा।
जमज तद्० (वि०) यमज, जुड़वाँ। [दर कर।
जमजम दे० (अ०) सदा, निरन्तर, ठहर ठहर, रह
जमदाढ़ दे० (स्त्री०) एक प्रकार की कटारी, जमधर।
जमदग्नि तद्० (पु०) एक ऋषि का नाम, जो परशुराम के पिता थे। महर्षि ऋचीक के पुत्र, ये वैदिक ऋषि थे। ऋग्वेद के सूक्तों से जाना जाता है कि जमदग्नि और विश्वामित्र, महर्षि वसिष्ठ के विपक्षी थे। इनका विवाह राजा प्रसेनजित्

की कन्या रेणुका से हुआ था। जमदग्नि के पाँच पुत्र थे। रुमरावान्, सुषेन, वसु, विश्ववाहु और राम यही राम परशु धारण करने के कारण पीछे परशुराम नाम से प्रसिद्ध हुए थे। परशुराम यद्यपि सब से छोटे थे, तथापि इनके गुण सब से बड़े थे। महर्षि जमदग्नि कार्त्तवीर्य के हाथ मारे गये थे, पीछे परशुराम ने यज्ञ कर जीवित किया था।

जमदीया तद्० (पु०) यमदीपक, अर्थात् कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को जो यम के नाम से घर के बाहर दिया जलाया जाता है।

जमदुतिया तद्० (स्त्री०) यमद्वितीया भैया दूज, कार्तिक शुक्ल २। इस दिन मथुरा में विश्रामघाट पर स्नान करने का विशेष माहात्म्य है।

जमदूत तद्० (पु०) यमदूत, मृत्यु के दूत, मृत्यु चिन्ह, जो मरने के पहले होते हैं।

जमधर तद्० (पु०) कटार, बिछुआ, अस्त्रविशेष, तीखी नोक वाली एक प्रकार की छुरी।

जमन तद्० (पु०) यवन, म्लेच्छ, मुसलमान।

जमना दे० (क्रि०) उत्पन्न होना, निकलना, उगना, अङ्कुरित होना, बढ़ना, दृढ़ होना, गाढ़ा होना, घन होना दही का जमना, पानी का जमना आदि।

जमनिका तद्० (स्त्री०) जवनिका, परदा, काई। "हृदय जमनिका बहु बिधि लागी।" तुलसीदास

जमराज तद्० (पु०) यमराज, धर्मराज, प्राणियों के पाप पुण्य के व्यवस्थापक एक देवता। लोकपाल विशेष, दक्षिण दिशा के स्वामी।

जमहाई तद्० (स्त्री०) आलस से हाथ पैर टूटना, जृम्भा, बदन टूटना, जँभाना। [गात्रप्रसारण।

जमहाना तद्० (स्त्री०) जमहाई लेना, गात्रविक्षेप,

जमा दे० (वि०) जो एक स्थान पर एकत्र किया गया हो, धरोहर के रूप में रखा हुआ धन। (स्त्री०) पूँजी धन, "उनकी कुछ जमा सौ सेर थी ही" लगान, जोड़, बही या कैशबुक का वह भाग जिसमें आमदनी की रकमे दर्ज की जाती हैं। —खर्च (पु०) आय और व्यय।—जथा (स्त्री०) धन सम्पत्ति, नगदी और माल।—मार (वि०) बेईमानी से दूसरे का माल मारने वाला।

जमाई तद्० (पु०) जमाता, दमाद, कन्यापति।

जमात दे० (स्त्री०) समूह, साधुओं का समूह, अखाड़ा, "पवहारी बाबा की जमात" यथा।

जमादार दे० (पु०) देख भाल रखने वाला अधिकारी, मुखिया।

जमानत दे० (स्त्री०) ज़िम्मेदारी।

जमाना दे० (क्रि०) चोट मारना, अभ्यास करना, इकट्ठा करना, राशि करना, बाँधना, यथास्थान रखना अपने अपने स्थान पर रखना, उत्पन्न करना, प्रभाव फैलाना, प्रभाव जमाना, तरल पदार्थ को गाढ़ा करना। [औषध।

जमालगोटा दे० (पु०) एक औषध का नाम, रेचक

जमाव दे० (पु०) भीड़भाड़, समूह समुदाय।

जमावट दे० (पु०) जुड़ाई, बन्धान, सगठन।

जमावड़ा दे० (पु०) भीड़भाड़, समूह।

जमीन दे० (स्त्री०) भूमि, पृथिवी, स्थान, सम्पत्ति।

जमींदार दे० (पु०) भूम्यधिकारी, भूस्वामी।—री भूस्वामी की अधिकृत भूमि, ज़मीन जिस पर ज़मींदार का कब्ज़ा हो।

जमुना तद्० (स्त्री०) यमुना नदी, यह नदी कलिन्द पर्वत से निकली है और दिल्ली की परिक्रमा करती मथुरा, इटावा, कालपी होती हुई प्रयाग में गङ्गा से मिली है। चम्बल, केन, बेतवा ये तीन नदियाँ इससे मिली हैं। महाभारत के समय में इस नदी की बड़ी प्रतिष्ठा थी, यह सर्वाधिक पुण्यनदी समझी जाती थी। यह नदी गङ्गा की सब से बड़ी सहायिका नदी है।

जमुहात दे० (क्रि०) जँभाई लेता है, जँभाता है।

जमोगना दे० (क्रि०) सहेजना, सहवाना, अधिकारी को अधिकार सम्भला देना, बिचवानी होना, स्वीकार कराना, जमानत देना।

जम्मा दे० (क्रि०) बढ़ना, जमना, पनपना, अँकुर होना।

जम्पति तद्० (पु०) दम्पति, जायापति, स्त्री पुरुष, नरनारी। [शैवाल।

जम्बाल तद्० (पु०) पङ्क, कर्दम, कीचड़, सेवार,

जम्बीरी तद्० (पु०) नींबू, जम्बीरी नींबू।

जम्बुक तद्० (पु०) गीदड़, शृगाल, सियार।

जम्बुमाली तद्० (पु०) राक्षस विशेष, रावण के सेनापति प्रहस्त का पुत्र।

जम्बू तत्० (पु०) जामुन का पेड़ या फल, जम्बू फल। काश्मीर के अन्तर्गत एक नगर, काश्मीर की राजधानी।—द्वीप (पु०) सात द्वीपों में मुख्य द्वीप। इसमें नौ खण्ड हैं, जिसका एक खण्ड यह भारतवर्ष है। [करनेवाला, इन्द्र, महेन्द्र।

जम्भभेदी तत्० (पु०) जम्भ नामक राक्षस का भेदन

जम्भीरी तद्० (पु०) जम्बीरी नींबू, मरुआ, मरुवक।

जम्मू दे० (पु०) जम्मू नगर, काश्मीर की शीतकाल की राजधानी।

जम्हाई दे० (स्त्री०) जँभाई।

जय तत्० (पु०) जीत, विजय, फतह, शत्रु का पराभव, आशीर्वाद, प्रार्थना। विष्णु भगवान् के द्वाररक्षक का नाम। जय के छोटे भाई का नाम विजय था। ये दोनों भगवान् विष्णु के द्वाररक्षक थे। एक बार सनक आदि ऋषियों को इन लोगों ने विष्णु दर्शन करने जाने नहीं दिया जिस कारण महर्षियों ने शाप दिया। पुन इनकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर महर्षियों ने कहा कि "हमारा शाप व्यर्थ नहीं हो सकता, तथापि तुम लोग विष्णु से शत्रुता या मित्रता करके मुक्त हो सकते हो। महर्षियों के शाप से जय, सत्ययुग में हिरण्याक्ष, त्रेता में रावण और द्वापर में शिशुपाल हुआ था; विजय सत्ययुग में हिरण्यकशिपु, त्रेता में कुम्भकर्ण और द्वापर में दन्तवक्र हुआ था। इन लोगों ने तीनों जन्म में भगवान् से शत्रुता की और भगवान् के द्वारा मारे जा कर मुक्त हुए।—ए (क्रि०) जीता, विजय किया, जीत लिया।—करी तत्० (स्त्री०) चौपाई नामक एक छन्द का नाम। युधिष्ठिर का बनावटी नाम, जाम वशीकरण, महाभारत में वर्णित एक नाग का नाम, एक ऋषि का नाम, विश्वामित्र, धृतराष्ट्र, संजय के पुत्रों के नाम, राजा पुरवसु के पुत्र का नाम, दक्षिण दरवाले वाला मकान, सूर्य, अरणी नाम का पेड़, इन्द्र पुत्र जयन्त। (वि०) विजयी।—जयकार (पु०) जीत, अभ्युदय, आशीर्वाद बोधक।—जीव दे० (पु०) अभिवादन, प्रणाम।

"कहि जयजीव सीस तिन्ह नाये"।

—तुलसीदास।

—पताका (स्त्री०) जयध्वनि, जय का झण्डा, जय का निशान, जयध्वज।—पत्र (पु०) अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के सिर पर बँधा हुआ लेख, विवाद में जयबोधक पत्र, जीतपत्र।—मङ्गल (पु०) राजवाहन नामक हाथी, ज्वरनाशक औषधि, रस विशेष।—माल या माला तत्० (स्त्री०) विजय की माला, वह माला जो स्वयंवर में कन्या वर को पहनाती है।—शील तत्० (गु०) सर्वदा जीतने वाला।

जयचन्द्र, जयचन्द, जैचन्द तत्० (पु०) कन्नौज का अन्तिम राजा। यह विजयचन्द्र का पुत्र था। दिल्ली के राजा अनङ्गपाल की पुत्रियों से विजयचन्द्र और अजमेर के राजा सोमेश्वर का विवाह हुआ था। सोमेश्वर के पुत्र का नाम पृथ्वीराज, पृथ्वीराज और जयचन्द दोनों दिल्लीपति अनङ्गपाल के दौहित्र थे। अनङ्गपाल पृथ्वीराज को अधिक चाहते थे। उनके कोई पुत्र नहीं था, अतएव उन्होंने दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को दिया। इससे जयचन्द को बड़ा दुःख हुआ। इन्होंने पृथ्वीराज को राज्यच्युत करने का दृढ़ संकल्प कर लिया। जयचन्द प्रतापी राजा थे, उन्होंने नर्मदा नदी के किनारे तक अपना राज्य फैलाया था। अपनी कन्या संयोगिता के विवाह के लिये उन्होंने स्वयम्वर रचा, स्वयम्वर में सभी राजाओं को निमन्त्रण भेजा गया। परन्तु पृथ्वीराज और इनके बहनोई मेवाड़ के महाराणा समर सिंह को निमन्त्रण नहीं भेजा गया, पृथ्वीराज का तिरस्कार करने के लिये उनकी मूर्ति को पहरुआ बना कर द्वार पर जयचन्द ने खड़ा कर दिया था। दैवयोग से संयोगिता ने उसी पीतल की मूर्ति को ही जयमाला पहना दी। यह सुन कर पृथ्वीराज संयोगिता को ले गया। जयचन्द ने इसका बदला लेने के लिये गजनी के शहाबुद्दीन गोरी को ११९१ में दिल्ली पर आक्रमण करने को बुलाया। उसका पानीपत के समीप पृथ्वीराज से युद्ध हुआ, पृथ्वीराज विजयी हुए गजनी का लुटेरा उल्टे हाथ फिर गया। दो वर्ष के बाद पुन. उसने दिल्ली पर चढ़ाई की। अब की बार भी वहीं चढ़ाई हुई, इस युद्ध में पृथ्वीराज

हार गये। जयचन्द भी पृथ्वीराज से बदला लेकर सुखी नहीं हुआ। उस पर भी मुसल्मानों ने चढ़ाई की, यह हार कर भागा, नाव पर चढ़ कर नदी पार करता था कि नाव डूब गयी, साथ ही साथ जयचन्द भी डूब गया। इस प्रकार जयचन्द स्वयं तो डूब गया परन्तु उसका अधर्म नहीं डूबा।

जयत दे० (पु०) वृक्ष विशेष।

जयति तत्० (क्रि०) यह संस्कृत की एक क्रिया है। इसका अर्थ है जीतता है, हिन्दी में भी इसका प्रयोग रामायण आदि में पाया जाता है।

जयदेव तत्० (पु०) १—यह एक प्रसिद्ध भक्त कवि हैं। संस्कृत का गीतगोविन्द नामक गीत काव्य इन्हींका बनाया है, बङ्गाल में मानभूमि ज़िले के केन्दुलि (किन्दुबिल्व) नामक गाँव के रहने वाले थे। इनकी माता का नाम वामादेवी और पिता का नाम भोजदेव था। यह बङ्गाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मणसेन की सभा में रहते थे। राजा लक्ष्मणसेन का सन् १११६ ई० माना जाता है, अतः उनके साथी जयदेव के समय के विषय में अब सन्देह करने का कोई कारण नहीं है।

२—यह प्रसन्नराघव नामक नाटक के रचयिता है। यह विलक्षण कवि और नैयायिक थे। इनकी माता का नाम सुमित्रा और पिता का नाम महादेव था। इन्होंने अपने को कौण्डिन्य लिखा है। कौण्डिन्य का अर्थ कौण्डिन्य गोत्र, अथवा कुण्डिनपुर निवासी है, इसका निश्चय करना कठिन है। परन्तु कौण्डिन्य गोत्र ही उसका ठीक अर्थ मालूम पड़ता है। इनका दूसरा नाम पक्षधरमिश्र और पीयूषवर्ष भी था चन्द्रालोक नामक अलङ्कार ग्रन्थ भी इन्हीं का बनाया है। इनके निश्चित समय का अभी तक ठीक पता नहीं है। तथापि १२ वीं शताब्दी में इनका होना अनुमान किया जाता है।

जयद्रथ तत्० (पु०) सिन्धु देश का राजा। दुर्योधन की बहिन दुःशला इनको ब्याही थी। इनके पिता का नाम वृद्धक्षत्र था। जब पाण्डव काम्यकवन में रहते थे, उस समय उन्होंने द्रौपदी को कुटी में अकेली देख हरना चाहा था, परन्तु उसी समय वहीं से भीमसेन पहुँच गये। उन्होंने जयद्रथ की बड़ी अप्रतिष्ठा की, जयद्रथ का सिर मुँडा कर वहाँ से निकाल दिया। जयद्रथ ने घोर तपस्या की। शिव जी ने प्रसन्न होकर वर माँगने के लिये कहा तो उसने एक ही समय पाँचों पाण्डवों को जीतने की इच्छा प्रकट की। शिव जी ने कहा, अर्जुन को छोड़ कर अन्य पाण्डवों को तुम जीत सकते हो। महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु वध के समय, चक्रव्यूह के रक्षक जयद्रथ ही थे, उसी वर के प्रभाव से इन्होंने युधिष्ठिर आदि को भीतर नहीं जाने दिया। अर्जुन थे ही नहीं, वह संसप्तक के साथ लड़ रहे थे। पुत्रवध सुन के अर्जुन ने सूर्यास्त के पहले ही जयद्रथ के वध करने की प्रतिज्ञा की। दुर्योधन के वीरों ने जयद्रथ की रक्षा करने की चेष्टा की, उसी समय भगवान् श्रीकृष्ण ने सुदर्शनचक्र से सूर्य को छिपा लिया। कौरवों ने समझा कि सन्ध्या हो गयी अब अर्जुन स्वयं मर जायगा। परन्तु थोड़ी ही देर में उनका विश्वास नष्ट हो गया, सुदर्शनचक्र को भगवान् ने हटा लिया। सूर्य की किरणें चमकने लगीं। अर्जुन ने जयद्रथ का सिर काट डाला। जयद्रथ के पिता ने वर दिया था कि जो कोई हमारे पुत्र का सिर भूमि पर गिरावेगा उसका सिर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। इसी कारण अर्जुन ने जयद्रथ का सिर उनके पिता वृद्धक्षत्र की गोद में रख दिया, उस समय वृद्धक्षत्र कुरुक्षेत्र के पास स्यमन्तपञ्चक स्थान में तपस्या करते थे। जयद्रथ का सिर उन्हीं से भूमि पर गिरा, अतएव उनका भी सिर खण्ड खण्ड हो गया। जयद्रथ के पुत्र का नाम सुरथ था।

जयनगर तत्० (पु०) राजपूताने की पुरानी राजधानी।

जयन्त तत्० (वि०) विजयी, बहुरूपिया। (पु०) १—अयोध्याराज के एक मन्त्री का नाम। २—इन्द्र का पुत्र उपेन्द्र, पारिजातहरण के समय इससे और कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न से युद्ध हुआ था। इसीने सीता के चोंच मारी थी। ३—एक रुद्र का नाम। ४—कार्त्तिकेय। ५—धर्म के एक पुत्र का नाम। ६—अक्रूर के पिता का नाम। ७—अज्ञातवास में विराट् राजा के पास रहते समय भीमसेन का बनावटी नाम। ८—एक पर्वत का नाम। ९—यात्रा के एक योग का नाम।

जयन्ती तद्० (स्त्री०) विजयिनी, गौरी इन्द्रपुत्री, पताका, वृक्षविशेष, दुर्गादेवी, अपराजिता, योग विशेष, नगरविशेष, किसी प्रसिद्ध देव चरित मनुष्य की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में उत्सव, भगवान् के अवतारों के जन्म की तिथी।

जयन्तीपुर तद्० (पु०) सिलहट से दस कोस की दूरी पर का एक नगर, जिसे जयन्ता कहते हैं।

जयपाल तद्० (पु०) १—लाहौर का एक प्रसिद्ध हिन्दू राजा। ९७७ ई० में गज़नी का सुबक्तगिन इन पर चढ़ आया। उसने पेशावर को अपने अधीन कर लिया। ५० हाथी और १० लाख रुपया घूस लेकर पुनः लौट गया। पुनः १००१ में उसके पुत्र महमूद ने जयपाल पर चढ़ाई, की, इस युद्ध में यह कैद भी हो गये थे परन्तु वार्षिक कर देने की प्रतिज्ञा कर छूट गये। दो बार इस प्रकार की हार से यह दुःखी होकर अग्नि में प्रवेश कर मर गये। इन्होंने अपने पुत्र अनङ्गपाल को राजगद्दी दे दी थी।

(२) अनङ्गपाल का पुत्र और पहले जयपाल का पौत्र। १०११ ई० में पिता के मरने के बाद यह लाहौर के सिंहासन पर बैठे थे। १०२२ ई० में इनको भी महमूद गज़नवी ने पराजित करके लाहौर को अपने अधीन कर लिया। यही मुसलमानों के भारत में भावी साम्राज्य की नींव थी। मालूम होता है पिता के चरित्रों को खूब जानने पर भी अनङ्गपाल ने अपने पुत्र का नाम हारने के लिये ही जयपाल रक्खा था।

जयबेर दे० (अ०) कै बार, कितने बार, कितनी दफ़े।

जयमल (पु०) १—प्रसिद्ध राजपूत वीर। यह बदनौर के राजा थे, बदनौर मेवाड़ का एक सामन्त राज्य है, राणा साँगा के पुत्र कहाने वाले क्षत्रिय कलङ्क उदयसिंह जब अकबर के डर से चित्तौर छोड़ कर भाग गये, तब वीरश्रेष्ठ जयमल और वीरवर पुत्त मातृभूमि की रक्षा करने के लिये बड़ी वीरता से लड़े थे। इनकी युद्ध-कुशलता देखकर मुग़लों के छक्के छूट गये। परन्तु असंख्य सेना के सामने दो आदमी क्या वस्तु होते हैं। १५६८ ई० में देश के लिये वीर श्रेष्ठ जयमल रणभूमि में सर्वदा के लिये सो गये। यद्यपि अकबर ने स्वार्थसाधन के लिये अति निन्दित उपाय से इस वीर को मारा था, तथापि इनकी वीरता की प्रशंसा उसे करनी ही पड़ी, इनकी पत्थर की मूर्त्ति बना कर उसने दिल्ली में स्थापित की थी। (२) भक्तमाल में भी एक जयमल राजा की कथा लिखी है। यह विष्णु भक्त थे। बड़ी आपत्ति के समय भी यह विष्णु-पूजन नहीं छोड़ते थे। किसी राजा ने इन पर चढ़ाई की, उस समय यह विष्णु पूजन कर रहे थे। यह लड़ने नहीं गये, उस राजा की सेना छिन्न भिन्न होने लगी। देखते देखते ही केवल एक वही राजा ही बच गये। उन्होंने जयमल से इन सब का कारण, पूछा। अन्त में यह भी विष्णु भक्त हो गया।

जययन्त तद्० (पु०) जय करने वाला, जीतने वाला, जयी, विजयी।

जयवती तद्० (स्त्री०) अग्नि की सप्त जिह्वा के अन्तर्गत एक जिह्वा। (वि०) जीतने वाली, जय करने वाली।

जया तद्० (स्त्री०) दुर्गा, जयन्ती वृक्ष, तिथि विशेष, (तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी,) हरीतकी, दुर्गा की सखी, विजया, अग्निमन्थवृक्ष, नील दूर्वा, पताका विशेष, भाँग, शमी या छोंकर का पेड़। —न्तराय (पु०) [जय+अन्तराय] जय का विघ्न, जय का विरोधी।—वह (वि०) [जय+आवह] जय देने वाला, जीत कराने वाला। ·[दिश के राजा का नाम।

जयादित्य तद्० (पु०) काशिकावृत्ति के कर्ता काश्मीर

जयाद्वय तद्० (स्त्री०) जयन्ती और हर्रे।

जयापीड़ तद्० (पु०) काश्मीर का एक राजा। यह ईसवी की आठवीं शताब्दी में हुआ। दिग्विजय की यात्रा करने के लिये यह निकला मगर सैनिकों ने इसका साथ न दिया, अतः यह प्रयाग चला गया और वहाँ ९९९९९९ घोड़े दान किये।

जयावती तद्० (स्त्री०) एक मातृ का नाम।

जयाश्व तद्० (पु०) विराट के एक भाई का नाम।

जयी तद्० (वि०) जेता, विजयी, शत्रु-पराभव कर्ता, पराजयकर्ता, जयवान।

जय्य तद्० (वि०) जय करने के योग्य, जय करने को समर्थ, जयोपयुक्त, जिसका जय किया जा सके।

जर तद्० (स्त्री०) ज्वर, तप, ताप, बुखार, बुढ़ापा।

जरजर तद्० (वि०) जर्जर, पुराना, बूढ़ा, फटापुराना, गयागुज़रा। [(पु०) बुढ़ापा।

जरठ तद्० (पु०) कठिन, जीर्ण, पुराना, बुड्ढा।—पन

जरण तद्० (पु०) हिंगु, जीरा, जलन, बुढ़ापा, कुष्ठरोग की औषध, कूट, काला जीरा, कृष्ण-जीरक। (वि०) जीर्ण, पुराना, वृद्ध, बुड्ढा।

जरत तद्० (क्रि०) जलता है, जलते ही।

जरती तद्० (स्त्री०) वृद्धा, बुड्ढी, प्राचीना, डोकरी।

जरत् तद्० (वि०) वृद्ध, प्राचीन, पुरातन, जीर्ण।

जरत्कारु तद्० (पु०) मुनि विशेष। नागराज वासुकी के भागिनीपती, वासुकी की भगिनी का नाम भी जरत्कारु ही था। (आस्तिक देखो) एक दिन स्त्री जरत्कारु ने पति जरत्कारु को निद्रा से उठाया। इसी कारण क्रुद्ध होकर जरत्कारु घर से निकल गये। उनके जाने के समय उनकी स्त्री विलाप करने लगी। उन्होंने कहा "अस्ति" अर्थात् तुम्हारे गर्भ में पुत्र है। इसीसे उनके पुत्र का नाम आस्तीक पड़ा।

जरद्गव तद्० (पु०) बूढ़ा बैल। [फुलसना।

जरना दे० (क्रि०) जलना, दग्ध होना, भस्म होना,

जरा तद्० (स्त्री०) अधिक अवस्था होने से बालों का गिरना, शरीर के माँस का शिथिल होना, वृद्धावस्था, चौथा वयस, चौथापन, थोड़ा, अल्प। (१)एक राक्षसी का नाम, इसने मगध के राजा जरासन्ध के शरीर को जोड़ दिया था। ब्रह्मा ने इसका नाम गृहदेवी रखा था। इसी को लोग षष्ठीदेवी के नाम से पूजते हैं। खिरनी का पेड़। (क्रि०) जल गया, जला, दरा, दग्ध।

२—(पु०) एक व्याध,यादववश लोप होने पर वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न श्रीकृष्ण को इसी व्याध ने मृग समझ कर मारा था। लोग कहते हैं यह व्याध पूर्वजन्म का बालिपुत्र अङ्गद था। दे० (वि०) थोड़ा, अल्प, कम, कुछ, तनिक।

ज़रा दे० (पु०) थोड़ा, कम, अल्प, न्यून।

जरांश तद्० (पु०) ज्वरांश, ज्वर का भाव, ज्वर की पूर्वावस्था, सामान्यज्वर जुकाम, जूड़ी बुखार।

जरातुर तद्० (पु०) [जरा+आतुर] जीर्ण, दुर्बल, बूढ़ा, डोकरा, जरारोगग्रस्त।

जराना दे० (क्रि०) जलाना, बालना, जलावना, दग्ध करना, भस्म करना। [स्थान, झिल्ली।

जरायु तद्० (पु०) गर्भवेष्टन चर्म, गर्भाशय, गर्भ

जरायुज तद्० (पु०) [जरायु+जन्+ड] गर्भजात, गर्भोत्पन्न, पिण्डज, मनुष्य आदि, चतुर्विध जीवों में श्रेष्ठ जीव।

जरावस्था तद्० (स्त्री०) [जरा+अवस्था] वार्द्धक्यावस्था, वृद्धावस्था, जीर्णावस्था, बुढ़ाई।

जरासन्ध तद्० (पु०) [जरा+सन्ध] मगध का प्रसिद्ध और पराक्रमी राजा। इसके पिता का नाम बृहद्रथ था, राजा बृहद्रथ ने पुत्र के लिये तपस्या की थी। प्रसन्न होकर देवता ने उनको एक फल दिया और कहा कि यह फल अपनी रानी को खिला दो, अवश्य ही पुत्र होगा। बृहद्रथ की दोनों रानियों ने उस फल को आधा आधा चीर कर खाया, अतएव उनके आधा आधा अर्थात् शरीर का एक एक भाग पृथक् पृथक् उत्पन्न हुआ। राजा बृहद्रथ ने उन फाँकों को फिकवा दिया। जरा नाम की एक राक्षसी रहती थी, उसने उन टुकड़ों को जोड़ कर एक शरीर बना दिया और यह पुत्र राजा को देकर उसने कहा आपका यह पुत्र पराक्रमी होगा। जरासन्ध की अस्ति और प्राप्ति नाम की कन्यायें कंस को ब्याही गई थीं, कंस के मरने पर इसने मथुरा पर चढ़ाई की थी। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय यह भीम के द्वारा द्वन्द्वयुद्ध में मारा गया।

जराह या जर्राह (पु०) शस्त्र चिकित्सक, चीड़फाड़ कर फोड़ा फुन्सी आराम करने वाला।

ज़रिया दे० (अ०) द्वारा, सम्बन्ध, लगाव। (जैसे यह काम राम के ज़रिये हो सकता है।) कारण

ज़री दे० (स्त्री०) कारचोबी, सुनहले तारों का काम, कामदानी।

जरीब दे० (स्त्री०) एक प्रकार की छड़ी या भाला, जो लकड़ी की होती है। ज़मीन नापने की डोरी जो प्रायः ६० गज़ अथवा इससे भी अधिक लम्बी होती है।

जरीवाना (पु०) अर्थदण्ड जुरमाना।

जरुथ दे० (पु०) माँस, पल, पिशित, कटुभाषी।

जरूर दे० (अ०) अवश्य, निस्सन्देह ।—ी (वि०) प्रयोजनीय, सापेक्ष्य, आवश्यक ।—त (अ०) आवश्यकता, प्रयोजन ।

जर्जर तत्० (वि०) जरातुर, जीर्ण, विदीर्ण, सरन्ध्र, विभक्त, बँटा हुआ, जाँजर । (पु०) शैलज नामक औषधि विशेष, इन्द्रध्वज, इन्द्र का झण्डा, छरीला।

जर्जरी तत्० (स्त्री०) लहसन, तिल ।—का (वि०) बहु छिद्र युक्त वस्तु, झाँझर, जीर्ण, जर्जर, जरातुर, खर्खरा, खड़बड़, ऊमड़ खामड़ ।—कृत (वि०) नष्ट-शक्ति, क्षीण-शक्ति, सामर्थ्य रहित, क्षीण-सामर्थ्य ।

जर्या तत्० (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा, वृष ।—(वि०) जीर्ण पुराना, सड़ागला, फटा पुराना ।

जर्त्तिल तद्० (पु०) वनैला तिल, वन में उत्पन्न हुआ तिल, वनतिल, वनजात तिल । [की तम्बाकू ।

जर्दा दे० (वि०) पीतवर्ण, पीलाङ्ग, (स्त्री०) खाने

जर्दी (स्त्री०) पीतवर्ण, पीलापन ।

जर्रा (पु०) अणु, अति छोटा टुकड़ा ।

जर्राह दे० (पु०) देशी शस्त्रचिकित्सक ।

जल तत्० (पु०) पानी, अप्, वारि, पञ्चभूत के अन्तर्गत भूत विशेष, सलिल, रस, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, नेत्रवाला । (गु०) जड़, हिताहित ज्ञान शून्य ।—अलि (पु०) पानी का भ्रमर, पानी का भौंरा, जल भ्रमर ।—कंटक (पु०) पानीफल सिंघाड़ा ।—कन्द (पु०) केला, कोंदा ।—कपि (पु०) जलजन्तु विशेष, शिशुमार, सूँस ।—कमल (पु०) उत्पल, पद्म ।—करङ्क (पु०) नारीकेल फल, पद्मपुष्प, कमल, शङ्ख, घोंघा, कौड़ी, बराटिका, मेघ, तरङ्ग ।—कल्मष (पु०) जल का विष, समुद्र मन्थन से उत्पन्न विष ।—कष्ट (पु०) सूखा, अनावृष्टि, अल्पजल ।—काक (पु०) पक्षी विशेष ।—कामा (स्त्री०) ऊँधाहोली, वृक्षविशेष ।—किरार (पु०) रेशमी वस्त्र विशेष । —किराट (पु०) एक हिंस्र जलजन्तु । —कुक्कुट (पु०) जल विहङ्गम, जलमुर्गा । —कुकद (पु०) पनडुब्बा, पनडुक, पक्षी विशेष । —कूपी (स्त्री०) कूप, गर्त्त, गढ़ा, पोखरा, पुष्करिणी, भँवर, तालाब ।—कूर्म (पु०) जल जन्तु विशेष, जल कपि, शिशुमार, सूस, सूसमार ।—केतु (पु०) पश्चिम दिशा में उदय होने वाला पुच्छल तारा ।—क्रिया (स्त्री०) देवता के लिये जल प्रदान, उदककर्त्तव्य ।—क्रीड़ा (स्त्री०) जलाशय में बराबर वालों के साथ जल छिड़कना रूप खेल ।—खानि (पु०) मेघ, समुद्र, नदी । —खाया दे० (पु०) जलपान, कलेवा ।—गुल्म (पु०) भँवर, कछुआ, तालाब ।—चर (पु०) जलजन्तु, जल में रहने वाले प्राणी ।—चरकेतु (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ, मीनध्वज, काम-देव की ध्वजा पर मछली का निशान है इसी कारण उनको जलचरकेतु, मीनध्वज आदि कहते हैं ।—चारी (पु०) मत्स्य, जलजन्तु ।—छत्र (पु०) प्रपा, पनशाला, प्याऊ जहाँ पथिकों को जल पिलाया जाता है, जलदानस्थान ।—ज (पु०) पद्म, शङ्ख, कमल, अम्भोज । (वि०) जल में उत्पन्न होने वाले पदार्थ ।—जला (गु०) क्रोधी, भुँझलिया, पिनपिना ।—जलाना (क्रि०) झुंझलाना, रिसाना, क्रोध करना ।—जात (वि०) जल में उत्पन्न, सलिलजात ।—डिम्ब (पु०) शम्बूक, सीप, दो कपाटी कौड़ी ।—तरङ्ग (पु०) ऊर्मि, वीचि, लहर, धातुमय वाद्य यन्त्र विशेष । —तरण (पु०) तैरना, नाव या जहाज़ से पार जाना, नाव या जहाज़ चलाने की विद्या ।—त्र (पु०) जल से बचाने वाला, छाता, छत्र ।—थल (पु०) जल और स्थल ।—द (पु०) मेघ, जलधर, घटा, बादल, घन, वारिद, मोथा, घास, कसेरा, घड़ा । (वि०) जलदान कर्त्ता, जल देने वाला । —दागम (पु०) वर्षाकाल, प्रावृट् काल, पावस ऋतु ।—दाभ (पु०) मेघतुल्य, मेघ के समान, मेघोपम ।—देवता (पु०) वरुण, जल के अधिष्ठाता देवता ।—दोष (पु०) पानी की विकृति से रोग होना, कोषवृद्धि रोग, अण्डवृद्धि, पानी लगना, जलविकार ।—धर (पु०) मेघ, समुद्र, सागर, एक प्रकार की घास । (वि०) पानी रखने वाला ।—धारा (स्त्री०) झरना, प्रवाह, सोता, स्रोत, पानी का गिरना ।—धि (पु०) समुद्र, सागर, दस शङ्ख संख्या, शतकरोड़, कोटि ।—धिजा

(स्त्री०) कमला, लक्ष्मी, विष्णुप्रिया ।—निकास (पु०) जल निकलने का स्थान, जहाँ से होकर जल निकलता है मोरी पनाला ।—निधि (पु०) समुद्र, सागर, वारिधि ।—निर्गम (पु०) गृह आदि से जल निकलने का मार्ग, मोरी, पनाला, पानी का निकास ।—नीम (पु०) धरमी औषध विशेष ।—धर (पु०) असुरराज, राक्षसराज । इन्द्र एक बार शिव का दर्शन करने गये । वहाँ एक दृढ़दाकार मनुष्य बैठा हुआ था । इन्द्र ने उससे शिवजी के विषय में पूछा । कुछ उत्तर न पाने से रुष्ट होकर इन्द्र ने उस मनुष्य के सिर पर वज्र मारा, मारने के साथ ही अग्निकण उसके मस्तक से निकलने लगे इन्द्र व्याकुल हो गये, उन्हें मालूम हुआ कि मैंने शिव को ही मारा है। अतएव उन्होंने स्तुति की, स्तुति से प्रसन्न होकर शिव ने उस अग्नि को समुद्र में फेंक दिया । उसी अग्नि से एक लड़का उत्पन्न हुआ । जिसके रोने से संसार बधिर होने लगा । इसका समाचार सुन ब्रह्मा वहाँ आये समुद्र ने उस बालक को ब्रह्मा के हाथ समर्पित किया और, उसका पालन करने के लिये कहा । वह लड़का ब्रह्मा की गोदी में खेला करता था । एक दिन उसने ब्रह्मा की मूँछें पकड़ कर खींची । ब्रह्मा की आँखों से जल धारा निकल पड़ी, इसी कारण ब्रह्मा ने उस लड़के का नाम जलन्धर रख दिया । ब्रह्मा ने उस लड़के को वर दिया कि शिव के अतिरिक्त दूसरा कोई उसको नहीं मार सकता ब्रह्मा ने उसको असुरों का राजा बनाया । उसने इन्द्र को राज्यच्युत कर इन्द्रासन को अपने अधिकार में कर लिया । इन्द्र शिव की शरण गये । शिव ने उसका वध करके इन्द्र को स्वर्गराज्य दिला दिया ।—पक्ष (पु०) गप्पी, गल्पक, वाचाल ।—पत (क्रि०) पकता है ।—पति (पु०) वरुण, समुद्र, सागर ।—पाई (पु०) वृक्ष और फल विशेष ।—पात्र (पु०) लोटा, घड़ा ।—पान (पु०) कलेवा, सबेरे का भोजन ।—प्राय (पु०) जलमय, जलरूप ।—प्लव (पु०) जल का नकुला ऊदबिलाव ।—फल (वि०) दग्ध, भस्म, आग से नष्ट ।—बह्नी (स्त्री०) पैराव, तैराव, हेलाव ।—मय (पु०) जलामई, जलप्रलय, पानी पानी ।—मानुष (पु०) जलजात मनुष्य, जल और स्थल में चलने वाला मनुष्य ।—मार्जार (पु०) जल बिडाल, ऊदबिलाव ।—लता (स्त्री०) तरङ्ग, लहर ।—रङ्ग (पु०) बक, बकुला । बिडाल (पु०) ऊदबिलाव ।—विषुव (पु०) तुला सङ्क्रान्ति ।—शयन (पु०) जल में सोना, विष्णु का जल शयन ।—सूत (स्त्री०) नहरवा, जल जन्तु विशेष ।—सेनी (स्त्री०) जलशयिनी एकादशी जिस दिन भगवान् विष्णु शयन करते हैं, ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी ।—हरी (स्त्री०) अर्घा जिसमें शिवलिङ्ग रखा जाता है । मिट्टी का एक घड़ा जिसमें नीचे सूराख कर और कपड़ा की बत्ती उसमें पिरो देते हैं । फिर उसमें जल भर कर तिपाई पर या किसी कुंड में रस्सी से ठीक शिव लिङ्ग के ऊपर टाँग देते हैं, जिसमें शिवलिङ्ग पर पानी की बूँद टपका करे । [घोंघा ।

जलक तद्० (पु०) वराटिका, कौड़ी, शुक्तिका, सीप,

जलन दे० (पु०) ज्वलन, ताप, बलन ।

जलना दे० (क्रि०) बरना दग्ध होना, दहना ।

जल उठना दे० (वा०) जल जाना, भड़क उठना, सहसा जल जाना ।

जलभुनना दे० (वा०) राख हो जाना, क्रोध से अधीर हो जाना, प्रतीकार न कर सकने के कारण अत्यन्त दुःखी होना

जला दे० (पु०) झील तालाब, सर, सरोवर, पोखरा ।

जलाकर तद्० (पु०) [जल+आकर] सोता स्रोत, झरना, नाव बाँधने का खोहा । (क्रि०) दग्ध कर ।

जलाखु तद्० (पु०) जलजन्तु विशेष, जलनकुल, ऊदबिलाव, जल बिलाई ।

जलाञ्चल तद्० (पु०) झरना नाला, सोता, स्रोत ।

जलाञ्जलि तद्० (पु०) तर्पण, दोनों हाथों में लिया हुआ जल, करपुटगृहीत जल मृतक के उद्देश्य से जलदान ।

जलाजल (पु०) गोटे पट्टे की किनारी या झालर ।

जलातन (पु०) क्रोधी जिद्दी, बद मिज़ाज ।

जलाद (पु०) क़साई मृत्यु दण्ड पाये हुए अभियुक्तों को फाँसी देने वाला ।

जलाधार तत्० (पु०) पुष्करिणी, वापी, तड़ाग, जलाशय, सरोवर। [भस्म करना।
जलाना दे० (क्रि०) बालना, दाहना, दग्ध करना,
जलापा (पु०) द्वेष के कारण उत्पन्न जलन या दाह।
जलाभुना दे० (वि०) साफ हुआ, चिड़चिड़ा, क्रोधी, दग्ध।
जलामय तत्० (वि०) जलभरा, जलमय, जल में डूबा हुआ, भीगा, भाला, आर्द्र, ओदा, गीला।
जलामयी देखो जलामय।
जलाल (पु०) प्रताप, महिमा, आतङ्क, यश, तेज।
जलावन दे० (पु०) ईंधन, भाड़, जलाने की लकड़ी, काठ कण्डी आदि। [चक्र, भँवर।
जलावर्त्त दे० (पु०) जल का घुमाव, चकोह, जल-
जलाशय तत्० (पु०) तड़ाग, सरोवर, सर, ह्रद, झील, तालाब।
जलाहल (वि०) जलमय।
जलिका दे० (पु०) जलौका, जोंक।
जलिया दे० (पु०) धीवर, मच्छीमार, कैवर्त।
जलील (वि०) तुच्छ, निकृष्ट, अपमानित, लज्जित।
जलुक, जलुका तत्० (स्त्री०) जोंक।
जलूस दे० (पु०) किसी उत्सव या अवसर के उपलक्ष्य में, बहुत से लोगों का सजधज कर नगर में परिक्रमा करने को निकलना।
जलेचर तत्० (पु०) जल में चलने या चरने वाले प्राणी, हंस आदि जलचर पक्षी। [की आग।
जलेन्धन तत्० (पु०) बाड़वाग्नि, बाड़वानल, जल
जले पर नोन लगाना दे० (वा०) दुःख पर दुःख देना, दुःखी को दुःख देना, सताये को सताना।
जलेतन दे० (वि०) अति रिसिहा, अत्यन्त क्रोधी, दाही।
जलेवा (पु०) बड़ी जलेबी। [लपेट।
जलेबी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई, कुण्डली,
जलेशय (पु०) विष्णु, मछली। [जलपति।
जलेश्वर तत्० (पु०) जलाधिपति, वरुण, समुद्र,
जलोच्छ्वास (पु०) जलमें उठने वाली लहरें, जलकी नाली किसी तालाब से अभ्यन्तर जल के आने का प्रयत्न। [या बावली का विवाह।
जलोत्सर्ग (पु०) पुराणों के अनुसार तालाब, कूप
जलोदर तत्० (पु०) जलन्धर, रोग, घुड़ाम, पेट की बीमारी। [जलिका, जल का कीड़ा।
जलौका तत्० (स्त्री०) [जल+ओकस्] जोंक,
जल्द (पु०) अविलम्ब, शीघ्र।—बाज़ (पु०) शीघ्रता करने वाला।
जल्दी दे० (अ०) शीघ्र, त्वरा, तुरन्त।
जल्प तत्० (पु०) वृथा बकवाद, झूठा झगड़ा, विजयी की कथा, दूसरे के सिद्धान्त को खण्डन करके अपना मत स्थापित करने की व्यवस्था, वाद, कथा, शास्त्रार्थ। [बकवादी।
जल्पक तत्० (पु०) वावदूक, वाचाल, गप्पी,
जल्पना तद्० (क्रि०) बकना, बिना प्रयोजन की बातें कहना, आप अपनी बड़ाई करना। [बकी, बतोलिया।
जल्पाक तत्० (पु०) बहुत बोलने वाला, बकवादी,
जल्पित तत्० (वि०) उक्त, कथित, मिथ्या।
जल्लाद दे० (पु०) हत्या करनेवाला, वध करने वाला घातक। [समझा जाता है।
जव तद्० (पु०) यव, एक अन्न का नाम, यह देवान्न
जवन तत्० (पु०) वेग, दौड़। [फुनाव, काई, मैल।
जवनिका तत्० (स्त्री०) आवरण, आच्छादन, पर्दा,
जवा दे० (पु०) अँगुली की एक रेखा जिसके अनुसार, शुभाशुभ का ज्ञान सामुद्रिक शास्त्र वाले करते हैं, यव अन्न विशेष।
जवाई दे० (स्त्री०) गमन, आने का भाव।
जवाखार दे० (पु०) जव से निकला हुआ एक प्रकार का खार, शोरा विशेष। [तद्० (स्त्री०) यमवाहन।
जवान दे० (पु०) युवा, तरुण।—ी (स्त्री०) तरुणाई
जवाब दे० (पु०) उत्तर।—ी (पु०) उत्तर सम्बन्धी, बदला, नौकरी से पृथक् किये जाने का हुक्म।—तलब (पु०) जिसके सम्बन्धमें समाधान के लिये जवाब माँगा गया हो।—देही (स्त्री०) उत्तरदायित्व।—सवाल (पु०) शङ्का समाधान, वाद विवाद, प्रश्नोत्तर।
जवार दे० (पु०) समुद्र की बाढ़, समुद्र का उफनाना।
—भाटा दे० (पु०) समुद्र का उतार चढ़ाव।
जवारा दे० (पु०) जुंडा, जव, जई, अन्न विशेष।
जवाला दे० (पु०) गोजई, बेभर, मिला हुआ जव और गेहूँ।

जवास या जवासा दे० (पु०) कटीली घास, तृण विशेष, गरमी के दिनों में इसकी टट्टी बनाई जाती है। इसका स्वभाव है कि पानी पड़ने से सूख जाता है।

जवैया (वि०) गमनशील, जाने वाला।

जस तद्० (पु०) यश, कीर्ति, नामवरी, भलभली जैसे, जिस प्रकार से, जिस रीति से।

जसत या जसता दे० (पु०) धातु विशेष, जस्ता।

जसवत, यशवन्त तद्० (गु०) कीर्तिवान्, कीर्तिशाली।

जसवन्त तद्० (पु०) १—विख्यात, तुकाजीराव होलकर के पुत्र, इनका पूरा नाम या जसवन्त राव होलकर, तुकाजी राव के चार पुत्र थे, उनमें यह छोटे थे, पिता के मरने के अनन्तर राज्य के लिये चारों में विवाद हुआ, अन्त में जसवन्त राव ही की जीत हुई। यह राजा बने। इन्होंने अपने बड़े भाई काशीराव और भतीजे खाण्डेराव की गुप्त हत्या की थी, जिसके फल से थोड़े ही दिनों में ये पागल हो गये। बहुत दिनों तक दुःख भोग कर सन् १८११ ई० में ये मर गये।

२—विख्यात महाराष्ट्र साधु, इनका जन्म १८१५ ई० में पूना में हुआ था, पहले १०) रु० वेतन की एक सरकारी नौकरी इन्होंने कर ली थी। धीरे धीरे इनकी उन्नती होती गई। अन्त में यह तहसीलदार बनाये गये। ११५) रुपये इनको वेतन भी मिलने लगा, सिपाही-विद्रोह के समय इन्होंने सरकार की बहुत मदद की थी, अतएव इनकी इज्जत भी बहुत बढ़ गई थी। इनको लोग देवता कहा करते थे। एक बार यह कमिश्नर साहब से मिलने सतारा गये थे, वहाँ इनके दर्शकों की भीड़ लग गई। यह देख कमिश्नर साहब ने कलक्टर से इसका कारण पूँछा। कलक्टर साहब ने कहा कि "इनको लोग देवता समझते हैं" कमिश्नर साहब ने कहा कि "इनको पेंशन दे दो।" साधु जसवन्त ने अब भजन में अपना मन लगाया, होलकर, सेन्धिया आदि राजा इनका बड़ा आदर करते थे।

३—मारवाड़ (जोधपुर) के राजा, ये सम्राट् शाहजहाँ के एक प्रधान सेनापति थे। इनकी वीरता देख औरङ्गजेब इनसे भीतरी शत्रुता रखता था। इनके पुत्र पृथ्वीसिंह को औरङ्गजेब ने धोखे से मार डाला और भी इनके दो पुत्र काबुल की लड़ाई में मारे गये। पुत्रशोक से विह्वल राजा जसवन्त को १६४२ ई० में औरङ्गजेब ने विष के द्वारा मार डाला।

जसस्वी तद्० (वि०) यशस्वी, कीर्तिमान्।

जसी दे० (वि०) कीर्तिमान्, यशस्वी।

जसु दे० (पु०) देखो जस।

जसुमती तद्० (स्त्री०) नन्द की रानी, यशोदा, यशोमति कृष्ण की माता। यथाः—

" चलत देखि जसुमति सुख पावै,
ठुमुक ठुमुक धरनीधर रेंगत जननी देख दिखावै "।
—सूर सङ्गीतसार।

जसोदा तद्० (स्त्री०) जसुमति, नन्दरानी, कृष्ण की माता, यथाः—" सिखावन चलत जसोदा मैया।"

जसोमति तद्० (स्त्री०) जसुमति, जसोदा, नन्दरानी, यथाः—"जसोमति लटकति पाइ परे।"

जस्ता तद्० (पु०) जसता धातु।

जहर दे० (पु०) विष, गरल।—बाद (पु०) ज़हरीला फोड़ा।—मुहरा (पु०) ज़हर खींचने वाला काला पत्थर विशेष।

जहरीला दे० (वि०) विषैला, विषाक्त।

जहत्स्वार्था तद्० (स्त्री०) गौणार्थ, अप्रसिद्धार्थ।

जहँ दे० (अ०) देखो जहाँ।

जहाँ दे० (अ०) यत्र, जिस स्थान में, जिधर।—पनाह (पु०) संसार के पालक या रक्षक।

जाहि (सर्व०) जेहि, जिसे, जिसको। (क्रि०) मारो, त्यागो, छोड़ो।—या जब, जिस समय।

जहीं दे० (अ०) जहाँ ही, जिस किसी स्थान में।

जहाज़ दे० (पु०) बड़ी नौका, पोतयान, समुद्र में चलने वाली बड़ी नाव।

जहान दे० (पु०) संसार, दुनिया।

जहानक तद्० (पु०) प्रलय, समस्त संसार का प्रलय, जगत् का महाप्रलय।

जहिया (गु०) जब, जिस वक्त, जिस समय।

जही (गु०) जहाँ, जहाँही।

जहाँगीर दे० (पु०) भारत का मुगल सम्राट् यह अकबर का पुत्र था, जयपुर की राजकन्या मरियम

से यह उत्पन्न हुआ था, इसका पहिले सलीम नाम था। यह युवराज की अवस्था में महाराणा प्रताप के विरुद्ध लड़ने को भेजा गया था, हलदी घाटी के युद्ध में मरते मरते बचा था। इसने अपने पिता के मित्र अबुलफ़ज़ल को विष देकर मार डाला था। इसका विवाह जोधाबाई से हुआ था। यह भी अन्य बादशाहों के समान दुराचारी और विलासी था। जिससे इसे जीवन के अन्तकाल में दुःख झेलना पड़ा था। अकबर की मृत्यु के अनन्तर, १६०५ ई० के १५ वीं अक्टूबर को ३८ वर्ष की अवस्था में सलीम का आगरे के क़िले में राज्याभिषेक हुआ और इसका जहाँगीर नाम रक्खा गया। तमगा और मीरवाही मे देर दर इसने माफ़ कर दिये थे। जगह जगह अस्पताल, सराय और कुओं इसने बनवाये थे। इसके शासनकाल में बृहस्पतिवार और रविवार को पशुहत्या नहीं हो पाती थी। मिर्ज़ा ग्यास की कन्या से यह पहले ही से विवाह करना चाहता था, परन्तु अकबर की इच्छा न रहने से उनके जीवनकाल में जहाँगीर का मनोरथ पूर्ण नहीं हो सका था। उस लड़की का विवाह अकबर ने किसी दूसरे से करा दिया था। राज्य पाकर भारत के सम्राट् ने एक स्त्री के प्रेम में पड़ कर एक निरपराधी अपनी प्रजा का वध करने के लिये सेना भेजी थी और उसको मरवा कर उसकी स्त्री को मँगवा लिया था।

जह्नु तद्० (पु०) एक राजर्षि का नाम, गङ्गा नदी के पीने से इनकी प्रसिद्धि हुई है। इनके पिता का नाम सुहोत्र और माता का नाम केशिनी था। सुहोत्र प्रसिद्ध राजा पुरूरवा के वंशज थे। जह्नु सर्वमेध नामक यज्ञ करते थे, गङ्गा उस स्थान को डुबाने लगी, जह्नु ने गङ्गा को पी लिया। तभी से गङ्गा का नाम जाह्नवी पड़ा है। युवनाश्व की कन्या कावेरी से इनका विवाह हुआ था। इनके पुत्र का नाम सुनह था।—तनया (स्त्री०) गङ्गा, भागीरथी, त्रिपथगा। —सप्तमी (स्त्री०) वैशाख शुक्ल सप्तमी।

जाई दे० (स्त्री०) जनी, बेटी, दुहिता, कन्या, पुत्री। (क्रि०) जाकर, जाते है।

जाँगड़ा (पु०) भाट बन्दी, यशगान वाला, चमुआ।

जाँगर दे० (पु०) पसली समेत जाँघ, अङ्ग, गात्र, शरीर।

जाँघ तद्० (पु०) जङ्घा, जानु, उरुदेश।

जाँघिल दे० (पु०) बड़ा बगुला, जलपक्षीविशेष।

जाँघिया दे० (पु०) कछना, लँगोटी, एक प्रकार का पहलवानों का लँगोटा।

जाँघिल (पु०) ख़ाकी रंग का पक्षी विशेष।

जाँच दे० (पु०) परख, परताव, परीक्षा, अनुसन्धान, खरे खोटे की पहचान।

जाँचना दे० (क्रि०) जाँच करना, परखना, कसौटी पर कसना, अनुसन्धान, यथार्थ पता लगाने के लिये उपाय, उद्योग करना, दुहराना, किसी के किये हुए काम को देखना, ठीक करना।

जाँत दे० (स्त्री०) बोझ, बल मरने का बोझ, चक्की। (पु०) दबाव, चाप चढ़ाना, पर्याय।

जाँता दे० (स्त्री०) चक्की, पेषणी, पीसने का यन्त्र।

जाँबवन्त } जाँबवान } तद्० (पु०) जाँबवान् सुग्रीव के एक मन्त्री का नाम, ऋक्षराज।

जाँबवती दे० (स्त्री०) जाँबवान् की पुत्री, श्रीकृष्ण की स्त्री।

जाँबू (पु०) जम्बूद्वीप।—नद (पु०) सोना, कञ्चन।

जाँवर (पु०) प्रस्थान, गमन।

जा दे० (सर्व०) जो, जिस, कोई। तद्० (स्त्री०) माता, देवरानी। (वि०) सम्भूत, उत्पन्न (यथा गिरिजा)। (क्रि०) जाओ, चला जा, दूर हो।

जाउर या जाउल (पु०) दूध भात, खीर, पायस।

जाकड़ दे० (पु०) किसी दूकान वाले से इस ठहराव पर माल मँगवाना या लेना कि यदि वह पसन्द न आया या ठीक न बैठा तो वापिस किया जायगा।

जाकर दे० (पु०) जिसका, जिसका सम्बन्धी, जाय कर।

जाका दे० (सर्व०) जिसका।

जाखन (स्त्री०) कुए की नींव में दिये जाने वाला, पहिया, चक्कट, नेवार।

जाग दे० (पु०) यज्ञ, होम। (क्रि०) जागृत, निद्रा त्याग, सचेत हो।

जागत तद्० (स्त्री०) जागृत, सावधानी, सचेत, भाग्यवान् [देवो देवता की प्रत्यक्ष महिमा।

जागतीकला (स्त्री०) दिया, दीपक, दीप्ति, ज्योति,

जागती ज्योति तद्० (वि०) पराक्रमी, प्रतापी, औकलाई। [जगना, सचेत होना, सावधान होना।

जागना दे० (क्रि०) निद्रात्याग करना, नींद से

जागर दे० (पु०) जगरण, होश, कवच।
जागरण तत्० (पु०) निद्रा त्याग, जागना, एकादशी आदि का रात्रि जागरण, रात जगा, रतजगा।
जागरित तत्० (पु०) जागरण, निद्रा का अभाव।
जागवलिक तत्० (पु०) याज्ञवल्क्य मुनि।
जागरूक तत्० (पु०) जागरणशील, जागरण कर्त्ता, जागने वाला, सावधान, कार्यतत्पर।
जागा दे० (पु०) जाति विशेष, हद।
जागायन्दी दे० (स्त्री०) हदबन्दी, सीमानिर्देश, नींद, ऊँघ, ऊँघाई। [के लिये होश जगाना।
जागाजागी दे० (स्त्री०) निद्रात्याग, जागरण, जागने
जागू दे० (वि०) जागने वाला, जागरण कर्त्ता।
जाग्रत तत्० (पु०) जागता, अनिद्रित, सावधान, जागरण विशिष्ट, नींद से उठा हुआ, सचेत।
जाङ्गल तत्० (वि०) जङ्गल का उत्पन्न, एक प्रकार का स्थलपशु, निर्जल प्रदेश। (पु०) टिटिहरी पक्षी, कपिञ्जल पक्षी।
जाङ्गलिक तत्० (पु०) विषवैद्य, विषचिकित्सक, साँप के काटने की चिकित्सा करने वाला, कालबेलिया।
जाङ्गुल तत्० (पु०) विष, कालकूट, हलाहल, गरल, फल विशेष। [सँपेरा, सँपेरा विष झड़वैया।
जाङ्गुलि तत्० (पु०) विषवैद्य, सर्पक्षत चिकित्सक,
जाचक तद्० (पु०) याचक, प्रार्थी, माँगने वाला, भिक्षुक, मंगन, भिखारी, बन्दी, मागध, भाट।
जाचत तत्० (क्रि०) याचता है, माँगता है, भिक्षाटन करता है। [परीक्षा करना।
जाचना तद्० (क्रि०) माँगना, याचना, परखना,
जाचा तद्० (वि०) माँगा, चाहा, अभिलषित, ईप्सित, प्रार्थित, परखा। [प्रार्थित, चाहा हुआ, माँगा हुआ।
जाच्यमान तद्० (वि०) याच्यमान, प्रार्थ्यमान,
जाजक तद्० (पु०) याजक, पुरोहित, यज्ञकरानेवाला।
जाजम दे० (पु०) बिछौना, शतरञ्जी, दरी, गलीचा, चित्रविचित्र आसन विशेष, जाजिम।
जाजलि तत्० (पु०) अथर्ववेदस्थ गोत्र प्रवर्तक ऋषि, यह कुछ दिनों तक दाम्भिक हो गये थे, इनको अपनी तपस्या का अभिमान हो गया था। पुनः काशी के एक बया (तुलाधार) से धर्मशास्त्र का उपदेश सुनकर इनका चित्त ठिकाने हुआ।

जाजा दे० (स्त्री०) कंजौजी, (क्रि०) हट हट, चल चल।
जाजामन्ती दे० (स्त्री०) जयजयवन्ती, एक रागिनी।
जाट दे० (पु०) राजपूतों का एक अवान्तर भेद, जाति विशेष।
जाठ दे० (पु०) लट्ठा, कोल्हू की धुरी।
जाड़ दे० (पु०) मसूढ़ा, दाँतों की जड़। [सर्दी।
जाड़ा दे० (पु०) शीत, ठंढ, जड़काल, हेमन्तऋतु,
जाड़ी दे० (स्त्री०) दन्तपङ्क्ति, दाँतों की कतार। (वि०) मोटी, स्थूल।
जाड्य तत्० (पु०) जड़ता, मूर्खता, मूढ़ता, शीतलता, शीत, जड़ का धर्म, अप्रसन्नता, अलसता, मौर्ख्य।
जात तत्० (वि०) उत्पन्न। (स्त्री०) जाति, वंश, ज्ञाति, कुल, समूह, व्यक्त, उद्भिन्न।—कर्म (पु०) दशविध संस्कार के अन्तर्गत संस्कार विशेष।—पाँत (स्त्री०) पीढ़ी, वंश, कुल, वंशानुक्रम, वंशावली।—प्रतीत (गु०) जातप्रत्यय, जिस का विश्वास हो गया हो, विश्वसनीय।—वेदा (पु०) अग्नि, अनल, वह्नि।—वेद (पु०) अग्नि, चित्रक, ईश्वर, सूर्य।—रूप (पु०) सोना चाँदी, धतूरा, धतूर।
जातक तत्० (पु०) पुत्र, बालक, उत्पन्न सन्तान का शुभाशुभ बताने वाला ग्रन्थ, फलित ज्योतिष का एक ग्रन्थ। [वेदना।
जातना तद्० (स्त्री०) यातना, पीड़ा, व्यथा, दण्ड,
जातान्ध तत्० (गु०) [जात+अन्ध] जन्म से अन्धा, जन्मान्ध, दृष्टिहीन।
जातापत्या तत्० (स्त्री०) [जात+अपत्य+आ] प्रसूता स्त्री, जिस स्त्री ने पुत्र या कन्या उत्पन्न किया हो।
जाता रहना दे० (वा०) भूल जाना, नष्ट हो जाना, खोया जाना, अदृश्य होना, अलोप होना, मर जाना, चम्पत होना, हाथ से निकल जाना, चला जाना।
जाति तत्० (स्त्री०) [जन+क्ति] आर्य जाति के मनुष्य समाज का विभाग का विशेष जो सृष्टि की आदि से जन्मानुसार चला आ रहा है। गोत्र, कुल,

जन्म, वंश, जाति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, आदि, नैयायिकों के मत से एक धर्म विशेष, जो व्यापक हो, यथा—मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व आदि। छन्दोविशेष, पुष्पविशेष, मालती। —कोश (पु०) जावित्री।—पत्री (स्त्री०) जावित्री, बिरादरी का पत्र।—वैर (पु०) स्वाभाविक शत्रुता, जिस प्रकार नकुल सर्प का और जैसे घोड़े का होता है।—भ्रंश (पु०) जाति विनाश, अव्यवहार्यता।—भ्रंशकर (पु०) जाति नाश करने वाला पाप, नवविध पापों के अन्तर्गत पाप विशेष।—भ्रष्ट (वि०) कुलच्युत, समाज बहिष्कृत, जाति बाहिर।—स्मर (वि०) पूर्व जन्म की बातों की स्मृति, पूर्व जन्म के स्मरण करने वाले।—हीन (गु०) जातिभ्रष्ट, अज्ञात, कुजात।

जाती तद्० (स्त्री०) पुष्प विशेष, जाती फूल, चमेली, मालती, जावित्री।—पत्री (स्त्री०) जावित्री। —फल (पु०) फल विशेष, जायफल।

जातीय तद्० (गु०) जाति सम्बन्धी, जाति सम्पर्की एक तद्धित प्रत्यय, यथा—पशुजातीय, अश्व जातीय।

जातीयता तद्० (स्त्री०) जातित्व, जाति का भाव।

जातु तद्० (अ०) कदाचित्, कभी, सम्भावनार्थक।

जातुधान तद्० (पु०) राक्षस, निशाचर, रात्रिचर, रावण की एक सेना का नाम जिसके सेनापति खरदूषण थे। यथा—"जातुधान सेना सब मारे।"

जातेष्टि तद्० (पु०) पुत्र उत्पन्न होने पर का योग, नान्दीमुख श्राद्ध, जातकर्म का एक अङ्ग।

जात्य तद्० (गु०) कुलीन, प्रधान, श्रेष्ठ, मनोहर, सुन्दर जाति सम्बन्धी।—त्रिभुज (पु०) समकोण त्रिभुज।

जात्रा तद्० (स्त्री०) देशाटन, पर्यटन, भ्रमण, तीर्थ यात्रा। यथा—

तब यह बार न जानौ दूजा
जेहि दिन मिलै जात्रा पूजा।

—पद्मावत।

जात्यन्ध तद्० (गु०) जन्मान्ध, जन्म से अंधा, दृष्टिहीन।

जादव (पु०) यादव।—पती (पु०) श्रीकृष्ण।

ज़ादा दे० (गु०) अधिक, बहुत, पुत्र, सन्तान, यथा—शाहज़ादा, शाह का पुत्र, ग़रीबज़ादा, ग़रीब का पुत्र।

जादू दे० (पु०) माया, कुहक, टोना, जन्तर मन्तर।

जादूगर दे० (पु०) कुहकी, मायावी, टोनहा।

जान तद्० (पु०) ज्ञानी, दीठबन्द, ओझा, मायावी, सर्वज्ञ, देवज्ञ। (पु०) यान, सवारी, विमान, वाहन। (स्त्री०) प्राण, आत्मा, अतिप्रिय, प्रियतम।

जानकार दे० (वि०) जाननेवाला, अभिज्ञ, चतुर। —ी दे० (स्त्री०) परिचय, विज्ञता, निपुणता।

जानकी तद्० (स्त्री०) जनक राजा की लड़की, जनकराज-तनया, जनकसुता, सीता, श्रीरामचन्द्र की धर्मपत्नी (देखो सीता)।—जानि तद्० (पु०) श्रीरामचन्द्र।—जीवन (पु०) श्रीरामचन्द्र। —नाथ (पु०) श्रीरामचन्द्र।—रमण (पु०) श्रीरामचन्द्र। [है, समझता है।

जानत तद्० (वि०) ज्ञानी, बुद्धिमान, ज्ञान से जानता

जाननहार दे० (पु०) जाननेवाला, समझनेवाला।

जानना तद्० (क्रि०) समझना, पहचानना, परिचय करना। [समझना।

जाननौ दे० (क्रि०) जानना, चिन्हना, पहचानना,

जानपद तद्० (पु०) जनस्थान, देश, परगना, ज़िला, चकला।

जानब दे० (क्रि०) जानना, समझना, जानो, समझो।

जानपहचान दे० (पु०) चिन्हार, परिचित, चिन्ह पहचान।

जानवर दे० (पु०) जन्तु, प्राणी, पशु पक्षी आदि।

जानहार दे० (गु०) जवैया, जानेवाला, गमनशील।

जानहु (अ०) मानो।

जाना दे० (क्रि०) गमन करना, दूर होना, हानि होना, खोना, गुज़रना, चौपट होना, मागा, समझा।

जानि दे० (क्रि०) समझ कर, जान कर।

जानी दे० (क्रि०) जान ली, समझ ली, पहचान ली।

जानु तद्० (पु०) घुटना, घोंटू, जानू, ठेहुना, साटना, ऊरु जङ्घामध्यभाग।—पाणि (क्रि०वि०) घुटने के बल। [घुटना, पटरे के समान जानु।

जानु फलक तद्० (पु०) टुटिया, चक्कि, मोख

जानो दे० (अ०) जानो, समझो।

जाना दे० (क्रि०) पहचानना, समझना। [में पड़ना।
जाप तद्० (पु०) जप, किसी मन्त्र को बार बार भग
जापक तद्० (पु०) जप करने वाला, भजन करने वाला, जपने वाला, सदा स्मरण करने वाला, जपी, जपकर्ता, सर्वदा मन्त्रोच्चारणकारी।
जापान (पु०) चीन देश के पूर्व एक द्वीप समूह का नाम।—ी जापान देश की, जापान देश के वासी।
जाफरान दे० (पु०) कुङ्कुम, केशर।
जाफरअली खाँ दे० (पु०) इनका प्रसिद्ध नाम मीर जाफ़र था, इन्हीं की विश्वासघातकता के कारण सिराजुद्दौला गद्दी से उतारा गया था, सिराज के सिंहासनच्युत होने पर यह बङ्गाल के सिंहासन के अधिकारी हुए, परन्तु १७६० ई० में इनकी विलासिता अकर्मण्यता देख अङ्गरेज़ों ने इन्हें गद्दी से उतार दिया।
जाफर खाँ (पु०) इनका प्रसिद्ध नाम मुर्शिद कुली खाँ था। दिल्ली के बादशाह आलमगीर ने १७०४ ई० में इनको बङ्गाल की नवाबी दी थी। इन्होंने अपने नाम पर प्रसिद्ध नगर मुर्शिदाबाद बसाया था।
जाब दे० (पु०) गमन करना, जाना।
जाबाली तद्० (पु०) एक ऋषि का नाम।
जाम तद्० (पु०) प्रहर, याम, चार घड़ी, दिन रात का आठवाँ भाग, तीन घंटा, प्याला, चषक, मदिरा का प्याला। यथा—"पना का जाम ऐसा कि मैं पी पी ऊँ तू भर भर दे।"
जामदग्न्य तद्०(पु०)जमदग्नि का पुत्र।(देखो परशुराम)।
जामन दे० (स्त्री०) वृक्ष और फल विशेष, जोरन, जोड़न, जिससे दही जमाया जाता है, जो दही जमाने के काम में आता है।
जामवन्त तद्० (पु०) ऋक्षराज, रामचन्द्र की सेना का प्रधान सेनापति, जाम्बवान।
जामवन्ती तद्० (स्त्री०) जाम्बवान की पुत्री, श्रीकृष्ण चन्द्र की प्रधान रानियों में से एक रानी, श्रीकृष्ण के श्वसुर सत्राजित् के पास एक मणि थी, श्रीकृष्ण ने उस मणि को माँगा था, परन्तु उन्होंने नहीं दिया। सत्राजित् के छोटे भाई प्रसेन उस मणि को धारण कर शिकार खेलने गये थे। वहाँ उनको एक सिंह ने मार डाला और मणि ले ली। सत्राजित् ने समझा कि श्रीकृष्ण ही ने मणि ले ली है। अतः इस कलङ्क को दूर करने के लिये श्रीकृष्ण वन में गये। उन्होंने एक जगह देखा कि प्रसेन और सिंह मरे पड़े हैं। अपने साथियों को वहाँ छोड़ कर वह एक पर्वत की गुहा में घुस गये, वहाँ उन्होंने देखा कि एक बालिका उस मणि को लिये खेल रही है। श्रीकृष्ण को देख कर बालिका और उसकी धाय दोनों चिल्ला उठीं, उनका चिल्लाना सुन कर जाम्बवान् निकला, और श्रीकृष्ण को सामान्य मनुष्य समझ कर उनसे लड़ने लगा। जब वह हार गया, तब उसने श्रीकृष्ण की स्तुति की और मणि तथा अपनी कन्या श्रीकृष्ण को अर्पित की। जामवन्ती से ब्याह करके श्रीकृष्ण मथुरा लौट आये।
जामा दे० (पु०) अङ्गरखा विशेष, घेरदार अङ्गा।
जमाता, जामातृ तद्० (पु०) कन्या का पति, जमाई, दामाद।
जामिनी तद्० (स्त्री०) यामिनी, रात्रि, रात, चार पहर की रात, यवनों की भाषा, अरबी, फ़ारसी।
जामिन, जामिनी दे० जमानत, संरक्षण, प्रतिभूत, जमानत करना, विश्वास होना।—दार (पु०) जमानत करने वाला।
जामुन दे० (पु०) फल विशेष, इसका रंग काला होता है और बरसात में फलता है।
जाम्बवान् तद्० (पु०) ऋक्षपति, यह ब्रह्मा के पुत्र थे। त्रेतायुग में यह सुग्रीव के सेनापति होकर सीताजी को ढूँढने में रामचन्द्रजी के सहायक बने थे। द्वापर के अन्त में स्यमन्तकमणि के कारण इन्होंने श्रीकृष्णचन्द्र से लड़ाई की थी, अन्त में मणि और अपनी कन्या श्रीकृष्ण को इन्होंने दे दी। खोजियों (अनुसन्धानकारियों) का कहना है कि यह जाम्बवान् भालू नहीं थे, किन्तु अनार्य राजा थे।
जाम्बुवत तद्० (पु०) कल्पित भालू।
जाम्बूनद तद्० (पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्यमय, काञ्चन।
ज़ायका दे० (पु०) स्वाद, लज्ज़त।
जायज़ दे० (पु०) उचित, यथार्थ।
ज़ायद दे० (पु०) अधिक, अतिरिक्त।

जायदाद दे० (स्त्री०) सम्पत्ति, भूमि। [गर्म मसाला।
जायफल तद्० (पु०) फल विशेष, जातीफल, एक
जाया तद्० (स्त्री०) भार्या, पत्नी, स्त्री, वनिता।
—जीव (पु०) नट, चारण, वेश्यापति।
—नुजीवी (पु०) [जाया+अनुजीवी] नट, वेश्यापति, स्त्री की कमाई खाने वाला, स्त्री से जीने वाला।—पति (पु०) दम्पति, जम्पति, स्त्री पुरुष, नर नारी, पति पत्नी।
जाये दे० (क्रि०) उत्पन्न किये हुए। (पु०) बेटा, बालक, सुत, लड़का, सन्तान।
जार तद्० (पु०) उपपति, गुप्तपति, छिनरा, लगाधा, यार, दूसरा पति, भड़ुआ, रस का राजा। (क्रि०) जला कर, भस्म करके।—कर्म तद्० (पु०) व्यभिचार।—गर्भ (पु०) व्यभिचारी, लम्पट, उपपति का गर्भ।—ज (वि०) उपपति से उत्पन्न सन्तान, जारोत्पन्न, व्यभिचारजात सन्तान।
जारण तद्० (पु०) [ज+अनट्] जलाना, जीर्ण करना, क्षय करना, धातु आदि का फूकना।
जारना तद्० (क्रि०) जलाना, बालना, सुलगाना, दग्ध करना।
जारुल दे० (पु०) काठ विशेष, एक प्रकार की लकड़ी।
जारा (क्रि०) जलाया, भस्म किया। (पु०) यार, उपपति।
जारी (गु०) बहता हुआ, प्रवाहित।
जारिणी तद्० (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री।
जारोब (स्त्री०) झाड़ू, बढ़नी।
जाल तद्० (पु०) सूत आदि का बना हुआ मछली या चिड़िया पकड़ने का फँदा, पाश, जालीदार खिड़की, झरोखा, इन्द्रजाल, धोखा, फरेब, बनावट।
जालगि दे० (सर्व०) जिसके लिये, जिस कारण, जिस हेतु। [मयेदी, मयनी।
जालगोणिका तद्० (स्त्री०) दधिमन्थन भाण्ड,
जालन्धर तद्० (पु०) त्रिगर्त देश, त्रिगर्त देशस्थ, राक्षस विशेष, (देखो जलन्धर) एक ऋषि का नाम।
जालन्धरी विद्या तद्० (स्त्री०) इन्द्रजाल।
जालरन्ध्र तद्० (पु०) जाली का झरोखा।
जालसाज़ (पु०) फरेबी, धोखे बाज़, झूठी कार्रवाई करने वाला।—ी (स्त्री०) फरेब, दगाबाज़ी।
जाला तद्० (पु०) मकड़ी का फाँद, जल रखने का बड़ा पात्र, मटका।
जालिक तद्० (पु०) मछुआ, कैवर्त, धीवर, मच्छी-मार, मकड़ी, मकड़ा, जाले का मकड़ा, इन्द्रजालिक, मदारी, बाज़ीगर। (वि०) जाल से जीने वाला।
जालिया तद्० (पु०) कपटी, छली, मायावी, धूर्त, ठग, फरेबी, धोखा देने वाला।
जाली तद्० (पु०) जाल करने वाला, मायावी, वञ्चक, धीवर, व्याध, झंझरी, झरोखा। तद्० (स्त्री०) तरोई, परवल। दे० (स्त्री०) कसीदे का एक प्रकार का काम। एक प्रकार का महीन छेददार वस्त्र, कच्चे आम की गुठली के ऊपर की पतली झिल्ली। (वि०) बनावट, झूठा।
जाल्म तद्० (पु०) पामर, क्रूर, असमीक्ष्यकारी, मूर्ख, धूर्त, अधम, कुटिल, निष्ठुर, नृशंस।
जावक तद्० (पु०) यावक, अलक्त, महावर, अलता, स्त्रियों के पैर रंगने का एक रंग।
जावका तद्० (स्त्री०) लौंग, लौंग का फूल।
जावनी तद्० (स्त्री०) अजवाइन।
जावा दे० (पु०) उपद्वीप विशेष, हिन्द महासागर का उपद्वीप यह द्वीप डच जाति की अधीनता में है। यहाँ की बस्ती खूब घनी है। इसकी राजधानी बटाविया है। लङ्का में जो वस्तु उत्पन्न होती हैं, वे ही यहाँ भी उत्पन्न होती हैं। [की उत्पत्ति।
जावाँ दे० (पु०) यमज, यमल, एक साथ दो सन्तान
जासु दे० (सर्व०) जिसका, जिसकी।
जासूस दे० (पु०) भेदिया, गुप्तचर, मुख़बिर।
जासूसी दे० (स्त्री०) जासूसी का काम, भेदिया।
जाह दे० (पु०) घबड़ाहट, आपत्ति, विपत्ति, असमंस, फँसाव।
जाहा दे० (पु०) देखा, निरीक्षण किया। यथा—

"पारवती पुनि सत्य सराहा,
औ फिर मुख महेस कर जाहा"।

—पद्मावत।

जाहि दे० (सर्व०) जिसको, जिस किसी को, जिसे।
जाहिर दे० (पु०) प्रकाश करना, प्रचार करना।
जाह्नवी तद्० (स्त्री०) भागीरथी गङ्गा, (देखो जह्नु)।
जियत दे० (क्रि०) जीता है, जीवित है।

जिग्राउ दे० (पु०) जिलाव, जीवमदान, रोग से छुटकारा।
जिग्रान दे० (पु०) नुकसान, हानि, क्षति।
जिग्राये दे० पालित, जिलाये हुए, पाला पोसा।
जिगजिगिया दे० (गु०) चापलूस, खुशामदी, मिथ्या प्रशंसक, चिरौरिया। [चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा।
जिगजिगी दे० (स्त्री०) चिरौरी, खुशामद, अनुनय;
जिगना दे० (पु०) वृक्ष विशेष।
जिगमिष तत्० (स्त्री०) गमनेच्छा, गमन करने की इच्छा, घाने की अभिलाषा।
जिगमिषु तत्० (वि०) गमनेच्छुक, जाना चाहने वाला, जाने की इच्छा वाला।
जिगीषा तत्० (स्त्री०) जीतने की इच्छा, जयेच्छा, पराभव करने की इच्छा, व्यवसाय, प्रकर्ष, चकसा।
जिगीषु तत्० (वि०) जयेच्छु, जय चाहने वाला, जय का अभिलाषा करने वाला।
जिघत्सा तत्० (स्त्री०) [अद्+सन्+आ] भोजन की इच्छा, भोजन करने की इच्छा, भोजन करने की चेष्टा, भोजन करने की अभिलाषा।
जिघत्सु तत्० (वि०) [अद्+सन्+उ] बुभुक्षु, भोजन करने की इच्छा रखने वाला, क्षुधित, भूखा।
जिघांसु तत्० (वि०) वध करणेच्छुक, घातक, घातुक, नृशंस, क्रूर, वधोद्यत।
जिघासा तत्० (स्त्री०) [अद्+सन्+आ] क्षुधा, भूख, भोजन करने की इच्छा, बुभुक्षा।
जिजिया दे० (स्त्री०) ज्येष्ठा भगिनी, बड़ी बहिन, स्तन, चूँची। [जीवनेच्छुक।
जिजीविषु तत्० (वि०) जीने की इच्छा करने वाला,
जिज्ञासन तत्० (पु०) [ज्ञा+सन्+अनट्] प्रश्न करना, पूँछना, जानने की इच्छा प्रकाशित करना।
जिज्ञासा तत्० (स्त्री०) प्रश्न पूँछना, जानने की इच्छा। [प्रच्छक।
जिज्ञासु तत्० (वि०) प्रश्न करने वाला, पूँछने वाला,
जिज्ञास्य तत्० (वि०) पूछने योग्य, प्रश्न करने योग्य, जिज्ञासितव्य, जिज्ञासनीय।
जिझौरा दे० (पु०) वेड़ी, सिकड़, शृङ्खला।
जिठाई (स्त्री०) बड़ाई, जेठापन।
जिठानी दे० (स्त्री०) पति के जेठे भाई की स्त्री।
जित् (गु०) जेता, जय प्राप्त करने वाला।
जित तत्० (वि०) [जि+क्त] पराभूत, पराभव प्राप्त, पराजित, पराजयी, वशीभूत, अधीन, जिधर, जहाँ। (पु०) अर्हदुपासक, जैनविशेष।—हु (क्रि०) जीतो, जीत, जो जीत भी।
जितना } (वि०) परिमाण, अवधि और संख्या-
जितेक } र्थक। (क्रि० वि०) जिस मात्रा में, जिस परिमाण में। यथा—जितना मैं भोजन करता हूँ उतना कन्हैया नहीं कर सकता। [बाज़ी की जीत।
जितनी दे० (स्त्री०) परिमाणार्थक, खेल की जीताई,
जितयोनि तत्० (पु०) हिरन, हरिण, मृग।
जितवार (गु०) जितैया, विजयी।
जितशत्रु तत्० (पु०) कृत शत्रु पराजय, विजयी।
जितवैया (गु०) जीतने वाला।
जिता (पु०) हूँढ, वह पारस्परिक सहायता जो किसान एक दूसरे की जोताई बोआई में किया करते हैं।
जितामित्र तत्० (गु०) [जित+अमित्र] विष्णु नारायण। (वि०) विजयी, जिसने शत्रु जीत लिये हैं।
जिताहार तत्० (पु०) [जित+आहार] अन्न जयी, जिसने अन्न को अधीन कर लिया है।
जिति दे० (सर्व०) जितनी, जिधर, जिस तरफ़। (क्रि०) जीत कर। (स्त्री०) जीत।
जितेन्द्रिय तत्० } (पु०) [जित+इन्द्रिय] इन्द्रिय
जितेन्द्री तद्० } जीत, जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया है, शान्त, वशी, अकामी।
जितै (क्रि० वि०) जिस ओर, जिस तरफ़, जिधर।
जितौ (गु०) जितना।
जित्या (गु०) विजयी, जीतनेवाला।
ज़िद दे० (स्त्री०) हठ, आग्रह, अड़।
जिधर दे० (अ०) जहाँ, यत्र, जिस स्थान में।
जिन तत्० (पु०) जैन धर्म प्रवर्त्तक आचार्य, जैनियों के तीर्थङ्कर, इनके तीर्थङ्कर २४ हैं, यद्यपि सभी स्वतन्त्र नाम भिन्न हैं, तथापि केवल जिन पद से भी उनका व्यवहार होता है। जिन ही को कोई कोई बौद्ध बतलाते हैं और जैन धर्म को बौद्ध धर्म की शाखा मानते हैं, उनका ऐसा समझना निष्कारण नहीं है। कोषों में बौद्ध और जैन का नाम प्रायः

एक ही साथ आना ही इसका कारण है। परन्तु इससे अतिशय भिन्न इन दोनों धर्ममतों की एकता की कल्पना अनुचित है। इनके सिद्धान्त, धार्मिक क्रियायें तथा आचार आदि अत्यन्त भिन्न हैं। जैन धर्म प्राचीन है, बौद्ध धर्म नवीन। तद्० (पु०) विष्णु, सूर्य, बुद्ध। (सर्व०) जिसका बहुवचन।

जिनकेरे दे० (सर्व०) जिनके, जिस किसी के। [श्रय।

जिन्स दे० (पु०) द्रव्य, वस्तु, पदार्थ जात, प्रकार,

जिन्दगानी दे० (स्त्री०) जीवन, ज़िन्दगी, जन्म।

जियरिया दे० (स्त्री०) जेवरी, मूँज या सन की बटी हुई पतली रस्सी।

जिमि दे० (अ०) यथा, जैसा, यादृश—

"जिमि दशनन महँ जीभ बिचारी"

—रामायण।

जिमाना दे० (क्रि०) भोजन कराना, खिलाना, अतिथि सत्कार करना।

जिमीकन्द दे० (पु०) सूरन, ररसी।

जिय तद्० (पु०) जीव, प्राण, आत्मा, हृदय।

जियरा तद्० (पु०) जीव, जी, प्राण।

जियाना तद्० (क्रि०) जिलाना, प्राण दान देना, जीवित करना, पालना पोसना। [जीवन्त।

जियोर दे० (वि०) साहसी, उत्साही, धीर, योद्धा,

ज़िला दे० (पु०) प्रान्त, प्रदेश के किसी भाग का प्रधान स्थान, जहाँ राजकर्मचारी राज्य व्यवस्था करते हैं, जहाँ कलक्टर साहब रहते हैं।

जिलाना दे० (क्रि०) जीता करना, सजीव करना, जीवित करना, जिला देना।

जिल्द दे० (स्त्री०) पट्ठा या दफ़्ती जो किसी पुस्तक की रक्षा के लिये उस पर लगा दी जाती है। खाल, चमड़ा।—गर दे० (पु०) जिल्द बाँधने वाला, पुस्तक बन्धनकर्त्ता, दफ़्तरी।

जिव तद्० (पु०) जिय, प्राण, आत्मा, जीव, चेतन, यथा—

"सुमिरहुँ आदि एक करतारू।

जे जिव दीन्ह कीन्ह संसारू॥"—पद्मावत।

जिवनमूरी या जिवनमूरि तद्० (स्त्री०) संजीवनी औषधि, जिलाने वाली बूँटी। [र्थी, विजयी।

जिष्णु तद्० (पु०) अर्जुन, किरीटी, इन्द्र, जीतनेवाला,

जिवाना दे० (क्रि०) जीवित करना।

जिस (वि०) विभक्ति युक्त विशेष्य के साथ आने से प्राप्त हुआ "जो" का रूप।

जिसु दे० (सर्व०) जिसका, सम्बन्धार्थवाची।

जिह (स्त्री०) रोदा, ज्या, चिल्ला।

जिहाद (पु०) मुसलमानों का धार्मिक युद्ध।

जिहि दे० (सर्व०) जो, जिस, जिसको।

जिह्म तद्० (वि०) कपटी, कुटिल, छली, धूर्त, मूढ़, दुष्ट, टेढ़ा, अप्रसन्न, मन्द। (पु०) तगर का पुष्प, अधर्म।—कार (पु०) कपटी, छली, धूर्त।—ग (पु०) साँप, सर्प, टेढ़े चलने वाले, वक्रगामी, बाण, तीर। [जिभोर, चटोर।

जिह्वल तद्० (वि०) चटोरा, लोलुप, लोभी, लुब्ध

जिह्वा तद्० (स्त्री०) रसना, जीभा, जीभ, रसनेन्द्रिय।—मूलीय तद्० (वि०) जो जिह्वा के मूल से सम्बन्ध युक्त हो।—स्वाद (पु०) [जिह्वा+आस्वाद] चाटना, लेहन करना।—प्र (पु०) मुखाग्र, कण्ठस्थ, बरज़बानी।

जी दे० (पु०) प्राण, मन, दिल, हृदय, चित्त, साहस, दम, संकल्प, इच्छा, विचार, चाह, प्रचलित बोल चाल की भाषा में प्रतिष्ठावादी शब्द, सम्मान सूचक शब्द।—उठाना (वा०) उदासीनता, मन खींचना, मित्रता में बाधा।—बुरा करना (वा०) जी मिचलाना, उबकाई आना, अप्रीति करना, उदासीनता दिखलाना।—बढ़ाना (वा०) उत्साहित होना, मन को उन्नत करना, बड़े बड़े कामों को करने की अभिलाषा होना, किसी बड़े काम को करने की प्रबल इच्छा।—बिगड़ना (वा०) मन में भेद होना, अचेत होना, मूर्च्छा आना।—भर जाना (वा०) सन्तोष होना, तृप्त होना, सन्देह रहित होना, संशय दूर करना, अघाना, अघा जाना।—आजाना (वा०) किसी वस्तु की चाह होना, किसी वस्तु का पसन्द हो जाना।—भर आना (वा०) दया आना, दया युक्त होना, दया हर्ष अथवा शोक से गला रुक जाना। किसी के दुःख से दुःखी होना।—बहलाना (वा०) मन बहलाना, मनो रञ्जन करना, मनोविनोद करना।—पाना (वा०) किसी के स्वभाव से परिचित होना, किसी के

पहचानना।—पानी करना (वा०) लज्जित करना, दुःखित करना, दुःख देना, चिढ़ाना, खिझाना।—पर खेलना (वा०) किसी उद्देश्य से अपने को सङ्कट में डालना, अपने को सङ्कट में डाल कर भी किसी काम को करना।—पिघलना (वा०) दया आना, किसी के दुःख से दुःखित होना, मोह आना।—पकड़ा जाना (वा०) शोक ग्रस्त होना, शोच आना, उदासीन होना।—फटना (वा०) प्रेम टूटना।—फिर जाना (वा०) सन्तुष्ट होना, तृप्त होना, अघाना, अनिच्छा होना।—जलना (वा०) मन का दुःखित होना, पीड़ा, वेदना, व्यथा।—जलाना (वा०) सताना, दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना, दूसरों के कार्य के लिये अपने को जलाना, स्वयं कष्ट उठा कर भी दूसरों को सुखी करना, *निष्काम परोपकार करना।* —चाहना (वा०) किसी वस्तु की इच्छा।—चुराना या छिपाना (वा०) आलस करना, शक्ति के अनुसार काम न करना।—चलना (वा०) इन्द्रियों के विषयों की ओर मन का जाना। चाह, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ।—चलाना (वा०) शक्ति प्रदर्शन करना, सामर्थ्य दिखाना, मन चलाना।—दान करना (वा०) अपराधी को क्षमा करना।—धड़कना (वा०) शङ्कित होना, घबड़ाना।—डूब जाना (वा०) शोकित होना, मूर्च्छित होना।—रखना (वा०) प्रसन्न करना, अन्य के इच्छानुसार काम करना, इच्छापूर्ति करना, मनोरथ सिद्ध करना, बात रख लेना।—से उतर जाना (वा०) अप्रिय हो जाना, अनीप्सित होना, चाह नहीं रहना। —से मारना (वा०) वध करना, जान से मारना, मार डालना।—करना (वा०) चाहना, इच्छा करना, अभिलाष करना।—खोल कर करना (वा०) उत्साह से करना, प्रसन्नता से करना, किसी काम को सामर्थ्य भर करना। —खोलकर कहना (वा०) स्पष्ट कहना, साफ़ साफ़ कहना, निर्भय कहना, उत्साह से कहना। —पर आना (वा०) कष्ट में पड़ना, आफ़त में फँसना, आक्रमणपतित होना, किसी से लाचार हो जाना।—घट जाना (वा०) अनुत्साहित होना, हताश होना।—लगना (वा०) प्रीति करना, प्रेम होना।—लगाना (वा०) प्रेम लगाना, प्रणय उत्पन्न करना।—लेना (वा०) मार डालना।—मारना (वा०) निराश करना, मन तोड़ना।—मिलाना (वा०) मित्रता करना।—में आना (वा०) स्मरण आना। —में जल जाना (वा०) ईर्षा से दुःखित होना, कुढ़ना।—में जी आना (वा०) आपत्ति से छुटकारा पाना, दुःख के अनन्तर सुखी होना। भय का कारण दूर होने से निर्भय होना। —में घर करना (वा०) हृदय को अपने अधीन करना, अपना प्रेम दूसरे के हृदय में स्थापित करना।—निकलना (वा०) मरना, मर जाना, बेकल होना, *भयभीत होना, घबड़ाना।—हारना* (वा०) अधीन हो जाना, व्याकुल होना, निराश हो जाना, घबड़ा कर काम छोड़ना, अनुत्साही हो जाना।—हट जाना (वा०) मन हट जाना, प्रेम टूट जाना, विरोध हो जाना, उदासीन हो जाना।

जीअन दे० (पु०) जीवन।

जीका तद्० (स्त्री०) जीविका, वृत्ति, सन्धान।

जीङ्गुराना दे० (क्रि०) सिकोड़ना, समेटना, संकुचित करना।

जीजा (पु०) बड़ी बहिन का पति।

जीजी (स्त्री०) बड़ी बहिन।

जीत दे० (स्त्री०) जय, विजय, शत्रुपराजय, शत्रुपराभव।

जीतना दे० (क्रि०) जय करना, अपने अधीन करना, वश करना, शत्रु को हराना।

जीतब दे० (पु०) जीवन, जीना, ज़िन्दगी, स्थिति काल।

जीतवना तद्० (पु०) जयी, विजयी, जयमान, जीतवैया।

जीतवैया दे० (पु०) जेता, विजयी।

जीता दे० (वि०) प्राणधारी, चेतन, जीता हुआ।

जीति (क्रि०) जीतकर, जय प्राप्त करके।

जीतिया दे० (स्त्री०) *व्रत विशेष,* जीवत्पुत्रिका व्रत, आश्विन शुक्ला अष्टमी का महालक्ष्मी का व्रत, यह व्रत प्रायः स्त्रियाँ सन्तान जीवित रहने के हेतु किया करती हैं।

जीरू दे० (पु०) अपी, दिमपी, योद्धा, लड़ाका, खितवैया।
जीते जी दे० (वा०) जब तक जीता है, जीते रहने तक।
जीन दे० (पु०) पायजामा, काठी, घोड़े की पीठ पर कसने की वस्तु, खोगीर।—पोश (पु०) जीन के ऊपर का कपड़ा।—सवारी (स्त्री०) घोड़े की पीठ पर ज़ीन रख कर सवार होने की क्रिया।
जीना दे० (क्रि०) जीता रहना, जीवित रहना।
जीभ दे० (स्त्री०) जिह्वा, रसना, रसनेन्द्रिय।—चाटना (वा०) लालायित होना, उत्सुक होना, किसी के लिये अत्यन्त लालायित होना—निकालना (वा०) थक जाना, श्रान्त होना, थकने से अचेत होना।—पकड़ना (वा०) बोलने न देना, बोली बन्द करना, बात काटना, वाक्यों का दोष दिखाना।—बढ़ाना (वा०) चटोर होना, हानि लाभ का ध्यान न करके खाते जाना, निन्दा करना, बकबक करना।
जीभा (पु०) जीभ के समान कोई चीज़, जानवरों की बीमारी विशेष। [घडी, मुँहबन्द।
जीभारा दे० (वि०) चटोर, लोभी, लुब्ध, बकवादी,
जीभी दे० (स्त्री०) जीभ का मैल साफ़ करने की वस्तु।
जीमना दे० (क्रि०) भोजन करना, खाना।
जीमार दे० (गु०) घातक, नृशंस, मारने वाला।
जीमूत तद्० (पु०) मेघ, बादल, घन, घटा, इन्द्र, पर्वत, मोथा, मुस्ता, सूर्य, पोषण कर्त्ता, आजीविका दाता। विराट की सभा का एक पहलवान, दशार्ह के पुत्र का नाम, शाल्मली द्वीप के एक वर्ष का नाम।—वाहन (पु०) (१) प्रसिद्ध स्मार्त पण्डित, ये ग्यारहवीं सदी के प्रथम भाग में उत्पन्न हुए थे, इन्होंने मनुस्मृति का भाष्य बनाया है। (२) शालिवाहन राजा का पुत्र। (३) इन्द्र। (४) नागानन्द नाटक का प्रसिद्ध नायक।
जीयत दे० (गु०) जीवित, जीवते हुए, इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया गया है। [मसाला।
जीरक तत्० (पु०) जीरा, वणिक् द्रव्य विशेष,
जीरा तत्० (पु०) जीरा, जीरक, स्वनाम प्रसिद्ध मसाला।
जीर्ण तत्० (वि०) पुराना, वृद्ध, वृद्ध, जरा विशिष्ट, परिपक्व, जर्जरीभूत, पक्व विशिष्ट।—ता (स्त्री०) अशक्तता, दुर्बलता, दौर्बल्य, निर्बलता।—वस्त्र (पु०) फटा पुराना वस्त्र, सड़ा गला कपड़ा।
जीर्णि तत्० (स्त्री०) जीर्णता, वृद्धावस्था, परिपाक, पचाव, जठरपाक।
जीर्णोद्धार तद्० (पु०) पुरानी वस्तुओं की मरम्मत, जीर्ण का उद्धार, पुरानी वस्तुओं को पुनः दृढ़ीकरण, पुनः संस्कार, मरम्मत।
जील दे० (स्त्री०) धीमा स्वर, मध्यम स्वर, तानपूरा या सारङ्गी आदि का तार।
जीव तत्० (पु०) प्राण, आत्मा, जीव, जिया, जी, प्राणधारी, चेतन, जानदार, जन्तु, प्राणी, बृहस्पति, देवगुरु, विष्णु, अश्लेषा नक्षत्र, वकायन का पेड़,—दान (पु०) अभयदान, प्राणदान।—धारी (गु०) प्राणी चेतन। [सूदख़ोर, सँपेरा।
जीवक तत्० (पु०) जीने वाला, चपणक, सेवक,
जीवात्मा तद्० (पु०) परमात्मा, ईश्वर, अनादि पुरुष, जीवों का आश्रय, प्राणियों का आधार।
जीवगर तद्० (पु०) शूर्मा, वीर, योद्धा, निर्भय।
जीवड़ा दे० (पु०) प्राणी, जन्तु, जानवर।
जीवत् तत्० (वि०) वर्तमान, सजीवी, चेतन।—पतिका (स्त्री०) सधवा, जिसका पति जीता हो।—पितृक (गु०) जिसका पिता वर्तमान हो।
जीवन तत्० (पु०) [जीव+अनट्] जीविका, जल, मक्खन, मज्जा, वायु, पुत्र, ईश्वर, मज्जा, प्राणाधार।—चरित, चरित्र (पु०) जीवन का हाल। वह पुस्तक जिसमें किसी की ज़िन्दगी का हाल हो।—धन (पु०) जीवन का सर्वस्व, प्राणाधार, प्राणप्रिय।—भास (पु०) जीवन का भय, न जीने का डर।—मूरि (स्त्री०) सञ्जीवनी नाम की एक बूटी, प्यारी, प्राणप्रिय।—मृत (पु०) जीते जी मरा, जीता हुआ भी मृत के समान।—योनि (पु०) रस विशेष, शरीर में प्राण संचार करने वाला एक प्रकार का रस। [रहना।
जीवना तत्० (स्त्री०) मेदौषध। (क्रि०) जीना, जीता
जीवनी तत्० (स्त्री०) संजीवनी बूटी, जीवन वृत्तान्त, जीवन कथा का वृत्तान्त। [उपाय।
जीवनोपाय तत्० (पु०) उपजीविका, वृत्ति, जीने का

जीवनौषध तद्० (पु०) जिस औषध से मरे हुए भी जी जाते हैं, जीवन रक्षाकारी, जीवनोपाय, उपजीविका, रक्षावृत्ति।
जीवन्त तद्० (वि०) जीता, जीवित, सचेत, जीवयुक्त।
जीवन्ती तत्० (स्त्री०) सञ्जीवन बूटी, जीव रक्षा करने वाली महौषध।
जीवमन्दिर तद्० (पु०) शरीर, देह, काय, तन।
जीवन्मुक्त तद्० (वि०) [जीवत्+मुक्त] जीवन दशा ही में ज्ञानार्जन की सहायता से ब्रह्म साक्षात्कार, इस जन्म ही में संसार बन्धन से मुक्त महात्मा।
जीवा तद्० (स्त्री०) जीवन्ती, औषध विशेष, ज्या, धनुष की डोरी, जो एक छोर से दूसरे छोर तक बँधी रहती है, रोदा, जीविका, चालचच, भूमि, जीवन।
जीवात्मा तद्० (पु०) आत्मा, प्राण, देही, जीव।
जीवान्तक तद्० (पु०) जीवननाशक, जी मारनेवाला, बहेलिया, व्याध, घातक, क्रूर।
जीवाधार (पु०) हृदय, आत्मा का आधार।
जीविका तद्० (स्त्री०) वृत्ति, जीवनोपाय, धन्धा।
जीवित तद्० (पु०) जीवन, आयुष्य, आयु, चेतन।
जीविता तद्० (पु०) जीने वाला, सजीव, प्राणधारी।
जीवी तद्० (वि०) जीवधारी, प्राणी, सजीवी।
जीह, जीहा तद्० (स्त्री०) जीभ, जिह्वा, रसना, ज़बान।
जुआ दे० (पु०) द्यूतक्रीड़ा, बाजी लगा कर पाँसा या कौड़ी डालना, छलकर्म, कपट कर्म।—चोर (पु०) धोखेबाज़, ठग।—चोरी (स्त्री०) ठगी, धोखेबाज़ी।
जुआँ दे० (पु०) कीड़े जो सिर के बालों में रहते हैं, जूँ।
जुआँरा (पु०) ज्वारी, जुआ खेलने वाला।
जुआँरिहि (पु०) ज्वारी को, जुआ खेलने वाले को।
जुआर-भाटा तद्० (पु०) ज्वार भाटा, नदी का बढ़ना घटना, यह समुद्र के निकटस्थ नदियों में होता है।
जुआरि दे० (स्त्री०) अन्न विशेष, अगहन में होने वाला एक प्रकार का अन्न, जोन्हरी।
जुआरी दे० (पु०) जुआ खेलने वाला, द्यूतक्रीड़ा कर्त्ता, कपटी, छलकारी।
जुकाम, जुखाम दे० (पु०) सरदी की बीमारी जिसमें नाक बहती और सारा शरीर बेकाम रहता है।
जुग तद्० (पु०) युग, बारह वर्ष की अवधि सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि, ये चार युग, युगल, युग्म, जोड़ा, युक्ति।
जुगत तद्० (स्त्री०) युक्ति, चतुराई, अपने पक्ष को पुष्ट करने वाली उपपत्ति, अनुभव की हुई सर्वमान्य बातें, अनुमान, रीति। [जुगनी।
जुगनी दे० (स्त्री०) खद्योत, ज्योति, किरण, भग-
जुगनू दे० (पु०) कण्ठभूषण, आभूषण विशेष जो गले में पहना जाता है, खद्योत, पटबीजना।
जुगल तद्० (पु०) जोड़ा, युगल, दो, युग्म, युग, दुई।
जुगवत दे० (क्रि०) प्रतीक्षा करते, पालन करते, आसरा देखते, यत्न करते, परखते, निरखते, जोहते।
जुगवना दे० (क्रि०) यत्न या रक्षापूर्वक रखना।
जुगविधि तद्० (स्त्री०) दोनों प्रकार से, दोनों रीति से।
जुगवैया दे० (पु०) जुगवने वाला, रक्षक, बचाने वाला।
जुगानुजुग तद्० (वा०) युगानुयुग, कई वर्ष, बहुत वर्ष तक, बहुत दिनों तक।
जुगाना दे० (क्रि०) यत्न करना, उपाय करना, रक्षा करना, दुःख से उबारना, बचाना।
जुगालना दे० (क्रि०) पगुराना, पागुर करना, रोमन्थ करना, एक बार चबा कर खाये हुए को पुनः निकाल कर चबाना, जैसे बैल आदि करते हैं।
जुगाली दे० (स्त्री०) पागुर, रोमन्थ, चर्वित चर्वण।
जुगुति दे० (स्त्री०) युक्ति, रीति, तरकीब, चतुराई, अनुमान।
जुगुप्सक (पु०) व्यर्थ दूसरों की निन्दा करने वाला।
जुगुप्सा तद्० (स्त्री०) [गुप्+सन्+आ] निन्दा, तिरस्कार, कुत्सा, ग्लानि, घृणा।
जुगुप्सित तद्० (पु०) [गुप्+सन्+क्त] निन्दित, गर्हित, घृणित, तिरस्कृत।
जुट्ठ दे० (स्त्री०) उमङ्ग, साहस, उत्साह।
जुट्ठित दे० (वि०) जाति पतित, जाति से च्युत।
जुजु दे० (पु०) भयङ्कर, मूर्त्ति विशेष, भयङ्कर कल्पित मूर्त्ति, कल्पित भूत योनि।
जुज्म (स्त्री०) युद्ध, लड़ाई।

जुझाऊ दे० (वि०) युद्ध सम्बन्धी, युद्ध के लिये, युद्ध की सामग्री, लड़ाका शूर, वीर।—बाजा (पु०) युद्ध के लिये प्रस्तुत होने का वाद्य विशेष, रणभेरी, योद्धाओं को उत्साहित करने वाला बाजा।
जुझार दे० (पु०) लड़ाका, वीर, भट, रणबाँकुरा, शूर।
जुझावट दे० (स्त्री०) युद्ध, समर, कलह, युद्ध के लिये उमड़ाव।
जुझावना दे० (क्रि०) मरवा डालना, मरवा डालने के लिये उपदेश, असदुपदेश, प्रबल से विरोध खड़ा करके मरवा डालना, लड़ा देना।
जुट (स्त्री०) जोड़ी, गुट, समूह, थोक।
जुटना दे० (क्रि०) मिलना, जुड़ना, एकत्रित होना, इकट्ठा होना, लड़ना, लड़ने के लिये सामने आना, संयोग करना, प्रवृत्त होना।
जुटाना दे० (क्रि०) जोड़ना, एकत्रित करना, भिड़ा देना, जमाना, जमा करना, मिलाना।
जुटिया दे० (पु०) जुट जाने वाला, भिड़ने वाला, मिलने वाला, लड़ाका, लड़ने वाला।
जुठारना दे० (क्रि०) जूठा करना, उच्छिष्ट करना।
जुठारि दे० (क्रि०) जूठा करके उच्छिष्ट करके।
जुड़ना दे० (क्रि०) मिलना, मिल जाना, जुटजाना, सटना, एकत्रित होना।
जुड़वा दे० (पु०) युग्म, जोड़ा। [जोड़ने का कार्य।
जुड़वाई दे० (स्त्री०) जोड़ने की मजूरी, जोड़ने का दाम,
जुड़ाना दे० (क्रि०) विश्राम करना, थकावट उतारना, ठंढाना ठंढा होना [लड़के, यमज सन्तान।
जुड़िया जुड़िहा दे० (पु०) एक साथ उत्पन्न हो
जुताई दे० (स्त्री०) खेत जोतने का काम, चास, जोतना, खेत जोतने की मजूरी। [करवाना।
जुताना दे० (क्रि०) खेत जोतवाना खेत को जोत
जुतियाना दे० (क्रि०) जूतों से मारना, अप्रतिष्ठा करना, पनही मारना।
जुत्थ दे० (पु०) यूथ, समूह।
जुदा दे० (वि०) अलग, पृथक्, भिन्न।
जुदाई दे० (स्त्री०) विछोह, वियोग।
जुद्ध तद्० (पु०) युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई, रण।
जुधिष्ठिर तद्० (पु०) युधिष्ठिर स्वनाम प्रसिद्ध चन्द्रवंशीय राजा, यह अपनी सत्यवादिता के कारण देव चरित्र हो गये हैं। पाण्डवों में येही सब से बड़े थे। देखो युधिष्ठिर।
जुन दे० (पु०) समय, काल, अवसर, मौका।
जुन्दरी दे० (स्त्री०) जुआर, अन्न विशेष। [प्रकाश।
जुन्हाई दे० (पु०) चन्द्रमा। (स्त्री०) चाँदनी, चन्द्रिका,
जुन्हैया दे० (स्त्री०) चाँदनी, तारा, तारका, चन्द्रमा।
जुवान दे० (स्त्री०) जीभ, मुख।—नी (गु०) मौखिक, जबानी।
जुमना दे० (पु०) खेत में खाद डालने की क्रिया विशेष।
जुमला दे० (गु०) सब, सम्पूर्ण (पु०) पूर्णवाक्य।
जुरना दे० (क्रि०) एकत्र होना, मिल जाना।
जुरमाना, जुरवाना दे० (पु०) अर्थदण्ड, धनदण्ड।
जुरुआ दे० (स्त्री०) भार्या, पत्नी, स्त्री, मेहरारू, जोरू।
जुरैं दे० (क्रि०) मिलें, प्राप्त हो, लब्ध हो, मिल जाय।
जुर्म दे० (पु०) दोष, अपराध।
जुल दे० (पु०) बढ़ावा, उत्साह देना, छल, कपट।
जुलना दे० (क्रि०) भेंट करना, मिलना।
जुलाहा दे० (पु०) मुसलमान कपड़े बुनने वाला। एक कीड़ा जो पानी पर तैरता है। [धामी सवारी।
जुलूस दे० (पु०) किसी उत्साह का समारोह, धूम-
जुल्फ़ (स्त्री०) सिर के लंबे बाल।
जुल्म (पु०) अत्याचार, अन्याय।
जुल्लाब (पु०) रेचन, दस्तावर दवाई।
जुवती तद्० (स्त्री०) युवती, युवा स्त्री, जवान स्त्री।
जुवराज तद्० (पु०) युवराज, राजकुमार, राज्य का अधिकारी, राजपुत्र, उपराजा। [तरुण।
जुवा तद्० (पु०) युवा, युवावस्था प्राप्त, जवान,
जुवानी दे० (पु०) मौखिक।
जुवार दे० (पु०) अन्न विशेष, जुन्हरी।
जुवारी दे० (पु०) जुआरी, द्यूती, कपटी।
जुहाना (क्रि०) एकत्र करना।
जुहार दे० (पु०) युद्धार्थ यात्रा की विदाई, वीरों के अभिवादन की रीति, युद्ध का अभिवादन, राजपूतों के प्रणाम करने की शैली, प्रणाम, नमस्कार, दण्डवत, पालागन, यथा—

आप धापमहँ करहिं जोहारू,
यह बसन्त सब कहँ त्योहारू।

—[illegible]।

जुहारना दे० (स्त्री०) किसी दूसरे से सहायता लेना, किसी का एहसान उठाना।

जुही तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का फूलदार झाड़, जिसमें सफ़ेद सुगन्धित फूल बरसात में लगते हैं।

जुहोता तद्० (पु०) आहुति देने वाला।

जू दे० (अ०) सम्मान सूचक, माननीयों के आदर प्रदर्शन के लिये यह शब्द उनके नाम के अन्त में जोड़ा जाता है।—यथा श्रीकृष्णचन्द्र जू, श्री रामचन्द्र जू इत्यादि। तत्० (स्त्री०) सरस्वती, वायुमण्डल, बैल या घोड़े के मस्तक पर का टीका।

जूआ दे० (पु०) जुआ, द्यूत, पाशक्रीड़ा।

जूआठ दे० (पु०) जुमठ, जुआ, लकड़ी की बनी हुई एक वस्तु को कहते हैं, जो बैलों के कन्धे पर रखी जाती है, जिसमें हल बाँध कर खेत जोता जाता है।

जूआरी दे० (पु०) जुआ खेलने वाला, द्यूतकर्त्ता, जुए का खिलाड़ी, जुवारी, कपटी।

जूआार दे० (पु०) समुद्र का जल उफनाना, समुद्र का जल बढ़ना, समुद्र में उफान आना, चन्द्रमा की पूर्ण वृद्धि होने पर समुद्र में उफान आता है।

जूं दे० (स्त्री०) चिल्ला, चीलर, एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो कपड़ों के मैल से उत्पन्न होता है।

जूझ दे० (पु०) युद्ध, लड़ाई, संग्राम।—मरना (वा०) लड़ कर मारना, जान दे देना, प्राण देना।

जूझना दे० (क्रि०) लड़ना, लड़ाई करना, मरना, मरने के समान कष्ट उठाना। [वध।

जूट दे० (पु०) समूह, लट, जटा, पटसन, पटसनिया

जूठ दे० (पु०) भोजन से बचा हुआ, उच्छिष्ट।

जूठन दे० (पु०) भोजन का अवशेष, जूठा, गुरु पिता आदि मान्यों का जूठा।

जूठा दे० (पु०) खाया हुआ भोजन, मुँह से छुई हुई वस्तु, भोजन करने से बचा हुआ अन्न।

जूड़ दे० (पु०) शीतल, ठंडा।

जूड़ा दे० (स्त्री०) बँधे हुए बाल, खोपा।

जूड़ी दे० (पु०) ज्वर विशेष, शीतज्वर, कम्पज्वर।

जूता दे० (पु०) पगरखी, पनही, पैर में पहनने की चर्म पादुका, जूती।—खोर (गु०) निर्लज्ज, जूते खाने वाला।

जूती दे० (स्त्री०) सुन्दर और छोटा जूता, खूबसूरत जूता, स्त्रियों के पहनने की छोटी जूती।—पैज़ार (स्त्री०) टंटा, बखेड़ा, मारपीट, झगड़ा।

जूथ तद्० (पु०) यूथ, दल, झुण्ड, समूह, सेना।—प (पु०) यूथपति, सेनाध्यक्ष, दल का नायक, फौज का अफ़सर।

जून दे० (पु०) समय, काल, बेर, बेला, अवसर, अँगरेजी वर्ष का छठवाँ मास। [(वि०) पुराना।

जूना दे० (पु०) घास का बना रस्सी, बीड़ा, गेंडुरी।

जूप तद्० (पु०) यूप, जुआ, यज्ञस्तम्भ।

जूपी दे० (गु०) जुआरी।

जूमना (क्रि०) एकत्रित होना, जमा होना।

जूरना (क्रि०) जोड़ना, मिलाना। [खोंपा।

जूरा दे० (पु०) बालों की गाँठ, बँधे हुए बाल, जूड़ा,

जूरी दे० (स्त्री०) समूह, झुण्ड, दल, यथा—

> "बाँध तथा आनी जहँ सूरी,
> जूरी आय सब सिंहल पूरी"
>
> —पद्मावत।

जुटी, बँधे हुए नये कल्ले, एक प्रकार का पौधा, एक प्रकार के पत्र।

जूस दे० (पु०) परेह, कढ़ी, रोग के लिये पथ्य।

जूह, जूहा दे० (पु०) समूह, जूथा, यूथ, सेना, पद्मावत में इस शब्द को स्त्रीलिङ्ग माना है, यथा—

> "हरिय की जूह आय धंग लागी,
> हनुमन तबै लंगूर पसारी"।—पद्मावत।

जूही तद्० (पु०) यूथिका, पुष्प विशेष।

जृम्भण तद्० (पु०) [जृम्भ + अनट्] जँभाई, अङ्ग तोड़ना, मरोड़ना।

जृम्भा, जृम्भिका } तद्० (स्त्री०) मुखविकाश, जँभाई, जृम्भण।

जे दे० (सर्व०) जो, जो लोग, सब।

जेई दे० जो कोई, भोजन करके, खाकर।

जेऊ दे० जो कोई भी, अनिर्द्धारित मनुष्य।

जेट दे० (पु०) राशि, ढेर।

जेठ तद्० (पु०) ज्येष्ठ, बड़ा, अग्रज, पती का बड़ा भाई, ज्येष्ठ महीना, जेठ मास।

जेठरा तद्० (पु०) ज्येष्ठ, बड़ा, पहलौंठा, प्रथम उत्पन्न पुत्र, ज्येष्ठ, अग्रज।

जेठा तद्० (पु०) बड़ा, जेठ, ज्येष्ठ, पहलौठा, प्रथम उत्पन्न। [की स्त्री।
जेठानी तद्० (स्त्री०) जेठ की स्त्री, पति के बड़े भाई
जेठी तद्० (स्त्री०) बड़ी, श्रेष्ठ, प्रधानता।—मधु (पु०) औषधि विशेष, एक प्रकार का पौधा, मुलहठी।
जेठौत तद्० (पु०) ज्येष्ठोत्पन्न, जेठ का पुत्र, पति के बड़े भाई का पुत्र।
जेता दे० (वि०) जितना, परिमाण और संख्यार्थवाची, तद्० (पु०) जीतने वाला, विजयी।
जेती (वि०) जितना। [खाते, भोजन करते।
जेते (सर्व०) जितने, जोतो, जेवइ। (क्रि० वि०)
जेब दे० (पु०) खलीता, पाकेट, थैली, कपड़े में लगी हुई थैली।—कट या कतरा (गु०) जेब काटने वाला, चोर, उचक्का, गिरहकट।—खर्च (पु०) ऊपरी या जिस का खर्च। [कमाने का साधन।
जेमन तद्० (पु०) भोजन करना, खाना, जेवना, दही
जेया दे० (वि०) जीत जाने योग्य, जीने के योग्य।
जेर दे० (पु०) गर्भ बन्धन, जरायु, खेदी, झिल्ली।—बंद (पु०) घोड़े की मोहरी में का कपड़ा।—वार (गु०) पतिमस्त, आपद्ग्रस्त।
जेल दे० (पु०) कारागार, बड़ा घर, हवालात, बंधुओं के रहने का घर, बंधुओं की श्रेणी, पंक्ति।—खाना (पु०) कारागार, बधनालय, बन्दीगृह।
जेवड़ा दे० (पु०) रस्सा, डोर।
जेवड़िया जेवड़ी दे० (स्त्री०) रस्सी, डोरी, छोटा रस्सा।
जेवना तद्० (क्रि०) खाना, भोजन करना।
जेवनार तद्० (पु०) पंगत का भोजन, दावत, भोज।
जेवरी दे० (स्त्री०) रस्सी, डोरी, रसरी।
जेष्ठ (पु०) जेठ का महीना।
जेष्ठा (स्त्री०) ज्येष्ठा नक्षत्र विशेष। [एक घड़े।
जेहड़ दे० (स्त्री०) तले ऊपर रखे पानी से भरे घड़े
जेहन (पु०) धारणाशक्ति, बुद्धि।
जेहर दे० (पु०) मटकी, मिट्टी का पात्र, अलङ्कार विशेष, स्त्रियों के एक गहने का नाम।
जेहल (पु०) जेल, कारागार।—खाना (पु०) जेलखाना।
जेहि दे० (सर्व०) जिसको, जिसने, जिसके।
जै दे० (वि०) जितना, संख्या और परिमाणार्थ वाची।
जै दे० (स्त्री०) जय, जीत, विजय।—जैकार करना (धा०) जय शब्द का उच्चारण पूर्वक आशीर्वाद देना, अभ्युदय चाहना, मङ्गल मनाना।
जैगीषव्य तद्० (पु०) ऋषि विशेष, यह प्रसिद्ध ऋषि असित देवल के गुरु थे। पहिले असित देवल नामक एक ऋषि गृहस्थ के धर्मों का पालन करते हुए आदित्य तीर्थ पर वास करते थे। कुछ दिनों बाद जैगीषव्य मुनि भी वहाँ आये और उन्होंने योगाभ्यास के द्वारा सिद्धि प्राप्त की। महर्षि देवल जैगीषव्य की योगसिद्धि देख उनके शिष्य हो गये।
जैत दे० (पु०) वृक्ष विशेष, रागिनी विशेष।
जैतून (पु०) वृक्ष विशेष।
जैत्र (गु०) पारा। (वि०) विजयी।
जैन तद्० (पु०) जिनके धर्म को मानने वाला, जिनके बताये धर्म के अनुसार चलने वाला, जिन धर्मी।
जैनी तद्० (वि०) जैन मत वाला, श्रावक, सरावगी, जिनोपासक। [माला, जीत की माला।
जैमाल या जैमाला तद्० (स्त्री०) जयमाला, स्वयम्बर
जैमिनि तद्० (पु०) मुनि विशेष, प्रसिद्ध हिन्दू दर्शन प्रणेता, इनके बनाये दर्शन का नाम पूर्व मीमाँसा है। इस दर्शन को जैमिनि दर्शन भी कहते हैं। षड्दर्शनों के अन्तर्गत मीमाँसा दर्शन भी है। श्रुति और स्मृति का जहाँ विरोध है, उनका विचार इस दर्शन में किया गया है। यह मंत्र रूप ही देवता मानते हैं। इनके मत से सृष्टि अनादि है, ईश्वर सत्ता के अस्तित्व आदि के ऊपर इसमें कुछ भी विचार नहीं किया गया है। यह कृष्णद्वैपायन व्यास के शिष्य थे। जैमिनि ने सामवेद और महाभारत इन्हीं से पढ़े थे। मीमाँसा दर्शन के अतिरिक्त एक संहिता भी इन्होंने बनाई है, जिसका नाम जैमिनी भारत है। सुमन्तु और सुत्वान नाम के इनके दो पुत्र थे। इनके दोनों पुत्र अनुभवी विद्वान् थे। इनके पुत्रों ने भी वेद की संहिताएँ बनाई हैं। [के पिता।
जैयट तद्० (पु०) महाभाष्य पर टीका करने वाले कैयट
जैवातृक (पु०) चन्द्रमा, कपूर। (गु०) दीर्घजीवी।
जैसा दे० (वि०) यथा, जिस प्रकार, उपमानवाची।
जैसी (वि०) " जैसा " का स्त्रीलिङ्ग।

जैसे (क्रि॰ वि॰) यथा, जिस प्रकार से; जिस ढंग से।
जैहैं दे॰ (क्रि॰) आयँगे, गमन करेंगे।
जों दे॰ (सर्व॰) कोई, कौन, यदि, सम्बन्धार्थक।
जोंई (सर्व॰) जो, जो कोई (क्रि॰) देखी, देखकर।
जोंक दे॰ (पु॰) जलौका, रक्तपान करने वाला एक जलजन्तु।
जोंकर दे॰ (अ॰) जिस प्रकार, जैसा, यादृश।
जोंधरी (स्त्री॰) छोटी मकाई।
जोधैया (स्त्री॰) चाँदनी, जुन्हइया।
जोंहीं दे॰ (अ॰) जिस समय में, जिस काल में, जभी।
जोख दे॰ (स्त्री॰) तौल, माप, नाप, परिमाण, वज़न।
जोखना दे॰ (क्रि॰) तौलना, तौल करना, वज़न करना, नापना, मापना।
जोखा (पु॰) लेखा, हिसाब।
जोखिम दे॰ (स्त्री॰) दायित्व, हानि की आशङ्का, विपत्ति लाने वाली वस्तु, जैसे रुपये, जेवर, सोना, चाँदी आदि।—उठाना (वा॰) दायित्व लेना, रक्षा का भार ग्रहण करना, साहस, किसी भयङ्कर काम करने को उत्साहित होना।
जोखों दे॰ (स्त्री॰) जोखिम, घाटा, बीमा।
जोग तद्॰ (पु॰) योग, चित्त की वृत्तियों को बाहरी वस्तुओं से हटाना, चित्त को अन्तर्मुख करना, ज्ञान प्राप्त करने का साधन, भगवान् के उचित भक्त बनने का उपाय, मेल, मिलाप, अच्छा समूह। ग्रहों का मेल, तप। (पु॰) योग्य, लायक—माया (स्त्री॰) भगवान् की एक शक्ति।
जोगड़ा दे॰ (पु॰) पाखण्डी, घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध।
जोगवत दे॰ (क्रि॰) परीक्षा करते, रखते, रक्षा करते।
जोगभ्यास या जोगाभ्यास तद्॰ (पु॰) योगाभ्यास, योगसाधन, योग की क्रियाओं का साधन करना।
जोगी तद्॰ (पु॰) योगी, जोगाभ्यासी, महात्मा।
जोगिनी तद्॰ (स्त्री॰) योगिनी, देवी की सहचरी योगियों की स्त्री (देखो योगिनी)।
जोगिया दे॰ (पु॰) जोगी या सन्यासियों का रंग, जोगिया रंग, गैरिक, एक रागिनी विशेष।
जोगी (पु॰) योगी, योगाभ्यासी।—श्वर (पु॰) सिद्ध, तपस्वी।
जोगीड़ा दे॰ (पु॰) एक प्रकार की तुकबन्दी।
जोगेश्वर तद्॰ (पु॰) योगियों के उपास्य देव, भगवान् नारायण, श्रीकृष्ण, शिव। [श्रेष्ठ।
जोग्य तद्॰ (वि॰) योग्य, अच्छा, उत्तम, समर्थ,
जोजन तद्॰ (पु॰) योजन, चार कोस का माप विशेष।
जोट दे॰ (पु॰) जोड़ा, साथी, सङ्गी सहचर।
जोटा दे॰ (पु॰) बराबरी का, तुल्य, समान साथी, सहचर, जोड़ी, दोनों। [मिलान।
जोड़ दे॰ (पु॰) मेल, ग्रन्थि, जोड़ाई, गाँठ, टोटल,
जोड़ती दे॰ (स्त्री॰) लेखा, गणित, हिसाब, गिनती, संख्या।
जोड़न दे॰ (पु॰) जामन, सोहागा।
जोड़ना दे॰ (क्रि॰) मिलाना, मिलान करना, एकत्रित करना, गाँठना, गाँठ लगाना, पैवन्द लगाना। गणन करना, सङ्कलन करना, धन बटोरना, लगाना, सटाना, चिपकाना, जोड़ देना।
जोड़वाँ (पु॰) यमज, दो बालक एक ही साथ उत्पन्न हुए हों।
जोड़ा दे॰ (पु॰) युग्म, युगल, स्त्री पुरुष, जूता, एक बार पहनने योग्य कपड़े। [मजूरी।
जोड़ाई दे॰ (स्त्री॰) जोड़ाई का काम, जोड़ने की
जोड़ी दे॰ (स्त्री॰) दो, युगल।
जोड़ू (स्त्री॰) जोरू, स्त्री औरत।
जोत तद्॰ (पु॰) रस्सी या चमड़े का तस्मा जिससे बैल या घोड़ा, गाड़ी या हल में जोता जाता है। तराजू के पलड़ों की रस्सी। वह ज़मीन जो किसी आसामी को जोतने बोने को मिली हो। (स्त्री॰) ज्योति, प्रकाश, किरण।
जोतना दे॰ (क्रि॰) हल से जोतना, चासना, चास करना, हल चलाना, हल से खेत को बोने योग्य बनाना। गाड़ी, हल आदि चलाने को उसमें घोड़े या बैलों को लगाना। [शील।
जोतमान तद्॰ (पु॰) ज्योतिष्मान्, चमकदार, प्रकाश-
जोतार दे॰ (पु॰) हरवाहा, हलवाह, जोतने वाला, चासा।
जोति तद्॰ (स्त्री॰) घर घी का दीपक जिसमें खड़ी बत्ती जिसे फूलबत्ती भी कहते हैं, जलाई जाती है और जो किसी देवी या देवता के नाम पर जलाया

जाता है।—स्वरूप (पु०) भगवान्, ब्रह्म, योगियों के ध्येय आत्मा, आत्मा का प्रकाश, जिसका ब्रह्म योगी ध्यान करते हैं।
जोतिष तद्० (पु०) ग्रहनक्षत्र आदि के विषय की बातें बताने वाला शास्त्र, काल ज्ञान शास्त्र, इसके प्रधानतः फलित और गणित ये दो भेद हैं, नजूम।
जोतिषी तद्० (पु०) दैवज्ञ, ज्योतिषी, शास्त्रवेत्ता, गणितज्ञ, ज्योतिष विद्या जानने वाला।
जोती दे० (स्त्री०) तराजू के पलड़े बाँधने की रस्सी, जुआठ, हल जोतने वाली रस्सी, जोत।
जोत्स्ना तद्० (स्त्री०) ज्योत्स्ना, चन्द्रिकायुक्त रात्रि, प्रकाशयुक्त रात, उजेली रात, चन्द्रिका, चाँदनी, प्रकाश। [उजेली रात।
जोत्स्नी तद्० (स्त्री०) रात्रि, रात, शुक्लपक्ष की रात,
जोधन तद्० (पु०) आयोधन, लड़ाई, संग्राम, समर।
जोधा तद्० (पु०) योधा, वीर, लड़ाका, लड़ने वाला, भट, सेना का सिपाही।
जोनराज तद्० (पु०) काश्मीर के विख्यात ऐतिहासिक पण्डित, काश्मीर के एक मात्र इतिहास राजतरङ्गिणी के ये कर्ता हैं। कल्हण राजतरङ्गिणी को पूरी नहीं कर सके थे, उनके बनाने का शेषभाग पण्डित जोनराज ने पूरा किया, कल्हण ने ११४८ ई० में राजतरङ्गिणी में लिखा है कि, पण्डित जोनराज महाशय, ३५ संवत् में राजतरङ्गिणी बनाकर का शिवसायुज्य प्राप्त हुए। इसी आधार पर यह बात निश्चित हुई है कि जोनराज का समय १४ वीं सदी है। इनकी बनाई राजतरङ्गिणी दूसरी राजतरङ्गिणी के नाम से प्रसिद्ध है। भारविकृत ग्रन्थ की टीका भी इन्होंने बनाई थी। इनके शिष्य का नाम श्रीवर पण्डित था, इन्होंने १४ वीं और १५ वीं सदी के मध्य में तीसरी राजतरङ्गिणी बनाई है।
जोनि या जोनी तद्० (स्त्री०) योनि, स्त्री का विशेष चिन्ह, भग, उत्पत्ति स्थान, उद्गम स्थान, आकर, खान, कारण, हेतु, जाति, शरीर।
जोन्ह दे० (पु०) चन्द्रमा, चाँदनी।
जोन्हरी (स्त्री०) ज्वार।
जोन्हाई (स्त्री०) चन्द्रमा।
जोपै (अ०) यदि, यद्यपि।
जोबन तद्० (पु०) यौवन, युवावस्था, तरुणाई, जवानी, स्तन, पयोधर, छाती, चूँची।
जोबनवती तद्० (स्त्री०) यौवनवती, युवती, तरुणी, युवावस्थावाली स्त्री युवा स्त्री, जवान स्त्री।
जोबना, जोबनवा तद्० (पु०) यौवन, तारुण्य। [कुटिनिनी।
जोय, जोरू तद्० (स्त्री०) जाया, भार्या, पत्नी, स्त्री,
जोर (पु०) ताकत, बल, जोड़ा, संगी।
ज़ोरशोर (पु०) प्रबलता, अत्यधिक।
ज़ोरदार (वि०) बलवान, ताकतवर।
जोराजोरी (स्त्री०) बलपूर्वक।
जोरावर (पु०) बलवान्।
जोरू (स्त्री०) स्त्री।
जोरी दे० (स्त्री०) जोड़ा, जोड़ी। [ठगी।
जोशा दे० (पु०) कपट, छल, धोखा, धूर्तता, ठगाई,
जोवत दे० (क्रि०) अभिलाष करते, चाहते, देखते।
जोवना दे० (क्रि०) देखना, ताकना, खोजना, ढूँढ़ना, अनुसन्धान करना, चितवना। [भार्या, कामिनी।
जोषित् तद्० (स्त्री०) योषित्, सीमन्तिनी, स्त्री,
जोषी, जोसी दे० (पु०) ज्योतिषी, ज्योति शास्त्र वेत्ता, दैवज्ञ।
जोहना दे० (क्रि०) बाट देखना, प्रतीक्षा करना, ताकना, खोजना, ढूँढ़ना, पता लगाना, मालूम करना, अनुसन्धान करना।
जोहार (पु०) प्रणाम, रामराम।
जोही दे० (वि०) खोजी, ढूँढ़वैया, अनुसन्धानी।
जोहारना (क्रि०) प्रणाम करना।
जौं दे० (पु०) जिस प्रकार से, जो, यदि, जब।—लग (अ०) जबतक, जिस समय तक, जितनी देर तक।—लौं (अ०) जबतक। [कुवाच्य कहना।
जौंकना दे० (क्रि०) गाली देना, बकना, बड़बड़ाना,
जौ तद्० (पु०) यव, अन्नविशेष, स्वनामप्रसिद्ध अन्न।
जौन दे० (सर्व०) जो, जिस।
जौतुक (पु०) दहेज, दायजा। [दावत का भोज।
जौनार दे० (पु०) जेवनार, भोजन, भोज खाना,
जौपै (अ०) अगर, यदि।
जौरा (पु०) वह अन्न जो गृहस्थ लोग नाई बारी को काम की मजदूरी में देते हैं।

औजार्द (स्त्री०) अँगरेजी वर्ष के सातवें मास का नाम।
औहर (पु०) रत्न, सत्व, सारांश, उत्तमता, खूबी, शस्त्रों का भेद, राजपूतों का जुहारव्रत।
औहरी दे० (पु०) रत्नविक्रेता, रत्नों के परखने वाला, गुणग्राहक।
ज्ञ तद्० (पु०) बुध, पण्डित, ब्रह्मा, महीसुत, मङ्गल, (वि०) अभिज्ञ, विदग्ध, चतुर।
ज्ञात तद्० (वि०) [ज्ञ+क्त] कृतज्ञान, जाना हुआ, विदित, प्रतीत, अवगत।—सार (अ०) विदित, मालूम।—सिद्धान्त (पु०) शास्त्रज्ञ, शास्त्र का यथार्थ मर्म जानने वाला।—यौवना (स्त्री०) नायिका विशेष जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो।
ज्ञातव्य तद्० (स्त्री०) [ज्ञा+तव्य] ज्ञान का विषय, जानने योग्य, अवगन्तव्य योग्य, ज्ञेय।
ज्ञाता तद्० (पु०) [ज्ञा+तृच्] ज्ञानशील, बोद्धा, ज्ञान प्राप्त, जानने वाला, जानकार।
ज्ञाति तद्० (पु०) सपिण्ड, भाई बन्धु, कुटुम्ब, परिवार, बान्धव।
ज्ञान तद्० (पु०) [ज्ञा+अनट्] बोध, चैतन्य, चेतनता बुद्धि, अनुमान, अवगम, आत्मा का एक गुण विशेष, समझ।—काण्ड (पु०) वेद का एक काण्ड जिसमें ज्ञान प्राप्त करने की रीति है, जिसमें उपनिषद् आदि हैं।—गम्य (वि०) ज्ञेय, ज्ञातव्य, ज्ञान की सहायता से जानने योग्य।—द (वि०) ज्ञानदाता, ज्ञान देने वाला, हिताहित समझाने वाला।—दीप (पु०) ज्ञान रूप दीप, ज्ञान का प्रकाश, जिससे अज्ञान दूर होता है।—पूर्वक (वि०) सज्ञान, ज्ञान के सहित, जानकर, समझकर।—वान् (पु०) पण्डित, प्राज्ञ, विचक्षण।—वापी (स्त्री०) काशी के एक तीर्थ का नाम. कहते हैं उद्दण्ड प्रकृति धर्मद्रोही, मुहम्मद ग़ोरी जिस समय काशी के मन्दिरों को तोड़ फोड़ कर भारत का धन लूट रहा था, उस समय काशी के प्रधान देवता विश्वनाथजी मन्दिर छोड़ एक कूप में कूद गये। विश्वनाथ के मन्दिर के स्थान ही पर मसजिद बनी हुई पूर्व घटना का स्मारक हो रही है।—विहीन (वि०) ज्ञानहीन, ज्ञानरहित, मूढ़, मूर्ख, अज्ञान।—मय (वि०) ज्ञानविशिष्ट, ज्ञानमय, ज्ञानयुक्त, ज्ञानी, ज्ञानवान्।—मार्ग (पु०) निवृत्तिमार्ग, उपनिषदों का मनन, ज्ञानाभ्यास।—मूल (पु०) सत्यज्ञान, ज्ञान जनित, ज्ञानोत्पन्न।
ज्ञानी तद्० (वि०) [ज्ञान+इन्] बोद्ध, ज्ञानयुक्त, बुद्धिमान्, प्राज्ञ। (पु०) दैवज्ञ, महाप्राज्ञ, मद्यवेत्ता।
ज्ञानेन्द्रिय तद्० (स्त्री०) [ज्ञान+इन्द्रिय] जिन इन्द्रियों से ज्ञान होता है, बुद्धि, मन, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, त्वक्। [जनाना।
ज्ञापन तद्० (पु०) [ज्ञा+णिच्+ल्युट्] बोधन,
ज्ञापित तद्० (पु०) [ज्ञा+णिच्+क्त] विज्ञापित, जनाया, विदित किया, मालूम कराया।
ज्ञेय तद्० (वि०) [ज्ञा+य] बोधगम्य, जानने योग्य, जानने के उपयोगी।
ज्या तद्० (स्त्री०) माता, मा, जननी, पृथ्वी, रोदा, धनुष का चिल्ला।—घोष (पु०) धनुष का टङ्कार, धनुष का शब्द।
ज्यादती (स्त्री०) अधिकता, बहुतायत।
ज्यादा (पु०) बहुत, अधिक। [रक्षण करना।
ज्यानो दे० (क्रि०) जिलाना, पालना, पोसना,
ज्यामित (स्त्री०) क्षेत्रगणित, रेखागणित।
ज्यायान तद्० (वि०) [वृद्ध+ईयस्] अग्रज, बड़ा, जेठा, ज्येष्ठ, प्रधान, अतिवृद्ध, वर्षीयान्।
ज्येष्ठ तद्० (वि०) [वृद्ध+इष्ठ] श्रेष्ठ, अतिवृद्ध। (पु०) जेठमास, इस महीने की पूर्णिमा को ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूर्ण चन्द्रमा इसी नक्षत्र के पास रहता है।—तात (पु०) पिता का बड़ा भाई।
ज्येष्ठा तद्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, अठारहवाँ नक्षत्र।
ज्येष्ठाश्रम तद्० (पु०) [ज्येष्ठ+आश्रम] गार्हस्थ्य, गृहस्थाश्रम दूसरा आश्रम।—ी (पु०) गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी, गृही।
ज्यों (क्रि० वि०) जिस प्रकार, जैसे। [अपरिवर्तित।
ज्यों का त्यों दे० (अ०) यथार्थ, ठीक, वैसा ही,
ज्योतिः तद्० (स्त्री०) दृष्टि, नक्षत्र, प्रकाश, दीप्ति, उजाला, चमक, विष्णु, अग्नि, सूर्य, मेधी।—शास्त्र (पु०) ग्रह, राशि, नक्षत्र आदि की विद्या, खगोल विद्या, ज्योतिष।
ज्योतिरिङ्गण तद्० (पु०) जुगनू, खद्योत।

ज्योतिर्गण तत्० (पु०) [ज्योतिर्+गण] आकाश-स्थित पदार्थ ।

ज्योतिर्विद् तत्० (पु०) [ज्योतिर्+विद्+क्विप्] गणक, दैवज्ञ, ज्योति शास्त्रवेत्ता ।

ज्योतिर्विद्या तत्० (स्त्री०) [ज्योतिर्+विद्या] ज्योतिः शास्त्र, खगोल ।

ज्योतिर्वेत्ता तत्० (पु०) [ज्योतिर्+वेत्ता] गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषी । [बारह राशियों का चक्र ।

ज्योतिश्चक्र तत्० (पु०) राशिचक्र, राशि समूह,

ज्योतिष तत्० (पु०) वेदाङ्ग, शास्त्र विशेष, ग्रहण आदि गणन करने का शास्त्र ग्रहादि विषयक शास्त्र ।

ज्योतिषी तत्० (पु०) गणक, दैवज्ञ, जोसी ।

ज्योतिष्टोम तत्० (पु०) [ज्योतिस्+स्तोम] यज्ञ विशेष, स्वर्ग फलक यज्ञ । [रात्रि, रजनी, प्रकाशयुक्त रात्रि ।

ज्योतिष्मती तत्० (स्त्री०) मालकगनी, लता विशेष,

ज्योतिष्मान तत्० (गु०) ज्योतियुक्त, तेजस्वी, प्रतापी, प्रकाशयुक्त । [ध्रुवतारा ।

ज्योतीरथ तत्० (पु०) [ज्योति+रथ] ध्रुवतारा,

ज्योत्स्ना तत्० (स्त्री०) चन्द्रमा की ज्योति, प्रकाश, चाँदनी, चन्द्रिका कौमुदी, ज्योत्स्न युक्त रात्रि, सौंफ,सफेद फूल की तोराई —काली तत्० (स्त्री०) वरुण के पुत्र पुष्कर को पत्नी जो सोम की कन्या थी।—प्रिय तत्० (पु०) चकोर पक्षी ।—वृक्ष तत्० (पु०) दीवट, दीपाधार, दैठकी, फ़ानूस ।

ज्योंनार } ज्योनार } दे० (स्त्री०) भोज, दावत, रसोई ।

ज्वर तत्० (पु०) [ज्वर+अच्] रोग विशेष, ताप स्वनाम प्रसिद्ध रोग राक्षस विशेष, दैत्य राज बाणासुर के सेनापति का नाम इसके तीन पैर, तीन सिर, छ हाथ और नौ नेत्र थे । इसकी सृष्टि महादेवजी ने की थी, और उन्होंने बाण की सहायता के लिये इसे भेजा था। एक बार बलराम और प्रद्युम्न के साथ श्रीकृष्ण बाण की राजधानी में गये थे, बाण ने अनिरुद्ध को कैद कर लिया था, अतएव श्रीकृष्ण का वहाँ जाना आवश्यक था । बाण का सेनापति ज्वर ने वहाँ श्रीकृष्ण को पीड़ित किया। श्रीकृष्ण ने दूसरे ज्वर की सृष्टि की, उसने बाण के सेनापति को परास्त किया और उसे बाँध कर श्रीकृष्ण के हाथों समर्पित कर दिया। उसने शरण चाही, श्रीकृष्ण ने प्रसन्न होकर उसके इच्छानुसार जगत् में अन्य ज्वरों को न रहने का वर दिया। (हरिवंश)—विनाशनी (स्त्री०) ज्वर-नाशक औषध ।

ज्वरार्त्त (गु०) ज्वर से आक्रान्त, बुखार से दुःखी ।

ज्वरित (गु०) जिसे ज्वर हो ।

ज्वल (पु०) ज्वाला,लपट,अग्नि,रोशनी । [हीरा, अग्नि ।

ज्वलन तत्० (पु०) अग्निदाह, तपन, उद्दीपन, कातर

ज्वलना (पु०) प्रकाशमान । [तरुणाई ।

ज्वान (पु०) जवान, युवा ।—नी (स्त्री०) जवानी,

ज्वार दे० (पु०) जुआर, जुन्हरी, समुद्र का उफान ।

ज्वारभाटा दे० (पु०) समुद्र के पानी का चढ़ाव उतार, समुद्र के निकट वाली समस्त नदियों में यह ज्वारभाटा हुआ करता है ।

ज्वारी (वि०) जुआरी, जुआ खेलने वाला ।

ज्वाला (स्त्री०) आँच, लौ, लपट, दाह प्रकाश, ताप जन्य पीड़ा ।—मुखी (स्त्री०) पीठस्थान विशेष, महाविद्या विशेष, देश विशेष, जिस स्थान से ज्वाला निकलती हो ।

झ

झ व्यञ्जन का नवाँ वर्ण है, इसका उच्चारण तालु से होता है, अतएव इसे भी तालव्यवर्ण कहते हैं ।

झंकार तत्० (पु०) [झम्+कृ+घञ्] झन झन शब्द, झनकार । [करना ।

झँखना दे० (क्रि०) बड़बड़ाना, खीझना, अनुताप

झख तत्० (पु०) मीन, मत्स्य, मछली ।—केतु (पु०) मीन केतु, मीनध्वज, मछली के निशान वाला, कामदेव, मदन । [पेड़ ।

झंखाड़ दे० (पु०) काँटेदार घनी झाड़ी, पत्र रहित

झँगा दे० (पु०) झगा, पहिनने का एक वस्त्र ।

झँगिया दे० (स्त्री०) अँगुली।
झँगुला दे० (पु०) झगा।
झँगुलिया
झँगुली
झँगूली } दे० (स्त्री०) छोटे बालकों का झगा या कुर्ता विशेष।
झँझ दे० (पु०) झाँझ। [के शब्द।
झँझकार दे० (पु०) झ झ शब्द, झींगुर आदि कीड़ों
झँझट दे० (पु०) खटपट, प्रपञ्च, टटा, बखेड़ा।
झँझटी दे० (वि०) झगडालू। [चिड़चिड़ा।
झँझना दे० (वि०) कड़वा, चिड़चिड़ा, खीझू,
झँझनाना दे० (क्रि०) झंझन शब्द करना, झणत्कार, आभूषण आदि का शब्द। [ध्वनि, चिड़चिड़ाहट।
झँझनाहट दे० (स्त्री०) झनकार, घुँघरू शब्द, नूपुर-
झँझरी दे० (स्त्री०) जाली, झरोखा।
झंडा दे० (पु०) वह तिकोना या चौकोना वस्त्र जो किसी लंबे बाँस में टाँगा जाता है।
झंडी दे० (स्त्री०) छोटा झंडा।
झंडूला (पु०) वह बालक जिसके सिर पर गर्भ के केश हों। [खटोली।
झँपान दे० (पु०) पहाड़ पर जाने के लिये एक
झँवाना दे० (क्रि०) घट जाना मुरझाना, झुलसना, झाँवर होना, विवर्ण होना, फिट्ट पड़ना।
झ तद्० (पु०) सुरगुरु, बृहस्पति, दैत्यराज, ध्वनि, तेज पवन। [धोखा।
झई (स्त्री०) छाया, प्रतिबिम्ब, झलक, अन्धकार,
झउवा (पु०) टोकरा, खाँचा।
झक दे० (पु०) मौज, सनक, लहर।—झोरी (वा०) छीनाछीनी, झपटा झपटी, खैंचाखैंची, लूटपाट, आक्रमण।—मारना (वा०) व्यर्थ श्रम, बिना, प्रयोजन का काम करना, व्यर्थ समय गवाना।
झक झक दे० (स्त्री०) बकबक, व्यर्थ की हुज्जत।
झकना दे० (क्रि०) बकबक करना, निष्फल बोलते रहना, विलाप करना।
झकरी दे० (स्त्री०) पात्र विशेष, जिसमें दूध दुहा जाता है, दोहनी, दोहन पात्र।
झकाझक दे० (वि०) बहुत स्वच्छ, चमकता हुआ, स्वच्छ, साफ सुथरा।
झकोर दे० (पु०) झोंक, झोंका।
झकोरना दे० (क्रि०) हिलोड़ना, कँपाना।
झकोरा दे० (पु०) अन्धड़, वायु का वेग।
झकोलना दे० (क्रि०) डुलाना, हिलाना, कँपाना।
झक्क (वि०) साफ़, सुथरा, चमकीला। (स्त्री०) सनक।
झक्कड़ दे० (पु०) तेज़ आँधी, अन्धड़, बयार, गरम प्रकृति का मनुष्य, बहुत बकने वाला मनुष्य।
झक्की दे० (वि०) उन्मत्त, पागल, सनकी, बकवादी, प्रलापी, लहरी, सनकी। [कामदेव।
झख (स्त्री०) मछली, मच्छी, माही।—केतु (पु०)
झखना दे० (क्रि०) खीझना, पश्चात्ताप करना।
झगड़ना, झगरना दे० (क्रि०) लड़ना, लड़ाई करना, खटपट करना, विवाद करना, विरोध ठानना, कलह करना, भिड़ना, सामना करना।
झगड़ा, झगरा दे० (पु०) लड़ाई, दंगा, फसाद, वैर, विरोध, विक्षेप।
झगड़ाना, झगराना दे० (क्रि०) लड़ाई कराना, विरोध कराना, कलह कराना। [लड़ाकी स्त्री।
झगड़ालिन दे० (स्त्री०) झगड़ा करने वाली स्त्री,
झगड़ालू दे० (पु०) लड़ने वाला, लड़ाई करने वाला, दंगाबाज़।
झगा दे० (पु०) अंगा, जामा, कुरता विशेष।
झगुला दे० (पु०) छोटा झगा, बालक का जामा।
झगुलिया दे० (पु०) झुलवा, चोलना, बालकों का कुरता।
झज्ज दे० (पु०) लम्बी दाढ़ी, दृढ़तकूर्च।
झझक दे० (स्त्री०) ठिठक, चमक, भड़क, फूँफकाइट, अप्रिय गन्ध। [डपटना, डाँटना, दबाना।
झझकारना दे० (क्रि०) धमकाना, तिरस्कार करना,
झझला दे० (पु०) एक प्रकार की मीठाई।
झज्झर दे० (पु०) सुराही, जलपात्र विशेष, कूजा, मिट्टी का बना जल रखने का एक प्रकार का पात्र जिसमें जल ठंढा रहता है।
झज्झरी दे० (स्त्री०) जाली, जालीदार झरोखा, कटाव।
झञ्झा तद्० (स्त्री०) तेज़ वायु।—निल (पु०) [झञ्झा+अनिल] ज़ोरदार आँधी।—वात (पु०) पानी और आँधी।
झञ्झा तद्० (स्त्री०) फूटी कौड़ी।
झट तद्० (अ०) तुरन्त, शीघ्र, उसी समय।—पट (वा०) बहुत शीघ्र, अति शीघ्रता से, बहुत जल्दी।—से (वा०) तुरन्त, शीघ्र, जल्दी।

झटक दे० (पु०) लूट खसोट, लूटलाव।
झटकना दे० (क्रि०) झटका देना, धोखे से ले लेना, भुलावा देकर लेना, दुबलाना, उतरना, फीका पड़ना, सूखना।
झटका दे० (पु०) खींच खिचाव, लूट, हरण, झटके से मारने का शब्द, मदरास का तांगा (घोड़ागाड़ी) विशेष।
झटास दे० (स्त्री०) बौछार, पानी का छींटा, वायु के झोंके से पानी का इधर उधर आना, झड़ान।
झटि दे० (पु०) झाड़, वनझाड़ी, अपने से उत्पन्न कतिपय वृक्षों का समूह, झखड़, आँधी।
झटिति तत्० (अ०) द्रुत, शीघ्र, त्वरित, वेगि, तुरन्त, जल्दी। [ताबे की कल।
झड़ दे० (स्त्री०) झमड़, प्रचंड वायु, झड़ी, आँधी,
झड़न दे० (स्त्री०) पतन, गिरन, पके फल आदि का पतन, झरन, बत्ती की गुल या रेम।
झड़ना दे० (क्रि०) गिरना, टपकना, पतन होना झरना, चूना, पके फल आदि का चूना, बजना शहनाई नौबत आदि का। [लड़ाई, क्रोध, जोश, लपट।
झड़प दे० (स्त्री०) दो जीवों की आपस में मुठभेड़,
झड़पना दे० (क्रि०) लड़ना, आक्रमण करना, हमला करना, मारामारी करना, झपटना, झपट मारना।
झड़पाझड़पी दे० (स्त्री०) लड़ाई, दङ्गा, फसाद झपटा झपटी। [चिढ़ाना, खिझाना।
झड़पाना दे० (क्रि०) लड़ाना, क्रोध कराना,
झड़भरना दे० (वा०) सब का सब नष्ट होना, सभी नष्ट होना, समस्त खपना।
झड़बेर दे० (पु०) } झड़बेरी दे० (स्त्री०) } झाड़ी बेर, झरबेरी। [झड़वाना।
झड़वाना दे० (क्रि०) झड़ाना, साफ़ कराना, मैल
झड़ाक दे० (क्रि० वि०) तुरन्त, शीघ्र।
झड़ाका दे० (पु०) शीघ्रता, जल्दी। [प्रवाह।
झड़ाझड़ दे० (अ०) चटपट, झटपट, शीघ्र, क्षणिक,
झड़ाना दे० (क्रि०) साफ़ कराना झाड़ दिलवाना, झड़वाना, झाड़ फूँक कराना मन्त्र तन्त्र करवाना।
झड़ी दे० (स्त्री०) लगातार वृष्टि, बराबर पानी बरसते रहना, अविच्छिन्नवृष्टि, झाड़ी आमदनी, वार्षिक या मासिक आमद से अतिरिक्त, लाभ, ऊपरी आमद।
झड़ौता दे० (पु०) फल के समय की समाप्ति फल की समाप्ति का समय, फलझार।
झण्डा दे० (पु०) ध्वजा, पताका, कीर्ति, ध्वजा, यश पताका, राज चिन्ह विशेष, सत्कर्म सूचक चिन्ह विशेष, कठिन अथवा उपयोगी काम करने वालों का सम्मान सूचक चिन्ह, किसी उत्तम काम का स्मारक, सीमा निर्देशक।
झण्डूला दे० (वि०) बहुपत्र अधिक पत्तों से घना, बहुकेश, बहुत बाल वाला लड़का, छोटा लड़का जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों बिना मुण्डन किया हुआ लड़का।
झन तद्० (पु०) झणत्, अनुकरण शब्द, कङ्कण नूपुर आदि की ध्वनि। [सुन पड़ जाना।
झनझनी दे० (स्त्री०) सनसनी, किसी अङ्ग का
झनक तद्० (पु०) ध्वनि, विशेष, धातु निर्मित बर्तनों का शब्द। —मनक (स्त्री०) गहनों के बजने से उत्पन्न हुआ शब्द विशेष। [झणत्कार करना।
झनकना तद्० (क्रि०) झनझनाना, झनझन करना,
झनकार तद्० (पु०) झंकार, भ्रमर आदि की ध्वनि।
झनकारना तद्० (क्रि०) बजाना, शब्द करना, झनझन बजाना।
झनवाँ दे० (पु०) धान्य विशेष, एक प्रकार का धान।
झनाझन (स्त्री०) झनझनाहट।
झप दे० (अ०) झट शीघ्र, तुरन्त, त्वरित।—से शीघ्रतापूर्वक, त्वरापूर्वक, झटपट, झट से।
झपकना दे० (क्रि०) निद्रा लेना, पलक मारना, झपकी आना, झपटना, सहम जाना, लज्जित होना।
झपकाना दे० (क्रि०) पलक मारना, मटकाना, लज्जित करना, डराना।
झपकी दे० (स्त्री०) ऊँघाई, हलकी नींद, धोखा, चकमा।
झपट दे० (स्त्री०) लपक, वेग से आगे बढ़ना, लेने के लिये आक्रमण करना।—लेना (क्रि०) छीन लेना, बलात्कार से ले लेना, ज़बरदस्ती छीनना।
झपटना दे० (क्रि०) लपकना, आगे बढ़ना, बुरी इच्छा से किसी की ओर आगे बढ़ना, धर आना, धर दौड़ना छीनना।
झपट्टा दे० (पु०) धावा, आक्रमण, चढ़ाई, छीन, लूट।—मारना (क्रि०) झपटना, झपट कर छीन लेना, बलात्कार से छीनना, झपट लेना।

झपताल (पु॰) सङ्गीत कला का ताल विशेष।
झपना (क्रि॰) पलकों का मुँदना झुकना, झेंपना, लज्जित होना। [में धोना।
झपलाना दे॰ (क्रि॰) सँगालना, धोना, खूब पानी
झपाझपी दे॰ (स्त्री॰) हड़बड़ी, शीघ्रता, अतित्वरा।
झपाट दे॰ (स्त्री॰) स्फूर्ती, फुर्ती, शीघ्र, जल्दी झटपट।
झपाना दे॰ (क्रि॰) झपकि लेना, ऊँघाना, निद्रा लेना, आलस वश अपने आप निद्रा आना।
झपास दे॰ (स्त्री॰) झींसी, फूँही, छोटी छोटी बूंद, झड़ी, ठगाई, धूर्तता। (पु॰) धूर्त, धोखाबाज, ठग।
झपासिया दे॰ (पु॰) छली, कपटी, धूर्त, अधर्मी, ठग।
झपेट (स्त्री॰) चपट।
झपेटा (पु॰) चपेट, झपट, झकोरा।
झप्पान (पु॰) झंपान नामक एक प्रकार की डोली।
झबकाना दे॰ (क्रि॰) घबड़वाना, चकित करना। अचम्भित करना, आश्चर्यित करना।
झबरा या झबरीला (वि॰) बिखरे हुए बड़े बड़े घुंघराले बालों वाला।
झबा (पु॰) लटकन, फुंदना, गुच्छा।
झबिया दे॰ (पु॰) भूषण विशेष, स्त्रियों का एक गहना।
झबुआ दे॰ (वि॰) लोमश, झबरा, बहुकेश, रोंवरा, बड़े बड़े बाल वाला, जिसके बाल बड़े बड़े हों।
झब्बा दे॰ (पु॰) गुच्छा, लटकन, स्तबक, फूंदा।
झम तद्॰ (पु॰) भोक्ता, भोजन कर्ता, खादक।
झमक दे॰ (स्त्री॰) चमक दीप्ति, प्रकाश, शोभा, झलक। [दार, चिलक, दीप्तिमान्, प्रकाशशील।
झमकड़ा दे॰ (पु॰) चटक, जगमग, चमकीला, भड़क-
झमकाना दे॰ (क्रि॰) चमकाना, चिलकाना, चमचमाना, नाचना, क्रोध से इधर उधर हाथ फेंकना।
झमका दे॰ (पु॰) प्रताप, तेज, प्रभाव, शान।
झमकी दे॰ (स्त्री॰) झमक, झलक, चमक, चकचक, शोभा।
झमझम दे॰ (अ॰) लगातार, सतत, अविरत, अश्रान्त, एक के बाद एक, ध्वनि विशेष।
झमझमाना दे॰ (क्रि॰) चमचमाना, चमकाना, चिलकना। [बूँद से।
झमरझमर दे॰ (अ॰) सहसा वृष्टि आना, बूँद
झमाका दे॰ (पु॰) झड़ी, वृष्टि प्रताप। [अनवरत।
झमाझम दे॰ (अ॰) झमझम, लगातार, सतत,
झम्पा दे॰ (वि॰) झपा हुआ, ढका हुआ, आच्छादित।
झर तद्॰ (पु॰) निर्झर, झरना, पर्वत से निकला हुआ जल प्रवाह, स्रोत, सोता, झरना। (स्त्री॰) झड़ी, वर्षा, आँच, जलन। [गिरने का शब्द।
झरझर दे॰ (पु॰) झज्झर, सुराही, अश्व आदि के
झरना दे॰ (स्त्री॰) सोता, पर्वत के जल का सोता, छोटी नदी, निर्झर।
झरप (स्त्री॰) झकोर, लपट, वेग, टेक।
जरबेर (पु॰) झाड़ी के बेर, जंगली बेर।
झरहिं दे॰ (क्रि॰) झरते हैं, बहते हैं, गिरते हैं, पसीजते हैं, छनकर गिरते हैं, टपकते हैं, चूते हैं, निकलते हैं। [झर कर, चूकर, टपक कर।
झरि, झरी, झड़ा दे॰ (स्त्री॰) निरन्तर जल वृष्टि,
झरोखा दे॰ (पु॰) झंझरी, खिड़की, जालीदार खिड़की, मोखा।
झर्झरा तत्॰ (स्त्री॰) वेश्या, पतुरिया, कुलटा, वाराङ्गना, तारादेवी का नाम। [(पु॰) शिव।
झर्झरी तत्॰ (स्त्री॰) खंजरी, डफली, बाजा विशेष।
झर्ना दे॰ (पु॰) सूप विशेष, जिसमें बहुत छेद होते हैं और उससे मिले अन्न पृथक् पृथक् किये जाते हैं। (क्रि॰) झरना, गिरना, टपकना।
झल दे॰ (पु॰) ज्वाला, क्रोध, कोप, जलजलाहट, उष्णता, आँच, उग्रकामना, समूह।
झलक दे॰ (स्त्री॰) चमक, जगमग, आभा, प्रतिबिम्ब।
झलकत दे॰ (क्रि॰) चमकते हैं, जगमगाते हैं, आभा देते हैं, दीख पड़ते हैं, साफ़ साफ़ मालूम होते हैं।
झलकना दे॰ (क्रि॰) प्रकाशित होना, चमकना, साफ़ साफ़ दीख पड़ना, उज्ज्वल होना।
झलका दे॰ (पु॰) फफोला, फोला। [प्रकाश।
झलकार दे॰ (पु॰) जलन, झलक, चाव, आभा,
झलकी दे॰ (स्त्री॰) दृष्टि, कटाक्ष, झाँवली, अपाङ्गदृष्टि।
झलझल दे॰ (पु॰) चमकता हुआ, बहुत ही साफ़, अत्यन्त स्वच्छ, पतला सूक्ष्म, तेज़, तीक्ष्ण, भड़क।
झलझलाना दे॰ (क्रि॰) चमकना, चमकित होना, (?) झलमल करना, टीसना, पीड़ा करना, क्रोध करना।
झलझलाहट दे॰ (स्त्री॰) चमक, झलक, प्रकाश।

झलना दे० (क्रि०) हिलाना, डुलाना, झपकना, सुखाना, पंखा करना या हाँकना।

झलमल दे० (पु०) हलकी रोशनी, चमकदमक।

झलदया दे० (वि०) शङ्कित, सन्देही, संशयी, धोखा खाया हुआ, ठगा गया, वञ्चित।

झला दे० (पु०) हलकी वृष्टि, बौछार, पंखा, झाबर।

झलाझल दे० (वि०) ज्योतिष्मान्, प्रकाशयुक्त, ज्योतिर्विशिष्ट।—(पु०) चमकदार, चमकीला।

झलाना दे० (क्रि०) सुधरवाना, साफ़ करना, टाँका लगवाना, किसी वस्तु को रांगे आदि से जुड़वाना।

झलामल (पु०) चमकीला। (स्त्री०) चमकदमक।

झलाधार दे० (वि०) चमकीला, भड़कीला, सुशोभित, चमत्कार।

झलार दे० (पु०) झाड़ी, गहनकानन, घना जङ्गल।

झल्ल तद्० (पु०) भांड, भाँड़, पटह बाजा, लपट।—कण्ठ (पु०) परेवा, कबूतर।

झल्लक तद्० (पु०) झाँझ, मजीरा। [पसीना, पसेव।

झल्लरी तद्० (स्त्री) हुडुक नाम का बाजा, झाँझ,

झल्ला दे० (पु०) बड़ा टोकरा, वर्षा।

झल्लाना दे० (क्रि०) चिढ़ना, खीजना, किटकिटाना।

झष तद्० [झष्+अच्] मत्स्य, मीन, मछली मकर, मच्छ, बड़ी मछली, पाठीन, ताप, मीनराशि।—केतन या केतु (पु०) मदन, कामदेव, मीनध्वज।—ाङ्क (पु०) [झष+अङ्क] अनिरुद्ध, ऊषापति, श्रीकृष्ण का पौत्र, कामदेव का दूसरा रूप।—ाशन (पु०) [झष+अशन] मत्स्य भोगी, मीनभक्षी, शिशुमार, सूस, जलजन्तु विशेष।—ोदरी (स्त्री०) [झष+उदरी] व्यासदेव की माता, मत्स्यगन्धा, योजन गन्धा।

झँई (स्त्री०) तिरमिराहट, धुंधलापन, छाया, आभा, झिलमिलाहट।

झाँई दे० (पु०) प्रतिध्वनि, छद्सन, प्रतिबिम्ब, झलक, छाया, यथा—"मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोय। जातन की झाँई परे श्याम हरित दुति होय।" (बिहारी की सतसई)

झाऊ दे० (पु०) वृक्ष विशेष, झाउ, वेतस।

झाँक दे० (स्त्री०) ताक, दृष्टि, नज़र।

झाँकड़, झाँकर दे० (पु०) काँटेदार झाड़ी, करील के सूखे झाड़।

झाँकना दे० (क्रि०) छिप कर देखना, ताकना, ओट से देखना, निहारना, कनखी से देखना।

झाँकाझाँकी दे० (पु०) ताका ताकी, देखादेखी, परस्पर निरीक्षण, परस्परावलोकन।

झाँकी दे० (स्त्री०) दर्शन, अवलोकन। [हरिण विशेष।

झाँख दे० (पु०) जन्तु विशेष, वन्य जन्तु, बारहसिंघा,

झाँजन दे० (स्त्री०) स्त्रियों के पैरों में पहने जाने वाले नक्काशीदार पोले कड़े, जिनमें कङ्कड़ी डाली जाती है, जिससे चलते समय बजे। [क्रोध, कम, मन्दा।

झाँझ दे० (स्त्री०) मजीरा, एक प्रकार का बाजन, हल्का

झाँझट दे० (स्त्री०) झगड़ा, कलह, विरोध टण्टा।

झाँझर दे० (पु०) बहुछिद्रयुक्त, जिसमें अनेक छिद्र हों या हो गये हों।

झाँझरी दे० (स्त्री०) बहुत छेद वाली कलछी, झरना।

झाँझा दे० (पु०) झींगुर, कीड़ा विशेष, जो गर्मियों के दिन में प्रायः विशेष होते हैं। [झाँझ बजाने वाला।

झाँझिया दे० (वि०) क्रोधी, कोपी, रिसहा, खिजू,

झाँझी दे० (स्त्री०) खेल विशेष।—कौड़ी (वा०) फूटी कौड़ी, कुछ नहीं, निरर्थक, बिना प्रयोजन।

झाँट दे० (पु०) गुह्याङ्ग के ऊपर के बाल, पशम, शष्प, अत्यन्त क्षुद्र वस्तु।

झाँप दे० (पु०) छप्पन, ढक्कन, बाँस या तृण का बना हुआ गृहावरण विशेष, दीवार की रक्षा के लिये टट्टर, सिरकी की टट्टी।

झाँपना दे० (क्रि०) ढकना, बन्द करना, आच्छादन करना, आवृत करना, तोपना, ढाप लेना।

झाँपेर दे० (स्त्री०) छिनाल स्त्री, योषित, रण्डी।

झाँवरा दे० (वि०) काला, कृष्ण, कृष्णवर्ण का।

झाँवली दे० (स्त्री०) नखरा, चोचला, हाव भाव।

झाँवा दे० (पु०) पकी ईंट, अधिक पकने से दो तीन या अधिक सटी हुई ईंट, पैर को रगड़ कर साफ़ करने वाली ईंट विशेष।

झाँसना दे० (क्रि०) बिगाड़ना, फुसलाना, खुशामद करके रास्ते पर ले आना, असत्य लाभ का लोभ दिखा कर कुछ ले लेना, धोखा देना, ठगना।

झाँसा दे० (पु०) फुसलावा, धोखा, असत्य लोभ।

झाँसू दे० (गु०) फुसलाऊ, धोखेबाज, धूर्त, ठग, बिगाड़ू।

झा तद्० (पु०) मैथिल तथा नागर ब्राह्मणों की एक उपाधि।

झाऊ दे० (पु०) झाऊ, पौधा विशेष, पिचुल,थफल।

झाग दे० (पु०) फेन, उबाल, पानी में अधिक तरङ्ग उठने से या और किसी प्रकार रगड़ पहुँचने से जो सफेद फेन निकलता है।

झाझा दे० (पु०) गाँजा,भाँग, एक प्रकार की नशीली पत्ती, जिसका आजकल के महात्मा बड़ा आदर करते हैं, मादक वस्तु विशेष। [स्थान, मँड़आ।

झाट दे० (पु०) निकुञ्ज, लता आदि से घिरा हुआ।

झाड़ दे० (पु०) कटीला, सघन पेड़, दीपक विशेष, जो वृक्ष के आकार का पीतल आदि का बनाया जाता है, जिसमें शीशे के ग्लास लगाये जाते हैं, बत्तियों का झाड़, पञ्चशाख।—खण्ड (पु०) एक वन का नाम, जो बिहार के पूर्व भाग में है, जहाँ वैद्यनाथ नामक महादेव हैं। पुरी के पास के वन का नाम भी झाड़खण्ड ही है, यथा—"झाड़खण्ड में भले बिराजो जी"। "औरैसा जगन्नाथ पुरी में ठाकुर भले बिराजो जी"।—झँखाड़ (वा०) कटीली तथा सूखी झाड़ी बीहड़ वन, वीरान जङ्गल।—झटक (वा०) झाड़ना, बहारना, साफ़ सुथरा करना।—झूड (वा०) झाड़न बहारन, सफ़ाई संशोधन, ऊपरी आमदनी, नियमित आय से अधिक आय, बचा खुचा।—डालना (वा०) साफ़ कर देना, तोड़ देना, स्पष्ट कह देना, तिरस्कार करना, अनादर करना, अनुचित कड़े शब्द का प्रयोग करना।—पहाड़ कर देखना (वा०) खूब देखना, खूब जाँच करना, परखना, अनुसन्धान करना, परीक्षा करना, जाँचना, कसौटी कसना।—फानूस दे० (पु०) शीशे के झाड़ हाँड़ियाँ और गिलास आदि जो रोशनी और सजावट के काम में लाये जाते हैं।—बाँधना (वा०) अविरत वृष्टि होना, सर्वदा पानी बरसना, किसी वस्तु का ताँता बाँध देना, निरर्गल बोलते जाना।

झाड़न दे० (स्त्री०) बहारन, बुहारन, कूड़ा, कचरा कतवार, साफ़ करने वाला कपड़ा, वह कपड़ा जिससे वस्तु साफ़ की जाती है।

झाड़ना दे० (क्रि०) साफ़ करना, बुहारी लगाना, झाड़ू लगाना, बुहारना या कपड़े से साफ़ करना, बुन्दिया झाड़ना, सेव झाड़ना गिराना, टपकाना, बुझाना, उतारना।—फूँकना (वा०) भूत उतारना,टोटका करना,मन्त्रसे नजर आदि हटाना।

झाड़न्त दे० (अ०) सभी, समस्त, सम्पूर्ण, अखिल, सब के सब, समस्त रूप से, पूर्णरूप से।

झाड़ा दे० (पु०) तलाशी, विष्ठा, मल।

झाड़ा झपटा लेना दे० (वा०) ढूँढ़ना, खोजना, अन्वेषण करना, मार्गण करना, तलाशी लेना।

झाड़ा देना दे० (वा०) तलाशी देना।

झाड़ी दे० (स्त्री०) छोटा और घना वन, सघन छोटा वृक्ष विशेष।

झाड़े झपटे जाना दे० (वा०) मल त्याग करने जाना, पाखाने जाना।

झाड़ू दे० (पु०) बढ़नी शोधनी, सम्मार्जिनी, बुहारी, कूँचा।—कश दे० (पु०)मेहतर,भङ्गी,हलालखोर।

झापड़ (पु०) थप्पड़, तमाचा, चपेटा।

झापा दे० (पु०) टोकरी, बड़ी टोकरी दौरी।

झाबर दे० (पु०) पङ्किल भूमि, दलदल।

झाबा दे० (पु०) चर्मपात्र चाम का एक प्रकार का पात्र जिससे तेल या घी नापा जाता है। कुप्पा, कुप्पी, छेददार बड़ा कलछा जिससे कड़ाह से पूरियाँ या सेव निकाले जाते हैं, सेव छाँटने की छेददार कलछी।

झाम (स्त्री०) गुच्छा, कुएँ से मिट्टी निकालने का यन्त्र विशेष।

झामर दे० (पु०) शान, शाण, सिल्ली, पथरी, एक प्रकार का पत्थर जिस पर अस्त्र तीखे किये जाते हैं।

झामा दे० (पु०) झाँवा, पक्की ईंट।

झाँय झाँय (पु०) झनकार, झाँय झाँय।

झार दे० (वि०) केवल, निपट, एकमात्र सम्पूर्ण, कुल, समूह। तद्० (स्त्री०) डाह, आग की लपट, अग्निकण, विस्फुलिङ्ग, प्रकाश, चरपराहट।—खण्ड तद्० (पु०) पर्वत जो वैद्यनाथ होता हुआ पुरी तक फैला हुआ है। [झाड़कर।

झारि दे० (क्रि०) झारकर, गिराकर, झमकाकर,

झारी दे० (स्त्री०) जलपात्र विशेष, गड़ुआ, करवा, टोंटीदार जलपात्र, सुराही, समूह, झाड़ी, वृक्ष समूह, वृक्ष जाल, कमण्डलु।
झाल तद्० (स्त्री०) कटु, चरपराहट, तीतापन, तरङ्ग, कामेच्छा। दे० (स्त्री०) दो तीन दिन की लगातार वर्षा। (पु०) झालने की क्रिया, बड़ा टोकरा, धातुमय टूटे बरतनों का जोड़ना, टूटा बरतन सुधारना, जलन, दाह।
झालना दे० (पु०) घोटना, जोड़ना, चिकनाना, स्निग्ध करना, पालिश करना, साफ़ करना, टूटे धातु पात्र का टाँका द्वारा छिद्र रोकना।
झाऊर तद्० (स्त्री०) पूजा के समय बजाया जाने वाला घड़ियाल [किनार, गोट, झाँझ।
झालर दे० (स्त्री०) जालीदार किनारा, गुच्छेदार
झालरा दे० (पु०) सोता, झरना, कुण्ड, बड़ा कुण्ड।
झाला दे० (पु०) राजपूतों की एक जाति। [टोकरा
झापा दे० (पु०) झाँका, झाँपा, बड़ा जालीदार
झिझक दे० (स्त्री०) चौंक, भय, डर, भड़क, अचम्भा।
झिझकना दे० (क्रि०) भड़कना, डरना, चौंकना, आश्चर्यित होना, अचम्भित होना।
झिझका दे० (वि०) चौंका हुआ, डरा हुआ, भयभीत, अचम्भित। [भय दिखाना।
झिझकाना दे० (क्रि०) भड़काना, चौंकाना, डरवाना,
झिझकी दे० (स्त्री०) भड़क, चौंक, डर, भय।
झिञ्झा दे० (स्त्री०) फूटी कौड़ी, कानी कौड़ी, जिगना नामक एक वृक्ष।
झिञ्झायी दे० (स्त्री०) जिगना वृक्ष विशेष।
झिड़क दे० (स्त्री०) धमकी, घुड़की, फटकार।
झिड़कना दे० (क्रि०) धमकी देना, धमकाना, घुड़की देना, फटकारना, तिरस्कार करना, झटका देना।
झिड़काझिड़की दे० (स्त्री०) झगड़ा, रगड़ा, टंटा बखेड़ा, बकाबकी, फटकारना और धमकी देना।
झिड़की दे० (स्त्री०) घुड़की, दबाव, धमकी।
झिड़झिड़ाना दे० (क्रि०) क्रोध करना, अधिक कोपित होना, चिड़चिड़ाना।
झिनवा दे० (पु०) महीन चावल वाला धान
झिपना (क्रि०) झेंपना, लज्जित होना।
झिपाना (क्रि०) लज्जित करना, शरमाना।
झिलहड्डा दे० (वि०) दुर्बल, पतली हड्डी वाला, सूखट, सुकड़ा।
झिनझिनी दे० (स्त्री०) सनसनी, झनझनी, पैर का सो जाना। किसी अङ्ग की नस दब जाने से उनमें एक प्रकार की सनसनी हो जाना, यह शरीर की निर्बलता की पहचान है।
झिरझिर दे० (पु०) मन्द प्रवाह, धीरे धीरे बहना, छोटी धारा, पतला, हलका। [कपड़ा।
झिरझिरा दे० (वि०) बिलकुल पतला या महीन
झिरी दे० (स्त्री०) झिल्ली, झींगुर कीट विशेष, दरार, दरज, गड्ढ जिसमें झिरझिर कर जल एकत्र हो। कुएँ के पास से निकलने वाला छोटा सोता, तुषार, पाला मारी हुई फसल।
झिरझिराना दे० (क्रि०) झरना, टपकना, गिरना, बहना।
झिलँगा दे० (पु०) पुरानी खाट, टूटी खाट, जिस खाट की बिनावट टूट गई हो। एक प्रकार के सिपाही, सैनिक विशेष।
झिलम दे० (स्त्री०) कवच, सन्नाह, लोहे का अङ्गा जो युद्ध में अस्त्रों से शरीर की रक्षा के निमित्त पहना जाता है, बखार, सिर पर का लोहे के कटोरे के समान पहनावा। [एक प्रकार का धान।
झिलमा दे० (पु०) संयुक्तप्रान्त में उत्पन्न होने वाला
झिलमिल दे० (पु०) हिलती हुई रोशनी, अस्थिर ज्योति, एक प्रकार का बारीक मुलायम कपड़ा। —ा (वि०) झीना, चमकता हुआ।
झिलमिलाना दे० (क्रि०) रह रह कर चमकना, प्रकाश का हिलना, बीच बीच में एक बार चमक जाना, कभी चमकना कभी क्षीण होना।
झिलमिली दे० (स्त्री०) तिरछी और तर ऊपर लगी हुई बहुत ही आड़ी पटरियाँ जो किवाड़ों या खिड़कियों में जड़ी जाती हैं। इनसे भीतर वाला बाहिर देख सकता है, किन्तु बाहिर वाला भीतर नहीं देख सकता।
झिल्लड़ (पु०) दूर दूर पर बुना हुआ वस्त्र
झिल्लिका तद्० (स्त्री०) झींगुर, कीट विशेष।
झिल्ली तद्० (स्त्री०) अति सूक्ष्म चमड़ा, पतला चर्म, झींगुर, झिल्लिका। —दार (पु०) झिल्लीदार।

झींकना दे० (क्रि०) पश्चात्ताप करना, अनुताप करना, पछताना, शोचित होना, दुःखित होना, दुःखड़ा रोना।

झींका दे० (पु०) चक्की का कौर, उतना अन्न जितना एक बार में चक्की में डाला जाय।

झींखना दे० (क्रि०) किचकिच करना, खीजना, दुखड़ा रोना। [धीवर, माझी, कर्णधार।

झींगट दे० (पु०) मल्लाह, केवट, कैवर्त, दास,

झींगा दे० (स्त्री०) चिंगड़ी मछली, एक प्रकार की मछली।

झींगुर दे० (पु०) कीट विशेष, झिल्ली, झुरझुरा।

झींझना दे० (क्रि०) झुंझलाना।

झीन दे० (गु०) झीना, महीन, सूक्ष्म, पतला, पतीला, दुर्बल, बारीक।

झीना दे० (पु०) झिरझिरा।

झीनी दे० (स्त्री०) झिरझिर, महीन, पतली। यथा—
चादर मोरी झीनी, मूरख मैल कर दीनी।
ई चादर मोर कबिरा ओढ़ी ज्यों की त्यों धर दीनी।
—कबीर साहब।

झीरुका दे० (स्त्री०) झींगुर, कीट।

झील दे० (स्त्री०) सरोवर, ह्रद, जलाशय, ताल, बहुत बड़ा तालाब, प्राकृतिक जलाशय, धारा रहित बड़ा सरोवर।

झीसी दे० (स्त्री०) फूही, छोटी छोटी बून्दें, फुहारा, झपास, वृष्टि की बहुत ही छोटी छोटी बून्दें।

झुकना दे० (क्रि०) नम्र होना, निहुरना नवना, लचना, सिर नीचा करना, लज्जा से सिर अवनत करना, अभिवादन करना, बड़े को प्रणाम करना, नीचे की ओर आना, क्रोधित होना। यथा—
" झुकी रानि औरहु अरगानी "।—रामायण।

झुकाना दे० (क्रि०) नवाना, नीचा दिखाना, नम्र करना, प्रणत करना।

झुकावट दे० (स्त्री०) निहुराव, नम्रता, लचाव, लटकाव।

झुञ्झलाना दे० (क्रि०) क्रोध करना, रिस करना, चिड़चिड़ाना, शीघ्र क्रोध करना, खिसियाना।

झुठलाना दे० (क्रि०) झूठा करना झूठ साबित करना, मिथ्या सिद्ध करना, अशुद्ध करना।

झुठाई दे० (स्त्री०) झूठापन, मिथ्या, असत्य। (क्रि०) झूठा करके, मिथ्या बताकर।

झुठजाना दे० (क्रि०) अशुद्ध बताना, मिथ्या होना सिद्ध करना, प्रमाणों के द्वारा मिथ्यात्व प्रतिपादन करना, झूठा ठहराना, झूठा बताना, उच्छिष्ट करना, जूठा करना। मुँह—(वा०) कुछ खाना, नाम मात्र के खाने के लिये बैठना, स्वल्प खाना। मुँहा मुँह—(वा०) मुँह पर झूठा बनाना, सामने झूठा साबित करना।

झुंड, झुंट (पु०) स्तवक, गुच्छा, झोप, छोटा झाड़।

झुण्ड दे० (पु०) यूथ, समूह, समुदाय, दल, भीड़भाड़, ठट्ठ, मण्डल, साधुओं का अखाड़ा, साधुओं का समूह विशेष, जिसमें निश्चित संख्या के साधु रहते हैं।

झुण्डा दे० (पु०) पताका, वैजयन्ती, झंडा।

झुण्डी दे० (स्त्री०) झाड़ी, वृक्ष का समूह, वनखंड, गुच्छा, साधुओं का एक दल विशेष, झुण्ड के अधीनस्थ रहने वाला साधुदल, इसमें भी साधुओं की एक नियत संख्या रहती है।

झुल दे० (स्त्री०) सादृश्य, समानता लगाव, झुकाव।

झुनझुना दे० (पु०) खिलौना, लड़कों के खेल की एक वस्तु।

झुनझुनी दे० (स्त्री०) नूपुर, पैजनी, घुंघरू, सनसनी।

झुमका दे० (पु०) गुच्छा, स्तवक, गुच्छा के आकार का एक गहना, कर्णभूषण बनफूल, फूल या फल का गुच्छा, ढेंढ़ी, फल विशेष।

झुरना दे० (क्रि०) सुखाना, सूख जाना, सूखा हो जाना, कुम्हलाना, मुरझाना।

झुरमुट दे० (पु०) भीड़, मंडली, समूह, समुदाय। कई झाड़ों का ऐसा समूह जो किसी स्थान को ढक ले।

झुरसना (क्रि०) झुलसना, जल जाना, पाला मार जाना।

झुराना दे० (क्रि०) सुखाना, शुष्क करना, मुरझवाना, सूखा हुआ मुरझाया हुआ।

झुराने दे० (गु०) सूखे, सूखे हुए मुरझाये हुए, विशेषण 'झुराना, का बहुवचन

झुरियाना दे० (क्रि०) बीनना बराना, सोहना, निराना, खेत की घास निकाल देना, झोली में भरना।

झुर्ना दे० (क्रि०) कुम्हलाना, मुरझाना।
झुर्री दे० (स्त्री०) समेट, सिकोर, सिकुड़न, शरीर के मांस का सिकुड़ाव, ढीला पड़ना।
झुलकाना दे० (क्रि०) दग्ध करना, भस्म करना, जलाना, जला देना।
झुलना दे० (क्रि०) झूलना, हिलना, लटकना, हिंडोले पर चढ़कर हिलना, लटक जाना।
झुलनी दे० (स्त्री०) नथनी में डाल कर पहनने का एक प्रकार का गहना।
झुलमुली दे० (स्त्री०) कान के पात, स्त्रियों के कान में पहनने के लिये पत्ता के आकार का गहना विशेष। [अधजला होना।
झुलसना दे० (क्रि०) भुनना, जलना, अर्ध दग्ध होना,
झुलसाना दे० (क्रि०) जलाना, जला देना, अधजला करना, अर्ध दग्ध करना। [हिंडोला झुलाना।
झुलाना दे० (क्रि०) लटकाना, डुलाना, हिलाना,
झुल्ला दे० (स्त्री०) पहनने का कपड़ा, झंगा, चोला, जनानी कुर्ती, झूला।
झूँका दे० (पु०) घोंसला खुन्ता, वासा, नीड़, पक्षियों के रहने का स्थान, खोता।
झूँझल दे० (पु०) क्रोध, खुनस, क्रोधावेश, क्रोध चढ़ना, रिस, चिड़चिड़ाहट, कोपावेग।
झूँटर दे० (स्त्री०) दोफसली भूमि, दो अन्न बोयी जाने वाली भूमि, जिस भूमि में दो अन्न बोये जाते हैं।
झूँठ दे० (पु०) मिथ्या, अशुद्ध, असत्य, निरर्थक। —मूट (वा०) झूठ, सरासर झूठ, बिलकुल झूठ, निरा असत्य। [बचा खुचा।
झूँठन झाँठन दे० (पु०) जूठ झूठ उच्छिष्ट, भोजन से
झूँठा दे० (पु०) मिथ्यावादी असत्यवादी, झूठ बोलने वाला, उच्छिष्ट, भोजन का बचा भाग जूठा, भोजनविशेष।—झाठा (वा०) जूठ, उच्छिष्ट।
झूना दे० (पु०) पक्का नारियल, सूखा नारियल का फल, सूक्ष्म वस्त्र, महीन कपड़ा, चूल्हे में आग जलाना।
झूमक दे० (स्त्री०) भीड़, समूह, समुदाय, सभा, भूषण विशेष, कर्णफूल। (वि०) हिलने वाला, काँपने वाला।—साड़ी (स्त्री०) झालरदार साड़ी।
झूमझूम दे० (पु०) मेघ, घेन, बादलों का उमड़ना, हिलमिल कर, अहङ्कार के साथ हिलना।
झूमना दे० (क्रि०) हिलना, डोलना, लहराना, ऊँघना, मद से झूलना।
झूमर दे० (पु०) सिर में पहनने का एक गहना, जिसे रंडियाँ अक्सर पहना करती हैं।
झूर (वि०) सूखा, शुष्क, रीता, व्यर्थ, जूरा, दाह, जलन, दुःख।
झूरना दे० (क्रि०) कूटना, चूर्ण करना, झाड़ना, पेड़ से फल उतारना, सूखना, किसी कारण वश दुर्बल होना, कलपना, पछताना, पश्चात्ताप करना, दुःखित होना, शोक करना।
झूरा दे० (वि०) सूखा, मुरझाया, कुम्हलाया, अना वृष्टि, अकाल पड़ना, महँगी पड़ना, वृष्टि न होना।
झूल दे० (स्त्री०) ढीला ढाला वस्त्र ओहार, हाथी का ओढ़ना, बैल घोड़े आदि पशुओं के ओढ़ने का वस्त्र, सवारी का पर्दा ओहार, थैली, टोपी।
झूलना दे० (क्रि०) डोलना, हिलना, लटकना, छन्दोविशेष, कविता बनाने की एक रीति।
झूला दे० (पु०) हिंडोला, पलना, डोला, रस्सी के सहारे बँधा हुआ पाट जिस पर झूलते हैं, वृक्ष विशेष, ढाँक वृक्ष स्त्रियों का कुर्ता।
झूँसी दे० (स्त्री०) फूही झींसी, झड़ास, फुहार, एक नगर का नाम, यह प्रयाग के सामने है। यह बहुत ही पुराना है। भारत के चन्द्रवंशी राजाओं की राजधानी, इसका पुराना नाम प्रतिष्ठानपुर है, इसे ही राजा पुरुरवा ने अपनी राजधानी बनाया था, इसी स्थान पर प्रसिद्ध मीमांसक बौद्धविजयी स्वधर्मप्रचा क कुमारिलभट्ट सुपदग्ध हुए थे। कहते हैं यहीं के परवर्ती किसी राजा का नाम चौपट्ट था, इस नगरी का नाम उस समय अन्धेर नगरी पड़ गया था। जो हो यह नगर पुराना है इसमें सन्देह नहीं।
झेलना दे० (क्रि०) सहारना, सहना, ऊपर लेना, पानी में हिलना, डोलना, पचाना।
झोंक दे० (स्त्री०) धक्का आघात, ढकेल, रेखा, झकोरा, बल के साथ खींचना, झुकाव, बोझ, दाद, घात, अदाव, पानी का हिलोरा।—देना

(क्रि०) आग में लगाना, नष्ट करना, भस्म करना, जलाना, जला देना, फेंकना, आपत्ति में डालना, खतरे में डालना।

झोंकना दे० (क्रि०) फेंकना, ढकेलना, घुसेड़ना, लगाना, डालना, चूल्हे में लकड़ी लगाना, भाड़ झोंकना, बिना विचारे करना, निरर्थक करना।

झोंका दे० (पु०) धक्का, रेला, झपट्टा, झकोरा।

झोंकी दे० (स्त्री०) भार, बोझ, जवाबदेही।

झोंटा दे० (पु०) } सिर के बड़े बड़े बाल, बिखरे
झोंटी दे० (स्त्री०) } या उलझे बाल, लट, पिछले बाल, चोटी, जट, बार, जटा, हिंडोले का झोंका।

झोंपड़ा दे० (पु०) मढ़ी, छप्पर का छोटा घर, तृण निर्मित गृह, घास फूस का घर, कुटी, आश्रम।

झोंपड़ी दे० (स्त्री०) छोटा झोपड़ा, कुटी।

झोंपा दे० (पु०) गुच्छा, स्तवक, फल या फूल का झोंप झोंटा, घेर, घिराव, परिधि।

झोरा दे० (पु०) फल या फूल का गुच्छा।

झोंक दे० (स्त्री०) धक्का, ठोकर, सहसा चक्कर आना, घूमरी, मरते मरते बच जाना, आफत आना, दुःख आना, किसी प्रकार का उपद्रव।

झोका दे० (पु०) ठोकर, ठेस, उदक, धक्का, आघात, झकोरा, बलात्कार से खिंचाव, झटका देकर खींचना, झोंटा पकड़ कर ज़बरदस्ती खींचना गिराने की इच्छा से खींचना, सहसा खींचना, अचानक अपनी ओर खींच लेना या ढकेल देना।

झोझ दे० (पु०) खोंता, झोझ, बड़ा पेट, लम्बोदर, फलों का बड़ा घवद, केले का घवद, केले का झोझ, एक गुच्छे में लगे हुए बहुत से फल।

झोझा दे० (पु०) बड़पेटा, बड़ा पेट वाला, तुन्दिल, स्थूलोदर।

झोटिंग दे० (पु०) झोटेवाला, प्रेतभेद, प्रेतों का भेद विशेष। (क्रि०) झोंका देकर, झोंटा पकड़ कर झटकाना, केश पकड़कर खींचना, झोटिया कर खींचना।

झोटियाना दे० (क्रि०) बाल पकड़ के खींचना, झोटा खींचना, झोंटा पकड़ कर मारना, क्रोध से झोंटा खींचना।

झोटी दे० (स्त्री०) छोटा झोटा, चोटी, पिछले बाल, जट, केश समूह जटा समूह, तृण आदि का समूह, पूला।

झोल दे० (पु०) कपड़े की सिकुड़न, ढील ढाल, कपड़े का ठीक न होना, ढीला होना, शरीर में बड़ा होना, कपड़े का ठीक नहीं बैठना, तरकारी का रस्सा, मसालेदार तरकारी का रस, बच्चे, लड़के।

झोलझाल दे० (पु०) ढीला ढाला, चरपरा रसा।

झोला दे० (पु०) थैला, बड़ी झोली, रोग विशेष, अर्दाङ्ग लकवा, वायु विकार से आधे अङ्ग का अचेतन हो जाना, किसी अङ्ग का मारा जाना, पतला। (वि०) लटका, सिकुड़ा हुआ।

झोली दे० (स्त्री०) कोथली, थैली, जेब, छोटा झोला।

झोर दे० (पु०) कढ़ी, तरकारी का रसा।

झौंरा दे० (वि०) साँवर, झाँवर, काला, कृष्ण वर्ण, साँवला, गेहुँआ रङ्ग न काला न गोरा, स्तवक, गुच्छा, झब्बा।

झौंसना दे० (क्रि०) जलाना, खूब जला देना अच्छी तरह जलाना।

झौंसा दे० (वि०) जला हुआ, भस्म किया हुआ, दग्ध झुलसा हुआ, जलाया हुआ।

झौर दे० (स्त्री०) झगड़ा, टंटा, लड़ाई।

झौरी दे० (स्त्री०) खेत की घास।

झौवा दे० (पु०) टोकरी।

झौहाना दे० (क्रि०) चिड़चिड़ाना, गुर्राना, फुसकारना, मारने को सींग दिखाना, अनायास गिरना।

ञ

ञ यह व्यञ्जन का दसवाँ वर्ण है, तालव्य वर्ण है, क्योंकि तालु से इसका उच्चारण होता है। नासिका से उच्चारण होने के कारण इसको नासिक्य भी कहते हैं, यह चवर्ग का पचम अक्षर है।

ट

ट व्यञ्जन का ग्यारहवाँ वर्ण, यह मूर्द्धन्य है। क्योंकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।

ट तद्० (पु०) वामन, शब्द, नाद, ध्वनि, चन्द्रमा, गान, रुद्र, अंकुश, चुड़ाई, वृद्धावस्था, जरा, नारियल का खोपड़ा।

टक दे० (स्त्री०) ताक, देख, निरन्तर दर्शन, लगातार देखना, अनिमेषप्रेक्षण, बिना पलक गिराये देखना, निरन्तर दृष्टि, अखण्डावलोकन, बड़ी तराजू का चौमुँटा पलड़ा।—टक (स्त्री०) लगातार देखते ही रहना, निरन्तर देखना, अविरत दृष्टि से देखना, अनिमेष दृष्टि से देखना।—टका (पु०) टकटकी, नेत्रों का खुला रह जाना। —टकाना (क्रि०) निश्चल दृष्टि से देखना। —टकी (स्त्री०) निश्चल दृष्टि।—टोना (क्रि०) टटोलना, छूना, ढूँढ़ना।—टोरना—टोलना ढूँढ़ना, हाथ से छूकर ढूँढ़ना।—टोहना (क्रि०) ढूँढ़ना। [करना।

टकटोरना (क्रि०) टटोलना, ढूँढ़ना, तलाश

टकना दे० (पु०) घुटना। (क्रि०) सिलना।

टकराना दे० (क्रि०) टक्कर खाना, टकरा जाना, टक्कर मारना, आघात करना, धक्का मारना, टोना, टटोलना। [टकवा, सिलवाना।

टकवाना दे० (क्रि०) जुड़वाना, सिलाना, तगाना,

टकसार या टकसाल तद्० (पु०) टङ्कशाला सिक्का बनाने का स्थान, जिस स्थान पर रुपये पैसे ढाले जाते हैं, मुद्रालय।—का खोटा (वा०) पहले से ही बिगड़ा हुआ, शिक्षा के समय ही से उच्छृङ्खल, जिसको अच्छी शिक्षा नहीं मिली। —चढ़ना (वा०) शिक्षा पाना, शिक्षित होना, उपदेश पाना, शिक्षित होने के लिये प्रयत्न करना, सीखने के लिये चेष्टा करना।—बाहर (वा०) अशिक्षित, अनपढ़, मूर्ख, खोटा, बिगड़ा, ख़राब।

टकसालिया तद्० पु० } टकसाल का काम करने
टकसाली तद्० पु० } वाला, जिस टकसाली की ओर से टकसाल चलता हो, सिक्के ढलवाने वाला या ढालने वाला, टकसाल का खरा माना हुआ, (जैसे टकसाली भाषा) पक्का, प्रामाणिक (टकसाली कथा)।

टकहाई (स्त्री०) टकेकी, नीच, कुलटा स्त्री, हरजाई।

टका दे० (पु०) रुपये पैसे, जोड़ा पैसे या रुपये, यथाः—"टका धर्मः टका कर्म टकैव परमं पदम्। यस्य गेहे टका नास्ति हाटके (बाज़ार में) टक टकायते॥" एक तौल विशेष।

टकाई दे० (स्त्री०) सिलाई, टाँकने की मजूरी।

टकाना (क्रि०) सिलवाना, सिलाना।

टकाही (स्त्री०) देखो टकहाई।

टकी दे० (स्त्री०) ताक, टुकी, किसी की ताक में छिपना, लुकाव। [तकुआ।

टकुआ दे० (अ०) छेदने का साधन, तकला,

टकैत, टकैत दे० (पु०) धनवान्, धनी, मालदार, आढ्य, धनाढ्य, आदरसूचक पद।

टकोर दे० (स्त्री०) ध्वनि, धुन, टङ्कार, चुचकार, चुमकार, चुचकारी, चुमकारी, ढोल बजाने का शब्द, थाप, सेंक।

टकोरना दे० (क्रि०) सेंकना, तताना, गरम करना, उष्ण करना, ताता करना, तपाना, ठोकर लगाना, बजाना।

टकोरा दे० (पु०) छोटा आम, अँबिया।

टकौना दे० (पु०) टका, दो पैसे।

टकौरी (स्त्री०) छोटा (तौलने का) काँटा।

टक्कर दे० (स्त्री०) ठोकर, ठोकर लगना, सहसा अङ्ग से अङ्ग का धक्का लगना—खाना (वा०) ठोकर खाना, अज्ञात किसी चीज़ से भिड़ जाना, आफ़त में पड़ जाना, अचानक दुःखी होना, हानि उठाना, क्षतिग्रस्त होना।—देना (वा०) सिर से ठोकर देना, पशुओं का परस्पर आघात करना।—मारना (वा०) धक्का लगाना, ठोकर मारना, ढकेलना, रेलना, पेलना, पटकना, मुक़ाबिला करना, सामना करना, बराबर में खड़ा होना।

टखना दे० (पु०) गुल्फ, घूँटी, ठेहना, घुटना।

टगण तद्० (पु०) मात्रिक गणों में से एक।

टगर तत्० (पु०) सुहागा, कौड़ा, तगर का वृक्ष ।

टगरना दे० (क्रि०) ढगरना, लुढ़कना, पड़ना, गिरना ।

टगरा दे० (वि०) टेढ़ा,बाँका,तिरछा, सर परासी ।

टगराना दे० (क्रि०) घुमाना, ढगराना, लुढ़काना, फिराना ।

टघलना } (क्रि०) पिघलना, हृदय का द्रवीभूत
टघरना } होना, घुलना, गलना ।

टघलाना } (क्रि०) पिघलाना, गलाना, घुलाना,
टघराना } द्रव करना ।

टङ्क तत्० (पु०) [टङ्क+अल्] परिमाण विशेष, चार मासे की तौल, टाँका, छेनी, जिससे पत्थर काटा जाता है । खड्ग, तलवार, क्रोध, अहङ्कार, सुहागा, खुरपी, दर्प, मुद्रा, सिक्का, खनित्र, खनता, फरसा, टाँकी, तलवार का म्यान, कोश, पर्वत का खड्ड, कुदाल, खटाई, नीला कैथ, कुल्हाड़ी ।

टङ्कक तत्० (पु०) [टङ्क+क] रजत मुद्रा, सिक्का । —पति (पु०) मुद्राध्यक्ष, टकसाल का मालिक, टकसाल का अधिपति ।—शाला (स्त्री०) मुद्रा निर्माणगृह, टकसाल ।

टङ्कण तत्० (पु०) सुहागा, उपधातु विशेष, जिससे सोना चाँदी आदि गलाई जाती है । [फूलना ।

टङ्कना तद्० (क्रि०) टाँकना, सीना, लटकाना

टङ्कार तत्० (पु०) ज्या का शब्द, धनुष के रोदे का शब्द, चिल्ले का शब्द आश्चर्य,विस्मय, अचम्भा प्रसिद्ध, धनुष का भयानक शब्द ।

टङ्की (स्त्री०) पानी रखने का छोटा चहबच्चा ।

टङ्कोर दे० (स्त्री०) धनुष के रोदे का शब्द, धनुष की टङ्कार,धनुष की भयानक ध्वनि, रोदे को पीछे खींच कर छोड़ देने पर जो आवाज़ होती है उसे टङ्कोर कहते हैं ।

टङ्कोरना दे० (क्रि०) झाड़ना, धनुष के रोदे को झाड़ना, ज्या को खींचना, उसे साफ करने के लिये खींच कर छोड़ना ।

टङ्गड़ी दे० (स्त्री०) पैर, पाँव, टगरी, गोड़, पिंडुली ।

टञ्च दे० (पु०) कृपण, सूम, सूमड़ा, कंजूस, मक्खीचूस ।

टटका दे० (वि०) नया, नवीन, कोरा, अभिनव, ताज़ा, अभी का, तुरन्त बना हुआ । (पु०) उतरा पुतरा । (स्त्री०) टटकी, नयी, नवीना, ताज़ी ।

टटड़ी या टटरी दे० (स्त्री०) घेरा, मेंड़, थाला, आलबाल, वृक्षों के मूल में पानी सींचने के लिये जो घेरा बनाया जाता है । खोपड़ी, ठठरी, टट्टी ।

टटपूँजिया दे० (वि०) थोड़ी पूँजी वाला, अल्प मूल धन वाला, जिसके पास स्वल्प धन हो ।

टटवानी दे० (स्त्री०) छोटी घोड़ी, टटुई ।

टटिया दे० (स्त्री०) झाँप, द्वार बन्द करने और वृष्टि से दीवार की रक्षा करने के लिये तृणादि निर्मित टट्टर टट्टी ।

टटीहरी दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष, टिट्टिभ ।

टटुआ दे० (पु०) घोड़ा, छोटा घोड़ा ।

टटुई दे० (स्त्री०) टटवानी, छोटी घोड़ी ।

टटोलना दे० (क्रि०) हाथों से ढूँढ़ना, छू छू करके पहचानना टोआ टोई करना ।

टट्टर दे० (पु०) झाँप, बड़ी टट्टी, टटिया,

टट्टरा दे० (पु०) ठट्ठा, ढोल, ढोल या नगाड़े का शब्द ।

टट्टा तद्० (पु०) टट्टर ।

टट्टी दे० (स्त्री०) झाँप, टट्टर, टटिया, छोटा टट्टर ।

टट्टू दे० (पु०) छोटा घोड़ा, टटुआ ।

टटाट घराट दे० (पु०) पूजा का भारी आडम्बर ।

टण्टा दे० (पु०) लड़ाई झगड़ा, बखेड़ा, उपद्रव ।

टण्टा टंटा दे० (पु०) झगड़ा, बखेड़ा, प्रपञ्च ।

टठिया दे० (स्त्री०) एक प्रकार का भाजन ।

टन दे० (पु०) टङ्कोर, धनुष का शब्द, घड़ियाल घटे की ध्वनि विशेष परिमाण विशेष, अट्ठाइस मन का एक टन होता है ।—टन दे० (स्त्री०) घण्टा बजाने का शब्द । [तीक्ष्ण स्वर ।

टनक दे० (स्त्री०) टीस, कर्कश शब्द, गम्भीर शब्द,

टनाटन दे० (स्त्री०) घंटा बजाने का लगातार शब्द ।

टनाना दे० (क्रि०) विस्तार करना, विस्तृत करना, फैलाना, पसारना, बाँधना खींच कर बाँधना, कसकर बाँधना ।

टप दे० (स्त्री०) फिटन, टमटम आदि का वह सायबान जो इच्छानुसार चढ़ाया या गिराया जाता है । बूँद बूँद टपकने का शब्द, किसी वस्तु के सहसा

गिरने का शब्द (आम का टपकना) । (पु०) पानी रखने के नाँद के ढंग का सुला बड़ा बरतन, एक औज़ार, बाँस का टोकरा जिससे मुर्गी के बच्चे ढक दिये जाते हैं।

टपक दे० (पु०) रह रह कर होने वाली पीड़ा या वेदना, जल आदि की बूँद गिरने का शब्द।

टपकना दे० (क्रि०) चूना, बूँद बूँद गिरना।

टपका दे० (पु०) पानी की बूँद, अलग अलग होकर गिरना, पक्के फलों का वृक्ष से आप ही आप गिरना, डार से गिरा हुआ आम या पका फल।

टपकाना दे० (क्रि०) चुआना, छानना, निकालना, रस आदि निकालना, छानना।

टपका टपकी दे० (स्त्री०) बूँदा बूँदी, फुहार।

टपजाना दे० (क्रि०) कूद जाना, उछल जाना, आगे बढ़ जाना, अग्रसर होना, पीछे की बात भूल जाना, पहले की बात को भूल जाना।

टपना दे० (क्रि०) नाँघना, लाँघना, कूद कर जाना, फाँद कर निकल जाना।

टप पड़ना दे० (क्रि०) बीच में कूद पड़ना, हाथ बटाना, दूसरों के काम के बीच में आ पड़ना, अविचार से किसी काम को उठा लेना, किसी काम की गुरुता या हानि लाभ बिना सोचे ही उसमें लग जाना, अचानक आ जाना।

टपरा दे० (पु०) छप्पर, छाजन, झोपड़ा।

टपाटप दे० (पु०) लगातार, टप टप कर टपकना।

टपाना दे० (क्रि०) कुदा देना, नँघवाना, कुदवाना, फँदाना, फँदवा देना।

टप्पा दे० (पु०) डाक घर, डाकखाना, पोस्ट आफिस, धरनाई, पालकी ढोने वाले कहारों की डाक, बीच बीच में उनका पड़ाव, अन्तर छोटा भूमिभाग, नियत दूरी, मोटी सीवन, रागिनी विशेष, एक प्रकार के गीत का नाम, गेंद का उछाल, एक प्रकार का काटा।—खाना (वा०) गोली या गेंद को उछलते हुए चलना।

टब्बर दे० (पु०) परिवार, कुल, वंश, कुटुम्ब।

टमक दे० (स्त्री०) पीड़ा, यातना, वेदना, कष्ट, टीस, ध्वनि विशेष, पानी में पानी गिरने का शब्द।

टमकना दे० (क्रि०) गिरना, टपकना, चूना, टमक होना, व्रण में वेदना होना।

टमकी दे० (स्त्री०) डुगडुगिया।

टमटम दे० (स्त्री०) घोड़े से खींची जाने वाली खुली दो पहियों की छोटी गाड़ी।

टमटी दे० (स्त्री०) एक बरतन विशेष।

टर दे० (स्त्री०) अहङ्कार, गुमान, अकड़, ऐंठ, मेंढक की बोली, हठ, अड़, रुक्ष बात। (वि०) मतवाला, उन्मत्त, अचेत, असावधान।—टर (स्त्री०) बकबक, बकबक।—टराना (क्रि०) बकबक करना, टरटर करना, निरर्थक बहुत बोलना बकवाद करना।—टरी (पु०) बकवादी बहुभाषी, बकवदिया।

टरई दे० (क्रि०) हटती है, टलती है, हटवाना।

टरना दे० (क्रि०) हटना, टल जाना, खिसक जाना, दूर हो जाना, भग जाना।

टरकाना दे० (क्रि०) हटाना, खिसकाना, टाल देना।

टराना दे० (क्रि०) हटाना, हटा देना, टाल देना, भगा देना, हटवाना।

टर्रा दे० (वि०) क्रोधी, बकवादी, बक्की, गुंडा।

टर्राना दे० (क्रि०) बकबक करना, चिड़चिड़ाना, क्रोध में आकर बकना, गाली देना।

टलना दे० (क्रि०) हटना अपसृत होना, भाग जाना, चला जाना, सरकना, दूर होना, जाता रहना नष्ट हो जाना। [धरा।

टलप दे० (स्त्री०) छाँट, टुकड़ा, कतरन, खण्ड, भाग,

टलमलाना दे० (क्रि०) डगमगाना, स्थिति का अनिश्चित होना, सदिग्ध स्थिति का होना, ललचना।

टलाटली दे० (स्त्री०) बहाना, मिस, हीलाहवाला।

टलाना दे० (क्रि०) छिपाना, ढकना, लुकाना हटवा देना, हटवा कर छिपा देना, सरका देना, लुकवा देना। [सारहीन वस्तु, ठोकर।

टल्ला दे० (पु०) झूठमूठ, असत्य, मिथ्या, निरर्थक,

टल्ली दे० (पु०) एक प्रकार का बाँस।

टल्लेनवीसी दे० (स्त्री०) व्यर्थ का काम, निठल्लापन, बहाना, टालमटूल।

टवर्ग तत्० (पु०) ट ठ ड ढ ण, टकारादि पाँच अक्षर।

टवाई दे० (स्त्री०) व्यर्थ घूमना।

टस दे० (स्त्री०) किसी वजनी वस्तु के खिसकने का शब्द।—से मस न होना (वा०) ज़रा भी न हटना, ज़रा भी न हिलना।

टसक दे० (स्त्री०) टीस, चमक, दर्द, व्यथा, पीड़ा।

टसकना दे० (क्रि०) टीस देना, व्यथा होना, घटना, हटना, हिलना, रोना धोना। [दूर हटाना।

टसकाना दे० (क्रि०) हिलाना, चलाना, खसकाना,

टसना दे० (क्रि०) मसकना, फटना, फट जाना।

टस से मस दे० (वा०) इधर से उधर, इस बात से उस बात पर, एक विषय को छोड़कर दूसरे विषय पर, पूर्व स्थिति को छोड़ कर दूसरी स्थिति पर।

टसर तद्० (पु०) त्रसर, एक प्रकार का रेशमी मोटा कपड़ा।

टहक दे० (स्त्री०) गाँठ की पीड़ा, मज्जा की वेदना।

टहकना दे० (क्रि०) दुखना, दर्द करना, व्यथा होना, पिराना, पिघलना, द्रव होना।

टहटह, टहटहा दे० (वि०) सुन्दर, नवीन, ताज़ा, मनोहर, रमणीय, टटका।

टहना दे० (पु०) पेड़ की शाखा, शाख, डाल।

टहनी दे० (स्त्री०) पेड़ की छोटी शाखा, छोटी डाली।

टहल दे० (पु०) सेवा, शुश्रूषा, ख़िदमत, घर का काम काज, यथाः—

" नीच टहल सब गृह कै करिहौं,
पद विलोकि भवसागर तरिहौं।"

—रामायण।

—टकोर (वा०) शुश्रूषा, काम काज, गृहकर्म।

—टकोर करना (वा०) सेवा करना, अधीनता बजाना।

टहलना दे० (क्रि०) चलना फिरना, घूमना भ्रमण करना, हवा खाने जाना, सन्ध्या सुबह भ्रमण करना।

टहलनी दे० (स्त्री०) दासी, सेविका, सेवा करने वाली स्त्री, घर का काम काज करने वाली स्त्री, मजूरिन, नौकरानी [हवा खिलाना।

टहलाना दे० (क्रि०) घुमाना, फिराना, चलाना,

टहलुआ, टहलुवा दे० (पु०) सेवक चाकर, नौकर, गृह कर्म करने वाला, दास, टहल करने वाला।

टहलुई दे० (स्त्री०) लौंडी, दासी, चकरानी, काम करने वाली, टहल करने वाले की स्त्री, वह लकड़ी जो दीपक में बत्ती उकसाने को डाली जाती है।

टहलू दे० (पु०) नौकर, चाकर।

टहो दे० (स्त्री०) युक्ति, जोड़ तोड़, ताक।

टहका दे० (पु०) पहेली, चुटकुला।

टहो दे० (पु०) बालक का शब्द, बालक की रुलाई, जन्मते बालक का शब्द।

टहोक, टहोका दे० (पु०) घूँसा, चपेटा, थप्पड़।

टाँक तद्० (पु०) टङ्क, चार माशे का परिमाण सीने का साधन, एक प्रकार की सुई, सिलाई, सीवन। [टाँका चलाना।

टाँकना दे० (क्रि०) सीना, सिलाई करना, तुरपना,

टाँकर दे० (पु०) लम्पट, लुच्चा, बदमाश, गुंडा, उच्छृङ्खल।

टाँका दे० (पु०) सीवन, जुड़ाई, जोड़, जोड़न, सन्धान।

टाँकी दे० (स्त्री०) पत्थर काटने का अस्त्र, छेनी, रुखानी, नासूर, फोड़ा, खर्बूजा या अन्य किसी फल का चौकोना टुकड़ा, जिससे फल का अच्छा बुरा होना पहचानते हैं। कुल्हाड़ी, खसटा, पानी जमा करने का हौज़, छोटा चहबच्चा।

टाँकू दे० (वि०) टाँकने वाला पत्थर काटने वाला।

टाँग दे० (स्त्री०) टँगड़ी, गोड़, पैर, एँड़ी से घुटने तक का भाग, लटकाव, टँगाव।—अड़ाना (वा०) अनधिकार चर्चा या हस्तक्षेप।—तले से निकलना (वा०) हार मानना।—तोड़ना (वा०) निकम्मा करना, किसी भाषा के टूटे फूटे शब्द बोलना।—पसार कर सोना (वा०) निश्चिन्त सोना। [करना।

टाँगन दे० (क्रि०) लटकाना, ऊपर चढ़ाना, लया

टाँगना दे० (पु०) एक प्रकार का घोड़ा, पहाड़ी घोड़ा।

टाँगी दे० (स्त्री०) कुल्हाड़ी, फरसा, लकड़ी काटने का एक अस्त्र विशेष।

टाँच दे० (वि०) } हठीला, हठी, वक्र, टेढ़ा। (पु०)
टाँचड़ा दे० (वि०) } पेच, दबाव।

टाँट दे० (स्त्री०) सिर के बीच का भाग, चाँदी, तालु, टट्टी, खोपड़ी।

टाँठ दे० (वि०) पोढ़ा, ठोस, संसार, सारयुक्त, बड़ा उत्साही, उद्योगी, उत्साहशील। [प्रगल्भता।

टाँठाई दे० (स्त्री०) पोढ़ापन, उत्साह, ठोसाई,

टाँड़ दे० (स्त्री०) दीवारों के बीच लगा तख्ता जिस पर सामान रखा जाय। मञ्च, मचान, बैठने के लिये बाँस आदि का बना ऊँचा आसन।

टाँड़ा दे० (पु०) खेप, एक मनुष्य का बोझ, एक बार के उठाने योग्य वस्तु, बनजारे की वस्तु।

टाँड़ी तद्० (स्त्री०) टिड्डी, कीट विशेष।

टाँय टाँय दे० (स्त्री०) कर्कश शब्द, बकवाद।

टाँय टाँय फिस (वा०) बकवाद बहुत किन्तु परिणाम कुछ भी नहीं। [विघ्रायन, बोरा।

टाट दे० (पु०) सन का बना हुआ एक प्रकार का

टाटक दे० (वि०) टटका, नया, नवीन, ताज़ा।

टाटी दे० (स्त्री०) टटिया, टट्टी, झाँप, टट्टर।

टाठी तद्० (स्त्री०) थाली, मज़बूती।

टाड़ी दे० (स्त्री०) लकड़ी काटने का अस्त्र विशेष, छोटी कुल्हाड़ी, फरसी, छोटा परसा।

टान (स्त्री०) तनाव, खिचाव। [खींचना।

टानना दे० (क्रि०) फैलाना, विस्तार करना, ऐंचना,

टाप दे० (पु०) घाँप, थाँप, उछलन, ठोंक, घोड़े का शब्द, जो उसके दौड़ने पर होते हैं। बाँस का बना हुआ एक प्रकार का टोकरा, जिससे मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। मुरगियों के बन्द करने का झाबा।

टापना दे० (क्रि०) टाप मारना, ढूँढ़ना, खोजना, ताकते रह जाना, निराश हो जाना, निराश बैठे ताकते रहना, भूखा रह जाना।

टापा दे० (पु०) खाँचा, बाँस का बना दौरा, बड़ा पिंजरा, टप्पा, मैदान, उछाल, कूद।

टापू दे० (पु०) द्वीप, भूमि का वह भाग जो चारों ओर से पानी से घिरा हो। देखो द्वीप।

टाबर दे० (स्त्री०) छोटा झील, तालाब, अकृत्रिम छोटा ताल। (पु०) बालक, लड़का।

टार दे० (क्रि०) टारकर, हटाकर, नाँघकर, उल्लङ्घन कर, सरका कर। (पु०) घोड़ा, लौंडा, कुटना, भँडुआ, ढेर।

टारन दे० (पु०) उल्लङ्घन, हटावन, टालन।

टारना दे० (क्रि०) हटाना, सरकाना, दूर करना, टालना।

टारी दे० (स्त्री०) दूर, अन्तर, फासिला।

टाल दे० (स्त्री०) टालमटोल, व्याज से काल काटना, बहाना करके समय निकालते जाना, लकड़ी अन्न आदि के बेचने का स्थान, लकड़ी का ढेर, अन्नराशि, पहलवानों की लड़ाई का धोखा।

टालटूल दे० (पु०) व्याज, बहाना, मिस।

टालना दे० (क्रि०) हटाना, बिताना, काटना, निबाहना।

टालमटोल दे० (पु०) बहानाबाज़ी, कपट, पोल।

टाला दे० (पु०) छल, कपट, धोखा, उकताई।
—बाला बताना (वा०) टालना, टालमटोल बताना, पोल घुमाव करना इतस्ततः करना, पट्टीबाज़ी करना।

टाली दे० (स्त्री०) गाय बैल के गले की घंटी। जवान गाय जो तीन वर्ष से कम की हो और बहुत चञ्चल हो, बड़ी ईंट, एक प्रकार की ईंट।

टाहली (पु०) टहलुआ, दास, सेवक।

टिकटिकी दे० (स्त्री०) छिपकिली, बिसतुइया, गृहगोधिका, टिकठी, ऊँची तिपाई जिस पर बाँध कर अपराधी के बेत लगाये जाते हैं या फाँसी लगायी जाती है।

टिकटी दे० (स्त्री०) तिपाई, तीन पाए की टिकठी।

टिकड़ा दे० (पु०) बाटी, अंगाकड़ी, चपटा गोल टुकड़ा। (स्त्री०) टिकड़ी।

टिकना दे० (क्रि०) बसना, ठहरना, चलना, रहना, कपड़े आदि का बहुत दिनों तक चलना।

टिकरी (स्त्री०) टिकिया, एक प्रकार का पकवान।

टिकली दे० (स्त्री०) बेंदी, स्त्रियों के सिर पर लगाने का एक प्रकार का आभूषण, सौभाग्य चिन्ह, टिकुली, छोटी टिकिया।

टिकस (पु०) कर, भाड़ा, किराया।

टिकाऊ दे० (वि०) टिकने वाला, ठहराऊ, चलाऊ, चलने वाला। [चलाना।

टिकाना दे० (क्रि०) रखना, ठहराना, बसाना,

टिकाव दे० (पु०) ठहरने का स्थान, टिकने का स्थान, ठहराव, स्थिति दृढ़ता, पड़ाव। [वास स्थान।

टिकासर दे० (पु०) टिकने का स्थान ठहरने की भूमि,

टिकासा दे० (वि०) टिकने वाला, पथिक, राही, बटोही।

टिकिया दे० (स्त्री०) छोटी रोटी, बाटी, पिसी हुई वस्तु की गोल और चिपटी बनी हुई वस्तु, कोयले की गोल गोल टिकड़ी जो तम्बाखू पीने के काम में आती है।

टिकुरा दे० (पु०) टीला, भीटा ।

टिकुली } देखो टिकली ।
टिकुरी }

टिकैत तद्० (पु०) युवराज, अधिष्ठाता, सरदार, नाथद्वारे के गोसाईं जी की उपाधि ।

टिकोर दे० (पु०) सेंई, पुलटिस, लेप, लोवकी ।

टिकोरा दे० (पु०) आम की बतिया ।

टिक्कड़ दे० (पु०) मोटी रोटी, बाटी ।

टिक्की दे० (स्त्री०) लग्गा, प्रवेश, लगाव, पैठ, पैसार, टिकिया, पैबन्द, पट्टे या चमड़े का टुकड़ा, जो जोड़ने के काम में आता है ।

टिघलाना दे० (क्रि०) पिघलाना, गलाना, द्रवित करना, पतला करना, पतलाना ।

टिटकारना दे० (क्रि०) बैल आदि को उत्साहित करना, टिक टिक करके पशु को ज़ोर से चलाना ।

टिटकार दे० (पु०) टिटकारी से हाँकना, टिटकारी देकर चलाना ।

टिटकारी दे० (पु०) पशु हाँकने का शब्द ।

टिटिहरी दे० (पु०) पक्षी विशेष, टिट्टिभ, कहा जाता है कि इसका बोलना भावी अशुभ का सूचक है।

टिट्टिभ तद्० (पु०) पक्षी विशेष, टिटिहरी, टिड्डी ।

टिड्डा दे० (पु०) पतङ्ग, फतिङ्गा, फड़ङ्गा, फरिङ्ग ।

टिड्डी दे० (स्त्री०) तृणनाशक कीट, अन्ननाश करने वाला ।

टिपका दे० (पु०) दाग़, टीका, अंगुली आदि के द्वारा रंग से किसी वस्तु को चिन्हित करना ।

टिप्पन तद्० (पु०) टिप्पण, सूक्ष्म टीका, स्वल्प विवरण, जन्मपत्र ।

टिप्पनी तद्० (स्त्री०) टिप्पणी, टीका, विवरण, किसी विषय का भावार्थ, किसी पर अपना मत प्रकाशित करना, किसी सन्दिग्ध विषय को समझने के लिये सुलासा करना, स्पष्टी करण ।

टिप्पस दे० (स्त्री०) युक्ति, प्रयोजन साधन का डौल ।

टिपूसुलतान दे० (पु०) मैसूर के प्रसिद्ध सुलतान हैदरअली का पुत्र, हैदरअली के मरने के बाद टिपू उनके पद का अधिकारी हुआ, १७८२ ईसवी दिसम्बर को मैसोर की सुलतानी इसे मिली, इसका जन्म १७५१ ई० में हुआ था । हैदरअली और अङ्गरेज़ों से विरोध था, अतएव हैदरअली के मरने के बाद अङ्गरेज़ों ने मैसूर पर चढ़ाई करना चाहा था, परन्तु टिपू की युद्ध कुशलता से वे कुछ दिनों तक दबे रहे, अङ्गरेज़ सेनापति म्याचू ९ महीने तक बदनौर में टिपू की सेना से घिरा हुआ था। परन्तु अन्त में उसे आत्मसमर्पण कर देना पड़ा । बदनौर से होकर टिपू ने मङ्गलोर में अङ्गरेज़ी सेना पर चढ़ाई की, कुछ दिनों तक युद्ध चलता रहा परन्तु अन्त में सन्धि हो गयी । सन्धिपत्र में लिखा गया था कि अब आपस में लड़ाई नहीं होगी । यह सन्धि हो जाने पर टिपू ने ट्रावनकोर पर चढ़ाई की, अङ्गरेज़ और ट्रावनकोर के राज्य में मित्रता थी, अतएव पुनः आपस में विरोध उपस्थित हुआ । मद्रास के अङ्गरेज़ सेनापति मेडोज़ १५ हज़ार सेना लेकर टिपू से लड़ने के लिये आये । मरहठे अङ्गरेज़ों से मिल गये । हैदराबाद के निज़ाम भी उसी तरफ़ हो गये । इस युद्ध के नायक बड़े लाट कर्नवालिस थे । चारों ओर से टिपू घिर गया, १७९१ ई० में इस सेना के साथ टिपू ने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया, अन्त में इस सेना से समुद्र के सामने टिपू को हार माननी पड़ी, उसने सन्धि करनी चाही, सन्धि भी स्वीकृत हुई ; परन्तु इस सन्धि के अनुसार टिपू को अपने राज्य का आधा हिस्सा छोड़ देना पड़ा । सुलतान ने यह भी मान लिया, आधे राज्य में से मरहठे और निज़ाम ने आधा आधा बाँट लिया। एक प्रकार से ४ । ५ वर्ष शान्ति से कटे, टिपू ने इस बीच में अपनी बड़ी उन्नति करली थी, पुनः फ़रासीसी और मरहठों की सहायता से बलवान् होकर अङ्गरेज़ों से टिपू ने युद्ध ठाना, यही युद्ध अन्तिम था, इसी युद्ध में टिपू मारा गया ।

टिमाना दे० (क्रि०) लालच देना, ललचाना, प्रतिदिन थोड़ी सी वृत्ति देना ।

टिमाव दे० (पु०) दिन की थोड़ी सी जीविका, लालच मात्र की वृत्ति ।

टिमटिम दे० (पु०) मन्द मन्द वृष्टि, धीरे धीरे पानी [बरसना ।

टिमटिमाना दे० (क्रि०) दीपक का मन्द मन्द जलना ।

टिजटिजाना दे० (क्रि०) चिढ़ाना, खेदना, दस्त आना।
टिलिया दे० (स्त्री०) छोटी मुर्गी, मुर्गी का बच्चा।
टिलूवा दे० (पु०) फुसलाऊ, खुशामदी, चिरौरी करने वाला।
टिल्ला (पु०) ऊँची जगह, टीला।
टिहरा दे० (पु०) छोटा गाँव, छोटी बस्ती, पुरवा।
टिहरी दे० (स्त्री०) छोटी बस्ती, पल्ली, गवँई, एक राजधानी का नाम जो उत्तर भारत में गढ़वाल प्रान्त में है।
टिहुनी दे० (स्त्री०) घुटना, कोहनी।
टिहुकना (क्रि०) चौंकना कसकना, क्रोधित होना।
टींट दे० (पु०) फल विशेष, करील का फल, टेंटी।
टीक दे० (पु०) घुटिया, चोटी, सिर और गले के एक गहने का नाम।
टीका तद्० (स्त्री०) टिप्पणी, विवरण, कठिन शब्द या विषय का सरलार्थ कथन, तिलक, चन्दन एक गहना जिसे प्राय स्त्रियाँ ललाट और मस्तक पर पहनती हैं। विवाह की एक रीति, जो कन्या पक्ष वाले वर को भेंट देते हैं। विवाह करने के लिये किसी को मनोनीत करना गुदवाना, चेचक और प्लेग आदि का टीका, अभिषेक, राज्याभिषेक, विवाहाभिषेक।—कार तद्० (पु०) व्याख्याकार।
टीकैत दे० (वि०) टीका विशिष्ट, अभिषिक्त, जिसको टीका या अभिषेक हो गया हो, नाथद्वारे के गोस्वामी जी की पदवी।
टीटली दे० (स्त्री०) औषधि विशेष।
टीड़ी दे० (स्त्री०) टिड्डी, शलभ, पतङ्ग। [पत्तर।
टीन दे० (पु०) राँगा, राँगे की कलईदार लोहे की
टीप दे० (पु०) अधमर्ण पत्र, तमस्सुक, दस्तावेज, बोहरे का तमस्सुक, जिस पर मूल और सूद के रुपये चुकता करने के लिये श्रम आदि का देना लिखा जाता है। स्वर का आरोह, गान में स्वर को ऊँचा चढ़ाना, स्मरण के लिये किसी बात को संक्षिप्त रीति से लिख देना, टीपना दबाव, जन्मकुण्डली, हुंडी।—टाप (स्त्री०) बनावट, सजावट दीवाल आदि का जहाँ तहाँ मरम्मत करना, टीपा टोई भूषण।

टीपना दे० (क्रि०) दबाना, अधिकार जमाना, प्रभाव फैलाना, टटोलना, हाथों से छू-छू कर के ढूँढ़ना, निचोड़ना, बिन्दी लगाना, लिखना।
टीयाँ दे० (पु०-) टीला, भीटा। [सजावट।
टीमटाम दे० (स्त्री०) ठाट बाट, तड़क भड़क,
टील दे० (स्त्री०) छोटी मुर्गी, टिलिया।
टीला दे० (पु०) ऊँची भूमि, ढालवाँ स्थान, मिट्टी का प्राकृतिक स्तूप, भीटा।
टीस दे० (स्त्री०) पीड़ा, व्यथा, वेदना, यन्त्रणा। —मारना (क्रि०) पीड़ा होना।
टीसना दे० (क्रि०) रह रह कर दर्द होना।
टुक तद्० (वि०) स्तोक, स्वल्प, अल्प, नेक, थोड़ा, अल्प परिमाण।
टुकड़ा दे० (पु०) टूक, अंश, खण्ड, भाग।
टुकसा दे० (वि०) थोड़ा सा, ज़रा सा
टुच्चा दे० (पु०) छोटी पूँछ, बाँड़ी पूँछ।
टुकार दे० (स्त्री०) अरुचिपूर्वक भोजन, बिना इच्छा के खाना। [पोच, थोड़ा, अधम।
टुच्चा दे० (पु०) लुच्चा, लम्पट, लपका, भ्रष्टचरित्र,
टुच्चा दे० (पु०) सर्प,नन्हा, छोटा,छोटेक़द का, ठेंगना।
टुटका दे० (पु०) टोटका।
टुटपुंजिया (वि०) बहुत थोड़े धन वाला।
टुटरूँटू दे० (वि०) अकेला, पतला, कमज़ोर।
टुड्डी तद्० (स्त्री०) नाभि, बोड़री।
टुण्टुक तद्० (पु०) वृक्षविशेष, स्योना वृक्ष।
टुनटुनाना दे० (क्रि०) गुनगुनाना, धीरे धीरे गाना, शनै शनै अलापना, मन्द मन्द बजाना।
टुण्ड दे० (पु०) हथकटा, अङ्गभङ्ग, टूठा, शाखारहित वृक्ष, सुण्ड, ठूँठ, स्थाणु। [गया हो।
टुण्डा दे० (वि०) हथकटा, लूला जिसका हाथ कट
टुण्डियाना दे० (क्रि०) पीठ पर हाथ बाँधना मुश्क कसना, मुश्क चढ़ाना मुश्क बाँधना।

टुंडिया कसना दे० (क्रि०)
टुंडिया चढ़ाना दे० (क्रि०)
टुंडिया बाँधना दे० (क्रि०) } मुश्क चढ़ाना, मुश्क कसना, अपराधी के हाथों को पीठ की ओर खींच कर बाँधना।

टुंयिड तद्० (स्त्री०) तुन्दि तोंद, नाभी, हथकटी स्त्री, बिना हाथ की स्त्री।

टुसकना दे० (क्रि०) बिलकना, क्रन्दन करना, रोना, कूकना, चीखना।

टुसुकना दे० (क्रि०) सिसकना, रोना, रिस आना, क्रुद्ध हो जाना। [शब्द, पाद का धीमा शब्द।

टूँ दे० (पु०) अपान वायु का शब्द, अधोवायु का

टूँगना दे० (क्रि०) चोंचियाना, चोंचों से बिनना, कुतरना, एक एक दाना खाना।

टूँड (पु०) जौ, गेहूँ, धान की फलियों के ऊपर की पतली और नुकीली बाल। [पूपा।

टूँडी तत्० (स्त्री०) तुन्द तुन्दि, नाभी टुढ, रथाग्र,

टूक दे० (पु०) टुकड़ा, खण्ड, भाग।—सा (अ०) थोड़ा सा, तनिक सा, ज़रा सा, अल्प परिमाण में।—ा (पु०) ढोलक का एक प्रकार का शब्द। टुकड़ा, हिस्सा, खण्ड, बखरा, भाग।

टूट तद्० (स्त्री०) त्रुटि, टूटन फूटन, खण्डन, टोटा, कमी, हानि, नुक़सान, लेख का वह अंश जो पुस्तक आदि लिखते समय छूट जाता है और वह पीछे से लिख दिया जाता है। (स्त्री०) टूट गया, टूटना।

टूटना दे० (क्रि०) टूट जाना, ख़राब हो जाना, बिगड़ जाना, नष्ट होना, आक्रमण करना, वेग पूर्वक आक्रमण करना, चढ़ आना, चढ़ाई करना।

टूटा दे० (वि०) टूटा हुआ, फटा हुआ।—फूटा (वि०) नष्ट भ्रष्ट, तितिरबितिर, खण्डहर, खण्डरात।

टूम दे० (स्त्री०) थोड़ी बात, छुटकिला, छतरी, आमरण विशेष।—टाम (पु०) थोड़ी पूँजी, अल्प मूल धन, कुछ थोड़ी बात।

टूसा दे० (पु०) आँक का फल, डाभ की जड़, वृक्षों के कोमल पत्ते, मदार का फल, अंकुर।

टूसी दे० (स्त्री०) कोंपल, कली, अङ्कुर।

टें (स्त्री०) तोते की बोली की नक़ल। [की मछली।

टेंगरा, टेंगरी दे० (पु०) मत्स्य विशेष, एक प्रकार

टेंघुना (पु०) घुटना। [बाँस।

टेंघुनी (स्त्री०) सहारा, छप्पर आदि के सहारने का

टेंट दे० (पु०) करील का फल, कपास का पका फल, फुल्ली, आँखों का ढेंढर, धोती का लिपटाव, जो कमर में लपेट कर धोती पहनते हैं, बेईमानी, धोखाबाज़ी।

टेंटर दे० (पु०) फलविशेष, आँख के भीतर चोट से उभरा मांस, ढेंढर।

टेंटा दे० (पु०) अविचार की बात, उच्छृङ्खल बातें, आग्रह भरी बातें, हठयुक्त बातें, व्यर्थ कथन, निरर्थक बोलना, फूलझरी।

टेंटी दे० (स्त्री०) करील का बड़ा और पका फल, रोग विशेष, कमर का एक रोग।

टेंटुआ दे० (पु०) नरेटी, गले की नस, गले की घाँटी।

टेंटें दे० (पु०) तोते की बोली, चिल्लाहट, किलकिलाहट, चीख़, कूक, निरर्थक, चिल्लाहट।—का हीरा (पु०) एक प्रकार का नया हीरा, बनावटी हीरा, टेंटें नाम के किसी अङ्गरेज़ ने इसे बनाया है। इसी कारण इस हीरे का नाम टेंटें का हीरा पड़ा है।

टेंई दे० (स्त्री०) ओट, छिपाव, आड़। (क्रि०) तेज़ करके, तीखा करके, तीक्ष्ण करके, शान चढ़ा के, टेय के, तेज़ किया, सान लगाई, पैनी करके।

टेउ दे० (स्त्री०) टेव, आदत, स्वभाव, बान।

टेक दे० (स्त्री०) थूनी, टिकाव, सहारा, अवलम्ब, टेकन, खम्भा, प्रण, प्रतिज्ञा, हठ, सङ्कल्प।

टेकन दे० (स्त्री०) आड़, थाँम, थाँमला, रोक।

टेकना दे० (क्रि०) आड़ना, थाँमना, सहारा लगाना, आश्रय देना।

टेकनी दे० (स्त्री०) थूनी, टेकन, सहारा।

टेकर, टेकरा दे० (पु०) टीला, ऊँची ज़मीन, मिट्टी का ढेर, मिट्टी का पहाड़।

टेकरी दे० (स्त्री०) टीला, स्तूप, ऊँची ज़मीन।

टेकला (स्त्री०) रटन, धुन।

टेकान दे० (पु०) टेक, आड़, अवलम्ब।

टेकी दे० (वि०) दृढ़प्रतिज्ञ, प्रतिज्ञा पालन करने वाला, सत्यसन्ध, बड़ी दृढ़ता से प्रतिज्ञा पालन करने वाला हठी, ज़िद्दी।

टेकुआ (पु०) चरखे का सूआ।

टेकुरा दे० (पु०) पान, ताम्बूल।

टेकुरी दे० (स्त्री०) सूत कातने का तकला, चमारों का सूआ, गोप नामक आभूषण।

टेटा दे० (पु०) पेंदी, एक प्रकार का चर्खा।

टेढ़ दे० (पु०) वक्र, बाँका, ऊभड़ खाभड़, ऊबड़ खाबड़, तिरछा, सीधा नहीं।—करना (क्रि०) झुकाना,

बनाना, बाँका करना, तिरछा करना।—मेढ़ा (वि०) सीधाहीन, तिरछा, बाँका, वक्र, कुटिल।
टेढ़ा (वि०) वक्र, कुटिल, उजड्ड, नटखट।
टेढ़ाई दे० (स्त्री०) वक्रता, बाँकापन, तिरछापन।
टेढ़ी दे० (स्त्री०) अहङ्कार, गर्व, दर्प, अभिमान, अधमता, नीचता, निचाई, हठ, दुराग्रह।
टेना (क्रि०) हथियार पर धार रखना, हथियार तेज़ करना, मूँछ के बालों को ऐंठ ऐंठ कर खड़ा करना।
टेनी दे० (स्त्री०) छोटी कनिया, छिकुनी जो धागा रखते हैं।
टेबुल (पु०) मेज़, चौकोर ऊँची चौकी। [कोति, समय।
टेम दे० (स्त्री०) बत्ती का जला हुआ गुल या फूल,
टेर दे० (स्त्री०) कंप, पुकार, गुहार, दीनतापूर्वक रक्षा के लिये आह्वान, स्वर, तान, ताल।
टेरना दे० (क्रि०) पुकारना, ललकारना, बुलाना, हाँक मारना, आह्वान करना, गोहार करना।
टेढ़ी (स्त्री०) पतली डाल, छोटी टहनी।
टेरे दे० (क्रि०) बुलाये, पुकारे, हँकारे।
टेलना दे० (क्रि०) टारना, घुसेड़ना, हटाना, धक्के देना, बलपूर्वक पीछे हटाना।
टेव दे० (स्त्री०) बान, आदत, हठ, ज़िद, प्रतिज्ञा, स्वभाव, अभ्यास, बाज़।
टेवकी दे० (स्त्री०) थूनी, सम्भा, थम्भा, सहारा, दीवार आदि का अवलम्ब, नाव या छत से ऊपर का छोटा भाग।
टेवना दे० (क्रि०) धार देना, तेज़ करना, तीखा करना, पैनाना, सान धराना, धार देना।
टेवा दे० (पु०) टिप्पन, जन्मपत्री, जिसमें जन्म के समय की ग्रहगति गणित के द्वारा ठीक करके लिखी रहती है और ग्रहों की गति में अन्तर पड़ने से तद-नुसार मनुष्यों के सुख दुःख की व्यवस्था कही जाती है।
टेवैया (पु०) तेज़ करने वाला।
टेसू दे० (पु०) पलाश का फूल, एक प्रकार का खेल, सुन्दर परन्तु निर्गुण मनुष्य।
टेहरा दे० (पु०) गाँव, पुरवा, गँवई छोटी बस्ती।
टेहला दे० (पु०) विवाह की एक रीति।
टैक्स दे० (पु०) कर, महसूल।
टैंटी दे० (स्त्री०) देखो टींट। [पौदी।
टैयाँ दे० (स्त्री०) एक प्रकार की छोटी और चपटी
टोआई दे० (स्त्री०) स्पर्श, छुआई।
टोआटोई दे० (स्त्री०) टटोलाई, ढूँढ़ाई।
टोक दे० (स्त्री०) अटकाव, रुकाव, रुकावट, रोक।—टाक (स्त्री०) छेड़छाड़।
टोंक दे० (पु०) छोर, सिरा, किनारा, नोक, कोना।
टोकना दे० (क्रि०) पूछना, यात्रा से जाते हुए को पूछना, रोकना, ईर्षा करना, बुरी दृष्टि से देखना।
टोकरा दे० (पु०) दौरी, डलिया, झौआ।—टोकरी (स्त्री०) छोटा टोकरा, डलिया, झाँपा।
टोका टोकी दे० (स्त्री०) पूछताछ, छेड़छाड़, टोक-टाक, रुकाव। [आदि की क्रिया।
टोटका दे० (पु०) यन्त्रमन्त्र, वशीकरण, उच्चाटन
टोटकेहाई दे० (स्त्री०) टोटका करने वाली।
टोटरू दे० (पु०) एक प्रकार का घुघ्घू, पक्षीविशेष।
टोटल दे० (पु०) जोड़, ठीक, योग।
टोटा दे० (पु०) घटी, घाटा, नुकसान, हानि।
टोंटा दे० (पु०) पटाका, गुर्रा, बारूद की पुड़िया जो बन्दूक में भर कर चलाई जाती है, कारतूस, बाँस के छोटे छोटे टुकड़े, टूटा, हथटूटा।
टोंटी दे० (स्त्री०) पनाला, मोरी, नल, पानी जाने की नाली, नालिका।—दार (पु०) जलपात्र विशेष, हथहर जिसमें टोंटी लगी रहती है, गडुआ।
टोडरमल दे० (क्रि०) सम्राट् अकबर के यह प्रधान राजस्व मन्त्री थे, यह खत्री थे, पञ्जाब के लाहौर में इनका जन्म हुआ था, यह युद्धविद्या में अत्यन्त निपुण थे। इन्हें सम्राट् ने अपने सेनापतियों की श्रेणी में भी भर्ती किया था। यह गाने बजाने तथा कविता करने में भी चतुर थे। यह गणित के प्रसिद्ध विद्वान् थे, जानने योग्य अन्यान्य बातों में भी इनका ज्ञान कुछ कम नहीं था। यद्यपि ये राज्य के ख़ज़ाने के अध्यक्ष थे तथापि विद्या और वीरता में इनकी प्रतिष्ठा कुछ कम नहीं थी। टोडरमल के पहले राज्य का हिसाब हिन्दी में लिखा जाता था, परन्तु इनके समय से फ़ारसी में लिखा जाने लगा। १० वर्ष की अवस्था में ये इतने बड़े राज्य के दीवान बने थे, कर वसूल करने के लिये जो नियम

इन्होंने बनाये थे, उनसे वे बड़े यशस्वी समझे जाने लगे। अकबर के राज्य में टोडरमल के समान आडिटर (हिसाब परीक्षक) दूसरा नहीं था। अपनी बुद्धि और परिश्रम से टोडरमल मुहर्रिर से दीवान बन गये थे, इन्हें राजा की भी पदवी मिली थी।
टोड़ी दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष।
टोनरोटी दे० (स्त्री०) चुंगी, कर।
टोनवा दे० (पु०) बाज पक्षी, जादूगर, टोटका।
टोनहा दे० (पु०) मन्त्री, यन्त्री, टोटका करनेवाला, जादू करने वाला।
टोनहाई दे० (स्त्री०) जादूगरनी, टोना, यन्त्र, मन्त्र।
टोनही दे० (स्त्री०) } टोना करने वाली स्त्री,
टोनहैया दे० (स्त्री०) } जादूगरनी।
टोना दे० (क्रि०) टटोलना, ढूँढ़ना, खोजना। (पु०) वशीकरण, मुजन, जादू, भुलावा। —टानी (स्त्री०) मन्त्र यन्त्र का प्रयोग—टामन (पु०) टोटका, वश करने के उपाय।
टोप दे० (पु०) बड़ी टोपी, कनटोप, साहब लोगों की टोपी, सीवन, टाँका।
टोपन दे० (पु०) टोकरा, दौरा।
टोपरा दे० (पु०) टोकरा, दौरा।
टोपरी दे० (स्त्री०) टोकरी, दौरी।
टोपा दे० (पु०) सिर का ढकना, कपाल, खोपड़ी, बड़ा चौड़े मुँह का बरतन।
टोपी दे० (स्त्री०) सिर पर रखने का सिया हुआ एक प्रकार का वस्त्र।—दार (वि०) जिस पर टोपी हो या जो टोपी लगाने पर काम में आवे।—वाला दे० (पु०) टोपी पहने हुए आदमी, टोपी बेचने वाला।
टोर दे० (स्त्री०) कटारी, कटार।
टोरना (क्रि०) तोड़ना।
टोरा दे० (पु०) भीत की रक्षा की ओलती, पानी आदि से भीत की रक्षा करने के लिये जिस पर छाया जाता है।
टोल दे० (स्त्री०) सभा, समिति, समाज, यूथ, झुंड, समूह, टोला, साँट, भीड़, महल्ला।
टोला दे० (पु०) गाँव का एक भाग, खंड, अंश, नगर की पट्टी, महल्ला। [एक जाति का बाँस।
टोली दे० (स्त्री०) समूह, यूथ, छोटा महल्ला, सिल,
टोह दे० (पु०) पता, अनुसन्धान, खोज।
टोहना दे० (क्रि०) पता लगाना, अनुसन्धान करना, खोजना, ढूँढ़ना, अन्वेषण करना।
टोहाटाई दे० (स्त्री०) छानबीन, तलाश।
टोहिया (पु०) टोह रखने वाला।
टोही (वि०) तलाश करने वाला। [तमसा है।
टौंस (स्त्री०) एक नदी का नाम, इसका दूसरा नाम
ट्रङ्क दे० (पु०) लोहे का हल्का सन्दूक।
ट्रेन दे० (स्त्री०) रेलगाड़ी के कई एक जुड़े हुए डब्बों को ट्रेन कहते हैं।

ठ

ठ व्यञ्जन का बारहवाँ अक्षर, यह मूर्द्धन्य है क्योंकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से ही होता है।
ठ तद्० (पु०) प्रतिमा, देवता, इन्द्रिय से ग्रहण करने योग्य वस्तु, शिव, महानाद, घोर शब्द, चन्द्र-मण्डल, सूर्यमण्डल, शून्य, जनसमूह।
ठई दे० (स्त्री०) ठहराई, निश्चित की हुई, नियमित की हुई।
ठक (स्त्री०) दो वस्तुओं के टकराने का शब्द।
ठकठक दे० (पु०) शब्द विशेष, लकड़ी आदि बजने का शब्द, झगड़ा, टंटा।
ठकठकाना दे० (क्रि०) ठोकना, खटखटाना, मारना, छूना, झगड़ा करना, बैर करना, विरोध करना।
ठकठकिया दे० (वि०) टंटा करने वाला, झगड़ालू, बखेड़िया।
ठकठेला दे० (पु०) धक्कापेल, झगड़ा, टंटा, बखेड़ा।
ठकठौआ, ठकठौवा दे० (स्त्री०) छोटी नाव, डोंगी, धनमुइया, करतात्र, करताल, एक का भिक्षा माँगने वाला।
ठकार (पु०) ठ अक्षर।
ठकुरसुहाती दे० (पु०) मीठी मीठी बात, प्रिय बोली, मुँह देखी बात, खुशामद।
ठकुराई दे० (स्त्री०) प्रभावता, मुख्यता ईश्वरता, आधिपत्य, अधिकार, बड़ाई, स्वामित्व, राज्य।

ठकुराइन दे॰ (स्त्री॰) ठाकुर की स्त्री, मालिकाइन, स्वामिनी।

ठकुरानी दे॰ (स्त्री॰) ठाकुर की स्त्री।

ठकुरायत दे॰ (स्त्री॰) आधिपत्य।

ठक्कुर तत्॰ (पु॰) ठाकुर पूज्य मूर्त्ति।

ठग दे॰ (पु॰) गठकटा, चोर धोखा देकर चोरी करने वाला, भुलावा देकर चुराने वाला, प्रतारक धोखे बाज़।—बाज़ी (स्त्री॰) ठगई, धूर्त्तता, ठग का काम, कपट, छल, माया।—विद्या (स्त्री॰) ठगई, धूर्त्तता, धोखा देने की चतुराई।—लाना (क्रि॰) छलना, ठगना, धोखा देना, बहकाना, बहका कर ले लेना।—लना (क्रि॰) कपट करना, धूर्त्तता करना, चकमे में डालना, छल से ले लेना।

ठगई दे॰ (स्त्री॰) प्रतारणा छल, धूर्त्तई, धोखा।

ठगना दे॰ (क्रि॰) भुलाना, धोखा देना, प्रतारण करना।

ठगाई दे॰ (स्त्री॰) प्रतारण, धोखा चोरी, कपट, छल, वञ्चकता। [वञ्चित होना।

ठगाना दे॰ (क्रि॰) ठगा जाना, प्रतारित होना,

ठगिन दे॰ (स्त्री॰) ठगनी, धूर्त्ता, प्रतारिका।

ठगिनी दे॰ (स्त्री॰) ठगने वाली स्त्री धूर्त्ता, ठगई करने वाली ठग की स्त्री जो ठगई करती हो।

ठगिया दे॰ (पु॰) वञ्चक, प्रतारक, धोखेबाज़, छली, कपटी, धोखा देने वाला।

ठगी दे॰ (स्त्री॰) धूर्त्तता, धोखेबाज़।

ठगे (क्रि॰) छले, धोखा दिये, बहकाये हुए।

ठगौरी दे॰ (स्त्री॰) ठगाई, धोखा, छल, भुलावा, माया, ठगना।

ठचरा दे॰ (पु॰) झगड़ा, कलह, वैरविरोध, टण्टा।

ठट्ट दे॰ (पु॰) भीड़भाड़, झुंड समूह, दल, मण्डली, यूथ, गिरोह।

ठट्टर दे॰ (पु॰) ठठ, बांस खपरैल मकान छाने के लिये जो बाँस से टट्टर बनाया जाता है, मचान पर रखने के लिये बाँस का बना हुआ ठाठ।

ठट्ठा दे॰ (पु॰) हँसी दिल्लगी, परिहास, कौतुक, मनोविनोद दल, समूह, झुंड, भीड़।—करना (क्रि॰) हँसी ठठोली करना उपहास करना, चिढ़ाना।—मारना (क्रि॰) हँसी करना, हँसना, उपहास करना।—मार कर हँसना (वा॰) खूब हँसना, अट्टहास करना।

ठट्ठेबाज़ दे॰ (वि॰) परिहासशील, हँसोड़ा।—ी (स्त्री॰) ठट्ठा करना, हास्य करना।

ठठ दे॰ (पु॰) ठट्ठ, भीड़, मण्डली, दल, समूह, कतार।

ठठक दे॰ (स्त्री॰) प्रतिबन्ध, रुकाव, अटकाव, भय भीति। [होना, भीत होना, डर जाना।

ठठकना दे॰ (क्रि॰)रुकजाना, अटकजाना, आश्चर्यित

ठठना दे॰ (क्रि॰) निर्माण करना, संशोधन करना, बनाना, सजाना, सजदेना, सज्जितकरना, दुःख से अधीर होकर अपना अङ्ग पीटना, स्वयं दुःख उठाना, मारना, पीटना।

ठठरा दे॰ (पु॰) वृत्ति, टट्टर, बाड़, घेर, घिराव, ओट।

ठठरी दे॰ (स्त्री॰) ढाँचा, आकृति, आकार का प्रथम सङ्गठन, कङ्काल, ठाठ, रथी, दुर्बल शरीर, जिसमें केवल हड्डियाँ ही शेष हों।

ठठाई दे॰ (क्रि॰) मार कर, पीट कर, मार मार कर, अति उत्साह से अति प्रसन्नता से। यथा—

एक संग नहिं होहिं भुआलू,
हँसब ठठाई फुलाउब गालू।
—रामायण।

ठठाना दे॰ (क्रि॰) लगातार मारना मारना, पीटना कूटना, सिर धुनना, मारते ही जाना।

ठठुकि दे॰ (क्रि॰) रुक कर, ठठक कर, अटक कर, प्रतिबन्धित होकर।

ठठेरा दे॰ (पु॰) जातिविशेष, बर्त्तन बेचनेवाली जाति, कसेरा। [स्त्री, कसेरा जाति की स्त्री।

ठठेरिन, ठठेरी दे॰ (स्त्री॰) ठठेरा की स्त्री कसेरा की

ठठोर, ठठोल दे॰ (पु॰) परिहासशील, ठट्ठेबाज़, ठठोली करने वाला।

ठठोली दे॰ (स्त्री॰) हँसी, दिल्लगी, परिहास।

ठड़ा (गु॰) खड़ा।

ठड्ढा दे॰ (पु॰) गुड्डी के बीच की लकड़ी, गुड्डा।

ठण्ड दे॰ (स्त्री॰) जाड़ा, शीत, शीतकाल सर्दी।

ठण्डक दे॰ (स्त्री॰) शीतलता शीतकाल, जाड़े का समय।

ठण्डा दे॰ (गु॰) शीतल, सर्द।—करना (क्रि॰) शीतल करना, शान्त करना, बढ़ते अग्नि अथवा

क्रुद्ध मनुष्य को शान्त करना, ढाँढस देना, धीरज बँधाना, किसी को सुखी देख कर स्वयं प्रसन्न होना, अभिलषित सिद्धि से आनन्दित होना।—पड़ना (वा०) शान्त होना, शीतल होना, न्यून होना, घटना, क्षीण होना, मोघ कर्म होना, पौरुष क्षीण होना, चञ्चलता नष्ट होना, उत्साह का कम होना, व्रण आदि की जलन कम होना।—होना (वा०) ठंढा पड़ना।

ठण्ढाई दे० (स्त्री०) शीतलता, शैत्य, स्निग्ध, ठंढी औषधि, सौंफ, कासनी, गुलाब की पत्ती, खरबूजे की मींगी, बादाम आदि को पीस कर बनाते हैं।

ठण्ढी दे० (स्त्री०) जाड़ा, शैत्य, शीत, शीतलता।—साँस भरना (वा०) दुःख करना, पश्चात्ताप करना, हाय मारना, लंबी साँस लेना।

ठन (स्त्री०) धातु विशेष के बजाने का शब्द।—क (स्त्री०) शब्द, ध्वनि।—का (पु०) शब्द, ध्वनि।—कार (पु०) रुपये का शब्द।

ठनकना दे० (क्रि०) ठन ठन शब्द करना, टीसना, धमकना, सिर का दुखना, अपने किसी काम को दुःखपूर्वक करना हानिकारी समझना।

ठनगन दे० (पु०) मङ्गल कार्यों के अवसर पर नेग पाने वालों का अधिक नेग पाने के लिये मचलना, किसी वस्तु के लिये बालकों का मचलना।

ठनठन-गोपाल दे० (पु०) छूंछी वस्तु, निर्धन मनुष्य।

ठनठनाना दे० (क्रि०) ठनठन शब्द करना, झनझनाना, झनकाना।

ठनाका दे० (पु०) ठन शब्द, झङ्कार, झनकार।

ठनाठन (क्रि० वि०) झनकार के साथ रुपये का शब्द।

ठन्ना दे० (क्रि०) परखना, जाँचना, ठहरना, निश्चय होना।

ठपना दे० (क्रि०) छपना, छपजाना, चिन्ह करना, दाग लगाना। [जाता है, मुहर, मोहर।

ठप्पा दे० (पु०) छपने की वस्तु, यन्त्र जिससे छापा

ठमक दे० (स्त्री०) रुक रुक कर चलना, लचक।

ठमकना दे० (क्रि०) ठहरना, ठहर जाना, अटक कर चलना, किसी की प्रतीक्षा करने के लिये ठहरना, किसी की बाट ताकने के लिये ठहरना।

ठरक दे० (पु०) खुर्राटा, घुर्राना, नासिकाध्वनि, जो कफप्रकृति के मनुष्यों को सोने पर होती है।

ठरन दे० (स्त्री०) अधिक शीत, बहुत जाड़ा, अधिक जाड़े से अङ्गों का शिथिल होना, ठिठुरन।

ठरना दे० (क्रि०) ठिठुर जाना, शिथिल होना।(पु०) मादकवस्तु विशेष, एक प्रकार की मदिरा।

ठरिया दे० (पु०) एक प्रकार की मिट्टी का बना हुआ हुक्का। [मादक वस्तु विशेष।

ठर्रा दे० (पु०) मोटा सूत, तनी, भद्दा जूता विशेष,

ठलुआ, ठलुवा दे० (वि०) निकम्मा, बेकाम।

ठवन, ठवनि दे० (स्त्री०) चाल, गति, उठने की रीति विशेष, खड़े होने की विशेष रीति, अकड़ाई की चाल, ऐंठ की चाल, रपेटवाली चाल, बैठक, स्थिति, आसन, मुद्रा, अन्दाज़।

ठवर दे० (पु०) ठौर, स्थान।

ठस दे० (वि०) ठोस, कड़ा, गफ, दृढ़, भारी, सुस्त, मट्ठर, खोटा (रुपया), भरा पूरा, धनाढ्य (ठस आदमी), कृपण, हठी।

ठसक दे० (स्त्री०) दर्प, गर्व, अहङ्कार, अकड़, वृथा महत्व, निष्कारण महत्व, देखौआ, प्रतिष्ठा, गर्वीली चेष्टा।

ठसकदार दे० (वि०) घमंडी, शानदार। [टूट जाना।

ठसकना दे० (पु०) ठुसकना पटकना, टूटना,

ठसका दे० (पु०) पटकाव, अहङ्कार, अभिमान, ठसक, सूखी खाँसी—"खाँसी का दो तीन वार ठसका अभी आ आता है।"

ठसनी दे० (स्त्री०) ठाँसने की सामग्री, जिसमें कोई चीज़ ठाँसी जाती है, शलाका, बन्दूक का गज़।

ठसाठस दे० खचाखच, ठूँस ठूँस कर भरा हुआ।

ठस्सा दे० (पु०) साँचा, आकृति, आकार, गठन, ढाँचा, अहङ्कार, अभिमान।

ठहर ठहर दे० (वि०) रह रह कर, रुक रुक।

ठहरना दे० (क्रि०) रुकना, रुकजाना, बसना, रहना, वास करना, प्रतीक्षा, बाट ताकना, टिकना, अटकाना, निश्चय होना, पक्का होना, निर्णय हो जाना।

ठहराई दे० (स्त्री०) ठहराने की क्रिया या मज़दूरी, अधिकार।

ठकुराइन दे॰ (स्त्री॰) ठाकुर की स्त्री, मालिकाइन, स्वामिनी।

ठकुरानी दे॰ (स्त्री॰) ठाकुर की स्त्री।

ठकुरायत दे॰ (स्त्री॰) स्वाधिपत्य।

ठक्कुर तद॰ (पु॰) ठाकुर, पूज्य मूर्ति।

ठग दे॰ (पु॰) गलकट्टा, चोर, धोखा देकर चोरी करने वाला, भुलावा देकर चुराने वाला, प्रतारक धोखेबाज़।—बाज़ी (स्त्री॰) ठगई, धूर्तता, ठग का काम, कपट, छल, माया।—विद्या (स्त्री॰) ठगई, धूर्तता, धोखा देने की चतुराई।—जाना (क्रि॰) छलना, ठगना, धोखा देना, बहकाना, बहका कर ले लेना।—लेना (क्रि॰) कपट करना, धूर्तता करना, चकमे में डालना, छल से ले लेना।

ठगई दे॰ (स्त्री॰) प्रतारणा, छल, धूर्ताई, धोखा।

ठगना दे॰ (क्रि॰) भुलाना, धोखा देना,प्रतारण करना।

ठगाई दे॰ (स्त्री॰) प्रतारण, धोखा, चोरी, कपट, छल, चालाकी। [वञ्चित होना।

ठगाना दे॰ (क्रि॰) ठगा जाना, प्रतारित होना,

ठगिन दे॰ (स्त्री॰) ठगनी, धूर्ता, प्रतारिका।

ठगिनी दे॰ (स्त्री॰) ठगने वाली स्त्री, धूर्ता, ठगई करने वाली, ठग की स्त्री, जो ठगई करती हो।

ठगिया दे॰ (पु॰) वञ्चक, प्रतारक, धोखेबाज़, छली, कपटी, धोखा देने वाला।

ठगी दे॰ (स्त्री॰) धूर्तता, धोखेबाज़।

ठगे (क्रि॰) ठगे, धोखा दिये, बहकाये हुए।

ठगौरी दे॰ (स्त्री॰) ठगाई, धोखा, छल, भुलावा, माया, ठगना।

ठचरा दे॰ (पु॰) झगड़ा, कलह, वैरविरोध, टंटा।

ठट्ट दे॰ (पु॰) भीड़भाड़, झुंड, समूह, दल, मण्डली, यूथ, गिरोह।

ठट्टर दे॰ (पु॰) ठठ, थाल, खपरैल मकान छाने के लिये जो बाँस से ठट्टर बनाया जाता है, मचान पर रखने के लिये बाँस का बना हुआ ठाठ।

ठट्ठा दे॰ (पु॰) हँसी, दिल्लगी, परिहास, कौतुक, मनोविनोद, दल, समूह, झुंड, भीड़।—करना (क्रि॰) हँसी ठठोली करना, उपहास करना, चिढ़ाना।—मारना (क्रि॰) हँसी करना, हँसना, उपहास करना।—मार कर हँसना (या॰) खूब हँसना, अट्टहास करना।

ठट्ठेबाज़ दे॰ (वि॰) परिहासशील, हँसोड़ा।—ी (स्त्री॰) ठट्ठा करना, हास्य करना।

ठठ दे॰ (पु॰) ठट्ठ, भीड़, मंडली, दल, समूह, कतार।

ठठक दे॰ (स्त्री॰) प्रतिबन्ध, रुकाव, अटकाव, भयभीति। [होना, भीत होना, डर जाना।

ठठकना दे॰ (क्रि॰)एकआना, अटकजाना, आश्चर्यित

ठठना दे॰ (क्रि॰) निर्माण करना, संशोधन करना, बनाना, सजाना, सजदेना, सज्जितकरना, दुःख से अधीर होकर अपना अङ्ग पीटना, स्वयं दुःख उठाना, मारना, पीटना।

ठठरा दे॰ (पु॰) खूँटि, टट्टर, आड़, घेर, घिराव, ओट।

ठठरी दे॰ (स्त्री॰) ढाँचा, आकृति, आकार का प्रथम सङ्गठन, कङ्काल, ठाठ, रथी, दुर्बल शरीर, जिसमें केवल हड्डियाँ ही शेष हों।

ठठाई दे॰ (क्रि॰) मार कर, पीट कर, मार मार कर, अति उत्साह से अति प्रसन्नता से। यथा—

एक संग नहिं होहिं भुआलू,
हँसब ठठाई फुलाउब गालू।

—रामायण।

ठठाना दे॰ (क्रि॰) लगातार मारना मारना, पीटना कूटना, सिर धुनना, मारते ही जाना।

ठठुकि दे॰ (क्रि॰) रुक कर, ठक कर, अटक कर, प्रतिबन्धित होकर।

ठठेरा दे॰ (पु॰) जातिविशेष, बर्तन बेचनेवाली जाति, कसेरा। [स्त्री, कसेरा जाति की स्त्री।

ठठेरिन, ठठेरी दे॰ (स्त्री॰) ठठेरा की स्त्री, कसेरा की

ठठोर, ठठोल दे॰ (पु॰) परिहासशील, ठट्ठेबाज़, ठठोली करने वाला।

ठठोली दे॰ (स्त्री॰) हँसी, दिल्लगी, परिहास।

ठड़ा (पु॰) खड़ा।

ठड्ढा दे॰ (पु॰) गुड्डी के बीच की लकड़ी, ढड्ढा।

ठण्ढ दे॰ (स्त्री॰) जाड़ा, शीत, शीतकाल सर्दी।

ठण्ढक दे॰ (स्त्री॰) शीतलता शीतकाल, जाड़े का समय।

ठण्ढा दे॰ (पु॰) शीतल, सर्द।—करना (क्रि॰) शीतल करना, शान्त करना, जलते अग्नि अथवा

क्रुद्ध मनुष्य को शान्त करना, ढाँदस देना, धीरज बँधाना, किसी को सुखी देख कर स्वयं प्रसन्न होना, अभिलषित सिद्धि से आनन्दित होना।—पड़ना (वा०) शान्त होना, शीतल होना, न्यून होना, घटना, क्षीण होना, क्रोध कम होना, पौरुष क्षीण होना, चपलता नष्ट होना, उत्साह का कम होना, व्रण आदि की जलन कम होना।—होना (वा०) ठंढा पड़ना।

ठण्ढाई दे० (स्त्री०) शीतलता, शैत्य, स्निग्ध, ठंढी औषधि, सौंफ, कासनी, गुलाब की पत्ती, खरबूजे की मींगी, बादाम आदि को पीस कर बनाते हैं।

ठण्ढी दे० (स्त्री०) जाड़ा, शैत्य, शीत, शीतलता।—साँस भरना (वा०) दुःख करना, पश्चात्ताप करना, हाय मारना, लंबी साँस लेना।

ठन (स्त्री०) धातु विशेष के बजाने का शब्द।—क (स्त्री०) शब्द, ध्वनि।—का (पु०) शब्द, ध्वनि।—कार (पु०) रुपये का शब्द।

ठनकना दे० (क्रि०) ठन ठन शब्द करना, टीसना, धमकना, सिर का दुखना, अपने किसी काम को दुःखपूर्वक अपना हानिकारी समझना।

ठनगन दे० (पु०) मङ्गल कार्यों के अवसर पर नेग पाने वालों का अधिक नेग पाने के लिये मचलना, किसी वस्तु के लिये बालकों का मचलना।

ठनठन-गोपाल दे० (पु०) छूंछी वस्तु, निर्धन मनुष्य।

ठनटनाना दे० (क्रि०) ठनठन शब्द करना, झनझनाना, झनकाना।

ठनाका दे० (पु०) ठन शब्द, झङ्कार, झनकार।

ठनाठन (क्रि० वि०) झनकार के साथ रुपये का शब्द।

ठन्ना दे० (क्रि०) परखना, जाँचना, ठहरना, निश्चय होना।

ठपना दे० (क्रि०) छपना, छपजाना, चिन्ह करना, दाग लगाना। [जाता है, मुहर, मोहर।

ठप्पा दे० (पु०) छपने की वस्तु, यन्त्र जिससे छापा

ठमक दे० (स्त्री०) रुक रुक कर चलना, लचक।

ठमकना दे० (क्रि०) ठहरना, ठहर जाना, अटक कर चलना, किसी की प्रतीक्षा करने के लिये ठहरना, किसी की बाट ताकने के लिये ठहरना।

ठरक दे० (पु०) खुर्राटा, घुर्राना, नासिकाध्वनि, जो कफप्रकृति के मनुष्यों को सोने पर होती है।

ठरन दे० (स्त्री०) अधिक शीत, बहुत जाड़ा, अधिक जाड़े से अङ्गों का शिथिल होना, ठिठुरन।

ठरना दे० (क्रि०) ठिठुर जाना, शिथिल होना। (पु०) मादकवस्तु विशेष, एक प्रकार की मदिरा।

ठरिया दे० (पु०) एक प्रकार की मिट्टी का बना हुआ हुक्का। [मादक वस्तु विशेष।

ठर्रा दे० (पु०) मोटा सूत, तनी, भद्दा जूता विशेष,

ठलुआ, ठलुवा दे० (वि०) निकम्मा, बेकाम।

ठवन, ठवनि दे० (स्त्री०) चाल, गति, उठने की रीति विशेष, खड़े होने की विशेष रीति, अकड़ाई की चाल, एंठ की चाल, रपेटवाली चाल, बैठक, स्थिति, आसन, मुद्रा, अन्दाज़।

ठवर दे० (पु०) ठौर, स्थान।

ठस दे० (वि०) ठोस, कड़ा, गफ, दृढ़, भारी, सुस्त, मट्ठर, खोटा (रुपया), भरा पूरा, धनाढ्य (ठस आदमी), कृपण, हठी।

ठसक दे० (स्त्री०) दर्प, गर्व, अहङ्कार, अकड़, वृथा महत्व, निष्कारण महत्त्व, देखौआ, प्रतिष्ठा, गर्वीली चेष्टा।

ठसकदार दे० (वि०) घमंडी, शानदार। [टूट जाना।

ठसकना दे० (पु०) ठुसकना पटकना, टूटना,

ठसका दे० (पु०) पटकाव, अहङ्कार, अभिमान, ठसक, सूखी खाँसी—"खाँसी का दो तीन बार ठसका अभी आ जाता है।"

ठसनी दे० (स्त्री०) ठाँसने की सामग्री, जिसमें कोई चीज़ ठाँसी जाती है, शलाका, बन्दूक का गज़।

ठसाठस दे० खचाखच, ठूँस ठूँस कर भरा हुआ।

ठस्सा दे० (पु०) साँचा, आकृति, आकार, गठन, ढाँचा, अहङ्कार, अभिमान।

ठहर ठहर दे० (वि०) रह रह कर, रुक रुक।

ठहरना दे० (क्रि०) रुकना, रुकजाना, बसना, रहना, वास करना, प्रतीक्षा, बाट ताकना, टिकना, अटकाना, निश्चय होना, पक्का होना, निर्णय हो जाना।

ठहराई दे० (स्त्री०) ठहराने की क्रिया या मज़दूरी, अधिकार।

ठहराऊ (वि०) टिकाऊ, दृढ़, मज़बूत।

ठहराना दे० (क्रि०) रखना, टिकाना, अटकाना, बसाना, रहने के लिये स्थान देना, निश्चित करना, निर्णय करना, पक्का करना, ठीकठाक करना, शर्त करना, नियत करना, निपटाना, रोकना, रोक रखना।

ठहराव दे० (पु०) रुकाव, निपटाव, ठहरने का स्थान, टिकाव, निर्णय, निश्चय, निश्चित विषय, जो वादविवाद के पश्चात् स्वीकृत हुआ हो। मन्तव्य, प्रस्ताव, विचारविशेष, जो किसी उद्देश्य से निश्चित किये जाते हैं, शर्त।

ठहरौनी दे० (स्त्री०) विवाह में देने वाले दायजे का ठहराव। [की हँसी।

ठहाका दे० (पु०) धमाका, धड़ाका, अट्टहास, ज़ोर

ठाँ, ठाँव दे० (पु०) बन्दूक की आवाज़ ठाँय, स्थान, स्थल, ठौर, ठिकाना, भूमि।

ठाँई तद्० (स्त्री०) स्थायी, बहुत दिनों तक रहने वाला, ठाँव, ठौर, पास, समीप।

ठाँउँ दे० (पु०) स्थान, ठाँव, ठौर, अवसर।

ठाँठ दे० (वि०) नीरस, बेदूध की गौ।

ठाँयँ दे० (स्त्री०) स्थान, जगह, समीप, पास।

ठाँय ठाँय दे० (स्त्री०) रगड़ा झगड़ा, बन्दूक का शब्द।

ठाँव दे० (स्त्री०) स्थान, जगह।

ठाँसना दे० (क्रि०) अयालय भरना, दबा दबा के भरना, ठूसना।

ठाकुर तद्० (पु०) ठक्कुर, देवता, देवता की मूर्त्ति, ईश्वर की मूर्त्ति, स्वामी, प्रभु, मालिक, प्रधान मुखिया, नायक, क्षत्रिय ज़मीन्दारों की माननीय पदवी, ज़मीन्दार, पहले मैथिल ब्राह्मणों को भी ठाकुर या ठक्कुर की पदवी दी जाती थी, विद्यापति ठाकुर, गोविन्द ठाकुर इत्यादि, नाई नापित।—द्वारा (पु०) मन्दिर, देवालय, देवस्थान, भगवान् का मन्दिर।—बाड़ी (स्त्री०) मन्दिर, देवस्थान बगीचा कुआँ के साथ का मन्दिर, जिस देवस्थान में बगीचा, कुआँ आदि वर्तमान हों, ठाकुरद्वारा।—सेवा तद्० (स्त्री०) देवता का पूजन।

ठाट दे० (पु०) ठठरी, तैयारी, बेशरचना, ठाम, छप्पर का ठाठ, तड़कभड़क, चमत्कार, —— —ज।

ठाटबाट दे० (पु०) सजधज, तड़क भड़क।

ठाटर दे० (पु०) टट्टर, टट्टी, ठठरी, पञ्जर, ढाँचा, बनाव।

ठाठ देखो "ठाट"।

ठाड़ दे० (वि०) ऊँचा, खड़ा, स्थित, उपस्थित।

ठाड़ा दे० (वि०) खड़ा, सीधा, लंबायमान।

ठाढ़ दे० (वि०) खड़ा, खड़ाहुआ, सीधा, उपस्थित, उपस्थित हुआ, जो पिसा न हो, उत्पन्न

"कौन चहत सीता हरि जबहीं।
ठाढ़ करत हैं कारन तबहीं॥"

—रघुनाथदास।

—ठाढ़ी (अ०) बहुत शीघ्र, जल्दी, शीघ्रता से, तुरन्त, तूर्ण, त्वरित, खड़े खड़े।

ठान तद्० (स्त्री०) समारम्भ, अनुष्ठान, चेष्टा।

ठानठू दे० (पु०) धमाका शब्द, पत्थर आदि के तोड़ने का शब्द, बन्दूक का शब्द।

ठानना दे० (क्रि०) प्रारम्भ करना, ठहराना, प्रतिज्ञा करना, निश्चय करना।

ठाना दे० (क्रि०) प्रारम्भ किया, ठहराया, निश्चय किया, विचार, दृढ़ किया, प्रतिज्ञा किया।

ठानी दे० (स्त्री०) ठहराई, विचारी।

ठाम दे० (पु०) ठाँव, ठौर, ठिकाना, स्थान, स्थल, जगह, अंदाज़, अंगेर।

ठार दे० (पु०) सर्दी, शीत, हिम, तुषार, पाला, बर्फ़।

ठाला दे० (वि०) बिना काम का, बेकार, ख़ाली, कर्महीन।

ठाली (वि०) ख़ाली, रीता।

ठासना दे० (क्रि०) भरना, ठूसना, दबाना, दबा दबा करके भरना। [ठाँव, ठौर, मौका।

ठाहर या ठाहरु दे० (स्त्री०) स्थान, जगह, स्थल,

टिक दे० (स्त्री०) स्थान या अवसर विशेष, थिगली, चकती।—ठौर (स्त्री०) टिकनेवाली जगह।

ठिकरा, ठिकड़ा दे० (पु०) खपड़ा, मिट्टी के फूटे बर्तन का टुकड़ा।

ठिकान या ठिकाना दे० (पु०) वास, वासस्थान, ठाँव, ठौर, ठाम, पता—ढूँढ़ना (क्रि०) रहने के लिये स्थान ढूँढ़ना, रोज़गार ढूँढ़ना।—लगाना (क्रि०) प्रबन्ध करना, व्यवस्था कर देना।

ठिकानी दे० (वि०) ठिकाने वाला, जिसका ठिकाना लग गया हो।

ठिकाने लगाना दे० (क्रि०) मारा जाना, मारा पड़ना, अन्त तक पहुँच जाना, अवधि प्राप्त करना, पूरा होना, मार डालना, खपा डालना, नष्ट भ्रष्ट कर डालना, पूरा करना, समाप्त कर देना, अवधि तक पहुँचा देना। [खर्व, बौना, वामन।
ठिंगना दे० (वि०) नाटा, छोटा, छोटे आकार का,
ठिठक दे० (स्त्री०) आश्चर्य में होना, भयभीत होना, आश्चर्यित होना, अचम्भित होना।—जाना (क्रि०) आश्चर्य से घबड़ा जाना।—रहना (क्रि०) अचम्भे में आकर ज्ञानशून्य होजाना, कर्तव्याकर्तव्य निर्धारण नहीं कर सकना।
ठिठकना दे० (क्रि०) ठिठक जाना, अचम्भे में आना, विस्मित होना, आकस्मिक, अद्भुत घटना से निःस्तब्ध हो जाना, चकित होना।
ठिठरना दे० (क्रि०) अकड़ना, जमना, पाले से हाथ पैर का सन्न पड़ जाना, जड़ाना। [अकड़ाई।
ठिठर, ठिठराहट दे० (स्त्री०) ठंडक, शैत्य, जाड़ा,
ठिठुर दे० (स्त्री०) ठिठर, ठिठराहट, ठंडक, अकड़ाई, जकड़।
ठिठुरना दे० (क्रि०) ठिठरना, अकड़ना, जमना, शीत से अकड़ना। [का मारा हुआ।
ठिठुरा दे० (वि०) ठिठरा हुआ, जकड़ा हुआ, पाले
ठिनकना दे० (क्रि०) धीरे धीरे रोना, शनैः शनैः रोना, सिसकना, सिसकी लेना, ठुनकना।
ठिया दे० (पु०) जगह, ठिकाना, हद का पत्थर या खंभा, थूनी, कारीगरों के काम करने का स्थान।
ठिर तद्० (स्त्री०) पाला, कड़ी सर्दी।
ठिरना दे० (क्रि०) जमना, घन होना, सख्त होना, बँध जाना, जम जाना, एकत्रित होना, कठिन होना, पाला लगना, जड़ाना।
ठिलना (क्रि०) ठेलना, ढकेलना।
ठिलिया दे० (स्त्री०) गगरी, छोटा घड़ा, मटकी, मटकनी। [का खिलौना।
ठिलवा (पु०) छोटा घोड़ा, मिट्टी का बना छोटे घोड़े
ठिलुआ (वि०) टलुआ, निकम्मा।
ठिल्ला (पु०) घड़ा, बड़ा घड़ा।
ठीक दे० (वि०) उचित, योग्य, यथार्थ, पूरा, शुद्ध, बराबर, सत्य, यथोचित, यथायोग्य, जोड़।
—आना (क्रि०) मिलना, बराबर होना, उचित घटना, जितना चाहिये उतना होना।—करना (क्रि०) शुद्ध करना, निश्चित करना, निश्चित कर लेना, दण्ड देकर सुधारना, मारना, पीटना, सुधारना।—ठाक (गु०) शुद्ध, सत्य, कृतप्रबन्ध, कृतव्यवस्था, जिसकी व्यवस्था हो गई हो, निश्चित, निर्णीत।—ठाक करना (वा०) निश्चित करना, प्रबन्ध करना।—मठीक (अ०) यथार्थ शुद्धता से, यथार्थता से, जोड़तोड़, बिलकुल ठीक।
ठीकरा, ठीकड़ा दे० (पु०) ठिकरा, मिट्टी के फूटे बरतन का टुकड़ा।
ठीकरी दे० (स्त्री०) छोटा ठीकरा, गिटकी, कङ्कड़।
ठीका दे० (स्त्री०) निश्चय, ठीक, उचित, यथार्थ, दृढ़, याजगी इजारा, काम करने के पहले ही उसके लिये मजूरी आदि का निश्चय कर लेना।
ठीकेदार दे० (पु०) ठीका लेने या देने वाला।
ठीप दे० (स्त्री०) एक प्रकार अङ्गीठी।
ठीलना (क्रि०) ढकेलना, ठेलना।
ठीवन तद्० (पु०) थूक, खखार।
ठुँहा तद्० (पु०) गद्दी, हद, सीमा, जगह।
ठुकना (क्रि०) पिटजाना, मार खाना।
ठुकराना दे० (क्रि०) लतियाना, लात से मारना, ठोकर से मारना, पैर से, या चोंच से ठोकर मारना।
ठुड्डी दे० (स्त्री०) ठोढ़ी, दाढ़ी, चिबुक, भुँजा चबेना जिसमें लावा न हो, बिना लावा का चबेना।
ठुनुक दे० (स्त्री०) सिसक, ठिनक, धीरे धीरे रोदन।
ठुनुकना ठुनकना दे० (क्रि०) सिसकना, ठिनकना, धीरे धीरे रोना।
ठुमकना दे० (क्रि०) सुडौल चलना, स्वाभाविक ऐंठन से चलना। यथा—"ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियां।"
ठुमका, ठुम्का दे० (वि०) छोटा, नाटा, ठिङ्गना, खर्व, बौना, वामन।
ठुमकी दे० (स्त्री०) पतंग की डोरी को विशेष रूप से झटका देना, रुकावट, एक छोटा गीत, खरी छोटी पूरी। (वि०) नाटी, छोटी।
ठुमरी दे० (स्त्री०) एक छोटा गीत, अफवाह, गप।
ठुमुकि (स्त्री०) मन्द गमन, रुक रुक कर चाल।

ठुसकना दे० (क्रि०) पादना, अपानवायु का त्याग, धीरे धीरे रोना, दूसरों के कथोपकथन में कड़ी बात कह देना, एक न एक अढंग लगाते रहना।

ठुसकी दे० (स्त्री०) शब्दरहित वायुत्याग, पाद।

ठुसाना दे० (क्रि०) भराना, भरवाना, ठुसवाना, ठसाना। [जो गले में पहना जाता है।

ठुस्सी दे० (स्त्री०) पटिया, एक सुवर्ण का आभूषण

ठूँठ दे० (पु०) ढूँठा बिना पत्ते की डाल, पत्ता डाल रहित वृक्ष, स्तम्भ, थूणा, स्थाणु, कटा हाथ, हथकटा मनुष्य। [दी गई हो।

ठूँठिया दे० (वि०) ठूँठ वृक्ष जिसकी शाखा काट

ठूँठी दे० (स्त्री०) खूँटी, खोटी, अन्न का डाँट।

ठेउँना, ठेघना (पु०) घुटना।

ठेंकुर (पु०) देखो अड़गोड़ा।

ठेंगना दे० (वि०) खर्व, छोटा, नाटा।

ठेंगा दे० (पु०) लाठी, लट्ठ, अँगूठा।—ठंगी (स्त्री०) लाठा लाठी, परस्पर में मारामारी।—बजाना (क्रि०) लाठी चलाना, मारामारी करना।

ठेठ (पु०) शुद्ध, केवल, अमिश्रित, प्राकृतिक, स्वभाव सिद्ध, कान का मैल।

ठेठी दे० (स्त्री०) कान का मैल, ठट्ठा। [हुआ बड़ा बोरा।

ठेक दे० (स्त्री०) टेकनी, सहारा, अवलम्ब, अन्न से भरा

ठेका दे० (पु०) ठट्ठा, टीक, ठेपी, ठेंठी, बोतल आदि का मुँह बन्द करने के लिये टेपी, रुकावट, पाएँ पर का ताल।—धिकारी (पु०) ठीकादार।

ठेकी दे० (स्त्री०) विश्राम का स्थान, जहाँ सिर का बोझा उतारने के लिये सुविधा हो।

ठेठ दे० (पु०) अमिश्रित अनमिल, बेमेल, शुद्ध।

ठेपी दे० (स्त्री०) ठेंठी ढट्टा, डाँट, काग।—मुँह में देना (वा०) आवाक् रहना, चुपचाप रहना, कुछ भी न बोलना।

ठेलना दे० (क्रि०) ढकेलना, रेलना, पेलना, धक्का देना, झोंकना, हटाना, आगे बढ़ाना।

ठेला दे० (पु०) धक्का, ढकेल, झोंक, एक प्रकार की माल लादने की गाड़ी, जिसे आदमी खींचते हैं।—ठेली (स्त्री०) धक्कमधक्का, रेलपेल।

ठेवका तद्० (पु०) वह स्थान जहाँ खेत सिंचाई के लिये जल गिरे।

ठेंघना दे० (पु०) घुटना, जानु, ठेंउना।

ठेस दे० (पु०) ठोकर, चपेट, चोट, धक्का।

ठेसना दे० (क्रि०) ठूँसना, भरना।

ठेसरा दे० (पु०) नकचढ़ा अभिमानी, गर्वीला।

ठेहरी दे० (स्त्री०) दरवाज़ों के पल्लों के नीचे की वह लकड़ी जिस पर किवाड़ों की चूल घूमती है।

ठेही दे० (स्त्री०) मारी हुई ईख।

ठैयाँ दे० (स्त्री०) जगह, स्थान।

ठैरना (क्रि०) ठहरना।

ठोंक दे० (स्त्री०) प्रहार, घात, गाड़। [दबाना।

ठोंकना दे० (क्रि०) मारना, पीटना, गाड़ना, धर

ठोंग दे० (स्त्री०) चोंच अथवा अँगुली की मार।

ठोंगना दे० (क्रि०) चोंचियाना, चोंच से बिखेरना, चिरहोरना।

ठोंगाना दे० (क्रि०) चोंचियाना, ठोंगना।

ठोंठ दे० (स्त्री०) चोंच, ठोर, ओठ, पक्षियों का ओठ।

ठोंठी तद्० (स्त्री०) चने के दाने का कोश, पोला की ठोंठी।

ठो (अव्य०) संख्या बोधक, यथा—एक ठो, दो ठो।

ठोक दे० (स्त्री०) मार कूट, मारने का शब्द, ठोकने का शब्द।

ठोकर दे० (स्त्री०) ठेस,पैर की मार, अतियाना, आघात, पैर में चोट लग जाना।—खाना (क्रि०) गिर पड़ना, लुढ़कना, भूल करना, भूल जाना, चूकना, हानि उठाना, घटी सहना।—लगना (क्रि०) पैर में चोट लगना।

ठोकरा दे० (वि०) कड़ा, कर्रा, कठिन, कठोर, सख्त।

ठोकरी दे० (स्त्री०) कई महीने की ब्यायी हुई गौ।

ठोकराना दे० (क्रि०) आप ही आप ठोकर खाना, घोड़ा आदि का ठोकर खाना।

ठोठ दे० (वि०) जड़, मूर्ख, गावदी।

ठोठरा दे० (वि०) पोपला, बिना दाँतों का मुख, खुखड़ा।

ठोड़ी, ठोढ़ी दे० (स्त्री०) ठुड्डी, चिबुक, दाढ़ी।

ठोप दे० (पु०) बूँद बिन्दु।

ठोर दे० (स्त्री०) चोंच,चञ्चु,पक्षियों का ओठ। (पु०) वल्लभ सम्प्रदायी मन्दिरों में बनाई जाने वाली एक प्रकार की मिठाई।

ठोल दे० (स्त्री०) ठोर, चीनी में पगी मोटी सी पूरी।

ढोला दे० (पु०) बुलबुल चिड़ियों का भोजन पात्र, छोटे छोटे बर्तन, जिनमें चिड़ियों को खाना और पानी देते हैं। अंगुलियों का पर्व, गाँठ।

ढोस दे० (वि०) पोढ़ा, ससार, कठोर, दृढ़, घना, अन्त:सार-युक्त, भीतर से भरा हुआ, भीतर से खोखला नहीं।

ढोसना दे० (क्रि०) ठासना दबाना, भरना, दबा दबा के भरना।

ढोसा दे० (पु०) ढेला या अंगूठा, सोने या चाँदी की गोली, जिस पर देवता का आवाहन और पूजन किया जाता है।

ठाहना (क्रि०) टिकाना, तलाश करना।
" जो अपनो पद पाऊँ सो ठाँहौं। "
—केशव।

ठोहर दे० (पु०) धकाल, सेवी, सदर्प।

ठौनी (स्त्री०) ढवनि, स्थिति, स्थान।

ठौर दे० (स्त्री०) ठाँव, ठिकाना, स्थल, जगह, प्रबन्ध, मौका, घात, अवसर, जीविका का स्थान। —रहना (क्रि०) वहीं रहना, खेत रहना, मारा जाना, मारा पड़ना।

ड

ड यह व्यञ्जन का तेरहवाँ वर्ण है, मूर्द्धा से उच्चारण होने के कारण इसे मूर्द्धन्य कहते हैं।

ड सं० (पु०) शिव, महादेव, पशुपति, भव, हर, शब्द, ध्वनि, नाद, वाड़वानल।

डकई दे० (पु०) केले की एक जाति।

डकरा दे० (पु०) विष, एक प्रकार की औषधि, काली मिट्टी। (वि०) तीक्ष्ण, तीखा, कड़ु, जिसकी गन्ध फैलने वाली हो, तीक्ष्णगन्धि, कटुगन्धि।

डकराना दे० (क्रि०) बैल या भैंसे की बोली।

डकवाहा (पु०) चिट्ठी बाँटने वाला।

डकार दे० (स्त्री०) उद्गार, भोजन से तृप्ति का सूचक मुँह द्वारा निकलने वाला पेट का एक शब्द विशेष।—जाना (क्रि०) खा जाना, पचा जाना, किसी से कुछ लेकर देने की इच्छा न करना। —बैठना (क्रि०) पचा लेना पचा कर निश्चिन्त बैठना, किसी से लिये हुए को भूल जाना। —लेना (क्रि०) डकारना, डकार जाना, हस्त-गत कर लेना, अधीन करना।

डकारना दे० (क्रि०) डकार लेना, गरजना, पचा जाना।

डकैत दे० (पु०) डाकू, चोर, बटमार, लुटेरा, बलपूर्वक पर आक्रमण करके उसकी वस्तुओं को छीन लेने वाला। [समूह।

डकैती दे० (पु०) डाकू, डकैत, डकैतों का पुञ्ज, डकैत।

डकैती दे० (स्त्री०) डाका मारने का काम, बटमारी।

डकौत दे० (पु०) } भड़रिया, भड्डरी के वंशज,
डकौतिया दे० (पु०) } एक सङ्कर जाति, ये ज्योतिष का व्यवसाय करते हैं और शनि आदि का निकृष्ट दान लेते हैं। कहते हैं, एक भड्डरी नाम के ब्राह्मण ज्योतिष विद्या के पारङ्गत विद्वान् थे, वह कहीं बाहर गये हुए थे, उनके विचार में एक ऐसा मुहूर्त दो दिन के बाद आने वाला था, जिस मुहूर्त के गर्भ से बड़े भारी विद्वान् का उत्पन्न होना निश्चित होता था। वह गृह के लिये प्रस्थित हुए परन्तु वन का मार्ग से भूल जाने से ठीक समय अपने घर नहीं पहुँच सके। मुहूर्त आ पहुँचा, परन्तु भड्डरी जी अभी वन में ही थे। वह बड़े चिन्तित थे। उसी समय एक ग्वालिन जो कहीं जा रही थी वहीं उपस्थित हुई। ज्योतिषी जी ने उससे सब बातें कह कर इस विषय में सम्मति पूछी। उसने कहा मुहूर्त निकट है, आप किसी प्रकार घर पहुँच नहीं सकते, ऐसे मुहूर्त का निकल जाना, जिसमें एक बड़े विद्वान् के उत्पन्न होने की सम्भावना है उचित नहीं है। मैं यहाँ उपस्थित हूँ। अतएव यह सम्भव है कि आपके औरस और मेरे गर्भ से उतनी धार्यशाली सन्तति न हो, तथापि यह निश्चित है कि सामान्य की अपेक्षा वह अधिक वीर्यवान् हो, क्योंकि मुहूर्त का भी तो कुछ बल है। भड्डरी जी इस बात पर रज़ामन्द हुए। उन्हीं से उत्पन्न डकौतिया हैं।

डग दे० (पु०) कदम, फाल, विन्यास।

डगडगाना दे० (क्रि०) हिलना, हिलते डुलते चलना, कम्पित होकर चलना, काँपते चलना, भड़भड़ करना।

डगना दे० (क्रि०) हिलना, चञ्चल होना, स्थिर नहीं रहना, फिसल जाना, काँपना, खिसकना, चूकना, डिगना।

डगमग दे० (वि०) चञ्चल, अस्थिर, काँपने वाला, स्थिर न रहने वाला, चलायमान, डाँवाडोल।

डगमगाना दे० (क्रि०) हिलना, चञ्चल होना, डाँवाडोल होना, काँपना, लड़खड़ाना, चलायमान होना।

डगमगानि दे० (क्रि०) चञ्चल हुई, डगमग हुई, डाँवाडोल हुई, हिली, काँपी।

डगर दे० (स्त्री०) मार्ग, रास्ता, राह, पथ, पद्धति, पैंडा। यथा—"प्रेमनगर की डगर कठिन है जहँ रगरेज़ सयाना।"

डगरना दे० (क्रि०) हिलना, फिरना, फिसल जाना, ढालवीं भूमि से लुढ़क जाना, रास्ते रास्ते घूमना।

डगरा दे० (पु०) रास्ता, बाँस का बना हुआ टोकरा जो गोल और छिछला होता है।

डगरिया दे० (स्त्री०) डगर, रास्ता, राह, मार्ग, पथ, यथा—"कहाँ गये मनमोहन श्याम, डगरिया भूल न पड़ी।"—सूरदास।

डगा (पु०) डुग्गी बजाने का डंडा।

डगै दे० (क्रि०) हिलै, मसकै, सरकै, चलै, टसकै, कम्पित हो, चलायमान हो। [डीला घोड़ा।

डग्गा दे० (पु०) दुर्बल घोड़ा, अस्थिपञ्जरावशिष्ट घोड़ा,

डङ्क दे० (पु०) चमक, बिच्छू का काँटा जो ज़हरीला होता है, विषैला काँटा, कलम की जीभ, निब, डङ्क मारा हुआ स्थान या घाव।—मारना (क्रि०) बिच्छू या बर्रे का काटना।

डङ्का दे० (पु०) वाद्यविशेष दुन्दुभी बाजा, नगारा, धौंसा, नगाड़ा, युद्धयात्रा विवाहयात्रा आदि में यह बजाया जाता है। [जाने वाली स्त्री।

डङ्किनी दे० (स्त्री०) डाकिन, भूत प्रेत की विद्या

डङ्कियाना दे० (क्रि०) डङ्क से मारना, डङ्क से चोट करना, डङ्क मारना, ज़हरीला काँटा चुभाना।

डङ्कीला दे० (वि०) डङ्कवाला, ज़हरीले काँटे वाला।

डङ्गर (पु०) चौपाया, गाय, बैल, भैंस आदि।

डङ्गरी (स्त्री०) ककड़ी विशेष, लंबी ककड़ी।

डट दे० (पु०) निशाना।

डटना दे० (क्रि०) उद्यत रहना, तैयार रहना, प्रस्तुत रहना, थमना, रुकना, डट जाना, प्रस्तुत होकर खड़ा रहना। [करना।

डटाना (क्रि०) सटाना, भिड़ाना, जमाना, लगा

डटाई दे० (स्त्री०) डटाने की मज़दूरी, डटाने का काम।

डटैया दे० (वि०) डटाने वाला, उद्यत, प्रस्तुत।

डट्टा दे० (पु०) डाट, बोतल आदि का मुँह बन्द करने की वस्तु, बड़ी मेख, साँचा, हुक्के का नेचा।

डढ़मुंडा दे० (वि०) दाढ़ी रहित, जिसकी दाढ़ी मूँड़ दी गई हो। [वाला।

डढ़ियल दे० (वि०) दाढ़ी वाला, बड़ी दाढ़ी

डढ़ुआ } दे० (वि०) जला हुआ, दग्ध, भस्मीभूत
डढ़ोई } (पु०) तेल विशेष जो जला के निकाला जाता है, पातालयन्त्र से निकाला हुआ तेल।

डठी दे० (पु०) डाँठी, भेंटी, टहनी, डाँड, अन्न या फल आदि का डाँड, जिस लकड़ी के सहारे वे वृक्ष में लगे रहते हैं।

डण्ड तद्० (पु०) दण्ड, अपराध का प्रायश्चित्त, अपराधी को उसके अपराध की गुरुता और लघुता के अनुसार सज़ा देना, जिसके अर्थदण्ड, शरीरदण्ड आदि कई भेद हैं। व्यायामविशेष, एक प्रकार की कसरत जिसमें दोनों हाथ और पाँवों के बल पर शरीर का सञ्चालन किया जाता है।—पेल (पु०) पहलवान, कसरती जवान।

डण्डवत् तद्० (पु०) दण्डवत्, दण्ड के समान समस्त अङ्गों से गिरना, भूमिस्थ होकर प्रणाम करना, अष्टाङ्ग प्रणाम करना।

डण्डवार (पु०) ऊँची दीवार, चारदीवारी।

डण्डमी (पु०) करद, दण्ड देने वाला दण्डित।

डण्डा तद्० (पु०) दण्ड, डण्डा, लट्ठ, लाठी सोंटा, पताका की लकड़ी, झण्डे की लकड़ी।

डण्डाडोली दे० (स्त्री०) बालकों का एक खेल।

डपिडया दे० (पु०) स्त्री का वस्त्र विशेष, स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा, दुपट्टा, ओढ़नी, बाज़ार का कर उगाहने वाला।

डण्डी तद्० (स्त्री०) मुठिया, दस्ती, हत्था, बेंट, कुल्हाड़ी, फरसा आदि शस्त्रों में लगाई हुई लकड़ी, पकड़ने की लकड़ी, नाल-पुष्प के नीचे का लम्बा पतला भाग, झप्पान, लिङ्गेन्द्रिय। काष्ठविशेष, जो तराज़ू के पलड़ों में लगाया जाता है। (पु०) दण्डी, संन्यासी जो दण्ड धारण करते हैं। पगडण्डी, चिन्ह, पदचिन्ह तुम मार्ग, चोर गली। [रेखा, सीधी लकीर या लीक।

डण्डीर, डँडीर दे० (स्त्री०) सीधी धारी, सीधी

डण्डौत तद्० (पु०) दण्डवत, प्रणाम।

डपटना दे० (क्रि०) डाँटना, दबाना, बड़े शब्दों से तिरस्कार करना, सुधारने के लिये डाँट बताना।

डपोरशङ्ख तद्० (पु०) जो कहे बहुत पर दे या करे कुछ भी नहीं, देखने में चतुर किन्तु वास्तव में कम समझ, बड़े डीलडौल का मूर्ख।

डप्पू दे० (वि०) बहुत मोटा, बहुत बड़ा।

डफ दे० (पु०) बड़ी खजरी, एक प्रकार के बाजे का नाम, व्रज में इसी पर होली गाते हैं।

डफला दे० (पु०) डफ नाम का एक प्रकार का बाजा।

डफली दे० (स्त्री०) खंजरी। [मारना, ज़ोर से रोना।

डफारना दे० (क्रि०) कूक मारना, चीख मारना, दहाड़

डफाली दे० (पु०) डफ बजाने वाला, खंजरी पर चमड़ा चढ़ाने वाला, डफ बजा कर भीख माँगने वाला, एक प्रकार का मुसलमान फ़क़ीर।

डब दे० (पु०) बल, सामर्थ्य, शक्ति, पराक्रम, जेब, थैला, पतला चमड़ा जो कुप्पा आदि बनाने के काम आता है।

डबकना दे० (क्रि०) चमत्कार होना शोभित होना, जगमगाना, चमकना, टीस मारना, लँगड़ा कर चलना। [मोटा, स्थूल।

डबका दे० (पु०) ताज़ा, कुएँ का टटका जल। (वि०)

डबगर दे० (पु०) चर्मकार, मोची, चमड़े को साफ़ करने वाला, चमड़ा कमाने वाला।

डबडबाना दे० (क्रि०) आँखें भर आना, आँसू आना, कण्ठ रुक आना, अधिक हर्ष या शोक से शब्द न निकलना।

डबरा दे० (पु०) सीधी भूमि, पङ्किल भूमि, खिचाव, दरारी, गन्दे जल का छोटा तालाब, गड्ढा, गँवई का वह छोटा तालाब, जिसमें भैंस या सुअर बैठ कर पानी गन्दा कर देते हैं।

डबरिया दे० (वि०) खब्बहत्था, बाँयाँ हत्था, बायें हाथ से काम करने वाला।

डबरी दे० (स्त्री०) छोटा ताल।

डबस दे० (पु०) रक्षा, चिन्ता, व्यवस्था, तैयारी, जलयात्रा के उपयुक्त वस्तुओं का भाण्डार, समुद्र यात्रा के उपयोगी वस्तु।

डबा दे० (पु०) डब्बा पानी का गढ़ा।

डबाँडोल (गु०) डवाँडोल, अस्थिर।

डबिया दे० (स्त्री०) छोटा डब्बा।

डबोना दे० (क्रि०) डुबाना, बोरना, जल में गोता खिलाना, उजाड़ना, नष्ट भ्रष्ट करना, बिगाड़ना।

डब्बा दे० (पु०) बड़ी डिबिया, सन्दा, कुप्पा, रेल-गाड़ी का खाना, धातु का काठ का पात्र विशेष।

डब्बू, डबुआ दे० (पु०) लोहे या पीतल का कलछा जिससे बड़े कामों में दाल आदि परोसी जाती है।

डभकना (क्रि०) जल में डूबना, उतराना। [मटर।

डभाका (पु०) कुएँ का ताज़ा पानी, सुना हुआ

डभकौरी (स्त्री०) उरद की दाल की बरी।

डमर तद्० (पु०) डर से भागना, भय के कारण भागना, राजा को अपने समान अन्य राजा का भय, अप्रकलह। [दर्द, गठिया।

डमरुआ दे० (पु०) घुटने की गाँठ का रोग, जोड़ों का

डमरू तद्० (पु०) वाद्य विशेष, शिव जी के बजाने का बाजा, कापालिक योगियों के बजाने का बाजा, चमत्कार, आश्चर्य, अद्भुत।—मध्य (पु०) दो द्वीपों को आपस में जोड़ने वाला एक प्रकार का भूमि खण्ड विशेष, वह भूमि जिससे दो टापू आपस में मिले रहते हैं।—यंत्र (पु०) दवाई तैयार करने का एक यंत्र। [का बाजा।

डम्फ दे० (पु०) खंजरी के आकार का एक प्रकार

डयन तद्० (पु०) [डि+अन्ट] नभोगमन, आकाशमार्ग में चलना, उड़ना, उड़ कर चलना, पक्षी की गति। [शीघ्र, दहशत।

डर तद्० (पु०) भय, त्रास, भीति, शङ्का, आतङ्क,

डरना तद्० (क्रि०) भय करना, त्रास पाना शङ्का करना।
डरपति (क्रि०) डरती है, भयभीत होती है।
डरपना तद्० (क्रि०) भय खाना, डरना, त्रस्त होना।
डरपाना दे० (क्रि०) डराना, भयभीत करना।
डरपे दे० (क्रि०) डरे, डर गये, भयभीत हुए।
डरपोक तद्० (वि०) डरने वाला, भीरु डरवैया।
डरपोकना तद्० (वि०) डरनेवाला, भीरु डरपोक।
डरवैया तद्० (वि०) भयभीत, भीरु, डरपोक।
डराऊ तद्० (वि०) डराने वाला, भयङ्कर, भयानक, भयावना।
डराक तद्० (वि०) डरने वाला, भीरु, भीरु।
डराना तद्० (क्रि०) भय देना, डरवाना, भय दिखाना, भीत करना।
डरालु तद्० (वि०) भीरु, डरपोक।
डरावना तद्० (वि०) भयदायक, भयानक, भयङ्कर।
डरावा (पु०) चिड़ियों के डराने की एक प्रतिमा।
डरी दे० (स्त्री०) डली, छोटे छोटे टुकड़े, डर गई।
डरीला दे० (वि०) डारवाला, टहनीदार।
डरौना दे० (वि०) डराऊ, डरावना, भयानक।
डल दे० (पु०) टुकड़ा, खण्ड। तद्० (स्त्री०) झील।
डलवा दे० (पु०) टोकरा, दौरा।
डलवाना दे० (क्रि०) झोंकवाना, गिरवाना, भरवाना, फेंकवाना। [खण्ड।
डला दे० (पु०) डलवा, टोकरा, बड़ा टुकड़ा, ढोंका,
डलिया दे० (स्त्री०) छोटी टोकरी, बाँस की बनी फूल रखने की छोटी टोकरी।
डली (स्त्री०) टुकड़ा, छोटा टुकड़ा, टूक खण्ड।
डस दे० (स्त्री०) तराजू की रस्सी, जिससे पलड़े डंडी में बाँधे जाते हैं। सूत, सूत की डोरी, मदिरा विशेष, खीर। (क्रि०) काट, छेद।
डसन (स्त्री०) डसना, काटना।
डसना दे० (क्रि०) डङ्क मारना, छेदना, काटना, पतली धार वाली चीज़ से काटना, साँप का काटना, बढ़ियाना, चुभाना, गड़ाना।
डसाना (क्रि०) कटवाना, बिछाना, बिछौना बिछाना।
डसि दे० (क्रि०) डस कर, डस के, काट के।
डसौना दे० (पु०) डसाने की वस्तु, बिछौना, बिस्तर, बिछना।
डहक दे० (पु०) गुफा, कन्दरा, खोह, छिपने की जगह।
डहकना दे० (क्रि०) ठोंकना, लालच करना, बिल-खना, निराशा से दुःखित होना, बिगड़ना, छल करना, छितराना।
डहकाना दे० (क्रि०) खोना, नष्ट करना, निराश करना, निराश छोड़ना, बिगाड़ना, धोखा देना, ठगना, सताना।
डहकि दे० (क्रि०) डहक के, ठगा कर, धोखे में आकर।
डहडहा दे० (वि०) लहलहा, हरा भरा, ताज़ा, प्रफुल्ल, खिला हुआ, प्रफुल्लित।
डहडहाना दे० (क्रि०) खिलना, विकसना, विकसित होना, खिल जाना, प्रफुल्लित होना, हरा भरा होना।
डहन तद्० (पु०) डैना पर, पक्ष। (स्त्री०) जलन, दाह।
डहर दे० (स्त्री०) डगर, मार्ग, रास्ता, राह, पथ, कुल्हड़, मिट्टी का बड़ा बरतन जिसमें अनाज भरा जाता है।
डहरिया दे० (स्त्री०) डहर, डगर, मार्ग।
डहू (पु०) बड़हर का पेड़ तथा फल।
डाँक दे० (पु०) चाँदी या ताँबे का अत्यन्त पतला पत्तर। (स्त्री०) वमन, उल्टी।
डाँकना दे० (क्रि०) लाँघना, फाँदना, वमन करना।
डाँग दे० (स्त्री०) पर्वत के ऊपर की भूमि, शिखर, जङ्गल, वन। (पु०) कूद, फलाँग।
डाँगर दे० (पु०) पशु, बलहीन पशु दुर्बल पशु, मूली की पत्ती। (वि०) मूर्ख, दुबला।
डाँट (स्त्री०) अधीनता, अधिकार, दबाव।
डाँट डपट दे० (स्त्री०) तिरस्कार, अपराधी को साव-धान करने के लिये तिरस्कार। [करना।
डाँटना दे० (क्रि०) ताड़ना, दबाना, घुड़कना, भर्त्सन
डाँठल दे० (पु०) डण्ठल, डण्डी, डाँठी।
डाँठी दे० (स्त्री०) डण्ठल, शाखी, डाँड डण्डी।
डाँड़ दे० (पु०) दण्ड, बल्ला, अपराधी को सज़ा, [वाग्दण्ड धिग्दण्ड अर्थदण्ड शरीरदण्ड, समाज दण्ड आदि इसके भेद हैं।] नाव चलाने वाली बाँस की बल्ली, डाँड़ा, रीढ़, पीठ की हड्डी, लकड़ी, छड़ी, छड़। —भरना (क्रि०) जुर्माना देना, दण्ड देना। —लगाना (क्रि०) जुर्माना वसूल करना।
डाँड़ना दे० (क्रि०) बदला लेना, सज़ा करना, दण्ड देना, शास्ति देना।

डाँडा दे० (पु०) मेंड़, सिवाना, सीमा, किसी देश ग्राम आदि की अवधि, खेत की सीमा।

डाँडी दे० (पु०) कर्णधार, खेवैया, नाव चलाने वाला, माँझी।

डाँदरी तद्० (स्त्री०) भुनी हुई मटर की फली।

डामाडोल दे० (पु०) अनिश्चित, अव्यवस्थित, इधर से उधर, अस्थिर।

डाँवू दे० (पु०) दलदल में उत्पन्न होने वाला नरगट।

डाँवरा तद्० (पु०) लड़का, बेटा, पुत्र।

डाँवरी तद्० (स्त्री०) लड़की, बेटी। [पैदा न हो।

डाँवरू दे० (पु०) बाघ का बच्चा, बच्चा जो बहुत

डाँवाडोल दे० (वि०) चञ्चल, विचलित, अस्थिर।

डाँस दे० (पु०) बड़ा मच्छड़, बड़ी मक्खी।

डाइना तद्० (स्त्री०) चुड़ैल, राक्षसी, टोनहाई, कुरूपा एवं कर्कशा स्त्री।

डाक दे० (पु०) घोड़े आदि के बदलने या विश्राम का स्थान, चौकी। (स्त्री०) चिट्ठी पत्री आदि को शीघ्र भेजने का प्रबन्ध, मतदान, उग्र गन्ध, जहाज़ का स्टेशन, नीलाम की बोली।—ख़ाना, —घर (पु०) पत्रादि के आने जाने का दफ़्तर।—गाड़ी (स्त्री०) सबसे तेज़ चलने वाली गाड़ी।—बंगला दे० (पु०) वह इमारत जो सरकार की ओर से यात्रियों के ठहरने को बनी हो।—महसूल दे० (पु०) वह द्रव्य जो डाक द्वारा किसी माल को भेजने या मँगाने में लगे।—मुंशी दे० (पु०) डाकघर का बाबू, क्लार्क, पोस्टमास्टर।—व्यय दे० (पु०) डाक महसूल। [देना, उल्लंघन करना।

डाकना दे० (क्रि०) वमन करना, ओकना, उग्र गन्ध

डाकर (पु०) तालाबों की सूखी मिट्टी।

डाका दे० (पु०) बलात्कार से अपहरण, ज़बरदस्ती छीन लेना, चोरों का धावा, छापा, आक्रमण।—ज़नी (स्त्री०) लूटना, डाका मार कर सम्पत्ति छीन लेना।—पड़ना (क्रि०) लूट जाना, डाके से चोरी हो जाना, बलात्कार से अपहरण हो जाना, धावा पड़ना।—डालना (क्रि०) रास्ते चलते हुए का माल बलात्कार से छीन लेना, बलपूर्वक आक्रमण करना।—देना (क्रि०) लूटना, छीनना, हस्तगत कर लेना।

डाकिन, डाकिनी दे० (स्त्री०) डाइन, चुड़ैल, प्रेतिनी, जन्तर मन्तर जानने वाली स्त्री, योगिनी।

डाकिया दे० (पु०) डाकू, डाका डालने वाला, डाक ले जाने वाला, पियून, पोस्टमैन, चिट्ठीरसा।

डाकी दे० (वि०) खाऊ पेटू, बहुत खाने वाला, औदरिक, शक्ति से अधिक काम करने वाला। (स्त्री०) वमन, क़ै।

डाकू दे० (पु०) डकैत, बलात्कार पूर्वक अपहरण करने वाला, दस्यु, साहसी, बटमार, लुटेरा।

डागा (पु०) नगाड़ा बजाने की लकड़ी।

डाट दे० (स्त्री०) घुड़की, धमकी, तिरस्कार, भर्त्सना, अनादरसूचक शब्दों का प्रयोग, झिड़की, डपट, टेक, रोक, डाग, डाट की रोक।

डाटना दे० (क्रि०) धमकाना, घुड़कना, झिड़कना, बरतना मुँह बन्द करना, रोक रखना, कस कर खाना, बड़ी सजधज से कपड़े पहनना।

डाढ़ दे० (स्त्री०) पिछले बड़े दाँत जिनसे भोजन पीसा और चबाया जाता है।

डाढ़ा तद्० (स्त्री०) दावानल, आग।

डाढ़ी दे० (स्त्री०) दाढ़ी, दाढ़ का दूसरा भाग, ठुड्डी, गालों पर के बाल। [कठिन।

डाढ़े दे० (क्रि०) जलाने, गरम किये। (पु०) लपट,

डाब दे० (पु०) नारियल का कच्चा फल, परतला, जिसमें तलवार लटकाई जाती है। डाभ दर्भ, कुश।

डाबर दे० (पु०) पात्र विशेष जिसमें हाथ धोया जाता है, चिलमची, गड्ढा, गेरू तालाब। (वि०) गन्दला, मैला, कलुषित, मटमैला।

डाभ तद्० (पु०) कुश, कच्चा नारियल।

डामर तद्० (पु०) शिवोक्त शास्त्रविशेष, तन्त्रभेद, समान राष्ट्र का भय, परचक्रभय, धूम, राष्ट्र, सर्वस्व।

डामल दे० (स्त्री०) जन्ममियाद, जन्म क़ैद।

डामाडोल दे० (वि०) अस्थिर, चञ्चल।

डायन दे० (स्त्री०) डाकिन, चुड़ैल।

डार, डाल दे० (स्त्री०) शाखा, डाल, डाली। (क्रि०) फेंक कर, गिराकर—की डार (वा०) झुंड का झुंड, दल का दल, पंक्ति की पंक्ति, टोली, जत्था, समूह, शाखा की शाखा।

डारना दे० (क्रि०) डालना, लगाना, फेंकना, पहनाना, उड़ेलना, उमलना।

डारिम तद्० (पु०) दाड़िम, अनार, अनार का फल।

डाल दे० (स्त्री०) शाखा, टहनी, डाच।

डालना दे० (क्रि०) नाचे गिराना, छोड़ना, मिलाना, घुसाना, सुला देना, विन्ह डालना, पहनना, मार देना, पेट गिराना, कै करना, किसी स्त्री को पत्नी की तरह रखना, लगाना। [डलिया

डाला दे० (पु०) डोला, बड़ी डाली, दौरा, बड़ी

डालिम तद्० (पु०) दाड़िम, अनार का फल।

डाली दे० (स्त्री०) भेंट, उपहार, फल आदि उपहार में भेजना, फलों की टोकरी, शाखा, फूल रखने का पात्र, जो प्राय बाँस का बनता है।

डावर दे० (पु०) मदिरा गड़हा। [चढ़ाई।

डासन दे० (पु०) बिछौना, दसौना, बिस्तरा, आसन,

डासना दे० (क्रि०) बिछाना, बिस्तर बिछाना बिछौना करना।

डासनी दे० (स्त्री०) खाट, चारपाई।

डासि दे० (क्रि०) बिछा कर, गिरा कर, फेंक कर।

डासी दे० (स्त्री०) बिछाई, डाली पसारी, फैलाई।

डाह तद्० (स्त्री०) दाह, विद्वेष, द्रोह, जलन, डाह ईर्षा।

डाहना तद्० (क्रि०) डाह रखना, दुःख देना।

डाही तद्० (वि०) द्रोही, दाही, ईर्षी, क्रोधी, मन्दाग्नि रोगी।

डिगना दे० (क्रि०) हिलना, डगमगाना, अस्थिर होना, प्रतिज्ञाभ्रष्ट होना, शर्त से बदल जाना, हटना, थरथराना, काँपना।

डिगहि दे० (क्रि०) हटता है, सरकता है, टलता है।

डिगाना दे० (क्रि०) हिलाना, कँपाना, चलायमान करना, प्रतिज्ञाभ्रष्ट करा देना, विचलित करना।

डिग्गी (स्त्री०) छोटा तालाब बावली तालाब।

डिंगर दे० (पु०) मोटा स्थूल, धूर्त, ठग, धोखेबाज, दास, सेवक, नौकर।

डिङ्गल तद्० (वि०) नीच दूषित। (स्त्री०) राज पूताने की एक भाषा जिसमें वहाँ के भाट और चारण कथा करते हैं।

डिण्डारा तद्० (वि०) दृढ़िमान्, माँसवाला, दृढ़ शक्तियुक्त।

डिठौरा (पु०) काजल का टीका नजर न लगे इस लिये यह छोटे बच्चों के माथे पर लगाया जाता है।

डिढ़ाना (क्रि०) मजबूत करना, दृढ़ करना।

डिंडिम तद्० (पु०) डुग्डुगी, डुग्गी, ढिंढोरा।

डिंडिर तद्० (पु०) समुद्र का फेन, समुद्र का झाग।

डिबिया दे० (स्त्री०) ढक्कनदार काठ या धातु का एक प्रकार का गोल पात्र, छोटा डिब्बा।

डिब्बा दे० (पु०) बड़ी डिबिया।

डिब्बी दे० (स्त्री०) डिबिया।

डिम तद्० (पु०) समाज, पाखण्ड, दम्भ, धूर्त, प्रलय।

डिमी तद्० (वि०) पाखण्डी, दम्भी।

डिम तद्० (पु०) समाज, प्रलय।

डिमडिमी दे० (स्त्री०) डुग्गी डुग्डुगी, मुनादी ढिंढोरा।

डिम्भ तद्० (पु०) पाखण्ड, भय, त्रास, लूटपाट, बिना हथियार की लड़ाई, धुम्धुमा खड़ा, फिलड़ी, हलचल, कीड़े का छोटा बच्चा।

डिम्भक तद्० (पु०) शाल्व नगर के राजा ब्रह्मदत्त का पुत्र, इसके सौतेले भाई का नाम था हंस। महादेव ने इसको अवध्य बनाया था, देवता असुर दानव गन्धर्व आदि कोई इसको मार नहीं सकता था। विरूपाक्ष और पृथूदर नामक दो महादेव के गण इनकी रक्षा के लिये सर्वदा इनके पास रहा करते थे। इन लोगों ने एक बार दुर्वासा ऋषि को बड़ा तङ्ग किया, उनके दण्ड कमण्डलु आदि तोड़ फोड़ दिये। दुर्वासा ने अपने तिरस्कार का हाल श्रीकृष्ण से कहा श्रीकृष्ण हंस और डिम्भक के साथ युद्ध करने के लिये उद्यत हुए। श्रीकृष्ण हंस के साथ युद्ध करते करते उसको बड़ी दूर तक भगा ले गये, डिम्भक सात्यकि से युद्ध करता था। डिम्भक ने समझा श्रीकृष्ण द्वारा हंस मारा गया, ऐसा समझ कर वह यमुना में घुस गया अपनी जिह्वा उखाड़ कर उसने आत्महत्या कर ली। कहते हैं आत्महत्या के पाप से डिम्भक को बहुत दिनों तक नरकवास का दुःख भोगना पड़ा।

डिम्भिका तद्० (स्त्री०) कामिनी कामुकी, जलविम्ब, जल बिन्दु।

डिम्भ तद्० (पु०) [डिम्भ + अच्] शिशु, बालक, मूर्ख, अनाड़ी, अज्ञान, डिम्ब, कपट, पशुशावक,

पकड़ा।—चक्र (पु०) मनुष्यों का शुभाशुभ बताने वाला एक प्रकार का चक्र।—ज (पु०) अण्डज, द्विज, द्विजन्मा, पक्षी, चिड़िया, शकुन

डिम्भक तद्० (पु०) बालक, शिशु। [मुँहा बच्चा।

डिम्भा तद्० (स्त्री०) बच्चा, गदेला, अति शिशु दुध-

डींग दे० (पु०) बड़ाई, अहङ्कार, दर्प, अभिमान, गर्व।—मारना (क्रि०) घमण्ड करना, बड़ाई हाँकना, अपनी बड़ाई आप करना, स्वयं अपनी प्रशंसा करना।—हाँकना (क्रि०) डींग मारना, अभिमान करना, अपनी प्रशंसा करना।

डीठ तद्० (स्त्री०) दृष्टि, निगाह।—बन्दी (बा०) इन्द्रजाल से देखने की शक्ति को नष्ट कर देना, नज़रबन्दी, माया, इन्द्रजाल, नटविद्या।

डीठना तद्० (क्रि०) दिखाई देना।

डीठा दे० (क्रि०) देखा, देख पड़ा। (पु०) नज़र, दीठ।

डीठि या डीठी तद्० (स्त्री०) दृष्टि, डीठ नज़र।

डीठियारा तद्० (वि०) दृष्टिमान्, अच्छी आँख वाला, देखने वाला, ताकने वाला, दर्शक, दृष्टक्रिया।

डीन तद्० (पु०) [डी+क] पक्षी का गमन, आकाश पथ में विचरण, उड़ना, आगमशास्त्र विशेष।

डील दे० (पु०) आकार, आकृति, काय, शरीर, देह, डौल, मिट्टी का ऊँचा ढूह।

डीला दे० (पु०) ढेला, मिट्टी का टुकड़ा।

डीह दे० (पु०) वास, वास स्थान, वह स्थान जहाँ गाँव आदि बसते हैं।—पड़ना (क्रि०) खँडहर हो जाना, उजड़ होना, उजड़ होना।

डीहा दे० (पु०) टीला, मिट्टी का पहाड़।

डुक दे० (पु०) मुक्का घूँसा मार।

डुकरवा दे० (पु०) वृद्ध बूढ़ा, पुराना, जीर्ण।

डुकरिया दे० (स्त्री०) बूढ़ी, बुढ़िया, बूढ़ी स्त्री।

डुगडुगाना दे० (क्रि०) डुग डुग करना, डङ्का बजाना, डङ्का पीटना।

डुगडुगी दे० (स्त्री०) देखो डिमडिमी।

डुग्गी दे० (स्त्री०) बायाँ तबला, वाद्यविशेष।

डुण्डु या डुण्डुभ तद्० (पु०) सर्प विशेष, जल का साँप।

डुपट्टा दे० (पु०) दुपट्टा, चादर।

डुबकी दे० (स्त्री०) बुड़की, गोता, अवगाहन।

डुबाना दे० (क्रि०) बुड़ाना, बोरना, गोता खिलाना, डुबोना, नष्ट भ्रष्ट कर देना, उजाड़ना।

डुबाव दे० (पु०) अथाह जल, अधिक जल, अगाध जल, डूबने योग्य जल।

डुबोना दे० (क्रि०) डुबाना, बोरना, बुड़ाना।

डुमर तद्० (पु०) उदुम्बर, गूलर का वृक्ष, फल।

डुरियाना दे० (क्रि०) चलाना, फिराना, रस्सी में बाँध कर घुमाना, बागडोर पर घोड़े को ले चलना।

डुलना दे० (क्रि०) हिलना, चलना, कँपना, कम्पित होना, झूलना, झूले पर झूलना।

डुलाना दे० (क्रि०) हिलाना, झुलाना, भगवान् को हिण्डोले पर झुलाना, कँपाना, टहलाना।

डूँगर दे० (पु०) टीला, भीटा, ढूह, छोटी पहाड़ी।
यथाः—"छण ही में सब खोद बहावें,
डूँगर को घर नाम मिटावें।
—व्रजविलास।

डूँगरी दे० (स्त्री०) छोटी पहाड़ी। [लच्छा।

डूँगा तद्० (पु०) चम्मच, डोंगा, रस्से का गोल

डूँडा दे० (वि०) एक सींग का बैल, आभूषण रहित, जैसा उसका डूँडा हाथ बड़ा बुरा लगता है।

डूब दे० (पु०) डुबकी, गोता, बुड़की।

डूबना दे० (क्रि०) मग्न होना, डुबकी लगाना, बूड़ना, जलमग्न होना, अस्तमित होना, सूर्यास्त होना, छिप जाना, नष्ट होना, बिगड़ जाना, नष्टभ्रष्ट होना, लीन होना, ध्यानमग्न होना, लव लग जाना, अत्यन्त आसक्त हो जाना, विवश होना, मूर्छित होना।

डूबा दे० (वि०) बूड़ा हुआ जलमग्न हुआ। (पु०) जल का अधिक आना, बाढ़ सूखा।

डेउढ़ दे० (स्त्री०) बन्दूक की बाढ़, डेवढ़ा।

डेउढ़ा (पु०) ड्योढ़ा, आधा और एक।

डेउढ़ी (स्त्री०) फाटक, दरवाजा, पौर, दहलीज़।

डेग दे० (पु०) डेग, पद, पग, एक पैर रखने और दूसरे पैर रखने के बीच की भूमि।

डेगना (पु०) टेंगुर, देखो अड़गोड़ा।

डेठी दे० (स्त्री०) डण्डी, नाल।

डेड़हा (पु०) पानी का साँप।

डेढ़ दे० (वि०) एक और आधा, आधा मिला हुआ एक, १½।—गत (स्त्री०) एक प्रकार का नाच।

—पाव (पु०) एक पाव और आधा पाव, डेढ़ छटांक।—पौवा (पु०) बाँट, जो डेढ़ पाव का हो, डेढ़ पाव की तौल।

डेना दे० (पु०) विदेश का वास स्थान, कुछ दिनों रहने का स्थान, घर, तम्बू, पटमण्डप, कपड़े का मकान, नाचने गाने वालों की मण्डली। (वि०) बायाँ, (डेना हाथ)। [का स्थान।

डेरा दे० (पु०) खेमा, तंबू, ठहरने की जगह, रहने

डेराहिं (क्रि०) डराते हैं, भयभीत होते हैं।

डेल, डेला दे० (पु०) ढेला, लोंदा, टुकड़ा। दे० (स्त्री०) रबी की फसल के लिये जोत कर छोड़ी हुई ज़मीन। तद्० (पु०) उल्लू पक्षी।

डेवढ़ दे० (पु०) क्रम, सिलसिला, डेवढ़ा।

डेवढ़ा दे० (वि०) डेढ़गुना, एक और आधा गुना, सार्द्धगुणित। [द्वार, चौखट, डेढ़ गुनी।

डेवढ़ी दे० (स्त्री०) दरवाज़ा, सदर दरवाज़ा, फाटक,

डैना तद्० (पु०) उड़ने का साधन, पङ्ख, पक्ष, पंख, चिड़ियों के पर। दे० (पु०) डाल, शाखा, टहनी।

डोई दे० (स्त्री०) काठ की मूठ की कलछी।

डोंगर दे० (पु०) डूँगर, टीला, पहाड़ी।

डोंगा दे० (पु०) नाव विशेष, छोटी नाव।

डोंगी दे० (स्त्री०) अति छोटी नाव कलकी।

डोंड़ी दे० (स्त्री०) ढिंढोरा, डुग्डुगी, मनादी।—फिराना (क्रि०) एक प्रकार के बाजे के सहारे से किसी बात को प्रकाशित करना, राजकीय आज्ञा को प्रचारित करना।

डोंर, डोंरा दे० (पु०) सर्पविशेष, दो मुँहा साँप।

डोंकना दे० (क्रि०) ओकना, वमन करना, उलटी करना, उबकाई आना।

डोकरा दे० (पु०) वृद्ध, जरठ, जीर्ण, बुड्ढा, बूढ़ा।

डोकरी (स्त्री०) बुढ़िया, बुढ़िया, डुकरिया।

डोब दे० (पु०) डूब, डुबकी, डुबकी, गोता, रङ्गना।—देना (क्रि०) रङ्ग देना, रङ्ग चढ़ाना, गोता देना।

डोबा दे० (पु०) गोता, डुबकी।

डोम, डोमड़ा दे० (पु०) जातिविशेष, अन्त्यज जाति, जो सूप आदि बनाने का रोज़गार करते हैं।

डोमनी या डोमिन (स्त्री०) डोम की स्त्री, मुसलमान जाति के लोग जिनकी स्त्रियाँ केवल स्त्रियों ही के सामने गाती और नाचती हैं और मर्द गवैये और बजनिये होते हैं। (भीख)

डोर दे० (स्त्री०) रस्सी, कुएँ से पानी निकालने की रस्सी, डोरा, तागा, सूत।

डोरक तद्० (पु०) डोर, सूत, सूत्र, गण्डा, रक्षासूत्र।

डोरा दे० (पु०) सूत्र, सूत सीने का सूत, धागा, लीक, लकीर, रेखा, तलवार की धार, आँख के लाल डोरे, आँखों में जो लाल रङ्ग की लकीर सी होती है।

डोरियाये दे० (क्रि०) रस्सी में बाँध कर पकड़े।

डोरिया दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, एक प्रकार का दुशाला, जुलाहों का तागा उठाने वाला लड़का एक नीच जाति जो रजवाड़ों में शिकारी कुत्ते रखती है। [की रस्सी।

डोरी दे० (स्त्री०) सुतली, रस्सी, डोर, पानी निकालने

डोल दे० (पु०) कुएँ में पानी निकालने का पात्र जो लोहा या चमड़े का बना है, चढ़ना, हिंडोला।

डोलची दे० (स्त्री०) छोटा डोल, कपड़े का बना छोटा डोल।

डोल डाल दे० (पुं०) पाख़ाने जाना, सैर फिर।

डोलत दे० (क्रि०) चलता है, फिरता है, हिलता है।

डोलना दे० (क्रि०) चोलना, हिलना, डुलना, फिरना, भटकना।

डोला दे० (पु०) एक प्रकार की पालकी जिस पर स्त्रियाँ चढ़ती हैं।—देना। (क्रि०) सामान्य कुल की स्त्री का विवाह के लिये उच्चकुल के घराने में जाना, अविवाहिता लड़की को विवाहार्थ भेजना, शूद्र जातियों का अपनी विधवा पुत्री को दूसरे पति के यहाँ भेजना, लड़की ब्याह देना, विवाहार्थ अपनी लड़की या बहिन आदि राजा को समर्पित करना, मुसल्मानी बादशाहत के समय में राजपूताने के कतिपय राजाओं ने अपनी बहिन और बेटियों का डोला मुसलमानों को दिया था। इस विवाह रूपी यज्ञ के ऋत्विज, आमेर के राजा भगवानदास और मानसिंह थे।

डोली दे० (स्त्री०) पालकी विशेष, जो स्त्रियों के चढ़ने के लिये है, चौपाला, स्त्रियों की पालकी। (क्रि०) गई, चली गई, टहल गई। [गरगज।
डौंगा दे० (पु०) मञ्च, मचान, ऊँचा आसन,
डौंड़ी दे० (स्त्री०) डौंड़ी, मनादी, ढिंढोरा।
डौढ़ी दे० (स्त्री०) डेवढ़ी, द्वार, दरवाज़ा, उसारा। (पु०) डेढ़गुना, उच्चस्वर से गाना।
डौल दे० (पु०) ढाँचा, प्रकार, रीति, ढङ्ग, ढब, ब्योंत, तरह, भाँति।—ढाल। (पु०) दशा, हालत, प्रबन्ध, चेष्टा, उपाय।
ड्योढ़ा दे० (वि०) डेवढ़ा, डेढ़गुना।
ड्योढ़ी दे० (स्त्री०) डेवढ़ी, डौढ़ी, द्वार, दरवाज़ा, फाटक।—दार या बान (पु०) द्वार की रक्षा करने वाला, दरबान, द्वारपाल, प्रतिहार, द्वारपालक।

ढ

ढ व्यञ्जन का चौदहवाँ वर्ण है, यह भी मूर्द्धन्य है, क्योंकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।
ढ तद० (पु०) बड़ा ढोल, ध्वनि, नाद, गम्भीर शब्द, कुत्ता, कुत्ते की पूँछ, साँप।
ढई देना दे० (क्रि०) प्रायोपवेशन से कुछ पाना, धरना देकर ब्योंत पाना, किसी प्रकार का भय दिखा कर अपना कार्य सिद्ध करना, धरना देना।
ढक दे० (पु०) तौल विशेष, तौलने का मन, बटखरा, बाँट, पत्थर या लोहे का गोला जिससे तौला जाता है। [देना, छिपा देना।
ढकना दे० (पु०) ढपना, ढक्कन, चिपनी। (क्रि०) ढक
ढकनी दे० (स्त्री०) छोटा ढकना, ढकने के लिये छोटी वस्तु। [धक्का, टक्कर।
ढका तद० (पु०) तीन सेरा बाँट, धाट, बड़ा ढोल,
ढकार तद० (पु०) ढ अक्षर ढ वर्ण, ट वर्ग का चौथा वर्ण, व्यञ्जन का चौदहवाँ अक्षर। (स्त्री०) डकार, उद्गार, एक प्रकार का शब्द जो भोजन के बाद तृप्ति की सूचना करता है, उर्द्ध्ववायु।
ढकेल दे० (पु०) धक्का, ठेल, रेल पेल।
ढकेलना (क्रि०) ठेलना, धक्का देना, रेलना, पेलना।
ढकेला ढकेली दे० (स्त्री०) ठेलमठेली, रेला पेली।
ढकेलू दे० (पु०) धक्का देने वाला ठेलने वाला, ढकेलने वाला, हटाने वाला, भगाने वाला।
ढकोसना दे० (क्रि०) एक साँस में पीना, ज्यादा पीना
ढकोसला दे० (पु०) आडम्बर, पाखण्ड, मिथ्याचार कपट व्यवहार।
ढक्कन दे० (पु०) ढकना, ढपना, छुपावन, छिपावन।
ढक्का तद० (पु०) [ढक्क+आ] वाद्य विशेष, बड़ा ढोल, नगारा, भेरी, दुन्दुभी, डमरू।—री (स्त्री०) देवी विशेष, दुर्गा का एक नाम।
ढगण तद० (पु०) एक मात्रिक गण।
ढङ्ग दे० (पु०) रीति, प्रकार, प्रथा, लक्षण, चाल चलन, रहन सहन। [प्रकार की लगाम।
ढटिया दे० (स्त्री०) ढट्टी, बागडोर, घोड़े की एक
ढटींगड़ (पु०) बड़े डील डौल का, मुस्टंडा, मोटा ताज़ा।
ढट्टा (पु०) ढठन, डाट, जुन्हरी आदि का सूखा ढठन, मुरेठा का एक छोर जो मुँह और दाढ़ी पर बाँधा जाता है।
ढट्टी (स्त्री०) दाढ़ी बाँधने का कपड़ा।
ढाट दे० (पु०) ठेठी, ठेंठी, गेंद, बजरी आदि अन्नों की बाली। [जङ्गली कौआ।
ढडकौआ दे० (पु०) एक प्रकार का भयानक कौआ,
ढढया दे० (पु०) पक्षीविशेष, एक प्रकार की चिड़िया जो मैने की जाति की होती है।
ढड्ढा दे० (वि०) बड़ा साथ ही बेढंगा। (पु०) ढाँचा, आडम्बर।
ढुँढ़ी दे० (स्त्री०) बुढ़िया, करसी, एक पक्षी।
ढँढोरना दे० (क्रि०) खोजना, ढूँढ़ना, पता लगाना, जल में भूली हुई वस्तु को ढूँढ़ना।
ढँढोरा दे० (पु०) ढिंढोरा, डौंड़ी, डुगडुगी, बाजे के साथ राजाज्ञा सुनाना।
ढँढोरिया दे० (पु०) ढँढोरा पीटने वाला।
ढनमनाना दे० (क्रि०) गिर पड़ना, फिसल जाना, लुढ़क जाना, ढुरकना। [फिसल गई।
ढनमनी दे० (स्त्री०) ढुरकी, ढुरक गई, गिर पड़ी,

ढपढपाना दे० (क्रि०) ढोल बजाना, ढोलक पीटना, बिना ताज के ढोलक बजाना।
ढपना दे० (क्रि०) ढकना, छिपना, छुकना, अपने को छिपाना। (पु०) ढकना, ढकने की वस्तु।
ढपला दे० (पु०) डफली, वाद्य विशेष।
ढपली दे० (स्त्री०) डफली।
ढप्पू दे० (वि०) बहुत बड़ा।
ढफ दे० (पु०) बड़ी खँजरी।
ढब दे० (पु०) ढौल, आकार, आकृति, डीलडौल, गढ़न, गठन, बनावट, अकल, तरकीब।
ढबहो दे० (वि०) कलुष, आविल, गँदला, मैला, मलिन, मिट्टी मिला हुआ जल। [रूपवान्।
ढबीला दे० (वि०) ढबदार, सुडौल, सजीला,
ढबुआ दे० (पु०) ताँबे का सिक्का, वह छप्पर जो खेतों के मचानों पर छाया जाता है।
ढमढम दे० (पु०) ढोल व नगाड़े का शब्द।
ढमलाना दे० (क्रि०) लुढ़कना, गिरना, फिसलाना।
ढयना (क्रि०) ध्वस्त होना, नष्ट होना।
ढरक दे० (स्त्री०) ढालू, लुढ़काव, नीचे की ओर झुकी हुई भूमि, ढलक, बहाव, ढरकन।
ढरकन दे० (स्त्री०) देखो ढरक।
ढरकना (क्रि०) गिर कर बहना, ढलना।
ढरनि दे० (स्त्री०) पतन, गति, झुकाव, दयालुता, सहज दयालुता। [चालचलन।
ढर्रा दे० (पु०) पथ, रास्ता, शैली, ढंग, युक्ति,
ढरी दे० (स्त्री०) ढली, लुढ़की, पिघली, ओर आ गई, प्रसन्न हुई, अनुरक्त हुई। [फिसलन।
ढलक दे० (स्त्री०) ढरक, बहाव, ढालू, लुढ़कन,
ढलकना दे० (क्रि०) ढरक कर जाना, पानी आदि द्रव पदार्थों का गिर जाना, लुढ़कना, पड़ना, गिरना।
ढलका दे० (पु०) आँख का वह रोग जिससे आँख से सदा पानी बहा करता है। (गु०) लुन्धना, औंधना, झुका, छलका।
ढलकाना दे० (क्रि०) गिराना, लुढ़काना, औंधा कर गिराना, उलट कर गिराना, औंधा करना।
ढलना दे० (क्रि०) गिरना, फिसलना, बीतना, बीत जाना, व्यतीत होना, ढलकना, ढरना, झुकना, भर जाना, साँचे में पिघले धातुओं को भरना, अनुकूल होना, रीझना, प्रसन्न होना।
ढलती फिरती छाँव दे० (वा०) सांसारिक पदार्थों का परिवर्तन, पदार्थों की अनित्यता, फेरबदल, अस्थिरता।
ढलमलाना दे० (क्रि०) चञ्चल होना, डगमगाना, अस्थिर होना, काँपना, कम्पित होना।
ढलाना दे० (क्रि०) साँचे से बनाना, साँचे में ढलवाना। [ढाला हुआ।
ढलुआ दे० (वि०) ढलार, नीचा, झुकाव, ढालू।
ढलैत दे० (पु०) वीर अस्त्रधारी, योद्धा, ढाल तलवार बाँधने वाला, साहसी योद्धा। [तुड़वाना।
ढवाना दे० (क्रि०) ढहाना, गिरवाना, पटकवाना,
ढहना दे० (क्रि०) गिरना, पड़ना, गिर पड़ना, पतित होना, टूट जाना, टूट कर गिर पड़ना।
ढहाए दे० (क्रि०) गिराए, गिरा दिये, तुड़वाए।
ढहावहि दे० (क्रि०) गिरवाते हैं, तुड़वाते हैं, ढलवाते हैं। [आधा और दुगना, २½।
ढाई वि० (गु०) अढ़ाई, दो और आधा, सार्द्धद्वय,
ढाँकना दे० (क्रि०) छिपाना, ढापना, लुकाना।
ढाँकी दे० (क्रि०) तोपी, ढाँक दी, मूदी, छिपाई।
ढाँग दे० (स्त्री०) कन्दरा, शिखर, शृङ्ग, पहाड़ की चोटी पर्वत का ऊपरी भाग।
ढाँचा दे० (पु०) ठाठ, साँचा, घर, डौल बनाये जाने वाले का प्रथम रूपसङ्कलन, प्राक्रूपनिर्माण, अधबनी वस्तु, खाट का घेरा। [छिपाना।
ढाँपना दे० (क्रि०) ढाँकना, छिपाना, लुकाना,
ढाँसना दे० (क्रि०) दोष देना, कलङ्क लगाना, अपवाद करना, सूखी खाँसी खाँसना।
ढाँसा दे० (पु०) दोष, कलङ्क, अपवाद, खाँसी की ठसक।
ढाक दे० (स्त्री०) पलाश वृक्ष, प्रभाव, तेज प्रताप, एक प्रकार का बाजा जो साँप के विष उतारने के काम आता है।—के तीन पात (वा०) सदा बुरी स्थिति में, कभी भरा पूरा नहीं।
ढाटा दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, जो दाढ़ी बाँधने के काम में आता है, एक प्रकार की बड़ी पगड़ी जो राजपुताने के क्षत्रिय बाँधते हैं।

ढाठी दे॰ (स्त्री॰) घोड़े का मुँह बाँधने की रस्सी, कसन, मुँह बन्धना, घोड़े के मुँह पर बाँधा जाने वाला फँदा।

ढाड़ दे॰ (स्त्री॰) चीख, चिग्घाड़।

ढाढ़स तद्॰ (पु॰) दार्ढ्य, दृढ़ता, स्थिरता, मानसिक दृढ़ता, भरोसा, साहस, धीरता, धैर्य। —देना (क्रि॰) भरोसा देना, धैर्य देना। —बँधाना (क्रि॰) धैर्य रखने का उपदेश देना, साहस देना, धीरज देना, दृढ़ता देना, दृढ़ होने के लिये उपदेश देना, शान्ति धराना।

ढाढ़िन दे॰ (स्त्री॰) ढाढ़ी की स्त्री।

ढाढ़ी दे॰ (पु॰) जाति विशेष, गाने बजाने का व्यवसाय करने वाली एक नीच जाति।—लीला (स्त्री॰) एक खेल, भगवान् कृष्ण की बाललीला का अभिनय।

ढान दे॰ (पु॰) घेरा, बेढ़ा, बाढ़ा, हाता।

ढाना दे॰ (क्रि॰) ढाहना, गिराना, उजाड़ना।

ढाबर दे॰ (पु॰) गहरा, गँदला, मैला, मलिन।

ढाबा दे॰ (पु॰) ओसारा, ओरी, बरषदा ओलती, वह वासा जहाँ दाम लेकर रोटी खिलाई जाती है। [विशेष, उतार, पथ।

ढार दे॰ (स्त्री॰) प्रकार, भाँति, भेद, मेव, कर्णाभूषण,

ढारना दे॰ (क्रि॰) डालना, उलटना, औंधाना।

ढारी दे॰ (स्त्री॰) ढार, ढाल, ढलकाव, ढार दी, ढरका दी। [(स्त्री॰) फरी, फलक, चर्म।

ढाल दे॰ (पु॰) उतार, ढलाव, ढलाऊ, झुकाव,

ढालना दे॰ (क्रि॰) साँचे में उतारना, बिगाड़ना, नीचे गिराना, किसी धातु को पिघला कर साँचे में उतारना, बहाना, शराब पीना, सस्ता बेचना, साना छोड़ना, चढ़ा उतारना।

ढालवाँ दे॰ (वि॰) ढालू, उतराव, ढलाऊ, लुढ़काव, ढला हुआ, साँचे से ढाल कर निकाला हुआ।

ढालिया (पु॰) ढाल कर बर्तन बनाने वाली एक जाति विशेष। [बेंड़ा, ढाला हुआ।

ढालू दे॰ (वि॰) उतार, बिगाड़ू, बिगाड़ने वाला,

ढास (पु॰) डाकू, विश्वासघातक —ना (क्रि॰) खासना। (पु॰) तकिया, उड़कन।

ढाहति दे॰ (क्रि॰) ढाहती है, गिरता है, नाश करती है। [करार।

ढाहा दे॰ (पु॰) नदी का किनारा, करार, ऊँचा

ढिग दे॰ (पु॰) समीप, पास, निकट, नगीच, किनारा, छोर।

ढिठाई तद्॰ (स्त्री॰) ढीठापन, गुस्ताखी, धृष्टता।

ढिडिम दे॰ (पु॰) टिरी पक्षी, टिट्टिभ।

ढिढोरा दे॰ (पु॰) डुगडुगिया।

ढिबका दे॰ (पु॰) गुमड़ा, गिलटी, फोड़े का गढ़ा।

ढिबरी दे॰ (स्त्री॰) "वह छुच्छीदार डिबिया जिसके ऊपर बत्ती रख कर मिट्टी के तेल से रोशनी करते हैं। साँचे की पेंदी, पेच की रोक, वालटू।

ढिमढिमी दे॰ (स्त्री॰) डमरू, खँजरी आदि बाजों का शब्द।

ढिलाई दे॰ (स्त्री॰) सुस्ती, आलस्य, शिथिलता।

ढिल्लड़ दे॰ (वि॰) आलसी, अकर्मण्य, सुस्त, शिथिल। [गुस्ताख।

ढीठ तद्॰ (वि॰) धृष्ट, चपल, बेधड़क, निडर,

ढीठा तद्॰ (पु॰) धृष्ट, मंगरा।

ढींढ़स दे॰ (पु॰) ढिंढा, एक प्रकार का शाक।

ढील दे॰ (स्त्री॰) आलस, असावधानी, अचेती, देरी, विलम्ब, कालक्षेप।

ढीला दे॰ (वि॰) जो तना या कसा न हो। गीला, मुक्त, छुटा हुआ, शिथिल, आलसी, असावधान, अचेत, मन्द। [मोचन, विलम्ब, कालक्षेप।

ढीलाई दे॰ (स्त्री॰) शिथिलता, छुटकारा, मुक्ति,

ढीहा दे॰ (पु॰) टीला, डूँगर, पहाड़।

ढुकना दे॰ (क्रि॰) घुसना, प्रवेश करना, भीतर जाना, मिल जाना, शामिल होना, झुकना, सिर झुकाना।

ढुकी दे॰ (स्त्री॰) ताक, पीछा करना, किसी के चरित्र का गुप्त अनुसन्धान करना।

ढुनमुनिया (स्त्री॰) बच्चों का एक खेल जिसमें बच्चे लुढ़कते हैं, कजली की एक ढंग।

ढुरकना (क्रि॰) लुढ़कना, खिसकना। [की गति।

ढुरना दे॰ (क्रि॰) नखरे से चलना, नाचना, कबूतर

ढुलना दे॰ (क्रि॰) ढुरना, ढलना, लुढ़कना।

ढुलवाना दे॰ (क्रि॰) ढरवाना, गठरी उठवाना, गिरवाना।

डुजाई, डुजवाई दे० (स्त्री०) डुलाने की मजूरी, गठरी उठाने की मजूरी।
डुजाना दे० (क्रि०) डुराना, ढलवाना, गिरवाना।
डूआ दे० (पु०) मेंड़, मिट्टी का छोटा बाँध जो वृक्षों की जड़ में डाले हुए पानी को रोक रखने के लिये बनाया जाता है। [टोह।
ढूँढढाँढ दे० (क्रि०) पूँछताछ, खोज, अनुसन्धान,
ढूँढन दे० (क्रि०) खोज, टोह, सन्धान।
ढूँढना दे० (पु०) खोजना, टोह लगाना, पता लगाना।—ढाँढना (क्रि०) खोजना, हेरना, तलाश करना, प्रयत्नपूर्वक ढूँढना।
ढूँढार दे० (पु०) राजपूताने के अन्तर्गत एक प्रान्त विशेष, जयपुर राज्य का प्रान्त।
ढूँढिया दे० (पु०) जैन संन्यासी, जैन धर्म के भिक्षुक। (गु०) ढूँढने वाला, टोह लगाने वाला, अनुसन्धानी।
ढूक दे० (स्त्री०) ढुकी, ताक। [कटना।
ढूकना दे० (क्रि०) घुसना, पैठना, पास आना,
ढूका दे० (पु०) थाप, ठेस, किसी की ताक में छिपना, ढठल, घास का नाम विशेष जो दस पूले का होता है।
ढूसर दे० (पु०) जातिविशेष, वैश्यों की एक जाति।
ढूह तद्० (पु०) ढेर, टीला।
ढेऊ दे० (पु०) तरङ्ग, लहर, वीचि।
ढेंक दे० (पु०) सारस पक्षी। [यन्त्र।
ढेंकली दे० (स्त्री०) कुआँ से जल निकालने का एक
ढेंका दे० (पु०) धान आदि का बकला छुड़ाने का यन्त्र।
ढेंकी दे० (स्त्री०) कूटने का यन्त्र।
ढेंडस दे० (पु०) तरकारी विशेष।
ढेंढी दे० (स्त्री०) पोस्ता का फूल कर्णभूषण विशेष।
ढेंढ दे० (पु०) जातिविशेष, एक नीच जाति, कौआ, मूर्ख।
ढेंढर दे० (पु०) आँख की फूली, टेंट।
ढेंढा दे० (पु०) गर्भ, लम्बोदर, बड़ा पेट, उभरी नाभि, पैरों का मध्य भाग।
ढेंढ़ी दे० (स्त्री०) कान का एक प्रकार का गहना, ढेंढिया, तरकी, फली, फलियाँ। [अधिक।
ढेर दे० (स्त्री०) राशि, गोला टाला। (वि०) बहुत,
ढेरा दे० (पु०) मेंगा, रस्सा ऐंठने की कल, चिह्नविशेष।
ढेरी दे० (स्त्री०) राशि, टाल, थोक, ढेर, समूह।
ढेला दे० (पु०) मिट्टी का टुकड़ा, पिण्डा, ढोंका, लपड़।—चौथ (स्त्री०) भादों शुक्ल की चतुर्थी। उस दिन की रात्रि को अशिक्षित हिन्दू दूसरों के घरों में ढेला फेंकते हैं और उसके बदले में गाली सुनते हैं। कहा जाता है कि ऐसा करने वाले मनुष्य साल भर कलङ्की नहीं होते। परन्तु शास्त्रों में ढेला फेंकना कहीं नहीं लिखा है। किन्तु स्यमन्तक मणि के विषय वाली कथा सुनने को लिखा है। (देखो जाम्बवान् और स्यमन्तक)।
ढैया दे० (स्त्री०) अढैया अढाई सेर का मान, तौल।—टैंगर (वि०) जन शून्य, उजाड़, उजड़, शून्य, रिक्त।
ढोआ दे० (पु०) भेंट, उपहार, उत्सव विशेष में आश्रितों का मालिकों को दिया हुआ उपहार।
ढोंड़ दे० (स्त्री०) ढेंढी, फली, बीजकोष।
ढोक दे० (पु०) प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन। राजपूताने प्रान्त में प्रणाम नमस्कार के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, दण्डवत्।
ढोकना दे० (क्रि०) पीना, घूँटना, निगलना, निगल जाना।
ढोका दे० (पु०) पत्थर का बड़ा टुकड़ा, पाँच की सङ्ख्या, आम आदि खरीदने में इसका उपयोग किया जाता है।
ढोंग दे० (पु०) पाखण्ड आडम्बर, धूर्त्तता।—धतूर (पु०) धूर्त्तता पाखण्ड।—बाजी (स्त्री०) पाखण्ड।
ढोंगी दे० (वि०) पाखण्डी।
ढोटा दे० (पु०) बालक, बेटा पुत्र, सन्तान।—"तुम हो ढोटा नन्द यशा के, हम वृषभानु दुलारी"। ढोटी (स्त्री०)।
ढोटौना (पु०) पुत्र, बेटा, छोटा।
ढोना दे० (क्रि०) ले जाना, उठाकर लेजाना, उठाना, एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रखना।
ढोर दे० (पु०) गाय, गोरू पशु, गौ, भैंस आदि पशु ढोल, ढोलक, धुनि भ्रम, रटन, लगन।
ढोरा दे० (पु०) मुसलमानों का ताजिया।
ढोरी दे० (स्त्री०) दाह ताप, दहक, रट धुन, लौ, लगन, बान।

ढोल दे० (पु०) बड़ा ढोलक।
ढोलक दे० (पु०) छोटा ढोल।
ढोलकिया दे० (पु०) ढोलक बजाने वाला, ढोलक बजाने में निपुण।
ढोलकी दे० (स्त्री०) छोटी ढोल, ढोलक, जिसे गाने वाली स्त्रियाँ बजाती हैं।
ढोलन दे० (पु०) प्रियतम, रसिक, रसिया।
ढोलना दे० (पु०) एक प्रकार का बाजा जो ढोल के समान होता है।
ढोला दे० (पु०) छोकरा, बालक, रागविशेष, शृङ्गार का एक प्राचीन प्रसिद्ध प्रेमी, ढोला मारू की कथा प्रेमी समाज में प्रसिद्ध है। शायद इस कथा की पुस्तक भी छप गई है। गाने वाली एक जाति। एक प्रकार का कीड़ा, सीमा का चिन्ह लदाव, शरीर, पति, मूर्ख मनुष्य।
ढोलिन, ढोलिना दे० (स्त्री०) ढोला जाति की स्त्री इस जाति के लोग मारवाड़ में अधिकता से पाये जाते हैं, इनका धन्धा गाना बजाना है।
ढोलिया दे० (पु०) ढोल बजाने वाला, ढोलकिया, सजा सजाया पलँग, बिछाया हुआ पलँग।
ढोली दे० (पु०) ढोल बजाने वाले, ढोलकिया, जातिविशेष, ढोला। (स्त्री०) दो सौ पान की चाँटी, दो सौ पान की एक गड्डी।
ढोलैत दे० (पु०) ढोल वाला, ढोल बजाने वाला ढोलकिया।
ढौंचा दे० (क्रि०) साढ़े चार, साढ़े चार गुना अधिक, साढ़े चार से गुणित, साढ़े चार का पहाड़ा।
ढौकन तद्० (पु०) [ढौक+अनट्] घूँस, उत्कोच, डाली, नज़र, किसी प्रकार का लोभ दिखाकर अपने मतलब का काम कराने का उपाय।
ढौरी दे० (स्त्री०) ताप, दाह, दहक, चोंप, रट, धुन लगाना।
ढौसना (क्रि०) हर्ष प्रकट करने के लिये अव्यक्त ध्वनि विशेष।

ण

ण व्यञ्जन का पन्द्रहवाँ वर्ण, यह भी मूर्द्धन्य है।
ण तद्० (पु०) बिन्दु, देव, भूषण, निर्गुण, गुणरहित, निर्णय, ज्ञान, बोध, बुद्धि, हृदय, शिव, दान, यत्न, उपाय, विद्वान्, जलस्थान, निर्वाण, त्रिगुणाकार। (वि०) गुणशून्य।
णगण तद्० (पु०) एकमात्रिक गण विशेष।

त

त व्यञ्जन का सोलहवाँ वर्ण, यह दन्त्य कहा जाता है क्योंकि इसके उच्चारण का स्थान दन्त है।
त तद्० (पु०) चोर, अमृतपुच्छ, गोद, म्लेच्छ गर्भ, गढ़, सियालपूँछ, वृष, रत्न सुमत, यौद्ध, योद्धा कुटिल, तीम, तैरना। (स्त्री०) पुण्य, तरण्य।
तअल्लुक (पु०) सम्बन्ध, रिश्ता, लगाव।—ा (पु०) ज़मींदारी का समूचा भाग।—दार (पु०) ज़मींदार।
तअस्सुब (पु०) कट्टरपन।
तइसा (गु०) तैसा, जैसा, वैसा।
तईं दे० (अ०) तक, पर्यन्त, अवधि, सीमा, लिये, वास्ते, तदर्थ। (स्त्री०) ताक, दृष्टि।
तई दे० (स्त्री०) लोहे की छिछली कड़ाही, जिसमें जलेबी मालपुआ आदि बनाये जाते हैं।
तऊ दे० (अ०) तथापि, तौभी, तदापि।
तक दे० (अ०) तलक, तईं, पर्यन्त, अवधि। (स्त्री०) दृष्टि, ताक, तराजू, तखड़ी।—तक (पु०) पशु आदि के हाँकने का शब्द।
तक़दीर (स्त्री०) भाग्य, प्रारब्ध, नसीब।
तकना दे० (क्रि०) ताक लगाना, दृष्टि रखना, देखा करना, एकटक देखना, चितवना, सस्पृह दृष्टि।
तकरार (स्त्री०) झगड़ा, टंटा, फसल काटे जाने पर खाद देकर जोता जाने वाला खेत।
तक़रीर (स्त्री०) गुफ़्तगू, बहस, भाषण, वार्तालाप।
तकला दे० (पु०) तकुआ, सूत कातने का यन्त्र, चरखा। (स्त्री०) छोटा तकला, अटेरन, परेता, चर्खी।
तकलीफ़ (स्त्री०) दुःख, आपत्ति, मुसीबत।

तकवाहा दे० (पु०) ताकने वाला, रक्षक, चौकीदार पहरुआ, पहरेवाला।
तकवाही दे० (स्त्री०) रक्षा, चौकीदारी, पहरा, पहरेवाले का काम, अगोरना। [दृष्टि रक्खो, लक्ष्य करो।
तकहु दे० (क्रि०) ताको, देखो, अवलोकन करो,
तकसीम (स्त्री०) भाग।
तकाई (स्त्री०) रखवाली, रखवाली की मजूरी।
तकान दे० (पु०) मायमझो, दम
तकाना दे० (क्रि०) ताक रखवाना, दृष्टि रखवाना, लक्ष्य रखवाना, रखवाली करना।
तकार दे० (पु०) दधि मथने का दण्ड, रई।
तकि दे० (अ०) ताक कर, लक्ष्य कर, देखकर।
तकिया दे० (स्त्री०) सिरहाने रखने की वस्तु, ओसीसा, बलीत, उपधान, सिरहाना।
तकीनी दे० (स्त्री०) छोटा उसीसा।
तकुआ दे० (पु०) सूत कातने की लोहशलाका जो चर्खे में लगायी जाती है, तकला।
तक्र तद्० (पु०) छाँछ, मट्ठा, मट्ठो।
तक्ष तत्० (पु०) [तक्ष—अच्] आच्छादन, कर्तन, काटना, चमड़ा, चर्म, चित्रानचत्र।—शिला (पु०) प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर, यह पञ्जाब में था, इसका उल्लेख यूनानियों के इतिहास में आया है।
तक्षक तत्० (पु०) [तक्ष+अक्] बढ़ई, लकड़ी काटने वाला, स्वनाम प्रसिद्ध सर्पराज, विश्वकर्मा, सूत्रधार, वृक्ष विशेष।
तखड़ी दे० } (स्त्री०) पलड़ा, तराजू, अन्न आदि
तखरी दे० } तौलने की तुला।
तखमीना (पु०) अटकल, अनुमान।
तखान तद्० (पु०) तक्षक, बढ़ई, लकड़ी काटने वाला, खाती। [अन्त का अक्षर लघु हो यथा 'जीमूत'।
तगण तत्० (पु०) कविता का गणविशेष, जिसके
तगना दे० (क्रि०) सीना, सिलाई करना, तागा चलाना।
तगर तत्० (पु०) पुष्पविशेष, सुगन्धित काष्ठविशेष, महुआ वृक्ष, मदन वृक्ष। [की मजूरी।
तगाई दे० (स्त्री०) सिलाई, तागने का काम, तागने
तगादा (पु०) माँग।
तगाना दे० (क्रि०) तागा डालना, सिलवाना। [आता है।
तग्गा दे० (पु०) सूत, बटा हुआ सूत, जिसमें तागा

तगड़ी दे० (स्त्री०) करधनी, कटिसूत्र।
तङ्ग दे० (पु०) हैरान, सकरा, चुस्त, थोड़ा, सकेत, घोड़े की जीन की पेटी, कसन।
तङ्गा दे० (पु०) दो पैसे, टका।
तङ्गी दे० (स्त्री०) सङ्कीर्णता, क्लेश, ग़रीबी।
तचना दे० (क्रि०) सन्तप्त होना, दुःखी होना, गरम होना, तपना, तप्त होना।
तचा तद्० (स्त्री०) चाम, चमड़ा, खाल, गरम।
तचाना दे० (क्रि०) गरम करना, तपाना, जलाना।
तज दे० (पु०) तेजपात, तेजपात का वृक्ष, छोड़, छोड़ दे, त्याग, सिवा।—ि (क्रि०) छोड़ कर, त्याग कर। [देता है।
तजइ दे० (क्रि०) छोड़ देता है, त्यागता है, त्याग
तजन दे० (पु०) परित्याग, त्याग। (पु०) चाबुक, कोड़ा।
तजना दे० (क्रि०) त्यागना, छोड़ना, सम्बन्ध छोड़ देना।
तजि दे० (अ०) छोड़ कर, तज कर, त्याग कर।
तजिये दे० (क्रि०) छोड़ो, छोड़ दो, छोड़िये। यथा—"जाके प्रिय न राम वैदेही, तजिये ताहि कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही।"—तुलसीदास।
तज्ञ तद्० (पु०) तत्त्वज्ञाता, ज्ञानी, आत्मज्ञ, पण्डित, स्वरूप ज्ञाता, ईश्वर का जानने वाला।
तजरबा (पु०) अनुभव।
तजरुबात दे० तजरबा, अनुभव, विचार, यथार्थ ज्ञान।
तजवीज़ (स्त्री०) उपाय, निर्णय, फैसला, प्रबन्ध।
तट तत्० (पु०) [तट+अच्] तीर, कूल, किनारा, नदी का कछार, प्रदेश, शिव। (क्रि० वि०) समीप, पास।—स्थ (वि०) तीर पर रहने वाला, तीरवासी, मध्यस्थ, उदासीन, अलग रहने वाला, निर्लेप। (पु०) लक्षणस्वरूप, स्वरूपलक्षण के अतिरिक्त लक्षण, परमार्थिकता, अपक्षपातिता।
तटाक तत्० (पु०) तड़ाग, बड़ा सरोवर, बृहत् जलाशय, जिस सरोवर में कमलपुष्प हों।
तटिनी तत्० (स्त्री०) [तट+इन्] नदी।
तटी तत्० (स्त्री०) नदीकूल, तीर, तट, किनारा, तटवाला, तीरवाला, सेवक, तराई घाटी।
तड़ दे० (पु०) दल, पक्ष, गिरोह, जथा, टोली, अव्यक्त शब्द।—तड़ (पु०) लकड़ी आदि के

टूटने का अव्यक्त शब्द।—बंदी (स्त्री०) दलादली, एक जाति के कुछ लोगों का गिरोह।

तड़क दे० (स्त्री०) चटक, चाट, एक लकड़ी जिस पर से छाजन होती है। [जाना, छौंक देना।

तड़कना दे० (क्रि०) चटकना, टूटना, फूटना, टूट

तड़का दे० (पु०) प्रातःकाल, भोर, विहान, भिनसार, सवेरा, छौंक, बघार। [समय।

तड़के दे० (अ०) सवेरे, प्रात:काल, प्रात काल के

तड़तड़ाना दे० (क्रि०) तड़तड़ शब्द होना, झिड़कना क्रोधित होना, रिसाना। [(वि०) चमकीला।

तड़प दे० (स्त्री०) चटक, झपट, चमक, भड़क।—दार

तड़पड़ा दे० (पु०) वृष्टि गिरने का शब्द।

तड़पना दे० (क्रि०) तलफना, दु:ख से छटपटाना, हाथ पैर धुनना।

तड़पाना दे० (क्रि०) तलफाना, दु:ख देना।

तड़पीला (गु०) प्रभावशाली, फुर्तीला चंचपटिया।

तड़फ दे० (स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट अत्यन्त दु:खदायी, उद्विग्नता, अधिक दु:ख से अधीरता। यथा—।"ज्वर से तड़फ रहा है" बिना जल के मछलियाँ तड़फ रही हैं।" "तड़फ तड़फ कर उसने प्राण दे दिये।" [उद्विग्न होना छटपटाना।

तड़फड़ाना दे० (क्रि०) तड़पना, व्याकुल होना,

तड़फड़ाहट दे० (स्त्री०) धुकधुकी, धड़क, तड़क।

तड़फड़ी दे० (स्त्री०) छटपटी, धुकधुकी, शङ्का से छटपटी।

तड़फना दे० (क्रि०) तड़फड़ाना, तड़पना, व्याकुल होना, छटपटाना। [उद्विग्न करना।

तड़फाना दे० (क्रि०) तड़पाना, व्याकुल करना,

तड़ा दे० (पु०) टापू, उपद्वीप, दोआब।

तड़ाक दे० (वि०) चमत्कार, भड़कीला, चटकीला, देदीप्यमान, शीघ्र, तुरन्त।—पड़ाक (अ०) अति शीघ्र, बहुत जल्दी, अत्यन्त शीघ्रता से, शीघ्रतापूर्वक।

तड़ाका तत्० (स्त्री०) समुद्र का किनारा, समुद्रतट, बड़ी बड़ी नदियों का तीर। (पु०) मारने का शब्द, टूटने की ध्वनि।

तड़ाग तत्० (पु०) तालाब, पोखरा, सरवर, सरोवर, जलाशय, पाँच सौ धनुष के परिमाण का जलाशय।

तड़ाघात तत्० (पु०) [तड़+आघात] ऊपर उठे हुए हस्तिशुण्ड का आघात।

तड़ातड़ (क्रि० वि०) तड़तड़ शब्द सहित।

तड़ाड़ा दे० (पु०) जल की तीव्र धारा, तरेरा, तरेखा।

तड़ाया दे० (पु०) रसिकता, छैलापन, चटक, भड़क, तड़क भड़क। [धोखा, छल।

तड़ावा दे० (पु०) दर्प, अभिमान, ऊपरी दिखावट,

तडित् तद्० (स्त्री०) विद्युत्, बिजली, सौदामिनी, चञ्चला, चपला, कौंधा, दामिनि।—कुमार तद्० (पु०) जैनियों का एक देवता।—पति तद्० (पु०) बादल।—प्रभा तद्० (स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका।—वान् तद्० (पु०) बादल, नागरमोथा।—समाचार (पु०) बिजली के द्वारा समाचार भेजना, टेलीग्राफ़, तारबर्की, तार।

तड़िया दे० (स्त्री०) समुद्र तट का पवन। [बिजली।

ताडिल्लता तद्० (स्त्री०) [तडित्+लता] विद्युल्लता,

तड़ी दे० (स्त्री०) चपत, धौल, धोखा, बहाना।

तण्डक तद्० (पु०) खञ्जन पक्षी, खँड़ैचा, खंडलीच, भरद्वाज पक्षी, फेन, अधिक समास वाला वाक्य, छान की लकड़ी, धरन, धन्नी, कड़ी, तरुस्कन्ध, वृक्ष का वह स्थान जहाँ से शाखें फूटती हैं। साफ़ सुथरा, निर्मल। (गु०) मायाबहुल, मायावी। छली प्रपञ्ची। [कर्त्तव्य कर्मों का उपदेशक।

तण्डु तद्० (पु०) शिव का द्वारपाल, धनुकर्म शिक्षक,

तण्डुल तद्० (पु०) चावल, चाउर, बिना बकले का धान, कूटा धान, तन्दुल।

तत् तद्० (अ०) बुद्धिस्थ परामर्शक सर्वनाम, वह, वही, ब्रह्म का विशेषण, प्रसिद्धार्थक वायु।—कन्द (पु०) अदरक, बराहीकन्द।—कर्तृक (वि०) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया हुआ।—कर्म (पु०) वह कर्म, वही कर्म, जाना हुआ कार्य, प्रसिद्ध कार्य।—कार्य (पु०) वह कार्य, सो काम।—काल (पु०) उसी काल, उसी समय, उसी क्षण, चटपट।—कालिक (वि०) उस समय का, तदानीन्तन।—कालीन (वि०) उसी काल का, उसी समय का।—कालोत्पन्न (वि०) उस समय का उत्पन्न।—कृत (वि०) उसका बनाया उसके द्वारा बनाया हुआ।—क्षण (पु०) उसी क्षण उसी समय उसी काल में।—तुल्य उसके समान उसके सदृश, उसके ऐसा।—पर

(वि०) अयुक्त, अनलसा, सुनिपुण, आसक्त, लगा हुआ, उद्योग, मशगूल, तदनन्तर, उसके पश्चात् ।—परायण (वि०.) तदासक्त उसके अनुरक्त, उसके अनुवर्ती ।—पुरुष (पु०) समासविशेष, इस समास में उत्तर पद कि प्रधानता रहती है, यथा—कृष्ण का दास, कृष्णदास, कर्मधारय इसी के अन्तर्गत है ।—फल (पु०) पीलू वृक्ष, गजपीपल, जामुनवृक्ष, वदरीवृक्ष, बेर, श्वेत कमल ।—सम तत्० (पु०) हिन्दी में प्रयुक्त अन्य भाषाओं के वे शब्द जिनके रूप में या बनावट में कुछ भी अन्तर नहीं पड़ता ।

तत तत्० (पु०) वायु विस्तार, पिता, पुत्र, बाजा जो तारों से बजे ।

ततछन तद्० (अ०) तत्क्षण, उसी समय, तत्काल, बहुत शीघ्र । यथा—

"ततछन हार बेगि उतराना ।
पावा सखहि चन्द्र बिहुसाना ।" पद्मावत ।

ततार्थेई दे० (स्त्री०) नाच का बोल ।

ततवीर दे० (स्त्री०) तदबीर, उपाय ।

ततरी दे० (स्त्री०) अलबेलन, चपला युवती, फलदार वृक्ष विशेष । [हिन्दू जाति ।

ततवा दे० (पु०) जातिविशेष, कपड़ा बीनने वाली

ततहरा दे० (पु०) गर्म करने का हंडा ।

तताना दे० (क्रि०) गरम करना, उष्ण करना, तपाना, सेंकना ।

ततार दे० (स्त्री०) सेंक, गरम, टकोर, प्रक्षालन ।

ततेड़ा दे० (पु०) पानी आदि गरम करने का स्थान, पानी गरम करने का पात्र, हंडा ।

ततैया दे० (स्त्री०) बर्रें, बहुत चरपरी, लाल मिर्चा ।

तत्ता दे० (वि०) उष्ण, गरम, तेज़, तीक्ष्ण ।

तत्ताथंबा दे० (पु०) बीच बचाव, दमदिलासा ।

तत्र तत्० (अ०) तहाँ, वहाँ, उस स्थान में, उस विषय में ।—स्थ (वि०) तत्स्थानीय, उस स्थान का, उस स्थान सम्बन्धी ।—भगवती (स्त्री०) आर्या, मान्या, माननीया, पूज्या, पूजनीया, पूज्य स्त्री का सम्बोधन ।—भवान् (पु०) पूज्य, मान्य, श्लाघ्य, श्रद्धेय, गुरु आदि माननीय पुरुषों का सम्बोधन ।—स्थ (पु०) तत्स्थानीय, वहाँ रहने वाला, वहाँ का निवासी, वहाँ का ।—ापि (अ०) बिना नाम के स्थान का सूचना करने वाला शब्द, उस पर भी वहाँ पर भी ।

तत्व तत्० (पु०) यथार्थता, मूल, सत्य, सार, मूल व्यवस्था, सूक्ष्मज्ञान, सूक्ष्मबोध, धर्म, स्वरूप, महाभाग, अनुसन्धान उद्देश्य, अन्वेषण, सारांश, सारवस्तु, सत्य, नतीजा ।—कारक (पु०) पण्डित, यथार्थ वितर्क करने वाला, अनुसन्धान करने वाला —ज्ञान (पु०) ब्रह्मज्ञान, परमार्थज्ञान, अध्यात्म-विद्या, तत्वविद्या ।—ज्ञानी (वि०) ब्रह्मज्ञानी, महात्मा ।—त (अ०) यथार्थ, सम्यक् ठीक ठीक, सत्य सत्य ।—वादी (वि०) यथार्थवक्ता, सत्यवादी, ब्रह्मवादी ।—वार्ता (स्त्री०) अनुसन्धान, अन्वेषण ।—वित् (वि०) सत्यवित्, ब्रह्मज्ञ ब्रह्मज्ञानी ।—विज्ञान (वि०) तत्वज्ञान, यथार्थज्ञान, रहस्यज्ञान ।—वेत्ता (पु०) ब्रह्मज्ञानी —ानुसन्धान (पु०) यथार्थ अन्वेषण, सारवस्तु की जाँच, विशेष वृतान्त का सन्धान ।—विधारक (पु०) रक्षक, रखवाली करने वाला, अभिभावक, देखरेख रखने वाला ।—विधारण (पु०) रक्षणावेक्षण, देखरेख, अध्यक्षता ।—ार्थविद् (वि०) तत्वज्ञानी ।—ाभियोग लता वृक्ष विशेष ।

तत्वावधान (पु०) देखभाल, जाँच पड़ताल ।

तत्थ तद्० (पु०) तथ्य, सत्य, शक्ति, बल । (वि०) प्रधान, मुख्य ।

तथा तत्० (अ०) औरतौर, जिस प्रकार, जिस तरह, जिस भाँति ।—गत (पु०) बौद्ध बुद्ध भगवान्, जिन, जैन —च (अ०) जैसे ।—पि (अ०) [तथा + अपि] तौभी, तैसा होने पर भी, तिस पर भी ।—स्तु (अ०) वैसा हो, वैसा ही हो, स्वीकारोक्ति ।

तथेति तत्० (अ०) तैसा, तादृश ।

तथैव तत्० (अ०) वैसा ही, उसी प्रकार, यथा के साथ का अर्थ बोधक, वैसा ।

तथ्य तत्० (पु०) [तथा + य] सत्य, तात्पर्य, यथार्थ वचन, याथार्थ्य । (वि०) सत्य, यथार्थ ।—ानुसन्धान (पु०) सत्य का अन्वेषण, सत्य का अनुसन्धान, यथार्थ की जाँच करना, सत्य सन्धान ।

तद् तद्० (वि०) तत्, वह, सो।—अंश (पु०) वह अंश, उसका अंश।—अकरण (पु०) वैसा नहीं करना, उसको नहीं करना।—अतिपात (पु०) उसका अतिक्रम करना, उल्लङ्घन करना।—अधिक (वि०) उसके अतिरिक्त, उससे अधिक, ततोऽधिक।—अनन्तर (पु०) उसके पश्चात्, उसके बाद।—अनुग (वि०) उसके पीछे चलने वाला, तत्पश्चाद्गामी, उसके पश्चात् चलने वाला।—अनुगत (वि०) उसका अनुगत, उसका अनुवर्ती।—अनुयायी (वि०) उसका अनुगामी।—अनुरूप (वि०) उसके समान, तादृश, तत्तुल्य।—अनुसार (अ०) तदनुरूप, उसके समान।—अन्त (अ०) शेष, सीमा, अवधि।—अन्तः—(अ०) उसके मध्य, उसके अभ्यन्तर।—अन्तःपाति (वि०) तन्मध्यवर्ती, उसके बीच में का।—अपि (अ०) तथापि, तौ भी।—अवधि (अ०) उस समय से, तब से, उसी समय से।—अवस्थ (वि०) उसी प्रकार की अवस्था को प्राप्त, एक प्रकार की अवस्था वाले।—अर्थ (अ०) तन्निमित्त, उस कारण। (वि०) तदभिप्राय, वह अभिप्राय।—अनु (अ०) उसके बाद, उसके अनन्तर, उसके पश्चात्।—गत (वि०) उसमें लिप्त, उसमें आसक्त।—गति (स्त्री०) उसकी दशा, उसकी अवस्था।—गुणविशिष्ट (वि०) उस गुण से युक्त।—भावबोधक (वि०) उस भाव का द्योतक, उस भाव का सूचक।

तदबीर (स्त्री०) तरकीब, उपाय, प्रयत्न।

तदा तद्० (अ०) उस समय, उस काल, तब।—त्व (पु०) वह काल, वह समय।—दि (अ०) तदवधि, तत्प्रभृति, तब से, उस समय से।

तदाकार तद्० (वि०) वैसा ही, तद्रूप, तन्मय।

तदानीम् तद्० (अ०) उस समय, उस काल।

तदीय तद्० (सर्व०) तत्सम्बन्धी, उसका।

तदुक्ति तद्० (स्त्री०) उसका वचन, उसकी उक्ति।

तदुत्तम तद्० (वि०) उसकी अपेक्षा उत्तम।

तदुत्तर तद्० (पु०) उसका उत्तर, प्रत्युत्तर, वह उत्तर, उसके बाद, उसके अनन्तर।

तदुपरान्त तद्० (क्रि० वि०) उसके पीछे, उसके बाद, उसके अनन्तर।

तदुपरि तद्० (अ०) उसके ऊपर, उसके मध्य।

तदेकचित्त तद्० (वि०) समान स्वभाव, उसका अनुरक्त, उसका भक्त, उसका अनुवर्ती।

तदेव तद्० (अ०) वही।

तद्गत तद्० (वि०) उसके अन्तर्गत।

तद्धन तद्० (पु०) [तद्+धन] कृपण, व्ययकुण्ठ, कम खर्च करने वाला, वही धन, उतना ही धन।

तद्धित (पु०) प्रत्यय विशेष जिसको अन्त में लगाने से शब्द बनता है।

तद्भव तद्० (पु०) संस्कृत के शब्द का परिवर्तित या अपभ्रंश रूप। जैसे काष्ठ का काठ, घृत का घी।

तद्वत् तद्० (वि०) उसी के समान।

तधी दे० (अ०) तभी, तब ही, त्यों ही।

तन तद्० (पु०) तनु, शरीर, काय, देह, अङ्ग, स्त्री की गुप्त इन्द्रिय। (क्रि० वि०) ओर, तरफ।—देना (क्रि०) ध्यान देना, अत्यन्त परिश्रम सह कर भी काम करना, शक्ति से बाहर का काम करना।

तनक दे० (वि०) तनिक, थोड़ा, अल्प, अंश, टुकड़ा, छोटा, सूक्ष्म, अल्प, ज़रा सा, क्षुद्र।

तनकाऊ दे० (वि०) थोड़ा भी, ज़रा भी, कुछ भी।

तनकीह (स्त्री०) विचारणीय विषयों की फहरिस्त, जाँच पड़ताल। [मजूरी।

तनख्वाह दे० (पु०) वेतन, मासिक वृत्ति, महीने भर की

तनना दे० (क्रि०) फैलना, खिंचना, विस्तार करना।

तनय तद्० (पु०) पुत्र, सन्तान, आत्मज, सुत, बेटा।

तनया तद्० (स्त्री०) कन्या, पुत्री, दुहिता, सुता।

तनहा दे० (वि०) एकाकी, अकेला, असहाय, सहायताहीन, निरालम्ब, आश्रय रहित।

तनादि तद्० (पु०) [तन+आदि] व्याकरण की दशविध धातुओं के अन्तर्गत अष्टम धातु।

तनापा दे० (पु०) जवानी, युवावस्था, तारुण्य तरुणाई।

तनिक दे० (पु०) तनक, थोड़ा, अल्प, सूक्ष्म।

तनिया दे० (स्त्री०) लँगोटी, कौपीन, कमनी, काँछिया।

तनिष्ठ तत्० (पु०) [तनु+इष्ठ] क्षुद्र, अत्यल्प, न्यून, क्षीण, अति सूक्ष्म। [स्त्री तनी, तनया, पुत्री, कन्या।

तनी दे० (स्त्री०) अँगरखे का बन्द, अँगरखा बाँधने

तनीयान् तत्० (वि०) [तनु+ईयस्] सूक्ष्मतर, अल्पतर, बहुत थोड़ा, क्षुद्र, छोटा, लघु।

तनु तत्० (पु०) [तन्+उ] शरीर, देह, त्वक् चर्म, तन, केन्द्रर्क्ष, जन्मकुण्डली में जन्मस्थान। (वि०) दुबला, कोमल, सुन्दर, बढ़िया।—कूप (पु०) रोमकूप, रोमछिद्र।—च्छत (वि०) नर्म। (पु०) कवच, बखतर, सन्नाह, युद्ध में काने के उपयोगी परिच्छद।—ज (पु०) पुत्र, आत्मज, सुत, सूनु।—जा (स्त्री०) कन्या, पुत्री, तनया, दुहिता।—ता (स्त्री०) क्षीणता, सूक्ष्मता।—त्व (पु०) क्षीणत्व, सूक्ष्मत्व।—त्र (पु०) कवच, शरीररक्षाकारी, सन्नाह।—त्राण (पु०) तनुत्र, शरीररक्षण।—त्याग (पु०) मृत्यु, देहत्याग, शरीरपात, मरण।—धन (पु०) एक प्रकार के नरक का नाम।—व्रण (पु०) वाल्मीक रोग, छोटा घाव।—मध्या (स्त्री०) क्षीण कटि की, पतली कमरवाली स्त्री।—रुह (पु०) रोम, लोम, बाल, केश।

तनुक दे० (वि०) अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म, तनिक।

तनू तत्० (पु०) देह, तन, काया, शरीर।—ज (पु०) पुत्र, आत्मज।—जा (स्त्री०) कन्या।—नपात् (पु०) अग्नि, वह्नि, अनल, चित्रक, प्रजापति के प्रपौत्र का नाम, घी, मक्खन।—भृत् (पु०) मनुष्य, देही, देहधारी।

तनोतु तत्० (क्रि०) फैले, फैलावे, विस्तृत होवे।

तनोरुह तत्० (पु०) रोंगटे, लोम।

तन्त दे० (पु०) परिवार, प्रबन्ध व्यवस्था, सुखसिद्धि, तुरन्त, शीघ्र, सन्तान, औषधि, उपाय।

तन्तनाना दे० (क्रि०) पिनपिनाना, तनना, तीखा होना भन्नाना, क्रोध से बकना। [पीड़ा, तन्तनाना।

तन्तनाहट दे० (स्त्री०) पिनपिनाहट, जलने की

तन्तिं तत्० (पु०) तन्तुवाय, ततवा, कपड़ा बिनने वाली एक हिन्दू जाति।

तन्तु तत्० (पु०) सूत, सूत्र, तागा, धागा, डोरा, वंश, सन्तान।—काष्ठ (पु०) दाँत का काठ।—कीट (पु०) रेशम का कीड़ा, पाटकीट।—निर्यास (पु०) ताड़वृक्ष।—वाय (पु०) कपड़ा बिनने वाला, जुलाहा, ताँती, ततवा, कोरी।—शाला (स्त्री०) कपड़ा बिनने का घर, ताँतघर।—सन्तान (पु०) अतिसूक्ष्म सूत, बहुत पतले सूत, महीन सूत।

तन्तुना दे० (पु०) ततुना, तार।

तन्त्र तत्० (पु०) सिद्धान्त, परिवार का काम, औषधि, प्रधान, मुख्य, श्रुति की एक शाखा का नाम, हेतु, द्वयर्थक, दोतरफी बात, राष्ट्र, सर्वसाधक, उपाय, अपने राज्य की चिन्ता, प्रबन्ध, शपथ, धनगृह, वपन, बोना, साधन, कुल, शिवपार्वतीकथित शास्त्र, इस शास्त्र के दो भेद हैं, एक का नाम दक्षिणतन्त्र और दूसरे का नाम वामतन्त्र है। दक्षिणतन्त्र में पञ्चदेव की उपासना सात्विक मनुष्यों के लिये सात्विक रीति पर वर्णित है। वामतन्त्र तामसी प्रकृति के मनुष्यों के लिये है। तन्त्र के इसी भाग के उपासकों में पञ्चमकारसेवन की विधि प्रचलित है। इस शास्त्र के बहुत से ग्रन्थ अब भी उपलब्ध होते हैं।

तन्त्रावाय तत्० (पु०) [तन्त्र+अवाय] अपने राज्य की व्यवस्था और शत्रु राज्य की दशा तथा राष्ट्र परराष्ट्र का ज्ञान।

तन्द्रि तत्० (स्त्री०) निद्रा, नींद, घूम, ऊँघाई, आलस्य, आलस।—पालक (पु०) राजा जयद्रथ।

तन्त्री तत्० (स्त्री०) [तन्त्र+ई] वीणागुण, वीन का तार, गुडूची, शरीर की नाड़ियाँ, नाड़ीभेद, युवतीभेद। (पु०) एक प्रकार का बाजा, सितार, तन्त्रशास्त्री, तन्त्रशास्त्रवेत्ता।

तन्द्रा तत्० (स्त्री०) [तन्द्र+आ] ईषत्निद्रा, थकावट, भ्रान्ति, झपकी।

तन्द्रालु तत्० (वि०) [तन्द्र+आलु] क्लान्त, श्रान्त, थकित, निद्रातुर, आलस, निद्रालु।

तन्द्री तत्० (स्त्री०) अत्यन्त परिश्रम करने से इन्द्रियों की अपटुता, सर्वाङ्गशैथिल्य।

तन्ना दे० (क्रि०) खींचना, फैलाना, विस्तार करना।

तन्नाना दे० (क्रि०) तन्तनाना, अकड़ना, ऐंठना, कड़ा हो जाना, मिज़ाज गरम करना।

तन्निमित्त तद्० (अ०) [तद्+निमित्त] तदर्थ, तद्हेतु, उसके लिये, उसके कारण, उसके हेतु।

तन्निष्ठ तद्० (वि०) [तद्+निष्ठ] तत्रस्थ, तद्वर्ती, वहाँ स्थित।

तन्मय तद्० (वि०) [तत्+मयट्] दत्तचित्त, लगा हुआ, लवलीन, लीन।—ता तद्० (स्त्री०) लीनता, एकाग्रता।

तन्मात्र तद्० (पु०) [तद्+मात्र] केवल, वही, एक, अद्वितीय, सांख्यानुसार पञ्चभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप, यथा—शब्द, स्पर्श रूप, रस, गन्ध। [सुन्दरी, कामिनी।

तन्वी तद्० (वि०) [तनु+ई] क्षीणा, कृशाङ्गी,

तप तद्० (पु०) [तप्+अल्] गर्मी, उष्णता, गर्मी की ऋतु, अग्नि, एक कल्प का नाम, एक लोक का नाम, तपस्या, शरीर संयम करने के उपाय, पूजा, आराधना, माघ महीने का नाम।

तपत दे० (स्त्री०) गर्मी, उष्णता।

तपती तद्० (स्त्री०) सूर्य की पुत्री का नाम, यह सूर्य-पत्नी छाया के गर्भ से उत्पन्न हुई थी, कुरुवंशीय ऋक्ष नामक एक प्रसिद्ध राजा थे, ऋक्ष का पुत्र संवरण बड़ा सूर्य भक्त था, संवरण की तपस्या और उपासना से प्रसन्न होकर सूर्यदेव ने अपनी कन्या संवरण को ब्याह दी।

तपन तद्० (पु०) [तप+अनट्] ग्रीष्म, ताप, सूर्य सूर्यकान्तमणि, नरक विशेष, जहाँ पाप फल का भोग करने के लिये अग्नि से पापी जलाये जाते हैं। भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ का पेड़, मदार, अरनी का पेड़, नायिका का नायिक के वियोग में हावभाव विशेष, सूरजमुखी, एक प्रकार का अग्नि, धूप।—तनया (स्त्री०) सूर्यपुत्री, शमीवृक्ष, यमुना नदी।—मणि (पु०) सूर्यकान्तमणि। —तमजा (स्त्री०) गोदावरी नदी, यमुना नदी।

तपना तद्० (क्रि०) गरम होना, दहकना, जलना, प्रभाववान् होना, अतितेजयुक्त होना, तेजस्वी होना। [स्वर्ण, काञ्चन।

तपनीय तद्० (पु०) उत्तापनीय, तपाने योग्य, सुवर्ण,

तपरी दे० (स्त्री०) मेंड़, भूहा, बाँध, छोटा बाँध।

तपलोक तद्० (पु०) तपोलोक, स्वर्ग विशेष, ऊर्ध्व, स्थित सप्तलोकों के अन्तर्गत छठाँ लोक।

तपश्चरण-तद्० (पु०) तप, तपस्या।

तपश्चर्य्या तद्० (स्त्री०) तपस्या, तपश्चरण।

तपस् तद्० (पु०) चन्द्रमा, सूर्य, शिशिर ऋतु, जन लोक के ऊपर का लोक।

तपसा तद्० (स्त्री०) तप से, तपस्या करके, तप के द्वारा, कष्ट से, आराधना से, तापती नदी। [वाला, तपी।

तपसाल तद्० (पु०) तपस्वी, तपसी, तप करने

तपसी तद्० (पु०) तपस्वी, तप करने वाला।

तपस्क तद्० (पु०) तपस्वी, योगी।

तपस्य तद्० (पु०) फागुन का महीना, फाल्गुणमास, अर्जुन, कुन्दपुष्प, तप, मनु के दस पुत्रों में से एक। [ईश्वरभजन।

तपस्या तद्० (स्त्री०) तप साधना, योगसाधन,

तपस्विनी तद्० (स्त्री०) [तपस्+विन्+ई] तपस्याकारिणी, व्रतनिष्ठनियमकारिणी, तपस्या करने वाली स्त्री।

तपस्वी तद्० (पु०) [तपस्+विन्] तपस्याकारी, ऋषि, मुनि, दीन, दयापात्र, घीकुआर, मछली विशेष।

तपा दे० (पु०) पूजक, आराधक, अर्चक, तपस्वी। (वि०) तप में मग्न। [करना, आग दिखाना।

तपाना दे० (क्रि०) गर्म करना, उष्ण करना, तप्त

तपात्यय तद्० (पु०) वर्षाकाल, प्रावृट् काल, वर्षा का समय। [अनुसन्धान।

तपास दे० (पु०) अन्वेषण, खोज, सन्धान, ढूँढ़,

तपित तद्० (पु०) [तप्+इत] तप्त, उष्ण, उत्तापयुक्त। [संयमी, नियमयुक्त।

तपी तद्० (पु०) तपस्वी, तपस्या करने वाला, आत्म-

तपु तद्० (पु०) आग, सूर्य, शत्रु। (वि०) तप्त, गरम, तपाने वाला। [यम, तपी।

तपेश्वर, तपेश्वरी तद्० (पु०) तपस्वी तपश्चर्यापरा

तपै दे० (क्रि०) तप जावे, गरम हो जावे तपस्या करे।

तपोधन तद्० (पु०) तपस्वी, मुनि, ऋषि जिनके तपस्या ही धन है, जिनके धन के द्वारा होने वाले कार्य तपस्या के द्वारा होते हैं, दौनामरुआ। (स्त्री०) तपश्चारिणी, तपस्विनी, नियम पालय स्त्री, योगसाधनतत्परा।

तपोनिष्ठ (पु०) तपस्वी।
तपोधन, तपोवन तत्० (पु०) तपस्वियों का आश्रम, वन का प्रदेश विशेष, जहाँ तप करने वाले रहते हों।
तपोबल तत्० (पु०) तप की शक्ति। [स्थान।
तपोभूमि तत्० (स्त्री०) तपोवन, तप करने का
तपोमूर्त्ति तत्० (पु०) [तपस्+मूर्त्ति] तपस्वी, ईश्वर, तपस्या की मूर्ति, महातपस्वी।
तपोरति तत्० (पु०) तपस्वी, जिसकी तप में रति हो।
तपोराशि तत्० (पु०) [तपस्+राशि] तपस्वी, बड़ा तपस्वी जिसकी तपस्या अधिककाल व्यापिनी हो।
तपोलोक तत्० (पु०) ऊपर के चौदह लोकों में से छठवाँ लोक।
तप्त तत्० (वि०) [तप्+क्त] उष्ण, तपा हुआ सतप्त, गर्म, क्रुद्ध, दुःखित, अतिशय पीड़ित।
—कुम्भ (पु०) नरकविशेष, तपा हुआ घड़ा।
—कुण्ड (पु०) गरम पानी का तालाब, गरम पानी का झरना।—कृच्छ्र (पु०) व्रतविशेष, प्रायश्चित्त विशेष।—बालुक (पु०) नरकविशेष, जो तपी बालुका से बना हुआ है।—माषक (पु०) एक प्रकार की परीक्षा।—मुद्रा (स्त्री०) शरीर पर ग्रहण किये जाने योग्य अग्नितप्त धातुमय भगवान् के आयुधों का चिह्न।
तप्पा दे० (पु०) चकला, सूबा, पुरा, पट्टी, गाँव ग्राम, गवई।
तफसील दे० (स्त्री०) विवरण, ब्यौरा। [विशेषता।
तफावत दे० अन्तर, व्यवधान, भेद, पार्थक्य,
तब दे० (अ०) तदा उस समय, उस काल, उस क्षण ऐसी दशा में, ऐसी स्थिति में, फिर, उसके पीछे, तदनन्तर।—हिं या हीं (अ०) ठीक उसी समय, उसी के बाद। [बदली, परिवर्तन।
तबदील (पु०) बदला हुआ, परिवर्तित।—ी (स्त्री०)
तबलची दे० (पु०) तबला बजाने वाला। [बाजा।
तबला दे० (पु०) ताल देने का चमड़े से मढ़ा एक
तबाह (पु०) बरबाद, चौपट, नाश को प्राप्त।—ी (स्त्री०) नाश, अधःपतन।
तबियत दे० (स्त्री०) जी, मन, चित्त।
तभी दे० (अ०) तब ही, सदैव, उसी समय।

तम तत्० (पु०) विशेषण शब्दों के अन्त में आने से अनेकों के बीच एक का उत्कर्ष बोधक, अत्यन्त, सब से बढ़ कर, अन्धकार, तमोगुण, अहङ्कार, तमालवृक्ष, तेजपात का वृक्ष, पाप, क्रोध, अज्ञान, कालिमा, मोह, नरकविशेष, राहु, वराह, पैर के आगे का हिस्सा।
तमः तत्० (पु०) प्रकृति का गुण, त्रिगुण के अन्तर्गत एक गुण का नाम, तमोगुण, अन्धकार, शोक, पाप, अहङ्कार, क्रोध।
तमक दे० (स्त्री०) तेज़ी, जोश, उद्वेग, क्रोध।
तमकना (दे०) (क्रि०) क्रोधित होना, क्रोध से लाल मुख होना।
तमका दे० (पु०) बहुत गर्मी, अधिक उष्णता।
तमकि दे० (क्रि०) क्रोध मुँह हो, त्योरी चढ़ा के, चिढ़ के।
तमगा दे० (पु०) पदक, मेडल, तगमा, मुद्रा हुआ।
तमगुना (पु०) तमोगुण।
तमचर तत्० (पु०) राक्षस, उल्लू।
तमचुर तद्० (पु०) ताम्रचूड़, मुरगा, कुक्कुट।
तमन्न दे० (वि०) अभिलाषी, इच्छुक, आशंसी, प्रार्थी।
तमतमाना दे० (क्रि०) लाल होना, अधिक क्रोध करना, चिढ़ना। [का नाम।
तमप्रभ तत्० (पु०) नरकविशेष अन्धकारमय, नरक
तमस तत्० (पु०) अन्धकार, तमोगुण, नगर, नदी विशेष, कूप, नरकविशेष, राहु, मनुविशेष।
तमसा तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, इसी नदी के तीर पर महर्षि वाल्मीकि रहते थे।
तमस्विनी तत्० (स्त्री०) [तमस्+विन्+ई] रात्रि, रजनी, निशा, अँधेरी रात, हल्दी।
तमस्सुक दे० (पु०) ऋणपत्र, क़र्ज़पत्र, वह पत्र जो क़र्ज़ लेने वाले धनी को लिखते हैं, दस्तावेज़, लेख।
तमस्तति तत्० (स्त्री०) [तमस्+तति] अन्धकार समूह, घोर अन्धकार।
तमा तत्० (पु०) राहु (स्त्री०) रात, निशा।
तमाकू, तमाखू दे० (पु०) सुरती, स्वनामप्रसिद्ध पत्र विशेष। धूम पान करने योग्य पत्रविशेष, खाने की सुरती, खैनी तमाखू।

तमाचा दे० (पु०) थप्पड़, झापड़।
तमादी (स्त्री०) वादे का समय व्यतीत हो जाना।
तमाम दे० (पु०) सकल, समस्त, समग्र, पूरा, कुल, सारा, बिल्कुल। [मार्तण्ड, दिवाकर।
तमारि या तमारी तद्० (पु०) तमोनाशक, सूर्य,
तमाल तद्० (पु०) वृक्षविशेष, तिलक, पत्रक, वरुण वृक्ष, काला खैर, काली पत्तियों वाला वृक्ष, तमाकू, मोरपंख।—पत्र (पु०) तिलक, तेजपत्र।
तमाशबीनी (स्त्री०) बदकारी, ऐयाशी, दुष्कर्मता।
तमाशा दे० (पु०) मेला, नाटक, नाच, आतिशबाज़ी आदि चित्त को प्रसन्न करने वाले दृश्य।—ई दे० (पु०) तमाशा देखने वाले।
तमि या तमी तद्० (पु०) रात, मोह।—चर तद्० (पु०) राक्षस, रजनीचर।
तमिस्र तद्० (पु०) [तमिस्+र] तिमिर, अन्धकार, क्रोध, एक नरक।—पक्ष कृष्णपक्ष, बदी पाख।
तमिस्रा तद्० (स्त्री०) [तमिस्र+आ] अन्धकारमय रात्रि, कृष्णपक्ष की अँधेरी रात।
तमी तद्० (स्त्री०) [तम+ई] अन्धकारमय रात्रि, निशा, तमिस्रा।—श (पु०) चन्द्रमा।—चर (पु०) राक्षस, निशाचर, चोर, व्यभिचारी, लम्पट।
तमीज़ दे० (स्त्री०) विवेक, पहचान, बुद्धि, शिष्टता, अदब।—दार (वि०) बुद्धिमान, शिष्ट, विवेकी।
तमूरा दे० (पु०) वाद्य विशेष, सितार जैसा एक बाजा, चौतरा।
तमोगुण तद्० (पु०) [तमस्+गुण] प्रकृति के त्रिविध गुणों के अन्तर्गत एक गुण विशेष। मोह, क्रोध आदि को उत्पन्न करने वाला गुणविशेष।
तमोगुणी तद्० (वि०) अहङ्कारी, अभिमानी, दर्पी, गर्वी, क्रोधी प्रकृतिवाला।
तमोघ्न तद्० (पु०) तमोनाशक, दीपक, ज्ञान, अग्नि, सूर्य, चन्द्र, बुद्ध, विष्णु, केशव, शम्भु।
तमोज्योति तद्० (पु०) [तमस्+ज्योति] खद्योति-रिङ्गण, खद्योत, जुगनू।
तमोनुद तद्० (पु०) [तमस्+नुद्+अप्] सूर्य, रवि, दिनकर, ईश्वर, चन्द्र, अग्नि, अज्ञाननाशक गुरु।
तमोपह तद्० (पु०) [तमस्+अप्+हन्+ड] अन्धकारनाशक, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, दीप, दीपक, ज्ञान।
तमोर तद्० (पु०) ताम्बूल, पान। दे० (पु०) एक रस्म (विवाह का तमोर बाटना)।
तमोल तद्० (पु०) ताम्बूल, पान, नागर बेल की पत्ती। [वाली स्त्री।
तमोलिन दे० (स्त्री०) तमोली की स्त्री, पान बेचने
तमोली, तम्बोली तद्० (पु०) ताम्बूलिक, जातिविशेष जो पान का व्यवसाय करता है। [का हंडा।
तम्बालु, तम्बिया दे० (पु०) ताँबे का बरतन, ताँबे
तम्बू दे० (पु०) पटमण्डप, वस्त्रगृह, रावटी, छोलदारी, कपड़कोट। [की बीन।
तम्बूरा दे० (पु०) वाद्यविशेष, तानपूरा, तीन तार
तम्बेरम तद्० (पु०) स्तम्बेरम, हाथी, कुञ्जर, दन्ती।
तम्हेड़ी (स्त्री०) ताँबे का विशेष प्रकार का हंडा।
तय (गु०) निर्णीत, निश्चित।
तयना (क्रि०) तवना, दुःखी होना। [का कर्म, प्रयत्न।
तयार (गु०) प्रस्तुत, तत्पर।—ी (स्त्री०) तैयार होने
तर तद्० (पु०) [तृ+अल्] तरना, अग्नि, वृक्ष, गति, मार्ग, नाव की उतराई। (क्रि० वि०) तले, तरे, पीछे, नीचे, विशेषण शब्दों के अन्त में आने से यह दो के बीच एक की उत्कृष्टता बतलाता है। विशेष, बहुत। दे० (वि०) गीला, शीतल, हरा, भरापूरा, मालदार।
तरई तद्० (स्त्री०) तारा, नक्षत्र, तरैया।
तरक दे० (स्त्री०) तड़क, धरण, कड़ी, तर्क, विचार-परम्परा (क्रि०) लटक कर, टूट कर।—करना (क्रि०) अलग करना, पृथक् करना।
तरकऊ दे० (अ०) तर्क भी, विचार भी, रोग भी।
तरकना दे० (क्रि०) सोच विचार करना, अनुमान करना, उछलना, कूदना, झपटना।
तरकस दे० (पु०) तूणीर, तूणीर, त्रोण, बाण रखने का भाथा, एक प्रकार का बाँस का चोंगा जिसमें बाण रखे जाते हैं।
तरका (पु०) लड़का, मृत मनुष्य की सम्पत्ति।
तरकारी तद्० (स्त्री०) तृप्तिकारी, व्यञ्जन बनाने योग्य फल मूल आदि, साग, भाजी।
तरकि दे० (क्रि०) तर्क करके, हुज्जत करके, टूट के।
तरकी दे० (स्त्री०) फूल की तरह का कान में पहनने का एक आभूषण, कर्णफूल।

तरकीब दे० (स्त्री०) उपाय, मेल, बनावट, शैली, तरीका।

तरकुल (पु०) ताड़ का पेड़।

तरगुलिया (स्त्री०) अनाज भरने का एक छिछला [बरतन।

तरक्की (स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती।

तरङ्ग तद्० (स्त्री०) लहर, हिलोर, ऊर्मि, वीचि, हेल, हिलकोरा। (पु०) उमङ्ग, मौज, मानसिक उमङ्ग, कपड़ा, घोड़े की फलाँग, सोने की तारों को उमेठ कर बनाई गयी हाथों में पहनने की चूड़ी।

तरङ्गिणी तद्० (स्त्री०) नदी, सरिता।

तरङ्गित तद्० (वि०) [तरङ्ग+इत] ऊर्मिवान, लहरों युक्त, लहराता हुआ।

तरङ्गी तद्० (वि०) लहरी, मनमौजी, चञ्चलमना, उत्साही, उत्साहवाला, तरङ्गवाला।

तरखा दे० (स्त्री०) जल का तीव्र बहाव, धारा का वेग।

तरखरा दे० (पु०) एक प्रकार का थाल।

तरदीद (स्त्री०) खण्डन, मंसूखी।

तरद्दुद (पु०) सोच, खटका।

तरतराना (क्रि०) कड़कड़ाना।

तरन तद्० (पु०) तरण, तैर जाने वाला, पार होने वाला, मुक्त हो जाने वाला।—तारन (पु०) अपने साथियों के सहित मुक्त होने वाला, स्वयं तरे और दूसरों को भी तारे।

तरना दे० (क्रि०) पार होना, उद्धार पाना, तर जाना।

तरनि तद्० (पु०) तरणि, सूर्य, रवि, भानु, दिवाकर।

तरनी तद्० (स्त्री०) तरणी, नौका, नाव।

तरछट (स्त्री०) पानी अथवा अन्य किसी तरल पदार्थ के नीचे बैठा हुआ मैल।

तरछन (स्त्री०) पानी के नीचे बैठा हुआ मैल।

तरछा (पु०) तेलियों के गोबर एकत्र करने का स्थान।

तरछाना (क्रि०) तिरछी आँख से संकेत करना।

तरज तद्० (पु०) तर्ज, डपट, डपेट, डाँट, तर्जन, गाने की रीति, गान का प्रकार, रीति, प्रकार, ढंग। (क्रि०) डाँट कर, निहार कर।

तरजत तद्० (क्रि०) तर्जत, तड़पता है, डाँटता है।

तरजन तद्० (पु०) तर्जन, गर्जन, तड़प, डपेट, डाँट।

तरजना (क्रि०) फटकारना, डाट बतलाना।

तरजनी (स्त्री०) अँगूठे के समीप की उंगली, भय, डर।

तरजूई (स्त्री०) छोटी तराजू।

तरजुमा (पु०) भाषान्तर, अनुवाद, उल्था।

तरण तद्० (पु०) [तृ+अनट्] उत्तरण, उतरना, पार जाना, तैरना, उद्धार, बचाव, डोंगा, नाव, स्वर्ग। (पु०) पार होने वाला, उतरने वाला, तरने वाला, मुक्त होने वाला।

तरणि तद्० (स्त्री०) [तृ+अनि] नौका, नाव, घेंकुआरि, घृतकुमारी। (पु०) सूर्यकिरण, अर्क वृक्ष, अकवन वृक्ष—रत्न (पु०) माणिक्य, मणि, सूर्यकान्त मणि।—सुत (पु०) यम, शनि, कर्ण। —सुता (स्त्री०) यमुना, कालिन्दी नदी।

तरणी तद्० (स्त्री०) [तरण+ई] नौका, नाव, घृतकुमारी, तरनी, पद्मचारिणी।

तरन्त तद्० (पु०) मेक, मेंडक, कुहासा, आसार, झड़।

तरन्ती तद्० (स्त्री०) नौका, तरणी, तरी।

तरपन तद्० (पु०) तर्पण, तृप्ति, मनःप्रसाद, मन की प्रसन्नता, मन्त्रों के द्वारा पितरों के उद्देश्य से जल प्रदान। [करते हैं।

तरपहिं तद्० (क्रि०) तड़पते हैं, गर्जते हैं, तरपन

तरफ दे० (स्त्री०) पार्श्व, दिग्, धार, पक्ष, ओर।— दार (गु०) पक्षपाती, पक्षवाला, सहायक, समर्थक, हिमायती।—दारी दे० (स्त्री०) पक्षपात।

तरफना दे० (क्रि०) तड़पना, व्याकुल होना।

तरबतर दे० (वि०) सराबोर, भीगा हुआ।

तरबूज़ दे० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध फल विशेष कलींदा, हिंगवाना।

तरल तद्० (पु०) हार के बीच का मणि, हार, हीरा, घोड़ा, तल, पेंदा, सीसा। (वि०) चञ्चल, द्रवीभूत, पतला, (गु०) चञ्चल, अस्थिर, अनिश्चितचित्त, पतला, तीक्ष्ण, चोखा। —ता (स्त्री०) चञ्चलता, द्रवत्व।—लोचना (स्त्री०) चञ्चलनयनी, चपलनेत्रा, नारी, मृगी।

तरला तद्० (स्त्री०) [तरल+आ] यवागू, मधु-मक्षिका, बाँस विशेष (वि०) सब से नीचे वाला, नीचे वाला। [द्रवत्व।

तरलाई तद्० (स्त्री०) तारल्य, सरलता, चञ्चलता,

तरलायित तद्० (वि०) आततारल्य जिसमें तरलता उत्पन्न हुई हो। (पु०) बड़ा तरङ्ग, बड़े तरङ्ग।

तरलित तद्० (वि०) [तरल+इत] चाञ्चल्यान्वित, चलित, विचलित, आन्दोलित, द्रवीभूत ।

तरव तद्० (पु०) तरु, वृक्ष, पेड़, रूख, गाछ । [वृक्ष ।

तरवर तद्० (पु०) तरुवर, बड़ा वृक्ष, उपयोगी वृक्ष, प्रिय

तरवरिया दे० (पु०) तरवार धारण करने वाला, खड्गधारी, तलवार चलानेवाला । [खाँड़ा ।

तरवार या तरवारि तद्० (स्त्री०) तलवार, खड्ग,

तरस दे० (स्त्री०) तट, तीर, रोग, बन्दर, वेग बल । (पु०) करुणा, दया रहम ।

तरसना दे० (क्रि०) बहुत चाहना, उत्कण्ठित होना, जी लगा रहना, दया दिखाने की इच्छा रखने पर भी दया नहीं दिखा सकना, केवल उत्कण्ठित होना, अभाव का क्लेश सह्य करना ।

तरसाना (क्रि०) आशा उत्पन्न करके उसे पूरी न करना, व्यर्थ ललचाना ।

तरह दे० (स्त्री०) भाँति, प्रकार, ढाँचा, ढब, रीति, ढंग, युक्ति, उपाय, हाल, अवस्था ।

तरहटी दे० (स्त्री०) पहाड़ की तराई, नीची भूमि ।

तराई दे० (स्त्री०) पहाड़ या नदी आदि के पास की तरी या सीड़ वाली भूमि, पहाड़ की घाटी ।

तराजू दे० (स्त्री०) तुला, पलड़ा, जो अन्न आदि के तौलने के काम आता है ।

तरान दे० (पु०) उगाहन, प्राप्त किया हुआ, तहसीला गया, वसूल किया गया, राजकर, चन्दा आदि ।

तराना दे० (क्रि०) पार कराना, उद्धार करना, बचाना, एक गाना विशेष ।

तराबोर दे० (वि०) सराबोर, खूब भीगा हुआ ।

तरारा दे० (पु०) पानी की लगातार गिरने वाली धार, उछाल, कुलाँच ।

तरावट दे० (स्त्री०) ठंढक, नमी, स्निग्ध भोजन ।

तरास तद्० (पु०) त्रास, भय, शङ्का, डर, पिपासा, प्यास, तृषा ।

तरि तद्० (स्त्री०) [तृ+इ] नौका, तरी, तरणी,
तरी तद्० (स्त्री०) [तृ+अल्+ई] नौका ।

तरीक़ा दे० (पु०) ढङ्ग, प्रकार, उपयोग की रीति ।

तरु तद्० (पु०) वृक्ष, द्रुम, गाछ ।—ज (पु०) वृक्ष से उत्पन्न फल फूल आदि ।—जीवन (पु०) वृक्ष मूल ।

तरुआ दे० (पु०) तलवा, भुँजिया चावल ।

तरुण या तरुन तद्० (वि०) नवीन, नूतन, युवा, जवान, खिला हुआ, प्रफुल्लित । (पु०) बड़ा जीरा, एरण्ड, मोतिया ।—ज्वर (पु०) सात दिन के भीतर का ज्वर, नवज्वर, नवीन ज्वर ।—दधि (पु०) पाँच दिन का बासी दही ।

तरुणाई तद्० (स्त्री०) यौवन, युवावस्था, युवाकाल, जवानी ।

तरुणी तद्० (स्त्री०) युवती, युवावस्था की स्त्री, जवान स्त्री, षोडशवर्षीया स्त्री, नवयौवना रमणी, कामिनी, गृहकन्या, दन्ती नामक वृक्ष विशेष, पुष्प विशेष, सेवती का फूल, जमालगोटा, चीड़ा नामक गन्धद्रव्य, मेघराग की एक रागिनी ।

तरुनाई तद्० (स्त्री०) जवानी, तरुणावस्था ।

तरेड़ा दे० (पु०) टोंटी से पानी का गिरना, धार बाँध कर पानी गिरना ।

तरेरना दे० (क्रि०) त्योरी चढ़ाना, आँख दिखाना, आँख बदलना ।

तरेंत दे० (पु०) बंधा, लङ्गर का चिह्न ।

तरैया तद्० (स्त्री०) तारका, तारा नक्षत्र । यथाः—

"यथा तरैया प्रात के, सब नृप भये उदास ।
लखि दिनमणि कर राम छवि, सकुचाने चहुँपास ।"

कवि वाक्य ।

तरोवर (पु०) वृक्ष, पेड़ ।

तरौंछी (स्त्री०) जुलाहे के हत्थे के नीचे की लकड़ी ।

तरौंस दे० (पु०) तीर, तट, किनारा, पेंदे में का जाल । यथाः—

"स्याम सुरति करि राधिका, तकति तरनिजा तीर,
अँसुवनि करति तरौंस कौ, खिनक खरौंहीं नीर ।"

—सतसई ।

तरौना दे० (पु०) कर्णभूषण विशेष, एक प्रकार का गहना, जिसे स्त्रियाँ कानों में पहनती हैं । यथा—

"लसत श्वेत सारी दिप्यो, तरल तरौना कान ।
पर्यौमनो सुरसरि सलिल, रवि प्रतिबिम्ब विहान ॥"

—सतसई ।

तर्क तद्० (पु०) [तर्क+घञ्] ऊहापोह, बुद्धि-द्वारा विवेचना, न्यायशास्त्रसम्बन्धी विचार, हुज्जत तकरार, अनुमान, कल्पना, अनुमानोक्ति—वितर्क

(पु०) शङ्का, सन्देह, अनिश्चित सिद्धान्त को निश्चित करने के लिए विवाद, बहस, वादविवाद, सोचविचार ।—विद्या (स्त्री०) आन्वीक्षिकी, न्यायविद्या ।—शास्त्र (पु०) षड्दर्शन के अन्तर्गत एक दर्शन विशेष, गौतम और वैशेषिक का बनाया शास्त्र ।

तर्कक तत्० (पु०) [तर्क+अक्] याचक, आकांक्षी, तर्ककारक । [क्रिया ।

तर्कन, तर्कण तत्० (पु०) तर्ककरण, तर्क करने की

तर्कित तत्० (वि०) [तर्क+इत] विवेचित, आलोचित, शङ्कित, सन्देहान्वित, सन्देहयुक्त ।

तर्की तत्० (पु०) [तर्क+इन] तर्ककारक, नैयायिक, न्यायशास्त्रवेत्ता, विवेचक । (दे०) कर्णभूषण विशेष ।

तर्कु तत्० (स्त्री०) सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकला ।

तर्कुटी तत्० (स्त्री०) [तर्कुट+ई] सूत्र निर्माणयन्त्र, सूत बनाने की कल, तकुआ, फिरकी ।

तर्कुल दे० (पु०) ताड़ का वृक्ष, ताड़फल, ताड़ीफल ।

तर्रा दे० (पु०) तीक्ष्णधारा, प्रखर धारा, वेग से चलने वाली धारा, शीघ्रवाहिनी धारा ।

तर्ज़ दे० (स्त्री०) शैली, रीति, तरह, ढङ्ग, ढग बनावट, तरीका ।

तर्जन तत्० (पु०) [तर्ज+अनट्] भर्त्सन, ताड़न, गर्जन, धमकाने का कार्य, क्रोध से भयानक शब्द करना ।

तर्जनी तत्० (स्त्री०) अँगूठे के पास की अँगुली, निर्देश करने वाली अँगुली, बतलाने वाली, आदेशिकी । यथा—

"इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं ।
जो तर्जनि देखत मरि जाहीं ।"—रामायण ।

तर्जित तत्० (वि०) [तर्ज+इत] भर्त्सित, ताड़ित, धमकाया गया ।

तर्जुमा दे० (पु०) अनुवाद, उल्था, एक भाषा में लिखी हुई बात को दूसरी भाषा में करना ।

तर्णक तत्० (पु०) नवीनवत्स, तत्काल उत्पन्न बछड़ा।

तर्तराता दे० (वि०) स्निग्ध, अति चिकन ।

तर्तराना दे० (क्रि०) चञ्चलता करना, गलफटाकी करना, सर्राटा भरना ।

तर्तराहट दे० (स्त्री०) सर्राटा, गीदड़ भभकी, गल फटाकी, श्लाघा ।

तर्पण तत्० (पु०) [तृप्+अनट्] तृप्तिकरण, प्रीणन, यज्ञकाष्ठ, महायज्ञविशेष, पितृयज्ञ, देवऋषि और पितरों को जलाञ्जलि द्वारा परितृप्त करना, मन्त्रों द्वारा पितृ पितामह के उद्देश्य से जलप्रदान ।

तर्र दे० (स्त्री०) बाघ की लय, स्वर, ध्वनि ।

तर्राना दे० (क्रि०) बड़बड़ाना, बकबक करना, कुढ़ना, चिढ़ना, स्वरों का उतार चढ़ाव, अलापना ।

तर्वरिया दे० (पु०) तलवार बाँधने वाला, खड्गधारी ।

तर्ष तत्० (पु०) [तृष्+अल्] अभिलाषा, तृष्णा, इच्छा, समुद्र, सूर्य ।

तर्षण तत्० (पु०) [तृष्+अनट्] तृषा, पिपासा, तृष्णा, प्यास, अभिलाषा, इच्छा । [प्यासा ।

तर्षित तत्० (वि०) तृषित, पिपासित, तृषान्वित,

तर्स दे० (स्त्री०) दया, कृपा, करुणा, अनुकम्पा ।—खाना (क्रि०) दया करना, कृपा करना ।

तर्साना दे० (क्रि०) ललचाना, लुभाना ।

तर्सों दे० (अ०) परसों का पिछला दिन, परसों के आगे का दिन, वर्तमान दिन से पहला या पिछला, चौथा दिन ।

तल तत्० (पु०) [तल्+अल्] स्वरूप, महीतल, नीचे, अधोभाग, गढ़ा, कानन, वन, तला, पानी के नीचे का भाग, तलवा, तली, हथेली, सतह, स्वभाव, पाटन, ताड़ का पेड़, मुठिया, गोह, कलाई, जिल्हा, रुहारा, महादेव, पाताल विशेष, नरक विशेष ।—घर (पु०) नीचे का घर, तहखाना ।—छट (पु०) मैल, निचोड़, खुदखुदरा, नीचे बैठी हुई मैल ।—पट (पु०) मलमेट, मटियामेट, चौपट, विनष्ट ।—फोर (अ०) तल फोड़ कर निकला हुआ । [ताल, पोखरा, पत्र विशेष ।

तलक दे० (अ०) तक, पर्यन्त, अवधि । तल (पु०)

तलना दे० (क्रि०) भूनना, भूजना, तेल में भूनना ।

तलफना दे० (क्रि०) तड़फना, छटपटाना, व्याकुल होना ।

तलब दे० (पु०) वेतन, आवश्यकता, माँग ।

तलमलाना दे० (क्रि०) ललचाना, लोभाना, विकृत गति से चलना, दुर्बलता से रुक रुक कर चलना, हिलते डोलते चलना, तड़फड़ाना ।

तलधरिया दे० (वि०) तलवार धारण करने वाला।
तलवा दे० (पु०) पैर के नीचे का भाग, पादतल।
तलवार दे० (स्त्री०) खड्ग असि।
तलवासना दे० (क्रि०) पैर सिंकाना।
तलहटी तद्० (स्त्री०) पहाड़ के नीचे की जमीन, तराई। [जूते के नीचे का चमड़ा, तल्ला।
तला दे० (स्त्री०) पेंदा, अधःभाग, निम्नस्थान, थाह,
तलाई दे० (स्त्री०) तलैया, छोटा तालाब।
तलाक़ (पु०) मुसलमान ईसाइयों में पतिपत्नी का विधिपूर्वक पारस्परिक त्याग।
तलातल दे० (पु०) लोकविशेष, रसातल, पाताल, नीचे के सात लोकों में का एक लोक।
तलाव दे० (पु०) पुष्करिणी, पोखरा, सरोवर, तड़ाग।
तलाश दे० (पु०) अनुसन्धान, खोज, सन्धान, अन्वेषण, मार्गण, ढूंढ ढांढ, आवश्यकता, चाह।
तलित दे० (वि०) तला हुआ, घी या तेल में भुना हुआ। [स्तोक, स्वच्छ, अल्प, निर्मल।
तलिन तद्० (स्त्री०) शय्या। (पु०) विरल, दुर्बल,
तली दे० (स्त्री०) तला, पेंदा, जूते के नीचे का चमड़ा।
तलुआ दे० (पु०) पाँव के नीचे का भाग।—चाटना (वा०) हताश होना, निराश होना, हतमनोरथ होना, खुशामद करना।
तलुवे तले हाथ धरना (वा०) स्वार्थ सिद्धि के लिए अनुगत बनना, लल्लोपत्तो करना, लल्लो चप्पो करना, खुशामद करना, अनुनय विनय करना।
तले दे० (अ०) नीचे, अधोभाग से, नीचे की ओर, उतर के, घट के, कुछ कम।—ऊपर (वा०) उलट पुलट, नीचे ऊपर, दोनों तरफ़।
तलेटी तद्० (स्त्री०) पेंदी, तलहटी, तराई।
तलैंचा (पु०) महराव के ऊपर का भाग।
तलैया दे० (स्त्री०) छोटा तालाब।
तल्प तद्० (पु०) शय्या, पलँग, बिछौना, अट्टालिका।—कीट (पु०) बिछौना का कीट, खटकीरा, खटमल। [मरातिब।
तल्ला तद्० (पु०) अस्तर, भितल्ला, पांस, खण्ड,
तल्लिका तद्० (स्त्री०) ताली, कूँची, कुञ्जी, चाभी।
तव तद्० (सर्व) तुम्हारा, तेरा।

तवा दे० (पु०) लोहे का छिछला गोल बरतन जो रोटी सेकने के काम में लाया जाता है।
तवाज़ा (स्त्री०) आवभगत अतिथि सत्कार।
तवायफ़ (स्त्री०) वैश्या, रंडी।
तवारीख़ (स्त्री०) इतिहास।
तशरीफ़ (स्त्री०) महत्व, बड़प्पन, मान्यता।
तश्तरी दे० (स्त्री०) रिकाबी, थाली जैसा हलका छिछला बरतन।
तसना दे० (क्रि०) भाग देना, बाँटना, भाग करना।
तसरी दे० (स्त्री०) पात्रविशेष, ताँबे का एक बर्तन जिससे तर्पण आदि का जल गिराया जाता है।
तष्ट तद्० (वि०) दला हुआ, पिसा हुआ, कटा हुआ, छीला हुआ।
तष्टा तद्० (पु०) विश्वकर्मा, आदित्य का नाम, छीलने वाला, ताँबे की थाली जिसमें भगवान् को स्नान कराया जाता है।
तस (गु०) तैसा, जिस प्रकार।
तसद्दीक़ (स्त्री०) जाँच, गवाही, पुष्टि।
तसमा (पु०) चमड़े की चौड़ी डोर। [का रेशम।
तसर तद्० (पु०) त्रसर, पट्टवस्त्र विशेष, एक प्रकार
तसला दे० (पु०) कटोरे की तरह का बड़ा गहरा लोहे, पीतल या ताँबे का बरतन।
तसल्ली (स्त्री०) चैन, धीरज, आराम।
तसवीर (स्त्री०) चित्र।
तसबीह (स्त्री०) माला।
तसी (पु०) तीन बार जुता हुआ खेत।
तस्कर तद्० (पु०) चोर, चोट्टा, अपहर्ता, दूसरे का धन अपहरण करने वाला, श्रवण, कान, मैनफल, एक प्रकार का केतु, गन्धद्रव्य विशेष।—ता (स्त्री०) चोरपन, चोट्टई।
तस्करी तद्० (स्त्री०) कोपना नारी, क्रोधी स्वभाव की स्त्री, क्रोधिनी, क्रोधयुक्ता नारी, चोरी, क्रोध।
तस्म दे० (पु०) चमोटा, चमोटी।
तस्मई दे० (स्त्री०) खीर, हविष्य।
तस्मिन् तद्० (सर्व०) उसमें, वहाँ पर।
तस्मै तद्० (सर्व०) उसके लिए, उसको।
तस्य तद्० (सर्व०) उसका।
तस्सू दे० (पु०) मापविशेष, इंच।

तहसनहस दे० (अ०) नष्ट भ्रष्ट, तितर बितर, बरबाद, ध्वस्त।

तह (स्त्री०) परत।

तहसील दे० (पु०) उगाही, कोश, वसूली करमइयों, उगाही, सरकारी कचहरी जहाँ मालगुज़ार अपनी अपनी मालगुज़ारी जमा करते हैं।—दार (पु०) राजकर की उगाही करने वाला अफ़सर। —दारी (स्त्री०) तहसीलदार का पद, राजकर वसूल करने का काम।

तहसीलना (क्रि०) वसूल करना, उगाहना।

तहँ, तहाँ, तहवाँ दे० (अ०) उस स्थान पर, उस स्थान में, उस ठाँव, उस भूमि पर।

तहाना दे० (क्रि०) लपेटना, चौपतना, चौपरत करना, घरी करना, मढ़ना, चुनना, चुनत करना।

तहियाँ दे० (क्रि० वि०) उस दिन, पहले के दिन, पहले। [स्थान पर।

तही दे० (क्रि० वि०) वहीं, वहाँ, उस स्थान, उसी

ता दे० (सर्व०) उस। दे० (अव्य०) तक, पर्यन्त। तल् (प्रत्य०) एकमात्र वाचक अव्यय। जैसे उत्तमता, शत्रुता आदि।

ताँई (क्रि० वि०) नाईं तक। [घोड़ागाड़ी।

ताँगा दे० (पु०) गाड़ा विशेष एक प्रकार की

ताँत दे० (स्त्री०) चमड़े की रस्सी, कपड़ा बिनने का यन्त्र पंक्ति, श्रेणी, तार, क़तार।—बाँधना (क्रि०) बकबकी, चमड़े की रस्सी से बाँधना।—रिया (गु०) दुबला पतला।

ताँती दे० (पु०) जातिविशेष, ततवा, कोरिया, पटवा, कपड़ा बीनने वाली एक हिन्दू जाति।

ताँबड़ा दे० (पु०) ताँबे का वर्ण, ताँबे की वस्तु गूढ़ी चुन्नी। [धातु।

ताँबा दे० (पु०) धातुविशेष, ताम्र, स्वनामप्रसिद्ध

ताइत दे० (पु०) चर्मरज्जु चर्मबन्धनी, तन्त्री, ताँत, यन्त्र जन्तर, गयडा, टोटका।

ताई दे० (स्त्री०) चाची, काकी ताऊ की स्त्री, काका की स्त्री पितामह के बड़े भाई की स्त्री, कड़ाही जिसमें जलेबी आदि बनाई जाती है।

ताईद (स्त्री०) सुपुष्टि, अनुमोदन, भली प्रकार समर्थन।

ताऊ दे० (पु०) बड़ा चाचा, पिता का बड़ा भाई, पितृव्य।

ताऊस (पु०) मोर, केकी, मयूर।

ताक दे० (स्त्री०) डीठ, दृष्टि, दर्शन, लक्ष्य, दृष्टिपात, अवलोकन, सन्धान करण, टकटकी, किसी मौके की बाट जोहना, खोज —झाँक दे० (स्त्री०) देख भाल।

ताकर दे० (सर्व०) उसका, तिसका।

ताक दे० (पु०) आला, ताखा। [बलवान।

ताकत (स्त्री०) बल, अधिकार।—वर (गु०)

ताकना दे० (क्रि०) झाँकना, देखना, घूरना, दृष्टि पात करना। [(सर्व०) तिसका।

ताका दे० (क्रि०) देखा, निहारा, निशान बाँधा।

ताकि दे० (क्रि०) देखकर, लखकर। (अव्य०) अत, इससे, इसलिये। [अनुरोध।

ताकीद (स्त्री०) भली प्रकार की हुई बात, प्रयत्न,

ताखा दे० (पु०) आला, ताक़।

ताखी (गु०) दो प्रकार की आँखों वाला, ऐंची।

ताग दे० (पु०) डोरा, सूत, सूत्र, धागा।—तोड़ (पु०) गोटा, किनारी, धारी।

तागना दे० (क्रि०) सीना, डोरा चलाना, टाँकना, टाँका लगाना, सुई में धागा लगाना, सुई में धागा पिरोना।

तागा दे० (पु०) धागा, सूत, मोटा धागा।

ताज दे० (पु०) मस्तकावरण विशेष, राजा के सिर की पगड़ी, मुकुट, किरीट।

ताजक दे० (पु०) ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।

ताज़न दे० (पु०) कोड़ा, कशा, चाबुक।

ताजबीबी दे० (स्त्री०) मुग़ल सम्राट् शाहजहाँ की बेगम, मुमताज़ महल।

ताजमहल दे० (पु०) मुमताज़ महल का समाधि मन्दिर जो आगरे में सम्राट् शाहजहाँ ने बनवाया था यह बड़ा ही सुन्दर है।

ताज़गी दे० (स्त्री०) नवीनता, सरलता, सरसभाव, अच्छापन, टटकापन। [हृष्टपुष्ट

ताज़ा दे० (वि०) टटका, अम्लान, रसाल, नवीन,

ताज़िया (पु०) काग़ज़ की आकृति जो मुसलमान मोहर्रम में बनाते हैं।

ताज़ीम (स्त्री०) आदर, अदब ।—ी (गु०) अधिक प्रतिष्ठित ।

ताजो दे० (पु०) क्षुद्र अश्व विशेष, पहाड़ी घोड़े की एक जाति, तेज़ घोड़ा,कुत्ते की एक जाति । (गु०) टटका, नवीन । [गहना, कर्णफूल ।

ताटङ्क तद्० (पु०) कर्णभूषण विशेष, कान का एक

ताटस्थ्य तद्० (पु०) उदासीनता,सन्निकट, सामीप्य ।

ताड़ दे० (पु०) जान पहचान, परिचय, समझ, बोध, अवगम, ताल, ताड़ वृक्ष, ताड़ का पेड़ ।

ताड़क दे० (पु०) ताड़ने वाला, समझने वाला, जानने वाला ।

ताड़का तद्० (स्त्री०) सुकेतु नामक यक्ष की कन्या, [सुकेतु निःसन्तान था, सन्तान प्राप्ति के लिये उसने ब्रह्मा की आराधना की, ब्रह्मा के वर से ताड़का का जन्म हुआ। यह जम्भ के पुत्र सुन्द को ब्याही गई थी। किसी कारणवश सुन्द अगस्त्य के शाप से मारा गया। स्वामी की मृत्यु का बदला लेने के लिए ताड़का और उसका पुत्र दोनों अगस्त्य के आश्रम में पहुँचे। अगस्त्य के शाप से ये माता पुत्र राक्षस भावापन्न हुए। इससे ताड़का का क्रोध और भी द्विगुणित हुआ और ये ब्राह्मण जाति के शत्रु बन बैठे। ब्राह्मण को देखते ही ये आग बबूला होकर उन पर आक्रमण करने लगे। इनके अत्याचार से अगस्त्य का आश्रम जन-शून्य हो गया अपनी रक्षा के लिये महर्षि उस आश्रम को छोड़ कर भाग गये। उस वन का नाम ही ताड़का वन हो गया। गङ्गा यमुना के दक्षिण तट पर जो आरा ज़िला है वही ताड़का का वन है। ताड़का और उसके पुत्र के अत्याचार से महर्षिवृन्द बड़ा दुःखी हुआ। इनसे रक्षा पाने के लिए विश्वामित्र अयोध्या पहुँचे, महाराज दशरथ से राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र ने माँगा। यद्यपि पुत्रप्रेम के वशवर्ती महाराज दशरथ, राम लक्ष्मण को देना नहीं चाहते थे, तथापि राजधर्म की गुरुता की ओर देख उन्होंने राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ कर दिया। विश्वामित्र के तपोवन में वे दोनों भाई आये रामचन्द्र ने ताड़का को मार डाला और मारीच को बाणों द्वारा दूर फेंक दिया। ताड़का को मारने से स्त्रीवध के दोष की आशङ्का रामचन्द्र पर नहीं की जा सकती है, क्योंकि जो ताल ठोक कर रण में लड़ने को तैयार है, जिसने स्त्री जनोचित लज्जा और कोमलता छोड़ दी है उसे स्त्री कहना ही किस परिभाषा के अनुसार न्याय सङ्गत हो सकता है ?]

ताडङ्क तद्० (पु०) ताटङ्क, कर्णभूषण विशेष, कान का एक गहना । [आघात, घुड़की, गुमान दण्ड

ताडन तद्० (पु०) [तड्+णिच्+अनट्] मार,प्रहार

ताड़ना दे० (क्रि०) जान लेना, समझ लेना । (स्त्री०) डाँट, धमकी, दण्ड, भर्त्सन ।

ताडनी तद्० (स्त्री०) [ताडन+ई] घोड़े आदि के मारने की छड़ी, चाबुक, कोड़ा, कशा ।

ताडनीय तद्० (वि०) [तड्+णिच्+अनीय] ताड़ने योग्य,ताड़न करने के उपयुक्त,मारने योग्य, अपराधी

ताडपत्र तद्० (पु०) ताड़ वृक्ष का पत्ता ।

ताडित, ताड़ित तद्० (गु०) [तड्+णिच्+क्त] आघातप्राप्त, जिसका ताड़न किया गया हो, मार हुआ । (क्रि०) मारता है, डाँटता है ।

ताड़ी दे० (स्त्री०) ताल रस, नशीला ताड़ का रस, मादक द्रव्यविशेष, कटार की मूठ ।

ताड्यमान तद्० (वि०) [तड्+णिच्+शानच्] पीड्यमान, हटाया गया, पीटा गया, आघातप्राप्त, बजाने के लिए मृदङ्ग आदि को आहत करना ।

ताण्डव तद्० (पु०) नृत्य, नाच, उद्धत नृत्य, कोमलता विवर्जित नृत्य । कहते हैं तण्डि नामक एक ऋषि ने इस विद्या का सर्वप्रथम मनुष्यों में प्रचार किया इसी कारण इसको ताण्डव कहते हैं । महादेव और उनके गण इसी नृत्य के पक्षपाती हैं ।

ताण्डवी तद्० (पु०) सङ्गीत के चौदह तालों में से ताल विशेष । [आद्याचार्य तण्डि मुनि हैं ।

ताण्डि तद्० (पु०) नृत्य शास्त्र, वह शास्त्र जिसके

ताण्डी तद्० (पु०) सामवेदान्तर्गत ताण्ड्य शाखा के पढ़ने वाला ।

तात तद्० (पु०) भद्र, मान्य, माननीय, श्रद्धेय, पूज्य, श्लाघ्य, पिता चाचा, प्रियभाई, प्रियमित्र, पुत्र । यथा—"तात प्रणाम तात सन कहेउ "

यहाँ पहला तात शब्द प्रियमित्रवाची है और दूसरा पितावाची। प्रिय सम्बोधन, पुत्र शिष्य आदि का सम्बोधन, यथा —

"कहहु तात जननी बलिहारी।" —रामायण।

(वि०) गरम, उष्ण, तप्त, तपाया हुआ।

तातगु (पु०) चाचा, काका। (गु०) हाल का, उसी या इसी समय का।

तातनी, तातनो दे० (पु०) उसकी, उसका।

तातत दे० (वि०) ताता, गर्म। तत्० (पु०) पिता के समान सम्बन्धी, घोड़े का काँटा, पाक, रोग।

ताता दे० (वि०) गरम, उष्ण। [आशय, मर्म, मतलब, भाव।

तातील (स्त्री०) बन्दी, छुट्टी। (पु०) अभिप्राय,

तातायेई दे० (स्त्री०) नाच का एक बोल।

ताते दे० (सर्व०) उससे, उस कारण से, उस हेतु से।

(वि०) गरमा गरम, संतप्त, तपे हुए।

तात्कालिक तत्० (वि०) तत्कालोत्पन्न, उसी समय का उत्पन्न हुआ, तात्कालोद्भव, तात्कालीन।

तात्पर्य, तात्पर्य्य तत्० (पु०) अभिप्राय, अर्थ, मर्म, आशय, मतलब।

तात्विक तत्० (वि०) यथार्थ, ठीक ठीक।

तादृष्टस्थ्य तत्० (पु०) तद्रूपता, उसी प्रकार से स्थित, वही भाव। [जन, उसके लिये।

तादर्थ्य तत्० (पु०) समान, अभिप्राय, उसके प्रयो-

तादात्म्य तत्० (पु०) तत्स्वरूपता, अभेदसम्बन्ध, भेद रहने पर भी अभेद प्रतीति।

तादाद (स्त्री०) संख्या, गिनती, शुमार, अनुमान।

तादृश तत्० (वि०) सदृश, उसी प्रकार, उसी के समान, वैसा ही, उसके ऐसा। तादृशी (स्त्री०) तद्रूप, तत्समान।

तान तत्० (स्त्री०) [तन्+घञ्] खींच, विस्तार, ज्ञानविषय, राग, स्वर। (पु०) गान का एक अङ्ग-विशेष।—तोड़ना (क्रि०) परिहास करना, आक्षेप करना, तान की समाप्ति करना।—पूरा (पु०) वाद्य विशेष, सितार के ऐसा एक बाजा।—सेन (पु०) नामी गवैया, यह गौड़ ब्राह्मण थे, इन्होंने गान विद्या में अद्भुत पारदर्शिता प्राप्त की थी। कहते हैं एक समय अपने प्रतिद्वन्द्वी बैजू बावरे के साथ शास्त्रार्थ करते हुए इन्होंने दीपक राग गाया। दीपक राग गाते ही चारों ओर से दीपक आकर इनके शरीर में चिपट गये। शर्त यह थी कि तानसेन के शरीर में जब दीपक चिपटने लगेंगे, उसी समय बैजू बावरा मेघ राग गाकर पानी बरसावेंगे, परन्तु बैजू बावरे ने ऐसा नहीं किया। अतएव तानसेन का शरीर दग्ध हो गया। इस अन्याय से दुःखित होकर इन्होंने अपने जन्म-स्थान को छोड़कर गुजरात की यात्रा की। घटनाक्रम से यह एक गाँव में पहुँचे, वहाँ ताना और नाना नाम की दो स्त्रियाँ जो इस विद्या में बड़ी निपुणता रखती थीं इन्होंने इनको अच्छा किया। तभी से तानसेनी राग का गाना ताना नाना से शुरू करते हैं।

तानव तत्० (पु०) तनुता, क्षीणता, कृशता।

ताना दे० (पु०) फैलाया हुआ सूत, कपड़े बिनने के लिये फैलाया हुआ सूत, ओत, तानासूत, तानी। यथाः—

"ताना नाचे बाना नाचे नाचे सूत पुराना।
करिगह भीतर कबिरा नाचे,यह सतगुर कर बाना।"
कबीर साहब।

कटाव, दरी या कालीन बुनने का यन्त्र या करघा।

(क्रि०) ताव देना, गरम करना, तपा कर जाँचना।

तानाबाना (पु०) फेराफेरी, अदल बदल। कपड़ा बुनने के समय लम्बे चौड़े फैलाये हुए सूत। [तिनको, जिन्हों को।

तानि दे० (क्रि०) तान कर, खींच कर। (सर्व०)

तानी दे० (स्त्री०) ताना बिनने का सूत। (गु०) रागी, गवैया।

तानारीरी दे० (स्त्री०) साधारण गाना।

तान्त्रिक तत्० (पु०) तन्त्रशास्त्रज्ञ, तन्त्रशास्त्रवेत्ता, शास्त्रतत्त्वज्ञ, ज्ञातसिद्धान्त, सुपण्डित।

तान्ना दे० (क्रि०) खींचना, कसना, तुम्बू तानना, टानना, फैलाना।

ताप तत्० (पु०) [तप्+घञ्] सन्ताप, उष्णता, ज्वाला, मन की पीड़ा, बुखार।—जनक (पु०) उष्णताजनक, क्लेशकर, पीड़ादायक।

तापक तत्० (वि०) तापकर्ता तापदेने वाला, दुःख-दायी, दुःखदाता। (पु०) ज्वर, बुखार।

तापन तद्० (पुं०) [तप्+णिच्+अनट्] तप्त करण तपाना, जलाना, शोकयुक्त होना, पीड़न, सूर्य, कामदेव के पाँच बाणों में से एक, सूर्यकान्तमणि, मदार, ढोल बाजा, एक नरक, शत्रु को पीड़ा पहुँचाने वाला तान्त्रिक प्रयोग।

तापना दे० (क्रि०) धमाना, गर्माना, देह सेंकना, आग के पास बैठना, फूंकना, उड़ाना, बरबाद करना।

तापतिल्ली दे० (स्त्री०) प्लीहा, पिलही रोग, पेट का रोग, रोग विशेष।

तापस तद्० (पु०) तपस्वी, योगी, तपश्चर्याकर्त्ता, तपस्या करनेवाला।—तरु इङ्गुदीवृक्ष, एक प्रकार का वृक्ष, जिसके फल से तेल निकलता है, बगला।

तापहीन तद्० (वि०) उष्णतारहित, पीड़ारहित।

तापिच्छ तद्० (पु०) वृक्षविशेष, श्याम तमाल का पेड़।

तापित तद्० (वि०) दुःखित, तापयुक्त।

तापी तद्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, यह नदी विन्ध्य पर्वत के दक्षिण की ओर है और अपने नाम से प्रसिद्ध है।

तापीय दे० (पु०) सोनामाखी, औषधविशेष।

तापूस तद्० (पु० तमालपत्र, तेजपात।

ताप्य तद्० (पु०) धातुमाक्षिक, सोनामाखी, तापीय।

ताफता दे० (पु०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, जिसे धूपछाँह भी कहते हैं।

ताबड़तोड़ दे० (अ०) एक पर एक लगातार, सतत, [निरन्तर।

ताबे (गु०) वशीभूत, अधीन, आज्ञाकारी।—दार (वि०) सेवक, नौकर।—दारी (स्त्री०) नौकरी, चाकरी, अधीनता।

ताम (पु०) देव, विकार, घबड़ाहट, क्लेश, ग्लानि, डरावना, हैरान, क्रुद्ध। [कुधा धातु।

तामचीनी तद्० (स्त्री०) धातुविशेष, ताँबा मिला

तामजाम (स्त्री०) एक प्रकार की पालकी।

तामड़ा दे० (पु०) ताँबे के रङ्ग का एक मणि।

तामरस तद्० (पु०) कमल, पद्म, ताँबा, ताम्र, सोना, सुवर्ण, धतूरा, सारस। [का पौधा।

तामलकी तद्० (स्त्री०) भूमिका, आँवला, एक प्रकार

तामलिप्ती तद्० (स्त्री०) ताम्रलिप्ती, एक नगर का नाम, जो दक्षिण बङ्गाल में है, तामलूक।

तामस तद्० (वि०) तामसिक, तमोगुणयुक्त, मूढ़, जड़, दुष्ट, खल। (पु०) क्रोध, अहङ्कार, तमोगुण।

तामसिक तद्० (गु०) तामस, तमोगुण का कार्य, तमोगुणयुक्त, धर्मविवर्जित कृत्य, तमोगुणी तामसी।

तामसी तद्० (स्त्री०) निशा, रात्रि, कालरात्रि, दुर्गा, जटामासी। (गु०) क्रोधी, आलसी, तमोगुणी, रिसहा, कोपी, कोपन स्वभाववाला।

तामहं दे० (अ०) तत्र, उसमें, उस मध्य में, उस बीच में। [धातुविशेष।

तामा तद्० (पु०) ताम्र, ताँबा, स्वनाम प्रसिद्ध

तामिल तद्० (पु०) देशविशेष।

तामिस्र (पु०) अन्धकारमय नरक विशेष, क्रोध, द्वेष, डाह, अविद्याविशेष।

तामेसरी (स्त्री०) ताँबे के रंग का एक रंग।

तामील दे० (पु०) सम्पादन करना, आज्ञानुसार काम कर देना, मालिक की आज्ञा का पालन करना, देश विशेष।

तामीली दे० (स्त्री०) सम्पादन, आज्ञापालन, आज्ञा पालन करने वाले को जो दिया जाता है। अदालत के चपरासियों को सम्मन तामील करने के लिये वादी और प्रतिवादी पक्ष से जो मिलता है, अथवा वे स्वयं दबाव डाल कर ले लेते हैं। देश भाषा विशेष, तामील देश की भाषा।

तामेश्वर, ताम्रेश्वर तद्० (पु०) औषधविशेष, अपने नाम से प्रसिद्ध औषध, ताँबे का भस्म।

ताम्बूल तद्० (पु०) नागरबेल का पात, पान।

ताम्बूली तद्० (पु०) ताम्बूल की लता, नागरबेल।

ताम्बूलिक तद्० (पु०) तमोली, पान बेचने वाला।

ताम्र तद्० (पु०) धातुद्रव्यविशेष, ताँबा।—कर (पु०) कसेरा, ठठेरा, ताँबे का व्यापार करने वाला।—कूट (पु०) तम्बाकू का पौधा।—गर्भ (पु०) तूतिया, नीलाथोथा, ताँबा इनसे निकाला जाता है।—चूड़ (पु०) कुक्कुट, मुरगा, कुकरौंधा।—पत्र (पु०) ताँबे का बना पत्र, पहले जिस पर राजाज्ञा लिखी जाती थी।—वर्ण (वि०) ताँबे के रंग का। (पु०) शरीर का चाम, सीलोन नामक द्वीप।

तामदाद (स्त्री०) देखो तादाद।

तायफा दे० (पु०) नर्तकों सम्प्रदाय, रंडियों का समूह वेश्या, वेश्यासमुदाय।

ताया तद्० (पु०) बड़ा चाचा, पिता का बड़ा भाई। (क्रि०) तपाया हुआ, गर्म किया हुआ, सोने आदि धातुओं का खिंचा हुआ सूत, धातु का धागा।—बाँधना (वा०) लगातार जारी रखना, किसी काम को लगातार करना, तांता बाँध देना।—टूटना (वा०) अवर्ग होना, छूट जाना, बंद होना।

तारक तद्० (पु०) मन्त्रविशेष, उद्धारकर्त्ता मन्त्र, रामतारक मन्त्र, सितारा, नक्षत्र, आँख की पुतली, तारक एक राक्षस का नाम, देवशत्रु। तारकासुर ने तपस्या से ब्रह्मा को प्रसन्न करके दो वर पाये थे। पहला वर यह था कि इस संसार में उससे बलवान् दूसरा कोई उत्पन्न न हो और दूसरा वर यह था कि महादेव के पुत्र से ही यह मारा जाय। ब्रह्मा का वर पाकर वह देवताओं को दुःख देने लगा। देवताओं के कष्ट की सीमा न रही। उसका वध साधन करने के लिये देवताओं ने प्रयत्न करना प्रारम्भ किया। महादेव के पुत्र उत्पन्न होने के लिये देवताओं ने षड्यन्त्र रचा। क्योंकि योगिराज महादेव विवाह करना ही नहीं चाहते थे। अतएव उन लोगों ने कामदेव को इसका भार सौंपा। कामदेव जाकर महादेव की क्रोधाग्नि में भस्म हो गया। इससे देवताओं के कष्ट की सीमा न रही। हिमाद्रितनया पार्वती शिव को पतिवरण करने के लिये उन दिनों उसी पर्वत पर तपस्या कर रही थीं। घोर तपस्या करने के अनन्तर महादेव प्रसन्न हुए और उनसे विवाह किया। उनके गर्भ से कार्त्तिकेय उत्पन्न हुए। देवताओं ने इनको अपना सेनापति बनाया। युद्ध में इन्होंने तारकासुर को मार डाला। (२) इन्द्र का शत्रु राक्षस, इसने इन्द्र को बड़ा कष्ट दिया, इन्द्र विष्णु की शरण में गये, विष्णु ने नपुंसक का रूप धारण करके इसे मार डाला।

तारकारि तद्० (पु०) [तारक+अरि] तारकासुर का शत्रु, कार्त्तिकेय, स्वामिकार्त्तिक, षडानन।

तारकी तद्० (वि०) तारकायुक्त तारासहित।

तारकूट तद्० (पु०) सामकूट रूपा, पीतल।

तारकेश्वर तद्० (पु०) सदाशिव, महादेव, इस नाम का तीर्थविशेष।

तारटूटना दे० (क्रि०) सिद्धी उखड़ना, कारबार नष्ट हो जाना, प्रवेश बन्द होना, मुलाहज़ा देकर अपने वश में लाये हुए का छिटक जाना।

तारण तद्० (पु०) [तृ+णिच्+अनट्] उद्धारण, पारकरण, पार उतारना, उद्धार करना। —तरण (पु०) पार करने वाला, उद्धार करने वाला, स्वयं उद्धार होने वाला।

तारणा दे० (क्रि०) पार करना, उद्धार करना, त्राण करना, उबारना।

तारणी (स्त्री०) वाम और उपवाम की माता और कश्यप की पत्नी।

तारणीय तद्० (पु०) [तृ+णिच्+अनीय] तारण करने योग्य, उद्धारणीय, उद्धार करने योग्य, पार करने योग्य।

तारतण्डुल तद्० (पु०) सफ़ेद ज्वार।

तारतम्य तद्० (पु०) न्यूनाधिक्य, सामान्य प्रभेद, दो पदार्थों में एक की अधिकता और दूसरे की न्यूनता, थोड़ा बहुत भेद।

तारतोड़ दे० (पु०) कारचोबी विशेष, एक प्रकार का सोने के तारों का काम, चूटेकारी, बूटा निकालने का काम।

तारन तद्० (पु०) तारने वाला, उद्धार।

तारना दे० (क्रि०) उद्धार करना उबारना, पार करना, मुक्त करना।

तारपतार दे० (वि०) तितरबितर, छिन्नभिन्न, फटा टूटा।

तारपीन (पु०) चीड़ लकड़ी का तेल।

तारल्य तद्० (पु०) द्रवत्व, चपलता।

तारा तद्० (स्त्री०) सितारा, नक्षत्र, आँखों की पुतली। (१) कपिराज बालि की स्त्री, यह सुषेण नामक कपिराज की कन्या और अङ्गद की माता थी। बालि के मारे जाने के अनन्तर इसने सुग्रीव को अपना पति बनाया था। यह पञ्चकन्याओं में है जिनका प्रातः स्मरण करना शास्त्रकारों ने बतलाया है। (२) दश महाविद्या के अन्तर्गत एक विद्या, यह काली का दूसरा रूप है, इनका आकार—काली के समान तो नहीं—परन्तु तौभी भयङ्कर है।

इनका वर्ण नील है, जीभ लम्बी और लपलपाती हुई है, पाच मस्तक जिन पर अर्द्धचन्द्र हैं, तीन आँखें हैं, चार हाथ और व्याघ्र इनका वाहन है। (३) देवगुरु बृहस्पति की स्त्री, चन्द्रमा इनकी सुन्दरता पर मोहित होकर एक दिन इनको हर ले गये,बृहस्पति ने चन्द्रमा का अत्याचार देवताओं से कह सुनाया, देवता और ऋषियो ने तारा को दे देने के लिये चन्द्रमा से कहा, परन्तु चन्द्रमा ने किसी का कहना नहीं सुना। यह देख रुद्र बृहस्पति की ओर से लड़ने के लिये प्रस्तुत हुए। ब्रह्मा ने बात को अधिक बढ़ते देख चन्द्रमा को समझा बुझा कर उनसे तारा दिलवा दी, उस समय तारा के गर्भ था, बृहस्पति ने गर्भ निकाल कर अपने पास आने का अनुरोध किया, तारा ने उस गर्भ को सरपत पर निकाल कर रख दिया। उस लड़के का नाम रक्खा गया दस्युसुन्तम, परन्तु जब चन्द्रमा को यह मालूम हुआ कि मेरे औरस से उसकी उत्पत्ति हुई है, तब चन्द्रमा ने उसे ले लिया, और उसका नाम रक्खा बुध। भाग्य। (क्रि०) तार दिया, उद्धार किया।—गण—(पु०) नक्षत्र समुदाय, नक्षत्रों का समूह।—पति (पु०) चन्द्रमा, बृहस्पति, बालि।—पथ (पु०) आकाश, गगन मण्डल, नभोमण्डल।—पीड (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा, विधु निशाकर।—मण्डल (पु०) नक्षत्र मण्डल, नक्षत्रसमुदाय।

ताराबाई दे० (स्त्री०) प्रसिद्ध सीसोदिया और पृथ्वीराज की वीर पत्नी। यह सोलङ्की राजाराव सूरतान की कन्या थी। ताराबाई के पिता पितामह आदि टोड़ा में राज्य करते थे। एक बार लायला नामक अफ़ग़ान ने इन पर चढ़ाई की सूरतान वहाँ से भाग कर राजपूताना अरावल्ली के पाद देशस्थ बेदनौर में आकर रहने लगे। उस समय ताराबाई युवती थीं,युद्ध के साज में रहना उन्हें बहुत अधिक अच्छा मालूम होता था। उनकी प्रतिज्ञा थी कि जो मुसलमानों से टोड़ा का उद्धार करेगा उसी से मैं अपना विवाह करूँगी। मेवाड़ के राजा राजमल के पुत्र पृथ्वीराज को इन्होंने अपना पति बनाया। पुनः इस दम्पति ने राजपूत सेना लेकर टोड़ा पर चढ़ाई की और उस पर अपना अधिकार फैला लिया। पृथ्वीराज प्रभुराय की विश्वासघातकता से मारे गये, उन्हीं के साथ वीरबाला ताराबाई का भी अन्त हो गया।

(२) प्रसिद्ध महाराष्ट्र वीर शिवाजी की पुत्रवधू और राजाराम की पत्नी। १७०० ई० में पति की मृत्यु होने पर सिंहगढ़ पर औरङ्गज़ेब की सेना की चढ़ाई रोकने के लिये ताराबाई ने योद्धाओं का वेष धारण कर लड़ाई की थी। तीन बरस तक लगा तार लड़ाई होने के बाद सिंहगढ़ औरङ्गज़ेब के अधिकार में आया था, किन्तु ज्योंही औरङ्गज़ेब वहाँ से लौटा त्योंहीं ताराबाई ने सिंहगढ़ को अपने अधिकार में कर लिया मरहठों के अनेक युद्ध और राजनीति में ताराबाई की विलक्षण बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है। १७२३ ई० में ताराबाई ने परलोक यात्रा की। [आँखों की पुतली।

तारिका तद्० (स्त्री०) ताड़ीरस, ताड़ी। (तद्०)

तारिणी तद्० (स्त्री०) दश महाविद्या में दूसरी महाविद्या, उद्धारकर्त्री, उद्धार करने वाली स्त्री।

तारी दे० (स्त्री०) ताड़ी, मादकद्रव्य, तार का बना हुआ, तेल मापने का बर्तन जिसमें पाँच सेर तेल आता है।

तारीख़ दे० (स्त्री०) दिवस, दिन, तिथि।

तारीफ़ दे० (स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति स्तव, परिचय।

तारुण्य तद्० (पु०) यौवन, यौवनावस्था, जवानी।

तारू तद्० (पु०) तालु, तालू।

तारे गिनना दे० (वा०) नींद न आना, निठल्ले बैठे रहना निकम्मा रहना। [न्यायशास्त्री,तर्क शास्त्रज्ञ।

तार्किक तद्० (पु०) तर्कशास्त्रवेत्ता, नैयायिक,

ताल तद्० (पु०) हरिताल, तालीशपत्र दुर्गा का सिंहासन, तालाब, गान का परिमाण ताली बजाने का शब्द, ताड़ का पेड़,खजूर का पेड़ जाँघ या बाँह पर हथेली मार कर किया हुआ शब्द मजीरा चश्मे का एक ताल बित्ता, महादेव, पोखरा।—कूटा (पु०) झाँझे बजाकर भगवद् भजन करने वाला।—केतु (पु०) ताड़ के चिन्ह वाली ध्वजा वाले भीष्म बलराम।—खजूरी (स्त्री०) वृक्षविशेष पुष्पहरिया वृक्ष।—मारना,—ठोकना(वा०) युद्धार्थ प्र ह्वान

करना चेष्टा विशेष से मल्लयुद्ध करने के लिये बुलाना, एक भुजा के ठोक कर दूसरे हाथ से उसे ठोंकना। —ध्वज (पु०) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई।—पत्री, मूलिका (स्त्री०) औषधविशेष, मूसली।—वृन्त (पु०) पंखा, तालपत्र निर्मित पंखा, व्यजन, बेना, पेनिया।—वृन्तक (पु०) पंखा, व्यजन।
तालक दे० (पु०) आगल, बिल्ली, सिटकिनी।
तालमखाना दे० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध पौधा, फल।
तालव्य तत्० (पु०) तालू के द्वारा उच्चारित वर्ण, तालुजात। [इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श]।
ताला दे० (पु०) द्वार बन्द करने की कल, द्वार का अवरोधक यन्त्र, बड़ा तालाब।
तालाङ्क तत्० (पु०) बलदेव, हलधर, आरा, एक साग, शुभ लक्षणों वाला पुरुष, पुस्तक, महादेव।
ताली दे० (स्त्री०) चाभी, कुञ्जी, ताला बन्द करने की चाभी, दोनों हाथ बजाने का शब्द, थपोड़ी, वाद्य वृक्ष विशेष, ताड़ी, सुखली, थपड़ा।—एक हाथ से बजाना (वा०) अनहोनी बात, असम्भव। —बजाना —मारना (वा०) हाथ पर हाथ पटकना, ठट्ठा करना, ठहाका मारना, परिहास करना, धुतकारना, दुतकारना, धिक्कारना। [अध्ययन।
तालीम दे० (पु०) शिक्षा सिखावन, उपदेश,
तालीस तत्० (पु०) वृक्षविशेष।
तालु या तालू तत्० (पु०) तारू, मुँह के ऊपर का भाग, मूर्द्धा, तालुआ, ताल, तालवृक्ष।
तालेवर (पु०) धनी, दौलतमन्द, मालदार।
ताव तद्० (पु०) ताप, सन्ताप, क्रोध, ऐंठ, अकड़ अकड़न, तमक, बल, शक्ति, सामर्थ्य, कागज़ का तख़्ता, परख, परीक्षा, उतावली, शीघ्रता, हड़बड़ी।—देना (क्रि०) मरोड़ना, ऐंठना, बेंटना, बल देना, मूँछों पर हाथ रखकर अपनी शक्ति बतलाना, चाशनी बनाना।—पेंचखाना (वा०) गरम होना, क्रोधित होना। [अवधिवाची अव्यय।
तावत् तत्० (अ०) तब तक, वहाँ तक, इतना तक,
तावना तद्० (क्रि०) तपाना, गरम करना, गरम करके खराई खोटाई की आँच करना, ताव देना, परखना, कसना, आँचना, बल देना, अकड़ाना, मरोड़ना, ऐंठना।

ताव भाव दे० (पु०) मौका, अवसर। (वि०) हलकासा, ज़रासा।
तावर (स्त्री०) बुखार, ज्वलन, ज्वर।
तावरो (पु०) घाम, दाह, गर्मी, चक्कर, मूर्छा, घबड़ाहट।
तावल (स्त्री०) उतावलापन, हड़बड़ी।
तावान (पु०) सज़ा, दण्ड, डाँट।
तावीज़ दे० (पु०) अलङ्कारविशेष, गण्डा, यन्त्र।
तास, ताश दे० (पु०) गञ्जीफा, बूटेदार पट्ट एक प्रकार का खेल खेलने के लिये कई प्रकार के चित्रित पत्ते, सीने का डोरा।
तासा, ताशा दे० (पु०) वाद्यविशेष, एक प्रकार का देशी बाजा।
तासीर (स्त्री०) गुण, असर, प्रभाव।
तासु दे० (सर्व०) उसका, तत्सम्बन्धी, तिसका।
तासों दे० (सर्व०) उससे।
ताहम (अव्य०) तोभी, फिर भी, तब भी, तिसपर भी।
ताहि या ताही दे० (सर्व०) उसको, उसे, तिसको।
ताहिरी दे० (स्त्री०) भोजनविशेष, एक प्रकार का भोजन, पीले चाँवल और बरी। [शब्द।
तिकतिक दे० (पु०) गाड़ी आदि के बैल चलाने का
तिकुरी दे० (स्त्री०) तिहाई, तीसरा, एक प्रकार का यन्त्र जिससे यज्ञोपवीत का सूत बटा जाता है।
तिकोनिया तद्० (वि०) त्रिकोण, तीन कोण का पदार्थ, तिखूँटा।
तिक्का दे० (पु०) माँस का छोटा टुकड़ा।
तिक्त तत्० (पु०) [तिज् +क्त] रसविशेष, तीतरस, तीखा, चिरायता, तिक्तरसयुक्त, तीता, कड़ुआ, चरपरा, पित्तपापड़ा सुगन्ध, कुटज, वरुण वृक्ष। —तण्डुला (स्त्री०) पिप्पली, पीपल।—यवा (स्त्री०) कुटकी।
तिक्तक तत्० (पु०) पटोल, परवर, चिरतिक्त, चिरायता, काला कथा, इंगुदी, नीम, कुटज।
तिक्तिका तत्० (स्त्री०) कटुतुम्बी, चिरपोटा।
तिखरा दे० (वि०) तिबारा, तिहारा, तिहरा, तीन बेर।—करना (क्रि०) तीन बार खेत को जोतना, तीन बार स्वीकार करना।

तिखारना दे० (क्रि०) दो बार जोते हुए खेत को जोतना, किसी बात की सत्यता जाँचने के लिये तीन बार पूछना, परखना । [तिहरा ।
तिगुन या तिगुना तद्० (वि०) त्रिगुण, तिन गुणा,
तिग्म तद्० (वि०) [तिज्+म] तीक्ष्ण, उग्र, खर, कटु, पैना, तेज । (पु०) वज्र पीपर, पुरुवंशीय एक क्षत्रिय । [भानु, दिवाकर ।
तिग्मांशु तद्० (पु०) [तिग्म+अंशु] सूर्य, रवि,
तिघरा (पु०) मटकी, दूध दही रखने का बर्तन ।
तिजारत (स्त्री०) व्यापार, उद्योग, व्यवसाय ।
तिच्छन तद्० (गु०) तीक्ष्ण, तेज, कठोर ।
तिजारी दे० (स्त्री०) अन्तरिया, कम्पज्वर, तीसरे दिन आनेवाला ज्वर ।
तिजिल तद्० (पु०) [तिज+इल] चन्द्रमा, राक्षस ।
तिड़ी बिड़ी दे० (वि०) तितर बितर, छितराया हुआ । [टुकड़ा ।
तिणका तद्० (पु०) तृण, घास, तिनका, घास का
तित दे० (अ०) तत्र, तहाँ, तहीं ।
तितना दे० (क्रि० वि०) उतना, परिमाणवाची ।
तितरबितर दे० (अ०) छिन्नभिन्न, इधर उधर, छितरा हुआ ।
तितरी दे० (स्त्री०) } कीटविशेष लघुकीट, रंगविरङ्ग
तितला दे० (स्त्री०) } पर वाला कीट ।
तितारी दे० (स्त्री०) तीन तार की, तीन सूत्र वाली तीन ताल वाली । [क्षमावान, धैर्यवान, धीरतायुक्त ।
तितिक्षक तद्० (पु०) सहनशील, सहिष्णु, क्षमी,
तितिक्षा तद्० (स्त्री०) धैर्य, धीरज, क्षमा, सहन शीलता । [तितिक्षक ।
तितिक्षु तद्० (पु०) [तिज्+सन्+उ] सहिष्णु,
तितिम्बा, तितिम्मा दे० (पु०) घटक धोखा धाँधल, दम्भ, अनुकरण अवशिष्टांश, परिशिष्ट ।
तितीर्षु तद्० (स्त्री०) तरने की इच्छा ।
तितर्षु तद्० (गु०) [तृ+सन्+उ] तरणेच्छुक तरना चाहने वाला ।
तिते (पु०) तितने, उतने ।
तितेक (स्त्री०) उतने, उतना ।
तितो (गु०) उतना ।
तित्तिर तद्० (पु०) तीतर पक्षी, पक्षी, पक्षिविशेष ।

तिथ तद्० (पु०) आग, कामदेव, काल, वर्षा ऋतु ।
तिथि तद्० (स्त्री) प्रतिपदा आदि पन्द्रह चन्द्रकला की क्रिया, चन्द्रकला का उतराव घटाव, पञ्चदश चन्द्रकला से युक्त काल, दिन, हिन्दुओं की तारीख़। —पत्र (पु०) पञ्चाङ्ग, जन्त्री, पत्रा ।—क्षय (पु०) तिथि की हानि । [तीन द्वार हों, बैठक ।
तिद्वारा दे० (पु०) तीन द्वार का दालान, घर जिसमें
तिदरी दे० (स्त्री०) तीन द्वार का छोटा घर, छोटी बैठक छतरी । [ओर ।
तिधर दे० (सर्व०) उस स्थान पर, उस स्थान की
तिधारा दे० (पु०) पौधाविशेष, तीन धारे का सङ्गम, त्रिवेणी, तीन धारा वाला ।
तिन या तिन्ह दे० (सर्व) 'तिस" का बहुवचन उन, वे लोग । (पु०) तिनका ।
तिनकना दे० (क्रि०) झल्लाना, बिगड़ना, चिढ़ना ।
तिनका दे० (पु०) खर, डाँठी, घास का टुकड़ा, तृण ।—दाँतों में लेना (वा०) शरण आने की एक मुद्रा, अधीन होना, जी का दान माँगना, अपराध क्षमा कराना ।
तिनगना (क्रि०) बिगड़ना, क्रुद्ध होना, झल्लाना, रूठना ।
तिन्तिड़ तद्० (स्त्री०) इमली, कुचिया ।
तिन्द तद्० (पु०) वृक्ष और फल विशेष ।
तिन्दुक तद्० (पु०) तमालवृक्ष, तेंदुवा ।
तिन्दुला तद्० (स्त्री०) औषधविशेष, पीपर ।
तिन्नी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का चावल, जो फला हार में गिना जाता और ऋषिपञ्चमी के दिन खाया जाता है ।
तिपाई दे० (स्त्री०) तीन पाये की चौकी, टिकटी ।
तिपैरा दे० (पु०) बड़ा कूप जिस पर तीन घाट हों, तीन चरसों के एक साथ चलाने के हों ।
तिबारा दे० (पु०) तीन बेर, तीसरी बार, तीन द्वार का घर या कोठा ।
तिबासी दे० (वि०) तीन दिन का रखा हुआ ।
तिब्बत दे० (पु०) देशविशेष हिमालय के उत्तरस्थित एक देश का नाम ।
तिमि तद्० (पु०) शतयोजनविस्तृत मत्स्य, बृहत् मत्स्यविशेष । (अ०) तिस भाँति, तिस प्रकार, तिस तरह ।

तिमिङ्गिल तद्० (पु०) तिमि से भी बड़ा मत्स्य, सुवृहत् मछली, एक प्रकार का अण्डज जीव।

तिमिर तद्० (वि०) मोंगा, स्थिर, अचञ्चल, अचल। तद्० (पु०) अन्धकार, अंधेरा, अँधियारा।—हर (पु०) सूर्य, रवि, चन्द्रमा, अग्नि।

तिमिष (पु०) सफेद कुँहड़ा, ककड़ी, फूट।

तिमी तद्० (स्त्री०) दक्ष की पुत्री, कश्यप की स्त्री, मत्स्य विशेष। [तीन रास्ते मिलते हों।

तिमुहानी दे० (स्त्री०) वह स्थान जहाँ तीन नदी या

तिय, तिया दे० (स्त्री०) स्त्री, योषित्, नारी, अबला।

तियतरा (पु०) तीन लड़कियों के बाद उत्पन्न हुआ पुत्र।

तियला (पु०) स्त्रियों के वस्त्र। [कोने की वस्तु।

तिरकोना तद्० (वि०) त्रिकोण, तीन कोनिया, तीन

तिरखा तद्० (स्त्री०) पिपासा, प्यास। [का अस्त्र।

तिरखूँटी दे० (स्त्री०) त्रिकोण अस्त्रविशेष, तीन कोने

तिरछा तद्० (वि०) टेढ़ा, बाँका, वक्र।—देखना कनखियों से देखना, तिरछी चितवन से देखना।

तिरछाना तद्० (क्रि०) टेढ़ा करना, बाँका करना, हठीला होना, हठ करना।

तिरछी तद्० (वि०) टेढ़ी, बाँकी।

तिरछौंहें दे० (क्रि० वि०) तिरछापन या बाँकापन लिये हुए। [बूँद करके टपकना।

तिरतिराना दे० (क्रि०) रिसाना, झिरझिराना, बूँद

तिरना दे० (क्रि०) तैरना, उतराना, पैरना, हेलना।

तिरपटा (गु० वि०) ऐंचाताना, भेंगा।

तिरपद तद्० (पु०) } तिपाई, तीन पैर की ऊँची
तिरपदी तद्० (स्त्री०) } चौकी। [अधिक पचास।

तिरपन दे० (वि०) पचास और तीन, ५३, तीन

तिरपाई दे० (स्त्री०) देखो तिरपद।

तिरपाल दे० (पु०) रोगन लगा हुआ कनवस जो मेह के पानी से बचाने के लिये अनाज या अन्य वस्तु से भरे बोरों पर रेलवे स्टेशनों पर डाला जाता है।

तिरपौलिया दे० (पु०) सिंहद्वार, राजमहल का वह द्वार जिसमें तीन पौर्ल हों और जो धनुष के आकार का बना हुआ हो।

तिरफला तद्० (पु०) त्रिफला, तीन फल का समुदाय आँवला, हर्रे और बहेड़ा, तीन फल, तीन फल की चूरी।

तिरबेनी तद्० (स्त्री०) त्रिवेणी।

तिरमङ्गा दे० (वि०) टेढ़ामेढ़ा, ऊबड़खाबड़, तिरछा, बाँका। [नाम।

तिरमङ्गी तद्० (पु०) छन्दविशेष, श्रीकृष्ण का एक

तिरमिरा तद्० (पु०) नेत्र में उत्पन्न एक प्रकार का रोग जो शारीरिक निर्बलता से उत्पन्न होता है, चकाचौंध।

तिरमिराना (क्रि०) दृष्टि का उजेले में न ठहरना, चौंधना, चौंधियाना।

तिरस तद्० (वि०) टेढ़ापन से, वक्रता से।

तिरसठ दे० (वि०) साठ तीन, ६३, तीन अधिक साठ।

तिरस्कार तद्० (पु०) निन्दा, अवमान, अपमान, अप्रतिष्ठा। [ज्ञात।

तिरस्कृत तद्० (वि०) अपमानित, निन्दित, अव

तिरस्क्रिया तद्० (स्त्री०) अनादर, अप्रतिष्ठा, अवहेला, पहरावा, आच्छादन।

तिरहुत या तिरहुति दे० (पु०) देश विशेष, बिहार का एक प्रान्त, मिथिला देश।

तिराना दे० (क्रि०) तैरना, पार होना, पैरना, लाभ होना। [अधिक नब्बे।

तिरानबे दे० (वि०) नब्बे और तीन, ९३, तीन

तिराव दे० (पु०) पैराव, हेलाव, थाह, तरने योग्य।

तिरासी दे० (पु०) अस्सी तीन, ८३, तीन अधिक अस्सी।

तिराहा दे० (पु०) तिरमुहानी।

तिरिया दे० (स्त्री०) स्त्री, नारी, लुगाई, कामिनी, योषित्।—चरित्र (पु०) स्त्रियों का छल प्रपञ्च, स्त्री का मकर। [पृथक्।

तिरीबिरी दे० (अ०) तितरबितर, छिन्नभिन्न, अलग-

तिरेंदा दे० (पु०) बंसी के काँटे के ६ः सात अंगुल ऊपर बँधी लकड़ी जो पानी की सतह पर तैरा करती है और जिसके डूबने से किसी मछली के फँस जाने का बोध होता है। समुद्र में उथले जगह या जल के भीतर चट्टान के बतलाने को जो पीपे छोड़े जाते हैं, उन्हें भी "तरेंदा" कहते हैं।

तिरोधान तद्० (पु०) [तिरस्+धा+अनट्] अन्तर्धान, लुकाव, छिपाव, ढकाव, व्यवधान, आच्छादन।

तिरोधायक तद्० (पु०) आड़ करने वाला।

तिरोभाव तत्० (पु०) अदर्शन, अन्तर्धान।
तिरोभूत तत्० (वि०) अदृष्ट, गुप्त, छिपा हुआ।
तिरोहित (वि०) [तिरस्+धा+क्त] अन्तर्हित, गुप्त, आच्छादित।
तिरौंछा (पु०) तिरछा।
तिर्मिरा दे० (पु०) चञ्चल, अस्थिर, उष्णता से व्याकुल, उद्विग्नचित्त।
तिर्मिराना दे० (क्रि०) झूलना, लहकना, चौंधियाना, व्याकुलता से हाथ पैर धुनना, पानी पर तेल की बूँदों का फैलना।
तिर्मिरी दे० (स्त्री०) चक्कर, घुमड़ी, भँवर।
तिर्यक् तत्० (वि०) तिरस्+अच्+क्विप्] टेढ़ा, बाँका, तिरछा, वक्र, कुटिल, प्राणिविशेष।—पति (पु०) सिंह, शार्दूल।—स्रोता (पु०) पशु पक्षी आदि, ब्रह्मा का आठवाँ सर्ग।—योनि (पु०) पशु पक्षी आदि।
तिर्हुत दे० (पु०) प्रान्तविशेष, बिहार का प्रान्त, मिथिला, तिरहुत।
तिल तत्० (पु०) मत्स्य विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध अन्न-विशेष, शरीर का चिन्ह,काले काले शरीर के दाग, अल्पतर, बहुत थोड़ा।—कुट (पु०) तिल की मिठाई, तिल की बनाई एक प्रकार की मिठाई।—चट्टा (पु०) कीट विशेष, तैलपा, तैलचोरिका।—चावली (स्त्री०) मिला हुआ तिल और चावल, एक प्रकार का चबेना, काली और श्वेत वस्तुओं का मिलाप।—चूरी (स्त्री०) तिलकुट, मोदक विशेष, कुटा हुआ तिल।—तैल (पु०) तिल का तेल।—धेनु (स्त्री०) तिल की बनी हुई गाय, जो दान करने के लिये प्राय माघ महीने में बनाई जाती है।—पर्णी (स्त्री०) चन्दन।—पिञ्ज (पु०) तिल का पछोड़।—पिष्टक (पु०) तिल की खली, तिल का उबटन।—वर (पु०) पक्षि विशेष।—भेद (पु०) पोस्त का पौधा, पोस्त का बिरवा।
तिलक तत्० (पु०) टीका, चन्दन आदि का मस्तक-स्थित चिन्ह, पुष्पवृक्ष विशेष, शरीरस्थ तिल, अश्व भेद, रोगभेद, राज्याभिषेक, गद्दी,सगाई की रस्म, भूषण, पुस्तकों की व्याख्या। (वि०)श्रेष्ठ,प्रधान, मुख्य,यह शब्द विशेषण शब्दों के अन्त में आनेसे उनकी उत्कृष्टता—अधिकता बतलाता है। यथाः—
"रघुकुलतिलक सदा तुम उथपन थापन।"
—जानकीमङ्गल।
तिलकमुद्रा (पु०) टीका तथा भगवद् आयुधों का चिन्ह।
तिलमिलाना (क्रि०) चौंधियाना।
तिलङ्गा दे० (पु०) सिपाही, सैनिक, तैलङ्गदेश के रहने वाले कहते हैं सब से पहले अङ्गरेज़ी सेना में तैलङ्ग देश के ही वासी भर्ती किये गये थे, इसी कारण अङ्गरेज़ी सैनिकों का नाम ही तिलङ्गा हो गया।
तिलङ्गी दे० (स्त्री०) गुड्डी, पतङ्ग, चङ्ग।
तिलड़ा, तिलरा दे० (पु०) तिनलरा हार, तीन लर का हार। (स्त्री०) तिलरी।
तिलवा दे० (पु०) तिलों का लड्डू।
तिलस्म (पु०) जादू, चमत्कार, करामात।—ी (पु०) जादू का, तिलस्म सम्बन्धी।
तिलहन दे० (पु०) तेल के बीजों (जैसे तिल, सरसों तोसी आदि) की फसल।
तिलहा दे० (वि०) तेल के समान चिकना, तेल में पका या बना, चिक्कण, तेलिया, तेली।
तिला दे० (पु०) सोना, पगड़ी का छोर, जिसमें सोने के तारों का काम किया होता है, नपुंसकता दूर करने के लिये एक तेल विशेष।
तिलाई दे० (स्त्री०) लोहकढ़ा, छोटी कढ़ाही।
तिलाक (स्त्री०) देखो तलाक़।
तिलाञ्जलि तत्० (स्त्री०) मृतक संस्कार का एक कार्य विशेष, तिल सहित जल की अञ्जलि जो मृत पुरुष के नाम से दी जाती है।—देना (वा०) तिल भर भी सम्बन्ध न रखना, सम्पूर्णतया त्याग देना।
तिलाया (पु०) बड़ा कूप जिसपर तीन पुरवट चलें। रौंद, पहरेदार का गश्त।
तिलिया दे० (पु०) विष विशेष, सरपत।
तिली दे० (स्त्री०)तिल,जिसका फुलेल बनाया जाता है।
तिलुवा दे० (पु०) तिल का लड्डू, तिल का बना। लड्डू।
तिजैहा दे० (पु०) पक्षि विशेष, घुघ्घू, पण्डुकी।

तिलोत्तमा तद्० (स्त्री०) स्वर्ग की अङ्गना, देवाङ्गना, स्वर्गीय अप्सरा। पहले दैत्यराज हिरण्यकशिपु के वंश में निकुम्भ नामक एक दैत्य उत्पन्न हुआ था। उसके सुन्द और उपसुन्द नामक दो पुत्र थे। इन दोनों ने त्रिलोक जीतने की इच्छा से कठोर तपस्या की, ब्रह्मा ने इन्हें वर दिया कि त्रिलोक में कोई भी तुम लोगों को मार नहीं सकेगा, हाँ यदि तुम लोग किसी कारण आपस में विवाद करोगे, तभी तुम दोनों की परस्पर के आघात से मृत्यु होगी। अब क्या था, वे उपद्रव करने लगे, देवता उनके अत्याचार से अत्यन्त पीड़ित हुए। मिलकर सभी देवता, ब्रह्मा के पास गये, ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को बुलाया और सर्वाङ्ग सुन्दरी रमणी की सृष्टि करने के लिये उससे कहा, उन्होंने संसार के सभी उत्तम पदार्थों से तिल तिल संग्रह करके एक रमणी की सृष्टि की, जिसका नाम तिलोत्तमा रखा गया। ब्रह्मा की आज्ञा से वह सुन्द उपसुन्द के समीप गई। उसको देख उन असुरों के हृदय में आप ही आप विवादानल भड़क उठा। वे तिलोत्तमा के लिये आपस में लड़ने लगे और आपस ही में कट मर गये। यही तिलोत्तमा दुर्वासा के शाप से बाणासुर के यहाँ उत्पन्न हुई थी।

तिलोक (पु०) तीनलोक, त्रिलोक।—ी (पु०) छन्द विशेष जिसमें २१ मात्राएं होती हैं।

तिलोदक तद्० [तिल+उदक] तिल और जल मिलाकर तर्पण, पितरों का तर्पण, पितृतर्पण।

तिलौदन तद्० (पु०) [तिल+ओदन] मिला हुआ तिल और ओदन, खिचड़ी, कृशरान्न।

तिलौंछना (क्रि०) तेल लगाकर चिकनाना।

तिलौंछा (वि०) तेलिया रंग या स्वाद वाला।

तिल्ली तद्० (स्त्री०) पिलही, प्लीहा, तिल नाम का अन्न, बाँस विशेष।

तिवारा तद्० (पु०) तिदरी, त्रिगुणित, तीसरे बार।

तिवारी, तिवाड़ी तद्० (पु०) त्रिपाठी, त्रिवेदी।

तिबासी दे० (पु०) तीन दिन का बासी।

तिष तद्० (स्त्री०) तृषा, तृष्णा, पिपासा, प्यास।

तिष्ठना तद्० (क्रि०) ठहरना, स्थिर होना, विराजना, खड़ा होना, गति शून्य होना।

तिष्ठित तद्०
तिष्ठते तद्० } (वि०) ठहरा हुआ, बैठा हुआ।

तिष्य तद्० (पु०) [तिष्+य] पुष्यनक्षत्र, आठवाँ नक्षत्र, पौष मास, कलियुग, कल्याणकारी।

तिसका दे० (सर्व) उसका, जिसका।

तिसराव (क्रि० वि०) तीसरी बार, तिवारा।

तिसरायत दे० (पु०) वादी और प्रतिवादी से दूसरा, मध्यस्थ, मध्यवर्ती, उदासीन, बिचवई।

तिसरैत दे० (पु०) दो झगड़ने वालों से पृथक् तीसरा, तटस्थ, मध्यस्थ, तीसरे भाग का अधिकारी।

तिसूत दे० (पु०) औषध विशेष।

तिहत्तर दे० (वि०) सत्तर और तीन, ७३, तीन और सत्तर। [त्रिगुणित, तिगुना।

तिहरा दे० (पु०) तिलड़ा, तीनलड़ा। (वि०),

तिहराना दे० (क्रि०) तिहरा करना, तीन बार बटना, तीन बार बल देना, त्रिगुण करना, तीन तह करना। [काम, तिहरा बना।

तिहरावट दे० (स्त्री०) तिगुनाव, तिगुना करने का

तिहरी दे० (वि०) तीन तह की।

तिहारे दे० (सर्व०) तिहारे, तुम्हारा।

तिहवार तद्० (पु०) त्योहार, पर्व, उत्सव।

तिहवारी तद्० (स्त्री०) त्योहार के दिन का नेग जो कमीन लोगों को दिया जाता है।

तिहाई दे० (स्त्री०) तीसरा हिस्सा, तीसरा भाग।

तिहायत दे० (पु०) तीसरा, उदासीन, मध्यस्थ, पक्षपात रहित।

तिहारी दे० (स्त्री०) तुम्हारी, तुम्हारे सम्बन्ध की।

तिहारे दे० (पु०) तुम्हारे, तुम्हारे सम्बन्ध का।

तिहारो दे० (पु०) तुम्हारा, तुम्हारे सम्बन्ध का।

तिहु दे० (वि०) तीनों, तीन।—पुर (पु०) त्रिपुर, दैत्यों का एक प्रधान नगर, इस नगर का नाश महादेव ने किया था।—लोक (पु०) त्रिलोक, तीनों लोक, पाताल, मर्त्य और स्वर्ग।

तिहैया दे० (पु०) तृतीयांश, तिसरा भाग।

ती तद्० (स्त्री०) स्त्री, पत्नी, भ्रमरावली, नलिनी, मनोहरण छन्द का नाम।

तीअन तद्० (स्त्री०) शाक, भाजी। [पिछला भाग।

तीकट दे० (पु०) नितम्ब, पश्चाद्देश, कटि का

तीक्ष्ण तत्० (वि०) तेज़, तीखा, पैना, चोखा, क्रोधी, गरम प्रकृति, तीता, कड़ुवा, उत्साही, द्विप्रकारी, चतुर, दक्ष, प्रवीण, निपुण, (पु०) विष, लौह, युद्ध, मरण, शस्त्र, समुद्र का नोन, यवक्षार, श्वेतकुष्ठ, तीक्ष्णगण, यथा:—अश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, मूल। (वि०) निरालस्य, सुबुद्धि, योगी।—कण्टक (पु०) धतूरा, बबूर, इंगदी, करीर।—कन्द (पु०) प्याज, पलाण्डु।—कर्मा (पु०) निपुण, दक्ष, चतुर, कुशल।—ता (स्त्री०) तेज, उग्रता, प्रखरता।—दंष्ट्र (पु०) शार्दूल, व्याघ्र, बाघ।—बुद्धि तत्० (वि०) बुद्धिमान, कुशाग्र बुद्धि वाला।

तीक्ष्णा तत्० (स्त्री०) तारादेवी का एक नाम, जोंक, मिर्च, मालकँगनी, लता विशेष, वृक्ष विशेष, वच, केंवाच। [धारदार।

तीखा तत्० (वि०) तीक्ष्ण, चोखा, पैना, तेज़,

तीखी तद्० (स्त्री०) सूक्ष्मस्वर, पतला शब्द।

तीखुर दे० (पु०) वृक्ष विशेष का सत, आटा विशेष, फलाहार विशेष, अरारूट।

तीछन तद्० (वि०) तीक्ष्ण, तेज़, धारदार, चोखा, पैना, अत्यन्त पैनी धारवाला।—ता (स्त्री०) तीक्ष्णता। [रूखी, खरी।

तीछी दे० (स्त्री०) तीखी, तीक्ष्ण, पैनी, चोखी,

तीछे दे० (गु०) देखो तीक्ष्ण।

तीज दे० (स्त्री०) तृतीया तीसरी तिथि, भादों सुदी तीज, विवाह के पीछे की एक रसम।

तीजा दे० (वि०) तीसरा, तृतीय, तीसर। मुसलमानों के यहाँ का मृतक के तीसरे दिन का कर्म।

तीजिया (स्त्री०) श्रावण शुक्ल तृतीया का पर्व, त्योहार विशेष, छोटी तीज।

तीजै दे० (वि०) तीसरा, तीसरे।

तीत दे० (वि०) तीखा, कड़ुआ, तीक्ष्ण, तीता।

तीतर दे० (पु०) तित्तिर, पक्षिविशेष।—के मुँह में लक्ष्मी (वा०) अयोग्य सक्षम, जो जिस काम के योग्य नहीं है उस पर वह काम सौंपना।—के मुँह में कुशल (वा०) अयोग्य के काम से अपनी रक्षा की आशा, जो जिसके लिये सर्वथा अयोग्य है उससे आशा रखना।

तीतरी दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष, तितली, पतङ्ग पतिङ्गा, चित्रित पंखवाला कीट।

तीता तद्० (वि०) चरपरा, कड़ुआ, कटु, नम, गीला। दे० (पु०) ऊसर भूमि, ढेंकी या रहट का अगला हिस्सा, ममीरे के पेड़ का एक नाम।

तीन दे० (गु०) संख्या विशेष, त्रि, ३।—काल तत्० (पु०) तीनों काल, भूत, भविष्य, वर्तमान।—तेरह (गु०) तितर बितर, डावाँडोल, छिटफूट, छिन्नभिन्न, दल का नाश, समूह भ्रंश।

तीनी (स्त्री०) तिन्नी का चावल, एक धान विशेष।

तीमारदारी (स्त्री०) बीमारदारी, बीमारों की टहल।

तीय दे० (स्त्री०) अबला, स्त्री, नारी, यथा:—

सवैया—

"पीय पहारनि पास न जाहु यों,
तीय बहादुर सों कह सोपै।
कौन बचै है नवाब तुम्हैं,
भनै भूषन भोंसिला भूप के रोपै।
दि कियो हूँ साइस्तखाँ,
जसवन्त से भाऊ करन से दोपै।
सिवाजी के बीरन सों,
जो अमीरनि बीचि गुनिजन घोपै।"
—शिवराज भूषण।

तीयल दे० ( ) स्त्रियों के पहनने के तिग कपड़े।

तीयन दे० (पु तरकारी विशेष, एक प्रकार की बनी हुई तरे। (स्त्री०) तिय का बहुवचन।

तीर तत्० (पु० दी का किनारा, तट, कूल, बाण, सर, समीप, नि पास।—स्थ (पु०) तीरस्थित, तटस्थित, पर का, किनारे पर का।—न्दाज़ (पु०) चलाने वाला, निशानेबाज।—न्दाज़ी(स्त्री०) ती ताने की क्रिया, धनुषविद्या।

तीरथ तद्० (पु०) तीर्थयात्रा, देव दर्शनार्थ यात्रा, चरणोदक।—प राऊ, राजू (पु०) प्रयाग क्षेत्र, सब तीर्थों को प्रयाग। यथा:—
"बट विश्वास अचल निज
तीरथराजु प्रयाग सुकर्मा।—रा ।

तीरा दे० (पु०) देखो तीर।

तीर्ण तत्० (गु०) [तृ + क्त] उत्तीर्ण, पार हुआ।

तीर्थ तत्० (पु०) शास्त्र, अध्वर, क्षेत्र, पुण्यस्थान, उपाय, नारीरज, अवतार, घाट, ऋषि सेवित जल, पात्र, बरतन, उपाध्याय, उपदेशक, योनि, दर्शन, विप्र, आगम, निदान, संन्यासियों की उपाधि विशेष, ब्राह्मण का दहिना कान [दहिने हाथ के अँगूठे का ऊपरी भाग ब्रह्मतीर्थ, अँगूठे और तर्जनी का मध्य भाग पितृतीर्थ तथा कनिष्ठा का निचला भाग प्राजापत्यतीर्थ एवं उँगलियों का अग्रभाग देवतीर्थ कहा जाता है ।] पराशरत्व, यज्ञ, मन्त्र, अग्नि, ईश्वर, माता पिता, अतिथि । —ङ्कर (पु०) जैनियों के चौबीस धर्माचार्य अथवा अवतार ।—ध्वाङ्क्ष (पु०) तीर्थकाक, तीर्थ में रहने वाले काक प्रकृति के मनुष्य, मिथ्या याज्ञिक, श्रद्धाभक्ति हीन तीर्थयात्री ।—पर्यटन (पु०) तीर्थभ्रमण ।—पाद तत्० (पु०) विष्णु । —पादीय तत्० (पु०) वैष्णव ।—यात्रा तत्० (स्त्री०) पवित्र स्थानों का स्नानार्थ तथा दर्शनार्थ यात्रा, पुण्यस्थानों का घूमना ।—राज (पु०) तीर्थाधिप, तीर्थस्वामी, महातीर्थ, प्रयाग ।—सेवी (वि०) पुण्यक्षेत्र वास करने वाले, धानप्रस्थाश्रमी ।

तीर्थिक तत्० (पु०) पण्डा, बौद्धधर्म, ब्राह्मण ।

तीली दे० (स्त्री०) तृली, सलाई, तिल्ली ।

तीवर दे० (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, बहेलिया व्याध, समुद्र, मछुआ ।

तीव्र तत्० (वि०) अधिक, कड़, कडुआ, प्रखर, नितान्त दुःसह, प्रचण्ड (पु०) लोहा, नदी का तट, शिव ।—कराठ (पु०) सूरन, ज़मी कन्द, ओल ।—गन्धा (स्त्री०) अजवाईन, अजवाइन ।—वेदना (स्त्री०) अत्यन्त अधिक कष्ट, महायातना । [तीन दस, तीसा ।

तीस दे० (वि०) संख्या विशेष, बीस और दस,

तीसरा दे० (क्रि०) तृतीय, तीसर ।

तीसवाँ (पु०) तीस के बाद का ।

तीसी दे० (स्त्री०) अन्न विशेष, अलसी, अतसी, तीसा, पसीना (वि०) तीस संख्या से परिमित ।

तुक (सर्व०) तब, द्वारा ।

तुअना (क्रि०) चूना, टपकना, गिर पड़ना ।

तुअर दे० (पु०) अरहर, आढकी

तुई (सर्व०) तू, तुही, तुम्हीं ।

तुक दे० (पु०) पद, कड़ी, छन्द, भाग, यमक, समान पद की श्रेणी, यथा—निहारी, विहारी आदि । चौपाई आदि के अन्त में जिस प्रकार के पद रखे जाते हैं ।—

तुम पर तुरग नाचे सरजा सिवाजी गाजी,
तुरग नाचे तुम पर रुण्डमुण्ड करके ।
भूपन भनत बाजे जिते डौंस नगारे भारे,
सारे कर नाटी भूप सिंघल को सरके ।
मारे सुनि सुभट पनारे उद्भट सरके,
सारे लगे फिरन सितारे गढ़धर के ।
गोलकुण्डा वीरन के बीजापुर वीरन के,
दिल्ली उर मीरन के दाड़िम से दरके ।
—सिवाबावनी ।

—बन्दी (स्त्री०) कविता विशेष, जिसमें समान पद हों, भद्दी कविता ।

तुकला दे० } (पु०) कीट विशेष, छोटी पतङ्ग,
तुकली (स्त्री०) } छोटी गुड्डी ।

तुकान्त तत्० (स्त्री०) अन्त्यानुप्रास, तुकबन्दी, काफ़िया बन्दी ।

तुकाजी होलकर दे० (पु०) जगत् प्रसिद्ध महारानी अहल्याबाई के सेनापति, अहल्याबाई का इन पर बड़ा ही स्नेह था, उसी स्नेह का फल स्वरूप राज्यप्रतिष्ठा सूचक ' होलकर ' की उपाधि महारानी अहल्याबाई ने इन्हें दी थी ।

तुकाराम दे० (पु०) एक महाराष्ट्र साधु १६०८ ई० में पूना के समीपस्थ देहुक नामक ग्राम में इनका जन्म हुआ था । यह जाति के शूद्र थे, तथापि दक्षिण देश के सभी श्रेणी के लोग इनका आदर करते थे । ११ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह हुआ था, परन्तु बाल्यकाल ही से इनकी प्रवृत्ति धर्म की ओर झुकी हुई थी । १० वर्ष की अवस्था में इनके पिता और माता परलोकवासी हुए, उसी समय इनके बड़े भाई भी विरक्त होकर घर से चले गये । संयोगवश उसी समय दक्षिण देश में अकाल भी पड़ा हुआ था, इन्हीं सब घटनाओं से तुकाराम ने संसार का यथार्थ स्वरूप देख लिया ।

उन्होंने संसार छोड़कर भजन करना ही अपने लिये उत्तम कार्य विचार लिया। इनकी बनाई कविता का नाम अभङ्ग है। आठ हज़ार से भी अधिक इनकी बनाई कविता हैं। इनकी कविता दक्षिण देश में आदर की वस्तु समझी जाती है। एक समय छत्रपति शिवा जी इनसे उपदेश लेने गये थे और उपदेश लेकर वे वन में जाकर तपस्या करने लगे। उन्होंने संसार चिन्ता बिल्कुल छोड़ दी। यह देख शिवाजी की माता ने तुकाराम को यह समाचार सुनाया। पुनः तुकाराम ने उन्हें तात्विक उपदेश देकर शिवाजी को कार्य में लगाया। तुकाराम की मृत्यु का समय प्राय अनिश्चित है, तथापि अनुमान किया जाता है कि संवत् १६२६ में उन्होंने परलोक यात्रा की।

तुकड़ (पु०) तुकबंदी करने वाला, अपटु कवि। कविता के नियमों के विरुद्ध कविता करने वाला।

तुकाल दे० (पु०) बड़ी पतङ्ग, बड़ी गुड्डी।

तुका दे० (पु०) बाँस के टुकड़े, मुड़ा बाण, भोथर-तीर, पहाड़ी, छोटा पर्वत।

तुख (पु०) चोकर, भूसी, छिलका।

तुगा तद्० (स्त्री०) तुगाक्षीरी, वंशलोचन।—क्षीरी, —वंशी (स्त्री०) वंशलोचन।

तुङ्ग तद्० (पु०) पुन्नागवृक्ष, पर्वत, बुधग्रह, नारिकेल, योगभेद। (वि०) उन्नत, उच्च, ऊर्ध्व, प्रधान, उग्र, तीव्र।—ता (स्त्री०) उच्चता, महत्ता।—भद्रा (स्त्री०) दक्षिण देश की प्रसिद्ध नदी, मैसूर प्रान्त की एक नदी का नाम। —वृक्ष (पु०) नारियल का पेड़।

तुच्छ तद्० (वि०) अल्प, थोड़ा, बहुत थोड़ा, अवज्ञात, तिरस्कृत, हेय, नीच, हीन, अधम, निठल्ला, निकम्मा। —ज्ञान (पु०) हेयज्ञान, अनादर, अमान्यता। —ता (स्त्री०) अवज्ञा, हेयता, नीचता, अधमता। —द्रुम (पु०) नीच वृक्ष, एरण्ड वृक्ष।

तुझ (सर्व) तुम।

तुझे (सर्व०) तुमको।

तुट तद्० (पु०) संग्राम, युद्ध, रण।

तुड़ाना दे० (क्रि०) बैल आदि पशुओं का पगहा तोड़ कर भागना, दरबा भुनाना, मूल्य घटवाना।

तुण्ड तद्० (पु०) मुख, बदन, चोंच, ठौर।

तुतरा (ला) दे (वि०) अस्पष्ट उच्चारण करने वाला, अटक अटक कर बोलने वाला, हक्लाकर बोलने वाला।

तुतरा (ला) ना दे० (क्रि०) अस्पष्ट उच्चारण करना, अटक अटक कर बोलना।

तुतिया दे० (स्त्री०) तूतिया, उपधातु विशेष, विष विशेष, तुत्थ, नीलाथोथा।

तुतुही दे० (स्त्री०) टोंटीदार छोटी घंटी।

तुत्थ तद्० (पु०) तूतिया, नीलाथोथा।

तुन दे० (पु०) वृक्ष विशेष, नन्दीवृक्ष।

तुनकी दे० (स्त्री०) पतली एक प्रकार की रोटी।

तुनतुनाना दे० (क्रि०) सूक्ष्म स्वर से बजाना, सितार आदि बजाना।

तुन्द तद्० (पु०) जठर, पेट, उदर।—परिमृज (वि०) अलस, आलसी, अकर्मा, पेट पर हाथ फेरते रहने वाला, निकम्मा।

तुन्दिल तद्० (वि०) तोंदल, लम्बोदर, बड़ा पेटवाला, लम्बे पेटवाला मनुष्य।

तुन्न दे० (पु०) तुन वृक्ष विशेष।—वाय (पु०) दर्जी, सूचीकार, कपड़े सीने वाला।

तुपक दे० (स्त्री०) बन्दूक, छोटा बन्दूक, पिस्तौल।

तुपकिया दे० (स्त्री०) छोटी तुपक। (पु०) बन्दूक चलाने वाला।

तुफान दे० (पु०) आँधी, बँधड़, पानी, झड़, [आँधी पानी।

तुम दे० (सर्व०) मध्य पुरुष का बहुवचन।—तनौ (सर्व०) तुम्हारा, तुम्हारे, सम्बन्ध का।—हिं तुमको, आपको।

तुमड़ी दे० (स्त्री०) सँपेरे की वंशी, एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं। तुम्बी, साधुओं का काष्ठ निर्मित जलपात्र, सूखा कद्दू का पात्र।

तुमरा (सर्व०) तुम्हारा।

तुमाई दे० (स्त्री०) धुनाई, तुमाने का पैसा, तुमाने की मजूरी।

तुमाना दे० (क्रि०) धुनवाना, तुनवाना, रुई धुनाना।

तुमुल तद्० (पु०) रण संकुल, सङ्कीर्णयुद्ध, अत्यन्त लोमहर्षण युद्ध, घोर युद्ध, भयानक युद्ध, शोरगुल, बहेड़े का वृक्ष।

तुम्बरी तद्० (स्त्री०) वीणा, बीना ।
तुम्बा दे० (पु०) सूखा कद्दू या खौका, जिसकी तुमड़ी साधु लोग बनाते हैं ।
तुम्बिका तद्० (स्त्री०) कद्दू, लाबू, लौका ।
तुम्बिया तद्० (स्त्री०) कमण्डलु, करवा ।
तुम्बी तद्० (स्त्री०) लौकी, मदारी की बंशी ।
तुम्बुर तद्० (पु०) वाद्य विशेष, तमूरा, तानपूरा ।
तुम्बुरु तद्० (पु०) गन्धर्व विशेष, स्वर्गगायक, जिनो घासक विशेष, धनिया [आप ही के ।
तुम्ह दे० (सर्व०) तुम, आप ।—रेहि दे० तुम्हारे ही,
तुरई दे० (स्त्री०) तरकारी विशेष ।
तुरक तद्० (पु०) तुर्क, देश विशेष, उस देश के वासी मुसल्मान हैं । जाति विशेष,जो तुरकदेश में रहती है, तुरक देशवासी ।
तुरकटा (पु०) मुसलमान, यवन, म्लेच्छ ।
तुरकान (पु०) मुसलमानों के रहने का स्थान ।—ा (पु०) तुर्कों के रहने की जगह । (वि०) तुर्क सम्बन्धी ।
तुरकानी या तुरकिन (स्त्री०) तुर्क की स्त्री या तुर्क की भाषा, तुर्क में उत्पन्न होने वाली वस्तु । (वि०) तुर्कों जैसी ।
तुरग तद्० (पु०) तुरङ्ग, अश्व, घोटक, घोड़ा, चित्त, मन, अन्त करण ।—ब्रह्मचर्य (पु०) न मिलने के कारण स्त्रीत्याग ।—राही (पु०) अश्वारोही, घोड़सवार, घुड़सवार [घुड़चढ़ा घुड़सवार ।
तुरगी तद्० (स्त्री०) घोड़ी । अश्वगन्धा । (पु०)
तुरङ्ग तद्० (पु०) } अश्व, घोड़ा, जल्दी चलने
तुरङ्गम तद्० (पु०) } वाला, चित्त ।
तुरङ्गाह्वा तद्० (स्त्री०) औषध विशेष, असगन्ध, अश्वगन्धा ।
तुरत, तुरन्त दे० (अ०) शीघ्र, त्वरित, तूर्ण, झटपट, जल्दी, अभी साथ ही, उसी दम, तत्काल, जल्दी से, शीघ्र ही, अति शीघ्र ही, त्वरित, झटपट ।
तुरपन दे० (स्त्री०) टाँका, टोंप, सिलाई, तगाई, तागा चलाना, एक प्रकार का छोटा टाँका लगाना ।
तुरपना दे० (क्रि०) सीना, टाँकना, टाँका चलाना ।
तुरमती दे० (स्त्री०) बाज़, पक्षीविशेष, क्रूरपक्षी ।
तुरही दे० (स्त्री०) एक प्रकार का बाजा जो मुँह से बजाते हैं, रणसिंगा, साधुओं के बजाने की तुरही।
तुरा (स्त्री०) शीघ्रता, त्वरा, जल्दी । (पु०) घोड़ा, मन, चित्त, शीघ्रगामी ।
तुराई दे० (स्त्री०) तोशक, गद्दा । (वि०) त्वरा, वेग ।
तुराना दे० (क्रि०) छूट जाना छुड़ाना, बैल आदि पशुओं का बन्धन तोड़ कर भागना, घबराना, आतुर होना ।
तुरापाट् तद्० (पु०) देवराज, इन्द्र, सुरेन्द्र ।
तुरिय दे० (पु०) घोड़ा, अश्व ।
तुरी तद्० (स्त्री०) कपड़ा बिनने का उपकरण विशेष, तन्त्रकाष्ठ, चितेरा, ताँती की कुंची, घोड़ी, लगाम, बाग, फूलों का गुच्छा, मोती की लड़ियों का झब्बा, तुरही । (पु०) सवार, अश्वारोही ।
तुरीय तद्० (वि०) चतुर्थ अवस्था, चौथा, चार संख्या को पूरण करने वाली संख्या (पु०) ब्रह्म, अज्ञान से प्राप्त चेतनता का आधार, अनुपस्थित, चैतन्य, मुक्तावस्था । (स्त्री०) एक अवस्था जीव की अवस्था विशेष ।—वर्ण (पु०) चौथा वर्ण, शूद्र, अवर वर्ण ।—ाश्रम (पु०) चतुर्थ आश्रम, चौथा आश्रम, सन्यास आश्रम । [वासी ।
तुरुक तद्० (पु०) तुरुष्क, मुसलमान, तुर्किस्तान का
तुरुपना दे० (क्रि०) देखो तुरपना ।
तुरुम दे० (पु०) पैकड़ा, रिकाब, बेड़ी, पादबन्धिनी रज्जू, पैर बाँधने की रस्सी ।
तुरुष्क तद्० (पु०) देश विशेष तुरुक, तुर्किस्तान, तुरकी देश, गन्ध द्रव्य विशेष, शिलासार, धूप, लोबान, घुड़सवार । [के मनुष्य, अश्व ।
तुर्क (पु०) देखो तुरक ।—स्थान (पु०) तुर्क आदि
तुर्किन (स्त्री०) देखो तुरकिन ।
तुर्की (स्त्री०) टर्की, तुर्किस्तान ।
तुर्त दे० (अ०) तुरन्त, तुरत, शीघ्र ।—फुर्त (पु०) बहुत ही शीघ्र, बात की बात में
तुर्ताव दे० (अ०) शीघ्र, तुरन्त, तुर्त ।
तुर्ती फुर्ती दे० (अ०) तुरन्त, शीघ्र, शीघ्रता से ।
तुर्तुरा दे० (गु०) सतर्क, सावधान, वेगवान्, तेज़, प्रखर ।

तुर्रा दे० (पु०) कलगी, टोपी का फुँदना, चोटी, किनारा, जटाधारी, कोड़ा ।

तुल तद्० (पु०) तुल्य, सदृश, समान, बराबर । —कर खड़े होना (वा०) किसी काम के लिये तैयार रहना ।—तुलाना (क्रि०) पिलपिलाना गरमाना, नरम होना ।

तुलना तद्० (क्रि०) तोलना, परिमाण करना, कूतना, तौलना, मान करना । (स्त्री०) दृष्टान्त, सादृश्य, उपमा, सादृश्यकरण, समीकरण, बराबरी करना, एक की दूसरे से समानता, सधना, बँधना, अन्दाज़ होना, भरना, उतारू होना ।

तुलनी तद्० (स्त्री०) तुला का तराज़ू का डंडी में सुई के दोनों ओर का लोहा ।

तुलवाई दे० (स्त्री०) तौलने की उजरत ।

तुलवाना दे० (क्रि०) तौल कराना ।

तुलसिका तद्० (स्त्री०) हरिप्रिया, वृन्दा, तुलसी, एक पवित्र और पूजनीय देववृक्ष, इसके पत्र भगवान् विष्णु की पूजा में काम आते हैं ।

तुलसी तद्० (स्त्री०) तुलसिका, हरिप्रिया, स्वनाम प्रसिद्ध देववृक्ष ।—दल तद्० (पु०) तुलसी की फुनगी ,तुलसी की पत्ती ।

तुलसीदास तद्० (पु०) भारत के प्रसिद्ध भक्त कवि, यह सरयूपारी ब्राह्मण थे। यमुना के किनारे राजापुर नामक गाँव में यह उत्पन्न हुए थे। हिन्दी भाषा में इनके बनाये प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम "मानस रामायण" है। कहते हैं भगवान् श्रीरामचन्द्र ने रामायण बनाने के लिये इनको स्वप्न में आदेश दिया था। उनका दार्शनिक सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत था। रामानन्द स्वामी के समान यह भी विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रचारक थे। कहते हैं तुलसीदास बड़े ही स्त्रीपरायण थे। एक दिन उनकी स्त्री रत्नावली अपने पिता के घर चली गई। तुलसीदास को जब पता लगा तो वह दौड़े दौड़े अपने श्वसुर के घर गये, उनकी स्त्री से भेंट हुई, स्त्री ने कहा कि इस चर्ममय शरीर में जितनी तुम्हारी अनुरक्ति है, यदि उतनी राम में होती तो तुम्हारा संसार कष्ट छूट जाता। स्त्री की इन बातों का तुलसीदास पर बड़ा प्रभाव पड़ा, यह उसी क्षण से संसार से विरक्त हो गये। वे तीर्थयात्रा को निकले, काशी, मथुरा, अयोध्या आदि अनेक तीर्थों में बहुत दिनों तक घूमते रहे अब वे अपनी स्त्री आदि को स्मरण नहीं करते थे। घूमते घूमते संयोग वश एक दिन वे अपने श्वसुर के घर पहुँचे। उनकी वृद्धा स्त्री उनका सत्कार करने लगी। थोड़ी देर के बाद उसने अपने पति को पहचाना। स्त्री ने कहा—खटाई लाऊँ तुलसीदास ने कहा—झोरी में है, स्त्री ने कहा—कपूर लाऊँ, तुलसीदास ने कहा—झोरी में है। यह सुनकर उनकी स्त्री ने कहा—[illegible] झोरी में है, तब एक बिचारी स्त्री का क्या अपराध है ? तुलसीदास ने अब समझा कि उनकी स्त्री उनसे अधिक ज्ञानी है। झोली उन्होंने उसी समय फेंक दी। अकबर के राजा उनकी बड़ी भक्ति करते थे। बालकाण्ड तक रामायण की रचना तुलसीदास ने अयोध्या में की थी, जब वहाँ के वैरागियों से कुछ झगड़ा हो गया तब वह वहाँ से काशी आ गये और वहीं इन्होंने अपनी रामायण की पूर्ति की तुलसीदास जिस स्थान पर रहते थे, वह आज तक भी तुलसीघाट के नाम से प्रसिद्ध है। इनकी परलोकयात्रा के विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है।

"संवत् सोरह सौ असी, (१६८०) असी गङ्ग के तीर । श्रावणशुक्ला सप्तमी तुलसी तज्यो शरीर ।"

तुला तद्० (स्त्री०) तराज़ू, कांटा तौलने का साधन, बराबरी, समान, उपमा, मकरराशि ।—कोटि (स्त्री०) तराज़ू की डंडी के दोनों किनारे, तौल विशेष, बिछिया, नूपुर, अर्थ की संख्या ।—दान (पु०) दान विशेष, अपने शरीर के बराबर किसी वस्तु का दान ।—धार (पु०) काशीनिवासी एक धर्मपरायण और [illegible] वणिक्, इसने महर्षि जाजलि को मोक्ष [illegible] का उपदेश दिया था। (२) वाराणसी निवासी एक व्याध, इसने माता पिता की सेवा के प्रभाव से सर्वदर्शिता प्राप्त की थी। सभी का जीवनवृत्तान्त यह अनायास हो जान सकता है

तुलाना तद्० (क्रि०) तौलाना, तौल कराना, तुला पर चढ़ाना।

तुलित तद्० (वि०) तुला हुआ, तौल किया गया, बराबर, समान। [वर्ती, वर्त्ता।

तुली तद्० (स्त्री०) तूलिका, चित्र बनाने की क़लम,

तुले दे० (क्रि०) तौला जा सके, तौला जाय।

तुल्य तद्० (पु०) समान, बराबर, सदृश।—ता (स्त्री०) समानता, बराबरी, समता।—योगिता (स्त्री०) अलङ्कार विशेष।

तुवर दे० (पु०) अरहर, अन्नविशेष, जिसकी दाल होती है। तद्० (वि०) कसैला, रसशुहीन।

तुवरी दे० (स्त्री०) फिटकरी, औषध विशेष।

तुष तद्० (पु०) भुस, भूसी, चोकर, धान आदि का छिलका।—ग्रह तद्० (पु०) अग्नि।

तुषानल तद्० (पु०) घास फूस की आग, भूसी की आग।

तुषार तद्० (पु०) शीत, पाला, हिम, बर्फ़।

तुषित तद्० (पु०) उपदेवता विशेष, विष्णु।

तुष्ट तद्० (गु०) [तुष+क्त] तृप्त, हर्षित, प्रसन्न।—ना (क्रि०) प्रसन्न होना। [प्रसन्नता।

तुष्टि तद्० (स्त्री०) [तुष्—क्ति] सन्तोष,हर्ष,तृप्ति,

तुसार तद्० (पु०) तुषार, हिम, पाला, बर्फ़।

तुसी (स्त्री०) भूसी, चोकर।

तुहार (सर्व०) तुम्हारा, तेरा।

तुहिं (सर्व) तुमको, तुझको।

तुहिन तद्० (पु०) तुषार तुसार, शबनम।

तुही दे० (सर्व) तुम्हीं। (स्त्री०) कोकिल का शब्द, कोइल की कूक। [सम्बोधन।

तू दे० (सर्व) मध्यम पुरुष का एक वचन, नीच

तूकारना दे० (क्रि०) तवें तये करना, अभिशाप देना, गाली देना, अपमानित करना, अनादर करने की इच्छा से तू तू कहना। [होना।

तूठना दे० (क्रि०) तुष्ट होना, अफरना, अघाना, प्रसन्न

तूठ्यो दे० (गु०) सन्तुष्ट, सन्तोष प्राप्त, तृप्त, तृष्णारहित

तूण तद्०
तूणा
तूणीर तद्०
} (स्त्री०) तरकस, इषुधि, निषङ्ग, भाथा, जिसमें वीर लोग लड़ाई के समय बाण रखकर पीठ की ओर लटकाये रहते हैं।

तूतई दे० (स्त्री०) करई, करवा, मिट्टी का एक प्रकार का बरतन, जिसमें टोंटी लगी रहती है।

तूतक दे० (स्त्री०) तुत्थ, नीला थोथा, तूतिया।

तूतम दे० (पु०) कतरन, कटाकुटा, रेतन।

तूतिया दे० (स्त्री०) नीलाथोथा।

तूती दे० (स्त्री०) टुइयाँ, कनेरी नाम की एक चिड़िया।

तूतू दे० (पु०) कुत्ते को बुलाने का शब्द, अनादर के साथ बुलाना।

तूतें करना दे० (धा०) झगड़ना, अपमानित करना।

तून दे० (पु०) एक पेड़ का नाम, एक प्रकार की लकड़ी, जिसकी मेज़ कुर्सी आदि बनाई जाती है। तरकस, भाथा, बाण रखने का चोंगा।

तूनना दे० (क्रि०) धुनना, तूमना।

तूनीर (पु०) देखो "तूणीर"।

तूफ़ान (पु०) आँधी और वर्षा का एक साथ होना। दगा, मुसीबत।

तूँबा तद्० (पु०) सूखा लौकी,कद्दू,साधु का जलपात्र विशेष।

तूबर तद्० (पु०) रस विशेष, कषाय, कसैला।

तूबरी दे० (स्त्री०) तुम्बी, तोंबी।

तूमतड़ाक (स्त्री०) बनावट, चटकमटक, तड़कभड़क।

तूमना दे० (क्रि०) तूनना, रूई धुनना, हाथ से रूई को साफ़ करना, बिनौला निकालना।

तूमरी दे० (स्त्री०) कुम्भीर का कपाल, मगर की खोपड़ी।

तूमिया दे० (पु०) धुनी हुई रूई का सूत, रूई धुनने वाला।

तूया दे० (क्रि०) हाथ से रूई सुधारना।

तूरी दे० (गु०) समान, तुल्य। (स्त्री०) तुरही, एक बाजा।

तूर्ण तद्० (वि०) शीघ्र, तुरत, तुरन्त, बहुत जल्दी।

तूर्य तद्० (पु०) नगाड़ा, भेरी, दुन्दुभी, रणवाद्य विशेष। (वि०) चार की संख्या पूरण करनेवाली संख्या, तुरीय, चतुर्थ।

तूल तद्० (पु०) बिनौला निकाली हुई रूई, बीज रहित कपास, रुआ, आकाश, शाहतूत, गहरे लाल रंग का कपड़ा। (वि०) तुल्य, समान। (दे०)

आयोजन, तैयारी।—तयोल (वा०) छोटी वस्तु को बड़ा समझना, समान्य बात को बड़ी समझ कर उसके लिये बड़ी तैयारियाँ करना।

तूलनीय तद्० (पु०) कदम्बवृक्ष, कदम का पेड़।

तूलिनी तद्० (पु०) शाल्मलवृक्ष, रूईवाला वृक्ष, सेमर का पेड़।

तूली तद्० (स्त्री०) नील का वृक्ष, तसवीर बनाने की कलम, एक प्रकार की बालों की कलम जिससे चित्र कार तसवीरों पर रङ्ग चढ़ाते हैं। [भी कहते हैं।

तूवर तद्० (पु०) राजपूतों की एक जाति, जिसे तुवर

तूष्णी या तूष्णीम् तद्० (वि०) मौन, चुप।

तूस (पु०) भूसा, भुस, एक प्रकार की ऊन, पशमीना, नमदा।—ी (पु०) करंजई रङ्ग का।

तृख (पु०) जायफल।

तृखा (स्त्री०) तृषा, प्यास, लालसा।

तृण तद्० (पु०) घास, खड़, खर, घासफूस, तिनका। —कुटी (स्त्री०) घास की बनी झोपड़ी, तृण च्छादित लघु गृह।—राज (पु०) नारियल, नारियल का पेड़, ऊख, तालवृक्ष।—वत् (वि०) तृण के समान, लघु, तुच्छ, साररहित, निकम्मा उठला।

तृणविन्दु तद्० (पु०) ऋषिविशेष, द्वापर के वेदव्यास, इन्होंने २४ द्वापरयुगों में वेदों का विभाग किया था, अतएव इनको वेदव्यास की उपाधि मिली थी।

तृणावर्त्त तद्० (पु०) दैत्यविशेष, कंस का अनुचर दानव। इसको श्रीकृष्ण का वध करने के लिये कंस ने गोकुल भेजा था, बवण्डल बन करके यह श्रीकृष्ण को लेकर ऊपर उड़ गया, परन्तु श्रीकृष्ण बहुत भारी हो गये, इस कारण उनको वह ले नहीं जा सका, और श्रीकृष्ण ने इसका गला पकड़ लिया। अतएव यह भाग भी नहीं सका, दानव बेहोश हो कर भूमि पर गिर पड़ा और मर गया।

तृणोदक तद्० (पु०) घास और पानी, पशुओं का भोजन।

तृतीय तद्० (वि०) तीसरा, तीन की पूर्त्तिवाली संख्या।—प्रकृति (स्त्री०) तीसरा प्रकृति, स्त्री और पुरुष से विलक्षण स्वभाव वाला, नपुंसक।

तृतीया तद्० (स्त्री०) पक्ष का तीसरा दिन, तीसरी तिथि, गौरी इस तिथि की स्वामिनी हैं।—न्त (वि०) [तृतीया+अन्त] जिसके अन्त में तृतीया विभक्ति के चिन्ह हों।—ंश (पु०) [तृतीय+अंश] तीसरा भाग, तीसरा हिस्सा।

तृपति (स्त्री०) प्रसन्नता, तृप्ति।

तृप्त तद्० (वि०) [तृप्+क्त] परितोषान्वित, सन्तुष्ट, हर्षित, आप्यायित, प्रसन्न, हृष्ट।

तृप्ति तद्० (स्त्री०) [तृप्+क्त] इच्छापूर्त्ति, परितोष, आह्लाद, सन्तोष।—कर (वि०) सन्तोषजनक, तृप्ति करने वाला।—जनक (वि०) तृप्तिकर, आह्लादजनक।

तृपुण्ड तद्० (पु०) त्रिपुण्ड, तिलक विशेष, तीन धारी का बेंड़ा तिलक, जैसा शैव लगाते हैं।

तृपुर तद्० (पु०) त्रिपुर, एक दैत्य के नगर का नाम, (देखो त्रिपुरारि)। [हर्रे और बहेड़ा।

तृफला तद्० (स्त्री०) त्रिफला, तीन फल, आँवला,

तृविक्रम तद्० (पु०) त्रिविक्रम, भगवान् का वामन अवतार, वामन। [सरस्वती का सङ्गम।

तृवेनी तद्० (स्त्री०) त्रिवेणी, गङ्गा यमुना और

तृभुवन तद्० (पु०) त्रिभुवन, तीन लोक, त्रिलोक, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल। [त्रिमार्ग।

तृमुहानी दे० (स्त्री०) तिमुहानी, तीन मार्गों का योग,

तृय दे० (स्त्री०) स्त्री, युवती, तिया।

तृलोक तद्० (पु०) त्रिलोक, तीन लोक।

तृविध तद्० (पु०) त्रिविध, तीन प्रकार का, तीन रङ्ग का। [निसोत।

तृवृत्, तृवृता तद्० (स्त्री०) औषध विशेष, निसोथ,

तृषा तद्० (स्त्री०) [तृष्+आ] तृष्णा पीपासा, प्यास, चाह, दरकार।—र्त (वि०) [तृषा+आर्त] पिपासा से पीड़ित, प्यास से व्याकुल।

तृषावन्त तद्० (वि०) प्यासा, पिपासित।

तृषित तद्० (वि०) [तृष+क्त] तृष्णायुक्त, पिपासित, प्यासा, अभिलाषी, इच्छुक, लालची।

तृष्णा तद्० (स्त्री०) [तृष्+न+आ] पिपासा, पीने की इच्छा, उत्कण्ठा, अत्यन्त अभिलाष, अधिक उत्सुकता, लोलुपता, लोभ।—क्षय (पु०) तृषा निवृत्ति, पिपासा शान्ति, वासनानाश, लोलुपता की निवृत्ति।

तुसङ्कु तद्० (पु०) त्रिशङ्कु, एक सूर्यवंशी राजा, राजा हरिश्चन्द्र के पिता (देखो त्रिशङ्कु)।
तुसूल तद्० (पु०) त्रिसूल,महादेव का मुख्य अस्त्र।
तें दे० (अ०) से, लेकर।
तेंतालीस दे० (वि०) चालीस और तीन, ४३, तीन अधिक चालीस।
तेंतीस दे० (वि०) तीस और तीन, ३३, तीन अधिक [तीस।
तेंदुआ दे० (पु०) बाघ, चीता, छोटा बाघ।
तेंदू दे० (पु०) फल विशेष, वृक्ष और फल।
ते (सर्व०) वे, वे सब।
तेऊ (सर्व०) वे सब के सब, वे भी।
तेईस दे० (वि०) बीस तीन, २३, तीन अधिक बीस।
तेकाठा दे० (पु०) अस्त्र विशेष, त्रिशूल के आकार का एक अस्त्र, मछली पकड़ने का यन्त्र।
तेग दे० (पु०) तलवार, तरवार, कृपाण।
तेगबहादुर दे० (स्त्री०) सिक्खों का नवाँ गुरु, १६७५ ई० में औरङ्गजेब की आज्ञा से इनका सिर काटा गया था। इनके पिता का नाम हरगोविन्द था, यह सिक्खों के छठवें गुरु थे। इनकी माता का नाम नानकी था। सम्राट् औरङ्गज़ेब ने इन्हें पकड़ कर दिल्ली मँगवाया था। मुसलमान होने के लिये सम्राट् ने इन्हें बड़े कष्ट दिये, परन्तु इन्होंने मुसलमान होना न चाहा। तेगबहादुर ने अपने गले में एक काग़ज़ का टुकड़ा बाँध कर सम्राट् से कहा कि हमारे गले में जो यन्त्र बँधा है, उसके प्रभाव से कटा सिर जुट जाता है। उसी समय सम्राट् ने सिर कटवा लिया, परन्तु सिर न जुटा। उनके गले से काग़ज़ खोल कर देखा गया तो उसमें लिखा था कि "सिर दिया, सर नहीं दिया" अर्थात् सिर तो दिया, परन्तु [illegible] की बातें नहीं दीं।
तेगा दे० (पु०) तलवार, खड्ग।
तेज तद्० (पु०) तेजस्, प्रभाव, पराक्रम, प्रताप, बल, चमक प्रकाश, वीर्य, सोना, पित्त, गर्मी, मक्खन, मज्जा, तीसरा तत्व (अग्नि) लिङ्ग शरीर।
तेजपात दे० (पु०) तज का पत्ता, एक गरम मसाला, तमालपत्र।
तेजफल तद्० (पु०) औषध विशेष।
तेजमान् तद्० (वि०) प्रतापी, तेजस्वी, चमत्कारी, यशी, वीर्य्यमान्।
तेजवन्त तद्० (वि०) प्रतापी, चमकीला, चमत्कारी।
तेजस् तत्० (स्त्री०) दीप्ति, ताप, प्रताप, प्रखरता, तीक्ष्णता, उग्रता, वेग, बल, वीर्य, सत्वरता, पराक्रम, शीघ्रता, प्रभाव, अग्नि, सुवर्ण। [पुष्टिकर।
तेजस्कर तत्० (वि०) तेज बढ़ाने वाले पदार्थ, पुष्टई,
तेजस्विनी तत्० (स्त्री०) महाज्योतिष्मती, महाप्रतापान्विता, तेजोयुक्ता, भाग्यभागिनी।
तेजस्वी तत्० (वि०) प्रतापान्वित, प्रभावशाली, बलवान्, दीप्तिमान्।
तेजारत (स्त्री०) व्यापार, उद्यम, कारोबार।
तेजी (स्त्री०) उग्रता, प्रबलता। [प्रकाशस्वरूप।
तेजोमय तत्० (गु०) अग्निपुञ्ज, ज्योतिर्मय प्रकाशमय,
तेतना (गु०) उतना, जितना। [माप का।
तेता दे० (वि०) तावत्, तितना, उतना, उस परि-
तेताला दे० (पु०) तिमहला, तीन खण्ड का मकान, तीन खण्ड की अटारी।
तेतालीस (गु०) संख्या विशेष, ४३।
तेति तत्० [ते+इति] वस वे।
तेतिक (गु०) उतना।
तेते तद्० (सर्व०) वे वे, जितने उतने।
तेतो दे० (वि०) तितना, उतना।
तेपची दे० (स्त्री०) टीका, टोप। [विशेष।
तेमन तत्० (वि०) आर्द्रीकरण ओदा,गीला, व्यञ्जन
तेरस दे० (स्त्री०) त्रयोदशी तिथि। [अधिक दस।
तेरह दे० (वि०) दस तीन, १३ संख्या विशेष, तीन
तेरुस दे० (पु०) तीसरा वर्ष।
तेल तद्० (पु०) तैल, तिल विकार, स्निग्ध द्रव्य।
—चढ़ाना (क्रि०) व्याह की एक रीति, दुलहा और दुलहिन की देह में हरदी और तेल लगाना।
तेलिन दे० (स्त्री०) तेली की स्त्री, तेल बेचने वाली, वर्णसङ्कर जाति विशेष की स्त्री।
तेलिया दे० (पु०) एक रङ्ग विशेष, तेल का सा रङ्ग, विष विशेष। [तैलाकार।
तेली दे० (पु०) जाति विशेष, वर्णसङ्कर जाति,
तेवर दे० (पु०) त्यूरी, त्यौर, त्यौरी।
तेवरस दे० (पु०) तेरस, तीसरा वर्ष।

तेवराना दे० (क्रि०) घूमना घूमराना, चक्कर खाना।
तेवरी दे० (स्त्री०) घुड़की, धमकी, झिड़की, आँखें चढ़ी करके घुड़कना।—चढ़ाना (वा०) घुड़कना, आँखें दिखाना, भौं चढ़ाना, धमकाना।
तेवहार दे० (पु०) पर्व, उत्सव, उछाह।
तेवीं दे० (अ०) तैसा, तादृश, उस प्रकार, वैसा।
तेवोंधा दे० (वि०) चूंधा, चूंधला, रतौंधा, अन्धा, रात का अन्धा। [अहङ्कार।
तेह दे० (पु०) क्रोध, कोप, क्रोध, साहस, घमंड,
तेहर दे० (स्त्री०) स्त्रियों के पैर के एक गहने का नाम।
तेहा दे० (पु०) तेह, क्रोध कोप।
तेही दे० (सर्व०) उसको, उसीको।
तैं दे० (क्रि० वि०) से (सर्व०) तू।
तैतिल तद्० (पु०) करण विशेष।
तैत्तिर तद्० (पु०) पक्षी विशेष, तित्तिरपक्षी, तित्तिर पक्षियों का झुण्ड।
तैत्तिरीय तद्० (वि०) यजुर्वेदीय शाखा विशेष, यजुर्वेद का विद्वान्, यजुर्वेदज्ञ। [विद्वान्।
तैत्तिरीयक तद्० (वि०) यजुर्वेद की एक शाखा का
तैयार दे० (वि०) उद्यत, प्रस्तुत।
तैरना दे० (क्रि०) पैरना, तरना, हेलना, पार होना।
तैल तद्० (पु०) तेल, तिल आदि से उत्पन्न चिकना पदार्थ।—कार (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, तेली।—किट्ट (पु०) तैलमल, तेल का मैल, तेल का कीट।
तैलङ्ग तद्० (पु०) देश विशेष, कर्णाटक देश का एक प्रान्त विशेष, उस देश के वासी, दशविध ब्राह्मणों के अन्तर्गत एक ब्राह्मण विशेष।
तैलङ्गा दे० (पु०) तैलङ्ग देश निवासी, अँग्रेज़ी सेना के सिपाही। (देखो तिलङ्गा।)
तैलचोरिका तद्० (स्त्री०) तिलचिट्टा, तैलपा, पक्षी विशेष। [चोरिका।
तैलपा तद्० (पु०) पक्षविशेष, तिलचट्टा, तैल-
तैलमाली तद्० (स्त्री०) बत्ती, पलीता।
तैलिनी तद्० (स्त्री०) पलीता, बत्ती।
तैली तद्० (पु०) तैलकार, तेली। (वि०) तेल सम्बन्धी, तैलमय।
तैष तद्० (पु०) पौषमास, पूस का महीना।
तैषी तद्० (स्त्री०) पुष्यनक्षत्रयुक्ता पूर्णिमा, पौषी पूर्णमासी, पूस की पूर्णिमा।
तैसा दे० (अ०) उसके समान, उसके सदृश।
तो दे० (अ०) तब, तदा, निःसन्देह।
तों दे० (अ०) त्यों, इस प्रकार।
तोंद तद्० (स्त्री०) तुन्द, बड़ा पेट, जठर, लम्बा पेट।
तोंदी तद्० (स्त्री०) तुन्दिका, तोंद का मध्य, नाभि, नाभिकुहर।
तोंदीला तद्० (वि०)
तोंदिल तद्० (वि०)
तोंदैला तद्० (वि०) } तुन्दिला, मोटा स्थूलकाय बड़ा पेटवाला।
तोंही दे० (अ०) उसी तरह में, उसी काल में, उसी समय में।
तोक तद्० (पु०) सन्तति, सन्तान, पुत्र, कन्या।
तोकह दे० (सर्व०) तुमको, तुझको।
तोष (पु०) तोष, सन्तोष।
तोटक तद्० (पु०) छन्द विशेष द्वादशाक्षर छन्द, एक छन्द का नाम जिसके प्रतिपाद में बारह अक्षर होते हैं।
तोड़ दे० (पु०) टूट, फूट, खण्डन, भञ्जन, नदी का वेग, नदी की तेज़ी, प्रवाह की प्रबलता, धारा की तीव्रता, दूध का या दही का पानी, तक, लौं, तलक, पर्यन्त।—जोड़ (वा०) दाँव पेंच, चाल, युक्ति।—डालना (क्रि०) विनाश करना, नष्ट करना, फोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना।—देना (क्रि०) खींचना, नोंचना, फल फूल आदि का तोड़ना।
तोड़ना दे० (क्रि०) फोड़ना, टुकड़ा करना, रुपया भुनाना, रुपये के पैसे बदलाना, हल चलाना, सेंध लगाना कुमारीत्व भङ्ग करना, अशक्त करना दाम घटाना, संस्था को भङ्ग करना, कारख़ाने को बन्द करना, प्रतिज्ञा भङ्ग करना, अलग करना, स्थिर न रहने देना।
तोड़ल दे० (पु०) बाला, कड़ा, कङ्कण, हाथ में पहनने का गहना। [भुनाने का दाम।
तोड़वाई, तुड़वाई दे० (स्त्री०) बट्टा, तुड़ाई, रुपया
तोड़वाना, तुड़वाना दे० (क्रि०) रुपया भुनाना, फोड़ाना, पुनः बनवाने के लिये गहने आदि का तुड़वाना।

तोड़ा दे० (पु०) रुपयों से भरी थैली, हज़ार रुपयों की थैली, घाटा, पलीता, बत्ती जिससे तोप आदि में आग लगाई जाती है। सिकड़ी, गले की सीकरी, पैर में पहनने का चाँदी का एक भूषण, घटा, घटी, नुकसान, नदी का किनारा, रस्सी का टुकड़ा।

तोड़ाना, तुड़ाना दे० (क्रि०) तोड़वाना तुड़वाना।

तोड़ी दे० (स्त्री०) सरसों, राई, धानविशेष।

तोलना दे० (क्रि०) निवार, दरी आदि बुनना, गूथना

तोतरि दे० (स्त्री०) तोतली, बच्चों की बोली।

तोतला, तुतला दे० (वि०) अस्फुटवाक्, अस्पष्टवक्ता, अदपदवक्ता। [बोलना।

तोतलाना, तुतलाना दे० (क्रि०) हकलाना, अस्पष्ट

तोता दे० (पु०) पक्षी विशेष, शुक, सुआ, सुग्गा। —चश्म दे० (पु०) तोते जैसी आँखें फेरने वाला, बेशील, दुःशील, बेमुरौवत।—चश्मी दे० (स्त्री०) दुःशीलता, बेवफ़ाई।

तोती दे० (स्त्री०) तोते की मादा, उपपत्नी, रखनी, सुरैतिन।

तोपड़ा दे० (पु०) मक्षिका, मक्खी, पक्षी विशेष।

तोपना दे० (क्रि०) ढाँकना, छिपाना, लुकाना, आच्छादित करना।

तोपा दे० (क्रि०) ढका, ढाँपा, छिपाया।

तोपाना दे० (क्रि०) गड़वाना, छिपवाना, लुकवाना।

तोप्यो दे० (क्रि०) देखो तोपा।

तोबड़ा दे० (पु०) एक प्रकार की थैली, जिसमें घोड़ों को दाना खिलाया जाता है। चमड़े की थैली।

तोमड़ी या तुमड़िया दे० (स्त्री०) तुमड़ी, तुम्बी, साधुओं का जलपात्र।

तोमर तत्० (पु०) अस्त्रविशेष, बरछी, साँग, भाला यह अस्त्र हाथ से चलाया जाता है, एक लम्बे डण्डे में शूल लगा हुआ रहता है। एक क्षत्रियों की जाति विशेष, कविता का एक छन्द।—ग्रह (पु०) योद्धा, जो भाले से लड़ाई लड़ते हैं।—धर (पु०) अग्नि, अनल, हुताशन।

तोय तत्० (पु०) जल, सलिल वारि, नीर, पूर्वा षाढ़ा नक्षत्र।—काम (पु०) परिव्याध, जल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का बेत।—कामीर (वि०) जलाभिलाषी, जलप्रार्थी, जल चाहने वाला।—द (पु०) जल देने वाला, तर्पणकर्ता। (पु०) मेघ, वारिद, घटा।—धर (पु०) वारिद, तोयद, मेघ, जलद।—धि (पु०) जलधि, समुद्र, सागर।—निधि (पु०) समुद्र, सागर, जलधि। —पिप्पली (स्त्री०) जलपीपल, जलज शाक विशेष।—प्रसादन (पु०) कतकफल, निर्मली फल, जिसको पीस कर जल में डालने से जल साफ़ हो जाता है।—सूचक (पु०) भेक, वर्षाभू, मेढक, जिसके बोलने से वृष्टि होने की सूचना मिलती है।

तोयाधिवासिनी तत्० (स्त्री०) [तोय+अधि-वासिनी] पाटली, पाढ़का वृक्ष।

तोयाशय तत्० (पु०) जलस्थान, तड़ागादि।

तोर दे० (स्त्री०) अरहर, (सर्व) तेरा।

तोरई दे० (स्त्री०) तुरई, शाक।

तोरण तत्० (पु०) [तुर+अनट्] बहिर्द्वार, बाह्यद्वार, वन्दनवार, फूल या पत्तों की माला जो उत्सव में लटकाई जाती है, कन्धरा, कंठी, महादेव।

तोरी दे० (स्त्री०) तरकारी विशेष, सरसों, राई।

तोल दे० (स्त्री०) तौल, जोख, माप, परिमाण।

तोलक तत्० (पु०) अस्सी रत्तीभर, बारह माशे भर, तोला। (दे०) परखना, बाँट, तौलने वाला, तुलवैया। [अस्सी रत्ती।

तोला तत्० (पु०) परिमाण विशेष, बारह माशा,

तोश तत्० (पु०) हिंसा, हिंसक।

तोशक दे० (पु०) आस्तरण विशेष, पलँग पर बिछाने का गद्दा।—ख़ाना दे० (पु०) वस्त्रों तथा गहनों का कुठार या भाण्डार।

तोशा दे० (पु०) पाथेय, मार्ग में भोजन करने के लिये सामग्री, मामूली खाने पीने की वस्तु। —ख़ाना दे० (पु०) देखो तोशकख़ाना।

तोष तत्० (पु०) [तुष्+अल्] तुष्टि, तृप्ति, हर्ष, आनन्द, आह्लाद। (वि०) थोड़ा, अल्प।

तोषक तत्० (वि०) [तुष्+ण्वुल्] हर्षजनक, परितोषक, परितोषकारक, धीरजदाता, तुष्ट करने वाला, प्रसन्न करने वाला।

तोषण तत्० (वि०) [तुष्+अनट्] तृप्तिकरण, आनन्दितकरण, तृप्ति, सन्तोष ।
तोषित तत्० (पु०) हर्षित, धीरजवान्, तुष्ट, तृप्त ।
तोसक दे० (स्त्री०) तोषक, गद्दा ।
तोहरा, तोहार (सर्व०) तुम्हारा ।
तोहि दे० (सर्व) तुमको, तुझको । [अन्य सन्ताप ।
तौंसना दे० (क्रि०) गरमी से झुलस जाना, उष्णता
तौ (क्रि० वि०) तो, फिर । [विशेष ।
तौतातिक तत्० (पु०) तुतात भट्टकृत दर्शनशास्त्र
तौन (सर्व०) वह,सो । (स्त्री०) दूध दुहते समय गाय के अगले पैर में बछड़ा बाँधने की रस्सी ।
तौर्य तत्० (पु०) मुरज आदि वाद्य विशेष, ढोलक आदि बाजा । [तीन ।
तौर्यत्रिक तत्० (पु०) नृत्य, गीत और वाद्य ये
तौर तत्० (पु०) एक प्रकार का यज्ञ । दे० (पु०) चालढाल, प्रकार, भाँति ।
तौरेत दे० (पु०) यहूदियों का प्रधान धार्मिक ग्रन्थ।
तौल तत्० (पु०) तुला, परिमाण किया, तोलने की रीति, मापनदण्ड, तोल, तोल । [तोलना।
तौलना दे० (क्रि०) तोलना, परिमाण करना,
तौलवाई तद्० (स्त्री०) तौल करने का काम, तौलाई ।
तौलाई तद्० (स्त्री०) तौल की मजूरी, बयाई ।
तौलाना दे० (क्रि०) तोलवाना, तौल कराना ।
तौलिया दे० (स्त्री०) छोटी अँगौछी, शरीर पोछने की अँगौछी । [आदि बनाये जाते हैं ।
तौली दे० (स्त्री०) पात्र विशेष, बटलोही, जिसमें भात
तौलैया दे० (पु०) तोलनेवाला, बया । [पर भी ।
तौहो दे० (अ०) तौभी, तब भी, तथापि, इस
तौहू दे० (अ०) तथापि, तौभी, तोहो ।
त्यक्त तत्० (पु०) [त्यज्+क्त] कृतत्याग, उज्झित, विसर्जित, छोड़ा हुआ, त्याग किया हुआ, विरक्त, विधिप्तचित्त ।—जीवन (पु०) गतप्राण, मृत ।
त्यक्ताग्नि तत्० (पु०) अग्नि रहित ब्राह्मण, अग्निहोत्र रहित । [योग्य ।
त्यजन (पु०) त्याग, त्यजनीय (पु०) त्याज्य, छोड़ने
त्याग तत्० (पु०) [त्याज्+घञ्] दान, वर्जन, उत्सर्ग, विरक्त, वैराग्य । - पत्र (पु०) वर्ज्जनपत्र, फारखती, इस्तिफा ।—शील (पु०) दाता, दानशील ।
त्यागन दे० (क्रि०) त्यजन, त्याग, विराग ।
त्यागना दे० (क्रि०) छोड़ना, तजना, त्याग करना ।
त्यागी तद्० (वि०) दाता, शूर, वर्जनशील, त्यागकारी, विरक्तक, कर्मफल को त्यागनेवाला वैरागी, छोड़ने वाला, विरक्त ।
त्याजित तद्० (वि०) त्यक्त, विसर्जित, छोड़ा हुआ ।
त्याज्य तत्० (वि०) त्याग योग्य, वर्जनीय, परित्याग करने के उपयुक्त, त्याग करने योग्य, छोड़ने योग्य।
त्यो दे० (अ०) उस प्रकार के, उसी रीति से ।
त्योंधा दे० (वि०) रात का अन्धा, रतौंधिया, चुन्धला । [लता, चतुराई ।
त्योनार, त्यौनार दे० (स्त्री०) निपुणता, दक्षता, कुश-
त्योनारी, त्यौनारी दे० (स्त्री०) कर्मनिपुण स्त्री, अपने काम को चतुरता पूर्वक स्वच्छ बनानेवाली स्त्री ।
त्योरी दे० (स्त्री०) चितवन, दृष्टि, निगाह, घुड़की, धमकी ।—चढ़ाना (क्रि०) क्रुद्ध होना, आँखें बदलना । [पीछे ।
त्योरुस दे० (पु०) वर्तमान वर्ष से दो वर्ष पहले या
त्योहार तद्० (पु०) पर्व दिन, उत्सव का दिन ।
त्योहारी तद्० (स्त्री०) त्योहार के दिन कमीनों और छोटों को दी जाने वाली वस्तु ।
त्यौं (क्रि० वि०) त्यों ।
त्यौरी (पु०) त्योरी, चितवन, धमकी ।
त्रपा तत्० (स्त्री०) [त्रप्+आ] व्रीड़ा, लज्जा, लाज, धर्म, दया ।—कर (पु०) लज्जाकर ।—न्वित (वि०) सलज्ज, लज्जालु ।—भर (पु०) पूर्ण लज्जा, अधिक लज्जा ।—वान् (वि०) त्रपायुक्त, त्रपान्वित, लज्जायुक्त । [प्राप्त, सलज्ज ।
त्रपित तद्० (वि०) [त्रपा+क्त] लज्जित, लज्जा
त्रपिष्ठ तद्० (वि०) अत्यन्त लज्जित, अतिशय व्रीड़ान्वित, सलज्ज ।
त्रपु तद्० (पु०) सीसा, राँगा । [इलायची ।
त्रपुरी तद्० (स्त्री०) छोटी इलायची, गुजराती,
त्रय तद्० (वि०) तीन, तीन की संख्या, ३, तीसरा । —गङ्गा (स्त्री०) तीन गङ्गा, यथा—मन्दाकिनी, भागीरथी और प्रभावती ।—ताप (स्त्री०) तीन ताप,दैहिक,दैविक और भौतिक ।—दाहक (पु०) तीन अग्नि,आहवनीय, दक्षिणाग्नि और गार्हपत्याग्नि

अथवा जठरानल, दावानल और मदवानल।—दोप (स्त्री॰) तीन शरीर।—दोष (पु॰) वात, पित्त और कफ से उत्पन्न रोग।

त्रयी तद्॰ (स्त्री॰) [त्रय+ई] वेदत्रय, ऋग्, यजु और साम ये तीन वेद, पुरन्ध्री, गृहस्थी, सीमन्तिनी, सोमराजी वृक्ष।—तनु (पु॰) सूर्य, भास्कर, रवि।—धर्म (पु॰) वेदोक्त धर्म, कर्मकाण्ड।—मय (पु॰) ईश्वरीय, ईश्वर।—मुख (पु॰) ब्राह्मण, द्विज, विप्र।

त्रयोदश तद्॰ (वि॰) संख्या विशेष, तेरह की संख्या, तेरह संख्या की पूर्ति करने वाली संख्या, १३।

त्रयोदशी तद्॰ (स्त्री॰) तिथिविशेष, चन्द्रमा की तेरहवीं कला के बढ़ने या क्षय होने का समय, तेरस, तेरहवीं तिथि।

त्रसरेणु तद्॰ (पु॰) तीन परमाणुओं का परिमाण, अणु परिमाण, गवाक्ष के सूक्ष्म छिद्रों से जो सूर्य की किरणें आती हैं उनमें जो चक चक सा दीख पड़ता है उसके साठवें भाग को परमाणु कहते हैं तीन परमाणुओं का त्रसरेणु होता है।

त्रसित तद्॰ (वि॰) त्रस्त, डरा हुआ, भयभीत, भीरु, शङ्कित, शङ्कान्वित।

त्रस्त तद्॰ (वि॰) शङ्कित, त्रासग्रस्त, भीरु।

त्राण तद्॰ (पु॰) [त्रै+अनट्] रक्षण, उद्धारकरण, निस्तार, उद्धार, रक्षा, बचाव, कवच।—कर्ता (वि॰) रक्षक, उद्धारकर्ता, रक्षा करने वाला।

त्राणी तद्॰ (वि॰) त्राणकर्ता, रक्षक। [परित्राण

त्रात तद्॰ (वि॰) [त्रै+क्त] रक्षित, उद्धारप्राप्त,

त्राता तद्॰ (पु॰) [त्रै+तृण्] रक्षाकर्ता, त्राणकर्ता, उद्धारक, बचाने वाला। [त्राणप्राप्त, रक्षित।

त्रायमाण तद्॰ (पु॰) [त्रै+मान] रक्ष्यमाण,

त्रास तद्॰ (पु॰) [त्रस+घञ्] भय, शङ्का, डर, हीरा आदि मणियों का एक प्रकार का दोष।—दायी (वि॰) [त्रास+दा+णिन्] भयदाता, शङ्कादायक, भयप्रदर्शक, भयदायक, भयप्रद।

त्रासक तद्॰ (वि॰) त्रासकारी, भयदायक, भयदाता।

त्रासित तद्॰ (वि॰) शङ्कित, भीत, भयमान।

त्रासित तद्॰ (पु॰) [त्रस्+णिच्+क्त] भयान्वित, डरपाया गया।

त्राहि तद्॰ (क्रि॰) त्राहि, बचाओ, रक्षा करो, त्राण करो।—करना (वा॰) रक्षा करने के लिये पुकारना, दुःख से व्याकुल होकर, रक्षक को पुकारना।

त्राहि तद्॰ (क्रि॰) रक्षा करो, बचाओ, त्राण करो।

त्रि तद्॰ (वि॰) संख्या विशेष वाचक, तीन संख्या का वाचक, ३, इसका योग अन्य शब्दों के साथ आदि और अन्त में किया जाता है। जब यह शब्दों के आदि में आता है, तब इसका ठीक ठीक रूप रहता है, परन्तु जब यह शब्दों के अन्त में आता है तब त्रि के स्थान में त्रय हो जाता है। यथा—त्रिभुवन, त्रिदशा, त्रिमूर्ति, त्रिवेद आदि, तापत्रय, वेदत्रय, भुवनत्रय, दण्डत्रय आदि।

त्रिंश तद्॰ (वि॰) तीसवाँ, तीस संख्या को पूर्ण करने वाली संख्या।

त्रिंशति तद्॰ (वि॰) तीस, ३०।

त्रिक तद्॰ (पु॰) तीन संख्या, ३, त्रिपथ स्थान, तिरमुहानी, त्रिकार, त्रिकटु, त्रिवली, पेट के तीन बल, कमर।

त्रिककुद् तद्॰ (पु॰) पर्वत विशेष, त्रिकूट, पर्वत।

त्रिकच्छक तद्॰ (पु॰) धोती पहनने की रीति, रीति के अनुसार धोती पहनना, तीन काँछ।

त्रिकट तद्॰ (पु॰) गोक्षुरीलता, गोखरू।

त्रिकटु, त्रिकटू तद्॰ (पु॰) मिर्च, सोंठ, पीपल का मिश्रण।

त्रिकर्मा तद्॰ (वि॰) तीन कर्म (यानी पढ़ना, यज्ञ करना और दान लेना) करने वाले, भूमिहार।

त्रिकाल तद्॰ (पु॰) भूत, भविष्यत्, वर्तमान काल, प्रातः, मध्याह्न, सन्ध्या काल।—ज्ञ (पु॰) बुद्ध। (वि॰) सर्वज्ञ, त्रिकालवेत्ता।—दर्शी (पु॰) ऋषि, मुनि (वि॰) त्रिकालज्ञ।

त्रिकुट तद्॰ (पु॰) सिघाड़ा।

त्रिकुटा तद्॰ (पु॰) सोंठ मिर्च, पीपर।

त्रिकुटी तद्॰ (स्त्री॰) दोनों भौंहों के बीच का स्थान।

त्रिकूट तद्॰ (पु॰) पर्वत विशेष, इसी पर्वत पर लङ्का नगरी बसी है। यथा—

"गिरि त्रिकूट ऊपर बस लङ्का,
तहँ रह रावण सहज असङ्का।" —रामायण।

त्रिकोण तत्० (वि०) तीन कोण, त्रिकोण विशिष्ट, जो स्थान त्रिकोण रेखा के अन्तर्गत है। (पु०) योनि, भग,, लग्न से पाँचवीं और नवीं लग्न को त्रिकोण कहते हैं।—मिति (स्त्री०) त्रिकोण वस्तुओं को मापने वाली विद्या।~ [ये तीन।

त्रिगण तत्० (पु०) त्रिवर्ग, धर्म, अर्थ, काम

त्रिगर्त्त तत्० (पु०) देशविशेष, जालन्धर, पंजाब का एक प्रान्त विशेष।

त्रिगुण तत्० (पु०) सत्व, रज और तमोगुण। (वि०) तीन से गुणित, जो तीन संख्या से गुणा गया हो। —कृत (वि०) तीन बार जोता हुआ खेत, तीन चासा।—तीत (पु०) ब्रह्म, परम पुरुष। (वि०) निर्गुण, जीवन्मुक्त, ज्ञानी।—त्मक (वि०) गुणत्रयविशिष्ट, संसार के पदार्थ।

त्रिचतुर तत्० (वि०) तीन या चार, अनिश्चित।

त्रिजग तत्० (पु०) त्रिजगत्, तीनलोक, त्रिभुवन।— योनि (पु०)त्रिभुवनकर्त्ता,त्रिजग को बनाने वाला।

त्रिजगत् तत्० (पु०) त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।

त्रिजटा तत्० (स्त्री०) लङ्केश्वर रावण के अन्तःपुर की एक राक्षसी। यह सीता की रक्षा करने के लिये नियुक्त की गई थी। दूसरी राक्षसियों का व्यवहार सीता के साथ अत्यन्त निष्ठुर और क्रूर था। परन्तु त्रिजटा के हृदय में सीता की अलौकिकता अङ्कित हो गई थी। त्रिजटा सीता के प्रति दयायुक्त व्यवहार करती थी। बेल का पेड़।

त्रिज्या तत्० (स्त्री०) व्यासार्द्ध रेखा, आधे विस्तार की रेखा

त्रिणता तत्० (स्त्री०) धनुष, कार्मुक, कमान।

त्रिणाचिकेत तत्० (पु०) यजुर्वेद का एक अध्याय, यजुर्वेद का एक भाग, यजुर्वेदाध्यायी।

त्रित तत्० (पु०) गौतम मुनि का पुत्र। एकत और द्वित नामक इनके दो भाई और थे। ये तीनों अत्यन्त तपस्वी थे। त्रित अपने अन्य दो भाइयों की अपेक्षा अधिक विद्वान और कर्मी थे। एक समय ये तीनों भाई पशु-संग्रह करने के लिये किसी गाँव में गये। पशु-संग्रह हो जाने के पश्चात् त्रित को वन में छोड़ कर दोनों भाई घर चले आये। वहाँ एक भेड़िया त्रित की ओर बढ़ा, उससे डर कर यह भागे। भागते भागते यह एक कुएँ में गिर गये। उसी कुएँ में त्रित ने सोमयज्ञ किया। कहते हैं उस यज्ञ में देवगण उपस्थित हुए थे और उसी कूप में सरस्वती नदी का भी आविर्भाव हुआ था। इसी कारण उस कूप का उद्पानतीर्थ नाम पड़ा। उस कूप का जल पीने से सोमरस पीने का फल होता है। त्रित के शाप से इनके दोनों भाई भेड़िया हो गये और वे वन में घूमने लगे।

त्रितय तत्० (वि०) तीन की पूरक संख्या, तीन संख्या, ३, धर्म अर्थ और काम का समुदाय।

त्रिदण्ड तत्० (पु०) श्रीवैष्णव संन्यासियों का सन्यासाश्रम का चिन्ह विशेष।—धारण (पु०) संन्यासियों का दण्डग्रहण विशेष, 'सन्यास आश्रम ग्रहण करते समय कायदण्ड, वाग्दण्ड और मनोदण्ड का ग्रहण करना। दण्ड ग्रहणविधि।

त्रिदण्डी तत्० (पु०) [त्रिदण्ड+इन्] श्रीवैष्णव-सम्प्रदाय के त्रिदण्डधारी यति, संन्यासी विशेष, त्रिदण्ड धारण करने वाले संन्यासी।

त्रिदश तत्० (पु०) देवता, सुर, अमर,तीस।—दीर्घिका (स्त्री०) स्वर्गगङ्गा, मन्दाकिनी, गङ्गा।—नदी (स्त्री०) मन्दाकिनी, स्वर्गगङ्गा।—वधू (स्त्री०) देव स्त्री, त्रिदश वनिता, देवाङ्गना, अप्सरा। —मञ्जरी (स्त्री०) तुलसी, बहुमञ्जरी।—ङ्कुश (पु०) [त्रिदश+अंकुश] अशनि, वज्र।—चार्य (पु०) [त्रिदश+आचार्य] देवगुरु, बृहस्पति। —युध (पु०) [त्रिदश+आयुध] वज्र, अशनि। —रि (पु०) [त्रिदश+अरि] दनुज, दानव, दैत्य।—लय (पु०) [त्रिदश+आलय] स्वर्ग त्रिविष्टप, सुमेरुपर्वत।—वास (पु०) स्वर्ग सुरपुरी, देवलोक, सुमेरुपर्वत।—हार (पु०) [त्रिदश+आहार] अमृत, सुधा, पीयूष।—श्वरी (स्त्री०) [त्रिदश+ईश्वरी] देवी, दुर्गा।

त्रिदिव तत्० (पु०) स्वर्ग, आकाश, अन्तरिक्ष।— वाद (पु०) दार्शनिक सिद्धान्त विशेष।

त्रिदिवौकस् तत्० (पु०) [त्रिदिव+ओकस्] स्वर्गस्थ, स्वर्ग में रहने वाले देवता, अमर।

त्रिदोष तद्० (पु०) वात, पित्त और कफ का विकार दोषत्रय।— (वि०) औषध विशेष, जिससे त्रिदोष अच्छा होता है, त्रिदोष नाशक औषध। —ज (वि०) त्रिदोष जनित रोग, सन्निपात रोग।

त्रिधा तद्० (वि०) तीन प्रकार से, त्रिविध।

त्रिधातु तद्० (पु०) गणेश, हेरम्ब, गणेश की मूर्ति तीन धातु की अधिक प्रशस्त है अतएव गणेश को त्रिधातु कहते हैं। धातुत्रय, तीन धातु, सोना, चाँदी और ताँबा। [धामत्रय, मृत्यु, स्वर्ग, पाताल।

त्रिधामा तद्० (पु०) शिव, विष्णु और अग्नि,

त्रिधारा तद्० (स्त्री०) तीनधारा, स्रोतत्रय, गङ्गा, सेंहुड़।

त्रिध्वनि तद्० (स्त्री०) तीन प्रकार की ध्वनि, मधुर, मन्द और गम्भीर। [नयनत्रय।

त्रिनयन तद्० (पु०) शिव, शम्भु, महादेव। (वि०)

त्रिनयना तद्० (स्त्री०) दुर्गा, भगवती।

त्रिनेत्र तद्० (पु०) शम्भु, महादेव।—चूडामणि (पु०) शशधर, चन्द्र, चन्द्रमा।

त्रिपञ्चाशत् तद्० (वि०) संख्या विशेष, तिरपन, तीन अधिक पचास, ५३।

त्रिपताक तद्० (पु०) रेखा त्रयाङ्कित कपाल, नाटक के अभिनय की एक मुद्रा, तीन अँगुलियों के सङ्केत से दूसरों को रोक कर एक आदमी के साथ रहस्य भाषण करना, तीन रेखा पड़ा हुआ ललाट।

त्रिपथगा तद्० (स्त्री०) गङ्गा, भागीरथी।

त्रिपद तद्० (वि०) पदत्रय, त्रिरेखायुक्त। (पु०) तिपाई, त्रिभुज। [गायत्री छन्द।

त्रिपदा तद्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, हंसपदी, वृक्ष,

त्रिपदिका तद्० (स्त्री०) धातुनिर्मित शङ्ख रखने की तिपाई।

त्रिपदी तद्० (स्त्री०) हाथी के बाँधने की रस्सी, भाषा कविता का एक छन्द, हंसपदी, गायत्री, तिपाई।

त्रिपर्णी तद्० (स्त्री०) शालपर्णी वन कपासी।

त्रिपाट तद्० (पु०) क्षेत्रविद्या भेद।

त्रिपाठी (पु०) त्रिवेदी, तिवारी, तीन वेदों का ज्ञाता।

त्रिपाद तद्० (पु०) विष्णु, नारायण, ज्वर विशेष।

त्रिपादिका तद्० (स्त्री०) हंसपदी लता।

त्रिपु दे० (पु०) सीसा, धातु विशेष, राँगा।

त्रिपुंसी दे० (स्त्री०) इन्द्रवारुण, इनारुन।

त्रिपुरा तद्० (स्त्री०) [त्रिपुर+आ] हंसपदी, मञ्जिष्ठ, त्रिवृत। [होती है, शैवों का तिलक।

त्रिपुण्ड तद्० (पु०) तिलक, जिसमें तीन आड़ी रेखाएँ

त्रिपुण्ड्र तद्० (पु०) तीन आड़ी रेखाओं का तिलक, भस्म आदि से मस्तक पर बनाई टेढ़ी लकीर, टेढ़ी तीन रेखा, त्रिपुण्ड, दैत्यविशेष।

त्रिपुर तद्० (पु०) मय दानव निर्मित पुरत्रय, दैत्य विशेष।—दहन (पु०) त्रिपुरान्तक, महादेव, शिव, त्रिपुरारि।

त्रिपुरा तद्० (स्त्री०) देवी विशेष, एक देवी का नाम।

त्रिपुरान्तक तद्० (पु०) त्रिपुर दहन, शिव, महादेव, शम्भु।

त्रिपुरारि तद्० (पु०) महादेव का एक नाम, पुरत्रय के नाश करने से महादेव ने यह नाम पाया है। तारकासुर के तीन पुत्र थे, जिनका नाम तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली था। इन तीनों ने तपस्या करके ब्रह्मा से वर पाया था कि—"तुम लोग तीन नगर में वास करोगे, हज़ार वर्ष के बाद ये नगर आपस में मिलेंगे, उस समय जो बाण से उन नगरों का नाश कर सकेगा उसीके द्वारा तुम लोगों का वध होगा।" यह वर पाकर उन्होंने मय दानव को तीन नगर बनाने का आदेश दिया, मय ने अपने तपोबल से स्वर्ग में सोने का, अन्तरिक्ष में रजत का, और मर्त्यलोक में लोहे का यों तीन नगर बनाये। कमलाक्ष स्वर्ग में, तारकाक्ष अन्तरिक्ष में और विद्युन्माली मर्त्यलोक में वास करता था। तारकाक्ष के हरिनामक पुत्र ने भी तपस्या की और उसने भी ब्रह्मा से वर पाया कि उसके नगर के एक सरोवर में वध द्वारा मृतव्यक्ति को डुबाने से वह उसी समय जीवित हो उठेगा। ब्रह्मा से ऐसे वर पाकर उन असुरों का अत्याचार बहुत ही बढ़ गया। उनके अत्याचार से पीड़ित होकर देवता ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने विचारा कि महादेव के बिना इन असुरों का विनाश दूसरे से नहीं होगा। अतएव देवताओं को साथ लेकर ब्रह्मा महादेव के पास गये। ब्रह्मा के मुख से असुरों के अत्याचार की बात सुनकर महादेव को बड़ा क्रोध हुआ। उन्होंने देवताओं के कल्याण के लिये असुरों के विनाश करने

का सङ्कल्प किया। यह दिव्यरथ पर आरूढ़ हुए। ब्रह्मा सारथि बने। थोड़ी दूर जाकर यह घोड़े पर चढ़े, पुनः बैल पर चढ़ कर उन्होंने असुरों के नगर देखे। उसी समय उन्होंने अश्वों का स्तन काटा और बैल के खुर बीच से फाड़ दिये। महादेव धनुष पर पाशुपत अस्त्र चढ़ाकर तीनों नगरों के मिलने की प्रतीक्षा करने लगे। जब वे पुर मिलने लगे उसी समय महादेव ने बाण छोड़ कर उन तीनों नगरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। पुर के वासी चिल्लाने लगे, महादेव ने इन सभी को जलाकर पश्चिम समुद्र में फेंक दिया। देवता निष्कण्टक हो गये।

त्रिपुस दे॰ (पु॰) खीरा, फल विशेष।

त्रिपौलिया दे॰ (पु॰) सिंहद्वार, राजमहल का पहला द्वार, तीन द्वार का मकान। [हर्र और बहेड़ा फल।

त्रिफला तद्॰ (स्त्री॰) समभाग मिश्रित आँवला,

त्रिबली तद्॰ (स्त्री॰) पेट पर पड़ने वाले तीन बल।

त्रिबेनी तद्॰ (स्त्री॰) त्रिवेणी।

त्रिभङ्ग तद्॰ (पु॰) तीन अङ्ग का भङ्ग, मूर्त्ति विशेष।

त्रिभङ्गा तद्॰ (पु॰) टेढ़ा खड़ा होना।

त्रिभङ्गी तद्॰ (पु॰) छन्द विशेष, श्रीकृष्ण की एक मूर्त्ति विशेष। [तिन्कोना।

त्रिभुज तद्॰ (पु॰) त्रिकोण रेखा, तीन भुजा का,

त्रिभुजात्मक तद्॰ (पु॰) [त्रिभुज+आत्मक] त्रिभुज त्रिकोण। [स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।

त्रिभुवन तद्॰ (पु॰) त्रिलोकी, त्रैलोक्य, तीन लोक,

त्रिमधु तद्॰ (पु॰) ऋग्वेद का एक भाग, मधुवाता आदि तीन ऋचाओं का वेत्ता, घी, चीनी और शहद।

त्रिमुखा तद्॰ (स्त्री॰) बुद्धदेव की माता, मायादेवी।

त्रिमूर्ति तद्॰ (पु॰) ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूर्त्ति।

त्रिमुहानी दे॰ (स्त्री॰) तीन मार्गों का मिलाप, जहाँ तीन मार्ग मिले हों।

त्रिया दे॰ (स्त्री॰) नारी, स्त्री, कामिनी, वनिता।

त्रियामा तद्॰ (स्त्री॰) [त्रि+याम+आ] रात्रि, रजनी, निशा, यमुना नदी, हल्दी, काला निसोथ, नील का पेड़।

त्रियुग तद्॰ (पु॰) विष्णु, नारायण, बसन्त, वर्षा और शरद् ऋतुत्रय। सत्ययुग, द्वापर, त्रेता—युगत्रय।

त्रियोनि तद्॰ (पु॰) क्रोध आदि से उत्पन्न कलह।

त्रिलोक तद्॰ (पु॰) तीन लोक, त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।

त्रिलोकी तद्॰ (स्त्री॰) तीन लोकों का समूह, यथा—भूर्लोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक, त्रिभुवन, त्रिजगत्।

—नाथ (पु॰) तीनों लोकों के नाथ, विष्णु, ईश्वर, भगवान्। [शम्भु।

त्रिलोचन तद्॰ (पु॰) त्रिनेत्र, त्रिनयन, महादेव,

त्रिलोह या त्रिलोहक तद्॰ (पु॰) सोना, चाँदी और ताँबा ये तीन धातु। [रज और तम।

त्रिवर्ग तद्॰ (पु॰) धर्म, अर्थ और काम, त्रिगुण सत्व,

त्रिवर्षात्मक तद्॰ (वि॰) त्रैवार्षिक, तीन वर्ष का, तीन साल का। [तीन वर्ष की गौ।

त्रिवर्षिका तद्॰ (स्त्री॰) त्रिहायणी, त्रिवर्षा गौ,

त्रिवली तद्॰ (स्त्री॰) उदर का अवयव विशेष, नाभि के ऊपर पेट की तीन रेखाएँ।

त्रिविक्रम तद्॰ (पु॰) वामनावतार विष्णु, वामन भगवान्, इनकी कथा प्रसिद्ध है।

त्रिविक्रमभट्ट तद्॰ (पु॰) संस्कृत के एक कवि का नाम, ये कवि प्रसिद्ध विद्वान् देवादित्य शर्मा के पुत्र थे। बाल्यावस्था में पढ़ने लिखने की ओर इनकी विशेष रुचि नहीं थी, इनके पिता ग्रामान्तर गये। उसी समय एक विदेशी पण्डित राजा के यहाँ आये और उन्होंने शास्त्रार्थ करने के लिये राजा से कहा। उस राजा का राज्य पण्डित त्रिविक्रमभट्ट के पिता ही थे। राजा ने उन्हें बुलवाया। उनके उप-स्थित न रहने के कारण त्रिविक्रमजी राजा के समीप गये, राजा ने उनको शास्त्रार्थ करने को कहा और दिन भी नियत कर दिया। विद्या में विशेष परि-चय न होने के कारण यह चिन्तित हुए और सर-स्वती के मन्दिर में जाकर उनकी आराधना करने लगे। भगवती प्रसन्न हुई और पिता के न आने तक सब शास्त्र के ज्ञान होने का इन्हें वर दिया। इन्होंने शास्त्रार्थ में वादी को जीता और ये नलचम्पू नामक ग्रन्थ बनाने लगे। सात उच्छ्वास तक उन्होंने बनाया था कि इनके पिता बाहर से चले आये, अतएव विवश होकर नलचम्पू इन्हें अधूरा ही छोड़ देना पड़ा। ख़ृष्टीय आठवीं शताब्दी इनका समय अनुमान से सिद्ध किया जाता है।

त्रिविध तद्० (वि०) तीन प्रकार का, तीन भांत, त्रिधा।

त्रिविष्टप (पु०) स्वर्ग, तिब्बत देश।

त्रिवेनी या त्रिवेणी तद्० (स्त्री०) स्थान विशेष, गङ्गा, यमुना और सरस्वती का सङ्गम स्थान, प्रयाग, तीन चोटी।

त्रिवेद तद्० (पु०) ऋक्, यजुः और साम ये तीन वेद।

त्रिशङ्कु तद्० (पु०) बिडाल, शलभ, चातक पक्षी, खद्योत, राजा विशेष, सूर्यवंशीय एक राजा। इसी शरीर से स्वर्ग जाने के लिये इन्होंने महर्षि वशिष्ठ को यज्ञ कराने के लिये कहा था। इनकी अभिलाषा पूर्ति को वशिष्ठ ने असम्भव बतलाया। तब ये वशिष्ठजी के पुत्रों के पास गये और उनसे अपनी अभिलाषा कह सुनायी। उन्होंने कहा कि जिस काम के विषय में पिता की असम्मति है उस काम को करना हम लोगों को उचित नहीं है। तब त्रिशंकु ने कहा कि यदि तुम लोग यज्ञ नहीं कराओगे, तब मैं दूसरा गुरु कर लूँगा। वशिष्ठ के पुत्रों ने इन्हें शाप दिया, तदनुसार यह चाण्डाल हो गये। तदनन्तर विश्वामित्र के पास त्रिशंकु गये और अपना मनोरथ कह सुनाया। विश्वामित्र ने अपने योगबल से सभी बातें जान लीं और यह यज्ञ करने के लिये प्रस्तुत हो गये। उस यज्ञ में ऋषि और देवताओं को निमंत्रित किया, केवल वशिष्ठ पुत्र और महोदय नामक ऋषि निमन्त्रित नहीं किये गये थे। वशिष्ठ के पुत्रों ने आपत्ति की कि जिस यज्ञ में क्षत्रिय आचार्य और चाण्डाल यजमान है, उस यज्ञ में देवता और ऋषिगण क्योंकर आ सकते हैं। यह सुन विश्वामित्र को बड़ा क्रोध हुआ। विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्रों को कुक्कुर मांस भोजी डोम और महोदय को निषाद हो जाने का शाप दिया। विश्वामित्र के अनुरोध से अन्यान्य महर्षियों ने यज्ञ आरम्भ किया, परन्तु कोई भी देवता नहीं आया। इससे विश्वामित्र का क्रोध और भी बढ़ा और वे अपनी तपस्या के बल से उसे स्वर्ग भेजने का प्रयत्न करने लगे। इन्द्र ने उनको ऐसा नहीं करने दिया। फिर क्या था विश्वामित्र एक नयी सृष्टि रचने लगे। सप्तर्षि मण्डल और नक्षत्रों की उन्होंने सृष्टि की, यह देखकर देवों ने विश्वामित्र को समझाया, विश्वामित्र ने कहा त्रिशंकु को नीचे नहीं गिरने देंगे। देवों ने यह मान लिया, तब से त्रिशंकु अन्तरिक्ष में सिर नीचे किये हुए लटका हुआ है।

(२) हरिवंश में एक दूसरे त्रिशंकु की कथा लिखी मिलती है। यह ऐक्ष्वाकवंश के पुत्र थे। इनका पहला नाम सत्यव्रत था। इन्होंने दूसरे की ब्याही स्त्री को हर लिया था। इससे इनके पिता अप्रसन्न हुए थे। तदनन्तर गुरु वशिष्ठ की कामदुघा गौ मार कर इसने गोमांस खाया, इन्हीं तीन पापों के कारण इसका त्रिशंकु नाम पड़ा था। उसकी अधार्मिकता के कारण पिता ने उसे अपने राज्य से निकाल दिया था। इसकी दुर्दशा देखकर विश्वामित्र को दया आई। उन्होंने त्रिशंकु को पिता का राज्य दिलवा दिया। इसी शरीर से स्वर्ग भेजने के लिये विश्वामित्र ने यज्ञ कराया था। देवताओं ने इसे स्वर्ग में स्थान दिया, इसकी स्त्री का नाम सत्यरथा था। सत्यरथा के गर्भ से हरिश्चन्द्र नामक त्रिशंकु को एक पुत्र हुआ था। यह पुण्यात्मा हरिश्चन्द्र त्रैशङ्कव नाम से पुकारा जाता है।

त्रिशूल तद्० (पु०) अस्त्र विशेष, महादेव जी का मुख्य अस्त्र।—धारी (पु०) शिवास्त्रधारी, महादेव, शम्भु।—पाणि (पु०) महादेव।

त्रिशूली तद्० (पु०) शिव, महादेव, महेश।

त्रिकूटल तद्० (पु०) त्रिकूट पर्वत, त्रिकोण। [नाम।

त्रिष्टुप तद्० (पु०) छन्दोविशेष, एक वैदिक छन्द का

त्रिसन्धि तद्० (स्त्री०) पुष्प विशेष।

त्रिसन्ध्य तद्० (पु०) सायं, प्रातः और मध्याह्न काल।—व्यापिनी (स्त्री०) त्रिसन्ध्या के अन्तर्गत स्थित रहने वाली तिथि।

त्रिसन्ध्या तद्० (स्त्री०) प्रातः, सायं और मध्याह्नकाल।

त्रिस्थली (स्त्री०) प्रयाग, काशी और गया।

त्रुटि तद्० (स्त्री०) क्षति, हानि, अपचय, नाश, न्यूनता, आज्ञालङ्घन, प्रतिज्ञा का अन्यथा करना, भ्रम, अपराध, संशय, कालभेद मुहूर्त, क्षण

द्व्यात्मक, काल,यत्प, छोटी इलायची।—कारक (पु०) क्षतिकारक, हानिकारी, दोषी, अपराधी।

त्रुटित तत्० (वि०) खण्डित, भग्न, क्षत, टूटा हुआ।

त्रुटी तत्० (स्त्री०) देखो त्रुटि।

त्रेता तत्० (स्त्री०) युग विशेष, दूसरा युग, इस युग का मान १२९६००० वर्ष का है। यज्ञाग्नि विशेष, यज्ञ के तीन दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य और आहवनीय अग्नि।—ग्नि (पु०) [त्रेता+अग्नि] यज्ञ के अग्नि का रक्षा करने वाला, आहिताग्नि। —युगाद्य (स्त्री०) त्रेतायुग की आरम्भ तिथि, कार्तिक शुक्ला नवमी।

त्रेधा तत्० (अ०) [त्रि+धा] त्रिधा, तीन प्रकार।

त्रैगुण्य तत्० (पु०) त्रिगुण का धर्म, त्रिगुण का स्वभाव, सत्व, रज और तम इनका समुदाय।

त्रैवर्गिक तत्० (वि०) त्रिवर्ग सम्बन्धी।

त्रैवार्षिक तत्० (वि०) वर्ष त्रयात्मक, तीन वर्ष का, त्रिसांवत्सरिक।

त्रैविद्य तत्० (पु०) त्रिवेदज्ञ, वेदत्रयवेत्ता।

त्रैविध्य तत्० (वि०) प्रकारत्रय, तीन प्रकार।

त्रैमासिक तत्० (वि०) त्रिमासी, तीन मास सम्बन्धी, तीन मास का।

त्रैराशिक तत्० (पु०) अङ्क प्रकरण विशेष, जिसमें एक वस्तु का मूल्य जानने से तीन वस्तुओं का मूल्य जाना जाता है। तीन की संख्या का गणित सम्बन्धी नियम।

त्रैलिङ्गस्वामी तत्० (पु०) प्रसिद्ध तैलङ्गस्वामी इन महात्मा का जन्म दाक्षिणात्य ब्राह्मणवंश में हुआ था। सन् १२२१ ई० के पूस महीने में विजिना जिला के हेलिया ग्राम में इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम नृसिंहधर था, वह बड़े दानी थे। इनकी दो स्त्री थीं। बड़ी स्त्री के गर्भ से त्रैलिङ्ग-धर उत्पन्न हुए थे। यही त्रैलिङ्गधर पीछे त्रैलिङ्ग स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए। त्रैलिङ्ग की ४०वर्ष की अवस्था में इनके पिता का स्वर्गवास हुआ। पिता के वियोग के अनन्तर इन्होंने अपनी माता से शास्त्रों का अध्ययन और योगाभ्यास की शिक्षा पायी। इनको ५२ वर्ष की अवस्था में माता का परलोकवास हुआ। माता के अन्तिम संस्कार के बाद पुनः ये घर नहीं लौटे। इनके छोटे भाई ने घर चलने के लिये बहुत विनय किया, परन्तु इन्होंने कुछ नहीं सुना। तदनन्तर इनके छोटे भाई ने इनके लिए वहीं मकान बनवा दिये, और भोजन की भी व्यवस्था कर दी। इसी समय भगीरथ स्वामी नामक योगी के साथ इनका परिचय हुआ। त्रैलिङ्ग इन्हीं स्वामीजी के साथ पुष्कर तीर्थ को गये और वहाँ इन्होंने योग के गूढ़तत्वों का ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने उन्हीं से मन्त्र ग्रहण भी किया। कुछ दिनों के बाद भगीरथ स्वामी, अनेक तीर्थों में घूमते हुए सेतुबन्ध रामेश्वर पहुँचे। वहाँ स्वामीजी के वर से एक दरिद्र ब्राह्मण धनी और पुत्रवान् हुआ था। स्वामीजी का अलौकिक प्रभाव देखकर लोग बेटा धन आदि के लिये उन्हें सताने लगे। अतएव विवश होकर स्वामीजी वहाँ से हिमालय की ओर नैपाल राज्य में गये और कुछ दिनों तक वहीं योगाभ्यास करते रहे। वहाँ सर्दी की अधिकता के कारण स्वामीजी पुनः भारत में लौटकर नर्मदा के तीर पर मार्कण्डेय मुनि के आश्रम में रहने लगे। अनन्तर इन्होंने काशी में रहना स्थिर किया। स्वामीजी का प्रभाव चारों ओर फैल गया, लोग दूर दूर से इनके दर्शनों के लिये आते थे। काशी के यात्री विश्वनाथ के समान भक्ति करते थे। १८० वर्ष की अवस्था में ये विनाशी शरीर को छोड़कर मुक्त हुए।

त्रैलोक्य तत्० (पु०) त्रिभुवन, त्रिलोक, स्वर्ग मर्त्य और पाताल, ब्रह्माण्ड।—विजया तत्० (स्त्री०) भाँग, भग।

त्रैवर्णिक (पु०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का धर्म।

त्रैवार्षिक तत्० (वि०) तीन वर्ष सम्बन्धी।

त्रैविक्रम तत्० (पु०) विष्णु, वामन भगवान।

त्रोटक तत्० (पु०) संस्कृत का एक छन्द विशेष, नाटक का एक भेद।

त्रोटी तत्० (स्त्री०) चञ्चु, चोंच,ठोठ,टोंट। [का घर।

त्रोण दे० (पु०) तूण, तरकस, इषुधि, बाण रखने

त्र्यधीश तत्० (पु०) त्रिकालाधिपति, त्रिलोकेश, सूर्य, दिवाकर।

त्र्यम्बक तद्० (पु०) शिव, महादेव, त्रिलोचन । —सख (पु०) कुबेर, यक्षराज, धनाधिप ।
त्र्याहिक तद्० (वि०) तीसरे दिन होनेवाला, तीसरे दिन का, दो दिन के बाद होने वाले रोग आदि ।
त्वक् तद्० (स्त्री०) स्पर्शेन्द्रिय, खाल, वल्कल, चमड़ा, दालचीनी ।—क्षत (पु०) फोड़ा, व्रण, स्फोटक, घाव, क्षत ।—पत्र (पु०) तेजपात । —सार (पु०) बाँस ।
त्वचा तद्० (स्त्री०) चर्म, वल्कल, छाल ।
त्वदङ्घ्रि तद्० (पु०) आपके चरण ।
त्वदीय तद्० (वि०) तुम्हारा, तुम्हारा सम्बन्धी ।
त्वरा तद्० (स्त्री०) वेग, शीघ्रता, द्रुत, शीघ्र । —कारक (पु०) शीघ्रकारक, द्रुतकारी ।—न्वित (वि०) [त्वरा+अन्वित] सूर्य, त्वरित ।
त्वरित तद्० (वि०) त्वरान्वित । (पु०) शीघ्र, द्रुत ।
त्वरितोदित तद्० (वि०) [त्वरित+उदित] शीघ्र कथित वाक्य, जल्दी से कहा गया वाक्य ।
त्वष्टा तद्० (पु०) [त्वष+तृन्] आदित्य विशेष, सूर्य, विश्वकर्मा, महादेव, प्रजापति विशेष, वर्धं सकुर आदि विशेष, बढ़ई, चित्रा नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता । [नक्षत्र ।
त्वाष्ट्र तद्० (पु०) वृत्रासुर, वृत्र नामक असुर, वज्र, चित्रा
त्वाष्ट्री तद्० (स्त्री०) चित्रा नक्षत्र, संज्ञा नाम की सूर्य की स्त्री ।
त्विष तद्० (स्त्री०) शोभा, प्रभा, कान्ति, दीप्ति, रुचि, वाक्य, व्यवसाय, जिगीषा, जीतने की इच्छा ।
त्विषा तद्० (स्त्री०) दीप्ति, शोभा, राशि, किरण ।
त्विषाम्पति तद्० (पु०) सूर्य, रवि, भानु ।
त्विषि तद्० (पुं०) किरण, राशि, तेज, प्रभा ।

थ

थ व्यञ्जन का सत्तरहवाँ अक्षर, दन्तस्थान से उच्चारण होने के कारण इसे दन्त्य कहते हैं ।
थ तद्० (पु०) पहाड़, रक्षण, व्याधि विशेष, भय चिन्ह, भक्षण, मङ्गलध्वंस ।
थईं दे० (स्त्री०) जगह, ढेर, अटाला ।
थई दे० (स्त्री०) कपड़ों की राशि, वस्त्रसमूह, ईंटों की बनी अटारी, गृहनिर्माता, घर बनानेवाला, राज, थवई । [थूनी, पाया ।
थंबा, थंभा, थंभ तद्० (पु०) स्तम्भ, खम्भा, स्तम्भ,
थंभना दे० (क्रि०) ठहराना, रुकना, सम्हलना, स्थिर होना ।
थक दे० (पु०) थक्का, चक्का, चकत्ता, ढेला, गाँव की सरहद, ग्रामसीमा, ढेर, राशि, अटाला ।—थक (वि०) लथपथ, तरबतर, सिक्त, थसक ।
थकना दे० (क्रि०) श्रान्त होना, हारना, हार जाना, अधिक परिश्रम से इन्द्रियों का वश होना, हाथ पैर आदि की शिथिलता, धीमा पड़ जाना, मुग्ध हो जाना ।
थकरी दे० (स्त्री०) स्त्रियों के बाल झाड़ने की घास की बनी कूँची ।
थका दे० (वि०) श्रान्त, थका हुआ, थकित, क्लान्त ।
थकान दे० (स्त्री०) थकावट, शिथिलता ।
थकाना दे० (क्रि०) श्रान्त करना, परिश्रम कराकर शिथिल करना, हराना ।
थका माँदा दे० (वि०) थका हुआ, श्रान्त, श्रमित ।
थकार तद्० (पु०) थ अक्षर, तवर्ग का दूसरा वर्ण ।
थकावट दे० (स्त्री०) थकान, हरारत, हरास ।
थकि दे० (क्रि०) थक कर, हार कर, लाचार हो ।
थकित दे० (वि०) थका हुआ, श्रान्त, शिथिल, चकित, थका हुआ ।
थकौनी (स्त्री०) श्रान्ति, थकावट ।
थकौहाँ (पु०) थकामाँदा, थका हुआ ।
थक्का दे० (पु०) थोक थक्कान, लौंदा, घनीभूत पदार्थ, जमा हुआ पदार्थ, जमावट । [ढील, मन्द ।
थगित दे० (वि०) रुका हुआ ठहरा हुआ, शिथिल,
थति (स्त्री०) धरोहर, थाती ।—दार (पु०) वह व्यक्ति जिसके पास थाती या धरोहर रक्खी हो ।
थती दे० (वि०) पक्षी, वशी, नियतात्मा, थोक, राशि, ढेर ।
थन तद्० (पु०) स्तन, गौ आदि की चूची, पीनीवेला ।
थनी दे० (स्त्री०) घोड़े और हाथी का एक दोष ।

थनेला या थनेली दे० (पु०) स्तन का रोग विशेष, स्तन का घाव, गुबरैले की जाति का कीड़ा ।
थनेश्वरी तद्० (पु०) कुरुक्षेत्र के रहनेवाले ब्राह्मण ।
थनैत दे० (पु०) गाँव का मुखिया, वह आदमी जो ज़मींदार की ओर से लगान वसूल करने पर नियत हो ।
थपक दे० (पु०) थाप, ठोक, चुमकार ।
थपकी दे० (स्त्री०) थपक, ज़मीन को पीट कर चौरस करने वाली काठ की मुँगरी, थापी चुमकारी ।
थपड़ा दे० (पु०) चपत, चपेटा, थप्पड़ ।
थपड़ी दे० (स्त्री०) करताली, हाथों से ताली देना ।
थपथपी दे० (स्त्री०) थपकी ।
थपना तद्० (क्रि०) स्थापना, बैठाना, स्थापित करना, देवता आदि की प्रतिष्ठा करना ।
थपा तद्० (वि०) स्थापित, प्रतिष्ठापित स्थापना किया हुआ । [कराना ।
थपाना तद्० (क्रि०) स्थापना कराना, प्रतिष्ठित
थपेड़ा दे० (पु०) धौल, चपेटा, थपड़ा, धक्का, टक्कर ।
थपोड़ी (स्त्री०) थपकी, ताली ।
थप्पड़ दे० (पु०) चपत, चपेटा, थाप ।
थम तद्० (पु०) स्तम्भ, खम्भ, पाया, थूनी ।
थमकारी दे० (वि०) रोकने वाला ।
थमड़ा दे० (वि०) तुन्दिल, तोंदैल, बड़े पेटवाले ।
थमना, थंमना दे० (क्रि०) रुकना, थमना, ठहरना ।
थर दे० (पु०) थल, सिंह, बाघ का खोह, बीहड़, जङ्गल, वीरान वन । (स्त्री०) तह, परत ।
थरथर दे० (स्त्री०) कम्प, कंपन, डगमग, हलचल, एक प्रकार का कम्प, बहुत कम्प । यथा—" जाड़े से थरथर काँपता हुआ भी प्रातःकाल गङ्गास्नान करने गया ।"—कंपनी दे० (स्त्री०) एक छोटी चिड़िया विशेष । [से काँपना ।
थरथराना दे० (क्रि०) काँपना, कम्पित होना, भय
थरथराहट दे० (स्त्री०) कम्प ।
थरथरी दे० (स्त्री०) कपकपी ।
थरहाई, थराई दे० (स्त्री०) एहसान, निहोरा ।
थरहराना दे० (क्रि०) चिन्ता से काँपना ।
थरिया दे० (स्त्री०) थाली, टाठी । [थाली ।
थरछिया, थरलिया, थरकुलिया दे० (स्त्री०) छोटी

थराना दे० (क्रि०) कम्पित होना, कम्पित करना, कँपा देना, शङ्कित करना ।
थल तद्० (पु०) स्थल, जगह, ज़मीन, ठाँव, धरती, स्थान, ऊँची धरती, बाघ की माँद, मरुमण्डल ।
थलकना दे० (क्रि०) धड़कना, फड़कना, तलफना, उथल पुथल होना । [वाले मनुष्य आदि जीव ।
थलचर तद्० (पु०) स्थलचारी, भूमि पर रहने या चलने
थलचारी तद्० (वि०) भूमि पर चलने वाले प्राणी ।
थलथल दे० (वि०) मोटेपन के कारण झूलता या हिलता हुआ ।
थलथलाना (क्रि०) सामान्य आघात से भी हिलने लगना, कम्पित होना, जिस प्रकार मोटे आदमियों का माँस हिलता है ।
थलबेड़ा दे० (पु०) नाव लगने का घाट । [बरतन ।
थलिया दे० (स्त्री०) छोटा थाल, भोजन करने का
थली दे० (स्त्री०) स्थान, बैठक, बालू का मैदान । पाथड़र, पर्वत या वन की प्रान्त भूमि ।
थवई दे० (पु०) राज, थई, मकान बनाने वाला, ईंटे पत्थर की जोड़ाई करने वाला कारीगर । [होना ।
थहराना दे० (क्रि०) काँपना, शङ्कित होना, भीत
थहाना (क्रि०) थाह लेना, गहराई मापना ।
थाँग दे० (स्त्री०) चोरों का गुप्त गृह, माँद, खोज, पता, सुराग ।
थाँगी दे० (पु०) चोरों का भेदिया, थाँग लगाने वाला, चोरी का माल मोल लेने वाला, चोरों को चोरी के लिये समय स्थान आदि की सूचना देने वाला, चोरों का अड्डा रखने वाला, चोरों का सरदार ।
थाँम दे० (पु०) खम्भा, स्तम्भ, थूनी ।
थाँमना दे० (क्रि०) अवलम्बन करना, रोकना, अट-काना, थामना, सहायता करना, विलम्ब करना ।
थाँवला दे० (पु०) क्यारी, आलबाल, थाला ।
था (क्रि०) है का भूत काल, रहा ।
थाई तद्० (वि०) न मिटने वाला, बना रहने वाला । (पु०) बैठक, थथाई ।
थाक तद्० (पु०) ग्रामसीमा, थोक, ढेर का ढेर, राशि, मचाला । (क्रि०) थक कर, हार कर ।
थाकना दे० (क्रि०) थकना, श्रान्त होना, क्लान्त होना ।

थाति, थाती (स्त्री०) सञ्चित धन, जमा, धरोहर, अमानत। [पशु बाँधने का स्थान।
थान दे० (पु०) कपड़े का थान, स्थान, देवल, जगह,
थानक तद्० (पु०) जगह, थाला, फेन, झाग।
थाना दे० (पु०) स्थान, ठिकाना, बैठक, चौकी, सिपाही के रहने का स्थान, कोतवाली, अड्डा।—पति तद्० (पु०) दिक्पाल, ग्रामदेवता।
थानी दे० (पु०) स्थानी, स्थान का स्वामी, स्थान का प्रधान या मुख्य। (वि०) सम्पन्न, पूर्ण।
थानेदार दे० (पु०) कोतवाल, पुलिस का एक अफ़सर।
थानैत (पु०) थानापति, ग्रामदेवता।
थाप दे० (स्त्री०) धौल, थप्पड़, पशु का पाँव, मर्याद, बैठक, थपकी, छोटे ढोल के बजाने का शब्द।
थापन तद्० (पु०) स्थापित करने का कार्य, रखने का कार्य।
थापना दे० (क्रि०) थोपना, गोबर पाथना, ऊपरी बनाना, थपथपाना, ठोंकना, रखना, स्थापन करना, ठहरा देना, धरना, मुक़र्रर करना, बैठना, कलश स्थापना की पूजा।
थापरा दे० (पु०) डोंगी, छोटी नाव।
थापा दे० (पु०) पशु के पाँव का चिन्ह, पञ्जे का चिन्ह।—देना या लगाना (क्रि०) किसी मङ्गल कार्य के अवसर पर स्त्रियाँ ऐपन के थापे लगाती हैं। [गया।
थापित दे० (वि०) स्थापित, प्रतिष्ठापित, बैठाया
थापी दे० (स्त्री०) थापने का शब्द, काठ की बनी हुई थापी, जिससे छत आदि पीटते हैं।
थाम दे० (पु०) थम्भ, थूनी, टेक, मस्तूल।
थामना दे० (क्रि०) रोकना, पकड़ना, अटकाना, हाथ में लेना, सँभालना। [करना।
थाम्हना दे० (स्त्री०) सम्भालना, रोकना, विलम्ब
थायी दे० (वि०) स्थायी। [पदा पात्र।
थार, थाल दे० (पु०) बड़ी थाली, भोजन करने का
थारा (सर्व०) तुम्हारा।
थाल (पु०) देखो थार।
थाला दे० (पु०) थालापाला, थाँवला।
थाली दे० (स्त्री०) थलिया, भोजन करने का पात्र।
थाव दे० (स्त्री०) थाह।

थावर तद्० (पु०) स्थावर, प्राणिविशेष, अचल वृक्षादि।
थाह दे० (स्त्री०) तला, पेंदा, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त, अन्त, पार, सीमा, संख्या, परिमाण आदि, किसी वस्तु का गुप्त रीति से लगाया गया पता, उतारघाट, आहट, अंदाज़, जल का गहराव, जल के नीचे की भूमि।
थाहना (क्रि०) थाह लेना, पता लगाना।
थाहरा दे० (वि०) छिछला, जिसमें गहरा पानी न हो।
थाही दे० (पु०) नदी का उथला स्थान, जहाँ अधिक जल न हो। [गहरी न हो।
थाहा दे० (स्त्री०) उथली नदी, नदी विशेष, जो
थिगरी, थिगली दे० (स्त्री०) चकती, पैबन्द, फटे हुए कपड़े का छेद बन्द करने को कपड़े का जो टुकड़ा लगाया जाता है वह। [रहन, ठहराव।
थिति तद्० (स्त्री०) स्थिति, स्थिरता, निश्चितवास,
थिर तद्० (वि०) स्थिर, अचल, निश्चित।
थिरकना दे० (क्रि०) निपुणतापूर्वक नाचना।
थिरकी दे० (स्त्री०) चमत्कार, विशेषता, घूमने की रीति।
थिरता तद्० (स्त्री०) स्थिरता, अचञ्चलत्व।
थिरा तद्० (स्त्री०) स्थिरा, पृथ्वी, धरती।
थिराना दे० (क्रि०) स्थिर होना, बैठाना, ठहराना, मिट्टी के बैठ जाने से पानी का साफ़ होना।
थिरु दे० (क्रि०) स्थिर हो, क़ायम रह।
थी दे० (क्रि०) "था" का स्त्रीलिङ्ग।
थीर दे० (वि०) सुस्थी, स्थिर।
थुकथुकाना दे० (क्रि०) थुकना, बार बार थूकना।
थुकटाई दे० (वि०) ऐसी औरत जिसे देख सब थूकें या निन्दा करें।
थुकाई दे० (स्त्री०) थूकने का काम।
थुकाना दे० (क्रि०) निन्दा कराना, अप्रतिष्ठा कराना, मुँह में रखी वस्तु को गिरवाना, उगलवाना।
थुक्काफ़ज़ीहत दे० (स्त्री०) तिरस्कार, मैं मैं तू तू, धिक्कार, थूकना और लानत देना। [सूचक शब्द।
थुड़ी दे० (स्त्री०) लानत, घृणा और तिरस्कार
थुतकारना दे० (क्रि०) } अनादर के साथ निकालना,
थुथकारना दे० (क्रि०) } अपमानित करके निकाल देना।

थुथना (पु०) निकला हुआ लंबा मुँह।
थुथनी दे० (स्त्री०) शूकर का मुँह। [लटकाना।
थुथाना दे० (क्रि०) भौं चढ़ाना, तेवरी चढ़ाना, ओठ
थू (अ०) थूकने का शब्द, धिक्, छिः।
थूक दे० (पु०) मुँह का पानी, कफ, खखार।
थूकना दे० (क्रि०) थूक फेंकना, खखारना।
थूणी तद्० (स्त्री०) स्थूण, स्तम्भ, खम्भा, सहारे की लकड़ी जो छप्परों में लगायी जाती है। थुनकिया, थुनिया। [(वि०) बुरा, खराब।
थूथड़ा दे० (पु०) शूकर आदि पशुओं का मुख, थूथनी,
थूथन, थूथना दे० (पु०) आगे निकला हुआ लम्बा मुँह, थूथड़ा, पशुओं का मुँह।
थूथुन (पु०) देखो थूथन।
थूनी तद्० (स्त्री०) थुणी, स्तम्भ, खम्भा, धरन।
थूरन दे० (पु०) पीटन, कूचन, कूचना, कूटना।
थूरना दे० (क्रि०) कूटना, मारना, पीटना, रस्सी बनाने के लिये मूँज या नारियल के छुमे को पीटकर पतला बनाना।
थूल तद्० (वि०) मोटा, भारी, भद्दा।
थूला तद्० (वि०) मोटा, ताज़ा।
थूली दे० (स्त्री०) दलिया, सूजी, हाल की ब्यायी हुई गौ को जो पकाया हुआ दलिया दिया जाता है वह भी थूली कहाता है।
थूवा तद्० (पु०) टीला, ढूह, मिट्टी का लौंदा। (स्त्री०) थूड़ी, धिक्कार।
थूहर, थूहड़ दे० (पु०) पौधा विशेष, सेहुंड, सेंहुड़, यह कटीला पौधा होता है।
थूहा तद्० (पु०) ढूह, टीला, अटाला।
थूही दे० (स्त्री०) मिट्टी का ढेर।
थेइथेई दे० (स्त्री०) आनन्द, हर्ष, नृत्य जनित आनन्द, बाजे के अनुकरण का शब्द विशेष। दे० (वि०) थिरक थिरक कर नाचने की मुद्रा तथा शब्द। [की चिप्पी।
थेगली दे० (स्त्री०) टिकड़ी, जोड़, पैबन्द, कपड़े में
थेया दे० (पु०) नग, हीरा, अँगूठी या और किसी गहने में जड़े जाने वाले बहुमूल्य पत्थर।
थेथर दे० (वि०) थका हुआ, श्रमित।
थैचा (पु०) खेत के मचान का छाजन।

थैथै दे० (अ०) बाजानुकरण शब्द, बाजे के समान नाचने वाले अपने घुँघरू से जो शब्द निकालते हैं।
थैया दे० (पु०) खेत के मचान के ऊपर का छप्पर।
थैला दे० (पु०) थोरा, गौन, झोला, कोथला।
थैली, थैलिया दे० (स्त्री०) छोटा थैला, कोथली, बटुआ, झोली।
थोक दे० (पु०) थाक, इकट्ठा, सब का सब, एकत्र, समुदाय, राशि, समूह, ढेर, एक ढेरा, भाग, बिक्री का इकट्ठा माल, टोला, मुहल्ला।—दार दे० (पु०) वह व्यापारी जो फुटरा न बेचकर इकट्ठा माल बेचे।—बन्दी (स्त्री०) दबाबन्दी, दलबन्दी।
थोड़ दे० (पु०) फले हुए केले का गाभा, फलित कदली वृक्ष का गर्भ, कम, न्यून, अल्प।
थोड़ा दे० (वि०) अल्प, किञ्चित, कम, न्यून, तनिक। —थोड़ा (अ०) कुछ कुछ, अल्प अल्प, शनैः शनैः, धीरे धीरे, कम कम।—थोड़ा होना (वा०) लज्जित होना, घटना, धीरे धीरे आगे बढ़ना, क्रमशः अग्रसर होना।—बहुत (वा०) यत्किंचित, न्यूनाधिक, कमोवेश।—से थोड़ा (वा०) अल्पस्वल्प, बहुत कम।
थोतरा दे० (वि०) भोथर, भोंथरा, कुण्ठित, तेज नहीं।
थोती दे० (स्त्री०) थूथन। [पिटी, पोली।
थोथ दे० (स्त्री०) निस्सारता, खोखलापन, तोंद
थोथरा दे० (वि०) खोखला, निकम्मा, जो किसी काम में न आ सके। [धार का।
थोथला दे० (वि०) अशोभन, कुण्ठित, बिना
थोथा दे० (पु०) औषध विशेष, फलहीन तीर, बिना धार का बाण, भोथरा अस्त्र। (वि०) छूँछा, रीता, रिक्त, बेहुनर। (सर्व०) भद्दा, बेढंगा।
थोथी (स्त्री०) एक प्रकार की घास।—बात दे० (वा०) अनर्थक वाक्य, बिना प्रयोजन का वाक्य, अर्थहीन वचन, ऊटपटाँग बात।
थोप दे० (पु०) पालकी के बाँस का मुखड़ा, ढोंग, ढाँप, छाप, मुहर, भूषण, अलङ्कार।
थोपड़ी दे० (स्त्री०) चपत, धौल, तड़ी।
थोपना दे० (क्रि०) एकत्रित करना, सँभालना, थापना, छेकना, गाँजना, बटोरना, माथे मढ़ना।

धोपियाना दे० (क्रि०) चूना, बूँद बूँद गिरना, गिरकिराना, धुँधियाना।
धोपी दे० (पु०) चपेट, थपत, धक्का, मुक्का।
धोय, धोस दे० (स्त्री०) घरन की थूनी, लकड़ी का टेकन, छड़ी का टेकन।
धोयड़ा दे० (पु०) पूयर।
धोर दे० (पु०) केले का गाभ, पूहर का पेड़।
धोरा दे० (वि०) धोखा, घपर, किद्रित।
धोरी (स्त्री०) हीन, धनाढ्य आदि विशेष, धोड़ी।
धोहर दे० (पु०) पूहर, सेहुंड, सीज।
धोना दे० ... बिदाई।

द

द यह व्यञ्जन का अठारहवाँ और दन्त्य वर्ण है क्योंकि इसका उच्चारणस्थान दन्त है।
द तद्० (पु०) दाता, पर्वत, दान, दाँत, खण्डन, रक्षक, भार्या, पत्नी, संरक्षण, सुधारण, किसी शब्द के अन्त में आने से यह देने वाले का बोध करता है। यथा—धनद, जलद, पयोद आदि। इसका काटना अर्थ हिन्दी में प्रसिद्ध है।
दइ तद्० (पु०) दैव, भाग्य, अदृष्ट, ईश्वर, देवता। —मारा (वि०) भाग्यहत, भाग्य का मारा, दुर्भागी, अभागी।
दइय दे० } (पु०) देव, विधाता, अदृष्ट, ईश्वर,
दई दे० } भाग्य।
दंग (वि०) चकित, स्तब्ध। (पु०) भय, डर, घबराहट।
दंगई दे० (वि०) दंगा करने वाला, उपद्रवी।
दंगल दे० (पु०) पहलवानों का युद्ध, समूह, अखाड़ा।
दंगा दे० (पु०) झगड़ा, उपद्रव, बखेड़ा।
दंगैत (पु०) उपद्रवी, भारी।
दंडना (क्रि०) दण्ड देना, सजा देना।
दंतिया (स्त्री०) छोटे छोटे दाँत।
दंतुरिया (स्त्री०) छोटे छोटे दाँत।
दंतुला (पु०) बड़े दाँतों वाला।
दंदाना (क्रि०) गर्माना, गरमी लगना।
दंदी (पु०) एक प्रकार की मिठाई, मगजलड्डू।
दंवरी (स्त्री०) बैलों द्वारा सूखे धान के डण्ठलों का रौंदवाना, दाँय चलवाना।
दंश तद्० (पु०) दन्तक्षत, सर्प या अन्य किसी विषैले कीड़े का काटा हुआ घाव, डाँस, कवच, असुर विशेष, भृगुमुनि के शाप से अलर्क नामक कीट की योनि इसने पाई थी।—मौद(पु०) महिष,भैंसा।
दंशक तद्० (पु०) कीट विशेष, वन मक्खी। (पु०) दन्ताघातकारी, डङ्क मारने वाला, सर्प आदि।
दंशन तद्० (पु०) [दश्+ल्युट्] काटना, दन्ताघात करना, दाँत से काटना। [हुआ, खण्डित।
दंशित तद्० (पु०) [दंश्+इत] दन्त द्वारा कटा
दंशी तद्० (वि०) काटने वाला, आक्षेपयुक्त वचन बोलने वाला, द्वेषी। (स्त्री०) छोटा डाँस।
दंष्ट्र तद्० (पु०) [दंश्+ष्ट्र] दन्त, दशन, दाँत।
दंष्ट्रा तद्० (स्त्री०) [दंष्ट्र+आ] विशाल दन्त, —नखविष तद्० (पु०) बिल्ली, कुत्ता, बन्दर, मेढक, किरकटी आदि वे जीवजन्तु जिनके दाँत और नखों में विष है।—युध तद्० (पु०) शूकर।—ल तद्० (पु०) एक राक्षस का नाम। (वि०) बड़े बड़े दाँतों वाला। [हिंसक-जन्तु।
दंष्ट्री तद्० (वि०) बृहद्दन्त विशिष्ट, शूकर, सर्प,
दंस तद्० (पु०) दंश।
दउरना (क्रि०) दौड़ना, भागना।
दक तद्० (पु०) उदक, पानी, जल, रस।
दकार तद्० (पु०) तवर्ग का तीसरा वर्ण " द "।
दक्षिण तद्० (पु०) उत्तर के सामने की दिशा। —ी तद्० (वि०) दक्षिण का, देशी विशेष। (पु०) दक्षिण देश का रहने वाला।
दक्ष तद्० (पु०) निपुण, कुशल,प्रवीण, पटु, दाहिना, (पु०) मुनि विशेष, शिव का बैल, वृक्ष विशेष, अग्नि, शिव, मुरगा, विष्णु, बल, वीर्य, प्रजापति विशेष। यह ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से एक थे। इनका विवाह मनु की कन्या प्रसूति से हुआ था। इनकी १६ कन्याएं थीं। इनमें से तेरह कन्याएं धर्म को, एक अग्नि को, एक

पितृगण को और एक शिव को ब्याही गई थीं। शिव को ब्याही कन्या का नाम सती था। एक समय शिव ने दक्ष का अभ्युत्थान नहीं किया। इससे दक्ष को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने शिव की बड़ी निन्दा की और उन्होंने शिव को समाजच्युत करके उनका यज्ञभाग रोक दिया। कुछ दिनों के बाद दक्ष सब प्रजापतियों के अधिपति बनाये गये, इससे दक्ष का अहङ्कार और भी बढ़ गया। उन्होंने बृहस्पति नामक यज्ञ का अनुष्ठान प्रारम्भ किया, उस यज्ञ में सभी निमन्त्रित किये गये, परन्तु शिव और सती नहीं। पिता के यज्ञ करने का समाचार सुनकर सती ने पिता के घर जाने की शिव की अनुमति चाही, शिव ने अनुमति दे दी। सती पिता के यज्ञ में उपस्थित हुई। सती के समाने दर्पान्ध दक्ष शिव की निन्दा करने लगे। पति की निन्दा न सुनने के लिये सती ने वहीं शरीर त्याग किया। इसकी ख़बर नारद ने शिव तक पहुँचाई। शिव क्रोध से अधीर हो गये। उन्होंने अपनी जटा भूमि पर पटकी। उसमें से वीरभद्र की उत्पत्ति हुई, वीरभद्र शिव के अनुचरों के साथ यज्ञभूमि में पहुँचे और उन्होंने यज्ञ नष्ट भ्रष्ट करके दक्ष का सिर उतार लिया और उसे जला डाला। पुनः ब्रह्मा की प्रार्थना करने पर शिव ने बकरे का सिर दक्ष के कबन्ध में जोड़ने की अनुमति दी। दक्ष जीवित हुए। तब यज्ञ समाप्त करके उन्होंने अनेक प्रकार से महादेव की स्तुति की।

—श्रीमद्भागवत।

—ा तत्० (वि०) कुशलता। (स्त्री०) पृथिवी। —कन्या (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, सती। ऋतु-ध्वंसी तत्० (पु०) महादेव, वीरभद्र। —जा (स्त्री०) उमा, सती, दुर्गा, सत्ताईस नक्षत्र। —आपति (पु०) चन्द्र, शिव, कश्यप, धर्म, अग्नि, दक्ष। —ता (स्त्री०) चतुरता, पटुता, नैपुण्य, निपुणता। —सावर्णि (पु०) नवम मनु। —सुत (पु०) दक्ष प्रजापति के पुत्र प्रचेता। —सुता (स्त्री०) सती, उमा, महादेव जी की स्त्री, भवानी।

दक्खन दे० (पु०) दक्ष शब्द का ब्रजभाषा के नियमानुसार बहुवचन, यथा—देव, देवन लोक, लोकन। नायक विशेष। यथा—

"एक भाँति सब तियन सों जाको होय सनेह,
सो दक्खन मतिराम बरनत है मति गेह।"

—रसराज।

दक्षिण तत्० (वि०) सरल, उदार, अनुकूल, परछन्दानुवर्ती, अन्यचित्तानुवर्ती, चतुर, प्रवीण, अपसव्य, दक्षिण दिशा, दहिनाभाग, चार प्रकार के पतियों में से एक पति, अनेक नायिकाओं को समानभाव से देखने वाला। (देखो दक्खन)।—कालिका (स्त्री०) महाविद्या विशेष, आद्या शक्ति।—केन्द्र बड़वानल, बड़वाग्नि। खण्ड (पु०) विन्ध्याचल के दक्षिण का देश।—गोल तत्० (पु०) वे राशियाँ (तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन) जो विषुवत् रेखा के दक्षिण पड़ती है।—ता (स्त्री०) अनुकूलता, सरलता सारल्य।—पथ दक्खिन दिशा। —पूर्वा (स्त्री०) दक्खिन और पूरब का कोन।—पश्चिमा (स्त्री०) दक्षिण और पश्चिम का कोन।—हस्त (पु०) दाहिना हाथ।—ाग्नि (पु०) [दक्षिण + अग्नि] यज्ञाग्निविशेष।—ाचल (पु०) [दक्षिण+अचल] मलय पर्वत, दक्षिण दिशा का पर्वत विशेष।—ापथ (पु०) दक्षिण भारत के लिये मार्ग।—ापरा तत्० (पु०) नैर्ऋत कोण। —प्रवण तत्० (पु०) उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की तरफ़ अधिक नीचा या ढालुवाँ स्थान। —ावर्त्त (पु०) [दक्षिण+आवर्त्त] शङ्खविशेष, दाहिनी ओर मुड़ा हुआ शङ्ख, बहुमूल्य शङ्ख, मङ्गलसूचक अग्नि।—ाभिमुख (वि०) [दक्षिण+अभिमुख] दक्षिण ओर का रुख़।—ामुख (वि०) दक्षिणास्य, दक्षिण दिशा में ऊनमुख।—ामूर्त्ति तत्० (पु०) शिव की तान्त्रिक मूर्ति विशेष। —ावह तत्० (पु०) दक्षिण से आनेवाला वायु। —ाशा (स्त्री०) दक्षिण दिशा।

दक्षिणा तत्० (स्त्री०) दक्षिण दिशा, धर्म कर्म का पारितोषिक, भेंट, पूजा। कर्म की पूर्ति के लिये दान, नायिका विशेष।—र्ह (वि०) [दक्षिण +अर्ह] दक्षिणा योग्य, दक्षिणा के अधिकारी।

दक्षिणायन तद्० (पु०) सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन, कर्क की संक्रान्ति से मकर की संक्रान्ति तक का काल, जब सूर्य की दक्षिणगति रहती है।

दक्षिणी तद्० (स्त्री०) दक्षिण देश की भाषा। (पु०) दक्षिणदेश वासी। (वि०) दक्षिणदेश सम्बन्धी।

दक्षिणीय तद्० (वि०) दक्षिण देश का मनुष्य, दक्षिण देशवासी, दान योग्य, दान पाने का अधिकारी।

दक्षिन तद्० (पु०) दक्षिण, दक्षिण दिशा।

दक्षिनी तद्० (वि०) दक्षिण देशवासी, दक्षिणदेश का।

दख़ल दे० (पु०) अधिकार, सत्ता, अधिकृत।—दिहानी (स्त्री०) अधिकार दिलाना।—नामा (पु०) वह दस्तावेज़ जिसमें किसी को किसी वस्तु का कब्ज़ा दिलाने की आज्ञा हो

दखिन दे० (पु०) दक्षिण दिशा।
"देख दखिन दिसि हय हिहिनाहीं।"
—तुलसीदास।

दखिनहा दे० (वि०) दक्षिण का।

दखिना दे० (पु०) दक्षिण से आने वाला पवन।

दखिनी तद्० (वि०) दक्षिण देशवासी, दक्षिण देश सम्बन्धी, दक्षिणी सुपारी, चिकनी सुपारी।

दख़ीलकार (पु०) अधिकार जमाये हुए, अधिकार रखने वाला।—कार (पु०) वह जोता जो किसी खेत पर १२ वर्ष तक अविच्छिन्न अधिकार किये हो।

दगड़ दे० (पु०) धौंसा, डंका, नगारा, दुन्दुभी।

दगड़ना दे० (क्रि०) अविश्वास करना, अप्रत्यय करना। [दगना।

दगड़ा दे० (पु०) डगर, मार्ग, राह, रास्ता, पथ।

दगड़ाना दे० (क्रि०) डगराना, दौड़ाना, भगाना, चलाना। [(वि०) चमकीला।

दगदगा दे० (पु०) डर, सन्देह, एक प्रकार की कंदील,

दगदगाना दे० (क्रि०) चमचमाना, चमकना, प्रकाशित होना, झकाझक करना।

दगदगाहट दे० (स्त्री०) चमक, चमत्कार, प्रकाश।

दगधना दे० (क्रि०) जलना, छेदना, सताना, दुःख देना, मानसिक कष्ट पहुँचाना।

दगना (क्रि०) छूटना, (बन्दूक या तोप का) चलना जलना, झुलस जाना।

दगरा दे० (पु०) विलम्ब, देरी।

दगाजफ़सल दे० (पु०) धोखा, छल, फरेब।

दगला दे० (पु०) बड़ा कुरता, चोंगा, रुई भरा बड़ा अंगरखा।

दगवाना (क्रि०) दागने का काम दूसरे से लेना।

दगहा दे० (वि०) दाग वाला, जिसने किसी मृतक को जलाया हो, जो दागा हुआ हो।

दगा दे० (स्त्री०) छल, कपट, धोखा।—बाज़ दे० (वि०) छली, कपटी।—बाज़ी दे० (स्त्री०) छल, कपट, धोखा। [कपटी।

दगैल, दगैला दे० (वि०) दागदार। (पु०) छली,

दग्ध तद्० (वि०) [दह्+क्त] भस्मीकृत, भस्म किया हुआ, जलाया हुआ, ज्वलित, अतितापित।—काक (पु०) डोमकाक, दुष्कौआ।—योनि (वि०) नष्टबीज, मूलध्वंस, उत्पाटन, शक्तिहीन।—रथ (पु०) गन्धर्व विशेष, इनका नाम था अङ्गारपर्ण, अनेक रत्नों का एक रथ इनके पास था इसी कारण इनको लोग चित्ररथ भी कहते थे। जिस समय युधिष्ठिर अपने भाइयों को लेकर बनवास करते थे, उसी समय कारण विशेष से अर्जुन और चित्ररथ में घोर युद्ध हुआ, चित्ररथ हार गये, इसी कारण दुःखित होकर उन्होंने अपना रथ जला डाला, तभी से उनको दग्धरथ कहने लगे।

दग्धा तद्० (स्त्री०) अमङ्गलतिथि, तिथि विशेष, वार विशेष, सूर्य के अस्त होने की दिशा।

दग्धाक्षर (पु०) पिङ्गल शास्त्र में झ, ह, र, भ, और ष को दग्धाक्षर माना है। छन्द के आरम्भ में इन अक्षरों का रखना पिङ्गल शास्त्र से बचाते हैं

दग्धिका तद्० (स्त्री०) दग्ध अन्न, जला भात, भुँजा अन्न, भूष्टधान्य।

दग्धोदर तद्० (वि०) [दग्ध+उदर] भूखार्त, क्षुधा पीड़ित। (पु०) भोजन की अभिलाषा, भोजन वाञ्छा।

दङ्गल दे० (पु०) एक प्रकार की चौकी, काष्ठनिर्मित आसन विशेष, मल्लयुद्ध, बराबरी का युद्ध, पक्ष-मल्लयुद्ध।

दङ्गा दे० (पु०) झगड़ा, शोला, हुल्लड़, बखेड़ा।

दक्षैत दे॰ (वि॰) दक्षा करने वाला, भगवान्।
दघ तद्॰ (पु॰) त्याग, हिंसा, नाश।
दचक दे॰ (स्त्री॰) ठोकर, दबाव।
दचकना (क्रि॰) ठोकर खाना या लगना।
दचना (क्रि॰) गिरना, पड़ना।
दच्छ तद्॰ (वि॰) दक्ष, निपुण, कुशल।—कुमारी तद्॰ (स्त्री॰) सती, दक्ष प्रजापति की कन्या। —सुता तद्॰ (स्त्री॰) दक्ष की कन्या, सती।
दच्छिन तद्॰ (स्त्री॰) एक दिशा का नाम, उत्तर के सामने की दिशा का नाम। (पु॰) अनुकूल, सीधा, दहिना।
दच्छिना तद्॰ (स्त्री॰) दक्षिणा, दान विशेष।
दटना दे॰ (क्रि॰) डटना, धीरता के साथ सामना करना, चढ़ना, खड़ा रहना पीछे पैर नहीं देना।
दड़कना दे॰ (क्रि॰) दरकना, फटना, चिरना।
दड़ेरा दे॰ (पु॰) प्रचण्ड झड़, भारी वृष्टि, धड़ा, दरेरा।
दड़ोकना (क्रि॰) गरजना, दहाड़ना।
ददमुंडा दे॰ (वि॰) बिना दाढ़ी का, दाढ़ी रहित, जिसकी दाढ़ी मूड़ दी गई।
दढ़ियल दे॰ (पु॰) लम्बी दाढ़ी वाला।
दण्ड तद्॰ (पु॰) [दण्ड+अच्] साठ पल परिमित काल, घड़ी, लाठी, यष्टि, दमन, निग्रह, शासन, अपराधी का उसके अपराध के अनुसार शरीर या अर्थ सम्बन्धी सज़ा, ऊर्ध्वस्थिति, संन्यास धर्म, सैन्य, व्यूहभेद शत्रु दमन करने वाली राजशक्ति, व्यूह रचना विशेष, दण्डव्यूह, प्रचण्ड, दण्ड करण, कोन, कोण, मानविशेष, भूमि नापने की लाठी जिसको लाठी कहते हैं। यम, यमराज, अभिमान, ग्रह भेद, इक्ष्वाकु राजा का पुत्र, प्रणाम, साष्टांग। [का नाम।
दण्डक तद्॰ (पु॰) वन विशेष, छन्द विशेष, एक राजा
दण्डकारण्य तद्॰ (पु॰) दण्डक नाम राजा का देश, शुक्राचार्य किसी कारणवश राजा से रुष्ट हो गये और उन्होंने उसके देश को उजड़ होने का शाप दिया। तभी से यह देश वन हो गया और उसका दण्डकारण्य नाम पड़ा। यह हिन्दुस्तान के दक्षिण भाग में है। वनवास का कुछ समय श्रीरामचन्द्रजी ने यहीं बिताया था।
दण्डदास तद्॰ (पु॰) दण्ड भरनेवाला, जुरमाने का रुपया नौकरी करके चुकाने वाला।
दण्डधर तद्॰ (पु॰) यमराज, धर्मराज, पुण्य पाप का फलदाता, कुलाल, कुम्हार, लगुड़धारी, दण्ड धारण करने वाला, शासनकर्त्ता, दण्डी, संन्यासी, द्वारपाल, दरवान, सिपाही। [विग्रह, सज़ा, दण्ड।
दण्डन तद्॰ (पु॰) [दण्ड्+अनट्] अनुशासन,
दण्डनायक तद्॰ (पु॰) सेनानी, सेनापति, चतुरङ्गिणी सेना का सञ्चालक, दण्डदाता, अपराध विचार कर्त्ता, सूर्य के एक नायक का नाम।
दण्डनीति तद्॰ (स्त्री॰) अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, दण्डव्यवस्था, अनुशासन।
दण्डनीय तद्॰ (वि॰) [दण्ड+अनीय] शास्ति देने योग्य, सज़ा देने योग्य। [बान, चौकीदार।
दण्डपांशुल तद्॰ (पु॰) द्वारपाल, द्वाररक्षक, दर-
दण्डपाणि तद्॰ (पु॰) शिव के एक गण का नाम, दण्डधारी, यमराज। [चढ़ाने वाला, जल्लाद।
दण्डपाशक तद्॰ (पु॰) वध कर्माधिकारी, फाँसी
दण्डप्रणाम तद्॰ (पु॰) सादर अभिवादन।
दण्डप्रणेता तद्॰ (पु॰) दण्डकर्त्ता, दण्डदाता।
दण्डमान तद्॰ (वि॰) दण्ड्यमान, दण्डित, प्राप्त-दण्ड सजा पाया हुआ।
दण्डवत् तद्॰ (स्त्री॰) दण्ड के समान पतित होकर प्रणाम, सर्वाङ्ग पातपूर्वक प्रणाम, साष्टांग प्रणाम।
दण्डयोग्य तद्॰ (वि॰) दण्डार्ह, दण्डनीय, दण्ड पाने के योग्य, अपराधी। [मृगचर्म।
दण्डाजिन तद्॰ (पु॰) [दण्ड+अजिन] दण्ड और
दण्डादण्डी तद्॰ (अ॰) लाठी की लड़ाई, सोटा-सोटी, लाठा लाठी। [सीधा खड़ा हुआ।
दण्डायमान तद्॰ (वि॰) खड़ा हुआ, दण्ड के समान
दण्डाश्रम तद्॰ (पु॰) संन्यास धर्म, दण्डी का आश्रम, सन्यासी का आचार। [संन्यासी, दण्डी।
दण्डाश्रमी तद्॰ (पु॰) संसार त्यागी, विरागी,
दण्डित तद्॰ (वि॰) [दण्ड्+इत] दण्डप्राप्त, शासित, सजायाफ्ता।
दण्डी तद्॰ (वि॰) दण्डयुक्त, लठैत, लठैत। (पु॰) चतुर्थाश्रमी, यती, योगी, संन्यासी, दण्डधारी, संन्यासी, सूर्य के एक पारर्षद का नाम,

धृतराष्ट्र का एक पुत्र, दौने का वृक्ष, शिव। संस्कृत के एक कवि का नाम। यह बड़े प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। यह आलङ्कारिक भी थे। इनके बनाये ग्रन्थों का संस्कृत साहित्य में बड़ा सम्मान है। काव्यादर्श, दशकुमारचरित, छन्दोविचिति और कलापरिच्छेद ये चार ग्रन्थ इनके बनाये अभी तक मालूम हुए हैं। काव्यादर्श और दशकुमारचरित प्रसिद्ध हो हैं परन्तु छन्दोविचिति या कलापरिच्छेद अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं। इनके स्थान का कुछ ठीक ठिकाना नहीं मिलता। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कहते हैं कि ये सन्यासी थे। संन्यासी कहीं एक जगह पर बस कर पहले नहीं रहा करते थे। संन्यासियों को दण्डी भी कहते हैं। अतएव विद्यासागर का कहना ठीक मालूम होता है, एक तो संस्कृत कवियों के समय निरूपण में यों ही झमेला होता है। उनमें भी इन रमते बाबा का समय निरूपण करना बड़ा ही कठिन है। तथापि ऐसा अनुमान किया जाता है कि मृच्छकटिककार शूद्रक से ये प्राचीन नहीं थे। इनकी लेखशैली के अनुसार इन्हें कालिदास के कुछ पहले का मान सकते हैं। अतएव ६ वीं सदी का अन्त भाग यदि इनका समय माना जाय तो बहुत से झगड़े निपट जाँयगे। इनको दण्डिन् भी कहते हैं।

दण्ड्य तत्० (पु०) [दण्ड्+य] दण्डाई, दण्डयोग्य, दण्डनीय।

दतना दे० (क्रि०) डाटना, सामना करना।

दतवन दे० (स्त्री०) दतून, दन्तधावन, दाँत साफ़ करने की लकड़ी।

दतारा दे० (वि०) दाँतों वाला, दँतैला।

दतिया दे० (स्त्री०) छोटा दाँत। (पु०) पक्षी तीतर, नील मोर, बुन्देलखण्ड की एक राजधानी।

दतुअन दे० (स्त्री०) दतुवन।

दतुवन दे० (स्त्री०) दाँतों को साफ़ करने के लिये नीम व बबूल आदि की लकड़ी की कूची।

दतून दे० (स्त्री०) दतुवन मुखारी।

दतूना दे० (पु०) पौधा विशेष।

दतूली दे० (स्त्री०) छोटे छोटे दाँत, बच्चों के दाँत।

दतौन दे० (स्त्री०) दतुन, दन्तधावन।

दत्त तत्० (वि०) [दा+क्त] दिया गया, दिया हुआ। (पु०) दान, राजा विशेष, भगवान् का एक अवतार, दत्तात्रेय अवतार (देखो दत्तात्रेय) बङ्गाली कायस्थों की उपाधि। द्वादश विध पुत्र के अन्तर्गत एक पुत्र, जिसे दत्तपुत्र कहते हैं। आपत्ति काल में सङ्कल्पपूर्वक जिस पुत्र को स्नेही और अपने समान व्यक्ति को दे वह पुत्र। वैश्यों की उपाधि, यथा—चारुदत्त, अर्थदत्त आदि।—गुप्त (पु०) अनसूया और अत्रि के पुत्र (देखो दत्तात्रेय)।

दत्तकपुत्र तत्० (पु०) दत्तक, द्वादश विध पुत्रान्तर्गत पुत्र विशेष, पोसपूत, गोद लिया हुआ पुत्र, मुतबन्ना। [लगाया हो।

दत्त-चित्त तत्० (वि०) जिसने भली भाँति मन

दत्ता तत्० (स्त्री०) [दत्त+आ] विवाहिता कन्या, पात्रसात्कृता वर को दी हुई कन्या।—त्मा (वि०) [दत्त+आत्मा] स्वयं दत्तपुत्र, जो दूसरे का पुत्र होने के लिये स्वयं अपने को दान करे। अनुगत, जिसने अपने को समर्पित कर दिया है।—त्रेय (पु०) [दत्त+आत्रेय] दत्तनामक अत्रिपुत्र। भगवान् विष्णु अत्रिपत्नी अनसूया के गर्भ से दत्तात्रेय के रूप में उत्पन्न हुए थे। कुष्ठियधर्मी कुष्ठ रोगी एक ब्राह्मण प्रतिष्ठानपुर (वर्तमान झूँसी) में रहता था। उसकी पतिव्रता स्त्री अनेक प्रकारों से उसकी सेवा शुश्रूषा किया करती थी, एक दिन वह ब्राह्मण किसी वेश्या पर अनुरक्त हुआ और उसके घर ले चलने के लिये अपनी स्त्री से कहा। स्त्री उसको कन्धे पर बिठा कर वेश्या के घर ले चली। रात अँधेरी थी, जाते हुए कुष्ठी ब्राह्मण का पैर ऋषि माण्डव्य नामक ऋषि की देह में लगा। इससे क्रुद्ध होकर मुनि ने शाप दिया कि जिसका पैर मेरे लगा है वह सूर्योदय होते ही मर जायगा। मुनि का शाप सुनकर वह स्त्री बहुत चिन्तित हुई, पुनः वह दृढ़तापूर्वक बोली "अब सूर्योदय नहीं होगा" पतिव्रता का कहना झूठा नहीं हो सकता रात बीत गई, परन्तु सूर्य के दर्शन नहीं हुए। इससे देवता बड़े चिन्तित हुए और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये, बहुत विचार के अनन्तर देवताओं ने यह स्थिर किया कि पतिव्रता को शान्त करना

पतिव्रता ही का काम है। अतएव देवता अनसूया की शरण गये। अनसूया उस पतिव्रता स्त्री के पास गई और उन्होंने कहा कि सूर्योदय होने दो, तुम्हारा पति मर जायगा तो उसे मैं जिला दूँगी। उस पतिव्रता स्त्री ने कहा कि अब सूर्योदय हो, उधर सूर्योदय हुआ, इधर उसका पति मर गया, अनसूया ने उसके पति को जिला दिया। अनसूया से वर माँगने के लिये देवों ने कहा, अनसूया ने कहा, मुझे कुछ नहीं चाहिये, ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर हमारे पुत्र हों। देवताओं ने यही वर दिया। उन्हीं त्रिदेवों का अवतार दत्तात्रेय हैं। इन्होंने चौबीस गुरुओं से शिक्षा ग्रहण की थी।

—दत्त (वि०) [दत्त+आदत्त] दत्त अपहृत, दिया हुआ लेना।—दर (पु०) [दत्त+आदर] सत्कृत, सेवित, सेव्यमान।—नयकर्म (पु०) दान करके पुनः नहीं लेना।—पहृत (पु०) दान करके छीन लेना, देकर ले लेना।—प्रदानिक (पु०) [दत्त+अप्रदानिक] अष्टादश विवाद के अन्तर्गत विवाद विशेष, दिये हुए ऋण का शोध कराने के लिये विवाद।—वधान (पु०) [दत्त +अवधान] कृतावधान, अभिनिविष्ट, आसक्त, आसक्तचित्त।

दत्त्रिम तत्० (पु०) दत्तक पुत्र, दिया हुआ पुत्र, गृहीत पुत्र, पोसपुत। [त्याग, देना।

ददन तत्० (पु०) [दद्+अनट्] दान, वितरण,

ददरा दे० (पु०) छना, साफी।

ददरीक्षेत्र दे० (पु०) भृगुमुनि का स्थान, जहाँ कार्तिक की पूर्णिमा को मेला लगता है। यह स्थान बलिया के पास है।

ददलाना दे० (क्रि०) डाँटना, साँसना, भर्त्सन करना।

ददा दे० (पु०) दादा, पितामह।

ददिऔरा दे० (पु०) ददिहाल या दादी का मैका।

ददियाल दे० (पु०) पुरखे, कुल, घराना, वंश, दादी का घर, दादी का मैका।

ददिया-ससुर दे० (पु०) ससुर का बाप।

ददिया सास दे० (स्त्री०) ददिया ससुर की स्त्री।

ददोड़ा, ददोरा दे० (पु०) फोड़ा, गुमड़ा, फुलाव, घाव, चीटी आदि के काटने का चिन्ह।

दद्रु तत्० (स्त्री०) दाद, खजुली।—घ्न (पु०) चक्रमर्दक, चकवड़, एक पौधे का नाम।—नाशिनी (स्त्री०) तैलिनी कीट, दद्रु नाशक औषध।—रोगी (वि०) दद्रु रोग विशिष्ट, दद्रु रोगयुक्त।

दद्रु तत्० (पु०) दादरोग।

दधि तत्० (पु०) दही, जमाया हुआ दूध।—कांदो (पु०) पर्व विशेष का व्यवहार, जन्माष्टमी या रामनवमी के उपलक्ष में दही और हलदी मिला कर डालना।—मुख (पु०) शिशु, बालक, एक वानर का नाम जो रामसेना का योद्धा था।—बल (पु०) सुग्रीव के एक पुत्र का नाम।—रिपु (पु०) अगस्त्य मुनि।—सार (पु०) मक्खन, नवनीत, घी, घृत।—सुत (पु०) चन्द्रमा, कमल, मुक्ता, मोती, जालन्धर दैत्य, विष, मक्खन। सुता—तत्० (स्त्री०) सीप।—स्नेह तत्० (पु०) दही की मलाई।—स्वेद (पु०) तक्र, मट्ठा, छाछ।

दधीच या दधीचि तत्० (पु०) मुनि विशेष, महाभारत पुराण में यह शुक्राचार्य के पुत्र लिखे गये हैं। महर्षि अथर्वा के औरस से कर्दम प्रजापति की कन्या शान्ति के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे, यह बात ऋग्वेद में लिखी हुई है। कहते हैं कि जिस समय दक्ष हरिद्वार में शिवविहीन यज्ञ कर रहे थे, उस समय इन्होंने शिव को निमन्त्रित करने के लिये दक्ष को बहुत समझाया, परन्तु दक्ष ने इनकी एक न सुनी इसी कारण यह असन्तुष्ट होकर दक्ष के यज्ञ से चले गये। जिस समय वृत्रासुर के आक्रमण से देवता दुःखित थे, उस समय उन्हें मालूम हुआ था कि दधीचि मुनि की हड्डी से यदि वज्र बनाया जाय तो उससे वृत्रासुर मारा जा सकता है। यह जान कर इन्द्र दधीचि के पास उनकी हड्डी माँगने के लिये गये। इसके पहले इन्द्र ने दधीचि का उपकार किया था। महर्षि दधीचि तपस्या कर रहे थे, उनकी कठोर तपस्या की बात सुनकर इन्द्र ने अलम्बुषा नाम की अप्सरा को तपस्याभङ्ग करने के लिये भेजा था। अलम्बुषा को देखकर महर्षि का वीर्यपात हुआ। उसीसे सारस्वत नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इन्द्र के उपस्थित होने पर उदार-

त्रेता दधीचि उनके पूर्व अपकार को भूल गये और उन्होंने अपना शरीर अर्पण कर दिया। उनकी हड्डी से वज्र बनाया गया और उससे वृत्रासुर मारा गया। दधीचि का नाम प्रसिद्ध दानवीरों में विख्यात है।

दनदनाना (क्रि॰) दनदन शब्द करना, आनन्द मनाना।

दनादन दे॰ (क्रि॰ वि॰) दनदन शब्द सहित, जैसे दनादन तोपें दगने लगीं।

दनु तत्॰ (स्त्री॰) प्रजापति दक्ष की कन्या और कश्यप की स्त्री, इसी के गर्भ से वातापी, नरक, वृषपर्वा, निकुम्भ, प्रलम्ब, वनायु, प्रभृति चालीस दानवों की उत्पत्ति हुई थी।—ज (पु॰) दनु से उत्पन्न असुर, दानव, दैत्य।—जद्विष् (पु॰) देवता, सुर, अमर, देव।—जारि (पु॰) देवता, देव, विष्णु।—राय (पु॰) हिरण्यकश्यप।

दन्त तत्॰ (पु॰) दाँत, दशन, रदन, ३२ की संख्या, कुंज, पहाड़ की चोटी।—घात (पु॰) [दन्त+आघात] दाँतों का आघात, दशनाघात, हाथी के दाँतों की टक्कर।—वल (पु॰) हाथी, करी, गज, हस्ती।—युध (पु॰) [दन्त+आयुध] शूकर, वराह।—कथा तत्॰ (स्त्री॰) सुनी सुनाई बात, जनश्रुति, कल्पित बात।—काष्ठ (पु॰) दन्तधावन, दाँत साफ करने की लकड़ी, दातुन।—च्छद (पु॰) ओठ, ओंठ, अधर, अधरोष्ठ।—धावन (पु॰) दन्तशुद्धि, दन्तमार्जन, दन्तकाष्ठ।—धानी (स्त्री॰) धनिया।—पत्र (पु॰) कुण्डल, कर्णालङ्कार विशेष, कान का एक गहना, बाली।—पिष्ट (वि॰) कूटस्थर्य, चर्वित, चबाया हुआ।—बीज (पु॰) दाड़िम, अनार नामक फल।—वेष्टन (पु॰) दन्तमांस, मसूढ़ा, मस्कुर।—शठ (पु॰) कपित्थ, माँड़ नाम की औषधि, जंभीरी।—शूल (पु॰) दन्तवेदना, दाँतों की पीड़ा।

दन्तवक्र तत्॰ (पु॰) शिशुपाल का भाई, विष्णुरूपी श्रीकृष्ण से मारे जाने पर यह वैकुण्ठगामी हुआ। यही त्रेता में कुम्भकर्ण नामक राक्षस और सत्ययुग में हिरण्यकशिपु नामक दैत्य हुआ था [गया।

दन्तालिका तत्॰ (स्त्री॰) लगाम, पगहा, मगाम,

दन्तिका तत्॰ (स्त्री॰) वृक्षविशेष, बड़ी सतावर।

दन्तिनी तत्॰ (स्त्री॰) हस्तिनी, हथिनी।

दन्ती तत्॰ (पु॰) हाथी, गज, करी। (वि॰) दंतैल, दंतीली, दंष्ट्री। (स्त्री॰) स्वनामख्यात वृक्ष।—फल (पु॰) पिस्ता, मेवा विशेष।

दन्तीला दे॰ (वि॰) दाँतवाला, दन्तैल, जिसके बड़े बड़े दाँत हों, शूकर, वृक, सुअर, भेड़िया।

दन्तुर तत्॰ (पु॰) उन्नत दन्तयुक्त, बृहद्दन्त विशिष्ट, जिसके दाँत उभड़ आगत हों।—च्छद (पु॰) बीजपूर, अनार।

दन्तुरिया दे॰ (स्त्री॰) बच्चों के छोटे दाँत।

दन्तैल / दन्तेल } दे॰ (वि॰) बड़े दाँतवाला, लम्बे दाँतों का।

दन्तोलूखलिक तत्॰ (पु॰) वे संन्यासीजो ओखली में कूटा अन्न ग्रहण नहीं करते।

दन्त्योष्ठ्य तत्॰ (वि॰) वे वर्ण जिनका उच्चारण दाँत और ओठ से हो, "व" अक्षर।

दन्त्य तत्॰ (वि॰) दाँतों की सहायता से उच्चारण किये गये वर्ण, ट, थ, द, ध, न, ल और स।

दन्दह्यमान (पु॰) दहकता हुआ।

दन्दनाना दे॰ (क्रि॰) निर्भय होकर काम करना, निधड़क बैठना, निडर होकर बैठना।

दप्र दे॰ (पु॰) बन्दूक तोप आदि के छूटने का शब्द।

दपट या दपेट (स्त्री॰) दौड़, धावा, सपेट, झपट, घुड़की, डपट, डाँट, धमकी।

दपटना दे॰ (क्रि॰) झपटना, दौड़ना, सपेट लगाना, डाँटना, घुड़कना।

दपदपाना दे॰ (क्रि॰) दप दप करना, चमकना, दीप्त होना, शोभित होना।

दफ्ती (स्त्री॰) पुट्ठा, जिल्द, गाता।

दफन (पु॰) मृतक को ज़मीन में गाड़ने की क्रिया।

दफनाना (क्रि॰) मुर्दा गाड़ना।

दफा दे॰ (स्त्री॰) बेर, बार, क़ानून की धारा।

दफ्तर दे॰ (पु॰) कार्यालय।—री दे॰ (पु॰) जिल्दसाज़, किताबों की जिल्द बाँधने वाला।

दबक दे॰ (स्त्री॰) सिकुड़न।

दबकना दे॰ (क्रि॰) चुप हो रहना, छिप जाना, छिप रहना, झुकना, छिपाना, घात में बैठना।

दबकाना दे० (क्रि०) छिपाना, लुकाना, ढापना, डाँटना, धमकाना। [छिपाव।

दबकी दे० (स्त्री०) दाँव, छिपकी, घात, लुकाव,

दबकीला या दबकैल दे० (वि०) दबा हुआ, परतन्त्र।

दबङ्ग या दबङ्गा दे० (वि०) प्रभाववान्, कुशील, कुबड़ा।

दबदबा दे० (पु०) आतङ्क, रोब, प्रताप।

दबना दे० (क्रि०) नम्र होना, नवना, जलाना, अधीन होना, डरना, छिपना, दबकना।

दबवाना (क्रि०) दूसरे से दबाने का काम कराना।

दबा दे० (पु०) दाँव, पेच, घात। (स्त्री०) औषधि, औषधं। [निकालने का काम।

दबाई (स्त्री०) ओषध, मंडाई, डंठल से अनाज के दाने

दबाऊ (गु०) दब्बू, दबाने वाला, गाड़ी या इक्का जिसके अगले भाग में पिछले भाग की अपेक्षा अधिक बोझ हो। [झुकाना, थामना।

दबाना दे० (क्रि०) दाबना,, ढकना, छिपाना,

दबामारना दे० (क्रि०) कुचल कर मार डालना, पराधीन को दुःख देना। [करना, छीन लेना।

दबा लेना दे० (क्रि०) अपने अधीन करना, वश

दबाव दे० (पु०) प्रभाव, दाब, चाप, पराक्रम, अधीनता, अधिकार।—मानना (क्रि०) डरना, सहमना, धाक मानना। [दार, रोबीला।

दबीला दे० (वि०) औषध विशेष, प्रभाववान्, रोब-

दबेपाँव दे० (वा०) हौले हौले, धीरे धीरे, शनैः शनैः, धीमे धीमे। [वश्य।

दबैल दे० (वि०) दबा हुआ, अधीन, परतन्त्र, प्रजा,

दबोचना दे० (क्रि०) दबाना, दबाव डालना, पानी में दबोचा देना। [पत्थर।

दबोस दे० (क्रि०) एक प्रकार का पत्थर, चकमक

दबोसना दे० (क्रि०) मद पीना, घूँट घूँट मदिरा पीना।

दभ्र तत्० (वि०) थोड़ा, कम, अल्प।

दम तत्० (पु०) शान्ति, दण्ड, शासन, तपस्या के क्लेश सहन करने की शक्ति, धर्माङ्ग विशेष, दान्ति, दमन, बाह्य इन्द्रियों का निग्रह, इन्द्रियों का दबाना, इन्द्रियों को विषयों से रोकना। गर्व, अहङ्कार, दम्भ, दर्प, कीचड़, बुद्ध का एक नाम, दमयन्ती के एक भ्राता का नाम, विष्णु, दबाव। दे० (पु०) साँस, बल, प्राण, जीवनी शक्ति (जैसे अब इस कपड़े में कुछ भी दम नहीं रहा।) व्यक्तित्व। (जैसे आप ही के दम का सारा खेल है।) धोखा, धार।—कर्त्ता (पु०) शासक, अधिकारी।—घोष (पु०) चन्द्रवंशी राजा विशेष, यह चेदि देश के अधिपति थे। यदुवंशी वसुदेव की भगिनी सुप्रभा दमघोष को ब्याही गई थी, सुप्रभा के गर्भ से शिशुपाल और दन्तवक्र दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। वसुदेव की जेठी बहिन कुन्ती के गर्भ से युधिष्ठिर भीम आदि उत्पन्न हुए थे। श्रीकृष्ण वसुदेव के पुत्र थे। युधिष्ठिर और शिशुपाल श्रीकृष्ण के बूआ के पुत्र थे। [वाला योगी, मौजी।

दमक दे० (पु०) चमक, झलक, प्रकाश दमन करने

दमकना दे० (क्रि०) चमकना, झलकना।

दमकला दे० (पु०) एक प्रकार की पिचकारी, वह अँगीठी जिसमें कोयला जले। [रुपया पैसा।

दमड़ा दे० (पु०) सम्पत्ति, धन, दौलत, ऋद्धि,

दमड़ी दे० (स्त्री०) पैसे का आठवाँ भाग, चिलचिल चिड़िया।—के तीन तीन होना (वा०) उजड़ना, नष्ट होना, सस्ता होना, व्यर्थ होना।

दमदमा दे० (पु०) मोरचा, धुस। [प्रकाशित होना।

दमदमाना दे० (क्रि०) दमदम करना, अतिशय

दमदार दे० (वि०) दृढ़, मज़बूत, जानदार, चोखा, तीव्र।

दमन तत्० (पु०) [दम्+अनट्] वशीकरण, दण्ड, शासन, निग्रहकरण, पुष्पविशेष, दौना नामक पौधा, विष्णु, शिव, एक ऋषि का नाम, एक राक्षस का नाम, कुन्द। राजपुत्र विशेष, यह विदर्भराज भीम का पुत्र था। सन्तान न होने के कारण बहुत दिनों तक भीम ने बहुत कष्ट से समय बिताया। एक समय विदर्भराज के यहाँ दमन नामक महर्षि अतिथि होकर गये, उनके वर से विदर्भ राज के तीन पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई, राजा ने उन्हीं ऋषि के नामानुसार ही अपने पुत्र और कन्या का नामकरण

किया, तीनों पुत्रों का नाम, दम दन्त' और दमन तथा कन्या का नाम दमयन्ती हुआ।

दमनक तत्० (पु०) दौना, एक पौधे का नाम। (वि०) दमनशील।

दमनी तत्० (स्त्री०) सङ्कोच, लज्जा।

दमनीय तत्० (वि०) दमन करने योग्य, ताड़ने योग्य, ताड़न करने के उपयुक्त, तोड़ने योग्य, यथा—

दोहाः—

" कुँवरि मनोहर विजय बड़ि,
कीरति अति कमनीय।
पावनहार विरंचि जनु,
रच्यो न धनु दमनीय॥"

—रामायण।

दमनू दे० (पु०) दबाने वाला, दमन करने वाला।

दमबाज दे० (वि०) फुसलाने वाला।—ी दे० (स्त्री०) धोखा, छल, बहानाबाज़ी।

दमयन्ती तत्० (स्त्री०) नल राजा की पत्नी, विदर्भाधीश्वर भीम की कन्या, महर्षि दमन के वर से राजा भीम को यह कन्यारत्न प्राप्त हुआ था, अपनी अपूर्व सुन्दरी कन्या का विवाह करने के अर्थ राजा भीम ने एक स्वयम्बर सभा रची, उसमें देवता पर्यन्त निमन्त्रित किये गये। दमयन्ती ने हंस के मुँह से नल की प्रशंसा सुनी थी। दमयन्ती ने देवताओं को छोड़कर नल का ही वरण किया। कलि और शनि भी इस स्वयम्बर सभा में आ रहे थे, परन्तु रास्ते ही में लौटे हुए देवों से दमयन्ती द्वारा नल का वरण किया जाना उन्होंने सुना। इससे दोनों बड़े अप्रसन्न हुए और वे दमयन्ती को कष्ट देने के लिये समय ढूँढ़ने लगे। ११ वर्ष के बाद कलि नल के शरीर में प्रविष्ट हुआ। नल राजच्युत होकर दमयन्ती के साथ वन वन मारे फिरे, इधर उनका भाई निषध देश का राजा बना, इसी प्रकार बहुत दिन नल के कष्ट सहने के अनन्तर कलि स्वयं हार कर उनके शरीर से निकल गया नल और दमयन्ती पुनः निषध देश के राजसिंहासन पर विराजे।

दमरख, दमरस्त दे० (स्त्री०) धमरख, कमरख।

दमा दे० (पु०) साँस का प्रसिद्ध रोग, श्वास रोग।

दमाद दे० (पु०) कन्या का पति, जमाता।

दमादम (क्रि० वि०) लगातार।

दमाना दे० (क्रि०) नवाना, नम्र करना, निहुराना, लचकाना।

दमामा दे० (पु०) धौंसा, नगाड़ा, दुन्दुभि, डंका।

दमारि तत्० (पु०) वन की आग।

दमावति दे० (स्त्री०) दमयन्ती।

"राजा नल कहँ जैसे दमावति।"

—जायसी।

दमी (पु०) दमगीर, नैचा जिससे दम लगायी जाती है। [स्त्री पुरुष, जोरू खसम, जोड़ा।

दम्पति, दम्पती तत्० (पु०) जायापति, पतिपत्नी,

दम्भ तत्० (पु०) अहङ्कार, गर्व, कपट, दुष्टता, पाप, दिखाऊ धर्माचरण, पाखण्ड लोकप्रतारणार्थ धर्माचरण।

दम्भी तत्० (वि०) अहङ्कारी, पाखण्डी, लोगों को ठगने के लिये धर्माचरण, स्वार्थ साधनार्थ धार्मिक कपटाचारी, बगुलाभगत।

दम्भोक्ति तत्० (स्त्री०) [दम्भ+उक्ति] गर्वोक्ति, अहङ्कारयुक्त वचन, गरवीली बात।

दम्भोलि तत्० (पु०) वज्र, अशनि, इन्द्र का वज्र।

दम्य तत्० (वि०) दमनाई, दमन करने योग्य, दण्ड देने योग्य। (पु०) बधिया करने योग्य बछड़ा।

दया तत्० (स्त्री०) दूसरे का दुःख दूर करने की इच्छा, कृपा, स्नेह, करुणा, अनुग्रह।—दृष्टि तत्० (स्त्री०) करुणा अथवा अनुग्रह का भाव। —निधान तत्० (पु०) अत्यन्त दयालु पुरुष। —निधि तत्० (पु०) अत्यन्त दयालु पुरुष, ईश्वर।—पात्र तत्० (पु०) दया के योग्य व्यक्ति।—मय (वि०) दयास्वरूप, साक्षात् करुणावतार, कृपास्वरूप, दयाशील, कृपामय। —युक्त (वि०) दयावान्, ।—लु (वि०) कृपावान्, दयायुक्त।—वन्त (वि०),—वान् (वि०) कृपावान्, करुणामय।—शील (वि०) कृपामय, दयामय।—सागर तत्० (पु०) अत्यन्त दयालु पुरुष।

दयानत (स्त्री०) ईमान, सत्यनिष्ठा।—दार (पु०) ईमानदार, सच्चा, सत्यनिष्ठ।

दयार्द्र (वि०) दयालु, दया से पूर्ण ।

दयानन्द सरस्वती तद्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध महात्मा आर्यसमाज के आविष्कारक ये संन्यासी थे । इनके पूर्वाश्रम की बातें विवादमय हैं, और ये परस्पर इतनी अनमिल हैं कि उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है । इन्होंने जिस समाज का अभिनव आविष्कार किया है वह आर्यसमाज के नाम से प्रसिद्ध है । सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदभाष्य भूमिका आदि हिन्दी भाषा में लिखे इनके ग्रन्थ हैं। आर्यसमाजियों में सत्यार्थप्रकाश की बड़ी प्रतिष्ठा है। सत्यार्थप्रकाश में धर्मसिद्धान्तों की आलोचना नहीं की गई है, किन्तु मनुष्यों के चरित्रों की, अतएव कतिपय आर्यसमाजी विद्वान् भी इस रीति को उत्तम नहीं समझते । मूर्तिपूजा और श्राद्ध आदि को ये वेद विरुद्ध बताते हैं । इनका दार्शनिक सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत है । परन्तु विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रकाण्ड विद्वान कहते हैं कि इनका यह सिद्धान्त भी अभिनव आविष्कार ही है।

दयाल तद्० (वि०) दयालु, कृपालु, दया करने वाला । [स्नेही ।

दयित तद्० (पु०) पति, स्वामी, भर्ता । (गु०) प्रिय,

दयिता तद्० (स्त्री०) पत्नी, भार्या, प्रिया, प्रियतमा, स्त्री ।—धीन (वि०) स्त्री के वशीभूत, स्त्री के अधीन, स्त्रैण ।

दयौ दे० (क्रि०) दिया, अर्पित किया, समर्पित ।

दर तद्० (पु०) डर, भय, भीति, शङ्का, मोल, भाव, प्रतिष्ठा, खिड़की, बिना किवाड़े का द्वार, दरार, छेद । (गु०) अल्पार्थक, ईषदर्थक, थोड़ा ।

दरकन (स्त्री०) रगड़ या दब जाने से लगी हुई चोट ।

दरकना दे० (क्रि०) फट जाना, अनायास दो टुकड़े हो जाना, चिरना, विदीर्ण होना ।

दरका दे० (पु०) फटा, दरार, बीच का फटाव, चीरा, छिद्र, छेद, फाँक । [टुकड़े करना ।

दरकाना दे० (क्रि०) फाड़ना, चीरना, छेद करना,

दरकार दे० (पु०) आवश्यक, अपेक्षित, ज़रूरी ।

दरकिनार दे० (क्रि० वि०) बचकर, अलग, पृथक ।

दरकी दे० (स्त्री०) फटी, चिरी ।

दरख़ास्त (स्त्री०) अर्ज़ी, प्रार्थना, निवेदन ।

दरख़्त (पु०) पेड़, वृक्ष ।

दरगाह (स्त्री०) मक़बरा, देहरी, दरबा ।

दरगुज़रना (क्रि०) छोड़ना, क्षमा करना ।

दरज तद्० (स्त्री०) दरार, दराज, छेद ।

दरजा (पु०) वर्ग, श्रेणी, कक्षा ।

दरजिन दे० (स्त्री०) दरजी की स्त्री, दर्जिन ।

दरजी दे० (पु०) सूचिजीवी, सूचिकर्म करने वाला कपड़ा सीनेवाला ।

दरण तद्० (पु०) ध्वंस, विनाश ।

दरद तद्० (पु०) म्लेच्छ जाति, भयानक, भय, हींग, हिंगुल, किरात, धातु विशेष, शिंगरफ़, सिमरिख, पारा । (स्त्री०) व्यथा, पीड़ा, यातना, वेदना ।

दरदर दे० (पु०) द्वार द्वार, ईंगुर, सिन्दूर ।

दरदरा दे० (वि०) अधकुटा, अधपिसा, मोटा पिसा हुआ, दानेदार । [रवे की, अधकुटी ।

दरदरी तद्० (स्त्री०) पृथिवी । दे० (वि०) मोटे

दरना (क्रि०) पीसना नष्ट करना ।

दरप दे० (पु०) दर्प, गरूर, घमंड ।

दरपक दे० (वि०) दर्पक, कामदेव, मदन ।

दरपन दे० (पु०) दर्पण, आईना, मुकुर ।

दरपना (क्रि०) क्रोध में भरना, घमंड करना ।

दरपनी तद्० (स्त्री०) छोटा दर्पण ।

दरपरदा दे० (क्रि० वि०) आड़ में, छिप के ।

दरब तद्० (पु०) द्रव्य, दान, धातु । [आता है ।

दरबहरा दे० (पु०) मद्य विशेष, यह चाँवल से बनाया

दरबा दे० (पु०) कबूतरों के रखने का खानेदार सन्दूक, काबुक । [का काम ।

दरबान दे० (पु०) द्वारपाल ।—ी (स्त्री०) द्वारपाल

दरबार दे० (पु०) राजसभा, विचारस्थान ।—ी (पु०) सभासद, दरबार में बैठने वाले ।

दरभा दे० (स्त्री०) एक प्रकार की चटाई तृण निर्मित एक आसन, घाँस, कुश ।

दरमाहा दे० (पु०) मासिक, महीना, वेतन, एक महीने की मजूरी ।

दरमियान (पु०) मध्य, बीच ।—ी (पु०) बिचवनिया, दलाल, मध्यस्थ । (गु०) बीच का, मध्य का ।

दरवाज़ा दे० (पु०) फाटक, द्वार, दुआर, किवाड़, कपाट। [हुआ।
दरविदलित तत्० (पु०) ईषदुन्मीलित, थोड़ा खिला
दरवेश (पु०) फ़क़ीर, साधु।
दरश तद्० (पु०) दर्श, देखना।
दरस तद्० (पु०) देखादेखी दर्शन, दीदार।
दरसन तद्० (पु०) दर्शन, दीदार।
दरसना (क्रि०) देख पड़ना।
दरसनी हुंडी दे० (स्त्री०) देखते ही जिसके रुपयों का भुगतान हो वह हुँडी।
दरसाना (क्रि०) दिखलाना, झलकाना।
दरही दे० (स्त्री०) मछली विशेष।
दराई (स्त्री०) दरने का काम, दरने की मज़दूरी।
दराँती दे० (स्त्री०) हँसुआ, हँसुवा, एक प्रकार का अस्त्र जिससे खेत आदि काटे जाते हैं।
दराज़, दरार, दरारा दे० (पु०) फटा हुआ स्थान, चीर, फाँक, दरका, दरार निशान। [भाव, दर।
दरि तत्० (स्त्री०) पर्वत की गुहा कन्दरा, खोल,
दरित तत्० (वि०) भीत, त्रस्त, डरा हुआ, शङ्कित।
दरिद तद्० (पु०) कँगाली कंगाल, निर्धन।
दरिद्दर तद्० (पु०) दरिद्र।
दरिद्र तद्० (पु०) कँगाल, निर्धन, निस्व, रङ्क दीन, दुखिया ग़रीब।—ता (स्त्री०) निर्धनता दीनता, दुःख, दुर्गति, दैन्य। [निधन।
दरिद्रित तत्० (वि०) दीन,दुखी, निस्व, धनहीन,
दरिद्री तद्० (वि०) दरिद्र, कंगाल, निर्धन, धनहीन।
दरिया दे० (पु०) नदी समुद्र, सिन्धु।
दरियाई (वि०) नदी सम्बन्धी।—घोड़ा (पु०) समुद्री घोड़ा।—नारियल (पु०) नारियल विशेष।—दिल (वि०) उदार, दानी।—दिली (स्त्री०) उदारता।
दरियाफ़्त (पु०) मालूम ज्ञात, जाना हुआ।
दरियाव दे० (पु०) नदी, समुद्र।
दरी तत्० (स्त्री०) गुफा, खोह, कन्दरा, पर्वत की गुहा कन्दर, आसन विशेष, शतरंजी। (वि०) विदीर्ण करने वाला, डरपोक।—भृत् (पु०) पर्वत, पहाड़, गिरि।
दरीचा (पु०) खिड़की।
दरीची (स्त्री०) बँगला खिड़की। [बहुवचन।
दरीन दे० (वि०) ब्रजभाषा के नियमानुसार दरी का
दरीबा दे० (पु०) पान बेचने का स्थान।
दरेती दे० (स्त्री०) दाल या चने दलने की छोटी चक्की खेत काटने की हँसिया।
दरेस दे० (स्त्री०) फूलदार छाप का महीन सूती कपड़ा।
दरेसी दे० (स्त्री०) दुरुस्ती, मरम्मत।
दरैया (पु०) दरनेवाला, घातक, नाशक।
दरोग़ (पु०) असत्य, झूठ, मिथ्या।—हल्फ़ी (स्त्री०) झूठी साक्षी देने का जुर्म।—ा (पु०) प्रबन्धक, थानेदार।
दर्ज (स्त्री०) दरज, दरार।
दर्जन दे० (पु०) बारह का समुदाय।
दर्जा दे० (पु०) श्रेणी, कोटि, वर्ग।
दर्जिन दे० (पु०) दर्जी की स्त्री।
दर्जी दे० (पु०) कपड़ा सीने वाला।
दर्द दे० (पु०) पीड़ा, व्यथा।
दर्दुर तत्० (पु०) भेक, मेंढक, भेक।
दर्द्रु तद्० (पु०) दाद, दिनाय।
दर्प तत्० (पु०) अभिमान, अहङ्कार, गर्व, घमंड, आत्मश्लाघा, आत्मस्तुति मान।—कारी (पु०) अभिमानी। [वाला, गर्व्वी घमंडी।
दर्पक तत्० (पु०) कामदेव, मन्मथ, मदन, दर्प करने
दर्पण या दर्पन तत्० (पु०) रूप देखने का आधार, आदर्श, मुकुर, आरसी।
दर्पणी तद्० (स्त्री०) छोटा दर्पण, मुँह देखने का छोटा शीशा, बड़ा आईना।
दर्पणीय तत्० (वि०) सुन्दर, दिलचोर, उत्तम, अच्छा, मनोहर।
दर्पी तत्० (वि०) अभिमानी, अहङ्कारी।
दर्बार दे० (पु०) दरबार।
दर्भ तत्० (स्त्री०) कुश, डाभ, कास।
दर्रा दे० (पु०) दरार, पहाड़ी रास्ता।
दर्राना दे० (क्रि०) निर्भयता पूर्वक आगे बढ़ना, बेधड़क आगे जाना।
दर्विका तत्० (स्त्री०) गाभी, तरकारी आदि चलाने का बर्तन, पात्र विशेष।

दर्वी तद्० (स्त्री०) कर्छी, चमची, डोई, साँप का फन।—कर (पु०) फन वाला साँप, सर्प, अहि, भुजंग, भुजङ्ग।

दर्श तद्० (पु०) [दृश्+अल्] अवलोकन, दर्शन, अमावस्या, पक्षान्तकृत्य योग विशेष, चन्द्रमा सूर्य की एकत्र स्थिति।

दर्शक तद्० (पु०) द्वारपाल, द्वारी, दरवान, प्रवीण, दर्शयिता, दर्शनकारक, दिखाने वाला, बताने वाला, निरीक्षक, प्रधान।

दर्शन तद्० (पु०) [दृश्+अनट्] अवलोकन, निरीक्षण, देखना, नयन, नेत्र, चक्षु, स्वप्न, बुद्धि, धर्म, उपलब्धि, दर्पण, वर्ण, रंग। शास्त्र विशेष, तत्वविद्या, प्रधान शास्त्र, भारतीय दर्शन द्वादश हैं। इनमें छः आस्तिक दर्शन और छः नास्तिक दर्शन के नाम से प्रसिद्ध हैं। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा ये आस्तिक दर्शन हैं। (देखो षड्दर्शन) माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक, लौकायतिक, जैन और बौद्ध ये छः नास्तिक दर्शन के नाम से प्रसिद्ध हैं।

दर्शनप्रतिभू तद्० (पु०) प्रतिनिधि, हाज़िर ज़ामिन, वह मनुष्य जो किसी व्यक्ति विशेष को समय पर उपस्थित कर देने का दायित्व अपने ऊपर ले।

दर्शनी दे० (स्त्री०) दर्शन निमित्त भेंट, उपहार, भेंट, चढ़ावा, पारितोषिक, एक प्रकार की हुण्डी जिसे देखते ही रुपया पटाना पड़ता है।

दर्शनीय तद्० (वि०) [दृश्+अनीय] मनोहर, मनोज्ञ, दर्शन योग्य।—मानी (वि०) अपने को सुन्दर समझने वाला, अपने रूप का अभिमानी।

दर्शनेच्छा तद्० (स्त्री०) देखने की इच्छा, दर्शन स्पृहा।

दर्शित तद्० (वि०) दिखलाया हुआ, दिखाया, उद्दिष्ट, प्रकाशित। [रक, विचार करने वाला।

दर्शी तद्० (पु०) निरीक्षक, दर्शनकारी, द्रष्टा, विचा-

दल तद्० (पु०) पत्र, पत्ता, पत्ती, समूह, समुदाय, सैन्य संग्रह, खण्ड, टुकड़ा, आधा, कीचड़ ऊँचाई, दाम, स्थूलता, मोटाई, म्यान, धन, जल में उत्पन्न होने वाला वृक्ष विशेष।—पति (पु०) समूह का नेता, समाजपति, समाजश्रेष्ठ, प्रधान।—बल फौजफाटा, सेना।

दलक दे० (स्त्री०) चमक, धमक, थरथराहट, टीस, गुदड़ी। [चौंकना, डराना।

दलकना दे० (क्रि०) फट जाना, चिर जाना, थर्राना,

दलकपाट दे० (पु०) भिड़ा हुआ कपाट, हरी पखड़ियों का कोश जिसके अन्दर कली होती है।

दलकि (क्रि०) दहल कर, थर्रा कर, फट कर।

दलकोश तद्० (पु०) कुन्द का पेड़।

दलगञ्जन तद्० (वि०) सेना को मारने वाला भारी वीर। (पु०) धान विशेष। [औज़ार विशेष।

दलथम्भन दे० (पु०) कमख़ाब बुनने वालों का

दलदल दे० (स्त्री०) धसाव, धसान, पङ्किल भूमि, चहला।—ा (गु०) दलदलवाला।

दलदलाना दे० (क्रि०) काँपना, हिलना, डुलना, थरथराना। [थराहट।

दलदलाहट दे० (स्त्री०) कम्प, दलक, धमक, थर-

दलदार दे० (वि०) मोटे दल वाला, मोटे परत वाला, मोटी तहवाला।

दलन तद्० (पु०) [दल+अनट्] मर्दन, निष्पीडन, टुकड़े टुकड़े करना, चूर चूर करना।

दलना दे० (क्रि०) दाल बनाना, दो टूक करना, दाल अलग अलग करना, रौंदना, मीड़ना।

दलबादल दे० (पु०) मेघों का समूह, घनघटा, घोरघटा, बड़ी सेना, बड़ा शामियाना, बड़ा पटमण्डप।

दलमलना दे० (स्त्री०) मींजना, मींसना, मलना, दलन करना।—करना (वा०) पीसना, मींजना तोड़ना, तोड़ डालना, मर्दन करना। [करवाना।

दलवाना दे० (क्रि०) दाल बनवाना, दलने का काम

दलवैया दे० (पु०) दलनेवाला, दाल बनाने वाला।

दलसुसा दे० (पु०) पत्ते का सिरा, पत्ते की नस।

दलहन (पु०) चना, मूँग, उर्द, अरहर, आदि दाल के अन्न।

दलहरा दे० (पु०) दाल का व्यापारी।

दलान (पु०) ओसारा, बैठक, बरामदा।

दलाना दे० (क्रि०) दलवाना, दाल बनवाना।

दलाल दे० (पु०) बिचवाई, मध्यस्थ, कुटना, पारसियों और जाटों की जाति विशेष। [पाता है।

दलाली दे० (स्त्री०) बिचवानी, वह द्रव्य जो दलाल

दलित दे० (पु०) मर्दित, रौंदा गया, फाड़ा गया, अधःकृत, तिरस्कृत।
दलिद्र तद्० (पु०) दरिद्र, दीन, दुःखी ।—ता (स्त्री०) दारिद्र्य, दरिद्रता, दैन्य, दुःख।
दलिद्री तद्० (पु०) दरिद्री, दरिद्रित, दीन, कंगाल, निर्धन, धनहीन।
दलिया दे० (पु०) अधकुटा, मोटा पीसा हुआ अन्न।
दलिहन दे० (पु०) अन्न विशेष, जिससे दाल बनाते हैं, मूँग, अरहर, उरद आदि।
दली दे० (वि०) दलित, दली गई, दो टूक की गई।
दलीपसिंह दे० (पु०) पञ्जाब केसरी महाराज प्रतापसिंह का छोटा लड़का। सन् १८३८ ई० में ४ वर्ष की अवस्था में यह सिंहासन पर बैठाये गये। १८४६ ई० में सिख युद्ध के अन्त होने पर पञ्जाब डलहौसी के अधिकार में आया। दलीपसिंह एक मास्टर की देख रेख में रहने लगे। दलीपसिंह के बालिग होने पर, इन्हें दो लाख की वृत्ति मिलती थी। १८५१ ई० में यह ईसाई हो गये। इसके बाद दलीप विलायत गये, जिससे इनकी माता को बड़ा कष्ट हुआ। सन् १८९३ ई० की २२ वीं अक्टूबर के पेरिस के होटल में दलीपसिंह मर गये।
दलील (स्त्री०) युक्ति, तर्क वितर्क।
दलैंती दे० (स्त्री०) चक्की, जाती, दाल बनाने की कल।
दलेल दे० (स्त्री०) सिपाहियों का एक प्रकार क़वायद जो, उन्हें दण्डस्वरूप दी जाती है।
दलैया दे० (पु०) दलने वाला, नाश करने वाला।
दलम तद्० (पु०) छल, धोखा, पाक, पाप।
दल्लाल दे० (पु०) दलाल, माल बिकवाने वाला।
दल्लाला दे० (स्त्री०) कुटनी, दूती।
दल्लाली दे० (स्त्री०) दलाली। [वन की आग।
दव तद्० (पु०) वन, अरण्य, वनाग्नि, वनदाहा,
दवना (पु०) ढकना, ढाकने का पात्र विशेष।
दवनी (स्त्री०) पौधा विशेष, मँदाई, दवारी।
दवरिया दे० (स्त्री०) दवारि, दावानल।
दवा दे० (स्त्री०) औषध, ओषधि।
दवाई दे० (स्त्री०) दवा, औषधि।
दवाख़ाना, दवाईख़ाना (पु०) औषधालय।
दवागि तद्० (स्त्री०) दावानल।
दवागिन तद्० (स्त्री०) दवाग्नि।
दवाग्नि, दवानल तत्० (पु०) दावानल, वन की आग, वृक्षों की रगड़ से स्वतः उत्पन्न अग्नि।
दवात दे० (स्त्री०) मसिपात्र स्याही रखने का पात्र।
दवानल (पु०) दावानल, दवाग्नि।
दवामी (पु०) चिरस्थायी, सदैव एकसा रहने वाला। —बंदोबस्त (पु०) वह व्यवस्था जिससे भूमिकर (मालगुज़ारी) सदा एकसी रहे, उसमें कमी बेशी न हो।
दवारि तद्० (पु०) दावानल, वन की आग।
दविष्ठ तत्० (वि०) सुदूर, अत्यन्त दूरवर्ती, अतिशय दूरवर्ती।
दवीयान् तत्० (वि०) दूरतर, अतिशय दूरवर्ती।
दश तत्० (पु०) [दशन्+ड्] संख्या विशेष, द्विगुण पाँच, १० ।—कण्ठ (पु०) रावण, दशानन, लङ्केश्वर।—कण्ठजित (पु०) श्रीराम राघव, रघुनाथ।—कन्ध, कन्धर (पु०) रावण, दशानन।—कर्म (पु०) अन्नप्राशनादि दशविध कर्म वे ये हैं:—(१ गर्भाधान २ पुंसवन, ३ सीमन्तोन्नयन, ४ जातकरण, ५ निष्क्रमण, ६ नामकरण ७ अन्नप्राशन, ८ चूड़ाकरण, ९ उपनयन, १० विवाह) मरण के दसवें दिन का कृत्य।—क्रिया गणित विशेष, दश अंकों की गणना।—गात्र तत्० (पु०) मृतक का एक कर्म जो उसके मरने के दस दिन तक किया जाता है। शरीर के दस मुख्य अङ्ग।—ग्रीव (पु०) रावण, लङ्केश्वर। —दिक (पु०) पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, अग्नि, नैऋत्य, वायु, ऊर्ध्व, और अधः। —दिक्पाल (पु०) दसों दिशाओं के अधिपति, इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा और अनन्त।—धा (अ०) दस प्रकार, दस बार।—नामी दे० (पु०) शङ्कर मत के अनुयायी दस प्रकार के संन्यासी (यथा— १ तीर्थ, २ आश्रम, ३ वन, ४ अरण्य, ५ गिरि, ६ पर्वत, ७ सागर, ८ सरस्वती, ९ भारती, १० पुरी।)—पुर (पु०) देशभेद, मालवार देश का एक खण्ड, पुरभेद।—भुजा (स्त्री०) दुर्गा। —महाविद्या (स्त्री०) दसविध देवी विशेष,

(यथा—काली तारा षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी और कमला।—मुख (पु०) दशकन्धर, लङ्केश्वर, रावण।—मुखान्तक (पु०) श्रीराम, रघुनाथ। —मूल (पु०) ओषधि विशेष, दश ओषधियों के मूल।—योगभङ्ग (पु०) ज्योतिष का नक्षत्र वेध विशेष, जिसमें विवाहादि शुभ कर्म वर्जित हैं।—रथ (पु०) इक्ष्वाकु कुलोत्पन्न राजा विशेष, सूर्यवंशीय राजा, यह अज के पुत्र और श्रीराम चन्द्र तथा उनके तीन भाइयों के पिता थे। इनकी राजधानी का नाम अयोध्या था, इनकी तीन प्रधान रानियाँ कौशल्या, सुमित्रा और कैकयी थीं। परन्तु बहुत वर्ष बीत गये। उनमें से किसी के पुत्र नहीं हुआ, अत वशिष्ठ की अनुमति से उन्होंने पुत्रेष्टि नामक यज्ञ करना विचारा और इस यज्ञ के सम्पन्न करने के लिये विभाण्डक ऋषि के पुत्र ऋष्यशृङ्ग को बुलाया। उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया और यज्ञशेष तीन रानियों को खाने के लिये भिजवाया। कौशल्या ने राम को, सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को और कैकयी ने भरत को यथासमय उत्पन्न किया। यज्ञ करने के पहले दशरथ मृगया करने वन में गये थे। वहाँ किसी का शब्द सुन कर इन्होंने शब्दवेधी बाण मारा। उस बाण से अन्ध मुनि का पुत्र सरवण मारा गया। अन्ध मुनि पुत्रवियोग से मरने लगे। उन्होंने मरते मरते राजा को शाप दिया कि, तुम भी पुत्र वियोग से मरोगे। दशरथ जब अपने पुत्र श्रीराम का राज्याभिषेक करने की तैयारी करते थे, उस समय मन्थरा के कुचक्र से कैकयी ने राजा के पहले दिये दो वरों में एक तो राम का वनवास और दूसरा भरत का राज्याभिषेक माँगा। इसी धर्म सङ्कट में पड़ कर राजा दशरथ को अपने प्राण देने पड़े थे।—शीस (पु०) दशानन, रावण।—हरा (स्त्री०) ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, इसे गङ्गादशहरा कहते हैं। क्योंकि यह गङ्गा की जन्मतिथि है। आश्विन शुक्ला दशमी। कहते हैं इस दिन रामचन्द्र ने रावण को मारा था पर यह ठीक नहीं है। इसे विजया दशमी भी कहते हैं।

दशन तत्० (पु०) दाँत, दन्त कवच, शिखर।—च्छद (पु०) ओष्ठ, अधर, होंठ।—अंशु (पु०) दशन शोभा, दन्तरुचि।

दशम तत्० (वि०) दस संख्या को पूरण करने वाली संख्या, दसवाँ।—अंश (पु०) दशमांश, दसवाँ हिस्सा।

दशमी तत्० (स्त्री०) पक्ष का दसवाँ दिन, दसवीं तिथि।

दशा तत्० (स्त्री०) अवस्था, भाव, गति, वृत्ति, स्थिति, दिया की बत्ती, चित्त, कपड़े का छोर।

दशांश तत्० (पु०) दसवाँ भाग, दसवाँ हिस्सा।

दशांगुल तत्० (पु०) दस अंगुल का परिमाण, खर-बूजा, हँगरा।

दशानन तत्० (पु०) रावण, दशकण्ठ।

दशावतार तत्० (पु०) चारों युगों में विष्णु के दस अवतार।

दशाविपाक तत्० (पु०) दुःख की अन्तिम अवस्था।

दशार्ण तत्० (पु०) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत के पूर्व और दक्षिण भाग का देश, मालवा का पश्चिम भाग, इस देश की राजधानी का नाम विदिशा है।

दशार्ह तत्० (पु०) बुद्ध, देश विशेष, यदुदेश, यदु देश के रहने वाले।

दशाश्व तत्० (पु०) चन्द्रमा, निशाकर।

दशाश्वमेध तत्० (पु०) दस अश्वमेध यज्ञ विशेष, तीर्थ विशेष।

दशास्य तत्० (पु०) दशमुख, रावण, दशानन। —जित् (पु०) राम, रघुनाथ।

दशाह तत्० (पु०) दस दिन में किये जाने वाले कर्म, दस दिन साध्य कार्य।

दशाहीन तत्० (वि०) दुर्भाग्य, दुरवस्था, दुर्गत, दुरवस्थापन्न, बिना कोर का कपड़ा।

दशीला दे० (वि०) सुखी, सुभाग्य, श्रीमान्।

दस तद्० (वि०) दस संख्या विशेष, पाँच की दूनी संख्या।—माथ दे० (पु०) रावण।

दसखत (पु०) हस्ताक्षर।

दसन तद्० (पु०) दाँत।

दसवाँ (गु०) ९ के बाद की संख्या।

दसी (स्त्री०) कपड़े के किनारे का सूत, बैलगाड़ी की पटरी सीपी, चिन्ह, पता।

दसौंधा दे० (पु०) पढ़ना या बकना।

दसौंद्वार तद्० (पु०) दस द्वार, शरीर के मार्ग विजया-दशमी के बाद का समय। [प्रारंभिक, राय, चारण।

दसौंधी दे० (पु०) भाट, बन्दी, स्तुतिकर्त्ता, गुणगानकारी,

दस्त तद्० (वि०) प्रदिष्ट, मरणापित, नष्ट। (दे०) हस्त, हाथ, कर, पाखाना।—कार (पु०) हाथ से कारीगरी का काम करने वाला।—कारी (स्त्री०) हाथ की कारीगरी। [सही करना

दस्तखत दे० (पु०) स्वाक्षर, सही, अपने नाम को

दस्ता दे० (पु०) आयुधविशेष, हाथकीलि, डंडा, कब्ज़ा, मूठ, बेंट, फूलों का गुच्छा, सिपाहियों की छोटी टोली, गारद, चपरास, संजाफ, काग़ज़ के चौबीस तावों की गड्डी, सोटा, डंडा, दारोग़ा।

दस्ताना दे० (पु०) हाथ का मोज़ा। [चक, गुलाब।

दस्तावर दे० (वि०) वह दवा जो दस्त लावे, विरे-

दस्तावेज़ दे० (पु०) वह काग़ज़ जिसमें किसी व्यवहार विशेष की शर्तें लिखी हों, ऋणपत्र।

दस्ती दे० (वि०) हाथ का। (स्त्री०) छोटी मूठ, छोटा कलमदान।

दस्तूर दे० (पु०) रीति, चाल, प्रथा, नियम, विधि।

दस्तूरी दे० (स्त्री०) हक़, कमीशन।

दस्यु तद्० (पु०) साहसिक, चोर, तस्कर, डाकू डकैत, दुर्वृत्ति, एक पुरानी जाति।—वृत्ति (स्त्री०) चोरी, डकैती।

दस्र तद्० (पु०) शिशिर, गर्दभ, अश्विनीकुमार, अश्विनीसुत, जोड़ा।—देवता (स्त्री०) अश्विनी नामक नक्षत्र। (वि०) चोट्टा, हिंसा करनेवाला।

दस्रौ तद्० (पु०) अश्विनीकुमारद्वय, देववैद्य।

दह दे० (पु०) गड्ढा, गर्त, गहरा, आवर्त, जलकुण्ड (स्त्री०) ज्वाला, लपट, लौ।

दहक दे० (स्त्री०) दाह, चमक, लिहाक, प्रकाश, शर्म।

दहकना दे० (क्रि०) जलना, पश्चात्ताप करना, पछताना, अनुताप करना, जलना।

दहकाना दे० (क्रि०) जलाना, बिगाड़ना, पश्चात्ताप करना, अनुताप करना, पछताना।

दहड़दहड़ दे० (अ०) वेग से, ज़ोर से, प्रखरता से तीक्ष्णता से।—जलना (वा०) बड़े वेग से जलना, बहुत वेग से आग का लहकना।

दहदूज दे० (स्त्री०) दवदूज।

दहन तद्० (पु०) [दह् + अनट्] दाह, जलन, भस्म करना, भस्म होना, अग्नि, अनल, पावक, आग, चित्रक वृक्ष, भल्लातक, भिलावाँ, तीन की संख्या, कबूतर, एक रुद्र का नाम, ज्योतिष का एक योग। (वि०) दुष्टचित्त, दुर्जन, जलाने वाला, दुःख देने वाला।—केतन (पु०) धूम, धुआँ।—प्रिया (स्त्री०) स्वाहा और स्वधा, अग्नि की भार्या।

दहना दे० (क्रि०) जलना, बलना, भस्म होना, बहना, जलप्लावित होना। (वि०) दक्षिण भाग, दहिना।

दहनाराति तद्० (पु०) [दहन + अराति] जल, सलिल, तोय, पानी, अग्नि का शत्रु।

दहनीय तद्० (पु०) [दह् + अनीय] दाह्य, दाहाई, दग्ध करने योग्य, जलाने के उपयुक्त।

दहनोपल तद्० (पु०) [दहन + उपल] अग्निमय पत्थर, सूर्यकान्तमणि, आतशी शीशा। [जलावे।

दहय तद्० (क्रि०) जलावे, नष्ट करे, भस्म करे,

दहर तद्० (पु०) छोटा मूसा, चूहा, चुहिया, छछूं-दर, भ्राता, बालक, नरक, वरुण। (वि०) स्वल्प सूक्ष्म। तद्० (पु०) दह, नदी में वह स्थान जहाँ जल गहरा हो, कुण्ड, गड्ढा, ताल।—ाकाश तद्० (पु०) चिदाकाश, ईश्वर।

दहल दे० (स्त्री०) भय से सहसा काँप जाने की क्रिया।

दहलना दे० (क्रि०) दबना, शङ्कित, शङ्काक्रान्त, काँपना, डरना, भयभीत होना।

दहला दे० (पु०) ताश का वह पत्ता जिस पर दस बूटियाँ होती हैं। तद्० (पु०) थाला, आलबाल।

दहलाना दे० (क्रि०) दबाना, कँपाना, कम्पित करना, भयभीत करना।

दहशत (स्त्री०) भय, डर। [विशेष।

दहसेरा दे० (पु०) दस सेर का तौल, परिमाण

दहाई दे० (स्त्री०) अङ्कों की गणना में दूसरे स्थान पर लिखा हुआ अङ्क, उसका मान या भाव।

दहाड़ना दे० (क्रि०) गरजना, डकारना।

दहाना दे० (क्रि०) जलाना, भस्म करना, जलना। दे० (पु०) द्वार, मशक का मुख, (नदी का) मुँहाना, मोरी, घोड़े के मुख की लगाम।

दहिजार दे० (पु०) दाढ़ीजार।
दहिना दे० (वि०) दक्षिण, दक्षिण भाग।
दही तद्० (पु०) दधि, दूध का विकार, जमा दूध।
दहुँ (अव्य०) अथवा, या, किंवा।
दहेड़, दहेल दे० (पु०) पक्षी विशेष।
दहेंड़ी दे० (स्त्री०) दही की हाँडी, जिसमें दही रखा या जमाया जाता है।
दहेज दे० (पु०) दायज, यौतुक।
दहोतरसौ (पु०) एकसौ दस, ११०।
दह्यमान तद्० (गु०) [दह्+मान] दग्ध, पुष्ट, ज्वलित, जलाया हुआ। [क्रिया।
दह्यो दे० (पु०) दही, दधि। (क्रि०) जलाया, भस्म
दा तद्० (वि०) देने वाला, दाता, दानी, दानकर्ता। दे० (पु०) सितार का एक बोल।
दाइज दे० (पु०) यौतुक, दैजा, दान, कन्याप्रदाता की देयवस्तु, जो कन्या का पिता कन्यादान के उपलक्ष में वर को देता है।
दाइजा दे० (पु०) दाइज।
दाई तद्० (वि०) दायी, दाता, देनेवाला, यह जिस शब्द के अन्त में आता है। उसका देनेवाला अर्थ होता है। (सुखदाई, दुखदाई आदि)। (स्त्री०) धाय, धात्री, बच्चे को दूध पिलाने वाली दासी, चकरानी, नौकरानी, फ़ारसी का दाया शब्द से यह शब्द निकला है।
दाईं दे० (वि०) दाहिनी। [का नाम।
दाऊ दे० (पु०) बड़ा भाई, बड़ा चाचा, बलदेवजी
दाउँ दे० (पु०) दाँव।

"सूक्ति जुआरिहि आपन दाउँ।"—तुलसीदास।

दाऊदी दे० (स्त्री०) एक झाड़ अथवा उसका फूल, एक प्रकार की आतशबाज़ी, सफ़ेदी, यह शब्द अरबी के दावदी शब्द से निकला है यथा—(अ०)—गुलदावदी, (हि)—गुलदाउदी। (पु०) एक प्रकार का सब से अच्छा गेहूँ। [खेवने की डाँडी।
दाँड़ तद्० (पु०) दण्ड, सज़ा, ताड़ना, शासन, नाव
दाँड़ना (क्रि०) दण्ड देना, सजा देना।
दाँड़ा दे० (पु०) सीमा, सीव, मेंड़, सिवाना।—मेड़ा (पु०) सिवाना, छोर, दो ग्राम या खेतों के विभाग का चिन्ह विशेष।
दाँड़ी दे० (पु०) खेवक, नाव खेवने के लिये लकड़ी का बना हुआ दाँड़।
दाँत तद्० (पु०) दन्त, रदन, दाढ़, दशन।—उँगली काटना (वा०) अचम्भे में आना, आश्चर्यित होना, विस्मित होना, विस्मय करना।—कचकचाना (वा०) क्रोध करना, क्रोध से दाँत पीसना।—कटकटाना (वा०) अपकारी का बदला न चुका सकने के कारण क्रोध से जलना।—काटी रोटी खाना (वा०) घनिष्ट मित्रता करना, दिली दोस्ती।—खट्टे करना (वा०) दूसरे के प्रयत्न को विफल करना, अपने पराक्रम से शत्रु को नीचा दिखाना।—तले उँगली दबाना (वा०) अचम्भा करना, विस्मित होना, भौचक रह जाना।—निकालना (वा०) हार जाना, अपनी अयोग्यता और विवशता बतलाना।—पर चढ़ाना (वा०) कलङ्कित करना, अपमानित करना।—पीसना (वा०) क्रोध करना, क्रोध बतलाने के लिये दाँत कटकटाना।—बजना (वा०) कटकटाना, क्रोध करना, झगड़ना, बकबक करना।—रखना (वा०) किसी के लिये उत्कण्ठित होना, स्पर्धा करना, अवज्ञा करना, तुच्छ जानना।
दाँतन दे० (पु०) दतवन, दन्तधावन, दाँत साफ़ करने की लकड़ी, मुखारी।
दाँताकिटकिट (स्त्री०) वाक् युद्ध झगड़ा, गाली गलौज।
दाँताकिलकिल तद्० (स्त्री०) दन्तकिचकिचा, बकझक, झगड़ा, गाली गलौज, वाग्युद्ध।
दाँती तद्० (स्त्री०) घास काटने का हँसिया, आरा के दाँत, दर्रा।
दाँया (गु०) बायें का उलटा।
दाँव दे० (पु०) घात, अवसर, मौक़ा, बारी, समय, अपने अनुकूल समय।—चलना (वा०) जीतना, जय करना, सफल होना, आगे बढ़ना, बढ़ चलना, शतरंज आदि खेलों में गोटी आगे बढ़ना।—चलाना (वा०) अधिकार चलाना, घात करना, चोट पहुँचाना।—पकड़ना (वा०) मल्लयुद्ध करना, कुश्ती लड़ना, कुश्ती में दाँव पेंच करना।—बैठना (वा०) अवसर खोना, हाथ से मौक़ा चला जाना।

दाँवरी तद्० (स्त्री०) रस्सी।
दाक्षाय तद्० (पु०) गृध्र पक्षी।
दाक्षायण तद्० (वि०) दक्ष सम्बन्धी, दक्ष प्रजापति के पुत्र आदि, सुवर्णालंकृत। (पु०) सोना, सुनहली चीज़ें, मोहर, दक्ष द्वारा अनुष्ठित यज्ञ, इस यज्ञ में सती ने अपने पतिनिन्दा के कारण प्राण दे दिये थे, पीछे से शिव ने वीरभद्र के भेज यज्ञ नष्ट करा दिया था।
दाक्षायणी तद्० (स्त्री०) दुर्गा, सती, रोहिणी नक्षत्र, अश्विनी आदि सप्तविंशति नक्षत्र, दन्ती वृक्ष, ,जमालगोटा का वृक्ष। (वि०) सोने का।—पति (पु०) शिव, चन्द्रमा, धर्म।
दाक्षिण तद्० (पु०) कथन, उपाय, अधिकार, दक्षिण देशीय, दक्षिण सम्बन्धी, दक्षिणासम्बन्धी। तद्० (पु०) एक होम का नाम।
दाक्षिणात्य तद्० (वि०) दक्षिण देशजात, दक्षिण-देशीय। (पु०) नारिकेल वृक्ष।
दाक्षिण्य तद्० (पु०) उदारता, अनुकूलता, सरलता, भावविशेष, दक्षिणाचाररूप। (वि०) दक्षिणाई, दक्षिण का, दक्षिणा पाने योग्य। [का नाम।
दाक्षी तद्० (पु०) दक्ष की कन्या, पाणिनि की माता
दाक्ष्य तद्० (पु०) दक्षता, निपुणता, नैपुण्य।
दाख तद्० (पु०) द्राक्षा अँगूर, मुनक्का।
दाखिल दे० (पु०) अर्पण, परिशोधकरण, गृहीत वस्तु का लौटाना, जमा करना।—ख़ारिज दे० (पु०) सरकारी कागज़ में एक अधिकारी का नाम काट कर दूसरे अधिकारी का नाम चढ़ा देना।—दफ़्तर (पु०) दबा देना, रख लेना।
दाख़िला दे० (पु०) प्रवेश, पैठ।
दाग दे० (पु०) मृतक कर्म, चिन्ह, दाह, कलङ्क, दोष आग से जलने का चिन्ह।—चढ़ाना (वा०) कलङ्क लगाना।—देना (वा०) तपे लोहे से चिन्ह करना, दागना, जलाना, अङ्कित करना, कलङ्क लगाना।—लगना (वा०) अयशी होना, पाप से कलङ्की होना।—लगाना (वा०) दाग लगाना, अपकीर्ति होना।
दागना दे० (क्रि०) चिन्ह करना, दाग देना, तपाये लोहे से शरीर जलाना, अङ्कित करना, तोप या बन्दूक छोड़ना, तोप की बाढ़ दागना।
दागी दे० (वि०) चिन्हित, अङ्कित, दण्डित।
दाग्ध तद्० (वि०) जला हुआ, दग्ध। तद्० (पु०) गरमी, ताप, दाह।
दाटना (क्रि०) डाटना, डपटना।
दाड़क तद्० (पु०) दाढ़, दाँत।
दाड़स दे० (पु०) सर्प विशेष। [हलायची।
दाड़िम तद्० (पु०) अनार, बीजपूरक, फल विशेष
दाड़ी दे० (स्त्री०) अनार।
दाढ़ दे० (स्त्री०) चौंह, पिछले दाँत, पीसने के दाँत।
दाढ़ा दे० (स्त्री०) बड़ा दाँत, दन्तविशेष।
दाढ़ी दे० (स्त्री०) मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु, चिबुक, ठुड्डी के बाल।—घनाना (क्रि०) क्षौर कराना, हजामत बनवाना।—जार दे० (पु०) बड़ी दाढ़ी वाला, स्त्रियों की एक गाली।
दात तद्० (वि०) छिन्न, कर्तित, छेदन किया हुआ, काटा हुआ। (पु०) दातृत्व, वदान्यता, दान।
दातन दे० (पु०) दतून, दन्तकाष्ठ। [का पात्र।
दातव्य तद्० (वि०) देने योग्य, दानाई, दान करने
दाता तद्० (पु०) देनेवाला, दानी, दानशील, दान-कर्त्ता, वदान्य, उदार।
दातार तद्० (वि०) दाता, दानी, देने वाला।
दातुन दे० (स्त्री०) दाँतुन, मुखारी।
दातृता या दातृत्व तद्० (पु०) वदान्यता, दानशीलता, दानशक्ति, अकृपणता, दान करने की शक्ति।
दातौन दे० (स्त्री०) दतुवन।
दात्यूह तद्० (पु०) पक्षीविशेष, चातक, पपीहा, मेघ।
दात्र तद्० (पु०) [दा+त्र] अस्त्रविशेष, दाँती, हँसिया, देनेवाला। [करने वाली स्त्री।
दात्री तद्० (स्त्री०) [दातृ+ई] दानकर्त्री, दान
दाद दे० (पु०) रोगविशेष, दद्रु, खर्जु।—मर्दन (पु०) दद्रु मर्दन, औषधविशेष, चकवड़।
दादनी दे० (स्त्री०) रकम जो देनी है या चुकानी है। पेशगी दी गई हुई रकम।
दादरा दे० (पु०) एक प्रकार का चलता राग। [भाई।
दादा दे० (पु०) पितामह, पिता का पिता, आजा, बड़ा
दादि, दाद दे० (पु०) मुराद, अभीष्ट, मनोवांछा।
दादी (स्त्री०) पितामह की स्त्री, पिता की माता, आजी।
दादुर तद्० (पु०) दुर्दुर, मेढक, मण्डूक।

दादू दे० (पु०) बुन्देलखण्ड में पुत्र आदि का प्रिय सम्बोधन, एक महात्मा का नाम, इन्होंने अपना एक नया पन्थ चलाया है। इनका पूरा नाम दादू दयाल है। इनका चलाया मत दादूपन्थ के नाम से प्रसिद्ध है, इनके शिष्य दादूपन्थी कह कर अपना परिचय देते हैं। यह मत भक्तिप्रधान है।

दादूदयाल दे० (पु०) देखो दादू।

दाधना दे० (क्रि०) दग्धना, जलाना, बालना।

दाधिक तद्० (वि०) दधिसंस्कृत वस्तु, दधिमिश्रित मिष्टान्न, दहीबड़ा। [वंश का।

दाधीचि तद्० (पु०) दधीचिगोत्रज, दधीचि के

दान तद्० (पु०) [दा+अनट्] पुण्यार्थ धनत्याग, उत्सर्ग, त्याग, वितरण, कर, महसूल, राजनीति के चार उपायों में से एक। शुद्धि, छेदन, एक प्रकार का मधु। हाथी का मदजल।—पति (पु०) नित्य दानकर्त्ता, सततदाता।—पत्र (पु०) वृत्तिदानलिपि, दान की हुई वस्तु पर सम्प्रदान का स्वत्व बतलाने के लिये लेख। —पात्र (पु०) दान देने योग्य व्यक्ति। —लीला (स्त्री०) भगवान् श्रीकृष्ण की लीला विशेष।—वज्र (पु०) दान के लिये वज्र के समान, वैश्य, एक प्रकार का घोड़ा।—वीर (पु०) अति दानकर्त्ता, प्रसिद्ध दानी।—वारि तद्० (पु०) विष्णु, इन्द्र, देवता।—वेन्द्र तद्० (पु०) राजा बलि।—शाली (वि०) दाता, वदान्य।—शील (गु०) दाता, दानकर्त्ता, वदान्य।

दानव तद्० (पु०) असुर, दैत्य, दनुज, दनु की सन्तान।—अरि (पु०) देवता, सुर, असुरशत्रु। —गुरु तद्० (पु०) शुक्राचार्य।

दानवारी तद्० (पु०) हाथी का मद।

दानवी तद्० (स्त्री०) दानव की स्त्री। (वि०) दानव सम्बन्धी।

दाना दे० (वि०) अनुभवी, बुद्धिमान्, ज्ञाता, अभिज्ञ। (पु०) अन्न, अनाज, शस्य, धान्य, घोड़े का बँधा हुआ चना, भुना हुआ चना।—पानी (वा०) अन्नजल, संयोग, समय।

दानाई (स्त्री०) बुद्धिमानी।

दाना-चारा दे० (पु०) दाना घास, खाना पीना।

दानाध्यक्ष तद्० (पु०) राज्यों में दान का प्रबन्ध करने वाला अफ़सर।

दानिनी तद्० (स्त्री०) दान देने वाली स्त्री।

दानी तद्० (वि०) दाता, उदार, दानशील, दान देनेवाला, सततदाता। (पु०) कर संग्रह करने वाला। [दान के उपयुक्त।

दानीय तद्० (वि०) [दा+अनीय] सम्प्रदान, दातव्य,

दानेदार दे० (वि०) रवादार, दरदरा।

दान्त तद्० (गु०) [दम्+क्त] सुशासित, वशीभूत, जितेन्द्रिय, तपस्या के क्लेश सहने योग्य।

दान्ति तद्० (स्त्री०) [दम्+क्ति] तपःक्लेश सहिष्णुता, तपस्या के कष्टों को सहने करने की शक्ति, इन्द्रियनिग्रह, दमन।

दाप दे० (पु०) प्रताप, दर्प, गर्व, अभिमान, अहङ्कार, शक्ति बल, ज़ोर, उत्साह, रोष, क्रोध, रुआब।

दापक दे० (पु०) दबानेवाला, अभिमानी, अहङ्कारी, प्रतापी। [आतङ्क, अधिकार, रोब।

दाब दे० (स्त्री०) चाँप, दबने या दबाने का भाव,

दाब रखना दे० (वा०) छिपाना, छिपा लेना, लुकाना, ढकना, अधिकार रखना।

दाबि दे० (क्रि०) दाब कर, कस कर।

दाम तद्० (स्त्री०) गोबन्धन रज्जु, रस्सी, माला। (पु०) रुपया पैसा, मोल, भाव, मूल्य। (वि०) एक पैसे का चौबीसवाँ भाग।

दामन दे० (स्त्री०) आँचल, अञ्चल, वस्त्रप्रान्तभाग, कपड़े का छोर, शरण आश्रय, अवलम्ब।—गीर (गु०) बसनेवाला, दावा करने वाला, पीछे पड़ने वाला। [ताम्रलिप्त)।

दामलिप्त तद्० (पु०) ताम्रलिप्त देश, (देखो

दामवती तद्० (स्त्री०) माला, स्रक्, फूलों की माला।

दामाञ्जन तद्० (पु०) अश्वादि का पादबन्धन रज्जु पिछाड़ी, घोड़े के पिछले पैर बाँधने का रस्सी।

दामाद (पु०) जमाता, कन्यापति।

दमासाह (पु०) दिवालिया जिसकी जायदाद पावने वालों में उनके पावने के अनुसार बँट जाय।

दामासाही दे० (स्त्री०) यथार्थ भाग, उचित भाग के अर्थ।

दामिनी तद्० (स्त्री०) बिजली, तड़ित, विद्युत्। यथाः—

दोहा।

दामिनी दमकि रही घन माहीं।
खल की प्रीति यथा थिर नाहीं ॥—रामायण।

दामी दे० (स्त्री०) कर, भाग, लगती, लगान, राज देश कर।—लगाना (क्रि०) कर लगाना, कर ठहराना।—घासिख्वात (पु०) गाँव के प्रधान करदाता। [होता है।

दामीयात दे० (पु०) वस्तुविशेष, जिससे रक्त विकार

दामोदर तद्० (पु०) [दाम+उदर] श्रीकृष्ण का एक नाम। कहते हैं श्रीकृष्ण लड़कई में बड़े चञ्चल थे। घर की वस्तुओं को यह तोड़ फोड़ डालते थे, इसी कारण यसोदा (कृष्ण को पोषिका माता) ने श्रीकृष्ण की कमर में रस्सी बाँध कर उन्हें ओखली से बाँध दिया और स्वयं निश्चित होकर काम करने लगीं। इधर श्रीकृष्ण भी समय पाकर वैसे ही घर से निकल पड़े, उनके घर के पास ही दो पेड़ थे। उन्हीं के बीच से वे निकलने लगे, परन्तु ओखली बँधी रहने के कारण निकल न सके, उन्होंने निकलने के लिये ज्योंहीं ज़ोर लगाया त्योंही वे दोनों पेड़ टूट गये। तभी से श्रीकृष्ण का नाम दामोदर हुआ।

दामोदर गुप्त तद्० (पु०) संस्कृत का एक कवि यह कवि काश्मीरनिवासी थे। कुट्टनीमत नामक एक ग्रन्थ इनका बनाया संस्कृत साहित्य में पाया जाता है। काश्मीर के इतिहास राजतरङ्गिणी से मालूम पड़ता है कि यह कवि महाराजा जयापीड़ के मन्त्री थे इनका समय सन् ७७२ से ८०१ तक विद्वानों ने अनुमान किया है, अतएव दामोदर गुप्त का भी यही समय मानना चाहिये। क्षेमेन्द्र की समयमातृका और इनका कुट्टनीमत ये दोनों एक ही प्रकार के और एक ही उद्देश से लिखे गये हैं। वेश्याओं के फन्दे से बचाने के लिये ही उन्होंने कुट्टनीमत नामक ग्रन्थ लिखा है। वेश्याओं की चालाकियाँ इसमें खूब साफ़ दिखलाई गई हैं। यद्यपि इसका विषय अश्लील है, तथापि इसकी उपयोगिता की ओर ध्यान देने से इसकी उत्तमता माननी पड़ती है। मेरी समझ से तो विद्या में न सही, परन्तु कविता में पण्डितराज जगन्नाथ से इनकी तुलना कई अंशों में की जा सकती है।

दामोदर मिश्र तद्० (पु०) ये कवि भोजराज के समकालीन हैं, इन्होंने ही हनुमन्नाटक का संग्रह किया है। इस ग्रन्थ के संग्रह करने के अतिरिक्त और कोई इनका उल्लेखनीय ग्रन्थ नहीं है। ग्यारहवीं सदी इनका समय बताया जाता है।

दाम्पत्य तद्० (पु०) परिणयावस्था, विवाह की अवस्था, स्त्रीपुरुषसम्बन्धी।—मुक्तिपत्र (पु०) तिलाक़नामा जिस पत्र को लिख कर स्त्री पुरुष आपस का सम्बन्ध तोड़ देते हैं। यह रीति हिन्दुओं की नहीं, किन्तु आधुनिक सभ्य जातियों की है।

दाम्भिक तद्० (पु०) दम्भयुक्त, अहङ्कारी, आत्मश्लाघी, आत्मप्रशंसा करने वाला, पाखण्डी, धूर्त। (पु०) बकपक्षी।

दाय तद्० (पु०) यौतुक आदि देयधन, कन्यादान के अनन्तर वर या वर के पिता को दिया जानेवाला धन, पैतृकधन, पिता के धन का भाग, वैवाहिक धन, बरौती, दायज, विपत्ति, आपद्।—बन्धु (पु०) भ्राता, दायद, साथ रहनेवाले पिता के धनाधिकारी।—भाग (पु०) मृत पिता आदि का धनविभाग, ग्रन्थ विशेष, धर्मशास्त्र का ग्रन्थ, जिसमें धनाधिकारियों का निरूपण है। स्वत्वनिरूपक धर्मशास्त्र का अङ्ग विशेष।

दायक तद्० (पु०) दाता, देनेवाला, दान करने वाला। [दान, यौतुक, दहेज।

दायजा तद्० (पु०) दाय, दाइजा, ब्याह सम्बन्धी

दायरा (पु०) मण्डल, वृत्त, मण्डली, कक्षा, डफली, खँजड़ी।

दाया तद्० (पु०) दया, दावी, अभियोग, वाद।

दायाँ (गु०) दहिना।

दायाद तद्० (पु०) पुत्र ज्ञाति, सपिण्ड, उत्तराधिकारी, कुटुम्ब, परिवार, धनाधिकारी। [कारिणी।

दायादी तद्० (स्त्री०) कन्या, दुहिता, उत्तराधि-

दायाद तत्० (पु०) [दाय+आद] पिता के धन पाने का अधिकार। [होना निश्चित हो चुका है।
दायित तत्० (वि०) निश्चित अपराधी, जिसका दोषी
दायित्व तत्० (पु०) उत्तरदायित्व, जवाबदार, जिम्मेदारी।
दायी तत्० (वि०) दानशील, अपयाबल, भारबल, क्लेशयुक्त, प्रतिवादी, किसी काम के बनने या बिगड़ने का उत्तरदाता।
दार तत्० (पु०) पत्नी, जाया, भार्या, स्त्री, लुगाई। —कर्म (पु०) विवाह, पाणिग्रहण, ब्याह। —त्यागी (वि०) स्वपत्नी त्यागी, अपनी स्त्री को छोड़ देने वाला।—संग्रह (पु०) विवाह, पाणिग्रहण। [शिशु, बालक।
दारक तत्० (पु०) अस्त्रविशेष, काटने का अस्त्र, पुत्र,
दारचीनी तत्० (स्त्री०) दारुचीनी, चीन देश की लकड़ी, दालचीनी। [फाड़ना या चीरना।
दारण तत्० (पु०) विदीर्ण करना, फाड़ना, बीच से
दारद तत्० (पु०) विषविशेष, पारा, हिंगुल।
दारमदार दे० (पु०) निर्भर, आश्रय, ठहराव।
दारय दे० (वि०) नाश करे, विदीर्ण करे।
दारा तत्० (स्त्री०) जाया, भार्या, स्त्री, पत्नी। —धिगमन (पु०) [दारा+अधिगमन] पाणिग्रहण, विवाह, दाराप्राप्ति।—पत्य (पु०) [दारा+अपत्य] स्त्री पुत्र।
दारिउँ (पु०) अनार, दाड़िम।
दारिका तत्० (स्त्री०) कन्या, पुत्री, दुहिता, तनया।
दारित तत्० (वि०) कृतविदारण, कृतभग्न, तोड़ा हुआ, फाड़ा हुआ [कंगाली।
दारिद तद्० (पु०) दारिद्रय, दीनता, निर्धनता,
दारिद्र, दारिद्रय तत्० (पु०) दरिद्रता, दीनता, दुःख, दैन्य, अन्न आदि का कष्ट, निर्धनता।
दारी तत्० (पु०) बहु दाराविशिष्ट, परदारागामी, व्यभिचारी, लम्पटता, क्षुद्ररोग विशेष, विवाह, पति। (स्त्री०) युद्ध में पकड़ी हुई दासी।—जार (पु०) गाली विशेष, दासीपति, गुलाम, दासीपुत्र।
दारु तत्० (पु०) काष्ठ, लकड़ी, देवदारु वृक्ष। —कदली (स्त्री०) वनकदली, वनकेला।—गन्धा (स्त्री०) गन्धद्रव्य विशेष।—गर्भा (स्त्री०) दारुमयी स्त्री, काष्ठनिर्मित पुत्तलिका, कठपुतली। —चीनी (स्त्री०) एक वृक्ष का छाल, दालचीनी। —ज (वि०) काष्ठमय, काठ का बना।—जचित्र (पु०) काठ की पुतली, कठपुतली।—निशा (स्त्री०) दारुहरिद्रा, दारुहरदी।—फल (पु०) चिलगोज़ा।—मय (वि०) काष्ठमय, काष्ठनिर्मित, काठ का बना हुआ मकान आदि।—हरिद्रा (स्त्री०) दारुहरदी।—हस्तक (पु०) काठ का बना हाथी, काठ की कलछी।
दारुक तत्० (पु०) देवदारु, वृक्षविशेष, श्रीकृष्ण के एक सारथि का नाम, सुभद्राहरण के समय इसने अर्जुन से कहा था कि मैं यादवों के विरुद्ध रथ नहीं हाँक सकता इस कारण आप मुझे बाँधकर जहाँ चाहें वहाँ ला सकते हैं। मृत्यु के समय का श्रीकृष्ण का संवाद इसने अर्जुन को सुनाया और दुःखी होकर स्वयं वन में चला गया।
दारुण या दारुन तत्० (पु०) चित्रक। (वि०) भयानक, घोर, कठोर, कठिन, असह्य।—वीर्य (वि०) भयानक, घोर, भीम।
दारू दे० (स्त्री०) मद, शराब, मदिरा, बारूद।
दारूड़ा दे० (पु०) मद, शराब।
दारूड़ी दे० (स्त्री०) मद, मदिरा, शराब।
दारोगा (पु०) प्रबन्धक, दरोगा, थानेदार।
दारयो दे० (पु०) दाड़िम, अनार, यथाः—

दोहा

सुभर भरयो तव गुनकननुं पाक्यो कुवत कुचाल।
क्यों धौं दारयो ज्यों हियो दरकत नाहि न लाल॥
—बिहारी सतसई।

दार्ढ्य तत्० (पु०) दृढ़ता, कठिनता, काठिन्य।
दार्वा तत्० (स्त्री०) औषधविशेष, रसोत।
दार्वी तत्० (स्त्री०) दारुहरिद्रा, दारहरदी।
दार्शनिक तत्० (वि०) दर्शनशास्त्रवेत्ता, दर्शनशास्त्रज्ञ। [आदर्शित।
दार्ष्टान्त तत्० (वि०) उपमिति, उपमेय, आदर्श,
दार्ष्टान्तिक (पु०) दृष्टान्त सम्बन्धी।
दाल दे० (स्त्री०) दला हुआ घना अरहर मूँग आदि, दलहन।—गलना (वा०) प्रभाव होना, पूँछ-ताछ।
दालिद्र तत्० (पु०) दारिद्रय, रंक।
दाड़िम दे० (पु०) अनार, दाड़िम।

दाघ तत्० (पु०) जङ्गल, वन, वृक्ष विशेष, बारी, उपताप, दावानल, वनाग्नि । [बजाना ।
दाबन दे० (पु०) पीड़न, मर्दन, मींसना, डाँट से वाद्य
दाबना दे० (क्रि०) दबाना, रस निकालना, डाँठ से वाद्य निकालना ।
दाबरि या दाबरी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की रस्सी, जिससे प्रतार से बैल बाँधे जाते हैं और उन्हीं से रौंदवा कर भूसा और अन्न पृथक् करते हैं ।
दावा दे० (पु०) हक़, स्वत्व, स्वत्वप्राप्ति के लिये निवेदन ।—गीर (पु०) दावा करने वाला ।
दावाग्नि तत्० (पु०) दावानल ।
दावात (स्त्री०) मसीपात्र, दवात ।
दावादार (पु०) अपना अधिकार बताने वाला ।
दावानल तत्० (पु०) दवाग्नि, दाववन्हि, वन की आग, वनाग्नि, वनोद्भव अग्नि ।
दाविनी (स्त्री०) बिजली, स्त्रियों के माथे का एक गहना ।
दावी दे० (स्त्री०) याचना, प्रार्थना, नालिश ।
दाश तत्० (पु०) मछली पकड़ने वाला, मल्लाह, कर्णधार, मछुआ, धीवर ।
दाशरथ या दाशरथि तत्० (पु०) दशरथापत्य, दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र आदि ।
दाशार्ह तत्० (पु०) विष्णु, नारायण ।
दाश्व तत्० (पु०) दानकर्ता, दाता, दानशील ।
दास तत्० (पु०) भृत्य, किङ्कर, कैवर्त, धीवर, शूद्र, टहलुआ । उपनाम विशेष, साधुओं की एक पदवी ।—ता (स्त्री०) पराधीनता, परतन्त्रता, सेवकाई, पराधीनभाव, सेवकभाव ।—त्व (पु०) दास्य, सेवकभाव ।—नन्दिनी (स्त्री०) व्यासमाता, सत्यवती ।—वृत्ति (स्त्री०) पराधीन, जीवन, नौकरी, दासता ।—नुदास (पु०) सेवक का सेवक ।
दासा दे० (पु०) एक प्रकार का काठ, जो लकड़ी के नीचे दीवार पर रखते हैं, हँसुआ, खोरी की खूटी ।
दासी तत्० (स्त्री०) भुजिष्या, कर्मकरी, किङ्करी, भृत्य स्त्री, शूद्र परिचारिणी, परिचारिका, चेली, सेवकी, लौंडी ।
दास्तान (स्त्री०) वृत्तान्त, वर्णन, कथा ।
दास्य तत्० (पु०) दासत्व, सेवा, जीविका, भृत्यता, नौकरी ।
दाह तत्० (पु०) दहन, भस्मीकरण, ज्वाला, ताप, जलन, आँच, सेक, सुलगाव ।—कर्म या क्रिया (पु०) मुरदे को जलाने का कर्म ।—जनक ज्वालाकर ।—देना (वा०) दग्ध करना, अन्त्येष्टि संस्कार करना, मुर्दा जलाना ।—सर (पु०) प्रेतावास, श्मशान, शवदाह स्थान, चिताभूमि ।—हरेंया (पु०) औषध विशेष, वीरण मूल, खसखस, सुगन्धित घास विशेष । [वाला, दाह देने वाला ।
दाहक दे० (पु०) दाहकर्ता, दाह करने वाला, जलाने
दाहना दे० (क्रि०) जलाना, बालना, भस्म करना । (क्रि०) दहिना, दक्षिण भाग । [क्रिया ।
दाहा दे० (क्रि०) जलाया । (पु०) जलन, भस्म
दाहात्मक तत्० (वि०) दाहस्वरूप, दाहमय ।
दाहिन या दाहिना दे० (वि०) दहना, दक्षिण, अनुकूल, सरल, सीधा । [उपयुक्त, जलाने योग्य, दाहाई ।
दाह्य तत्० (वि०) [दह् + यत्) दाह करने के
दाक्ष्य तत्० (पु०) दक्षता, निपुणता ।
दिअली (स्त्री०) बहुत छोटा मिट्टी का दीपक ।
दिआ (पु०) दीया, दीपक ।—बत्ती (स्त्री०) दिया जलाने का ।
दिक् तत्० (पु०) दिशा, दिग्, ओर ।—पति (पु०) दिशाध्यक्ष, दिक्पाल, दश दिशाओं के अधिपति । क्रम से वे ये हैं, पूर्व का इन्द्र, अग्निकोण का अग्नि, दक्षिण का यमराज, नैऋत्य कोण का नैऋत्य, पश्चिम का वरुण, वायव्य कोण का पवन, उत्तर का कुबेर, ईशान कोण का महादेव, ऊपर की दिशा का ब्रह्मा और नीचे की दिशा का अनन्त या विष्णु पति हैं ।—शूल (पु०) दिशाविशेष में जाने का निषिद्ध दिन । शनि और सोमवार पूर्व का, बृहस्पतिवार दक्षिण का, रवि और शुक्रवार पश्चिम का और मङ्गल बुध उत्तर का दिक्शूल है । अर्थात् निर्दिष्ट दिनों में निर्दिष्ट दिशा की यात्रा निषिद्ध है ।
दिक़ दे० (वि०) दुःखी, व्यथित, कष्टयुक्त, क्लेशी ।
दिक़त (स्त्री०) परेशान, कठिनाई, तंगी ।
दिक़दार दे० (वि०) रोगपीड़ित, व्यथित, रोगी, बीमार, दुःखी, दीन, कष्टग्रस्त, क्लेशयुक्त ।
दिखना (क्रि०) दिखाई पड़ना ।

दिखलाना दे० (क्रि०) समझाना, बुझाना, दरसाना, बताना, बतलाना, प्रकटित करना, प्रकाशित करना, प्रकाश करना, लखाना, लक्षित कराना, प्रत्यक्ष कराना, साक्षात्कार कराना।

दिखराय दे० (क्रि०) दिखा कर, जना कर।

दिखलावा दे० (पु०) ठाट, धूमधाम, बाहरी साज-बाज।

दिखाई दे० (स्त्री०) लखाई, सुझाई। —देना दे० (क्रि०) मालूम होना, मालूम पड़ना।

दिखाऊ दे० (वि०) दिखावटी, सुन्दर, सजीला, सुहावना, बाहरी सुन्दरता, सुश्री।

दिखाना दे० (क्रि०) बतलाना, सुझाना, प्रत्यक्ष कराना दरसाना।

दिखाव या दिखावट दे० (पु०) बाहरी चटकमटक, टीमटाम, टीपटाप।

दिखावटी (गु०) दिखौआ, बनावटी।

दिखावा (पु०) बाहरी तड़क भड़क।

दिखैया (पु०) दिखाने वाला, देखने वाला।

दिखौआ (पु०) बनावटी।

दिग् तद्० (स्त्री०) दिशा, दिक्, ओर, देश, पक्ष।—अन्त (पु०) दिशा का अन्त, दिग्मण्डल, चक्रवाल, दिशाओं की परिधि।—अन्तर अन्तराल (पु०) शून्य, आकाश, व्योम, नभ। —अम्बर (गु०) विवस्त्र, वस्त्ररहित, नग्न, नंगा। (पु०) शिव, संन्यासी।—गज (पु०) दिशाओं के हस्ती, आठ दिग्गज हैं उनके नाम ये हैं—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम, सुप्रतीक।—दर्शन तद्० (पु०) बहुदर्शन, सर्वभावालोकन, इङ्गितमात्र से दिखाना। —दाह (पु०) देशदाह, अग्नि का उत्पात। —घ (वि०) विषाक्त, विष से बुझाया हुआ बाण।—पाल (पु०) दिशाओं के रक्षक इन्द्र वरुण, यम, कुबेर आदि।—वासाः (वि०) नग्न, विवस्त्र, नङ्गा।—विजय (पु०) विद्या अथवा युद्ध के द्वारा देशविजय।—विजयी (वि०) देशजयी, विश्ववेत्ता, सर्वत्र जयशील।—विदिक् (स्त्री०) सकल दिशाओं में, चारों ओर।—भ्रम (पु०) दिशाओं का अन्यथा ज्ञान, दूसरी दिशा को दूसरी दिशा समझना।—भ्रमण (पु०) सर्वत्र भ्रमण, दिक्पर्यटन।—मण्डल (पु०) चक्रवाल, दिगन्त।—मुख (पु०) दिशाभिमुख।—व्यापी तद्० (वि०) सर्वव्यापी।—पान, वार तद्० (पु०) पहरू।—शूल तद्० (पु०) दिशाशूल।

दिग्गी दे० (स्त्री०) दिग्घी, तालाब, वापी, पोखरा।

दिग्घी दे० (स्त्री०) दीर्घिका, तालाब, पोखरा, वापी, तड़ाग।

दिङ्नाग तद्० (पु०) एक बौद्ध दार्शनिक पण्डित का नाम, ये बौद्धमत के आचार्य भी थे। ये काञ्ची में रहते थे। इनको कालिदास के समकालीन होना पण्डित लोग बताते हैं, अतः कालिदास का ६०० ई० समय इनका भी समय माना जाता है।

दिठवन (स्त्री०) कार्तिक शुक्ल ११ शी, देवी स्थान की एकादशी।

दिठियार (गु०) नेत्र वाला, आँख वाला, प्रत्यक्ष।

दिठौना दे० (पु०) बच्चों का तिलक जो दृष्टिदोष हटाने के लिये किया जाता है। छुधमुँहे बालकों के माथे पर लगाया हुआ काजल का बिन्दा जो इस लिये लगाया जाता है कि उन्हें दूसरे की नज़र न लगे।

दिढ़ाड़ दे० (पु०) तृणविशेष।

दिढ़ाना तद्० (क्रि०) दृढ़ करना, ठहरना।

दितवार (पु०) रविवार।

दिति तद्० (स्त्री०) प्रजापति दक्ष की कन्या, कश्यप की स्त्री और दैत्यों की माता का नाम। देवताओं की लड़ाई में दैत्यों के नाश होने पर दिति ने एक दिन अपने पति से इन्द्र को परास्त करने वाले एक पुत्र की प्रार्थना की, कश्यप दिति की प्रार्थना पूर्ण करके बोले, तुमको हजार वर्ष तक गर्भ धारण करना होगा और प्रसव होने तक बहुत ही शुद्धतापूर्वक रहना होगा, दिति भी बड़ी सावधानी से पति के बताये नियमों का पालन करने लगी। इस समाचार को पा कर इन्द्र व्यथित हुए, वह मौक़ा देखने लगे। एक दिन बिना पैर धोये दिति सो गई, उसी अवसर पर इन्द्र ने वज्र से गर्भ के ४९ खण्ड कर दिये। उसी गर्भ से उत्पन्न पुत्रों का नाम मरुत है।

दितिज (स्त्री०) दैत्य, दिति से उत्पन्न।
दिदार (पु०) देखा देखी, दर्शन।
दिदृक्षा सत्० (स्त्री०) दर्शनेच्छा, देखने की इच्छा, देखने की ख्वाहिश।
दिदृक्षु (गु०) देखने की कामना रखने वाला।
दिधिक्षा सत्० (स्त्री०) दहनेच्छा, दहन करने की इच्छा, जलाने की इच्छा।
दिधिषु सत्० (स्त्री०) द्विरूढा, दो बार ब्याही स्त्री। —पति (पु०) द्विरूढापति, दो बार ब्याही स्त्री का पति, विधवापति।
दिन सत्० (पु०) सूर्यज्योति से नियमित काल, वासर, दिवस, घस्र, अह। —कर (पु०) दिनपति, दिनमणि, सूर्य, रवि। —काटना (वा०) समय बिताना, गुज़र करना, दुःख या आलस्य से दिन बिताना। —केशर (पु०) तम, अन्धकार। —का दिन (वा०) समस्त दिन, समूचा दिन। —खुलना (वा०) अच्छे दिन आना, सुख का समय, उन्नति होना, वृद्धि होना, बढ़ती होना। —गँवाना (वा०) आलस में पड़कर बैठे रहना, वृथा समय खोना। —चढ़ना (वा०) अधिक समय बिताना विलम्ब होना स्त्रियों के रजोधर्म होने में विलम्ब होना। —चढ़ाना (वा०) विलम्ब करना, अति काल करके किसी काम को प्रारम्भ करना आलस से कार्य समय बिता देना। —चर्या (स्त्री०) दिन भर का काम —ज्योति (पु०) आतप, धूप, घाम। —ढलना (वा०) दिन घटना, दिन चला जाना, दिन पलटना, अच्छा या बुरा दिन आना, समय का परिवर्तन होना। —दानी (पु०) प्रतिदिन दाता, प्रतिदिन दानकर्त्ता। —दिन (पु०) प्रति दिन। —दुःखित (वि०) चक्रवाक पक्षी, चकवा (वि०) दिनहीन, दरिद्र, निःस्व, निर्धन। —नाथ (पु०) दिनकर, दिवाधिपति, सूर्य। —पड़ना (वा०) सन्ध्या होना, दिन बीतना दुःख पड़ना, दुःख आना। —फिरना (वा०) भाग्य खुलना, बुरे दिनों का चला जाना और अच्छे दिनों का आना। —प्रतिदिन (वा०) प्रति दिन, दिन पर दिन। —बल (पु०) पञ्चम, षष्ठ सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश राशि। —भरना (वा०) दुःख और कष्ट में समय बिताना। —मणि या मणि (पु०) दिवाकर, भानु, सूर्य। —मान (पु०) दिवस काल, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, सूर्योदय और सूर्यास्त से नियमित काल। —मुँदना (वा०) दिन छिपना, सूर्यास्त होना सन्ध्या होना। —मुख (पु०) प्रात काल, सवेरा भिनसार, बिहान। —मूर्द्धा (पु०) उदयाचल, पूर्वपर्वत।
दिनकर सत्० (पु०) संस्कृत के एक पण्डित और कवि इन्होंने कालिदास के रघुवंश की टीका बनाई थी। १३८५ ई० में रघुवंश की टीका इन्होंने बनायी ऐसा कुछ लोगों का कहना है। ये बौद्ध धर्मावलम्बी थे, सम्भव है इन्हीं की टीका को लक्ष्य करके मल्लिनाथ ने "दुर्व्याख्या विषमूर्च्छिता" कहा हो। यह दिन कर वेदभाष्यकर्ता सायण और सर्वदर्शनसंग्रहकर्त्ता माधव से प्राचीन जँचते हैं। इनका समय चौदहवीं सदी का पिछला भाग ही माना जा सकता है। इन्हें मिश्र की उपाधि थी, इनका पूरा नाम दिनकर मिश्र था। (२) यह बम्बई प्रदेश के रत्नगिरि ज़िला के देवला ग्राम में १८११ ई० में उत्पन्न हुए थे। इनका नाम दिनकर राव था। इनका पिता महाराष्ट्र ब्राह्मण थे और उनका नाम राघव राव था। दिनकर राव चार पीढ़ियों से ग्वालियर में रहते थे। वहाँ इनसे पूर्व पुरुष ऊँचे ऊँचे पदों पर थे। दिनकर राव संस्कृत और फारसी के विद्वान् थे। पहले पहल इनको हिसाबनवीस का काम दिया गया। इनकी योग्यता और प्रभुभक्ति के कारण इनका पद बढ़ता ही गया। अन्त में यह ग्वालियर राज्य के दीवान बनाये गये। उस समय राज्य की अवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी। ख़ज़ाने में रुपये नहीं थे। उन्होंने पाँच हज़ार के स्थान में दो हज़ार अपना मासिक वेतन कर लिया था। राज्य के कामों पर इन्होंने उपयुक्त मनुष्यों को रख कर उत्तम प्रबन्ध किया। सिपाही विद्रोह के समय इन्होंने अङ्गरेज़ी सरकार की बड़ी सहायता की था, उस समय के बड़े लाट ने इनकी सहायता के बदले में इन्हें काशी के ज़िले में एक बड़ी ज़मींदारी दी। सन् १८५६ ई० में इन्होंने

ग्वालियर का मन्त्रीपद त्याग दिया और कुछ दिनों तक धौलपुर में राज के सुपरिंटेंडेंट का काम करते रहे, तदनन्तर बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सभ्य बनाये गये। सन् १८६१ ई० में इन्हें के० सी० एस० आई० की पदवी गवर्नमेंट ने दी। पुनः ये राजा बनाये गये, लार्ड डफरिन ने इनकी राजा की उपाधि वंशगत कर दी। वृद्ध अवस्था में उन्होंने सभी कार्मों को छोड़ कर भगवद्भजन में मन लगाया। सन् १८६६ ई० में इस एक भारतीय प्रभुभक्त की जीवन लीला समाप्त हुई।

दिनाई दे० (स्त्री०) दाद, दद्रु, सेंहुआ। [दिन का भाग।

दिनांश तद्० (पु०) पूर्वाह्न, मध्याह्न, सायाह्नादि

दिनादि तद्० (पु०) [दिन+आदि] प्रभात, प्रातक काल, सवेरा। [दिनक्षय।

दिनान्त तद्० [दिन+अन्त] दिवसावसान, सन्ध्या,

दिनमार दे० (पु०) डेनमार्क देश के वासी।

दिनारा दे० (वि०) पुराना, बासी, रखा हुआ।

दिनालोक तद्० (पु०) [दिन+आलोक] सूर्य का प्रकाश, सूर्यकिरण, धूप।

दिनी दे० (वि०) पुराना, बहुत दिनों का।

दिनेश तद्० (पु०) [दिन+ईश] दिवपति, दिनकर, सूर्य, भानु।

दिनेर, दिनैला दे० (वि०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिनौंधी तद्० (वि०) दिन का अन्धा, जिसे दिन में न सूझे।

दिपति (स्त्री०) दीप्ति, झलक, आभा।

दिपना (क्रि०) चमकना। [दी जाने वाली परीक्षा।

दिव (पु०) निर्दोषता और कथन की सत्यता के लिये

दिमाक या दिमाग़ (पु०) मस्तिष्क, भेजा, घमंड। —दार (पु०) प्रबल, मानसिक शक्ति।

दियट दे० (स्त्री०) दीपक रखने की ऊँची बैठकी, दीवट।

दियरा (पु०) एक प्रकार का पकवान।

दिया दे० (स्त्री०) दीपक, दीप, चिराग़। —बत्ती (स्त्री०) दिया जलाने का काम। —सलाई (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध दीप बालने की एक वस्तु, आगकाड़ी।

दिल (पु०) कलेजा, मन, चित्त, इच्छा, साहस। —गीर (गु०) उदास, खिन्न। —चला (गु०) बहादुर, उदार, दाता, दानी। —चस्प (गु०) मनोरञ्जक, चित्ताकर्षक। —जमई (स्त्री०) सन्तोष, विश्वास। —जला (गु०) दग्ध हृदय, शोकाकुल। —दरियाव (पु०) उदार, दानी, दाता। —पसंद (गु०) मनोहर, बूटेदार वस्त्र विशेष, आमविशेष। —बहार (पु०) रंग विशेष —रुबा (पु०) प्यारा।

दिलवाना दे० (क्रि०) दिलाना, दान कराना, देना धातु की प्रेरणार्थक क्रिया।

दिलवाली दे० (वि०) दिल्ली का वासी, दिल्ली का बना। (स्त्री०) उदार स्त्री, साहस वाली स्त्री।

दिलवैया दे० (वि०) दिलाने वाला, दान करानेवाला, प्रेरणा करके दान करानेवाला।

दिलाना दे० (क्रि०) दिलवाना, दान कराना।

दिलासा (पु०) ढाँढस।

दिली (गु०) हार्दिक, अत्यन्त घनिष्ठ।

दिलीप तद्० (पु०) सूर्यवंशी राजा, यह रघु राजा के पिता थे। उन्होंने ११ अश्वमेध यज्ञ किये थे, कालिदास का रघुवंश इन्हीं के चरित्र से प्रारम्भ किया गया है।

दिलेर (गु०) साहसी, वीर, शूर। —ी (स्त्री०) साहस, उत्साह। [हंसोड़, मसख़रा।

दिल्लगी (स्त्री०) हँसी मज़ाक। —बाज़ (गु०)

दिल्ली दे० (पु०) एक प्रसिद्ध नगर का नाम, भारत की राजधानी। [दिवा, दिन।

दिव तद्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, आकाश, वन,

दिवरानी (स्त्री०) पति के छोटे भाई की स्त्री।

दिवस तद्० (पु०) दिन, दिवा, अह्नः, अह, वासर। —मुख (पु०) प्रभात, प्रातःकाल।

दिवसात्यय तद्० (पु०) दिन की समाप्ति, सायं, सायकाल, सन्ध्या। [सुरपति।

दिवस्पति तद्० (पु०) [दिवस्+पति] इन्द्र, देवराज,

दिवा तद्० (पु०) दिन, दिवस, वासर। —कर (पु०) सूर्य, दिवाकर, दिनमणि। संस्कृत के एक कवि का नाम। राजशेखर ने अपने पूर्व के कवियों में इनका भी नाम लिया है। ये कन्नौज के अधीश्वर हर्ष-वर्द्धन के सभासदों में से थे। श्रीहर्ष का समय ६०० ई० के लगभग निश्चित हुआ है, अतएव

उनके समापवित्त दिवाकर का भी यही समय मानना चाहिये। यद्यपि ये नीच जाति के थे, तथापि इस कारण इनकी विद्या का अनादर नहीं किया जाता था। हर्षवर्द्धन की सभा में बाण, मयूर आदि के समान इनकी प्रतिष्ठा थी। इनके विषय में एक संस्कृत का श्लोक है :—

अहो प्रभावो वाग्देव्या यन्मातङ्गदिवाकरः,
श्रीहर्षस्याभवत्सभ्यः समो बाणमयूरयोः ॥

इनका पूरा नाम मातङ्गदिवाकर था।

(२) भारद्वाज गोत्रोत्पन्न एक प्रसिद्ध ज्योतिषी ब्राह्मण। इनके पिता का नाम नृसिंह था। शिव दैवज्ञ इनके चाचा और विद्यादाता गुरु थे। प० सुधाकर द्विवेदीजी इनका जन्मकाल शाके १५२८ या १६०६ ई० बतलाते हैं। इनके बनाये कई एक ग्रन्थ हैं। उनमें जातकपद्धति नामक सन् १६१६ ई० में निर्मित हुआ था। गोदावरी नदी के तीर पर गोल नामक ग्राम में इनका निवास-स्थान था।—न्ध (वि०) दिन का अन्धा, जिसे दिन में नहीं सूझता हो, दिनौंध। (पु०) उलूक, उल्लू।—भीत (पु०) पेचक, उलूक, उल्लू, चोर, तस्कर।—मणि (पु०) सूर्य, दिनकर। —मध्य (पु०) मध्यान्ह, दिन का मध्यभाग द्वितीय प्रहर।

दिपान (पु०) मन्त्री, वज़ीर। (गु०) पागल, ख़ब्ती।

दिवाला दे० (पु०) ऋण चुकाने की अशक्ति, न्यास किये हुए धन को न देना।

दिवाली तद्० (स्त्री०) दीपावली, कार्त्तिक मास की अमावस्या का त्योहार, जिस दिन लक्ष्मीपूजन तथा दीपदान किया जाता है।

दिविज तत्० (वि०) स्वर्गीय, दिव्य, अलौकिक।

दिविरथ तत्० (पु०) राजा विशेष, महाराज अङ्ग का पुत्र और दधिवाहन का पौत्र, दिविरथ का पुत्र धर्मरथ और पौत्र चित्ररथ था।

दिविषद् तत्० (पु०) देवता, अमर, देव।

दिवेश तत्० (पु०) इन्द्र, देवराज।

दिवोदास तत्० (पु०) वध्यश्व के पुत्र। ये मेनका के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनकी बहिन का नाम अहिल्या था।

(२) काशिराज मनुवंशीय रिपुञ्जय के पुत्र, इन्होंने तपस्या द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न किया था और वर पाया था। ब्रह्मा के वर से नागराज की कन्या अनङ्गमोहिनी से इनका विवाह हुआ था और स्वर्ग से कुसुम और रत्न इनको मिले थे। इसी कारण इनका दिवोदास नाम पड़ा था। इन्होंने बहुत दिन तक काशी का राज्य किया था।

(३) इनके प्रतर्दन नाम का एक पुत्र था। इनके पिता का नाम सुदेव था। आयुवंशीय सुहोत्र पुत्र काश्य प्रथम राजा, इनके पुत्र काशिराज, या काश्य इनके नाम पर ही उस राज्य का काशी नाम पड़ा। उसी वंश में हैहय नामक एक राजा उत्पन्न हुए। भद्रश्रेण्य हैहय के पुत्रों ने इन्हें मार डाला। उसके बाद सुदेव काशी के राजा हुए, वह भी हैहय वंशियों के द्वारा मारे गये। तदनन्तर उनके पुत्र दिवोदास काशी के राजा हुए और इन्होंने काशी को खूब यत्न पूर्वक सुरक्षित किया। उस समय काशी गङ्गा के उत्तर तीर और गोमती के दक्षिण तीर तक विस्तृत थी। भद्रश्रेण्य के पुत्र ने काशी पर चढ़ाई की और उसने युद्ध में दिवोदास को हरा दिया। तदनन्तर भद्रश्रेण्य के पुत्र दुर्दम को दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने हराया। [अमर।

दिवौकस तत्० (पु०) स्वर्ग निवासी, देवता, देव,

दिव्य तत्० (वि०) स्वच्छ, स्वर्गीय, सुन्दर, मनोज्ञ, ऐश्वरिक, ईश्वर सम्बन्धी। (पु०) शपथ। —कारी (वि०) कोषग्राही, शपथकर्त्ता।—कुण्ड (पु०) कामरूपी नामक नाम पर्वत के पूर्वभागस्थ पुष्करणी विशेष।—गन्ध (पु०) लवङ्ग, लौंग। —गायन (पु०) स्वर्गीय गायक, गन्धर्व।—चक्षु (पु०) ज्ञानचक्षु, उपचक्षु।—दोहद (पु०) अयाचित, उपस्थित, बिना माँगे प्राप्त।—दृष्टि (वि०) अलौकिकज्ञान सम्पन्न, सर्वज्ञ।—धर्मी (वि०) धार्मिक, धर्मात्मा, मनोज्ञ, मनोहर, रम्य।—रत्न (पु०) चिन्तामणि।—रथ (पु०) व्योमयान, देवता का विमान।—रस तद्० (पु०) पारा, पारद, रस।—लता (स्त्री०) दूर्वा। —वसन, वस्त्र (पु०) सुन्दर वस्त्र, मनोहर वस्त्र, स्वर्गीय कपड़े।—वाक्य (पु०) दैववाणी।

—ज्ञान (पु०) उज्ज्वल ज्ञान, अलौकिक ज्ञान, महाज्ञान।—स्थान (पु०) सुन्दर गृह, स्वर्गीय गृह, उत्तम वासस्थान।

दिव्याङ्गना तत्० (स्त्री०) सुन्दरी, वराङ्गना, मनोहरा स्त्री, उत्तमा सुन्दरी, स्वर्गीय स्त्री।

दिव्यादिव्य तत्० (पु०) [दिव्य+अदिव्य] अलौकिक मनुष्य, देव तुल्य मनुष्य, नायक विशेष।

दिव्योदक तत्० (पु०) [दिव्य+उदक] आकाश जल, तुषार, हिम।

दिश् तत्० (स्त्री०) दिक्, पूर्व आदि दस दिशाएँ।

दिशा तत्० (स्त्री०) दिश्, दिशा, दिक्।—शूल (पु०) दिक्शूल।

दिशि तत्० (स्त्री०) दिशा।—नाथ (पु०) दिक्पाल, दिशाओं के स्वामी।—प, पाल (पु०) दिक्पाल, दिशानाथ, लोकपाल, (पु०) दिशाओं के राजा, दिग्पाल।

दिश्य तत्० (वि०) दिग्भव वस्तु, दिग्जात, दिशाओं में उत्पन्न होनेवाली वस्तु, दिशा सम्बन्धी।

दिष्ट तत्० (पु०) भाग्य, दैव, निश्चय। (वि०) [दिश्+क्त] उपदिष्ट, उपदेश पाया हुआ।—बन्धक एक प्रकार के रहन या गिरवी रखने का ढंग इसमें महाजन को सिर्फ रुपयों का ब्याज मिलता है। भुक् (वि०) भाग्याधीन, भाग्यफल का भोग करने वाला। [अव्यय।

दिष्ट्या तत्० (अ०) हर्ष, अतिशय आनन्द सूचक

दिस (पु०) दिशा।

दिखना (क्रि०) दिखना।

दिसा (स्त्री०) दिसा।

दिसैया (गु०) देखने या दिखाने वाला। [विदेश,परदेश।

दिशावर, दिसावर तद्० (पु०) अपर देश, अन्य देश,

दिशावरी या दिसावरी तद्० (वि०) अपर देशीय, अन्य देशी, दूसरे देश का, दूसरे देश का माल। (पु०) एक प्रकार का पान।

दिहरा दे० (पु०) देवालय, देवस्थान, मन्दिर।

दिहली तद्० (स्त्री०) द्वार, देहली, डेवढ़ी, दोनों किवाड़ों के नीचे की लकड़ी।

दिहात (स्त्री०) देहात, गाँव।—ी (गु०) गँवैया, गाँव में रहनेवाला।

दीक्षक तत्० (पु०) दीक्षादाता, मन्त्रोपदेशकर्ता, गुरु, उपदेशक, मन्त्रदाता, धर्मोपदेशक।

दीक्षा तत्० (स्त्री०) भजन, पूजन, मत, संग्रह, गुरु गुरु से अपने इष्टदेव का मन्त्र ग्रहण, उपदेश।—कर्त्ता (पु०) गुरु, उपदेशक, दीक्षाकारक।

दीक्षित तद्० (वि०) [दीक्ष्+क्त] उपदिष्ट, गृहीत-मन्त्र, भजन करने में प्रवृत्त, कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक अल्ल, उपाधि। [पड़ना, दीठ पड़ना।

दीखना दे० (क्रि०) दिखाई देना, सूझना, दीख

दीठ तद्० (स्त्री०) दृष्टि, आँख, नेत्र, नयन, चक्षु, दर्शन, ताक।—बंद (स्त्री०) जादू, नज़रबंदी।

दीठा तद्० (गु०) द्रष्टा, दर्शक, देखने वाला।

दीठि तद्० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, नेत्र, नयन।

दीदा (स्त्री०) दृष्टि, नज़र, नेत्र।

दीदार (पु०) दर्शन, मुलाकात, भेंट। [बड़ी बहिन।

दीदी दे० (स्त्री०) बड़ी बहिन, बड़ी ननद, पति की

दीधिति तत्० (स्त्री०) किरण, रश्मी, तेज, न्याय के एक ग्रन्थ का नाम, पक्षधर मिश्र कृत एक न्यायग्रन्थ।

दीन तत्० (वि०) दरिद्र, निर्धन, निरन्न, दुःखी, म्लान, भीत।—चेतन (वि०) विषण्ण, अवसन्न, उद्विग्नचित्त, व्याकुल मानस।—चेता (गु०) निरहङ्कार, अभिमान शून्य, सीधा सादा।—ता, या ताई (स्त्री०) दरिद्रता, दुःख, अधीनता।—दयालु (वि०) दीनों पर दया करने वाला, दीनपालक, दुखियों का दुःख दूर करने वाला।—नाथ (पु०) दीनपालक, दीनरक्षक।—बन्धु (पु०) दीन पर कृपा करने वाले भगवान्।—वत्सल (वि०) कारुण्यात्मा, कृपालु, दयालु।

दीनानाथ तत्० (पु०) [दीना+नाथ] दीन के रक्षक, दीन के स्वामी, भगवान्।

दीनार तत्० (पु०) स्वर्णालङ्कार, मुद्रा, निष्क परिमाण, दो कर्ष परिमित सुवर्ण, व्यवहार की सुगमता के लिये मान करने की वस्तु, बत्तीस रत्ती भर सोना, सोने के पुराने सिक्के का नाम।

दीप तत्० (पु०) प्रदीप, दिया, आलोक, जलती हुई बत्ती की अग्निशिखा।—क तत्० (गु०) [दीप+अक्] प्रकाशक, द्योतक, शोभाकर, शोभा-

कारक। (पु०) दीप, दिया, काव्यालङ्कार विशेष, जहाँ उपमान और उपमेय दोनों का एक ही धर्म वर्ण किया जाय, वह दीपक अलङ्कार है। इसके दो भेद हैं दीपक और आवृत्त दीपक। यथाः—

दोहा

वर्ण्य अवर्ण्यन को धरमु जहँ वरनत हैं एक।
दीपक ताको कहत हैं भूषन सुकवि विवेक॥

उदाहरण—

कामिनी कन्त सों, जामिनी चन्द सों,
दामिनी पावस मेघ घटा सों।
कीरति दान सों, सूरति ज्ञान सों,
प्रीति बड़ी सनमान महासों॥
भूषन भूषन सों तरुनी,
नालिनी नव पूषन देव प्रभासों।
जाहिर चारिहुँ ओर जहान,
लसै हिंदुवान खुमान सिवासों।

—शिवराज भूषण।

—कज्जल (पु०) दिया की कजली।—किट्ट (पु०) दीपक की कजली, काजल।—तरु (पु०) दीप वृक्ष, दीपों के द्वारा निर्मित वृक्षाकार वस्तु विशेष जो दिवाली तथा अन्य उत्सवों में बनाया जाता है।—दान (पु०) दिया जलाना, दीपोत्सव करना।—ध्वज (पु०) कज्जल, काजल।—माला, मालिका (स्त्री०) दिवाली का त्योहार।—वृक्ष (पु०) झाड़ फानूस, दिअरौटी, झाड़।—शिखा (स्त्री०) दीपक की ज्वाला।

दीपन तद्० (पु०) [दीप+अनट्] (वि०) अग्निवर्द्धक पाचक, दीप्तिकारक, प्रकाशक।

दीपनी तद्० (स्त्री०) यवानी, अजवाइन, अजमोदा।

दीपनीया तद्० (स्त्री०) औषध धर्म विशेष, अजवाइन, अजमोदा। [दीप्तियुक्त।

दीपान्वित तद्० (वि०) शोभान्वित, दीप्तिविशिष्ट,

दीपिका तद्० (स्त्री०) ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष, रागिनी विशेष, दीपक, दीप।

दीपित तद्० (वि०) [दीप्+इत] दीप्त, प्रज्वलित, शोभित, शोभान्वित, प्राप्त प्रकाश, प्रकाशित।

दीप्त तद्० (वि०) [दीप+क्त] ज्वलित, प्रकाशित, निश्चित, तीक्ष्णीभूत, दग्ध, परिवृद्ध, बढ़ा हुआ।

—जिह्वा (स्त्री०) उल्कामुखी, शृगाली।
—लोचन (पु०) बिड़ाल, मार्जार, बिल्ली।

दीप्ताक्ष तद्० (पु०) [दीप्त+अक्ष] मर्जार, बिड़ाल, मयूर, बिल्ली।

दीप्ताग्नि तद्० (पु०) [दीप्त+अग्नि] अगस्त्य मुनि। (वि०) तीक्ष्ण जठरानल युक्त, प्रज्वलित अग्नि।

दीप्ताङ्ग तद्० (पु०) [दीप्त+अङ्ग] मयूर, मोर, कलापी, शिखी।

दीप्ति तद्० (स्त्री०) [दीप्+क्ति] शोभा, प्रभा, द्युति, तेज, उजियाला, रोशनी, चमक, लाट, लौ। सुन्दरता, काम के वेग की तीव्रता, स्त्रियों के स्वभाव सिद्ध गुण।—मत्त्व (वि०) सप्रकाशता, दीप्तता।
—मान् शोभाकर, उज्ज्वल, दीप्तियुक्त।

दीप्तोपल तद्० (पु०) [दीप्त+उपल] सूर्यकान्तमणि।

दीप्यमान् तद्० (वि०) प्रकाशमान, प्रत्यक्ष, प्रकाशयुक्त।

दीमक दे० (पु०) वल्मीक, एक प्रकार की श्वेत चींटी, कीट विशेष, मिट्टी का धूह।

दीयट दे० (पु०) चिराग दीपक रखने की काठ की बनी वस्तु विशेष। [दान सम्बन्धी वस्तु।

दीयमान् तद्० (वि०) जो दिया जाता है, वर्तमान

दीर्घ तद्० (वि०) आयत, लम्बा चौड़ा, उत्तुङ्ग, उच्च, बड़ा, पञ्चम, षष्ट, सप्तम, अष्टम राशि, त्रिमात्रिक वर्ण, आ, ई, ऊ आदि।—काय (वि०) आयत देह, लम्बा शरीरवाला।—काल (पु०) अधिक समय, अनेक वर्ष, चिरकाल, बहुकाल।—केश (पु०) लम्बे केश, लम्बी चोटी।—ग्रीव (पु०) उष्ट्र, ऊँट। (वि०) दीर्घकण्ठ, लम्बी गरदन वाला।—जङ्घ (पु०) सारस पक्षी, ऊँट, बगला, बकपंखी।—जिह्व (पु०) साँप, सर्प। (स्त्री०) राजा विरोचन की कन्या।
—जीवित (पु०) चिरायु, बहुत दिनों तक जीनेवाला।—जीवी (पु०) बहु काल जीवी, चिरजीवी। (पु०) अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण।—तमा (पु०) एक महर्षि का नाम, उतथ्य महर्षि के पुत्र, ये जन्मान्ध थे।—तरु (पु०) तालवृक्ष, ताड़ का पेड़, लंबा वृक्ष।—दण्ड (पु०) एरण्ड वृक्ष, रेंड़ी का वृक्ष।
—दर्शी (वि०) दूरदर्शी, पारदर्शी, दूरन्देशी।

—दृष्टि (वि०) दूरदर्शी, बहुज्ञ, प्रवीण । (पु०) पण्डित, गृध्रपक्षी ।—नाद (पु०) शङ्ख ।—निद्रा (स्त्री०) मृत्यु, मरण, कालधर्म ।—निश्वास (पु०) मानसिक कष्ट बतलाने वाला, प्रबल श्वास ।—पत्रक (पु०) लहसुन, लाल, पुनर्नवा ।—पत्रा (स्त्री०) वृक्ष विशेष, चिरपोटा । —पुष्पक (पु०) मदार, आक, अकवन ।—पृष्ठ (पु०) साँप, विषधर ।—मूल (पु०) शालपर्णी, जवासा ।—मूलक (पु०) ओषधि विशेष, विधारा ।—रद (पु०) सुअर, शूकर, वराह । —रसन (पु०) सर्प, भुजङ्ग, उरग, अहि । (वि०) बड़ी जीभवाला ।—रोमा (पु०) ऋक्ष, भल्लुक, भालु ।—वंश (पु०) नल, तृण विशेष, शर ।—वक्त्र (पु०) हाथी, हस्ति ।—वर्ण (पु०) दीर्घ स्वर ।—सक्थि (पु०) शकट, गाड़ी, रथ । —सत्र (पु०) यज्ञ विशेष, तीर्थ विशेष । —सन्धानी (वि०) दूरदर्शी, सूक्ष्ममति । —सन्ध्यत्व (पु०) नित्य संस्कार क्रिया । —सूत्री (वि०) शिथिल, आलस, आलसी, चिरक्रिय, विलम्ब से काम करने वाला ।

दीर्घाकार तद्० (वि०) दीर्घ आकृति युक्त, बृहदाकार ।

दीर्घाध्वा तद्० (पु०) दीर्घवर्त्म, लम्बा मार्ग ।

दीर्घायु तद्० (वि०) चिरंजीवी, दीर्घजीवी, बहुत दिनों तक जीने वाला, परमायुयुक्त । (पु०) शाल्मली वृक्ष, सेमल का पेड़, काक, मार्कण्डेय मुनि, सप्त चिरंजीवी ।

दीर्घिका तद्० (स्त्री०) जलाशय विशेष, तीन सौ धनुष के परिमाण का तालाब, वापी, बावड़ी, दिग्घी ।

दीर्ण तद्० (पु०) [दृ+क्त] विदारित, भग्न, फटा, टूटा ।

दीवट दे० (स्त्री०) दीप रखने का आधार, पीतल, लकड़ी या मिट्टी की बनी एक प्रकार की वस्तु जिस पर दिया रखा जाता है ।

दीवली दे० (स्त्री०) छोटा दिया ।

दीवान दे० (पु०) राज का मुख्य सचिव ।

दीवा दे० (स्त्री०) दीया, दीपक ।

दीवाली दे० (स्त्री०) चमड़े की पट्टी, दीपमालिका, त्योहार विशेष जो कार्त्तिक की अमावस्या को होता है ।

दीसना तद्० (क्रि०) दीख पड़ना, प्रत्यक्ष होना, सूझना ।

दीसा तद्० (क्रि०) देखा ।

दीह तद्० (वि०) दीर्घ, बड़ा, लंबा, बृहत् । यथाः—

दोहा

दीह दीह दिग्गजन के केशव मनो कुमार ।
दीन्हें राजा दशरथहिं दिगपालन उपहार ॥
—रामचन्द्रिका ।

दुः तद्० (अ०) यह जिन शब्दों के आदि में आता है, वे शब्द निन्दार्थ बोधक हो जाते हैं । यथाः— दुर्जन, दुःशील आदि । कहीं कहीं कठिनता बोधक अर्थ को भी यह बोधन करता है ।—दुर्गम, दुराराध्य, दुरारोह, दुःसाधन आदि ।

दुःख तद्० (पु०) पीड़ा, क्लेश, कष्ट, व्यथा, मन का एक धर्म विशेष, शोक, सन्ताप, मन का क्षोभ । —कर तद्० (वि०) दुःखदायी, क्लेशकर । —मय (वि०) सव्यथा, पीड़ा युक्त, दुःखी । —मोक्ष (पु०) परित्राण, रक्षा ।—सागर (पु०) शोकार्णव, संसार, अधिक शोक । [शोक ।

दुःखड़ा दे० (पु०) आपत्ति, आपदा, दुर्गति, व्यथा,

दुःखदाई दे० (वि०) दुःखदाता, क्लेशकारी ।

दुःखदाता तद्० (वि०) दुःख देनेवाला, क्लेशदायक । [व्यथा होना ।

दुःखना दे० (क्रि०) पीड़ा होना, दुःख पहुँचना,

दुःखाना दे० (क्रि०) पीड़ा देना, कष्ट देना, दुःख पहुँचाना ।

दुःखान्त तद्० (पु०) दुःख का अन्त, दुःख का अवसान, नाटक विशेष जो दुःखद घटना से समाप्त किया गया हो ।

दुःखित तद्० (वि०) पीड़ित, दुःखी, दुखिया ।

दुःखिया दे० (वि०) दरिद्र, कङ्गाल, दुःखी ।

दुःखियारा दे० (वि०) दुःखित, पीड़ित ।

दुःखी तद्० (वि०) क्लेशभाक्, दुःखान्वित, दुःखयुक्त, दुखिया ।

दुःशाला तद्० (स्त्री०) अन्धराज धृतराष्ट्र की कन्या दुर्योधन की छोटी बहिन, यह सिन्धुदेश के राजा जयद्रथ को ब्याही थी इसके पुत्र का नाम सुरथ था । महाभारत के युद्ध में अर्जुन के हाथ से

जयद्रथ मारा गया था। उस समय उसका पुत्र सुरथ बचा था, अतएव दुःशला ही सिन्धुदेश का शासन करती थी। पाण्डव अश्वमेध यज्ञ के समय यज्ञ का घोड़ा लेकर घूमते घूमते सिन्धुदेश गये, उनके आने का समाचार पाते ही सुरथ के प्राण पखेरू उड़ गये। यह सुनकर अर्जुन ने सुरथ के नाबालिग पुत्र को सिन्धुदेश के राज्यासन पर बैठा दिया।

दुःशासन तद्० (वि०) अशास्य, अवश, मनमानी करने वाला, जिसका शासन करना कष्टप्रद या दुस्साध्य हो। (पु०) धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन का छोटा भाई, दुर्योधन सब समय इसी की सम्मति से काम करता था। यही कुरुक्षेत्र के युद्ध का मूल कारण था। द्युत में पाण्डवों के हार जाने पर दुःशासन ने ही केश पकड़ कर द्रौपदी को सभा में लाकर उसे नंगी करने की चेष्टा की थी। किन्तु भगवान् श्रीकृष्ण की सहायता से द्रौपदी की मानरक्षा हुई थी, इधर दुश्शासन द्रौपदी का वस्त्र खींचने लगा और उधर वस्त्र बढ़ने लगा। वस्त्र खींचते खींचते दुःशासन थक गया और उसने द्रौपदी को छोड़ दिया। इस अपमान के चुकाने के लिये भीमसेन ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक दुःशासन का वक्षःस्थल फाड़ कर रक्त न पीऊँगा और उस रक्त से द्रौपदी का केश न रगूँगा तब तक द्रौपदी के बाल खुले रहेंगे। महाभारत के युद्ध में भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी।

दुःशील तद्० (वि०) दुष्ट स्वभाव, दुश्चरित्र, कुशील, दुराचारी।

दुःश्रव (पु०) काव्य का श्रुतिकटु दोष।

दुःसम तद्० (वि०) असमञ्जस, अन्याय, अयोग्य, अकालिक, अकार्यकाल। [समय।

दुःसमय तद्० (पु०) असमय, विपद्काल, दुःख का

दुःसह तद्० (वि०) असह्य, जो सहा न जाय, उत्कट, अति कठिन, अतिशय दुःखदायक।

दुःसाध्य तद्० (वि०) दुःख से निष्पादन करने योग्य, कष्टसाध्य, बहुत परिश्रम से सिद्ध होने योग्य, कठिन, दुष्कर, बड़ी कठिनाई से सिद्ध होने योग्य।

दुःसाहस तद्० (पु०) अतिशय साहस, अधिक मानसिक दृढ़ता, उत्कट साहस, निर्भयता।

दुःसाहसी तद्० (वि०) अनम्र साहसी, अत्यन्त उत्पाती, अपरिणामदर्शी, असावधान, प्रमत्त।

दुःस्पर्शा तद्० (स्त्री०) कपिकच्छु, कवाछ, जवासा।

दुःस्वप्न तद्० (पु०) कुस्वप्न, अशुभ सूचक स्वप्न।

दुःस्वभाव (पु०) बदमिजाज़ बुरे स्वभाव वाला, बदचलन। [में हो।

दुआबा (पु०) वह भूखण्ड जो दो नदियों के बीच

दुआर या दुआरा तद्० (पु०) द्वार, फाटक, दरवाज़ा, डेवढ़ी।

दुइ (पु०) दो।

दुइज (स्त्री०) द्वितीया तिथि।

दुई तद्० (स्त्री०) द्वैत, भेद बुद्धि।

दुकड़हा (गु०) दो कौड़ी का, नीच, अधम, तुच्छ।

दुकड़ा दे० (पु०) पैसा का चौथा भाग, दमड़ी, छदाम।

दुकड़ी दे० (स्त्री०) दुकस, इक्की, करियाली।

दुकान दे० (स्त्री०) हाट, बज़ार जहाँ सौदा रखा और बेचा जाता है।—दार (पु०) दुकान का मालिक।—दारी (स्त्री०) हाट बाज़ार का काम।

दुकाल तद्० (पु०) दुष्काल, दुर्भिक्ष काल, मँहगी, अनावृष्टि।

दुकूल तद्० (पु०) कपड़ा, वस्त्र, रेशमी कपड़ा, क्षौम, वस्त्र, पट्टवस्त्र, उत्तरीय वस्त्र, उपरना, दुपट्टा, ओढ़ने का वस्त्र नदी के दोनों किनारे, पिता और माता के दोनों कुल।

दुकेला (गु०) जिसके साथ और भी कोई हो।

दुक्कड़ (पु०) बाजा विशेष जो तबले जैसा होता है।

दुक्का (गु०) जो अकेला न हो। (पु०) ताश का एक पत्ता विशेष।

दुखंडा (गु०) दुतल्ला, दो खण्ड का मकान।

दुख (पु०) दुःख।

दुखद (गु०) दुःखदायी।

दुखदुंद (पु०) दुःख और उत्पात।

दुखना (क्रि०) पीड़ा होना। (गु०) दोखने वाला।

दुखारा (गु०) पीड़ित, दुखिया।

दुखारी (गु०) व्यथित, दुःखी।

दुखिया या दुखियारा (गु०) दुःखी।
दुगई दे० (स्त्री०) चिपारी, कैंची, जिसके सहारे छप्पर खड़ा किया जाता है।
दुगुन, दुगुना तद्० (गु०) द्विगुण, दोहरा, दूना।
दुगुणा तद्० (पु०) द्विगुण, दूना।
दुग्ध तत्० (पु०) दूध, क्षीर, पय, स्तन्य।—प्रद (वि०) क्षीरप्रद, दुधार, बहुदुग्ध। [देनेवाली गाय।
दुग्धवती तत्० (स्त्री०) क्षीरस्तनी, क्षीरिणी, दूध
दुग्धिका तत्० (स्त्री०) दूधिया, एक प्रकार का पौधा।
दुग्धिनी तत्० (स्त्री०) कड़वी तुंबी।
दुग्धी तत्० (स्त्री०) दुधिया पौधा, सेहुंड, (पु०) दुग्धमय, पायस, खीर, तस्मई।
दुचित्त, दुचिता तद्० (वि०) द्विचित्त, दुविधाग्रस्त, व्याकुल, उद्विग्न, सशङ्क, सन्देहान्वित, दुचपैत।
दुचित्ताई तद्० (स्त्री०) चिन्ता, दुविधा, सन्देह, व्याकुल, उद्विग्नता, द्वैचित्य।
दुत दे० (अ०) निषेधार्थक तथा अपमानार्थक अव्यय। दूर हो, चला जा, निकलो आदि के अर्थ में इसका प्रयोग किया जाता है।—कार (पु०) झिड़की, घुड़की, ताड़ना, धमकी।—कारी (स्त्री०) दुतकार, डाँट, साँस, ताड़ना, घुड़की।—इयक (धा०) घुड़की, धमकी, डाँट, साँसना, ताड़ना, शिक्षा देना, सिखाना, शासन करना। [अधीन करना, डाँटना।
दुताना, दुत्ताना दे० (क्रि०) दबाना, वश करना
दुति तद्० (स्त्री०) द्युति, शोभा, चमक, प्रकाश, प्रभा।
दुतिवन्त तद्० (वि०) द्युतिमान, भड़कीला, चमकदार, शोभायमान। यथाः—

> दुतिवन्त को विपदा अति कीन्हों।
> धरणी कह इन्दुवधू गहि दीन्हों॥
> —रामचन्द्रिका।

दुदही, दुद्धि दे० (स्त्री०) एक पौधे का नाम जो दवा के काम में आता है। [दो भेद।
दुधा तद्० (अ०) द्विधा, दो प्रकार, दो रीति,
दुधार दे० (स्त्री०) बहुदुग्धदा, बहुत दूध देने वाली, जो गाय बहुत दूध देती है।
दुधैल दे० (वि०) बहुत दूध देने वाली।
दुनी दे० (स्त्री०) रामायण में यह शब्द दुनिया के अर्थ में प्रयुक्त होता है।
दुन्द तद्० (पु०) द्वन्द्वयुद्ध, मल्लयुद्ध, परस्पर युद्ध, कलह, विवाद।
दुन्दुभि तत्० (पु०) नगारा, डंका, धौंसा, महिषरूपी दानव, वानरराज वालि ने इसे मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंक दिया था। यह देख कर मतङ्ग मुनि ने उसको शाप दिया, तभी से वालि ऋष्यमूक पर्वत पर नहीं जा सकता। मतङ्ग मुनि का यह शाप सुग्रीव के लिये अमृत के समान हुआ था, वालि के डर से भाग कर सुग्रीव ने यहीं शरण ली थी।
दुपट्टा दे० (पु०) ओढ़ने का चदरा, स्वनाम प्रसिद्ध वस्त्र विशेष।—तान के सोना (धा०) निश्चिन्त होकर रहना, आलस में पड़ा रहना, करने योग्य काम न करना, असावधान रहना, ध्यान देने योग्य विषय पर उदासीन होना।—हिलाना (धा०) सङ्केत करके किसी को बुलाना, या कुछ कहना, युद्ध के समय सन्धि के लिये इशारा करना, अवकाश माँगने का सङ्केत।
दुपद तद्० (पु०) द्विपद, दो पैर वाला, मनुष्य।
दुपहर (पु०) मध्यान्ह।
दुपहरिया दे० (स्त्री०) मध्याह्न, अथवा मध्यरात्रि, पुष्पविशेष, आतिशबाज़ी विशेष। [सन्दिग्ध।
दुफसली (गु०) दोनों फसलों में उत्पन्न होने वाला,
दुबकना (क्रि०) छिपना, लुकाना।
दुबराना (क्रि०) दुबला होना, क्षीण होना।
दुबला तद्० (वि०) दुर्बल, क्षीण, निर्बल, बल रहित, पतला।
दुबलाई दे० (स्त्री०) दुर्बलता, दुबलापन, निर्बलता।
दुविद (द्विविद) तद्० (पु०) एक वानर का नाम जो सुग्रीव की सेना का एक सेनापति था।
दुविधा दे० (स्त्री०) सन्देह, शङ्का, भ्रम, अनिश्चय ज्ञान, दुभाव।
दुविधि तद्० (स्त्री०) दो प्रकार, दो भाँति, दो रीति।
दुभाव तद्० (पु०) दुविधा। [भाषा का वेत्ता।
दुभाषिया दे० (पु०) दो भाषा जानने वाला, दो
दुमुंह तद्० (पु०) राक्षस विशेष, दो मुहवाला।
दुर् तत्० (अ०) निषेध, दुःख, अपकर्षण, निन्दा, व्याम, दुर्दिन, दुर्बुद्धि आदि। "सु" अव्यय के विपरीत अर्थ यह बतलाता है।—व्यतिक्रम

(वि०) दुस्तर, कठिन, जिसका अतिक्रम दु ख से किया जाय ।—अत्यय (वि०) अगम्य, दुरुत्तर, दुर्गम, सङ्कट, दुस्तर, जिसके पार जाना कठिन हो। —अदृष्ट (पु०) दुर्भाग्य, बुरे दिन ।—अधिगम (वि०) दुष्प्राप्य, जिसकी प्राप्ति दु ख से हो। —अन्त (वि०) दुष्ट, उपद्रवी, अवाच्य ।—अवस्था (स्त्री०) दुर्दशा, आपद की दशा, विपत् का समय ।—आग्रह (पु०) निर्बन्ध, अभिनिवेश, निन्दित हठ, किसी बात पर पनरपफद ।—आचार (पु०) कुव्यवहार, कदाचार, विरुद्धाचरण, कुनीति ।—आचारी (वि०) अन्यायी, दुःशील, लम्पट ।—आत्मा (वि०) पापात्मा, निर्दय, दुष्ट, उपद्रवी, क्रूर, पापी ।—आधर्ष (वि०) प्रगल्भ, अहङ्कारी, दुर्गम, भयङ्कर । (पु०) पीली सरसों। —आप (वि०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ, दु ख से पाने योग्य ।—आरोह (वि०) दु:ख से आरोहण करने योग्य, ऊँचा पेड़, जिस पर दु:ख से चढ़ा जाय ।—आलाप (पु०) कटुवाक्य, बुरी बात, गाली ।—आलोक (पु०) दुर्निरीक्ष्य दुर्दर्श, अति कष्ट से देखने योग्य ।—आशय (वि०) क्रूर, दुष्ट मानस ।—आशा (स्त्री०) बुरी आशा, नहीं पूर्ण होने योग्य आशा ।—आसद (वि०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ ।

दुरई दे० (क्रि०) छिपता है, लुकता है ।

दुरना दे० (क्रि०) छिपना, लुकना, भागना, पलाना, पलायन करना । [भेद भाव रखना ।

दुराना दे० (क्रि०) छिपाना, गुप्त रखना, लुकाना,

दुरालाप तद्० (पु०) गाली, दुर्वचन ।

दुराव दे० (पु०) लुकाव, छिपाव, छल, कपट ।

दुरित तद्० (पु०) पाप, कलुष, अपराध, दोष, अधर्म ।

दुरिष्ठ तद्० (वि०) अतिमन्द, अतिशयनिन्दित, महापापी, पापिष्ठ, दुष्ट । [एक दाव, दुक्का, दुरी, दिपी ।

दुरी दे० (स्त्री०) खेल में दो पकना, जुए के खेल का

दुरुक्त तद्० (पु०) शाप, गाली, दुर्वचन ।

दुरुक्ति तद्० (स्त्री०) दुबारा कथन, बार बार कहना, एक बात को दो प्रकार से दो बार कहना । अनुचित रीति से कहना, जैसे गँवार बोलते हैं, भोजन छोजन, दूध ऊध आदि ।

दुरुखा दे० (वि०) दोमुखी, दोनों ओर एक ही सा, जिस वस्तु का दोनों बाजू एक समान हो ।

दुरुत्तर तद्० (वि०) दुरतिक्रम, दुर्लङ्घ्य, दु:ख से तरने योग्य, निरुत्तर, अपरिहार्य्य ।

दुरेफ तद्० (पु०) द्विरेफ, भ्रमर, भौंरा ।

दुरोदर तद्० (पु०) जुआ, जुआ का खेल ।

दुर्ग तद्० (पु०) गढ़, कोट, किला ।—अध्यक्ष (पु०) [दुर्ग+अध्यक्ष] दुर्गरक्षक, गढ़ का रखवारा, क़िलादार, किले का स्वामी । [कंगाल ।

दुर्गत तद्० (वि०) विपन्न, दुरवस्था, दुखी, दरिद्र,

दुर्गति तद्० (स्त्री०) विपत्ति, दु ख, कुगति, बुरी अवस्था, क्लेश, दुरवस्था, दुर्दशा, दरिद्रता, कंगाली । —नाशिनी (स्त्री०) दु:खहारिणी, भगवती दुर्गा।

दुर्गन्ध तद्० (स्त्री०)
दुर्गन्धि तद्० (स्त्री०) } दुष्ट गन्ध, बुरी बास, कुवास, कुमहक ।

दुर्गन्धा तद्० (स्त्री०) पलाण्डु, प्याज़ ।

दुर्गम तद्० (वि०) कष्टगम्य, दु ख से जाने योग्य, औघट, बीहड़, बीरान, अजय, न प्राप्त होने योग्य। —ता (स्त्री०) गम्भीरता, कठिनता, औघटपन ।

दुर्गा तद्० (स्त्री०) हिमालय की कन्या, भगवती शक्ति विशेष, आद्या शक्ति, दुर्ग नामक असुर के विनाश करने से इनका दुर्गा नाम पड़ा है। देवताओं को स्वर्ग से निकाल कर महिषासुर स्वर्ग का राजा बन बैठा । इससे दुखी होकर देवता ब्रह्मा के निकट गये ब्रह्मा देवताओं को साथ लेकर महादेव के पास गये, देवताओं की दुःख कहानी सुन कर महादेव ने क्रोध किया और उनके मुख से एक ज्योति प्रकट हुई, इसी प्रकार सभी देवों के शरीर से एक एक ज्योति प्रकट हुई और उस ज्योति समुदाय ने एक स्त्री का रूप धारण किया । देवों ने अपने अपने अस्त्र शस्त्र उस रमणी को दिये, उसी स्त्री ने महिषासुर का नाश किया था । आद्या शक्ति देवी महिषासुर के सामने जब लड़ने को उपस्थित हुई थीं, तब उससे महिषासुर ने कहा था—देवी आप मुझको मारेंगी, इसका मुझे कुछ भी कष्ट नहीं है, परन्तु आपके साथ साथ मेरी भी संसार में पूजा हो इसकी व्यवस्था आपको करनी चाहिये । देवी ने " तथास्तु " कहा ।

—नवमी (स्त्री०) तिथि विशेष, पर्व विशेष, क्वार शुक्लपक्ष की नवमी, नवरात्र की नवमी।

दुर्गामी तद्० (वि०) कुमार्गी, कुमार्गगामी, दुराचारी।

दुर्गावती पे० (स्त्री०) चित्तौर के महाराज साँगा की कन्या, रेसिन के राजा सिलोदी को यह ब्याही गई थी। गुजरात के सूबेदार बहादुरशाह ने १५३१ ई० में सिलोदी को पकड़ कर मुसलमान बना दिया। सिलोदी के छोटे भाई लक्ष्मण ने कुछ दिनों तक बड़ी वीरता से लड़ कर गढ़ की रक्षा की थी, परन्तु अनगिनती मुसलमान सेना से गढ़ बचाना कठिन समझ कर उसने मुसलमानों को गढ़ दे देना स्थिर कर लिया। राजमहिषी दुर्गावती ने मुसलमानों के हाथ पड़ने से मर जाना ही अच्छा समझ कर ७००० सौ राजपूत स्त्रियों के साथ अग्निकुण्ड में शरीर भस्म कर दिया।

(२) चन्देल राजपूत महोवा के राजा की कन्या। महोवा हमीरपुर ज़िला का एक मुख्य जनपद है। दुर्गावती के रूप तथा गुण की प्रशंसा सुनकर गौर जाति के राजपूत राजा दलपतसाह ने इनके साथ विवाह करने का पैगाम पठाया, परन्तु महोवा के राजा ने उसे स्वीकार नहीं किया। दलपतसाह सेना लेकर चढ़ आये और महोवा के राजा को परास्त कर उन्होंने दुर्गावती के साथ अपना विवाह किया। परन्तु दलपतसाह बहुत दिन तक दुर्गावती के साथ नहीं रह सके। विवाह होने के ४ वर्ष के बाद ही दुर्गावती विधवा हो गयी। उस समय उनके ३ वर्ष का एक पुत्र था। उसी अपने पुत्र की रक्षक होकर वह गढ़मण्डल राज्य का शासन करने लगी। उनके शासन काल में राजा और प्रजा दोनों सुखी हुए। दुर्गावती का यह सुख भी विधि से नहीं देखा गया, इनके राज्य के सुखी होने का समाचार दिल्ली के बादशाह अकबर ने सुना। धर्मद्रोही अकबर की आज्ञा से मालवा के सूबेदार आसफ़ख़ाँ ने १८००० सेना लेकर गढ़मण्डल की राजधानी सिंहगढ़ पर चढ़ाई की। प्रथम दिन के युद्ध में विजयलक्ष्मी महारानी की ओर रही, परन्तु दूसरे दिन के युद्ध में हाथी पर चढ़ी हुई रानी आहत हुईं। उनके शरीर में दो बाण लगे। उनकी यह अवस्था देखकर सेना भागने लगी। युद्ध में जय की आशा न देखकर महारानी ने महावत से अंकुश लेकर उसी के द्वारा युद्धभूमि में प्राणत्याग किये।

दुर्ग्रह (पु०) जो जल्दी पकड़ में न आ सके। (पु०) अपामार्ग, चिचड़ी, अझाझारा।

दुर्घट तद्० (वि०) कष्टसाध्य, दुःसाध्य, अति कठिन जिसकी सिद्धि अति कष्ट से हो, न जीतने योग्य।

दुर्घटना तद्० (स्त्री०) दुष्ट घटना, दुःख की घटना, विपत्पात

दुर्जन तद्० (वि०) क्रूर, दुष्ट, खल, कुत्सित आचार वाला, अधम, नीच, खोटा मनुष्य, लुच्चा।—ता (स्त्री०) क्रूरता, दुष्टता, अधमता, शत्रुता।

दुर्जनताई तद्० (स्त्री०) दुर्जन का धर्म, क्रूरता, दुष्टता, बुराई।

दुर्जय तद्० (वि०) दुःख से जीतने योग्य, दुर्दम, कष्ट से दमन करने योग्य, अपराजयी। (पु०) प्रबलशत्रु

दुर्जेय (गु०) जिनका जीतना बहुत कठिन हो।

दुर्ज्ञेय (गु०) दुर्बोध, कठिनाई से जानने योग्य।

दुर्दम तद्० (वि०) दुर्दम्य, दुर्जयी, दुर्दमनीय, दुःख से दमन करने योग्य, प्रबल, पराक्रमी, अवश।

दुर्दशा तद्० (स्त्री०) दुर्गति, विपत्ति, हीन अवस्था

दुर्दान्त तद्० (वि०) दुरन्त, अशान्त, प्रबल, भयङ्कर भयानक। [मेघाच्छन्न दिन

दुर्दिन तद्० (पु०) कुदिन, पानी बादल का दिन

दुर्दैव तद्० (पु०) दुर्भाग्य, कुभाग्य, अभाग।

दुर्द्धर्ष (पु०) निर्लज्ज, दुष्ट।

दुर्नाम तद्० (पु०) अकीर्ति, अयश, अपयश दुर्नाम निन्दा, अप्रशंसा, बदनामी।

दुर्नामा तद्० (पु०) अर्श रोग, बवासीर।

दुर्नामी तद्० (पु०) अपयशी, बदनाम।

दुर्निवार तद्० (वि०) जो बहुत कष्ट से निवारण किया जाय। [असच्चरित्र, कुचरित्र, कुस्वभाव

दुर्नीति तद्० (स्त्री०) अन्याय, कुनीति, कुव्यवहार

दुर्मना तद्० (वि०) दुश्चित्त, उद्विग्न।

दुर्बल तद्० (वि०) दुबला, बल रहित, निर्बल, असमर्थ, बलहीन, कमज़ोर, पेदम।—ता (स्त्री०) बलहीनता, असामर्थ्य, निर्बलता।

(वि०) दुस्तर, कठिन, जिसका अतिक्रम दुःख से किया जाय।—अत्यय (वि०) अगम्य, दुरुत्तर, दुर्गम, सङ्कट, दुस्तर, जिसके पार जाना कठिन हो। —अदृष्ट (पु०) दुर्भाग्य, बुरे दिन।—अधिगम (वि०) दुष्प्राप्य, जिसकी प्राप्ति दुःख से हो। —अन्त (वि०) दुष्ट, उपद्रवी, अवाध्य।—अवस्था (स्त्री०) दुर्दशा, आपद की दशा, विपत् का समय।—आग्रह (पु०) निर्बन्ध, अभिनिवेश, निन्दित हठ, किसी बात पर अनरपकड़।—आचार (पु०) कुव्यवहार, कदाचार, विरुद्धाचरण, कुनीति।—आचारी (वि०) अन्यायी, दुःशील, लम्पट।—आत्मा (वि०) पापात्मा, निर्दय, दुष्ट, उपद्रवी, क्रूर, पापी।—आधर्ष (वि०) प्रगल्भ, अहङ्कारी, दुर्गम, भयङ्कर। (पु०) पीली सरसों। —आप (वि०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ, दुःख से पाने योग्य।—आरोह (वि०) दुःख से आरोहण करने योग्य, ऊँचा पेड़, जिस पर दुःख से चढ़ा जाय।—आलाप (पु०) कटुवाक्य, बुरी बात, गाली।—आलोक (पु०) दुर्निरीक्ष्य, दुर्दर्श, अति कष्ट से देखने योग्य।—आशय (वि०) क्रूर, दुष्ट मानस।—आशा (स्त्री०) बुरी आशा, नहीं पूर्ण होने योग्य आशा।—आसद (वि०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ।

दुरई दे० (क्रि०) छिपता है, लुकता है।

दुरना दे० (क्रि०) छिपना, लुकना, भागना, पलाना, पलायन करना। [भेद भाव रखना।

दुराना दे० (क्रि०) छिपाना, गुप्त रखना, लुकाना,

दुरालाप तद्० (पु०) गाली, दुर्वचन।

दुराव दे० (पु०) लुकाव, छिपाव, धूर्त, कपट।

दुरित तद्० (पु०) पाप, कलुष, अपराध, दोष, अधर्म।

दुरिष्ठ तद्० (वि०) अतिमन्द, अतिशयनिन्दित, महापापी, पापिष्ठ, दुष्ट। [एक दाव, दुआ, दुटी, दिपी।

दुरी दे० (स्त्री०) खेल में दो पड़ना, जुए के खेल का

दुरुक्त तद्० (पु०) शाप, गाली, दुर्वचन।

दुरुक्ति तद्० (स्त्री०) दुबारा कथन, बार बार कहना, एक बात को दो प्रकार से दो बार कहना। अनुचित रीति से कहना, जैसे गँवार बोलते हैं, भोजन बोजन, दूध ऊध आदि।

दुरुखा दे० (वि०) दोमुखी, दोनों ओर एक ही सा, जिस वस्तु का दोनों बाजू एक समान हो।

दुरुत्तर तद्० (वि०) दुरतिक्रम, दुर्लंघ्य, दुःख से तरने योग्य, निरुत्तर, अपरिहार्य।

दुरेफ तद्० (पु०) द्विरेफ, भ्रमर, भौंरा।

दुरोदर तद्० (पु०) जुआ, जुआ का खेल।

दुर्ग तद्० (पु०) गढ़, कोट, किला।—ध्यक्ष (पु०) [दुर्ग+अध्यक्ष], दुर्गरक्षक, गढ़ का रखवारा, क़िलादार, किले का स्वामी। [कंगाल।

दुर्गत तद्० (वि०) विपन्न, दुरवस्था, दुखी, दरिद्र,

दुर्गति तद्० (स्त्री०) विपत्ति, दुःख, कुगति, बुरी अवस्था, क्लेश, दुरवस्था, दुर्दशा, दरिद्रता, कंगाली। —नाशिनी (स्त्री०) दुःखहारिणी, भगवती दुर्गा।

दुर्गन्ध तद्० (स्त्री०) } दुष्ट गन्ध, बुरी बास,
दुर्गन्धि तद्० (स्त्री०) } कुबास, कुमहक।

दुर्गन्धा तद्० (स्त्री०) पलाण्डु, प्याज।

दुर्गम तद्० (वि०) अगम्य, दुःख से जाने योग्य, औघट, बीहड़, वीरान, अजय, न प्राप्त होने योग्य। —ता (स्त्री०) गम्भीरता, कठिनता, औघटपन।

दुर्गा तद्० (स्त्री०) हिमालय की कन्या, भगवती, शक्ति विशेष, आद्या शक्ति, दुर्ग नामक असुर के विनाश करने से इनका दुर्गा नाम पड़ा है। देवताओं को स्वर्ग से निकाल कर महिषासुर स्वर्ग का राजा बन बैठा। इससे दुखी होकर देवता ब्रह्मा के निकट गये, ब्रह्मा देवताओं को साथ लेकर महादेव के पास गये, देवताओं की दुःख कहानी सुन कर महादेव ने क्रोध किया और उनके मुख से एक ज्योति प्रकट हुई, इसी प्रकार सभी देवों के शरीर से एक एक ज्योति प्रकट हुई और उस ज्योति समुदाय ने एक स्त्री का रूप धारण किया। देवों ने अपने अपने अस्त्र शस्त्र उस रमणी को दिये, उसी स्त्री ने महिषासुर का नाश किया था। आद्याशक्ति देवी महिषासुर के सामने जब लड़ने को उपस्थित हुई थीं, तब उससे महिषासुर ने कहा था—देवी आप मुझको मारेंगी, इसका मुझे कुछ भी कष्ट नहीं है, परन्तु आपके साथ साथ मेरी भी संसार में पूजा हो इसकी व्यवस्था आपको करनी चाहिये। देवी ने " तथास्तु " कहा।

—नवमी (स्त्री०) तिथि विशेष, पर्व विशेष, कार शुक्लपक्ष की नवमी, नवरात्र की नवमी।

दुर्गामी तद्० (वि०) कुमार्गी, कुमार्गगामी, दुराचारी।

दुर्गावती दे० (स्त्री०) चित्तौर के महाराज साँगा की कन्या, चैसिन के राजा सिलोदी को यह ब्याही गई थी। गुजरात के सूबेदार बहादुरशाह ने १५३१ ई० में सिलोदी को पकड़ कर मुसलमान बना दिया। सिलोदी के छोटे भाई लखमणा ने कुछ दिनों तक बड़ी वीरता से लड़ कर गढ़ की रक्षा की थी, परन्तु अनगिनती मुसलमान सेना से गढ़ बचाना कठिन समझ कर उसने मुसलमानों को गढ़ दे देना स्थिर कर लिया। राजमहिषी दुर्गावती ने मुसलमानों के हाथ पड़ने से मर जाना ही अच्छा समझ कर ७००० सौ राजपूत स्त्रियों के साथ अग्निकुण्ड में शरीर भस्म कर दिया।

(२) चन्देल राजपूत महोबा के राजा की कन्या। महोबा हमीरपुर ज़िला का एक मुख्य जनपद है। दुर्गावती के रूप तथा गुण की प्रशंसा सुनकर गौंड़ जाति के राजपूत राजा दलपतसाह ने इनके साथ विवाह करने का पैग़ाम पठाया, परन्तु महोबा के राजा ने उसे स्वीकार नहीं किया। दलपतसाह सेना लेकर चढ़ आये और महोबा के राजा को परास्त कर उन्होंने दुर्गावती के साथ अपना विवाह किया। परन्तु दलपतसाह बहुत दिन तक दुर्गावती के साथ नहीं रह सके। विवाह होने के ४ वर्ष के बाद ही दुर्गावती विधवा हो गयी। उस समय उनके ३ वर्ष का एक पुत्र था। उसी अपने पुत्र की रक्षक होकर वह गढ़मण्डल राज्य का शासन करने लगी। उनके शासन काल में राजा और प्रजा दोनों सुखी हुए। दुर्गावती का यह सुख भी विधि से नहीं देखा गया, इनके राज्य के सुखी होने का समाचार दिल्ली के बादशाह अकबर ने सुना। अर्थलोलुप अकबर की आज्ञा से मध्यभारत के उनके सेनापति आसफ़ख़ाँ ने १८००० सेना लेकर गढ़मण्डल की राजधानी सिंहगढ़ पर चढ़ाई की। प्रथम दिन के युद्ध में विजयलक्ष्मी महारानी की ओर रही, परन्तु दूसरे दिन के युद्ध में हाथी पर चढ़ी हुई रानी आहत हुईं। उनके शरीर में दो घाव लगे। उनकी यह अवस्था देखकर सेना भागने लगी। युद्ध में जय की आशा न देखकर महारानी ने महावत से छुरा लेकर उसी के द्वारा युद्धभूमि में प्राणत्याग दिये।

दुर्ग्रह (पु०) जो जल्दी पकड़ में न आ सके। (पु०) अपामार्ग, चिचड़ी, अझाझारा।

दुर्घट तत्० (वि०) कष्टसाध्य, दुःसाध्य, अति कठिन जिसकी सिद्धि अति कष्ट से हो, न जीतने योग्य।

दुर्घटना तत्० (स्त्री०) दुष्ट घटना, दुःख की घटना, विपत्पात

दुर्जन तत्० (वि०) क्रूर, दुष्ट, खल, कुत्सित आचार वाला, अधम, नीच, खोटा मनुष्य, लुच्चा।—ता (स्त्री०) क्रूरता, दुष्टता, अधमता, शत्रुता।

दुर्जनताई तद्० (स्त्री०) दुर्जन का धर्म, क्रूरता, दुष्टता, बुराई।

दुर्जय तत्० (वि०) दुःख से जीतने योग्य, दुर्दम, कष्ट से दमन करने योग्य, अपराजयी। (पु०) प्रबलशत्रु

दुर्जेय (गु०) जिनका जीतना बहुत कठिन हो।

दुर्ज्ञेय (गु०) दुर्बोध, कठिनाई से जानने योग्य।

दुर्दम तत्० (वि०) दुर्दम्य दुर्जयो, दुर्दमनीय, दुःख से दमन करने योग्य प्रबल, पराक्रमी, अवश।

दुर्दशा तत्० (स्त्री०) दुर्गति, विपत्ति, हीन अवस्था।

दुर्दान्त तत्० (वि०) दुरन्त, अशान्त, प्रबल, भयङ्कर, भयानक। [मेघावृत दिन।

दुर्दिन तत्० (पु०) कुदिन, पानी बादल का दिन,

दुर्दैव तत्० (पु०) दुर्भाग्य, दुभाग्य, अभाग।

दुर्द्धर्ष (पु०) निर्भय, दुष्ट।

दुर्नाम तत्० (पु०) अकीर्ति, अयश, अपयश दुरसा, निन्दा, अप्रशंसा, बदनामी।

दुर्नामा तत्० (पु०) अर्श रोग, बवासीर।

दुर्नामी तत्० (पु०) अपयशी, बदनाम।

दुर्निवार तत्० (वि०) जो बहुत कष्ट से निवारण किया जाय। [खलचरित्र, कुचरित्र, कुस्वभाव।

दुर्नीति तत्० (स्त्री०) अन्याय, कुनीति, कुव्यवहार,

दुर्बल तत्० (वि०) दुचित्ता, उद्विग्न।

दुर्बल तत्० (वि०) दुबला, बल रहित, निर्बल, असमर्थ, बलहीन, कमज़ोर, बेदम।—ता (स्त्री०) बलहीनता, असामर्थ्य, निर्बलता।

दुर्भगा तद्० (स्त्री०) पतिस्नेह रहिता, भाग्यहीना स्त्री, अप्रिय भार्या।

दुर्भाग्य तद्० (पु०) दुरदृष्ट, अभाग्य, मन्दभाग्य।

दुर्भाव तद्० (पु०) दुष्टभाव, दुष्ट अभिप्राय, निन्दित स्वभाव।

दुर्भिक्ष तद्० (पु०) अकाल, कुसमय, महँगी।

दुर्मति तद्० (स्त्री०) कुबुद्धि, मन्दबुद्धि, अज्ञान, मूर्खता।

दुर्मद तद्० (वि०) मत्त, अहङ्कारी, घमण्डी, तमोगुणयुक्त, मतवाला, एक राक्षस का नाम।

दुर्मना तद्० (वि०) उद्विग्नचित्त, अन्यमनस्क, चिन्तित, भावित, उदास, विमर्ष, म्लान।

दुर्मुख तद्० (पु०) वानर विशेष, घोटक, महिषासुर का सेनापति विशेष। (पु०) दुर्भाषी, कठोर वचन बोलने वाला, कुबोल।

दुर्मुस तद्० (पु०) दुरमी, मुगरा, मुग्दर।

दुर्मूल्य तद्० (वि०) महँगा, बहुमूल्य, बहुतमूल्य का।

दुर्मेधा तद्० (वि०) मेधाहीन, दुर्बुद्धि, अज्ञानी।

दुर्योग तद्० (पु०) बुरा समय, मेघाच्छन्न दिन, अनेक अशुभ सूचक बाधक योगों का मेल, कुयोग, दुःसमय, कुमुहूर्त।

दुर्योनि तद्० (वि०) नीचवंशोद्भव, नीच वंश में उत्पन्न, अन्त्यज, पतित जाति, अस्पृश्य जाति।

दुर्योधन तद्० (पु०) [दुर+युध्+अनट्] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र, महाभारत के युद्ध में येही कौरव दल के नेता थे। यह भीम के समवयस्क थे, भीम के बलवीर्य आदि देखकर ये जला करते थे। बाल्यकाल में खेल में दुर्योधन ने भीम को विष देकर समुद्र में फेंकवा दिया था, वासुकी के प्रयत्न से भीम के प्राणों की रक्षा हुई थी। राजा धृतराष्ट्र ने अपने ज्येष्ठ भतीजे युधिष्ठिर को युवराज बनाना चाहा था, परन्तु दुर्योधन के विरोध करने से वह नहीं हो सका। दुर्योधन की सम्मति से धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को हस्तिनापुर से निकाल कर वारणावत नामक नगर में भेज दिया। वारणावत में पाण्डवों को जला देने की इच्छा से दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाया था, परन्तु उनकी इच्छा सफल न हुई। वहाँ से भाग कर पाण्डव पाञ्चाल राज्य में चले गये इस राज्य के राजा द्रुपद थे, द्रुपद के साथ कौरवों की पुरानी शत्रुता थी, द्रुपद की कन्या द्रौपदी को पाण्डवों के साथ विवाह होने पर वह शत्रुता और भी बढ़ गई। द्रौपदी के स्वयम्बर में अनेक छोटे बड़े राजा निमन्त्रित हुए थे। कौरव भी गये थे। एक एक करके कौरवों ने लक्ष्य वेध करने का प्रयत्न किया, परन्तु विफल हुए। पाण्डव भी ब्राह्मण वेष में वहाँ उपस्थित थे अन्त में ब्राह्मणवेषधारी अर्जुन ने लक्ष्य भेद किया और द्रौपदी उन्हीं को मिली। धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को बुला कर उन्हें आधा राज्य दे दिया और इन्द्रप्रस्थ में उनकी राजधानी बना दी। वहाँ पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया, इनका यज्ञ बड़ी धूमधाम से समाप्त हुआ। दुष्ट दुर्योधन से यह नहीं देखा गया। उसने शकुनि से मिल कर धर्मात्मा युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिये बुलाया। शकुनि के छल से युधिष्ठिर राज्य हार गये, पुनः द्रौपदी दाँव पर रखी गई उसे भी हार गये। दुर्योधन ने भरी सभा में द्रौपदी को अपमानित किया। द्रौपदी का अपमान देखकर भीम ने दुःशासन का वक्षस्थल और दुर्योधन का उरु तोड़ने की प्रतिज्ञा की, और भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी। दुर्योधन ने पाण्डवों को १३ वर्ष के लिये वन में भेज दिया। एक समय पाण्डवों को अपनी प्रभुता दिखाने के लिये दुर्योधन ने घोषयात्रा की, परन्तु वहाँ चित्रसेन नामक गन्धर्व के द्वारा वे बन्दी हुए। इसका समाचार सुनकर युधिष्ठिर ने भीम और अर्जुन को उनकी रक्षा के लिये भेजा इन लोगों ने दुर्योधन को क़ैद से छुड़ाया। दुर्योधन इससे बहुत लज्जित हुआ। परन्तु उसने पाण्डवों के इस उपकार का बदला अपकार द्वारा चुकाना निश्चित किया। पाण्डवों के वनवास की अवधि समाप्त हुई। उन्होंने श्रीकृष्ण को दुर्योधन के पास आधा राज्य लौटा देने का प्रस्ताव करने के लिये भेजा। परन्तु अभिमानी दुष्ट दुर्योधन ने बिना युद्ध के एक तिनके के बराबर भी भूमि देना न चाही। अतः युद्ध हुआ उसमें कौरवों का सर्वनाश हुआ। एक एक करके कौरव मारे गये। १८ दिन में दुर्योधन को आहुति देकर यह युद्धयज्ञ समाप्त किया गया।

दुर्लक्षण तत्० (पु०) अशुभ चिन्ह, अशकुन, बुरे लक्षण, कलक्षण, कुलक्षण।
दुर्लभ तत्० (वि०) दुष्प्राप्य, अति प्रशस्त, प्रिय, अनोखा, अपूर्व, अलभ्य, कष्टसाध्य।
दुर्लोभ तत्० (पु०) मन्दवासना, दुर्लालसा, अनुचित अभिलाष, अप्राप्य वस्तु की अभिलाषा।
दुर्लभ्य तत्० (पु०) अप्राप्य, कष्ट से प्राप्त होने योग्य।
दुर्वचन तत्० (पु०) दुर्वाक्य कुत्सित वचन, कुवचन, निन्दित वचन, कुवाक्य गाली, दुष्टवचन।
दुर्वर्त्म तत्० (पु०) कुपथ, असन्मार्ग, कुत्सित आचार।
दुर्वह तत्० (वि०) वहन करने के अयोग्य, भारी बोझेल। [निन्दित बात।
दुर्वाक्य तत्० (पु०) कुवाक्य, दुर्वचन, गाली,
दुर्वाद या दुर्वादि तत्० (पु०) निन्दित वचन, अकीर्ति, अयश, अपयश, दुर्नाम, बदनामी।
दुर्वार तत्० (वि०) अप्रतिकार्य, अनिवार्य, जो निवारण नहीं किया जा सके, अथवा जो दुःख से निवारित हो। [लाष, दुष्ट इच्छा, कुवासना।
दुर्वासना तत्० (स्त्री०) बुरी वासना, असत् अभि
दुर्वासा तत्० (पु०) अत्रि मुनि के पुत्र, अनसूया के गर्भ से इनका जन्म हुआ था। ये महादेव के अंश से अनसूया के गर्भ में जन्मे थे। दुर्वासा बड़े क्रोधी थे। और्व मुनि की कन्या कन्दली के साथ इनका विवाह हुआ था। इनके शाप से देवराज इन्द्र राज्यभ्रष्ट हो गये थे। इन्हीं के शाप से पति परित्यक्ता शकुन्तला को अनेक कष्ट भोगने पड़े थे। एक समय गरम खीर खाते खाते इन्होंने श्रीकृष्ण को कहा था कि इसे तुम अपने सब शरीर में लगा लो। श्रीकृष्ण ने वैसा ही किया, परन्तु ब्राह्मण का अनादर न हो इस कारण उन्होंने पायस को अपने पैरों में नहीं लगाया। यह देख दुर्वासा ने कहा तुमने पैर में पायस नहीं लगाया अतएव पैर के अतिरिक्त तुम्हारा और सब अङ्ग अवध्य होगा। इसी कारण मृत्यु के समय श्रीकृष्ण के पैर ही में व्याध का बाण लगा था। दुर्वासा के शाप से श्रीकृष्ण के पुत्र को मुसल उत्पन्न हुआ था, जिससे यदुवंश का नाश हुआ। यह कुन्ती की सेवा से अत्यन्त प्रसन्न थे और प्रसन्न होकर इन्होंने कुन्ती को एक मन्त्र बताया था जिसके प्रभाव से कर्ण और पाण्डवों की उत्पत्ति हुई। इनकी क्रोध कहानी अतुल है और इनकी प्रकृति विलक्षण थी। [वित उजड्ड, गँवार।
दुर्विनीत तत्० (वि०) अविनीत, दुष्ट, अशिष्ट, अशि-
दुर्विपाक तत्० (पु०) बुरा फल, अशुभ परिणाम, दुर्दैव, दुर्भाग्य।
दुर्विषह तत्० (वि०) असह्य, कठिन, कठोर।
दुर्वृत्त तत्० (पु०) दुर्जन, दुरात्मा, उपद्रवी, कुमार्गी, दुष्ट, बदमाश, गुंडा।
दुर्बुद्धि तत्० (स्त्री०) मन्दबुद्धि, कुमति, अज्ञानी।
दुर्बुद्धी तत्० (वि०) अबोध, मूढ़, दुष्ट, अनाचारी।
दुर्बोध्य तत्० (पु०) कुमति, अबोध, मूढ़, दुःख से समझाने योग्य। [घोड़े की एक प्रकार की चाल।
दुलकी दे० (स्त्री०) कूकर की चाल, अश्वगति विशेष,
दुलड़ा दे० (पु०) दो लड़ की माला। (गु०) दोहरा, दुगुना। [दो लड़ों का होता है।
दुलड़ी दे० (स्त्री०) स्त्रियों के एक गहने का नाम जो
दुलत्ती दे० (स्त्री०) पशुओं के पिछले दो पैरों की मार।—छाँटना (वा०) लात मारना, पास नहीं आने देना, कड़ी बातें सुनाकर हटाना। —मारना (वा०) पिछले दोनों पैरों से मारना, किसी को अपमानित करना।
दुलहन दे० (स्त्री०) दुलहैया, नव परिणीता वधू, नई ब्याही बहू, वधू, बनरी, दुलहिन। [बनरा, नौशा।
दुलहा दे० (पु०) वर, विवाहार्थ प्रस्तुत पुरुष, बना,
दुलहिन दे० (स्त्री०) दुलहन, नई बहू, वधू, वधी।
दुलाई दे० (स्त्री०) ओढ़ने का वस्त्र विशेष, रुईदार ओढ़ना जो जाड़े के दिनों में ओढ़ने के काम में आता है, रुई, छींट और नैनसुख की दोहर।
दुलाना (क्रि०) झुलाना, हुलाना।
दुलार दे० (पु०) प्यार, स्नेह, लाड़, प्रेम, प्रीति।
दुलारा दे० (वि०) प्यारा, स्नेहपात्र, प्रिय, लाड़ला।
दुलारी दे० (स्त्री०) प्यारी, प्रिया, लाडिली, लाड़ की, प्यार की।
दुलारे दे० (पु०) दुलार किये हुए, मुँह लगे लाडिले।
दुवन (पु०) खल, दुर्जन, शत्रु, राक्षस।
दुवार तत्० (पु०) द्वार, दुआर, कपाट, किवाड़।

दुविद् तद्० (पु०) द्विविद, एक बानर का नाम, यह लङ्का के युद्ध में रामचन्द्रजी की सेना में था।
दुबे दे० (पु०) ब्राह्मणों की एक अल्ल, पञ्चगौड़ ब्राह्मणों की अल्ल, दुवेदी।
दुवो (पु०) दोनों।
दुशमन दे० (पु०) शत्रु, वैरी, विपक्षी, अरि, रिपु।
दुशाला दे० (पु०) शाल का जोड़ा, महा कम्बल, ऊनी बहुमूल्य वस्त्र विशेष जो ओढ़ने के काम में आता है, जिसके चारों तरफ़ फूल पत्ती बनी होती हैं। [कुव्यवहार।
दुश्चरित तद्० (पु०) मन्द प्रकृति, कुरीति, कुचलन,
दुश्चरित्रा (स्त्री०) कुलटा, व्यभिचारिणी, छिनाल।
दुश्चरित्रता तद्० (स्त्री०) कुचाल, दुर्व्यवहार, बदमाशी, गुंडापन।
दुश्चिकित्स्य (वि०) असाध्य रोगी, जिसकी कठिनाई से चिकित्सा की जा सके, चिकित्सा के लिये असाध्य।
दुष्कर तद्० (वि०) कष्टसाध्य, क्लेशकर, दुःख से करने योग्य, असाध्य, दुस्साध्य।
दुष्कर्म तद्० (पु०) कुकर्म, नीच क्रिया, अधम व्यवहार, बदफेली, बदमाशी।
दुष्कर्मी तद्० (पु०) दुष्कृतकारी कुक्रियान्वित, पापी, अधाचारी, दुरात्मा, बदफेल, बदमाश।
दुष्कुलीन तद्० (वि०) दुष्कुलोद्भव, कुवंशजात, अधम कुल में उत्पन्न।
दुष्कृत तद्० (पु०) पाप, कुक्रिया, अपराध, दोष।
दुष्कृती तद्० (वि०) पापी, पापाचारी, दुष्कर्मी, दुरात्मा, बदकाम, गुंडा।
दुष्ट तद्० (पु०) बुरा, नीच, उपद्रवी, अधम, पापिष्ठ निर्लज्ज, विरुद्धान्त करण, कुजन, बदमाश, गुंडा। —चारी० (वि०) अधार्मिक, खल दुर्जन। —ता (स्त्री०) दौरात्म्य, खलता, दुर्जनता, बदमाशी, गुंडापन।
दुष्टा तद्० (स्त्री०) भ्रष्टा, पुंश्चली, व्यभिचारिणी, असती छिनाल, दुराचारिणी।
दुष्टात्मा तद्० (पु०) दुष्ट, नीच, उपद्रवी बदमाश, गुंडा, अन्त करण का खोटा। [साध्य प्रवेश।
दुष्प्रवेश तद्० (पु०) दुर्गम प्रवेश, अति परिश्रम
दुष्प्राप्य तद्० (वि०) दुर्लभ, अप्राप्य, अगम्य।
दुष्यन्त तद्० (पु०) चन्द्रवंशीय एक राजा, इनको दुष्मन्त भी कहते हैं। एक समय अहेर खेलने दुष्यन्त वन में गये थे। जाते जाते यह कण्व मुनि के आश्रम में पहुँचे। अपने परिजनों को बाहर ही छोड़कर राजा आश्रम में गये। वहाँ उन्होंने तापस वेषधारिणी एक अविवाहिता युवती देखी, उसका नाम शकुन्तला था। राजा ने उसी के मुँह से उसकी उत्पत्ति तथा नाम आदि सुने थे। दुष्यन्त ने शकुन्तला से गान्धर्व विवाह किया और किसी कार्यवश अपनी राजधानी को लौट गये। राजधानी में जाकर शकुन्तला को बुलवाने की राजा ने प्रतिज्ञा की थी, परन्तु वहाँ जाकर वे भूल गये। शकुन्तला के एक पुत्र हुआ। उस बालक की तीन वर्ष की अवस्था होने पर महर्षि कण्व ने जातकर्म आदि संस्कार करके शकुन्तला को राजा के पास भेजा। राजा ने शकुन्तला के विवाह की बातें भूलकर उसका प्रत्याख्यान किया। तेजस्विनी शकुन्तला ने भी बड़ी बड़ी बातें राजा को सुनाईं, इसी समय देववाणी हुई। "राजा तुम अपनी पत्नी और पुत्र को ग्रहण करो"। (महाभारत आदि पर्व)। कालिदास ने अपने अभिज्ञान शकुन्तला नामक नाटक में इस कथा को कुछ उलट दिया है।
दुसह तद्० (वि०) असह्य, कठिनता से सहने योग्य।
दुसाध दे० (पु०) दोसाध, नीच जाति, अन्त्यज, अस्पृश्य जाति, अछूत जाति।
दुसूती दे० (स्त्री०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो बिछाने के काम में आता है, दो सूत का बिना वस्त्र।
दुस्तर तद्० (वि०) दुष्पार, अतरणीय, दुस्तरणीय, कठिनता से पार जाने योग्य। [योग्य।
दुस्त्यज तद्० (वि०) अपरिहरणीय, दुःख से त्यागने
दुस्थ तद्० (वि०) दुरवस्थान्वित, दुःखी, दरिद्र, क्लेशयुक्त, असुस्थ।—ता (स्त्री०) दारिद्र्य, दैन्य, दौर्भाग्य, क्लेश, दुर्गति।
दुहत्था (पु०) दो मूठ वाला।
दुहना दे० (क्रि०) दोहना, गारना, गौ के स्तनों से दूध निकालना।

दुहराना दे० (क्रि०) दूना करना, दो बार करना या कराना, द्विरुक्ति, दो परत करना।

दुहाई दे० (स्त्री०) गुहार, पुकार, दुःख से उबारने के लिये पुकार, शरण, शपथ, कसम।—तिहाई करना (वा०) बार बार पुकारना, व्याकुल होकर रक्षक को पुकारना, संकट से बचाने को बुलाना।

दुहाना दे० (क्रि०) दुहवाना, दूध निकलवाना।

दुहार दे० (पु०) दूध दुहाने वाला।

दुहि दे० (क्रि०) दुहकर।

दुहिता (स्त्री०) कन्या, कुमारी, पुत्री, लड़की, बेटी।—पति (पु०) जामाता, जमाई, दामाद।

दुहेला दे० (वि०) कठिन, भारी, बोझैल।

दुहुँ दे० (अ०) दो, दोनों, उभय।

दुहुँधा या दुह्य तद्० (वि०) दोहने के योग्य, दोहने के उपयोगी।

दुह्यमान तद्० (पु०) जिसमें दुहा जाय, दोहनी विशिष्ट।

दूआ दे० (पु०) दो का अङ्क, ताश का वह पत्ता जिन पर दो बूँद हों। कलाई में पहनने का चाँदी का गहना। (दे०) आशीस।

दूज दे० (स्त्री०) द्वितीया तिथि, पक्ष का दूसरा दिन।

दूजा दे० (वि०) द्वितीय, दूसरा, अन्य।

दूघर दे० (पु०) द्वितीय घर, दूसरा घर, जिसके दो विवाह हुए हों।

दूत तद्० (पु०) वार्ताहार, चर, संवाददाता, सन्देशी, निसृष्टार्थ, मितार्थ और सन्देशहारक—दूत के ये तीन भेद होते हैं। कार्य की सिद्धि असिद्धि आदि का भार जिस दूत पर हो वह निसृष्टार्थ दूत कहा जाता है। जितने के लिये स्वामी का आदेश हो उतना ही काम करने वाला दूत मितार्थ कहा जाता है और जो केवल सम्वाद कहने वाला दूत है उस सन्देशहारक कहते हैं।—ता (स्त्री०) दूतका काम, दूतकर्म। [धार पहुँचाने वाली कुट्टिनी।

दूतिका तद्० (स्त्री०) दूती, नायिका की सखी, सखा

दूती तद्० (स्त्री०) दूत के काम में नियुक्त की हुई स्त्री, समाचारहारिणी, कुट्टिनी, कुटनी। यथा—

दोहा

"निपुन दूतता में सदा, ताहि दूती बखान।
उत्तम, मध्यम अधम ये तीन भाँति सों जान॥

(उत्तम दूती)

मोहै जो मृदु बोलिकै, मधुर बचन अभिराम।
ताहि कहत कविराज हैं, उत्तम दूती नाम॥

(मध्यम दूती)

कछू बचन हित के कहै, बोलै सहित कछूक।
मध्यम दूती कहत हैं, तासों सुकवि अचूक॥

(अधम दूती)

अधम दूतिका जानिये बचन कहत सतराय।
मन्थन को मथि देखिके बरनत सब कविराय॥

—रसराज।

दूत्य (पु०) दूतकर्म।

दूध तद्० (पु०) दुग्ध, क्षीर, पय, गोरस।—पूत (पु०) धन जन।—मुँहा (पु०) बच्चा जो माता का दूध पीता हो।—मुख (पु०) दुध-मुँहा।

दूधाधारी तद्० (वि०) दूध पी के जीनेवाला, केवल दूध के आहार पर रहने वाला, दुग्धाहारी, केवल दूध का अहार करने वाला, पयहारी।

दूधाभाती दे० (स्त्री०) दूध और भात, विवाह की एक रीति, विवाह के चौथे दिन का वर और वधू का परस्पर का भोजन।

दूधिया दे० (पु०) एक प्रकार का पौधा जिसका रस दूध के समान होता है, भाँग जो दूध में छानी गयी हो, दूध मिली हुई। [दूधिया पौधा।

दूधी दे० (वि०) दूध का, दुधैला। (पु०) मौसी,

दून (पु०) दूना।

दूना दे० (वि०) दोहरा, दुगुना, द्विगुण।

दूब तद्० (पु०) दूर्वा, तृण विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध तृण, यह तृण गणेशजी पर चढ़ाने के काम में आता है और इसे घोड़े बड़े चाव से खाते हैं।

दूबर या दूबरा तद्० (वि०) दुर्बल, निर्बल, बल रहित, पतीज। [दूब की हरियाली।

दूबिया दे० (स्त्री०) रत्न विशेष, दूब के समान रङ्ग,

दूबे (पु०) द्विवेदी, दुबे, ब्राह्मणों की अल्ल विशेष।

दूर तद्० (वि०) अनिकट, असम्मिकृष्ट, अन्तर, बीच, व्यवधान, परे, न्यारा।—गामी (वि०) दूर गमन कारी, दूर जानेवाला।—(पु०) तीर, वायु, पवन।—गम (पु०) गधा, रासभ।—तर (पु०) अधिक

दूर, अत्यन्त दूर।—दर्शक (पु०) दूरबीन, देखने का एक यन्त्र जिसकी सहायता से बहुत दूर की वस्तु देखी जाती है। (वि०) दूर देखने वाला, अग्रसोची।—दर्शिता (स्त्री०) विवेक, विवेकिता, दूरदेशी।—दर्शी (वि०) विवेकी, ज्ञानी, गीध, दूरदेशी।—दृष्टि (स्त्री०) दूरदर्शन, विवेक।—बीन (पु०) दूरवीक्षण, दूर देखने का यन्त्र।—भागना (धा०) घृणा करना, अपमान करना, सम्बन्ध तोड़ना।—वीक्षण (पु०) दूरबीन, दूर दर्शन यन्त्र।—मूल (पु०) जवासा।—स्थ (पु०) दूरस्थित, दूरवर्ती, दूरदेश का।

दूरीकरण तत्० (पु०) दूर कर देना, हटा देना, अन्तर कर देना, भगा देना। [हटाया हुआ।

दूरीकृत तत्० (वि०) भगाया हुआ, निकाला गया, दूर

दूर्वा तत्० (स्त्री०) तृण विशेष, दूब घास।—ष्टमी (स्त्री०) [दूर्वा+अष्टमी] भादों शुक्लपक्ष की अष्टमी।

दूलह दे० (पु०) देखो दुलहा।

दूषक तत्० (वि०) [दुष्+अक] निन्दक, निन्दा करने वाला, कलङ्कित करने वाला, दूषयिता।

दूषण तत्० (पु०) निन्दा, दोष, त्रुटि, दोष प्रकाशन, भर्त्सन, कुलक्षण, राक्षस विशेष। जङ्घेश्वर रावण के एक सेनापति का नाम, इसके दूसरे भाई का नाम खर था। रावण का राज्य गोदावरी तीरस्थ दण्डकारण्य तक विस्तृत था। उसकी रक्षा के लिये खर और दूषण नामक दो सेनापति १४ हज़ार सेना के साथ वहाँ रहते थे। रावण की बहिन सूर्पनखा भी उसी वन में रहती थी। सीता और लक्ष्मण के साथ जिस समय रामचन्द्र इस वन में रहते थे उस समय सूर्पनखा ने अपना ब्याह रामचन्द्र से करने की इच्छा प्रकट की थी। इससे क्रुद्ध होकर लक्ष्मण ने उसकी नाक और कान काट डाले। सूर्पनखा की ऐसी दशा देखकर खर और दूषण ने रामचन्द्र पर चढ़ाई की। पाँच हज़ार सेना का मालिक दूषण था। खर और दूषण दोनों ही राम के हाथ मारे गये। केवल अकम्पन नामक एक राक्षस इस समाचार को रावण के पास पहुँचाने के लिये बचा हुआ था।

दूषित तत्० (वि०) दोष प्राप्त, अभिशप्त, निन्दित, दोषयुक्त, भ्रष्ट, कलङ्कित, अपवादित, बदनाम।

दूषीका तत्० (स्त्री०) कीचड़, कीचट, कीचड़, आँखों का मल। [नीच, कुत्सित, गर्हित।

दूष्य तत्० (वि०) कुत्सनीय, दूषण करने योग्य, निन्द-

दूसर, दूसरा दे० (वि०) द्वितीय, दूजा और अन्य।

दूहिया दे० (पु०) दो मुँहा चूल्हा।

दृग तत्० (पु०) दृक्, आँख, चक्षु, नेत्र, नयन।—अञ्चल तत्० (पु०) पलक, नेत्रपट, दृगपट।

दृग्गणित (पु०) गणित विधि विशेष, जो ग्रहों को वेध कर किया जाता है।

दृग्गोचर (पु०) आँख से दिखाई देने वाला।

दृढ़ तत्० (वि०) पोढ़ा, अचल, कठोर, अतिशय अगाढ़, बलवान्, कठिन।—तम (वि०) अत्यन्त कठिन, अतिशय, कठोर।—तर (वि०) अधिक कठिन।—ता (स्त्री०) काठिन्य, कठिनता, स्थिरता।—त्व (पु०) काठिन्य, कठोरता।—धन्वा (पु०) समर्थ धनुर्धारी, उत्तम धन्वी।—प्रतिज्ञ (वि०) स्थिरप्रतिज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, सत्यसन्ध।—मत (पु०) धर्म कर्म में एकाग्रचित्त, धर्मपरायण।—मुष्टि (पु०) खड्ग, कृपाण, तलवार। [विशीर्ण, मज़बूत अङ्गों वाला।

दृढाङ्ग तत्० (पु०) हीरक, हीरा। (वि०) कठिन अङ्ग

दृढ़ाना दे० (क्रि०) पोढ़ा करना, बलवान् करना, सबल बनाना, मज़बूत करना।

दृढार्ति तत्० (स्त्री०) धनुष का अग्रभाग, कोटी।

दृप्त तत्० (वि०) [दृप्+क्त] गर्वित, अहंकृत, अभिमानी, अहङ्कारी, घमंडी, गर्वीला, शेख़ीबाज़।

दृश्य तत्० (वि०) देखने योग्य, देखने की वस्तु, रमणीय, मनोहर। (पु०) तमाशा।

दृश्यमान तत्० (पु०) देखने योग्य, दर्शनीय, देखने के लिये उपयोगी।

दृषद्वती तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, यह नदी आर्यावर्त देश की पूर्वी सीमा पर बहती है।

दृष्ट तत्० (वि०) ईक्षित, आलोकित, नेत्रगोचर, प्रकट देखा गया, देखा हुआ।—कूट (पु०) दृष्टान्त, प्रहेलिका, पहेली कुम्मैनल।—पाद (पु०) प्रत्यक्षपाद।

दृष्टान्त तत्० (पु०) [दृष्ट+अन्त] उदाहरण, उपमा, नज़ीर, मिसाल, निदर्शन, समानता करण, तुलना करण।
दृष्टि तत्० (स्त्री०) आलोकन, निरीक्षण, दर्शन, चक्षु, आँख, नेत्र, नयन नज़र, निगाह, बुद्धि, विवेक, विचार।—गोचर (पु०) नयनगोचर, साक्षात, प्रत्यक्ष।—पात (पु०) दर्शन, ताक, कटाक्ष, चितवन।—शीश (पु०) शिव, महादेव।
देग्राड़ा दे० (पु०) दीमक का बना हुआ घर, वाल्मीक।
देई दे० (क्रि०) देवै, देता है, दे करके।
देखना दे० (पु०) पेखना, लखना, ताकना, निहारना।—भालना (वा०) ध्यान से देखना, विचार पूर्वक देखना, ताकना, निहारना, परखना।
देखवैया दे० (वि०) दर्शक, देखने वाला।
देखा दे० (क्रि०) दर्शन किया, अवलोकन किया, साक्षात्कार किया।—देखी (स्त्री०) दृष्टानुसरण, देख के अनुसरण करना।—सुना (वा०) साक्षात् सन्दर्शन, विचार पूर्वक निश्चय किया हुआ, जाना हुआ।
देजा दे० (पु०) दायजा, दहेज, यौतुक, कन्यादेय द्रव्य। (क्रि०) सौंप जा, अर्पण कर जा।
देढ़ दे० (वि०) सार्द्धैक, आधा अधिक एक, एक और आधा, डेढ़।
देदीप्यमान तत्० (पु०) जाज्वल्यमान, अतिशय दीप्ति विशिष्ट, चमकीला, चमकदार, प्रकाशशील।
देन दे० (पु०) ऋण, उधार, देय।—दार (पु०) अधमर्ण, कर्ज़खोर, ऋण लेने वाला।—लेन (पु०) व्यवहार, व्यापार, वनिज, देना लेना।
देना दे० (क्रि०) दे देना, दे डालना, सौंपना, त्यागना, अर्पित करना। (पु०) ऋण, देय, देन, उधार, कर्ज़।—पाना (वा०) देन लेन, दिया धन पाना।
देनी दे० (स्त्री०) देने वाली, सौंपने वाली।
देमारना दे० (क्रि०) पटकना, पटक देना, पछाड़ डालना। [नीप।
देय तत्० (वि०) दान योग्य, देने योग्य, परिशोध-
देर दे० (स्त्री०) विलम्ब, अबेर, ढील।
देरी दे० (स्त्री०) विलम्ब, गौण, देर।
देव तत्० (पु०) [दिव्+अच्] अमर, सुर, देवता, नाटकोक्ति में राजा।—कली (स्त्री०) एक रागिनी का नाम।—काण्डार (पु०) ...सुर, एक पौधे का नाम।—काष्ठ (पु०) देवदारु, ...चन्दन।—कुण्ड (पु०) बिना बनाया हुआ कुण्ड, स्वयं बना हुआ जलकुण्ड, देवखात।—कुसुम (पु०) लवङ्गलता, लवङ्ग।—खात (पु०) अकृत्रिम जलाशय।—गायक (पु०) गन्धर्व, देव योनि विशेष।—गिरि (पु०) हिमालय पर्वत। (स्त्री०) रागिनी विशेष।—गुरु (पु०) बृहस्पति, सुराचार्य।—गृह (पु०) देवालय, देव मन्दिर, ठाकुरबाड़ी, चन्द्रमा और सूर्य का ज्योतिर्मण्डल।—चिकित्सक (पु०) अश्विनी कुमार।—उठान (पु०) देवोत्थान, व्रत विशेष, कार्तिक शुक्ला एकादशी। इस दिन भगवान् विष्णु निद्रा त्याग करते हैं।—तरु (पु०) मन्दार वृक्ष, पारिजात, कल्पवृक्ष।—ता (पु०) अमर, देव, सुर।—ताधिप (पु०) देवराज, देवस्वामी, इन्द्र।—तीर्थ (पु०) अँगुलि का अग्रभाग, उसी से देवतर्पण किया जाता है।—तुल्य (वि०) देवता के समान, अमर सदृश।—त्व (पु०) देवताओं के धर्म, देवपद देवता का आविर्भाव।—त्र (पु०) देवस्व, देवता को अर्पित धन आदि।—दत्त (पु०) बुद्ध का छोटा भाई, अर्जुन के शङ्ख का नाम, शरीर धारण करने वाले पञ्च प्राणों के अन्तर्गत एक प्राण विशेष। (वि०) देवप्रसाद, देवता का दिया हुआ।—दारु (पु०) वृक्ष विशेष, पारिभद्रक, देवकाष्ठ।—दासी (स्त्री०) अप्सरा, स्वर्गवेश्या, देवता को भेंट की हुई स्त्री, जाति विशेष की स्त्री।—दूत (पु०) देवता का भेजा हुआ दूत, पवन, वायु।—देव (पु०) महादेव ब्रह्मा।—द्वेष्टा (पु०) देव शत्रु, देव निन्दक, नास्तिक, पाखण्डी, असुर, दानव, दैत्य।—धान्य (पु०) देवता का धान्य।—धुनि (स्त्री०) देवनदी, गङ्गा, भागीरथी।—धूप (पु०) गुग्गुल, धूप विशेष।—नागरी (पु०) देव समान विद्वानों की लिपि, हिन्दी भाषा की वर्णमाला।—निन्दक (पु०) ईश्वर निन्दाकारी, नास्तिक पाखण्डी।—निष्ठ (पु०) ईश्वरवादी, ईश्वरभक्त।

—पति (पु०) इन्द्र, देवराज, सुरपति।—पथ (पु०) देवमार्ग, छायापथ, आकाशमार्ग, परिवाद-पथ।—पूजक (पु०) देवोपासक, देवार्चक, देवाराधनकर्त्ता।—पूजा (स्त्री०) देवता का पूजन, देवता की आराधना।—प्रतिमा (स्त्री०) देव-प्रतिमूर्त्ति, भगवान् की मूर्त्ति।—वधू (स्त्री०) देव स्त्री, महारानी, यथाः—

"देववधू बर्वहिं हरि ल्यायो।
क्यों सबहीं तजि ताहि न खायो॥"—रामचन्द्रिका।

—ब्रह्मा (पु०) देवर्षि, नारद मुनि।—ब्राह्मण (पु०) देव पूजित ब्राह्मण, देव तुल्य ब्राह्मण।—भवन (पु०) अश्वत्थ वृक्ष, पीपल का पेड़, स्वर्ग।—मणि (पु०) कौस्तुभ मणि, घोड़े के बाल विशेष की भँवरी।—माता (स्त्री०) अदिति, कश्यप की स्त्री।—मातृक (पु०) वृष्टि के जल से पालित देश।—मास (पु०) गर्भ का आठवाँ महीना, देवों का महीना, मनुष्य के परिमाण से तीन वर्ष का समय।—मुनि (पु०) नारद।—यज्ञ (पु०) होम, हवन, मन्त्रोच्चारण पूर्वक अग्नि में घृताहुति प्रदान।—योनि (पु०) उप-देवता, भूत प्रेत पिशाच आदि, गन्धर्व।—रथ (पु०) देवयान, देवताओं का विमान, पुष्पक रथ।—राज (पु०) इन्द्र, सुरपति।—रात (पु०) राजा परीक्षित।—लोक (पु०) देवों का वास-स्थान, स्वर्ग।—वाणी (स्त्री०) संस्कृत भाषा।—वृक्ष (पु०) कल्पवृक्ष, कल्पद्रुम।—वर्णिनी (स्त्री०) भारद्वाज मुनि की कन्या और विश्रवा की पत्नी, इनके गर्भ से विश्रवा ने वैश्रवण नामक एक पुत्र उत्पन्न किया था, वैश्रवण का दूसरा नाम कुबेर था। ये देवों के धनाध्यक्ष हैं, पहले लङ्का-पुरी इनकी राजधानी थी। परन्तु अपने सौतेले भाई रावण को इन्होंने लङ्का दे दी, और स्वयं हिमालय के ऊपर अलकापुरी को अपनी राज-धानी बनाया।—श्रोणि (स्त्री०) सत्परिषद्, देवों की सभा।—सर (पु०) मानसरोवर।—सेना (स्त्री०) सावित्री के गर्भ से उत्पन्न प्रजापति की कन्या इनका दूसरा नाम षष्ठी था, देवसेनापति कार्तिकेय से इनका विवाह हुआ था, इनकी दूसरी बहिन का नाम दैत्यसेना है।—स्त्री (स्त्री०) देवाङ्गना, देवपत्नी।—स्थान (पु०) देवालय देवगृह, देवमन्दिर।—स्व (पु०) देवधन, देवपूजा के लिये स्थापित धन।—हिंसक (पु०) असुर, दैत्य दानव, सुरारि।

देवक सं० (पु०) भोजवंशीय राजा विशेष, भोज वंशीय राजा आहुक के पुत्र। इनके भाई का नाम, उग्रसेन और कन्या का नाम देवकी था, देवक श्रीकृष्ण के नाना थे। (पु०) देवता का, देव का।

देवकी सं० (स्त्री०) देवक राजकन्या, श्रीकृष्ण की माता।—नन्दन (पु०) श्रीकृष्ण।

देवन सं० (पु०) [दिव्+अनट्] क्रीड़ा, व्यवहार, जिगीषा, क्रीडोद्यान, द्युति, स्तुति, द्यूत, जुआ, देवता का बहुवचन।

"देवन दीन्हीं दुन्दुभी।"

देवयानी सं० (स्त्री०) दैत्यगुरु शुक्राचार्य की कन्या और राजा ययाति की स्त्री। दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा के साथ इसका बड़ा प्रेम था। एक दिन दोनों स्नान करने गयीं। भूल से शर्मिष्ठा ने देवयानी के कपड़े पहन लिये, इससे उन दोनों में विवाद हुआ। शर्मिष्ठा ने देवयानी के पिता को अपने पिता का स्तुति पाठक (खुशामदी) कहा और देवयानी को कुएँ में ढकेलकर घर पर चली गई। भाग्यवश उसी वन में राजा ययाति शिकार खेलने आये थे, उन्होंने कुएँ से स्त्री की चिल्लाहट सुनकर उसे निकलवाया। कुएँ से निकल कर देवयानी अपने घर नहीं गयी, उसने एक दासी से अपना वृत्तान्त अपने पिता के निकट कहला-भेजा। पिता शुक्राचार्य सब बातें सुन वृषपर्वा के निकट गये और उसके राज्य से अपने जाने की इच्छा, कारण के साथ प्रकट की। इससे वृषपर्वा बहुत घबराया और वह देवयानी के समीप आकर उसको प्रसन्न करना चाहा। देव यानी ने कहा कि यदि हजार दासियों के साथ तुम्हारी कन्या शर्मिष्ठा मेरी दासी बने तो मैं तुम्हारे नगर में आ सकती हूँ। वृषपर्वा ने यह स्वीकार किया। शर्मिष्ठा ने अपने पिता की आज्ञा को सादर और सहर्ष स्वीकार किया और

यह हजार दासियों के साथ देवयानी की सेवा करने लगी। एक समय देवयानी, शर्मिष्ठा और उनकी दासियाँ किसी वन में विचर रही थीं, उसी समय राजा ययाति भी संयोग से उस वन में उपस्थित हुए। प्रथम दर्शन ही से राजा ययाति और देवयानी का प्रेम हो गया था। देवयानी ने उनको पति बनाना चाहा, शुक्राचार्य ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। देवयानी का ब्याह हो गया। उनके साथ शर्मिष्ठा भी देवयानी की ससुराल गई।

देवर दे० (पु०) पति का छोटा भाई।

देवरानी दे० (स्त्री०) देवर की स्त्री, देवताओं की रानी, देवराज की स्त्री। यथाः—
"देवराज लिये देवरानी मनो,
पुत्र संयुक्त भूलोक में सहियो।"
—रामचन्द्रिका।

देवल तद्० (पु०) महर्षि विशेष, असित मुनि के पुत्र और व्यासदेव के शिष्य। एक समय रम्भा नामक स्वर्ग की अप्सरा इन पर आसक्त हुई, परन्तु इन्होंने उसका प्रत्याख्यान किया। इससे चिढ़ कर रम्भा ने शाप दिया कि तुम्हारी यह सुन्दरता व्यर्थ है, तुम इसके योग्य नहीं हो, तुम कुरूप हो जाओ। रम्भा के शाप से देवल अष्टावक्र हो गये थे।

देवल तद्० (पु०) देव पूजोपजीवी, पुजारी ब्राह्मण, नारद मुनि, धर्मशास्त्रवक्ता मुनि विशेष। (दे०) मन्दिर, ठाकुरद्वारा, देवस्थान, यथाः—
"तुलसी देवल देव को लागे लाख करोर।
काग अभागे हगि भरयो महिमा भई न थोर॥"

देवहूति तद्० (स्त्री०) स्वायम्भु मनु की कन्या तथा कर्दम प्रजापति की भार्या, इन्हीं के गर्भ से सांख्यदर्शन प्रणेता महर्षि कपिल का जन्म हुआ था। कपिल के अतिरिक्त इनके नौ और कन्याएँ भी थीं। [देने वाला।

देवा तद्० (पु०) देव, देवता, अमर, सुर, दिवाल,

देवाङ्गना तद्० (स्त्री०) देवस्त्री, देवभार्या, अप्सरा।

देवान दे० (पु०) कर्मसचिव, राजा के शासन में यो। देनेवाला मन्त्री, राजा का प्रधान सचिव।

देवाना (पु०) उन्मत्त, विक्षिप्त, पागल।

देवानांप्रिय (पु०) मूर्ख, बकरा।

देवारि तद्० (पु०) दैत्य, निशाचर, दानव।

देवाल दे० (पु०) चारदीवारी, प्राचीर, चारों ओर की भीत, देनेवाला, दानी, दानशील।

देवालय तद्० (पु०) देवस्थान, देवल, देवगृह।

देवाला दे० (पु०) दिवाला। व्यापार बिगड़ना, लेन देन का मारा पड़ना, दिवाला।

देवालिया दे० (वि०) जिसका दिवाला निकल गया, गतसर्वस्व, निर्धन, दरिद्र।

देवाली दे० (स्त्री०) दिवाली का त्योहार।

देवालेई दे० (स्त्री०) देनलेन, सराफी, महाजनी।

देवि तद्० (स्त्री०) देखो देवी।

देवी तद्० (स्त्री०) दुर्गा, भवानी, नाट्योक्ति में कृता-भिषेका रानी, सामान्य देवपत्नी, मादागणी, आदित्य-भक्ता, श्यामा नामक एक पक्षी विशेष।

देवेन्द्र तद्० (पु०) देवाधिप, देवराज, इन्द्र।

देवोत्थान तद्० (पु०) कार्तिक सुदी एकादशी जिस दिन भगवान् विष्णु निद्रा का त्याग करते हैं।

देवोद्यान तद्० (पु०) देवता का उपवन, सुन्दर वाटिका, विहार स्थान, नन्दन कानन।

देवोन्माद (पु०) वह पागलपन जिसमें रोगी पवित्र रहता सुगन्धित पुष्प मालाएँ पहनता है। आँखें बन्द नहीं करता और संस्कृत बोलता है। यह देवता के कोप से होता है।

देवोपासना तद्० (स्त्री०) देवाराधना, देवपूजा।

देश तद्० (पु०) पृथिवी का खण्ड, मण्डल, जन-लोक, स्थान, प्रदेश, मुल्क।—कार (पु०) एक राग विशेष।—दशाभिज्ञ (पु०) देश की अवस्था जानने वाला, देश वृत्तान्त वेत्ता।—निकाला (पु०) दण्ड विशेष, किसी अपराध के कारण अपना देश छोड़कर बाहर हो जाने की राजाज्ञा।—भक्त (पु०) देश की सेवा करने वाला, देश को कष्टों से छुड़ाने वाला।—भाषा (स्त्री०) देश की भाषा, राष्ट्रभाषा, देश की बोली।—मय (पु०) देश में व्याप्त, देश में सर्वत्र विस्तृत।—रूप (पु०) उचित, योग्य, देशानुसार।—स्थ (वि०) देश में स्थित, देश में वर्तमान, देश

में ठहरा हुआ। (पु०) महाराष्ट्र ब्राह्मण का एक भेद। [देश की रीति भांति।
देशाचार तत्० (पु०) देश का आचार, व्यवहार,
देशाटन तत्० (पु०) देश परिभ्रमण, देश की यात्रा।
देशाधिप तत्० (पु०) राजाधिराज, अधिराज, देशाधिपति, राज्याधिकारी। [देशाधिप।
देशाधीश तत्० (पु०) देश का स्वामी राजा,
देशान्त तत्० (पु०) देश की सीमा, देश का सिवाना।
देशान्तर तत्० (पु०) विदेश, सुमेरु और लङ्का का मध्यवर्ती भूमिखण्ड, मध्याह्न रेखा के पूर्व या पश्चिम किसी स्थान की दूरी, भारत के ज्योतिषी लङ्का से और यूरप के ज्योतिषी ग्रीनविच नामक नगर से देशान्तर का गणित करते हैं।
देशावर दे० (पु०) दूसरा देश, अन्य देश, परदेश।
देशिक तत्० (पु०) गुरु, आचार्य, मन्त्रज्ञान के उपदेशक गुरु।
देशी तत्० (स्त्री०) रागिनी विशेष, दीपक राग की भार्या। (वि०) देश का, देश सम्बन्धी, देश में उत्पन्न।
देशोन्नति तत्० (स्त्री०) देश की उन्नति, देश की तरक्की, देश की बढ़ती, देश की वृद्धि, देश में सुकाल होना, देशवासियों की सुखसमृद्धिपूर्णता।
देह तत्० (स्त्री०) शरीर, तन, काय, गात्र, बदन, जिस्म।—ज (वि०) देहोत्पन्न, देहजात, शरीर से उत्पन्न, बदन से पैदा।—त्याग (पु०) मरण, मृत्यु, प्राणत्याग, मरना।—दुराना (धा०) गुप्त अङ्गों का ढांकना।—पात (पु०) शरीरपतन, मृत्यु, मौत, मरन।—भृत् (पु०) जीव, प्राण, आत्मा।—यात्रा (स्त्री०) शरीर धारण, भोजन, निर्वाह, मरण, देहत्याग।—हीन (पु०) देहरहित, अशरीर।
देहरा दे० (पु०) देवघर, चौहरा, देवालय, देहरादून नामक नगर।
देहली दे० (स्त्री०) चौखट, देहरी, ड्योढ़ी, द्वार के नीचे की लकड़ी, दिल्ली नामक नगर।
देहात्मवादी तत्० (पु०) चार्वाक, नास्तिक विशेष, जो देह को आत्मा कहते हैं। इनके सिद्धान्त से देहातिरिक्त दूसरा पदार्थ नहीं है, आत्मा परमात्मा आदि इनके सिद्धान्त में नहीं माने जाते। जिस प्रकार अन्न को सड़ाने से उसमें मादकशक्ति उत्पन्न हो जाती है, उसी प्रकार पञ्चभूतों के एकीकरण से उनमें एक प्रकार की चेतना उत्पन्न हो जाती है और जब पञ्चभूतों का विश्लेषण होता है तब चेतना भी आश्रयनाश के साथ ही साथ नष्ट होती है। इनके मत में कर्म धर्म आदि कुछ पदार्थ ही नहीं है और परलोक मानने की भी कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। परन्तु पञ्चभूतों के एकीकरण और विश्लेषण में हेतु क्या है इस प्रश्न का उत्तर अभी तक देहात्मवादियों को देते नहीं बना।
देही तत्० (वि०) शरीरयुक्त, शरीर, जीव, आत्मा। (क्रि०) देता है।
दैजा दे० (पु०) दायजा, कन्या को देयद्रव्य, यौतुक।
दैतेय तत्० (पु०) दैत्य, असुर, दानव, दिति के पुत्र।
दैत्य तत्० (पु०) असुर, दिति पुत्र।—गुरु (पु०) शुक्राचार्य, भार्गव।—निसूदन (पु०) विष्णु, नारायण।—पुरोधा (पु०) शुक्राचार्य।—माता (स्त्री०) दिति, कश्यप की स्त्री।—पूज्य (पु०) दैत्यों के पूजनीय, दैत्य पुरोहित, शुक्राचार्य।—सेना (स्त्री०) प्रजापति की कन्या और देवसेना की भगिनी, यह केशी नामक दानव की स्त्री थी, केशी ने इसे बलपूर्वक हरण करके इससे व्याह किया था। [दैत्यपुरोहित।
दैत्याचार्य तत्० (पु०) [दैत्य+आचार्य] शुक्राचार्य,
दैत्यारि तत्० (पु०) [दैत्य+अरि] विष्णु, नारायण।
दैनंदिन तत्० (पु०) प्रात्याह्निक, प्रति वासर सम्बन्धी, जो प्रति दिन हो।—प्रलय (पु०) ब्रह्मा का दैनिक प्रलय विशेष, प्रति दिन का अपक्षय, प्रति दिन पदार्थों में एक प्रकार की विकृति।
दैनिक तत्० (पु०) आह्निक दिनभर, दिन का, प्रति दिन होनेवाला।—पत्र (पु०) प्रति दिन प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र।—वेतन (पु०) प्रति दिन का वेतन, प्रत्येक दिन की मजूरी।
दैनिकी तत्० (स्त्री०) एक दिन का वेतन, एक दिन की मजूरी। [वानर्य, दंगालपन।
दैन्य तत्० (पु०) दीनता, दरिद्रता, कृपणता, कातरता,

दैर्घ्य तत्० (पु०) दीर्घता, लंबाई ।
दैय्या दे० (स्त्री०) माँ, माता, देव, आश्चर्य या आर्त्त होने पर यह शब्द मुँह से निकलता है ।
दैव तत्० (पु०) भाग्य, अदृष्ट, विधाता, प्रारब्ध, ललाट, अँगुलि का अग्रभाग, अष्टविध विवाहान्तर्गत विवाह विशेष ।—ज्ञ (पु०) गणक, लग्नाचार्य, ज्योतिषी ।—दुर्विपाक (पु०) दुरदृष्ट, दुर्भाग्य, दैव दुर्घटना ।—वाणी (स्त्री०) आकाशवाणी, अमानुषी वचन, संस्कृत वाक्य ।—युग (पु०) देवताओं का युग, देवताओं के परिमाण के अनुसार बारह हज़ार वर्ष परिमित काल और मनुष्यों की गणना के अनुसार चार युग ।—योग (पु०) दैवात्, हठात्, अकस्मात्, अचानक ।—वादी (वि०) आलसी, भाग्याधीन, अकर्मण्य, सुस्त, काहिल । [सम्बन्धी ।
दैवत तत्० (पु०) देव समूह । (वि०) देव
दैवलक तत्० (पु०) भौर, भूतभक्त, भूत सेवक ।
दैवागत तत्० (पु०) भाग्य से प्राप्त सुख या दुःख, अकस्मात्, हठात् ।
दैवात् तत्० (अ०) हठात्, अकस्मात्, दैवाधीन ।
दैवाधीन तत्० (पु०) दैवायत्त, ईश्वराधीन, हठात्कार ।
दैवानुरागी तत्० (पु०) ईश्वर का प्रेमी, ईश्वर भक्त, भगवद्भक्त, भाग्य से प्रेम करने वाला, भाग्यानुसार काम करने वाला ।
दैवानुरोधी तत्० (वि०) दैववशीभूत, दैवायत्त, भाग्यानुवर्ती, भाग्य पर निर्भर रहने वाला ।
दैवायत्त तत्० (पु०) दैवाधीन, भाग्यानुसार, अकस्मात्, हठात्, ईश्वराधीन ।
दैविक तत्० (वि०) देव सम्बन्धी, भाग्य से उत्पन्न व्याधि, पीड़ा विशेष, भूतादि उपद्रव जनित पीड़ा । यथाः—

" दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
रामराज काहू नहिं व्यापा ॥ "—रामायण ।

प्रारब्ध का, विधिवश ।
दैवी तत्० (स्त्री०) हठात् घटना, आपद्, सम्पत्ति विशेष, मानसिक सम्पत्ति, जो इह तथा परलोक के कार्यों में सहायक हो, जिसका उपदेश गीता में भगवान् ने किया है ।
दैव्य तत्० (पु०) भाग्य, अदृष्ट, दैव, पूर्वकर्म, प्रारब्ध ।
दैशिक तत्० (वि०) देश सम्बन्धी, नैयायिकों के मत से एक सम्बन्ध, समान देश जात वस्तुओं में यह सम्बन्ध माना जाता है । देशनिष्ठ विशेषणता ।
दैहिक तत्० (वि०) देह सम्बन्धी, कायिक, शारीरिक, जिस्मानी ।
दैहौं दे० (क्रि०) दानार्थक, देना धातु की भविष्य कालिक क्रिया, दूँगा । यथा :—

" निज भुज बल मैं बैर बढ़ावा ।
दैहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा ॥ "
—रामायण ।

दो दे० (वि०) द्वि, दो की संख्या ।.(क्रि०) लाओ, दे दो ।
दोउ या दोऊ दे० (वि०) दोनों, उभय, युग्म ।
दोआब (पु०) दो नदियों के बीच का देश ।
दोक दे० (पु०) बछेड़ा, दो दाँत का बछेड़ा ।
दोकना दे० (क्रि०) गर्जना, गर्जन करना, घुरघुराना, घूरना, दहाड़ना ।
दोकला (पु०) दो फलों वाला ताला ।
दोकोहा (पु०) दो कूबर वाला ऊँट ।
दोख (पु०) दोष, दुर्गुण ।
दोखना (क्रि०) कलह लगाना ।
दोखी (गु०) ऐबी, अपराधी, शत्रु ।
दोगला दे० (वि०) वर्णसङ्कर, दूसरे वर्ण से उत्पन्न ।
दोगाड़ा दे० (पु०) दोनली बंदूक, वह बंदूक जिसमें दो नली हों, वह बंदूक जिसमें एक साथ दो गोलियाँ या कारतूस भरे जाँय ।
दोगाना दे० (वि०) दोहरा, द्विगुण, द्विगुणित, दो लड़ा ।
दोगुना (गु०) दुगुना ।
दोचर दे० (वि०) दुहरा, दूसरा ।
दोजख (पु०) नरक, पौधा विशेष ।
दोजा (पु०) वह पुरुष जिसके दो विवाह हुए हों ।
दोजिया (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।
दोजीवा तत्० (स्त्री०) द्विजीवा, गर्भिणी, अन्तःसत्त्वा, अन्तरपत्या, वह स्त्री जो गर्भवती हो, दुपत्या ।
दो जी से होना दे० (वा०) गर्भ रहना, गर्भवती होना, अन्तःसत्त्वा होना ।

दोझा दे॰ (पु॰) दुजायर, दो विवाहकर्त्ता, दूसरे विवाह का वर, एक विवाह के पश्चात् दूसरा विवाह करने वाला।

दोतल्ला (पु॰) दो मंजिला। [माला।

दोतारा (पु॰) एक तरह का दुशाला, एक प्रकार का

दोदना दे॰ (क्रि॰) झुठलाना, मुकरना, बात कह कर पलटना।

दोधक तद्॰ (पु॰) छन्द विशेष।

दोधूयमान तद्॰ (वि॰) पुनः पुनः कम्पन विशिष्ट, बराबर काँपने वाला, हमेशा हिलने वाला।

दोन (पु॰) दुआबा, दो पहाड़ों के बीच का स्थान, दो वस्तुओं का मेल काठ का खोखला पात्र विशेष जो खेतों की सिंचाई के काम आता है।

दोना दे॰ (पु॰) दौना, पत्तों का बना हुआ कटोरा-नुमा पात्र, एक प्रकार का पत्रपात्र, पुष्प विशेष, दोनामरुआ।

दोनाली दे॰ (स्त्री॰) दो नली की बन्दूक।

दोनों दे॰ (वि॰) दोऊ, उभय, दो।

दोपहर (पु॰) मध्यान्ह।

दोपीठा (पु॰) दोरुखा।

दोयम दे॰ (पु॰) दूसरा, दो तह, दो बार।

दोवे दे॰ (पु॰) दुबे, ब्राह्मणों की एक पदवी।

दोमापिया (वि॰) दुर्भाषिया।

दोमुहा तद्॰ (पु॰) द्विमुख, दो मुँह का साँप, बरहा, गड़ुवा, द्विजिह्व।

दोय दे॰ (वि॰) दो, दो की संख्या, २।

दोरक तद्॰ (पु॰) सितारा का तार, अनन्त चतुर्दशी के दिन का सूत्ररूप प्रसाद, जिसे अनन्त कहते हैं।

दोर्दण्ड तद्॰ (पु॰) बाहुरूपी दण्ड, भुजदण्ड।

दोल तद्॰ (पु॰) दोलोत्सव, श्रीकृष्ण का झूलन, हिंडोला।

दोलन तद्॰ (पु॰) [दुल्+अनट्] झूलन, हिलन।

दोला तद्॰ (पु॰) हिंडोला, झूलना, पालना।

दोलिका तद्॰ (स्त्री॰) हिंडोला, झूलन जिस पर झूलते हैं।

दोष तद्॰ (पु॰) [दुष्+अच्] दूषण, त्रुटि, कलङ्क, भ्रम, पाप, अपराध, चूक, भूल, ऐब, दुर्गुण, अवगुण, निन्दा, धा॰ ए, वात पित्त और कफ।—कर (पु॰) दूषणकारक, अनिष्टकर, निन्दाकर।—क्षालन (पु॰) अपराध मार्जन, कलङ्क मार्जन, दोषापनयन।—गायक (पु॰) निन्दक।—ग्राहक (पु॰) दोष ग्रहणकर्त्ता, अपवाद कारक, निन्दक, खल, छिद्रान्वेषी।—ज्ञ (पु॰) पण्डित, चिकित्सक, दोषवेत्ता।—त्रय (पु॰) वात, पित्त, कफ।—नाश (पु॰) पापमोचन, अपवादहरण।—भाक् (पु॰) अपराधी, निन्दार्ह, निन्दा के योग्य।

दोषक तद्॰ (पु॰) निन्दक, अपराधी, दोषी पापी।

दोषना दे॰ (क्रि॰) दोष देना, दोष लगाना, अपराध लगाना।

दोषा तद्॰ (स्त्री॰) रात्रि, निशा, रात। (अ॰) प्रदोष, निशामुख, सन्ध्या।—तन (वि॰) निशा-जात, रात्रिजात, रात में उत्पन्न।

दोषादोष तद्॰ (पु॰) भलाई बुराई, उत्तम निकृष्ट।

दोषारोपण तद्॰ (पु॰) दोष लगाना, अपराध लगाना, तुहमत लगाना।

दोषावह तद्॰ (वि॰) [दोष+आवह] दोषोत्पन्न, जिससे दोष की उत्पत्ति हो। [मुक्त, अशुद्ध।

दोषी तद्॰ (वि॰) कलङ्की, अपराधी, पापी, दोष

दोषैकदृक् तद्॰ (वि॰) दोषमात्रदर्शी, जो गुणों को छोड़ कर केवल दोष ही दोष देखा करता है, ऐब देखने वाला, छिद्रान्वेषी।

दोसरा दे॰ (पु॰) दूसरा, द्वितीय, संगी, साथी, सहचर।

दोसाद दे॰ (पु॰) धानुक, नीच जाति विशेष, दुसाध, अस्पृश्य जाति, अछूत जाति, अन्त्यज जाति।

दोस्त दे॰ (पु॰) मित्र, बन्धु, सुहृद्।—ी (स्त्री॰) मैत्री, स्नेह।

दोहगा (स्त्री॰) रखनी, वह स्त्री जिसका पति मृत हो गया हो और जिसे अन्य पुरुष ने रख लिया हो।

दोहड़िया दे॰ (स्त्री॰) गाथा या एक छन्द विशेष।

दोहत्थड़ दे॰ (स्त्री॰) दोनों हाथों का थपेड़, तमाचा।

दोहता तद्॰ (पु॰) दौहित्र, बेटी का बेटा, दोहिता, धेवता, धेवता। [धेवती, धेवती।

दोहती तद्॰ (स्त्री॰) दौहित्री, बेटी की बेटी, दोहिती,

दोहद तद्० (पु०) इच्छा, स्पृहा, गर्भ, गर्भिणी का अभिलाप, गर्भिणी की लालसा, साध ।—लक्षण (पु०) गर्भ के लक्षण, गर्भचिन्ह ।

दोहदवती तद्० (स्त्री०) अन्नपानादि पदार्थों में अभिलाप रखने वाली गर्भवती स्त्री । [दुहना ।

दोहन तद्० (पु०) दुग्ध निस्सारण, दूध निकालना,

दोहनी तद्० (पु०) दोहनपात्र, दूध दुहने का पात्र ।

दोहर दे० (स्त्री०) दोहरावस्त्र, जो ओढ़ने के काम में आता है, गलेफ, खाप । [आवृत्ति होना ।

दोहरना (क्रि०) दोहरा करना, दोहरा होना, दूसरी

दोहरा दे० (पु०) द्विगुण, द्विगुणित, दुगुना, पद्य विशेष, पहेली का छन्द ।

दोहराव दे० (पु०) दोहराया हुआ, दोहराने का काम, तह करना ।

दोहला (पु०) दो बार की ब्यायी हुई गौ ।

दोहली (स्त्री०) आक, मदार ।

दोहा दे० (पु०) दो चरण का श्लोक, पद्यविशेष, यह ४८ मात्राओं का होता है । प्रथम तृतीय चरण में तेरह तेरह मात्राएँ और द्वितीय चतुर्थ चरणों में ग्यारह ग्यारह मात्राएँ होती हैं ।

दोहाई दे० (स्त्री०) दुहाई, पुकार, गुहार, विचार के लिये प्रार्थना करना, शपथ, सौगन्द ।

दोहात तद्० (पु०) द्विहायन, दो वर्ष का बच्चा ।

दोहिता तद्० (पु०) दौहित्र, बेटी का बेटा ।

दौंगड़ा दे० (पु०) भारी वर्षा ।

दौड़ दे० (स्त्री०) धावा, सपेट, अति वेग से गमन, शीघ्र गमन, पुलिस का दल जो गुंडों या जुआरियों के गिरोह को गिरफ़्तार करने को जाता है ।—धूप (स्त्री०) यत्न, परिश्रम, उद्योग, चेष्टा ।—धूप करना (वा०) बहुत उद्योग करना, बड़ा परिश्रम करना । [चलना ।

दौड़ना दे० (क्रि०) धावना, सपेट लगाना, वेग से

दौड़ा दे० (पु०) घुड़चढ़ा, घुड़सवार, बटमार ।—दौड़ (क्रि०) अविश्रान्त, अथक ।—दौड़ी (स्त्री०) दौड़ धूप, शीघ्र गमन ।

दौड़ाक दे० (पु०) दौड़ने वाला, धावक, दौड़ाहा ।

दौड़ाना दे० (क्रि०) वेग से चलाना, शीघ्र चलना ।

दौड़ाहा दे० (पु०) दौड़ने वाला, सन्देसिया, हरकारा ।

दौत्य तद्० (पु०) दूत का धर्म, दूत का कर्म, वार्तावदता, वार्तावाहक ।

दौना दे० (पु०) पत्ते से बना कटोरानुमा पात्र, दोना ।

दौर (पु०) भ्रमण, फेरा । [दौरी से बड़ा ।

दौरा दे० (पु०) टोकरा, बड़ी टोकरी, टोकना,

दौरात्म्य तद्० (पु०) दुरात्मा का कार्य, परपीड़न, उत्पात, अनिष्ट, दुर्जनता, दुष्टता, पाजीपन, नीचता ।

दौरान (पु०) चक्कर, फेरा, झोंका ।

दौरी दे० (स्त्री०) चंगेरी, टोकरी, छोटा दौरा ।

दौहित्र तद्० (पु०) दुहिता पुत्र, दोहता, कन्या तनय, बेटी का बेटा । [बेटी की बेटी ।

दौहित्री तद्० (स्त्री०) कन्या की कन्या, दुहिता पुत्री,

द्युति तद्० (स्त्री०) प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति, शोभा, किरण, तेज, प्रभा । [पेड़, अर्कवृक्ष ।

द्युमणि तद्० (पु०) सूर्य, रवि, भानु, अकौआ का

द्युमत्सेन तद्० (पु०) शाल्वदेश के राजा, इनके पुत्र का नाम सत्यवान् और पुत्रवधू का नाम सावित्री था । राजा द्युमत्सेन किसी विशेष कारण से अन्धे हो गये थे । कतिपय अधम कर्मचारियों ने मिल कर राजा द्युमत्सेन को राजच्युत कर दिया । तब महारानी शैव्या और पुत्र सत्यवान् को लेकर राजा द्युमत्सेन वन में गये, एक समय मद्रदेश के राजा उसी वन में गये और उन्होंने अपनी कन्या का विवाह सत्यवान से करना ठीक किया । मद्र-देश की राजकुमारी का ब्याह सत्यवान् से हो गया । सत्यवान अल्पायु थे, थोड़े ही दिनों में उनकी आयु पूर्ण हो गई । सावित्री ने अपने पातिव्रत के प्रभाव से यमराज को मोहित करके उनसे कितने ही वर पाये । उन्हीं वरों के प्रभाव से राजा द्युमत्सेन ने नेत्र और राज्य पुनः पाये और मृत सत्यवान् भी पुनः जीवित हो गये । राजा द्युमत्सेन योग्य पुत्र सत्यवान् को राज्य का भार देकर और उचित समय पर वानप्रस्थ व्रत ग्रहण कर पुनः वन में चले गये ।

द्युलोक (पु०) स्वर्ग लोक ।

द्युसद् तद्० (वि०) स्वर्गवासी, स्वर्ग में रहने वाला, (पु०) देवता, देव, सुर ।

द्यूत तद्० (पु०) जुआ, इसनाम प्रसिद्ध क्रीड़ा विशेष ।
—कार (पु०) जुआरी, जुआ खेलनेवाला ।
—क्रीड़ा (स्त्री०) जुए का खेल ।—पूर्णिमा (स्त्री०) आश्विन की पूर्णिमा ।
द्यो तद्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, सुरलोक, आकाश ।
द्योत तद्० (पु०) दीप्ति, प्रकाश, चमक, किरण ।
द्योतक तद्० (पु०) प्रकाशक, प्रकाशशील, दीप्तिमान् ।
द्योतन तद्० (पु०) प्रकाशन, प्रकाशकरण, दर्शन, प्रदीप ।
द्योतित तद्० (वि०) प्रकाशित, प्रकटित, व्यक्तीकृत ।
द्योरानी दे० (स्त्री०) देवरानी, पति के छोटे भाई की स्त्री ।
द्यौस (पु०) दिन, दिवस । [का भाग ।
द्रम्म तद्० (पु०) मान विशेष, सोलह, १६ पण-
द्रव तद्० (पु०) स्नेह, द्रव्य, चिकनी वस्तु, पनीली वस्तु, रसीली वस्तु, रस, पलायन, गतिवेग ।—भाव (पु०) तरलभाव, गलना, पिघलना ।
द्रवण (पु०) दौड़, गमन, गति, बहाव ।
द्रविड़ तद्० (पु०) देश विशेष, दक्षिण देश का एक प्रान्त, यहाँ के रहने वाले ब्राह्मण द्राविड़ कहे जाते हैं । [रुपया, पैसा ।
द्रविण तद्० (पु०) धन, द्रव्य, काञ्चन, सोना,
द्रवित तद्० (वि०) बहता हुआ, पिघला हुआ, कृपायुक्त, नम्र । [पिघलाना, गलाना ।
द्रवीकरण तद्० (पु०) कठिन द्रव्य को सरल करना,
द्रवीभूत तद्० (पु०) गलित, मिश्रित, टिघला हुआ, पिघला हुआ । [युक्त हो ।
द्रवौ, द्रवहु दे० (क्रि०) दया करो, कृपा करो, दया-
द्रव्य तद्० (पु०) वित्त, धन, नैयायिकों के मत से पृथिवी, अप्, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन ये नौ द्रव्य हैं ।—जन्मभाव (पु०) वस्तु और वस्तु जन्य पदार्थ का सम्बन्ध विशेष ।
द्रष्टव्य तद्० (वि०) दर्शनीय, दर्शन योग्य, मनोहर, रमणीय, देखने योग्य । [दिखवैया ।
द्रष्टा तद्० (पु०) देखने वाला, दर्शक, दर्शनकारी,
द्राक्षा तद्० (स्त्री०) दाख, अँगूर, मुनक्का, किशमिश ।
—रस (पु०) मदिरा, मद्य ।—लता (स्त्री०) अँगूर की लता, अँगूर की टहनी ।

द्राघिमा तद्० (स्त्री०) दीर्घता, लंबाई, दीर्घत्व, दैर्घ्य । [भेद, सोहागा, पिघलाने वाला ।
द्रावक तद्० (पु०) द्रवकारक, गलाने वाला, प्रस्तर
द्रावण तद्० (पु०) द्रवकरण, गलाना, निर्मलीकरण, पिघलाना, बहाना, साफ़ करना ।
द्राविड़ तद्० (पु०) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत की दक्षिण दिशा का देश, द्रविड़ देशवासी, ब्राह्मण विशेष, कचूर । [इलायची, द्रविड़ देश की भाषा ।
द्राविड़ी तद्० (स्त्री०) द्रविड़ देशोत्पन्न वस्तु, छोटी
द्रुत तद्० (पु०) पिघला हुआ सुवर्ण आदि, शीघ्र, तुरन्त, त्वरित । (पु०) नृत्य विषयक शीघ्र गमन ।
—गामी (पु०) शीघ्रगामी, द्रुतगमनकर्त्ता, जल्दी चलने वाला ।—पद (पु०) छन्द विशेष ।
द्रुपद तद्० (पु०) चन्द्रवंशी पृषत नामक राजा का पुत्र, राजा पृषत के साथ भारद्वाज ऋषि की मित्रता थी । पृषत् के पुत्र द्रुपद और भरद्वाज के पुत्र द्रोण दोनों समान वय के थे, अतएव इनमें भी मित्रता होगई । राजा पृषत् के मरने पर द्रुपद राजा बनाये गये । भरद्वाज के मरने के बाद द्रोण तपस्या करने लगे । द्रुपद राजा होकर अपने बाल्यमित्र को भूल गये थे । एक समय द्रोण पूर्व मैत्री स्मरण करके राजा के पास गये, परन्तु राजा ने दरिद्र ब्राह्मण पुत्र से मैत्री करनी न चाही । कुछ दिनों के बाद द्रोण कौरव और पाण्डवों के अस्त्रशिक्षक नियत हुए । द्रोण द्रुपद के अपमान को भूले नहीं थे । भीम अर्जुन आदि जब अस्त्रशिक्षा में निपुण हो गये तब द्रोण ने द्रुपद पर चढ़ाई करके उसे बाँध कर अपने समीप लाने के लिये अर्जुन को आज्ञा दी । अर्जुन ने पाञ्चाल राज्य पर चढ़ाई की और आमात्यों के साथ राजा द्रुपद को बाँधकर ले ले आये । द्रोण ने अपने पूर्व अपमान की बात का स्मरण दिलाकर द्रुपद से मैत्री की, परन्तु इस दबाव की मैत्री को मैत्री नहीं कह सकते । द्रुपद को इससे बड़ा दुःख हुआ । इसका बदला लेने के लिये द्रुपद एक पुत्र प्राप्ति की कामना से यज्ञ करने लगे । गङ्गातीरवासी याज और उपयाज नामक दो स्नातक ब्राह्मणों को द्रुपद ने अपना पुरोहित बनाया और उन्हीं के द्वारा यज्ञ सम्पन्न

किया। इसी यज्ञ से द्रोणहन्ता धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति हुई थी। उसी यज्ञवेदी से एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जिसे द्रौपदी अथवा कृष्णवर्ण होने के कारण कृष्णा कहते हैं। महाभारत के युद्ध में द्रोण ने द्रुपद को मारा था, परन्तु द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न के द्वारा द्रोणाचार्य मारे गये। द्रुपद का एक नपुंसक सन्तान शिखण्डी था, जिसके द्वारा भीष्म मारे गये।

द्रुपदी तद्० (स्त्री०) राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री, (देखो द्रौपदी)

द्रुम तत्० (पु०) [द्रु+म] वृक्ष, पारिजात, पेड़, रूख, तरुवर।—व्याधि (स्त्री०) लाचा, लाख, लाही।—श्रेष्ठ (पु०) तालवृक्ष, ताड़ का पेड़। (वि०) उत्तम वृक्ष, श्रेष्ठ पेड़।—लय (पु०) जंगल।

द्रुमाजिक तत्० (पु०) राक्षस विशेष, एक राक्षस का नाम।

द्रुमारि तत्० (पु०) [द्रुम+अरि] वृक्षों का शत्रु, हाथी, गज, करी। (वि०) कुठार, कुल्हाड़ी, अन्धड़, प्रचंड वायु।

द्रुमाश्रय तत्० (पु०) [द्रुम+आश्रय] शरट, कृकलास, गिरगिट। (वि०) वृक्ष पर रहने वाले प्राणिमात्र।

द्रुमिजा (स्त्री०) छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होनी चाहिये।

द्रुमेश्वर तत्० (पु०) [द्रुम+ईश्वर] तालवृक्ष, अश्वत्थवृक्ष, पीपल का पेड़, चन्द्रमा, निशाकर।

द्रुहिण तत्० (पु०) विधाता, विधि, ब्रह्मा, प्रजापति।

द्रेक्काण तद्० (पु०) राशि के तीसरे भाग का एक [भाग।

द्रोण तत्० (पु०) परिमाण विशेष, चार आढक का परिमाण, आढक चतुष्टय। ३२ सेर प्रचलित परिमाण। द्रोणाचार्य, कौरव पाण्डवों के धनुर्विद्या के गुरु, (देखो द्रोणाचार्य) कृष्ण काक, वृश्चिक, बिच्छू, चार सौ धनुष परिमाण का जलाशय। श्वेतवर्ण घोरा फूल।—काक (पु०) कैला कौआ, वन्यवायस दाँड़ काक।—पुष्पी (स्त्री०) पौधा विशेष, गोमांचक वृक्ष यह औषध के काम में आता है।—मुख (पु०) चार सौ गाँवों में से सुन्दर गाँव।

द्रोणाचल (पु०) द्रोण नामक पहाड़।

द्रोणाचार्य तत्० (पु०) [द्रोण+आचार्य] भरद्वाज ऋषि के पुत्र। भरद्वाज का आश्रम गङ्गा तट पर था एक दिन गङ्गास्नान के समय भरद्वाज ने विवस्त्रा घृताची नाम की अप्सरा को देखा। उसके देखने से कामविवश महर्षि का रेतःपात हुआ। घृताची ने उसको द्रोण नामक यज्ञ के पात्र में रख दिया, कुछ दिनों के बाद उस यज्ञपात्र से एक लड़का उत्पन्न हुआ। महर्षि ने उसका नाम भी द्रोण ही रखा। भरद्वाज ने अग्निवेश्य नामक ऋषि को आग्नेयास्त्र की शिक्षा दी थी। द्रोण ने भी धनुर्विद्या और आग्नेयास्त्र की शिक्षा उन्हीं अग्निवेश्य से पायी। द्रोण का मित्र द्रुपद नामक राजा था। (देखो द्रुपद) परन्तु किसी विशेष कारण से इनकी मित्रता नष्ट हो गयी। पिता की आज्ञा से शरद्वान की कन्या कृपी से द्रोणाचार्य ने अपना ब्याह किया। उसी विवाह से द्रोण के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम अश्वत्थामा था। अस्त्र विद्या सीखने के लिये द्रोण महेन्द्र पर्वत पर परशुराम के निकट गये और वहाँ उन्होंने अस्त्र विद्या सीखी। पाण्डव और कौरवों को पढ़ाने के लिये भीष्म पितामह ने इन्हें नियुक्त किया। अर्जुन इनका प्रिय शिष्य था। अर्जुन ने जब गुरुदक्षिणा देने की इच्छा प्रकट की तब द्रोणाचार्य ने कहा था—"अर्जुन जब कभी हम तुमसे युद्ध करें। उस समय तुम भी मेरे साथ खूब युद्ध करना। उस समय किसी प्रकार का सङ्कोच मत करना।" इसी कारण महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने गुरु के साथ घोर संग्राम किया। नहीं तो द्रोण का सब से अधिक प्रिय शिष्य अर्जुन कभी गुरु के साथ युद्ध करने का साहस नहीं करता। उसी युद्ध में अश्वत्थामा के मरने का संवाद सुनकर द्रोण मूर्छित हुए। इसी अवसर पर धृष्टद्युम्न ने तलवार से उनका सिर काट डाला।

द्रोणी तत्० (स्त्री०) [द्रोण+ई] देश विशेष, नदी विशेष, डोंगी, छोटी नौका, पर्वत विशेष, दो पर्वतों की सन्धि।

द्रोह तद्० (पु०) [द्रुह्+घञ्] वैर, द्वेष, डाह, विरोध, जिघांसा, अनिष्ट चिन्तन, अपकार, क्षति, हानि पहुँचाने की इच्छा।—कारी (पु०) [द्रुह्+कृ+णिच्] द्वेषी, वैरी, विरोधी।—चिन्तन (पु०) दूसरों का अनिष्ट करने की, चिन्ता, किसी की बुराई सोचना।

द्रोहिया तद्० (वि०) द्रोही, द्वेषी, वैरी, विरोधी।

द्रोही तद्० (पु०) [द्रुह्+इन] द्रोह करने वाला, अनिष्टकारी, खल, पिशुन, स्वभाव से वैरी, विरोधी, द्वेषी।

द्रोणायन तद्० (पु०) [द्रोण+आयन] द्रोणाचार्य का पुत्र, अश्वत्थामा यह सात चिरजीवियों में से है।

द्रौपदी तद्० (स्त्री०) पाञ्चालराज द्रुपद की यज्ञवेदी से उत्पन्न कन्या। इसका वर्ण काला था इस कारण इसका दूसरा नाम कृष्णा था। स्वयंवर स्थान में लक्ष्यभेद करके अर्जुन ने इसे पाया था। परन्तु पाँचों भाइयों का इससे ब्याह हुआ। यह अपने पतियों के साथ वन वन घूमती फिरती थी। अज्ञातवास के समय विराट के घर इसने सैरिन्ध्री (दासी) का काम किया था। दुःशासन और दुर्योधन ने भरी सभा में इसका अपमान किया था। इसीका बदला भीम ने कुरुक्षेत्र के युद्ध में लिया था। महाभारत युद्ध समाप्त होने पर कुछ दिनों तक यह सुख शान्ति से राज्यभोग करती थी। पुनः जब इसके पति महाप्रस्थान के लिये उद्यत हुए तब द्रौपदी भी अपने पतियों के साथ चली, हिमपर्वत पर चढ़ने के समय सब से पहले यही गिर गयी थी।

द्वन्द्व तद्० (पु०) युग्म, जोड़ी, युगल, मिथुन, रहस्य, स्त्री पुरुष की जोड़ी, विवाद, झगड़ा, रोग विशेष षड्विध समास के अन्तर्गत एक समास का नाम। द्वन्द्व समास, सुख दुःख, राग द्वेष, शीत आतप आदि।—कारी (वि०) कलहकारक, झगड़ालू विवादी।—चर (पु०) चक्रवाक पक्षी, चकवा।—ज (पु०) [द्वन्द्व+जन्+ड] दो दोषों से उत्पन्न रोग, कलहजन्य, कलह से उत्पन्न।—युद्ध (पु०) मल्ल युद्ध, हाथापाई।

द्वय (पु०) दो।

द्वाचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत् तद्० (वि०) दो अधिक चालीस, ४२, बयालीस।

द्वात्रिंशत्, द्विात्रिंशत् तद्० (वि०) दो अधिक तीस, ३२, बत्तीस।—अक्षरी (पु०) ग्रन्थ, पुस्तक।—लक्षण (पु०) बत्तीस लक्षण, जो महापुरुषों में होते हैं, वे ये हैं—सुकृत, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुचिता, अभ्यास, वरविद्या, सुमान; परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परजीत्याग, पूर्णता, लोकेश, दास विभाग, युद्धविद्या, मित्रविद, सत्संग, अकाम, गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रियत्व, दातृत्व, धर्म, देवपूजन, अल्पनिद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धैर्य इति।

द्वादश तद्० (पु०) [द्वादश+डट्] दो अधिक दस, १२ बारह, बारहवीं संख्या।—उपवन (पु०) साङ्केतिक बारह उपवन यथा—श्यामकुण्ड, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर, बरसाना, संकेत, नन्दघाट, चोरघाट, बलरामस्थल, नन्दगाँव, गोकुल, चन्दनवन।—कर (पु०) बृहस्पति, कार्त्तिकेय।—पद्म (पु०) योनि विशेष।—भानु (पु०) बारह सूर्य।—भानुकला (स्त्री) सूर्य की बारह कलाएँ उनके नाम ये हैं। तपिनी, तापिनी धूम्रा, मरीची, ज्वालिनी, रुचि, रुचिरभिन्ना, भोगदा, विश्ववोधिनी, धारिणी, क्षमा, शोषिणी।—लोचन (पु०) कार्त्तिकेय, कुमार, देव सेना, पति।—अक्ष तद्० (पु०) [द्वादश+अक्ष] कार्त्तिकेय, षडानन।—वन (पु०) बारह वन जो ब्रज में हैं। मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन, बेलवन, भाण्डीर वन।

द्वादशांशु तद्० (पु०) [द्वादश+अंशु] बृहस्पति, सुराचार्य देवगुरु। [अक्षरों का मंत्र विशेष।

द्वादशाक्षर तद्० (पु०) वासुदेव भगवान् का १२

द्वादशाङ्गुल तद्० (पु०) [द्वादश+अङ्गुल] वितस्ति परिमाण, एक बीता, आधा हाथ, एक बिलस्त।

द्वादशात्मा तद्० (पु०) [द्वादश+आत्मा] सूर्य, भानु, दिवाकर, अर्कवन का पेड़।

द्वादशाह (पु०) सूतक का १२ वें दिन का कृत्य, १२ दिवस में समाप्त होने वाला यज्ञ विशेष।

द्वादशी तद्० (स्त्री०) [द्वादश+डट्+ई] तिथि विशेष, पक्ष की बारहवीं तिथि, चन्द्रमा की बारहवीं कला का समय।

द्वापर तद्० (पु०) युग विशेष, तीसरा युग, इसका मान ८६४००० वर्ष का होता है। इसमें श्रीकृष्ण और बौद्ध दो अवतार हुए थे। सन्देह, अनिश्चय।

द्वापञ्चाशत् तद्० (वि०) संख्या विशेष, दो अधिक पचास, ५२, बावन।

द्वार तद्० (पु०) निकलने का मार्ग, घर में से निकलनेका पथ, दरवाजा।—कपाटक(पु०) किवाड़, कपाट, अरगल।—पण्डित (पु०) किसी राज्य का मुख्य पण्डित।—पाल(पु०) द्वाररक्षक, दरबान।—पालक (पु०) द्वाररक्षक, दरबान, पहरुआ, प्रहरी।—यन्त्र (पु०) द्वार बन्द करने का यन्त्र, ताला, कुलुफ।

द्वारका तद्० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध पुरी, श्रीकृष्ण की नगरी, जो काठियावाड़ में समुद्र के तट पर और समुद्र के भीतर है।

द्वारकेश तद्० (पु०) श्रीकृष्ण, द्वारका के अधिपति।

द्वारा तद्० (पु०) कारण से, हेतु से, सहायता से, ज़रिया, निमित्त।

द्वारावती तद्० (स्त्री०) द्वारवती, द्वारका, जिसको श्रीकृष्ण ने बसाया था, जो सुवर्णमयी द्वारका के नाम से प्रसिद्ध है।

द्वारिका तद्० (स्त्री०) द्वारका, द्वारावती, चार धाम के अन्तर्गत तीर्थ विशेष।—धीश (पु०) [द्वारिका+अधीश] श्रीकृष्णजी।

द्वारी तद्० (पु०) [द्वार+इन्] द्वारपाल, द्वाररक्षक, दरबान, पौरिया। [पासड।

द्वाषष्टि, द्विषष्टि तद्० (वि०) दो अधिक साठ, ६२

द्वासप्तति, द्विसप्तति तद्० (वि०) संख्या विशेष, दो अधिक सत्तर, ७२, बहत्तर। [दरबान, पौरिया।

द्वास्थ तद्० (पु०) द्वाररक्षक, द्वारपाल, द्वारी,

द्विः तद्० (अ०) बारद्वय, दो बार।—श्रुतिधर (पु०) [द्वि श्रुति+ए+धृ] किसी बात को जो बार सुनने ही से जो स्मरण रखता हो।

द्विगु तद्० (पु०) समास विशेष, यह समास तत्पुरुष समास के अन्तर्गत है। [संख्या द्वारा गुणित।

द्विगुण तद्० (वि०) दुगुना, दोहरा, दुबारा, दो

द्विगुणित तद्० (वि०) द्विगुणीकृत, दुगुना किया हुआ, दो से गुणा किया हुआ।

द्विचत्वारिंशत् तद्० (वि०) संख्या विशेष, दो अधिक चालीस, ४२, बयालीस।

द्विज तद्० (पु०) [द्वि+जन्] दो बार उत्पन्न ब्राह्मणादि त्रिवर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, इन वर्णों की दूसरी उत्पत्ति जन्म और संस्कार से होती है अतएव ये द्विज कहे जाते हैं। अण्डज, पक्षी, दाँत, दन्त।—पति (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क, चन्द्रमा ब्राह्मणों के स्वामी हैं श्रुति में लिखा है "सोमोऽस्माकं राजा" अर्थात् सोम हम लोगों का राजा यानी शासक है।—प्रपा (स्त्री०) आलवाल, वृक्ष मूल में जल देने के लिये बनाया हुआ थाला।—प्रिया (स्त्री०) सोमलता, सोमनाम की वल्ली। (वि०) त्रिवर्ण की प्रिय वस्तु।—बन्धु (पु०) ब्राह्मण के समान, अधमब्राह्मण, कुत्सित ब्राह्मण।—वर्य (पु०) श्रेष्ठ ब्राह्मण, उत्तम ब्राह्मण।—ब्रुव (पु०) जातिमात्र का ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण।—राज (पु०) चन्द्रमा, शशधर, शशाङ्क।

द्विजन्मा तद्० (पु०) [द्वि+जन्+मन्] विप्र, ब्राह्मण, दन्त, पक्षी, क्षत्रिय, वैश्य। (वि०) दो बार उत्पन्न होने वाला। [अण्डज, पक्षी।

द्विजाति तद्० (पु०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य,

द्विजातीय तद्० (पु०) त्रिवर्ण सम्बन्धी।

द्विजालय तद्० (पु०) [द्विज+आलय] वृक्ष कोटर, ब्राह्मण गृह, पक्षियों का स्थान, घोंसला, खोंता।

द्विजिह्व तद्० (पु०) [द्वि+जिह्व] सर्प, पिशुन, खल, इधर की बात उधर कहने वाला, चुगलखोर, चुगली खाने वाला।

द्विजोत्तम तद्० (पु०) [द्विज+उत्तम] ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, श्रेष्ठपक्षी, गरुड़। [एक रेखा विशेष।

द्विज्या तद्० (स्त्री०) [द्वि+ज्या] गोलाध्याय का

द्वितय तद्० (वि०) [द्वि+तय] युग्म, दो।

द्वितीय तद्० (वि०) [द्वि+तीय] दो की पूरण करने वाली संख्या, दूसरा, दूजा, द्वय।

द्वितीया तद्० (स्त्री०) [द्वितीय+आ] गेहिनी, भार्या, तिथि विशेष, चन्द्रमा की दूसरी तथा पन्द्रहवीं कला की क्रिया का समय।

द्वितीयान्त तद्० (वि०) जिसके अन्त में द्वितीया विभक्ति का प्रत्यय हो। [वाली संख्या।
द्वित्रा तद्० (स्त्री०) दो या तीन की पूरण करने
द्वित्व तद्० (पु०) [द्वि+त्व] दो संख्या, भारद्वय कथन, एक को दो बार कहना, दोहराना।
द्विदैवत्या तद्० (स्त्री०) विशाखा नक्षत्र, इसके दो देवता हैं।
द्विधा तद्० (अ०) दो प्रकार, द्व्यर्थ, सन्देह, अनिश्चित, द्विविध, दो भाँति।—कल्प (पु०) संदेह का विषय, अनिश्चित विषय, शक वाली बात।
द्विप तद्० (पु०) [द्वि+पा+क] द्विरद, हाथी, गज।
द्विपञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत् तद्० (वि०) संख्या विशेष, दो अधिक पचास, ५२, बावन।
द्विपथ तद्० (पु०) दो मार्ग, दो ओर का मार्ग।
द्विपद् तद्० (वि०) दो पैर वाला, द्विपाद विशिष्ट। (पु०) मनुष्य, देवता, पक्षी, राक्षस।—राशि (पु०) मिथुन, तुला, कुम्भ, कन्या और धनु का पूर्वार्द्ध।
द्विपदी (स्त्री०) दो पद का छन्द, दो पदवाला गाना।
द्विपाद (पु०) दो पैरों वाला (पु०) मनुष्य, पक्षी आदि दो पैरों वाले जीव।
द्विपास्य (पु०) गणेश।
द्विमुख तद्० (पु०) एक प्रकार का साँप, दुमुँहा साँप, द्विजिह्व, रामसर्प, धुगुस। [वारण, गज।
द्विरद तद्० (पु०) [द्वि+रद] हाथी, दन्ती, करी,
द्विरदान्तक तद्० (पु०) सिंह, केशरी। [विषधर।
द्विरसन तद्० (पु०) [द्वि+रसन] सर्प, अहि,
द्विरागमन तद्० (पु०) [द्विर्+आगमन] पुनरागमन, बहू का पति के घर दूसरी बार आना, गौना।
द्विरुक्त तद्० (पु०) [द्विर्+उक्त] बारद्वय कथित, दो बार कहा हुआ।
द्विरुक्ति तद्० (स्त्री०) [द्विर्+उक्ति] पुन पुनः कथन, एक बात को दो बार कहना, काव्य का एक दोष, यह शब्दगतदोष कहा जाता है, एक पद्य में एक ही अर्थ का वाचक एक शब्द यदि दो बार आ जाय तो द्विरुक्तिदोष होता है।
द्विरूढ़ा तद्० (स्त्री०) दो बार ब्याही स्त्री।—पति (पु०) विधवा स्त्री का पति।
द्विरूपी तद्० (पु०) [द्विरूप+इन्] द्विमूर्ति, दूसरा रूप धारण करने वाला।
द्विरेफ तद्० (पु०) भ्रमर, भृङ्ग, अलि, भँवरा।
द्विर्भोजन तद्० (पु०) दोबार भोजन। [दूसरा वचन।
द्विवचन तद्० (पु०) दो संख्या की वाचक विभक्ति
द्विविद तद्० (पु०) वानर विशेष, देवताओं के शत्रु नरकासुर से इसकी मैत्री थी। यह बड़ा उपद्रवी था। इसलिये बलदेव जी ने इसको मारा था।
द्विविध तद्० (अ०) दो प्रकार, दो भाँति, द्विधा।
द्विस्वभाव तद्० (पु०) ज्योतिष में प्रसिद्ध लग्न विशेष।
द्विहायनी तद्० (स्त्री०) [द्वि+हायन+ई] द्विवर्षीया, दो वर्ष की अवस्था वाली बालिका।
द्वीप तद्० (पु०) अन्तरीप, अन्तरा, जल मध्यस्थ पृथिवी का खण्ड, जिसके चारों ओर जल भरा हुआ हो हिन्दू शास्त्रानुसार सात द्वीप हैं, ये सातों द्वीप सात समुद्रों से वेष्टित हैं। उन द्वीपों के नाम ये हैं।

१ जम्बुद्वीप, २ कुशद्वीप, ३ प्लक्षद्वीप, ४ शाल्मलीद्वीप, ५ क्रौञ्चद्वीप, ६ शाकद्वीप और ७ पुष्करद्वीप।
द्वीपवती तद्० (स्त्री०) नदी, भूमि।
द्वीपवान् तद्० (पु०) समुद्र, सागर।
द्वीपशत्रु तद्० (पु०) शतावर, सतावर, औषध विशेष, शतावरि।
द्वीपसम्भवा तद्० (स्त्री०) पिंडखजूर।
द्वीपस्थ तद्० (पु०) [द्वीप+स्था+क] द्वीप में रहने वाला, द्वीपवासी।
द्वीपिका तद्० (स्त्री०) सतावर, शतावरि।
द्वीपी तद्० (पु०) व्याघ्र, चित्रक, चीता, बाघ।
द्वीप्य तद्० (वि०) [द्वीप+य] द्वीप में उत्पन्न होने वाला, व्यास जी का नाम। [द्वेषाग, द्रोह।
द्वेष तद्० (पु०) हिंसा, शत्रुता, विरोध, ईर्ष्या, वैर,
द्वेषी तद्० (वि) [द्विष्+इन्] शत्रु, वैरी, रिपु, विरोधी, अमित्र।
द्वेष्टा तद्० (वि) [द्विष+तृन्] विद्वेषक, द्वेषकर्ता।
द्वेष्य तद्० (वि०) [द्विष+य] द्वेष का विषय, द्वेष करने योग्य।
द्वै तद्० (वि०) दो संख्यावाचक।
द्वैत तद्० (पु०) भेद, दो प्रकार का भेद, सन्देह।—

(पु॰) [द्वैत+ज्ञा+क्] द्वैतवादी, भिन्नेश्वरवादी।
—ज्ञान (पु॰) द्वैतवाद, भिन्न ईश्वर का ज्ञान।
—वादी (पु॰) [द्वैत+वद्+णिन्] जीव और ईश्वर का भेद मानने वाला, ईश्वर से जीव की पृथक् सत्ता मानने वाला सिद्धान्त, माध्व आदि।

द्वैध तद्॰ (अ॰) सन्देह, संशय, द्विप्रकार, व्यस्त् क्योंकि, दो खण्ड।

द्वैधीकरण तद्॰ (पु॰) छेदन, खण्ड करना, टुकड़े करना, भेदन।

द्वैभाव तद्॰ (पु॰) विश्लेष, अलगाव, पार्थक्य, परस्पर का विरोध, आपस का झगड़ा।

द्वैपायन तद्॰ (पु॰) व्यासदेव की उपाधि।

द्वैमातुर तद्॰ (पु॰) गणेश, जरासन्ध राजा। (वि॰) दो माताओं से उत्पन्न, भागीरथ।

द्वैमातृक तद्॰ (पु॰) [द्विमातृ+कन्] नदी ताल और मेघ के जल द्वारा जिस देश में अन्न उत्पन्न होता हो, वहाँ के वासी, दो माताओं के पुत्र, भागीरथ।

द्वैरथ तद्॰ (पु॰) दो रथारोहियों का परस्पर युद्ध।

द्वैष तद्॰ (पु॰) द्वेष, हिंसा, बैर, विरोध।

द्व्यङ्गुल तद्॰ (वि॰) [द्वि+अंगुल] अंगुलि द्वय-परिमित, दो अँगुलियों के बराबर की वस्तु।

द्व्यञ्जलि तद्॰ (वि॰) [द्वि+अंजलि] दो अञ्जलि परिमाण, अञ्जलिद्वय, दो अञ्जलियों से नापी हुई वस्तु। [अक्षर, मन्त्रविशेष, दो अक्षर का मन्त्र।

द्व्यक्षर तद्॰ (पु॰) [द्वि+अक्षर] वर्णद्वय, दो

द्व्यणुक तद्॰ (पु॰) [द्वि+अणुक] परमाणुद्वय, दो परमाणु।

द्व्यर्थ तद्॰ (पु॰) [द्वि+अर्थ] अर्थद्वययुक्त, दो प्रकार के अर्थों का वाचक, वे वाक्य या शब्द जिनके दो अर्थ हों, व्यङ्गोक्ति।

द्व्यात्मक तद्॰ (पु॰) [द्वि+आत्मक] मिथुन, कन्या, धनु, मीनराशि, द्विविध, दो प्रकार।

द्व्याह्निक तद्॰ (वि॰) दो दिन के अनन्तर उत्पन्न होने वाला, दिनद्वयजन्य।

ध

ध यह व्यञ्जन का उन्नीसवाँ अक्षर है, इसे दन्त्यवर्ण कहते हैं, क्योंकि इसका उच्चारणस्थान दन्त है।

ध तद्॰ (पु॰) धन, ब्रह्मा, कुबेर, धर्म।

धंधला दे॰ (पु॰) दगा, धोखा, छल, कपट, चकमा, प्रतारणा।

धंधलाना दे॰ (क्रि॰) धोखा देना, चकमा देना, छलना, प्रतारित करना।

धंसना दे॰ (क्रि॰) घुसना, पैठना, प्रविष्ट होना, गड़ना, बेबस पड़ना, फँसना।

धंधक दे॰ (वि॰) उद्यमी, परिश्रमी, कामकाजी, धंधावाला, व्यवसायी, व्यापारी।

धंधा दे॰ (पु॰) काम, उद्यम, व्यवसाय, व्यापार।

धंधार दे॰ (वि॰) उदास, बेकाम रहने वाला, निकम्मा, एकान्ती, निराला, निठल्ला।

धंधारी दे॰ (स्त्री॰) उदासी, शिथिलता, किसी काम में चित्त न देना।

धकधक दे॰ (पु॰) दीप्यमान, प्रकाशमान, उज्ज्वल, दीप्तियोग, धड़क कम्प, कँपकपी, धड़का।

धकधकाना दे॰ (क्रि॰) धड़कना, थरथराना, काँपना, कम्पित होना।

धकधकी दे॰ (स्त्री॰) कँपकपी, थरथराहट, कम्प, वेपथु, थरथरी, धबराहट, धुकधुकी, फेफड़ा, फुप्फुस।

धकेलना दे॰ (क्रि॰) धक्का देना, ढकेलना, ठेलना, धक्का देकर हटाना।

धकेल देना दे॰ (क्रि॰) धक्का देना, आघात से पीछे हटाना, झोंक देना, ठेल देना।

धक्का दे॰ (पु॰) आघात, अभिघात, रेला, झोंका, ठेलाव।—देना (क्रि॰) आघात देना, रेलना, झोंका देना। [दबोची।

धक्कमधक्का दे॰ (पु॰) रेलपेल, ठेलाठेली, दबोचा-

धक्काधक्की दे॰ (स्त्री॰) धक्कमधक्का, रेलापेल, ठेलाठेली।

धक्कामुक्की (स्त्री॰) मारपीट, हाथापाई, मुठभेड़।

धगड़ा दे॰ (पु॰) धिंगरा, उपपति, जार, विट, भड़ुआ। [धट बदलना, छटपटाना।

धगोलना दे॰ (क्रि॰) लोटना, लोट पोट करना, कर

धचका (पु॰) आघात, धक्का।

धज दे० (पु०) ठीकठौल, ठाटबाट, साजबाज, आकार, आकृति, व्यवहार, चालचलन, दशा, अवस्था, रूप, ढौल, चाल, आसन। [कला का एक भेद।
धजभङ्ग तद्० (पु०) ध्वजभङ्ग, रोगविशेष, नपुंसक।
धजा तद्० (स्त्री०) ध्वजा, पताका, कपड़े की झंडी।
धजीला दे० (वि०) रूपवान्, सुरूप, सुन्दर, सुडौल सुस्वरूप, सजीला।
धज्जियाँ उड़ाना दे० (वा०) अपमानित करना, अप्रतिष्ठा करना, दुर्नाम करना, अयश करना।
धज्जियाँ करना दे० (वा०) टुकड़े टुकड़े कर देना।
धज्जी दे० (स्त्री०) चीर, कतरन, टुकड़ा, काग़ज़ या कपड़े का कतरन।
धड़ दे० (पु०) देह, काय, शरीर, गले से नीचे का शरीर। यथा।—

"सिर धड़ से अलग हो गया, वीरों की तलवारें अपनी चकचकाहट से शत्रुओं को चौंधियाती हुई धड़ से सिर अलग करने लगीं।"

धड़का दे० (पु०) गम्भीर ध्वनि, धमक, डर, भय।
धड़कन दे० (स्त्री०) धड़क, भय, डर, भय से उत्पन्न व्याकुलता, हृदय का क्षोभ, धुकधुकी, कम्प, स्पन्दन।
धड़कना दे० (क्रि०) भय करना, डरना, काँपना, भय से व्याकुल होना, थरथराना, धुकधुकाना, धकधकाना, फड़कना। [दहलना।
धड़का दे० (पु०) भय, सन्देह, दुविधा, दुश्चिन्ता,
धड़काना दे० (क्रि०) भय दिखाना, डराना, व्याकुल करना, कँपाना, चिन्तित करना, सन्दिग्ध करना, दुविधा में डालना।
धड़धड़ाना दे० (क्रि०) तड़फड़ाना, छटपटाना, पक्षियों का पर झाड़ना या फड़फड़ाना।
धड़या दे० (पु०) पक्षी विशेष, मैना, सारिका।
धड़ा दे० (पु०) दल, समूह, डाकुओं का समूह, पक्ष, तौल, बोझ, रस, ओर।
धड़ाका दे० (पु०) धमक, शब्द, भारी शब्द, कड़क।
धड़ी दे० (स्त्री०) पाँच सेर की तौल, रेखा।
धत् दे० (स्त्री०) हाथी हाँकने का शब्द, हाथियों के चलाने के लिये संकेतार्थक शब्द, तिरस्कारार्थ शब्द, दुतकार। [दुर्वचन, धिक्कार।
धतींगर दे० (वि०) हृष्टपुष्ट, मोटा, ताज़ा, रोगहीन,

धतूरा तद्० (पु०) धत्तूर, एक वृक्ष और उसके पुष्प का नाम, यह विषैला होता है, कहते हैं यह महादेव को बड़ा प्रिय है।
धतूरिया दे० (वि०) कपटी, छली, बहुरूपिया।
धधकना दे० (क्रि०) प्रज्वलित होना, भभक उठना, आग उठना, एक बार ही जल उठना।
धधच्छर तद्० (पु०) दग्धाक्षर, कविता का एक दोष। कविता के आदि मध्य या अन्त में अशुभफलदायी अक्षरों का आना दग्धाक्षर या धधच्छर कहा जाता है। आदि में द, ग, ष, मध्य में र, भ, ह और अन्त में झ, ट, ञ, अशुभ हैं।
धन तद्० (पु०) बारह राशियों में से एक, अर्थ, माल, द्रव्य, सम्पत्ति, दौलत, वित्त, विभव, स्थावर और जङ्गम सम्पत्ति, गणित में जोड़ का चिन्ह,+ (वि०) धन्य, भाग्यवान।—केलि (पु०) कुबेर, धनाधिप।—क्षेत्र (पु०) धान का खेत।—गर्वित (पु०) धनगर्वी, धन से अहङ्कारी, धन से उन्मत्त।—चेष्टा (स्त्री०) अर्थचिन्ता, धन पाने की इच्छा।
धनक दे० (स्त्री०) कारचोबी, सोना या चाँदी के तार से बनी वस्तु, गुटाव, गोटे का सामान।
धनकटी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा, धान काटने का समय।
धनञ्जय तद्० (पु०) अर्जुन, अग्नि, वायु, विशेष, शरीरस्थित वायु, वृक्ष विशेष, चित्रक वृक्ष, नाग भेद, कलाध्यक्षविशेष। एक संस्कृत कवि का नाम। यह धारानगरी के राजा भोजराज के पितृव्य मुञ्जराज के सभा पण्डित थे। इनका बनाया हुआ संस्कृत में एक ग्रन्थ है जिसका नाम "दशरूपक" है। इस ग्रन्थ में केवल नाटक के लक्षणों ही का वर्णन है। इनके पिता का नाम विष्णु था। महाराज मुञ्ज का समय १० वीं सदी का अन्तभाग माना जा सकता है, तदनुसार इनके सभापण्डित धनञ्जय का भी वही समय मानना होगा।
धनत्तर दे० (पु०) धनी, धनवान, धनिक, प्रतापी, एक पौधा विशेष जिसका पत्ता खट्टा होता है।
धनतेरस (स्त्री०) कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी।
धनन्तर तद्० (पु०) धन्वन्तरि, देववैद्य, चिकित्सक,

समुद्र से निकाले हुए चौदह रत्नों में का एक रत्न।

धनद (पु॰) तद्॰ [धन+दा+द] धनपति, कुबेर, धनाधिप, ख़ज़ानची। (वि॰) दाता, दानशील, वदान्य।—नुज (पु॰) [धनद+अनुज] रावण, दशानन।

धनपति तद्॰ (पु॰) कुबेर, धनाधिप, धन का देवता कुबेर का दूसरा नाम, शरीरस्थित वायु विशेष, कहते हैं यह वायु ब्रह्मा के मुख से निकला और उन्हीं की आज्ञा से मूर्ति धारण करके धनपति नाम से परिचित हुआ। तदनन्तर उसी मूर्ति से ब्रह्मा की आज्ञा पाकर देवताओं के धन की रक्षा करने लगा।

—वामन पुराण।

धनपिशाचिका तद्॰ (स्त्री॰) धनाशा, धनतृष्णा, धन प्राप्त करने की व्यर्थ तृष्णा। [ष्णा, धनवान्।

धनबाहुल्य तद्॰ (पु॰) अर्थाधिक्य, धन की अधि-

धनमद तद्॰ (पु॰) विभवगर्व, धन होने के कारण अहङ्कार, धनी होने की ठसक, धनवान् होने का घमण्ड। [का लोभी।

धनलुब्ध तद्॰ (पु॰) धनलिप्सु, अर्थलोभी, धन

धनवती तद्॰ (स्त्री॰) [धन+वत्+ई] धनिष्ठा नक्षत्र, धनाढ्या स्त्री, धनवान स्त्री।

धनवन्त तद्॰ (पु॰) धनवान्, धनी, मालदार, धनिक, लक्ष्मीपात्र, धनाढ्य। [कंगाल, निर्धन।

धनहीन तद्॰ (वि॰) धनरहित, धनशून्य, दरिद्र,

धनागम तद्॰ (पु॰) [धन+आगम] धन की आय, धन का आना, द्रव्य का मिलना।

धनागार तद्॰ (पु॰) [धन+आगार] धन रखने का स्थान, ख़ज़ाना, मालख़ाना।

धनाढ्य तद्॰ (पु॰) [धन+आढ्य] धन विशिष्ट, अर्थशाली, धनी, ऐश्वर्यशाली, धन सम्पन्न, अमीर, मालवर, मालदार।

धनान्ध तद्॰ (पु॰) [धन+अन्ध] अहङ्कारी, धन गर्वित, धन के घमण्ड में अन्धा।

धनाधार तद्॰ (पु॰) [धन+आधार] धन रखने का स्थान, धनागार, मालख़ाना, बैंक, कोष, बाक्स, सन्दूक आदि।

धनाधिकृत तद्॰ (पु॰) [धन+अधिकृत] कोषाध्यक्ष, ख़ज़ाञ्ची। [धिपति, धनेश्वर, धनाधिकारी।

धनाधिप तद्॰ (पु॰) [धन+अधिप] कुबेर, धना-

धनाध्यक्ष तद्॰ (पु॰) [धन+अध्यक्ष] कुबेर, धनरक्षक, ख़ज़ाञ्ची, भण्डारी, रोकड़िया।

धनार्जन तद्॰ (पु॰) [धन+अर्जन] धनलाभ, धन का उपार्जन। [कृपण।

धनार्थी तद्॰ (पु॰) [धन+अर्थी] लोभी, लालची,

धनाशा तद्॰ (स्त्री॰) [धन+आशा] धन पाने की आशा, धनतृष्णा, धन की चाह, धनाभिलाष।

धनाश्री तद्॰ (स्त्री॰) } धनेश्वरी, रागिणी विशेष,
धनासरी तद्॰ (स्त्री॰) } एक छन्द का नाम।

धनिक तद्॰ (पु॰) [धन+इक] महाजन, धनी, धनविशिष्ट, स्वामी, प्रभु। [महाजन।

धनिया तद्॰ (स्त्री॰) धन्याक, स्वनाम प्रसिद्ध

धनिष्ठा तद्॰ (स्त्री॰) तेईसवाँ नक्षत्र।

धनी तद्॰ (पु॰) धनिक, धनाढ्य, धनवान्, लक्ष्मी सम्पन्न, प्रभु, स्वामी, पति, महाजन, अधिकारी।

धनु, धनुष तद्॰ (पु॰) धनुष, नवमराशि, चाप, कार्मुक, चार हाथ का परिमाण।

धनुपट तद्॰ (पु॰) चिरौंजी।

धनुर्धारी तद्॰ (पु॰) धनुधारी, बाण चलाने वाला, तीरन्दाज़, कमनैत।

धनुकी दे॰ (स्त्री॰) धनुही, धनुषी, छोटा धनुष।

धनुर्धर तद्॰ (पु॰) धनुर्धारी, धानुष्क, चाप धारण करने वाला।

धनुष तद्॰ (पु॰) धनु, कार्मुक, चाप।

धनुषी तद्॰ (स्त्री॰) रुई धुनने का यन्त्र।

धनुष्टङ्कार तद्॰ (पु॰) ज्याशब्द, धनुष के रोदे का टङ्क, धनुष से बाण फेंकने के समय रोदे का शब्द।

धनुर्विद्या तद्॰ (स्त्री॰) धनुष के विषय की शिक्षा देनेवाली विद्या, बाण चलाने की विद्या।

धनुर्वेद तद्॰ (पु॰) [धनुष्+वेद] धनुर्विद्या बोधक शास्त्र, धनुष का चलाना, खींचना, चढ़ाना आदि की शिक्षा जिस शास्त्र में दी जाती है। इस शास्त्र के प्रचारक महर्षि विश्वामित्रजी हैं। यह यजुर्वेद का अङ्ग है।

धनुही तद्॰ (स्त्री॰) छोटी कमान, छोटा धनुष।

धनुही दे० (स्त्री०) छोटा धनुष, खेलने की धनुही।
धनेश, धनेश्वर तत्० (पु०) धनाधिपति, कुबेर।
धनेसा तद्० (पु०) धनेश, कुबेर, धनाधिप, गुह्यकाधिप, यक्षराज। [सर्वोच्च धनी।
धन्नासेठ तद्० (पु०) धनश्रेष्ठ, बहुत धनी, कृतार्थ,
धन्नोटा दे० (पु०) धरन के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी, थुनी।
धन्य तत्० (पु०) [धन+य] कृतकर्मा, साधु, भाग्यवान्, पुण्यवान्, सुकृती, श्रेष्ठ, प्रसन्नता पूर्वक आश्चर्य बोधक शब्द।—मानना (वा०) धन्यवाद करना, उपकार मानना, उपकृत होना।—वाद (पु०) साधुवाद, प्रशंसावाद, स्तुति, स्तव, आशीष।—वादी (वि०) उपकृत, कृतज्ञ, स्तुतिकर्त्ता, गुणगायक, मागध, वन्दी।
धन्या तत्० (स्त्री०) [धन्य+आ] कृतार्था स्त्री, भाग्यवती स्त्री, श्रेष्ठा स्त्री, धनिया, आमलकी, एक नदी का नाम।
धन्याक तत् (पु०) [धन्या+क] धनिया।
धन्व तत्० (पु०) धन्वन्, धनुष।
धन्वङ्ग तत्० (पु०) [धनु+अङ्ग] धन्वन् वृक्ष विशेष।
धन्वदुर्ग तत्० (पु०) निर्जल देश, जलशून्य स्थान, मरुदेश, मारवाड़।
धन्वन्तरि तत्० (पु०) देववैद्य, दिवोदास, समुद्र मन्थन करने से यह उत्पन्न हुए थे। सुश्रुतकोष महर्षि दुर्वासा के शाप से इन्द्र लक्ष्मीभ्रष्ट हो गये थे इसी कारण ब्रह्मा ने समुद्र मथन करने के लिये देवताओं को आज्ञा दी। लक्ष्मी चन्द्रमा आदि के साथ देववैद्य धन्वन्तरि भी निकले थे। धन्वन्तरि समुद्र से निकल कर अपने सामने विष्णु को देख कर कहने लगे, प्रभो! मैं आपका पुत्र हूँ आप कृपाकर मुझको भी यज्ञ का भाग प्रदान करें, और मेरे रहने के लिये स्थान बता दें। विष्णु ने उत्तर दिया, वत्स! यज्ञ का भाग देवताओं में बट चुका है, अब तुमको यज्ञ का भाग देना मेरी शक्ति के बाहर की बात है, दूसरे जन्म में तुम्हारी बड़ी प्रसिद्धि होगी। गर्भावस्था ही में अणिमादि योग की सिद्धियाँ तुमको प्राप्त हो जाँयगी और उसी शरीर के द्वारा तुम देवत्व प्राप्त कर सकोगे तथा लोकोपकार के लिये आयुर्वेद को आठ भागों में विभक्त करोगे। यही दूसरे जन्म में काशीराज दिवोदास हुए थे। इनके बनाये ग्रन्थ का नाम धन्वन्तरि संहिता है। ये प्रधानतः शल्यतन्त्र के चिकित्सक थे।
(२) महाराज विक्रम की सभा के नवरत्नों में से एक रत्न, ये खीष्टीय छठवीं सदी के हैं। घटकर्पर, क्षपणक आदि इन्हीं के समकालीन थे। इनके बनाये किसी भी ग्रन्थ का आज तक पता नहीं चला है, हाँ नवरत्नों के श्लोकों में कतिपय श्लोक, इनके नाम से प्रसिद्ध हैं। वे श्लोक भी इनकी अद्भुत कवित्व शक्ति के परिचायक हैं।
धन्वयास तत्० (पु०) जवासा।
धन्वा तत्० (पु०) मरुदेश, निर्जल देश।—कार (गु०) धनुष के आकारवाला।
धन्वी तत्० (पु०) धनुर्धारी, धानुष्क।
धप दे० (पु०) चपेट, थप्पड़, तमाचा।
धपधप दे० (गु०) श्वेतवर्ण, उज्ज्वल, स्वच्छ।
धपाड़ या धप्पड़ दे० (पु०) दौड़, झपट, धावन।
धप्पा दे० (पु०) धोखा, छल, चपेट, कलङ्क, अपवाद।
धब्बा दे० (पु०) दाग़, बुरा चिन्ह।
धम (स्त्री०) धमक।
धमक (स्त्री०) भयदायक शब्द, आघात से उत्पन्न शब्द, पैरों की आहट।
धमका दे० (पु०) बोझैल वस्तु के गिरने का शब्द, धमक।
धमकाना दे० (क्रि०) डाँटना, झिड़कना, डराना, भय दिखाना, घुड़कना।
धमकाहट दे० (स्त्री०) घुड़की, झिड़की।
धमधूसड़ दे० (वि०) मोटा, स्थूल, तोंदिल, बहुत मोटा, निर्बुद्धि।
धमनी तत्० (स्त्री०) [धमन+ई] नाड़ी, शिरा, नस।
धमाका दे० (पु०) किसी भारी वस्तु के सहसा गिरने का शब्द।
धमाचौकड़ी दे० (स्त्री०) रोला, गुलगपाड़ा, कोलाहल।
धमाधम दे० (पु०) लगातार पैर या किसी अन्य वस्तु के पीटने का शब्द।

धमार, धमाल दे० (पु०) ताल विशेष, होली में गाया जाने वाला गीत विशेष, चौताल।
धमोका दे० (पु०) एक प्रकार की खंजरी।
धम्मिल्ल तद्० (पु०) संयतकेश, बनायी हुई चोटी।
धर दे० (स्त्री०) धरती, भूमि। (पु०) धड़, देह, काय, सिरहीन शरीर, सिर से नीचे का भाग (क्रि०) पकड़।
धरक दे० (स्त्री०) धड़क, भय, डर, व्याकुलता।
धरका दे० (पु०) धड़का, गम्भीर ध्वनि, भयदायक ध्वनि, हृदय का कम्पन।
धरकी दे० (क्रि०) धड़की, धकधकाई।
धरण, धरन तद्० (पु०) [धृ+अनट्] परिमाण विशेष, २४ रत्ती, एक पल का दसवाँ हिस्सा, कड़ी, स्वर, नाभी।—उखाड़ना (वा०) नाभी टलना, पेट की नाड़ी का बिगड़ जाना।
धरणी तद्० (स्त्री०) [धृ+अनट+ई] पृथिवी, मेदिनी, नाड़ी, मूल विशेष, शाल्मलि वृक्ष।—तल (पु०) अवनीतल, पृथिवीतल, वसुमती, वसुधा, पाताल।—धर (पु०) शेषनाग, अनन्त, विष्णु, पर्वत, पहाड़, राजा।—पति (पु०) भूपति, महिपाल, राजा।—पाल (पु०) राजा, महीपति।—सुता (स्त्री०) सीता, जानकी।
धरत दे० (क्रि०) धरते ही, रखते ही।
धरती दे० (स्त्री०) पृथ्वी, पृथिवी, भूमि।
धरना दे० (क्रि०) ग्रहण करना, पकड़ना, रखना, अधीन करना।—देना (वा०) एक प्रकार का हठ, जब कोई बली मनुष्य दुर्बल मनुष्य को किसी कारण से दुःख देता है, उस समय दुर्बल मनुष्य माफ़ देने के लिये अथवा दुःख से त्राण पाने के लिये बली मनुष्य के घर पर बैठ जाता है और खाना पीना बिलकुल छोड़ देता है, इसे ही धरना देना कहते हैं।
धरनैत दे० (पु०) धरना देने वाला, हठी, दुराग्रही।
धरषना तद्० (वि०) धर्षण, भर्त्सन, डाँटना, दबाना, क्रोध करना।
धरहर दे० (स्त्री०) सहाय, अवलम्ब, आश्रय, यथाः—
"यहि संसार असार महँ राम नाम श्रुतिसार।
इवि बुड़त धरहर करै नरहरि नाम उदार।"
—प्रह्लाद चरित्र

धरत्ता (गु०) पकड़ने वाला।
धरा तद्० (स्त्री०) [धृ+अच्+आ] पृथिवी, भूमि, गर्भाशय, भेद, नाड़ी, महादान विशेष।—तल (पु०) भूतल, मर्त्यलोक, पृथिवीतल।—धर (पु०) विष्णु, कूर्म, पर्वत।—मर (पु०) [धरा+अमर] विप्र, ब्राह्मण, भूदेव।
धराना दे० (क्रि०) ग्रहणी होना, अधीन होना, धारना, रखाना।
धरित्री तद्० (स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, भूमि।
धरोहर दे० (पु०) न्यास, थाती, गिरो रखा हुआ द्रव्य, बन्धक, रक्षा के लिये रखा धन, अमानत।
धरौना दे० (पु०) पुनर्विवाह।
धर्त्तव्य तद्० (गु०) [धृ+तव्य] धारणीय, ग्राह्य, स्थाप्य, ग्रहण करने योग्य।
धर्त्ता तद्० (पु०) धारण करनेवाला, धरणी, कर्त्तव्यन्द।
धर्म तद्० (पु०) [धृ+मन्] शुभकर्म, पुण्य, श्रेय, सुकृत, न्याय, आचार, उपमा, यज्ञ, अहिंसा, उपनिषद्, उत्तम आचार, स्वभाव, रीति, आधि-व्यवहार, पंथ, मत, कर्त्तव्य, व्यवस्था।—कर्म (पु०) शुभ भाग्य बनाने वाली क्रिया, धर्मकार्य।—काय (पु०) बुद्ध।—कृत्य (पु०) धर्मकर्म, शास्त्रविहित कर्म।—कोष (पु०) धर्मसञ्चय।—चारिणी (स्त्री०) सहधर्मिणी, जाया, भार्या, वनिता, पत्नी, स्त्री, लता विशेष।—चिन्ता (स्त्री०) पुण्यभावना, सत्कर्म की चिन्ता।—जीवन (पु०) धर्ममय जीवन, धर्मानुयायी ब्राह्मण।—ज्ञ (पु०) धर्म ज्ञानयुक्त, धर्मिष्ठ, धार्मिक।—ज्ञान (पु०) परलोक सम्बन्धी शुभाशुभ ज्ञान, कर्त्तव्य ज्ञान, धर्मबोध।—तत्व (पु०) धर्म की यथार्थता धर्मरहस्य।—द्रोही (वि०) धर्मघाती, पापिष्ठ, पापी, वेदनिन्दक, शास्त्रनिन्दक।—धुरन्धर (वि०) धार्मिक नेता, धर्म के कार्यों में आगे रहने वाला, धर्मात्मा, धर्माचार्य।—ध्वज,—ध्वजी (वि०) धर्म की ध्वजा वाला, दाम्भिक, पाखण्डी, कपटी, किसी स्वार्थ के कारण धर्म करने वाला, दिखावे का धर्मात्मा।—निष्ठ (पु०) धर्मिष्ठ, पुण्यवान्, धर्मस्थापक।—पत्नी (स्त्री०) अपने गोत्र की विवाहिता स्त्री, शास्त्रविधि के अनुसार

विवाहिता पत्नी, धर्म की थी, दक्ष की कन्या।
—पुत्र (पु॰) युधिष्ठिर, नर नारायण, वह पुत्र जिसको वचन देकर पुत्र मान लिया गया हो।
—बुद्धि (स्त्री॰) धर्म और अधर्म का विचार।
—भ्राता (पु॰) सहपाठाध्यायी, साथ पढ़ने वाला, सहपाठी।—भीरु (पु॰) जिसको धर्म का भय हो।
—मूर्त्ति (पु॰) धर्म का स्वरूप, धर्मात्मा, धर्मावतार।—याजक (पु॰) पुरोहित, पुराण बाचने वाला, यज्ञ कराने वाला।—राज (पु॰) धर्म से राज्य चलाने वाला, न्यायी राजा, यमराज, युधिष्ठिर का दूसरा नाम।—शाला (स्त्री॰) उपासनागृह, पूजा कराने का घर, दानगृह, दान करने के लिये बनाया हुआ घर, अतिथिशाला, धर्मार्थ गृह, विचारस्थान।—शास्त्र (पु॰) मनु आदि महर्षियों के बनाये शास्त्र, व्यवस्था शास्त्र, स्मृतिशास्त्र, [मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शङ्ख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप, वशिष्ठ इन महर्षियों के बनाये ग्रन्थ धर्मशास्त्र कहे जाते हैं।]—शील (वि॰) धार्मिक, पुण्यशील, पुण्यात्मा।—सभा (स्त्री॰) न्यायालय।
—संहिता (स्त्री॰) स्मृतिशास्त्र, धर्मशास्त्र।—सूत्र (पु॰) जैमिनि प्रणीत एक ग्रन्थ विशेष।

धर्म तद्॰ (पु॰) देव विशेष, ब्रह्मा के दक्षिण वक्ष से इनकी उत्पत्ति हुई है, वाराहपुराण में लिखा है कि सृष्टि उत्पन्न करते समय ब्रह्मा को बड़ी चिन्ता हुई थी। उसी समय उनके दक्षिण वक्ष से एक मनुष्य उत्पन्न हुआ जिसका नाम धर्म था। यह पुरुष कानों में श्वेत कुण्डल, कण्ठ में श्वेत माला और अङ्गों में चन्दन लगाये हुए था। ब्रह्मा ने कहा—तुम चतुष्पाद वृषभ के समान हो, अतएव तुम ही श्रेष्ठ होकर इस सृष्टि का पालन करो। इसी कारण सत्ययुग में धर्म चतुष्पाद, त्रेता में त्रिपाद, द्वापर में द्विपाद और कलि में केवल एक पाद होकर प्रजा की रक्षा करता है। गुण, द्रव्य, क्रिया और जाति ये ही धर्म के चार पाद हैं, वेद में धर्म का त्रिशृङ्ग नाम भी पाया जाता है। इसके दो सिर और सात हाथ हैं। एकादशी तिथि में धर्म का वास है इसी कारण एकादशी तिथि को उपवास करने वालों का पातक दूर होता है।

धर्मदास तद्॰ (पु॰) यह एक संस्कृत के कवि थे। इनका बनाया विदग्धमुखमण्डन नामक ग्रन्थ पाया जाता है। लोगों का अनुमान है कि ये बौद्धधर्म के पक्षपाती थे। इनके स्थान और समय के विषय में किसी को भी कुछ ठीक पता नहीं है; तथापि कतिपय विद्वानों का अनुमान है कि ये कवि मगध देश के वासी थे, क्योंकि मगध देश में बौद्धधर्म का विशेष प्रचार था और इनका समय खृष्टीय ८ वीं सदी के पूर्व ही होना चाहिये। क्योंकि इनके बाद का समय शङ्कराचार्य का है जो बौद्धद्वेषी थे। कतिपय विद्वानों की सम्मति है कि धर्मदास भोजराज से बहुत अर्वाचीन हैं, क्योंकि इनकी लेखशैली पुरानी नहीं मालूम होती।

धर्मध्वज तद्॰ (पु॰) मिथिला के जनकवंशी एक राजा का नाम। दण्डनीति, वेद और उपनिषद् में इनका अगाध पाण्डित्य था, एक समय सुलभा नाम की एक संन्यासिनी योगधर्म की चर्चा करती हुई और धर्मध्वज की विद्वत्ता की प्रशंसा करती हुई मिथिला में उपस्थित हुई। धर्मध्वज के मोक्ष शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान की परीक्षा लेने के हेतु उसने अपना रूप छोड़ कर एक सुन्दर स्त्री का रूप धारण किया और वह भिक्षा माँगने के व्याज से राजा के निकट उपस्थित हुई। बहुत देर तक राजा उस संन्यासिनी से धर्म सम्बन्धी बातें करते रहे। अन्त में उस स्त्री का मोक्षशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ।

धर्मव्याध तद्॰ (पु॰) मिथिलावासी एक व्याध का नाम, यह पूर्वजन्म में श्रोत्रिय ब्राह्मण था। एक समय किसी राजा के साथ यह वन में अहेर खेलने गया था, वहाँ उस श्रोत्रिय ब्राह्मण ने मृगरूपधारी किसी तपस्वी के बाण मारा। उसीके शाप से उसे शूद्रयोनि में जन्म लेना पड़ा। धर्मव्याध अपनी जाति के अनुरूप मांस विक्रय आदि का काम करता था, परन्तु उसका धर्मज्ञान बहुत बढ़ा चढ़ा था। बहुत दूर दूर के विद्वान् ब्राह्मण उससे धर्मज्ञान सीखने आते थे।

धर्मात्मा तद्० (पु०) [धर्म+आत्मा] साधु, पुण्यशील, धार्मिक, धर्मनिष्ठ ।
धर्माधिकरण तद्० (पु०) [धर्म+अधिकरण] राजा का विचार स्थान, न्यायालय, विचारागार, धर्मालय।
धर्माधिकारी तद्० (पु०) [धर्म+अधिकारिन्] विचारकर्त्ता, विचारक, धर्माध्यक्ष, धार्मिक, व्यवस्था दाता, महाराष्ट्र ब्राह्मणों की उपाधि विशेष ।
धर्माध्यक्ष तद्० (पु०) [धर्म+अध्यक्ष] विचारकर्त्ता न्यायमूर्ति, विचारक, न्यायाधिप ।
धर्मानुसार तद्० (पु०) [धर्म+अनुसार] धर्म के अनुसार, धर्म की रीति से ।
धर्मारण्य तद्० (पु०) [धर्म+अरण्य] पुण्यस्थान विशेष, तपोवन, महर्षियों के आश्रम, पवित्र वन ।
धर्मावतार (पु०) [धर्म+अवतार] धर्म का अवतार, धर्म का स्वरूप, बड़ा धार्मिक ।
धर्मासन तद्० (पु०) [धर्म+आसन] विचार का आसन, न्यायकर्त्ता के बैठने का आसन ।
धर्मिष्ठ तद्० (पु०) [धर्म+इष्ठ] साधु, पुण्यशील, पुण्यवान्, धर्मात्मा, धार्मिक ।
धर्मी तद्० (वि०) पुण्यवान्, धर्मात्मा, साधु ।
धर्मोपदेशक तद्० (पु०) [धर्म+उपदेश] गुरु, आचार्य, धर्म के विषय का उपदेश देने वाला ।
धर्म्य तद्० (वि०) [धर्म+य] न्याय्य, उचित ।
धव तद्० (पु०) पति, स्वामी, भर्त्ता, स्वनाम प्रसिद्ध वृक्ष विशेष ।
धवल तद्० (पु०) श्वेतवर्ण, शुक्ल, धौला, वृक्ष विशेष, सफेद । (वि०) सुन्दर, श्वेतगुणयुक्त ।—पक्ष शुक्ल पक्ष, हंस ।
धवला (स्त्री०) सफेद गौ (पु०) सफेद ।—गिरि (पु०) हिमालय की एक चोटी ।
धवलाख्य दे० (पु०) कियाम । [भरते हैं ।
धवा दे० (पु०) जाति विशेष, कहार जाति, जो पानी
धर्ष तद्० (पु०) [धृष्+अच्] प्रगल्भता, प्रागल्भ्य, अमर्ष, साहस, धृष्टता । [गर्वित, धीर ।
धर्षक तद्० (गु०) [धृष्+अक] साहसी, अहङ्कारी,
धर्षण तद्० (पु०) [धृष्+अनट्] साहसकरण, पराभवकरण, दुष्टता का व्यवहार, रति ।
धर्षित तद्० (पु०) [धृष्+णिच्+क्त] परिभूत, पराजय प्राप्त, हारा हुआ । [पैठना ।
धसकना दे० (क्रि०) धसना, धस जाना, गिरना,
धसन दे० (स्त्री०) पोल भूमि, दलदल भूमि, धसने योग्य स्थान ।
धसना दे० (क्रि०) घुसना, गड़ना, पैठना ।
धसान, धसाव दे० (पु०) दलदल, पङ्किल भूमि ।
धसाना दे० (क्रि०) घुसाना, पैठाना, गड़ाना ।
धांगर दे० (पु०) एक हिन्दू जाति विशेष, जो प्रायः किसानी और कुलीगीरी करती है ।
धांधना दे० (क्रि०) भकोसना, अफरना, अनुचित रीति से खाना, किसी अपराधी को पकड़ कर चालान कर देना ।
धांधल दे० (स्त्री०) निष्प्रयोजक झगड़ा, नटखटी, बिना कारण की लड़ाई । (स्त्री०) अंधाधुन्धी । (गु०) झगड़ालू, लड़ाका, कलहकारी।
धांधलाबाज़ी दे० (स्त्री०) अंधाधुन्धी, अत्याचार ।
धांयधांय दे० (स्त्री०) शब्द विशेष, तोप आदि के तरपर छूटने की ध्वनि, धड़ाका ।
धांसना दे० (क्रि०) खाँसना, खौंसना, ठूंसना ।
धांसी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, खाँसी, खोंखी, कफ की बीमारी ।
धाइ या धाई तद्० (स्त्री०) धात्री, उपमाता, दूध पिलाने वाली माता, धाई (क्रि०) दौड़ कर, भाग कर, झपट कर ।
धाक दे० (स्त्री०) डर, भय, प्रभाव, आतंक, रोब, दबाव, प्रताप । [दोगला ।
धाकर दे० (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, नीच जाति,
धाखा दे० (पु०) पलाश वृक्ष ।
धागा दे० (पु०) तागा, सूत, डोरा ।
धाता तद्० (पु०) [धा+तृन्] ब्रह्मा, विधाता, बनाने वाला, विष्णु, सूर्य, भृगु मुनि के पुत्र । (गु०) पालक, रक्षक, धारक ।
धातु तद्० (पु०) शरीर धारक वस्तु, कफ, वात, पित, रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र महाभूत । यथा—पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश । [सद्गुण—गन्ध, रस, रूप स्पर्श, शब्द] गेरु, मनसिल आदि, शब्दयोनि, प्रकृति,

व्याकरण के धातु, [भू, पच, पठ् आदि] अष्टधातु—[सोना, रूपा, काँसा, ताँबा, सीसा, राँगा, लोहा और पारा ।]—माक्षिक (पु०) सोनामाखी ।—वादी (पु०) धातु परीक्षक । —वेदी (पु०) धातु विधानवेत्ता, धातुद्रव्य परीक्षक ।—साधित् (वि०) धातु द्वारा प्रस्तुत, जिसके बनाने में धातु का प्रयोग किया गया हो । औषधि विशेष ।

धातुक्षय (पु०) प्रमेहादि रोग जिसमें धातु नष्ट हो ।

धात्वितर तद्० (वि०) [धातु+इतर] बिना धातु का, धातुरहित ।

धात्री तद्० (स्त्री०) [धा+ष्ट्रन्+ई] धाई, उपमाता, दाई, पृथिवी, आमलकी वृक्ष ।—पत्र (पु०) नट, तालीशपत्र, आमलकी पत्र ।—पुत्र (पु०) उपमाता का पुत्र, नट, नर्तक ।—फल (पु०) आमलकी, आँवला ।

धान तद्० (पु०) धान्य, सतुष तण्डुल,छिलका सहित तण्डुल, बिना कूटा चावल, अनछिला चाँवल ।

धाना दे० (क्रि०) दौड़ना, काम करना, टहल करना, परिश्रम करना । [सत्तू, सतुवा ।

धानाचूर्ण तद्० (पु०) भुँजे जव और चने का चूर्ण,

धानी दे० (स्त्री०) धान विशेष, धान के समान एक प्रकार का रंग, रङ्ग विशेष, हरे और पीले रङ्ग के मिलाने से जो रङ्ग होता है ।

धानुक तद्० (पु०) धानुष्क, धनुर्धर, तीरन्दाज, एक नीच जाति ।

धान्य तद्० (पु०) धान, बिना कूटा चावल, चार तिल का परिमाण, धनिया ।—कोष्टक (पु०) धान रखने का गृह, गोला ।—चमस (पु०) चिपिटक, चिउड़ा ।—धेनु (पु०) दान करने के लिये अन्न को बनी धेनु ।—बीज बीज का धान, बोने के लिये धान ।—राज (पु०) शस्य विशेष, यव, जौ ।—राशि (पु०) धान की राशि ।

धाप दे० (पु०) एक कुड का माप, एक साँस में जितनी दूर तक दौड़ा जा सके, ऊपर चढ़ने की पैड़ियाँ, जिन पर पैर रखा जाता है । [लड़का ।

धाभाई दे० (पु०) कोका, दूधभाई, अपनी धाय का

धाम तद्० (पु०) धामन्, घर, स्थान, गेह, देह, [illegible], अवयव, प्रभा, दीप्ति, राशि, प्रभाव, पुण्यक्षेत्र आदि ।—निधि (पु०) सूर्य, रवि, दिवाकर ।

धामा दे० (पु०) वेत्रनिर्मित पात्र विशेष, बेंत का बना टोकरा, चंगेरा ।

धामिन दे० (पु०) सर्प की एक जाति, इस जाति के सर्प दौड़ने में बड़े तेज़ होते हैं ।

धाय दे० (स्त्री०) दूध पिलाने वाली, धात्री, उपमाता, धाई ।—मारना दे० (वा०) पुकार के रोना, रक्षक न मिलने के कारण रोना, हाय हाय करके रोना ।

धार तद्० (पु०) [धृ+णिच्+अच्] देना, ऋण, जलधारा, तीर, तट, किनारा, अस्त्र के काटने का भाग, प्रखरता, तीक्ष्णता ।

धारक तद्० (पु०) [धृ+णक्] धारणकर्ता । (दे०) ऋणी, अधमर्ण, धरता, कर्ज़बन्द ।

धारण तद्० (पु०) [धृ+णिच्+अनट्] धारने की अवस्था, ग्रहण, अवलम्बन, रक्षण, रखना, परिधान करना, ऋण लेना ।

धारणा तद्० (स्त्री०) [धारण+आ] बुद्धि, विषय ग्रहण करने वाली बुद्धि, उचित मार्ग पर स्थिति, मन की स्थिरता, विश्वास, उत्साह, स्मरण, चेत ।

धारना दे० (क्रि०) रखना, समाना, स्मरण करना, चेत करना, (पु०) कर्ज़, ऋण, अधमर्ण ।

धारस दे० (पु०) साहस, धैर्य, धीरता ।

धारा तद्० (स्त्री०) रीति, व्यवहार, आचरण, प्रकार, प्रणाली, प्रकरण, प्रवाह, बहाव, सेना, तालीशपत्र हिन्द की दफ़ा, (क्रि०) धारण किया, उठा लिया । —वाहिक (वि०) परम्परागत, क्रमागत, अविच्छिन्न, प्रचलित, बिना विच्छेद का लगातार आया हुआ ।—यन्त्र (पु०) जल की कल, फुहारा, जल फेंकने का यन्त्र ।—वाही (पु०) धारा के समान बहने वाला ।—सार (पु०) [धारा+आसार] भारी वर्षा, मूसलाधार वर्षा । —सम्पात (पु०) अधिक वृष्टि ।

धाराधर (पु०) बादल, तलवार । [डाकुओं की सेना ।

धारि दे० (स्त्री०) धावा डालने वालों का समूह,

धारिणी (स्त्री०) पृथिवी, सेमर का वृक्ष, देवताओं की १४ स्त्रियाँ जिनके नाम हैं —(१) शची (२)

वनस्पति (३) गार्गी (४) पूर्णोर्वा (५) रुचि-राहुति (६) सिनीवाला (७) कुहू, (८) राका (९) अनुमति (१०) आयाति (११) प्रज्ञा (१२) सेला (१३) वेला (१४) इन्द्राणी । [हुआ ।

धारित तद्० (वि०) धृत, धारण किया हुआ, पकड़ा

धारी दे० (स्त्री०) रेखा, लकीर, एक पौधे का नाम । (वि०) रखने वाला, धारी ।—दार (वि०) कपड़ा विशेष जिसमें लकीरें हों ।

धार्तराष्ट्र तद्० (पु०) धृतराष्ट्र राजा के पुत्र दुर्योधन आदि, काला पैर और चोंचवाला हंस, कलहंस, एक प्रकार का सर्प ।

धार्मिक तद्० (वि०) पुण्यात्मा, धर्मशील, धर्मनिष्ठ, धर्माचरण करने वाला ।—ता (स्त्री०) धार्मिकत्व, धर्मशीलता, धर्मभाव ।

धार्य तद्० (गु०) धारणीय, धारण करने योग्य, ग्राह्य ।

धाव दे० (पु०) दौड़, वृक्ष विशेष ।

धावक तद्० (वि०) धावनकर्त्ता, दौड़नेवाला, द्रुतगामी हरकारा, दूत । (पु०) संस्कृत के एक कवि का नाम । ये कवि बहुत ही प्राचीन और प्रसिद्ध हैं । ये कवि रामिल सौमिल के समकालीन हैं । इनके विषय में विलक्षण विलक्षण दन्तकथाएँ प्रचलित हैं । कोई कहता है श्रीहर्ष के नाम से इन्होंने नाटिका बनायी थी, और बहुत धन भी पाया था । परन्तु इस दन्तकथा में प्रमाण कुछ भी नहीं है । हाँ काव्यप्रकाश की श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम्" यह पंक्ति प्रमाण में कही जा सकती है । परन्तु यह पाठ ठीक नहीं है क्योंकि इस पाठ को पुष्ट करने वाला प्रमाण कहीं ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलता है । अतएव " श्रीहर्षादेर्बाणादीनामिव धनम्" काव्यप्रकाश का यही ठीक पाठ मानना चाहिये । इस बात को सिद्ध करने के लिये प्रमाण भी बहुत हैं । अभिनन्दन कवि ने कहा है " श्री-हर्षो वितवार गणकवये बाणाय वाणीफलम् " इति, इसी प्रकार और भी प्रमाण उद्धृत किये जा सकते हैं । अतएव इनको श्रीहर्ष से सम्बन्धयुक्त न करके कालिदास से प्राचीन और भास या रामिल सौमिल के समकालीन मानना ही युक्तियुक्त प्रतीत होता है ।

धावन तद्० (पु०) [धाव+अनट्] वेग पूर्वक गमन, दौड़ना, गति, फिराव । (दे०) दूत, हरकारा, दौड़नेवाला । [रगेदना, खदेना ।

धावना दे० (क्रि०) दौड़ना, इधर उधर घूमना,

धावनी दे० (स्त्री०) दूती, परिचारिका ।

धावमान तद्० (वि०) दौड़ता हुआ, भागता हुआ, द्रुतगामी, शीघ्रगामी, तेज़ दौड़ने वाला ।

धावा दे० (पु०) दौड़, चढ़ाई, आक्रमण, छापा । —मारना (वा०) चढ़ाई करना, आक्रमण करना, छापा मारना ।

धाह दे० (स्त्री०) चीख, दुःख का शब्द, कूक ।

धिक् तद्० (अ०) निन्दार्थ सूचक अव्यय, फटकार, छी छी, घृणा, लानत ।

धिक्कार तद्० (पु०) फटकार, तिरस्कार ।

धिक्कारना दे० (क्रि०) निन्दा करना, फटकारना, तिरस्कार करना । [अपमानित ।

धिक्कारी दे० (वि०) शापित, निन्दित, गर्हित,

धिग् तद्० देखो धिक् । [क्षत्रियों का एक भ्रम ।

धिंगरा, धिंगड़ा दे० (पु०) उपपति, यार, लगुआ,

धिंगाना दे० (पु०) हाँक, पुकार, उपद्रव ।

धिया दे० (स्त्री०) बेटी, पुत्री, कन्या, तनया ।

धिरयो दे० (क्रि०) धमकाया, डाँटा, फटकारा ।

धिराना दे० (क्रि०) धमकाना, ताड़ना देना, हानि पहुँचाने की धमकी देना ।

धिषण तद्० (पु०) बृहस्पति, देवगुरु, देवाचार्य ।

धिषणा तद्० (स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, मति, धी ।

धी तद्० (स्त्री०) मति, बुद्धि, ज्ञान ।

धींग, धींगड़ा दे० (पु०) उपपति, यार, लगुआ ।

धींगाधींगी दे० (स्त्री०) हट्टा हुड़ी ।

धींगाधींगी दे० (स्त्री०) उच्छृङ्खल व्यवहार, अनुचित रीति, असभ्य कार्य, मनमानी कारवाई, हट्टाकट्टी ।

धींगामुश्ती (स्त्री०) धींगाधींगी ।

धीति तद्० (स्त्री०) पीपासा, तृष्णा, प्रतीति, विश्वास, यथाः—

" मोहिं द्वार बैठाय सखि, तू कित गइ हित लाय ।
धीति लाल तेरा करौं, दधि चुराय मन खाय ॥ "
—कवि वाक्य ।

धीम दे० (पु०) सुस्त, शिथिल, आलसी, धीर ।

धीमत् तत्० (वि०) बुद्धिमान्, बुद्धियुक्त।
धीमर दे० (पु०) एक जाति विशेष, कहार जाति, मच्छीमार, कैवर्त, जालजीवी।
धीमा दे० (वि०) सुस्त, शिथिल, आलसी, कोमल, धीर। [शिथिलता, आलस्य।
धीमाई दे० (स्त्री०) धीमापन, सुस्ती, ढिलाई,
धीमान् तत्० (गु०) बुद्धिमान्, चतुर, निपुण, दक्ष, कुशल, ज्ञानवान्।
धीमापन दे० (पु०) देखो धीमाई।
धीमे धीमे दे० (अ०) शनैः शनैः, धीरे धीरे, होले होले, मन्द मन्द।
धीय दे० (स्त्री०) बुद्धि, मति, कन्या, पुत्री, तनया।
धीर तत्० (वि०) धैर्यान्वित, पण्डित, बलवान, अचञ्चल, सुस्थिर, शान्त, स्थिरमति, विनीत, शिष्ट।—ता (स्त्री०) धीरस्वभाव, शिष्टता, प्राज्ञता, धैर्य।—त्व (पु०) शान्त स्वभाव।—प्रशान्त (पु०) नाटकोक्ति में सर्वगुण युक्त नायक।—ललित (पु०) अति साहसी नायक, इस शब्द का प्रयोग प्रायः नाटक में ही किया जाता है।—स्कन्ध (पु०) महिष, धीर, योद्धा, वृषभ, साँड़, बिजार।
धीरज तत्० (पु०) धैर्य, धीरता, स्थिरता, बहुत विघ्नों से भी नहीं घबड़ाना।
धीरा तत्० (स्त्री०) शिष्टा, विनीत, नायिका विशेष, मानिनी, प्रगल्भा, मध्या नायिका, मध्या और प्रौढ़ा नायिकाओं का धीरा एक भेद है यथा—
"वचननि की रचनानि सौं, विथहि जनावत कोप।
मध्या-धीरा कहत हैं, ताहि सुमति रस चोप॥"
—रसराज।
(पु०) धीर, धैर्यवान्।
धीराधीरा तत्० (स्त्री०) [धीरा+अधीरा] मानिनी मध्य प्रगल्भा नायिका यथा—
"रति उदास ह्वै नाहकों, डर दिखरावे वाम।
प्रौढ़ अधीराधीरतीय, बरनत कवि मतिराम॥"
—रसराज।
धीरिया दे० (स्त्री०) कन्या, दुहिता, बेटी।
धीरी दे० (स्त्री०) कनीनिका, तारा, आँखों में की पुतली, नेत्रों की काली पुतली।
धीरे दे० (अ०) शनैः, मन्द, भीरता से, स्थिरता से।
धीरेधीरे दे० (अ०) कोमलता से, मन्द मन्द, शनैः शनैः।
धीरोदात्त तत्० (पु०) [धीर+उदात्त] नायकविशेष, अति साहस तथा दया से युक्त जिसके व्यवहार हों।
धीरोद्धत तत्० (पु०) [धीर+उद्धत] नायक भेद, नाटक का नायक, जो साहसी हो, धीर हो, अपनी प्रशंसा आप करने वाला हो।
धीवर, धीमर तत्० (पु०) मत्स्यजीवी जाति विशेष, कैवर्त, जालजीवी, मच्छीमार।
धीशक्ति तत्० (स्त्री०) बुद्धिसामर्थ्य, ज्ञानशक्ति, बुद्धि की तीक्ष्णता।
धीसचिव तत्० (पु०) मन्त्री, अमात्य, बुद्धिजीवी, राजकीय कर्मों में सम्मति देने वाला मन्त्री।
धुआँ तद्० (पु०) धूम, अग्निपताका, अग्निचिन्ह, वाष्पविशेष, शिखाधूम, नाश। यथा—
"धुआँ देखि खरदूषण केरा।
जाइ सुपनखा रावण प्रेरा॥"
—कश दे० (पु०) अग्नि बोट, स्टीमर।—दान (पु०) धुआँ निकलने का रास्ता।—ना (क्रि०अ०) धुआँ निकलना, धुआँ लगने से किसी वस्तु का बिगड़ जाना। गंध (गु०) धुएं की तरह महकने वाला।
धुँगार दे० (पु०) छौंक, बघार, छौंकन।
धुँगारना दे० (क्रि०) बघारना, छौंकना, तड़का देना।
धुँध दे० (पु०) धोंधलाई, कुहरा, अँधेरा, अप्रकाश।
धुँधकार दे० (पु०) अँधेरा, अन्धकार, तम, अप्रकाश, धुमैलापन। [अप्रकाशा, धुमैला।
धुँधला दे० (वि०) धोंधला, समल, अस्वच्छ,
धुँधलाई दे० (स्त्री०) अन्धेरा, धुन्धलाई।
धुँध तत्० (पु०) राक्षस विशेष, यह प्रसिद्ध मधु राक्षस का पुत्र था। यह राक्षस उतङ्क मुनि के आश्रम के पास रेतीले समभूमि में रहा करता था। जनसंहार करने के लिये इस राक्षस ने बहुत दिनों तक मरुक्षेत्र में चित सोकर तपस्या की। धीरे धीरे यह एक वर्ष तक श्वास बन्द कर लेता एक वर्ष के बाद जब एक दिन वह श्वास लेता था, तब वन पर्वत सब काँप जाते थे। यह देख कर

देवता भी भयभीत हो जाते थे। बृहदश्व के पुत्र कुवलयाश्व ने इसे मारा था। [धूर्त,ठग, उत्पाती।

धुँधेला दे० (वि०) छली, कपटी, हठी, दुराग्रही,

धुक (पु०) सलाई जिसपर पत्रावली बटा जाय।

धुकड़ पुकड़ दे० (पु०) धड़क, हृत्कम्प, कँपकपी, थरथरी, थरथराहट, घबड़ाहट, झुकाव, हिलाव।

धुकड़ी दे० (स्त्री०) थैली, तोड़ा, रुपये रखने की थैली, बसनी।

धुकधुकी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का गहना जो गले में पहना जाता है, व्याकुलता, सोच, घबड़ाहट।

धुकनी (स्त्री०) धूनी, धौंकनी।

धुजी (स्त्री०) पताका, ध्वजा।

धुजिनी (स्त्री०) सेना, फौज।

धुतकार (पु०) दुतकार, फटकार, तिरस्कार।

धुधकी (स्त्री०)धुधकार।

धुत्ता दे० (पु०) धूर्तता, छल, कपट, धोखा।—देना (वा०) धोखा देना, छलना, कपट करना।

धुन दे० (स्त्री०) लौ, अभिलाष, मनोरथ, चसका।

धुनकना दे० (क्रि०) तूमना, धुनना, रुई धुनना।

धुनकी दे० (स्त्री०) छोटा धनु, धनुष, धनुही।

धुनि | धुनी (स्त्री०) ध्वनि, शब्द, नाद आवाज़ (क्रि०) धून कर, पीट कर, सिरमार कर।

धुनियाँ दे० (पु०) जाति विशेष, बेहना, तूमने वाला।

धुनिहाय दे० (पु०) हड़फूटन, हड्डी की पीड़ा, शरीर का पीड़ा।

धुनीनाथ (पु०) समुद्र, सागर।

धुनेहा दे० (पु०) रुई तूमने वाला, धुनियाँ।

धुन्ना दे० (क्रि०) धुनना, सिर पीटना, सिर धुनना।

धुन्धुमार तद्० (पु०) कुवलयाश्व राजा, बृहदश्व का पुत्र वीरबहूटी गृहधूम, गोलमाल, कुहराम, कोलाहल।

धुघला दे० (पु०) लहँगा, घाँघरा, स्त्रियों के पहनने का सिला हुआ एक वस्त्र जिसे वे कमर पर कस कर पहनती हैं। [नहीं, धुमैला

धुमला दे० (पु०) अन्धकार, अँधेरा, बहुत स्वच्छ

धुमलाई (स्त्री०) अँधियारा, अस्वच्छता।

धुमैला दे० (स्त्री०) धुएँ के रंग का, अस्वच्छ।

धुर तद्० (पु०) भार, बोझा, जुवा, गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलों के कन्धे पर रक्खे जाते हैं। आदि, आरम्भ, अन्त, किनारा, छोर, मुख्य, सीमा, हद, अन्त्य, मूल, जड़, धुरी, ध्रुव, (वि०) ठीक (यथा " धुर सबेरे")—से धुरतक (वा०) इस सिरे से उस सिरे तक, आदि से अन्त तक।—धुर दे० (वि०) सीधे, बराबर। (यथा—वे धुराधुर चले गये)।—फट (पु०) कर या लगान जो आसामी ज्येष्ठ मास में पेशगी देता है।

धुरपद दे० (पु०) एक प्रकार के राग का नाम।

धुरसा दे० (पु०) धुस्सा, लोई, ऊर्ण वस्त्र विशेष, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा जो जाड़े के दिनों में ओढ़ने के काम में आता है।

धुरसाँझ दे० (स्त्री०) ठीक सन्ध्या समय, गोधूली का समय, गोधूरिया काल।

धुरन्धर तद्० (वि०) [धुर+धृ+ख] धुरीण, मल्ल, धुर्धर, अग्रसर, प्रकाण्ड, भारवाहक, गाड़ी हल आदि खींचने वाला, बड़े कामों का प्रबन्ध करने वाला, प्रधान, नेता, मुखिया, अगुआ।

धुरवा दे० (पु०) मेघ, बादल, यथा:—
"धुँधुआरे धुरवा चहुँपासा।
समुझि परै नहिं अवनि अकासा॥"

धुरव्य दे० (पु०) मेघ, बादल।

धुरा तद्० (स्त्री०) भार, बोझा, चिन्ता, रथ की धुरी, जिसके सहारे पहिया घूमता है।

धुरियाना दे० (क्रि०) मटियाना, माटी लगाना, धूल लगाना, धूल उड़ाना।

धुरी दे० (स्त्री०) लकड़ी या लोहे का डण्डा जिस पर गाड़ी के पहिये घूमा करते हैं।

धुरीण तद्० (गु०) [धुर+ईन] भार सहन करने वाला,प्रधान,श्रेष्ठ,धुरन्धर,साहसी,मुखिया,अगुआ।

धुर्य तद्० (वि०) धुरन्धर, धुरीण, बोझ उठाने वाला, भारवाही। (पु०) ऋषभ नामक औषधि, वृषभ, बैल, प्रधान, श्रेष्ठ, मुखिया, अगुआ।

धुलना दे० (क्रि०) साफ़ होना, निर्मल होना, स्वच्छ होना, धोया जाना, पवित्र होना। [धुलाना।

धुलवाना दे० (क्रि०) साफ़ कराना, स्वच्छ कराना,

धुलाई दे० (स्त्री०) कपड़े धोने का दाम, वस्त्र धोना, वस्त्र साफ़ करना, कपड़े साफ़ करने की मजूरी।

घुलाना दे० (क्रि०) निर्मल कराना, साफ़ कराना, कपड़े साफ़ कराना।
घुलेंडी दे० (स्त्री०) त्योहार विशेष, होली का दूसरा दिन, जिस दिन लोग धूल उड़ाते हैं।
धुस्स (पु०) टीह, टीला।
धुस्सा दे० (पु०) धुसा, लोई।
धूआँ दे० (पु०) धूम, धुआँ। [बेशुमार।
धूआँधार दे० (पु०) बहुत धुआँ। (वि०) बेतरहाशा,
धुँआरा दे० (पु०) धुआँ निकलने का मार्ग, मोखा, जिससे धुआँ निकाला जाता है।
धुँधरा दे० (पु०) धुँधला, अस्पष्ट।
धूत तद्० (गु०) [धू+क्त] कम्पित, कँपाया हुआ। (दे०) धूर्त्त, ठगी, छलिया, कपटी।—पाप (गु०) पापयुक्त।
धूति दे० (स्त्री०) धूर्त्तता, ठगाई, छल, कपट, यथा—"तुलसी रघुबर सेवकहिं, सकै न कलियुग धूति"।
धूधू (पु०) आग जलने का शब्द।
धूना दे० (पु०) राल, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, यह एक वृक्ष का गोंद होता है, चन्द्रकला, सार-कोश का सत।
धूनी दे० (स्त्री०) वह अग्निकुण्ड जिसमें साधु लोग आग रखते हैं और अपने भक्तों को उसी धूनी से भस्म निकाल कर दिया करते हैं। भूतबाधा दूर करने के लिये कतिपय ओषधियों का धूम।—देना (वा०) जला देना, समाधि देना मृत साधु का अन्तिम संस्कार करना।—रमाना (वा०) साधु होना, घर छोड़ के निकल जाना, योगी का वेष धरना।—लगाना (वा०) स्थिर होना, डट जाना, हठ करना।—लेना (वा०) आग तापना, पञ्चाग्नि लेना
धूप दे० (स्त्री०) रौद्र, आतप, तपन, सूर्य का प्रकाश, घाम, रविता। (पु०) सुगन्ध काष्ठ विशेष, जो देवपूजा में जलाया जाता है, गुग्गुल।—काल (पु०) गर्मी का समय, ग्रीष्मकाल।—घड़ी (स्त्री०) यंत्र विशेष जिसके द्वारा धूप की छाया से समय जाना जाता है।—छाँह (स्त्री०) एक प्रकार का वस्त्र विशेष।—दान या दानी (स्त्री०) धूप देने का छोटा पात्र विशेष।—सराना (क्रि०) भगवान् के सामने रसोई अर्पण करना।
धूपना दे० (क्रि०) धूप देना, धूप जलाना।
धूपित दे० (वि०) धूप दिया हुआ, धूप से वासित किया गया, धूप से सुगन्धित किया हुआ।
धूम तद्० (पु०) गीली लकड़ी के संयोग से अग्नि से निकले परमाणु, धुँआ, अग्निचिन्ह।—केतन (पु०) अग्नि, अनल, केतुग्रह।—केतु या केतन (पु०) अग्नि उत्पात का चिन्ह विशेष, उत्पात का प्राकृतिक चिन्ह, शिखायुक्त, धूम के आकार का तारा, ग्रहभेद।—ध्वज (पु०) अग्नि, अनल, वन्हि।—पान (पु०) हुक्का पीना, सिगरेट बीड़ी आदि का पीना।—प्रभा (स्त्री०) धूमान्धकार नामक एक नरक विशेष।—यन्त्र (पु०) इञ्जिन, जो भाफ के सहारे चलता हो।—याहिनी (स्त्री०) रेल गाड़ी। (दे०) शोला, हलचल, कोलाहल।—धाम (स्त्री०) उत्सव की भीड़।
धूमावती तद्० (स्त्री०) दश महाविद्याओं के अन्तर्गत एक महाविद्या। तन्त्रशास्त्रों में इनकी उत्पत्ति इस प्रकार लिखी है। एक समय पार्वती ने भूख से व्याकुल होकर, महादेव से खाने को वस्तु माँगी, परन्तु महादेव नहीं दे सके। इसी कारण पार्वती ने महादेव ही को खा डाला। परन्तु इससे पार्वती के शरीर से धूम निकलने लगा। तभी से पार्वती का नाम धूमावती प्रसिद्ध हुआ। पुनः महादेव ने अपना शरीर कल्पित करके कहा "देवि! अब तुमने मुझको खा लिया है तब तुम विधवा हो गई, अतएव अब से तुमको विधवा वेश से रहना चाहिये, इसी वेश में लोग तुम्हारी पूजा करेंगे और अब से तुम्हारा नाम धूमावती हुआ। पुरश्चरणसिद्धि के लिये कृष्णाचतुर्दशी को धूमावती का जप किया जाता है। [के रंग का, धुमैला।
धूमरा, धूमल, धूमला दे० (वि) मटमैला, धुएँ
धूमा दे० (वि०) धूमैरा,धूमला,मटमैला,धुएँ का सा रङ्ग।
धूमिल (गु०) धुँधला, धुएँ के रंग का।
धूमी दे० (वि०) ऊधमी, उत्पाती, उपद्रवी।
धूम्र तद्० (पु०) कृष्ण रक्त मिश्रित वर्ण, कृष्ण लोहित वर्ण, बैंगनी।—केतु तद्० (पु०) देखो धूमकेतु

—केश (पुं०) राक्षस विशेष, जो शुम्भ का सेनानायक था, कपोत, कबूतर।—पान (पु०) तमाखू आदि पीना—पान यन्त्र (पु०) हुक्का।

धूम्रलोचन तद्० (पु०) एक राक्षस का नाम, दानवेन्द्र शुम्भ का सेनापति, शुम्भ ने इसी को ६० हज़ार सेना के साथ, भुवनमोहिनी महामाया को पकड़ने के लिये भेजा था। महामाया के हुङ्कार से ६० हज़ार सेना के साथ धूम्रलोचन भस्म हो गया।

धूम्राक्ष तद्० (पु०) एक राक्षस का नाम।

धूर दे० (स्त्री०) धूल, रज, रेत।

धूरा दे० (पु०) चूर्ण, सफूफ़।

धूरि दे० (स्त्री०) धूलि, रज, रेत, गर्द।

धूरी दे० (स्त्री०) धुरी, धूलि।

धूर्जटि तद्० (पु०) महेश्वर, महादेव, शिव।

धूर्त्त तद्० (पु०) वञ्चक, प्रतारक, शठ, खल।—ता (स्त्री०) शठता, खलता, प्रवञ्चना, बदमाशी, गुंडई, पाजीपन। [(स्त्री०) नष्ट, ध्वस्त।

धूल, धूलि दे० (स्त्री०) रज, रेणु, धूरि।—धानी

धूसना दे० (क्रि०) निन्दित करना, अपमान करना, कोसना। [पीला रङ्ग, मटियारा रङ्ग।

धूसर या धूसरा तद्० (पु०) ईषत् पाण्डुवर्ण, हलका

धूसरित (गु०) धूल से सना हुआ, धूल लगा हुआ।

धूहा दे० (पु०) धोखा, एक प्रकार के खेल का मध्यस्थान, घासपुरुष जिसे खेल में गाड़ते हैं।

धृक (अव्य०) धिक्।

धृत तद्० (गु०) [धृ+क्त] धारण विशिष्ट, धारण किया हुआ, अपराधी, पकड़ा हुआ, गृहीत, धारित।—कार्मुकेषु (वि०) धनुर्बाणधारी, योद्धा, वीर।—पट (वि०) गृहीत वस्त्र, वस्त्रावृत, कपड़ा पहने हुआ।—ात्मन् (वि०) [धृत+आत्मन्] जितेन्द्रिय, इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला, स्थिर, ब्रह्मचारी, योगी।

धृतराष्ट्र तद्० (पु०) शान्तनुनन्दन, विचित्रवीर्य का क्षेत्रज पुत्र, इनकी माता काशिराज की पुत्री अम्बिका थी, काशिराज की दूसरी कन्या अम्बालिका भी विचित्रवीर्य ही से ब्याही गई थी। अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए थे। धृतराष्ट्र का विवाह गान्धारराज सुबल की कन्या गान्धारी से हुआ था। गान्धारी के गर्भ से धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्र हुए थे और एक कन्या। दुर्योधन आदि इन्हीं के पुत्र थे। कन्या का नाम दुःशला था। यह सिन्धुराज जयद्रथ को ब्याही गई थी। महाभारत के युद्ध में इनके सभी पुत्र मारे गये। गान्धारी के साथ धृतराष्ट्र वन में चले गये। ६ महीने वहाँ रहने पाये थे कि इतने में उस वन में आग लगी, अन्धराज धृतराष्ट्र दौड़ नहीं सकते थे अतएव वहीं जल गये। (२) नाग विशेष यह कद्रु का पुत्र था, इसके साथ पाण्डवों का विरोध था। अश्वमेध का घोड़ा ले कर अर्जुन मणिपुर गये। वहाँ अर्जुन पुत्र बभ्रुवाहन ने घोड़ा पकड़ लिया। पिता पुत्र में लड़ाई हुई, अर्जुन मारे गये। बभ्रुवाहन की माता चित्राङ्गदा और अर्जुन की पत्नी उलूपी वहाँ आकर विलाप करने लगीं। उलूपी की सम्मति और माता की आज्ञा से बभ्रुवाहन सञ्जीवन मणि लेने के लिये पाताल गये। वहाँ धृतराष्ट्र नामक नाग के कहने से वासुकी ने मणि देना अस्वीकार किया अतएव बभ्रुवाहन और वासुकी में लड़ाई हुई। लड़ाई में वासुकी हार गया और उसने सञ्जीवन मणि बभ्रुवाहन को दे दिया। यह देखकर धृतराष्ट्र ने अपने दो पुत्रों को अर्जुन के पास भेजा। अपने पिता की आज्ञा के अनुसार उन्होंने अर्जुन का सिर काट कर एक वन में फेंक दिया। इधर अर्जुन का शरीर मस्तक शून्य देखकर वहाँ हाहाकार मच गया। अन्त में श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के दोनों पुत्रों को मार कर अर्जुन का मस्तक ले आये। यह मस्तक अर्जुन के शरीर से जोड़ दिया गया और सञ्जीवन मणि के स्पर्श से अर्जुन पुनः जी उठे।

धृति तद्० (स्त्री०) [धृ+क्ति] धैर्य, धीरज, ढाढ़स मन की स्थिरता, धारणा, सुख, योग विशेष। [गम्भीर।

धृतिमान् तद्० (पु०) स्थिरचित्त, धैर्यवलम्बी, धीर,

धृष्ट तद्० (पु०) [धृष्+क्त] प्रगल्भ, साहसी, उत्साही, निर्लज्ज, चतुर्विध नायक के अन्तर्गत एक नायक विशेष। यथा—

" करै दोष निरसंक जो, डरै न तिय के मान।
लाज धरै मन में नहीं, नायक धृष्ट निदान॥"

—रसराज।

—ता (स्त्री०) ढिठाई, प्रगल्भता, निर्लज्जता, धूर्तता, मचलाहट, साहस।—केतु (पु०) शिशुपाल का पुत्र जो पाण्डवों की ओर से लड़ा था।

धृष्णु तत्० (वि०) [धृष्+क्नु] धृष्ट, प्रगल्भ, निर्लज्ज।

धृष्टद्युम्न तत्० (पु०) पाञ्चालराज द्रुपद का पुत्र और पृषत का पौत्र, महाभारत के युद्ध में इसने पुत्र शोकातुर द्रोणाचार्य का सिर काटा था और युद्ध के अन्तिम दिन रात को द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने छिप कर पाण्डवों के शिविर में घुस कर अपने पितृघाती धृष्टद्युम्न को मार डाला था।

धेंगामुष्टि दे० (स्त्री०) मुक्कामुक्की, घुस्साघुस्सी, घुसघुस्सा।

धेनु तत्० (स्त्री०) सवत्सा गौ, नवप्रसूता गौ, दुधार गाय, पृथिवी।—मक्षिका (स्त्री०) डंस, डाँस।

धेनुक तत्० (पु०) असुर विशेष, यह गर्दभ के आकार का था। नरमांस लोलुप इस राक्षस को बलराम ने मारा था। एक समय श्रीकृष्ण और बलराम गौ चराते चराते तालवन में चले गये और वहाँ ताल तोड़ने लगे। उसी वन में धेनुक रहा करता था। ताल गिरने का शब्द सुनकर धेनुक इनकी ओर दौड़ा। बलराम ने उसके दोनों पैर पकड़ कर ताल के पेड़ से उसे दे मारा, जिससे उसकी मृत्यु हुई।

धेनुमती तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, गोमती।

धेय (गु०) धारण करने योग्य।

धेर (पु०) अनार्य जाति विशेष।

धेला या धेलाचा दे० (पु०) अधेला, आधा पैसा, एक प्रकार का सिक्का, जिसका दाम आधा पैसा होता है।

धेली दे० (स्त्री०) अठन्नी, अधेली, आधा रुपया।

धैर्य तत्० (पु०) धीरता, स्थिरता, अचाञ्चल्य, क्षमा, सहिष्णुता।—कलित (पु०) धैर्यशाली, धीर।—च्युत (वि०) अस्थिर, चञ्चल, अधीर, असहिष्णु।—शाली (वि०) स्थिरता विशिष्ट, धीर, शान्त।

धैवत तत्० (पु०) गाने का एक स्वर विशेष।

धो दे० (क्रि०) धो डाल, साफ़ कर।

धोआ दे० (पु०) फल की भेंट, उपहार, उपायन।

धोइता तद्० (पु०) दौहित्र, दोहिता, बेटी का बेटा।

धोई दे० (स्त्री०) बिना छिलके की मूँग की दाल, जो भिगाई गयी हो और जिसमें पानी न हो। [धोख।

धोंधा दे० (पु०) ढोंका, मट्टी का ढेर, मट्टी का

धोंधाला दे० (पु०) कुम्हार, धुआँ निकलने की राह।

धोक दे० (पु०) देवता या गुरु को प्रणाम करना, दण्डवत करना।

धोकड़ दे० (वि०) बलशाली, महाबली, पराक्रमी।

धोख या धोखा दे० (पु०) छल, कपट, भ्रम, भुलावा, छलना, प्रतारणा, प्रवञ्चना, अचानक, अचानचक।—खाना (वा०) छला जाना, वञ्चित होना, ठगा जाना।—देना (वा०) ठगना, छलना, भड़काना, भुलावा देना।

धोता दे० (पु०) धूर्त, छली, कपटी।

धोती दे० (स्त्री०) कटिवस्त्र, पहनने का वस्त्र, धौत वस्त्र, कमर में पहिनने का वस्त्र। [करना।

धोना दे० (क्रि०) पखारना, प्रक्षालन करना, साफ़

धोप दे० (स्त्री०) एक प्रकार की तलवार।

धोय दे० (पु०) कपड़े साफ़ करने का काम, धोने का काम, धुले कपड़े की खेप।

धोबिन दे० (स्त्री०) धोबी की स्त्री, रजकी।

धोबी दे० (पु०) रजक, कपड़े धोने वाली जाति।—घास (स्त्री०) बड़ी दूब।—पछाड़ (पु०) कुश्ती का एक पेंच।

धोयी तत्० (पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि, "पवनदूत" नामक एक ग्रन्थ, इन्होंने संस्कृत भाषा में बनाया है जो मेघदूत के समान है। ये कवि बङ्गदेश के निवासी थे। ये कवि जयदेव कवि के समकालीन थे। जयदेव का समय खृष्टीय १२ वीं सदी का पूर्व भाग निर्णीत हो चुका है। उसी के अनुसार धोयी कवि का भी समय मानना चाहिये। जयदेव ने इन्हें "कविक्ष्मापति" कहा है।

धोर या धोरे (पु०) समीप, निकट, पार, किनारा।

धोरण (पु०) सवारी, दौड़, सरपट।

धोरिणी तत्० (स्त्री०) परम्परागत बात, क्रमागत रीति, गुरु से चली आयी बात।

धोवती (स्त्री०) धोती।

धोसा (पु॰) मेवी, गुड़ की पिंडी
धौ दे॰ (पु॰) वृक्ष विशेष, धव वृक्ष।
धौं दे॰ (पु॰) धौन, आध मन, बीस सेर, एक मन का आधा। (अव्य॰) या, अथवा।
धौंक दे॰ (स्त्री॰) रोग विशेष, कासश्वास।
धौंकना दे॰ (क्रि॰) फूँकना, भाथी चलाना, धौंकनी से हवा देना।
धौंकनी दे॰ (स्त्री॰) भस्त्रा, भाथी, चमड़े का एक यन्त्र जिससे लुहार आग प्रज्वलित करने को हवा निकालते हैं।
धौंका दे॰ (स्त्री॰) धौंकनी, भस्त्रा।
धौंज दे॰ (स्त्री॰) विवेचना, विचार, परिशीलन।
धौंस दे॰ (पु॰) धमकी, भुलावा, चढ़ाई, आक्रमण, भभकी, दौड़।
धौंसा दे॰ (पु॰) नगारा, दुन्दुभि, बड़ा नगारा।—पट्टी (स्त्री॰) भुलावा, झाँसा।
धौंसिया दे॰ (पु॰) प्रधान, अगुआ, नेता, दल का प्रधान, दौड़ के दल का प्रधान। [परिष्कृत।
धौत तत्॰ (वि॰) प्रक्षालित, धोया हुआ, श्वेत,
धौताल दे॰ (पु॰) धनवान, सूर्मा, दुर्जन।
धौताली दे॰ (स्त्री॰) धन, बल, सूर्मापन।
धौमक तत्॰ (पु॰) देश विशेष।
धौम्य तत्॰ (पु॰) पाण्डवों के पुरोहित का नाम; इनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम देवल था। चित्ररथ की सम्मति से पाण्डवों ने धौम्य को अपना पुरोहित बनाया था। नारद ने प्रसन्नता पूर्वक इनको सूर्य-देव का स्तोत्र दिया था। उसी स्तोत्र की शिक्षा धौम्य ने युधिष्ठिर को दी थी। उसी स्तोत्र के प्रभाव से युधिष्ठिर को अक्षय बटलोई मिली थी।
धौर दे॰ (पु॰) कपोत विशेष, कबूतर की एक जाति, अच्छी कबूतर।
धौरा दे॰ (वि॰) धवल, श्वेत, शुक्ल, शुभ्र।
धौल दे॰ (स्त्री॰) थप्पड़, चपत, धप्पा, थाप।—उड़ना (वा॰) पीटना, मुक्का मारना।—मारना (वा॰)।—लगाना (वा॰) थप्पड़ मारना, धौल जड़ना।—लगना (वा॰) हानि उठाना, घटी सहना, हताश होना, मनोरथ भङ्ग होना, निराश होना।—धप्पा (वा॰) मारपीट, मार कूट, चोट चपेट।

धौला दे॰ (वि॰) धौरा, धवल, श्वेत, शुक्ल, शुभ्र—गिरि (पु॰) धवलागिरि, हिमालय पर्वत—धक्कड़ (पु॰) मारपीट, उपद्रव।—~ (पु॰) मारपीट, दंगा।
धौली (स्त्री॰) वृक्ष विशेष। [चपत जमाना
धौलियाना दे॰ (क्रि॰) धौलियाना, थप्पड़ मारना
ध्यात तत्॰ (वि॰) [ध्यै+क्त] विचारित, चिन्तित, सोचा हुआ, ध्यान किया हुआ।
ध्यातव्य तत्॰ (गु॰) [ध्यै+तव्य] ध्यान के योग्य, ध्यान देने योग्य, अत्यन्त उपयोगी, अतिशय प्रिय। [विचारक।
ध्याता तत्॰ (पु॰) [ध्यै+तृच्] ध्यान कर्त्ता,
ध्यान तत्॰ (पु॰) [ध्यै+अनट्] सोच, विचार, चिन्ता, उत्कण्ठा पूर्वक स्मरण, अनुसन्धान, ज्ञान, वस्तु का पुनः स्मरण, लौ।—योग्य तत्॰ (पु॰) समाधियोग।
ध्यानसिंह दे॰ (पु॰) पञ्जाब केसरी रणजीतसिंह का प्रधान मन्त्री, इस पर रणजीतसिंह बड़ा भरोसा रखते थे। ध्यानसिंह के बड़े भाई का नाम गुलाबसिंह था और इनके छोटे भाई का नाम सुचितसिंह था। इन तीनों भाइयों पर महाराज बड़ी प्रीति रखते थे। इनको राजा की उपाधि मिली थी। इसके बाद राजा की आज्ञा से राजकीय पत्रों में "राजा कलान बहादुर" लिखे जाते थे। महाराज रणजीतसिंह ने अपने अन्तिम समय में अपने पुत्र खड्गसिंह को राज्य का उत्तराधिकारी और उसका अभिभावक ध्यान-सिंह को नियत किया। परन्तु खड्गसिंह रणजीत सिंह के उत्तराधिकारी होने के योग्य नहीं था। दुष्टों के परामर्श से वह ध्यानसिंह पर अविश्वास करने लगा, अन्त में ध्यानसिंह और उनके पुत्र का महल में आना भी उसने रोक दिया। इस समाचार का कुफल खड्गसिंह को बहुत ही शीघ्र मिला। वह बन्दी होकर जेल भेज दिये गये। उनके पुत्र नवनिहालसिंह को पञ्जाब की गद्दी मिली। खड्ग सिंह की मृत्यु जेलखाने में हुई, उसी दिन नव निहालसिंह भी तोरण द्वार के गिरजाने से दब कर मर गये। इनके बाद खड्गसिंह की स्त्री ने राज

का कारबार ग्रहण किया, राजसिंहासन पर बैठ कर रानी चाँदकुमारी ने ध्यानसिंह से बदला चुकाने का प्रण किया। ध्यानसिंह भी उसे पदच्युत करने की चेष्टा करने लगे। अन्त में वह अपनी चेष्टा में सफल हुए, रानी चाँदकुमारी गद्दी से उतार दी गयीं और रणजीतसिंह की उपपत्नी के गर्भ से उत्पन्न शेरसिंह राजगद्दी पर बैठाये गये। शेरसिंह ने रानी चाँदकुमारी से ब्याह करना चाहा; परन्तु उसने उसे अस्वीकार किया, तदनन्तर इसमें लड़ाई हुई परन्तु अन्त में सन्धि हुई और ९ नौ लाख रुपये वार्षिक रानी को देना निश्चित हुआ। ध्यानसिंह और शेरसिंह दोनों ने मिलकर रानी को मरवा डाला। सिन्धवाला सरदार पञ्जाब में बड़े प्रतिष्ठित हैं, वे राजकुल के थे। उन्होंने इन सब बातों को देख ध्यानसिंह और शेरसिंह का काम तमाम कर देना ही उचित समझा। इसी विचार से प्रेरित होकर वे एक दिन कुछ सेना लेकर चढ़ आये। दोनों दल में लड़ाई हुई, अन्त में शेरसिंह और ध्यानसिंह दोनों मारे गये। इसी लड़ाई में शेरसिंह का ११ वर्ष का लड़का भी मारा गया।

ध्याना दे॰ (क्रि॰) ध्यान करना, ध्यान लगाना।

ध्यानी तद्॰ (वि॰) ध्यानकर्त्ता, ध्यान करने वाला, ध्यान लगाने वाला, तपी, योगी।

ध्यानीय तद्॰ (वि॰) ध्यान योग्य, ध्यान करने के योग्य, स्मरणीय। [ध्याता।

ध्यायक तद्॰ (पु॰) चिन्तक, विचारक, ध्यानकर्त्ता,

ध्यावना दे॰ (क्रि॰) ध्यान करना, ध्यान लगाना, मनन करना। [(पु॰) विष्णु, नारायण।

ध्येय तद्॰ (वि॰) ध्यानार्ह, ध्यान योग्य, स्मरणीय,

ध्रुपद (पु॰) एक राग विशेष।

ध्रुव तद्॰ (वि॰) निश्चित, स्थिर, दृढ़, अचल, अटल, नित्य। (पु॰) विष्णु, एकतारा जो दक्षिण उत्तर केन्द्र में प्रायः स्थिर है, ध्रुव का तारा, उत्तर-केन्द्र। भगवान का भक्त। यह राजा उत्तानपाद का पुत्र था। एक समय अपनी विमाता से अपमानित होकर बालक ध्रुव रोता हुआ अपनी माता सुनीति के पास गया। माता ने रोने का कारण पूछा, ध्रुव ने कहा—"मैं पिता की गोद में बैठा था, सुरुचि ने मुझे झिटक कर उतार दिया और कहा राज्यासन पर बैठने के लिये मुझे मेरे गर्भ से उत्पन्न होना चाहिए था। ध्रुव की माता इससे दुःखित तो हुई, परन्तु हृदय का भाव छिपा कर उसने कहा, यदि तुम सचमुच राज्यासन पर बैठना चाहते हो तो तपस्या करके भगवान् को प्रसन्न करो, वह तुम्हें राज्यासन पर बैठा देंगे। बालक ध्रुव तपस्या करने के लिये घर से निकल पड़े। मार्ग में नारद जी ने उन्हें उपदेश दिया। ध्रुव की तपस्या से भगवान् ने प्रसन्न होकर उन्हें वर दिया। वर पाकर ध्रुव घर लौट आये। पिता ने उनको राज्य दे दिया। राज्य पाकर ध्रुव ने शिशुमार पुत्री भ्रमि से विवाह किया। ध्रुव का सौतेला भाई एक यक्ष के हाथ से मारा गया। ध्रुव यक्षों से लड़ने लगे, परन्तु पितामह मनु के अनुरोध से उन्होंने युद्ध बन्द कर दिया। ध्रुव ने बहुत दिनों तक राज्य किया, अन्त में उन्हें ध्रुवलोक प्राप्त हुआ।—तारा (पु॰) मेरु के ऊपर रहने वाला।—लोक (पु॰) लोक विशेष जहाँ ध्रुव का वास है।

ध्रुवा दे॰ (पु॰) एक पौधे का नाम, ध्रुव का।

ध्वंस तद्॰ (पु॰) नाश, क्षय, हानि, क्षति।

ध्वंसी तद्॰ (पु॰) नाशक परमाणु।

ध्वजा तद्॰ (स्त्री॰) पताका, झण्डी, केतु।

ध्वजिनी (स्त्री॰) सेना विशेष, सीमावर्ती वृक्षादि की चिन्हानी।

ध्वजी तद्॰ (पु॰) पताकाधारी।

ध्वनि तद्॰ (पु॰) शब्द, नाद, निनाद, स्वर।—त (गु॰) शब्दित, वादित।

ध्वस्त (गु॰) नष्ट, भ्रष्ट, च्युत, गलित।

ध्वान्त तद्॰ (पु॰) अन्धकार, तम, अँधेरा, अँधियारा। —शत्रु (पु॰) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, सफेद रंग।

न

न व्यञ्जन वर्णों का यह बीसवाँ अक्षर है इसका उच्चारण स्थान दन्त होने से इसे दन्त्यवर्ण कहते हैं।

न तद्० (अ०) निषेधार्थक अव्यय, नहीं, अभाव, मत, अनि, शिर, ब्रजभाषा में यह बहुवचन का चिन्ह समझा जाता है यथा—" बेगि करहु किन आँखिन ओट "—रामायण। " इन अँखियाँ दुखियान को सुख सिरजोई नाँय" आदि।

नङ्ग } नङ्गा } (वि०) दिगम्बर, वस्त्रहीन। (पु०) दस नामी गुसाइयों की एक मण्डली जो जलूस में नङ्ग धड़ङ्ग निकलते हैं।

नङ्गी दे० (स्त्री०) नङ्गी स्त्री, विवस्त्रा स्त्री।

नङ्गटा दे० (वि०) नग्न, नङ्गा, विवस्त्र, वस्त्र रहित, वस्त्रहीन, लुच्चा, बदमाश, गुण्डा।

नङ्ग धड़ङ्ग दे० (वि०) दिगम्बर, बिलकुल नङ्गा।

नङ्गा दे० (वि०) उघारा, बिना कपड़े का, नङ्गटा। —बुड्डा मुनङ्गा (वि०) बिलकुल नङ्गा, नङ्गधड़ङ्ग, वस्त्रहीन। —झारी या झाली (स्त्री०) जामा तलाशी, शरीर की तलाशी।

नङ्गेसिर दे० (वा०) खुले सिर, उघारे सिर।

नइहर (पु०) नैहर, पिता का घर, मयका।

नउ (गु०) नव, संख्या विशेष, नवीन, नूतन।

नउआ (पु०) नाऊ, नापित।

नउत (गु०) नत, झुका हुआ।

नक दे० (स्त्री०) नाक, नासिका, नासा।—चढ़ा (वि०) क्रोधी, चिढ़ चिढ़ा, उग्र, तीक्ष्ण।—घिसना (वा०) चिरौरी करना, विनती करना, दण्डवत करना। —टा (वि०) नककटा, निर्लज्ज, ठग, जिसकी नाक कट गयी हो।—ड़ा (पु०) नाक का एक रोग विशेष।—तोड़ा (वि०) ठसोढ़, परिहासशील, रसिक, धूर्त।—सीर (स्त्री०) नाक की शिरा।—सीरफूटना या बहना (वा०) नाक से रुधिर निकलना, एक प्रकार का रोग।

नक्त तद्० (पु०) रात, रात्रि, रजनी, निशा। [रङ्ग।

नकक तद्० (पु०) लघुवस्त्र, मलिन, धूम्रवर्ण, धूमैला

नकरा (गु०) नककटा, अप्रतिष्ठित, बेशर्म।

नकघिसनी (स्त्री०) अधिक खुशामद करना।

नकछिकनी (स्त्री०) एक पौधा विशेष जिसको सूँघने से बहुत छींके आती हैं।

नक़द (पु०) रोकड़ नगद, रुपये पैसे आदि।—ी (स्त्री०) पैसो नक़द। [होना, घबराजाना।

नकना (क्रि०) मचियाना, नाकों दम आना, व्याकुल

नकब (स्त्री०) सेंध चोरी के लिये मकान फोड़ना।

नकबेसर (स्त्री०) छोटी नाथ, नथुनी।

नकल (स्त्री०) अनुकरण प्रतिलिपि, एक लिखी बात को ज्यों का त्यों दूसरी जगह लिखना।—ी (पु०) बनावटी, कृत्रिम।

नकुरा (पु०) नाक, लम्बी नाक।

नकार तद्० (पु०) [न+कृ+घञ्] नहीं, नहीं मानना, अस्वीकार, प्रतिषेध निषेध करना। " न " अक्षर।

नकारना दे० (क्रि०) नहीं मानना, अस्वीकार करना, झुठाना, मुकरना, स्वीकार करके पुन नहीं स्वीकार करना।

नकारा (पु०) नक्कारा, नगाड़ा। [कपड़े का होता है।

नक़ाब (स्त्री०) मुँह का परदा जो जाली दार महीन

नकुआ दे० } नकूआ दे० } (पु०) नोक, अग्नि।

नकुल तद्० (पु०) न्यौला, नेवला, पाँचवाँ पाण्डव, पाण्डु या क्षेत्रज पुत्र, पाण्डु की स्त्री माद्री के गर्भ से और अश्विनीकुमारों के औरस से इनका जन्म हुआ था। यह अज्ञात वनवास के समय मत्स्य (जयपुर) राज के यहाँ अपना तन्त्री पाल नाम रख कर गौ चराते थे। युधिष्ठिर के राजसूय नामक यज्ञ के समय ये दशार्ण (छत्तीसगढ़) मालव देश तथा समुद्र तीरवर्ती आभीर देश को जीत कर पञ्जाब में उपस्थित हुए। उसके बाद पञ्जाब, अमर पर्वत, द्वारपाल आदि देशों को इन्होंने जीता। तदनन्तर इन्होंने द्वारका में वासुदेव के पास दूत भेजा था। यादवों के युधिष्ठिर की अधीनता स्वीकार करने पर भारत के उत्तर पश्चिम प्रदेशों में रहने वाले म्लेच्छ पल्हव आदि असभ्य जातियों को जीत कर ये इन्द्रप्रस्थ लौट आये। चेदिराज की

कन्या करेणुमती से इनका व्याह हुआ था। करेणुमती के गर्भ से नकुल को निरमित्र नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ था ।

नकेल दे० (स्त्री०) काठ की बनी एक प्रकार की सलाई जो ऊँट की नाक में लगाते हैं, ऊँट की डाँडी।

नक्का दे० (पु०) तास का इक्का, खेल के तास में का इक्का ।

नक्की दे० (स्त्री०) नासिका से उच्चारण करना, सानुनासिक उच्चारण करना, निश्चय, स्थिर, दृढ़ । —मूठ (पु०) जुए का एक खेल । [बदनाम ।

नक्कू दे० (वि०) अहंकारी, अभिमान, अपयशी दुर्नामी, दुष्ट,

नक्षत्र तत्० (पु०) जिसका नाश न हो, तारागण २७ नक्षत्र, अश्विनी, भरणी आदि ।—नाथ —पति, प,—राज (पु०) चन्द्रमा ।—चक्र (पु०) तारामण्डल, ताराचक्र ।—पुरुष (पु०) नक्षत्र मध्यवर्ती पुरुष विशेष, नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता ।—विद्या (स्त्री०) ज्योतिष विद्या । —सूचक (पु०) निन्दित ज्योतिषी, मूर्ख ज्योतिर्वित् नक्षत्र सूचक का लक्षण बृहत्संहिता में इस प्रकार लिखा हुआ है । यथा:—

"तिथ्युत्पत्तिं न जानन्ति ग्रहाणां नैवसाधनम्,
परवाक्येन वर्तन्ते ते वै नक्षत्रसूचकाः"
अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते,
सपङ्क्तिदूषकः पापो ज्ञेयो नक्षत्रसूचकः" ।

नक्षत्री दे० (वि०) भाग्यवान, प्रतापी, भाग्यशाली ।

नक्षत्रेश तत्० (पु०) नक्षत्र ईश, चन्द्रमा ।

नक्र तत्० (पु०) मगर, कुम्भीर, नाका एक प्रकार का जलजन्तु ।—राज (पु०) हाँगर, ग्राह ।

नक्श (गु०) अङ्कित, चित्रित । [बनाया हुआ ।

नक्शा (पु०) मानचित्र, रेखाचित्रादि के सहारे

नख तत्० (पु०) नह, नाखून, हाथ और पैर की अङ्गुलियों के अग्रभाग स्थित कठिन चर्म विशेष । बटा हुआ महीन रेशम, पतंग उड़ाने का डोरा । —रेखा (स्त्री०) नख का चिन्ह, नखोट ।—शिख, —से शिख तक (क्रि०) समस्त सिर से पैर तक, सम्पूर्ण शरीर ।

नखत तद्०(पु०) नक्षत्र, तारा, सितारे ।

नखर तद्० (पु०) नह, नख, कड़े नख ।

नखरा दे० (पु०) चोचला, हावभाव ।—तिल्ला (पु०) नखरे बाज़ी, चोचले बाज़ी, । [मयूर, नृसिंह ।

नखायुध तत्० (वि०) बाघ, कुक्कुट,मुर्गा, मोर,

नखियाना दे० (क्रि०) नख से खरोटना, खखोरना नखाघात करना, खसोटना ।

नखी तद्० (वि०) नख विशिष्ट, नखधारी, नखवाला, नुकीला, वे जन्तु जो नख से आक्रमण करते हैं ।

नग तत्०(पु०) पहाड़, पर्वत, वृक्ष, जड़पदार्थ मात्र, सात की संख्या । (दे०) नगीना, अँगूठी आदि गहनों पर जड़ने के पत्थर ।—धर (पु०) गिरधारी, कृष्ण ।—पति (पु०) पर्वत स्वामी पहाड़ों का मालिक, हिमालय पर्वत ।

नगचाई दे० (स्त्री०) समीप, निकट, निकटागमन, अवाई । [पहुँचना ।

नगचाना दे० (क्रि०) पास आना, समीप जाना,

नगचाहट दे० (स्त्री०) सामीप्य, निकटता, नगचाई ।

नगजा (स्त्री०) पार्वती । [के संयोग से बनता है ।

नगण (पु०) छन्दोशास्त्र का एक गण जो तीन अक्षरों

नगण्य (गु०) तुच्छ, हेय । [एक जड़ी ।

नगदौना तद्० (पु०) नागदमन, औषध विशेष,

नगन तद्० (वि०) नग्न, नङ्गा, वस्त्रहीन, दिगम्बर, अनावृत ।—ी (स्त्री०) छोटी बच्ची जो नङ्गी घूमती फिरती है । [पत्थर ।

नगभिदक तत्० (पु०) पाषाणभेद, एक प्रकार का

नगर तत्० (पु०) पुर, ग्राम, बड़ा ग्राम ।—कोट (पु०) कोट, परकोटा, नगर के बाहर की भीत —नारी या नायिका (स्त्री०) गणिका, वेश्या, वाराङ्गना, नगर की साधारण स्त्री ।—वर्ती (वि०) नगर के मध्य में स्थित, नगरवासी, नगर में रहने वाले ।—वासी (पु०) नागरिक, नगर के वासी ।—हा (गु०) नागरिक, शहरका ।

नगराई (स्त्री०) नागरिकता, चतुराई, धूर्तता ।

नगरी तद्० (स्त्री०) बस्ती, ग्राम, गाँव, छोटा नगर ।

नगरोपान्त तत्० (पु०) नगर का परिसर, नगर का निकास ।

नगाड़ा या नगारा (पु०) नक़ारा, नक़ारा ।

नगी (स्त्री०) नग, नगीना, पर्वती, नाग की ।

नगीच दे० (पु०) समीप, निकट, पास।
नगीना (पु०) हीरा पन्ना आदि।
नगेंद्र (पु०) पर्वतराज, हिमालय।
नग्न तद्० (वि०) नङ्गा, वस्त्रहीन।
नचवाना दे० (क्रि०) नाच कराना, नचाना, नृत्य कराना। [नाच करने वाला।
नचवैया दे० (पु०) नचाने वाला, नर्तक, नृत्यकर्त्ता,
नचहिं दे० (क्रि०) नाचता है, नृत्य करता है।
नचाना दे० (क्रि०) नचवाना, नाच कराना, नृत्य कराना।
नचावत दे० (क्रि०) नचाता है, नृत्य कराता है, नाच कराता है। यथा—
सबहिं नचावत राम गुसाईं।
नर नाचहिं मरकट की नाईं।—रामायण।
नचिकेता (पु०) वाजश्रवा ऋषि के पुत्र का नाम।
नछत्र (पु०) नक्षत्र, तारा।—ी (गु०) प्रतापी, भाग्यवान्।
नट तद्० (पु०) नर्तकों की एक जाति, नर्तक, नचवैया, भाँड़, कौतुकी, मायावी।—नागर (पु०) नरशिरोमणि, श्रीकृष्णचन्द्र, टोनहा, जादूगर। —भूषण (पु०) हरताल।—वर (पु०) महादेव।
नटखट दे० (वि०) धूर्त, कपटी, छली, पाखण्डी, उत्पाती, उपद्रवी।
नटखटी दे० (स्त्री०) धूर्तता, कपट, छल।
नटत दे० (क्रि०) ना करता है, नाहीं करता है, अस्वीकार करता है।
नटना दे० (क्रि०) न मानना, दोदना, नकारना, मुकरना, नाहीं करना, नशना, नष्ट होना बिगड़ना, ख़राब होना। [का खेल, छल प्रपञ्च।
नटमाया तद्० (स्त्री०) छलविद्या, इन्द्रजाल, नट
नटवा दे० (पु०) टोनहा, मायावी, स्वांगी, ढीठवन्द।
नटसाल दे० (पु०) टूटाकाँटा। [गया, हट गया।
नटा दे० (क्रि०) नाचा, भागा, मुकर गया, फिर
नटिन दे० (स्त्री०) नट की स्त्री, नटी, जादू करने वाली स्त्री, टोनही। [की स्त्री, वेश्या, गणिका।
नटी तद्० (स्त्री०) नट की स्त्री, नाटकों में सूत्रधार
नटुआ, नटुवा (पु०) नट, नटरा, नट की एक जाति विशेष।

नटना (क्रि०) नष्ट होना, बिगड़ना।
नड़ दे० (पु०) जाति विशेष, जो चूड़ी आदि बनाते हैं, चुड़िहार। [निठुरा।
नत तद्० (वि०) [नम्+क्त] नम्र, विनयी, विनीत,
नतइत (पु०) नतैत, गोत्री, कुटुम्बी। [घोड़ता।
नतकुर (पु०) बेटी का बेटा, नवासा, दौहित्र,
नतरु दे० (अ०) नहीं तो, ऐसा नहीं हुआ तब, अन्यथा। [सुन्दरी, बाला, नारी।
नताङ्गी तद्० (स्त्री०) [नत+अङ्ग+ई] युवती,
नति तद्० (स्त्री०) [नम्+ क्तिन्]नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन।
नतिनी दे० (स्त्री०) नातिन, बेटा की बेटी, पौत्री।
नतीजा (पु०) परिणाम, फल।
नतु (गु०) नहीं तो, अन्यथा, ऐसा नहीं तो।
नतैत दे० (वि०) नातेदार, सगा, सम्बन्धी।
नथ दे० (पु०) नाक में पहनने का गहना, बड़ी नथ या नथुनी। [पहनने के लिये नाक छिदाना।
नथना दे० (स्त्री०) नाक का छेद। (क्रि०) नथ
नथनी दे० (स्त्री०) नथ, नाक में पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण, एक प्रकार का अस्त्र, जिसमें बैल नाथा जाता है।
नथी दे० (स्त्री०) छिदी, फँसी, नाथी गई।
नथुआ दे० (पु०) नाथने वाला, छिदुआ।
नथुई दे० (स्त्री०) छिदुई।
नथुना दे० (पु०) नाथ का अग्रभाग।
नद तद्० (पु०) बड़ी नदी, जिसकी धारा उत्तर या पश्चिम की ओर जाती हो, यथा—शोण, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु आदि। [शब्द, जातशब्द।
नदित तद्० (वि०) शब्द किया हुआ, शब्दित, कृत-
नदिया (स्त्री०) छोटी नदी। (पु०) नन्दी बैल, पूर्व बंगाल का स्वनाम प्रसिद्ध एक नगर जहाँ के नैयायिक प्रसिद्ध हैं।
नदी तद्० (स्त्री०) पर्वतों से निकला हुआ वह स्रोत जो समुद्र में जाकर मिले, गङ्गा, सरयू, यमुना आदि। —कान्ता (स्त्री०) काकजङ्घा नामक बूटी। —गर्भ (पु०) नदी के उभयतट के बीच का स्थान। —ज (पु०) भीष्मपितामह, अर्जुन वृक्ष, निमक विशेष (गु०) नदी से उत्पन्न।—मातृक (वि०)

नदी के जल से उत्पन्न होती थी।—मुख (पु०) नदी का बहाव।

नदेश तत्० (पु०) समुद्र, सागर, महोदधि।

नदाजा दे० (पु०) बड़ी नाँद, जिसमें बैल आदि को खिलाया जाता है, जो मट्टी का बना होता है।

ननका दे० (पु०) छोटा बच्चा, लड़का, लाड़ला, दुलारा।

ननद तद्० (स्त्री०) पति की बहिन, ननदी।

ननदिया, ननदी दे० (स्त्री०) ननद, पति की भगिनी।

ननिहाल दे० (पु०) नाना का घर, माता के पिता का घर, नाना का गाँव।

ननु तत्० (अ०) निश्चय, अवधारण, अनुज्ञा सम्मतिदान, अनुमति, अनुनय आमन्त्रण, आक्षेप, विरोधोक्ति, उपेक्षा।

नन्द तत्० (पु०) श्रीकृष्ण का पालने वाला पिता, यमुना के दूसरे तीर पर पहले एक गोकुल नामक गाँव था, वहाँ गोप बसते थे। नन्द उन्हीं गोपों के अधिपति थे। उस समय कंस मथुरा का राजा था। नन्द मथुरा के राजा, के करद सामन्त थे। भगवान् श्रीकृष्ण गोकुल ही में पले थे। वहीं उन्होंने कंस के द्वारा भेजे हुए राक्षसों का वध किया था। वहीं से कंस के धनुर्यज्ञ में निमन्त्रित होकर श्रीकृष्ण मथुरा गये और वहाँ कंस को मार कर अपने माता पिता के यहाँ रहने लगे। पुनः वे वृन्दावन नहीं लौटे। कृष्ण के चले आने के बाद ही से नन्द का जीवन एक प्रकार का बोझ हो गया था। हंस और डिम्भक को मारने के लिये एक बार श्रीकृष्ण वृन्दावन गये थे और वहीं नन्द और यशोदा से भेंट भी हुई थी नन्द और यशोदा को समझा कर श्रीकृष्ण पुनः मथुरा लौट आये। इसके बाद एक बार और भी श्रीकृष्ण से इनकी भेंट हुई थी वह भेंट प्रभास क्षेत्र में हुई थी जो अन्तिम भेंट थी। नन्द पहले जन्म में द्रोण नामक वसु थे।

(२) मगध का राजा, इस नाम के नौ राजा पाटलिपुत्र के सिंहासन पर आरूढ़ हुए थे। इनकी उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रकार की बातें मिलती हैं। पुराणों में लिखा है कि ये एक शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम नन्दी था। परन्तु बौद्ध ग्रन्थकार कहते हैं कि नन्द वेश्या के गर्भ और नाई के औरस से उत्पन्न हुए थे। जो हो ये भाग्यशाली थे इसमें सन्देह नहीं। पाटलिपुत्र का राजा अपुत्रक मर गया था। राजमन्त्री यही विचारते थे कि किसका अभिषेक किया जाय, किन्तु जब वे कुछ भी निश्चय न कर सके तब उस समय की प्रथा के अनुसार वे नगर के बाहर राजहस्ति, अश्व, छत्र, कुम्भ और चामर आदि राजसामग्री लेकर उपस्थित थे। उसी समय नन्द वहाँ उपस्थित हुए। राजहस्ति ने इन्हीं पर घड़े के जल से अभिषेक किया और सूँड़ से उनको अपनी पीठ पर रख लिया, चारों ओर मङ्गलध्वनि होने लगी। इनके वंश में क्रमशः सात नन्द राजा हुए थे। कल्पक नामक एक महापण्डित नन्द के मन्त्री थे। अन्त में नवें नन्द राजगद्दी पर बैठे, जिन्हें महानन्द भी कहते हैं। इनके मन्त्री कल्पक के पुत्र शकटाल थे। इन्हीं के सभापण्डित विख्यात वररुचि थे। प्रसिद्ध राजनीति कुशल चाणक्य ने इसी नन्द वंश को राज्यभ्रष्ट करके चन्द्रगुप्त को राजासन दिया था। जिस घटना का अवलम्बन करके विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस नामक नाटक बनाया है।—रानी (स्त्री०) यशोदा, श्रीकृष्ण की पालने वाली माता।

नन्दकुमार तत्० (पु०) ये कश्यप गोत्रज दक्ष के वंशधर थे। बंगाल के महाराज आदि शूर ने कन्नौज से पाँच ब्राह्मण विद्वान बुलाये थे। दक्ष उन्हीं में से एक थे। नन्दकुमार के पूर्व पुरुष मुर्शिदाबाद ज़िले के भद्रपुर गाँव में रहते थे। महाराज नन्दकुमार के पिता का नाम पद्मनाभ था। नन्दकुमार के पूर्वपुरुष पीतमुण्डी नामक गाँव में रहते थे इसी कारण इनका वंश पीतमुण्डी ब्राह्मण नाम से विख्यात था। बंगाल के नवाब अलीवर्दीख़ाँ के समय में नन्दकुमार ने अमीनी के पद पर रह कर बहुत धन कमाया था। परन्तु वहाँ के दीवान से कुछ अनबन हो जाने के कारण इन्हें अपना काम छोड़ना पड़ा। अलीवर्दी के मरने के अनन्तर सिराजुद्दौला बंगाल के नवाब हुए। नन्दकुमार नौकरी के लिये सिराज के यहाँ जाने

आने लगे। सिराज ने नन्दकुमार को दीवानी का काम दिया। अँगरेज़ों के साथ अनबनाव होने के कारण सिराज के पदच्युत होने के अनन्तर नन्द कुमार लार्ड क्लाइव के मुंशी नियुक्त हुए। क्लाइव के विलायत चले जाने पर, वैरेलष्ट साहब बङ्गाल के गवर्नर हुए। ये पहिले तो नन्दकुमार को बड़ी प्रीति से देखते थे परन्तु पीछे किसी कारण से इन दोनों में परस्पर विरोध हो गया। वैरेलष्ट के बाद कार्टियार बङ्गाल के गवर्नर हुए, ये भी अपना समय पूरा करके चले गये। भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल वारिन हेस्टिंग्ज़ के ज़माने में नन्दकुमार को एक मुकद्दमे में उस समय के जज सर इलाइज़ाइम्पे ने प्राणान्त दण्ड की आज्ञा दी। नन्दकुमार मरने के समय ५२ लाख रुपये और भूमि सम्पत्ति छोड़ गये थे। एक बार इन्होंने एक लच ब्राह्मणों को इच्छाभोजन कराया था।

नन्दन तत्० (पु०) [नन्द्+ल्यु] पुत्र, बेटा, आनन्द-दायक, सुखदायक, प्रसादक, प्रसन्न करने वाला, सन्तान, विष्णु, नारायण, पर्वत विशेष, इन्द्र का उपवन। (वि०) हर्षजनक, आह्लादजनक। —ज (पु०) हरिचन्दन।

नन्दनन्दन तत्० (पु०) श्रीकृष्ण।

नन्दा तत्० (स्त्री०) [नन्द्—आ] तिथि विशेष, दोनों पक्षों की प्रतिपद, षष्ठी और एकादशी तिथि, सम्पत्ति। भगवती का दूसरा नाम। वाराह पुराण में लिखा है कि ब्रह्मा ने देवी से कहा था कि देवि! आपने देवों के बहुत बड़े कार्य किये हैं, परन्तु आपको एक और भी देवताओं का कार्य करना चाहिये। आपको महिषासुर का विनाश करना होगा। ब्रह्मा के यह कहने के अनन्तर देवताओं ने भगवती की हिमालय में स्थापना की और वे इससे बहुत प्रसन्न हुईं, इसी कारण भगवती का नाम नन्दा पड़ा। दूसरी पुस्तकों में लिखा हुआ है कि भगवती देवलोक नन्दनकानन और पवित्र हिमालय में रह कर बहुत आनन्दित हुई थीं। इसी कारण उनका नाम नन्दा पड़ा है।

नन्दात्मज तत्० (पु०) [नन्द्+आत्मज] श्रीकृष्ण, श्रीबलराम।

नन्दि तत्० (पु०) शिव का द्वारपाल, द्यूत क्रीड़ा, जुआ का खेल।

नन्दिग्राम तत्० (पु०) ग्राम विशेष, जहाँ श्रीरामचन्द्र के वनवास के समय भरत जी तपस्या करते हुए राज्य व्यवस्था करते थे।

नन्दिघोष तत्० (पु०) अर्जुन के रथ का नाम, आनन्द देने वाला नन्दियों का शब्द, भाटों की स्तुति, मङ्गल घोषणा।

नन्दिनी तत्० (स्त्री०) [नन्द्+इन्+ई] कन्या, पुत्री, उमा, गङ्गा, वशिष्ठ की धेनु, कामधेनु की कन्या, नन्दिनी, महर्षि वशिष्ठ ने इसी धेनु का पालन किया था। सेवा से प्रसन्न करके इसी नन्दिनी के प्रसाद से अयोध्यापति राजा दिलीप ने रघु नामक पुत्र पाया था। साली, पत्नी की बहिन।

नन्दी तत्० (पु०) [नन्द्+इन्] शिव का अनुचर, महादेव ने इसको द्वाररक्षक का काम दिया था। वृक्षविशेष, वटवृक्ष, शालङ्कायन मुनि, यह शिव के अंश थे। [भगिनी का पति।

नन्दोई, नन्दोसी दे० (पु०) ननद का पति, पति की

नन्दोला दे० (पु०) नाँद, मट्टी का बड़ा औंधा माँदा। [शिशु, बालक।

नन्हा दे० (वि०) छोटा, नाटा, लघु, छोटा लड़का,

नपुंसक तत्० (पु०) क्लीब, हिजड़ा, पुंसत्वहीन, पुरुषत्वहीन। —ता (स्त्री०) नामर्दी। —लिङ्ग (पु०) तीसरा लिङ्ग।

नप्ता तत्० (पु०) कन्या का पुत्र, दौहित्र।

नफर दे० (पु०) नौकर, चाकर, सेवक, भृत्य।

नफरत (स्त्री०) घृणा।

नफरी (स्त्री०) एक दिन की मजूरी।

नफा (पु०) लाभ।

नफीरी दे० (स्त्री०) वाद्य विशेष, तुरही, सहनाई।

नबेड़ना (क्रि०) सुलझाना, निपटाना।

नबेड़ा (पु०) समाप्ति, सुलझाव, निर्णय। [नाड़ियाँ।

नब्ज़ (स्त्री०) नाड़ी, पहुँचे के ऊपर की रक्तवाहिनी

नब्बे (पु०) संख्या विशेष, ९०।

नभ तत्० (पु०) आकाश, गगन, आसमान, श्रावण का महीना। —श्चर (पु०) आकाश में चलने वाले पक्षी। ...

नभग तद्० (पु०) पक्षी, पखेरु, नभचर, देवता, नक्षत्र, ग्रह, पखेरू, चिड़िया ।—नाथ (पु०) गरुड़, चन्द्रमा ।

नभगामी तद्० (पु०) नभग, पक्षी, नक्षत्र ।

नभगेश तद्० (पु०) नभगनाथ, गरुड़, चन्द्रमा ।

नभश्चर तद्० (पु०) पखेरू, पक्षी, विद्याधर, मेघ, वायु पवन । (वि०) आकाश में घूमने वाला, आकाशचारी, खेचर ।

नभचर या नभचर तद्० (पु) आकाश में उड़ने वाले, आकाशचारी, पक्षी, तारा, ग्रहदेवता, विद्याधर, सिद्ध, गन्धर्व ।

नभस्य तद्० (पु०) भाद्रपद, भादों का महीना, भाद्रमास ।

नभस्वान् तद्० (पु०) [नभस्+वत्] वायु, अनिल, पवन, हवा । [गमन, उड़ना, उड़्डयन ।

नभोगति तद्० (स्त्री०) [नभस्+गति] आकाश-

नभोधूम तद्० (पु०) [नभस्+धूम] वारिद मेघ, घन ।

नम (गु०) तर, भींगा, आर्द्र ।

नमः तद्० (अ०) नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन । —से आपको नमस्कार करता हूँ ।

नमक (पु०) नौन, लवण ।—अदा करना (क्रि०) उपकार के बदले उपकार करना ।—फूटना (क्रि०) बेईमानी का परिणाम भोगना ।—हराम (गु०) उपकारक के प्रति अपकार करने वाला ।—हलाल (गु०) उपकार का बदला देने वाला ।

नमकीन दे० (वि०) नोन की वस्तु, पकान जिसमें नमक पड़ा हो, लवणाक्त ।

नमत नमति तद्० (क्रि०) नमस्कार करता है, प्रणाम करता है, अभिवादन करता है, नम्र होता है, नवता है, झुकता है ।

नमन तद्० (पु०) [नम्+अनट्] अधोगमन, नम्र होना, प्रणाम करना, विनीत होना, नत होना ।

नमस्कार तद्० (पु०) [नमस्+कार] प्रणाम सम्मान प्रदर्शन करना ।

नमाज़ दे० (पु०) मुसलमानों की ईशस्तुति, मुसलमानों की ईश्वर वन्दना की रीति ।

नमामहे तद्० (क्रि०) हम लोग प्रणाम करते हैं ।

नमित तद्० (गु०) कृत नमस्कार, विनम्र, कृतविनय, प्रह्वीभूत ।

नमुचि तद्० (पु०) कामदेव, मदन, कन्दर्प, दैत्य विशेष, प्रसिद्ध दानव, महासुर शुम्भ का तीसरा भाई शुम्भ से छोटा निशुम्भ और निशुम्भ से छोटा नमुचि था ।

(२) विख्यात दानवराज, इसके साथ इन्द्र की मित्रता थी । तथापि इन्द्र ने नमुचि को मार डाला, नमुचि के मारने से इन्द्र को ब्रह्महत्या का दोष लगा था । इस दोष को दूर करने के लिये इन्द्र ने अरुणा नामक नदी में स्नान किया था । अरुणा नदी सरस्वती नदी की प्रधान शाखा है । एक समय दानवराज नमुचि इन्द्र के भय से सूर्य की किरणों में छिपा हुआ था, यह देख कर इन्द्र ने इससे मित्रता की और बोले, मित्र ! मैं सत्य कहता हूँ दिन में या रात में भीगे या शुष्क वस्तु द्वारा मैं तुम्हारा विनाश करने की चेष्टा नहीं करूँगा । एक दिन नीहार से दिशाएँ आच्छन्न थीं । उसी समय जलफेन द्वारा इन्द्र ने नमुचि का सिर छेदन किया । उस समय वह छिन्न मुण्ड बोला अरे पापी ! तुमने मित्रवध किया, यह कह कर दानवराज के सिर ने इन्द्र को दौड़ाया, डर कर इन्द्र ब्रह्मा की शरण गये, ब्रह्मा के उपदेश से इन्द्र अरुणा नदी में स्नान तथा यज्ञ करके पापमुक्त हुए । अनन्तर वह दानवराज का सिर भी अरुणा तीर्थ में स्नान कर अक्षयधाम को गया ।

नम्र तद्० (वि०) [नम्+र] कृतप्रणाम, विनयी, विनीत, मिलनसार ।—ता (स्त्री०) विनय विनीतत्व, मृदुल विनीतभाव ।

नय तद्० (पु०) नीति, रीति भाँति, न्याय, धर्म, द्यूत विशेष । (वि०) न्याय्य, औचित्य, नेता दे० (पु०) नौ की संख्या, निषेध, अस्वीकार ।—कारी (पु०) नचवैया, नाचने वाला ।

नयन तद्० (पु०) लोचन, नेत्र, आँख चक्षु । —गोचर (पु०) दृष्टिगोचर, नेत्रपथ, आँखों का सामना ।—विशारद (पु०) नीतिकुशल नीतिशास्त्र पण्डित ।

नयना तद्० (स्त्री०) आँखों का तारा, पुतली, तारका, कनीनिका।

नयनो (स्त्री०) आँख की पुतली, इस शब्द का व्यवहार प्रायः उपमान वाचक शब्दों के साथ हुआ करता है। [आधुनिक, नव, टटका।

नया दे० (वि०) नवीन, नूतन, अभिनव, ताज़ा,

नर तद्० (पु०) मानव, मनुष्य, मानुष, पुरुष, भागवत में विष्णु का चौथा अवतार नर का बतलाया गया है। यह धर्म की पत्नी मुक्ति के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं। नर और नारायण ये दो मूर्ति थीं, परन्तु दोनों की आकृति समान थी। महाभारत में लिखा है कि नर नारायण बद्रिकाश्रम में कठोर तपस्या करते थे। नारद जी वहाँ गये उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिनकी उपासना संसार कर रहा है, देवता आदि भी जिनको सर्वदा ध्यान करते हैं, वे किसकी उपासना करते हैं। नारद ने पूँछा, भगवन्! आप लोग किसकी उपासना कर रहे हैं। भगवान् बोले—जो सूक्ष्म, अविज्ञेय, कर्मविहीन, अवध्य, नित्य, तथा त्रिगुणातीत हैं, जिनसे सत्त्व आदि गुण उत्पन्न होते हैं, जो वास्तव में अव्यक्त होने पर भी व्यक्तरूप से अवस्थान करके प्रकृति नाम से परिचित हैं, वे परमात्मा ही हम लोगों के भी कारण हैं, हम लोग उन्हीं की उपासना करते हैं। नर नारायण की कठिन तपस्या देख देवता डर गये, इनकी तपस्या में विघ्न करने के अर्थ इन्द्रादि देवों ने अप्सरायें भेजीं, परन्तु यहाँ अप्सराओं के किये कुछ न हुआ। उर्वशी की सृष्टि करके नारायण ने अप्सरा और देवों के मनोरथ पर पानी फेर दिया। यही नर नारायण द्वापर के अन्त में अर्जुन श्रीकृष्ण के रूप में अवतीर्ण हुए थे। —देव (पु०) राजा, नृपति, ब्राह्मण, विप्र। —नारायण (पु०) दो ऋषियों का नाम, भगवान् का चौथा अवतार, श्रीकृष्ण अर्जुन।—पति (पु०) राजा, नृपति, नरेन्द्र।—पुर (पु०) मर्त्यलोक, भूलोक, भूलोक।—मेध (पु०) यज्ञ विशेष, जिस यज्ञ में मनुष्य का वध करके बलि दी जाती है। किसी समय में नरमेध शब्द से ब्राह्मणों का भोजन कराना समझा जाता था, परन्तु अब यह अर्थ गौण हो गया है।—लोक (पु०) नरपुर, मर्त्यधाम, मर्त्यलोक।—वाहन (पु०) कुबेर, यक्षराज, उदयन का पुत्र, गन्धर्व, चक्रवर्ती। —सिंह (पु०) नृसिंह, भगवान् का अवतार।

नरक तद्० (पु०) देवराग्निप्रभेद, दैत्य विशेष, भूमि का पुत्र, कष्टजनकस्थान, पापभोगस्थान, निरय। पुराणों में नरकों के नाम इस प्रकार गिनाये गये हैं। तामिस्र, अन्धतामिस्र, रौरव, महारौरव, कुम्भीपाक, कालसूत्र, असिपत्रवन, शूकरमुख, अन्धकूप, कृमिभोजन, सन्देश, तप्तभूमि, वज्रकण्टक, शाल्मली वैतरणी, पूयोद, प्राणरोध, विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन, अवीचिरयःपान, क्षारकर्दम, रक्षोगण, भोजन, शूलप्रोत, दन्तशूक, अवटनिरोधन, पर्यावर्तन, सूचीमुख आदि।—न्तक (पु०) श्रीकृष्ण का नाम।—कुण्ड (पु०) कष्टदायक कुण्ड, पाप का फल भोगने का कुण्ड ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि नरक कुण्ड ८६ हैं।—गामी (पु०) पापी।—चतुर्दशी (स्त्री०) कार्तिक कृष्ण पक्ष १४ की।

नरकट दे० (पु०) तृणविशेष, सरकण्डा।

नरकासुर तद्० (पु०) एक राक्षस का नाम, यह श्रीकृष्ण का मित्र था।

नरकेसरी तद्० (पु०) नरसिंह, भगवान का चौथा अवतार। (वि०) नरश्रेष्ठ, प्रधान मनुष्य।

नरकान्तक तद्० (पु०) [नरक+अन्तक] विष्णु, श्रीकृष्ण।

नरकामय तद्० (पु०) [नरक+आमय] प्रेत, पिशाच, नरक का रोग, कुष्ठरोग।

नरकी तद्० (पु०) नरकयोग, दुःखी, पापी।

नरङ्ग तद्० (पु०) नारङ्गी, नारङ्ग, संतरा, नरङ्गी, कमला नींबू।

नरदहा दे० (पु०) नाली, पनाला, कीचड़ की हौदी।

नरम दे० (वि०) मृदु, कोमल, अकठिन, आर्द्र, शीतल।

नरमद दे० (वि०) सुस्त, सुस्त ने वाला, ढिलेढ, मसखरा। [मृदु बनाना।

नरमाना दे० (क्रि०) नरम करना कोमल करना,

नरसिंगा दे० (पु०) एक प्रकार का बाजा, तुरही।

नरसिंगिया दे० (पु०) नरसिंगा बजाने वाला।
नरसों दे० (पु०) बीता हुआ या आने वाला चौथा दिन।
नरहड्डू दे० (पु०) पिंडली की हड्डी, पिंडहारी।
नरहरि तत्० (पु०) नृसिंह, नरसिंह, विष्णु का अवतार।—दास (पु०) तुलसीदास के गुरु का नाम, कवि विशेष।
नराधम तत्० (पु०) [नर+अधम] अधम, नीच, पापी, दुराचारी, असत्कर्मी।
नराधिप तत्० (पु०) [नर+अधिप] राजा, नरपति, नृपति, भूपति, भूपाल।
नरिया दे० (पु०) खपरा, छोटी नाली, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाये जाते हैं।
नरी तत्० (स्त्री०) नर जातीया स्त्री, चर्म विशेष, चाम, चमड़ा, लौह यन्त्र विशेष, जिसमें कपड़े बुनने के लिये सूत रखते हैं।
नरूत्र दे० (त्रि०) पुल्लिङ्ग, पुरुष। [घाँटी।
नरेट दे० (पु०) साँसी, नली, नलिका, नरई, गला,
नरेटी दे० (स्त्री०) ग्रीवा, गला, नरई, गर्दन, टेंटुआ।—दबाना (क्रि०) गला घोंटना, मारना, जान से मार डालना।
नरेन्द्र तत्० (पु०) [नर+इन्द्र] नरेश्वर, बहुदेशाधिपति, राजा, नरपति, विषवैद्य, विष चिकित्सक।
नरेश तत्० (पु०) [नर+ईश] राजा, नरपति।
नरेश्वर तत्० (वि०) [नर+ईश्वर] देशाधिपति, राजा, नरेन्द्र, नरपति।
नरोत्तम तत्० (वि०) [नर+उत्तम] श्रेष्ठ मनुष्य, उत्तम मनुष्य, सभापति, किसी दल का अगुआ। (पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।
नर्त्तक तत्० (पु०) [नृत+अक] नृत्यकारी, नाचने वाला, नट, चारण। [नटी, वेश्या, वाराङ्गना।
नर्त्तकी तत्० (स्त्री०) [नर्तक+ई] नृत्यकारिणी,
नर्त्तन तत्० (पु०) [नृत+अनट्] नृत्य, नाच, नाच गाने।—प्रिय (पु०) शिखी, मयूर, मोर।
नर्दक तत्० (पु०) [नर्द+अक] बोलने वाला, शब्द करने वाला।
नर्दवा या नर्दा दे० (पु०) पनाला, नाली।
नर्म तत्० (पु०) [नृ+मन्] कौतुक, लीला, क्रीड़ा।
नर्मद तत्० (पु०) [नर्म+दा+ड] केलि सचिव, क्रीड़ा विशेष के सहायक, आनन्दकारी, सुखदायक।
नर्मदा तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, यह नदी दक्षिण में है, रेवा, मेकलकन्यका।
नर्मदेश्वर (पु०) शिव, महादेव।
नर्मसचिव तत्० (पु०) [नर्म+सचिव] राजा के साथी, क्रीड़ामित्र, मुसाहेब।
नर्मी (स्त्री०) नरमी, कोमलता।
नल तत्० (पु०) तृण विशेष, कोंकी, बाँस, नेवा, सीसा धातु की बनी नली, पाइप, नाली प्रणाली, पनाली, खस, पितृदेव, दैत्य विशेष। नैषधराज। स्वयंवर विधि से इन्होंने विदर्भराज भीम की कन्या दमयन्ती से विवाह किया था। दमयन्ती के रूप और गुण की प्रशंसा सुन कर नल उस पर आसक्त हुए थे। एक दिन राजा नल ने उद्यान में घूमते घूमते एक हंस पकड़ा था। हंस मनुष्य की बोली में राजा से कहने लगा आप हमको छोड़ दें हम आपका बहुत उपकार करेंगे। राजा भीम की कन्या दमयन्ती के सामने आपका गुण वर्णन करेंगे, जिससे वह आपके साथ अपना विवाह कर लेगी। नल ने हंस को छोड़ दिया। दमयन्ती के समीप जाकर हंस ने नल के गुणों का वर्णन किया, दमयन्ती नल पर अनुरक्त हो गई। कन्या को विवाह योग्य देख भीम ने स्वयंवर सभा जोड़ी, उसमें देवताओं को छोड़कर दमयन्ती ने नल को ही वरण किया। एक बन्दर का नाम यह शिल्पकार था।
नलकूबर तत्० (पु०) यक्षराज कुबेर का पुत्र। इसके भाई का नाम मणिग्रीव था। एक समय दोनों भाई मदोन्मत्त होकर कैलास के पास गङ्गातीर के तपोवन में स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करते थे। यह देख नारदजी को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने शाप दिया। नारद के शाप से नलकूबर और मणिग्रीव दोनों भाई यमलार्जुन वृक्ष हो गये थे। बङ्गाल के प्रसिद्ध कवि गुणाकर भारतचन्द्र राय ने एक स्थान पर लिखा है कि नारद के शाप से नलकूबर का जन्म, बङ्गदेश में भवानन्द मजुमदार के रूप में हुआ था।

नलद तत्० (पु०) पुष्परस, मकरन्द, उशीर, वीरण-मूल, खस।

नलपरपेटिका दे० (पु०) फलिहारी।

नला तत्० (स्त्री०) उदरस्थ नाड़ी विशेष, नरा।

नलाना दे० (क्रि०) निराना, खेत की घास आदि निकालना। [शिरा, सुगन्धित द्रव्य विशेष।

नलिका तत्० (स्त्री०) [नलिक+आ] नाड़ी, नली,

नलिन तत्० (स्त्री०) पद्म, कमल, पानी, जल, पक्षी विशेष, सारस पक्षी।

नलिनी तत्० (स्त्री०) [नलिन+ई] पद्मयुक्त देश, पद्मसमूह, पद्मलता, कमलिनी, कुमुदिनी, कोईं, कमलाकर।—रुह (पु०) मृणाल, कमल की डंडी।

नलिया दे० (पु०) बहेलिया, व्याध, निषाद, चिड़ीमार।

नली तत्० (स्त्री०) [नल+ई] नरेटी, ग्रीवा, गर्दन, गला, घाँटी, लोहे का एक यन्त्र, जिसमें सूत रख कर कपड़े बिनते हैं।

नलुआ दे० (पु०) बाँस का चोंगा, जिसमें पत्रा आदि रखते हैं, या साधु लोग पानी पीते हैं।

नव तत्० (वि०) नया, नवीन, नूतन, अभिनव, संख्या विशेष, एक कम दस, ९, नौ।—नारिका (स्त्री०) नई दुलहिन।—कुमारी (स्त्री०) ९ कुमारियाँ उनके नाम हैं। १ कुमारिका, २ त्रिमूर्त्ति, ३ कल्याणी, ४ रोहिणी, ५ काली, ६ चण्डिका, ७ शाम्भवी, ८ दुर्गा और ९ सुभद्रा।—खण्ड (पु०) पृथिवी के नौ खण्ड, प्राचीन भूगोल वेत्ताओं ने पृथ्वी को नौ भागों में बाँटा था, वे ये हैं।—भारत, इलावर्त्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हिरण्य, रम्य, हरि, कुरु।—ग्रह (पु०) सूर्य आदि नौ ग्रह।—दुर्गा (स्त्री०) दुर्गा की नौ मूर्त्ति, शैलपुत्री आदि।—द्वार (पु०) शरीर के नौ मार्ग, यथा—"नवद्वारे का पींजरा या में पंछी पौन"।

—कबीर।

—द्वीप (पु०) नदिया, पूर्वी बंगाल का नगर विशेष।—धाभक्ति (स्त्री०) नौ प्रकार की भक्ति, भक्ति के मुख्य दो भेद हैं, यथा "परा" और "अपरा"। "परा" भक्ति अलौकिक होने से उसमें कोई भेद नहीं, किन्तु अपरा भक्ति नौ प्रकार की है यथा—१ श्रवण, २ कीर्त्तन, ३, स्मरण, ४ पाद सेवन, ५ अर्चन, ६ वन्दन, ७ दास्य, ८ सख्य और ९ आत्म समर्पण।—निधि (पु०) कुबेर का ख़ज़ाना।—वधू (स्त्री०) नई बहू, दुलहिन, युवती।—बाला (स्त्री०) नवयौवना, युवती।—यौवना (स्त्री०) युवती स्त्री।—रत्न (पु०) मुक्ता आदि नव प्रकार के मणि। यथा—हीरा, पन्ना, माणिक, नीलम, लहसनिया, पुखराज, गजमुक्ता, मोती, मूँगा। विक्रमादित्य राजा की राजसभा के नौ पण्डित। यथा-धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शङ्कु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि आभूषण विशेष, जिसमें नौरत्न जड़े हों।—रात्र (पु०) आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त नौ दिन तक किया जाने वाला व्रत।—रस (पु०) नव प्रकार के रस, यथा—शृङ्गार, वीर, करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, बीभत्स, रौद्र और शान्त।—भक्ति (स्त्री०) नव प्रकार की भक्ति, नवधा भक्ति।—शिक्षक, नूतन अध्यापक, नया पढ़ाने वाला।—सङ्गम (पु०) प्रथम समागम, स्त्री पुरुष का प्रथम मिलन।

नवनी तत्० (स्त्री०) नवनीत, माखन, नैनू, नौनी।

नवनीत तत्० (पु०) माखन, मक्खन, नैनू।

नवम तत्० (वि०) नवाँ, नव संख्या का पूर्ण करने वाली संख्या।

नवमालिका (स्त्री०) पुष्प विशेष, वर्णवृत्त विशेष।

नवमांश तत्० (पु०) नवाँ भाग, नवाँ हिस्सा, नव भाग में का एक भाग, $\frac{1}{9}$।

नवमी तत्० (स्त्री०) [नवम+ई] नौमी तिथि। तिथि विशेष, चन्द्रमा की नवीं कला का क्रिया काल। [किया जाता है।

नवयज्ञ (पु०) वह यज्ञ जो नवीन अन्न के निमित्त

नवयुवक (पु०) तरुण, युवा, नौ जवान।

नवल दे० (वि०) नया, नवा, नवीन, सुन्दर, मनोज्ञ, मनोहर। (पु०) एक पौधे का नाम।—किशोर (पु०) श्रीकृष्णचन्द्र।—वधू (स्त्री०) मुग्धा नायिका का एक भेद, सुन्दरी स्त्री।

नया दे० (वि०) नवीन, नूतन, नया।
नयांश तत्० (पु०) नवम, नवाँ हिस्सा।
नयार दे० (पु०) नाव विशेष, नाव, डोंगी।
नवाना दे० (क्रि०) झुकाना, निहुराना, नम्र करना, नवा देना, विनीत करना। [संवत्सर का प्रथम अन्न।
नवान्न तत्० (पु०) [नव+अन्न] नवीन अन्न,
नवारना दे० (क्रि०) रमना, भटकना, घूमना, फिरना, किसी नवीन वस्तु का भोग करना।
नवारी दे० (स्त्री०) पुष्प विशेष, उसका वृक्ष, नवारी का फूल। [बेटी का बेटा।
नवासा दे० (पु०) दौहित्र, दोहिता, पुत्री का पुत्र,
नवासी दे० (स्त्री०) बेटी की बेटी, दौहित्री। (वि०) संख्या विशेष, ८९।
नवी दे० (स्त्री०) गर्भिन, भौना, पशु। (पु०) मुसलमानों के भविष्यद्वक्ता। [तत्काल उत्पन्न।
नवीन तत्० (वि०) नव्य, नूतन, तात्कालिक,
नवोढ़ा तत्० (स्त्री०) [नव+ऊढ़ा] नूतन विवाहिता स्त्री, नवयौवना, मुग्धा नायिका विशेष। यथा—
"मुग्धा जो भय लाज युत रति न चहत पतिसङ्ग।
ताहि नवोढ़ा कहत हैं, जो प्रवीन रसराज॥"
—रसराज।
नव्बे दे० (वि०) नवति, ९०, नवदहाई, १० कम १००।
नव्य तत्० (वि०) नूतन, नवीन, आधुनिक।
नश्वर तत्० (वि०) नाशवान्, विनाशी, विनसनशील, मिथ्या।
नष्ट तत्० (पु०) [नश्+क्त] नाशप्राप्त, ध्वस्त, पलायित, मृत, अपचित, भ्रष्ट, दुष्ट, शठ।—(वि०) अदर्शन विशिष्ट, तिरोहित, नाशाश्रय।—चित्त (वि०) मूढ़, हतबुद्धि, अज्ञानी, अविवेकी।—चेष्ट (पु०) [नष्ट+चेष्टा] स्पन्दहीन, निश्चेष्ट, चेष्टाहीन।—चेष्टता (स्त्री०) प्रलय शोक आदि के द्वारा शरीर की चेष्टा शून्यता, संज्ञाहीनता, कुकर्म चिकीर्षा, पाप करने की इच्छा।—ता (स्त्री०) भ्रष्टता, दुष्टता, शठता।—बुद्धि (पु०) निर्बुद्धि अविवेकी।—भ्रष्ट (पु०) बिगड़ा हुआ, टूटा फूटा, बेकार।—संस्मृति (वि०) विस्मरणशील, स्मरण शक्तिहीन।
नष्टा तत्० (स्त्री०) भ्रष्टा, दुष्टा, व्यभिचारिणी, कुलटा।
नस दे० (स्त्री०) नाड़ी, रग, सिरा।
नसाना दे० (क्रि०) नाश करना, बिगाड़ना, भ्रष्ट करना, तितर बितर करना। [का अग्रभाग।
नसी दे० (स्त्री०) हल का फाल, चौ, तोदा, फाल
नसीब दे० (पु०) भाग्य, अदृष्ट, कपाल।
नसीब दे० (पु०) अभाग्य, दुर्भाग्य, अशुभ, अपशकुन।
नसीहत (स्त्री०) सीख, उपदेश, लानत मलामत।
नसूर दे० (पु०) पुराना घाव, नस का घाव।
नसैनी दे० (स्त्री०) निसेनी, सीढ़ी।
नस्ता दे० (स्त्री०) नाक का छेद, नथना। [नाम।
नस्य दे० (पु०) ताम्रकूटचूर्ण, हुलास, सानुनासिक,
नहँछू (पु०) विवाह की एक रीति जिसमें वर की हजामत बनायी जाती है, नख काटे जाते हैं।
नह दे० (पु०) नख, नखर, नाखून।
नहक दे० वि०) दुर्बल, क्षीणबल, पतला, सूक्ष्म।
नहक्षत दे० (पु०) नखक्षत, नखाघात, नकोट, खसोट।
नहनी दे० (स्त्री०) नख काटने का अस्त्र विशेष, नहन्नी।
नहन्ना दे० (स्त्री०) नहनी, नहरनी।
नहरनी दे० (स्त्री०) नहनी, नखकटनी, नख काटने का यन्त्र।
नहरुआ दे० (पु०) एक रोग का नाम, प्रायः पैर में होता है और वैद्यों के राय में दुःसाध्य है।
नहलाना दे० (क्रि०) स्नान करना, नहाना, नहवाना।
नहवाना दे० (क्रि०) नहलाना, स्नान करना।
नहान दे० (पु०) स्नान, अवगाहन, शौच।
नहाना दे० (क्रि०) स्नान करना, शरीर शुद्ध करना, अवगाहन करना।
नहानी दे० (स्त्री०) स्त्रियों का रजोदर्शन के समय का स्नान, सूतक स्नान। [उपवास।
नहारमुह दे० (अ०) बिना भोजन, बिना खाये,
नहारुआ / नहारू / नहारुआ) दे० (पु०) रोग विशेष, नार निकलना, इस रोग में शरीर के किसी स्थान से सूत के समान कीड़े निकलते हैं। यह रोग राजपुताने के प्रान्तों में विशेष होता है।

नहारी (स्त्री०) कलेवा, प्रातःकाल का जलपान।
नहाता (क्रि०) स्नान करता
नहियर दे० (पु०) पीहर, मैका, स्त्री का अपने पिता का घर।
नहीं दे० (अ०) निषेध, मना, मत, न, नकारना।
नहुप तद्० (पु० चन्द्रवंशीय आयु नामक राजा के पुत्र। इन्होंने तपस्या और यज्ञ आदि के अनुष्ठान द्वारा इन्द्र का पद पाया था। महर्षि अगस्त्य के शाप से इन्द्रपद से भ्रष्ट होकर पृथ्वी पर दस हज़ार वर्ष तक साँप होकर इन्हें रहना पड़ा था। नहुप के बहुत प्रार्थना करने पर अगस्त्य ने अनुग्रह करके कहा था कि तुम्हारे वंश में युधिष्ठिर नामक राजा होंगे उन्हीं की प्रसन्नता से तुम्हारी गति होगी। वनवास के समय भीम एक दिन अहेर को गये थे, वहीं भीम को नहुपरूपी अजगर ने पकड़ लिया। भीम के आने में विलम्ब देखकर उनको ढूँढने के लिये युधिष्ठिर भी निकले। वहाँ की अवस्था देखकर युधिष्ठिर ने सर्प का परिचय पूँछा और साथ ही भीम की रक्षा का उपाय भी। सर्प अपना परिचय देकर उसी समय शापमुक्त हुआ और दिव्य शरीर धारण करके यथास्थान चला गया।
नहूसत (पु०) मनहूसी।
न्हा दे० (पु०) नख, नाखून।
ना दे० (अ०) नहीं, अभाव, निषेध, निषेधार्थक अव्यय।
नाइक (पु०) मुखिया, अगुआ।
नाइन दे० (स्त्री०) नापित की स्त्री, नाई की स्त्री।
नाइ दे० (अ०) सदृश, समान, तुल्य प्रकार।
नाई दे० (पु०) नापित, नाऊ, क्षौरकार, स्वनाम ख्यात जाति विशेष।
नाउट दे० (पु०) नाभि, ढुंढी।
नाऊ दे० (पु०) नाई, नापित।
नांदिया दे० (पु०) महादेव का वाहन, बैल, वृषभ, जो महादेव का वाहन है।
नाउँ, नाउँ दे० (पु०) नाम, संज्ञा, अभिधान, कीर्ति, यश, प्रतिष्ठा।
नांह दे० (अ०) निषेधार्थक अव्यय।
नाक तद्० (पु०) [न + अक] स्वर्ग, जहाँ दुःख न हो, नाक। दे० (स्त्री०) नासिका, नासा।—पति (पु०) इन्द्र, देवराज, सुरेन्द्र।—नटी (स्त्री०) अप्सरा, देवाङ्गना, स्वर्गवेश्या।—कटाना (वा०) अपमानित होना, अनादर कराना।—कटीहोना (वा०) स्वयं अपनी प्रतिष्ठा गँवाना, अपना मान खोना, अयशस्वी होना, बदनाम होना।—का बाल (वा०) अत्यन्तप्रिय, ईप्सित, मुँह लगा।—चढ़ाना (वा०) अप्रसन्न होना, विरक्त होना, क्रुद्ध होना।—रखना (वा०) प्रतिष्ठा रखना, मान रक्षित रखना।—सकोड़ना (वा०) नाक चढ़ाना, अप्रसन्न होना, अप्रसन्नता जनाने की एक मुद्राविशेष।
नाकड़ा दे० (पु०) रोग विशेष, नाक का एक रोग।
नाका दे० (पु०) मार्ग का अन्त, एक मार्ग का अन्त और दूसरे का प्रारम्भ, चौकी, निकास, सुई का छेद मगर, घरियार, हाँगर।
नाकिन दे (स्त्री०) वह स्त्री जो नाक से बोले।
नाग तद्० (पु०) सर्प, साँप, अहि, पन्नग, हाथी, दन्ती सूक्ष्म, वायु भेद —उरग (पु०) धातु विशेष, सीसा।—कन्या (स्त्री०) नागों की कन्या, पातालवासी देवताओं की कन्या।—केशर (पु०) पुष्प विशेष, एक प्रकार के फूलों का वृक्ष।—गर्भ (पु०) सिन्दूर।—चाम्पेय (पु०) नागकेशर वृक्ष।—ज (पु०) सिन्दूर, रांग।—दन्त (पु०) गजदन्त हाथी का दाँत, घर की दिवालों में गड़े डण्डे, खूँटी।—दन्तक (पु०) घर की भीत में लगे डण्डे, खूँटी, आला, ताख।—दन्ती (स्त्री०) श्रीहस्तिनी, विशल्या, इन्द्रवारुणी।—दमनी (स्त्री०) छोटा पौधा विशेष।—पञ्चमी (स्त्री०) श्रावण शुक्ल की पञ्चमी जिस दिन नाग की पूजा होती है।—पाश (पु०) अस्त्र विशेष, सर्प मुँह, एक फँदा जिससे युद्ध के समय शत्रु को बाँध लेते थे। फाँस, फँदा, फाँसी।—फाँस (पु०) पाश फाँसी, फँदा।—बेल (पु०) पान, ताम्बूल।—भाषा (स्त्री०) प्राकृतभाषा, वह भाषा जो पातालवासी बोलते हैं।—माता (स्त्री०) कश्यप ऋषि की स्त्री, कद्रू।—रिपु (पु०) नकुल, न्योला, मोर, मयूर, गरुड़, हाथी का वैरी, सिंह।—लोक (पु०) पाताल, नागों का वासस्थान।

नागदौन दे० (पु०) पौधा विशेष, मदमा, सुगन्ध-युक्त पौधा।

नागन, नागनी दे० (स्त्री०) सर्पिणी, साँपिन, नाग की मादा।

नागर तद्० (पु०) नगरवासी, चतुर, दक्ष, निपुण, सुजान, ब्राह्मण विशेष, इस जाति के ब्राह्मण गुजरात में विशेषता से पाये जाते हैं।

नागरङ्ग तद्० (पु०) नारङ्गी, कौंला नीबू।

नागरमुस्ता तद्० (स्त्री०) मोथा विशेष, घास विशेष।

नागरमोथा तद्० (पु०) सुगन्धित तृण विशेष का मूल, नागरमुस्ता।

नागरि तद्० (स्त्री०)
नागरिन तद्० (स्त्री०) } चतुर स्त्री, नगर की स्त्री।

नागरी तद्० (स्त्री०) लिपि विशेष, एक प्रकार के अक्षर, संस्कृत अक्षर, शिक्षितों की लिपि, सभ्यों की लिपि। [है, आदृत।

नागल तद्० (पु०) हल, जिससे खेत जोता जाता

नागा दे० (पु०) नग्न, दसनामी गुसाइयों की एक शाखा, वैरागियों की एक शाखा।

नागाह्वा तद्० (स्त्री०) नागदौन, मदमा।

नागारि तद्० (पु०) [नाग+अरि] गरुड़, नागशत्रु, वैनतेय, मयूर, मोर, न्योला।

नागार्जुन तद्० (पु०) सहस्रबाहु, कार्त्तवीर्य, इसी महाप्रतापी राजा को परशुराम ने मारा था।

नागिन } तद्० (स्त्री०) नाग की स्त्री, सर्पिणी
नागिनी } साँपिन।

नागोजीभट्ट तद्० (पु०) एक संस्कृत वैयाकरण का नाम, ये काशीनिवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम शिवभट्ट और माता का नाम सती था। ये शृङ्गवेरपुर (सिंगरौर) के राजा रामसिंह के आश्रित थे। इन्होंने बहुत ग्रन्थ रचे हैं। परिभाषेन्दुशेखर, लघुशब्देन्दुशेखर, बृहन्मञ्जूषा, लघुमञ्जूषा आदि व्याकरण के ग्रन्थ प्रायश्चित्तेन्दुशेखर, तीर्थेन्दुशेखर, आदि शेखरांत धर्मशास्त्र के बारह ग्रन्थ तथा बहुत से ग्रन्थों की टीका इनकी बनाई हैं। कहते हैं सोलह वर्ष तक ये कुछ नहीं पढ़ते थे, पीछे किसी के उपदेश से इन्होंने भागीरथी के मन्त्र का जप किया, जिससे इनकी असीम आश्चर्यमता हुई। विद्वान् इनका समय १० वीं सदी स्थिर करते हैं।

नागोद दे० (पु०) छाती पर रखने का कवच, उरत्राण, छाती का भिलम।

नागौर दे० (पु०) मारवाड़ के एक नगर का नाम, यहाँ के नागौरी बैल प्रसिद्ध हैं। [फलाँग जाना।

नाघना दे० (क्रि०) लाँघना, डाँकना, डाक जाना,

नाच दे० (पु०) नृत्य, नाट्य, नाचना।—नचाना (वा०) सताना, पीड़ित करना, दिक करना, तंग करना, विवश करना।

नाचना दे० (क्रि०) नृत्य करना, नाच करना, कूदना।

नाचहिं दे० (क्रि०) नाचता है, नृत्य करता है, कूदता है।

नाचिकेता तद्० (पु०) प्रसिद्ध तपस्वी उद्दालक के पुत्र, एक समय महर्षि उद्दालक पूजन सामग्री नदी के तीर पर छोड़कर चले आये। घर आकर उन्होंने अपने पुत्र नाचिकेता को उन सामग्रियों को लेने के लिये भेजा, परन्तु उन्हें वे वहाँ न मिलीं, अतएव नाचिकेता रीते हाथ चले आये, उनको देख पिता अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने कहा तुम यमराज का दर्शन करो। पिता के ऐसा कहते ही नाचिकेता गिर कर मर गये। उद्दालक की दशा अद्भुत हो गई, वह भी मूर्छित हो गये। शव वहीं पड़ा रहा, दूसरे दिन देखा गया उस शव में कुछ चेष्टा होने लगी। उद्दालक ने अपने पुत्र को यह कह कर प्रणाम किया कि तुमने अपने प्रभाव से देवलोक का दर्शन किया है। तुम्हारा शरीर मनुष्य का शरीर नहीं है। पुनः नाचिकेता ने अपनी यात्रा का हाल वर्णन किया। कठोपनिषद् में नाचिकेता का वृत्तान्त दूसरे प्रकार से कहा गया है। वहाँ उनको राजपुत्र लिखा है।

नाज दे० (पु०) अनाज, अन्न, धान्य, नखरा, घमण्ड, मान।

नाज़ (पु०) नख़रा, हावभाव।

नाजायज़ (पु०) अनुचित, अनियमित।

नाज़िम (पु०) प्रबन्धकर्त्ता, प्रधान प्रबन्धकर्त्ता।

नाट दे० (पु०) वासा, वासस्थान, रहने की भूमि, कर्णाट देश विशेष, नृत्य, नाच।

नाटक तद्० (पु०) गद्यपद्यमय काव्य विशेष, रङ्गशाला में खेलने के उपयुक्त काव्य, दृश्यकाव्य का एक भेद। (गु०) नर्तक, नचवैया, नाचने वाला। —शाला (स्त्री०) नाटक गृह, घर जहाँ नाटक खेला जाता है। [मसखरा।

नाटकी (गु०) नाटक वाला, स्वाँग करने वाला,

नाटकीय (गु०) नाटक सम्बन्धी, नाटक की कथा।

नाटन दे० (पु०) नर्तन, नाच, नाच करना।

नाटा दे० (वि०) ह्रस्व, खर्व, ह्रस्वाकृति, ठिंगना, बौना, छोटेकद का।

नाटिका तद्० (स्त्री०) नाड़ी, दृश्यकाव्य विशेष, स्वाँग, उपरूपक का एक भेद।

नाटी दे० (स्त्री०) छोटी, ठिंगनी, छोटे कद की, ह्रस्वाकृति की स्त्री।

नाटेय तद्० (पु०) नटी का पुत्र, वेश्या पुत्र।

नाट्य तद्० (पु०) नृत्य, गीत और वाद्य, नट समूह, नाट्य आरम्भ करने के नक्षत्र। यथा—अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, शतभिषा, और रेवती। —शाला (स्त्री०) नाट्य मन्दिर, नाच घर, अटारी के द्वार के समीप का घर। [विषयक वाक्य।

नाट्योक्ति तद्० (स्त्री०) [नाट्य+उक्ति] नाटक

नाठ दे० (पु०) अभाव, नाश, शून्य, रहित, वर्जित।

नाठा (पु०) अकेला, अनाथ असहाय।

नाठी दे० (क्रि०) नष्ट की, नष्ट हुई, भागी, टलगई, हट गई, मुकर गई, पलट गई, गई।

नाड़ दे० (स्त्री०) ग्रीवा, घाँटी, नरेटी, गला, गर्दन।

नाड़ा (पु०) इजारबन्द। [घड़ी।

नाडिका तद्० (स्त्री०) एक घड़ी, साठ पल, घटिका

नाडिमण्डल तद्० (पु०) स्वर्गीय रेखा विशेष, निरक्षदेश।

नाड़ी तद्० (स्त्री०) धमनी, शिरा, उदरस्थशिरा, हाथ की मुख्य नस, नली।—तिक्त (पु०) औषध विशेष, चिरायता।—धर्म (पु०) सुनार, स्वर्णकार।—मण्डल (पु०) नाड़ियों का समूह, नाड़ी समुदाय।—ज्ञान (पु०) रोग परीक्षा, निदान ज्ञान।—व्रण (पु०) नसों का घाव, नासूर।

नात दे० (पु०) सम्बन्धी, बिरादरी, नातेदार, हितू।

नातर या नातरु तद्० (अ०) नहीं तो, नान्यथा, नान्यतर।

नाता दे० (पु०) सम्बन्ध, नात।

नाताकृत (गु०) बलहीन, दुर्बल।

नातिन दे० (स्त्री०) पौत्री, पुत्र की बेटी।

नाती दे० (पु०) पौत्र, पुत्र का पुत्र, पुत्र का बेटा, पोता। यथा—

"उत्तम कुल पुलस्त्य के नाती।
शिव विरंचि पूजेहु बहुभाँती॥" —रामायण।

नाते (क्रि० वि०) मिस से, सम्बन्ध से, लिए, निमित्त।—दार (पु०) सम्बन्धी।

नाथ तद्० (पु०) स्वामी, प्रभु, नियन्ता, कर्त्ता, प्रतिपालक, नाक की रस्सी, जो दुष्ट बैल आदि को पहनाते हैं। एक सम्प्रदाय विशेष, गोरखनाथ का चलाया कनफटा सम्प्रदाय का दूसरा नाम नाथ सम्प्रदाय है। इनके अनुयायियों के नाम के अन्त में नाथ लगा दिया जाता है। यथा—गोरखनाथ, गम्भीरनाथ, सुन्दरनाथ आदि।

नाथवान् तद्० (पु०) पराधीन, प्रभुविशिष्ट, मालिक के साथ, सस्वामिक।

नाथना दे० (क्रि०) वशीभूत करना, नाक छेदकर नथ पहनाना, नथ पहनाने के लिये नाक छेदना।

नाँद दे० (स्त्री०) नदोला, मिट्टी का बना बड़ा चौड़ा बरतन जिसमें गाय बैल सानी खाते हैं।

नाद तद्० (पु०) [नद्+घञ्] ध्वनि, शब्द, गरजन, अर्द्धचन्द्राकार वर्ण, जिसका उच्चारण अनुस्वार के समान होता है, मन्त्ररूप विशेष।

नादन तद्० (पु०) [नद्+णिच्+ल्युट्] शब्द करना, गरजना, ध्वनि करना, नाद करना।

नादना दे० (क्रि०) आरम्भ करना।

नादबिन्दु तद्० (पु०) बिन्दु सहित, अर्द्धचन्द्र, योगियों के ध्यान करने का मन्त्र। [जने का मार्ग

नादाहा दे० (पु०) पनाला, मोरी, नाली, जल निकनादित तद्० (वि०) ध्वनित, ध्वनित, मचाया शब्द।

नाधना दे० (क्रि०) युक्त करना, जोतना, बैल को हल या गाड़ी खींचने के लिये जुए में बाँधना।

नाधा दे० (पु०) पानी निकलने का मार्ग, पाट या चमड़े की बनी रस्सी जिससे बैल कुए में जोते जाते हैं।

नानक दे० (पु०) सिक्खों के गुरु। १४६९ ई० में ईरावती नदी के तीरस्थ पञ्जाब के तलवन्दी नामक गाँव में नानक का जन्म हुआ था। नानक के पिता का नाम कालू था। सात वर्ष की अवस्था में कालू ने अपने पुत्र को विद्यालय में पढ़ने के लिये भेजा। नौ वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र को यज्ञोपवीत देने के लिए कालू प्रबन्ध करने लगे। यह देख नानक ने अपनी असम्मति प्रकाशित करके कहा इस लौकिक यज्ञोपवीत से क्या लाभ, परमात्मा का नाम पर्याप्त है। कालू सामान्य स्थिति के गृहस्थ थे। उन्होंने एक दिन कुछ पैसे नानक को बाजार से सामान ले आने के लिए दिये। परन्तु नानक ग़रीबों को पैसे बाँट कर घर लौट आये। उनके पिता ताड़ना देने लगे। उस समय नानक ने कहा कि मनुष्यों के साथ बेचने ख़रीदने में जो लाभ होता है, उससे अधिक लाभ ईश्वर के साथ बेचने ख़रीदने में होता है। उस समय नानक की अवस्था १२ वर्ष की थी। एक दिन नानक सोते थे, उनके पैर किसी देवमन्दिर की ओर थे। इससे लोगों को आश्चर्य हुआ किसी के पूँछने पर नानक ने कहा जिधर मैं पैर फैलाऊँ उधर ही तो ईश्वर के मन्दिर हैं। इस प्रकार भावी सिख गुरु का हृदय धर्मभाव से पूर्ण था। नानक एकेश्वरवादी थे। इन्होंने बड़े परिश्रम से अपने पन्थ को प्रचलित किया था। इनके बनाये ग्रन्थ का नाम "ग्रन्थसाहब" है। इस पन्थ के साधु उदासी कहे जाते हैं। नानक के हिन्दू और मुसलमान दोनों शिष्य थे। लोग कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान इन दोनों जातियों में प्रेम स्थापित करना ही नानक का उद्देश्य था। ७० वर्ष की अवस्था में ये शिष्यों के गुरु हुए। कहते हैं इनके मृत शरीर को मुसलमान चेले कबर देना चाहते थे और हिन्दू जलाना। इसलिये दोनों में खूब झगड़ा हुआ, अन्त में देखा गया कि नानक का शरीर वहाँ नहीं था, इस कारण कफ़न के दो टुकड़े करके चेलों ने अपना अपना मनोरथ पूर्ण किया।—पन्थ दे० (पु०) सिक्ख सम्प्रदाय, गुरु नानक प्रचारित मत, एकेश्वरवाद।—पन्थी दे० (पु०) गुरु नानक के मत के अनुयायी, शिष्य। —शाही दे० (पु०) नानक पन्थी, अर्थात् सिक्ख।

नानकार (पु०) कर रहित भूमि, माफ़ी ज़मीन।—नानखताई (स्त्री०) टिकिया की तरह एक प्रकार की सोंधी और ख़स्ता मिठाई।

नानबाई (पु०) रोटी बना कर बेचने वाला। [नाना।

नानसरा (पु०) ननिया ससुर, पति या स्त्री का

नाना तद्० (अ०) अनेकार्थक, उभयार्थ, विविध। दे० (पु०) मातामह, माता के पिता।—कार (पु०) [नाना+आकार] अनेक रूप के, विविध भाँति के, अनेक आकार के, बहुत चाल के। —कारण (पु०) भाँति भाँति के कारण, अनेक प्रकार के हेतु।—जातीय (पु०) अनेक प्रकार, अनेक तरह।—त्मा (पु०) [नाना+आत्मा] आत्म भेद, पृथक् पृथक् आत्मा।—ध्वनि (पु०) अनेक प्रकार के शब्द, विविध ध्वनि।—प्रकार (पु०) बहुत भाँति, अनेक रीति।—भाँति (पु०) भाँति भाँति, तरह तरह, रंग रंग।—मत (पु०) भिन्न भिन्न मत, बहुविधि सिद्धान्त।—रूप (पु०) अनेक प्रकार।—र्थ (पु०) [नाना+अर्थ] अनेक अर्थ, बहुत अर्थ।—विधि (पु०) अनेक प्रकार, अनेक उपाय।—शास्त्रज्ञ (पु०) विविध विद्या विशारद, षट्शास्त्री।

नानी दे० (स्त्री०) मातामही, माता की माता।

नानुकर (पु०) सन्देह, अस्वीकार, नहीं।

नान्द दे० (पु०) मट्टी का बड़ा पात्र।

नान्दिया दे० (पु०) शिववाहन, वृषभ।

नान्दीमुख तद्० (पु०) श्राद्ध विशेष, जो पुत्र जन्म विवाह आदि उत्सव कृत्यों में किया जाता है आभ्युदयिक श्राद्ध। यथा—

"तब नान्दीमुख श्राद्ध करि जातकर्म सब कीन।"

—रामायण।

नान्ह (पु०) नन्हा, छोटा।

नान्हरिया (पु०) छोटा बच्चा, बालक।

नन्हा (गु०) नन्हा, छोटा।
नाप दे० (पु०) माप, परिमाण, तौल, वज़न, ओख।
नापना दे० (क्रि०) मापना, परिमाण करना, तौलना-जोखना।
नापित तद्० (पु०) नाई, चौरकार, बाल बनाने वाला, नाऊ।
नाभ तद्० (पु०) } पेट का मध्य स्थान, नाभि,
नाभि तद्० (स्त्री०) } नाफ़, एक राजा का नाम चक्र का मध्य, ढोंदी, नाभ।—जन्मा (पु०) ब्रह्मा प्रजापति, विधाता।—वर्ष (पु०) भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।
नाम तद्० (पु०) नाव, संज्ञा, अभिधान, यश, ख्याति, प्रसिद्धि।—क(पु०) नामवाला। इसका प्रयोग नाम वाले शब्दों के अन्त में होता है।—करण या कर्म (पु०) संस्कारविशेष, नाम रखना, जन्म के दसवें दिन यह संस्कार किया जाता है।—करना(वा०) प्रसिद्ध करना, यश फैलाना, विख्यात होना।—कीर्तन (पु०) नौ प्रकार की भक्ति का एक भेद।—डुबोना (वा०) कलङ्कित होना, बदनाम होना, दुर्नाम होना।—देना (वा०) नाम रखना।—देव (पु०) एक भगवद् भक्त का नाम जिसकी विस्तृत कथा भक्तमाल में है।—धरना (वा०) नाम रखना, नाम ठहराना, दोषी ठहराना, अपराधी बतलाना।—धराई (स्त्री०) बदनामी, बेइज़्ज़ती, अप्रतिष्ठा।—धेय (पु०) संज्ञा, नाम।—निकालना (वा०) नामी होना, यशस्वी होना, प्रसिद्ध होना, नेकनाम होना।—निशान (पु०) नाम पता, नाम धाम, पता ठिकाना।—लेकर माँग खाना (वा०) दूसरे की प्रतिष्ठा से आप प्रतिष्ठित बनाना, किसी प्रतिष्ठित से अपना सम्बन्ध बता कर धन कमाना।—लेना (वा०) स्तुति करना, मन्त्र का जप करना, स्मरण करना, स्मरण करते रहना।—शेष (पु०) मृत, नष्ट, जिसका केवल नाम रह गया हो।—होना (वा०) यश होना, कीर्ति बढ़ना, प्रतिष्ठा बढ़ाना, प्रसिद्ध होना।—शेष तद्० (वा०) नष्ट, मृत्यु प्राप्त, मृत, मरा हुआ।
नामा (गु०) नामक, नामधारी।

नामाङ्कित तद्० (पु०) [नाम+अङ्कित] नाम-चिन्हित, नाम मुद्रित, खुदा हुआ नाम। (वि०) प्रसिद्ध, विख्यात, प्रतिष्ठित, यशस्वी।
नामावली दे० (स्त्री०) [नाम+अवली] विष्णुसहस्र-नाम, देवनामाङ्कित उत्तरीय रामनामी, नामश्रेणी, नामों की सूची, नामों की तालिका।
नामित (गु०) नवाया हुआ, नम्र बना हुआ।
नामी दे० (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी, कीर्तिमान्—होना (वा०) प्रसिद्धि पाना, विख्यात होना।
नामुमकिन (गु०) असम्भव, जो हो न सके।
नायक तद्० (पु०) [नी+अक] प्रदर्शक, नेता, श्रेष्ठ, अग्रगामी, प्रधान, हार के मध्य का मणि, माला का सुमेरु, सेनापति, अध्यक्ष, प्रेमाभिलाषी पुरुष, शृङ्गारसाधक पुरुष। यथा दोहा—
" तरुन सुघर सुन्दर सकल, काम कलानि प्रवीन,
नायक सो मतिराम कहि, कवित गीत रसलीन "
—रसराज।
नायन दे० (स्त्री०) नाइन, नापित की स्त्री।
नायब दे० (पु०) सहायक, प्रतिनिधि।
नायिका तद्० (स्त्री०) प्रेमासक्ता युवती, सामान्य वनिता, सखी, भगवती का एक शक्ति विशेष, शृङ्गार रस का आलम्बन। यथा दोहा—
" उपजत जाहि विलोकि कै, चित्त बिच रसभाव,
ताहि बखानत नायिका, जो प्रवीन कविराय। "
—रसराज।
स्वकीया, परकीया और सामान्या भेद से नायिका तीन प्रकार की हैं। यथा:—
" स्वकीय ब्याही नायिका, परकिया परवाम,
सो सामान्या नायिका, जाको धन से काम "
पुनः आठ अवस्था के भेद से इनमें से प्रत्येक के आठ भेद होते हैं।
नायिकी तद्० (स्त्री०) नायक की स्त्री, तीय, प्रिया, कुट्टनी, दूती, वेश्या, नर्तकी, नाचने वाली।
नार तद्० (पु०) नर समूह, बहुत मनुष्य। दे०(स्त्री०) स्त्री, लुगाई।
नारक तद्० (वि०) नरक सम्बन्धी, नरक में रहने वाले जीव।

नारकी तद्० (वि०) नरकस्थ, नरकगामी, नरकभोगी, पापी, दुराचारी, दुराचार।

नारङ्गक तद्० (पु०) फल, वृक्ष विशेष, कमला नींबू, शरबती, एक प्रकार का खटमिट्टा फल।

नारङ्गी (स्त्री०) फल विशेष।

नारद तद्० (पु०) देवर्षि, मुनि विशेष, नारद के विषय में श्रीमद्भागवत में इस प्रकार लिखा है। नारद वेदज्ञ ब्राह्मणों की एक दासी के पुत्र थे। बाल्यकाल में ये उन ब्राह्मणों की सेवा करते थे। ब्राह्मण भी इनसे बहुत प्रेम करते थे। एक दिन नारद ने ब्राह्मणों का उच्छिष्टान्न खा लिया, इनसे उनका चित्त शुद्ध हो गया और वे हरिगुण गान करने लगे, इस समय उनकी अवस्था पाँच वर्ष की थी। इसके कुछ ही दिनों के बाद साँप के काटने से इनकी माता का वियोग हुआ। अब नारद स्वाधीन हो गये। आश्रम छोड़ कर उत्तर दिशा की ओर ये उपस्थित हुए। घूमते घूमते वह एक जङ्गल में पहुँचे। वे भूँख प्यास से सताये हुए थे ही सो एक तालाब में स्नान जलपान करके वे उसी के तीर पर एक वट के पेड़ की छाया में बैठ गये और भगवान् का स्मरण करने लगे। भगवान् ने हृदय में उनको दर्शन दिये,परन्तु नारद भगवान् का दर्शन बहुत समय तक नहीं कर सके। इससे नारद को बड़ा कष्ट हुआ। भगवान् ने नारद को आकाशवाणी द्वारा समझाया,। नारद, इस जन्म में तुम हमारा सतत दर्शन नहीं कर सकते, हमने तुम्हारी अनुरागवृद्धि के लिये ही तुमको दर्शन दिया है। तुम साधु सेवा करो, उसी से तुम हमारे पास आ सकते हो। इसके अनन्तर नारद इस शरीर को छोड़ परमधाम पहुँचे। पुन युगसृष्टि के समय नारद, मरीचि, भृगु आदि ब्रह्मा के मानस पुत्र हुए। ब्रह्मवैवर्तपुराण में नारद को ब्रह्मा का पुत्र बतलाया है।—ी (पु०) एक प्रकार का गान, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।—ीय (पु०) नारद सम्बन्धी (पु०) अठारह पुराणों में से एक।

नारबिवार दे० (पु०) बिल्ली, खेढ़ी।

नारा दे० (पु०) नाला, लाल धागा, मौली, इजारबन्द, पाजामा को कमर में अटका कर रखने वाला, बटा और गुँथा डोरा, बड़े ज़ोर से रोने का शब्द, वर्षा का जल बहने का मार्ग।

नाराच तद्० (पु०) लौहमय बाण, शिलीमुख, तीर।

नाराज़ दे० (पु०) असन्तुष्ट, अप्रसन्न।

नारायण तद्० (पु०) विष्णु, (नर देखो) संस्कृत का एक ज्योतिषी, इन्होंने मुहूर्त्तमार्त्तण्ड नामक ज्योतिष का एक ग्रन्थ संस्कृत में लिखा है और मार्त्तण्ड वल्लभा नामक उसकी टीका भी आप ही ने लिखी है। पण्डित सुधाकर द्विवेदी के मत से इन ग्रन्थों का निर्माणकाल सन् १६०१ १६७२ ई० है। नारायण ने भी अपने ग्रन्थ में यही अपना समय लिखा है, मुहूर्त मार्त्तण्ड के अन्त में इन्होंने अपना कुछ परिचय दिया है, जो यह है। इनके पिता का नाम अनन्त था। देवगिरि से कुछ दूर पर टापर नामक गाँव में वे रहते थे। इनका समय १६ वीं शताब्दी मानना ही उचित है।—तैल (पु०) औषध विशेष, पका हुआ तेल विशेष।—बलि (स्त्री०) मृत पतितों के उद्धार के लिये प्रायश्चित विशेष।

नारायणी तद्० (स्त्री०) लक्ष्मी, नारायण की स्त्री, दुर्गा, गङ्गा, मुद्गल मुनि की पत्नी, शतावरी, शतावर, नारायण सम्बन्धिनी ज्योति विशेष।

नारि दे० (स्त्री०) नारी, अबला, नाली, वह यन्त्र -जिसमें कपड़े बुनने के समय सूत रखा जाता है। बाँस का टुकड़ा, जिसमें मट्ठा आदि भर कर बछड़ों या बैलों को दिया जाता है।

नारिकेर, नारिकेल तद्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध फल विशेष, नारियल, श्रीफल।

नारियल दे० (पु०) नारिकेल फल।

नारी तद्० (स्त्री०) नाली, पुरुष धर्मयुक्ता स्त्री, स्त्री, योषित, अबला, महिला, ललना, कुटुम्बिनी।—दूषण (पु०) स्त्रियों के मद्यपान कुसङ्ग आदि छ दोष, यथा पान (नशा आदि का), दुर्जन संसर्ग, पति से विरह, घूमना, (तीर्थयात्रा आदि), पर-गृह में निद्रा और वास ये छ नारियों के दूषण हैं।—धर्म (पु०) स्त्रियों का धर्म, पति सेवा, पुत्र पालन आदि। पतिव्रता धर्म, मासिक होना, रजोदर्शन।

नार दे० (पु०) देखो नहारुआ।

नाल तत्० (पु०) कमल आदि की डंटी, हरिताल, नारु। (दे०) फोंका, नल, नली, नल के आकार की बनी हुई वस्तु, घोड़ा बैल आदि के खुर में जड़ी जाने वाली वस्तु, जो लोहे की बनी हुई होती है। [जिसे मनुष्य ढोते हैं।

नालकी दे० (स्त्री०) शिबिका, पालकी, यान विशेष।

नाला दे० (पु०) जल निकलने का मार्ग,मोरी,पनाला।

नालायक दे० (वि०) अयोग्य, दुष्ट, पाजी, भोंदू।

नालिक तत्० (पु०) आग्नेयास्त्र, बन्दूक, भुसुण्डी।

नालिसिंदुक दे० (पु०) समालू।

नाली दे० (स्त्री०) छोटा नाला मुहारी, मुहरी।

नाव तद्० (स्त्री०) नौ, नौका, तरणी, डोंगी, बोट।

नावना दे० (क्रि०) नमन, नवना झुकना, प्रणत होना।

नावरि दे० (स्त्री०) विहार जलक्रीड़ा, नाव पर जल-क्रीड़ा, नाव घुमाना, नाव फेरना।

नाविक तत्० (पु०) कर्णधार, माँझी, नाव खेने वाला, केवट, कैवर्त्त।

नाश तत्० (पु०) [नश्+घञ्] क्षय, ध्वंस लय, क्षति, हानि, अपचय, अदर्शन।—वान् (गु०) विनश्वर, नश्वर, विनाशी।

नाशक तत्० (पु०) नाशकर्त्ता, ध्वंसक, क्षयकारी, क्षतिकर, हानिकर्त्ता, उजाड़ू, क्षयकारक।

नाशन तत्० (पु०) [नश्+णिच्+अनट्] ध्वंस करण, हनन, मारण।

नाशपाति या नाशपाती दे० (पु०) फल विशेष, बर्सात में उत्पन्न होने वाला फल।

नाशित तत्० (पु०) [नश्+णिच्+क्त] ध्वंसित, हत, उच्छेदित।

नाशितव्य तत्० (गु०) [नश्+णिच्+तव्य] नाश करने योग्य, नष्ट करने के उपयुक्त।

नाशी तत्० (वि०) नाशक, नाशकर्त्ता, उजाड़, उखाड़।

नास दे० (स्त्री०) नस्य, सुंघनी, हुलास तमाकू का चूर्ण —दानी (स्त्री०) नास रखने की डिबिया।

नासना दे० (क्रि०) भागना, पड़ाना, पीठ देना।

नासत्य तत्० (पु०) अश्विनीकुमार, देववैद्य।

नासमझ दे० (गु०) बुद्धिहीन, अबोध, अज्ञान, मूढ़, मूर्ख।—ी (स्त्री०) मूर्खता, अज्ञानता।

नासा तत्० (स्त्री०) [नास्+अ] नासिका, नाक, द्वार पर की लकड़ी, रोग विशेष, नाकड़ा, नासिका-द्वार पर निकला हुआ माँस।—पाक (पु०) नाक का एक रोग विशेष।—पुट (पु०) नाक, नाक का वह चमड़ा जो छेदों के किनारे परदे का काम देता है।—भेदन (पु०) नकछिक्नी घास।—वामावर्त्त (पु०) वाम नासिका में पहनने के गहने, नथ, बेसर आदि।—मल (पु०) नाक की मैल।—योनि (पु०) नपुंसक विशेष।

नासिक (पु०) बम्बई के पास का तीर्थ विशेष, जहाँ गोदावरी के तट पर पञ्चवटी है।

नासिका तत्० (पु०) घ्राणेन्द्रिय, नाक, नासा। —मल (पु०) नाक का मैल।

नासीर तत्० (पु०) अग्रसर, अग्रगामी, सेनापति के आगे चलने वाली सेना। (स्त्री०) नस।

नासूर दे० (पु०) नसूर, नस का घाव, पुराना घाव।

नास्ति तत्० (कि०) नहीं है, अविद्यमानता अभाव।

नास्तिक तत्० (पु०) [नास्ति+इक] अनीश्वरवादी ईश्वर नास्तित्ववादी, ईश्वर की सत्ता न मानने वाला, जो वेद का प्रमाण नहीं मानते हैं, वेद निन्दक, पाखण्डी, चार्वाक, लौकायतिक।—ता (स्त्री०) नास्तिक्य कर्मफल आदि कुछ नहीं, इस प्रकार का ज्ञान, मिथ्या दृष्टि।—वाद (पु०) परलोक न मानने वाला सिद्धान्त।

नास्तित्व तत्० (पु०) अभाव, असम्भव, शून्यता।

नास्य तत्० (वि०) नाक का। (पु०) नासिका में उत्पन्न होने वाला, बैल की नाक में लगाई जाने वाली रस्सी।

नाह दे० (पु०) स्वामी, मालिक, नाथ, पति।

नाहक दे० (पु०) व्यर्थ, बिना प्रयोजन, अयथार्थ, अनुचित।

नाहर दे० (पु०) व्याघ्र, बाघ, शेर, शार्दूल।

नाहरू दे० (पु०) शेर, बाघ, चाम का टुकड़ा, मोट खींचने का रस्सा।

नाहल दे० (पु०) म्लेच्छों की एक जाति विशेष।

नाहि दे० (अ०) नहीं, निषेध, अस्वीकारार्थक अव्यय।

नाहीं दे० (अ०) नहीं, न, मत, निषेध बोधक अव्यय।

नाहुषि तद्० (पु०) [नहुष+इञ्] राजा नहुष का पुत्र, राजा ययाति।

नि' तद्० (अ०) उपसर्ग विशेष, निषेधार्थक, निश्चयार्थक निवेश, भृशार्थक, अतिशयार्थक, संशय, आक्षेप, कौशल, उपरम, सामीप्य, आश्रय, दान, मोक्ष, अन्तर्भाव, बन्धन, विन्यास। यह उपसर्ग जिन शब्दों के पहले आता है उनके अर्थ को विपरीत कर देता है। यथा—निरुद्योगी, उद्योग शून्य।—कण्टक (वि०) सुखी, आनन्दी, बाधा रहित, निःशत्रु।—पाप (वि०) अदोष, पापरहित, निरपराध।—शङ्क (वि०) निडर, अभय, भयशून्य, साहसी।—प्रभ (वि०) प्रभाहीन, तेजहीन, दीप्ति रहित।—शब्द (वि०) नीरव, शब्दहीन, मौनी, वाक्य रहित, अवाक्।—शलाक (वि०) निर्जन, एकान्त, रहस्य गोपन, गुप्तस्थान।—शेष (वि०) समाप्त, सम्पूर्ण, शेष रहित।—श्रेणी (स्त्री०) सीढ़ी, नसेनी, अधिरोहिणी, काष्ठमय सोपान। काठ की सीढ़ी।—श्रेयः (पु०) कुशल, शुभ, अनुभव, भक्ति, मोक्ष, मुक्ति, विद्या।—श्वासित (वि०) दीर्घनिश्वासी—श्वास (पु०) प्राणवायु, प्रश्वास।—सङ्ग (वि०) सङ्ग रहित, सङ्गच्युत, वासनारहित।—संशय (वि०) नि:सन्देह, निश्चय, संशय रहित।—सन्देह (वि०) असंशय, निश्चय, ध्रुव।—सम्पर्क (पु०) असम्बद्ध, उदासीन।—सरण (पु०) विदा, उपाय, निकलना, निकलने का मार्ग, मृत्यु, निर्वाण, बहिर्गमन, निर्गमन, मरण, सरकना, झरना, चूना।—सहाय (वि०) सहायहीन, असहाय, एकाकी, अकेला, निरालम्ब, दुःखी, अनाथ।—सार (वि०) असार, सारहीन, तेजरहित, छूँछा, रिक्त, खाली।—सारण (पु०) बहिष्करण, निर्गतकरण, निकालना।—सृत (वि०) क्षरित, झरा हुआ, गिरा हुआ, निकला हुआ निर्गत।—स्नेह (पु०) प्रेमशून्य, रूखा, निर्दय।—स्पृह (वि०) स्पृहाहीन, इच्छा रहित, अनिच्छुक।—स्व (वि०) दरिद्र, निर्धन।

निअर (अव्य०) पास, समीप।—ना (क्रि०) समीप आना, पास पहुँचना।

निकट तद्० (वि०) समीप, पास, अदूर, आसन्न, सन्निकृष्ट, नगीच, उपकण्ठ, उपान्त, सन्निहित।—वर्ती (पु०) निकटस्थ, समीपस्थ।—स्थ (पु०) पास रहने वाला।

निकन्द तद्० (वि०) निःस्कन्ध, स्कन्धरहित, उजड़ा।

निकन्दन तद्० (पु०) निर्मूलन, उखाड़ना, उजाड़न।

निकपट तद्० (वि०) निष्कपट, शुद्ध मन का।

निकम्मा दे० (वि०) निठल्ला, बिना काम का, निर्गुणी, आलसी, शिथिल।

निकर तद्० (पु०) [नि+कृ+अल्] समूह, राशि, सार, न्याय, देयधन, निधि, निश्चय, कर रहित।

निकरना दे० (क्रि०) निकलना, निर्गत होना, बहिर्गत होना, निकालना।

निकरम्ब तद्० (पु०) समूह, यूथ, दल, गिरोह।

निकल दे० (स्त्री०) निकास, निर्वाह।—चलना (वा०) बाहर हो जाना, भाग जाना, चला जाना, अधिक होना, बढ़ के बोलना।—पड़ना (क्रि०) बाहर आना, तैयार होना, आपे से बाहर होना।

निकलना दे० (क्रि०) निकसना, निःसृत होना, आगे आना, भागना, भाग उठना।

निकसना दे० (क्रि०) निकलना।

निकषा तद्० (स्त्री०) राक्षस माता। (अ०) निकट, समीप, अन्तिम।

निकाई दे० (स्त्री०) निराने की मजूरी, निराई।

निकाना दे० (क्रि०) बोये हुए खेत से घास निकालना, निराना, सोहनी करना।

निकाम तद्० (वि०) निष्काम, जिसको किसी बात की इच्छा शेष न हो, इच्छारहित, निस्पृह कामनारहित।

निकाय तद्० (पु०) [नि+चि+घञ्] निलय, निवास, लक्ष्य, समूह, समूहों की एकता, झुंड, ढेर, राशि, परमात्मा।

निकार तद्० (पु०) [नि+कृ+घञ्] अपकार, धिक्कार, निन्दा, अनादर।

निकारना दे० (क्रि०) निकालना, बाहर करना, घुसने न देना, निषेध करना, अस्वीकार करना।

निकाल दे० (पु०) निसार, निकास, बाहर आना, बचने की युक्ति, उपाय, तोड़ जोड़।—डालना

(वा०) बाहर कर देना, स्थानान्तरित करना पृथक् करना।—देना (वा०) उघारना, बाहर करना, अलगाना।—जाना (वा०) बचा लेना, ढूँढ़ निकालना।—लेन (वा०) उखाड़ देना, छाँट लेना, काढ़ लेना। [करना, काढ़ना।
निकालना दे० (वा०) उखाड़ना, उतारना, प्रकट
निकास दे० (पु०) निकाल, निकालने का मार्ग, द्वार, फाटक, गाँव का परिसर।
निकासना दे० (क्रि०) निकालना, बाहर कर देना।
निकासी दे० (स्त्री०) कर, गाँव से निकलने का कर निकालने का आज्ञापत्र, परवाना। [बहिष्कृत
निकासू दे० (वि०) निकाला हुआ, निष्कासित,
निकास्ता दे० (पु०) थूनी, टेक, स्तम्भ, खम्भा, थाम।
निकुच दे० (पु०) बड़हल।
निकुञ्ज तद्० (पु०) लता गुल्मयुक्त स्थान, निबिड़-स्थान, लताच्छादित स्थान, क्रीड़ा स्थान, कुञ्ज।—बिहारी (पु०) श्रीकृष्ण।
निकुटी तद्० (स्त्री०) छोटी इलायची।
निकुम्भ तद्० (पु०) दैत्य विशेष, यह दैत्य श्रीकृष्ण के हाथों से मारा गया था (२) कुम्भकर्ण का पुत्र, यह रावण का मन्त्री था। लङ्का के युद्ध में यह मारा गया था इसके भाई का नाम कुम्भ था।
निकुम्भिला तद्० (स्त्री०) राक्षसों का देवघर, मेघनाद का यज्ञस्थान, लङ्का की एक देवी का नाम।
निकृति तद्० (स्त्री०) अधर्म, बुरी कृति, बुरा काम, पाप, असाधुता।
निकृष्ट तद्० (पु०) [नि+कृष्+क] ख़राब, बुरा, ओछा, मन्द, खोटा, अधम, नीच, निन्दित, अप्रशस्त, तुच्छ।—ता।—(स्त्री०) मन्दता, कदराई, अधमता, नीचता, निचाई।
निकेतन तद्० (पु०) गृह, आलय, आगार।
निक्की दे० (स्त्री०) लोहतुला, लोहे के तौलने की छोटी तराज़ू, काँटा। [दिखाना, अपमान करना।
निकोसना दे० (वि०) खीसना, खिसियाना, दाँत
निक्वाण तद्० (पु०) वीणाशब्द, सितार आदि का शब्द, जो तार से ध्वनि होती है।
निक्षिप्त तद्० (वि०) [नि+क्षिप+क] त्यक्त, अर्पित, न्यस्त, स्थापित, बन्धक रखा हुआ।
निक्षेप तद्० (पु०) [नि+क्षि+घञ्] क्षेपण फेंकना, त्याग, समर्पित वस्तु, रखा हुआ धन उपनिधि, न्यास, समर्पण, स्थापन, थाती, गिरो
निक्षेपक तद्० [नि+क्षिप्+अक्] स्थापनकर्त्ता समर्थक, न्यास रखने वाला, थाती धरने वाला गिरों रखने वाला, त्यागकर्त्ता।
निक्षेपण तद्० (पु०) [नि+क्षिप्+अनट्] स्थापन समर्पण, त्याग करण।
निखट्टू दे० (वि०) आलसी, निकम्मा, निठुर, निर्दय कठोर, उड़ाऊ, लुटाऊ।
निखण्ड दे० (वि०) मध्य, बीच, बीच का भाग मौक़, मझारी, बीचोबीच।
निखनन तद्० (पु०) [नि+खन्+अनट्] खोदन खनना, कोड़ना, गोड़ना।
निखरना दे० (क्रि०) श्वेत होना, साफ़ होना, चमकना, उजला होना, नंगा होना, स्थिर होना थिराना, छिलका उतारना।
निखराना दे० (क्रि०) थिराना, उजला होना।
निखरी दे० (स्त्री०) जो खरी न हो, वह रसोई जिसे चौके के बाहिर खा सके, पूरी आदि।
निखर्व तद्० (पु०) संख्या विशेष, दशखर्व संख्या दश हज़ार कोटि, १०००००००००००० । (वि०) वामन, ठुमका।
निखवख (गु०) सम्पूर्ण, समस्त।
निखात तद्० (पु०) [नि+खन्+क] गर्त्त, परिखा, गढ़ा, खाई, खत्ता।
निखार (पु०) शुद्धता, निर्मलता। [कपड़े धोना।
निखारना दे० (क्रि०) उजाला करना, साफ़ करना,
निखिल तद्० (वि०) समग्र, समस्त, समुदाय, सकल, अखिल, सब, सर्व।
निखेध (पु०) निषेध, रोक, रुकावट।
निखोट दे० (वि०) सीधा, सरल, शुद्ध, खोट से रहित, अवगुण शून्य।
निखोड़ना दे० (क्रि०) छीलना, उधड़ना, छिलका निकालना। [पैकड़ी, काठ।
निगड़ तद्० (पु०) लौहनिर्मित शृङ्खला, बेड़ी,
निगड़ित तद्० (वि० [निगड्+इत] बँधा हुआ, बद्ध, बेड़ी पहनाया हुआ।

निगद तद्० (पु०) [नि+गद्+अल्] कथन, भाषण, कहना, औषधी विशेष।

निगदित तद्० (पु०) [नि+गद्+क्त] कथित, भाषित, उल्लेख किया हुआ, उक्त, वर्णित, कहा हुआ।

निगत दे० (वि०) नङ्गा, उघरा, नग्न, दिगम्बर।

निगन्दना दे० (क्रि०) तागना, टाँगना, सीना, पिरोना।

निगन्दाई दे० (स्त्री०) सीने का काम, सीना।

निगम तद्० (पु०) [नि+गम्+अच्] शास्त्र विशेष, वेद की शाखा, नगर ग्राम आदि, वाणिज्य, पुरी, वेद, बाज़ार की राह, निश्चय मार्ग।—ज्ञ (पु०) निगमशास्त्रवेत्ता, निगमशास्त्रज्ञाता, निगमवित्।—नदी (स्त्री०) भागीरथी, गङ्गानदी।—निवासी (पु०) वेदों में निवास करने वाला, विष्णु, ब्रह्मा।

निगलना दे० (क्रि०) घूँटना, छीलना, गले में उतार जाना, खा जाना, गट कर जाना।

निगाली दे० (स्त्री०) हुक्का पीने की नली, मुँह नाल।

निगुण तद्० (वि०) निर्गुण, गुणशून्य, गुण रहित।

निगूढ़ तद्० (वि०) [नि+गुह्+क्त] दुर्ज्ञेय, अप्रकाश्य, गुप्त, लुका हुआ, अति गुप्त, अति छिपा हुआ, अति कठिन, अस्पष्ट, दुर्गम। [आपदाल।

निगोड़ा दे० (पु०) अकर्मी, दुराचारी, दुष्कर्मी,

निगार दे० (वि०) ठोस, दृढ़, पोढ़, निरेट।

निग्रह तद्० (पु०) [नि+ग्रह्+अच्] ताड़ना, प्रहार, यन्त्रणा, क्लेश, बन्धन, सीमा, चिकित्सा, इन्द्रियादि दमन, शासन, चिढ़, घिन, कुपथ।

निग्रहण तद्० (पु०) [नि+ग्रह्+अनट्] पराजय। आक्रमण, विरोध, कलह, युद्ध, मानखण्डन, हठ, बन्धन, घुड़की, रोष, कोप, क्रोध।

निग्राही तद्० (पु०) [नि+ग्रह्+णिन्] क्लेशदायक निग्रहकर्त्ता, दण्डदायक। [कम होते ही।

निघटत दे० (क्रि०) निघटते ही, न्यून होते ही,

निघटना दे० (क्रि०) घटना, कम होना, न्यून होना।

निघटाना दे० (क्रि०) घटवाना, कम कराना।

निघटा दे० (क्रि०) घटी, घट गई, कमती हुई।

निघण्ट तद्० (पु०) निघण्टु, कोश, अभिधान, नामसंग्रह।

निघण्टु तद्० (पु०) अभिधान, नामकोश।

निघरघटा दे० (पु०) दुलखाना, दृष्टता करना, ढिठाई करना।

निघ्न तद्० (वि०) अधीन, वशीभूत, शिष्ट, आयत्त।

निचय तद्० (पु०) [नि+चि+अच्] संघ, गण, समूह, दल, यूथ।

निचला (गु०) नीचे वाला, निश्चय, अचञ्चल।

निचिंत तद्० (वि०) निश्चिन्त, चिन्ताशून्य, बेफ़िक्र, असोची, अचिन्ता।

निचिंताई दे० (स्त्री०) अनवधानता, असावधानी, प्रमाद।

निचिंत होना दे० (वा०) निपटना, अवकाश पाना, अपना काम पूरा करना।

निचाई दे० (स्त्री०) नीचता, अधमता, तुच्छता, कुटिलता, ओछापन, क्षुद्रता, नाटापन, हलकापन, छोटाई।

निचोड़ दे० (पु०) सार, निष्कर्ष, निष्पत्ति, आशय।

निचोड़ना दे० (क्रि०) दबाना, गारना, चूस लेना।

निचोड़ या निचार (वि०) लुटेरा, लोभी, बाऊचप।

(पु०) रस, सार, सत्व निदान, अन्त्य।

निछावर दे० (स्त्री०) उतारा, दर्पदान, किसी प्रिय के सिर के चारों ओर रुपया या पैसा घुमाकर नाई बारी को देना, नोछावर करना, वारना।

निछिद्र तद्० (क्रि०) छिद्रहीन, रन्ध्रशून्य, सर्वाङ्ग सम्पूर्ण।

निज तद्० (वि०) [नि+जन्+ड] स्वीय, स्वकीय, आत्मीय।—तन्त्र (वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्रता।—मतावलम्बी (वि०) आत्म मतावलम्बी, अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला—स्व (पु०) स्वकीय धन, अपने अधिकार का धन।

निजञ्जाल दे० (पु०) निर्विवाद, कपटशून्य, निरापद, निश्चिन्त।

निझनिझ दे० (स्त्री०) पवित्रता, शुद्धता, योग्यता।

निझाना दे० (क्रि०) निरखना, झाँकना, ठहरना, बुझाना, निर्वापित करना, अग्नि का बुझाना।

निझारना दे० (क्रि०) खसेरना, झटकना, झाड़ना, बुहारी काढ़ना, झारना, साफ़ करना।

निष्कोश दे० (वि०) कोश रहित, कैसा हुआ, सुडौल।

निटिलाक्ष तद्० (पु०) [निटिल+अक्ष] शिव, महादेव, शम्भु।

निठल्ला दे० (पु०) निकम्मा, आलसी, सुस्त, ठलुवा।

निठुर तद्० (वि०) निष्ठुर, कठोर, कठिन हृदय, निर्दय, स्नेहशून्य, बिनप्रीति, संग दिल, कड़ादिल वाला।—ता (स्त्री०) निर्दयता, कठिनता, कड़ाई।

निठुराई दे० (स्त्री०) कठोरता, कठिनता, हृदय की क्रूरता। [ढृष्ट, ढीट।

निडर दे० (वि०) निर्भय, निःशङ्क, भयशून्य, अशङ्क,

निढाला दे० } (वि०) ज्ञानशून्य, जड़, स्थावर,
निडाला दे० } अचल।

नित दे० (अ०) *नित्य, प्रतिदिन, सदा, सर्वदा।*—उठ (अ०) प्रति दिन उठकर, नियमित, सदा निरन्तर।—नय (वि०) नित्यनया, प्रतिदिन नया, नित्य नित्य दूसरा।—प्रति (अ०) नित्य, प्रतिदिन सतत, सदा, सबदिन। [पूजा, पर्वत का प्रान्त भाग।

नितम्ब (पु०) कटि के पीछे का भाग, चूतड़, पुट्ठा,

नितम्बिनी तद्० (स्त्री०) [नितम्ब+इन्+ई] प्रशस्त नितम्ब विशिष्टा स्त्री, अबला, नारी, स्त्रीमात्र, चौड़ी कटि वाली स्त्री।

नितराम (अव्य०) सदा, सर्वदा।

नितान्त तद्० (पु०) अतिशय, अत्यन्त, अधिक (वि०) एकान्त, अवश्य, अतिशय विशिष्ट।

नित्य तद्० (वि०) कालत्रयव्यापी, तीनों काल में रहने वाला, शाश्वत, ध्रुव, सनातन, जिसका कभी नाश न हो। (पु०) समुद्र, स्थिर, निश्चित, जन्म मृत्यु रहित सनातन, प्रतिदिन, सतत, अश्रान्त, अनिश, अजस्र।—कर्म (पु०) प्रतिदिन का कर्त्तव्य कर्म, प्रतिदिन अनुष्ठेय कर्म, आवश्यक क्रिया, प्रात्याह्निक व्यापार।—कृत्य (पु०) नित्य कर्म।—क्रिया (स्त्री०) प्रतिदिन का कर्त्तव्य कर्म, प्रात्याह्निक व्यापार।—गति (पु०) वायु, अनिल, पवन।—ता (स्त्री०) चिरकालीनत्व, सनातनता।—दान (पु०) प्रतिदिन का कर्त्तव्य दान।—नैमित्तिक (पु०) नित्य और नैमित्तिक कर्म, सन्ध्योपासन और ग्रहण स्नानादि।—प्रति (अव्य०) प्रतिदिन, सदानियम से।—प्रलय (पु०) चतुर्विध प्रलयान्तर्गत प्रलय विशेष, जीव का प्रतिदिन का नाश।—मुक्त (वि०) क्रियावान्, कर्मनिष्ठ, निरयुक्त, जीवनमुक्त।—यौवन (नि०) स्थिरयौवन सदा युवा रहने वाला।—यौवना (स्त्री०) स्थिर यौवना, चिरयौवना, द्रौपदी, कुन्ती, आदि।—शः (पु०) प्रत्यह, अनवरत, सदा, सर्वदा।—सम (पु०) निर्विकार, अप्रशस्त उत्तर। [वस्तु का विचार।

नित्यानित्यविवेक तद्० (पु०) नित्य और अनित्य

नित्यानन्द तद्० (पु०) सदानन्द जिसका आनन्द सर्वदा वर्तमान रहे। बङ्गाल के गोस्वामी वंश के आदि पुरुष, ये पहले सन्यासी हो गये थे, परन्तु *पीछे किसी कारण से गृहस्थ हो गये।* ये चैतन्य महाप्रभु के साथी थे।

निथम्भ दे० (पु०) स्तम्भ, खम्भा।

निथरा दे० (पु०) स्वच्छ हुआ जल, मिट्टी के बैठ जाने से निर्मल हुआ जल, निर्मल जल।

निथारना दे० (क्रि०) निखारना साफ़ करना, स्वच्छ करना, छानना।

निदई (गु०) दयाहीन, निर्दयी।

निदग्धिका तद्० (स्त्री०) श्वेत, छोटी कटाई।

निदरना दे० (क्रि०) निन्दा करना, अपमान करना।

निदरहि दे० (क्रि०) निन्दा करते हैं, नहीं मानते, प्रतिष्ठा नहीं करते। [निन्दा करके।

निदरि दे० (अ०) निरादर करके, अपमान करके,

निदर्शन तद्० (पु०) [नि+दृश्+अनट्] दृष्टान्त, उदाहरण।—पत्र (पु०) दृष्टान्तपत्र।—मुद्रा (स्त्री०) प्रतिष्ठामुद्रा, मानसूचक मुद्रा।

निदर्शना तद्० (स्त्री०) [निदर्शन+आ] काव्यालङ्कार विशेष, इसका लक्षण इस प्रकार है। यथा—

सदृश वाक्य युग अरथ को, करिये एक अरोप।
भूषन ताहि निदर्शना, कहत बुद्धि के ओप॥

(उदाहरण)

दोहा।

औरनि को जो जनम है, सो जानो एक रोज।
औरनि को जो राज सो सिव सरजा की मौज॥
साहिन सों रन माँहि कै, बीनों सुकवि तिहाव।
सिव सरजा को ख्याल है, औरनि को जंजाल॥

शिवराज भूषण।

निदाघ तद्० (पु०) ग्रीष्मकाल, उष्ण, घर्म।—कर (पु०) सूर्य, दिवाकर।—काल (पु०) ग्रीष्मकाल-ऋतु, ज्येष्ठ और आषाढ़ का महीना, अत्यय, अत्यय-करण, गर्मी।

निदान तद्० (पु०) मुख्य कारण, चिन्ह, बोध, आदि कारण, कारण, रोग निर्णय, रोग का मूलानुसन्धान, वैद्यक के एक ग्रन्थ का नाम (अ०) अन्त में, पीछे, निष्कर्ष, सारांश।

निदारुण (पु०) भयानक, कठिन, कठोर।

निदिध्यासन तद्० (पु०) [नि+ध्यै+सन्+ल्युट्] पुनः पुनः स्मरण, परमार्थ चिन्ता विशेष।

निदेश तद्० (पु०) [नि+दिश्+अल्] आज्ञा, आदेश, अनुमति, नियोग, कथन, कथा, अनुशासन यथा—

"कीन्हेसि मोर निदेश निमेदू।
देइ दबाव नागतर पेदू।"—प्रह्लादचरित।

निद्धि (स्त्री०) विधि, खजाना, धनागार।

निद्र (पु०) अस्त्रविशेष।

निद्रा तद्० (स्त्री०) अवस्था विशेष, मनुष्य की एक अवस्था, मेध्या नामक नाड़ी से मन का संयोग, सुषुप्ति की अवस्था, शयन, सोना। [वाला सुवैया।

निद्रालु तद्० (वि०) निद्राशील, निद्रायुक्त, सोने

निद्रित तद्० (वि०) प्राप्तनिद्रा, निद्रागत, सोया हुआ।

निधड़क या निधरक दे० (वि०) निर्भय, निडर, अशङ्क, साहसी, उद्योगी, उत्साही। (अ०) अचानक, सहसा, एकाएक, अकस्मात्।

निधन तद्० (वि०) धनहीन। (पु०) मृत्यु, मरण, नाश, ध्वंस, मृत्यु, मौत।—ता (स्त्री०) कंगाली, दरिद्रता, निर्धनता।

निधान तद्० (वि०) घर, ठाँव, खजाना, स्थान।

निधि तद्० (स्त्री०) [नि+धा+कि] कुबेर का भाण्डार, सम्पत्ति, रत्न विशेष, आधार, समुद्र, भाण्ड, कोष, संख्या, बहुत धन।—जात (पु०) समुद्र से उत्पन्न रत्न आदि।—नाथ (पु०) कुबेर, धनाधिप।—पाल या प्रभु (पु०) कुबेर, अधीश, स्वामी, राजा।—सुता (स्त्री०) लक्ष्मी।

निधेय (पु०) रखने योग्य, स्थापनीय, स्थापन करने योग्य।

निनद (पु०) शब्द, ध्वनि।

निनाद तद्० (पु०) [नि+नद्+घञ्] शब्द, रव, आहट, स्वन, ध्वनि। [ध्वनित, शब्दित।

निनादित तद्० (पु०) [नि+नद्+णिच्+क्त]

निनाया दे० (पु०) खटमल, मत्कुण, उद्देस, कृमि विशेष, खटकिरवा।

निनायी दे० (पु०) रोग विशेष, मुख का एक रोग।

निनार (पु०) समस्त, बिलकुल, सम्पूर्ण।

निनारा (पु०) पृथक, न्यारा, दूर हटा हुआ।

निनौवा दे० (पु०) बालू रोग।

निनीषा तद्० (स्त्री०) [नि+सन्+आ] ग्रहणेच्छा, लेने की इच्छा, ग्रहण करने का अभिप्राय।

निनीषु तद्० (पु०) ग्रहणेच्छु, ग्रहण करने का अभिप्रायी।

निनेता तद्० (पु०) नायक, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, नेता।

निनौना (क्रि०) झुकाना, नीचे करना।

निन्दक तद्० (वि०) दूसरे का दोष ढूँढ़ने वाला। परदोषानुसन्धानकर्त्ता, निन्दा करने वाला।

निन्दकाई दे० (स्त्री०) निन्दकता, निन्दा करने का स्वभाव।

निन्दना दे० (क्रि०) कलङ्क लगाना, दोष लगाना।

निन्दनीय तद्० (वि०) निन्दा का पात्र, निन्दा के योग्य, गर्ह्य, निन्द्य।

निन्दा तद्० (स्त्री०) कुत्सा, गर्हा, अपवाद, दुर्नाम, अयश, मिथ्या कलङ्क, बुराई।—स्तुति (स्त्री०) व्याज स्तुति, अपवाद, मिथ्या स्तुति, अन्यथास्तोत्र।

निन्दास दे० (स्त्री०) ऊँघास, झपकी, निद्रालुता।

निन्दासा दे० (पु०) ऊँघास, निन्द्रालु।

निन्दित तद्० (वि०) उपेक्षित, अवज्ञात, जुगुप्सित, गर्हित, कुत्सित, अधम दूषित, कलङ्कित।

निन्द्य तद्० (वि०) निन्दनीय, हेय, तुच्छ।—कर्म (पु०) कुत्सित कर्म, निन्दित काम।

निन्यानवे दे० (वि०) नौ अधिक नब्बे, ९९, एक कम सौ।—के फेर में पड़ना (वा०) धन जोड़ने में लगना, कृपणता, चक्कर में पड़ना, किं कर्तव्य-विमूढ़ होना।

निप तद्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष।—औ (स्त्री०) अन्न की उत्पत्ति, लाभ, वृद्धि।

निपट दे० (वि०) अति, बिलकुल, पूरा पूरा, बहुतायत से, बहुत, अधिक, अत्यन्त, अतिशय ।
निपटना दे० (क्रि०) पूरा होना, ख़तम होना, समाप्त होना, सम्पूर्ण होना । [करना ।
निपटाना दे० (क्रि०) ठहराना, पूरा करना, समाप्त
निपटारा दे० (पु०) निबटेरा, फ़ैसला, निर्णय ।
निपटारू दे० (पु०) निपटाने वाला, निबेरू, निर्णायक।
निपटेरा (पु०) देखो निपटारा ।
निपतन तत्० (पु०) [नि+पत्+अनट्] अधःपतन, मरण, नष्ट होना, मारा जाना, नीचे गिरना ।
निपतित तत्० (पु०) पतित, च्युत, भ्रष्ट, स्खलित, गिरा हुआ ।
निपात तत्० (पु०) मृत्यु, पतन, गिरना, मरण, नाश, निधन, अध.पतन, व्याकरण में च आदि और प्र आदि अव्यय को निपात कहते हैं ।
निपातक तत्० (पु०) नाशक, उजाड़ने वाला, गिराने वाला, ढाहने वाला । [मारना ।
निपातना दे० (क्रि०) गिराना, ढाहना, नाश करना,
निपातित तत्० (वि०) [नि+पत्+णिच्+क्त] अधःक्षिप्त, नीचे गिराया हुआ ।
निपान तत्० (पु०) कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिये बनाया हुआ जलकुण्ड, आहाव, कठरा, हौदी।
निपीडन तत्० (पु०) [नि+पीड्+अनट्] मर्दन, व्यथा, पीड़ा देना, दुःख देना, मसलना ।
निपीडित तत्० (वि०) मर्दित, व्यथित, दुःखित ।
निपुण तत्० (वि०) कार्यक्षम, अभिज्ञ, पटु, योग्य, प्रवीण चतुर, कुशल, दक्ष ।—ता (स्त्री०) कार्यक्षमता, योग्यता, प्रवीणता, चातुरी । [दक्षता ।
निपुणाई दे० (स्त्री०) बुद्धिमत्ता, चतुराई, कुशलाई,
निपुत्री (पु०) पुत्रहीन, निर्वंश ।
निपुनाई (स्त्री०) चतुरता, निपुणाई ।
निपूत या निपूता दे० } (वि०) पुत्रहीन, निःसन्तान, अपुत्री ।
निपोड़ना दे० निपोरना } (क्रि०) दाँत दिखाना, निश्चेष्टता, निर्लज्जता की एक मुद्रा ।
निफल तत्० (वि०) निष्फल, परिणाम शून्य, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, निष्फल, निरर्थक, फल रहित ।

निफोट (पु०) स्पष्ट, साफ़ साफ़ ।
निबकौरी (स्त्री०) नीम का फल ।
निबटना (क्रि०) छुट्टी पाना, पूरा होना, मलत्याग करने को भी कहीं कहीं निबटना कहते हैं ।
निबटी दे० (वि०) छटी हुई, प्रपंच, घंट ।—रक़म, (पु०) छटी हुई रक़म, बड़ा घंट मनुष्य. बड़ा चालाक आदमी, दुनियासाज़ आदमी, दुनियादार आदमी । [फ़ैसला, ख़ातमा ।
निबटेरा दे० (पु०) सफ़ाई, निर्णय, छुटकारा,
निबद्ध (पु०) गुँथा हुआ, बँधा हुआ ।
निबन्ध तत्० (पु०) ग्रन्थ, सन्दर्भ, ग्रन्थों की वृत्ति, स्थिर जीविका, बन्धेज, बन्धान, रोग विशेष ।
निबन्धन तत्० (पु०) ठहराव, पण, समय, शर्त, हेतु, कारण, निमित्त, वीणा आदि का ऊर्ध्वभाग ।
निबन्धित तत्० (पु०) बद्ध, सगृहीत ।
निबल तद्० (वि०) निर्बल, दुबला, दुर्बल, बलहीन, सामर्थ्यहीन । [करना, दिन काटना ।
निबाह तद्० (पु०) निर्वाह, पूरा करना, समाप्त
निबाहना दे० (क्रि०) पूरा करना, सिद्ध करना, योग्यता पूर्वक समाप्त करना, रक्षा करना ।
निबाहू दे० (वि०) टिकाऊ, निपटारू, स्थायी, चिर स्थायी, बहुत दिनों तक ठहरने वाला । [देने से ।
निबाहे दे० (क्रि०) साथ किये, संग दिये, साथ
निबुआ दे० (पु०) नीबू, निम्बू, लीमू ।
निबेड़ना दे० (क्रि०) निपटाना, पूरा करना, चुकाना, साफ़ करना ।
निबेड़ा दे० (पु०) निपटारा, निबटेरा, सफ़ाई ।
निबेड़ि दे० (वि०) निबाहू, निपटारू ।
निबेरू दे० (वि०) निपटाने वाला, निर्णय करने वाला।
निबौरी दे० (स्त्री०) "निमकौड़ी" देखो ।
निभ तत्० (वि०) तुल्य, सदृश, समान । (पु०) प्रकाश ।
निभना दे० (क्रि०) पार लगना, पार पड़ना, समाप्त होना, बन आना । [रक्षा करना ।
निभाना दे० (क्रि०) निबाहना, चलाना, पार करना,
निभाव (पु०) निर्वाह, निबाह ।
निभृत तत्० (वि०) नम्र, विनीत, निर्जन, विरल, गुप्त, प्रच्छन्न, निश्चल, अस्तमित, एकान्त, रहस्य ।

निम तद्० (पु०) शलाका, शंकु, खूंटी, कचारी। (दे०) थोड़ा, न्यून, कम।

निमक दे० (पु०) लवण, नोन, लोन, नून।—हराम (वि०) अविश्वस्त, विश्वासघातक।

निमकी दे० (स्त्री०) अचार विशेष, नीबू का अचार, नोन का नीबू।

निमकौड़ी दे० (स्त्री०) नीमवृक्ष का फल, निबौरी।

निमन दे० (वि०) सुन्दर, दर्शनीय, मनोहर, मनोरम, रमणीय, पोढ़ा, दृढ़, सख्त, ठोस।

निमनाई दे० (स्त्री०) पोढ़ाई, सुन्दरताई, अच्छापन।

निमनाना दे० (क्रि०) पोढ़ा बनाना, सुन्दर करना, अच्छा बनाना, सुधारना, सम्हारना।

निमन्त्रण तद्० (पु०) आमन्त्रण, आह्वान, आवाहन, नेवता, बुलाहट।—पत्र (पु०) उत्सव में सम्मिलित होने के लिये बुलावे का पत्र। [आहूत।

निमन्त्रित तद्० (वि०) नेवता गया, बुलाया गया,

निमन्त्रयिता तद्० (वि०) आह्वानकर्त्ता, आमन्त्रणकर्त्ता, आमन्त्रण भेजने वाला, यजमान वा उत्सवकर्त्ता जो आमन्त्रण भेज कर बुलाता है, न्योता देकर बुलाने वाला।

निमग्न (गु०) निमज्जित, डूबा हुआ।

निमज्जन (पु०) अवगाह, स्नान, डुबकी लगा कर किया हुआ स्नान।

निमज्जित (गु०) डूबा हुआ, निमग्न।

निमटना (क्रि०) देखो "निबटना"।

निमय तद्० (पु०) [नि+मि+अच्] विनिमय, परिवर्त्तन, एक पदार्थ देकर दूसरा पदार्थ लेना, बदला।

निमात्त (गु०) सावधान, जो मत्त न हो।

निमान (पु०) नीची जगह, ढलुवा जगह।—। (गु०) गहरी जगह, नीची जगह।

निमि तद्० (पु०) सीता के पिता कुशध्वज जनक के पूर्वपुरुष, इनके पुत्र का नाम मिथि था और इनके नाम के अनुसार उस राज्य को भी मिथिला कहते हैं। मिथि के पुत्र का नाम जनक था। जनक के अनन्तर इनके वंशधर केवल "जनक" इस उपनाम से परिचित होते थे। सीताजी के पिता का नाम जनक नहीं था किन्तु उपनाम था।
—राज (पु०) विदेह, राजा जनक, मिथिला के एक राजा विशेष।

निमित्त तद्० (पु०) कारण, हेतु, निदान (अ०) प्रयोजन, वास्ते, लिये।—कारण (पु०) प्रयोजन, हेतु, न्याय के मत से उत्पादक त्रिविध कारणों के अन्तर्गत कारण विशेष।

निमिष (पु०) पलक, नेत्रों का बंद होना, काल विशेष।—क्षेत्र (पु०) तीर्थ विशेष, नैमिषारण्य।—ित (गु०) मिचा हुआ, बंद।

निमीलन तद्० (पु०) [नि+मील+अनट्] मुद्रित करना, आँख मूँदना, आँख मीचना।

निमीलित तद्० (वि०) मुद्रित, मूँदा हुआ, बन्द हुआ, पलकों से नेत्र को बन्द करना।

निमेष तद्० (पु०) [नि+मिष्+अल्] नेत्रों के पलक का स्पन्दन काल, पलक, अति सूक्ष्म काल, विपल, क्षण, लव। [मारी।

निमौना (पु०) हरे चनों या मटरों की रसदार

निम्न तद्० (वि०) अर्घ', नीचे, नीचे की ओर, नीचा-स्थान, गहरा, गम्भीर, गढ़ा, गर्त्त।—गा (स्त्री०) नदी, स्रोतस्विनी।—ता (स्त्री०) गम्भीरत्व, गहराई, नीचापन, अधोगतत्व। [का पेड़।

निम्ब तद्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध वृक्ष विशेष, नीम

निम्बक तद्० (पु०) नीम का पेड़, नीबू।

निम्बतरु तद्० (पु०) नीम का वृक्ष।

निम्बादित्य तद्० (पु०) एक वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य। इन्होंने द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचार किया है। इनका निम्बादित्य नाम पड़ने का कारण सुनने में यह आता है कि ये किसी जैन साधु से शास्त्रार्थ करते थे। शास्त्रार्थ करते ही करते सन्ध्या हो गई। अब सन्ध्या होने के कारण जैन साधु तो भोजन कर ही नहीं सकता है, इसी असुविधा को मिटाने के लिये इन्होंने एक नीम के पेड़ पर सूर्य को रोक दिया और उस साधु से भोजन करने के लिये कहा। सूर्यदेव तब तक उस पेड़ पर थे जब तक उस साधु ने भोजन नहीं कर लिया। यही कारण है कि इनका नाम निम्बादित्य या निम्बार्क पड़ा। इनके बनाये ग्रन्थ का नाम धर्माब्धिबोध है। इनका समय १० वीं सदी माना जाता है।

निम्बू दे॰ (पु॰) वृक्ष विशेष, नीबू, कागजी नीबू के वृक्ष, कागजी नीबू।

नियत तद्॰ (वि॰) [नि+यम्+क्त] नियम विशिष्ट, अटकाया, लगातार, ठेक, नित्य, सर्वदा, निर्दीष, निर्दिष्ट, स्थिरीकृत, बद्ध, दमित, शासित, निश्चित, नियुक्त, ठहराया हुआ।—मानस (वि॰) प्रशान्त चित्त, जितेन्द्रिय।

नियतात्मा तद्॰ (वि॰) [नियत+आत्मा] आत्मवशीभूत, वशी, यमी, यती, जितेन्द्रिय, वशेन्द्रिय।

नियताहार तद्॰ (वि॰) [नियत+आहार] परिमित भोजन, मितभुक्, मिताशन, अल्पाहार।

नियति तद्॰ (स्त्री॰) [नि+यम्+क्ति] नियम, दैव, विधि, भाग्य, अदृष्ट, विधाता।

नियतेन्द्रिय तद्॰ (पु॰) [नियत+इन्द्रिय] जितेन्द्रिय, इन्द्रियदमनशील, संयत शरीर, प्रशान्त चित्त।

नियन्ता तद्॰ (पु॰) [नि+यम्+तृन्] शास्ता, शासनकर्त्ता, प्रभु, नियामक, सारथि, नियम करने वाला, शासन करने वाला, रथवान्।

नियन्त्रित तद्॰ (वि॰) संयमित, नियमित, निगृहीत, यन्त्रित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ, निवारण किया हुआ, रोका गया।

नियम तद्॰ (पु॰) [नि+यम्+अप्] निश्चय, अवधारण, निर्णय, निरूपण, प्रकाम, धारा, दमन, निषेध, योगी, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान इनको नियम कहते हैं। प्रतिज्ञा, अङ्गीकार, स्वीकार, उपवासादि व्रत, कर्त्तव्य कर्म, नेम, प्रतिबन्ध, अटकाव, योग का एक अंग।

नियमन तद्॰ (पु॰) [नि+यम्+अनट्] नियम, बन्धन, दमन, वारण, रुकावट, निवारण, रोक, अटकाव, छेद।

नियमशाली तद्॰ (पु॰) [नियम+शाली] नियमयुत, रीत्यनुयायी, नियमित कार्यकर्त्ता, नियम पूर्वक कार्य करने वाला।

नियमसेवा तद्॰ (स्त्री॰) नियमपालन, कार्तिक मास में नियम पूर्वक भगवान् का आराधन।

नियमित तद्॰ (पु॰) [नि+यम्+क्त] कृतनियम, नियमबद्ध, निश्चित, विधिबद्ध।

नियर दे॰ (अ॰) समीप, निकट, पास, नज़दीक।

नियराई दे॰ (स्त्री॰) समीपत्व, निकटता।

नियराना दे॰ (क्रि॰) पास आना, नगचाना, निकट आना, समीप पहुँचना।

नियरे दे॰ (अ॰) समीप, समीप में, निकट में।

नियामक तद्॰ (पु॰) नियमकर्त्ता, नियन्ता, निश्चायक, पोतवाहक, कर्णधार, नाविक।

नियाय तद्॰ (पु॰) न्याय, धर्म, सचाई, उचित व्यवहार।

नियार दे॰ (पु॰) कढ़ी, चर, छेहना, बहू आदि को उनके पिता के घर से बुलाने के लिये दिन कहला भेजना। [धातु का खाद।

नियारा दे॰ (वि॰) पृथक् अलग, न्यारा, असंबद्ध,

नियारिया दे॰ (पु॰) सुनार, सुवर्णकार।

नियुक्त तद्॰ (पु॰) [नि+युज्+क्त] नियोग विशिष्ट, नियोजित, जिसका नियोग किया जाय, जिस पर किसी कार्य का भार दिया जाय, आज्ञा प्राप्त, अवधारित, ज्ञात।—ि (स्त्री॰) काम का सौंपना, नियुक्त किया जाना।

नियुत तद्॰ (वि॰) [नि+यु+क्त] संख्या विशेष, दस लाख, १००००००।

नियुद्ध तद्॰ (पु॰) [नि+युध्+क्त] बाहुयुद्ध, मल्लयुद्ध, पहलवानों की कुश्ती।

नियोग तद्॰ (पु॰) नि+युज्+घञ्] अवधारण, आज्ञा, हुक्म, नियोजन, अनुमति, शासन, प्रेषण, भारार्पण, मनोनिवेश, प्रवृत्ति, निश्चय, अधिकार प्रेरण, आज्ञा, पति के भाई या अन्य किसी से सन्तानोत्पत्ति करा लेना।—कर्त्ता (पु॰) नियोग करने वाला, भार अर्पणकर्त्ता।—धर्म (पु॰) पति की मृत्यु होने पर पति के छोटे भाई से पुत्र उत्पन्न कराना। यह प्रथा कलियुग में वर्जित है।

नियोगी तद्॰ (वि॰) नियोग विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञाप्राप्त, किसी व्यापार में लगा हुआ।

नियोजन तद्॰ (पु॰) [नि+युज्+अनट्] नियुक्त करण, प्रेरण, आदेशन, आज्ञा देकर किसी कार्य में लगाना, स्थापन।

नियोजित तद्॰ (वि॰) नियुक्त, संयोजित, स्थापित, आदिष्ट, किसी कार्य में नियुक्त किया हुआ।

निर् तद्० (उपसर्ग) नहीं, बिना, निश्चय, बाह्य, बाहर, उचित ।—क्षेपण (पु०) शुद्ध, केवल, ख़ालिस ।

निरङ्कुर तद्० (वि०) निराकार, आकार रहित, आकार शून्य, प्राकृतिक आकार, मनुष्यों के आकार से रहित । (पु०) परमेश्वर, परमात्मा, विष्णु भगवान् ।

निरङ्कुश तद्० (पु०) [निर्+अंकुश] अनिवार्य, स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारी, नियमनिरादर पूर्वक कार्य कर्त्ता, हठीला, ज़िद्दी ।

निरक्षदेश (पु०) भूमध्यरेखा के समीप की भूमि जहाँ रात और दिन एक परिमाण के होते हैं ।

निरखन (पु०) निरीक्षण, दर्शन ।

निरक्षर (पु०) अनपढ़, मूर्ख, अक्षर ज्ञान रहित ।

निरखना दे० (क्रि०) देखना, ताकना, निरीक्षण करना । [निस्पृह ।

निरञ्जन तद्० (वि०) निष्कलङ्क, निर्मल, तेजोमय,

निरत तद्० (वि०) [नि+रम्+क्त] अतिशय अनुरक्त, आसक्त, लगा हुआ, तत्पर, किसी कार्य में निरन्तर लगा हुआ ।

निरति तद्० (स्त्री०) अप्रीति, अप्रेम, अस्नेह ।—शय (पु०) सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, सब से अच्छा ।

निरधार तद्० (पु०) निर्द्धार, निश्चय, निर्णय ।

निरनुनासिक (पु०) वे अक्षर जिनका उच्चारण नासिका की सहायता से नहीं होता । [अपार ।

निरन्त तद्० (वि०) अन्त रहित, अन्त शून्य, अनन्त,

निरन्तर तद्० (वि०) लगातार, निरन्तर, निविड़, घन, अनवकाश, सर्वदा, अविच्छेद, अनवरत, असीम, अपरिधान, अभेद, सदृश, समान, सघन, लगा हुआ ।

निरन्तराभ्यास तद्० (पु०) [निरन्तर+अभ्यास] स्वाध्याय, वेदाध्ययन, पठित शास्त्रों का अभ्यास ।

निरन्तराल तद्० (वि०) [निर्+अन्तराल] अविच्छेद, निरवकाश, अवकाश शून्य ।

निरन्न तद्० (वि०) [निर्+अन्न] अन्नाभाव, अनाहार, शून्य, बिना अन्न का ।

निरपत्य तद्० (वि०) [निर्+अपत्य] निःसन्तान, पुत्र कन्या विहीन, सन्तानहीन ।

निरपराध तद्० (पु०) [निर्+अपराध] अपराध शून्य, दोष रहित, निष्पाप, निर्दोष । [अनुद्वेग ।

निरपाय तद्० (पु०) [निर्+अपाय] रक्षा, निर्विघ्न,

निरपेक्ष तद्० (पु०) [निर्+अपेक्ष] स्वाधीन, अनपेक्ष, उदासीन, लापरवाह ।—ति (पु०) अनावश्यक, अचाहा ।

निरमोही (पु०) मोहरहित, जिसे किसी प्रकार का मोह न हो ।

निरय तद्० (पु०) नरक, दुःख भोगस्थान । [बेमर्याद ।

निरवधि तद्० (वि०) अवधि रहित, बेहद, निस्सीम,

निरर्गल तद्० (पु०) [निर्+अर्गल] अबाध, अप्रतिबन्धक, बेरोकटोक ।

निरर्थक तद्० (वि०) [निर्+अर्थक] अनर्थक, अप्रयोजन, व्यर्थ, विफल, वृथा, निष्फल, अर्थहीन ।

निरवच्छिन्न (वि०) लगातार, क्रमशः, क्रम बद्ध ।

निरवद्य (पु०) दोषशून्य, शुद्ध, स्वच्छ ।

निरवधि (पु०) सीमा रहित ।

निरवयव (पु०) निराकार ।

निरवाना (क्रि०) निराई करवाना ।

निरवारना (क्रि०) रखाना, हटाना, निवारण करना ।

निरशन (पु०) उपवास, फ़ाक़ा ।

निरस तद्० (पु०) नीरस, रसहीन, रसाभाव, शुष्क ।

निरसन तद्० (पु०) [निर्+अस्+अनट्] प्रत्याख्यान, निराकरण, खण्डन, निक्षेप, विसर्जन ।

निरस्त तद्० (वि०) [निर्+अस्+क्त] प्रत्याख्यात, निराकृत, निवारित, हटाया हुआ, हराया गया, त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, त्यक्त ।

निरस्त्र तद्० (वि०) [निर्+अस्त्र] अस्त्र रहित, बे हथियार का, ख़ाली हाथ । [एकाकी ।

निरा दे० (अ०) केवल, मात्र, असहाय, अन्य रहित,

निराई (स्त्री०) निराने का काम ।

निराकरण (पु०) फैसला, निपटारा, सन्देह को दूर करना, शङ्का मिटाना ।

निराकार तद्० (वि०) [निर्+आकार] आकार रहित, अशरीर, शून्य, सूना । (पु०) आकाश, परमेश्वर, विष्णु, ब्रह्मा, शिव ।

निराकांक्षी तद्० (वि०) निस्पृह, सन्तुष्ट, शान्त ।

निराकुल (पु०) निःशङ्क, निश्चिन्त, व्याकुल नहीं ।

निराकृत (पु॰) हटाया हुआ, अपमानित, अस्वीकृत।

निराचार तद्॰ (वि॰) [निर्+आचार] अनाचार, आचारभ्रष्ट, आचार रहित। [निर्भावना, निर्भय,

निरातङ्क तद्॰ (वि॰) [निर्+आतङ्क] निःशङ्क,

निरादर तद्॰ (वि॰) [निर्+आदर] आदरहीन, अपमान, अप्रतिष्ठा।

निराधार तद्॰ (वि॰) [निर्+आधार] आधार शून्य, अनाश्रय, आश्रय रहित, शून्यस्थित।

निरानन्द तद्॰ (वि॰) [निर्+आनन्द] आनन्द रहित, आनन्द शून्य, दुःखी। [निर्विघ्न।

निरापद तद्॰ (पु॰) [निर्+आपद] अनापद,

निरामय तद्॰ (वि॰) [निर्+आमय] रोगरहित, नीरोग, स्वस्थ।

निरामिष तद्॰ (वि॰) [निर्+आमिष] आमिष शून्य, मांस रहित। (पु॰) व्रत विशेष।

निरायुध तद्॰ (वि॰) [निर्+आयुध] आयुध रहित, निरस्त्र, अस्त्र हीन, खाली हाथ।

निरालम्ब तद्॰ (वि॰) [निर्+आलम्ब] अवलम्बन रहित, अनाश्रय, बिना आश्रय का।

निरालय तद्॰ (वि॰) [निर्+आलय] आलय रहित, बिना मकान, एकान्त, निर्जन, अनियतवास, निराला। [रहित, कर्मिष्ठ, उद्योगी।

निरालस्य तद्॰ (वि॰) [निर्+आलस्य] आलस्य

निराला दे॰ (वि॰) एकान्त, निर्जन स्थान, जन शून्य स्थान। [लना।

निरावना दे॰ (वि॰) निराना, खेत से घास निका-

निराश तद्॰ (वि॰) आशाहीन, बेभरोस, हताश।

निराश्रय तद्॰ (वि॰) [निर्+आश्रय] आश्रय शून्य, निरासा, निरालम्ब।

निरास तद्॰ (पु॰) [निर्+अस्+घञ्) निराकरण, दूरीकरण, खण्डन, निक्षेप, त्याग।

निराहार तद्॰ (वि॰) [निर्+आहार] अभोजन, अनशन, भोजनाभाव, भूखा।

निरिन्द्रिय तद्॰ (वि॰) [निर्+इन्द्रिय] इन्द्रिय शून्य, इन्द्रिय रहित, अन्ध, पङ्गु प्रभृति।

निरी (स्त्री॰) केवल, निरा, निपट।

निरीक्षक (पु॰) देखने वाला, दर्शक, देख भाल करने वाला।

निरीक्षण तद्॰ (पु॰)[निर्+ईक्ष्+अन्] अवलोकन, देखन, दर्शन, ईक्षण।

निरीक्षदेश तद्॰ (पु॰) निरक्षदेश, देश विशेष, पलभा शून्य स्थान, पूर्व दिशा में भद्राश्ववर्ष में यमकोट नामक स्थान, दक्षिण भारत में लङ्का, पश्चिम दिशा में केतुमालवर्ष में रोमकनामक स्थान, उत्तरकुरुवर्ष में सिद्धपुरी।

निरीश्वर तद्॰ (पु॰) [निर्+ईश्वर] ईश्वराभाव वादी, नास्तिक।—दर्शन (पु॰) ईश्वर सत्ता न मानने वाले शास्त्र, सांख्य जैन आदि।—वाद (पु॰) परमेश्वर की सत्ता न मानने वाला सिद्धान्त, नास्तिक सिद्धान्त।—वादी (पु॰) नास्तिक।

निरीह तद्॰ (पु॰) [निर्+ईहा] ईहा शून्य, निश्चेष्ट, निस्पृह, स्थिर, धीर, शिष्ट, वासना रहित, निरभिलाष। इस शब्द का प्रयोग निरपराध के अर्थ में करना अत्यन्त भूल है।

निरुक्त तद्॰ (पु॰) वेदाङ्ग शास्त्र विशेष, इसमें वैदिक शब्दों के कई प्रकार के अर्थ लिखे गये हैं। यास्क मुनि विरचित एक ग्रन्थ का नाम।—ि (स्त्री॰) शब्दों की व्याख्या, व्याकरण के नियमानुकूल शब्द व्याख्या।

निरुत्तर तद्॰ (वि॰) [निर्+उत्तर] उत्तर हीन, अवाक् उत्तर देने में असमर्थ।

निरुत्साह तद्॰ (वि॰) [निर्+उत्साह] उत्साहहीन, निश्चेष्ट, जो कोई काम उत्साहपूर्वक न करे।

निरुत्सुक तद्॰ (वि॰) [निर्+उत्सुक] अकुण्ठित, निरुद्वेग उत्सुकता रहित।

निरुद्योग तद्॰ (वि॰) [निर्+उद्योग] उद्यमहीन, उद्यमाभाव विशिष्ट, निश्चेष्ट, निकम्मा, निकाम।

निरुपद्रव तद्॰ (वि॰) [निर्+उपद्रव] उत्पात रहित, दौरात्म्यहीन, शान्त, अचञ्चल।

निरुपम तद्॰ (वि॰) [निर्+उपम] अनुल, उपमा शून्य, अनुपम, अपूर्व।

निरुपाधि तद्॰ (वि॰) [निर्+उपाधि] उपाधिहीन, अव्याज, अकपट, निर्मल, शुद्ध।

निरुपाय तद्॰ (वि॰) [निर्+उपाय] उपाय रहित, निराश्रय। [कार, अस्वरूप, अरूप।

निरूप तद्॰ (वि॰) अवयवहीन, काल्पनिक, निरा-

निरूपण तत्० (पु०) [नि+रूप्+ल्युट्] निर्णय करना, वितर्क करना, स्थिर करना, अवधारण।
निरूपित तत्० (वि०) [नि+रूप्+क्त] कृतनिरूपण, निर्णय किया हुआ, विस्तारपूर्वक कथित, निर्णीत। [ताकना, अवलोकन करना।
निरेखना दे० (क्रि०) निरीक्षण करना, देखना,
निरेठ दे० (वि०) निगार, पोढ़ा, ठोस।
निरोग तत्० (वि०) रोग रहित, सुस्थ, आरोग्य, भला, चंगा।—ी (पु०) रोग मुक्त, रोगरहित।
निरोध तत्० (पु०) [नि+रुध्+घञ्] वेष्टन, अवरोध, घेरा, फाँस।—क (पु०) रोकने वाला, रुकावट डालने वाला, घेरा डालने वाला।—न (पु०) रोक, थाम, रुकावट। [निकला हुआ।
निर्गत तत्० (वि०) [निर्+गम्+क्त] निसृत,
निर्गत्य तत्० (वि०) निकल कर।
निर्गन्ध तत्० (वि०) गन्धशून्य, गन्धहीन।
निर्गम तत्० (पु०) [निर्+गम्+घञ्] बाहिर जाना, निकलना, निःसरण। [कलना, पलायन।
निर्गमन तत्० (पु०) बाहिर जाना, निकलना, प्रस्थान
निर्गुण या निर्गुन तत्० (पु०) त्रिगुणातीत, सत्त्व रज और तम इन तीन गुणों से अतीत, परमेश्वर, विद्या आदि सद्गुणों से शून्य, गुणहीन, निकम्मा, मूर्ख। [विशेष, एक औषध का नाम, संभालू।
निर्गुण्डी तत्० (स्त्री०) नीलशेफालिकापुष्प, पुष्प
निर्घण्ट तत्० (पु०) कोश, शब्दार्थ निरूपक पुस्तक, सूची, द्रव्यगुणागुण दर्शक ग्रन्थ।
निर्छल (गु०) छलहीन, कपट हीन।
निर्जन तत्० (वि०) एकान्त, जनशून्य, जनहीन, विजन, निभृत। [जरा रहित।
निर्जर तत्० (पु०) अमर, देवता, देव। (वि०) अजर,
निर्जल तत्० (वि०) जलशून्य देश आदि, मरुभूमि।—एकादशी (स्त्री०) जेठ की शुक्ला एकादशी।
निर्जित तत्० (वि०) प्राप्त पराजय, परास्त, पराजित, वशीभूत।
निर्जीव तत्० (वि०) जीवात्मा रहित, प्राणशून्य, जड़, अचेत, मरा हुआ, मृत, दुर्बल, श्रान्त।
निर्झर तत्० (पु०) पर्वत से गिरने वालाजलप्रवाह, पहाड़ का झरना, झरना, स्रोत, सोता, चश्मा, सूर्य का घोड़ा।
निर्झरिणी तत्० (स्त्री०) नदी, स्रोतस्विनी।
निर्णय तत्० (पु०) निश्चय, सफ़ाई, स्वच्छता, फ़रिसाव, अवधारण, स्थिरीकरण, विचार, तर्क, चर्चा, विरोध परिहार, सिद्धान्त।—कर्ता (पु०) निश्चयकर्ता, निर्णयकारक, अवधारक।
निर्णयोपमा (स्त्री०) अलङ्कार विशेष जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों का विवेचन किया जाता है।
निर्णीत तत्० (वि०) कृतनिश्चय, स्थिरीकृत, निष्पन्न, सिद्ध, निश्चय किया हुआ।
निर्णेता तत्० (पु०) निश्चयकारक, अवधारणकर्त्ता।
निर्दई दे० (स्त्री०) कठोर अन्तःकरण वाला, निर्दय, दयाहीन, दयाशून्य।
निर्दय तत्० (वि०) निष्ठुर, कठिन, दयाशून्य।—ता (स्त्री०) निष्ठुरता, दयाशून्यता।
निर्दयता (स्त्री०) क्रूरता, कठोरता। [कथित।
निर्दिष्ट तत्० (वि०) निरूपित, स्थिरीकृत, निश्चित,
निर्देश तत्० (पु०) [निर्+दिश्+घञ्] आज्ञा, आदेश, प्रस्ताव, कथन, निरूपण, निर्णय।
निर्दोष तत्० (वि०) दोष रहित, अपराध शून्य, निष्कलङ्क, निष्पाप।
निर्धन तत्० (वि०) धनशून्य, धनहीन, दरिद्र, कंगाल, रंक।—ता (स्त्री०) कंगाली, ग़रीबी।
निर्धर्म तत्० (वि०) धर्मरहित, धर्मशून्य, अधार्मिक।
निर्धार तत्० (पु०) निश्चय, निर्णय, जाति गुण और क्रिया के उत्कर्ष अथवा अपकर्ष के द्वारा सजातीय से पृथक् करना। [करना।
निर्धारण तत्० (पु०) निश्चय, निर्णय करना, स्थिर
निर्पक्ष तत्० (वि०) निष्पक्ष, अनाथ, दीन, असहाय।
निर्फल (गु०) निष्फल।
निर्बल तत्० (गु०) बलहीन, अबल, अशक्त, दुर्बल।
निर्बाचन (पु०) चुनाव, निर्णय।
निर्बासन तत् (पु०) दूरीकरण, नगर आदि से बाहर करना, देश निकाला देना।
निर्बुद्धि तत्० (वि०) असमझ, अज्ञान, ज्ञानहीन, अबोध, मूर्ख।
निर्बूझ दे० (वि०) अबूझ, नासमझ, मूर्ख।
निर्भय तत्० (वि०) भय रहित, निडर, साहसी, दृढ़, ढीठ।

निर्मम तद्० (वि०) निर्मोही, निर्लोभ, ममताहीन, अनुराग शून्य, निस्पृह, ममता रहित ।

निर्मर्याद तद्० (वि०) [निर्+मर्याद] अनादरकारी, मान्यताहीन, मर्यादाशून्य, अपमानकारी ।

निर्मल तद्० (वि०) मल रहित, स्वच्छ, परिष्कृत, शुद्ध, उजला ।—ता (स्त्री०) शुद्धता, परिष्कार ।

निर्मली दे० (स्त्री०) फल विशेष, कतक फल ।

निर्मलोपल तद्० (पु०) [निर्मल+उपल] स्फटिक ।

निर्माण तद्० (पु०) [निर्+मा+अनट्] बनावट, गठन, रचना, ग्रन्थन, सृष्टिकरण ।

निर्माता तद्० (पु०) [निर्+मा+तृन्] निर्माण कारक, निर्माणकर्ता, रचक, रचयिता, रचने वाला, बनाने वाला ।

निर्माल्य तद्० (पु०) [निर्+माल्य] देवोच्छिष्ट द्रव्य, निवेदित पुष्प आदि, देवप्रसाद, देवदत्त वस्तु,प्रसाद, नैवेद्य ।(वि०) वासा पुष्प आदि, पर्युषित द्रव्य ।

निर्मित तद्० (वि०) [निर्+मा+क्त] गठित, रचित, कृत, बनायी हुआ, निर्माण किया हुआ, रचा हुआ, गढ़ा हुआ, रचना किया हुआ ।

निर्मिति तद्० (स्त्री०) [निर्+मा+क्ति] निर्माण, गठन, रचन, करण ।

निर्मूल तद्० (वि०) [निर्+मूल] मूल रहित, उखड़ा हुआ, जड़ से खोदा हुआ, बिना जड़ का, बिना मूल का । (पु०) ध्वंस, नाश, उच्छेद ।

निर्मोक तद्० (पु०) [निर्+मुच्+घञ्] केंचली, सर्पत्वक, साँप का छोड़ा हुआ कन्चुक, गरमी के दिनों में विष से अधिक सन्तप्त होकर साँप अपने ऊपर का चमड़ा छोड़ देते हैं यह उनका स्वभाव है, केचुल, केचुली ।

निर्मोह तद्० (वि०) [निर्+मुह्+घञ्] निर्दय, कठोर, कठिन हृदय का ।—ी (पु०) प्रेमशून्य, दयाशून्य, अनुराग रहित ।

निर्यातन तद्० (वि०) [निर्+यत्+णिच्+अनट्] प्रतिहिंसा, वैरशोधन, अपकार का बदला, शत्रुता चुकाना, दान, त्याग, रखी हुई वस्तु को लौटाना, ऋण का परिशोध, मारण, हत्या ।

निर्यास तद्० (पु०) [निर्+यास] कषाय, क्वाथ, वृक्षों का रस, गोंद, काढ़ा, मीमांसा, स्थिर, निश्चय ।

निर्युक्ति तद्० (स्त्री०) [निर्+युज्+क्ति] युक्ति रहित, अनुपयुक्त, अनुचित ।

निर्युक्तिक तद्० (वि०) [निर्+युक्तिक] युक्ति रहित, अयौक्तिक, मनगढ़न्त, अनुचित, अनुपयुक्त ।

निर्योगक्षेम तद्० (वि०) निश्चिन्त, चिन्ता शून्य, चिन्ता रहित । [अलपटप, नकटा, बेहया, बेशर्म ।

निर्लज्ज तद्० (वि०) [निर्+लज्ज] लज्जाहीन,

निर्लिप्त तद्० (वि०) [निर्+लिप्+क्त] लेपरहित निर्लेप, अनासक्त, बेलाग, बेलौस ।

निर्लेप तद्० (वि०) [निर्+लिप्+अल्] लेपशून्य, सङ्ग रहित, पापशून्य, स्वतन्त्र ।

निर्लेश तद्० (वि०) लेश रहित, सर्वथा अभाव ।

निर्लोभ तद्० (वि०) लोभरहित, लोभहीन, अलोभी ।

निर्वाचक तद्० (वि०) [निर्+वाचक] चुननेवाला, निर्देशकर्ता, निर्देशकारी ।

निर्वाचन तद्० (पु०) [निर्+वच्+णिच्+अनट्] चुनाव, किसी समूह से अपने मनोमत को निकाल लेना, समुदाय से किसी एक को चुनना ।

निर्वाण तद्० (पु०) [निर्+वा+क्त] अस्तगमन, निवृत्ति, गजमज्जन, हाथी का स्नान, सङ्गम, अपवर्ग, मोक्ष, विश्रान्ति, विश्राम, निश्चल, शून्य, विद्या का उपदेश, नाभि देश में जप करने योग्य प्रणव और मातृका संपुटित मूलमन्त्र । —मस्तक (पु०) परित्राण, रक्षा, मोक्ष ।—सुख (पु०) मोक्ष का आनन्द, ब्रह्मानन्द, मुक्ति, मोक्ष, बैकुण्ठ ।

निर्वंश तद्० (वि०) वंशहीन, निस्सन्तान, अपुत्रक ।

निर्वात तद्० (वि०) [निर्+वात] वायु रहित स्थान, वह स्थान जहाँ वायु न जा सके ।

निर्बाध तद्० (वि०) [निर्+बाधा] बाधा रहित, अकण्टक, सुगम, सरल ।

निर्वापण तद्० (पु०) [निर्+वप्+णिच्+अनट्] त्याग, दान, प्राणनाश, वध, बुझाना, समाप्त होना, निःशेष होना ।

निर्वास तद्० (पु०) [नीर्+वस्+घञ्] बहिष्करण, दूरीकरण, बाहर कर देना, निकाल देना ।

निर्वासक तद्० (पु०) निकालने वाला, निकाल देने वाला, बाहर करने वाला ।

निर्वासित तत्० (वि०) [निर्+वस्+णिच्+क्त] दूरीकृत, निकाला गया।

निर्वास्य तत्० (गु०) [निर्+वस्+ण्यत्] निर्वासन योग्य, निकालने योग्य, अपराधी।

निर्वाह तत्० (पु०) [निर्+वह्+घञ्] निवृत्ति, समाप्तिजीविका, कार्यसाधन।

निर्विकल्पक तत्० (पु०) ज्ञान विशेष, सामान्य ज्ञान, भेद, भ्रमशून्य। —समाधि (पु०) ज्ञातृज्ञान आदि भेद के नाश होने के कारण अद्वितीय वस्तु के आकार से आकारित होकर एक रूप से अवस्थान, परमात्मा-साक्षात्कार।

निर्विकार तत्० (वि०) विकार शून्य, विकार रहित, निर्दोष, घृणा रहित, एक रस, एक भाव।

निर्विघ्न तत्० (वि०) अबाध, जिसमें किसी प्रकार बाधा न हो, अक्लेश, अनुद्वेग, विघ्न रहित, अड़चन शून्य।

निर्विवेक तत्० (वि०) निर्बोध, विचार रहित।

निर्विवाद तत्० (वि०) विवाद शून्य, वादविहीन।

निर्विशङ्क तत्० (वि०) निर्भय, साहसी, निडर।

निर्वीज तत्० (वि०) बीज रहित, छूँछा, छूँछा।
—समाधि (स्त्री०) समाधि विशेष।

निर्वीर तत्० (वि०) वीर शून्य, वीरहीन।

निर्वृत्ति तत्० (स्त्री०) सिद्धि, निष्पत्ति, वृत्ति रहित।

निर्वेद तत्० (पु०) अपनी अवज्ञा, स्वावमानन, आत्मावहेलन।

निर्वैर तत्० (वि०) शत्रु रहित, अजात शत्रु। [उदार।

निर्व्याज तत्० (वि०) कपट शून्य, निष्कपट, सरल,

निर्व्याधि तत्० (वि०) व्याधि हीन, अरोग, निरोग।

निर्हरण तत्० (वि०) [निर्+हृ+अनट्] शव बहिष्करण, मुर्दा निकालना, रथी निकालना।

निर्हेतुक तत्० (वि०) प्रयोजन शून्य, अहेतुक, अकारण, निष्कारण।

निलज (पु०) विभीषण के राक्षस मन्त्री का नाम।

निर्लज या निलज्ज तद्० (वि०) निर्लज्ज, लज्जा हीन, बेहया, बेशर्म।

निलय तत्० (पु०) गृह, निवास, आलय।

निलाम दे० (पु०) सब से अधिक दाम लगाने वाले के हाथ किसी वस्तु के बेचने की रीति।

निलीन तत्० (वि०) दूर छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त, गूढ़, तिरोहित। [निवारण कर्ता।

निवर (गु०) निर्णय करने वाला, बचाने वाला,

निवरा तद्० (स्त्री०) कुमारी, अविवाहिता।

निवर्तन तत्० (पु०) लौटाना, रोकना, वापस आना।

निवह (पु०) समूह, झुंड, वृन्द।

निवाजना (क्रि०) दया करना, रक्षा करना।

निवात (पु०) वात हीन प्रदेश, वह स्थान जहाँ पवन न आ जा सके।

निवातकवच तत्० (पु०) दैत्य विशेष, यह दैत्य प्रह्लाद का पुत्र और दैत्यपति हिरण्यकशिपु का पौत्र था। इसके वंशज दानव निवातकवच के नाम से प्रसिद्ध हैं। महाभारत में इनकी संख्या तीन कोटि लिखी हुई है। यह दानवों का मुख देवों का प्रबल शत्रु है। पाण्डवों के वनवास के समय अर्जुन इन्द्र से अस्त्रविद्या सीखने के लिये स्वर्ग गये थे। इन्द्रादि देवों से और अस्त्रविद्या में निपुण यक्ष तथा गन्धर्वों से उन्होंने अस्त्रविद्या सीखी। अस्त्रविद्या की शिक्षा समाप्त होने पर अर्जुन से गुरुदक्षिणा देने के लिये इन्द्र ने कहा। जब अर्जुन ने गुरुदक्षिणा देना स्वीकार की, तब इन्द्र ने "निवातकवच राक्षसों का वध ही गुरुदक्षिणा में माँगा। मातली परिचालित दिव्य रथ पर चढ़कर अर्जुन निवातकवच राक्षसों के वासस्थान पर पहुँचे। उनके साथ अर्जुन का घोर युद्ध हुआ। उस युद्ध में निवातकवच का समूल विनाश हुआ। इन दानवों का वासस्थान रसातल में था।

निवान दे० (वि०) नीचाव, गहराई, निम्नता, तला, निचाई, अध। [दोषर करना।

निवाना दे० (क्रि०) झुकाना, निहुराना, मोड़ना,

निवार दे० (पु०) रोक, कोर, पट्टी जिससे पलँग बिने जाते हैं। [मना करने वाला।

निवारक तत्० (पु०) दूर करने वाला, रोकने वाला,

निवारण तत्० (पु०) रोक रुकावट, अटकाव, बाधा दूर करना, निवारना, हटाना, प्रशमित करना, उपशमित करना।

निवारत दे० (क्रि०) बचावत बचाता है, रक्षा करता है, रोकता है।

निवारना दे० (क्रि०) रोकना, बचाना, वर्जना, हटाना, दूर करना।

निवारा तद्० (पु०) जलक्रीड़ा, नाव फेरना।

निवारि दे० (क्रि०) बचा कर, रोक कर, बरज कर, मने कर, हटक कर,

निवारी (स्त्री०) फूल विशेष, जो चैत्र में फूलता है।

निवारित तद्० (वि०) बचाया हुआ, रोका हुआ रक्षित किया हुआ, हटका हुआ।

निवाला (पु०) कौर, ग्रास।

निवास तद्० (पु०) [नि+वस्+घञ्] वासस्थान, डेरा, मकान, जगह, घर, गृह, निलय।

निवासी तद्० (वि०) रहने वाला, बसने वाला, वासकर्त्ता।

निविड़ या निबिर तद्० (वि०) सघन, घना, बहुत सटा हुआ, एक से एक मिला हुआ। [हुआ।

निविष्ट (गु०) लगा हुआ, तत्पर, लीन, लिपटा

निवीत (पु०) गले से लटका हुआ, यज्ञोपवीत, चादर।

निवुक दे० (क्रि०) निपट कर, अवकाश पाकर।

निवृत्त (गु०) छूटा हुआ, विरक्त। [विश्राम।

निवृत्ति तद्० (स्त्री०) अवकाश, बन्धन मुक्ति,

निवेदक (पु०) प्रार्थी, निवेदन करने वाला।

निवेदन तद्० (पु०) प्रार्थना, विनती, अभिलाष प्रकाश, मनोरथ कथन।—पत्र (पु०) प्रार्थनापत्र।

निवेदित तद्० (वि०) अर्पित, समर्पित, दिया हुआ, निवेदन किया हुआ, दान किया हुआ।

निवेरना (क्रि०) समाप्त करना किसी झगड़े का निर्णय कर उसे समाप्त करना।

निवेरा (गु०) चुना हुआ, छाँटा हुआ, निर्वाचित।

निवेश (पु०) पड़ाव, शिविर, रास्ते में ठहरने की जगह।

निशङ्क तद्० (वि०) शङ्का रहित, शङ्का शून्य, निर्भय, निडर, नि सन्देह, निःसंशय।

निशाचर (पु०) राक्षस। (गु०) रात में चलने वाले।

निशामन (पु०) देखना सुनना।

निशा तद्० (स्त्री०) रात्रि रजनी य। यामिनी, रात, हरिद्रा हरदी —कर (पु०) चन्द्रमा, विधु, इन्दु।—गम (पु०) [निशा+आगम] रात्रि का आगम, सन्ध्या, सन्ध्याकाल, साँझ।—चर (पु०) राक्षस, चोर, शृगाल, उलूक, उल्लू, सर्प, चक्रवाक, चकवा पक्षी।—चरी (स्त्री०) राक्षसी, वेश्या, कुलटा।—चारी (गु०) रात में चलने वाला।—टन (पु०) [निशा+अटन] उलूक, उल्लू।—न्त (पु०) [निशा+अन्त] रात्रि का अन्तकाल, प्रभात, प्रात काल, ब्राह्ममुहूर्त।—पति (पु०) चन्द्र, विधु, शशधर, कर्पूर, कपूर।—वसान (पु०) [निशा+अवसान] रात्रि शेष, प्रभातकाल, उषा।

निशात तद्० (वि०) शाणित, तीक्ष्णीकृत, शान दिया हुआ, पैनाया हुआ।

निशान दे० (पु०) बड़ा ध्वजा, जो राजाओं का राज-चिह्न है।—ा (पु०) लक्ष्य।—ी (स्त्री०) चिन्ह, स्मरण करने का साधन।

निशि तद्० (स्त्री०) निशा, रात्रि, रात।—चर (पु०) निशाचर, चन्द्रमा।—नाथ (पु०) चन्द्रमा, चाँद।—मुख (पु०) प्रदोष, सन्ध्याकाल।—मातु (पु०) चन्द्रमा।

निशित तद्० (वि०) तीखा, तीक्ष्ण, पैना, पैनी।

निशीथ तद्० (पु०) अर्द्धरात्रि, आधीरात, रात्रि मध्य।

निशीथिनी तद्० (स्त्री०) रात, रात्रि, रजनी।

निशुम्भ तद्० (पु०) विख्यात दानव, यह कश्यप के औरस और उसकी पत्नी दनु के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। इसके ज्येष्ठ भाई का नाम शुम्भ और छोटे का नाम नमुचि था। नमुचि को इन्द्र ने मारा था। छोटे भाई की मृत्यु से शुम्भ और निशुम्भ ये दोनों अत्यन्त क्रोधित हुए और इन दोनों महावीरों ने इन्द्र पर चढ़ाई की देवताओं को स्वर्ग से निकाल कर ये स्वयं स्वर्ग के अधीश्वर बन बैठे। एक समय महिषासुर के सम्बन्धी रक्तबीज नामक प्रसिद्ध दानव से इनकी भेंट हुई। इन दोनों ने रक्तबीज से सुना कि हिमालय पर्वत पर कात्यायनी देवी के हाथ महिषासुर मारा गया और उसके सेनापति चण्ड और मुण्ड भय से वन में छिप हुए हैं। इन्होंने कात्यायनी देवी का मान हरने के लिये संकल्प किया और चण्ड मुण्ड से यह समाचार

किया। अब इन लोगों ने सुग्रीव नामक दूत को देवी के निकट भेजा। दूत देवी के निकट आकर कहने लगा—पृथिवी में शुम्भ और निशुम्भ से बढ़ कर दूसरा वीर नहीं है और तुम भी इस संसार में सर्वोत्तम सुन्दरी हो अतएव तुमको उचित है कि इन दोनों में जिससे चाहो तुम अपना विवाह कर लो। देवी ने कहा—तुम जो कहते हो वह बहुत ठीक है परन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा की है कि जो युद्ध में मुझको हरा देगा उसी से मैं अपना ब्याह करूँगी। शुम्भ के पास आकर दूत ने ये बातें कहीं। धूम्रलोचन नामक दैत्य को उन लोगों ने देवी को पकड़ लाने के लिये भेजा। धूम्रलोचन को देवी ने मार डाला। तब चण्ड और मुण्ड को शुम्भने देवी के पास भेजा। चण्ड मुण्ड की भी यही दशा हुई। चण्ड मुण्ड के मारे जाने पर तीस कोटि अक्षौहिणी सेना के साथ रक्तबीज भेजा गया। देवी के साथ रक्तबीज बड़ी वीरता से लड़ा, परन्तु अन्त में वह भी मारा गया। अब अगत्या शुम्भ और निशुम्भ युद्धक्षेत्र में उपस्थित हुए और मन भर लड़ कर, इन्होंने भी वीरों के समान गति पाई।—मर्दिनी (स्त्री०) दुर्गा देवी, कात्यायनी देवी।

निशेष (पु०) निशाकर, चन्द्रमा।

निश्चय तद्० (पु०) स्थिर, अचञ्चल, असंशय, निर्णय, सिद्धान्त, अवधारण, विश्वास, प्रतिज्ञा, स्पष्ट, अवश्य।—ात्मक (पु०) यथार्थ, निस्सन्देहात्मक।—ज्ञान (पु०) दृढ़प्रत्यय, श्रद्धा।

निश्चर (पु०) ११ वें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक ऋषि का नाम।

निश्चल तद्० (वि०) अचल, स्थिर। (पु०) पर्वत, वृक्ष, स्थावर।

निश्चला तद्० (वि०) अचला, स्थिरा। (स्त्री०) पृथिवी, भूमि।

निश्चित तद्० (वि०) निर्णीत, स्थिरीकृत, निश्चय किया हुआ।—कर्मा (वि०) स्थिरकर्मा, दृढ़कर्मा।

निश्चिन्त तद्० (वि०) चिन्ताहीन, सुस्थिर, उद्वेग शून्य, चिन्ता रहित, बेफिक्र।

निश्चेष्ट तद्० (वि०) चेष्टा रहित, अनुद्योग, निरुपाय, अचेत, मूर्छा प्राप्त, बेहोश।

निश्छिद्र तद्० (वि०) छिद्र रहित, दोष रहित।

निश्श्रेयस (पु०) मुक्ति, मोक्ष।

निश्वास तद्० (पु०) [नि+श्वस्+घञ्] प्राणवायु, श्वास, साँस।—संहिता (स्त्री०) शिव प्रणीत शास्त्र विशेष।

निश्शेष (पु०) समाप्त, जिसका कुछ भी न बचा हो।

निषङ्ग तद्० (पु०) तूण, बाण रखने की थैली, भाथा, तूणीर, तरकस।

निषण्ण तद्० (वि०) दुःखत, विषण्ण उपविष्ट, बैठा हुआ।

निषध तद्० (पु०) पर्वत विशेष, देशविशेष, निषध देश का राजा, निषाद, स्वर। [धीवर विशेष।

निषाद तद्० (पु०) स्वर विशेष, पहला स्वर, चाण्डाल,

निषिद्ध तद्० (वि०) निषेध का विषय, वर्जित, निवारित, रोका, प्रतिषेधित, मना किया हुआ।

निषिद्धाचरण तद्० (वि०) अकर्मकरण, शास्त्र विरुद्ध आचरण।

निषूदन (पु०) नाशकर्ता, मारने वाला।

निषेक तद्० (पु०) संस्कार विशेष, गर्भाधान संस्कार।

निषेचन (पु०) खेत आदि का सींचना।

निषेध तद्० (पु०) प्रतिषेध, निवृत्ति, निवारण, वारण, मना करना।—पत्र (पु०) निषेध का आज्ञासूचकपत्र। [रोकने वाला।

निषेधक तद्० (पु०) निषेधकर्त्ता, निवारणकर्त्ता,

निष्क तद्० (पु०) एक सौ आठ रत्ती भर सोना, सुवर्ण, हेम, एक प्रकार का गले का गहना, धुकधुकी, शास्त्रीय परिमाण विशेष, अशरफी, दीनार।

निष्कण्टक तद्० (वि०) अकण्टक, कण्टक शून्य, निरुद्वेग।

निष्कपट तद्० (वि०) कपट शून्य, अकपट, सीधा, सरल, कपट रहित।

निष्कर तद्० (वि०) कर रहित, राजस्व रहित भूमि।

निष्कर्ष तद्० (पु०) निश्चय, निष्पत्ति, स्थिरीकृत, व्यवस्था, तात्पर्य, सत्य, प्रत्यक्ष, सिद्धान्त।

निष्कलङ्क तद्० (वि०) निर्दोष, अपराधहीन, शुद्ध, दोषशून्य।

निष्काम तद्० (वि०) कामना रहित, इच्छा शून्य, फल की अनिच्छा सहित काम, जिस काम का फल भगवान् को अर्पित किया जाय।

निष्कारण तद्० (वि०) कारणहीन, हेतुशून्य, निष्प्रयोजन, अहेतुक ।
निष्क्रमण तद्० (पु०) संस्कार विशेष, निःसरण, बाहिर निकलना ।
निष्क्रान्त तद्० (वि०) निर्गत, प्रस्थित, निःसृत, बाहिर निकला हुआ ।
निष्क्रिय तद्० (पु०) ब्रह्म, निरञ्जन । (वि०) क्रिया शून्य, अकर्मा, जड़ । [तत्रस्थ ।
निष्ठ तद्० (वि०) स्थित, स्थिर, तत्पर, अभिनिविष्ट,
निष्ठा तद्० (स्त्री०) निष्पत्ति, नाश, अन्त, निर्वहण यात्रा, दृढ़भक्ति, धर्मविश्वास, धर्मतत्परता, विश्वास, स्थिरता।—वान् (गु०) श्रद्धा भक्ति रखने वाला।
निष्ठुर तद्० (वि०) परुष, कठोर, निर्दय, कठिन, क्रूर, दुराचार ।—ता (स्त्री०) क्रूरता, कठोरता, निर्दयीपन ।
निष्णात तद्० (वि०) प्रवीण, विज्ञ, पण्डित, अभिज्ञ, पारङ्गत, पारदर्शी । [निश्चय ।
निष्पत्ति तद्० (स्त्री०) समाप्ति, शेष, अवधारण,
निष्पन्द तद्० (वि०) बिना धड़क का, स्पन्द रहित, अचलन; निष्कम्प, स्थिर, दृढ़ । [कृत, सिद्ध ।
निष्पन्न तद्० (वि०) समाप्त, शेष, सम्पन्न, साङ्ग,
निष्परिग्रह तद्० (पु०) योगी, तपस्वी, वैरागी, संन्यासी ।
निष्पादन तद्० (पु०) सम्पादन, साधन, निष्पत्ति करण, शेष करना, सिद्धान्त करना, समाधान करना, प्रतिज्ञा पूरण करना, निष्पत्ति, नियुक्ति ।
निष्पाप तद्० (पु०) निरपराध, निर्दोष, पापहीन ।
निष्प्रतिभ तद्० (वि०) मन्द, जड़, मूर्ख, निर्बोध, हतबुद्धि । [पद, विघ्न रहित ।
निष्प्रत्यूह तद्० (वि०) निर्विघ्न, बाधाहीन, निरा-
निष्प्रभ तद्० (वि०) दीप्तरहित, प्रभाहीन, अस्वच्छ, हतमनोरथ । [अहेतुक, अकारण ।
निष्प्रयोजन तद्० (वि०) प्रयोजन रहित, निरर्थक,
निष्फल तद्० (वि०) विफल, निरर्थक, व्यर्थ, फल रहित ।
निसङ्ग तद्० (वि०) निःशङ्क, पराक्रम, पुरुषार्थहीन ।
निसङ्कट तद्० (वि०) निःसङ्कट, सङ्कटमुक्त, सङ्कट रहित, अनायास ।
निसन्धाई दे० (स्त्री०) सन्धि रहित, निश्छिद्र, ठोस, पेरा ।

निसरना दे० (क्रि०) निकलना, निकसना, बाहर होना, निकरना ।
निसर्ग तद्० (पु०) प्रकृति, स्वभाव, रूप, स्वर्ग, सृष्टि, त्याग, परिवर्तन, स्वाभाविक, प्राकृतिक ।—ज (वि०) सहजात, स्वभावज, नैसर्गिक ।
निसबासर (क्रि० वि०) रातदिन ।
निसाँस दे० (वि०) धाड़ भरना, विलाप करना ।
निसाँसी दे० (गु०) दुःखी, व्यस्त, उद्विग्न ।
निसान दे० (पु०) नगारा, दुन्दुभी, सूर्य ।
निसार दे० (पु०) निकास, निकाल ।
निसास तद्० (पु०) निःश्वास, साँस, प्राणवायु ।
निसित तद्० (वि०) पैनी, तीक्ष्ण, धारदार, निशित ।
निसदिन (क्रि० वि०) रातदिन, सदा, सदैव, हमेशा ।
निसिनिसि (स्त्री०) हर रात, रात रात, आधीरात ।
निसोठी (गु०) तत्त्वहीन, थोथी, सारहीन ।
निसृष्ट तद्० (वि०) मध्यस्थ, न्यस्त, अर्पित, छोड़ा हुआ, त्यक्त ।
निसृष्टार्थ तद्० (पु०) दूतविशेष, धन का आय व्यय और पालन आदि के विषय में नियुक्त किया हुआ दूत ।
निसेनी या निसैनी तद्० (स्त्री०) काठ या बाँस की बनी डंडीदार सीढ़ी, नसैनी ।
निसोत दे० (पु०) एक औषधि का नाम ।
निस्तब्ध (गु०) निश्चेष्ट, क्रियाहीन ।—ता (स्त्री०) निश्चेष्टता, निष्क्रियता, हर्ष एवं शोक के वेग में मन की एक निष्क्रिय अवस्था ।
निस्तरण तद्० (पु०) पार होना, तरना, उद्धार करना, मुक्ति पाना, छुटकारा होना, उपाय ।
निस्तल तद्० (वि०) तल रहित, गोलाकार, गोल, वर्तुल ।
निस्तार तद्० (पु०) [निस्+तृ+घञ्] रक्षा, उद्धार त्राण, मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा, बचाव ।
निस्तारना दे० (क्रि०) बचाना, उबारना, उद्धार करना, छुटकारा देना, त्राण करना, रक्षा करना ।
निस्तारा दे० (पु०) छुटकारा, बचाव, मोक्ष, मुक्ति ।
निस्तेज तद्० (वि०) तेजहीन, प्रताप रहित, भोथा ।
निस्तोक दे० (पु०) निपटेरा, निर्णय, फैसला ।
निस्नेप तद्० (वि०) निर्लज्ज, अशिष्ट, लज्जा रहित ।

निस्त्रिंश तत्० (वि०) असि, खड्ग, तलवार।
निस्पन्द तत्० (वि०) स्पन्दन शून्य, कम्प शून्य, निश्चेष्ट, अटल, स्थिर। [निरभिलाष।
निस्पृह तत्० (वि०) स्पृहा शून्य, वाञ्छा रहित,
निस्व तत्० (वि०) निर्धन, दरिद्र, दुःखी, अर्थहीन।
निस्वन तत्० (वि०) शब्द, ध्वनि, निनाद।
निस्वांस (पु०) निःश्वास।
निस्सङ्कोच (गु०) सङ्कोच रहित, बेतकल्लुफ़।
निस्सन्तान (गु०) निर्वंश, सन्तति हीन।
निस्सन्देह (गु०) सन्देहरहित, सचमुच।
निस्सरण (पु०) निकलना, यहाव, निकास।
निस्सार (गु०) तुच्छ, सारहीन, पोला।
निस्सारित (गु०) निकाला हुआ।
निस्स्वार्थ (गु०) निष्काम, अभिलाषा शून्य।
निहङ्ग दे० (वि०) नङ्गा, नग्न, चिन्ता रहित, फक्कड़।
—लाड़ला (गु०) दरिद्रता में मस्त रहनेवाला, अधूहुब दरिद्र। [वध किया हुआ।
निहत तत्० (वि०) आहत, निपातित, मारा गया,
निहत्था दे० (वि०) अस्त्रहीन, अस्त्ररहित, खाली हाथ, बिना हाथ का।
निहाई दे० (स्त्री०) लोहे की बनी एक प्रकार की वस्तु जिस पर तपे हुए सोने चाँदी आदि को गढ़ते हैं, अयोघन, निहाली।
निहाणी दे० (स्त्री०) स्त्री का रज, ऋतु, कपड़े होना।
निहायत दे० (अ०) अत्यन्त, अधिक, अतिशय, अपरिमित।
निहार तत्० (पु०) कुहर, कुहिरा, अन्धकार, शिशिर, हिम, यथा—
"जिमि निहार में दिनकर दूरा" (रामायण)
निहारना दे० (क्रि०) देखना, विलोकन करना, दर्शन करना, अवलोकन करना, निरीक्षण करना, ध्यान पूर्वक देखना।
निहारा दे० (क्रि०) देखा, निरीक्षण किया, अवलोकन किया।
निहाल दे० (वि०) प्रसन्न, सुखी, आनन्दित, हर्षित, तृप्त, अभिलाषपूर्ण होने से तृप्त, मनोरथ सिद्धि,
निहाली दे० (स्त्री०) निहाई, अयोघन।
निहित तत्० (पु०) [नि+धा+क्त] स्थापित, अर्पित, न्यस्त, रखा हुआ, रक्षापूर्वक रखने के लिये रखा हुआ।
निहुरना दे० (क्रि०) झुकना, नयना, नवना, नम्र होना, प्रणत होना।
निहुरा दे० (पु०) नत, झुका, नम्र। [नम्र करना।
निहुराना दे० (क्रि०) झुकाना, नवाना, प्रणत करना,
निहोर दे० (वि०) कृपा, उपकार, विनती, विनय।
निहोरा दे० (पु०) चिरौरी, विनती, अनुनय, विनय, उपकार, प्रार्थना, एहसान, उलाहना, उरहना, नम्रता।
निह्नव तत्० (पु०) [नि+ह्नु+अल्] अपलाप, अपह्नव, गोपन, छुकाना, छिपना, अविश्वास, न मानना।
निह्राद तत्० (पु०) शब्द, ध्वनि, नाद, निनाद।
नींद तत्० (स्त्री०) निद्रा, झपकी, ऊँघाई, आलस।
—उचाट होना (वा०) नींद न आना, नींद टूटना।—भर सोना (वा०) खूब सोना, गहरी निद्रा से सोना।
नींदड़ी }
नींदरी } (स्त्री०) नींद, निद्रा।
नींदना दे० (क्रि०) सोना, शयन करना।
नींदू दे० (पु०) सुवैया, निद्रालु, शयालु।
नींब दे० (पु०) वृक्ष विशेष, निम्ब वृक्ष।
नींबू दे० (पु०) निम्बुआ, जँभिरी नीबू, फल विशेष।
नीक, नीका } दे० (वि०) भला, अच्छा, उत्तम,
या निके } सुन्दर, खूबसूरत।
नीच तत्० (वि०) अधो, निम्न, अपकृष्ट, अधम, इतर, अधन्य।—गत (वि०) नीचगामी, पामर, अधम।—गा (स्त्री०) नदी, ह्रादिनी, निम्नगामिनी।—गामी (वि०) नीचे की ओर से चलने वाला, निम्नगामी, निर्जन।—ता (स्त्री०) अधमता, अपकृष्टता, अधन्यता।
नीचट (गु०) एकान्त, निर्जन, दृढ़, पक्का।
नीचा दे० (वि०) नीच, अधम, छोटा। (पु०) तला, तल।—ऊँचा (वा०) ऊबड़खाबड़।
नीचाई दे० (स्त्री०) नीचता, नीचपन, बुराई।
नीचाशय तत्० (वि०) [नीच+आशय] क्षुद्राशय, क्षुद्रान्तःकरण, अनुदार।

नीचू दे० (पु०) अधस्तल वृक्षविशेष, एक वृक्ष का नाम।

नीचे दे० (अ०) तले।

नीजन (गु०) निर्जन, एकान्त, वीरान।

नीजू (स्त्री०) पानी भरने की डोर।

नीझर (पु०) झरना, स्रोत।

नीठ दे० (वि०) तुम्हारा, तुम्हारे सम्बन्ध का।—ि (स्त्री०) अरुचि, अनिच्छा।—ो (गु०) अप्रिय, अनचाहा।

नीड़ तद्० (पु०) पक्षी का वासस्थान, विहंगावास, कुलाय, वासस्थान, घोंसला, खोता।

नीत तद्० (वि०) [नी+क्त] प्राप्त, गृहीत, लिया हुआ।

नीति तद्० (स्त्री०) [नी+क्ति] न्याय्य व्यवहार, उचित व्यवहार, चलन, शास्त्र विशेष, नय। —कथा (स्त्री०) ग्रन्थ विशेष, हितोपदेश, क्षुद्रउपाख्यान। —ज्ञ (वि०) नीतिशास्त्रवेत्ता, नीतिशास्त्र विशारद, राजमन्त्री। —विद्या (स्त्री०) नीति शास्त्र, हितोपदेश देने वाला शास्त्र —सार (पु०) नीतिशास्त्र विशेष।

नींद दे० (स्त्री०) } निद्रा।
नीद्रा दे० (स्त्री०) }

नींधना (गु०) ग़रीब, निर्धन।

नीप तद्० (पु०) कदम्ब वृक्ष, कदम का पेड़।

नीबी तद्० (स्त्री०) व्यापार करने वालों का मूलधन, स्त्रियों का कटिवस्त्र।

नीबू दे० (पु०) निम्बू, एक प्रकार का खट्टा फल जिसका रस विशेष करके काम में लाया जाता है।

नीम दे० (पु०) नींब।

नीमन दे० (वि०) अच्छा, भला, उत्तम, सुन्दर, मनोरम।

नीमर (गु०) निर्बल, दुबला, बलहीन।

नीमा (पु०) जामा, विवाह में दूल्हा के पहनने का वस्त्रविशेष।—स्तीन (स्त्री०) आधे बाहं का कुर्ता।

नीमायत दे० (पु०) एक पन्थ, जिसे नीमाचन्द सरस्वती ने चलाया है।

नीर तद्० (पु०) पानी, जल, रस, सलिल, पय। —ज (पु०) पद्म, कमल, उदबिलाव। (वि०) जल से उत्पन्न वस्तुमात्र, निर्धूली देश, अरजस्का की, कुमारिका, कन्या।

नीरथ दे० (वि०) निरर्थक, निष्फल, वृथा, व्यर्थ।

नीरद तद्० (पु०) [नीर+दा+ड] जलद, मेघ, मोथा।

नीरधि तद्० (पु०) सागर, समुद्र, पयोनिधि, तोयनिधि।

नीरनिधि तद्० (पु०) सागर, समुद्र, जलधि।

नीरमय तद्० (वि०) [नीर+मयट्]जलमय, जलवेष्टित, जल में डूबा हुआ।

नीरस तद्० (वि०) [निस्+रस] रसहीन, शुष्क, बेस्वाद, स्वाद रहित।

नीराजन तद्० (पु०) विसर्जन, आरती, आरती उतारना।

नीरुज तद्० (वि०) स्वस्थ, रोग का अभाव।

नीरोगी तद्० (वि०) रोग शून्य, पीड़ा रहित, सुस्थ।

नील तद्० (पु०) श्याम रंग, आकाश के रंगवाला, नील रंगयुक्त वृक्ष, तालीशपत्र, विष, गरल, १०८ नृत्य के भेदों के अन्तर्गत एक प्रकार का नृत्य। पर्वत विशेष, मणि विशेष, नदी विशेष, यह नदी मिसर देश में बहती है। निधि विशेष, कुबेर के एक ख़ज़ाने का नाम। वानर विशेष, यह रामचन्द्रजी की सेवा में था और इसने सेतु बनाने में रामचन्द्र की बड़ी सहायता की थी।

(२) माहिष्मती पुरी के एक राजा। इनकी एक अत्यन्त सुन्दरी कन्या के रूप पर मोहित हो कर अग्नि ने उससे अपना ब्याह किया। अग्नि ने राजा नील को यह वर दिया था कि जो कोई इस नगरी पर चढ़ाई करेगा, वह भस्म हो जायगा। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय सहदेव ने इस नगर पर चढ़ाई की थी,उस समय सहदेव ने देखा कि उनकी सेना आग से घिरी हुई है,तब सहदेव ने अग्नि की स्तुति और उपासना की, अग्नि ने प्रसन्न होकर नीलराज की पूजा लेकर सहदेव से लौट जाने के लिए कहा। अग्नि की आज्ञा से नीलराज ने सहदेव की पूजा की। सहदेव भी कर लेकर वहाँ से दक्षिण की ओर चले गये।—गाय (स्त्री०) एक बनैला पशु।—गिरि (पु०) एक पर्वत का नाम जो दक्षिण भारत में है।

नीलक तद्० (पु०) नील रङ्ग का मृग विशेष, बीज गणित का प्रमाद विशेष।

नेपाल तद्० (पु०) देश विशेष ।—ी (वि०) नेपाल का रहने वाला ।
नेपुर तद्० (पु०) नूपुर, पादभूषण, बिछिया, पायजेब।
नेम तद्० (पु०) नियम, संयम, धर्म में दृढ़, व्रत, प्रतिज्ञा, वचन, संकल्प ।—धर्म (पु०) शुभ व्यवहार ।
नेमि तद्० (स्त्री०) पहिये का घेरा, चक्रपरिधि, रथ के पहियों का वह भाग जो भूमि में लगा रहता है। चक्र का प्रान्त भाग, कूप के समीप बना हुआ चौरस चौतरा, कुएँ के पास रस्सी रखने के लिये रखी हुई तिपाई लकड़ी ।—चक्र (पु०) पहिया, पाण्डुवंशीय राजा विशेष । [पालक ।
नेमी तद्० (वि०) नियमी, नियम करने वाले, नियम
नेराना (क्रि० अ०) पास पहुँचना, नज़दीक आना ।
नेरुवा दे० (पु०) पयाल, गोड़ी, डाँठी ।
नेरे, नेरी दे० (अ०) निकट, समीप, नियरा, पास ।
नेव दे० (स्त्री०) भीत की जड़, नींव, मूल । .
नेवतना दे० (क्रि०) निमन्त्रण देना, बुलाने के लिये पत्र भेजना ।
नेवता दे० (पु०) बुलाहट, निमन्त्रण, न्योता ।
नेवना दे० (क्रि०) नवना, नम्र होना, निहुरना, नमना । [पाव, कहीं इसे नेवरा भी कहते हैं।
नेवर दे० (स्त्री०) घोड़े के पैरों में रगड़ से उत्पन्न
नेवल, नेवला दे० (पु०) नकुल, न्योला, यह साँपों का स्वाभाविक शत्रु है । [जाता है।
नेवार (पु०) निवार, सूती पट्टी जिससे पलंग बुना
नेवाजी दे० (क्रि०) शरण में ली, कृपा की । (पु०) कृपा करने वाला, दयालु । (स्त्री०) कृपा, दया ।
नेवाजू दे० (पु०) कृपालु, दयालु, मेहरबान ।
नेह तद्० (पु०) स्नेह, प्रीति, प्रेम, चिकनाहट, चिक्कण।
नेहरुआ दे० (पु०) नहरुआ रोग । [शुभचिन्तक ।
नेही तद्० (वि०) स्नेह, प्रिय, प्रेमी, मित्र, सुहृद्
नैऋत तद्० (पु०) राक्षस विशेष, निर्ऋति नामक राक्षस के वंशज । यह दक्षिण और पश्चिम के कोने का अधीश्वर है ।
नैऋत्य तद्० (पु०) दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा । इस दिशा के अधिपति निर्ऋति हैं । इस कारण इसको नैऋत्य कहते हैं ।
नैकट्य तद्० (वि०) निकटभाव, सामीप्य, समीपता, निकटता, निकटत्व । [गायक, पथ ।
नैगम तद्० (पु०) उपनिषद्, वणिक, नागर, नय,
नैजा (पु०) दुरके की नली । [बालुका राशि ।
नैचा (स्त्री०) नीचामार्ग पुरवट के बैलों के चलने का
नैज तद्० (वि०) आत्मीय, आत्म सम्बन्धी। [होना
नैनाना दे० (क्रि०) झुकना, निहुरना, नवना, नम्र
नैतिक (पु०) नीति सम्बन्धी, आचार व्यवहार सम्बन्धी।
नैन, नैना तद्० (पु०) नयन, आँख, पगहा, गराँव, पाँद, पशु बाँधने की रस्सी ।—ी (स्त्री०) नेत्रवाली।
नैनू दे० (पु०) नैनी, नवनीत । [गया रखा ।
नैपाल तद्० (पु०) ताँबा, देश विशेष, नीति रखा,
नैपाली तद्० (पु०) मनशिल नामक धातु, नैपाल वासी । [कुशलता ।
नैपुण्य तद्० (पु०) निपुणता, चतुरता, दक्षता,
नैमित्तिक तद्० (वि०) निमित्त सम्बन्धी, किसी हेतु से आया, त्योहार आदि का उत्सव, किसी कारण विशेष से किया जाने वाला काम ।
नैमिष तद्० (पु०) तीर्थ विशेष, एक तीर्थ का नाम जो हरिद्वार के पास है ।
नैमिषारण्य तद्० (पु०) वह वन जहाँ सूत जी पौराणिक रहते थे तथा और भी अनेक महर्षि रहा करते थे ।
नैया दे० (पु०) नौ, नौका, नाव, तरणी ।
नैयायिक तद्० (पु०) न्यायशास्त्र विशारद, तर्कशास्त्र विशारद, न्याय पढ़ने या पढ़ाने वाला ।
नैराश्य तद्० (पु०) निराशा, आशा का अभाव, हताश।
नैर्मल्य तद्० (पु०) निर्मलता, शुद्धता, स्वच्छता, मलाभाव । [प्रसाद, चढ़ावा ।
नैवेद्य तद्० (पु०) अर्पण, उत्सर्ग, देवता का भोग,
नैसर्गिक तद्० (पु०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, स्वभाव-सिद्ध, स्वतः उत्पन्न ।
नैष्ठिक तद्० (पु०) यावज्जीवन गुरु के गृह में ब्रह्मचर्य व्रत पालने वाला, धार्मिक, चिरवासी ।
नैहर दे० (पु०) पीहर, मैका, स्त्री के पिता का घर ।
नोआ (पु०) रस्सी का टुकड़ा जिस से दूध दुहते समय किसी किसी गाय के पीछे के पैर बाँध दिये जाते हैं ।

नोह दे० (स्त्री०) दूध दुहते समय गौ के पिछले पैर जिससे बाँधते हैं। [की रस्सी।
नोई दे० (स्त्री०) दूध दुहते समय गाय के पैर बाँधने
नोंकचोंक दे० (स्त्री०) सङ्केत से बातें करना, लाग-डाट।
नोकझोंक दे० (स्त्री०) खैंचाखैंची, खैंचातानी, उपरा-चढ़ी, अनबनाव, खटपट, पारस्परिक द्वेष।
नोच दे० (पु०) चुटकी, चकोट, खमोट। [खमोटना।
नोचना दे० (क्रि०) चुटकी मारना, चकोटना,
नोटिस दे० (पु०) विज्ञापन, सूचनापत्र।
नोन दे० (पु०) निमक, नून, नोन।—चा (पु०) एक प्रकार का आम का अचार।
नोना दे० (क्रि०) गाय भैंस आदि का दूध दुहने के लिये पैर बाँधना। (पु०) फल विशेष, सीताफल, पुरानी दीवाल की गली हुई मिट्टी।—पानी (पु०) लवणयुक्त जल, खारी पानी, लवणाम्बु समुद्र का जल। [काम करती है, नुनियाँ।
नोनिया दे० (पु०) जाति विशेष, जो नून बनाने का
नोय दे० (पु०) एक प्रकार की रस्सी जिससे गाय का पैर बाँधते हैं।
नोहर (गु०) अनौखा, अलभ्य।
नौ तद्० (पु०) नाव, नौका।
नौकर दे० (पु०) चाकर, सेवक, भृत्य, महीना लेकर सेवा करने वाला।—नी (स्त्री०) टहलनी।
नौकरी दे० (स्त्री०) चाकरी, सेवा, नौकर का काम।
नौका तद्० (स्त्री०) नाव, नौ, तरणी।
नौखण्ड तद्० (पु०) (नवखण्ड देखो)।
नौगरा दे० (स्त्री०) आभूषण विशेष, पहुँची, कङ्कन।
नौची दे० (स्त्री०) छोटी अवस्था की वेश्या, वेश्या की शिष्या, जो उसके बाद उसके पद की अधिकारिणी होती है।
नौछावर दे० (पु०) निछावर, उतारा।
नौजवान (गु०) तरुण, नवयुवक।
नौढ़ना दे० (क्रि०) निहुरना, नम्र होना, प्रणत होना।
नौतन (गु०) नूतन, नया। [आदर पूर्वक बुलाना।
नौतना दे० (क्रि०) निमन्त्रण देना, नेवता देना,
नौता दे० (पु०) निमन्त्रण, नेवता।
नौना दे० (क्रि०) नवना, निहुरना, नौढ़ना, नोना मिट्टी।

नौनी दे० (स्त्री०) नैनू, मक्खन।
नौबत दे० (स्त्री०) समय, अवसर, वाद्यर्यत्र अर्थात्, नगाड़ा नफीरा और झाँझ।—खाना (पु०) वाद्यगृह।
नौमासा तद्० (पु०) गर्भ के नवें मास का उत्सव, संस्कार विशेष, पुंसवन।
नौमि तद्० (क्रि०) मैं प्रणाम करता हूँ। [नवीं तिथि।
नौमी तद्० (स्त्री०) नवमी, तिथि विशेष, पक्ष की
नौरंग (पु०) पक्षी विशेष, औरंगज़ेब का अपभ्रंश।
नौरतन तद्० (पु०) नवरत्न।
नौरोज़ (पु०) नये साल का प्रथम दिवस, भारतवर्ष में अकबरशाह ने इस नाम का एक मेला जारी किया था।
नौल दे० (वि०) नवल, सुन्दर।
नौलखा (गु०) नौ लाख का, मूल्यवान।
नौला (पु०) न्योला, नकुल।
नौशा (पु०) दूल्हा, वर।
नौसिखिया (गु०) नवशिक्षित [illegible]।
नौसिख तद्० (गु०) नवशिक्षित [illegible], विद्यार्थी।
नौसादर दे० (गु०) एक प्रकार का क्षार।
न्यक्कार तद्० (पु०) तिरस्कार, कुत्सा, निन्दा, गर्हा, अवज्ञा, घृणा।
न्यग्रोध तद्० (पु०) वटवृक्ष, बरगद।
न्यर्बुद तद्० (पु०) दस अरब, संख्या विशेष।
न्यस्त तद्० (गु०) [न्यस्+क्त] समर्पित, दत्त, सञ्चित, स्थापित, रचित।—शस्त्र (गु०) जिसने शस्त्र छोड़ दिया हो, परास्त, हरा हुआ।
न्याउ (पु०) न्याय।
न्याय तद्० (पु०) नीति, युक्ति, यथार्थ, उचित, तर्कशास्त्र, विचार, वितर्क, विवेचना।—धीश तद्० (पु०) न्यायकर्त्ता, न्यायवादी।—लय (पु०) [न्याय+आलय] धर्माधिकरण, विचारगृह।—कर्त्ता (पु०) विचारक, न्यायाधीश, तर्कशास्त्रवेत्ता, गौतम मुनि।—तः (क्रि० वि०) धर्म से, न्याय से।—शास्त्र (पु०) तर्कशास्त्र।
न्यायक तद्० (पु०) विचारक, न्यायकारी, न्यायकर्त्ता।
न्यायी तद्० (पु०) मध्यस्थ, न्यायकर्त्ता, उचित करने वाला।

नीलकण्ठ तद्० (पु०) नीले कण्ठवाला, शिव महादेव, शम्भु, मोर,मयूर शिखी, संस्कृतज्योति-शास्त्रवेत्ता, इनकी बनाई "ताजिक नीलकण्ठी"नाम की पुस्तक का ज्योतिषी समाज में विशेष आदर है। इनके पिता का नाम अनन्त और पितामह का नाम चिन्तामणि था। मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थ के कर्ता रामदैवज्ञ इन्हीं के छोटे भाई थे। नील कण्ठ के पुत्र भी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इन्होंने भी मुहूर्तचिन्तामणि की टीका पीयूष धारा बनाई है। इन्होंने अपने ग्रन्थ के आरम्भ में अपने पिता का कुछ वृत्तान्त लिखा है जिससे मालूम होता है कि नीलकण्ठ मीमांसक, नैयायिक, ज्योतिषी और वैयाकरणी थे और ये अकबर के सभासद भी थे। ये विदर्भ देश के रहने वाले थे। इनकी स्त्री का नाम पद्मा था। ये अकबर बादशाह के समकालीन थे, इसलिये इनका समय खृष्टीय १६ वीं सदी का पिछला भाग ही मानना चाहिये। [नीलपङ्कज।

नीलकमल तद्० (पु०) नीलवर्ण का पद्म, कृष्ण कमल,

नीलगवय तद्० (पु०) नील गौ, रोझ, गौ के समान एक जङ्गली जन्तु।

नीलगाय दे० (पु०) नील गौ रोझ, नील गाय।

नीलग्रीव तद्० (पु०) महादेव, शिव, नीलकण्ठ विष पान करने के कारण महादेव का कण्ठ नीला पड़ गया है, इसीसे इन्हें नीलकण्ठ कहते हैं।

नीलमड़ी दे० (स्त्री०) नील का टुकड़ा, नीलखंड।

नीलम दे० (पु०) नीलकान्त मणि, रत्न विशेष। नीलम। [विशेष।

नीलमणि तद्० (पु०) नीलम नीलकान्तमणि, रत्न

नीलमाधव तद्० (पु०) विष्णु नारायण, जगन्नाथ, जगदीश।

नीललोहित तद्० (पु०) शिव, महादेव शम्भु नील कण्ठ, नील और रक्तमिश्रित वर्ण, बैंगनी रङ्ग, मेघपुष्प। [मानी रङ्ग।

नीलवर्ण तद्० (वि०) श्याम रङ्ग आकाशी रङ्ग आस

नीला दे० (गु०) नीले रङ्ग वाला,नील रङ्ग में रङ्गा हुआ।

नीलाई दे० (स्त्री०) श्यामता, नीलता नीलापन।

नीलाथोथा दे० (पु०) नियाशन, तूतिया, उपधातु विशेष।

नीलाम दे० (पु०) बिक्री, बिकाव, बेचना। यह शब्द पुर्तगाली "लेलाम"शब्द का अपभ्रंश है। किसी वस्तु को मोल लेने वाले—चाहे वे कितने ही हों उस वस्तु का—मूल्य बोलते जाते हैं, उसमें से जो सबसे अधिक मूल्य देना स्वीकार करता है और उसके बाद दूसरा नहीं बोलता, तो वह वस्तु सबसे अधिक मूल्य देने वाले के हाथ बेची जाती है।

नीलाम्बर तद्० (पु०) बलदेव, शनैश्चर।

नीलार्त्त तद्० (पु०) पौधा विशेष कटोला एक वृक्ष जिसमें पीले फूल लगते हैं पियावासा, पियावाँसा।

नीलोत्पल तद्० (पु०) नीलकमल, नीलेपत्तों का कमल, नील पङ्कज, नीलेन्दीवर।

नीलोपल तद्० (पु०) नीलम नीलमणि।

नीलोफर (पु०) नीलकमल।

नीव (स्त्री०) जड़, आधार।

नीवा दे० (पु०) झुनाहट, मन्दाई, मन्दता।

नीवार तद्० (पु०) तिन्नी का धान, एक प्रकार का धान जो तालावों में होता है। [इजारबन्द।

नीवी तद्० (स्त्री०) बनियों का मूलधन, पूँजी, नारा,

नीवृत् तद्० (पु०) देश, जनपद, जनस्थान।

नीशार तद्० (पु०) शीत निवारण करने वाला आच्छादन, शामियाना, कनात, तम्बू, पटमण्डप, वसनगृह।

नीसानी (पु०) छन्दविशेष।

नीसारना दे० (क्रि०) निकालना, निकासना।

नीहार तद्० (पु०) घनीभूत शिशिर, बरफ, हिम, तुषार, ओस, कुहर, कुहासा।

नीहारिका (स्त्री०) कुहरा, कुहासा, पदार्थों की प्रथमावस्था। एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार यह माना जाता है कि जगत् के यावत् पदार्थ ठोस होने के पूर्व वाष्प रूप के थे। इसे नीहारिकावाद कहते हैं।

नुकता (पु०) विन्दु अनुस्वार का चिह्न।—चीन (पु०), दोषदर्शी, समालोचक, ।—चीनी (स्त्री०) दोष निकालना, समालोचना।

नुकती (स्त्री०) बुँदिया बूंदी, मिठाई विशेष।

नुकरा (पु०) घोड़ों का सफेद रङ्ग।

नुकसान (पु०)घाटा, टोटा, हानि।

नुकीला (पु०) नोकदार, सुन्दर।
नुक्कड़ (पु०) छोर, कोना, नोक।
नुक़्स (पु०) दोष, खराबी, त्रुटि।
नुखट्टा दे० (पु०) नख का खसोट, नख का बकोट।
नुचना (क्रि०) उखाड़ना, खुरचना।
नुचवाना (क्रि०) उखड़वाना।
नुति (स्त्री०) स्तुति, स्तोत्र, खुशामद।
नुत्फ़ाहराम (पु०) वर्णसङ्कर।
नुनाई (स्त्री०) लुनाई, सुन्दरता, लावण्य, खारापन।
नुनियाँ दे० (पु०) जाति विशेष, नोनिया।
नूतन, नूत्न तत्० (वि०) नया, नवीन, अभिनव।
नूधा दे० (पु०) तमाकू विशेष। [की मूत्रेन्द्रिय।
नून दे० (पु०) लोन, लोन, नमक।—ी (स्त्री०) बच्चों
नूपुर तत्० (पु०) बिछिया, भूषण विशेष, यह भूषण पैर की अँगुलियों में पहना जाता है, पायजेब, पैजनी घुँघुरू।
नूर (पु०) शोभा, प्रकाश,ज्योति,सौन्दर्य की आभा।
नृकपाल (पु०) मनुष्य की खोपड़ी।
नृग तत्० (पु०) एक राजा का नाम, ये बहुत दानी थे, दान में व्यतिक्रम होने से इन्हें शरट की योनि प्राप्त हुई। पुनः श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया।
नृत्य तत्० (पु०) नर्तन, नाँच, नाचना।—कारी (वि०) नाचने वाला, नचैया, नट, नर्तक।—की (स्त्री०) नाचने वाली।
नृदेव या नृदेवता तत्० (पु०) राजा, नृप।
नृप तत्० (पु०) राजा, भूपाल, भूपति,नरपति, राजा।—घाती (पु०) राजवंशनाशक, परशुराम, भार्गव।
नृपति तत्० (पु०) नरपति, राजा, नृपाल।
नृपाल तत्० (पु०) राजा, भूपति, नरपति, नृपति।
नृवराह तत्० (पु०) शूर, वीर, योद्धा, बराह रूप-धारी भगवान् विष्णु का अवतार विशेष।
नृशंस तत्० (वि०) घातक, क्रूर, दुष्ट, व्याध, हत्यारा, परद्रोही।
नृसिंह तत्० (पु०) प्रधान मनुष्य, नरश्रेष्ठ, भगवान् का एक अवतार विशेष, जिनका रूप मनुष्य और सिंह के समान था, नरसिंह अवतार।—चतुर्दशी (स्त्री०) वैसाखमास की शुक्ला चतुर्दशी, इसी दिन भगवान् नृसिंह प्रगट हुए थे, इस कारण इसको नृसिंह जयन्ती भी कहते हैं। [या नृसिंहावतार।
नृहरि तत्० (पु०) नरसिंह अवतार, भगवान् विष्णु
नेई, नेऊ (स्त्री०) नेव, गड़, निव।
नेउला (पु०) नेवला, नकुल, जन्तु विशेष।
नेऊन दे० (पु०) मक्खन, नवनीत।
नेक, नेकु दे० (वि०) कुछ, थोड़ा, अल्प, तनक, अच्छा, भला, उत्तम, मनोहर, मनोरम, रमणीय।—नाम दे० (वि०) नामी, कीर्तिमान्, यशस्वी।
नेक्ता तत्० (पु०) पोषक, पालक, पोषणकर्ता।
नेग दे० (पु०) विवाह में दान जो बँधा रहता है। बंधा र, दस्तूर।—चार (पु०) नातेदार आदि को विवाह आदि उत्सवों में देना।
नेगी दे० (वि०) नेग पाने के अधिकारी, नेग में हिस्सा बटाने वाला, परजा, मँगता, अधिकारी।
नेजक तत्० (पु०) धोबी, रजक, परिष्कारक, शुद्ध करने वाला, कपड़ा धोने वाला।
नेजन तत्० (पु०) परिष्करण, शोधन।
नेटा दे० (पु०) पोंटा, नाक का मल, रेंट। [वाला।
नेठमी दे० (वि०) स्थिर, स्थायी, एक स्थान पर रहने
नेतक दे० (पु०) नड़कुल, नरकट। [अगुआ।
नेता तत्० (पु०) नींब का वृक्ष, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ,
नेति तत्० (अ०) न इति, अन्त रहित, अनन्त, इतना नहीं, बेहद, नहीं, ऐसा नहीं।
नेती दे० (स्त्री०) मथानी की रस्सी, मथानी घुमाने की रस्सी। एक प्रकार का मोटा डोरा, जिसको हठयोगी नाक में डाल कर साफ़ करते हैं, योग की क्रिया विशेष।
नेत्र तत्० (पु०) चक्षु, अक्षि, नयन, आँख।—कनीनिका (स्त्री०) आँखों की पुतली, दृष्टि।—च्छद (पु०) नेत्रपिधायक चर्मपुट, नेत्र बन्द करने वाली पपनी, पलक।
नेत्रजीत दे० (पु०) बन्धवा, बन्दी, दण्डित, अपराधी
नेत्राम्बु तत्० (पु०) अश्रु, चक्षु का जल, आँसुआ।
नेनुआ (पु०) एक शाक का नाम।
नेपथ्य तत्० (पु०) वेश, अलङ्कार, भूषण रङ्गभूमि का भीतरी भाग जहाँ नाटक के पात्र सजते हैं, बनाव खाना, शृङ्गार घर।

न्याय्य तद्० (वि०) उचित, यथार्थ, प्रशस्त ।
न्यारा दे० (वि०) अलग, पृथक्, भिन्न, अतिरिक्त ।
न्यास तद्० (पु०) रखने योग्य धन आदि, अर्पण, त्याग, तान्त्रिक क्रिया विशेष, धरोहर ।
न्याव तद्० (पु०) न्याय, उचित, यथार्थ विचार ।
न्यून तद्० (गु०) अल्पपूर्ण, किंचित्, थोड़ा, कम, अल्प ।—ता (स्त्री०) छुटाई, नीचता, नीचापन ।
न्योतना (क्रि०) निमंत्रण देना, न्योता देना ।
न्योतहरी (गु०) निमन्त्रित ।
न्योता दे० (पु०) निमन्त्रण, आह्वान, नौता ।
न्योला दे० (पु०) नकुल, नागरिपु ।
न्हाना (क्रि०) स्नान करना ।

प

प व्यञ्जन वर्ण का इक्कीसवाँ अक्षर है । इसका उच्चारण ओष्ठ से होता है, इस कारण इसे ओष्ठ्य कहते हैं ।
प तद्० (पु०) पवन, वायु, पर्ण, पत्र, पात ।
पवाँर दे० (पु०) पमार, राजपूतों की एक जाति विशेष, परमार क्षत्रिय, अग्निवंशीय क्षत्रिय ।
पवाँरा दे० (पु०) कहानी, कथा, इतिहास ।
पवाँरिया दे० (पु०) भाट, कहानी कहने वाली एक जाति जो नाचती और गाती है ।
पकड़ दे० (स्त्री०) ग्रहण, धरन, रोक ।
पकड़ना दे० (क्रि०) ग्रहण करना, रोकना, धरना, गहना, अशुद्धि बताना । [ग्रहण कराना ।
पकड़ाना दे० (क्रि०) धरवा देना पकड़वा देना,
पकना दे० (क्रि०) सीझना, रँधना, पक्व होना ।
पकला दे० (वि०) घाव, व्रण, फोड़ा फुंसी ।
पकवाई दे० (स्त्री०) पकाने का काम, सिद्ध करने का काम, पकाने की मजूरी । [घी में बनी हुई सामग्री ।
पकवान दे० (पु०) पकान्न, पकाया हुआ अन्न, मिठाई,
पकवाना दे० (क्रि०) सीझाना, बनवाना, रँधाना ।
पका दे० (वि०) पक्व, पका हुआ, सिद्ध ।—पकाया (वा०) पक्व बना हुआ, तैयार, सिद्ध, पकाकर रखा हुआ, तैयार किया हुआ ।—ई दे० (स्त्री०) पकाने का दाम, पकाने की मजूरी, सिद्धता, तैयारी, पकाव ।—ना दे० (क्रि०) पकवाना, पक्का करना, राँधना, चुराना, सीझाना ।
पकाव दे० (पु०) दृढ़ता, स्थिरता, पुख़्तापन ।
पकोड़ा दे० (पु०) पकौड़ी (स्त्री०) पाक विशेष, बड़ा, फुलौरी, बबरा ।
पक्का दे० (वि०) सीधा हुआ, पकाया हुआ, निपुण, चतुर, दक्ष, सावधान, दृढ़, पोढ़ा, प्रौढ़, सिद्ध, बनाया हुआ ।
पक्की दे० (स्त्री०) पोढ़ी, निखरी ।—रसोई दे० (स्त्री०) वह रसोई जो सखरी न हो, निखरी ।
पक्ति तद्० (स्त्री०) [पच्+क्ति] पाक, पकाना, पकना, पाक करना, सिद्धि, पकाई ।
पक्व तद्० (वि०) [पच्+क्त] परिपक्व, तैयार हुआ, सिद्ध हुआ, वृद्ध, निपुण, विनाश के लिये उन्मुख, निकट विनाश । [घी में बनी हुई खाने की वस्तु ।
पक्वान्न तद्० (पु०) [पक्व+अन्न] मिठाई आदि, केवल
पक्वाशय तद्० (पु०) [पक्व+आशय] नाभि का अधोभाग पक्वस्थान, अन्न पकने का स्थान, अन्नकोष ।
पक्ष तद्० (पु०) पन्द्रह दिन रात, पाख, आधा महीना, अँधेरा और उजेला पाख पक्षियों का अवयव विशेष, पर, पङ्ख, पाँख, डयना, डैना । सहायक, बल, सखा, मण्डल, दल, समूह, पार्श्व, पाँजर, राजकुंजर, पक्षी, वलय, देह का अवयव, देहाङ्ग ।—द्वार (पु०) पार्श्वद्वार, खिड़की का द्वार ।—धर (पु०) चन्द्र, शशधर, संस्कृत के एक प्रसिद्ध पण्डित का नाम (देखो जयदेव) (वि०) पक्ष धारण करने वाले, सहायक, सहाय दाता ।—पात (पु०) तरफ़दारी, अनुचित सहायता दान, एक ओर झुकाव ।—पाती (पु०) पक्षपातकर्त्ता, अनुचित साहाय्यदाता, अन्याय से एक पक्ष की सहायता करने वाला, तरफ़दार ।

पक्षक तद्० (पु०) मित्र, सुहृद्, सहायक, खिड़की।
पक्षाघात तद्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध रोग विशेष, किसी किसी अंग का अवश हो जाना, लकवा का मार जाना।
पक्षान्त तद्० (पु०) [पक्ष+अन्त] पूर्णिमा, अमावस्या, पञ्चदशी पर्व। [पान्तर।
पक्षान्तर तद्० (पु०) भिन्नपक्ष, दूसरा पक्ष, विप
पक्षिराज तद्० (पु०) गरुड़, मयूर, एक प्रकार का घोड़ा।
पक्षिशावक तद्० (पु०) पक्षी के बच्चे।
पक्षी तद्० (पु०) पक्षधारी, परवाले जीव, पक्ष विशिष्ट, चिड़िया, पखेरु, बाण, तीर, विशिख, सहायक।
पक्षीय तद्० (वि०) पक्ष का, दल का, समूह का, ओर का, हिमायती, तरफ़दार।
पक्ष्म तद्० (पु०) अक्षिलोम, परवनी, आँख के बाल, किञ्जल्क, केशर, सूत्र आदि का अत्यल्प भाग, पलक। [पन्द्रह दिन, पाख।
पख तद्० (पु०) पक्ष, पखवारा, आधा महीना,
पखड़ी तद्० (स्त्री०) पुष्प की पत्ती।
पखरौटा दे० (पु०) तबक, सोने या रूपे का पत्र, जो पान के बीड़े या मिठाई पर लगाया जाता है।
पखवारा दे० (पु०) पक्ष, मासार्द्ध, पन्द्रह दिन।
पखा दे० (पु०) पङ्ख, पाँख, पर। यथा—
" पखा मोर धारे लटा शीश सोहै।"
(ज्ञानदीपक)।
पखाउज दे० [देखो पखावज]।
पखान तद्० (पु०) पाषाण, पत्थर, उपल। यथा—
"ज्यों पनिहारी लेवरी, खैंचत करत पखान।
तुलसी रसना राम कहु, पाप क्रितिक अनुमान॥"
पखारना दे० (क्रि०) प्रक्षालन करना, धोना, खवालना, साफ़ करना, शुद्ध करना।
पखारे दे० (क्रि०) धोये, प्रक्षालन किये, शुद्ध किये।
पखाल दे० (स्त्री०) धुर, मसक, बड़ी मसक, चर्म निर्मित जलपात्र, यह एक प्रकार का चाम का बड़ा चौकोन थैला होता है जिसमें जल लाते हैं। मारवाड़ आदि देशों में जहाँ जल की महँगी है वहाँ ऐसे थैले विशेष पाये जाते हैं।
पखावज दे० (पु०) मृदङ्ग, एक प्रकार का बाजा।
पखावजी दे० (पु०) पखावज बजानेवाला।
पखेरू दे० (पु०) पक्षी, चिड़िया, पञ्छी।
पखेस दे० (पु०) छाया, चिन्ह, मुद्रा, छाप, छाप।
पखोर दे० (पु०) ठोकर, लात की ठोकर।
पखोरन दे० (पु०) ठोकरें, यह पखोर शब्द का बहुवचन है। [मारना, लात से मारना।
पखोरना दे० (क्रि०) ठोकर मारना, लात का धक्का
पखोड़ा या पखौरा दे० (पु०) पार्श्व की हड्डी, कन्धे की हड्डी।
पग दे० (पु०) पद, पाँव, पैर, चरण, गोड़।—डण्डी, या दण्डी (स्त्री०) छोटा मार्ग, बिना बनाया हुआ मार्ग, पदचिन्ह, लीक, गुप्तमार्ग।—धारना (क्रि०) पधारना, जाना।—पर ताल बजाना (क्रि०) नाचना और पैर से ताल बजाते जाना।
पगड़ी दे० (स्त्री०) पाग, पगिया, सिरबन्धा, सिर बाँधने का वस्त्र विशेष, उष्णीष, चीरा।
पगना दे० (क्रि०) निमज्जित होना, डूबना, डूब जाना, रस में डूबना, मग्न होना, लीन होना।
पगला दे० (पु०) पागल, उन्मत्त, मूर्ख, सिड़ी।
पगहा दे० (पु०) बड़ी रस्सी, जिससे बैल भैंस आदि बाँधे जाते हैं।
पगहिया, पगही दे० (स्त्री०) छोटा पगहा।
पगा दे० (वि०) रस में डुबाया हुआ, चीनी के रस में डुबाया गया। [गारा, गीली मिट्टी।
पगार दे० (पु०) भीत बनाने के लिये गीली मिट्टी,
पगारनि दे० (स्त्री०) मुंडेरा, छत की चारों ओर जो कुछ ऊँचा बना होता है। यथा:—
"अति उच्च अगारनि बनी पगारनि
अनु चिन्तामणिनार।"
—रामचन्द्रिका।
पगिया दे० (स्त्री०) पगड़ी, पाग, चीरा।
पगु दे० (पु०) पाँव, पैर, पद, चरण।
पगुराना दे० (क्रि०) रोमन्थ करना, चबाये हुए को पुन. चबाना, जुगाली करना।
पङ्क तद्० (पु०) कर्दम, काँदा, काँदो, पाँक, कीचड़। —ज (पु०) कमल, पद्म, सरोरुह पुण्डरीक। —निधि (पु०) समुद्र, सागर।—रुह (पु०) कमल पद्म, सरोरुह, सरसिज।

पङ्किल तद्० (वि०) कर्दममय, पङ्कयुक्त ।
पङ्केरुह तद्० (पु०) पद्म, कमल, सारस नामक पक्षी विशेष ।
पङ्कुर (पु०) सेतु, सोपान, सिवार, बाँध, सीढ़ी ।
पङ्किल (पु०) कर्दम वाली जगह । (पु०) नौका, नाव ।
पंक्ति तद्० (स्त्री०) सजातीय संस्थान विशेष, एक समाज के मनुष्यों की बैठक, पाँति, पाँत, पङ्गत, धारी, लकीर, श्रेणी, कतार, पद्य का छन्द विशेष, दस की संख्या, पृथिवी, गौरव, प्रतिष्ठा, पाक, जन-समूह, सभा ।—चर (पु०) कुररपक्षी, कुलङ्ग ।
—दूषक (पु०) अपाङ्क्तेय, श्राद्ध भोजी ब्राह्मण, श्राद्ध में भोजन करने वाला ब्राह्मण, पतित ब्राह्मण ।—पावन (पु०) पंक्ति को पवित्र करने वाला, श्रोत्रिय ब्राह्मण ।
पंख दे० (पु०) पाँति, पर, डयना, डैना ।
पंखड़ी दे० (स्त्री०) पँखड़ी, कली, फूल की पत्ती ।
पंखा दे० (पु०) बिजना, व्यजन, बेना ।
पंखिया दे० (वि०) झगड़ालू, बखेड़िया, दुराचारी, कुकर्मी । (स्त्री०) छोटा पंखा ।
पंखी दे० (स्त्री०) छोटा पंखा, चिड़िया, पखड़ी ।
पंगत दे० (स्त्री०) पाँति, धारी, श्रेणि, कतार ।
पंगला दे० (वि०) लंगड़ा, पंगुल । [का कृत्रिम नून ।
पंगा दे० (वि०) पतला, पानीसा, पनिहा, एक प्रकार
पंगास दे० (पु०) मछली का एक भेद ।
पंगु तद्० (वि०) पादविकल, चलने में असमर्थ, लंगड़ा, लूला, पादहीन । (पु०) शनिग्रह ।
पंगुल तद्० (पु०) श्वेताश्व, शुक्लवर्ण का घोड़ा, श्वेत कौंच के समान घोड़ा । (वि०) पंगु ।
पचक दे० (स्त्री०) पचकन, शुष्कता, सुखाई, उतार ।
पचकना दे० (क्रि०) पचकना, सूखना, शुष्क होना, गलना, सूख कर सिकुड़ जाना । [विभाग हों ।
पचखना दे० (वि०) पाँच खण्ड वाला, जिसमें पाँच
पचघरा दे० (वि०) पाँच घर वाले मकान ।
पचतोलिया दे० (पु०) वस्त्र विशेष, ओढ़नी की सारी ।
पचना दे० (क्रि०) सड़ना, गलना, नष्ट करना, उद्योग करना, परिश्रम करना, अधिक परिश्रम से थक जाना, हज़म होना ।
पचपचाना दे० (क्रि०) अत्यन्त सड़ना, पसीजना ।
पचपन दे० (वि०) संख्या विशेष, पचास और पाँच, ५५ । [मकान, पचखण्डा ।
पचमहला दे० (वि०) पचखना, पाँच महल का
पचमान तद्० (पु०) पकाने वाला, पकाता हुआ ।
पचमिल दे० (वि०) मिलित, मिश्रित ।
पचमेल दे० (वि०) पचमिल, पाँच वस्तुओं का मिला-वट, मिश्रित, घालमेल । [में पाँच लर हों ।
पचलड़ी दे० (स्त्री०) पाँच लर का हार, जिस हार
पचलोना दे० (पु०) औषध विशेष, एक औषधि का नाम जिसमें पाँचों नमक पड़े हों ।
पचा डालना दे० (क्रि०) पचाना, खा जाना, जीर्ण कर देना, हड़प जाना, दबा लेना ।
पचानवे दे० (वि०) संख्या विशेष, नब्बे पाँच, ९५ ।
पचाना दे० (क्रि०) पकाना, जीर्ण करना, हजम करना, सड़ाना ।
पचाव दे० (पु०) जीर्ण, पकाव, पचना, पक हो जाना ।
पचास दे० (वि०) संख्या विशेष, पाँच दहाई, ५० ।
—क दे० लगभग पचास के ।
पचासी दे० (वि०) संख्या विशेष, अस्सी पाँच, ८५, पाँच अधिक अस्सी ।
पचि तद्० (क्रि०) पच कर, हजम हो के, शुष्क हो के, घुल कर, जी तोड़ कर। [पाँच अधिक बीस ।
पचीस दे० (वि०) संख्या विशेष, बीस पाँच, २५,
पचीसा दे० (स्त्री०) एक प्रकार का खेल का नाम, यह खेल सात कौड़ियों से खेला जाता है ।
पचूका दे० (पु०) पिचकारी, दमकला ।
पचोतर दे० } (पु०) पञ्चशत, पाँच अधिक सौ,
पचोतरा दे० } पाँच रुपये सैकड़ा ।
पचौनी दे० (स्त्री०) पाकाशय, आमाशय, अन्न पचने का स्थान, ओझ, ओज, पटा ।
पच्चड़ दे० (पु०) कील, खूँटी, मेख, बड़ा खूँटा ।
—मारना (वा०) सिखलाना, सताना, दुःख देना, बाड़ देना, होते हुए किसी काम में विघ्न डालना, किसी के काम को भ्रष्ट देना ।
पच्ची दे० (वि०) लगा हुआ, संलग्न, संयुक्त, आसक्त, सटा हुआ ।—होना (वा०) दो वस्तुओं को सटाना, किसी चीज़ से दो वस्तुओं को जोड़

देना, बहुत प्रेम करना, अतिशय प्रेम होना।
—कारी (स्त्री०) जड़ाई, खुदाई, गहनों पर नग आदि खोदने का काम, जड़ाऊ गहने बनाना, रफू करना, टाँका मारना, सुधारना, जुड़ाई करना।

पच्छम, पच्छिम तद्० (पु०) पश्चिम, वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होते हैं।

पच्छी तद्० (पु०) पक्षी, चिड़िया, पखेरु।

पछाड़ दे० (स्त्री०) पटकन, पछकन, गिराना। —खाना (धा०) सिर के बल गिरना, बेढंग गिरना, चित गिरना। [देना।

पछाड़ना दे० (क्रि०) गिराना, पटकना, भूमि में गिरा

पछताना दे० (क्रि०) पश्चात्ताप करना, पछतावा करना, पीछे से किसी बात पर दुःख करना, शोक करना, खेद करना, अनुताप, वश न रहने के कारण अप्रिय किसी कार्य के हो जाने से जो दुःख होता है वह पश्चात्ताप कहा जाता है।

पछतावा दे० (पु०) पश्चात्ताप, शोक, खेद, अनुताप।

पछनी दे० (स्त्री०) एक अस्त्र का नाम, जिससे फोड़े आदि चीरे जाते हैं, छुरा, नहरनी।

पछपात तद्० (पु०) पक्षपात, सिफारिश, किसी ओर का साथ।

पछवा दे० (स्त्री०) पश्चिमवात, पच्छिम की हवा, जो पवन पच्छिम की ओर से आता है। [दिशा के देश।

पछाँह दे० (पु०) पश्चिम दिशा, पश्चिमदेश, पश्चिम

पछियाव दे० (स्त्री०) पश्चिम हवा, पछवा बयार।

पछोड़ना } (क्रि०) फटकना, सूप से फटक कर
पछोरना } साफ़ करना।

पजावा दे० (पु०) भट्ठा जहाँ ईंटें आदि पकायी जाती हैं।

पजेब दे० (स्त्री०) घूँघरू, पाँव का गहना, नूपुर।

पजोड़ा दे० (वि०) निकम्मा, दुष्ट, दुश्चरित्र, अधम, नीच।

पञ्च तत्० (वि०) संख्या विशेष, पाँच, ५। (पु०) चौधरी, समाज का अगुआ, पञ्चायत में बैठ कर विचार करने वाला, मध्यस्थ, विचारकर्त्ता। —कपाल (पु०) यज्ञ विशेष। —कषाय (पु०) औषध विशेष। - कोश (पु०) अन्नमय, प्राणमय, मनोमय विज्ञानमय और आनन्दमय ये पाँच कोश। —गव्य (पु०) गौ के पाँच पदार्थ दही, दूध, गोमूत्र, गोमय, गोघृत। —चामर (पु०) छन्द विशेष, यह छन्द सोलह अक्षरों का होता है, इसमें एक अक्षर लघु और एक अक्षर गुरु होता है। —चूड़ा (स्त्री०) अप्सरा विशेष, स्वर्गीय वेश्या विशेष। —जन (पु०) दैत्य विशेष, असुर विशेष, यह असुर पाताल में रहता था, भगवान् श्रीकृष्ण ने उसे मारा था, इसकी हड्डी से जो शङ्ख बना है उसे पाञ्चजन्य कहते हैं, वह भगवान् कृष्ण का प्रिय शङ्ख है। —ज्योनार (पु०) पाँच प्रकार का भोजन, भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य, पेय, पंचों की ज्योनार। —तत्व (पु०) पञ्चभूत, आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथिवी। - तन्त्र (पु०) पाँच प्रकार के तन्त्र, मारण, मोहन, वशीकरण उच्चाटन, और विक्षेपण, इस नाम की एक पुस्तक। —तन्मात्र (पु०) पृथिवी आदि सूक्ष्म पञ्चभूत, रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श। —ता या त्व (स्त्री०) मृत्यु मरण, निधन, काल धर्म, पञ्चत्व। —थु (पु०) वसन्त, कोकिला। —दश (वि०) पन्द्रहवाँ संख्या, पन्द्रह को पूर्ण करने वाली संख्या। —दशानर्थ (पु०) पन्द्रह प्रकार के अनर्थ, यथा,—चोरी, हिंसा मिथ्या, दम्भ, काम, क्रोध, विस्मरण, वैर, अप्रतीत, भेद, खेद, चिन्ता, क्षोभ गर्व, स्पर्द्धा। —धा (पु०) पाँच प्रकार, पञ्चविध। —नख (पु०) मनुष्य, वानर, हस्ती, कूर्म व्याघ्र, शशक, गोह, गोधी गेंडा, कूर्म। —नद (पु०) देश विशेष, पञ्जाब देश, वह देश जहाँ पाँच नदी हैं। सतलज, व्यास, रावी, चनाब, झेलम। —पाण्डव (पु०) पाण्डु राजा के पाँच पुत्र यथा युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। —पात्र (पु०) पूजा का पात्र विशेष, पाँच पात्रों से किया जाने वाला, पार्वण श्राद्ध विशेष। —प्राण (पु०) शरीरस्थ, प्राणादि पाँच वायु, यथा—प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान। —भद्र (पु०) घोड़ा जिसके ५ शुभ लक्षण हों। भूत (पु०) पञ्चतत्व, पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश। —भूतात्मा (पु०) देही, प्राणी, शरीरी। —मकार (पु०) वाममार्गियों की

उपासना, मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन ।—महायज्ञ (पु०) गृहस्थों के पाँच प्रकार के नित्य कर्म, यथा—ब्रह्मयज्ञ पितृयज्ञ, देवयज्ञ, नृयज्ञ, और भूतयज्ञ अर्थात् पाठ, तर्पण, हवन, अतिथिसेवा और पूजा ।—मुख (पु०) श्रीमहादेव ।—मुद्रा (स्त्री०) देव पूजा में नित्य की जाने वाली पाँच मुद्राएँ — यथा आवाहनी, स्थापनी, सन्निधानी, सम्बोधनी और सम्मुखीकरणी ।—रङ्गी (वि०) विचित्र वर्ण, अनेक प्रकार के रंगों से रंगा ।—रत्न (पु०) सुवर्ण आदि पाँच प्रकार के रत्न, यथा—सुवर्ण, रौप्य, मुक्ता, स्फटिक, ताँबा ।—रात्र (पु०) ग्रन्थ विशेष, श्रीवैष्णवशास्त्र का ग्रन्थ ।—वक्र (पु०) शिव, महादेव ।—वटी (स्त्री०) पाँच प्रकार के वृक्षों का समूह, एक स्थान का नाम, जो गोदावरी नदी के तीर पर है, वनवास के समय कुछ वर्षों तक श्रीरामचन्द्र जी वहीं रहते थे ।—शर (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ ।—शाख (पु०) हाथ, कर, हस्त ।—शिख (पु०) सिंह, केसरी, ऋषि विशेष, ये विख्यात दार्शनिक आसुरि के शिष्य थे । आसुरी प्रसिद्ध सांख्य दर्शन के रचयिता महर्षि कपिलदेव के शिष्य थे । पञ्चशिख ने ही सांख्य दर्शन का प्रचार किया है । आसुरि की स्त्री का नाम कपिला था । पञ्चशिख ने पुत्र भाव से गुरुपत्नी कपिला के स्तन्यपान किये थे इसी कारण इनको बहुत लोग कपिलापुत्र भी कहते हैं ।—सूना (स्त्री०) प्राणियों के वध के पाँच स्थान यथा—चूल्हा, चक्की, ऊखल, बढ़नी और घड़ा रखने का स्थान ।

पञ्चक तद्० (पु०) धनिष्ठा से लेकर रेवती तक पाँच नक्षत्र, पाँच सख्या, पञ्चम सम्बन्धीय ।

पञ्चकी दे० (स्त्री०) पानी के ज़ोर से चलने वाली चक्की, जलयन्त्र, एक प्रकार का यन्त्र जो पानी के धक्के से चलता है, इससे आटा आदि पीसा जाता है ।

पञ्चम तद्० (वि०) पाँच की सख्या को पूरण करने वाली सख्या, वीणा आदि से उत्पन्न स्वर विशेष ।

पञ्चमी तद्० (स्त्री०) चन्द्रमा की पाँचवीं कला की क्रिया का काल, तिथि विशेष, पाँचवीं तिथि, पक्ष की पाँचवीं तिथि ।

पञ्चाङ्ग तद्० (पु०) पत्रा, पत्रिका, ग्रह, नक्षत्र, तिथि आदि देखने का पत्रा, जंत्री ।

पञ्चाङ्गुल तद्० (वि०) पाँच अँगुलि परिमाण युक्त ।

पञ्चाङ्गुली तद्० (स्त्री०) पाँच अँगुलियाँ, पाँचों अँगुली, यथा—अँगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा ।

पञ्चाध्यायी तद्० (स्त्री०) श्रीमद्भागवत के रास मण्डल के पाँच अध्यायों का समुदाय, रासपञ्चाध्यायी ।

पञ्चानन तद्० (पु०) सिंह, केसरी, शेर, महादेव, शिव, शङ्कर ।

पञ्चामृत तद्० (पु०) शर्करा, दुग्ध, घृत, दधि और मधु, इन पाँचों वस्तुओं के मेल से बनी हुई वस्तु, यह वस्तु भगवान् के स्नान के लिये बनाई जाती है ।—योग (पु०) औषधि विशेष, गुरुच, गोखुर, मूसली, मुण्डिका और शतावर, इनके योग से बनी औषधि ।

पञ्चाम्नाय तद्० (पु०) शिव के पाँच मुख से निकला हुआ पाँच प्रकार का शैवशास्त्र, तन्त्रशास्त्र ।

पञ्चायत दे० (स्त्री०) जातीय सभा, जो किसी विवाद को शान्ति करने के लिये होती है, विचार करने की सभा ।

पञ्चाल तद्० (पु०) देश विशेष, पञ्जाब देश ।

पञ्चालिका तद्० (स्त्री०) वस्त्र आदि की बनाई हुई पुतली, कठपुतली, गुड़िया, गीत विशेष, द्रौपदी, पाञ्चाल देश की राजकन्या ।

पञ्चावस्था तद्० (स्त्री०) मनुष्यों की पाँच अवस्थाएँ, यथा—बाल्य, कुमार, पौगण्ड, युवा और वृद्ध ।

पञ्चीकरण तद्० (पु०) पञ्चभूत के भागों का मिलान, सृष्टि प्रकरण का एक सिद्धान्त ।

पञ्चेन्द्रिय तद्० (पु०) पाँच इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रिय या कर्मेन्द्रिय ।

पञ्चों दे० (पु०) साथी, सङ्गी, मित्रमण्डल ।

पञ्छाला दे० (पु०) गुड्डी की पूँछ ।

पञ्छी दे० (पु०) पक्षी, पखेरू, चिड़िया ।

पञ्जर तद्० (पु०) शरीर की हड्डियों का समूह, पाँजर, पसली, ठठरी, पिंजड़ा, पक्षियों के रहने के स्थान, पिञ्जरा।

पञ्जिका तद्० (स्त्री०) पुस्तक विशेष, जिससे तिथि वार आदि जाने जाते हैं, पचाङ्ग, तिथिपत्र।

पञ्जीरी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का देवता का प्रसाद, कसार, घी में आटा भून कर और सरकरा मिला कर जो पदार्थ बनता है।

पट तद्० (पु०) वस्त्र, वसन, कपड़ा, कपड़े का बना हुआ चित्र, पर्दा, यवनिका, शब्द विशेष जो आघात से उत्पन्न होता है, गिरने या मारने का शब्द, किवाड़, देवमन्दिर का किवाड़, तिर्यक्, सीधा।—कार (पु०) तन्तुवाय, चत्र, निर्माणकर्त्ता।—कुटी (स्त्री०) कपड़े का घर, तम्बू, क़नात।—मञ्जरी (स्त्री०) एक रागिनी का नाम।—मण्डप (पु०) चंद्रगृह, तम्बू।—वेश्य (पु०) कपड़े का घर, डेरा, शामियाना।

पटक तद्० (पु०) डेरा, क़नात, पड़ाव, छावनी, शिविर, सेना के रहने का स्थान।

पटकन दे० (स्त्री०) पछाड़, पटकी, चोट।—खाना (वा०) पछाड़ खाना, गिरना।

पटकना दे० (क्रि०) पछाड़ना, गिराना, नीचे गिराना।

पटका दे० (पु०) कमरबन्द, कमर बाँधने का वस्त्र।—जाना (क्रि०) पछाड़ा जाना, गिराया जाना।

पटकाना दे० (क्रि०) गिराया जाना, पछाड़ा जाना।

पटच्चर (पु०) चिथड़ा, पुराना कपड़ा।

पटड़ा दे० (पु०) सिल्ली, तख़्ता, पटरी, पीढ़ा।

पटतर दे० (पु०) उपमा, बराबरी, समता, उदाहरण, मिसाल।

पटन दे० (पु०) पाटन, छावन, कोठा आदि की पटरी से पाटना, छत पाटना, छत बनाना।

पटना दे० (क्रि०) पाटना पाटन करना, छावना, भर पाना, वसूल हो जाना, हुंडी आदि के रुपये मिल जाना, सींचना, पानी सींचना, भरना, छाया जाना। (पु०) नगर विशेष पाटलीपुत्र, यह नगर किसी समय बिहार की राजधानी था।

पटनि (स्त्री०) कपड़े, वस्त्र।

पटनी दे० (स्त्री०) नैया, माँझी, कर्णधार, केवट।

पटपट (पु०) शब्द विशेष, अव्यक्त शब्द जो चना आदि के भूजने से या मारने से होता है।

पटपर दे० (वि०) बंजर, ऊसर।

पटरा दे० (पु०) पटड़ा, तख़्ता।

पटरानी तद्० (स्त्री०) बड़ी रानी, महिषी, महारानी, राजा की वह स्त्री जिसका राजा के साथ अभिषेक हुआ हो, पटरानी।

पटरी दे० (स्त्री०) छोटा पटरा, तख़्ता।

पटल तद्० (पु०) परदा, छपना, किवाड़, परवर।

पटली (स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, पाँत, कूचे पर बैठने की काठ की पटरी। [रेशम या डोरे में पिरोते हैं।

पटवा दे० (पु०) जाति विशेष, जो आभूषणों को

पटवाना दे० (क्रि०) रुपये भरवाना, रुपये वसूल कर लेना, सिंचवाना, किसी गढ़े को भरवाना।

पटवारी दे० (पु०) गाँव का हिसाब रखने वाला, भूमि का लेखा रखने वाला।

पटह तद्० (पु०) भेरी, दुन्दुभि, नगारा।

पटा दे० (पु०) पाट, काष्ठासन, जिस पर बैठ कर भोजन या देव पूजन आदि किया जाता है। पीढ़ा, गदका। [पटाक शब्द।

पटाक (पु०) किसी छोटी चीज़ के गिरने का

पटाका दे० पटाखा } (पु०) छड़ाका, शब्द विशेष, एक प्रकार की आतिशबाज़ी, अग्निक्रीड़ा।

पटाना दे० (क्रि०) सींचना, पानी देना, चौका देना, लीपना, गोबर से या मिट्टी से लीपना, पोतना। कड़ी और पटरी से छत को बन्द कराना। हुँडी के रुपये भरना, विवाद मिटाना, विस्तृत होना, फैल जाना, किसी गर्त को मिट्टी से भरवाना।

पटापट दे० (पु०) मारने का शब्द, अव्यक्त शब्द विशेष।

पटाव दे० (पु०) सिंचाई, छवाई, द्वार के ऊपर का काठ, छत की कड़ी पर तख़्ता आदि रख कर मिट्टी का भराव देना।

पटिया दे० (स्त्री०) पटरी, पटा, सिल्ली, सिर की बनाई चोटी, स्लेट, पट्टी। (पु०) एक गहना जो गले में पहना जाता है, पटिया, हुमेल।

पटीना दे० (पु०) एक प्रकार के पक्षी का नाम।

पटीमा दे० (पु०) छापने का पटरा, जिस तख़्ते पर कपड़े रख कर छीपी लोग छापते हैं।

पटोर तद्० (पु०) चलनी, चालनी, किनारी, खेत, चारिद, मेघ वेणुसार, पशरोधन, वातरोग विशेष, चन्दन, खदिर, खैर, उदर, जठर,पेट, कन्दर्प।

पटोलना दे० (क्रि०) निचोड़ना, चूसना, सार निकाल लेना, मारना, पीटना, फुसलाना।

पटु तद्० (वि०) दक्ष, निपुण, नीरोग, चतुर, कुशल, होशियार, चालाक, सुन्दर, तीक्ष्ण, स्फुट, निष्ठुर दयाहीन, धूर्त, शठ। (पु०) पटोल, परोरा, परवर, करेला।—ता (स्त्री०)।—त्व (पु०) चतुराई, दक्षता, कुशलता, निपुणता।

पटुवा दे० (पु०) पटवा, रेशम का काम करने वाला, रेशम से माला आदि गूँथने का काम करने वाला, पटहरा जो बाजू वैरखी पिरोते हैं।

पटूका दे० (पु०) पटका, कमरबन्द, कटिबंधन, कमर बाँधने का कपड़ा।

पटूत दे० (पु०) पुरुषत्व, पुरुषार्थ, पटुता, चतुरता।

पटूवा दे० (पु०) पाट, सन विशेष, जिसकी रस्सी तथा कपड़े कम्बल आदि बनते हैं।

पटेर दे० (पु०) एक पौधे का नाम, गोंदी।

पटेरा दे० (पु०) एक तरह का वृक्ष।

पटेल दे० (पु०) लठवाजी का काम, प्रमुख, अधिकार, जाति विशेष, कुरमी जाति का सरपञ्च, गाँव का मुखिया, अगुवा, गुजरात महाराष्ट्र आदि प्रान्तों के कायस्थों की एक पदवी।

पटेला दे० (पु०) एक प्रकार की नाव, बजरा।

पटेली दे० (स्त्री०) छोटा पटेला, छोटी नाव।

पटैत दे० (पु०) लठैत, ठेंगैत, लठ चलाने की क्रिया में कुशल, पटेबाज़।

पटैला (पु०) देखो पटेला।

पटोतन दे० (पु०) पटन, पाटन, तख़्ते से घर पाटना।

पटोर दे० (पु०) रेशमी वस्त्र, रेशमी डोरा, पटुवा, पाट के बने कपड़े।

पटोल तत्० (पु०) परवर, परोरा, परवल।

पटोलिका (स्त्री०) सफ़ेद फूल की तुरई।

पटोहिया दे० (पु०) वगल, पेंचा, बलूक।

पटौनी दे० (पु०) पटेली नाव, नैया।

पट्ट तद्० (पु०) पाटी, रेशमी सन के कपड़े, कौशेय वस्त्र, पगड़ी।—महिषी (स्त्री०) प्रधान महारानी, पटरानी।—शिष्य तद्० (पु०) प्रधान चेला।

पट्टन तद्० (पु०) नगर, पत्तन, बड़ा ग्राम, शहर।

पट्टा दे० (पु०) घोड़े की पेटी, कुत्ते के गले में बाँधने का चमड़ा, कानों के पास रखे हुए बाल, पक्का नामा, किसी प्रकार का अधिकार पत्र।

पट्टी दे० (स्त्री०) पाटी, फोड़ा बाँधने का कपड़ा, किसी वस्तु का भाग, लिखने की पटिया, तख़्ती।

पट्टू दे० (पु०) एक प्रकार का गरम कपड़ा जो ऊन का होता है, जिसे पट्टू भी कहते हैं।

पट्ठा दे० (पु०) नवयुवा, पहलवान, कुश्ती लड़ने वाला, पाठा, जवान हाथी, नस, सिरा।

पठन तद्० (पु०) पाठ, पढ़ना, अध्ययन।

पठनीय (गु०) पढ़ने योग्य।

पठाना दे० (क्रि०) भेजना, रवाना करना, पठवाना।

पठानी (क्रि०) रवाना करना, भेजना, पठवाना।

पठावनी (स्त्री०) पठाने की उजरत।

पठित (गु०) पढ़ा हुआ। [छोटी बकरी।

पठिया दे० (स्त्री०) युवती, तरुणी, जवान स्त्री,

पठौना दे० (क्रि०) पठाना, भेजना, पठवाना।

पठौनी दे० (स्त्री०) पठाने की मजूरी, भेजने का दाम, भिजवाने की उजरत, सौगात जो लड़की के घर वालों की ओर से वर के घर वालों के यहाँ भेजी जाती है।

पड़ जाना दे० (क्रि०) पटका जाना, पछाड़ खा जाना, गिरना।

पड़ना दे० (क्रि०) गिरना, पटकना, झड़ना, घट जाना, ठहर जाना, डेरा करना।

पड़वा तद्० (स्त्री०) प्रतिपदा, परवा, परेवा।

पड़पड़ाना दे० (क्रि०) चड़चड़ाना, बिना प्रयोजन की बातें करना, पीटना, खूब पीटना, जलना।

पड़रहना दे० (वा०) सो रहना, काम छोड़ देना, हताश होना, निराश हो जाना।

पड़रा दे० (पु०) भैंस का बच्चा, पड़वा।

पड़ा दे (पु०) पड़वा, भैंस का बच्चा।

पड़ापड़ दे० (अ०) बार बार मार के, खूब मार के, धमाधम पीटकर।

पड़ापाना दे० (क्रि०) अनायास पाना, सहज से पाना, बिना परिश्रम पा लेना, गिरा पाना।

पड़ाव दे० (पु०) शिविर, सन्निवेश, सेना के ठहरने का स्थान, छावनी, डेरा, कंप्, मार्ग का वास-स्थान।

पड़िया दे० (स्त्री०) भैंस की बच्ची, पाड़ी।

पड़ोस दे० (पु०) प्रतिवास, समीपवास, सन्निकटवास।

पडोसी दे० (पु०) प्रतिवासी, समीपवासी पास पास रहने वाले आपस में पड़ोसी हैं।

पढ़न दे० (स्त्री०) पढ़ने की चाल, अध्ययन की रीति, अभ्यास।

पढ़ना दे० (क्रि०) पाठ पढ़ना, अध्ययन करना, अभ्यास करना, बाँचना, सीखना, रटना, घोखना।

पढ़न्त दे० (स्त्री०) अध्ययन, पाठ, सन्ध्या, सबक़।

पढ़ा दे० (वि०) पण्डित, पढ़ा हुआ।—गुना (वि०) —लिखा (वि०) पढ़ा हुआ, प्रवीण, अभिज्ञ।

पढ़ाना दे० (क्रि०) सिखाना, सिखलाना, शिक्षा देना, विद्याध्ययन कराना, पाठ पढ़ाना।

पढ़िन दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली।

पण तद्० (पु०) प्रतिज्ञा, वचन, होड़, शर्त, बीस गण्डे कौड़ी का परिमाण, व्यवहार, लेन देन का व्यापार, मूल्य, वेतन।—न तद्० (पु०) बेचना, विक्रय करना, दूकान चलाना।

पणव (पु०) छोटा नगाड़ा।

पणित तद्० (वि०) बेचा गया, बेचा हुआ, विक्रीत, शर्त किया हुआ, स्तुत, स्तुति किया हुआ।

पण्ड (स्त्री०) मति, बुद्धि। [(स्त्री०) मति, बुद्धि।

पण्डा दे० (पु०) पुजारी, देवपूजक, तीर्थ पुरोहित।

पण्डित तद्० (पु०) विद्वान्, पढ़ा हुआ, अध्यापक, पढ़ाने वाला—मन्य (पु०) पण्डिताभिमानी, विद्याभिमानी, मूर्ख।

पण्डिता (स्त्री०) पढ़ी लिखी औरत, शिक्षिता स्त्री, विदुषी स्त्री।—ई दे० (स्त्री०) पण्डित का काम, कर्मकाण्ड आदि कराने का कृत्य।

पण्डिताइन दे० (स्त्री०) पण्डित की स्त्री।

पण्डुक दे० (पु०) पक्षी विशेष, घुग्घू।

पण्डुकी दे० (स्त्री०) जल का पक्षी विशेष।

पण्य (पु०) बेचने योग्य वस्तु, व्यवहार की वस्तु, बेचने के लिये बाज़ार में रखी हुई वस्तु।—वीथी (स्त्री०) हाट, बाज़ार, दूकान।—शाला (स्त्री०) दूकान, हाट, बाज़ार। (स्त्री०) वेश्या, वाराङ्गना, पतुरिया।

पत दे० (स्त्री०) सुख्याति, बड़ाई, प्रतिष्ठा, कीर्ति, यश।—ज (पु०) परिंद, पक्षी।

पतङ्ग तद्० (पु०) सूर्य, पक्षी, फतिङ्गा, टिड्डी, गुड्डी, कनकौआ, उड़ने वाला क्रीड़ा, एक प्रकार की लकड़ी जिससे रङ्ग निकाला जाता है।

पतङ्गा दे० (पु०) फतिङ्गा, चिनगारी, चिनगी, स्फुलिङ्ग, अग्नि के छोटे छोटे कण।

पतञ्जलि } तद्० (पु०) व्याकरण महाभाष्यकर्त्ता
पतञ्जली } ऋषि इन्होंने पाणिनि के सूत्रों पर भाष्य बनाया है। योगदर्शनकार पतञ्जलि और व्याकरण महाभाष्यकार पतञ्जलि दोनों एक ही व्यक्ति थे। कात्यायन ने पाणिनि के सूत्रों का खण्डन किया और पाणिनि के पक्षपाती पतञ्जलि ने कात्यायन के वार्तिकों का अपने भाष्य में खण्डन किया। इन्होंने एक वैद्यक का भी ग्रन्थ बनाया है। भारत के पूर्व भागस्थ गोनर्द प्रदेश के ये वासी थे, इनकी माता का नाम गोणिका था। पुरातत्त्ववेत्ता पण्डितों ने महाभाष्यके शब्दों और वाक्योंके आधार पर पतञ्जलि का समय निर्णय कर दिया है "मौर्यैर्हिरण्यार्थि भिरर्चाः प्रकल्पिता" इस वाक्य के टुकड़े से यह अवश्य मानना होगा कि चन्द्रगुप्त के पीछे पतञ्जलि हुए हैं। अतएव उन विद्वानों ने ईसवी सन् के १८० वर्ष पूर्व पतञ्जलि का समय माना है। इसी प्रकार और प्रमाणों के आधार पर यूनानी मिनिण्डर और पाटलि पुत्र (पटना) के राजा पुष्पमित्र के समकालीन वे पतञ्जलि को मानते हैं।—

पतझड़ दे० (पु०) एक ऋतु का नाम, जिस ऋतु में वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं, वसन्त।

पतन तद्० (पु०) [पत्+अनट्] पछाड़, पटकन, पड़न, गिरन, स्खलन।

पतत्र तद्० (पु०) पक्ष, पंख, पर, पाँख।—ि (पु०) पक्षी, चिड़िया। [पात्र।

पतद्ग्रह तद्० (पु०) पीकदान, पीकदानी, ष्ठीवन

पतला दे० (वि०) सूक्ष्म, झीना, कृश, दुर्बल, महीन।

पतजाई दे० (स्त्री०) दुर्बलता, दुबलापन।
पतजो (पु०) सरकंडे की पताई।
पतवार दे० (स्त्री०) पन्हर, नाव के पीछे का डाँड जिससे नाव दहिने बाएँ घुमायी जाती है।
पता दे० (पु०) चिन्ह, खोज, सन्धान, ठिकाना।
पताका तद्० (स्त्री०) ध्वजा, झंडा, निशान, फरहरा।
पताकी तद्० (पु०) पताकाधारी, ध्वजाधारी, ध्वजैत, ध्वजावाला।—नी (स्त्री०) सेना।
पति तद्० (पु०) स्वामी, प्रभु, भर्त्ता, रक्षक, धव।—देव,—देवता (स्त्री०) पति को देवता के समान समझने वाली स्त्री, देवबुद्धि से पति ही की सेवा करने वाली, पतिव्रता। यथा.—
"पतिदेवन की गुरु बेटी।
तेरो यश गृत कहावत चेटी॥"
—रामचन्द्रिका।
—व्रता (स्त्री०) कुलवती, पतिदेवता स्त्री, पति की सेवा करने वाली स्त्री।
पतित तद्० (वि०) भ्रष्ट, दोषी, कलङ्की, जातिच्युत, समाजच्युत, अधर्मी। (पु०) अन्त्यज, अछूत जाति, अस्पृश्य जाति।—पावन (पु०) पतितों को पवित्र करने वाला, परमात्मा, परमेश्वर।
पतिमा तद्० (स्त्री०) प्रतिमा, मूर्ति, किसी वस्तु की बनी हुई मूर्ति।
पतिया दे० (स्त्री०) चिट्ठी, पत्र, प्रतीति पत्र, विश्वास का पत्र।
पतियाना दे० (क्रि०) भरोसा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना।
पतियारा दे० (पु०) भरोसा, विश्वास, प्रतीति।
पतिंवरा तद्० (स्त्री०) पतिवरण करने के योग्य स्त्री, विवाह योग्य अवस्था वाली। [चटाई।
पतरी दे० (स्त्री०) चटाई विशेष, एक प्रकार की
पतील दे० (वि०) पतला, झीना, महीन।—ा (पु०) पतुआ, पतुआ।
पतीली दे० (स्त्री०) बटुवी बटुई, बटलोई, देगची।
पतुकी दे० (स्त्री०) मिट्टी की हड़िया, छोटी कड़ाही।
पतुरिया दे० (स्त्री०) वेश्या, नर्तकी, वाराङ्गना।
पतुली (स्त्री०) पहुँचे में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण।
पतुही (स्त्री०) छोटे दानों वाली मटर की छीमी।
पतोहू दे० (स्त्री०) बेटा की स्त्री, पुत्रवधू, बहू।
पतौंवा दे० (पु०) पत्ती, पत्ता, पल्लव, पात।
पत्तन तद्० (पु०) नगर, ग्राम, पुर, शहर।
पत्तर दे० (पु०) पत्र, पत्ता, चिट्ठी, सोने चाँदी या ताँबे का पत्र, जिसमें दान आदि की बातें लिखी जाती हैं।
पत्तल दे० (स्त्री०) पतवार, पतरी, पत्ता।
पत्ता दे० (पु०) पात, पत्र, पत्ती, कानों में पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।—होना (वा०) भाग जाना, निकल जाना, चंपत होना।
पत्ति तद्० (पु०) पैदल चलने वाली सेना, एक प्रकार की सेना का नाम। एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल जिस सेना में हों उसका नाम पत्ति है।
पत्ती दे० (स्त्री०) पाती, पत्र, पंखड़ी, भाँग बूटी।
पत्थर दे० (पु०) पखान, शिला, पाथर, उपल।—छाती पर रखना (वा०) सन्तोष करना, सह लेना, वश न चलने से चुप रह जाना, बहुत बड़ी आपत्ति को धीरज पूर्वक सहना।—पसीजना (वा०) कोमल चित्त होना, सदय होना, दयावान् होना, दुःखी पर दया करना—पानी हो जाना (वा०) कठोर चित्त का भी कोमल हो जाना, क्रूर चित्त में भी दया उत्पन्न होना।—सा फेंक मारना (वा०) बिना समझे बूझे कहना, बात बिना जाने ही उत्तर देना, कठोर बातें कहना, कड़ी बात कहना।—से सिर फोड़ना (वा०) कठिन काम करने के लिये उद्यत होना, मूर्ख को सिखाना, नासमझ को समझाना।—होना (वा०) भारी होना, ठिठक जाना, अचल होना, निर्दय होना।—कला (स्त्री०) पुरानी चाल की बन्दूक।
पत्नी तद्० (स्त्री०) भार्या, स्त्री, दारा, जोरू, कुटुम्बिनी।
पत्यारी दे० (पु०) पतियारा।
पत्र तद्० (पु०) पाती, चिट्ठी, पत्ता, पर्ण, पंख।—दाता (पु०) चिट्ठी देने वाला, चिट्ठी बाँटने वाला, चिट्ठीरसा।—दारक (पु०) आरा, आरी,

वाहक, धातु ।—परशु (स्त्री०) सोने के पत्र काटने वाली कैंची—पाश्या (स्त्री०) सोने का टीका, गहना विशेष, जो मस्तक पर लगाया जाता है, खौर ।—रञ्जक (पु०) पत्र लिखना, चित्र बनाना, रंग चढ़ाना, वरक ।—रथ (पु०) पक्षी, चिड़िया ।—रेखा (स्त्री०) तिलक की रेखा, चन्दन लगाना । [पृष्ठ, वरक ।

पत्रा दे० (पु०) तिथिपत्र, पञ्चाङ्ग, पञ्जिका, पत्ता,

पत्राङ्क तत्० (पु०) पृष्ठ संख्या, पत्रों पर के अङ्क ।

पत्रालय तत्० (पु०) डाकखाना, पोस्ट आफ़िस ।

पत्रिका तत्० (स्त्री०) चिट्ठी, पत्री, पाती ।

पत्री (स्त्री०) देखो पत्रिका ।

पथ तत्० (पु०) मार्ग, राह, रास्ता, बाट, पैंडा, डगर ।

पथर दे० (पु०) पत्थर, पखान ।—कला (पु०) पुरानी चाल की बंदूक ।—चटा (पु०) शाक विशेष, कृपण ।—फोड़ (पु०) कठफोड़वा, पक्षि विशेष ।

पथराना दे० (क्रि०) पत्थर के समान हो जाना, कड़ा होना, व्रण आदि का कड़ा होना, पत्थर से मलना, पत्थर मारना ।

पथरी दे० (स्त्री०) आँकड़, कंकरी, एक प्रकार का रोग, बूटी विशेष, पक्षियों के भीतर का अङ्ग, पथरौटी, कूँड़ी, पत्थर का पात्र ।

पथरीला या पथरीली दे० (वि०) कङ्करीली, जहाँ बहुत कङ्कड़ हों, प्रस्तरमय भूमि । [का बरतन ।

पथरौटी दे० (स्त्री०) पत्थर की कूँड़ी, पथरी, पत्थर

पथिक तत्० (पु०) बटोही, यात्री, पथग, राहगीर, राही, मुसाफ़िर, रास्ता चलने वाला ।

पथिशाहक (पु०) कहार, मजूर ।

पथ्य तत्० (पु०) रोगी का आहार, रोगी का हित-कारी आहार, दाल का जूस आदि ।

पथ्या तत्० (स्त्री०) हड़, हर्रे, हरीतकी, रोगियों के अनुकूल भक्ष्य पदार्थ, हलके गुणकारी भोजन ।

पद तत्० (पु०) पाँव, पैर, चरण, पैर का चिन्ह, पदाङ्क, स्थान, प्रतिष्ठा, मान, आदर, अधिकार, महिमा, शब्द स्वरूप, विभक्ति के साथ का शब्द । —क्रम (पु०) डग, पग ।—ग (पु०) पैदल, पियादा, पैदल चलने वाला ।—गामी (पु०) पद गामी, मनुष्य ।—च्युत (गु०) अधिकारभ्रष्ट, पदभ्रष्ट ।—ज (पु०) पाँव की अँगुलियाँ ।—त्याग (पु०) अधिकारत्याग, स्थानत्याग ।—त्राण (पु०) पद की रक्षा करने वाला, जूता, पगरखी, पनही ।

पदना दे० (पु०) पदक्कड़, पादने वाला, अधिक पादने वाला, डरपोकन, डरपोंक, भीरु ।

पदनी दे० (स्त्री०) दुराचारिणी, व्यभिचारिणी ।

पदपटी दे० (स्त्री०) नृत्य विशेष, एक प्रकार का नाच ।

पदपत्र तत्० (गु०) पुष्करमूल, पुष्करमूल, कमल का पत्र, कमलपत्ता, अधिकारपत्र, पद की नियुक्ति का अधिकारपत्र ।

पदपीठ तत्० (पु०) खड़ाऊँ, जूता ।

पदम तद्० (पु०) पद्म, कमल, सरोरुह ।

पदवी तत्० (स्त्री०) पद्धति, उपाधि, अल्ह, सम्मान सूचक पद, स्वरूप द्योतक शब्द, पन्था, पथ, मार्ग ।

पदवृत्त तत्० (पु०) युक्त शब्द, व्युत्पन्न शब्द, दो शब्दों के मिलने से बना हुआ शब्द, छन्द भेद, जिन शब्दों में अक्षरों का नियम रहता है वे पद वृत्त या अक्षरवृत्त कहे जाते हैं ।

पदस्थ तत्० (वि०) पदारूढ़, पद पर वर्तमान ।

पदाङ्क तत्० (पु०) पदचिन्ह, पैर का दाग़ । - अनु-सरण करना (वा०) पीछे पीछे चलना, अनु-यायी बनना, अनुकरण करना ।

पदाघात तत्० (पु०) लात का आघात, पैर से मारना । [सेना, पैदल सेना ।

पदाति तत्० (पु०) पदातिक, पैदल चलने वाली

पदाना दे० (क्रि०) तङ्ग करना, दुःख देना, चमकाना, डरवाना, हैरान करना, छकाना ।

पदाम्भोज तत्० (पु०) चरण कमल, कमल के समान चरण, कमल तुल्य पद । [कमल तुल्य चरण ।

पदारविन्द तत्० (पु०) [पद+अरविन्द] चरणपद्म,

पदार्थ तत्० (पु०) वस्तु, सामग्री, सामान, तत्व, पद का अर्थ, शब्दों का प्रतिपाद्य, वैशेषिक न्याय के मत से सात वस्तुओं की पदार्थ संज्ञा है—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव, नैयायिकों के मत से सोलह पदार्थ ।

पदासन तत्० (वि०) पादपीठ, पीढ़ा, बैठने का पीढ़ा, आसन विशेष ।

पद्दाड़ा दे० (पु०) पदना, पादने वाला, पदनवा, पदडू। [पाटी, मग।

पद्धति तद्० (स्त्री०) पदवी, मार्ग, पैंडा, डगर, परि-

पद्म तद्० (पु०) जलज, पङ्कज, कमल, संख्या विशेष, सौ नील १००००००००००००००००, व्यूह विशेष, रतिबन्ध, संग्राम, नाग विशेष, पयोधर के पुत्र, बलदेव, रतिबन्ध विशेष। —काष्ठ (पु०) औषधि विशेष, पद्मकाठ। —गर्भ (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता, विधि। —जन्मा (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, पद्म से उत्पन्न। —तन्तु (पु०) मृणाल, पद्म की डंडी। —नाभ (पु०) विष्णु, नारायण। —नेत्र (पु०) पद्मपत्र के समान पत्र विशिष्ट, कमल पुष्प के पत्र के समान जिसकी आँख हो। —पत्र (पु०) पुष्करमूल, कमलदण्ड पत्र। —पलाश—लोचन (पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, पद्मपत्र के समान विस्तृत लोचन। —योनि (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, हिरण्यगर्भ। —राग (पु०) रक्तवर्ण मणि विशेष। —रेखा (स्त्री०) हस्तरेखा विशेष। —लाञ्छन (पु०) सूर्य, कुबेर राजा, प्रजापति। —लोचन (वि०) पद्म समान चक्षु विशिष्ट। —बन्ध (पु०) एक प्रकार का चित्र काव्य अलङ्कार विशेष। —रूपा (स्त्री०) लक्ष्मी, दुर्गा, गङ्गा, कमला, राजलक्ष्मी।

पद्मगुप्त तद्० (पु०) संस्कृत के एक विख्यात महाकवि, ये धारा के राजा और भोजदेव के चचा राजा मुञ्ज के सभासद थे। भोजदेव के पिता के वर्णन में इन्होंने एक काव्य रचा है जिसका नाम नवसाहसाङ्कचरित है। रचनाशैली तथा मधुरिमा में ये कालिदास की बराबरी करते हैं। इनका नवसाहसाङ्क, कुमारदास का जानकीहरण, अश्वघोष का बुद्धचरित, कालिदास का रघुवंश ये तीन समान श्रेणी के काव्य हैं। इनका दूसरा नाम परिमल था। दसवीं शताब्दी ही इनका समय है।

पद्मवर्ण तद्० (पु०) महाराज यदु के पुत्र, ये नाग कन्या के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनकी माता का नाम धुम्रवर्णा था।

पद्मा तद्० (स्त्री०) लक्ष्मी, कमला, [illegible], पद्मचारिणी, पद्मिनी, मनसादेवी, बृहद्रथ राजा की कन्या, एक नदी का नाम। —कर (पु०) जलाशय विशेष, दीर्घिका, वापी, तड़ाग, कमल पुष्प पुष्करिणी। —वती (स्त्री०) मनसादेवी, नदी विशेष, पद्मानदी, पद्मचारिणी नामक एक वृक्ष गीतगोविन्दकर्त्ता जयदेव कवि की स्त्री का नाम। —लया (स्त्री०) [पद्म + आलया] लक्ष्मी, कमला जिसका कमल ही गृह हो। —सन (पु०) [पद्म + आसन] योगासन विशेष, ब्रह्मा, प्रजापति। —ह्वा (स्त्री०) [पद्म + आह्वा] पद्मचारिणी, वृक्ष विशेष। —क्ष (वि०) [पद्म + अक्षि] पद्म सदृश नेत्र, विष्णु भगवान्।

पद्मिनी तद्० (स्त्री) पद्मयुक्त देश, पद्म समूह, पद्म लता, कमलिनी, नलिनी, सुलक्षणा स्त्री, उत्तमा स्त्री, पतिव्रता, स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद। एक महारानी का नाम। महाराणा भीमसिंह की प्रधान महिषी। १२०१ ई० में लक्ष्मणसिंह मेवाड़ के राजसिंहासन पर बैठे परन्तु उनके अप्राप्तवयस्क होने के कारण उनके पितृव्य भीमसिंह राज्य व्यवस्था करते थे। पद्मिनी बड़ी सुन्दरी स्त्री थी, उसका सौन्दर्य ही उसके लिये काल हो गया, उसकी सुन्दरता की आग में मेवाड़ की राजधानी जलभुन गई। खिलजी वंश के सम्राट् ने पद्मावती के रूप गुण की प्रशंसा सुनी। पद्मिनी के मिलने की आशा से कुछ कपट रच कर दिल्ली के सम्राट् ने भीमसिंह को क़ैद कर लिया। खिलजी अलाउद्दीन ने सोचा था कि इस उपाय से पद्मिनी हमारे हाथ लग जायगी, परन्तु उनका सोच विचार पानी में पड़ गया। पद्मिनी ने अपनी चतुरता से उनके कान काट लिये। पद्मिनी ने सम्राट् के यहाँ कहलाया कि मैं आप के यहाँ आने को प्रस्तुत हूँ, परन्तु उसके पहले आप अपनी सेना यहाँ से हटा लें, क्योंकि हमारे साथ हमको बिदा करने के लिये बहुत सी स्त्रियाँ आवेंगी। किसी प्रकार उनकी प्रतिष्ठा में बाधा न हो, और उन बड़े घर की स्त्रियों के साथ आदर का बर्ताव हो, इसका प्रबन्ध आपको करना होगा और अन्तिम विदाई लेने के लिये एक बार हमारे पति से भेंट करा देनी होगी। कामान्ध अलाउद्दीन ने सब बातें मान लीं। नियत दिन

हज़ारों वीर राजपूत पट्ठे श्रोहारो पालकी में चढ़ कर अलाउद्दीन के डेरे में जमा होने लगे, भीमसिंह के लिये पद्मिनी से थोड़ी देर के लिये भेंट करने की भी व्यवस्था हुई थी। अपनी पालकी में भीमसिंह को बैठा कर पद्मिनी लौटी, 'पद्मिनी की सहेलियाँ आ रही हैं' यह समझ कर किसी ने रोका टोका नहीं। अभी तक पद्मिनी नहीं आई इससे खिल-जी अलाउद्दीन बहुत घबड़ाया, शीघ्र ही उसने पालकियों के श्रोहार उठवाये,श्रोहार उठाने पर जो उसने देखा उससे उसका क्रोध और निराशा अधिक बढ़ गई। पालकी से उतर कर राजपूत वीरों ने शीघ्र ही सम्राट् की सेना पर धावा किया। सम्राट् की सेना वहीं ही लड़ाई में जूझ गई। इधर भीमसिंह एक घोड़े पर सवार होकर चित्तौर के क़िले में पहुँचे। परन्तु इतना करने पर भी पद्मिनी अपने स्वामी की रक्षा न कर सकी। अला-उद्दीन ने बड़े समारोह से चित्तौर पर चढ़ाई की, राजपूत वीर भी जी खोल कर क़िले की रक्षा करने लगे। पद्मिनी का चाचा गोरा और उसका भतीजा बादल ये दोनों बड़ी वीरता से अनेक शत्रुओं को मार अन्त में उसी युद्ध में काम आये। स्वयं भीमसिंह युद्धक्षेत्र में उपस्थित हुए, इधर राजपूत वीराङ्गनाओं ने चिता में प्रवेश किया। भीमसिंह युद्ध में मारे गये, चित्तौर की भूमि वीर-शून्य हो गई; परन्तु अलाउद्दीन को पद्मिनी नहीं मिली, अलाउद्दीन ने देखा था कि चिता से धूम निकल रहा है। यह स्थान एक तीर्थ समझा जाता है।

पद्य तत्० (पु०) छन्द, कवि की कृति, काव्य, श्लोक, कविता, शाध्य, शठता।—रचना (स्त्री०) श्लोक बनाना, कविता करना, पद्यप्रणयन।

पधारना दे० (क्रि०) जाना आना, विदा होना, पूज्यों के आने के या जाने के समय इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

पन तद्० (पु०) पण, होड़, ठहराव, शर्त, प्रण,प्रतिज्ञा, अवस्था, वचन, भाववाचक, भावार्थ द्योतक। यथा—लड़कपन, भोलापन आदि।—कपड़ा (पु०) भीगा कपड़ा जो व्रण आदि के बाँधने के लिये होता है।—गोटो (स्त्री०) छोटी वसन्त, चेचक का एक भेद।—घट (पु०) जलावधार, पानी भरने का घाट।—च (पु०) प्रत्यञ्चा,रोदा, चिल्ली, धनुष का गुण।—चक्की (स्त्री०) एक प्रकार की चक्की जो पानी के वेग से चलती है।—पना (क्रि०) मोटा होना, बढ़ना, परिवृद्ध होना, ताज़ा होना, सरसब्ज़ होना।—पनाहट (स्त्री०) सनसनाहट, ज़ोर से हवा के चलने का शब्द।—बट्टा (पु०) पान रखने का डब्बा। —भात (पु०) पानी में भिगाया हुआ भात। —बाड़ी (स्त्री०) पान की बाड़ी, पान का बग़ीचा, जहाँ पान बोया जाता है।—वार (पु०) पौधा विशेष, राजपूतों की एक शाखा।—वारा (पु०) पत्तल, पतरी।—शल्ला (स्त्री०) प्याऊ,पौशाला।—सा (वि०) फीका, अलोना, खाने की किसी वस्तु में अधिक पानी पड़ जाने के कारण पानी का सा स्वाद होना।—स (पु०) कटहर का वृक्ष, कटहर का फल, सुग्रीव की सेना के एक वानर यूथपति का नाम।—सारी (पु०) पसारी। (गु०) सौंधी औषध आदि किराना बेचने वाला बनिया।—साल (पु०) प्याऊ, पनशाला, पानी पिलाने का स्थान, प्रपा।—सोई (स्त्री०) छोटी नाव, डोंगी —हा (पु०) पता, चिन्ह, सुराग़, चोरी गई वस्तु का पता लगाने के लिये कुछ ठहराव करना, वस्त्र का चौड़ान, कपड़े की चौड़ाई।—हाना (क्रि०) गौ भैंस आदि का दूध दुहने के लिये उनका स्तन सुहराना।—हारा (पु०) पनभरा, पानी भरने वाला, नौकर।—हारिन (स्त्री०) पानी भरने वाली, मजूरिन।—हारी (स्त्री०) पानी भरने वाली स्त्री, पनहारिन।

पनघ दे० (पु०) पणव, ढोल, नगारा, डंका।

पनही दे० (स्त्री०) जूता, पगरखी, उपानह।

पनारी (स्त्री०) नाली, मोरी। [मार्ग, नाली, मोरी।

पनाली तद्० (स्त्री०) प्रणाली, जल निकलने का

पनिया दे० (पु०) पानी, जल।(वि०) पानी का सर्प।

पनियाना दे० (क्रि०) सींचना,पानी देना, पानी भरना।

पनियाला दे० (पु०) पनियार, एक प्रकार के फल का नाम।

पनीँ दे० (वि०) प्रण करने वाला, दृढ़प्रतिज्ञ।
पनीर दे० (पु०) छेना से बना हुआ खाद्य, खाद्य विशेष, खाने की एक वस्तु का नाम, अम्ल संयोग से दूध को फाड़ डालने से जो खाद्य बनता है।
पनीहा दे० (पु०) पानी के संयोग से बनी हुई वस्तु, जलजन्तु, जल में उत्पन्न होने वाला जीव।
पनेरी दे० (पु०) पानवाला, तमोली।
पनेरिन दे० (स्त्री०) पानवाली, तमोलिन।
पन्थ दे० (पु०) धर्ममार्ग, मत, मार्ग, पद्धती।
पन्था दे० (पु०) मार्ग, बाट, पैंडा, पन्थ, मार्ग, रास्ता, राह।
पन्थी दे० (पु०) किसी धर्मपथ के अनुयायी, पन्थाई। यथा:—दादूपन्थी, कबीरपन्थी, पथिक, यात्री, बटोही, अध्वग, मार्ग चलने वाला। [चलवैया।
पन्थाई दे० (वि०) पन्थी, पन्थ का अनुयायी, मता-
पन्नग तत्० (पु०) [पद्+न+गम्+ड्] सर्प, उरग, अहि, औषध विशेष।—पति (पु०) शेष, सर्प-राज, अनन्त। [नियला।
पन्नगारि तत्० (वि०) सर्पशत्रु, गरुड़, मोर, गृध्र,
पन्नगाशन तत्० (पु०) [पन्नग+अशन] पन्नगारी, गरुड़ पक्षी।
पन्नगी तत्० (स्त्री०) सर्पिणी, मनसादेवी।
पन्ना दे० (पु०) रत्न विशेष, हरे रङ्ग का मणि, हरिन्मणि, पृष्ठ, पेज।
पन्नी दे० (स्त्री०) सुवर्ण आदि का पतला पत्र, वरक।
पपड़ा दे० (पु०) टुकड़ा, चूर्ण, छिलका।
पपड़ियाँ दे० (स्त्री०) छोटा पपड़ा।
पपड़ियाकत्था दे० (पु०) श्वेतकत्था, सफ़ेद खैर।
पपड़ी दे० (स्त्री०) छिलका, परत, त्वक, उर्द या मूँग के आटे के बने पापड़।
पपड़ीला दे० (वि०) पपड़ीला, अधिक छिलके वाला।
पपनी दे० (स्त्री०) बरौनी, बाफनी, पलक, बरौनी।
पपरा दे० (पु०) पपड़ा, छिलका, त्वक्, वृक्ष आदि का त्वक।
पपरी दे० (स्त्री०) छोटी पपरी, पतला छिलका।
पपीता दे० (पु०) पपैया, अरण्य खरबूज़ा।
पपीहा दे० (पु०) पक्षी विशेष, चातक, इस पक्षी का स्वभाव है कि नदी आदि का पानी कभी नहीं पीता, किन्तु स्वाती में बरसने वाले मेघों का ही पानी पीता है।
पपैया दे० (पु०) खिलौना विशेष, एक प्रकार का वृक्ष, पपीता, अरण्य खरबूजा, पक्षी विशेष।
पपोटा दे० (पु०) पलक, आँख का पलक, अक्षिपुट।
पम्पा (स्त्री०) किष्किन्धा के समीप एक सरोवर का नाम।
पय तत्० (पु०) पानी, नीर, अन्न, दूध, क्षीर, क्षीर।
—मुख (पु०) केवल दूध पीने वाला, दुधमुँहा।
पयद् तत्० (पु०) बादल, घन, स्तन।
पयस्विनी तत्० (स्त्री०) दुग्धवती धेनु, दुधार गाय, अधिक दूध देने वाली गौ, नदी, स्रोतस्विनी।
पयान तत्० (पु०) प्रयाण, यात्रा, प्रस्थान, जाने का उद्योग, विदाई, गमन, चाल विदा।
पयाल दे० (पु०) पुआर, नेरुआ, लर, सूखी घास।
पयोद (पु०) मेघ, बादल।
पयोधर तत्० (पु०) स्तन, चूँची जिससे दूध निकलता हो, मेघ, वारिद, बादल।
पयोधि तत्० (पु०) समुद्र, सागर, भूमण्डल के चारों ओर फैले हुए सात सागर।
पयोनिधि तत्० (पु०) समुद्र, सागर, अम्बुनिधि।
पयोव्रत तत्० (पु०) दूध या जल के आहार पर व्रत करना, व्रत विशेष।
पयोराशि तत्० (पु०) समुद्र, पयोधि, पयोनिधि।
पर तत्० (वि०) अन्य, इतर, भिन्न, दूर, अनात्मीय, शत्रु, प्रधान, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, अधिक, पश्चात् (अ०) उपरान्त, तत्पर, उन्नत। [जाना।
परकना दे० (क्रि०) सधना, अभ्यासी होना, मिल
परकाज तत्० (पु०) परकार्य, अन्यदीय कार्य, दूसरे का काम। [का काम करने वाला।
परकाजी तत्० (वि०) परोपकारी, परार्थी, दूसरे
परकाना दे० (क्रि०) सधाना, अभ्यास डालना, मिलाना, पहराना। [का, भिन्न विषय।
परकीय तत्० (वि०) अन्यदीय, अन्य सम्बन्धी, दूसरे
परकीया तत्० (स्त्री०) परपुरुषगामिनी स्त्री, दूसरे की स्त्री, नायिका विशेष। यथा:—
"प्रेम करै परपुरुष सों परकीया सो जान।"

परख दे० (स्त्री०) परीक्षा, जाँच, खोज, अनुसन्धान।
परखना दे० (क्रि०) जाँचना, परीक्षा करना, सचाई, खुटाई का अनुसन्धान, कसौटी कसना।
परखाई दे० (स्त्री०) जाँच का काम, परीक्षा करना, परखने का काम, परखने की मज़दूरी।
परखाना या परखवाना दे० (क्रि०) जँचवाना। परीक्षा कराना, असली नक़ली पहचनवाना।
परखी (स्त्री०) एक छोटी लोहे की सुजानुमा चीज़ जिससे बंद बोरे का अन्नादि निकालकर नमूने के तौर पर देखा जाता है।
परखैया दे० (पु०) जचवैया, परीक्षक।
परघरी दे० (स्त्री०) सोना ढालने का साँचा।
परघनी दे० (स्त्री०) सोना चाँदी ढालने की परखी।
परचा दे० (पु०). परीक्षा, जाँच, अनुसन्धान, परिचय। [कुल सामान।
परचून दे० (पु०) आटा, दाल, मसाला आदि फुट-
परचूनिया दे० (पु०) परचून बेचनेवाला बनिया, मोदी।
परचूनी दे० (स्त्री०) परचून के बेचने का व्यापार, मोदीख़ाने का व्यापार।
परचौ दे० (पु०) परख, जाँच, परीक्षा।
परछनी दे० (स्त्री०) चाँद का शेष भाग, छुद्रिमान्त।
परछना (क्रि०) दुलहा दुलहिन की आरती उतारना।
परछाई दे० (स्त्री०) शरीर या किसी वस्तु की छाया, प्रतिबिम्ब, प्रतिछाया।
परछिद्र तद्० (पु०) परदोष, दूसरे की त्रुटि, दूसरे का दोष। [कारण ज़मीन के स्वामी को दिया जाय।
परजाकर (पु०) वह कर जो ज़मीन में बसने के
परजावट दे० (पु०) कर, शुल्क, भाड़ा, किराया, राजा की भूमि अपने काम में लाने के कारण जो राजा को कर दिया जाता है। [पाला पोसा, दूसरे जाति का।
परजात तद्० (वि०) दूसरे के द्वारा उत्पन्न, दूसरे का
परत दे० (स्त्री०) तह, लव, पाऊ, छिलका, परदा।
परतम (वि०) बड़े से बड़ा, सबसे बड़ा।
परतन्त्र तद्० (वि०) पराधीन, अन्याधीन, परवश, परवश, दूसरे के कब्ज़े में।
परतज दे० (पु०) देश छुड़ा। [उतराई जाती है।
परतला दे० (पु०) तलवार की पट्टी चाव, जिसमें तलवार
परता दे० (पु०) अटेरन, चरखी, परेता, सूत कातने की कल, ख़र्च और नफ़ा मिला कर भाव। (इस वस्तु का "परता" यहाँ नहीं पड़ता।)
परती दे० (स्त्री०) बंजर, अनुर्वर भूमि, ऊसर भूमि, जिस भूमि में अन्न आदि उत्पन्न न हो, रेतीली भूमि। [भरोसा, यक़ीन।
परतीत तद्० (स्त्री०) प्रतीति, निश्चय, विश्वास,
परत्र तद्० (वि०) अन्यत्र, परकाल परलोक, स्वर्ग।
परत्व तद्० (पु०) पराता, पर का भाव, पार्थक्य, श्रेष्ठता, तत्परता।
परदादा दे० (पु०) प्रपितामह, बाबा का बाप।
परदादी दे० (स्त्री०) प्रपितामही, बाबा की माता, बुड्ढी दादी।
परदार, परदारा तद्० (स्त्री०) परभार्या, अन्य की स्त्री, दूसरे की स्त्री, दूसरे की लुगाई, दूसरे की औरत।—भिगमन तद्० (पु०) व्यभिचार।
परदुःख तद्० (पु०) अन्य की पीड़ा, दूसरे का क्लेश।
परदेश तद्० (पु०) विदेश, अन्य देश, भिन्न देश।
परदेशी तद्० (वि०) विदेशी, वैदेशिक, दूसरे देश का, दूसरे देश का वासी। [की हानि करने वाला।
परद्वेषी तद्० (पु०) परहिंसक, परानिष्टकारी, दूसरे
परद्रोह तद्० (पु०) परानिष्ट, दूसरे का अशुभ, परपीड़न।
परधन तद्० (पु०) अन्यधन, अन्यद्रव्य, दूसरे का धन।
परन तद्० (पु०) प्रण, प्रतिज्ञा, नियम।
परनाना दे० (क्रि०) विवाह कराना, ब्याह देना। (पु०) प्रमातामह, नाना के पिता।
परनानी दे० (स्त्री०) प्रमातामही, प्रमातामह की पत्नी।
परन्तप तद्० (पु०) विजयी, शत्रु नाशक, वीर।
परन्तु तद्० (अ०) किन्तु, अपितु, अगर, किंवा।
परपराना दे० (क्रि०) चरपराना, कड़ुवी वस्तु के मर्मस्थान में लगने से वेदना विशेष।
परपराहट दे० (स्त्री०) चरपराहट, झाल।
परपुष्ट (पु०) कोकिल। (वि०) अन्य द्वारा पोषित।
परपूर दे० (वि०) पूर्ण, भरपूर, परिपूर्ण।
परपैठ दे० (पु०) असली हुंडी की तीसरी प्रति या नक़ल, दूसरी हुंडी, उसकी दूसरी प्रति का नाम पैठ और तीसरी प्रति का नाम परपैठ।

परब तद्० (पु०) पर्व, उत्सव, त्योहार।
परवा तद्० (स्त्री०) प्रतिपदा, एकम। [परवश।
परबस तद्० (पु०) पराधीन, अन्यवश, परतन्त्र,
परब्रह्म तद्० (पु०) परमात्मा, परम पुरुष, पुरुषोत्तम।
परभुक्त (स्त्री०) दूसरे की भोगी हुई।
परभृत तद्० (पु०) कोकिल, कोयल। (वि०) शत्रु को सहायता पहुँचाने वाला, शत्रु का साथ देने वाला, अन्यपालित।
परम तद्० (वि०) उत्कृष्ट, प्रधान, श्रेष्ठ, अग्रगामी, अग्रसर।—गति (स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष, उत्कृष्ट गति, उत्तम गति।—पद (पु०) श्रेष्ठ स्थान, उत्तम पद, मुक्ति पद, देवता का धाम। —पुरुष (पु०) परमात्मा, विष्णु।—ब्रह्म (पु०) परमेश्वर, परमात्मा, नारायण।—धाम (पु०) वैकुण्ठ, परमपद, मुक्तिपद।—मित्र (पु०) उत्कृष्ट मित्र, अतिशय मित्र।—लाभ (पु०) अतिशय लाभ, अत्यन्त लाभ, अति उत्कृष्ट लाभ।—हंस (पु०) योगी, संन्यासी, अवधूत, सन्यासियों की एक अवस्था विशेष।
परमत तद्० (पु०) दूसरे का मत, दूसरे का सिद्धान्त, अन्य सम्मति, दूसरे की सलाह।
परमल दे० (पु०) चबेना, भूँजा विशेष।
परमाणु तद्० (पु०) अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु जिससे छोटा दूसरा न हो, कणमात्र, काल विशेष।
परमात्मा तद्० (पु०) [परम+आत्मा] परब्रह्म, पुरुषोत्तम, परम देवता। [हर्ष।
परमानन्द तद्० (पु०) अत्यन्त आनन्द, अतिशय
परमान्न तद्० (पु०) [परम+अन्न] पायस, दुग्ध, खीर, पक्वान्न। [आयु, उमर, बड़ी अवस्था।
परमायु तद्० (पु०) [परम+आयु] जीवित काल।
परमार्थ तद्० (पु०) [परम+अर्थ] उत्कृष्ट वस्तु, यथार्थ, तत्त्वविषय, सर्वोत्तम काम, कीर्ति, धर्मकार्य, ज्ञान, पवित्र ज्ञान।
परमेश्वर तद्० (पु०) [परम+ईश्वर] परब्रह्म, शिव, विष्णु, परमात्मा, सर्वैश्वर्य सम्पन्न,ईश्वर,भगवान्।
परमेश्वरी तद्० (स्त्री०)लक्ष्मी,दुर्गा,पार्वती,सरस्वती।
परमेष्ठी तद्० (पु०) ब्रह्मा, पितामह, जिन विशेष, शालग्राम विशेष, ध्रुव विशेष।
परम्पर तद्० (पु०) प्रपौत्रादि, क्रमागत, उत्तरोत्तर, मृग विशेष।
परम्परा तद्० (स्त्री०) अन्वय, वंश, कुल, सन्तान, परिपाटी, अनुक्रम, क्रमशः, अनुपूर्वी।—गत (वि०) [परम्परा+आगत] क्रमागत, वंशानुक्रम से आया हुआ, पीढ़ी दर पीढ़ी से पाया हुआ।
परला दे० (वि०) दूसरी ओर का, उधर का, उस ओर का।
परलोक तद्० (पु०) अन्यलोक, दूसरा लोक, स्वर्गादिलोक, लोकान्तर, उत्तर काल, जन्मान्तर। —गमन (पु०) मृत्यु, मरण, निधन, परलोक गमन, लोकान्तर गमन।
परवल या परवर दे० (पु०) पलवल, स्वनामख्यात फल, जिसकी तरकारी होती है, परवर। [परवान।
परवश तद्० (वि०) पराधीन, अन्यवश, अन्यधीन,
परवा, पड़वा तद्० (स्त्री०) प्रतिपदा, चन्द्रमा की प्रथम कला, शुक्ल एवं कृष्णपक्ष की प्रथमतिथि।
परवान् तद्० (पु०) परतन्त्र, पराधीन, परवश।
परश तद्० (पु०) रत्न विशेष, पारस मणि।
परशु तद्० (पु०) अस्त्र विशेष, परश्वध, कुठार। कुल्हाड़ी।—धर (पु०) गणेश, कुठारधारी।
परशुराम तद्० (पु०) महर्षि यमदग्नि के पुत्र, इनकी माता का नाम रेणुका था। इनके पितामह महर्षि ऋचिक ब्राह्मण थे, परन्तु इनकी पितामही सत्यवती क्षत्रिया थीं। परशुराम का नाम केवल राम ही था, परन्तु गन्धमादन पर्वत पर इन्होंने तपस्या के द्वारा महादेव को सन्तुष्ट किया और उनसे तेजोमय परशु पाया। इसी कारण इनका नाम परशुराम हुआ। परशुराम ने अपनी माता रेणुका का सिर काट डाला था और इक्कीस बार क्षत्रियों का समूल नाश करने की चेष्टा करने पर भी परशुराम पृथिवी को निःक्षत्रिय नहीं बना सके थे। महर्षि पराशर ने सौदास पुत्र सर्वकर्मा की रक्षा की थी, और भी अनेक राजकुमारों की जहाँ तहाँ रक्षा हुई थी, महर्षि कश्यप ने इन समस्त क्षत्रिय राजकुमारों को ले जाकर राज्याभिषेक कराया। [एक दिन के अनन्तर।
परश्व तद्० (अ०) परसों, आने वाला तीसरा दिन,

परस दे० (पु०) स्पर्श, छून। [करने ही से।
परसत दे० (क्रि०) छूते ही, स्पर्श करते ही, स्पर्श
परसना दे० (क्रि०) स्पर्श करना, छूना।
परसिया दे० (पु०) हँसिया, हँसुवा, दाँती, दराती।
परसूत दे० (पु०) रोग विशेष, परसूत का रोग, लड़का होने के बाद जो स्त्रियों को रोग होता है।
परसूती दे० (स्त्री०) लड़के वाली, जिसके तुरन्त लड़के हुए हों, परसूत रोग वाली स्त्री।
परसैया दे० (पु०) परोसने वाला, परोसैया।
परसों दे० (अ०) आगे या पीछे का तीसरा दिन, एक दिन के अनन्तर का पहला या पीछे का दिन।
परस्यौ दे० (पु०) रहना, वास करना, ठहरना, स्थित होना।
परस्पर तद्० (अ०) अन्योन्य, इतरेतर, आपस में।
परस्मैपद तद्० (पु०) व्याकरण में क्रिया का एक प्रकार का चिन्ह।
परा तद्० (अ०) विमोच, मुक्ति, प्राधान्य, प्रतिलोम्य, वैपरीत्य, भृशार्थ, आभिमुख्य, विक्रम, गति (उपसर्ग) मद्य, अहङ्कार, अनादर, प्रत्यावृत्ति, तिरस्कार, शब्द का स्वरूप विशेष। नाभिरूप मूलाधार से उत्पन्न प्रथम उक्ति, नाद स्वरूप वर्ण, शब्द का आदि स्वरूप। (वि०) सर्वोत्कृष्ट, सबसे परे, सबसे बड़ा, सर्वोपरि, सबके ऊपर।
पराई दे० (स्त्री०) दूसरे की, गैर की, अन्य की।
पराक तद्० (पु०) व्रत विशेष, प्रायश्चित्त विशेष, खड्ग, क्षुद्र रोग विशेष, जन्तु भेद।
पराकाष्ठा (स्त्री०) अन्त, चरम सीमा, सीमान्त, परमसीमा, ब्रह्मा की आधी आयु।
पराक्रम तद्० (पु०) शक्ति, वीर्य, विक्रम, प्रताप, उद्योग, निष्क्रमण।—शून्य (गु०) शक्तिहीन, निर्वीर्य, प्रताप रहित, दुर्बल।
पराक्रमी तद्० (वि०) वीर्यवान्, विक्रमी, प्रतापान्वित, प्रतापी, बलवान्, साहसी, शूर, वीर, योद्धा।
पराग तद्० (पु०) पुष्परेणु, पुष्परज, स्नानीयद्रव्य, गिरि विशेष, उपराग, चन्दन, स्वच्छन्द गमन, स्वेच्छापूर्वक गमन।
परागति (स्त्री०) गायत्री।
परागया (क्रि०) अनुरक्त होना।

पराङ्मुख, परांमुख तद्० (पु०) विमुख, बहिर्मुख, लौटा हुआ, उदासीन, मुँहफिरा।
पराजय तद्० (पु०) पराभव, तिरस्कार, हार।
पराजिका (स्त्री०) षाड़ जाति की एक रागिनी।
पराजित तद्० (वि०) कृत पराजय, पराभूत, विजित, निर्जित, हारा हुआ।
पराजिता तद्० (स्त्री०) लता विशेष, विष्णुक्रान्ता।
पराजेता तद्० (गु०) पराजयकर्त्ता, विजयी, जीतनेवाला।
पराठा दे० (पु०) उत्तम घी की सहायता से सेकी हुई मोटी परतदार पूरी, स्वनाम प्रसिद्ध पक्वान्न।
परात दे० (पु०) थाल, बड़ी थाली।
परातिक्त तद्० (स्त्री० ओषधि विशेष, लाल पुनर्नवा।
पराती दे० (स्त्री०) परात, थाली। (पु०) प्रातःकाल गाने योग्य भजन, प्रभाती। [परमात्मा, विष्णु।
परात्पर (वि०) सर्वश्रेष्ठ, जिसके परे कोई न हो। (पु०)
परात्मा (पु०) परमात्मा।
परादन (पु०) फारस देश का घोड़ा।
पराधीन तद्० (वि०) अस्वतन्त्र, परवश, परतन्त्र। —ता (स्त्री०) परतंत्रता।
परान (पु०) प्राण। [होना।
पराना दे० (क्रि०) भागना, भाग जाना, उठ खड़ा
परानी तद्० (पु०) प्राणी, जीवधारी, चेतन।
परान्न तद्० (पु०) [पर+अन्न] अन्य का अन्न, दूसरे का अन्न, दूसरे का दिया हुआ अन्न।
परापर (पु०) फालसा।
पराभव तद्० (पु०) पराजय, हराना, परिभव, तिरस्कार, उत्पातन, विनाश, उखाड़ना।
पराभिक्ष (पु०) वानप्रस्थ विशेष, जो गृहस्थों के घरों से थोड़ी भिक्षा ले वन में निर्वाह करते हैं। [हारा।
पराभूत तद्० (वि०) पराजित, परोक्ष, निर्जित,
परामर्श तद्० (पु०) उपदेश, मंत्र, विचार, सम्मति, सलाह।—न (पु०) सोचना, स्मरण, चिन्तन, विचारना, मशवरा करना। [क्षमा करना।
परामर्ष तद्० (पु०) निवृत्ति, तितिक्षा, क्षमा, सहना,
परामोद दे० (पु०) दुसआरा, कुआया, भाँसा।
परामृष्ट (वि०) पकड़ कर खींचा हुआ, पीड़ित, विचारा हुआ, निर्णीत। [निपुण, तत्पर, धर्मिष्ठ।
परायण तद्० (पु०) आश्रयस्थान, अभ्यासक्त, आसक्त,

परायत्त (वि०) पराधीन । [और का ।
पराया दे० (वि०) अन्यदीय, अन्य सम्बन्धी, दूसरे का,
परायु (पु०) ब्रह्मा ।
परार (वि०) पराया, दूसरे का ।
परारध (पु०) परार्द्ध । [बाला तीसरा वर्ष ।
परारि तद० (वि०) पूर्वतर वर्ष, गया हुआ या आने
परारु (पु०) करेला । [मित्र ।
परार्थ तद० (पु०) अन्यार्थ, दूसरे के निमित्त, स्वार्थ
परार्द्ध तद० (वि०) शत कोटी, अन्तिम संख्या, संख्या का शेष, ब्रह्मा की आधी आयु ।
परार्द्धि (पु०) विष्णु । [सर्वोत्तम ।
परार्द्ध्य तद० (वि०) प्रधान, श्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट,
पराल दे० (पु०) पयाल, घास, तृण ।
परालब्ध (पु०) प्रारब्ध, भाग्य, नसीब ।
परावत (पु०) फालसा । [लोगों का भागना ।
परावन (पु०) भगदड़, पलायन, एक साथ बहुत से
परावर (वि०) सर्वश्रेष्ठ, दूर पास का, निकट दूर का, इधर उधर का ।
परावर्त (पु०) लौटना, पलटाव, अदल बदल, लेन देन ।—न (पु०) प्रत्यावर्तन, पीछे फिरना, जैनियों के मतानुसार ग्रन्थों का दोहराना, उद्धरणी ।—व्यवहार (पु०) किसी मुकद्दमे की फिर से जाँच ।
परावर्तित (वि०) पीछे फेरा हुआ, पलटाया हुआ ।
परावसु (वि०) (१) असुरों के पुरोहित का नाम, (२) रैभ्यमुनि के एक पुत्र का नाम । (३) एक गन्धर्व का नाम (४) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।
परावह (पु०) सात प्रकार के वायुओं में से एक ।
परावा वि०) पराया, बिराना ।
परावृत्त (वि०) फेरा हुआ, बदला हुआ ।—ि (पु०) पलटाव, मुकद्दमे का पुनर्विचार ।
परावेदी (स्त्री०) भटकटैया, कटई ।
पराशर तत्० (पु०) महर्षि वशिष्ठ का पौत्र और शक्ति का पुत्र, इनकी माता का नाम अदृश्यन्ती था । इनके विषय में महाभारत में लिखा है कि एक समय अयोध्या के राजा कल्मापपाद अहेर खेल कर आ रहा था और इधर से वशिष्ठ के श्रेष्ठ पुत्र शक्ति आ रहे थे, राजा ने इन्हें मार्ग छोड़ने के लिये कहा परन्तु इन्होंने उस पर कुछ ध्यान न दिया । इस कारण कल्मापपाद ने शक्ति के कोड़ा लगाया । शक्ति ने राक्षस हो जाने का राजा को शाप दिया, तुरन्त राक्षस बन कर राजा ने शक्तिको खा डाला और पुनः धीरे धीरे वशिष्ठ के अन्यान्य पुत्रों को भी मार डाला । इसमें विश्वामित्र की भी सम्मति थी । वशिष्ठ पुत्रशोक से कातर होकर प्राण देने को उद्यत हुए । वे पर्वत से कूदे, अग्नि में कूदे । परन्तु किसी प्रकार उनके प्राण नहीं निकले, अन्त में हताश होकर वे अपने आश्रम को लौटे आते थे । उसी समय पीछे से वेदध्वनि सुनायी पड़ी । वशिष्ठ ने पूछा कौन है ? उत्तर मिला आपकी ज्येष्ठ पुत्रवधू अदृश्यन्ती । अदृश्यन्ती ने कहा—"मेरे गर्भ में आपका पौत्र वर्तमान है, बारह वर्ष से यह वेदाध्ययन कर रहा है ।" यह सुनकर वशिष्ठ प्रसन्न हुए, उन्होंने देखा कि हमारा वंश चलाने वाला वर्तमान है, उसी समय एक राक्षस खाने के लिये अदृश्यन्ती की ओर लपका । वशिष्ठ ने मन्त्रबल से उसका राक्षसत्व दूर किया । यह राक्षस राजा कल्मापपाद था । वशिष्ठ ने अयोध्या जाकर उसे राज्यशासन करने का आदेश दिया । पराशर बड़े होने पर अपने पिता की मृत्यु का संवाद सुनकर एक यज्ञ करने को उद्यत हुए । राक्षसकुल का नाश करना ही उस यज्ञ का उद्देश्य था । परन्तु पुलस्त्य पुलह आदि ऋषियों ने उन्हें समझाया कि तुम्हारे पिता की मृत्यु राक्षसों से नहीं हुई, किन्तु अपनी मृत्यु का प्रधान कारण तुम्हारे पिता ही हैं । यह सुनकर पराशर ने यज्ञ करना छोड़ दिया । मत्स्यगन्धा नामक धीवर कन्या से पराशर के एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसका नाम द्वैपायन था । पराशर ने एक संहिता बनाई थी, जिसका नाम "पराशरसंहिता" या पराशरस्मृति है ।
पराश्रय तद० (वि०) पराधीन, परवश ।—ा (स्त्री०) बाँदा, परगाछा ।—ित (वि०) परतन्त्र ।
परास (पु०) किसी विशिष्ट स्थान से उतना अन्तर जितने पर विशिष्ट स्थान से फेंकी हुई कोई वस्तु गिरे ।—ी (स्त्री०) एक रागिनी का नाम ।

परासु (त्रि०) प्राणहीन, गत प्राण।
परास्त तत्० (वि०) पराजित, पराभूत, हारा।
पराह्न तत्० (पु०) भागाभाग, भगाड़, देशत्याग।
पराहिं दे० (क्रि०) भागते हैं, भाग जाते हैं, चले जाते हैं, दौड़ जाते हैं।
पराह्न तत्० (पु०) दिन का दूसरा भाग, अपराह्न।
परि तत्० (उपसर्ग) सर्वतोभाव, वर्जन, व्याधि, शेष, इस प्रकार, आख्यान, भाग, वीप्सा, आलिङ्गन, लक्षण, दोषाख्यान, दोषकथन, निरसन, पूजा, व्यापकता, विस्मृति, भूषण, उपरम, शोक, संतोषभाषण।
परिक (स्त्री०) खोटी चाँदी।
परिकर तत्० (पु०) कटिबन्धन, कमरबन्द, पर्यङ्क, खट्वा, खाट, परिवार, समारम्भ, वृन्द, समूह, सहकारी, विवेक।
परिकम्मा (स्त्री०) परिक्रमा।
परिकर्म तत्० (पु०) कुङ्कुम आदि के द्वारा अङ्ग संस्कार, स्नान उबटन लगाना आदि, शरीर संस्कार मात्र।—ी (पु०) सेवक, टहलुआ।
परिकल्पन (पु०) प्रवञ्चना, दगाबाज़ी, धोखाधड़ी।
परिकल्पना तत्० (स्त्री०) उपाय, चिन्ता, चेष्टा, उद्योग, कर्म, क्रिया।
परिकीर्ण (वि०) व्याप्त, विस्तृत, समर्पित।
परिकीर्तन तत्० (पु०) प्रस्ताव, स्तुति, बड़ाई, प्रतिष्ठा करण, सब प्रकार से प्रशंसा करना।
परिकूट (पु०) शहर के फाटक की खाईं।
परिक्रम (पु०) टहलना, फेरी देना, परिक्रमा।—ण (पु०) टहलना, घूमना।—ा तत्० (स्त्री०) तीर्थार्थ पैदल चलना, पद विहार, देव परिक्रमा, प्रदक्षिणा।
परिक्षत (त्रि०) नष्ट, भ्रष्ट।
परिक्षय (पु०) दीक।
परिक्षा (स्त्री०) कीचड़, परीक्षा, जाँच।
परिक्षित (पु०) एक राजा, परीक्षित।
परिक्षिप्त (त्रि०) खाईं आदि से घिरा हुआ।
परिक्षीण (त्रि०) निर्धन, कंगाल।
परिखना (क्रि०) पहचानना, जाँचना।
परिखा तत्० (स्त्री०) राजधानी के चारों ओर की खाईं गड़ गड़ा।
परिखाना (क्रि०) जाँचना, परखना।
परिगणन तत्० (पु०) मापना, गिनना, गणना करना, संख्या करना। [संख्या कृत।
परिगणित तत्० (वि०) ठीक ठीक गणना किया हुआ,
परिगत तत्० (वि०) प्राप्त, लब्ध, विदित, ज्ञात, विस्मृत, चेष्टित, गत, वेष्टित।
परिगह (पु०) कुटुम्बी, आश्रित जन।
परिगुण्ठित (वि०) ढका हुआ, छिपाया हुआ।
परिगृहीत (वि०) स्वीकृत, शामिल।
परिगृह्या (स्त्री०) धर्मपत्नी, विवाहिता स्त्री।
परिग्रह (पु०) प्रतिग्रह, स्वीकार, सेना के पीछे का भाग, पत्नी, भार्या, परिजन, भृत्य, सेवक, परिवार, आदान, ग्रहण, स्वीकार, शाप, शपथ, राहु के द्वारा सूर्य का ग्रास, सूर्य ग्रहण।—ण (पु०) पूर्णरूप से ग्रहण करना, कपड़े पहनना। [गदा, मुद्गर शूल।
परिघ तत्० (पु०) लोहा जड़ी लाठी, लौहमय यष्टि,
परिघोष तत्० (पु०) शब्द विशेष, मेघगर्जन, मेघध्वनि।
परिचय तत्० (पु०) विशेष रूप से ज्ञान, जान पहचान, मेल, मित्रता।
परिचर तत्० (पु०) युद्ध के समय शत्रु के प्रहार से रथ की रक्षा करने वाला, सेना की व्यवस्था करने वाला, दण्डनायक, सहायक। [उपासना।
परिचर्या या परिचरजा तत्० (स्त्री०) सेवा, शुश्रूषा,
परिचायक तत्० (वि०) ज्ञापक, बोधक, जिसके द्वारा परिचय प्राप्त हो, जान पहिचान कराने वाला, मध्यस्थ। [सुश्रूषाकारी, गुलाम।
परिचारक तत्० (पु०) भृत्य, सेवक, नौकर चाकर,
परिचारिका तत्० (स्त्री०) दासी, लौंडी, सेविका।
परिचारे (क्रि०) प्रचारे, ललकारे, बुलाये।
परिचालन (पु०) चलाना, चलने में लगाना, हिलाना, हरकत देना।
परिचित तत्० (वि०) परिचय विशिष्ट, ज्ञात, चिन्हा हुआ, जाना, परिचय, जानकारी।
परिचीर (त्रि०) परिचय योग्य।
परिच्छद तत्० (पु०) भेद, वसन, भूषण आदि, परिधान आच्छादन, पोशाक, परिवार, हाथि घोड़ आदि का दल।

परिच्छिन्न तत्० (वि०) परिच्छेद विशिष्ट, अवधि प्राप्त, सीमाबद्ध, परिमित।

परिच्छेद तत्० (पु०) ग्रन्थ विच्छेद, ग्रन्थ के अध्याय, सीमा, अवधि, विभाग, प्रकरण, व्यवधान, पर्व।

परिछाहीं (स्त्री०) परछाईं।

परिजंक (पु०) पर्यंक।

परिजटन (पु०) पर्यटन।

परिजन तत्० (पु०) परिवार, कुटुम्ब, पुत्रकलत्र आदि पालनीय वर्ग, स्वजन, सम्बन्धी, नातेदार, रिश्तेदार, अनुचर, अनुगामी।

परिज्ञान तत्० (पु०) निश्चय बोध, सब प्रकार से जाना हुआ, विशेष रूप से ज्ञात।

परिणत तत्० (पु०) [परि+नम्+क्त] परिणाम प्राप्त, पक, पका हुआ, टेढ़ा चलने वाला हाथी, नम्र, नया हुआ।

परिणति तत्० (स्त्री०) [परि+नम्+क्ति] परिणाम, निष्पत्ति, नम्रता से शेष होना, नित्रभाव।

परिणय तत्० (पु०) विवाह, दारपरिग्रह, ब्याह।

परिणाम, परीणाम तत्० (पु०) [परि+नम्+घञ्] विकार, प्रकृति का दूसरे रूप में बदल जाना, अवस्थान्तर प्राप्ति, भावान्तर लाभ, उत्तर काल, शेष।—दर्शी (वि०) दूरदर्शी, विज्ञ, अभिज्ञ, परकालदर्शी, दूरदेशा।—वाद (पु०) सांख्य दर्शन का सिद्धान्त, जिस में जगत् की उत्पत्ति नाश आदि नित्यपरिणाम के रूप में माने गये हैं।

परिणायक तत्० (पु०) पति, वर, धव, पाँसा खेलने वाला।—रत्न (पु०) बौद्ध चक्रवर्तियों के सातवन कोषों में से एक।

परिणाह तत्० (पु०) परिसर, विस्तार, विस्तृत, विशालता, चौड़ाई आकार, आकृति दीर्घरत्स।

परिणीता तत्० (स्त्री०) [परि+नी+क्त+आ] विवाहिता ऊढ़ा, पाणिगृहीता।

परिणेता (पु०) पति स्वामी भर्त्ता।

परिणेया (वि०) ब्याहने योग्य।

परित तत्० (अ०) सर्वत, चतुर्दिशा में व्याप्त, चारों तरफ से चारों ओर से।

परितच्छ (पु०) मचान।

परिताप तत्० (पु०) [परि+तप+घञ्] मनस्ताप, सन्ताप, क्लेश, दुःख, शोक, भय।

परितुष्ट तत्० (गु०) [परि+तुष्+क्त] सन्तुष्ट, आह्लादित, आनन्दित, हृष्ट।

परितुष्टि तत्० (स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति, आह्लाद, हर्ष।

परितृप्त तत्० (गु०) [परि+तृप+क्त] सम्यक् तृप्त, अतिशय तृप्त, अधिक तृप्त।—ि (स्त्री०) तृप्ति, अघाना।

परितोष तत्० (पु०) हर्ष, तृप्ति, सन्तोष, आह्लाद, आतिरजमा, प्रसन्नता।—क (पु०) सन्तुष्ट करने वाला, प्रसन्न करने वाला।—ण (पु०) परितुष्ट, सन्तोष।

परित्यक्त तत्० (वि०) परित्याज्य, छोड़ने योग्य, परिहृत, त्यक्त, सब प्रकार से छोड़ा हुआ।—ा (पु०) परित्याग करने वाला, त्यागने वाला।

परित्याग तत्० (पु०) सब प्रकार से त्याग, विसर्जन, वर्जन।

परित्याज्य (वि०) परित्याग योग्य।

परित्राण तत्० (पु०) रक्षा, बचाव, उद्धार, निष्कृति

परित्रात तत्० (वि०) रक्षित पालित, पाला हुआ।—ा तत्० (वि०) निस्तारक, परित्राणकर्त्ता, रक्षक।

परिदान तत्० (पु०) परिवर्तन विनिमय, बदला, लेनदेन।

परिदेवक तत्० (वि०) विलापकर्त्ता, दुःख देने वाला, दुःखदायी, जुआरी, जुआ खेलने वाला।

परिदेवन तत्० (पु०) अनुशोचन, अनुताप, पश्चात्ताप, विलाप, पछतावा, द्यूतक्रीड़ा, जुए का खेल।

परिधन } तत्० (पु०) पहराव पहनावा, पहिरने
परिधान } का वस्त्र, परिधेय वसन, यथा—

"जटा मुकुट परिधन मुनिचीरा"। रामायण।

परिधि तत्० (स्त्री०) परिवेश, वेष्टन, घेरा, मण्डलाकार रेखा चन्द्र सूर्य मण्डल, चन्द्रसूर्य मण्डल के चारों ओर जो कभी कभी मण्डल दीख पड़ता है, घेरा, मण्डल।

परिधेय तत्० (वि०) पहनने के योग्य धारण करने योग्य।

परिध्वंस तत्० (पु०) अपचय, नाश, हानि, क्षति, वर्णसङ्कर जाति विशेष।

परिनिष्ठित तत्० (वि०) परिज्ञात, ज्ञाता, प्रतिष्ठित, प्रतिष्ठा प्राप्त।

परिपक्व तद्० (वि०) सुपक्व, पका हुआ, पटु, निपुण, उपयुक्त, योग्य, दक्ष, कुशल, चतुर, कार्यदक्ष, कार्यकुशल। [लुटेरा, ठग।
परिपन्थी तद्० (पु०) शत्रु, वैरी, विपक्ष, चोर,
परिपाक तद्० (पु०) जीर्णता, पकना, परिणाम, नैपुण्य, निपुणता, फल, निष्कर्ष, उत्तर काल।
परिपाटी तद्० (स्त्री०) रीति, प्रथा, चाल, अनुक्रम, पराक्रम, उत्तम, अङ्क विद्या। [रक्षा करना।
परिपालन तद्० (पु०) प्रतिपालन, पोषण, रक्षण,
परिपालक तद्० (पु०) प्रतिपालक, रक्षाकर्त्ता, रक्षक, पोषणकारी।
परिपालित तद्० (वि०) रक्षित, प्रतिपालित, आश्रित।
परिपिष्टक तद्० (पु०) सीसक, सीसा, धातु विशेष।
परिपूत तद्० (वि०) पवित्र, शुद्ध, बिना छिलके का धान।
परिपूरन तद्० (वि०) समस्त, सकल, सम्पूर्ण।
परिपूरित तद्० (वि०) भरा हुआ, भरापूरा।
परिपूर्ण तद्० (पु०) परिपूरन, समस्त, सकल, सम्पूर्ण, पूरित, भरा हुआ, पूर्ण, प्रचुर, यथेष्ट।
परिब्राजक (पु०) संन्यासी।
परिभव तद्० (पु०) पराभव, पराजय, पराभूत, अवज्ञा, अनादर, हेयबुद्धि।—पद (पु०) दुष्कृति, दुर्दशा।
परिभाव तद्० (पु०) अवज्ञा, अनादर, पराभव, पराजय।
परिभाषण (पु०) निन्दापूर्वक कथन।
परिभाषा तद्० (स्त्री०) परिष्कृतभाषा, प्रशस्ति, ग्रन्थ संक्षेप करने के लिये साङ्केतिक नियम।
परिभूत (वि०) हराया हुआ।
परिभ्रमण तद्० (पु०) पर्यटन, अनवरत भ्रमण, सतत घूमना, सर्वदा घूमते रहना।
परिभ्रष्ट (वि०) नष्ट, पतित।
परिमण्डल तद्० (वि०) वर्तुल, गोलाकार, चक्र, गोल।—चक्र (पु०) महत्त्व मण्डल।
परिमल तद्० (पु०) मलने से या रगड़ने से उत्पन्न सुगन्ध महक, सौरभ। [जोत।
परिमाण या परिमान तद्० (पु०) माप, वज़न, तोल,
परिमार्जित तद्० (वि०) परिशोधित शुद्ध, साफ़।
परिमित तद्० (वि०) अल्पमित, नपातुला, नापा हुआ, मापा हुआ, नियमित।—व्ययी (पु०) मितव्ययी समझ बूझ कर ख़र्च करने वाला, ख़र्च में किफ़ायत करने वाला, किफ़ायतशआर।
परिमिति तद्० (स्त्री०) परिमाण, किनारा, अवधि।
परिरम्भ तद्० (पु०) आलिङ्गन, भेंटना, श्लेष, लिपटाना।
परिवर्जन तद्० (पु०) त्याग, परिहार।
परिवर्त तद्० (पु०) बदला, लेन देन, क्रय विक्रय, हेरीफेरी। [करना।
परिवर्त्तन तद्० (पु०) पलटाव, पलटाना, हेराफेरी
परिवर्त्त (वि०) पीछे का, बाद का। (पु०) प्रतिनिधि, बदला।
परिवा (स्त्री०) प्रतिपदा, प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि।
परिवाद तद्० (पु०) गाली, उलाहना, निन्दा, द्वेष।
परिवादक तद्० (पु०) निन्दक, निन्दा करने वाला, द्वेषी।
परिवार या परिवारु तद्० (पु०) परिजन, घराना, कुटुम्बी, कुटुम्ब के मनुष्य, पुत्रादि, कुनबा, भाईबंद।
परिवारण तद्० (पु०) मांगना, रोकना, रुकावट डालना, बाधा डालना।
परिवाह तद्० (पु०) जल की उछाल, बहाव, मेघपथ, मेघमार्ग।
परिवृत तद्० (पु०) रक्षित, आच्छादित, घिरा हुआ, परिवेष्टित, लपेटा हुआ, ढका हुआ।
परिवेषण तद्० (पु०) परोसना भोजन परसना।
परिवेष्टन तद्० (पु०) चतुर्दिक् से आच्छादन, मण्डलाकार वेष्टन, आच्छादन।
परिव्राजक तद्० (पु०) सन्यासी, मुनि, चतुर्थाश्रमी।
परिव्राड् तद्० (पु०) सन्यासी, यती, योगी।
परिशिष्ट तद्० (पु०) अवशेष विशिष्ट, अवशिष्टार्थ प्रकाशक ग्रन्थ भाग बाकी अवशिष्ट।
परिशुद्ध तद्० (वि०) परिशोधित, परिष्कृत, साफ़ सुथरा, पवित्र, शुद्ध स्वच्छ। [हुआ।
परिशुष्क तद्० (वि०) अतिशय शुष्क, बहुत सूखा
परिशेष तद्० (पु०) अन्त, शेष, अवशेष, समाप्ति।
परिशोध तद्० (पु०) परिशोधन, सर्वतोभाव से शुद्ध ऋणापाकरण, ऋण चुकाना प्रतिफल, प्रतिकार।
परिश्रम तद्० (पु०) आयास, श्रम, उद्योग, चेष्टा, क्लेश, प्रयास।

परिश्रमी तद्० (पु०) उद्योगी, श्रमकर्त्ता, चेष्टान्वित ।
परिश्रान्त तद्० (वि०) श्रमयुक्त, सब प्रकार से परिश्रमयुक्त, अवसन्न, क्लान्त ।
परिषद् तद्० (स्त्री०) सभा, संसत्, समिति, बहुत लोगों के एकत्रित होने का स्थान । [रिष्ट ।
परिष्कार तद्० (पु०) निर्मल, स्वच्छ, शुद्ध, सुव्यक्त,
परिष्कृत तद्० (वि०) भूषित, अलङ्कृत, भूषणयुक्त, निर्मल, शुद्ध, स्वच्छ, वेष्टित, प्राप्त सत्कार ।
परिष्वङ्ग तद्० (पु०) आलिङ्गन, रमण ।
परिसर दे० (पु०) निकास, निबाल, कगार ।
परिसंख्या तद्० (स्त्री०) गणना, सीमा, काव्यालङ्कार विशेष, यथा—
"बनत बरनि कछु वस्तु जहँ, बरनत एकहि ठौर
ताहि कहत परिसंख्य हैं, भूषन कवि दिलदौर ॥"
गुण आदि का किसी वस्तु विशेष में जहाँ नियम किया जाता है वहाँ ही परिसंख्यालङ्कार होता है, यथा—"अति मतवारे जहाँ दिरदे निहारियतु, तुरगन मैंही चञ्चलाई परकीति है । भूषण भनत जहाँ पर लगै बननि मैं, कोक पच्छिनिहि माँह बिछुरन रीति है, गुनिगन चोर जहाँ एक चितही के लोक, बँधै जहँ एक सरजाकी गुन प्रीती है, कंपु कदली में बैर बृच्छ बदली में शिवराज भवली के राज में यो राजनीति है ।"
—शिवराजभूषण ।
परिहर दे० (क्रि०) छोड़ कर, त्याग कर ।
परिहरना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्याग करना, त्यागना ।
परिहार तद्० (पु०) अवज्ञा, अनादर, अपमान, मोचन, त्याग, एक जाति विशेष, राजपूतों की एक शाखा ।
परिहास तद्० (पु०) उपहास, ठट्ठा, कौतुक, कुतूहल ।
परिहास्य तद्० (पु०) हँसने के योग्य, हास्य के उपयुक्त, हँसी का पात्र ।
परिहित तद्० (वि०) परिधान किया हुआ, आच्छादित, वेष्टित ।
परी दे० (स्त्री०) भाँडे से तेल निकालने की एक प्रकार का कलछी, अप्सरा, देवाङ्गना, स्वर्ग की वेश्या ।
परीप्सित तद्० (वि०) अन्य ईप्सित, दूसरे का इष्ट ।
परीक्षक तद्० (वि०) परीक्षा करने वाला, जाँच करने वाला, प्रश्नों का उत्तरपत्र देखने वाला ।
परीक्षा तद्० (स्त्री०) प्रत्यक्ष रीति से गुण का विवेचन, जाँच, परख, पोख ।
परीक्षित तद्० (पु०) जिसका गुण विवेचित हुआ है, अभिमन्यु के पुत्र । ये मत्स्यराज विराट् की कन्या उत्तरा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । एक समय कुरु नामक स्थान में रात के समय राजा परीक्षित ने सुना कि इसके राज्य में कलि घुस आया है, वे कलि के दमन करने के लिये सरस्वती नदी के तीर पर पहुँचे । वहाँ उन्होंने देखा कि राजोचित वस्त्र पहन कर एक शूद्र एक गौ और एक बैल को डण्डे से पीट रहा है । उस बैल के केवल एक ही पैर था । राजा परीक्षित् ने समझा ये ही धर्म हैं और यह शूद्र कलि है । कलि को मारने के लिये राजा ने तलवार उठायी । उस समय कलिराज वेश उतार कर राजा के पैरों पर गिर पड़ा और उसने शरण ग्रहण किया । शरणागत समझ कर राजा ने उसे छोड़ दिया और द्यूत, मद्य, हिंसा और स्त्री ये चार स्थान उसके रहने के लिये उन्होंने बताये । एक समय राजा अहेर खेलने गये थे । समय अधिक हो जाने के कारण राजा क्षुधातुर हो गये थे । वे एक आश्रम में एक महर्षि के पास गये । मुनि मौनी थे, इसी कारण उन्होंने राजा के प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये । इससे क्रुद्ध होकर एक मरा साँप राजा ने उस मुनि के गले में लगा दिया । इस मुनि के शृङ्गी नामक एक पुत्र था, उन्होंने किसी से यह घटना सुनी और शाप दिया कि जिसने मेरे पिता के गले में साँप लगाया है, उसको सातवें दिन तक्षक साँप काटेगा । मुनि ने जब अपने पुत्र से ये बातें सुनीं तो वे बड़े दुःखी हुए और राजा को शाप की बात कहलवा भेजी जिससे वे सावधान हो जाँय । देखते देखते सातवाँ दिन आगया, तक्षक राजा को काटने के लिये जा रहा था उसे एक ब्राह्मण मिला जो राजा की चिकित्सा करने जाता था । तक्षक ने उसकी परीक्षा की, जिससे उसकी विद्वत्ता से भीत होकर तक्षक ने बहुत रुपये देकर उस ब्राह्मण को लौटा दिया । ठीक समय तक्षक ने राजा को काटा और राजा का जीवन समाप्त हुआ ।
पर्व दे० (पु०) पोर, पर्व, ग्रन्थि, बाँस आदि की गाँठ

परुष तद्० (पु०) निष्ठुर वचन, कठोर वाक्य, कुवचन, गाली। (वि०) कठोर, कड़ा, निर्दय, अनेक रंग का, कर्बुरवर्ण, रुक्ष, तीक्ष्ण, निष्ठुरोक्ति। —ता (स्त्री०) कठिनता, निष्ठुरता, नीचता, ओछापन।—भाषी (वि०) कठोरभाषी, गाली बकने वाला।

परुषाक्षर तद्० (पु०) टेढ़े अक्षर, व्यङ्ग वचन, तानाज़नी, कुवचन, कटूक्ति, निष्ठुर वचन।

परुषोक्ति तद्० (स्त्री०) [परुष+उक्ति] कठोरवाक्य, नीरस वचन, गालीगलौज।

परे दे० (अ०) अनन्तर, पश्चात्, शेष में, अन्त में, दूर, उधर, पछी ओर, उस पार।

परेखा दे० (पु०) पश्चात्ताप, अनुताप, पछतावा।

परेत तद्० (वि०) मृत, मरे हुए मनुष्यों को श्राद्ध न होने तक परेत कहते हैं, पिशाच, प्रेत। (पु०) योनि विशेष, भूत, प्रेत, पिशाच।—राट् (पु०) प्रेतराज, यमराज, धर्मराज।

परेतना दे० (क्रि०) अटेरना, सूत लपेटना, चरखी में सूत लपेटना, सूत की फेंटी बनाना।

परेता दे० (पु०) अटेरन, चरखा, रहेटा।

परेवा तद्० (पु०) पारावत, कपोत, कबूतर, प्रतिपद् तिथि, पक्ष की पहली तिथि।

परेश तद्० (पु०) [पर+ईश] परमेश्वर, परमात्मा।

परेशान दे० (वि०) घबड़ाया हुआ, व्याकुल।

परेह दे० (पु०) कड़ी, जूस, रसा।

परोक्ष तद्० (वि०) भूत काल, जो सामने न हो, जो देखा न गया, जो अज्ञात हो।

परोपकार तद्० (पु०) [पर+उपकार] पराया हित, अन्यहित, दूसरे की भलाई।

परोपकारी तद्० (वि०) दूसरे का हितकारी, पर-हितकर्ता, अन्य शुभचिन्तक, दूसरे की भलाई चाहने और करने वाला। [सम्मति।

परोपदेश तद्० (पु०) दूसरे के हित की बात कहना,

परोस दे० (पु०) समीप, निकट, पड़ोस।

परोसना दे० (क्रि०) परसना, भोजन की सामग्री पत्तल या थाली में रखना।

परोसा दे० (पु०) भोजन के लिये सज्जित सामग्री, सजाया हुआ थाल।

परोसी दे०(पु०) अपने घर के पास के घर में रहने वाला।

परोसैया दे० (पु०) परोसने वाला, परिवेषक, भोजन देने वाला, परसैया।

परोहन दे० (पु०) सवारी, रथ, बहली, गाड़ी।

परोहा दे० (पु०) चरस, मोट, पुरवट, पुर, चमड़े का बना थैला जिससे जल निकालते हैं।

पर्कटी तद्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, पाकड़ का वृक्ष यह वृक्ष वनस्पतियों में है। उस वृक्ष को वनस्पति कहते हैं जिसमें बिना फूल उगे ही फल फलें।

पर्चा दे० (स्त्री०) परख, आँच, परीक्षा, अनुभव, चिन्हान। [कराना।

पर्चाना दे० (क्रि०) भेंट करवाना, मिलाना, परिचय

पर्चूनिया दे० (पु०) आटे वाला, आटा दाल आदि बेचने वाला, मोदी। [परचून बेचने का काम।

पर्चूनी दे० (स्त्री०) आटे का व्यापार, मोदीखाना,

पर्छती दे० (स्त्री०) परछती, छाँद का प्रान्त भाग, छोटा छप्पर।

पर्छा दे० (पु०) टकुवा, तकुवा, सूजा, जला हुआ धान।

पर्छाई दे० (स्त्री०) प्रतिबिम्ब, छाया, परछाँई।

पर्ज दे० (स्त्री०) ढोलक के बजाने का हथकंडा, ढोलक का एक बोल।

पर्जंक (पु०) पर्यंक, पलंग।

पर्जनी (स्त्री०) दारुहल्दी।

पर्जन्य तद्० (पु०) इन्द्र, शब्दकारी मेघ, मेघ का शब्द, आदि, बादल।—ा (स्त्री०) दारुहल्दी।

पर्ण तद्० (पु०) पत्र, दल, पत्ता, पत्ती, पत्र, पान, पलाश।—कार (पु०) बरई, तमोली।—कपूर (पु०) पानकपूर।—कुटी (स्त्री०) पत्तों से बनी झोपड़ी, पर्ण निर्मित कुटी, तृण आदि की बनी झोपड़ी।—कृच्छ्र (पु०) व्रत विशेष, जिसमें ३ दिन ढाक, गूलर, कमल और बेल के पत्तों का क्वाथ पिया जाता है।—कृच्छ्र (पु०) व्रत विशेष जिस में प्रथम दिन ढाक के, दूसरे दिन गूलर के, तीसरे दिन कमल के और चौथे दिन बेल के पत्तों का क्वाथ पीकर पाँचवें दिन कुश का जल पिया जाते हैं।—नगड (पु०) वनस्पति जिसमें फूल न लगते हों।—चोरक (पु०) गन्धद्रव्य विशेष।—नर (पु०) ढाक के पत्तों का बना पुतला जो किसी

मरे हुए व्यक्ति का दाह कर्म करने को उसकी हड्डियों को न मिलने पर बना कर जलाया जाता है —भोजन (पु०) वह व्यक्ति जो केवल पत्ते खाकर रहे, बकरी।—मणि (स्त्री०) पन्ना, रत्न विशेष।—माचल (पु०) कमरख का वृक्ष। —मृग (पु०) वृक्षों पर रहने वाले वानर आदि जीव जन्तु।—य (पु०) असुर का नाम जो इन्द्र द्वारा मारा गया था।—राट (पु०) वसन्त ऋतु।—लता (स्त्री०) पान की बेल।—वल्क (पु०) ऋषि विशेष।—वल्ली (स्त्री०) पलाशी नाम की लता।—शबर (पु०) देश विशेष। —शाला (स्त्री०) मुनियों का पत्र रचित गृह, पत्रगृह।—शालाग्र (पु०) भद्राश्व वर्ष के एक पहाड़ का नाम।—सि (पु०) कमल, पानी में बना हुआ घर, सागर। [नाम।

पर्णाक (पु०) पाणिकगोत्र के प्रवर्तक ऋषि का

पर्णास (पु०) तुलसी।

पर्णिक (पु०) पत्ते बेचने वाला। [की सब्जी।

पर्णिका (स्त्री०) मानकन्द, शालपर्णी, अग्नि मथने

पर्णिनी (स्त्री०) माषवन। [(पु०) सुगन्ध वाला।

पर्णी तद्० (पु०) वृक्ष, द्रुम, तरु, रूख, पेड़।—र

पर्त (पु०) तह, परत।

पर्दनी (स्त्री०) धोती।

पर्दा दे० (पु०) यवनिका, परदा।

पर्दादा दे० (पु०) दादा का बाप, प्रपितामह, वृद्ध-पितामह, पिता का दादा। [विशेष, पापड़।

पर्पट तद्० (वि०) तृणविशेष, पित्तपापड़ा, औषधि

पर्पटी तद्० (स्त्री०) मुलतानी मट्टी, एक सुगन्धित लता का नाम, पपड़ी, पपरी, कुर्कुरी, पतली रोटी।

पर्यङ्क, पर्यंक तद्० (पु०) खाट, खट्वा, पलका, पलंग, सेज, शय्या।—बन्धन (पु०) आसन विशेष, योगासन का भेद, यह आसन वस्त्र से पीठ जानु और जंघा को बाँधने से बनता है।

पर्यटन तद्० (पु०) बारबार गमन, घूमना, भ्रमण।

पर्यनुयोग तद्० (पु०) जिज्ञासा, प्रश्न, किसी अज्ञात विषय को जानने के लिये प्रश्न।

पर्यन्त तद्० (पु०) शेष सीमा, अन्तसीमा, तक। —देश (पु०) सीमान्त देश, किसी देश के अन्त का देश।—भू (स्त्री०) नदी नगर पर्वत आदि के समीप की भूमि, परिसर भूमि।

पर्यवसान तद्० (पु०) अन्त, अन्त, समाप्ति, शेष, परिणाम।

पर्याप्त तद्० (पु०) [परि+आप्+क्त] भरपेट, काफी, आवश्यकता के अनुसार, ज़रूरत के मुताबिक, जितना जितने से काम चल जाय।

पर्याय तद्० (पु०) पारा, क्रम, आनुपूर्वी, परिवर्तन, प्रकार, अवसर, निर्माण, द्रव्यधर्म सम्बन्ध विशेष, सम्पर्क विशेष, बोध, ओसरा, बारी।—वाचक (पु०) एकार्थ वाचक, एकार्थ बोधक।—शयन (पु०) सिपाहियों का पर्याय से सोना, पहरे वालों का पारी से सोना।

पर्यालोचना तद्० (स्त्री०) ध्यान से देखना, विशेष रूप से अवलोकन, विचार पूर्वक देखना।

पर्युत्सुक तद्० (पु०) [परि+उत्सुक] शोकार्त, उद्विग्न चित्त, व्याकुल।

पर्युषित तद्० (वि०) [परि+वस्+क्त] पहिले दिन की बनाई वस्तु, बासी। [सिरे का, पछा।

पर्ला दे० (वि०) उस पार का, उस सिरे का, परले

पर्व तद्० (पु०) ग्रंथि, प्रस्ताव, क्षणप्रान्तर, अमावस्या और प्रतिपद की सन्धि, विषम संक्रान्ति आदि, ग्रन्थविच्छेद, ग्रंथ का भाग विशेष, अध्याय, क्षणिक काल, स्वल्प काल, उत्सव, त्योहार।

पर्वणी तद्० (स्त्री०) त्योहार, उत्सव।

पर्वत तद्० (पु०) शैल, गिरि, नग, पहाड़, देवर्षि विशेष ये देवर्षि नारद के बड़े मित्र और उनके सहयोगी थे।—ज (पु०) पर्वत जात, पर्वत से उत्पन्न।—नन्दिनी (स्त्री०) पार्वती। —राज (पु०) हिमालय पर्वत।

पर्वतारि तद्० (पु०) इन्द्र, शक्र, सुरपति, वज्रपाणि। सुनते हैं कि पहले. इन पर्वतों के पर थे, इसी से ये भी अन्यान्य पक्षियों के समान उड़ा करते थे। कभी कभी ये उड़ कर नगरों पर बैठ जाया करते थे, इनके बैठने से नगरों की क्या दशा होती थी यह कहने की आवश्यकता नहीं है, यह ख़बर इन्द्र की सभा में पहुँची, इन्द्र ने इसका प्रबन्ध

करने के लिये पर्वतों के पक्ष काट डाले तभी से इन्द्र को पर्वतारि कहते हैं। [पहाड़ी।

पर्वतिया दे० (पु०) लौकी, लौआ, कद्दू। (वि०)

पर्वतीय तद्० (वि०) पर्वतजात, पर्वत से उत्पन्न पर्वत वासी, पर्वत सम्बन्धी।

पर्वालु दे० (पु०) अञ्जनहारी, काजल वाली।

पल तद्० (पु०) आमिष, कर्ष चतुष्टय, चार तोला, साठ विपलकाल, अत्यल्प काल, थोड़ा समय, घड़ी का साठवाँ अंश, निमेष, तृण, घास, खर।—कर्ण (पु०) धूपघड़ी के शङ्कु की उस समय की परछाँई की लम्बाई जब मेष संक्रान्ति के मध्यान काल में सूर्य विषुवत् रेखा पर होता है। —दरिया (वि०) अत्यन्त उदार, बड़ा दानी। —भर में (वा०) उसी क्षण, तुरन्त, शीघ्र, बहुत शीघ्र।—मारते (वा०) पल भर में, शीघ्र, अत्यन्त शीघ्र। [सिरा, नोक।

पलई (स्त्री०) वृक्ष की कोमल डाली या टहनी,

पलक दे० (पु०) निमेष, पल, पपनी।—पोटा (पु०) आँख का रोग विशेष जिसमें बरनियाँ झड़ जाती हैं और नेत्र बराबर झपका करते हैं।

पलका (पु०) पलंग, पर्यङ्क।

पलक्या (पु०) पालक का शाक।

पलंग दे० (पु०) पर्यङ्क, खाट, खटिया, शय्या। —ड़ी दे० (स्त्री०) छोटा पलँग, खटोला।

पलटन दे० (स्त्री०) सेना, योद्धा, सिपाहियों का दल, एक पलटन में हजार सिपाही रहते हैं।

पलटना दे० (क्रि०) बदलना, फेर बदल करना, लौटना, मुड़ना, मुड़ना।

पलटा दे० (पु०) परिवर्तन, परिवर्त, बदला, अदला बदला, प्रतिकार, प्रतिफल, किये का फल।—खाना (वा०) फिरना, उलटना।—लेना (वा०) शोध लेना, बदला लेना, बैर शोध करना, बैर चुकाना।

पलटाना दे० (क्रि०) बदलाना, फिराना, लौटाना।

पलटाव दे० (पु०) फिराव, लौटाव।

पलड़ा दे० (पु०) पड़ा, तराजू का पड़ा।

पलथा दे० (पु०) लोट पोट।—मारना (वा०) लोटना पोटना।

पलथी दे० (स्त्री०) आसन विशेष, स्वस्तिक आसन, बाएँ पैर को दहिने जंघे पर और दहिने पैर को बाएँ जंघे से मिला कर बैठना, मनुष्यों की एक प्रकार की बैठक। [पाना, पनपना।

पलना दे० (क्रि०) प्रति पालित होना, बढ़ना, वृद्धि

पलल तद्० (पु०) मांस, आमिष, खली जो पशुओं को खिलाते हैं।

पलवल दे० (पु०) परवल, परोरा। [रक्षा कराना।

पलवाना दे० (क्रि०) पोसवाना, पालन कराना,

पलवार दे० (पु०) नाव विशेष, बड़ी नाव।

पलवारी दे० (पु०) नाव का चलाने वाला, केवट, मल्लाह, माँझी, खेवट।

पला दे० (पु०) पड़ा चमचा, कर्छा, डब्बू, परी, तेल घी आदि निकालने की कलछी विशेष।

पलाण्डु तद्० (पु०) प्याज।

पलान दे० (पु०) घोड़े की जीन।

पलाना दे० (क्रि०) भागना, भय से एक स्थान छोड़ कर दूसरे स्थान को जाना, धाना, छा जाना।

पलानी दे०(स्त्री०) छावनी, छाँद, तृण निर्मित छप्पर।

पलाना दे० (क्रि०) जीन बाँधना, घोड़े पर जीन कसना

पलायक (पु०) भगोड़ा।

पलायन तद्० (पु०) भय के कारण दूसरे स्थान में जाना, प्रस्थान, भागना, रूपोश होना।

पलायमान तद्० (पु०) भगोड़ा, भग्गू, भगनोद्यत।

पलायित तद्० (वि०) भागा हुआ।

पलाल दे० (पु०) पयाल, पुवाल।

पलाव दे० (पु०) पलानी, छावनी।

पलाश तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, किंशुक वृक्ष, टेसू का पेड़, ढाक का वृक्ष, हरा रंग, मगध देश, राक्षस, पत्र, पत्ता, पत्ती।—पापड़ा (पु०) पलाश का बीज।

पलास दे० (पु०) पालने का काम, रक्षा करना।

पलित तद्० (वि०) किसी कारण से केशों का पक जाना, बालों का सफ़ेद हो जाना, तार, वर्तंग, वृद्ध, शिथिल।

पली दे० (स्त्री०) परी, एक प्रकार का चम्मच, घी, तेल आदि निकालने की कर्छी।

पलीत दे० (पु०) भूत, प्रेत, पिशाच, योनि विशेष, भूत योनि । (वि०) मैला कुचैला ।

पलीता दे० (पु०) तोप की रंजक में आग सुलगाने की बत्ती, कपड़े की मोटी बत्ती ।

पलुवा दे० (पु०) पलित, पला हुआ, पोसा हुआ, पाला पोसा ।

पलेथन दे० (पु०) सूखा आटा, जिसके सहारे रोटी बेली जाती है ।—निकालना (वा०) पीटना, पीट कर बेदम कर देना ।

पलोव दे० (पु०) परोह, कड़ी, जूस ।

पलोटत दे० (क्रि०) चरण सेवा करता है, धीरे धीरे पाँव दबाता है । [पहलौठा ।

पलौठा दे० (वि०) प्रथम पुत्र, प्रथम उत्पन्न पुत्र,

पल्ल तद्० (पु०) धान रखने का स्थान, गोला, बाज़ार ।

पल्लव तद्० (पु०) नये पत्तों सहित शाखा का अग्रभाग, पत्र, शाखा, अँकुर, नवीन पत्तों का गुच्छा, किसलय, विटप ।—क (पु०) मछली विशेष ।—ग्राहि पाण्डित्य (वा०) जिस विद्या का फल न देखा जाय, निष्फल विद्या, अनाप शनाप बकना ।

पल्लवास्त्र (पु०) कामदेव ।

पल्लवित तद्० (वि०) पल्लवयुक्त, सपल्लव, विस्तृत, बहुलीकृत, नवीन पत्रयुक्त, किसलयान्वित ।

पल्लवी (पु०) पेड़ । (वि०) पल्लवयुक्त ।

पल्ला दे० (पु०) अन्तर, व्यवधान, दूरी, सहायता, कपड़े का छोर, आँचर, तीन मन का बोझा । (वि०) दूसरा, उस ओर का, (पल्ला गाँव) ।—दार (पु०) मजूर, बोझ ढोने वाला ।

पल्ली तद्० (स्त्री०) छोटा गाँव, गँवई, आश्रम, छिपकली । (वि०) उस ओर की, उस पल्ली पार ।

पल्लू दे० (पु०) वस्त्र का खूँट, कपड़े का छोर । —दार (पु०) ज़री के काम वाला कपड़ा, ज़री दार कपड़ा । [वास (पु०) कछुआ ।

पल्वल तद्० (पु०) अल्प जलाशय, वापी, तड़ाग ।—

पल्हिंडा दे० (पु०) पनहड़ा, पानी भरे घड़े रखने का स्थान ।

पव (पु०) गोबर, वायु, भोसान, बरसाना ।

पवई (स्त्री०) पक्षी विशेष ।

पवन तद्० (पु०) वायु, हवा, बतास, वायु कोण का स्वामी, देवता विशेष ।—कुमार (पु०) हनुमान, भीम ।—तनय (पु०) हनुमान, भीम ।—चक्र (पु०) बवंडर, चक्रवात, चक्कर खाती हुई ज़ोर की हवा ।—सखा (पु०) अग्नि, आग ।—रेखा (स्त्री०) यदुवंशी उग्रसेन की स्त्री का नाम, कंस दुर्मिल का बेटा था ।—सुत (पु०) पवन का पुत्र, हनुमान, भीम ।

पवनायन तद्० (पु०) झरोखा, खिड़की ।

पवनाल (पु०) पुनेरा नाम का धान्य । [का नाम ।

पवनावर्त्ती तद्० (स्त्री०) महर्षि कश्यप की एक स्त्री

पवनाश या पवनाशी या पवनाशन तद्० (पु०) वायु भक्षक, वायु का आहार करने वाला, सर्प, साँप ।

पवनी (स्त्री०) गाँव में रहने वाली वह नाऊ बारी आदि प्रजा जिसे गाँव के उच्च जाति वालों से नियमित रूप से कुछ मिलता है ।

पवमान (पु०) पवन, गार्हपत्याग्नि, चन्द्रमा का एक नाम ।

पवर्ग (पु०) वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग ।

पवाई दे० (स्त्री०) घोड़े के पैर की साँकर, ऐकड़ी, पकड़ा, एक जूता एक पैर का ।

पवाज दे० (पु०) गँवइया, ग्रामीण, गँवार, नीच, अधम ।

पवाना (क्रि०) खिलाना । [पका कर ।

पवारि दे० (क्रि०) डार कर, फेर कर, उछाल कर,

पवाँर दे० (पु०) जाति विशेष, क्षत्रियों की एक जाति, क्षत्रिय जाति की एक शाखा, परमार ।

पवाँरना दे० (क्रि०) फेंकना, डालना, पठाना ।

पवि तद्० (पु०) वज्र, इन्द्र का अस्त्र विशेष, कुलिश । —पात (पु०) वज्र पड़ना, बिजली गिरना ।

पवित्र तद्० (वि०) शुद्ध, स्वच्छ, पाप रहित, साफ़ विमल, निर्मल, पाक, दोष रहित, निर्दोष, निष्कलङ्क ।—ता (स्त्री०) शुद्धता, स्वच्छता, निष्कलङ्कता, निर्दोषता, निर्मलता विमलता ।

पवित्रा तद्० (स्त्री०) कुश के बने छल्ले विशेष जो हाथों की अंगुलियों में श्राद्ध कालादि में धारण किये जाते हैं, विशेष आकार की बनी सोने का

अँगूठी एक प्रकार की रेशम की माला जो पवित्रा एकादशी को भगवान को समर्पित की जाती है।

पवित्री तद्० (स्त्री०) कुश मुद्रिका, पैंती, यह कुशा की बनाई जाती है, केवल सुवर्ण अथवा अष्टधातु से भी यह बनती है। पूजा, तर्पण आदि में इसके धारण करने की विधि है।

पशम् दे० (पु०) ऊर्ण, लोम, ऊन।

पशमी दे० (वि०) ऊन की बनी, मुलायम ऊन के बने पशमीना, दुशाले आदि।

पशमीना (पु०) पशम का बना कपड़ा।

पशु तद्० (पु०) जन्तु विशेष, सींग पूँछ वाला, प्राणी, चतुष्पाद, प्राणिमात्र, सात्वकों के त्रिभाव में का एक भाव।—ता (स्त्री०) पशुभाव, मूर्खता।—तुल्य (वि०) पशु सदृश, निर्बोध, अबूझ, मूर्ख, मूढ़।—पति (पु०) शिव, महादेव, त्रिलोचन।—पाल (पु०) पशुपालनकर्त्ता, पशुरक्षक।—राज (पु०) सिंह, मृगेन्द्र, शेर।

पश्चात् तद्० (अ०) पीछे, पश्चिम दिक्, अनन्तर, बाद।

पश्चात्ताप तद्० (पु०) कर्मान्तर सन्ताप, पश्चात् शोक, अनुशोच पछतावा।

पश्चाद्वर्त्ती तद्० (वि०) अनुवर्ती, पश्चाद्गामी, पश्चात् अवस्थित, पीछे चलने वाला, क्रमतस्थित।

पश्चार्ध तद्० (वि०) शेषार्द्ध, अपरार्द्ध, शरीर का अपर भाग।

पश्चिम तद्० (पु०) पश्चिम दिशा, पछाँह।

पश्यतोहर तद्० (पु०) चौर, चोर, जो देखते देखते चुरा ले, उठाईगीर, सुनार।

पश्यामि तद्० (क्रि०) मैं देखता हूँ।

पश्वाचार तद्० (पु०) आचार विशेष, वाममार्गियों की क्रिया विशेष। [पक्ष।

पसवारा दे० (पु०) एक पक्ष, पाख भर, पन्द्रह दिन,

पषान (पु०) पत्थर पाषाण।

पसरना दे० (क्रि०) फैलना, विस्तृत होना, अधिक दूर तक व्याप्त होना, लेट जाना, पड़ जाना।

पसराव दे० (पु०) फैलाव।

पसली दे० (स्त्री०) पाँजर की हड्डी, पञ्जर।

पसा दे० (पु०) मुट्ठी भर, दो मुट्ठी भर।

पसाई दे० (स्त्री०) चावल विशेष।

पसाना दे० (क्रि०) रँधे हुए चावलों का माँड़ निकालना।

पसार तद्० (पु०) प्रसार, फैलाव, विस्तृति, व्यापकता।

पसारना दे० (क्रि०) फैलाना, सूखने के लिये धूप में फैलाना, बिछाना।

पसारा दे० (पु०) विस्तार, फैलाव।

पसारी दे० (पु०) पनसारी, गाँधी।

पसीजना दे० (क्रि०) पानी छूटना, नरम होना, पसीने का निकलना, दयालु होना, दयाई होना।

पसीना दे० (पु०) प्रस्वेद, स्वेद, पसेव।

पसीव दे० (पु०) पसीना, प्रस्वेद, स्वेद।

पसूज दे० (स्त्री०) सीवन, तुर्पन।

पसूँजना दे० (क्रि०) तुर्पना, सीना, डोरा डालना।

पसेव दे० (पु०) किसी किसी लकड़ी को जलाने पर उसके किसी अनजले भाग से बदबूदार पीला पानी सा जो निकलने लगता है उसे पसेव कहते हैं, पसीना।

पस्ताना दे० (क्रि०) पछताना, पछतावा करना, पश्चात्ताप करना, अनुताप करना अनुशोचन करना।

पह दे० (स्त्री०) तड़का, भोर, सवेरा, भिनसार। —फटना (क्रि०) प्रातःकाल होना, सवेरा होना सूर्योदय होना। [मुलाक़ात, चिन्हार।

पहचान दे० (स्त्री०) परिचय, चिन्हारी, जानकारी,

पहचानना दे० (क्रि०) जानना, चिन्हना।

पहनना दे० (क्रि०) पहिरना, परिधान करना, कपड़ा पहनना, वस्त्र धारण करना।

पहनाव (पु०) पोशाक, पहिराव।

पहनावा दे० (पु०) पहिनाव, कपड़े पहिनने का ढंग, उड़ावा "पहनावा उढ़ावा"।

पहर तद्० (पु०) काल विशेष, प्रहर, समय का परिमाण, दिन का चतुर्थांश, एक प्रहर प्रायः तीन घण्टे का होता है।

पहरा दे० (पु०) चौकी, रक्षा। [धारण कराना।

पहराना दे० (क्रि०) पहनाना, पहिराना, कपड़े

पहरा देना दे० (वा०) चौकी देना, रखवाली करना।

पहिराना (क्रि०) पहराना।

पहरे में डालना दे० (वा०) रक्षा में रखना, हवालात में देना, पहरुए को सौंपना।

पहरे में पड़ना दे० (वा०) हवालात में रखना, किसी अपराध के विचारार्थ हवालात में रखा जाना।
पहरावना, पहरावन दे० (पु०) वस्त्रविशेष जो प्रत्येक बराती को विदा के समय कन्या के पिता की ओर से पहराया जाता या दिया जाता है।
पहरावनि दे० (स्त्री०) वस्त्र, वसन, कपड़े का जोड़ा, जो विवाह आदि उत्सव के समय दिया जाता है।
पहरिया पहरुआ दे० (पु०) पहरा देने वाला, चौकी करने वाला, चौकीदार।
पहरू दे० (पु०) प्रहरी, पहरा देने वाला, पहरुआ।
पहल दे० (स्त्री०) प्रान्त, भाग, एक ओर का, खेल की भुजा। [धुनी हुई दबी रुई।
पहला दे० (गु०) प्रथम, आद्य, आरम्भ का। (पु०)
पहाड़ दे० (पु०) पर्वत, शैल, गिरि।—सी रातें (वा०) बड़ी रात, दीर्घ रजनी, कष्ट की रात्रि, क्लेश की रात। [पहाड़ों की सूची।
पहाड़ा दे० (पु०) जोड़ती, गुणन, सङ्कलन, उन्हें बताने
पहाड़िया दे० (वि०) पर्वतवासी, पहाड़ का रहने वाला, पर्वती। (स्त्री०) छोटा पहाड़, पहाड़ी।
पहाड़ी दे० (स्त्री०) छोटा पहाड़, टीला, टेकरी, पहाड़ पर रहने वाला।
पहिचान दे० (स्त्री०) जान पहिचान, चिन्हार।
पहिनना दे० (क्रि०) पहिनना, धारण करना।
पहिया दे० (पु०) चक्र, रथचक्र, गाड़ी का चक्का।
पहिरना दे० (क्रि०) पहिनना, धारण करना।
पहिरावन दे० (पु०) वस्त्र, वसन, पहरावन।
पहिला दे० (वि०) प्राथमिक, प्रारम्भिक, पहले का, आगे का, अगला।
पहिले दे० (अ०) आगे, प्रथम, आदि।
पहिलौंठा दे० (पु०) प्रथम पुत्र, ज्येष्ठ पुत्र।
पहुँच दे० (स्त्री०) आगमन, शक्ति, सामर्थ्य, पैसार, प्रवेश, पैठ, प्राप्ति सूचक पत्र, रसीद।
पहुँचना दे० (क्रि०) प्राप्त होना, पहुँच जाना, चला जाना, बढ़ आना, घुसना, पास आना।
पहुँचा दे० (पु०) मणिबन्ध, कलाई।
पहुँचाना दे० (क्रि०) प्राप्त कराना, भिजाना, पठाना।
पहुँची दे० (स्त्री०) कलाई में धारण करने का जनाना आभूषण विशेष।
पहुड़ना दे० (क्रि०) लेटना, सोना, शयन करना, पौढ़ना।
पहुड़ाना दे० (क्रि०) लेटाना, सुलाना, शयन कराना, पौढ़ाना। [आतिथ्य, अतिथि सत्कार, दावत।
पहुनई या पहुनाई दे० (स्त्री०) मेहमानी, आदर,
पहुप तद्० (पु०) पुष्प, कुसुम, फूल। [एक रस्म।
पहेना दे० (पु०) बरात की विदाई के दिन की
पहेली दे० (स्त्री०) प्रहेलिका, गूढ़ प्रश्न, यह काव्य का एक गुण है। इसमें एक सामान्य अर्थ प्रकाशित किया जाता है, परन्तु असली अर्थ छिपा रहता है, इस प्रकार जहाँ एक वाक्य से दो अर्थ प्रकाशित किये जाते हैं उसे प्रहेलिका या पहेली कहते हैं। [भरे घड़े रखे जायँ।
पन्हेड़ा दे० (पु०) वह स्थान जहाँ पीने के पानी के
पन्हेड़ी दे० (स्त्री०) वह छोटा स्थान जहाँ पानी के भरे घड़े रखे जायँ।
पाँ दे० (पु०) पाँव, पैर, पद, चरण।
पाँइ (पु०) पैर, पाँव।—ता (पु०) पाँयता, पलँग का वह भाग जिस ओर पैर रहे।
पाँक दे० (पु०) कीचड़, पङ्क, कर्दम, दलदल।
पाँख, पाँखड़ा (पु०) पंख, पर।
पाँखड़ी (स्त्री०) पखड़ी।
पाँखरी (स्त्री०) पखड़ा। [गिरती है।
पाँखी (स्त्री०) पतंगे, पँखदार कीड़ी जो दीपक पर
पाँग (पु०) वह नई ज़मीन जो किसी नदी का जल घट जाने पर निकले, कछार, खादर, गङ्गबरार।
पाँगल (पु०) ऊँट। [आता है।
पाँगा दे० (पु०) एक प्रकार का नून, जो बनाया
पाँच दे० (वि०) पञ्च, संख्या विशेष, ५।—साल (वा०) झंझट, उलझन, व्याकुलता, बद्धिमता, उद्वेग। [कार्य वर्जित है।
पाँचक (पु०) धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिसमें अनेक
पाँचजन्य (पु०) श्रीकृष्ण का शङ्ख।
पाँचभौतिक (पु०) पाँच तत्त्वों से बना हुआ शरीर।
पाँचर (स्त्री०) लकड़ी के छोटे टुकड़े।
पाँचालिका (स्त्री०) कपड़े की बनी गुड़िया।
पाँचाल (पु०) बढ़ई, नाई, जुलाहा, धोबी और चमार इन पाँचों का समुदाय, भारत के पश्चिमोत्तर

का प्रान्त विशेष।—ी (स्त्री०) गुड़िया, वाक्य, रचना-प्रणाली विशेष, द्रौपदी, स्वर साधन की रीति विशेष।

पाँचवाँ दे० (गु०) पञ्चम, पाँच को पूर्ण करने वाली संख्या।

पाँजर दे० (पु०) पसली, पार्श्व, पञ्जर, पाँजर की हड्डी।

पाँझ (वि०) नदी के जल का कम होकर लोगों के आने जाने का मार्ग हो जाना।

पाँडव (पु०) महाभारत के नायक युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। सफेद हाथी, सफेद रंग।

पाँडे दे० (पु०) पाठक, अध्यापक, ब्राह्मण, ब्राह्मणों की एक उपाधि, पढ़ाने वाला।

पाँत (स्त्री०) श्रेणी, कतार, अवली।

पाँतर दे० (पु०) उजाड़, निर्जन स्थान, वीरान।

पाँति, पाँती दे० (स्त्री०) श्रेणी, कतार, पंक्ति, अवलि, मिठाई का परोसा जो लड़की के विवाह में बरातियों के घरों में प्रत्येक व्यक्ति के हिसाब से बाँटा जाता है।

पाँपोश दे० (पु०) पाँवड़ा, पायंदाज़।

पाँयती दे० (पु०) पैताना, पैर की ओर, पैर की ओर का बिछौना। [ओर बना हुआ छोटा बाग।

पाँयाग (पु०) राजप्रसाद के आस पास या चारों

पाँव दे० (पु०) पैर, चरण, पद, गोड़।—उठाना (वा०) शीघ्र शीघ्र चलना, वेग से चलना। —उतरना (वा०) पाँव का टूट जाना, पाँव का फूलना।—काँपना (वा०) डरना, किसी काम के करते भय मालूम होना।—किसी का उखाड़ना (वा०) किसी स्थान पर ठहरने नहीं देना, किसी को जमने नहीं देना।—किसी के गले में डालना (वा०) तर्क के द्वारा उसीकी बातों से उसे दोषी ठहराना।—चल जाना (वा०) डगमगाना, अस्थिर होना।—जमाना (वा०) दृढ़ होना, दृढ़तापूर्वक ठहराना।—ज़मीन पर न ठहरना (वा०) अत्यन्त प्रसन्न होना, अतिशय हर्ष से फूल जाना, अभिमान करना, अहङ्कार करना।—डालना (वा०) किसी काम का प्रारम्भ करना, किसी काम को करने के लिये उद्यत होना।—डिगना (वा०) डिगमगाना, फिसलना, किसी काम से निराश होना।—तले मलना (वा०) पीड़ा देना, दुःख देना, पीड़ित करना।—तोड़ना (वा०) किसी के काम में बाधा डालना, किसी को हानि पहुँचाना, आलस में बैठे रहना, अधिक चलना।—धो धो पीना (वा०) अधिक आदर करना, अत्यन्त भक्ति करना, अनुनय विनय करना, चिरौरी करना।—निकालना (वा०) मर्यादा छोड़ना, कुल की रीति को डाँक जाना।—पकड़ना (वा०) शरण में आना, चिरौरी करना, विनती करना।—पर पाँव रखना (वा०) अनुकरण करना, दूसरे के चाल पर चलना, शीघ्रता करना।—पाँव (वा०) पैदल।—पीटना (वा०) अधीर होना, घबड़ा जाना, व्यर्थ का परिश्रम करना, निष्फल उद्योग करना।—पूजना (वा०) भक्ति करना, अलग रहना, पृथक् रहना।—फूँक फूँक रखना (वा०) सावधान होना, सावधानी से चलना, विचारपूर्वक किसी काम को करना।—फैलाकर सोना (वा०) निश्चिन्त रहना, बिना चिन्ता के रहना, निडर रहना, निर्भय रहना।—फैलाना (वा०) अपना अधिकार बढ़ाना, पैठ कराना, पसार करना।—भर जाना (वा०) थक जाना, श्रान्त होना।—रगड़ना (वा०) निष्फल काम करना, निरर्थक उद्योग करना, शोक करना, दुःख प्रकाश करना।—लगना (वा०) प्रणाम करना, नमस्कार करना।—से पाँव बाँधना (वा०) सर्वदा किसी के पीछे लगा रहना, रक्षा करना, एक क्षण के लिये भी नहीं छोड़ना।—से पाँव भिड़ाना (वा०) बराबरी करना, गुरुपना करना।—सोना (वा०) पाँव शून्य होना, पाँव में झिनझिनी उठना।—दबे आना (वा०) धीरे धीरे आना, शनैः शनैः आना।

पाँवड़ा दे० (पु०) टाट या नारियल की जटा की बनी चटाई का टुकड़ा जो पैर पोंछने के लिये ड्योढ़ी पर बिछाया जाता है, पापोश।

पाँशव सं० (पु०) पाँगा निमक।

पाँशु, पाँसु सं० (पु०) धूलि, रेत, रेतला, स्त्री का मासिक धर्म।

पाँशुका सं० (स्त्री०) धूलि, रज, रेत, रजस्वला स्त्री।

पाँशुज तद्० (त्रि०) धूलि युक्त, धूलि धूसरित, धूलि विशिष्ट। (पु०) शिव, महादेव, खाकी बाबा।
पाँशुला तद्० (स्त्री०) भ्रष्ट चरित्रा स्त्री,कुलटा, वेश्या।
पाँस दे० (पु०) खाद, सार, धूर।
पाँसना दे० (क्रि०) खाद देना, खाद सड़ाना।
पाँसु दे० (पु०) पसली, पाँजर की हड्डी, धूलि।
पाई दे० (स्त्री०) पैसा, पैसे का तीसरा भाग, एक प्रकार की पतली छड़ी जिस पर ताना लपेटा जाता है।
पाउ (पु०) पाँव, पैर।
पाक तद्० (पु०) [पच्+घञ्] रसोई, उलूक, पेचक, भग्नभीति, एक दैत्य का नाम।—कर्त्ता (वि०) पाचक, सूपकार, रन्धनकारी, रसोई बनाने वाला, रसोइया।—क्षार (पु०) जवाखार।—गृह (पु०) रन्धनालय, रसोईघर।—पात्र (पु०) स्थाली, हाँडी।—पटी (स्त्री०) स्थाली, चूल्हा, आवा, भट्टी, पँजावा।—यज्ञ (पु०) वृषोत्सर्ग, गृह प्रतिष्ठा आदि के लिये हवन।—शाला (स्त्री०) रन्धनगृह, पाकस्थान, रसोईघर।—शासन (पु०) इन्द्र, देवराज।—स्थाली (स्त्री०) हाँडी बटुई, पाक पात्र विशेष।
पाकड़ या पाकर दे० (पु०) वृक्ष विशेष, पर्कटी वृक्ष।
पाकना दे० (क्रि०) उपजना, सीमना।
पाकरी दे० (स्त्री०) पाकरिया वृक्ष।
पाकसँड़सी दे० (स्त्री०) गहुवा, सड़सी, गरम वट लोई पकड़ कर उठाने का औज़ार।
पाका दे० (पु०) फोड़ा, व्रण।
पाकी (वि०) पक्की, तैयार, परिपक्व।
पाकुक दे० (पु०) पाचक, पाककर्त्ता।
पाकूपा दे० (पु०) सज्जीखार।
पाक्षिक तद्० (वि०) सहायक, सहायदाता, पक्ष में उत्पन्न होने वाला, पन्द्रहवें दिन प्रकाश होने वाला, पखवारे का।
पाख दे० (पु०) पक्ष, पखवारा, पन्द्रह दिन, भीति, दीवार।
पाखण्ड तद्० (पु०) दम्भ, कपट, धूर्तता, छल, नास्तिकता, लोक में पूजा पाने के लिये ढोंग रचना।
पाखण्डी तद्० (वि०) धूर्त, छली, कपटी, नास्तिक।
पाखर दे० (पु०) घोड़ा और हाथी की झूल, जो लोहे के तारों की बनती है।
पाखा दे० (पु०) उसारा, एक ओर की दीवाल।
पाग दे० (स्त्री०) पगड़ी, पगिया।
पागना दे० (क्रि०) रस में पकाना, रस चढ़ाना।
पागल दे० (पु०) उन्मत्त, विक्षिप्त, सिड़ी।
पागा दे० (पु०) घोड़ों का समूह।
पागुर दे० (स्त्री०) चबाई, उगाल, जुगाल, रोमन्थ, चबाए हुए को पुनः चबाना।
पागुराना दे० (क्रि०) जुगाली करना, जुगलाना चबाना, रोमन्थ करना।
पाचक तद्० (पु०) सूपकार, रन्धनकर्त्ता, पाककर्त्ता, रसोइयादार।—ता (स्त्री०) रसोई बनाना, राँधने का काम, रसोई बनाने का गुण।
पाचिका तद्० (स्त्री०) रसोई बनाने वाली स्त्री।
पाछ दे० (पु०) टीका एक तीक्ष्ण शस्त्र से शरीर का दुष्ट रुधिर निकलवाना, फस्त खुलवाना।
पाछना दे० (क्रि०) टाँका लगाना, गोटी खोदना।
पाछे दे० (अ०) अनन्तर, पीछे।
पाजी दे० (वि०) अधम, दुष्ट दुराचारी, जघन्य, दुर्विनीत।
पाञ्चजन्य तद्० (पु०) नारायण के शङ्ख का नाम जो पाञ्चजन नामक राक्षस की अस्थि से बना था।
पाञ्चभौतिक तद्० (पु०) पञ्चभूत द्वारा निर्मित, पञ्चभूतमय, पञ्चभूतों का विकार।
पाञ्चाल तद्० (पु०) देश विशेष, पञ्चाम्बु देश, पञ्जाब, द्रुपद राजा का देश।
पाञ्चाली तद्० (स्त्री०) पाञ्चाल देशोत्पन्ना राजकन्या, पाण्डवपत्नी, याज्ञसेनी, द्रौपदी।
पाट दे० (पु०) पटुवा, एक प्रकार का सन, चौड़ाई, नदी का पाट।
पाटकृमि तद्० (पु०) रेशम का कीड़ा।
पाटच्चर (पु०) चोर, तस्कर।
पाटन दे० (पु०) छाना, छत पटवाना, छाँद छाना।
पाटना दे० (क्रि०) छवाना, छत लगवाना, पूर्ण करना, भरना, भर देना।
पाटमहिषी तद्० (स्त्री०) पट्ट महिषी, प्रधान रानी, महारानी, पटरानी।

पाटम्बर तद्० (पु०) रेशमी वस्त्र, रेशमी कपड़े, पट्टाम्बर। [प्रधान रानी।

पाटरानी तद्० (स्त्री०) पट्टराज्ञी, पटरानी, महारानी,

पाटल तत्० (पु०) पाटली पुष्प, गुलाब का फूल, सामान्य लाल रंग, गुलाबी रङ्ग। (गु०) श्वेत और लाल रङ्ग का मिश्रण।

पाटला तत्० (स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, भगवती, पुष्प वृक्ष विशेष, लाल लोध।

पाटलिपुत्र तत्० (पु०) पटना नगर, विहार प्रदेश का प्रधान नगर, प्रसिद्ध महाराज अशोक की राजधानी यहीं थी। [सुस्थता।

पाटव तत्० (पु०) पटुता, विज्ञता, नैपुण्य, आरोग्य,

पाटा दे० (पु०) पटरा, पट्टा, धोबी का तख़्ता जिस पर वे कपड़े धोते हैं, पीढ़ा, पीठ, पाट।

पाटिका (स्त्री०) पौधा विशेष, छाल, छिलका, एक दिन की मजूरी। [सोने का एक गहना।

पाटिया दे० (पु०) पटिया, हुस्पी, गले में पहनने का

पाटी दे० (स्त्री०) खाट की पटिया, पटरी जिस पर लड़के लिखते हैं, बालकों के लिखने की पट्टी चटाई, सीतलपाटी।

पाटीर तत्० (पु०) चन्दन, मलय द्रुम।

पाठ तत्० (पु०) अध्ययन, पठन, विद्याभ्यास। —क्रम (पु०) क्रम से अध्ययन, पढ़ने की रीति, अध्ययन का क्रम।—शाला (स्त्री०) अध्ययन गृह, विद्यालय।

पाठक तत्० (पु०) उपाध्याय, अध्यापक, पढ़ाने वाला, गुरु। [कराना, विद्या पढ़ाना।

पाठन तत्० (पु०) पढ़ाना, अध्ययन कराना अभ्यास

पाठा दे० (पु०) जवान, हृष्ट पुष्ट, मल्ल, योद्धा, पहलवान्।

पाठित (वि०) पढ़ाया हुआ।

पाठी दे० (पु०) युवा बकरी, छागी।

पाठीन तत्० (पु०) मत्स्य विशेष, मछली का भेद।

पाठ्य तत्० (वि०) पाठोपयुक्त, पढ़ने के योग्य।

पाड़ दे० (पु०) मञ्च, मचान, जो थवई लोग मकान बनाने के लिये बाँधते हैं।

पाड़ना दे० (क्रि०) गिराना, पछाड़ना, पटकना।

पाड़ा दे० (पु०) भैंस का बच्चा, मोटल्ला।

पाढ़ा दे० (पु०) मृग विशेष।

पाढ़ी दे० (स्त्री०) नदी पार होना।

पाण दे० (स्त्री०) पीना, पत्ता, कपड़े की माँड़ी, ताँबूल।

पाणि तत्० (पु०) हाथ, हस्त, कर।—ग्रहण (पु०) ब्याह, विवाह, परिणय।—तल (पु०) करतल, हस्ततल।

पाणिघ तत्० (पु०) हाथ के द्वारा बजाया जाने वाला। मृदङ्ग आदि वाद्य, पाणिवाद्य, हाथ से बजाने जाने वाला बाजा, ढोलक आदि।

पाणिनि तत्० (पु०) मुनि विशेष, इन्होंने संस्कृत का व्याकरण बनाया था, इनके पिता का नाम देवल और माता का नाम दाक्षी था। माता के नामानुसार इनको भी दाक्षीपुत्र या दाक्षेय कहते हैं। गान्धार देश के अन्तर्गत शलातुर नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था, इस कारण ये शालातुरीय भी कहे जाते हैं। शब्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनी शिव की आराधना करने लगे, महेश्वर प्रसन्न हुए और उनकी इष्टसिद्धि के लिये उन्होंने वर दिये। महेश्वर के प्रसाद से पाणिनि ने एक व्याकरण बनाया जिसका नाम अष्टाध्यायी या पाणिनिदर्शन है। यह आठ अध्यायों में विभक्त है। इस कारण इसे अष्टाध्यायी कहते हैं सोमदेव रचित कथासरित्सागर के अनुसार वररुचि और कात्यायन के ये समकालीन थे; परन्तु यह बात प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती। क्योंकि यास्क-रचित निरुक्त पढ़ने वाले इस बात को कभी नहीं मान सकते। क्योंकि निरुक्तकार ने अनेक स्थानों में सादर पाणिनि का नाम लिया है। यास्क मुनि बहुत ही प्राचीन हैं और पाणिनि उनसे भी प्राचीन हैं। व्याकरण के अतिरिक्त एक काव्य भी पाणिनि का बनाया हुआ है, जिसका नाम जाम्बवतीजय है। कतिपय विद्वान् व्याकरणकर्ता और काव्यकर्त्ता को भिन्न भिन्न पाणिनि मानते हैं, परन्तु क्षेमेन्द्र के इस श्लोक से वे अपनी भ्रान्ति समझ सकते हैं।

"नमः पाणिनये तस्मै यस्य रुद्रप्रसादतः।
आदौ व्याकरणं काव्यमनुजाम्बवतीजयम्॥"

उस पाणिनि को नमस्कार, जिसने रुद्र प्रसाद से पहले व्याकरण और तदनन्तर जाम्बवतीजय काव्य बनाया।

पाणिनीय तत्० (पु०) पाणिनि मुनि निर्मित ग्रन्थ।
पाणिपाद तत्० (पु०) हाथ पैर, कर चरण, हाथ और पाँव।
पाणिपीड़न तत्० (पु०) पाणिग्रहण, विवाह।
पाण्डर तत्० (पु०) कुन्द पुष्प, गैरिक धातु विशेष, (गु०) श्वेत वर्ण युक्त।
पाण्डव तत्० (पु०) पाण्डुनन्दन, पाण्डुपुत्र, पाण्डु राजा के पुत्र, पञ्चपाण्डव।
पाण्डित्य तत्० (पु०) पण्डित का धर्म और कर्म, नैपुण्य, दक्षता, विद्या, पण्डिताई, विज्ञता, विद्वत्ता।
पाण्डु तत्० (पु०) शुक्ल और पीत मिश्रित वर्ण, रक्त पीत मिश्रित वर्ण। कुरुवंशीय एक राजा का नाम। विचित्रवीर्य का क्षेत्रज पुत्र, महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास के औरस और विचित्रवीर्य की विधवा पत्नी अम्बालिका के गर्भ से उत्पन्न। पाण्डु की दो स्त्रियाँ थीं। कुन्ती और माद्री, भोजकन्या कुन्ती ने पाण्डु को स्वयम्बर में वरण किया था। इसके अनन्तर भीष्म पितामह ने मद्र देश के राजा की पुत्री माद्री को पाण्डु से ब्याह दिया। भीष्मपितामह ही धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर के रक्षक थे, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। माद्री के गर्भ से नकुल और सहदेव उत्पन्न हुए थे, पाण्डु के क्षेत्रज पुत्र पाण्डव कहे जाते हैं। पाण्डु ने शान्तनु की महकीर्त्ति का उद्धार किया था, अनेक राजाओं को जीत कर उन्होंने अधिक धन एकत्रित किया था और उसी धन से पाँच यज्ञ किये थे। यज्ञ करने के अनन्तर पाण्डु अपनी पत्नियों के साथ वन में गये। वहाँ उन्होंने काममोहित एक मृग का वध किया, उसने शाप दिया कि, तुम स्त्रीसङ्ग करते ही मर जाओगे। मरने के भय से पाण्डु ने स्त्रीसङ्ग करना ही छोड़ दिया। दुर्वासा ने कुन्ती को जिस मन्त्र का उपदेश दिया था, उसी से कुन्ती ने देवों का आह्वान करके तीन पुत्र उत्पन्न किये। पाण्डु के अनुरोध से कुन्ती ने उस मन्त्र का उपदेश माद्री को भी किया, माद्री ने भी अपने दो पुत्र उत्पन्न किये। एक दिन पाण्डु ने कामार्त्त होकर माद्री का सङ्ग किया, जिससे उनकी मृत्यु हुई, पाण्डु का मृत शरीर हस्तिनापुर लाया गया था और उसका अन्तिम संस्कार विदुर ने किया।
पाण्डुर तत्० (पु०) शुक्ल पीत मिश्रित वर्ण।
पाण्डुरा तत्० (स्त्री०) मषपर्णी, लता विशेष, शुक्ल पीत वर्ण वाली स्त्री, माषपर्णी लता।
पाण्डेय तत्० (पु०) ब्राह्मणों की एक जाति विशेष, अध्यापक, पाठक, पाँड़े।
पात तत्० (पु०) [पत्+अच्] पतन, गिरना पड़ना। (दे०) पुस्तक के पन्ने, वृक्ष आदि के पत्ते कर्णभूषण, एक प्रकार का गहना।
पातक तत्० (पु०) पाप, अघ, किल्विष, कलुष, अशुभ, अपराध, दोष।
पातकी तत्० (पु०) पापी, दोषी, अपराधी।
पातघाघरा (वि०) अत्यन्त डरपोक।
पातञ्जल तत्० (पु०) शास्त्र विशेष, योग शास्त्र, पतञ्जलि निर्मित योगदर्शन।
पातर दे० (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, गणिका। (गु०) पतला, दुर्बल, निर्बल।
पातराज (पु०) सर्प विशेष।
पातशाह (पु०) बादशाह।—ही (स्त्री०) बादशाही।
पाता तत्० (वि०) रक्षिता, रक्षक, रक्षण कर्त्ता, दे० (पु०) पत्र, पत्ता, पत्ती।
पातावा (पु०) मोज़ा, सुखतला।
पाताल तत्० (पु०) ऊपर से चौथा स्थान, स्वनाम प्रसिद्ध गढ़ा, रसातल, नागलोक, अधोभुवन, नरक, विवर, वड़वानल, एक यन्त्र विशेष जिससे औषधि बनाते हैं। पाताल के सात भेद हैं, यथा—अतल, वितल सुतल, तलातल, महातल, नितल, रसातल।—केतु (पु०) पातालवासी दैत्य विशेष।—खण्ड (पु०) पाताललोक।—गरुड़ या गरुड़ी (पु०) छिरिहटा, छिरैटा।—तुम्बी (स्त्री०) लता विशेष।—निलय (पु०) दैत्य, सर्प।—नृपति (पु०) सीसा।—यंत्र (पु०) यंत्र विशेष जिसके द्वारा कड़ी औषधियाँ पिघलाई जाती हैं।
पातित्य तत्० (क्ली०) पातक, पाप, दुराचार, दुष्कृत, जाति भ्रष्ट होने का कारण।

पातिव्रत्य तद्० (पु०) पतिव्रता का धर्म, साध्वी धर्म, सतीत्व धर्म।

पाति दे० (स्त्री०) चिट्ठी, पत्री, पत्र।

पात्र तद्० (पु०) जिसके द्वारा जल आदि पिया जाय, आधार, भाजन, भाण्ड, राजमन्त्री, सचिव, दो तीर का अन्तर, पर्ण, पत्र, पत्ता, नाटक खेलने वाला, नट, अनुकरणकारी, वर जिसको कन्या दी जाय। विद्या आदि गुणों से युक्त, योग्य, दानीय व्यक्ति, पारलौकिक फलप्राप्ति के लिये जिसको दान दिया जाय।—क (पु०) हाँडी, थाली, भिक्षापात्र।—तरङ्ग (पु०) वाद्य विशेष।—ता (स्त्री०) योग्यता, अधिकार।—त्व (पु०) पात्रता।

पात्रिय (वि०) वह व्यक्ति जिसके संग बैठकर एक थाली में भोजन किया जा सके, सहभोजी।

पात्री (वि०) जिसके पास बरतन हों, जिसके पास सुयोग्य लोग हों (स्त्री०) छोटे बरतन।

पाथ तद्० (पु०) जल, पानी, नीर, तोय।—नाथ (पु०) समुद्र।—पति (पु०) वरुण।—वासिनी (स्त्री०) नागवल्ली लता।

पाथना दे० (क्रि०) ठोकना, उपले बनाना, उपरी बनाना, गोबर पाथना।

पाथर दे० (पु०) पत्थर, प्रस्तर, पाषान, पाषाण, शिला, पथरा।

पाथा (पु०) जल, अन्न, आकाश।

पाथि (पु०) समुद्र, आँख, घाव की पपड़ी, पितृ तर्पण के लिये जल विशेष, कीलाल।

पाथेय तद्० (पु०) पथ में व्यय करने की सामग्री, पथिकों के ख़र्च करने का द्रव्य, रास्ते का ख़र्च, रास्ते में खाने का भोजन, राही ख़र्च।

पाथोज तद्० (पु०) कमल, पद्म, पुण्डरीक।

पाथोद तद्० (पु०) मेघ, घन, वारिद, बादल, समुद्र।

पाथोधि तद्० (पु०) [पाथस्+धा+कि] जलराशि, समुद्र, सागर, जलधि, तोयनिधि।

पाथोनिधि तद्० (पु०) [पाथस्+नि+धा+कि] समुद्र, सागर, पाथोधि।

पाद तद्० (पु०) [पद्+घञ्] चरण, पैर, पाँव, ऋग्वेदीय मन्त्रों का चतुर्थांश, श्लोक का चतुर्थांश चतुर्थ भाग, चौथा भाग, बड़े पर्वत के समीप का छोटा पर्वत।—I (स्त्री०) जूता, खड़ाऊँ।—कंटक (पु०) बिछुआ।—कृच्छ्र (पु०) व्रत विशेष, प्रायश्चित्त विशेष।—खण्ड (पु०) वन, जंगल।—पद्धति (स्त्री०) रास्ता, पगडंडी।—ग्रहण (पु०) पादस्पर्श पूर्वक प्रणाम, अभिवादन।—चारी (पु०) प्यादा, पदाति। (वि०) पैदल चलने वाला, पैर से चलने वाला।—ज (पु) शूद्र वर्ण, शूद्र जाति।—त्राण (पु०) जूती, खड़ाऊँ, पदत्राण, पैर के मोजे।—दारी (स्त्री०) पादस्फोट, बिवाई, शीत से पैर का फटना।—प (पु०) वृक्ष, द्रुम, तरु, रूख, पेड़।—पद्म (पु०) पद्म सदृश चरण, चरण कमल।—पीठ (पु०) पाद स्थापनार्थ आसन, पादासन, पैर रखने का पीढ़ा।—प्रक्षालन (पु०) पैर धोना, पाँव धोना।—प्रहार (पु०) पादाघात, लात मारना।—संवाहन (पु०) पैर दबाना, पगचम्पी करना।

पादक (वि०) चलने वाला, चतुर्थांश, छोटा पैर।

पादकीलिका (पु०) नूपुर।

पादगण्डिर (पु०) फीलपाँव रोग, श्लीपद रोग।

पादग्रन्थि (स्त्री०) एड़ी और घुट्टी के मध्य का भाग, गुल्फ।

पादचत्वर (पु०) बकरा, बालू का टीला, ओला। पीपल का पेड़। (वि०) निन्दक, चुग़लख़ोर।

पादचारी (पु०) पैदल चलनेवाला।

पादना दे० (क्रि०) पाद मारना, अधोवायु त्याग करना।

पादनोन दे० (पु०) काला निमक।

पाद्य या पादार्घ्य तद्० (पु०) अतिथि के पैर धोने का जल।

पादार्पण तद्० (पु०) प्रवेश करना, पैर देना।

पादुका तद्० (स्त्री०) खड़ाऊँ, जूता, पनही, पगरखी, पौलिया, स्लीपर।

पादोदक तद्० (पु०) पाँवधोवन, देवता या गुरु के पैर का धोया जल, चरणामृत, पाद्य, पाँव धोने के लिये जल।

पाधा दे० (पु०) उपाध्याय, पुरोहित।

पान तद्० (पु०) पीना, द्रव द्रव्य जल आदि का पी जाना। (दे०) ताम्बूल, पत्ता रामायण में पान का अर्थ, हस्त, कर, हाथ है।—पात्र (पु०) मदिरा पीने का पियाला, जलपात्र, पानी पीने का पात्र, पनडब्बा —शौण्ड (पु०) अतिशय मद्यपायी, मतवाला।

पाना दे० (क्रि०) प्राप्त होना, मिलना, एकत्रित करना, लाभ होना। (पु०) पन्ना, पृष्ठ, किसी वस्तु का हिसाब लिखा कागज। (स्त्री०) खिचि वंश में उत्पन्न एक राजपूत स्त्री। यह चित्तौर के महाराणा संग्रामसिंह के यहाँ उनके बालक पुत्र उदयसिंह की धाय थी, इसने अपने पुत्र के प्राण खो कर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा की थी। पाना का स्वार्थत्याग और प्रभुभक्ति संसार के इतिहास में सोने के अक्षरों से लिखा गया है। इसकी अत्युज्ज्वल कीर्ति संसार में अचल रहेगी।

पानात्यय तद्० (पु०) [पान+अत्यय] मदात्यय रोग, अधिक नशा होने का रोग, जो प्रायः मतवालों को हुआ करता है। [मद्य पीने में अनुरक्त।

पानासक्त तद्० (वि०) [पान+आसक्त] मद्यप्रिय,

पानाहार तद्० (पु०) [पान+आहार] खाना पीना, अन्न जल।

पानी दे० (पु०) जल, तोय, नीर, सामर्थ्य, शक्ति, लावण्य, चमक, शोभा, बनावट की सुन्दरता। —करना (वि०) नष्ट करना, ख़राब कर देना, लज्जित करना, जलवाना, सहज करना, सुगम करना।—का बुलबुला (वा०) अस्थिरता, नश्वरता, क्षणभङ्गुरता, चञ्चलत्व।—देना (वा०) तर्पण करना, पितरों को जल देना।—न माँगना (वा०) ऐसा मारना जिससे तुरन्त मर जाय। —पड़ना (वा०) मेघ बरसाना, वृष्टि होना, लज्जित होना, शरमाना।—पी पी कोसना (वा०) सर्वदा बुरा मनाना, अत्यन्त अशुभ चाहना।—पीना (वा०) जलखवा करना, जलपान करना।—भरना (वा०) अधीन होना, अधीनता स्वीकार करना, फिट पड़ना, तुच्छ होना।—में आग लगाना (वा०) असम्भव काम करना। मिटे झगड़े को फिर उभाड़ना।—पतला करना (वा०) पीड़ा पहुँचाना, दुःख देना, दुःखी करना। [वाला फल विशेष।

पानी फल दे० (पु०) सिंघाड़ा, पानी में उत्पन्न होने

पान्थ तद्० (वि०) पथिक, राही, यात्री, बटोही।

पाप तद्० (पु०) अधर्म, कलुष, अघ, अपराध। —प्रसूदन (पु०) पाप नाशक मंत्र विशेष, व्रत विशेष जो पाप दूर करने के लिये किये जाते हैं। —ग्रह (पु०) क्रूर चन्द्र, मङ्गल, राहु, शनि, बुध, रवि, अनिष्टकारक ग्रह, अशुभ ग्रह।—चेता (पु०) पापात्मा, पापी।—जनक (पु०) पापोत्पादक।—नापित (पु०) धूर्तनापित।—रूपी (वि०) पाप की मूर्ति, पापात्मा, अधर्म।—रोग (पु०) कुष्ठ रोग, चेचक।

पापड़ दे० (पु०) मूँग या उर्द की बहुत पतली एक प्रकार की रोटी।—बेलना (वा०) पापड़ बनाना, बहुत परिश्रम करना, बहुत मिहनत का काम करना, उत्पात खड़ा करना।—खार दे० (पु०) केले की राख, केले के वृक्ष को जला कर एक प्रकार का बनाया हुआ खार। [पापी।

पापात्मा तद्० (वि०) पापिष्ठ, अधर्मी, अपराधी,

पापीन दे० (स्त्री०) पापीयसी, पाप करने वाली स्त्री, (पु०) अनेक पापी, पापिनी स्त्री, अधर्मचारिणी, यथा—

"मैं पापिन ऐसी जली, कोयला हुई न राख।"

पापी तद्० (वि०) पापात्मा, पापिष्ट, अपराधी, दुष्कर्मी, दुराचारी।

पामर तद्० (वि०) अधम, नीच, पापिष्ट, दुष्ट।

पामरी तद्०(स्त्री०) अधमा स्त्री, रेशमी वस्त्र।

पामा तद्० (स्त्री०) रोग विशेष, खुजली, खाज, कच्छू।

पामारि तद्० (पु०) गन्धक, खुजली नाशक।

पायक दे० (पु०) पियादा, पैदल, पदाति, सेवक, दूत, चर, मल्ल, पहलवान।

यथा—"हनुमान से पायक हैं जिन केरे।"

—तुलसीदास।

पायढ़ दे० (पु०) मचान, मञ्च, मौंच।

पायजामा दे० (पु०) पदाच्छादन विशेष, एक प्रकार का कपड़ा जो पैर में पहना जाता है, स्वनाम प्रसिद्ध वस्त्र।

पायँती दे० (स्त्री०) पैर की ओर की खाट, पैताना, पदतल, खाट का वह भाग जिधर पैर रहता है।

पायल दे० (स्त्री०) पैर का भूषण, पायज़ेब। (पु०) सुचाल, सुन्दर गति, बाँस की सीढ़ी।

पायस तद्० (पु०) दुग्ध आदि के द्वारा बनाया अन्न, परमान्न, तसमई, चाउल, दूध और चीनी मिश्रित पक्वान्न, खीर। [पत्थर के घने खम्भे।

पाया दे० (पु०) खाट का एक पैर, मचवा, ईंटा या

पायिक दे० (पु०) दूत, पियादा, पदातिक, हरकारा।

पायी तद्० (पु०) पानकर्त्ता, पीने वाला, पान करने वाला।

पार तद्० (पु०) तीर, दूसरा तट, नदी लाँघ कर जिस स्थान पर आया जाय। समाप्ति, शेष, पूर्णता, प्रान्त, लङ्घन, तरण, उद्धरण, मोचन। —क तद्० (वि०) समर्थ, कर्म समाप्तिकर्त्ता, पारग, पूर्त्तिकारक, पालक, प्रीतिकारक, व्यायामकारी।—करना दे० (क्रि०) पार जाना, पार उतरना, लाँघना, किसी काम को पूरा करना, निबाहना, पूर्ण करना। [वाला, परखैया।

पारख दे० (पु०) परखने वाला, परीक्षक, जाँचने

पारखी दे० (पु०) पारख, परखैया।

पारग तद्० (वि०) [पार+गम्+ड+] समर्थ, पारगामी, निपुण, कर्मदक्ष, नदी समुद्र आदि के पार उतरने वाला।

पारण तद्० (पु०) व्रत के दूसरे दिन का भोजन, उपवास के दूसरे दिन का विहित भोजन।

पारतन्त्र्य तद्० (पु०) परतन्त्रता, पराधीनता, अस्वाधीनता, पारवश्य।

पारत्रिक तद्० (वि०) परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक, परलोक का विषय। [भिन्न।

पारथिव तद्० (पु०) पार्थिव, मिट्टी का बना शिव

पारद तद्० (पु०) धातु विशेष, पारा, रस धातु, म्लेच्छ जाति विशेष। [निष्णात, अभिज्ञ।

पारदर्शी तद्० (वि०) पारगामी, निपुण, दक्ष,

पारदारिक तद्० (पु०) कामुक, परस्त्रीरत, दूसरी स्त्री पर आसक्त। [भोजन।

पारन तद्० (पु०) पारण, उपवास के दूसरे दिन का

पारना दे० (पु०) पारण करना, पूर्ण करना, पूरा करना।

पारमार्थिक तद्० (वि०) परमार्थ सम्बन्धी, परमार्थ विषयक, पारलौकिक, मोक्षप्रापक, मुख्य, प्रधान।

पारम्पर्य तद्० (पु०) परम्परागत, कुलक्रम, अनुक्रम, परम्परा से आया, कुल रीति, कुल परम्परा।

पारल दे० (पु०) पौधा विशेष।

पारलौकिक तद्० (वि०) परलोक सम्बन्धी, परलोक के उपयोगी, परलोक का विषय।

पारशव तद्० (पु०) शूद्रा के गर्भ और ब्राह्मण के औरस से उत्पन्न सन्तान, निषाद जाति, पर की तनय, शस्त्र, लोहास्त्र।

पारस दे० (पु०) स्पर्शमणि, एक प्रकार के पत्थर का नाम जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना हो जाता है। देश विशेष, ईरान, फ़ारस देश।—नाथ (पु०) पार्श्वनाथ, जिन विशेष, तेईसवाँ जिन।—पीपल (पु०) वृक्ष विशेष।

पारसाल दे० (पु०) गत या आगामी वर्ष।

पारसी तद्० (स्त्री०) भाषा विशेष, पारस देश की भाषा, ईरान की भाषा, पारसवासी, एक जाति विशेष [बताते हैं, पार के, दूसरी ओर के।

पारहिं दे० (क्रि०) पार करते हैं, पूरा करते हैं।

पारसीक त० (पु०) पारस्य देशीय, पारस देश के वासी या वस्तु। [(क्रि०) पार किया।

पारा दे० (पु०) धातु विशेष, पारद रस धातु, पार।

पारायण तद्० (पु०) पुराण पाठ विशेष, नियमपूर्वक सप्ताह भर पठन या पाठन।

पारायणिक तद्० (पु०) पारायणकर्त्ता, पाठक, छात्र।

पारावत तद्० (पु०) कपोत, गृह कपोत, कबूतर। आबनूस की लकड़ी। [का तट।

पारावार तद्० (पु०) समुद्र, सागर, दोनों ओर

पाराशर तद्० (पु०) पराशर का पुत्र, वेदव्यास। (पु०) पराशर सम्बन्धी, पराशर-स्मृति, भिक्षु संहिता।

पाराशर्य तद्० (पु०) पाराशर पुत्र, व्यासदेव।

पारिजात तद्० (पु०) पारिभद्र वृक्ष, देवतरु, सुरद्रुम, देवताओं का वृक्ष, पुष्प विशेष, हरचन्दन वृक्ष।

पारिणाह्य तद्० (पु०) सम्बन्ध, बन्धन, गृहोपकरण गृहस्थी के लिये उपयुक्त सामग्री।

पारितथ्या तद्० (स्त्री०) सधवा स्त्रियों के धारण करने की उपयुक्त वस्तु टिकुली, बेंदी।

पारितोषिक तद्० (वि०) तुष्टिजनक दान, प्रसन्नता-सूचक दान, पुरस्कार।
पारिन्द्र या पारीन्द्र (वि०) सिंह, मृगेन्द्र, शेर, पञ्चानन।
पारिपन्थिक तद्० (पु०) तस्कर, चोर, लुटेरा, डाकू।
पारिपात्र तद्० (पु०) पर्वत विशेष, एक पर्वत का नाम विन्ध्याचल के पश्चिमी भाग का नाम जो मालवा देश की सीमा पर है।
पारिपार्श्व (पु०) अनुचर, अरदली।
पारिपार्श्वक तद्० (पु०) नट विशेष, जो सूत्रधार को सहायता करता है, पासवान्, अरदली।
पारिभद्र तद्० (पु०) देवदारु वृक्ष, निम्ब वृक्ष, साखू का पेड़।
पारिभाव्य तद्० (पु०) ज़मानत, प्रतिभू।
पारिभाषिक तद्० (पु०) साङ्केतिक विशेष, विषयों के विशेष सर्वबोधक शब्द विशेष।
पारिमाण्डल्य तद्० (पु०) अति सूक्ष्म परमाणु, वह परिमाणु जिससे छोटा दूसरा न हो।
पारियात्र (पु०) देखो "पारिपात्र"।
पारिरक्षक (पु०) तपस्वी, साधु।
पारिश (पु०) परात, पीतल।
पारिशील (पु०) एक प्रकार का पुआ।
पारिषद तद्० (पु०) सभासद, सभास्थ सभ्य। (वि०) परिषद् सम्बन्धी, सभा सम्बन्धी।
पारी दे० (स्त्री०) बारी, पाला, अवसर, क्रम, पर्याय।
पारीण तद्० (वि०) पारगमनकर्त्ता, पारगामी।
पारुष्य तद्० (पु०) परनिन्दा, परद्रोह, पर अनिष्ट, अप्रिय भाषण, चार प्रकार के वाचिक पापों के अन्तर्गत पाप विशेष। कठोरता, रूखापन, दुर्वाक्य, कठोर वचन।
पार्घट (पु०) राख, भस्म। [पापट्ठ।
पार्थ तद्० (पु०) पृथा का पुत्र, अर्जुन, तीसरा
पार्थक्य तद्० (पु०) पृथकता, पृथक होना, भिन्नता, प्रभेद।
पार्थवी (पु०) मोटापन, बड़ाई, स्थूलता, मोटाई। (वि०) पृथु सम्बन्धी।
पार्थिव तद्० (पु०) राजा, नृपति, महीपाल। (वि०) पृथिवी सम्बन्धी, पृथिवी का विकार, पृथिवी से उत्पन्न, मृन्मय।—ी (स्त्री०) पृथिवी से उत्पन्न, कन्या, पार्वती।

पार्पर (पु०) यम।
पार्वण तद्० (पु०) पितृपक्ष में किया जाने वाला श्राद्ध विशेष, पर्व पर किया जाने वाला श्राद्ध, अमावस्या आदि के दिन कर्त्तव्य श्राद्ध, पर्व कृत्य।
पार्वत (वि०) पर्वत सम्बन्धी। (पु०) बकायन, डुंगुर, शिलाजतु, सिलाजीत, सीसाधातु, एक वृक्ष।—पीलु (वि०) अखरोट।
पार्वती तद्० (स्त्री०) सौराष्ट्र मृत्तिका, मुलतानी मिट्टी, धात्री फल, आमलकी, आँवला, एक प्रकार का पत्थर, दुर्गा, भगवती, महादेव की स्त्री, अपने पिता दक्ष के यज्ञ में बिना निमन्त्रण के सती उपस्थित, हुईं, परन्तु वहाँ पिता के द्वारा की गई पति की निन्दा वे सह नहीं सकीं अतएव वहीं, यज्ञ-कुण्ड में कूद कर इन्होंने अपने प्राण दे दिये। तदनन्तर पर्वतराज हिमालय के घर, मेनका के गर्भ से ये उत्पन्न हुईं। ये पर्वतराज की कन्या थीं। इस कारण इनका पार्वती नाम हुआ। शिव से विवाह करने के लिये इन्होंने कठिन तपस्या की थी।—श (पु०) महादेव।—लोचन (पु०) ताल के साठ भेदों में से एक।
पार्श्व तद्० (पु०) कन्धा के नीचे का भाग, पाँजर, पास, निकट, समीप।—नाथ (पु०) जैनों के तेईसवाँ तीर्थङ्कर।—वर्ती (पु०) पार्श्वस्थ, सहचर, पास रहने वाला।—भाग (पु०) हाथ के समीप का भाग, पसली।—शूल (पु०) रूजरोग विशेष, पाँजर का शूल।
पाल तद्० (पु०) पालक, रक्षक, त्राणकर्त्ता, स्वनाम ख्यात वस्तु, जो नावों पर टाँगी जाती है, जिसके सहारे नाव चलती है तंबू, छोटा तंबू, चरसाली, पासपात में रख कर फल पकाने की विधि।
पालक तद्० (पु०) रक्षक, पोषक, शासन-कर्त्ता, अरक्षक। (दे०) भाजी, शाक विशेष, पालक का साग।—ता (स्त्री०) दयालुता, रक्षकता, रक्षा।
पालकी दे० (स्त्री०) शिबिका, डोली।
पालक्य तद्० (पु०) पालक का साग।
पालन तद्० (पु०) [पाल्+अनट्] भरण पोषण, प्रतिपालन, रक्षण, अङ्गीकार करण, पालन, निर्वाह।

पालना तद्० (क्रि०) पालन करना, रक्षा करना, पोसना, निबाहना। (पु०) हिण्डोला, झूलन।
पालनीय तद्० (वि०) पालने योग्य, रक्षण करने योग्य, पालन करने के उपयुक्त।
पालयो दे० (क्रि०) पालन करिएगा।
पाला दे० (पु०) रक्षित, पोसा हुआ, नीहार, हिम, तुषार, पारी, वारी, पर्याय, क्रम निरूपण, काल निरूपण। [प्रणाम करना।
पालागन दे० (पु०) अभिवादन, प्रणाम, पाँव छूना,
पालाश तद्० (वि०) पलाश, वृक्ष विशिष्ट, पलाश वृक्ष सम्बन्धी, हरे रङ्ग का, हुहुल वृक्ष, ढाक।
पालि तद्० (स्त्री०) भाषा विशेष। बौद्धों के समय की हिन्दुस्थानी भाषा। यह भाषा संस्कृत से गिरी और मागधी आदि प्राकृत भाषाओं से चढ़ी हुई बीच की भाषा है, बौद्ध धर्म के ग्रन्थ इसी भाषा में लिखे गये हैं।
पालिक दे० (पु०) पोषक, रक्षक, पालक।
पालित तद्० (वि०) रक्षित, स्थापित, पोषित, रक्षा किया हुआ।
पाली तद्० (स्त्री०) पङ्क्ति, श्रेणि, कोन, प्रशंसा, कल्पित भोजन, अलङ्कार विशेष, कान की बाली, मूँछ वाली स्त्री, प्रान्त भाग, सेतु, उत्सङ्ग, गोदी, देरा, प्रस्थ परिमाण।
पाले दे० (अ०) अधीन, वश में, अधिकार में, अधीनता में।—पड़ना (वा०) अधीन होना, वश होना।—यथा

" काज करउँ सब काल हवाले।
परेउ कठिन रावण के पाले॥"

—रामायण

पाव दे० (पु०) चतुर्थांश, चौथाई भाग, चौथ, एक सेर का चौथाई, चार छटाँक।
पावक तद्० (पु०) अग्नि, अनल, आग, वह्नि। (वि०) पवित्र, पवित्र करने वाला, परिष्कारक, पवित्रकारी।
पावड़ा दे० (पु०) पाँवड़ा।
पावन तद्० (पु०) पवित्र, पवित्रकारक, स्वच्छ, शुद्ध करने वाला, जल, अग्नि, गोबर, कुशा, गङ्गा, व्यास, एवं दर्शन आदि पावन करने वाले हैं।
पावना दे० (पु०) पाना, प्राप्त होना, मिलना, प्राप्य, पाने योग्य, आदाय धन, बाक़ी।
पावला दे० (पु०) चौथा भाग, चतुर्थांश, चार आना, रुपये का चौथा भाग, चवन्नी।
पावली दे० (स्त्री०) रुपये का चौथाई भाग, चवन्नी।
पावस दे० (पु०) वर्षा ऋतु, प्रावृट् काल, वर्षा काल, बरसात।
पाश तद्० (पु०) रज्जू, रस्सी, गुन, फाँसी, फन्दा, अस्त्र विशेष। [खेलना।
पाशक तद्० (पु०) पासा, पासा खेलना, जूआ
पाशा दे० (पु०) अक्ष, जूआ, चौपड़, कर्ण भूषण विशेष।
पाशित तद्० (पु०) पाशयुक्त, बद्ध, बन्धा हुआ।
पाशी तद्० (पु०) पाशधर, रज्जू विशिष्ट, वरुण।
पाशुपत तद्० (पु०) पशुपति मन्त्र के उपासक, शैव, शैव सम्प्रदायी।
पाशुपतास्त्र तद्० (पु०) शस्त्र विशेष। अर्जुन का अस्त्र, यही अस्त्र अर्जुन ने तपस्या द्वारा महादेव से पाया था।
पाश्चात्य तद्० (वि०) पश्चाज्जात, पश्चात् उत्पन्न, पीछे पैदा हुआ, पश्चिम देशी, पश्चिम के वासी, पश्चिम देशोद्भव, योरप देशवासी।
पाषाण तद्० (पु०) शिला, पत्थर, पाथर।—दारण, वा दारक (पु०) टाँकी, छेनी, पत्थर काटने का अस्त्र।
पास दे० (अ०) समीप, निकट।
पासा दे०(पु०) स्वनामप्रसिद्ध क्रीडोपयोगी वस्तु, पाशा।
पासी दे० (पु०) जाति विशेष, व्याध।
पाहन दे० (पु०) पाषाण, पत्थर, पाथर।—कृमि (पु०) एक प्रकार का कीड़ा, पत्थर का कीड़ा, वह पत्थर ही में अपने रहने का घर बनाता है।
पाहरू दे० (पु०) पहरुआ, चौकीदार, रक्षक, प्रहरी, चौकी देने वाला। [गाँव से सम्बन्ध रखना।
पाही दे० (स्त्री०) दूसरे गाँव में खेती करना दूसरे
पाहुन दे० (पु०) पाहुना, अतिथि, मेहमान।
पाहुर दे० (पु०) बैना, उपहार, बधवा।
पाहूँ दे० (पु०) व्यक्ति, जन, सर्वसाधारण।
पिआरा दे० (पु०) प्रिय, प्यारा, स्नेही।
पिउ दे० (पु०) पति, स्वामी, प्रियतम, भर्ता, प्यारा।
पिक तद्० (पु०) परभृत, कोकिल, कोइल —बयनी (स्त्री०) मिष्टभाषिणी स्त्री, कोकिल के समान बोलने

वाली स्त्री।—बैनी (स्त्री०) पिक पयनी, मधुर भाषिणी, मञ्जु भाषिणी।

पिकदान या पीकदान दे० (पु०) निष्ठीवन पात्र, थूकने का पात्र, उगालदान। [होना, पानी होना।

पिघलना दे० (क्रि०) टघलना, द्रव होना, पतला

पिघलाना दे० (क्रि०) टघलाना, गलाना, द्रव करना, पतला करना।

पिघलाव दे० (पु०) टघलाव, गलाव। [वर्ण।

पिङ्ग तद० (पु०) पिङ्गल वर्ण विशिष्ट, कपिल, पीत

पिङ्गल तद० (पु०) नील पीत मिश्रित वर्ण, कपिश रङ्ग। कडार, कपिश, पिशङ्ग, पीतल, हरताल। नील पीत वर्ण विशिष्ट, नील पीत, निधि विशेष, कपि, वानर, अग्नि, मुनि विशेष, नकुल, स्थावर, विष विशेष, एक सम्वत्सर का नाम, पिङ्गलाचार्य कृत छन्दोग्रन्थ विशेष।

पिङ्गला तद० (स्त्री०) विदेह देश में रहने वाली एक वेश्या का नाम, कर्णिका, नाड़ी विशेष, जो दहिनी नाक से निकलती है, पक्षी विशेष। राजा भर्तृहरि की पत्नी का नाम, वामन नाम के दक्षिण दिग्गज की हथिनी का नाम।

पिङ्गूर दे० (पु०) हिंडोला, झूलना, पालना।

पिचकना दे० (क्रि०) दबना, सिकुड़ना, सिमिटना।

पिचकाना दे० (क्रि०) दबाना, सिकोड़ना।

पिचकारी दे० (पु०) पचूका, दमकला, रङ्ग पानी आदि दूर फेंकने के लिये यन्त्र विशेष।

पिचण्ड तद० (पु०) पशु का अङ्ग, पेट, उदर, जठर।

पिचण्डिल तद० (वि०) तुन्दिल, तोंद वाला। [हुआ।

पिचपिचा दे० (गु०) पिलपिला, सड़ा हुआ, गला

पिचु तद० (पु०) कार्पास, कपास, वृक्ष विशेष, कुष्ठ विशेष, एक असुर का नाम, भैरव, शस्य विशेष, कर्ष परिमाण।

पिचुका दे० (पु०) पिचकारी, पचका।

पिचुमन्द तद० (पु०) निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़।

पिच्चर दे० (पु०) आँख की जलन।

पिच्छ तद० (पु०) मयूरपुच्छ, मोरपङ्ख, शिखण्ड, लाङ्गूल, पूँछ।

पिच्छक (पु०) पूँछ, मोचरस।

पिच्छतिका (स्त्री०) शीशम, शिंशपा।

पिच्छन (पु०) दबाकर चपटा करने की क्रिया।

पिच्छपाद (पु०) पैरों का एक रोग विशेष।—ी (वि०) पिच्छपाद रोग युक्त घोड़ा।

पिच्छबाण (पु०) बाज पक्षी, श्येन।

पिच्छभार (पु०) मोर की पूँछ।

पिच्छल (पु०) आकाशबेल, मोचरस, शीशम, वासुकि के वंश का सर्प विशेष। (वि०) चिकना, फिसलाहटी, जिस पर से पैर फिसले।

पिच्छलच्छदा (स्त्री०) बेर, बदरी वृक्ष, उपोद की शाक। [पड़ना, रपटन।

पिच्छलन दे० (पु०) पिछलना, खसकना, गिरना,

पिच्छा (स्त्री०) सुपारी, शीशम, नारङ्गी का वृक्ष, आकाशबल्ली, निर्मली का पेड़, चाँवल का माँड़।

पिछलगा (पु०) अधीन, आश्रित, अनुवर्ती, अनुगामी, चेला, सेवक, टहलुआ।

पिछलगू या पिछलग्गू (पु०) देखो पिछलगा।

पिछलना दे० (क्रि०) फिसलना, गिरना, पड़ना, पैर रपटने से गिर जाना।

पिछलपाई दे० (स्त्री०) डाकिन, भूतिन, चुड़ैल।

पिछला दे० (वि०) पीछे का, अनन्तर का, पश्चाद्भव।

पिछवाड़ा दे० (पु०) पश्चाद्भाग, पीछे का भाग, मकान का पिछला हिस्सा।

पिछाड़ी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की रस्सी जिससे घोड़ों का पिछला पैर बाँधा जाता है। (अ०) पीछे, परचात्, पृष्ठ भाग। [ज्ञान।

पिछान दे० (वि०) परिचय, पहचान, जान पहि-

पिछाने दे० (वि०) परिचित, जाने हुए, पहँचाने गए।

पिछूत दे० (अ०) पीछे, पश्चात्, पीछे का भाग। (पु०) मकान का पिछवाड़ा।

पिछेल दे० (पु०) पिछवाड़ा, घर का पिछला भाग।

पिछौरा दे० (पु०) ओढ़न, दुपट्टा, चद्दर, उत्तरीय, ऊपर ओढ़ने का वस्त्र।

पिछौरी दे० (स्त्री०) ओढ़न, दुपट्टा, पतली चादर।

पिञ्जन तद० (पु०) रूई धुनने की धनुही।

पिञ्जर तद० (पु०) धातु विशेष, पीत रक्त वर्ण, रक्त पीत मिश्रित वर्ण, पिंजरा, जिसमें पखेरू रखे जाते हैं। पक्षियों के रखने का घर। नागकेशर पुष्प, शरीर का अस्थि समूह।

पिञ्जरा, पिंजरा, पिंजड़ा दे० (पु०) पक्षी रखने का घर, जो लकड़ी या लोहे के तारों से बनता है।

पिञ्जल तद्० (पु०) कुशपत्र, हरिताल, अतिशय व्याकुल होना, तीतर पक्षी, भूषण विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द, विजायठ।

पिञ्जिका तद्० (स्त्री०) रुई का गन्ना।

पिञ्जियारा दे० (पु०) पिंजारा, रुई धुनने वाला, पींजने वाला।

पिञ्जूल तद्० (पु०) बाती, दीप की बत्ती, मशाल।

पिञ्जूष तद्० (पु०) कर्णमल, कान का मल, खूँट, ठेंठ।

पिट तद्० (पु०) पेटी, पिटारा, सन्दूक, पिटारी, नकुल, बरकट। [पिटारी।

पिटक तद्० (पु०) वेत्रादिरचित पात्र विशेष, पिटारा,

पिटका (स्त्री०) पिटारी। [पीटने की लकड़ी, डंडा।

पिटना दे० (क्रि०) मार खाना। (पु०) मुग्दर, मुँगरा,

पिटारा दे० (पु०) कपड़े आदि रखने का लकड़ी या बेत का बना हुआ डब्बा।

पिटारी दे० (स्त्री०) छोटा पिटारा।

पिट्टक (पु०) दाँत का मैल।

पिट्टस (स्त्री०) शोक में छाती पीटने की क्रिया।

पिट्टू (वि०) मार खाने का अभ्यासी। [विशेष।

पिठर (पु०) मोथा, मथानी, थाली, घर विशेष, अग्नि

पिठी दे० (स्त्री०) उर्द की भींगी हुई पिसी दाल।

पिड़क (पु०) फुंसी, स्फोटक।

पिड़का (स्त्री०) देखो "पिड़क।"

पिण्ड तद्० (पु०) आटे की बनी गोल वस्तु विशेष, देह का एक देश, गृह का एक देश, शरीर, देह, पितरों के उद्देश से दिया हुआ दान, गोल, मण्डल, वर्तुलाकार, गन्धद्रव्य विशेष, जवा पुष्प, आजीवन, जीविका, अन्न का गोला जो पितरों के उद्देश्य से दिया जाता है।—छुड़ाना (वा०) बचाना, मार उतारना, अपना दायित्व हटाना, पीछा छुड़ाना, उद्धार पाना।—फला (स्त्री०) तुम्बी विशेष, कडुतुम्बी, तितलौकी।

पिण्डली दे० (स्त्री०) पिंडली, पिंडरी, रोग विशेष, नसों का अकड़ना।

पिण्डा तद्० (पु०) पितरों के उद्देश करके दिया हुआ अन्न, हलुवा, मैनफल, कस्तूरी विशेष।

पिण्डारा दे० (पु०) लुटेरा, ठग, डकैत, एक जाति विशेष, जिसका लूटना खसोटना काम है, डाकुओं का दल, क्षपणक, बौद्ध, संन्यासी, गोप, महिषी रक्षक, चरवाहा, द्रुम विशेष। [अड।

पिण्डालू दे० (स्त्री०) फल विशेष, ओषधि विशेष की

पिण्डित तद्० (वि०) राशीकृत, एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ, गिलित, वर्धित, गुणित।

पिण्डी तद्० (स्त्री०) पिण्डी, तगर, लौआ, लाऊ, खर्जूर विशेष, ज्ञान निरूपण करने का उपन्यास, वेदी, पिंडियादी, खटाई, शिव का लिङ्ग, देवता की मूर्त्ति।—मुस्ता (स्त्री०) नागरमोथा।

पिण्डुक या पिण्डूक तद्० (पु०) पक्षी विशेष, धुग्घू, कबूतर की जाति का एक पखेरू।

पिण्डोल दे० (पु०) खड़िया मिट्टी, छुई।

पिण्याक तद्० (पु०) पीना, खली, तिल आदि से तेल निकाल लेने पर जो उसका भाग बचता है।

पितर दे० (पु०) पितृ, पितृपितामह, पूर्वपुरुष, पूर्वज, पुरखा, पिता, दादा, परदादा आदि।—पार्त (पु०) यमराज। [का मुर्चा, अन्न।

पितराई दे० (स्त्री०) पितर सम्बन्धी, कुटुम्ब, पीतल

पितरिहा (त्रि०) पीतल का।

पितरौ तद्० (पु०) माता पिता, माँ बाप, यह शब्द संस्कृत है, पितृ शब्द के प्रथमा द्विवचन का यह रूप है।

पितरौजा दे० (पु०) पितृ पूजन करने का पात्र, पात्र विशेष, जिसमें पितरों की पूजा करने की सामग्री रखी जाती है।

पितलाना दे० (क्रि०) पीतल के बर्तन में रखने के कारण दही आदि का बिगड़ जाना, पीतल का मुर्चा लग जाना।

पिता या पितु तद्० (पु०) बाप, जनक, जन्मदाता, तात।—मह तद्० (पु०) पिता के पिता, बाबा, आजा, पितृ जनक, ब्रह्मा, प्रजापति, मुनि विशेष।—मही तद्० (स्त्री०) पितामह पत्नी, पितृजननी, दादी, आजी।

पितिया दे० (पु०) पितृव्य, चचा, काका पिता का भाई।—नी (स्त्री०) चाची, काकी।—ससुर (पु०) चचिया ससुर।—सास (स्त्री०) चचिया सास।

पिय तद्० (पु०) प्रिय, प्रियतम, पति।
पियर दे० (पु०) पीला, हल्दी का रंग।
पिया (पु०) पिय।
पियाना दे० (क्रि०) पिलाना, पान कराना।
पियार दे० (पु०) प्यार, प्रेम, नेह, दुलार।
पियारा दे० (वि०) प्यारा, प्रेमी, मनोहर, मनोरम, दुलारा।
पियारी दे० (स्त्री०) प्रिया, प्रियतमा, दुलारी।
पियाल तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, चिरौंजी का पेड़, मेवा विशेष।
पियाला दे० (पु०) कटोरा, प्याला।
पियास दे० (स्त्री०) प्यास, तृषा, पिपासा।
पियासा दे० (वि०) पिपासित, प्यासा, तृषित, तृषान्वित। [स्थान का नाम।
पियासी दे० (स्त्री०) मत्स्य विशेष, ब्राह्मणों के एक
पियूख या पियूष (पु०) अमृत।
पिरकी दे० (स्त्री०) फुड़िया, फुंसी।
पिरथी (स्त्री०) पृथ्वी।
पिरन (पु०) चौपाये, पशुओं का लँगड़ापन।
पिराई (स्त्री०) पीलापन।
पिराक (पु०) पक्वान विशेष, गूझा। [होना।
पिराना दे० (क्रि०) दुःख होना, व्यथा होना, पीड़ा
पिरीत दे० (वि०) प्रिय, प्यारा, प्रियतम, प्रेमपात्र।
यथाः—"जय रघुनन्दन प्राण पिरीते।
तुम बिन नाथ बहुत दिन बीते॥"
—रामायण।
पिरोजा दे० (पु०) अंगाली रंग की एक सामान्य मणि।
पिरोना दे० (क्रि०) गूँथना, गाँथना, गुहना।
पिलई दे० (स्त्री०) रोग विशेष, बरबट, पिलही, तापतिल्ली।
पिलक (पु०) पीले रंग की एक चिड़िया।
पिलकना (क्रि०) गिराना, लुढ़काना, ढकेलना।
पिलखन (पु०) पाकर का वृक्ष।
पिलचना दे० (क्रि०) लिपटना, चिमटना।
पिलड़ी दे० (स्त्री०) गोली, टिकड़ी।
पिलना दे० (क्रि०) धावा करना, धावा मारना, रेलना, रेला देना, ढकेलना।
पिलपिला दे० (पु०) पिचपिचा, दुर्बल, शिथिल, ढीला।
पिलपिलाना दे० (क्रि०) नरमाना, ढीला होना, शिथिल होना, दुर्बल होना। [शिथिलता।
पिलपिलाहट दे० (स्त्री०) कोमलता, दुर्बलता।
पिलाना दे० (क्रि०) पियाना, पान कराना।
पिलुया दे०(पु०) कीट, कीड़ा, कृमि, पिल्लू।
पिल्ला दे० (पु०) कुत्ते का बच्चा, छोटा कुत्ता।
पिल्लू दे० (पु०) कीड़ा, कीट, पिलुवा।
पिशङ्ग तद्० (पु०) पिङ्गल वर्ण। (वि०) पिङ्गलवर्ण विशिष्ट, मटियारा रङ्ग।
पिशाच तद्० (पु०) देवयोनि विशेष, प्रेत, उपदेवता, विधर्मी मनुष्य, अनाचारी।—ग्रस्त (पु०) उन्मत्त, बातुल, अंडबंड बकने वाला।—घ्न (वि०) पिशाचों को नष्ट करने वाला। (पु०) पीली सरसों।
पिशाचक (पु०) भूत, पिशाच।—ी (पु०) कुबेर।
पिशाची (स्त्री०) पिशाच-स्त्री, जटामांसी।
पिशित तद्० (पु०) मांस, पल, आमिष।
पिशिताशन तद्० (पु०) [पिशित+अशन) राक्षस, निशाचर, मांसभक्षी।
पिशुन तद्० (वि०) छिप कर दोष बताने वाला, दो मनुष्यों में विरोध कराने वाला, क्रूर, चुगलखोर, निन्दक।—वचन (पु०) दुर्वाक्य, निष्ठुर वाक्य, गाली।
पिशुनता (स्त्री०) चुगलखोरी।
पिष्ट (वि०) चूर्ण किया हुआ।
पिष्टक तद्० (पु०) पूरी, पुआ, मिठाई, पक्वान।
पिष्टपेषण (पु०) पिसे को पीसना, कही बात को फिर कहना। [पीसने की मजूरी।
पिसाई दे० (स्त्री०) आटा आदि पीसने का काम,
पिसान दे० (पु०) आटा, चून।
पिसाना दे० (क्रि०) चूर्ण कराना, बुकनाना।
पिसू दे० (पु०) कृमि विशेष।
पिसौनी (स्त्री०) पीसने का काम।
पिस्ता (पु०) वृक्ष विशेष, जो शाम, इस्मिरना, ईराक और खुरासान से लेकर अफगानिस्तान तक होता है।

पिहित तद्० (वि०) गुप्त, आच्छादित, छिपाया हुआ, ढका हुआ, आवृत । [पान करु पी कर ।

पी दे० (पु०) प्रिय, प्रियतम, पति, स्वामी, (क्रि०)

पीक दे० (स्त्री०) उगाल, थूक ।—दान (पु०) दानी (स्त्री०) उगाल दान, बरतन विशेष जिसमें रईस लोग थूक कर अपने सामने रखते हैं उगालदान ।

पीच दे० (स्त्री०) माँड़ी, काँजी । [कुचलना ।

पीचना दे० (क्रि०) पीटना, लात मारना, कुचलना,

पीचू दे० (पु०) फल विशेष ।

पीछा दे० (पु०) पश्चात्, अनन्तर, पिछला भाग । —करना (वा०) खदेरना, भगाना, दौड़ाना । —फेरना (वा०) लौटा देना, परिवर्तन करना, जिससे लिया हो उसी को दे देना, त्यागना, फेरना ।

पीछे दे० (अ०) पश्चात्, अनन्तर, परे ।—डालना (वा०) भूल जाना, भुला देना, धर रखना, हटा देना, दूर कर देना ।—पड़ना (वा०) दिक करना, सताना, किसी काम के लिये सतत कहना । —लगना (वा०) पीछे पड़ना, दृष्टि रखना, सर्वदा दुःख देना, सतत दुःख देने की चेष्टा करना।

पीजन (पु०) मेवों के बाल धुनने की धुनकी ।

पीजर या पीजरा (पु०) पिंजरा ।

पीजाना दे० (क्रि०) पी लेना, चूसना, क्रोध रोकना।

पीटना दे० (क्रि०) मारना, कूटना ।

पीठ तद्० (स्त्री०) पृष्ठ, पिछाड़ी, पीछे, आसन, पीढ़ा । —के पीछे डालना (वा०) बचाना, रक्षा करना, त्याग करना ।—ठोंकना (वा०) [illegible] साहस देना, अभय देना, प्रशंसा करना, हिमायत करना ।—देना (वा०) भागना, भाग जाना, मुकरना, हताश होकर किसी काम से हाथ हटा लेना, हटना, टलना ।—पर हाथ फेरना (वा०) प्रसन्नता प्रकाश करना, उत्साह बढ़ाना, सहायता देना, धीरता देना, ढाँढ़स बँधाना ।—फेरना (वा०) सम्मुख होना, प्रस्तुत होना, उद्यत होना, किसी काम को करने लगना ।—लगना (वा०) पटका जाना, पछाड़ खाना, कुश्ती में हार जाना, घोड़े की पीठ पर घाव होना ।—क (पु०) पीढ़ा ।

पीठा दे० (पु०) भोजन विशेष ।

पीठिका (स्त्री०) पीढ़ा, अंश, अध्याय ।

पीठियापीठी दे० (वा०) सटे सटे, भिड़ा हुआ, सटा हुआ, एक दूसरे में जुड़ा हुआ ।

पीठी दे० (स्त्री०) पीसी उरद की दाल ।

पीठौना दे०(पु०) पत्रों का पृष्ठ, पीठ ।

पीड़ दे० (स्त्री०) दुःख, वेदन, व्यथा, पीड़ा, दर्द, वेदना । [दायक ।

पीड़क तद्० (वि०) दुःखदायी, दुःखदायक, क्लेश-

पीड़ना दे० (क्रि०) दुःख देना, पीड़ा देना, क्लेश देना ।

पीड़ा तद्० (स्त्री०) व्यथा, दुःख, वेदना, बाधा । —कर (वि०) पीड़क, क्लेशकर, दुःखदायी।

पीड़ित तद्० (वि०) दुःखित, दुःखी, पीड़ा युक्त ।

पीढ़ुरी (स्त्री०) पीढ़ली ।

पीड्यमान तद्० (वि०) पीड़ा युक्त, पीड़ा विशेष ।

पीढ़न दे० (पु०) पीढ़ों पर, पीढ़ों को, पीढ़े, पटरे ।

पीढ़ा दे० (पु०) पटरा, मोढ़ा, मचिया, पटा, काष्ठासन । (स्त्री०) वंश परम्परा, पुरुषानुक्रम ।—बन्ध (पु०) मङ्गलाचार, भूमिका ।

पीत तद्० (पु०) वर्ण विशेष, एक प्रकार का रंग, हलदिया रङ्ग । (गु०) पितवर्ण युक्त, पीयर, पीला । —क (पु०) केशर, हरताल, अगर, सोनामाखी, तुन, हरदी, पीतल, पीलाचंदन, शहद, गाजर, सफेदजीरा, पीलालोध, चिरायता, सोना-पाठा । —कन्द (पु०) गाजर ।—कदली (पु०) चंपक, कदली, सोनकेला ।—करवीरक (पु०) पीलाकनेर ।

पीतम दे० (पु०) प्रियतम, प्रिय, पीय, स्वामी ।

पीतरस तद्० (पु०) हरिद्रा, हलदी ।

पीतल दे० (पु०) मिश्रित धातु विशेष । [पीतल का ।

पीतला दे० (वि०) पीतल निर्मित, पीतल का बना,

पीताम्बर तद्० (पु०) [पीत+अम्बर] श्रीकृष्ण विष्णु । (वि०) पीतवर्ण वस्त्रयुक्त, पीले रंग की रेशमी धोती पहने हुए, या पीले रंग के कपड़े पहने हुए ।

पीती (पु०) घोड़ा । (स्त्री०) प्रीति ।

पीतु (पु०) सूर्य, अग्नि, यूथपति ।—दारु (पु०) गूलर, देवदार ।
पीथ (पु०) पानी, घी, अग्नि, सूर्य, काल ।
पीथि (पु०) घोड़ा।
पीन तद्० (वि०) पीवर, स्थूल, मांसल, मोटा, भरा [हुआ।
पीनक दे० (स्त्री०) अफ़ीम के नशे की झोंक, अफ़ीम के नशे से ऊँघाई आना।
पीनना दे० (क्रि०) तूमना।
पीनस दे० (पु०) नासिका का एक रोग विशेष, पालकी।—वारा (वि०) जिसकी नाक में पीनस का रोग हो।
पीनसा (स्त्री०) ककड़ी।
पीनसी (वि०) पीनस से पीड़ित।
पीना दे० (क्रि०) पान करना, जल पीना, सिकुड़ना, सङ्कुचित होना।
पीनी (स्त्री०) पोस्त, तीसी, तिल की खली।
पीप (स्त्री०) मवाद, फोड़े या घाव से सफेद लसदार जो मवाद निकलता है उसे पीप कहते हैं।
पीपर दे० (पु०) देखो पीपल।
पीपरि (पु०) छोटा पाकड़।
पीपल दे० (पु०) अश्वत्थ का वृक्ष, पिप्पल का पेड़।
पीपला दे० (पु०) तलवार की नोक।
पीपलामूल दे० (पु०) औषधि विशेष।
पीपा दे० (पु०) काठ या लोहा निर्मित गोलाकार पात्र विशेष, मद्यपात्र, मद्य रखने का पात्र।
पीब दे० (स्त्री०) मल विशेष, पूय, फोड़े का मल।
पीबियाना दे० (क्रि०) पकना, पीब बहना, गलगलाना।
पीय (पु०) प्रिय।
पीयर (वि०) पीला।
पीया (पु०) पिय। [हिंसक, प्रतिकूल।
पीयु (पु०) काला सूआ, धूक, कौआ, उल्लू। (वि०)
पीयूख (पु०) अमृत।—रुचि (पु०) चन्द्रमा।—वर्ष (पु०) चन्द्रमा, कपूर, छन्द विशेष।
पीयूष तद्० (पु०) अमृत, सुधा, अमी, दूध।
पीर दे० (स्त्री०) दुःख, वेदना, पीड़ा, व्यथा।
पीरा दे० (स्त्री०) पीड़ा, पीर।
पीराई दे० (स्त्री०) ढोल बजाने वाला।
पीरी (स्त्री०) बुढ़ापा, गुरुआई, चालाकी, ठेका, हुकूमत, अमानुषिक शक्ति चमत्कार, करामात।
पीरू (पु०) एक प्रकार का मुर्गा।
पील (पु०) हाथी, शतरंज के खेल का एक मोहरा जिसे फील या ऊँट भी कहते हैं।
पीला दे० (वि०) पीतवर्ण, पीतवर्ण का, पीले रंग का।
पीलाई दे० (स्त्री०) पीतत्व, पीला रंग, पीलापन।
पीलाम दे० (पु०) रेशमी वस्त्र विशेष।
पीली दे० (स्त्री०) मोहर, सुवर्ण मुद्रा, सोने की मोहर। (क्रि०) पी चुके, पी लिया।
पीलु तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके पत्ते हाथी खाते हैं, एक राग का नाम। [राग विशेष।
पीलू (पु०) वृक्ष विशेष, फलों में पड़ने वाले कीड़े,
पीवकड़ दे० (पु०) मद्यप, उन्मत्त, पियैया।
पीव या पीवर तद्० (वि०) स्थूल, पीन, मोटा, चरबी वाला, बलिष्ठ, ताकतवर। [करना।
पीसना दे० (क्रि०) पिसान करना, कूटना, चूर्ण
पीहर दे० (पु०) नैहर, मैका, स्त्री के पिता का घर, माइका।
पीहु दे० (पु०) पिस्सू, कृमि विशेष।
पुं तद्० (पु०) पुरुष, पुमान्, नर, पुरुष वाचक शब्द।
पुंलिङ्ग तद्० (पु०) पुरुष चिन्ह, पुरुषत्व।
पुंशक्ति तद्० (स्त्री०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व, पुरुष का सामर्थ्य। [कुलटा।
पुंश्चली तद्० (स्त्री०) पतुरिया, व्यभिचारिणी, वेश्या,
पुंसवन तद्० (पु०) गर्भ संस्कार विशेष, स्त्रियों के करने का एक व्रत।
पुंस्त्व तद्० (पु०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व।
पुआल दे० (पु०) पुवाल, पयाल, पलाल।
पुकार दे० (स्त्री०) हाँक, गुहार, टेर, दुःख निवेदन।
पुकारना दे० (क्रि०) गुहारना, हाँक मारना, टेरना, आह्वान करना।
पुकली (स्त्री०) कालिमा, कालिख।
पुखराज दे० (पु०) मणि विशेष, एक रत्न का नाम, पद्मराग मणि, गोमेद।
पुञ्ज तद्० (पु०) राशि, श्रेणि, समूह, दल, ढेर।—फल (पु०) पूगफल, सुपारी।
पुञ्ज[illegible] आम्र।

पुङ्गव तत्० (वि०) श्रेष्ठ, बड़ा, माननीय उत्तम, यह शब्द जिसके अन्त में आता है, उसी की श्रेष्ठता बतलाता है। यथा—राजपुङ्गव, ब्राह्मणपुङ्गव आदि।—केतु (पु०) शिव। [गाँठ।
पुङ्गनिया दे० (स्त्री०) नाक में पहनने की फुल्ली या
पुङ्गीफल (पु०) सुपाड़ी।
पुचकार दे० (पु०) सान्त्वन वाक्य, ढाढ़स देना, वश करना, बिगड़े हुए बैल आदि को सान्त्वन वाक्य से वश में करना। [से चूना पोता जाता है।
पुचारा दे० (पु०) चूना पोतने की कूँची जिससे भीत
पुच्छ तत्० (पु०) लाङ्गूल, पूछ, दुम, जन्तु विशेष, पश्चाद्भाग विशेष।
पुच्छल तत्० (वि०) पूँछ वाला, पुच्छ विशिष्ट, पुच्छ युक्त।—तारा (स्त्री०) धूम्रकेतु, अशुभ सूचक तारा। [कारी।
पुछैया दे० (पु०) पृच्छक, पूछने वाला, अनुसन्धान-
पुजना दे० (क्रि०) पूरा होना, पूर्ण होना, न्यून न रहना, पूजित होना, प्रतिष्ठा पाना, पूर्ण कराना।
पुजाना दे० (क्रि०) पूजा कराना, पूजा पाना, भराना।
पुजापा दे० (पु०) पूजा के उपकरण, पूजा की सामग्री।
पुजारी दे० (वि०) पूजा करने वाला, पूजक, अर्चक।
पुञ्ज तत्० (पु०) ढेर, राशि, समूह, सब पदार्थों का समूह।—ा (पु०) गुच्छा, समूह, गट्ठा।—दल (पु०) घुसा का शाखा।—(अव्य०) बहुत सा।
पुञ्जि (पु०) समूह, पूँजी।
पुट तत्० (पु०) मुशक, युग्म, आच्छादन, पत्रादि रचित पुष्पाधार, मध्य, अभ्यन्तर, चूषा, पेषण, अश्वखुर, घोड़े का पैर, औषधि पकाने का पात्र विशेष, दोना, डिब्बी, अर्गुबी किसी दवाई में अन्न व रस आदि के उस घोटना और सुखाना, मिलाव, मिलना, पद्म, कमल।
पुटक तत्० (पु०) दोना, पत्र निर्मित पात्र, पद्म, कमल।
पुटकिनी तत्० (स्त्री०) पद्मिनी, पद्मलता, पद्मयुक्त देश, पद्म समूह, आकन्त मधुप से युक्त मन्त्र।
पुटित तत्० (वि०) दुग्ध आच्छादित, आवृत।
पुटी तत्० (स्त्री०) आच्छादन विशेष, कौपीन, पत्रादि रचित पात्र, दोना।
पुट्ठा दे० (पु०) पशु आदि का पश्चाद्भाग, कटि के ऊपर का भाग।
पुड़ा दे० (पु०) बड़ी पुड़िया, गट्ठा, पुलन्दा।
पुड़िया दे० (स्त्री०) काग़ज़ की छोटी गाँठ जिसमें दवा आदि बाँधी जाती है।
पुड़ी दे० (स्त्री०) खाल, ढोल का चमड़ा, चर्म।
पुण्ड्र दे० (पु०) तिलक, चन्द्र, टीका।
पुण्डरीक तत्० (पु०) शुक्ल पद्म, श्वेत कमल, कमल माल, श्वेतच्छत्र, औषध विशेष, अग्निकोण का दिग्गज, कोषकार विशेष।
पुण्डरीकाक्ष तत्० (पु०) [पुण्डरीक+अक्ष] श्रीकृष्ण, कमल समान जिसकी आँखें हों।
पुण्ड्र तत्० (पु०) इक्षु विशेष, पौंढ़ा, ऊख, दैत्य विशेष, बलिराज का क्षेत्रज पुत्र। अन्ध महर्षि दीर्घतमा के औरस से बलिराज की महारानी सुदेष्णा के गर्भ से पाँच पुत्र उत्पन्न हुए थे, उनमें पुण्ड्र एक है। इनके नाम पर इनका अधिकृत राज्य भी परिचित होता है।
पुण्ड्रक दे० (पु०) माधवीलता, तिलक, ईख पौंढा।
पुण्य या पुन्य तत्० (पु०) शुभ अदृष्ट धर्म, सुकृत, शोभन कर्म, उत्तम कर्म, पावन, पवित्र।—कर्म (पु०) पवित्र कर्म, धर्म कर्म।—कृत (वि०) पुण्यकर्त्ता, धार्मिक, सुकृती।—गन्ध (पु०) चम्पा।—जन (पु०) सज्जन, राक्षस, यक्ष।—जनेश्वर (पु०) कुबेर, यक्षराज।—पत्तन (पु०) एक नगर का नाम, पूना।—भूमि (स्त्री०) आर्यावर्त्त देश, हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य का स्थान, पुण्यस्थान, तीर्थस्थान।—वान् (वि०) पुण्ययुक्त, सुकृती, धार्मिक।—शील (पु०) पुण्यशाली, धार्मिक, पवित्र।—श्लोक (पु०) विष्णु, युधिष्ठिर, नल राजा।
पुण्याई या पुन्याई दे० (स्त्री०) धर्म, सुकृत कर्म, धार्मिकता।
पुण्यात्मा तत्० (पु०) [पुण्य+आत्मा] पुण्यस्वभाव, पुण्यचारी, धर्मशील, धर्मधारी, धार्मिक।
पुण्याह तत्० (पु०) पुण्यजनक दिवस, पवित्र दिन सरकारी मालगुज़ारी वसूल करने का पहला दिन।—वाचन (पु०) देव कर्म में स्वस्तिवाचन क

पहले मङ्गल के लिये पुण्याह शब्द का तीन बार उच्चारण।

पुतला दे० (पु०) मूर्ति, काष्ठ तृण आदि निर्मित मूर्ति।

पुतली दे० (स्त्री०) आँख का तारा, काष्ठादि निर्मित छोटी प्रतिमा।

पुताई दे० (स्त्री०) पोतने का काम या मजूरी।

पुत्तलिका तद्० (स्त्री०) पुतली, गुड़िया।

पुत्तिका तद्० (स्त्री०) पुतली, काष्ठ निर्मित मूर्ति, पुत्तलिका, कीट विशेष, मधुमक्षिका।

पुत्र तद् (पु०) सुत, अपत्य, सन्तान, बेटा, पुन्नामक नरक से रक्षा करने वाला।—जीवी (पु०) वृक्ष विशेष, पुत्र जीवक वृक्ष।

पुत्रार्थी तद्० (पु०) [पुत्र+अर्थी] सन्तान काँक्षी, पुत्रेच्छु, पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा रखने वाला।

पुत्रिका तद्० (स्त्री०) कन्या, दुहिता, तनया, पुत्र के समान रखी हुई कन्या, पुत्तलिका, पुतली।

पुनरुक्ति तद्० (स्त्री०) पुनः कथन, कही बात को फिर कहना, काव्य का एक दोष।

पुनरुत्थान तद्० (पु०) पुनः उठना, द्वितीय बार उठना।

पुनर्जन्म तद् (पु०) द्वितीय बार उत्पत्ति, दूसरा जन्म, पुनः उद्भव।

पुनर्नव (वि०) जो फिर से नया हो गया हो।

पुनर्नवा तद्० (स्त्री०) शाक, गदहपुरना।

पुनर्भव तद्० (पु०) नख, नह। (वि०) पुनर्जन्म, पुनः उत्पन्न पुनः विवाह।

पुनर्भू तद्० (स्त्री०) द्विरूढा, दो बार ब्याही स्त्री।

पुनर्वसु तद्० (पु०) सातवाँ नक्षत्र, गन्धर्व, मुनिभेद।

पुनर्विवाह तद्० (पु०) प्रथम ऋतु के समय का संस्कार विशेष, गर्भाधान संस्कार, द्वितीय विवाह दूसरा विवाह। [अपमानित करना।

पुनवाना दे० (क्रि०) अनादर करना, अपमान करना

पुरञ्जय तत्० (पु०) एक सूर्यवंशीय राजा, बहुत पुराने समय में देवासुर युद्ध में देवता दैत्यों से हार कर भगवान् के शरणापन्न हुए और उनकी आज्ञा से महाराज पुरञ्जय के निकट उन लोगों ने प्रार्थना की, उन्होंने इन्द्र को वृषरूप धारण करने का आदेश दिया, यद्यपि इन्द्र इसे स्वीकार करना नहीं चाहते थे परन्तु अन्त में देवताओं के अनुरोध से इन्द्र को स्वीकार करना पड़ा, वृषरूपधारी इन्द्र पर चढ़ कर महाराज पुरञ्जय ने युद्ध में दैत्यों को हरा दिया। तभी से राजा पुरञ्जय ककुत्स्थ कहे जाने लगे और उनके वंश की काकुत्स्थ नाम से प्रसिद्धि हुई। इन्हीं के वंश में भगवान् रामचन्द्र के रूप में प्रकट हुए थे।

पुरञ्जर तत्० (पु०) वय, बाहुमूल, स्कन्ध, कन्धा।

पुरट तत्० (पु०) सुवर्ण, काञ्चन, स्वर्ण, हेम, सोना।

पुरण (पु०) समुद्र।

पुरत (अव्य०) आगे।

पुरनिया दे० (गु०) प्राचीन, बूढ़ा, वृद्ध, एक नगर का नाम, जो प्राचीन अङ्गदेश में और सम्प्रति विहार में है।

पुरन्दर तत्० (पु०) इन्द्र, महेन्द्र, देवराज, इन्द्र का नामान्तर। इन्द्र शत्रुओं के नगर का नाश करते हैं इस कारण इनका नाम पुरन्दर पड़ा है।

पुरबला (वि०) पूर्व का, पहले का, पूर्व जन्म का।

पुरबहु दे० (क्रि०) पूरा करो, पूर्ण करो, भर दो, बुझा दो।

पुरवा (पु०) पुरवा, कुल्हड़, कसोरा।

पुरवासी तत्० (पु०) [पुरस्+वस्+णिन्] पौर-जन, नगर में रहने वाला। [का रहने वाला।

पुरबिया या पुरबिहा (वि०) पूर्वदेश में पैदा हुआ

पुरवी दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष।

पुरवइया या पुरवैया (स्त्री०) पूरब की। [मोट।

पुरवट (पु०) चमड़े का बहुत बड़ा डोल, चरसा,

पुरवा (पु०) छोटा गाँव, खेड़ा।

पुरवाई (स्त्री०) पूर्व की वायु।

पुरवैया (स्त्री०) पूर्व की हवा।

पुरश्चरण तत्० (पु०) [पुरस्+चर+ल्युट्] मन्त्र आदि को चेतन करना, नियमपूर्वक मन्त्रजप, अनुष्ठानकरण, विधि सहित भगवत् पूजा।

पुरसा (पु०) ऊँचाई या गहराई का एक माप, माप, पाँच हाथ का एक माप।

पुरस्कार तत्० (पु०) [पुरस्+कृ+घञ्] पारितोषिक, आदरपूर्वक दान, साधुवाद, उत्तम कर्म का बदला, धन्यवाद, पूजा।

पुरस्कृत तत्० (वि०) [पुरस्+कृ+क्त] पारितोषिक पाया हुआ, पूजित, धन्यवाद पाया हुआ, इनाम पाया हुआ। [काल, प्रथम, पहले, आगे, पूर्व, पूर्व में।

पुरस्तात् तत्० (अ०) पूर्वदिक्, प्रथम काल, अतीत

पुरा तत्० (अ०) प्राचीन, पुराना, पुराने समय में, चिरन्तन, अतीत, भूत, चिरातीत, निकट, सन्निहित। (दे०) गाँव, पुरवा, बस्ती।—कृत (गु०) प्रारब्ध कर्म, पूर्वकाल कृत, पहले जन्म में किया हुआ, भाग्य, अदृष्ट।

पुराण तत्० (पु०) व्यासादि मुनि प्रणीत ग्रन्थ विशेष, अष्टादश पुराण, पुरातन इतिहास, पुराण उस विद्या को कहते हैं जिसमें प्राचीन इतिहास के मिश्र धर्म के तत्त्व निरूपण किये गये हों। पुराणों में पाँच प्रकार के विषय लिखे जाते हैं। यथा— सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित ये ही पाँच विषय पुराणों के वर्णनीय हैं। सर्ग— आदि सृष्टि का उत्पत्तिक्रम, प्रतिसर्ग—प्रलय के अनन्तर का सृष्टि क्रम, वंश—देवता दानव और राजाओं की वंशावली, मन्वन्तर—मनुओं का राज्यकाल और राज्यव्यवस्था, वंशानुचरित— मनुओं की वंशावली।—ग (पु०) ब्रह्मा, पुराणवक्ता।—पुरुष (पु०) विष्णु, नारायण, भगवान।—वेत्ता (पु०) पुराणज्ञ, पुराणादि शास्त्रज्ञाता, पौराणिक। [विद्या।

पुरातत्त्व (पु०) प्रत्नशास्त्र, प्राचीन समय सम्बन्धी

पुरातन तत्० (वि०) प्राचीन, पूर्वकालीन, बहुकालीन, चिरन्तन, पुराना, अगले समय का, पहले का। —कथा (स्त्री०) इतिहास, प्राचीन वृत्तान्त।

पुरातल (पु०) सप्तातल।

पुरान (वि०) पुराना।

पुराना दे० (वि०) प्राचीन, पुरातन, पहले का, पहले समय का। (क्रि०) पूरा करना, भरना, पूर्ण करना, भर देना।

पुरारि या पुरारी तद्० (पु०) महादेव, शिव, शम्भु, त्रिपुर दाह के अनन्तर शिव का नाम त्रिपुरारि या पुरारी पड़ा है। हिरण्याक्ष के तीन पुत्रों के नगरों की त्रिपुर या पुर संज्ञा है। उसके जलाने के कारण महादेव का नाम पुरारि है, त्रिपुरासुर के मारने से शिव का नाम त्रिपुरारी पड़ा है।

पुरा तद्० (पु०) नगर, गाँव, पुर, पुरवा, नगरी, जगदीशपुरी, जगन्नाथ क्षेत्र।—वती (स्त्री०) एक नदी।—वसु (पु०) भीष्म।—वृत्त (पु०) पुराना हाल, इतिहास।—साह (पु०) इन्द्र।

पुरि (स्त्री०) पुरी, शरीर, नदी। (पु०) राजा, दस नामी संन्यासियों में से एक।

पुरिखा (पु०) देखो, पुरखा।

पुरीतत् तद्० (पु०) अन्त्र, आँत, नाड़ी, उस नाड़ी विशेष का नाम जिसमें निद्रा के समय मन स्थिर रहता है।—मोह (पु०) धतूरा।

पुरीपम (पु०) माप, उरद।

पुरीपा तद्० (पु०) विष्टा, मल।

पुरु तद्० (पु०) देवलोक, राजा विशेष, ययाति राजा का कनिष्ठ पुत्र और नहुप का पौत्र, ययाति की देवयानी और शर्मिष्ठा दो स्त्रियाँ थीं। देवयानी शुक्राचार्य की कन्या थी और शर्मिष्ठा दैत्यराज वृषपर्वा की। शर्मिष्ठा के गर्भ से तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे जिनमें पुरु सब में कनिष्ठ थे। शुक्राचार्य के शाप से ययाति जराग्रस्त हो गये थे, उन्होंने अपना वार्द्धक्य अपने पुत्रों में से किसी को देना चाहा परन्तु किसी ने पिता की बुढ़ाई लेनी स्वीकार नहीं की। अन्त में उन्होंने पुरु को अपनी बुढ़ाई देनी चाही, पुरु ने पिता की आज्ञा को आदर के साथ ग्रहण किया। ययाति ने पुरु को ही अपने राज्य का अधिकारी बनाया।

(२) हस्तिनापुरी के चन्द्रवंशी राजा, प्रसिद्ध विजयी अलकजेंडर (अलक्षेन्द्र) के भारत आक्रमण के समय इन्होंने वितस्ता नदी के पास उसे रोका था, यद्यपि उस युद्ध में पुरु हार गये थे और अलकजेंडर जीत गया था, तथापि उसने पुरु की वीरता से सन्तुष्ट होकर इनका राज्य इन्हें लौटा दिया था।

पुरुकुत्स तद्० (पु०) मान्धाता के पुत्र, ये राजा शशिबिन्दु की कन्या इन्दुमती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनके बड़े भाई का नाम मुचकुन्द था। महर्षि के शाप से पुरुकुत्स की स्त्री नदी हो गई थी। महर्षि सौभरि के साथ इनकी पाँच बहिनें ब्याही गई थीं। नर्मदा नदी के उत्तर तीर के देश इनके राज्य में थे। नर्मदा के गर्भ से पुरुकुत्स को एक पुत्र उत्पन्न हुआ था, जिसका नाम त्रसदस्यु था। राजा पुरुकुत्स ने नर्मदा की प्रार्थना से पाताल के अनेक गन्धर्वों का विनाश किया था।

पुरुख (पु०) पुरुष।

पुरुखा दे० (पु०) पूर्वपुरुष, पिता पितामह आदि।

पुरुखे दे० (पु०) पुरखा का बहुवचन, पूर्वपुरुष, पिता पितामह, बापदादे आदि।

पुरुजित् (पु०) कुन्तिभोज का पुत्र, और अर्जुन का मामा, विष्णु।

पुरुदस्म (पु०) विष्णु।

पुरुवा (पु०) पूर्व दिशा।

पुरुभोजा (पु०) मेढ़, मेंढ़ा।

पुरुराज तद् (पु०) बुध का पुत्र और चन्द्रमा का पौत्र बृहस्पति की पत्नी तारा को चन्द्रमा हर ले आये थे, तारा ही से चन्द्रमा को एक पुत्र हुआ था जिसका नाम बुध था। राजपुत्री इला के साथ बुध का विवाह हुआ था। इला के गर्भ से बुध के पुत्र पुरुरवा हुए थे। उर्वशी इन्द्र के शाप से मर्त्यलोक में पुरुरवा की स्त्री के रूप में उत्पन्न हुई। अपनी प्रतिज्ञा पूरी न करने के कारण उर्वशी ने पुरुरवा को छोड़ दिया। उर्वशी के विरह से अधीर होकर पुरुरवा चारों तरफ़ घूमते फिरे, अन्त में एक दिन कुरुक्षेत्र नामक स्थान में पुरुरवा ने उर्वशी को देख पाया। राजा ने उर्वशी को अपने घर चलने के लिये कहा। उर्वशी बोली, "मैं आपसे गर्भवती हुई हूँ। वर्ष के अनन्तर कई सन्तान उत्पन्न होने वाले हैं। मैं आपके पुत्रों को आपको सौंपने आऊँगी, उसी समय आपके घर एक रात रहूँगी, उर्वशी के सात पुत्र हुए। उनको लेकर उर्वशी राजा को सौंपने आई और उसी समय वह एक रात रही भी थी। प्रवाद

पुरञ्जय तद्० (पु०) एक सूर्यवंशीय राजा, बहुत पुराने समय में देवासुर युद्ध में देवता दैत्यों से हार कर भगवान् के शरणापन्न हुए और उनकी आज्ञा से महाराज पुरञ्जय के निकट उन लोगों ने प्रार्थना की, इन्होंने इन्द्र को वृषरूप धारण करने का आदेश दिया, यद्यपि इन्द्र इसे स्वीकार करना नहीं चाहते थे परन्तु अन्त में देवताओं के अनुरोध से इन्द्र को स्वीकार करना पड़ा, वृषरूपधारी इन्द्र पर चढ़ कर महाराज पुरञ्जय ने युद्ध में दैत्यों को हरा दिया। तभी से राजा पुरञ्जय ककुत्स्थ कहे जाने लगे और उनके वंश की काकुत्स्थ नाम से प्रसिद्धि हुई। इन्हीं के वंश में भगवान् रामचन्द्र के रूप में प्रकट हुए थे।

पुरञ्जर तद्० (पु०) वप, बाहुमूल, स्कन्ध, कन्धा।

पुरट तद्० (पु०) सुवर्ण, काञ्चन, स्वर्ण, हेम, सोना।

पुरण (पु०) समुद्र।

पुरत (अव्य०) आगे।

पुरनिया दे० (गु०) प्राचीन, बूढ़ा, वृद्ध, एक नगर का नाम, जो प्राचीन वङ्गदेश में और सम्प्रति बिहार में है।

पुरन्दर तद्० (पु०) इन्द्र, महेन्द्र, देवराज, इन्द्र का नामान्तर। इन्द्र शत्रुओं के नगर का नाश करते हैं इस कारण इनका नाम पुरन्दर पड़ा है।

पुरबला (वि०) पूर्व का, पहले का, पूर्व जन्म का।

पुरबहु दे० (क्रि०) पूरा करो,पूर्ण करो,भर दो,बुला दो।

पुरबा (पु०) पुरवा, कुल्हड़, करई।

पुरबासी तद्० (पु०) [पुरस्+वस्+णिन्] पौरजन, नगर में रहने वाला। [या रहने वाला।

पुरबिया या पुरबिहा (वि०) पूर्वदेश में पैदा हुआ

पुरबी दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष।

पुरबइया या पुरबैया (स्त्री०) पूरब की। [मोट।

पुरवट (पु०) चमड़े का बहुत बड़ा डोल, चरसा,

पुरवा (पु०) छोटा गाँव, खेड़ा।

पुरवाई (स्त्री०) पूर्व की वायु।

पुरवैया (स्त्री०) पूर्व की हवा।

पुरश्चरण तद्० (पु०) [पुरस्+चर+अनट्] मन्त्र आदि को चेतन करना, नियमपूर्वक मन्त्रजप, अनुष्ठानकरण, विधि सहित भगवत् पूजा।

पुरसा (पु०) ऊँचाई या गहराई का एक माप, माप, पाँच हाथ का एक माप।

पुरस्कार तद्० (पु०) [पुरस्+कृ+घञ्] पारितोषिक, आदरपूर्वक दान, साधुवाद, उत्तम कर्म का बदला, धन्यवाद, पूजा।

पुरस्कृत तद्० (वि०) [पुरस्+कृ+क्त] पारितोषिक पाया हुआ, पूजित, धन्यवाद पाया हुआ, इनाम पाया हुआ। [काल, प्रथम, पहले, आगे, पूर्व,पूर्व में।

पुरस्तात् तद्० (अ०) पूर्वदिक्, प्रथम काल, अतीत

पुरा तद्० (अ०) प्राचीन, पुराना, पुराने समय में, चिरन्तन, अतीत, भूत, चिरातीत, निकट, सन्निहित। (दे०) गाँव, पुरवा, बस्ती।—कृत (गु०) प्रारब्ध कर्म, पूर्वकाल कृत, पहले जन्म में किया हुआ, भाग्य, अदृष्ट।

पुराण तद्० (पु०) व्यासादि मुनि प्रणीत ग्रन्थ विशेष, अष्टादश पुराण, पुरातन, इतिहास, पुराण उस विद्या को कहते हैं जिसमें प्राचीन इतिहास के मिष धर्म के तत्त्व निरूपण किये गये हों। पुराणों में पाँच प्रकार के विषय लिखे जाते हैं। यथाः— सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित ये ही पाँच विषय पुराणों के वर्णनीय हैं। सर्ग— आदि सृष्टि का उत्पत्तिक्रम, प्रतिसर्ग—प्रलय के अनन्तर का सृष्टि क्रम, वंश—देवता दानव और राजाओं की वंशावली, मन्वन्तर—मनुओं का राज्यकाल और राज्यव्यवस्था, वंशानुचरित— मनुओं की वंशावली।—ग (पु०) ब्रह्मा, पुराणवक्ता।—पुरुष (पु०) विष्णु, नारायण, भगवान।—वेत्ता (पु०) पुराणज्ञ, पुराणादि शास्त्रज्ञाता, पौराणिक। [विद्या।

पुरातत्त्व (पु०) प्रत्नशास्त्र, प्राचीन समय सम्बन्धी

पुरातन तद्० (वि०) प्राचीन, पूर्वकालीन, बहुकालीन, चिरन्तन, पुराना, अगले समय का, पहले का। —कथा (स्त्री०) इतिहास, प्राचीन वृत्तान्त।

पुरातल (पु०) तलातल।

पुरान (वि०) पुराना।

पुराना दे० (वि०) प्राचीन, पुरातन, पहले का, पहले समय का। (क्रि०) पूरा करना, भरना, पूर्ण करना, भर देना।

पुरारि या पुरारी तत्० (पु०) महादेव, शिव, शम्भु, त्रिपुर दाह के अनन्तर शिव का नाम त्रिपुरारि या पुरारी पड़ा है। हिरण्याक्ष के तीन पुत्रों के नगरों की त्रिपुर या पुर संज्ञा है। उसके जलाने के कारण महादेव का नाम पुरारि है, त्रिपुरासुर के मारने से शिव का नाम त्रिपुरारी पड़ा है।

पुरा तत्० (पु०) नगर, गाँव, पुर, पुरवा, नगरी, जगदीशपुरी, जगन्नाथ क्षेत्र।—वती (स्त्री०) एक नदी।—वसु (पु०) भीष्म।—वृत्त (पु०) पुराना हाल, इतिहास।—साह (पु०) इन्द्र।

पुरि (स्त्री०) पुरी, शरीर, नदी। (पु०) राजा, दस नामी संन्यासियों में से एक।

पुरिखा (पु०) देखो, पुरखा।

पुरीतत् तत्० (पु०) अन्त्र, आँत, नाड़ी, उस नाड़ी विशेष का नाम जिसमें निद्रा के समय मन स्थिर रहता है।—मोह (पु०) धतूरा।

पुरीषम (पु०) माष, उरद।

पुरीषा तत्० (पु०) विष्टा, मल।

पुरु तत्० (पु०) देवलोक, राजा विशेष, ययाति राजा का कनिष्ठ पुत्र और नहुष का पौत्र, ययाति की देवयानी और शर्मिष्ठा दो स्त्रियाँ थीं। देवयानी शुक्राचार्य की कन्या थी और शर्मिष्ठा दैत्यराज वृषपर्वा की। शर्मिष्ठा के गर्भ से तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे जिनमें पुरु सब में कनिष्ठ थे। शुक्राचार्य के शाप से ययाति जराग्रस्त हो गये थे, उन्होंने अपना वार्द्धक्य अपने पुत्रों में से किसी को देना चाहा परन्तु किसी ने पिता की बुढ़ाई लेनी स्वीकार नहीं की। अन्त में उन्होंने पुरु को अपनी बुढ़ाई देनी चाही, पुरु ने पिता की आज्ञा को आदर के साथ ग्रहण किया। ययाति ने पुरु को ही अपने राज्य का अधिकारी बनाया।

(२) हस्तिनापुरी के चन्द्रवंशी राजा, प्रसिद्ध विजयी अलकजेंडर (अलक्षेन्द्र) के भारत आक्रमण के समय इन्होंने वितस्ता नदी के पास उसे रोका था, यद्यपि उस युद्ध में पुरु हार गये थे और अलकजेंडर जीत गया था, तथापि उसने पुरु की वीरता से सन्तुष्ट होकर इनका राज्य इन्हें लौटा दिया था।

पुरुकुत्स तत्० (पु०) मान्धाता के पुत्र, ये राजा शशिबिन्दु की कन्या इन्दुमती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनके बड़े भाई का नाम मुचकुन्द था। महर्षि के शाप से पुरुकुत्स की स्त्री नदी हो गई थी। महर्षि सौभरि के साथ इनकी पाँच बहिनें ब्याही गई थीं। नर्मदा नदी के उत्तर तीर के देश इनके राज्य में थे। नर्मदा के गर्भ से पुरुकुत्स को एक पुत्र उत्पन्न हुआ था, जिसका नाम त्रसदस्यु था। राजा पुरुकुत्स ने नर्मदा की प्रार्थना से पाताल के अनेक गन्धर्वों का विनाश किया था।

पुरुख (पु०) पुरुष।

पुरुखा दे० (पु०) पूर्वपुरुष, पिता पितामह आदि।

पुरुखे दे० (पु०) पुरखा का बहुवचन, पूर्वपुरुष, पिता पितामह, बापदादे आदि।

पुरुजित् (पु०) कुन्तिभोज का पुत्र, और अर्जुन का मामा, विष्णु।

पुरुदस्म (पु०) विष्णु।

पुरुवा (पु०) पूर्व दिशा।

पुरुभोजा (पु०) मेढ़, मेंढ़ा।

पुरुराज तत् (पु०) बुध का पुत्र और चन्द्रमा का पौत्र बृहस्पति की पत्नी तारा को चन्द्रमा हर ले आये थे, तारा ही से चन्द्रमा को एक पुत्र हुआ था जिसका नाम बुध था। राजपुत्री इला के साथ बुध का विवाह हुआ था। इला के गर्भ से बुध के पुत्र पुरुरवा हुए थे। उर्वशी इन्द्र के शाप से मर्त्यलोक में पुरुरवा की स्त्री के रूप में उत्पन्न हुई। अपनी प्रतिज्ञा पूरी न करने के कारण उर्वशी ने पुरुरवा को छोड़ दिया। उर्वशी के विरह से अधीर होकर पुरुरवा चारों तरफ़ घूमते फिरे, अन्त में एक दिन कुरुक्षेत्र नामक स्थान में पुरुरवा ने उर्वशी को देख पाया। राजा ने उर्वशी को अपने घर चलने के लिये कहा। उर्वशी बोली, " मैं आपसे गर्भवती हुई हूँ। वर्ष के अनन्तर कई सन्तान उत्पन्न होने वाले हैं। मैं आपके पुत्रों को आपको सौंपने आऊँगी, उसी समय आपके घर एक रात रहूँगी, उर्वशी के सात पुत्र हुए। उनको लेकर उर्वशी राजा को सौंपने आई और उसी समय वह एक रात रही भी थी। प्रवाद

नगरी पुरूरवा की राजधानी थी, यह नगरी गङ्गा के किनारे स्थापित की गई थी। इस कारण उसका नाम प्रतिष्ठान था। पुरूरवा को गन्धर्वों से एक अग्नि पूर्ण स्थान मिला था। उसी अग्नि से पुरूरवा ने अनेक यज्ञ किये और यज्ञफल से वे गन्धर्वलोक में गये।

पुरुष तद्० (पु०) पुमान्, नर, जीव, जीवात्मा। —कार (पु०) पुरुष का कर्म, चेष्टा, पौरुष, शौर्य। —कुञ्जर (पु०) पुरुषश्रेष्ठ, यह शब्द भी पुङ्गव शब्द के समान है। जिन संज्ञा वाचक शब्दों के अन्त में यह शब्द आता है उनकी श्रेष्ठता बोधन करता है। यथा—नरकुञ्जर, सचिवकुञ्जर। —नुक्रम (पु०) पुरुषों की चली आई हुई परम्परा।—त्व (पु०) पुरुषभाव, पुंस्त्व, साहस। —त्वहीन (वि०) पुंसत्व रहित, नपुंसक, हिजड़ा, खोजा।—सिंह (पु०) पुरुषश्रेष्ठ, उत्तम पुरुष।

पुरुषादक (पु०) नरभक्षी राक्षस।

पुरुषाधम तद्० (पु०) [पुरुष+अधम] निकृष्ट मनुष्य, नीच, पामर मनुष्य।

पुरुषार्थ तद्० (पु०) पुरुष का प्रयोजन, पुरुष का उद्देश्य—धर्म अर्थ काम और मोक्ष इनका पुरुषार्थ कहा है।—ी (वा०) उद्योगी, परिश्रमी सामर्थ्यवान्।

पुरुषोत्तम तद्० (पु०) नारायण, विष्णु भगवान, श्रीकृष्ण। वल्लभाचार्य जी के मत से गोलोकविहारी नित्य अनिर्वचनीय श्रीकृष्ण।

पुरुहूत तद्० (पु०) पुरन्दर, देवराज, इन्द्र।

पुरूरवा (पु०) इला का पुत्र, एक चन्द्रवंशी राजा जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर (प्रयाग के समीप) झूसी में थी।

पुरैन दे० (स्त्री०) कमलपत्र, कमल बेल।

पुरोचन तद्० (पु०) दुर्योधन का मित्र और सेवक, दुर्योधन की आज्ञा से इसने वारणावत नगर में पाण्डवों का विनाश करने की इच्छा से लाक्षागृह बनाया था। विदुर के सङ्केत से पाण्डवों को पुरोचन की दुष्टता मालूम हो गई। भीमसेन ने पुरोचन के घर में और उनके रहने के लिये जो लाक्षागृह बना था उसमें आग लगा कर स्वयं निकल गये। पुरोचन परिवार के साथ वहीं जल गया।

पुरोडाश या पुरोडास तद्० (पु०) यज्ञीय हवि विशेष, यव के आटे की बनी हुई एक प्रकार की रोटी, हवन का अवशेष, यज्ञभाग की हवि।

पुरोधा तद्० (पु०) पुरोहित, ऋत्विक्, याजक, यज्ञ कराने वाला।

पुरोवर्त्ती तद्० (वि०) अग्रसर, अग्रगामी, आगे चलने वाला।

पुरोहित तद्० (पु०) ऋत्विक्, पुरोधा, याजक धर्म कराने वाला ब्राह्मण, उपाध्याय।—ई (स्त्री०) पुरोहित का काम।

पुरोहितानी दे० (स्त्री०) पुरोहित की स्त्री।

पुर्रा दे० (पु०) वृद्ध, पूर्वज, पूर्व पुरुष।

पुर्चक दे० (पु०) छल, कपट साहस, बढ़ावा, उत्साह।

पुर्वा दे० (स्त्री०) पूर्व की हवा।

पुर्वाई दे० (स्त्री०) पुर्वा, पूर्व की हवा।

पुर्वाना दे० (क्रि०) भरवाना, पूर्ण करना।

पुर्वैया दे० (स्त्री०) पुरवाई, पूर्व की हवा।

पुर्सा दे० (पु०) पुरुष की ऊँचाई का परिमाण, पुरुष के बराबर, चार हाथ का नाप।

पुल दे० (पु०) सेतु बाँध, बन्ध।

पुलक तद्० (पु०) रोमाञ्च, रोमोद्भेद, शरीर के अन्दर और बाहर हर्षजन्य विकार, प्रस्तर विशेष, मणि का दोष विशेष, गन्धर्व विशेष, हरताल। —पंक्ति (स्त्री०) आनन्द से प्रफुल्ल रोम।

पुलकित तद्० (वि०) हर्षित, आह्लादित, रोमाञ्चयुक्त, प्रसन्न। [ऋषि, ब्रह्मा के मानस पुत्र।

पुलपुला दे० (वि०) गला हुआ, सड़ा हुआ, पिलपिला।

पुलपुलाना दे० (क्रि०) भयभीत होना, डरना, कांपना, ढीला पड़ना, शिथिल होना।

पुलपुलाहट दे० (स्त्री०) भय, डर। [ऋषि।

पुलस्ति तद्० (पु०) सप्तर्षियों के अन्तर्गत एक

पुलस्त्य तद्० (पु०) मुनि विशेष, सप्तर्षियों के अन्तर्गत ऋषि विशेष। पुलस्ति ऋषि, ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, इनकी गणना प्रजापतियों में है। इनके पुत्र का नाम विश्रवा था।

पुलह तद्० (पु०) पुलस्त्य के समान ये भी ब्रह्मा के मानस पुत्र और सप्तऋषियों के अन्तर्गत हैं। इनकी स्त्री का नाम गति था, गति के गर्भ से कर्मश्रेष्ठ, वरीयान् और सहिष्णु नामक तीन पुत्र पुलह के हुए थे। कोई पुलह की स्त्री का नाम क्षमा बतलाते हैं और उनके गर्भ से कर्दम, अर्वरीश और सहिष्णु नामक तीन पुत्रों का होना मानते हैं।

पुलहाना दे० (क्रि०) मनाना, खुश करना, प्रसन्न करना। [अल्पता।

पुलाक तद्० (पु०) तुच्छ धान्य, शस्यहीन धान्य,

पुलाव दे० (पु०) मांसोदन, मांस के साथ बना हुआ भात, मुसलमानों में इसका अधिक प्रचार है।

पुलिन तद्० (पु०) तट, तीर, किनारा, जल से निकला हुआ भाग, द्वीप।

पुलिन्द तद्० (पु०) म्लेच्छ जाति विशेष, भील, शबर।

पुलिन्दा दे० (पु०) गठरी, कागज़ों का मुट्ठा, पोटरी।

पुलोम (पु०) एक दैत्य जिसकी बेटी का नाम शची था।

पुलोमजा तद्० (स्त्री०) इन्द्राणी, शची, इन्द्र की स्त्री का नाम, पुलोम नामक दानव की कन्या, जो इन्द्र को ब्याही गयी थी।

पुलोमद्विष् (स्त्री०) अफ़ीम।

पुलोमा तद्० (स्त्री०) महर्षि भृगु की पत्नी और च्यवन की माता, दैत्यराज वैश्वानर की ये कन्या थीं। [की डाँठी।

पुवार या पुवाल दे० (पु०) पयाल, पलाल, धान

पुष्कर तद्० (पु०) हस्ति शुण्डाग्र, वाद्यभाण्ड, मुख, आकाश, जल, पद्म, कमल, कुष्ठ रोग की ओषधि, काण्ड, शर, बाण, द्वीप, विशेष, युद्ध, असिकोष, तलवार की म्यान, रोग विशेष, नाग विशेष, सारस पक्षी, वरुण पुत्र, पर्वत विशेष, तीर्थ विशेष, जो अजमेर के पास है। एक राजा का नाम। निषध देश के राजा नल का छोटा भाई। इसने कलि की सहायता से जूए में राजा नल को हरा कर उन्हें राज्यच्युत कर दिया था और स्वयं निषध देश का राजा बन गया था। जब कलि ने नल को छोड़ दिया तब नल पुनः अपने राज्य के अधिकारी हुए थे।

पुष्करिणी तद्० (स्त्री०) सौ धनु के परिमाण का चौकोना जलाधार, जलाशय, तालाब।

पुष्कल तद्० (पु०) ग्रास चतुष्टयात्मक भिक्षा। (वि०) अधिक, ढेर, श्रेष्ठ, उत्तम।

पुष्ट तद्० (वि०) तैयार, भरा हुआ, बलवान, बलिष्ठ, मज़बूत, प्रतिपालित, माँसल, स्थूल, हृष्टपुष्ट, मोटा ताज़ा।

पुष्टई तद्० (स्त्री०) ओषधि विशेष, पुष्टकर ओषधि।

पुष्टि तद्० (स्त्री०) मुटाई, पोषण, पालन, षोडश मातृकान्तर्गत देवता विशेष।—कर (पु०) बल-वर्द्धक, पुष्टई।—का (स्त्री०) जल की सीप, सुतही, सापी।—दा (स्त्री०) अश्वगन्धा वृक्ष, पुष्टिदात्री, स्थौल्यकारिणी।—मार्ग (पु०)वल्लभ-सम्प्रदाय।

पुस्तक तद्० (स्त्री०) ग्रन्थ, पोथी, (यह शब्द हिन्दी साहित्य में "पोथी" अथवा "किताब" का अर्थ-वाची होने के कारण स्त्रीलिङ्ग समझा जाता है। —ी (स्त्री०) पोथी पुस्तक।—कार (वि०) पोथी के रूप का।—ालय (पु०) वह घर जिसमें पुस्तकों का समूह हो।

पुष्प तद्० (पु०) कुसुम, प्रसून, फूल, गुल, स्त्री का रज, विकाश, कुबेर का रथ, चक्षु रोग विशेष, फुली रोग। करण्डक (पु०) उज्जयिनी नगरी का एक बाग जो शिव का बाग कहा जाता है। —चाप (पु०) कामदेव, मदन।—रस (पु०) पुष्प का मधु, मकरन्द।—रेणु (पु०) पराग धूलि।

पुष्पक तद्० (पु०) एक विमान का नाम जिस पर पत्निका सहित श्रीरामजी लंका से अयोध्या गये थे।

पुष्पदन्त तद्० (पु०) शिव का अनुचर विशेष, यह अनुचर एक समय शिव और पार्वती की बातें सुनता था, इससे पार्वती बहुत क्रुद्ध हुईं। उनके शाप से मर्त्यलोक में कौशाम्बी नगरी में एक ब्राह्मण के यहाँ पुष्पदन्त उत्पन्न हुए थे। इस ब्राह्मण का नाम सोमदत्त था। सोमदत्त ने अपने पुत्र का नाम कात्यायन वररुचि रखा था।

(२) एक प्रधान गन्धर्व, ये पार्वती की सहचरी

क्या के स्वामी थे। इस पर किसी कारण शिव जी क्रुद्ध हुए थे, जिससे इनकी आकाश में चलने की शक्ति नष्ट हो गई, पुनः प्रार्थना करने पर शिवजी प्रसन्न हुए और गन्धर्व पुष्पदन्त की गई शक्ति फिर मिल गई। पुष्पदन्त के बनाये शिव स्तोत्र का नाम महिम्न स्तोत्र है।
(२) आठ दिग्गजों में का एक दिग्गज। उत्तर और पश्चिम दिशा के अधिपति वायु इस हाथी पर चढ़ कर उन दिशाओं की रक्षा करता है।
पुष्पाञ्जलि तत्० (स्त्री०) पुष्पपूर्ण अञ्जलि।
पुष्पित तत्० (वि०) विकसित, प्रफुल्ल।—ा (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।
पुष्पेषु (पु०) कामदेव।
पुष्पोद्यान (पु०) फुलवारी, बाग़।
पुष्य तत्० (पु०) एक नक्षत्र का नाम, आठवाँ नक्षत्र।
पुहप या पुहुप तद्० (पु०) पुष्प, कुसुम, प्रसून, गुल, फूल।
पुहमि तद्० (स्त्री०) पृथिवी, पृथ्वी, धरती, धरा।
पूआ दे० (पु०) पकवान विशेष, मीठी पूरी।
पूँगी दे० (स्त्री०) बाँसुरी, मुरली।
पूँछ दे० (स्त्री०) पुच्छ, लाङ्गूल।
पूँछताछ (स्त्री०) दर्याफ़्त।
पूँछना दे० (क्रि०) पोंछना, काढ़ना, साफ़ करना, प्रश्न करना, जिज्ञासा करना।
पूँछदार दे० (वि०) बड़ी पूँछवाला, कम्बूदार पूँछवाला।
पूँजी दे० (स्त्री०) मूल धन, सम्पत्ति।
पूग तद्० (पु०) वृन्द, समूह, राशी।
पूगना दे० (क्रि०) पहुँचना, पास आना, प्राप्त होना।
पूगीफल तत्० (पु०) सुपारी, कसैली, छालिया।
पूछ दे० (स्त्री०) आदर, सम्मान, अन्वेषण प्रश्न।
पूछना दे० (क्रि०) जिज्ञासा करना, अनुसन्धान करना, टोह लगाना, प्रश्न करना।
पूछी दे० (स्त्री०) मधुक्खियों की पूँछ।
पूजक तत्० (पु०) पुजारी, देवलक, अर्चक, मंदिरों में वेतन लेकर पूजा करने वाला।
पूजन तत्० (पु०) पूजा, अर्चा, आराधन।
पूजना दे० (क्रि०) अर्चित करना आराधन करना, ध्यान करना।
पूजनीय तत्० (वि०) पूजनार्ह, पूजन के योग्य, पूजन करने के उपयुक्त श्रेष्ठ, बड़ा, आदर के लायक।
पूजा तत्० (स्त्री०) अर्चा, आराधना आदर, सम्मान।
पूज्य तत्० (वि०) पूजनीय, पूजने योग्य।—मान (वि०) पूज्य, पूजनीय।
पूठ दे० (पु०) पुट्ठा, पशु के पृष्ठ की हड्डी।
पूठा दे० (पु०) पुट्ठा, गाता, जिल्द।
पूड़ा दे० (पु०) पकौड़ी, बड़ा।
पूड़ी दे० (स्त्री०) पूरी, गेहूँ के आटे की बनी वस्तु जो घी में सेंक कर तैयार की जाती है।
पूणी दे० (स्त्री०) रुई की पहल। [पवित्र।
पूत तद्० (पु०) पुत्र, सन्तान, बेटा अपत्य। तत्०
पूतना तत्० (स्त्री०) दानवी विशेष, इसी दानवी को कंस ने कृष्ण को मारने के लिए गोकुल भेजा था। यह माया से सुन्दर मूर्ति बना कर नन्द के घर गई और कृष्ण को गोदी में लेकर विषलिप्त स्तन उनको पिलाने लगी, श्रीकृष्ण स्तनपान करने लगे, परन्तु श्रीकृष्ण के स्तनपान करने से दानवी के स्तनों में भयङ्कर पीड़ा होने लगी। उसने अपना भयङ्कर रूप प्रकट किया और श्रीकृष्ण से अपना स्तन छुड़ाने लगी, परन्तु छुड़ा नहीं सकी वेदना बढ़ने लगी, दानवी भी घोर गर्जना करती हुई सदा के लिये सो गई। श्रीकृष्ण उसकी देह पर चढ़ कर खेलने लगे।
पूतनारी तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, पूतना का वध करने वाला।
पूतनासूदन तत्० (पु०) श्रीकृष्ण।
पूतरी दे० (स्त्री०) पुतली मूर्त्ति, आँख की तारा।
पूतली तद्० (स्त्री०) गुड़िया, पुत्तलिका, कपड़े का बना खिलौना।
पूतात्मा तत्० (पु०) [पूत+आत्मा] पवित्र स्वभाव शुद्ध देह, निष्पाप शरीर, कलङ्क रहित।
पूति तत्० (स्त्री०) [पू+क्ति] पवित्रता शुद्धि, दुर्गन्धता।—कर्णक (पु०) कर्ण रोग विशेष, कान का पकना।—गन्ध (पु०) दुर्गंध।
पूतीकृत तत्० (वि०) पवित्रित पवित्रीकृत, शोधित, शुद्ध किया हुआ, संचित, रक्षित।
पूदीना दे० (पु०) सुगन्धित घास विशेष।

पूनसलाई दे० (स्त्री०) शलाका विशेष, जिससे पूनी बनाई जाती है।
पूनियाँ दे० (स्त्री०) पूर्णिमा, पूर्णमासी, मास का अन्तिम दिन, जिस दिन महीना समाप्त होता है।
पूनी दे० (स्त्री०) रूई का गला।
पूनो दे० (स्त्री०) पूनियाँ, पूर्णिमा, पूर्णमासी।
पूप तद्० (पु०) पूआ, पिष्टक, पक्वान्न विशेष।
पूय तद्० (पु०) व्रण से निकला हुआ गाढ़ा सफ़ेद बिगड़ा हुआ खून, दुर्गन्ध रक्त, पीब।
पूर तद्० (पु०) जल समूह, जल प्रवाह, जल धारा, , खाद्य विशेष, गुझियों में भरी जाने वाली वस्तु।
पूरक तद्० (वि०) पूरणकर्त्ता, समापक, समाप्ति करने वाला, प्राणायाम विशेष। बाँईं नाक से श्वास खींचने का नाम पूरक है। गुणन करने का अङ्क, फल विशेष, बीज पूरक, बिजौरा नीबू।
पूरण तद्० (पु०) [पूर + अनट्] पिण्ड विशेष, पूर्ण करना, भरना, पूरा करना, भर देना।
पूरणीय तद्० (वि०) पूर्ण करने के उपयुक्त, पूरा करने के योग्य।
पूरना दे० (क्रि०) बिनना, बुनना, बनाना।
पूरब तद्० (पु०) पूर्व दिशा। [सम्पूर्ण।
पूरा दे० (स्त्री०) पूरण, पूर्ण, भरा पूरा, सब, समस्त,
पूराई दे० (स्त्री०) मोटाई, भराई, पूर्णता।
पूरिया दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष।
पूरा दे० (गु०) पूर्ण, भरा, सम्पन्न, शेष, भरपूर।
पूरी, पूड़ी दे० (स्त्री०) लुचई, सोहारी, पक्वान्न विशेष।
पूर्ण तद्० (गु०) भरा, पूरा, सम्पन्न, शेष।—कुम्भ (पु०) जल पूरित घट, मङ्गल घट पूर्ण कलस। —ज्या (स्त्री०) सं धारोदा, सीधी रेखा।—ता (स्त्री०) पूर्ति, पूरण, भरण।—पात्र (पु०) वस्तु पूर्ण पात्र, हवन के समय चावल आदि से भर कर दान किया जाने वाला पात्र। पात्र विशेष, जिसमें २५६ मुट्ठी चावल भर जाता है।—भूत (पु०) काल विशेष, पहले का समय, बीता समय। जो समय समाप्त हो गया हो, परन्तु उसे बीते बहुत दिन हो गये हों, वह पूर्णभूत कहा जाता है। —माँ या मासी (स्त्री०) पूर्णिमा, शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि, पूनो, पन्द्रह।

पूर्णा तद्० (स्त्री०) पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावास्या इनकी पूर्णा संज्ञा है।
पूर्णावतार तद्० (पु०) भगवान् का अवतार विशेष, भगवान् की षोडस कलाओं का प्रकाश, श्रीकृष्ण भगवान्।
पूर्णाहुति तद्० (स्त्री०) [पूर्ण + आहुति] हवन पूर्ण करने की आहुति, अन्तिम आहुति।
पूर्णिमा तद्० (स्त्री०) शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि, जिस दिन चन्द्रमा की कला पूर्ण होती है।
पूर्त तद्० (पु०) खातादि कर्म, परोपकारार्थ तालाब कूआँ आदि खुदवाना।
पूर्ति तद्० (स्त्री०) पूरण, भरण, पालन, पूर्णता, समाप्ति।
पूर्व तद्० (पु०) पूरब दिशा, प्राची दिशा। (वि०) पहले का, आदि का, आद्य, प्राथमिक।—गङ्गा (स्त्री०) नदी विशेष।—ज (पु०) ज्येष्ठ भ्राता, अग्रज, पुरखा।—दिन (पु०) गत दिवस गया कल का दिन।—देश (पु०) प्राची दिशा के देश, मगध देश।—पक्ष (पु०) शुक्ल पक्ष, शास्त्र का प्रश्न सिद्धान्त का विरुद्ध पक्ष।—पुरुष (पु०) पिता पितामह आदि।—याम (पु०) प्रथमप्रहर, पहला पहर।—वत् (अ०) पहले के समान। —वर्ती (गु०) आगे वाला, अग्रसर।—वायु (पु०) पूर्व का पवन, पुरवैया।—लिखित (वि०) पहले का लिखा हुआ।—राग (पु०) नायक और नायिका की अवस्था विशेष। दर्शन श्रवण जन्य परस्पर अनुराग।
" जो मपरमहिं देखे सुने, बाढ़े प्रेम समान। बिन मिलाप जे बिकलता, सो है पूरब राग ॥"
—रसराज।
पूर्वा तद्० (स्त्री०) पूर्व दिक्, प्राची दिक्, प्रथम। (वि०) पूर्वक, प्रथम काल, पूर्वयुग। (दे०) गाँव, पुरवा, टोला।—ऽभिमुख (पु०) पूर्व मुख, पूरब के सामने।—ऽभ्यास (पु०) पहले का अभ्यास, आगे की बात।—ऽवधि (वि०) पूर्व कालावधि, चिरकाल पर्यन्त।—ऽवस्था (स्त्री०) पहले की अवस्था प्रथम अवस्था।—ऽषाढ़ा (स्त्री०) सत्ताइस नक्षत्रों के अन्तर्गत बीसवाँ नक्षत्र।—ह

(पु०) दिन के भाग का पहला भाग, दिन का पहला याम।

पूर्वी दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष। [कहा हुआ।

पूर्वोक्त तत्० (वि०) [पूर्व+उक्त] प्रथम कथित, पहले

पूला दे० (पु०) घास की पूंटिया, घास की गड्डी।

पूष दे० (पु०) पौष मास, पूस, धनुर्मास।

पूषण तत्० (पु०) सूर्य, रवि, भानु।—ा (स्त्री०) •कार्तिकेय की अनुचरी, एक मातृका का नाम।

पूषा तत्० (स्त्री०) सूजन, चन्द्रकला विशेष, शरीरस्थ वायु विशेष, जो दक्षिण कान से निकलता है। (पु०) सूर्य, रवि, भास्कर।—त्मज (पु०) मेघ, बादल।

पूस (पु०) पौषमास।

पृक्त (पु०) धनाज, अन्न।

पृच्छक तत्० (पु०) प्रश्नकर्त्ता, जिज्ञासु, पूछने वाला।

पृच्छा तत्० (स्त्री०) जिज्ञासा, प्रश्न पूछना।

पृतना तत्० (स्त्री०) सैन्य, सेना, कटक, विशेष संख्यायुक्त सेना।

पृथक् तत्० (अ०) भिन्न, अन्य, विच्छेद, न्यारा, अलग, जुदा।—करण (पु०) अलग करना, भिन्न करना, विभक्त करना।—क्षेत्र (पु०) एक पुरुष से अनेक वर्णों की स्त्रियों से उत्पन्न पुत्र।

पृथगात्मता तत्० (स्त्री०) विवेक, वैराग्य।

पृथग्जन तत्० (पु०) साधारण मनुष्य, मूर्ख, नीच, पापी, प्राकृत। [विविध, बहुरूप।

पृथग्विध तत्० (अ०) नाना प्रकार, अनेक विध,

पृथवी तत्० (स्त्री०) मेदिनी, भूमि, धरती, धरा।

पृथा तत्० (स्त्री०) कुन्ती, पाण्डवों की माता।

पृथिवी तत्० (स्त्री०) भूमि, धरिणी।—पति (पु०) भूपति, राजा, यम, वराह, ऋषभ नामक ओषधि। —पाल (पु०) राजा, भूपति, भूमीश्वर। —पालक (पु०) राजा, भूपती, दण्डधर।

पृथी (स्त्री०) पृथ्वी।

पृथु तत्० (वि०) महत्, निपुण, विशाल।—राज (पु०) सूर्यवंशी पाँचवाँ राजा, आदि राजा। ये वेणु राजा के पुत्र थे। इन्होंने अपने बाहुबल से पृथिवी के समस्त राजाओं को जीत लिया था। इन्होंने पृथिवी को बराबर समतल कर दिया था, इस कारण इनका नाम पृथु पड़ा था। इनके राजसूय यज्ञ में बड़े बड़े महर्षियों ने इनका राज्याभिषेक किया था। इनके शासनकाल में बिना बोने ही भूमि में अन्न उत्पन्न होता था। महाराज पृथु ने अनेक यज्ञ किये थे और याचकों को अभिलषित द्रव्य प्रदान करके सन्तुष्ट किया था। इन्होंने अश्वमेध यज्ञ करने के समय पृथिवी की समस्त वस्तुओं की सोने की प्रतिमा बनवा कर ब्राह्मणों को दिया था। इन्होंने ६६ हजार सुवर्ण-पात्र और मणिरत्न भूषित सुवर्णमय पृथिवी बनवा कर ब्राह्मणों को दान दी थी। इनकी उत्पत्ति इस प्रकार है। अत्रिवंशी अङ्ग नामक प्रजापति ने धर्मराज की कन्या सुनिथा के गर्भ से वेणु नामक एक पुत्र उत्पन्न किया था। वेणु महादुराचारी और कुमार्गी राजा था। इसकी समझ में संसार में उससे अतिरिक्त और कोई पूजा के योग्य न था, अतएव उसने याग यज्ञ आदि करना बन्द करा दिया। वेणु के अत्याचार से प्रजा दुःखित होगयी, तब मरीचि आदि ऋषियों ने वेणु को चितावनी दी, परन्तु उसने इन बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया, तब महर्षियों का क्रोध और बढ़ गया, उन्होंने वेणु का निग्रह करना ठान लिया। सब महर्षियों ने मिलकर शाप देकर वेणु को मार डाला और सब महर्षि मिल कर वेणु के उरु को मथने लगे, मथने से एक काला मनुष्य उत्पन्न हुआ। जो निषाद जाति का आदि पुरुष है। पुनः ऋषियों ने वेणु का दहिना हाथ मथना प्रारम्भ किया, उससे पृथु की उत्पत्ति हुई।

पृथुक तत्० (पु०) [पृथु+क] चिवड़ा। (पु०), बालक, शिशु, कुमार।

पृथुरोमा तत्० (पु०) [पृथु+रोमन्] मछली, मत्स्य, मीन। (वि०) बृहल्लोमयुक्त, रोओंदार।

पृथुल तत्० (वि०) महत्, बड़ा, अति विस्तृत।

पृथुशिखा तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, त्यौना वृक्ष।

पृथूदक तत्० (पु०) [पृथु+उदक] तीर्थ विशेष।

पृथूदर तत्० (पु०) [पृथु+उदर] मेष, मेंढ़ा। (वि०) बृहत् उदर युक्त, बड़ा पेट वाला।

पृथ्वी तत्० (स्त्री०) भूमि, ज़मीन, पृथिवी, धरणी, धरित्री।—पति (पु०) राजा, नरपति।—पाल (पु०) राजा, भूपति।

पृथ्वीका तत्० (स्त्री०) बड़ी इलाइची, छोटी इलायची, कृष्ण जीरक, कलौंजी।

पृथ्वीराज तत्० (पु०) भारत का अन्तिम हिन्दू राजा। सन् ११९३ ई० में महम्मद ग़ोरी पृथ्वीराज को जीत कर और क़ैद कर ग़ज़नी ले गया। वहाँ ले जाकर उसने पृथ्वीराज की आँखें फोड़ डालीं। अन्त में चन्द कवि के कौशल से महाराज पृथ्वीराज ने महम्मद ग़ोरी का वध किया और स्वयं उन्होंने आत्महत्या कर ली। (देखो जयचन्द्र)

पृषत् तत्० (पु०) बिन्दु, कण, श्वेत बिन्दु युक्त मृग, राजा विशेष।

पृषत्क तत्० (पु०) बाण, शर।

पृषदश्व तत्० (पु०) [पृषत्+अश्व] वायु, पवन, बतास, राजा विशेष।

पृषोदर तत्० (पु०) [पृष+उदर] अल्पोदर, छोटे पेट वाला। (पु०) सर्प।

पृष्ठ तत्० (पु०) शरीर के पीछे का भाग, पीठ, पुस्तक का एक पन्ना, सफ़हा।—ग्रन्थि (पु०) कुब्ज, कूबड़।—ता (अ०) पश्चात्, पृष्ठ देश, पीठ की ओर।—पोषक (पु०) पीठ ठोंकने वाला, सहायक, मददगार।—वंश (पु०) पृष्ठास्थि, पीठ की हड्डी, मेरुदण्ड।—व्रण (पु०) पृष्ठ देश में स्फोटक विशेष, पीठ का फोड़ा, पिरकी।

पृष्ठास्थि तत्० (स्त्री०) [पृष्ठ+अस्थि] पीठ की हड्डी।

पेई दे० (स्त्री०) पिटारी, मञ्जूषा, पेटी।

पेंग दे० (स्त्री०) झूला का हिलना, पक्षी विशेष।

पेंठ दे० (स्त्री०) हाट, बज़ार, मण्डी।

पेंदा दे० (पु०) तला, पेंदी, नीचे का भाग, अधोभाग।

पेंदी (स्त्री०) पेंदा, गुदा, गाजर।

पेई (स्त्री०) पेटी, पिटारी।

पेखना दे० (क्रि०) प्रेक्षण, देखना, निरखना, दर्शन करना, स्वाँग बनाना, खेल करना, क्रीड़ा करना।

पेखनिया दे० (पु०) स्वाँग रचने वाला, बहुरूपिया, देखने वाला, दर्शक।

पेखवैया दे० (पु०) देखने वाला, देखवैया, प्रेक्षक।

पेखित दे० (वि०) प्रेषित, भेजा हुआ।

पेखिय दे० (क्रि०) देखिये, अवलोकीय।

पेच दे० (पु०) घुमाव, मरोर, कील विशेष, काँटा।

पेचक तत्० (पु०) उलूक, घुग्घू, खूसट।

पेचा दे० (पु०) उल्लू, किचबिचुआ।

पेट दे० (पु०) उदर, जठर।—आना (वा०) पेट चलना, दस्त आना, अधिक झाड़े फिरना, दस्त की बीमारी।—की दुख देना (वा०) भूखों मरना, पेट भर अन्न न खाना।—का पानी न हिलना (वा०) किसी बात को छिपाना, प्रकाश करने का समय आने पर भी प्रकाशित नहीं करना, हिलना डुलना नहीं, स्थिर रहना।—की आग (वा०) क्षुधा, भूख की पीड़ा, सन्तान का दुःख।—की आग बुझाना (वा०) खाना, भोजन करना।—की बातें (वा०) गुप्त बातें छिपी बातें।—गड़गड़ाना (वा०) पेट में दर्द होना, पेट की पीड़ा।—गिरना (वा०) गर्भपात होना, गर्भ का गिर जाना, गर्भ नष्ट होना।—जलना (वा०) भूखा रहना, क्षुधित होना।—दिखाना (वा०) अपनी अवस्था जनाना, दरिद्रता प्रकाशित करना।—पालना (वा०) किसी प्रकार निर्वाह करना, स्वार्थ साधना, दुःख से दिन बिताना।—पीठ एक होना (वा०) दुर्बल होना, निर्बल होना।—पोछना (वा०) सब से छोटा लड़का, अन्तिम गर्भ की सन्तान।—पोसू (वा०) पेटार्थू, पेटू, खाऊ, पेट पालने वाला।—फूलना (वा०) बहुत हँसना, हँसते हँसते पेट में बल पड़ जाना।—बढ़ाना (वा०) लोभ करना, दूसरे का धन पचाना।—बाँधना (वा०) कम खाना।—भर (वा०) जी भर, इच्छा भर।—भरना (वा०) अघाना, तृप्त होना, तुष्ट करना, तृप्त करना, सुख देना।—मारना (वा०) आत्मघात करना, स्वयं मार कर मर जाना, आत्महत्या करना।—में पैठना (वा०) अन्तरङ्ग बनना, अत्यन्त मित्र बनना, भेद लेना, भीतर की बातें जानना।—में लेना (वा०) सहना, झेलना।—रहना (वा०) गर्भ रहना, गर्भवती होना।—लग जाना (वा०) भूखों मरना, भूखों रहना, पेट भर अन्न न मिलना।

—लग रहना (बा०) भूखित होना, भूखे रहना। —से होना (बा०) गर्भिणी होना, पेट रहना, गर्भ रहना।—हहड़दाना (बा०) पेट की बीमारी होना।

पेटा दे० (पु०) टोकरा, पिटारी, पिटारा, पेठा।

पेटारा दे० (पु०) पिटारा टोकरी।

पेटार्थी, पेटार्थू दे० (वि०) खाऊ, पेटू।

पेटिया दे० (पु०) प्रति दिन का भोजन, सीधा, एक सन्ध्या खाने के योग्य सीधा।

पेटी दे० (स्त्री०) कमरबन्द, कमरकस, पेट का बन्धन, पिटारी, सन्दूक, छोटा पिटारा।

पेटू दे० (वि०) पेटार्थी, उदर पोषू।

पेटौखा दे० (पु०) रोग विशेष, अतिसार, आँव गिरना, दिकदिकाना, व्याकुलता, उद्वेग, उद्विग्नता।

पेठा दे० (पु०) कोंहड़ा, कूष्माण्ड।

पेड़ दे० (पु०) वृक्ष रूख, तरु, द्रुम, दरख़्त।

पेड़ा दे० (पु०) मिठाई विशेष, एक मिठाई का नाम।

पेड़ी दे० (स्त्री०) छोटा पेड़ा, सुपारी, नील आदि की कटी हुई डाँठी, पान की एक जाति।

पेड़ू दे० (पु०) नाभी के नीचे का भाग।

पेम तद्० (पु०) प्रेम, स्नेह, प्रीति।

पेमी तद्० (वि०) प्रेमी, प्रीतिपात्र, प्रिय।

पेय तद्० (वि०) पान योग्य, पान करने के उपयुक्त।

पेरु दे० (पु०) पक्षी विशेष, विलायती मुर्गा।

पेलना दे० (क्रि०) ठेलना, ठूसना, हँसना, घुसेड़ना, तेल निकालना, त्यागना।

पेलहहिं दे० (क्रि०) रामायण में इस शब्द का प्रयोग, त्याग करेंगे टाल देंगे, छोड़ देंगे, हटा देंगे, मिटा देंगे, न मानेंगे, तिरस्कार करेंगे—अर्थ में हुआ है।

पेवड़ी दे० (स्त्री०) पीला रङ्ग, पिअर।

पेवसी दे० (स्त्री०) पीयूष, अमृत, सुधा, खाद्य विशेष, जो फटे दूध से बनता है, हाल की ब्यायी गौ का पहला दूध, पेवस।

पेशागी दे० (वि०) अग्रिम, अगाऊ।

पेशाब दे० (पु०) मूत्र, मूत, प्रस्राव।

पेशी तद्० (स्त्री०) वज्र, मांसपेशी सुपक्वकलिका, नदी विशेष, पिशाची विशेष, राक्षसी विशेष असि कोष, म्यान।

पेषक तद्० (पु०) मर्दनकारी, पीसने वाला।

पेषण तद्० (पु०) [पिष्+अनट्] मर्दन, पीसना, चूर्ण करना, कूटना।

पेषणी तद्० (स्त्री०) पेषण यन्त्र, शिलवट, सिल।

पेषणीय तद्० (वि०) पेषण योग्य, पीसने योग्य।

पेखन दे० (पु०) निरीक्षण, प्रेक्षण, तमाशा।

पै दे० (अ०) पर, ऊपर, परन्तु, निश्चय अवश्य, (पु०) दोष, रोग, दूध, पानी।

पैकड़ा दे० (पु०) बेड़ी साँकर, रिकाब।

पैकड़ी दे० (स्त्री०) बेड़ी, पैर की ज़ञ्जीर, पैर बाँधने की साँकल।

पैकार दे० (पु०) फेरी वाला, ब्योपारी।

पैकी दे० (स्त्री०) हुक्के का भाड़ा दिवैया, एक खेल।

पैखाना (पु०) मल, विष्ठा, मल त्यागने का स्थान।

पैगंबर (पु०) दूत, नबी, ईश्वर का दूत।

पैगाम (पु०) सन्देशा।

पैगू दे० (पु०) ब्रह्मदेश का प्रान्त विशेष।

पैचना दे० (क्रि०) पछोरना, फटकना, बनाना।

पैचा दे० (पु०) उधार, बदला, पलटा।

पैज दे० (पु०) प्रण, प्रतिज्ञा होड़।

पैजनी दे० (स्त्री०) भूषण विशेष पैर का गहना, एक आभूषण जिसे लड़के पहनते हैं, और जो कबूतरों के पैरों में डाली जाती है, झाँझ।

पैड़ दे० (स्त्री०) फाल, डेग, चलने के समय दोनों पैर के बीच की भूमि। [भोजन।

पैड़ा दे० (पु०) मार्ग बाँट गैल, रास्ते में खाने का

पैताना दे० (क्रि०) पैर की ओर, पदतल, पायतन।

पैंतालीस दे० (वि०) संख्या विशेष, चालीस और पाँच, ४५, पाँच अधिक चालीस।

पैंती दे० (स्त्री०) पवित्री, कुश के छल्ले।

पैंतीस दे० (वि०) संख्या विशेष, तीस और पाँच, ३५।

पैंसठ दे० (वि०) संख्या विशेष साठ और पाँच, ६५।

पैठ दे० (स्त्री०) हुण्डी का खोना पहुँच, हुण्डी की प्रतिलिपि, हुण्डी के खोने पर जो लिखी जाती है। पहुँच, प्रवेश। [जाना।

पैठना दे० (क्रि०) प्रवेश करना, घुसना, भीतर

पैठार दे० (पु०) देखो पैठार। [कराना।

पैठाजना दे० (क्रि०) प्रवेश कराना, घुसाना, पैठार

पैड़ दे० (पु०) पदाङ्क, पदचिन्ह, पैरों का चिन्ह।
पैड़ा दे० (पु०) ऊँची खड़ाऊँ, जो बरसात के दिनों में काम में लाई जाती हैं।
पैड़ी दे० (स्त्री०) सीढ़ी, सोपान, निसेनी।
पैतरा दे० (पु०) चलने की रीति, गति विशेष, कुश्ती या लकड़ी खेलने के समय की चाल।
पैतला दे० (वि०) उथला, छिछला, उथान।
पैतृक तद्० (वि०) पितृधन, पिता का धन, बपौती, मौरूसी।
पैदल दे० (पु०) पैरों से चलने वाला, पदाति, सिपाही।
पैदा (पु०) उत्पन्न, प्रकट।
पैन दे० (पु०) छोटी नहर, नाली, खेतों में पानी ले जाने के लिए छोटी नहर।
पैना दे० (वि०) तीक्ष्ण, तेज़। (पु०) अङ्कुश, आँकुश।
पैनाना दे० (क्रि०) तीक्ष्ण कराना, तेज़ कराना, धार दिलवाना।
पैनाला दे० (पु०) पनारा, मोरी।
पैया दे० (पु०) पहिया, चक्र, निस्सार, धान्य।
पैयान तद्० (पु०) प्रस्थान, प्रस्थित, विदा, यात्रा।
पैर दे० (पु०) पाँव, पद, चरण।
पैरना दे० (क्रि०) तैरना, तैरने की रीति।
पैरवी (स्त्री०) विनती, खुशामद, प्रयत्न, उद्योग।
पैराई दे० (स्त्री०) तैरना, तैरने की रीति।
पैराक दे० (स्त्री०) पैरने वाला, अच्छी तरह पैरना जानने वाला। [डुबाव जल जहाँ हो।
पैराव दे० (पु०) पैरने के योग्य जल, अधिक जल,
पैरी दे० (स्त्री०) पाँव का एक प्रकार का गहना।
पैला दे० (पु०) काठ का पात्र विशेष, जिससे अन्न आदि मापा जाता है, मापपात्र।
पैबन्द (पु०) जोड़, पैवंदा।
पैशाच तद्० (पु०) आठ प्रकार के विवाह के अन्तर्गत एक विवाह। (वि०) पिशाच सम्बन्धी पिशाच का।
पैशुन्य तद्० (पु०) पिशुनता, खलता, परनिन्दा, अन्य का अहित चिन्तन।
पैसा दे० (पु०) ताँबे का सिक्का, टेकुआ, धन, द्रव्य, रोकड़, रुपया।—उड़ाना (वा०) बहुत खर्च करना, अधिक व्यय करना, चुराना, ठगना। —खाना (वा०) विश्वासघात करके खा लेना। —डुबोना (वा०) धन गँवाना, धन बरबाद करना, घटी उठाना।—डूबना, (वा०) धन का मारा जाना, धन का नाश होना, घाटा होना।
पैसार दे० (पु०) पैठार, प्रवेश। [करना।
पैसे लगाना दे० (वा०) धन लगाना, धन खर्च
पैसेवाला दे० (वि०) धनवान, धनी।
पैसों से दरबार बाँधना दे० (वा०) घूँस देकर मनमाना काम करना, घूँस देना।
पैहै दे० (क्रि०) पावेगा, प्राप्त करेगा। [छोटा लड़का।
पोआ दे० (पु०) साँप का बच्चा, दूध पीने वाला बच्चा,
पोआना दे० (क्रि०) जमाना, तपाना, रोटी बेल करके देना।
पोंइस दे० (अ०) अलग हो, दूर, यह शब्द नीच जातियों को सावधान करने के लिये—जिससे वे छुएँ नहीं बोला जाता है। अथवा वे ही बोलते जाते हैं जिससे लोग हट जायँ।
पोंकना दे० (क्रि०) भय भय में पतले दस्त होना।
पोंका दे० (पु०) कीट, कृमि।
पोंगा दे० (पु०) मूर्ख, भोला। (गु०) छूँछा, शून्य।
पोंगी दे० (स्त्री०) नली, पुँगी, खोखली, मूर्खा स्त्री।
पोंछन दे० (पु०) झाड़न, साफ़ करना।
पोंछना दे० (क्रि०) झाड़ना, साफ़ करना, स्वच्छ करना, पोंछ कर साफ़ करना।
पोंटा दे० (पु०) नासिका मल, नेटा, चिनक।
पोखर दे० (पु०) तालाब, सरोवर, तड़ाग।
पोच दे० (पु०) बुरे, नष्ट, नीच, मंद, अधम, अज्ञानी, अशुचि, दुःखित।
पोटला दे० (पु०) बड़ी गठरी, गट्ठर, गट्ठा।
पोटली दे० (स्त्री०) गठरी, शक्कर विशेष।
पोटा दे० (पु०) गेंदा, पलक, पक्षी का ओझ, पचौनी, ओझ, लड़का। [उत्साही।
पोढ़ा दे० (वि०) पुष्ट, बलवान्, पोढ़, साहसी,
पोढ़ाई दे० (स्त्री०) कड़ाई, पुष्टता, बलवत्ता, साहस।
पोत तद्० (पु०) शिशु, शावक, वत्स, बच्चा, तरणी, नौका, समुद्रयान, जहाज़, दस वर्ष का हाथी। दे० मालगुज़ारी, देन, ख़िरात।

पोतक तद्० (पु०) बालक, बच्चा, नवप्रसूता बच्चा।
पोतड़ा दे० (पु०) बच्चे का बिछौना।
पोतड़ी दे० (स्त्री०) छोरी, किल्ली, दस।
पोतना दे० (क्रि०) लीपना, मिट्टी या चूने से बोथाक पोतना। (पु०) पोतने का वस्त्र या कूँची, जिससे पोतते हैं, पोता। [पुतना, शब्दकोश।
पोता दे० (पु०) पौत्र, पुत्र का पुत्र, पुत्र का लड़का,
पोती दे० (स्त्री०) पुत्र की कन्या, पौत्री, बेटे की कन्या।
पोथा दे० (पु०) बड़ी पोथी, ग्रन्थ।
पोथी दे० (स्त्री०) ग्रन्थ, पुस्तक।
पोदना दे० (पु०) पक्षी विशेष।
पोना दे० (क्रि०) गूँथना, गाँथना, गूहना, पिरोना।
पोपनी दे० (स्त्री०) बाजा विशेष, एक बाजे का नाम।
पोपला दे० (वि०) दन्त रहित, बिना दाँतों का।
पोमचा दे० (पु०) रंगीन वस्त्र, एक प्रकार का रंगा हुआ कपड़ा।
पोय दे० (स्त्री०) लता विशेष, जो बरसात में उत्पन्न होती है, शाक विशेष।—ई (स्त्री०) लता विशेष, जिसकी भाजी बनायी जाती है।
पोर दे० (पु०) गाँठ, ग्रन्थि, बाँस की गाँठ, दो गाँठों के बीच का भाग।
पोरा दे० (पु०) पोर।
पोरी दे (स्त्री०) छोटी गाँठ।
पोला दे० (वि०) छूँछा, शून्य, रीता, रिक्त, खाली, नरम, कोमल।
पोली दे० (स्त्री०) अनारी, अनाड़ी, मूर्ख, अज्ञानी।
पोशाक (स्त्री०) पहिनने के कपड़े, परिच्छद।
पोशीदा (वि०) गुप्त, छिपा हुआ।
पोष (पु०) पालन, परवरिश।
पोषक तद्० (पु०) [पुष्+णक्] पालक, पालनकर्त्ता, भरणकारी, सहायता देने वाला।
पोषण तद्० (पु०) [पुष्+अनट्] प्रतिपालन, रक्षण,
पोषणीय तद्० (वि०) पोष्य, पोसने योग्य, पोषण करने के उपयुक्त।
पोषयित्नु तद्० (पु०) कोकिल, भर्त्ता, पति, स्वामी।
पोष्टा तद्० (पु०) पोषक, पालयिता, पालन करने वाला।
पोष्य तद्० (वि०) पाल्य, पोषणीय, पालन करने योग्य।—पुत्र (पु०) दत्तक पुत्र, पालन पोषण के द्वारा बनाया हुआ पुत्र —वर्ग (पु०) अवश्य पालनीय, वृद्ध पिता माता आदि, परिजन वर्ग।
पोसना दे० (क्रि०) पालन पोषण करना, रक्षा करना।
पोस्ता दे० (पु०) अफ़ीम का वृक्ष, दाने का पेड़।
पोह दे० (पु०) प्रातःकाल, भोर, तड़का, विहान, सबेरा।
पोहना दे० (क्रि०) रोटी बनाना। [करने वाला।
पोहारी तद्० (वि०) पयहारी, केवल दूध का आहार
पोहियहि दे० (क्रि०) पिरोइये, गूँथिये, पोहना चाहिये।
पौ दे० (स्त्री०) जल सत्र, चौपड़ के पासे का एक्का।
पौगण्ड तद्० (पु०) अवस्था विशेष, पाँच वर्ष से सोलह वर्ष की अवस्था तक।
पौचा (पु०) साढ़े पाँच का पहाड़ा।
पौंड़ा दे० (पु०) ईख विशेष, ऊख, पौंढ़ा।
पौढ़ना दे० (क्रि०) सोना, शयन करना, लेटना।
पौढ़ाए दे० (क्रि०) सुलाए, शयन कराए।
पौण्डरीक दे० (वि०) पुण्डरीक सम्बन्धी, कमल का।
पौण्ड्र तद्० (पु०) देश विशेष, वङ्गदेश देश, भीमसेन के शङ्ख का नाम, ईख विशेष, पौंड़ा, ऊख।
पौंड्रक तद्० (पु०) जाति विशेष, ईख विशेष, पुण्ड्र देश का एक राजा पौण्ड्रक वासुदेव नाम से इनकी प्रसिद्धि है। जरासन्ध के ये बड़े मित्र थे। इनके पिता का नाम वसुदेव था। वसुदेव की दो स्त्रियाँ थीं, सुतनु और नाराची, सुतनु के गर्भ से पौंड्रक और नाराची के गर्भ से कपिल उत्पन्न हुए थे, कपिल संसारत्यागी होकर वैरागी हो गये। अपना नाम वासुदेव रख कर पौंड्रक राज्य करते थे। वासुदेव श्रीकृष्ण द्वारिका ही से इनकी बिड़ाई सुना करते थे। श्रीकृष्ण का वासुदेव कहा जाना पौण्ड्रक से सहा नहीं जाता था। पौण्ड्रक कहा करता था मैं शङ्ख चक्र गदाधारी हूँ, मेरे जैसी समता किस में है, इसी प्रकार वह अपनी

बदपटका प्रकाशित किया करता था। वह और भी कहता था कि वासुदेव इस नाम को श्याल के धोखे में ले लिया है। श्रीकृष्ण को सुधारने के लिये उसने द्वारिका पर आक्रमण किया था। अनेक यादव उसकी सेना के द्वारा मारे गये। अन्त में श्रीकृष्ण और पौण्ड्रक के साथ युद्ध हुआ, अब पौण्ड्रक को असली वासुदेव का पता लग गया, इसी युद्ध में वह मारा गया।
पौत्तलिक तद्० (पु०) मूर्तिपूजक।
पौत्र तद्० (पु०) पोता, पुत्र का पुत्र।
पौत्री तद्० (स्त्री०) पोती, पुत्र की कन्या।
पौधा दे० (पु०) वृक्ष का अंकुर, छोटा वृक्ष।
पौन दे० (स्त्री०) तीन चौथाई, चार भाग का तीन हिस्सा।
पौना दे० (पु०) करना, लोहे का एक बर्तन जिससे सेव तथा पकौड़ी आदि छानी जाती हैं। हाथ से रोटी बनाना।
पौने दे० (गु०) एक चौथाई कम। [फाटक।
पौर तद्० (गु०) नगर सम्बन्धी, द्वार, किवाड़,
पौरक (पु०) घर के बाहर का बाग।
पौरव तद्० (पु०) पुरु वंशभव राजा विशेष, दुष्यन्त।
पौरस्त्य तद्० (वि०) प्रथम, आद्य, पूर्व का, पूर्वीय, पूर्व दिशा सम्बन्धी। [मतावलम्बी।
पौराणिक तद्० (पु०) पुराण शास्त्रवेत्ता, पुराण
पौरिया दे० (पु०) द्वारपाल, द्वारपालक, डेवढ़ीदार, दरबान।
पौरी दे० (स्त्री०) पैार, डेवढ़ी, द्वार।
पौरुष तद्० (पु०) पुरुषत्व, पुरुष का कर्म, पुरुष की शक्ति, पुरुषार्थ, बल, हिम्मत, साहस, ताक़त।
पौरुषेय तद्० (वि०) पुरुष निर्मित, पुरुष का बनाया हुआ।
पौरुष्य (पु०) साहस, पुरुषत्व।
पौरुहूत (पु०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र।
पौरू (स्त्री०) एक प्रकार की मिट्टी या ज़मीन।
पौरेय (पु०) नगर के समीप का स्थान, देश, ग्राम आदि। [दारोगा।
पौरोगव (पु०) पाकशालाध्यक्ष, बावर्ची खाने का
पौरोहित्य तद्० (पु०) पुरोहित का कर्म।
पौर्णमास (पु०) एक याग या इष्टिका जो पूर्णमासी को किया जाता है। [वन की अधिष्ठात्री देवी।
पौर्णमासी तद्० (स्त्री०) पूर्णिमा, पूर्णमासी, वृन्दा
पौर्वाह्णिक तद्० (वि०) पूर्वाह्ण की क्रिया, पूर्वाह्ण सम्बन्धी। [विभीषण।
पौलस्त्य तद्० (पु०) कुबेर, रावण, कुम्भकर्ण,
पौलिया दे० (स्त्री०) पैारिया, छोटी खड़ाऊँ।
पौली दे० (स्त्री०) पैारी, खड़ाऊँ।
पौलोमी तद्० (स्त्री०) पुलोमजा, पुलोम नामक दानव की कन्या, इन्द्राणी, शची।
पौवा दे० (पु०) चौथा भाग, पाव भर।
पौष तद्० (पु०) पूस, चैत्रादि द्वादश महीने के अन्तर्गत दशम मास, धनुर्मास।
पौष्टिक तद्० (पु०) पुष्टि वर्द्धक, पुष्टई, पुष्टिकर पोषक। ऐसी दवाई जिससे शरीर पुष्ट हो।
पौसरा या पौसला दे० (पु०) पौ, प्याऊ, प्रपा, पानी पिलाने का स्थान, पैाशाला।
पौह दे० (पु०) जलशाला, जलसत्र।
प्याऊ (पु०) देखो " पौसला "।
प्याना दे० (क्रि०) पिलाना, पान कराना।
प्यार दे० (पु०) प्रेम, प्रीति, स्नेह।
प्यारा दे० (वि०) प्रेमी, प्रिय, स्नेही, प्रियतम।—जानना (वि०) आदर करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ जानना।
प्यारी दे० (स्त्री०) प्रिया, पियारी, प्रियतमा।
प्याला दे० (पु०) कटोरा।
प्यावना दे० (क्रि०) प्याना, पिलाना, पान कराना।
प्याऊ दे० (स्त्री०) प्रपा, पानी शाला, जहाँ धर्मार्थ पानी पिलाया जाय।
प्यास दे० (स्त्री०) तृषा, पिपासा, तृष्णा।—बुझाना (वा०) पानी पीना, प्यास दूर करने के लिये थैला हूँ पानी पी लेना, मनोरथ पूर्ण करना।—मारना दे० (वा०) अधिक प्यास लगना, पिपासित होना।—लगना (वि०) पिपासा लगना, तृषा मालूम होना।
प्यासा तद्० (वि०) पिपासित, तृष्णावन्त, तृष्णान्वित।
प्र तद्० (उपसर्ग) आरम्भ, उत्कर्ष, सर्वतोभाव, प्राधान्य, आद्य, ख्याति, उत्पत्ति, व्यवहार।

प्रकट तत्० (पु०) [प्र + प्रट + अल] स्पष्ट, प्रकटित, प्रकाशित, व्यक्त ।

प्रकटन तत्० (पु०) [प्र + कट् + अनट्] प्रकाशन, व्यक्तीकरण, प्रकाश करना, व्यक्त करना ।

प्रकटित तत्० (वि०) प्रकाशित, व्यक्त, स्पष्ट ।

प्रकम्प तत्० (पु०) कँपन, कँपकँपाहट, थरथरी ।

प्रकम्पन तत्० (पु०) वायु, नरक विशेष ।

प्रकर तत्० (पु०) फैले हुए कुसुम आदि, समूह, दल, गिरोह ।

प्रकरण तत्० (पु०) [प्र + कृ + अनट्] प्रस्ताव, अभिनय करने की रीति, रूपक भेद, ग्रन्थ सन्धि, ग्रन्थ विच्छेद, निरूपणीय एक विषय की समाप्ति एकार्थवाचक सूत्रों का समूह, प्रसङ्ग, काण्ड, अध्याय ।

प्रकरी तत्० (स्त्री०) नाट्याङ्ग, चत्वर भूमि, नाटक खेलने की वेदी ।

प्रकर्ष [उत्कर्ष, श्रेष्ठता, प्रशस्त ।

प्रकर्ष तत्० (पु०) [प्र + कृष् + घञ्] उत्तमता,

प्रकाण्ड तत्० (वि०) बृहत्, अतिशय, विशाल । (पु०) वृक्ष स्कन्ध, वृक्ष का वह स्थान जहाँ से शाखा निकलती है ।

प्रकाम तत्० (पु०) [प्र + काम् + घञ्] यथेप्सित, यथेष्ट, इच्छापूर्वक, इच्छापूर्ति, मनमाना, मन भर, खूब । [भाँति, तरह, क्रम, युक्ति ।

प्रकार तत्० (पु०) [प्र + कृ + घञ्] ढङ्ग, रीति

प्रकारान्तर तत्० (वि०) [प्रकार + अनन्तर] अन्य विध, अन्य प्रकार, दूसरी रीति ।

प्रकाश तत्० (पु०) [प्र + काश् + अल्] व्यक्त, विकाश, उदय, दीप्ति, प्रकट, स्पष्ट, प्रसिद्ध, ख्याति, उजेला, ज्योति, रोशनी, धूप, तेज, चमक, फैलाव, दीप्तिमान ।

प्रकाशक तत्० (पु०) प्रकाशकर्त्ता, दीप्तिकारक, प्रकाश करने वाला, उजाला करने वाला ।

प्रकाशन तत्० (पु०) [प्र + काश् + अनट्] प्रचार करण, व्यक्तकरण, फैलाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, प्रकाश करना ।

प्रकाशित तत्० (वि०) [प्र + काश् + क्त] प्रकाश विशिष्ट, आविष्कृत, प्रकटित, उदित, व्यक्तीभूत, प्रसिद्ध, उदित ।

प्रकाशी (पु०) चमकता हुआ ।

प्रकाश्य तत्० (वि०) प्रकाशनीय, प्रकटनीय, प्रकाश करने योग्य, प्रकाश करने के उपयुक्त ।

प्रकास (पु०) प्रकाश का अपभ्रंश ।

प्रकीर्ण तत्० (वि०) [प्र + कृ + क्त] विक्षिप्त, विस्तृत, अनेक प्रकार से मिश्रित । (वि०) ग्रन्थविच्छेद, अध्याय, काण्ड, चामर ।—क (पु०) चँवर, अध्याय, प्रकरण, विस्तार, फुटकर, जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तुओं की मिलावट हो ।—केशी (स्त्री०) दुर्गा । [वर्णन, कथन ।

प्रकीर्तन तत्० (पु०) [प्र० + कृत् + अनट्] प्रस्तावन,

प्रकीर्तित तत् (वि०) कथित, भाषित, उक्त, व्याहृत, वर्णित, निरूपित । [युक्त, क्रुद्ध ।

प्रकुपित तत्० (वि०) कोपान्वित, क्रोधित, क्रोध-

प्रकृत तत्० (वि०) उद्यमता से किया हुआ, यथार्थ, सत्य, वास्तविक ।

प्रकृतार्थ तत् (वि०) [प्रकृत + अर्थ] उचित अर्थ, उचित व्यवहार, यथार्थ, उपयुक्त ।

प्रकृति तत्० (स्त्री०) [प्र + कृ + क्ति] स्वभाव, धर्म, गुण, माया, ईश्वर की शक्ति, चरित्र, योनि, उत्पत्ति स्थान, उद्भव, क्षेत्र, चिन्ह, जन्म, अङ्ग, स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोष, राष्ट्र, राज्य, दुर्ग, क़िला, पुरवासी, समूह, शक्ति, परमात्मा, पञ्चभूत, इकीस अक्षर के पाद वाला छन्द विशेष, माता, धातु, प्रत्यय के पहले का भाग, सत्व, रज और तम इन त्रिगुणों की साम्यावस्था, प्रधान, माया, शक्ति, चैतन्य, भगवान् की माया नाम की शक्ति ।—सिद्ध (वि०) स्वभाव जात, स्वभाव सिद्ध, स्वाभाविक ।

प्रकृष्ट तत्० (पु०) [प्र + कृष् + क्त] उत्तम, श्रेष्ठ, प्रशस्त, मुख्य, उत्कृष्ट, प्रधान, भला ।—ता (स्त्री०) श्रेष्ठता, उत्तमता ।

प्रकोट (पु०) परिखा, परिकोटा, धुरस, शहरपनाह ।

प्रकोप (पु०) अत्यन्त अधिक कोप, चपलता, किसी रोग की प्रबलता ।

प्रकोष्ठ तत्० (पु०) कोठे के नीचे का घर, हाथ का पहुँचा, कलाई से केहुनी तक, कलाई और केहुनी के बीच का भाग ।

प्रकोष्णा (स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।

प्रक्रम तद्० (पु०) क्रम, अवसर, उद्योग, आरम्भ, अनुष्ठान। [आरम्भ करना, आगे बढ़ना।

प्रक्रमण (पु०) भली भाँति घूमना, पार करना,

प्रक्रान्त तद्० (गु०) [प्र+क्रम+क्त] आरब्ध, शुरू किया हुआ, आरम्भ किया हुआ, अनुचित।

प्रक्रिया तद्० (स्त्री०) राजाओं का चामर व्यजन और छत्र धारणादि व्यापार, देवचेष्टा, दैवकर्म, रीति, प्रकार, विधि।

प्रक्लिन्न तद्० (वि०) तृप्त, सन्तुष्ट, पसीना से लदफद।

प्रक्लेद (पु०) नमी, तरी।

प्रक्षय (पु०) क्षय, नाश, बरबादी।

प्रक्षाल (पु०) प्रायश्चित। [शुद्ध करना।

प्रक्षालन तद्० (पु०) पखारना, धोना, साफ़ करना,

प्रक्षिप्त (पु०) फेंका हुआ, पीछे से मिलाया हुआ।

प्रक्षेप तद्० (पु०) फेंकना, त्यागना, त्याग करना, छोड़ना।

प्रखर तद्० (पु०) तीखा, तीक्ष्ण, निशित। (वि०) घोड़े की जीन, चारजामा।—ता (स्त्री०) तेज़ी, उग्रता।

प्रखरांशु तद्० (वि०) तीक्ष्ण किरण, तीव्र किरण।

प्रख्यात तद्० (वि०) प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी, कीर्तिमान।

प्रख्याति तद्० (स्त्री०) प्रसिद्धि, सुयश, नामवरी।

प्रगट तद्० (वि०) स्पष्ट, खुला हुआ, प्रकट, व्यक्त, प्रसिद्ध, प्रत्यक्ष, ज़ाहिर, विदित।

प्रगटना दे० (क्रि०) व्यक्त होना, प्रसिद्ध होना, ज़ाहिर होना, विदित होना।

प्रगल्भ तद्० (वि०) प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभान्वित, दाम्भिक, व्यापक, धृष्ट, ढीठ, दम्भ युक्त, उपस्थित बुद्धि वाला, शास्त्र विजयी।—ता (स्त्री०) प्रागल्भ्य, दाम्भिकता, ढिठाई।—ा (स्त्री०) प्रौढ़ा। —वचना (स्त्री०) नायिक विशेष, बात चीत करते ही करते अपना दुःख क्रोध और उलहना प्रकट करे। [बहुत, कृच्छ्र, कष्ट।

प्रगाढ़ तद्० (वि०) दृढ़, कठोर, अधिक, अतिशय,

प्रगुण तद्० (वि०) सरल, ऋजु, उदार। (पु०) उत्तम स्वभाव।

प्रगृहीत (वि०) भली भाँति ग्रहण किया हुआ, जिसका उच्चारण सन्धि के नियमों पर ध्यान रखे बिना किया गया हो।

प्रगृह्य (वि०) ग्रहण करने योग्य, सन्धि के नियमों का ध्यान रखे बिना उच्चारण करने योग्य।

प्रग्रह तद्० (पु०) तुला सूत्र, तुलारज्जू, तराजू की डोरी, पशु बाँधने की डोरी, लगाम, पगहा, बन्दी, स्तुतिपाठक।

प्रग्राह तद्० (पु०) बाँधने की डोरी, रस्सी।

प्रघटक (पु०) सिद्धान्त।

प्रघटी दे० (स्त्री०) कुल्हिया, सोना आदि धातुओं के गलाने का पात्र, घरिया, प्रगट हुई। [दालान।

प्रघाण तद्० (पु०) द्वार के बाहर का बरामदा या

प्रघस (पु०) रावण के एक सेनानायक राक्षस का नाम, दैत्य, राक्षसी। (वि०) भक्षक, खानेवाला।

प्रचण्ड तद्० (वि०) अत्युग्र, तीव्र, तीक्ष्ण, असह्य, भयानक।—मूर्ति (स्त्री०) प्रताप युक्त शरीर, भयानक आकार।—ता (स्त्री०)—त्व (पु०) तेज़ी, तीखापन, प्रबलता, उग्रता, भयङ्करता।—ा (स्त्री०) सफ़ेद फूल वाली सफ़ेद दूब, दुर्गा, चण्डी, दुर्गा की एक सखी। [फैलाव, विस्तृत।

प्रचलन तद्० (पु०) प्रचार, प्रसार, प्रसिद्ध, व्यापकता,

प्रचलित तद्० (वि०) प्रसिद्ध, व्यापक, सर्वत्र गृहीत, सर्वत्र व्यवहृत, जिसका व्यवहार सब स्थानों में होता हो। [प्रचलन, विस्तार, व्यापकता।

प्रचार तद्० (पु०) [प्र+चर्+घञ्] प्रकाश, व्यक्त,

प्रचारक तद्० (वि०) प्रकाशक, व्यक्तकारक, प्रसिद्ध-कर्त्ता, फैलाने वाला। [स्पष्टकरण, चलाना।

प्रचारण तद्० (पु०) व्यक्त, करण, प्रकाश करण,

प्रचारना दे० (क्रि०) प्रसिद्ध करना, फैलाना, चलाना।

प्रचारित तद्० (वि०) फैलाया हुआ, चलाया हुआ, प्रसिद्ध किया हुआ, चलन में आया हुआ।

प्रचुर तद्० (वि०) अधिक बहुत, यथेष्ट।—ता (स्त्री०) बाहुल्य, आधिक्य, अधिकता, अधिकाई। —त्व (पु०) यथेष्टता, आधिक्य।—पुरुष (पु०) चोर, तस्कर।

प्रचेतसी तद्० (स्त्री०) प्रचेता मुनि की कन्या।

प्रचेता तद्० (पु०) वरुण, मुनि विशेष, प्रहृष्टचित्त, प्रशस्त चित्त, प्राचीन बर्हिराज का पुत्र, प्रजापति विशेष, ब्रह्मा का पुत्र, लोक पितामह, ब्रह्मा ने अपने शरीर से वेद वेदाङ्गवित् पुत्रों की सृष्टि की, उनके नाम ये हैं.—अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, मरीचि, भृगु, अङ्गिरा, क्रतु, वशिष्ठ, वोढु कपिल, आसुरी, कवि, मनु, शङ्ख, पञ्चशिख और प्रचेता।

प्रचेल (पु०) पीला चन्दन।—क (पु०) घोड़ा।

प्रचोदक (वि०) प्रेरणा करनेवाला, उत्तेजित करनेवाला।

प्रचोदन (पु०) प्रेरणा, उत्तेजना, आज्ञा, नियम।

प्रचोदित तद्० (वि०) प्रेरित, नियोजित, गमनानुमति प्राप्त, जाने की अनुमति प्राप्त, सम्यक् कथित।

प्रच्युत तद्० (वि०) पतित, चेरित, गिरा हुआ, स्खलित, पदभ्रष्ट, पदच्युत।

प्रच्छक (पु०) पूछने वाला, प्रश्न कर्त्ता।

प्रच्छद तद्० (पु०) [प्र+छद्+अल्] आच्छादन, उत्तरीय वस्त्र, चद्दर।—पट (पु०) उत्तरीय वस्त्र, पिछौरी।

प्रच्छन्न तद्० (वि०) आच्छन्न, आच्छादित, गुप्त।

प्रच्छर्दिका तद्० (स्त्री०) कै, उलटी, उद्गार, वमन, वमि रोग विशेष। [चादर।

प्रच्छादन तद्० (पु०) दुरका, पिछौरी, ओढ़नी,

प्रजव तद्० (पु०) प्रकृष्टवेग, अतिशय वेग।

प्रजरण तद्० (पु०) ज्वलन, जलन, मरन।

प्रजरित तद्० (वि०) ज्वलित, जलाया हुआ, भस्म।

प्रजल्प तद्० (पु०) वाक्य विशेष, कहानी, किस्सा।—न (पु०) बातचीत।

प्रजा तद्० (स्त्री०) सन्तान, सन्तति, वशवर्ती मनुष्य, अधिकारस्थित, रैयत।—काम (पु०) पुत्रप्राप्ति की इच्छा रखने वाला।—कार (पु०) प्रजा उत्पन्न करने वाला, प्रजापति, ब्रह्मा।

प्रजागर तद्० (पु०) अतिशयजागरण, अत्यन्त चिन्ता।—रा (स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।

प्रजाधिकारी राज्य तद्० (पु०) प्रजा सत्तात्मक राज्य शासन, जहाँ का राज्य प्रजा की व्यवस्था के अनुसार चलता हो।

प्रजापति तद्० (पु०) ब्रह्मा, दक्ष, कश्यप आदि महर्षि, महीपाल, राजा, जामाता, दिवाकर वह्नि, त्वष्टा, दस प्रजापति, पिता, स्वनामख्यात कीट विशेष।

प्रजारी दे० (क्रि०) जला कर, भस्म करके, दग्ध करके। यथा—जारहिं लोक देहिं सब तारी। नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी॥ —रामायण।

प्रजावती तद्० (स्त्री०) भ्रातृभार्या, ज्येष्ठ भ्रातृपत्नी, पुत्रवती स्त्री। [आहार।

प्रजाशन दे० (पु०) प्रजा का भोजन, प्रजाशन, साधारण

प्रजित (पु०) विजय करने वाला।

प्रजाहित तद्० (पु०) प्रजा का उपकार, प्रजा का शुभ।

प्रजेश या प्रजेश्वर तद्० (पु०) राजा, महीपाल, नृपाल।

प्रजोग (पु०) प्रयोग। [में १६ मात्राएं होती हैं।

प्रज्झटिका (स्त्री०) छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण

प्रज्ञ तद्० (वि०) विज्ञ, अभिज्ञ, पण्डित, प्रवीण।—ता (स्त्री०) विज्ञता, पाण्डित्य।

प्रज्ञप्ति तद्० (स्त्री०) निवेदन, विज्ञापन, संकेत।

प्रज्ञा तद्० (स्त्री०) बुद्धि, मति, धी।—चक्षु (पु०) धृतराष्ट्र। (वि०) बुद्धिमान्, ज्ञानी, ज्ञान दृष्टि के द्वारा देखने वाला, अन्धा।—पारमिता (स्त्री०) बौद्ध ग्रन्थानुसार गुणों की पराकाष्ठा।—मय (पु०) विद्वान, पण्डित। [ज्वलन्त।

प्रज्वलित तद्० (वि०) अतिशय ज्वलन विशिष्ट,

प्रडीन तद्० (पु०) पक्षी की गति विशेष, प्रथम उड़ुयन, तिर्यग्गमन।

प्रण तद्० (पु०) पन, प्रतिज्ञा, कौल, करार, पुराण, पुरातन, बहुकालीन।—ल (पु०) नख का अग्रभाग।

प्रणत तद्० (वि०) [प्र+नम्+क्त] प्रणति विशिष्ट, कृत प्रणाम, चरणों में गिरा हुआ, नम्र, विनत।—पाल (वि०) शरणागतरक्षक, दीनपालक।

प्रणति तद्० (स्त्री०) [प्र+नम्+क्ति] प्रणाम, प्रणिपात, नम्रता।

प्रणय तद्० (पु०) [प्र+नी+अल्] प्रेम, प्रीति, अनुराग, अनुरक्ति, विश्रम्भ, निर्वाण।

प्रणयन तद्० (पु०) [प्र+नी+अनट्] रचन, वस्तुसम्पादन, निर्माण, संस्कार करण, रचन, प्रेषण।

प्रणयिनी तद्० (स्त्री०) प्रेमास्पदा, वनिता, प्रिया, भार्या, अङ्गना, स्त्री।
प्रणयी तद्० (वि०) प्रेमी, अनुरागी, अनुरक्त।
प्रणव तद्० (पु०) ओंकार, मन्त्रसेतु।
प्रणवना (क्रि०) प्रणाम करना।
प्रणवौं दे० (क्रि०) प्रणाम करता हूँ, नम्र होता हूँ।
प्रणाम तद्० (पु०) [प्र+नम+घञ्] प्रणति, प्रणिपात, अत्यन्त भक्ति और श्रद्धा के सहित नमस्कार।
प्रणामी तद्० (वि०) नमस्कारी, देवताओं के प्रणाम के लिये दी जाने वाली दक्षिणा।
प्रणायक (पु०) नेता, सेनानायक।
प्रणाल (पु०) पनाला, मोरी, नाली।
प्रणाली तद्० (स्त्री०) धारा, रीति, प्रकार, जल निकलने का मार्ग, परम्परा, पनाला, नर्दवा।
प्रणाश तद्० (पु०) ध्वंस, नाश, उत्पात।—न (पु०) नाश करने का भाव या क्रिया।—ी (पु०) नाश करने वाला। [प्रयत्न, प्रवेशन।
प्रणिधान तद्० (पु०) मनोयोग, प्रणति, ध्यान,
प्रणिधि तद्० (पु०) चर, दूत, प्रार्थना, अवधान।
प्रणिपात तद्० (पु०) प्रणति, प्रणाम, नमस्कार।
प्रणिहित तद्० (वि०) रक्षित, स्थापित, मनोयोग वाला। कृत, समाहित। [
प्रणी तद्० (वि०) अटल प्रण वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ
प्रणीत तद्० (वि०) संस्कृत अग्नि, यज्ञ मन्त्र द्वारा प्रज्वलित अग्नि, बनाया हुआ, रचा हुआ, तैयार किया हुआ।—ा (स्त्री०) यज्ञीय जल विशेष, यज्ञीय पात्र विशेष।
प्रणेता (पु०) स्वामिता, कर्त्ता।
प्रणेय (वि०) लौकिक संस्कार युक्त, अधीन, वशवर्त्ती।
प्रणोदित तद्० (वि०) प्रेरित।
प्रतनु (वि०) क्षीण, दुबला, सूक्ष्म, मिहीन, बारीक, बहुत छोटा।
प्रतपन (पु०) तप्त करना, उत्ताप, गर्मी।
प्रतप्त तद्० (वि) उत्तप्त, प्रभाववान्।
प्रतान तद्० (पु०) विस्तार, चौड़ा वायु रोग विशेष।
प्रताप तद्० (पु०) प्रभाव, तेज, प्रखरता, शूरता, ऐश्वर्य, महिमा, शोभा, इक़बाल।—ी या वान्, प्रतापी, इकबालमंद।
प्रतापसिंह तद्० (पु०) मेवाड़ के प्रसिद्ध स्वदेशसेवक संन्यासी महाराणा, चित्तौर के अधिपति, महाराणा उदयसिंह के पुत्र। इन्होंने धर्मरक्षा के लिये जो कष्ट सहे हैं उससे इनका नाम इतिहास में प्रसिद्ध है। राजस्थान के समस्त राजा मुग़ल सम्राट् के अधीन हो गये। स्वार्थ के वश हो कर धर्म की अवहेला कर समस्त राजाओं ने अपनी स्वाधीनता बेच दी थी, परन्तु महाराणा ने अनेक कष्ट सह कर, अपनी स्वाधीनता की रक्षा की थी। एक समय अम्बर के राजकुमार मानसिंह (अकबर पुत्र सलीम का साला) दिल्ली जाने के समय प्रताप की राजधानी कमलमीर गये। प्रताप ने उनके स्वागत के लिये बड़ी तैयारियाँ कीं, भोजन के समय प्रताप का पुत्र अमरसिंह वहाँ खड़ा था। मानसिंह प्रताप के न आने का कारण बारबार अमरसिंह से पूँछने लगे। अन्त में प्रताप वहाँ उपस्थित हुए और बोले की "जो राजपूत कुलाङ्गार अपनी बहिन बेटियाँ मुसल्मानों को ब्याहता है और तुर्कों के साथ नित्य भोजन करता है, उसके साथ सूर्यवंशी राजा भोजन नहीं कर सकता।" इस बात से मानसिंह का क्रोध बढ़ गया। मान दिल्ली पहुँच कर अनेक छलबल फैला कर प्रताप को कष्ट पहुँचाने लगा। अन्त में उसने अकबर से कह कर प्रताप पर चढ़ाई करा दी। परन्तु उस चढ़ाई से प्रताप डरने वाले नहीं थे। मुट्ठी भर राजपूतों को लेकर महाराणा ने मुसल्मानी सेना का सामना किया, इसी प्रकार वे यावज्जीवन लड़ते रहे, परन्तु स्वाधीनता उन्होंने नहीं बेची। उन्हीं को धर्मरक्षा के कारण भारत ने "हिन्दुओं के सूर्य" की उपाधि दी थी। आज तक इनके वंशज भी उसी गौरवास्पद उपाधि से भूषित किये जाते हैं। धर्मरक्षा के कारण वे अमर हैं।
प्रतापी तद्० (वि०) प्रतापवान्, तेजस्वी, तेजधारी, ऐश्वर्यवान्, प्रभावशाली।
प्रतारक तद्० (वि०) वञ्चक, ठग धूर्त, खल, शठ।
प्रतारण तद्० (पु०) वञ्चन, ठगई, धूर्तता, शठता।
प्रतारणा तद्० (स्त्री०) प्रवञ्चना, मिथ्या छलना, ठगई, धूर्तता।

प्रतारित तद्० (वि०) प्रवञ्चित, छला हुआ, धोखा खाया हुआ, मिथ्या कथित, ठगा हुआ।
प्रतिचा (स्त्री०) रोदा, धनुष की डोरी, चिल्ला, ज्या।
प्रति तद्० (उपसर्ग) प्रतिनिधि, मुख्य, सदृश, व्याप्य, चिन्ह, एक एक, सब, समस्त, भाग, अंश, प्रतिदान, स्तोक, अल्प, निश्चय, प्रशस्ति, विरोध, समाधि, अभिमुखता, आभिमुख्य, स्वभाव, पास, सामने, वैसा ही, ज्यों का त्यों।
प्रतिकार, प्रतीकार तद्० (पु०) बदला, पलटा, उपाय।
प्रतिकारक (पु०) प्रतिकार करने वाला, बदला चुकाने वाला।
प्रतिकितव (पु०) जुआरी का जोड़ीदार।
प्रतिकूप (पु०) परिखा, खाईं।
प्रतिकूल तद्० (वि०) विपक्ष, विरुद्ध, उलटा, प्रतिबन्धक।—ता या त्व (स्त्री) विपक्षता, प्रतिपक्षता, विरोध।—ा (स्त्री) सौत, सपत्नी।
प्रतिकृति (स्त्री०) तसवीर, मूर्ति, छाया, बदला, प्रतीकार। [फल, बदला।
प्रतिक्रिया तद्० (स्त्री०) प्रतिकार, प्रतिविधान, प्रति
प्रतिक्षण तद्० (पु०) क्षण क्षण, पक्षपक्ष, प्रतिपद
प्रतिग्रह तद्० (पु०) दान, ब्राह्मण को विधियदान, ग्रह विशेष।
प्रतिग्रहण तद्० (पु०) आदान, ग्रहण, स्वीकार, दान लेना, बदला लेना, एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु लेना।
प्रतिग्रहीत (पु०) दान लेने वाला, प्रतिग्रहीता।
प्रतिघात तद्० (पु०) मारण, आघात, मार के बदले की मार।—ी शत्रु, वैरी, विद्रोही।
प्रतिचिकीर्षु तद्० (वि०) प्रतिकार करने का इच्छुक, बदला चुकाने की इच्छा रखने वाला।
प्रतिचिन्तन तद्० (पु०) चिन्तित का पुनः चिन्तन, बार बार ध्यान।
प्रतिच्छा (स्त्री०) प्रतीक्षा, बाट, इन्तज़ार।
प्रतिच्छाया तद्० (स्त्री०) प्रतिबिम्ब, प्रतिकृति, परछाईं।
प्रतिछाँह दे० (पु०) प्रतिबिम्ब, छाया, परछाँही।
प्रतिज्ञा तद्० (स्त्री०) अङ्गीकार, शपथ, प्रण, पण, पक्ष।—पत्र (पु०) अङ्गीकारलिपि, स्वीकार पत्र।
प्रतिज्ञात तद्० (पु०) वादा किया हुआ, प्रतिज्ञा किया हुआ, अङ्गीकृत, स्वीकृत।
प्रतिज्ञान तद्० (पु०) अङ्गीकार, प्रतिज्ञा, स्वीकार, पण। [देखना, पुनः पुनः दर्शन।
प्रतिदर्शन तद्० (पु०) दर्शनान्तर दर्शन, फिर फिर
प्रतिदान तद्० (पु०) दान के बदले का दान, विनिमय, बदला, रखे हुए द्रव्य को लौटाना, धरोहर को लौटा देना, अमानत लौटाना। [नित्य, सर्वदा।
प्रतिदिन तद्० (पु०) प्रत्यह, अहरह, दिन दिन,
प्रतिदेय तद्० (वि०) पुनर्दातव्य, लौटाने योग्य, फेर देने योग्य।
प्रतिद्वन्द्व (पु०) बराबर वालों का आपस का झगड़ा।—ी (पु०) शत्रु, बराबरी का विरोधी।
प्रतिद्वन्द्वता (स्त्री०) बराबर वालों की लड़ाई।
प्रतिध्वनि तद्० (स्त्री०) प्रतिशब्द, शब्द का शब्द, झाँईं।
प्रतिनिधि तद्० (पु०) बदली, एवज़, प्रधान का स्थानापन्न, प्रतिभू।—त्व (पु०) प्रतिनिधि होने का भाव, किया गया काम।
प्रतिनिर्यातन (पु०) अपकार जो अपकार का बदला देने को किया जाय। [फेरना।
प्रतिनिवर्त्तन तद्० (पु०) प्रत्यावर्तन, लौटाना,
प्रतिपक्ष तद्० (पु०) वैरी, अरि, शत्रु, रिपु।—ी (पु०) विपक्षी, शत्रु, वैरी के पक्ष का, शत्रु का साथी।
प्रतिपद् तद्० (स्त्री०) तिथि विशेष, चन्द्रमा की पहली कला का क्रियाकाल, शुक्ल और कृष्ण पक्ष की पहली तिथि, परवा, पड़वा, प्रतिपदा।
प्रतिपत्ति तद्० (स्त्री०) सुख्याति, सम्मान, सम्भ्रम, गौरव, प्रगल्भता पदप्राप्ति, प्रबोध, निष्पत्ति, दान, प्रतिष्ठा, यश।
प्रतिपन्न तद्० (वि०) जाना हुआ, निश्चित, प्रमाणसिद्ध, अवगत, अङ्गीकृत, प्रतिष्ठित, माननीय, मान्य। [ज्ञापक, संस्थापक, प्रकाशक।
प्रतिपादक तद्० (पु०) प्रतिपत्तिजनक, बोधक,
प्रतिपादन तद्० (पु०) सम्पादन, बोधन, ज्ञापन, कथन, दान, प्रतिपत्ति।
प्रतिपादित (वि०) जो भली भाँति समझा दिया गया हो, निर्धारित, निरूपित।

प्रतिपाद्य तद्० (वि०) बोधनीय, ज्ञापनीय, कथनीय, वर्णन के योग्य, बयान के लायक।
प्रतिपाल (पु०) रक्षक, पोषक। [कर्ता।
प्रतिपालक तद्० (पु०) पालनकर्त्ता, रक्षक, पोषण-
प्रतिपालन तद्० (पु०) पालन, रक्षण, पोषण।
प्रतिपालना दे० (क्रि०) पोसना, पालना, रखना, रक्षा करना।
प्रतिपालित (वि०) रक्षित, पालन किया हुआ।
प्रतिपाल्य तद्० (वि०) प्रतिपालनीय, रक्षणीय, गोपनीय, पोषणीय, पोष्य, पालन करने योग्य।
प्रतिपुरुष तद्० (पु०) प्रतिनिधि, प्रत्येक मनुष्य।
प्रतिप्रसव तद्० (पु०) निषेध की हुई वस्तु का पुनः विधान, एक बार रोक कर पुनः आज्ञा देना।
प्रतिफल तद्० (पु०) तुल्यफल, समुचित फल, कर्म के अनुसार फल, जैसा कर्म वैसा फल, कृतप्रतिकार। [प्राप्त।
प्रतिफलित तद्० (वि०) प्रतिबिम्बित, प्रतिच्छाया
प्रतिबन्ध तद्० (पु०) कार्य प्रतिबन्धक, प्रतिष्टम्भ, विघ्न, बाधा, रुकावट।
प्रतिबन्धक तद्० (पु०) प्रतिरोधक, बाधक, निवारक, व्याघातकारक, निवारणकर्त्ता, रोकने वाला।
—ता (स्त्री०) रोक, रुकावट, अड़चन, विघ्न, बाधा।
प्रतिबिंब (पु०) परछाईं, छाया, मूर्त्ति, चित्र, शीशा।
क—(पु०) अनुगामी। [बराबर का योद्धा।
प्रतिभट तद्० (पु०) प्रत्येक वीर, समान वीर,
प्रतिभा तद्० (स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, प्रत्युत्पन्नमतित्व, दीप्ति, प्रगल्भता।—शाली (वि०) प्रतिभा वाला।
प्रतिभाग तद्० (पु०) प्रत्येक अंश, राज्य के हिस्से।
प्रतिभू तद्० (पु०) ज़ामिनदार, मनौतिया।
प्रतिम तद्० (वि०) तुल्य, सदृश, समान।
प्रतिमा तद्० (स्त्री०) प्रतिमूर्ति, मूर्त्ति के समान, प्रतिकृति, प्रतिच्छाया, प्रतिरूप, चित्र छवि।
प्रतिमान तद्० (पु०) प्रतिबिंब, प्रतिच्छाया, हाथी के मस्तक का एक भाग। [मार्ग।
प्रतिमार्ग तद्० (पु०) प्रतिपथ, मार्ग मार्ग, प्रत्येक
प्रतिमास तद्० (पु०) माह मास, प्रत्येक मास।

प्रतिमूर दे० (पु०) प्रतिबिम्ब, परछाँहीं, छाया।
प्रतिमूर्त्ति तद्० (स्त्री०) आकार, छवि, प्रतिमा, प्रतिकृति, मूर्ति के समान मूर्त्ति।
प्रतियत्न तद्० (पु०) लिप्सा, वाञ्छा, बन्दी, निग्रह करने का प्रयत्न, गुणान्तर का ग्रहण, संस्कार, संशोधन, ग्रहण, प्रतिग्रह।
प्रतियोग तद्० (पु०) विरोध, विवाद, प्रतिपक्षता।
—िता (स्त्री०) विपक्षता, शत्रुता, विरोध, विवाद, प्रतिस्पर्द्धा, चढ़ा उतरी।
प्रतियोगी तद्० (वि०) विरोधी, प्रतिपक्ष, विरुद्ध पक्ष। (पु०) विरोधी, शत्रु, सहयोगी का विपरीत।
—ता (स्त्री०) विपक्षता, शत्रुता, विरोध, विवाद, प्रतिस्पर्द्धा, चढ़ा उतरी।
प्रतिरथ (पु०) बराबर का लड़ने वाला।
प्रतिरात्र तद्० (पु०) प्रतिरात्रि, प्रत्येक रात।
प्रतिरूप तद्० (पु०) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, आकृति।
(वि०) समान, सदृश, तुल्य, बराबर।
प्रतिरोध तद्० (पु०) तिरस्कार, सत्प्रतिपक्ष, निषेध, रोक, रुकावट। [ठग, डाँकू, अपहारक।
प्रतिरोधक या प्रतिरोधी तद्० (पु०) चोर, तस्कर,
प्रतिलिपि तद्० अनुरूपलिपि, समान लेख, नक़ल।
प्रतिलोम तद्० (वि०) पर्याय, उलटा, विपरीत, वाम, विलोम।—ज (पु०) प्रतिलोम जात, उत्तम वर्ण की स्त्री में अधम वर्ण के पुरुष से उत्पन्न सन्तान।
—विवाह (पु०) विवाह विशेष जिसमें वर नीच वर्ण का और वधू उच्च वर्ण की हो।
प्रतिवचन तद्० (पु०) उत्तर, प्रत्युत्तर।
प्रतिवर्ष तद्० (पु०) प्रत्येक वर्ष, साल साल।
प्रतिवाक्य तद्० (पु०) प्रतिवचन, उत्तर प्रत्युत्तर।
प्रतिवाद तद्० (पु०) खण्डन, विरोध, आपत्ति, प्रतिपक्षी का वचन।
प्रतिवादी तद्० (वि०) प्रतिपक्षी, विपक्षी, प्रत्यर्थी।
प्रतिवाधक तद् (पु०) निवारक, प्रतिबन्धक, बाधा कारक। [स्थिति।
प्रतिवास तद्० (पु०) पड़ोस, निकट वास, समीप
प्रतिवासर तद्० (पु०) प्रतिदिन, प्रत्यह, दिन दिन।
प्रतिवासी तद्० (पु०) आसन्न गृही, निकटस्थ, प्रतिवेशी, पास रहने वाला, पड़ोसी।

प्रतिविधान तद्० (पु०) प्रतीकार, प्रतिक्रिया, निवारण, उपाय। [अनुरूप।

प्रतिबिम्ब तद्० (पु०) प्रतिच्छाया, प्रतिमा, प्रतिमूर्त्ति,

प्रतिबिम्बित तद्० (वि०) प्रतिच्छाया प्राप्त।

प्रतिवेश तद्० (पु०) मकान के सामने का मकान, गृह के समीपस्थ गृह, पड़ोस। [पड़ोसी।

प्रतिवेशी या प्रतिवासी (वि०) समीप रहने वाला,

प्रतिशब्द तद्० (पु०) प्रतिध्वनि, शब्द का शब्द।

प्रतिश्याय तद्० (पु०) रोगविशेष, पीनस रोग, जुकाम, सरदी। [निश्चित कथन।

प्रतिश्रव तद्० (पु०) अङ्गीकार, स्वीकार, प्रतिज्ञा,

प्रतिश्रुत तद्० (वि०) अङ्गीकृत, स्वीकृत, प्रतिज्ञात।
—[(वि०) स्वीकृति, प्रतिध्वनि, अनुमति।

प्रतिषिद्ध तद्० (वि०) निषिद्ध, निषेधित, निषेध किया हुआ।

प्रतिषेध तद्० (पु०) निषेध, अटक, रोक।

प्रतिष्क (पु०) दूत।

प्रतिष्ठ (वि०) प्रसिद्ध, प्रख्यात।

प्रतिष्ठा तद्० (स्त्री०) कीर्त्ति, आदर, गौरव, सम्मान, स्थापना, चार अक्षर का छन्द विशेष, संस्कार विशेष, उद्यापन।—कारक (वि०) सम्मानकारक, गौरवकारक।—सूचक (पु०) सम्मान प्रकाशक, आदर प्रकाशित करने वाला।

प्रतिष्ठान तद्० (पु०) नगर विशेष, राजा पुरूरवा की राजधानी। परिवंश में लिखा है कि यह नगर गङ्गा से उत्तर की ओर है, परन्तु कालिदास कहते हैं कि गङ्गा और यमुना के सङ्गम पर यह नगर है, आज कल यह नगर झूसी नाम से प्रसिद्ध है।
—पुर (पु०) राजा पुरूरवा की राजधानी जो प्रयाग के समीप गङ्गा के उस पार झूसी में है।

प्रतिष्ठित तद्० (वि०) प्रतिष्ठायुक्त, गौरवान्वित, स्थापित।

प्रतिसीरा (स्त्री०) परदा, यवनिका।

प्रतिस्पर्द्धा तद्० (स्त्री०) ईर्षा, मत्सरता, गुप्तद्वेष, स्पर्द्धा, डाह, जलन।—ी (वि०) उद्यत।

प्रतिहत तद्० (वि०) रुद्ध, निराश, निराकृत, प्रतिबद्ध, रोका, भ्रष्ट।

प्रतिहार तद्० (पु०) द्वार, ड्योढ़ी, देवढ़ी।

प्रतिहारी तद्० (पु०) द्वारपाल, पौरिया, ड्योढ़ीवान।

प्रतिहिंसा तद्० (स्त्री०) हिंसा का प्रतिशोध, अपकार का बदला।

प्रतीक तद्० (पु०) एक देश, अङ्ग, अवयव, व्याख्या में किसी श्लोक या वाक्य का उद्धृत एक अंश या चरण।

प्रतीकार तद्० (पु०) अपकारी के प्रति अपकार, वैरशोधन, शत्रुता निर्यातन, प्रतिफल, प्रतिशोध, चिकित्सा, निवारण का उपाय, बदला, उपशम, उपाय। [वाला, प्रत्याशी।

प्रतीक्षक तद्० (पु०) बाट देखने वाला, राह जोहने

प्रतीक्षा तद्० (स्त्री०) इन्तज़ारी, बाट देखना, किसी के आने के लिये ठहरना।

प्रतीकाश तद्० (पु०) तुल्य, समान, सदृश, मुकाबला, उपमा।

प्रतीची तद्० (स्त्री०) पश्चिम दिशा, सूर्य के अस्त होने की दिशा।—शः (पु०) पश्चिम दिशा के स्वामी, वरुण। [दिशा में स्थित।

प्रतीचीन तद्० (वि०) पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम

प्रतीच्य (वि०) पश्चिमी। [ख्यात, प्रसिद्ध।

प्रतीत तद्० (वि०) ज्ञात, अवगत, हृष्ट, सादर,

प्रतीति तद्० (स्त्री०) ज्ञान, बोध, ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्त्ति, आदर, हर्ष।

प्रतीप तद्० (पु०) महाराज शान्तनु का पिता। (वि०) प्रतिकूल, विपरीत, विरोधी। [अवगत।

प्रतीयमान तद्० (वि०) ज्ञेय, बोधगम्य, अनुभूत,

प्रतीहार (पु०) सन्धि के भेद का एक भेद।

प्रतोद (पु०) पैना, चाबुक, सारथ्यास्त्र विशेष।

प्रत्न तद्० (वि०) पुरातन, पुराण।—तत्व (पु०) पुरातत्व, वह विद्या जिसमें प्राचीन समय की बातों की विवेचना हो। [प्रकट, प्रसिद्ध।

प्रत्यक्ष तद्० (वि०) साक्षात् सम्मुख, सामने, प्रकाश,

प्रत्यग्र तद्० (वि०) नूतन, अभिनव, शुद्ध, शोधित।

प्रत्यङ्ग तद्० (पु०) अवयव विशेष, जैसे नासिका आदि।

प्रत्यन्त तद्० (पु०) म्लेच्छ देश। (वि०) सन्निकृष्ट, प्रान्त भाग।—पर्वत (पु०) पर्वत के समीप का छुद्र पर्वत।

प्रत्यभिज्ञान तत्० (पु०) पश्चात् ज्ञान, पीछे जानना, स्मरण, अनुमान, कारण विशेष से स्मरण होना।

प्रत्यभियोग तत्० (पु०) प्रत्यपराध, अपराधी होकर पुनः अपराध करना, -अभियुक्त होकर अभियोग करना।

प्रत्यभिलाप तत्० (पु०) पुनराभिलाप।

प्रत्यभिवाद या प्रत्यभिवादन (पु०) वह आशीर्वाद जो किसी पूज्य के प्रणाम करने पर मिले।

प्रत्यय तत्० (पु०) विश्वास, निश्चय, ज्ञान, अधीन, शपथ, हेतु, छिद्र, आचार, प्रकृति से उत्तर आने वाली विभक्ति। [यश, सुद्धाखेद।

प्रत्यर्थी तत्० (पु०) शत्रु, प्रतिवादी, अर्थी का प्रति

प्रत्यर्पण तत्० (वि०) पुनर्दान, लौटाना, फेर देना, प्रतिदान। [विघ्न, व्याघात।

प्रत्यवाय तत्० (पु०) पाप, दुरदृष्ट, दोष, अनिष्ट,

प्रत्यह तत्० (अ०) प्रतिदिन, दिन दिन, प्रतिवासर।

प्रत्याख्यान तत्० (पु०) निराकरण, निरसन, खण्डन, अस्वीकार, निन्दक।

प्रत्यागमन (पु०) लौट आना।

प्रत्यादेश तत्० (पु०) निराकरण, खण्डन, भक्त के प्रति देवता का आदेश,उपदेश,दैववाणी, परामर्श।

प्रत्यावर्त्तन (पु०) लौट आना, वापिस आना।

प्रत्याशा तत्० (स्त्री०) आसरा, आकाङ्क्षा, वाञ्छा, अभिप्राय, विश्वास, भरोसा, प्रतीक्षा, बाट देखना।—रहित (वि०) आशा रहित, वाञ्छा शून्य। [अभिलाषी।

प्रत्याशी तत्० (वि०) भरोसा वाला, आकाङ्क्षी,

प्रत्यासन्न तत्० (वि०) निकटवर्त्ती, समीपस्थित।

प्रत्याहार तत्० (पु०) अपने अपने विषयों से इन्द्रियों को हटाना।

प्रत्युत तत्० (अ०) वैपरीत्य, वरञ्च, परन्तु

प्रत्युत्तर (पु०) जवाब का जवाब।

प्रत्युत्पन्न तत्० (वि०) उत्पत्ति विशिष्ट, प्रस्तुत, प्रतिभान्वित।—मति (वि०) उपस्थित बुद्धि, सूक्ष्म बुद्धि युक्त, सूक्ष्मदर्शी, प्रतिभान्वित।

प्रत्युपकार तत्० (पु०) उपकार के अनन्तर उपकार।

प्रत्युपकारी तत्० (वि०) उपकार के बदले उपकार करने वाला।

प्रत्युष या प्रत्यूष (पु०) प्रभात, प्रातःकाल, सूर्य, वसु विशेष।

प्रत्यूह तत्० (पु०) विघ्न, बाधा, आपद, खटकाव।

प्रत्येक तत्० (अ०) एक एक, प्रति प्रति, भिन्न भिन्न, हरएक, समस्त, सकल।

प्रथम तत्० (वि०) श्रेष्ठ, पहला, -पेश्तर, मुख्य, आगे, आदि में, शुरू में।—गति (स्त्री०) उत्तम गति दान।—ज (पु०) जेठा, बड़ा।—पुरुष (पु०) उत्तमपुरुष।—साहस (पु०) अपराधियों का प्रथम दण्ड, प्रथम बार का अपराध।

प्रथमतः तत्० (अ०) पहले पहल का, प्रथम, पर्व।

प्रथमा तत्० (स्त्री०) पहली विभक्ति, श्रेष्ठा, बड़ी, प्रधान। [श्रेष्ठ अङ्ग, मस्तक।

प्रथमावयव तत्० (पु०) प्रथमोत्पन्न अङ्ग, आद्य अङ्ग,

प्रथमी (स्त्री०) पृथिवी।

प्रथा तत्० (स्त्री०) चलन, धारा, रीति, व्यवहार, ख्याति, प्रकार। [(स्त्री०) ख्याति, प्रसिद्धि।

प्रथित तत्० (वि०) ख्यात, प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध।—ि

प्रथी (स्त्री०) पृथिवी।

प्रथु (पु०) विष्णु, पृथु।

प्रद तत्० (वि०) दानकर्त्ता, दानी, दाता, देनेवाला।

प्रदक्षिण या प्रदक्षिणा तत्० (पु०) देवोद्देश्य से दक्षिणावर्त्त भ्रमण, चतुर्दिक भ्रमण, चारों ओर भ्रमण, मण्डलाकार घूमना। [समर्पित।

प्रदत्त तत्० (वि०) आदर पूर्वक दान दिया हुआ,

प्रदर तत्० (पु०) स्त्रियों का रोग विशेष, स्त्रियों का धातु क्षीण रोग, यह चार प्रकार का होता है।

प्रदर्शक तत्० (पु०) दर्शक, प्रकाशक, दिखानेहारा।

प्रदर्शन तत्० (पु०) ईक्षण, दर्शन, दिखाना।—स्थान (पु०) जुमायशगाह।

प्रदर्शनी तत्० (स्त्री०) नुमाइश, वह स्थान जहाँ दिखाने की भाँति भाँति की चीज़ें रखी जाँय और उनमें जो सर्वोत्तम समझी जाय उस पर पुरस्कार दिया जाय।

प्रदल (पु०) बाण, तीर।

प्रदान (पु०) दान, अर्पण, प्रकृष्ट दान, त्याग।

प्रदीप तत्० (पु०) दीपक, दीया, दीप।

प्रदीप्त तत्० (पु०) उज्ज्वलित, प्रकाशित।

प्रदेश तद्० (पु०) एक देश, स्थान, देश का एक भाग, प्रान्त, तर्जनी और अङ्गुष्ठ का परिमाण।

प्रदेशनी या प्रदेशिनी तद्० (स्त्री०) तर्जनी नामक अँगुली।

प्रदोष तद्० (पु०) सायङ्काल, सूर्यास्त के पश्चात् दो मुहूर्तकाल। रात्रि के पहले चार दण्ड, गोधूलि बेला, सन्ध्या, दिन की समाप्ति, रात्रि का आरम्भ, दिन और रात के बीच की सन्धि।—काल (पु०) सायङ्काल, सन्ध्या का समय।

प्रद्युम्न तद्० (पु०) कन्दर्प, कामदेव, श्रीकृष्ण का पुत्र। ये रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। शिव के कोपरूपी अग्नि में भस्म होकर कामदेव प्रद्युम्न के रूप में श्रीकृष्ण के यहाँ उत्पन्न हुए। जन्म से सातवें दिन श्रीकृष्ण का शत्रु शम्बर सूतिकागृह से प्रद्युम्न को उठा ले गया। श्रीकृष्ण ने सब जान गये, तथापि उन्होंने इसके लिये कुछ प्रयत्न नहीं किया। दैत्यपति शम्बर की महारानी का मायावती नाम था। मायावती के पुत्र नहीं था। शम्बर ने प्रद्युम्न को पालन करने के लिये मायावती के हाथ सौंपा था। यही मायावती स्वयं रति थी। प्रद्युम्न को देखते ही मायावती को अपने पूर्वजन्म की बातें स्मरण हो आयीं। मायावती ने पति का पुत्रवत् पालन करना अनुचित समझ धात्री को उनके पालन का भार सौंपा। जब प्रद्युम्न युवा हुए, तब मायावती ने उनको अपना पति बनाना चाहा, यह देख प्रद्युम्न ने कहा कि तुम पुत्र भाव छोड़ कर यह भाव क्यों स्वीकार करना चाहती हो। मायावती ने कहा, "नाथ! आप मेरे पुत्र नहीं हैं और न शम्बर ही आपका पिता है। आपके पिता श्रीकृष्ण हैं, शम्बर आप को यहाँ चुरा कर लाया है। मैं आपके रूप पर मोहित हूँ, आप शम्बर का नाश कर मेरा मनोरथ पूर्ण कीजिये। यह सुन कर प्रद्युम्न ने शम्बर के साथ युद्ध किया और वैष्णव अस्त्र से शम्बरासुर को मार वह द्वारका चले गये।

प्रद्योत (पु०) किरण, रश्मि, आभा, चमक, एक यक्ष का नाम।

प्रद्योतन (पु०) सूर्य, चमक, दीप्ति।

प्रधन (पु०) अधिक धनी, लड़ाई, युद्ध।

प्रधान (परधान) तद्० (वि०) श्रेष्ठ, मुख्य। (पु०) प्रकृत, माया, प्रकृति, परमात्मा, बुद्धि, सेनापति, मन्त्री, सचिव आदि।—ता (स्त्री०) श्रेष्ठता, मुख्यता, प्रधानत्व।—नगर (पु०) राजधानी, प्रसिद्ध नगर, बड़ा नगर, ज़िला।

प्रधि (पु०) पहिये का घुरा।

प्रधी तद्० (वि०) प्रकृष्ट बुद्धि युक्त, उत्तम बुद्धि विशिष्ट। (स्त्री०) प्रकृष्ट बुद्धि।

प्रध्वंश तद्० (पु०) नाश, विनष्टि, क्षय, अपचय।—ी या—क (पु०) नाश करने वाला।

प्रन (पु०) प्रण।

प्रनाम तद्० (पु०) प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन।

प्रनाशी तद्० (वि०) विनशनशील, अनित्य, अचिरस्थायी।

प्रपञ्च तद्० (पु०) विपर्यास, भ्रम, धोखा, विस्तार, प्रतारण, जगत्, संसार।—ी (वि०) छली, कपटी, ढोंगी, बखेड़िया।

प्रपञ्चित तद्० (पु०) विस्तृत, भ्रमयुक्त, प्रतारित।

प्रपन्न तद्० (वि०) शरणागत, आश्रयाकाङ्क्षी, आश्रित।

प्रपा तद्० (स्त्री०) पानीशाला, पौशाला, प्याऊ।

प्रपात तद्० (पु०) पर्वतों का पार्श्व, किनारा, झरना, जैसे "जलप्रपात"।

प्रपितामह तद्० (पु०) ब्रह्मा, पितामह के पिता।

प्रपितामही तद्० (स्त्री०) प्रपितामह की पत्नी, पितामह की माता।

प्रपुन्ना दे० (पु०) लता विशेष, पवाँर नामक पौधा।

प्रपौत्र तद्० (पु०) पौत्र का पुत्र, पोते का बेटा।

प्रपौत्री तद्० (स्त्री०) पौत्र की कन्या, पोते की लड़की।

प्रफुल्ल तद्० (वि०) विकाश युक्त, उत्फुल्ल, विकसित, खिला।—ता (स्त्री०) हर्ष, आह्लाद, उल्लास, विकास।—वदन (पु०) प्रसन्न वदन, प्रसन्न मुख।

प्रफुल्लित तद्० (वि०) प्रस्फुटित, विकसित, विकाशयुक्त।

प्रबन्ध तद्० (पु०) सन्दर्भ, ग्रन्थ, काव्यादि ग्रन्थन, परस्पर अन्वित वाक्य समूह, क्रम से की गई वाक्य रचना।—कल्पना (स्त्री०) प्रबन्ध रचना, काव्य रचना।

प्रबन्धक तद्० (पु०) प्रबन्धकर्त्ता, प्रबन्ध रचयिता।
प्रबर तद्० (पु०) अतिश्रेष्ठ, गोत्र विषयक १ या ३ प्रवर।
प्रबल तद्० (वि०) बलवान्, बली, साहसी, ढीठ, सहज़ोर, मज़बूत, ।—ता (स्त्री०) बलात्कार, पारवश्य, परवशता।
प्रबाल तद्० (पु०) विद्रुम, मूँगा।
प्रबुद्ध तद्० (वि) जागृत, जागता हुआ, सचेत, सावधान, सावहित। [निद्रा त्याग, नींद से जागना।
प्रबोध तद्० (पु०) ज्ञान, सावचेती, सावधानी,
प्रबोधन तद्० (पु०) जागरण, जगाना, चिताना, चितावनी देना, सावधान करना।
प्रभञ्जन तद्० (पु०) अनिल, वायु, पवन।—जाया (पु०) हनुमान।—सुत (पु०) हनुमान्, भीम।
प्रभद्र तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, नीम का पेड़।
प्रभव तद्० (पु०) उत्पत्ति, जन्म, जन्म हेतु, जन्म कारण, जहाँ से जन्म होता है, स्थान।
प्रभा तद्० (स्त्री०) दीप्ति, आलोक, प्रकाश, तेज, कुवेर की पुरी, गोपी विशेष।—कर (पु०) रवि, दिनकर, अग्नि, चन्द्र, समुद्र, अर्क वृक्ष, अकवन का पेड़।—कीट (पु०) खद्योत, जुगनूँ।
प्रभात तद्० (पु०) प्रात काल, प्रत्यूष, सवेरा।
प्रभाती तद्० (स्त्री०) एक रागिनी जो सवेरे गायी जाती है। [माहात्म्य, गौरव, शक्ति।
प्रभाव तद्० (पु०) कोष और दण्ड का तेज, शक्ति-
प्रभावती तद्० (स्त्री०) पाताल गङ्गा, त्रयोदशाक्षर छन्द, वज्रनाभ दैत्य की कन्या, जिसको श्रीकृष्ण ने हरण किया था। [गणाधिप विशेष।
प्रभास तद्० (पु०) तीर्थ विशेष, सोमतीर्थ, जैन
प्रभिन्न तद्० (पु०) मत्तहस्ती मतवाला हाथी।
प्रभु तद्० (पु०) स्वामी, मालिक, पालक, समर्थ, नायक, नेता।—ता या त्व (स्त्री०) प्रधानता, आधिपत्य, कर्तृत्व।—भक्त (पु०) स्वामी का अनुरागी, कुक्कुर।
प्रभूत (वि०) जो भली भाँति हुआ हो, निकला हुआ, प्रचुर।—ि (स्त्री०) उत्पत्ति शक्ति, अधिकता, प्रचुरता।
प्रभूत तद्० (वि०) प्रचुर, अधिक, अतिशय।
प्रभृति तद्० (अ०) आद्यबोधक, इत्यादि, वगैरह।
प्रभेद तद्० (पु०) भिन्नता, विशेष, वैलक्षण्य, पृथक्ता।
प्रमथ तद्० (पु०) शिव गण।
प्रमथाधिप तद्० (पु०) शिव, महादेव, शम्भु।
प्रमद तद्० (पु०) हर्ष।—कानन (पु०) रम्यवन, राजाओं के अन्तःपुर के योग्य उपवन।—वन (पु०) राजा के अन्तःपुरोचित वन, राजाओं के महल के भीतर का नज़रबाग़।
प्रमदा तद्० (स्त्री०) उत्तमा स्त्री, रमणीया नारी, सुलक्षणा स्त्री। [रहित ज्ञान, अनुभव।
प्रमा तद्० (पु०) यथार्थ ज्ञान, प्रमिति, प्रमाण, भ्रम
प्रमाण तद्० (पु०) मर्यादा, शास्त्र, निदर्शन, दृष्टान्त, उदाहरण, साक्षी, लेख, प्रसृति, प्रतिपत्ति, मान-नीय, सत्यवादी, नित्य।—पत्र (पु०) निदर्शन पत्र, दृष्टान्त लिपि।
प्रमाणिक तद्० (वि०) प्रामाणिक, जिसे ठीक समझ कर ग्रहण कर सके, मातबर।
प्रमाणित (वि०) प्रमाणद्वारा सिद्ध, निश्चित।
प्रमातामह तद्० (पु०) मातामह के पिता, परनाना, नाना के पिता।
प्रमातामही तद्० (स्त्री०) प्रमातामह की स्त्री, माता-मह की जननी परनानी, नाना की माता।
प्रमाथ तद्० (पु०) प्रमथन, बल द्वारा हरण, विलो-डन, निकालना।
प्रमाथी तद्० (पु०) पीड़नकर्त्ता, मारणकर्त्ता, प्रमथन-शील, देह और इन्द्रिय को दुःख पहुँचाने वाला।
प्रमाद तद्० (वि०) अनवधानता, असावधानी, भ्रम, भूल।
प्रमादिक (वि०) ग़लती करने वाला।—ा (स्त्री०) वह कन्या जिसे किसी ने दूषित कर दिया हो।
प्रमादी तद्० (वि०) प्रमाद विशिष्ट, अनवधानता-युक्त, असतर्क, भ्रान्त स्वभाव। [सिद्ध।
प्रमित तद्० (वि०) ज्ञात, विदित, अवगत, प्रमाण
प्रमिति तद्० (स्त्री०) प्रमा, यथार्थ ज्ञान, सत्यबोध, यथार्थ बोध।
प्रमीला तद्० तन्द्रा, तन्द्री।
प्रमुख तद्० (वि०) प्रधान, श्रेष्ठ, प्रथम, मान्य, मान-नीय, अगुआ।
प्रमुदित तद्० (वि०) हृष्ट, आह्लादित, आनन्दित

प्रमेय तद्० (वि०) उपपाद्य, प्रतिपादन करने के योग्य, प्रमाण साध्य, प्रमाण से सिद्ध किया जाने वाला। [बहुमूत्रता।

प्रमेह तद्० (पु०) रोग विशेष, मेह रोग, मूत्र दोष,

प्रमोचन तद्० (पु०) मोचन, त्याग, उद्धरण, मुक्तकरण, उद्धरण

प्रमोद तद्० (पु०) हर्ष, आह्लाद, उल्लास।—क (पु०) प्रमोद करने वाला, एक प्रकार का अगहन। —न (पु०) विष्णु का नाम। (वि०) हर्ष-कारक, प्रचुर।—न्ति (स्त्री०) उत्पत्ति, शक्ति, अधिकता, प्रचुरता।

प्रयत तद्० (पु०) पवित्र, पूत, शुद्ध, नियमित, तत्पर। [आदर।

प्रयत्न तद्० (पु०) प्रकृष्ट, यत्न, अध्यवसाय, चेष्टा,

प्रयाग तद्० (पु०) तीर्थ विशेष, तीर्थराज, प्रसिद्ध तीर्थ, यहाँ गङ्गा यमुना और गुप्त सरस्वती का सङ्गम है। यहाँ ब्रह्मा जी ने अश्वमेध यज्ञ किये थे। —वाल (पु०) ब्राह्मण विशेष, जो सङ्गम के तट पर दान लेते हैं।

प्रयाण तद्० (पु०) गमन, प्रस्थान, निर्याण, यात्रा।

प्रयास तद्० (पु०) प्रयत्न, श्रम, क्लेश, आयास, चेष्टा, परिश्रम, थकावट।

प्रयुक्त तद्० (वि०) प्रकर्ष युक्त, प्रकृष्ट समाधि युक्त, प्रकृष्ट संयोग युक्त, संयम विशिष्ट।

प्रयोग तद्० (पु०) प्रयुक्ति, अनुष्ठान, व्यवहार, निदर्शन, उदाहरण। [कारी, प्रवर्त्तक, प्रेरक।

प्रयोजक तद्० (पु०) प्रयोगकर्त्ता, नियोजक, नियोग-

प्रयोजन तद्० (पु०) कार्य, हेतु, निमित्त, अभिप्राय, उद्देश्य, मतलब।

प्रयोज्य तद्० (वि०) जिसका प्रयोग किया जा सके। (पु०) भृत्य, चेला, मूलधन।

प्ररोचना तद्० (स्त्री०) प्रवर्त्तना, प्रवर्त्तनार्थ, रोचक कथा, फुसलाहट।

प्ररोह तद्० (पु०) अंकुर, बीजोद्भेद।

प्रलपित तद्० (वि०) कथित, उक्त, मिथ्या उच्चारित, अंडबंड बका हुआ, अटपटाँग कहा हुआ।

प्रलम्ब तद्० (पु०) दैत्य विशेष, दनु का पुत्र, एक समय श्रीकृष्ण, बलराम और गोप बालक खेल रहे थे, वहाँ यह गोप का वेष धर कर गया था। श्रीकृष्ण प्रलम्बासुर की अभिसन्धि समझ कर गोप बालकों से मल्लयुद्ध करने लगे। इस युद्ध में यही होड़ रखा गया था कि जो हार जायगा, वह जीतने वाले को अपने कन्धे पर बैठा कर घुमावेगा, प्रलम्बासुर बलराम के साथ युद्ध में हार कर उनको अपने कन्धे पर बैठाकर ले चला। कुछ दूर ले जाकर प्रलम्बासुर बलराम का वध करना ही चाहता था कि बलराम इतने भारी हो गये जिससे प्रलम्बासुर उनको ले नहीं सका। अन्त में प्रलम्ब अपनी मूर्ति धारण कर उनकी ओर लपका, परन्तु बहुत शीघ्र ही बाहुयुद्ध में बलराम ने उसे मार डाला।

प्रलय तद्० (पु०) कल्पान्त, क्षय, युगान्त, जगत् का नाश, संक्षय, नाश, मृत्यु।—कर्त्ता (पु०) क्षयकारक, विनाशक, महादेव।

प्रलाप तद्० (पु०) अर्नर्थक वचन, उन्मत्तों के समान असङ्गत वचन, बकवाद, अर्थरहित बातचीत।

प्रलेप तद्० (पु०) प्रकृष्ट लेपन, औषधि आदि का लेपन, लेप।

प्रलोभ तद्० (पु०) बड़ा लोभ, विशेष लालच, घूँस, स्पृहा, लालसा, वाञ्छा, अभिलाषा।

प्रलोभन तद्० (पु०) लोभ, लुभाव, लालच।

प्रवचन (पु०) व्याख्या, अर्थ खोलकर बताना।

प्रवञ्चना तद्० (स्त्री०) प्रतारण, ठगाई।

प्रवण तद्० (वि०) नम्र, विनत, झुका हुआ, नत हुआ, नीची भूमि।

प्रवर तद्० (पु०) सन्तान, वंश, श्रेष्ठ, प्रधान, गोत्र।

प्रवर्त्त तद्० (पु०) आरम्भ, लगना, नियुक्त, तत्पर।

प्रवर्त्तक तद्० (पु०) प्रेरक, प्रयोजक, उत्साहदाता, सहायक, उठाने वाला।

प्रवर्त्तन तद्० (पु०) प्रेरण, प्रवृत्ति, आज्ञापन प्रेषण।

प्रवर्त्तित तद्० (पु०) आज्ञापित, प्रेरित, लगाया हुआ।

प्रवर्षण तद्० (पु०) एक पर्वत का नाम, यह पर्वत दक्षिण दिशा में किष्किन्धापुरी के पास है। वनवास के समय वर्षा ऋतु में राम और लक्ष्मण इसी पर्वत पर रहे थे।

प्रवाद तद्० (पु०) प्रसार, चर्चा, निन्दावाद, किंवदन्ती, उड़ती ख़बर ।

प्रवास तद्० (पु०) विदेश, अन्यदेश, परदेश, भिन्न देश, देशान्तर, देशान्तरवास ।

प्रवासन तद्० (पु०) देशान्तर भेजना ।

प्रवासी तद्० (वि०) विदेशी, अन्यदेश वासी, देशान्तर में रहने वाला ।

प्रवाह तद्० (पु०) नदी की धारा, स्रोत, बहाव ।

प्रवाहक तद्० (पु०) गाड़ीवान, गाड़ी हाँकनेवाला । [होना, पेटचलना ।

प्रवाहिका तद्० (स्त्री०) अतीसार रोग, दस्त जारी

प्रविष्ट तद्० (वि०) निविष्ट, घुसा हुआ ।

प्रवीण तद्० (वि०) निपुण, कुशल, दक्ष, चतुर, बुद्धिमान्, सयाना, चालाक ।—ता (स्त्री०) निपुणता, चतुराई ।

प्रवृत्त तद्० (वि०) उद्यत, तत्पर, लगा हुआ ।

प्रवृत्ति तद्० (स्त्री०) कार्य में लगने की इच्छा, यत्न, उपाय, इच्छा, अभिरुचि ।

प्रवेश तद्० (पु०) पैठ, पहुँच, पैठार, पैठाव, रसाई ।

प्रवेशक तद्० (पु०) प्रवेश कर्ता, प्रवेशकारी, पैठने वाला, घुसने वाला । [यशस्वी, भला ।

प्रशंसनीय तद्० (वि०) तारीफ़ के योग्य, प्रशंसापात्र

प्रशंसा तद्० (स्त्री०) श्लाघा, तारीफ़ ।

प्रशम तद्० (पु०) शमता, उपशम, शान्ति, विराम, निवारण । [विरति, निवारण ।

प्रशमन तद्० (पु०) मारण, वध, शमता, प्रशान्ति,

प्रशस्त तद्० (वि०) सुन्दर, स्वच्छ, विस्तृत, परिसर युक्त, प्रशंसनीय, अतिश्रेष्ठ, अति उत्तम ।

प्रशस्ति तद्० (स्त्री०) उत्तमता, गुणस्तुति, अभिनन्दन, वे विशेषण जो पत्र के आरम्भ में जिसके नाम से पत्र लिखा जाय, उसके लिये लिखे जाते हैं ।

प्रशान्त तद्० (वि०) अत्यन्त शमतावाला, अतिधीर ।

प्रश्न तद्० (पु०) जिज्ञासा, पूछना ।

प्रश्रय तद्० (पु०) प्रणय, स्नेह, स्पर्द्धा, प्रगल्भता ।

प्रस्राव तद्० (पु०) पेशाब, मूत्र ।

प्रश्रित तद्० (वि०) प्रणयी, विनीत, स्नेहान्वित, एक हाथ में आने योग्य द्रव्य ।

प्रश्लथ तद्० (वि०) शिथिल, अशक्त । [दीर्घ निश्वास ।

प्रश्वास तद्० (पु०) नासिका से वायु का निकालना,

प्रष्टा तद्० (वि०) प्रश्नकर्त्ता, पृच्छक, जिज्ञासु ।

प्रष्ठ तद्० (वि०) अग्रगामी, श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, अगुआ ।

प्रष्ठा तद्० (पु०) पीठ, अगुआ, मुख्य, श्रेष्ठ ।

प्रसक्त तद्० (वि०) प्रसङ्ग विशिष्ट, अतिशय अनुरक्त, अनुरागी, प्राप्त, उपस्थित ।

प्रसङ्ग तद्० (पु०) सङ्गतिविशेष, प्रसक्ति, प्रस्ताव, मैथुन, सम्बन्ध, उद्देश, उपलक्ष, अवसर ।

प्रसन्न तद्० (पु०) सन्तुष्ट, दयान्वित, निर्मल, स्वच्छ, प्रफुल्ल ।—चित्त (पु०) सन्तुष्ट चित्त, दयालु, अनुग्राहक ।—ता (स्त्री०) सन्तोष, प्रसाद, प्रफुल्लता, निर्मलता, स्वच्छता ।—मुख (वि०) जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट हो, हँसता हुआ चेहरा ।

प्रसाद तद्० (पु०) दया, कृपा, प्रसन्नतापूर्वक दी हुई वस्तु, प्रसन्नता, अनुग्रह, काव्य का गुण विशेष, स्वास्थ्य, सुस्थता, देवनिवेदित द्रव्य, नैवेद्य, गुरु की जूठन, कृपा ।

प्रसव तद्० (पु०) गर्भ मोचन, जनना, फल, कुसुम, फूल ।—गृह (पु०) सूतिकागृह, सौरी ।

प्रसर तद्० (पु०) प्रकृष्ट रूप से सञ्चार, विस्तार, प्रणय, वेग, समूह । [फैलाव ।

प्रसरण तद्० (पु०) सेना आदि का चारों तरफ़

प्रसल (पु०) हेमन्तऋतु ।

प्रसादन तद्० (पु०) प्रसन्नता करण, सेवन, मनाना, प्रसन्न करना ।

प्रसादी तद्० (वि०) प्रसन्नता युक्त, कृपा विशिष्ट, देव निवेदित अन्न ।

प्रसाधन तद्० (पु०) निष्पादन, सम्पादन, वेश रचना ।

प्रसाधनी तद्० (स्त्री०) कङ्कतिका, कँगही ।

प्रसाधिका तद्० (स्त्री०) वेश कारिणी, वेश रचना करने वाली, शृंगार करने वाली ।

प्रसार तद्० (पु०) प्रसरण, विस्तार, फैलाव, प्रकरण ।

प्रसारण तद्० (पु०) विस्तार करण, पसारना, बिछाना, पञ्चविध कर्म के अन्तर्गत एक प्रकार का कर्म ।

प्रसारित तद्० (वि०) विस्तारित, विस्तृत, फैलाया हुआ ।

प्रसारी (वि०) फैलने वाला।
प्रसित (स्त्री०) पीव, मवाद।
प्रसिति (स्त्री०) रस्सी, रश्मि, ज्वाला, लपट।
प्रसिद्ध तद्० (वि०) ख्यात, प्रख्यात, उजागर, विख्यात, नामलब्ध, प्रतिष्ठित, प्रचलित, भूषित।
प्रसिद्धि तद्० (स्त्री) ख्याति,प्रचार,भूषा, अलङ्कार।
प्रसीद तद्० (क्रि०) प्रसन्न हो, कृपा करो।
प्रसुप्त (वि०) खूब सोया हुआ। —प्ति (स्त्री०) गाढ़ निद्रा, नींद।
प्रसू तद्० (स्त्री०) माता, जननी, अम्बा।
प्रसूत तद्० (वि०) उत्पन्न, जात, पैदा।
प्रसूता तद्० (स्त्री०) जच्चा, प्रसवकारिणी, जिसने बच्चे उत्पन्न किये हैं।
प्रसूति तद्० (स्त्री०) प्रसव, उद्भव, उत्पत्ति, जन्म, जन्माना, दक्ष की पत्नी और सती की माता का नाम, दक्ष यज्ञ का विनाश करके जब महादेव ने दक्ष को मार डाला था, तब उन्हीं की प्रार्थना से महादेव ने दक्ष को पुनः जीवित किया था।
प्रसूतिका (स्त्री०) प्रसूता,वह स्त्री जिसके बच्चा हुआ हो।
प्रसून तद्० (पु०) पुष्प, फूल, कुसुम।
प्रसृत (वि०) फैला हुआ, बढ़ा हुआ, भेजा हुआ, विनीत, तत्पर, लगा हुआ, प्रचलित, लंपट। —ज (पु०) व्यभिचार से उत्पन्न पुत्र।
प्रसेक (पु०) सेचन, निचोड़।
प्रसेद (पु०) पसीना।
प्रसेव (पु०) बीनकी तूंबी, थैला।
प्रस्कन्दन (पु०) फलाँग, कूदन,शिव,विरेचन,अतीसार।
प्रस्कन्न (वि०) पतित, गिरा हुआ।
प्रस्खलन (पु०) स्खलन, पतन, पत्ते का विछावना।
प्रस्तर तद्० (पु०) पाषाण, पत्थर, पाथर, शिला, उपल, पल्लवादि रचित शय्या। —मय (पु०) पाषाणमय, पथरीला।
प्रस्तरण (पु०) बिछावा, बिछौना।
प्रस्तार (पु०) फैलाव, विस्तार, परत, समतल।
प्रस्ताव तद्० (पु०) अवसर, प्रसङ्ग, स्तुति, प्रकरण, वृत्तान्त कथा, कथानुष्ठान।
प्रस्तावना तद्० (स्त्री०) आरम्भ,वाक्यानुष्ठान,भूमिका, अवतरणिका, मुख्य वक्तव्य के पहले का वक्तव्य।
प्रस्ताविक तद्० (वि०) समयानुसार, यथासम्भव
प्रस्तावित तद्० (गु०) कथित, उल्लिखित, कृत, विचारित, कर्त्तव्य रूप से निर्धारित।
प्रस्तुत तद्० (वि०) प्रकरण प्राप्त, प्राकरणिक, प्रासङ्गिक, निष्पन्न, प्रकर्ष, स्तुति युक्त, उपस्थित प्रतिपन्न, उद्यत।
प्रस्थ तद्० (वि०) प्रकृष्ट स्थिति विशिष्ट। (पु०) परिमाण विशेष, तौल, एक सेर, पर्वत का एक देश, पर्वत की समतल भूमि।
प्रस्थान तद्० (पु०) गमन, यात्रा, प्रयाण, निर्याण।
प्रस्थापन तद्० (पु०) प्रेरण, प्रेषण, पठाना,भेजना।
प्रस्थापित तद्० (वि०) प्रेषित, प्रेरित, अतिसुन्दर रूप से स्थापित।
प्रस्नुषा (स्त्री०) पोते की स्त्री, पतोहू।
प्रस्फुट (वि०) खिला हुआ, विकसित।
प्रस्फुटित तद्० (वि०) प्रफुल्लित, प्रकाशित, विकसित।
प्रस्रवण तद्० (पु०) उत्तम रूप से बहना, पर्वत का निर्झर, एक पर्वत का नाम।
प्रस्राव (पु०) क्षरण, झरना, पेशाब।
प्रस्रव तद्० (पु०) मूत्र, मूत, पेशाब।
प्रस्वेद तद्० (पु०) अतिशय घर्म, अधिक पसीना।
प्रहर तद्० (पु०) दिन के आठ भाग का एक भाग, चार घड़ी।
प्रहरी तद्० (पु०) यामिक, पहरुआ, पहरेदार, [चौकीदार।
प्रहर्ष तद्० (पु०) अतिशय आह्लाद, अत्यन्त हर्ष।
प्रहर्षिणी तद्० (स्त्री०) त्रयोदशाक्षर छन्द विशेष।
प्रहसन तद्० (पु०) परिहास, उपहास, आक्षेप, रूपक विशेष, नाटक का एक भेद।
प्रहस्त तद्० (पु०) विस्तृत अङ्गुलि वाला हाथ, थापड़, थप्पड़, तवका, रावण का एक सेना पति का नाम।
प्रहार तद्० (पु०) आघात, मारण।
प्रहारी तद्० (वि०) मारणकर्त्ता, मारने वाला।
प्रहित तद्० (वि०) क्षिप्त, निरस्त, प्रेषित, प्रेरित।
प्रहीण (वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
प्रहुत (पु०) बलिवैश्वदेव, भूत, यज्ञ।
प्रहृत (वि०) बजाया हुआ, फेंका हुआ, फैलाया हुआ, उठाया हुआ, मारा हुआ। (पु०) प्रहार चोट, एक ऋषि का नाम।

प्रहृष्ट तद्० (वि०) सन्तुष्ट, उल्लसित, आनन्दित। —मना (वि०) सन्तुष्ट चित्त।

प्रहेलिका तद्० (स्त्री०) दुर्विज्ञेय प्रश्न, कूटार्थ भाषित, दुरूह वाक्य, पहेली, कुतूहल।

प्रह्लाद तद्० (पु०) दैत्यपति हिरण्यकशिपु का पुत्र। ये परम विष्णु भक्त थे, बाल्यावस्था ही से इनकी विष्णुभक्ति प्रकाशित हो गयी थी। दैत्यराज ने अपने पुरोहित षण्ड और अमरक को प्रह्लाद के पढ़ाने के लिये नियुक्त किया था। प्रह्लाद की विष्णुभक्ति देख कर बेचारे ब्राह्मण रोज़ी जाने के भय से काँपने लगे। अपना बचाव करने के लिये उन लोगों ने हिरण्यकशिपु से कह दिया कि राजपुत्र नास्तिक हो गया। हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को बहुत समझाया, परन्तु कुछ फल नहीं हुआ। हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को कुपुत्र समझ कर उसे मार डालने के लिये अनेक प्रयत्न किये, परन्तु प्रह्लाद नहीं मरे। एक दिन प्रह्लाद अपने पिता के सामने भगवान् का गुण कीर्तन करने लगे। प्रह्लाद ने कहा परमेश्वर व्यापक है, उनकी प्रभा चारों ओर फैली हुई है। हिरण्यकशिपु ने कहा तो इस खम्भे में तेरा ईश्वर क्यों नहीं है? प्रह्लाद ने खम्भे की ओर देख कर भगवान् को प्रणाम किया; परन्तु हिरण्यकशिपु खम्भे में भगवान् को नहीं देख सका था, अतएव उसने खम्भे पर पदाघात किया। बस, वह खम्भा बीच से फट गया, वहीं से नृसिंहरूपधारी भगवान् प्रकट हुए और उन्होंने दैत्यकुल का नाश कर दिया। देव पितर ऋषि आदि सभी वहाँ उपस्थित हुए और उन लोगों ने भगवान् की स्तुति की, परन्तु नृसिंह का क्रोध शान्त नहीं हुआ। अन्त में प्रह्लाद उनकी स्तुति करने लगा, भगवान् ने कहा, प्रह्लाद मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम वर माँगो, प्रह्लाद ने कहा कि महाराज, आप मुझे वर का लालच न दिखावें, हम कामासक्त हैं। अतएव हमको वर न चाहिये, यदि आप वर देना चाहते ही हों तो यही वर दीजिये कि मेरे हृदय में कभी कामना उत्पन्न न हो। भगवान् ने वही वर दिया। पुनः भगवान् के कहने से प्रह्लाद ने दूसरा वर यह माँगा कि मेरे पिता का अपराध क्षमा हो। भगवान् ने "एवमस्तु" कह कर पितृशोक-कातर प्रह्लाद को आश्वासित किया।

प्रह्व (वि०) नम्र, विनीत, आसक्त।

प्रह्वलीका (स्त्री०) पहेली।

प्राक् तद्० (अ०) पूर्व, आगे, पहले, प्रथम, आद्य, आदि, प्रारम्भ। —तन (पु०) पुराना, प्राचीन, पहला। —काल (पु०) पूर्वकाल, प्राचीन समय।

प्राकाम्य तद्० (पु०) शिव के अष्टविध ऐश्वर्यों के अन्तर्गत ऐश्वर्य विशेष, यथेष्टता, प्रचुरता स्वेच्छानुसार।

प्राकार तद्० (पु०) ईंटों की बनी दीवार, चार दीवार, कोट की भीत, नगर के चारों ओर की दीवार।

प्राकृत तद्० (वि०) प्रकृत सम्बन्धी, नीच, अधम, अन्त्यज, भाषा विशेष, वास्तविक, वस्तुतः, स्वाभाविक। —ज्वर (पु०) वर्षा, शरत् और वसंत ऋतु में क्रम से वात, पित्त और कफ से उत्पन्न ज्वर। —प्रलय (पु०) प्रलय विशेष, प्रकृति का नाश, महाप्रलय। — भाषा (स्त्री०) भाषा विशेष, संस्कृत का एक भेद। —शत्रु (पु०) एक देश पर अपना अपना अधिकार चाहने वाले राजा, स्वाभाविक शत्रु। [मामूली, भौतिक, लौकिक, नीच।

प्राकृतिक (वि०) प्रकृति सम्बन्धी, स्वाभाविक,

प्राखर्य तद्० (पु०) प्रखरत्व, तीक्ष्णता।

प्रागभाव तद्० (पु०) संसर्गाभाव विशेष, विनाश भावत्व, सम्भावना, किसी वस्तु के उत्पन्न होने के पहले का अभाव।

प्रागल्भ्य तद्० (पु०) प्रगल्भता, अहङ्कार, अभिमान, दर्प, गर्व, घमण्ड, व्यापकता, औद्धत्य, स्त्रियों का स्वाभाविक भाव।

प्राघूर्णिक तद्० (पु०) पाहुन, अतिथि, अभ्यागत।

प्राची तद्० (स्त्री०) पूर्व दिशा, सूर्योदय दिक्, पूर्व दिक्, वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है।

प्राचीन तद्० (पु०) पूर्व देश का उत्पन्न, पूर्व दिशा का उत्पन्न, पूर्वकाल का उत्पन्न, पुरातन, पूर्वकालीन, वृद्ध। —गाथा (स्त्री०) प्राचीन कथा, पुरातन इतिहास। —ता (स्त्री०) पूर्वकालीनता, प्राचीनत्व, पुरातनत्व, वृद्धावस्था। —बर्हि (पु०) राजा विशेष।

प्राचीर तद्० (पु०) बाहर का कोट, प्राकार, चार-दिवारी। [मनुष्य, बहुतायत।
प्राचुर्य तद्० (पु०) प्रचुरता, अधिकता, बाहुल्य,
प्राचेतस् (पु०) प्राचीन बर्हि के पुत्र, प्रचेतागण, वाल्मीकि मुनि, विष्णु, दक्ष, वरुण के पुत्र का नाम, प्रचेता के वंशज।
प्राच्य तद्० (पु०) शरावती नदी के पूर्व दक्षिणदेश। (वि०) पूर्वदेशीय, पूर्वदेश-उत्पन्न।
प्राजाक (पु०) रथ चलाने वाला, सारथी।
प्राजापत्य तद्० (पु०) द्वादश दिन का व्रत, रोहिणी नक्षत्र, प्रयाग, विवाह विशेष। [दक्ष, निपुण।
प्राज्ञ तद्० (वि०) पण्डित, बुद्धिमान, अभिज्ञ, विज्ञ,
प्राज्य तद्० (वि०) प्रचुर, यथेष्ट, बहु, अधिक।
प्राञ्जल तद्० (वि०) सरल, ऋजु, सीधा।
प्राञ्जलि तद्० (स्त्री०) संयुक्त करद्वय, अञ्जलिपुट।
प्रान्त (पु०) अंत, शेष, सीमा, छोर, दिशा, देश का भाग, प्रदेश।—भूमि (स्त्री०) किसी वस्तु का अन्तिम भाग, किनारा, छोर। [न्याय कर्ता।
प्राड्विवाक तद्० (पु०) व्यवहार द्रष्टा, विचारक,
प्राण तद्० (पु०) हृदयस्थ वायु, जीव, अनिल वायु, निश्वास, ब्रह्मा, प्रजापति, स्वनाम ख्यात वणिक द्रव्य।—त्याग (पु०) जीवन विसर्जन, जीवन त्याग, मृत्यु, मरण।—दण्ड (पु०) वध दण्ड, प्राण नाशक दण्ड।—दाता (पु०) जीवन दाता, प्राण रक्षक।—नाथ (पु०) स्वामी, नाथ, पति, प्रभु।—पण (पु०) प्राणत्याग, प्राण त्याग पर्यंत प्रतिज्ञा, अत्यन्त आयास।—प्रतिष्ठा (स्त्री०) प्रतिमा आदि में देवत्वकरण, जीव स्थापन।—प्रिय (वि०) प्रियतम, प्राण तुल्य प्रिय।—प्रयंत्राय (पु०) कर्मेन्द्रिय सहित प्राण पञ्चक।—सम (वि०) प्राण तुल्य, प्राण सदृश।—समा (स्त्री०) जाया, भार्या, पत्नी। [मृत्यु।
प्राणान्त तद्० (पु०) प्राणावसान, प्राण शेष, मरण,
प्राणायाम तद्० (पु०) योगाङ्ग विशेष, श्वास विशेष, रेचक, पूरक और कुम्भक नामक प्राणों के दमन करने के उपाय, श्वाँस को ब्रह्माण्ड में ले जाने की क्रिया। [जीव, शरीरी, देही, जीवधारी।
प्राणी तद्० (वि०) प्राण विशिष्ट, मनुष्य, सचेतन
प्राणेश या प्राणेश्वर तद्० (पु०) पति, स्वामी, प्राणों का ईश्वर।
प्रातः तद्० (पु०) प्रभात, विहान, सूर्योदय के समय का तीन मुहूर्त काल।—कर्म,—कृत्य (पु०) प्रातःकाल किया जाने वाला कर्म, सन्ध्यावन्दना-दिकों, सबेरे करने के काम।—काल (पु०) सूर्योदय के अनन्तर छः दण्ड काल।—क्रिया (स्त्री०) प्रातःकाल का कर्तव्य कर्म।—सन्ध्या (स्त्री०) प्रातःकाल की संध्या, प्रातःकाल को किये जाने वाली वैदिक मन्त्रोपासना।
प्रातराश तद्० (पु०) प्रातःकालीन भोजन, प्रातर्भोजन, जलपान, कलेवा। [घृणा, शत्रुता।
प्रातिकूल्य तद्० (पु०) वैपरीत्य, विरुद्धाचरण, विप-
प्रादुर्भाव तद्० (पु०) आविर्भाव, उदय, प्रकाश, महिमा। [वितस्ति, बीता, बालिश्त।
प्रादेश तद्० (पु०) तर्जनी सहित विस्तृत अङ्गुष्ठ,
प्राधा तद्० (स्त्री०) प्रजापति महर्षि कश्यप की भार्या, गन्धर्व और अप्सरा इन्हीं के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं।
प्राधान्य तद्० (पु०) प्रधानता, प्रधानत्व, श्रेष्ठता, मुख्यता।
प्रान्तर तद्० (पु०) दूर, शून्य पथ, दुर्गम पथ, छाया जल आदि रहित स्थान, उजाड़ स्थान, वीरान, जङ्गल।
प्रापक तद्० (पु०) प्रापककर्ता, पहुँचाने वाला।
प्रापण तद्० (पु०) प्राप्ति, पावना, पहुँचाना, मिलना।
प्राप्त तद्० (वि०) लब्ध, आसादित, मिलित, प्रख्यापित।—काल (पु०) निर्दिष्ट काल, उपयुक्त समय। [धनादि वृद्धि।
प्राप्ति तद्० (स्त्री०) पाना, लाभ, अधिगम, उपार्जन,
प्राप्य तद्० (वि०) प्राप्तव्य, प्रापणीय।
प्रामाणिक तद्० (वि०) अति मान्य सिद्धान्त, यथार्थ, सत्य, प्रमाणयुक्त। [प्रमाण सिद्ध।
प्रामाण्य तद्० (पु०) प्राह्यत्व, ग्रहण करने योग्य,
प्रायः तद्० (अ०) बाहुल्य, बहुधा, कभी कभी, लगभग, क़रीब। [करने वाले कर्म।
प्रायश्चित्त तद्० (पु०) पापनाशन कर्म, पापक्षय
प्रारब्ध तद्० (पु०) पूर्वानुष्ठित कर्म, अदृष्ट, प्राक्तन-कर्म, पूर्व कर्म, भाग्य। [अनुष्ठान।
प्रारम्भ तद्० (पु०) उद्यम करने के

प्रार्थना तद्० (स्त्री०) याञ्चा निवेदन रीति से माँगना, विनय से माँगना ।
प्रार्थित तद्० (वि०) याचित, निवेदित, विज्ञापित, वाञ्छित, जाँचा, माँगा ।
प्रालब्ध तद्० (स्त्री०) प्रारब्ध, ललाट, भाग्य, अदृष्ट ।
प्रावृत तद्० (पु०) घूँघट, ओढ़नी ।
प्रावृट् (स्त्री०) वर्षाकाल । [राजाओं के रहने का भवन।
प्रासाद तद्० (पु०) मन्दिर, मकान, देवता और
प्रिय तद्० (वि०) इष्ट, स्नेह-पात्र, प्रियतम, प्रेमी, प्रणयी ।—तम (पु०) अत्यन्त प्रिय, पति ।—वादी (वि०) मिष्टभाषी, प्रशंसक, स्तुतिकर्त्ता ।
प्रिया तद्० (स्त्री०) प्रेमास्पदा नारी, प्रियतमा, प्रणयिनी, प्यारी, प्रेयसी, वल्लभा ।
प्रीत तद्० (वि०) तुष्ट, सन्तुष्ट, प्रेमपात्र, प्रिय ।
प्रीति तद्० (स्त्री०) प्रेम, स्नेह, प्यार, प्रणय ।—कर (वि०) प्रेमजनक ।—कारी या कारक (पु०) प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला ।—पात्र (पु०) प्रेमी, प्रेमभाजन ।—भोज (पु०) वह भोज या ज्योनार जिसमें इष्ट मित्र संमिलित हों ।
प्रीत्यर्थ (अव्य०) प्रसन्नता के लिये ।
प्रेङ्खन तद्० (पु०) हिंडोला, डोला ।
प्रेक्षक (पु०) देखने वाला, दर्शक ।
प्रेक्षण (पु०) आँख, देखने की क्रिया ।
प्रेक्षणीय (वि०) देखने योग्य ।
प्रेक्षा (स्त्री०) देखना, दृष्टि, निगाह, शोभा, प्रज्ञा, बुद्धि ।
प्रेंखा (पु०) गति, चाल ।
प्रेत तद्० (पु०) भूत, पिशाच, योनि विशेष, मृतक ।—कर्म (पु०) अन्त्येष्टि क्रिया, श्राद्ध ।—नदी (स्त्री०) वैतरणी नदी ।
प्रेतनी दे० (स्त्री०) भूतनी, डाँकनी, डायन, चुड़ैल ।
प्रेम तद्० (पु०) स्नेह, प्रियता, हार्द, प्रणय, प्रीति ।—भक्ति (स्त्री०) स्नेहयुक्त भगवत्सेवा, भगवान् में एकान्त प्रीति । [भाजन, प्रेमी, प्रिय ।
प्रेमास्पद तद्० (वि०) स्नेह भाजन, प्रणयी, प्रणय-
प्रेमा (पु०) स्नेह, स्नेही, इन्द्र, वायु वृत्त विशेष ।—लाप (पु०) प्रेमपूर्वक बातचीत ।—लिङ्गन (पु०) प्रेम पूर्वक गले लगाना ।
प्रेमिक (पु०) प्रेमी, प्रेम करने वाला ।
प्रेमी तद्० (वि०) प्रेमयुक्त, स्नेही, प्यारा, स्नेह भाजन ।
प्रेयसी तद्० (स्त्री०) प्रियतमा नारी, दयिता, कान्ता, वल्लभा, प्रिया, प्यारी, स्त्री । [भेजने वाला ।
प्रेरक तद्० (पु०) प्रेरणकर्त्ता, प्रेषक, पठाने वाला,
प्रेरण तद्० (पु०) प्रेषण, पठाना, भेजना ।
प्रेरणा तद्० (स्त्री०) विधि, आज्ञा, आदेश ।
प्रेरयिता (पु०) भेजने वाला, उभाड़ने वाला ।
प्रेरित तद्० (वि०) प्रेषित, नियोजित, पठाया, भेजा हुआ, नियुक्त किया गया ।
प्रेषित (वि०) प्रेरित, भेजा हुआ, प्रेरणा किया हुआ ।
प्रेष्ठ तद्० (वि०) अतिशय प्रिय, अत्यन्त स्नेह पात्र, अत्यन्त वल्लभ । [दास, भृत्य, सेवक ।
प्रेष्य तद्० (वि०) प्रेरणीय, भेजने योग्य । (पु०)
प्रैष (पु०) कष्ट, दुःख, मर्दन, उन्माद, भेजना ।
प्रैष्य (पु०) दास, सेवक । [कहा हुआ ।
प्रोक्त तद्० (वि०) कथित, उत्तम प्रकार से कथित,
प्रोक्षण (पु०) पानी छिड़कना, यज्ञ में वध के पूर्व यज्ञपशु पर जल छिड़कना, वध संस्कार विशेष ।
प्रोत (वि०) भली भाँति मिला हुआ, छिपा हुआ । (पु०) कपड़ा । [उद्योग ।
प्रोत्साह तद्० (पु०) अतिशय उत्साह, अत्यधिक
प्रोषित तद्० (वि०) प्रवासगत, विदेशस्थ, परदेशी ।—पतिका (स्त्री०)विदेशस्थ पति की स्त्री, नायिका, विशेष, यथा—

आको पिय परदेश में, विरह विकल तिय होय ।
प्रोषितपतिका नायिका, ताहि कहत सब कोय ॥
रसराज ।

प्रौहित तद्० (पु०) पुरोहित, पुरोधा ।
प्रौष्ठपद (पु०) पूर्व भाद्रपद और उत्तर भाद्रपद नक्षत्र, भाद्रमास ।—ा (स्त्री०) पूर्वा भाद्रपद और उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र ।—ी(स्त्री०) भाद्रमास की पूर्णमासी।
प्रौढ़ तद्० (वि०) प्रवृद्ध, प्रगल्भ, निपुण, विवाहित, यौवनावस्था के बाद की अवस्था ।—ता(स्त्री०)प्रौढ़त्व।
प्रौढ़ा तद्० (स्त्री०) तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की स्त्री, नायिका विशेष । यथाः—

निज पति सों रति केलि की, सकल कलानि प्रवीन ।
तासों प्रौढ़ा कहत हैं, जे कविता रसलीन ॥
रसराज ।

प्रौढ़ि तत्० (स्त्री०) सामर्थ्य, उत्साह, प्रगल्भता, उद्यम, उद्योग, अध्यवसाय।—वाद (पु०) प्रभुता के सहित विवाद।
प्लव तत्०(पु०) मेढ़, वानर, चाण्डाल, प्लुतगति, उदप्लव, भूमि, जलकाक, पानी, कौड़ी, नौका, नाव, तरणि।
प्लवङ्गम तत्० (पु०) वानर, कपि।
प्लावन तत्० (पु०) जलमग्न, डूबा।
प्लीहा तत्० (स्त्री०) रोग विशेष, पिलही, वाय तिल्ली।
प्लुत तत्० (पु०) स्वर विशेष, अतिशय दीर्घ स्वर।
प्लुति तत्० (स्त्री०) कूदना, फाँदना, उछलना।
प्वात (पु०) पक्षी, पित्त जो मुँह से गिरता है।
प्लोष (पु०) दाह, जलन।

फ

फ यह व्यञ्जन का बाइसवाँ अक्षर है, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है इस कारण इस वर्ण की ओष्ठ्य संज्ञा है।
फँदना दे० (क्रि०) फसना, अटकना, उलझना, रुकना।
फँदलाना दे० (क्रि०) भुलाना, भुलावा देना, फुसलाना।
फँदा दे० (पु०) फाँसी, जकड़ी, उलझन, अटकन।
फँसना दे० (क्रि०) उलझना, अटकना, बझना, फन्दे में फँसना।
फँसाव दे० (पु०) उलझाव, अटकाव।
फँसियारा दे० (पु०) बटमार, ठग, जल्लाद।
फकनी दे० (स्त्री०) फकी।
फकड़ी दे० (स्त्री०) अनादर, अपमान, तिरस्कार।
फकिया दे० (स्त्री०) फाँक, खण्ड, टुकड़ा, अंश भाग।
फकड़िया दे० (पु०) मसखरा, बकवकिया, बकवादी, गप्पी, बातूनी।
फकोड़ियास दे० (स्त्री०) बे सिर पैर की बात, अनर्थक बात, बिना प्रयोजन की कथा, ऊटपटाँग बात।
फक्क तत्० (पु०) दुराचार, दुराचारी।
फक्कड़ दे० (वि०) निडर, उच्छृङ्खल, दुष्ट, बखेड़िया, झगड़ालू, लड़ाकू। [वितण्डा।
फक्का दे० (पु०) पक्षा, पतला, पानी सा, पूर्वपक्ष,
फक्काक (वि०) व्यर्थ, बेफायदा।
फक्किका तत्० (स्त्री०) लपेट की बात, असद्व्यवहार, धोखा, भुलावा, मिथ्या, न्याय सम्बन्धी व्याख्या।
फक्की दे० (स्त्री०) फँकी, दवा की मात्रा।
फगुनहट दे० (स्त्री०) फागुन की हवा।
फगुआ, फगुवा दे० (पु०) होली, होली का व्यवहार।
फङ्का, फँका दे० (पु०) कवल, ग्रास, फकाव।
फङ्की, फँकी दे० (स्त्री०) फकनी।
फङ्गा दे० (पु०) कीट, कीड़ा, पतङ्ग।
फजर (स्त्री०) सबेरा, प्रात काल।
फजल (पु०) कृपा, अनुग्रह।
फजीलत (स्त्री०) उत्कृष्टता।
फजीहत या फजीहती (स्त्री०) दुर्दशा, दुर्गति।
फजूल (वि०) व्यर्थ।
फट दे० (वि०) प्रकाश, प्रात, विकसित, फूला हुआ, प्रफुल्लित। (अ०) फटकार, तिरस्कार, अनादर, मन्त्रास्त्र।
फटक तत्० (पु०) स्फटिक, प्रस्तर विशेष। (क्रि०) पछोर।
फटकन दे० (स्त्री०) पछोरन, अन्नकण।
फटकना दे० (क्रि०) पछोरना, अन्न से कण निकालना।
फटकार दे० (पु०) तिरस्कार, शाप।
फटकरी या फटकिरी दे० (स्त्री०) फिटकरी, क्षार विशेष।
फटकी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का जाल जिससे पक्षी पकड़े जाते हैं, व्याध का घर। पिंजरा।
फटना दे० (क्रि०) टूटना, टुकड़े होना, तड़कना, दो खण्ड होना।
फटफटाना दे० (क्रि०) फड़फड़ाना, व्याकुल होना, हाथ पैर धुनना, विवश होने के कारण उछलना कूदना, छटपटाना।
फटा दे० (वि०) छिद्रित, फाँकदार, दरका हुआ।
फटाक दे० (अ०) शीघ्र, तुरत, तुरन्त, उसी समय, तत्क्षण, तत्काल।
फटाका दे० (पु०) धड़ाका, बन्दूक आदि का शब्द।
फटाना दे० (क्रि०) अलग कराना, पृथक् कराना, टुकड़े कराना, चिरवाना।

फटाव दे० (पु०) बिलगाव, भिन्नता, भेद, अलगाव।
फटिक तद्० (पु०) पाषाण विशेष, स्फटिक, बिल्लौरी पत्थर।
फड़ दे० (पु०) द्यूत स्थान, जुवा घर।
फड़क दे० (स्त्री०) स्फुरण, रह रह कर फरकना।
फड़कना दे० (क्रि०) स्फुरण होना, फुरफुराना, वायु के कारण अङ्गों का ईषत् कम्पन, फरकना।
फड़की दे० (स्त्री०) ओट, व्यवधान, अन्तर, आड़।
फड़फड़ाना दे० (क्रि०) फटफटाना, तड़फना, छट-पटाना। [ढीठा, बकवादी।
फड़फड़िया दे० (वि०) भड़भड़िया, जल्दबाज, धृष्ट,
फड़ाना दे० (क्रि०) चिरवाना, चिराना, फड़वाना।
फड़िङ्गा, फड़िंगा दे० (स्त्री०) झिल्ली, झींगुर, एक प्रकार का कीट।
फड़िया दे० (पु०) पैकार, बिसाती, खरीद कर बेचने वाला, व्यापारी, फड़बाज, जुए के अड्डे का मालिक।
फण तद्० (पु०) साँप का चौड़ा मस्तक, फण्रा, फन।
—धर (पु०) नाग, सर्प, साँप।
फणिज्झक तद्० (पु०) छोटा पत्ता, तुलसीदल।
फणिपति तद्० (पु०) सर्पराज, शेष, अनन्त, वासुकी।
फणी तद्० (पु०) सर्प, साँप, नाग, पद्मर, कील।
फणीन्द्र, फणीश तद्० (पु०) सर्पराज, फणिपति, वासुकी, अनन्त। [वाला छोटा कीट।
फतिङ्गा, फतिंगा दे० (पु०) पतङ्ग, पतंग, उड़ने
फदफदाना दे० (क्रि०) फदफद करना, उबलना, बलब-लाना, छोटे छोटे दाने पड़ना। [का मस्तक, हुनर।
फन दे० (पु०) फण, नाग का मुँह, नाग जाति के सर्प
फनगा दे० (पु०) शंखफोड़ा, टिड्डी, कीट विशेष।
फनफनाना दे० (क्रि०) फुफकारना, फुफकार छोड़ना, उत्तेजित होना।
फनि या फनी दे० देखो फन।
फनिक दे० (पु०) सर्प, साँप, फन वाला।
फनीश दे० (पु०) सर्पराज, नागेश, साँप।
फफसा दे० (वि०) फूला हुआ, फीका, फोफसा।
फफून्दना, फफूँदना (क्रि०) सड़ना, भुसना।
फफून्दा, फफूँदा (पु०) किसी वस्तु को सील में रखने से उस पर जो बदबूदार सफेदी लग जाती है, उसे फफूँदा कहते हैं।
फफून्दी, फफूँदी दे० (स्त्री०) सड़ाइन, गुमसहाट।
फफोला दे० (पु०) छाला, स्फोट, स्फोटक, पल्का, फलका। [चिन्ता, व्याधि, मानसी व्यथा।
फफोले फूटना दे० (वा०) मानसिक दुःख, मन की
फफोले दिल के फोड़ना दे० (वा०) मन की पूरी करना, गुब्बार निकालना, इच्छा पूर्ण करना।
फब दे० (स्त्री०) शोभा, मनोहरता, रमणीयता, रम्यता।
फबकना दे० (क्रि०) पनपना, डाल निकलना, शाखा फूटना, कल्ला फूटना।
फबता दे० (वि०) योग्य, सजता, ठीक, सुहाना।
फबतीकहना दे० (वा०) घटती हुई बातें कहना, चुटकुला छोड़ना, हँसी करना, चुहल करना, किसी की शोभा को दूषना।
फबन दे० (स्त्री०) शोभा, शृङ्गार, सजावट, छाजन।
फबना दे०(क्रि०) सोहना, शोभना, शोभा देना या पाना।
फवि (स्त्री०) फबन, छवि शोभा। [रमणीय।
फबीला दे० (वि०) सजीला, शोभायमान, रम्य,
फर दे० (पु०) फल, भाला की नोक, फलक।
फरकना दे० (क्रि०) फड़कना, काँपना, स्फुरण होना, फुरफुराना, थरथराना।
फरक (पु०) अलगाव, अन्तर, पार्थक्य। [फड़क।
फरक (स्त्री०) फरकने की क्रिया या भाव, चञ्चलता,
फरकि दे० (क्रि०) फरक कर, थर्रा कर, थरथरा कर।
फरचा दे० (पु०) परिष्कार, निष्पत्ति, मेघों का फटना।
फरचाना दे० (क्रि०) आज्ञा देना, चुकाना।
फरछा दे० निर्मल, स्वच्छ, शुद्ध। [शोधना, मलना।
फरछाना दे० (क्रि०) स्वच्छ करना, निर्मल करना,
फरजन्द (पु०) पुत्र, लड़का, बेटा।
फरजी (पु०) शतरंज का एक मोहरा।
फरफन्द दे० (पु०) छल, कपट, धोखा, दुष्टता।
फरफन्दिया दे० (वि०) छली, कपटी, धोखेबाज।
फरमा (पु०) ढाँचा, डौल, कागज़ का पूरा छपा हुआ तख्ता। [या बनाने के लिए दी जाती है।
फरमाइश (स्त्री०) आज्ञा खास कर किसी चीज़ लाने
फरमान (क्रि०) राजकीय आज्ञापत्र।
फरमाना (क्रि०) आज्ञा देना, कहना।
फरलांग (पु०) भूमि की लम्बाई का एक माप, ८ फरलांग का एक मील होता है।

फरश (पु०) बड़ी दरी, धरातल, समतल भूमि।
—ी (स्त्री०) हुक्का की नली।
फरस दे० (पु०) बिछौना।
फरसा दे० (पु०) परशु, कुठार, कुल्हाड़ी।
फरहरा दे० (पु०) ध्वजा, पताका, केतु।
फरहरी दे० (स्त्री०) मसहरी का कपड़ा। (पु०) अधमूला।
फरा (पु०) व्यञ्जन विशेष।
फराक (पु०) मैदान, आयत स्थान। (वि०) लंबा चौड़ा।—त (वि०) विस्तृत, आयत, लंबा चौड़ा, समतल।
फराखी (स्त्री०) चौड़ाई, विस्तार, फैलाव, सम्पन्नता।
फरागत (स्त्री०) छुटकारा, मुक्ति, छुट्टी।
फराठी दे० (स्त्री०) खपाची।
फरामोश (वि०) विस्मृत, भूला हुआ, चित्त से उतरा हुआ।
फरार (वि०) भागा हुआ।
फरालना (क्रि०) पसारना, फैलाना।
फरास (पु०) फर्रास।
फरिया दे० (स्त्री०) छोटा लहँगा, कन्याओं की घघरिया।
फरी दे० (स्त्री०) ढाल, फलक। [घटोरी जाती है।
फरुहा दे० (पु०) फावड़ा, अस्त्र विशेष, जिससे मिट्टी
फर्राटा दे० (स्त्री०) घाँस का टुकड़ा, शब्द विशेष।
फर्राना दे० (स्त्री०) हिलना, उड़ना, फहराना।
फल तत्० (पु०) शस्य, लाभ, फलक, धर्म, ढाल, इष्टसिद्धि, अभिप्राय, कर्मजन्य शुभ या अशुभ फल, अनिष्ट इष्ट।—जनक (पु०) फलद, सफल।—द (वि०) फलदाता, फलदायक।—दाता (पु०) फल देने वाला, फलप्रद।—मूल (पु०) फल और मूल।
फलक तत्० (पु०) धर्म, ढाल, अस्थिसम्पद, नाग केसर, काष्ठ, पदक, पटरा, तख्ता।—ना (क्रि०) छलकना, उमगना, फरकना।
फलका (पु०) फफोला, छाला, झलका।
फलना दे० (क्रि०) सफल होना, फल लगाना, फरना।
फलबुझौवल दे० (पु०) एक प्रकार का खेल।
फलवान् तत्० (वि०) सफल, सार्थक, फलयुक्त।
फला दे० (पु०) युक्त अक्षर, सारे स्वर, वाणादि का अग्रभाग, शस्त्रों की धार।
फलाङ्ग दे० (पु०) प्लुत गति, चौंक, लङ्घन, फलास।
फलाना दे० (पु०) अमुक।
फलाफल तत्० (पु०) लाभालाभ, हिताहित।
फलास दे० (पु०) वेग, फलाङ्ग। [भोजन।
फलाहार तत्० (पु०) फल भोजन, धर्मार्थिक
फलित तत्० (वि०) फल विशिष्ट, सफल, ज्योतिष विशेष। [तात्पर्यार्थ, सिद्धान्त।
फलितार्थ तत्० (पु०) [फलित+अर्थ] सिद्ध अर्थ,
फलियाँ दे० (स्त्री०) छीमी, फली।
फली तत्० (पु०) फलयुक्त, फलवान्, सफल, फल विशिष्ट, छीमी, फलियाँ।
फलुआ दे० (पु०) गठीला, कातर।
फलोदय तत्० (पु०) [फल+उदय] लाभ, प्राप्ति, मनोरथ सिद्ध, आनन्द।
फलोत्तमा तत्० (स्त्री०) द्राक्षा वृक्ष, मुनक्का।
फल्का दे० (पु०) फफोला, छाला।
फल्गु तत्० (पु०) असार, निरर्थक, तुच्छ। (पु०) गया की एक नदी का नाम। इसी नदी के तीर पर गया शहर बसा है।
फव्वारा दे० (पु०) फुहारा।
फसकड़ दे० (पु०) पैर फैला कर बैठना।
फसकना दे० (क्रि०) फटना, फूटना, दरकना, मर मना, ढीला होना, शिथिल होना।
फसकाना दे० (क्रि०) फाड़ना, दरकाना, ढीला करना, शिथिल करना।
फसड़ी दे० (स्त्री०) फाँसी, फंदा।
फसना दे० (क्रि०) बझना, रुकना, उलझना।
फसफसा दे० (वि०) निर्बल, पिलपिला।
फसरी (स्त्री०) फंदा, फाँसी।
फसाना दे० (क्रि०) उलझाना, बझाना, अधीन करना, वश में करना।
फहरना या फहराना दे० (क्रि०) उड़ाना, फर्राना।
फाँक दे० (क्रि०) फल आदि का टुकड़ा, अंश, विभाग, हिस्सा, भाग।
फाँकना दे० (क्रि०) फक्का मारना, खाना, चढ़ाना।
फाँकी दे० (स्त्री०) पूर्व पक्ष न्याय की व्याख्या, शास्त्रीय प्रश्नों का विचार, फक्किका, दवा की मात्रा, चूर्ण देना। (क्रि०) धोखा देना।

फोड़ (पु०) घखज, अचरा ।
फोंद दे० (पु०) फँदा, फाँसी, पाश, फसदी ।
फाँदना दे० (क्रि०) कूदना, उछलना, लाँघना ।
फाँदा दे० (पु०) फँदा, फाँसी, फसरी ।
फाँदी दे० (स्त्री०) भार, गट्ठों का बोझा ।
फाँपना दे० (क्रि०) फूलना, सूजना, सूजन होना ।
फाँपा दे० (वि०) फूला, सूजा । [मुँह, छिद्र ।
फाँफड़ या फाँफर दे० (पु०) अवकाश, अन्तर, छेद,
फाँस दे० (पु०) सूक्ष्म काँटा । [जाल में फँसाना ।
फाँसना दे० (पु०) बाँधना, उलझाना, पकड़ना,
फाँसा दे० (पु०) फाँदा, फन्दा, फँसरी ।
फाँसी दे० (स्त्री०) दण्ड विशेष, प्राण दण्ड, एक प्रकार की रस्सी जिसमें गला फँसा कर आदमी मार डाले जाते हैं ।—देना (वा०) गले में फाँसी डाल कर मार डालना ।—पड़ना (वा०) मारा जाना, प्राण दण्ड से दण्डित होना ।—लगाना (वा०) गला घोंट कर मरना, फाँसी लगा कर मरना, आत्महत्या करना ।
फाग दे० (पु०) होली का खेल, होली में रंग आदि डालना ।—खेलना (वा०) होली का त्योहार मनाना, रंग डालना, गुलाल या अबीर मलना ।
फागुन या फाल्गुन दे० (पु०) फाल्गुन मास, बारहवाँ महीना ।
फाट (पु०) हिस्सा, भाग, चौड़ाई ।
फाटक (पु०) मुख्य द्वार, बड़ा दरवाज़ा, बाहर का दरवाज़ा, सदर दरवाज़ा । [नुकसान ।
फाटना दे० (क्रि०) फूटना, टूटना, बिगड़ना,
फाटी दे० (क्रि०) फट गई ।
फाड़ (पु०) सुराख, दरार, दर्रा ।
फाड़खाऊ दे० (वि०) काटने वाला, कटहा, कटखना ।
फाड़खाना दे० (क्रि०) चिंघाड़ना काटना, काट खाना, क्रोध करना ।
फाड़ना दे० (क्रि०) चीरना, फोड़ना, तोड़ना ।
फाड़ा, फारा दे० (वि०) चीरा हुआ, फटा, दरका ।
फाबी दे० (क्रि०) भली, लगी, शोभायमान हुई, सजी, सुघी, सुन्दर लगी ।
फायदा (पु०) लाभ ।
फारना (क्रि०) फाड़ना, चीरना ।
फारस (पु०) भारत वर्ष से पश्चिम, ईरान का देश ।
—ी (स्त्री०) ईरानी भाषा ।
फारा (पु०) क़तरा, टुकड़ा ।
फाल तद्० (पु०) एक प्रकार की लोहे की कील जो हल के आगे लगाई जाती है,जिससे ज़मीन खोदी जाती है । शिव, बलराम, सूती वस्त्र विशेष, नवविध शपथ के अन्तर्गत अष्टम शपथ, सुपारी का टूक ।
फालसा दे० (पु०) फूल विशेष । [पार्थ ।
फाल्गुन तद्० (पु०) वर्ष का बारहवाँ मास, अर्जुन,
फाय दे० (पु०) घेलवा, रूँक, वस्तु खरीदने के बाद, जो बिना दाम की वस्तु ली जाती है ।
फावड़ा दे० (पु०) कुदार, कुदारी, फारसा ।
फावड़ी दे० (स्त्री०) छोटा कुदार, कुदाली ।
फासिला (पु०) दूरी, अन्तर ।
फाहा दे० (पु०) रुई का छोटा गोला,जो सुगन्ध द्रव्य अतर आदि में डूबा रहता है, मलहम की पट्टी ।
फिकारना दे० (क्रि०) सिर नङ्गा करना, सिर उघारना ।
फिकिर दे० (स्त्री०) चिन्ता, उपाय, कल्पना ।
फिक्र (स्त्री०) चिन्ता, फिकिर । [अपमान ।
फिट दे० (पु०) फिटकार, दुत्कार, तिरस्कार,
फिटकरी दे० (स्त्री०) क्षार विशेष । [शाप, सराप ।
फिटकार दे० (पु०) धिक्कार, तिरस्कार, गाली,
फिटकाना दे० (क्रि०) धिक्कारना, तिरस्कार करना, शाप देना, सरापना ।
फिटाना दे० (क्रि०) फेंटवाना,सनवाना, घुलवाना ।
फिट्ट दे० (वि०) लज्जित, शर्माया, उतरा हुआ । यथा—उसका चेहरा ' फिट्ट ' पड़ गया ।
फिर दे० (अ०) और, पुनः, अनन्तर, पुनि, बहुरि, पीछे, बाद, पश्चात् ।
फिरका (पु०) जत्था, जमात, क़ौम ।
फिरकी दे० (स्त्री०) एक खेलने की वस्तु, फिरिहिरी ।
फिर जाना दे० (क्रि०) लौटना, लौट जाना, पलटना, मुड़ आना, पराङ्मुख होना ।
फिरत दे० (वि०) फिरा हुआ, लौटाया हुआ, लौटाया गया, फेरा हुआ । (स्त्री०) वापसी, वह कर या चुंगी का महसूल जो किसी महसूली माल के नगर में लाये जाने पर ली जाती और उस माल को दूसरी जगह भेजने पर वापिस दी जाती है ।

फिरता दे० (क्रि०) रमता, चलता, घूमता।
फिरना दे० (क्रि०) घूमना, भ्रमण करना, पर्यटन करना, टहलना, लौटना, पलटना, मुड़ना।
फिराना दे० (क्रि०) घुमाना, लौटाना, पलटाना, मोड़ना।
फिराव दे० (पु०) घुमाव, फेरबदल, पलटाव।
फिरे दे० (क्रि०) लौटे, घूमे, उलटे, वापस आये, लौट आया।
फिर्की दे० (स्त्री०) फिरकी, फिरहिरी।
फिर्नी दे० (स्त्री०) खेलने की एक वस्तु।
फिल्ली दे० (स्त्री०) पिंडली, घुटना। [पीछा करना।
फिसफिसाना दे० (क्रि०) डरना, भीत होना,
फिसलन दे० (स्त्री०) फिसलन, रपटन। [रपटना।
फिसलना दे० (क्रि०) खसकना, गिरना, खिसकना,
फिसलहा दे० (वि०) फिसलहा, पिच्छिल, जहाँ की भूमि बहुत चिकनी हो।
फिसलाव (पु०) फिसलन, रपटन। [रपटन।
फिसलाहट दे० (स्त्री०) चिकनाहट, फिसलाहट
फिहरिस्त (स्त्री०) तालिका, सूची, बही।
फींचना दे० (क्रि०) धोना, धोती धोना, कपड़े धोना।
फीका दे० (वि०) नीरस, स्वाद रहित, ऊसठ, सीठा जो न मीठा हो न निमकिन।
फीता (पु०) कपड़े की पट्टी।
फुँकार दे० (पु०) फुफकार, क्रुद्ध सर्प आदि का शब्द।
फुकना दे० (क्रि०) जलना। (पु०) आग फूकने की निगाली, सूत्राधार, थैली।
फुकनी दे० (स्त्री०) आग फूँकने के लिये बाँस की या धातु विशेष की चोंगी।
फुँगी, फुनगी (स्त्री०) कली, फुनगी। [अकेला।
फुट दे० (वि०) अलग, भिन्न, अयुग्म, एकाकी,
फुटकर या फुटकल दे० (वि०) भिन्न भिन्न, अलग अलग, पृथक् पृथक्, कई प्रकार की वस्तुओं का समूह जैसे "फुटकर खर्चा।" [एकाकी।
फुटली दे० (स्त्री०) खिड़की, अयुग्म, असहाय, अकेला,
फुटैल दे० (वि०) फुट, अयुग्म, अकेला।
फुड़िया दे० (स्त्री०) फुंसी, छोटा घाव।
फुत्कार दे० (पु०) दुत्कार, तिरस्कार।
फुदकना दे० (क्रि०) कूदना, उछलना।
फुदगी दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष। [पत्ते।
फुनगी दे० (स्त्री०) कली, कोंपल, मञ्जरी, कोमल
फुनंग दे० (स्त्री०) पेड़ का शिखर, पेड़ की सब से ऊँची चोटी।
फुँसी (स्त्री०) अन्हौरी, गर्मी के दिनों में पसीना मरने से जो छोटी छोटी फुनसी निकलती है।
फुँदना दे० (पु०) झब्बा, झालर, गुच्छा, स्तवक।
फुफ्फा दे० (पु०) बुआ के पति, फुफ्फी के स्वामी, फूफा।
फुफ्फी दे० (स्त्री०) पिता की बहिन, फूफी, बूआ।
फुफकार दे० (पु०) फुत्कार, फूँ फूँ का शब्द, फुँकार।
फुफेरा दे० (वि०) फुआ के सम्बन्धी।
फुर दे० (पु०) सत्य, यथार्थ, ठीक, परीक्षित, सच्चा, प्रमाणित।
फुरफुराना दे० (क्रि०) शरीर के रोंगटों के सहसा खड़े होने से शरीर का एक बार काँप उठना, काँपना, हिलना।
फुरफुरी दे० (स्त्री०) थरथरी, कम्प, कम्पन।
फुरहरी दे० (स्त्री०) कँपकँपी, हिरन।
फुरि } फुरी } दे० (क्रि०) सूझकर, सूझी, उपजी, ध्यान में आई।
फुर्त दे० (वि०) फुर्तीला, वेगवान।
फुर्ती दे० (स्त्री०) शीघ्रता, चरपरी। [वाला।
फुर्तीला दे० (वि०) चरपटा, वेगवान, शीघ्र करने
फुलका दे० (वि०) फूला हुआ, हलका। (पु०) फफोला, पतली रोटी। [उठाना।
फुलकारना दे० (क्रि०) फुफकारना, फुलाना, फन
फुलकारी दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, जिसमें सूई के काम बने रहते हैं, नैनू कपड़ा।
फुलकी दे० (स्त्री०) हलकी रोटी, पतली रोटी।
फुलझड़ी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की आतशबाज़ी।
फुलवाई दे० (स्त्री०) फुलवाड़ी, पुष्पवाटिका, फूलों का बगीचा। [पुष्पवाटिका।
फुलवाड़ी या फुलवारी दे० (स्त्री०) पुष्पोद्यान,
फुलहथा दे० (पु०) छाती की मार।
फुलाना दे० (क्रि०) सुखाना, मोटा करना, फूला देना।

फुलासरा दे० (पु०) जल्लो चप्पो।
फुलेल दे० (पु०) सुगन्धित तेल।
फुलौरी दे० (स्त्री०) बेसन या मूँग की पकौड़ी।
फुल्ल (वि०) खिला हुआ। — । (वि०) फूला हुआ।
फुल्ली दे० (स्त्री०) आँख का एक रोग, नाक का एक आभूषण, पुँगनिया।
फुसफुसाना दे० (क्रि०) छिप कर बातें करना, काना फानी करना, गुप्त बातें करना।
फुसफुसाहट (स्त्री०) फुसफुस करने का भाव, प्रिय।
फुसलाऊ (वि०) बहकाने वाला। [धोखा देना।
फुसलाना दे० (क्रि०) भुलावा देना, फाँसना,
फुसलावा (पुं०) फाँसा, चकमा, भुलावा।
फुसाहिन्दा दे० (वि०) घिनौना, घृणास्पद, दुर्गन्धी।
फुस्का दे० (वि०) दुर्बल, शक्तिहीन, ढीला। (पु०) छाला, फफोला।
फुहारा दे० (पु०) फव्वारा, जल की कल विशेष।
फूँ (स्त्री०) फुफ्कार, सर्प आदि का साँस लेना।
फूँक दे० (स्त्री०) श्वाँस, साँस, दम, प्राण।—देना (वा०) आग लगाना, मन्त्र से झाड़ना।—फूँक कर पाँव धरना (वा०) सावधानी से काम करना, सोच विचार कर चलना।
फूँकना दे० (क्रि०) आग सुलगाना, बजाना।
फूँकारना दे० (क्रि०) फनफनाना, फुफकारना, क्रोध का निश्वास।
फूँही दे० (स्त्री०) फौंसी, छोटी बूँद।
फूँकना दे० (क्रि०) मुँह से हवा निकालना, आग सुलगाना।
फूआ (स्त्री०) बुआ, पिता की बहिन।
फूट दे० (स्त्री०) फल विशेष, ककड़ी, पकी हुई ककड़ी, विरोध, परस्पर द्वेष, अनमेल, असम्मति, अलगाव, बिलगाव। —पड़ना (वा०) विरोध होना, द्वेष बढ़ना, विरोध उत्पन्न होना।—फूट कर रोना (वा०) खूबरोना, बड़े कष्ट से रोना। —रहना (वा०) द्वेष बढ़ना, अलग होना। —होना (वा०) अनबनाव, बिलगाव।
फूटन दे० (स्त्री०) अनबनाव, विरोध, द्वेष।
फूटना दे० (क्रि०) फटना, टूटना, नष्ट होना, टुकड़े टुकड़े होना।
फूटला दे० (वि०) टूटा हुआ, फूटा, नष्ट भ्रष्ट, भग्न।
फूटा दे० (पु०) भग्न, खण्डित, टूटा।
फूटी दे० (क्रि०) टूटी हुई, भग्न। (स्त्री०) फूटी कौड़ी।—सहें पर काजल न सहें (वा०) समय पर सामान्य कष्ट न सह कर पीछे अधिक कष्ट उठाना, छोटे कष्ट से बचने के लिये बड़े कष्ट में फँसना। [पति
फूफा दे० (पु०) फूआ के पति, पिता के भगिनी-
फूल दे० (पु०) पुष्प, कुसुम। (क्रि०) फूला, खिला, खुलगया।—कोबी (स्त्री०) एक प्रकार का साग।
फूलना दे० (क्रि०) खिलना, सूजना, हुलसना, आनन्दित होना।
फूलाव दे० (पु०) सूजन, शोथ, फुलाहट।
फूली दे० (स्त्री०) आँख का रोग।" फूलना क्रिया का भूत काल " (स्त्री०) फूली हुई।
फूस दे० (पु०) तृण, घास, सूखी घास।—में चिनगारी डालना (वा०) झगड़ा उठाना, झगड़ा खड़ा करना।
फूलड़ा दे० (पु०) गूदड़, कपड़ा, धज्जी, पुराने वस्त्र।
फूसी दे० (स्त्री०) चोकर, भूसी।
फूहड़ या फूहर दे० (वि०) अशिक्षित, अनसीखा, मूर्ख।—पन (पु०) भद्दापन।
फूहड़ा या फूहरा दे० (वि०) कुत्सित वादी, कुवक्ता।
फूहा दे० (पु०) रुई का फाहा जिसे दूध में भिगो कर बच्चों को पिलाते हैं।
फूहर, फूहारी दे० (स्त्री०) फौंसी, छोटी छोटी बूँद।
फेंक दे० (स्त्री०) प्रक्षेप, निक्षेप, त्याग।
फेंकना दे० (क्रि०) प्रक्षेपण करना, त्यागना, दूर करना, निकाल देना, अलग कर देना, घोड़े को सरपट दौड़ाना, जड़ पदार्थों ही के त्याग के अर्थ में इसका प्रयोग होता है।
फेंक देना (वा०) दूर गिरा देना, निक्षेप करना।
फेंकाव दे० (पु०) फेंक, त्याग। (वि०) त्यागने योग्य, फेंकने योग्य।
फेंकैत दे० (पु०) फेंकने वाला।
फेंट दे० (स्त्री०) कमरबन्द, कटिबन्धन, पटुका। —बाँधना (वा०) उद्यत होना, तैयार होना, प्रस्तुत होना, ठनना, कमर बाँधना, कुचड़्जो।

फँटना दे० (क्रि०) मिलाना, बेसन आदि को अच्छी तरह सानना।
फँटा दे० (पु०) मुरेठा, साफा।
फँटी दे० (स्त्री०) छोटा, बच्चा, मरीया। [असामर्थ्य।
फेकड़ी दे० (स्त्री०) चलने की अशक्ति, आगमन का
फेण तद्० (पु०) फेन, झाग, गाद, मल।
फेन तद्० (पु०) झाग, समुद्र फफ, जल मल।—दार फेनयुक्त।—धाड़ी (पु०) जल, रस, समुद्र, दूध।
फेनाना दे० (क्रि०) झाग आना, फेन बढ़ना, श्रान्त होना, थकित होना। [मिठाई।
फेनी दे० (स्त्री०) पकवान विशेष, एक प्रकार की
फेनुस दे० (पु०) अमृत, सुधा, पीयूष, नव प्रसूत गौ और भैंस का दूध। [साँस ली जाती है, अंगच्
फेफड़ा (पु०) छाती के ऊपर का भाग जिसके द्वारा
फेफड़ी (स्त्री०) शून्य, चलनशक्ति।
फेर दे० (अ०) पुनः, पुनि, बहुरि, बारबार। (पु०) घुमाव, बाँकापन, वक्रता, चक्कर, पलटाव, बदली, बुरे दिन, अभाग्य, कठिनता।—खाना (वा०) चक्कर खाना, भटकना, कष्ट उठाना, दुःख सहना।—देना (वा०) लौटा देना, पलटा देना, पीछा दे देना, प्रत्यर्पण करना।—फार (वा०) अदल बदल, छल कपट, धोखा, इधर उधर।
फेरना दे० (क्रि०) लौटाना, घुमाना, हटाना।
फेरा दे० (पु०) घुमाव, प्रदक्षिण, भाँवर, सप्तपदी।
फेराफेरी दे० (स्त्री०) उलटी पलटी, परस्पर अर्पण।
फेरी दे० (स्त्री०) प्रदक्षिणा, भिक्षा माँगना, भिक्षा के लिये चक्कर लगाना।—वाला (पु०) बिसाती, पैकार, गली गली घूम कर बेचने वाला दूकानदार।
फेरु तद्० (पु०) सियार, शृंगाल, गीदड़।
फेरू दे० (पु०) फेर, चक्कर, चक्र, घुमाव।
फेंटा (पु०) देखो "फेंट"।

फैलना दे० (क्रि०) पसरना, बिथरना, बगरना, चारों ओर फैल जाना।
फैलाना दे० (क्रि०) बिछाना, पसारना, विस्तार युक्त करना, चौड़ाना, प्रचार करना, प्रकाश करना।
फैलाव दे० (पु०) पसराव, प्रचार, बिछाव।
फोंक दे० (पु०) खोखला, पोला, भीतर से शून्य, थोथा। (स्त्री०) बाण का एक भाग जिधर पेंच लगाया जाता है।—ी (स्त्री०) नली, छूछी।
फोंफी दे० (स्त्री०) नली, छूछी, नलिका, एक प्रकार का बाजा। (वि०) पोली, खोखली।
फोंदार दे० (स्त्री०) फुहार, बूँदी, झींसी
फोक दे० (पु०) सीठी, निस्सार वस्तु।
फोकट दे० (पु०) धूँआ, कङ्गाल, दरिद्र। (पु०) सेंत का, बिना दाम का, बिना परिश्रम का।
फोकड़ दे० (पु०) घूरा, कूड़ा।
फोकर (पु०) दरिद्र, दीन, कंगाल।
फोड़ना दे० (क्रि०) तोड़ना, भग्न करना, नष्ट करना, फाड़ना, चीरना, टुकड़े टुकड़े करना।
फोड़ा दे० (पु०) व्रण, स्फोटक, पिरकी। (क्रि०) तोड़ा, तोड़ दिया, टुकड़े कर दिया।
फोरा दे० (क्रि०) फोड़ दिया, तोड़ डाला।
फोला दे० (पु०) फफोला, छाला, फुलका। [छाला।
फोस्का दे० (पु०) फफोला, फोला, फुलका,
फौज दे० (स्त्री०) सेना, सैन्य, सैनिक, योद्धा।—दारी (स्त्री०) झगड़ा टंटा, मारपीट।—ी (वि०) सैनिक।
फौत दे० (स्त्री०) मृत्यु, मरण, निधन।
फौरन दे० (अ०) तुरन्त, शीघ्र।
फौलाद (पु०) पक्का लोहा।—ी (वि०) फौलाद का बना हुआ।

ब

ब यह व्यञ्जन का तेईसवाँ वर्ण है, यह ओष्ठ्य वर्ण है, क्योंकि इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
ब तद्० (पु०) वरुण, समुद्र, सागर, जल।
बँक (पु०) झुकाव, झुकावट।

बँकाई दे० (स्त्री०) वक्रता, टेढ़ापन, तिरछापन।
बँग (पु०) राँगे की भस्म का रस विशेष, बंगाल।
बँगरी दे० (स्त्री०) स्त्रियों का एक आभूषण जो पहुँचे पर पहिना जाता है।

बंगला (पु०) अँगरेजी ढंग का मकान।
बंगाल (पु०) भारतवर्ष का पूर्वी प्रान्त विशेष।
बंगालिन (स्त्री०) बंगाल देश वासिनी स्त्री।
बंगाली (स्त्री०) बंगाल का वासी।
बंगी (स्त्री०) भौंरा, लट्टू।
बंजर (वि०) उजाड़, ऊसर, वीरान।
बंजारा (पु०) रोजगारी, वह व्योपारी जो बैल आदि पर माल लाद कर घूमा करता है।
बंजारी (स्त्री०) बंजारे की स्त्री।
बँझोटी दे० (स्त्री०) ओषधि विशेष, गर्भ नाशक ओषधि।
बँटवाना दे० (क्रि०) विभाग कराना, बँटाना, हिस्सा लगाना। [कर्त्ता।
बँटवैया दे० (पु०) बाँटने वाला, विभाजक, विभाग-
बँटाना दे० (क्रि०) भाग कराना, हिस्सा कराना, भाग लगाना।
बंडी दे० (स्त्री०) छोटा अङ्गा, अधबैहाँ।
बंडेरी (स्त्री०) घर के छत का सर्वोच्च भाग।
बंडौहा दे० (पु०) बवण्डर, चक्रवात, अन्धड़।
बंद (पु०) बंधन।
बँदगी (स्त्री०) सलाम, पूजा, गुलामी।
बँदनवार (पु०) उत्सव के अवसर पर द्वार पर बाँधी जाने वाली पत्तों की माला।
बंदर (पु०) वानर।—ी (स्त्री०) बंदर की मादा।
बंदी (पु०) भाट, चारण, क़ैदी।—गृह (पु०) जेलखाना।—जन (पु०) चारण, भाट।
बंदूक (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध आग्नेयास्त्र विशेष।
बंदूहा (पु०) तूफ़ान, अंधड़।
बंदोइ (स्त्री०) बाँदी, नौकरानी।
बंदोबस्त (पु०) प्रबन्ध, व्यवस्था।
बदोला (पु०) दासीपुत्र।
बंध (पु०) गिरो, गाँठ, बन्धन।—क (पु०) रेहन, थाती, गिरवी, धरोहर।—ना (क्रि०) गाँठ पड़ना, बंद होना, क़ैद होना।—वाना (क्रि०) गाँठ दिलवाना।—ाई (स्त्री०) बाँधने की मजदूरी।
बंधानी (स्त्री०) कुली, मजदूर।
बंधुआ (पु०) बंदी, क़ैदी।
बंधुर (वि०) ढालू, चढ़ाव, उतराव। (पु०) हंस पक्षी।
बंधेज (पु०) बंधान, नियत।
बंसी (स्त्री०) बाँस का बना मुँह से बजाने का बाजा।
बंवर दे० (पु०) लता, लतिका, बेल।
बक तत्० (पु०) पक्षी विशेष, बगला।—ध्यान लगाना (वा०) पाखण्ड करना, दम्भ करना, मतलब साधने के लिये धार्मिक बनना, दिखौआ धर्म। असुर विशेष, श्रीकृष्ण के हाथ से यह मारा गया है। श्रीकृष्ण गोप बालकों के साथ गाय चराने के लिये वन गये थे, वहाँ प्यासी गायों को जल पिलाने के लिये वे एक तालाब पर गये। उसी समय बकरूपधारी असुर श्रीकृष्ण को निगल गया। अनन्तर श्रीकृष्ण के तेज से व्यथित होकर उसने श्रीकृष्ण को उगल दिया उपरान्त श्रीकृष्ण ने उसकी चोंच पकड़ कर उसे मार डाला।
बक दे० (स्त्री०) बकवाद, बकबक, निरर्थक बात, बड़बड़ाहट, गुलगपाड़ा, व्यर्थ की बातें। बगला, एक पक्षी का नाम।—झक (वा०) बकबक, बकवाद।—झक करना (वा०) झगड़ा टंटा करना, बकवाद करना, वृथा बकना।—बक करना (वा) बोल चाल करना, मन माने बकना।—बक लगाना (वा) गुल-गपाड़ा करना, चिल्लाना, शोर मचाना।
बकची दे० (स्त्री०) ओषधि विशेष।
बकना दे० (क्रि०) बकवाद करना।
बकबकिया दे० (वि०) बातूनी, गप्पी, बकवादी।
बकवाद दे० (पु०) बकझक, बकबक।
बकवादी दे० (पु०) बकबकिया, गप्पी, गपोड़िया, वृथावादी।
बकवास दे० (पु०) बकवाद, वाचालता, मुखरापन।
बकवाहा दे० (पु०) बड़बड़िया, बक्की, वाचाल, बकवादी, बकवाद करने वाला।
बकरा दे० (पु०) अज, छाग, छागल।
बकरी दे० (स्त्री०) छेरी, छागी, अजा।
बकला दे० (पु०) छिलका, भाल, त्वक्, त्वचा।
बकसा दे० (वि०) समेट, मिलान, बन्धेजी।

बखसुआ, बखसुवा दे० (पु०) कपास का कीड़ा।
बखसैता दे० (वि०) बकसा, बसैला, बकबक।
बखासुर तद्० (पु०) बक नाम असुर (देखो बक)।
बखिया दे० (स्त्री०) छुरी, चाकू, खड्ग। (वि०) बक-वादी, बकी।
बकी तद्० (स्त्री०) पक्षियों विशेष, बक की स्त्री, पूतना नामक राक्षसी।
बकेलू दे० (पु०) मूँज, काँस का बकला।
बकोटना दे० (क्रि०) नोचना, खसोटना, नखाघात करना, नखक्षत करना।
बक्कम दे० (पु०) रंगने का काठ विशेष। [त्वचा।
बक्कल तद्० (पु०) बल्कल, बकला, छिलका,
बक्की दे० (वि०) गप्पी, बकवादी, वाचाल।
बक्रदन्त तद्० (पु०) असुर विशेष, शिशुपाल के भाई का नाम। (वि०) टेढ़े दाँतों वाला।
बख (पु०) दुनिया, संसार, पृथ्वी।
बखरी दे० (स्त्री०) मकान, गृह, घर, कुटी, झोंपड़ी।
बखान तद्० (पु०) बड़ाई वर्णन, स्तुति, स्तोत्र, प्रशंसा। —करना (वा०) स्तुति करना, बड़ाई करना।
बखानना दे० (क्रि०) कहना है, बयान करता है। प्रशंसा करना, स्तुति करना, वर्णन करना।
बखार दे० (पु०) टाँका, रास्ता। [खत्ती।
बखारी दे० (स्त्री०) अन्न रखने का भण्डार, टाँका,
बखिया दे० (पु०) एक प्रकार की सिलाई।
बखियाना (क्रि०) बखिया की सिलाई करना।
बखी (स्त्री०) बगल।
बखेड़ा दे० (पु०) झगड़ा, झंझट, टंटा, लड़ाई। —चुकाना (वा०) झगड़ा मिटाना। —मचाना (वा०) झगड़ा करना, टंटा करना।
बखेड़िया दे० (पु०) झगड़ालू। [फैलाना, छींटना।
बखेरना दे० (क्रि०) विकीर्ण करना, विक्षिप्त करना;
बखोर दे० (पु०) असगुन, अपशकुन, अशुभ सूचक चिन्ह।
बखोरना दे० (क्रि०) टोकना, पूछना, दिखदिखाना।
बख्तौरा दे० कन्धा, स्कन्ध।
बख्शिश (पु०) इनाम, दान, उपहार।
बग तद्० (पु०) बक, बगला। —धाल (स्त्री०) बगले की सी चाल, बकपांति। —छूट (स्त्री०) सरपट धावा, दौड़। —छूट दौड़ना (वा०) सरपट दौड़ना, बिना रोक दौड़ना। [एक भेद।
बगड़ दे० (पु०) एक प्रकार का चाँवल, चावल का
बगदा दे० (पु०) दुःख, शूल, कपट, धोखा।
बगदिया दे० (वि०) छली, छलिया, कपटी, धूर्त।
बगदना दे० (क्रि०) भूलना, कहीं जाकर लौटना, फिरना।
बगदाना दे० (क्रि०) भुलाना, बिगाड़ना, डाँवाडोल करना गए हुए को लौटाना, फिराना, भुलाना।
बगरासी दे० (स्त्री०) कष्ट, बाँस।
बगमेल दे० (क्रि०) इकट्ठे होकर चलना, बगुलों की भाईं पाँति बाँध कर चलना।
बगरे दे० (क्रि०) फैले, बिखरे, छितरा गये, लोट गये।
बगल (पु०) कक्ष, काँख, किनारा।
बगला दे० (पु०) बक, बकपक्षी। —भगत (पु०) कपटी, पाखण्डी, धूर्त। —मारे पखना हाथ (वा०) व्यर्थ का परिश्रम करना, गरीब को मारना निष्फल है। [हटना।
बगलाना (क्रि०) एक तरफ करना, दाँये या बाँये
बगली (स्त्री०) थैली, जेब।
बगहंस दे० (पु०) हंस विशेष। [फेंक देना, पसारना।
बगारना दे० (क्रि०) छिटकाना, फैलाना, बिखेरना,
बगावत (स्त्री०) बलवा, अराजकता। [बगीचा।
बगिया दे० (पु०) फुलवारी, पुष्पवाटिका, छोटा
बगीचा दे० (पु०) उद्यान, बड़ी फुलवाड़ी, बड़ी पुष्पवाटिका।
बगुर दे० (पु०) फंदा, जाल, पाश, फाँसी।
बगुला दे० (पु०) एक पक्षी, बगला।
बगूरा दे० (पु०) बवण्डर, चक्रवात, अन्धड़।
बगैर (अव्य०) बिना।
बग्घी (स्त्री०) बंद घोड़ा गाड़ी। [जड़।
बघनहा दे० (पु०) सुगन्ध द्रव्य विशेष, एक वृक्ष की
बघना दे० (पु०) बाघ का नख, बाघ का दाँत।
बघार दे० (पु०) छौंकना, छौंक का मसाला।
बघारना दे० (क्रि०) छौंकना, छौंक लगाना। [मक्खी।
बघी दे० (स्त्री०) डाँस, मधुमक्खी, पशुओं की
बघेल दे० (पु०) राजपूतों की एक जाति। —खण्ड (पु०) प्रदेश विशेष, जहाँ बघेल क्षत्री रहते हैं वीरों का प्रदेश।

बघेला दे० (पु०) बाँवरू, बाघ का बच्चा, बघेल क्षत्रिय । [भस्म, देश विशेष ।
बङ्ग दे० (पु०) धातु विशेष, रस विशेष, राँगे की
बङ्गरी, बङ्गली दे० (स्त्री०) अलङ्कार विशेष, हाथ में पहनने का गहना, जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं ।
बङ्गला दे० (पु०) खपरैल घर, बरादरी, हवादार नये ढङ्ग का मकान, अँगरेज़ों के रहने का घर
बङ्गसेन या बङ्गसैन तद्० (पु०) अगस्त्य का वृक्ष ।
बङ्ग या बङ्गा तद्० (पु०) बाँस की जड़ का पोर । (पु०) नासमझ, अनभिज्ञ, मूर्ख, निर्बुद्धि, बेवकूफ यथा.—

राम मनुज कस रे शठ बङ्गा ।
धन्वी काम नदी पुनि गङ्गा ॥

—रामायण ।

बङ्गाल दे० (पु०) देश विशेष, जो गया जी से पूर्व है, गौड़देश । [जाति की स्त्री ।
बङ्गालिन दे० (स्त्री०) बङ्गाल देश की स्त्री, बङ्गाली
बङ्गाली दे० (पु०) बङ्गाल देश का वासी, बङ्गवासी ।
बङ्गा दे० (स्त्री०) भौंरा, लट्टू फिर्की, खेल की एक वस्तु ।
बच दे० (पु०) वचन, वाक्य, बोली । (स्त्री०) औषधि विशेष, एक वृक्ष की जड़ ।
बचकाना दे० (वि०) छोटा, बच्चों के लिये, बच्चों के उपयुक्त । (पु०) भरैया, भगनिया ।
बचकानी दे० (स्त्री०) नीची, छोटी । (वि०) छोटी ।
बचत दे० (स्त्री०) शेष, अविशिष्ट, अवशेष, बाकी ।
बचती दे० (स्त्री०) शेष, अवशिष्ट ।
बचन तद्० (पु०) बात, वाक्य, कथन, कौल करार, प्रण, होड़ ।—चूक (वि०) अविश्वासी । —छोड़ना (वा०) नकारना, वचन से मुड़ना, भ्रष्ट प्रतिज्ञा होना ।—तोड़ना (वा०) कही हुई बात से मुड़ना, वचन छोड़ना ।—दत्त (वि०) मंगेतर, सगाई किया हुआ ।—देना (वा०) प्रण करना, प्रतिज्ञा करना ।—निभाना (वा०) प्रतिज्ञा पालन करना, कही बात को पूरा करना, अपनी बात पर पक्का रहना ।—बंद करना (वा०) वचन लेना, प्रतिज्ञा कराना ।—बद्ध होना (वा०) वचन देना, प्रतिज्ञा करना, अपनी बातों में बँध जाना ।—मानना (वा०) आज्ञा पालना, आज्ञा मानना, कही हुई बात मानना ।—लेना (वा०) प्रतिज्ञा कराना, वचन बद्ध कराना ।—हारना (वा०) कही बात को पूरी न करना, अपनी हानि की बात को स्वीकार कर लेना, बिन जाने बूझे किसी बात के लिये प्रतिज्ञा करना ।
बचना दे० (क्रि०) रक्षा पाना, शेष रहना, अवशिष्ट रहना, बचा रहना । [बालापन ।
बचपन दे० (पु०) बालक, लड़काई, लड़कपन,
बचाना दे० (क्रि०) रक्षा करना, उद्धार करना, छिपाना, शेष रखना, शेष बचा रखना ।
बचाव दे० (पु०) रक्षा, उद्धार, रखवाली, पक्ष, सहायता ।
बच्चा दे० (पु०) लड़का, छोटा लड़का । [नाम ।
बच्छनाग दे० (पु०) औषध विशेष, एक विष का
बच्छल तद्० (पु०) वत्सल, प्रेमी, कृपालु, दयालु ।
बच्छा दे० (पु०) गाय का बच्चा, बछड़ा ।
बच्छासुर तद्० (पु०) वत्सासुर, एक असुर का नाम जिसे कंस ने कृष्णचन्द्र को मारने के लिये भेजा था और श्रीकृष्ण द्वारा मार डाला गया था ।
बछड़ा, बछड़ू दे० (पु०) वत्स, गौ का बच्चा, गौ का छोटा बचा ।
बछरू (पु०) देखो बछड़ा ।
बछल दे० (पु०) देखो बच्छल ।
बछिया दे० (पु०) गौ की बाछी
बछेरा, बछेड़ी दे० (पु०) घोड़े का बच्चा ।
बजका दे० (पु०) पकौड़ी, बरा, फुलौरी ।
बजना दे० (क्रि०) शब्द होना, बाजे से शब्द निकलना, ठनठन शब्द निकलना । (पु०) झगड़ा टंटा ।
बजनिया दे० (पु०) बाजे वाले, बाजा बजाने वाले ।
बजनी दे० (स्त्री०) बाजा बजाने की चीज़, जिससे ठनठन शब्द निकले ।
बजन्त्री दे० (पु०) बाजा बजाने वाला, नृत्य करने वाले का साथी, समाजी । [गर्जना ।
बजबजाना दे० (क्रि०) उफनाना, [illegible], सड़ना,
बजरबट्टू दे० (पु०) फल विशेष, [illegible] इस फल के प्रताप से बच्चों पर बुरी दृष्टि नहीं लगती ।
बजरङ्ग, बजरंग दे० (पु०) महावीर, हनुमान जी का एक नाम ।

बजरङ्गी, बजरंगी १० (पु०) एक प्रकार का विशेष महावीरी ध्वज।

बजरा दे० (पु०) एक प्रकार की नाव, जो छाई रहती है, इसकी चाल बनारस में अधिक है।

बजाक दे० (पु०) सर्प विशेष। [व्यवसायी।

बजाज दे० (पु०) कपड़ा बेचने वाला, कपड़े का

बजाना दे० (क्रि०) बाजा बजाना, बाजे से स्वर के साथ शब्द निकालना। [निभाना।

बजा लाना दे० (वा०) पूरा करना, पालन करना,

बजाय (क्रि० वि०) बदले में, एवज़ में।

बझना दे० (क्रि०) फसना, उलझना, लगना, बँधना, बँध जाना, अटकना।

बझाना दे० (क्रि०) फसाना, फंदे में डालना, पकड़ना, अधीन करना।

बट तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, बरगद का वृक्ष।

बटई दे० (स्त्री०) बटेर पक्षी, डोरी बाटने का काम बनाने की विद्या।

बटखरा दे० (पु०) बाँट, तौलने की वस्तु।

बटना दे० (क्रि०) बल देना, ऐंठना, रस्सी बनाना।

बटमार दे० (पु०) ठग, डाँकू बटैत, धूर्त।

बटमारी दे० (स्त्री०) ठगई, धूर्तता, डकैती।

बटरी दे० (स्त्री०) छोटी कटोरी, पियाली।

बटलोई दे० (स्त्री०) छोटा बटुआ।

बटलोही दे० (स्त्री०) छोटा बटुआ, भात या दाल चुराने का पात्र।

बटपार दे० (पु०) मार्ग का कर लेने वाला, ठग, बटमार।

बटवारा दे० (पु०) भाग, अंश, हिस्सा, बाँट।

बटाई (दे०) बाँटने का काम, रस्सी बटना, रस्सी बनाना, रस्सी बनाने की मजूरी।

बटाऊ दे० (पु०) पथिक, यात्री, बटोही।

बटिया दे० (स्त्री०) बटखरा, बाँट, तौलने की वस्तु।

बटुआ दे० (पु०) एक प्रकार की कपड़े की कई खानों की डोरी से खुलने मुँदने वाली थैली, बड़ी बटलोई, दाल भात पकाने का पात्र विशेष।

बटुक तत्० (पु०) भैरव विशेष, ब्रह्मचारी, विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी, छोरा।

बटेर दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष।

बटोर दे० (पु०) जमाव, समूह, भीड़, ठट्ठा।

बटोरना दे० (क्रि०) एकत्रित करना, इकट्ठा करना, समेटना।

बटोही दे० (पु०) पथिक, पान्थ, यात्री, बटाऊ।

बट्टा दे० (पु०) फिराना, नोट, गिन्नी आदि बदलाने का मूल्य, टिकिया, दर्पण, मसाला पीसने का पत्थर विशेष, लोढ़ा।

बड़ दे० (पु०) बट, बरगद, वृक्ष विशेष।—बड़ (पु०) बक बक, बकबक।

बड़प्पन दे० (पु०) बड़ाई, श्रेष्ठता, प्रधानता, बड़ापन।

बड़बड़ दे० (पु०) बकवक, व्यर्थ का प्रलाप, निष्प्रयोजन बातें।

बड़बड़ाना दे० (क्रि०) बकबक करना, प्रलाप करना।

बड़बोलिया दे० (पु०) बकवादी, झक्की, गप्पी।

बड़वानल दे० (पु०) समुद्र के भीतर की आग।

बड़हल दे० (पु०) फल विशेष, एक फल का नाम, श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के अन्तर्गत एक शाखा।

बड़हेला (पु०) जंगली सूअर।

बड़ा दे (वि०) महान्, प्रधान, विशाल, मुख्य, बृहत्।

बड़ाई दे० (स्त्री०) महत्व, उच्चता प्रशंसा, विशालता।

बड़ापा दे० (पु०) महत्व, बड़ाई, उच्चता।

बड़ी, बरी दे० (स्त्री०) खाने की एक वस्तु, जो उरद या मूँग की बनाई जाती है।

बड़ेरा दे० (पु०) धरन, ईश, इन्दु।

बड़े मियाँ दे० (पु०) वृद्ध, बूढ़ा, निर्बुद्धि वृद्ध।

बढ़इन दे० (स्त्री०) सुनारिन। [वालों एक जाति।

बढ़ई दे० (पु०) सुनार, लकड़ी के काम बनाने

बढ़ती दे० (स्त्री०) अधिकता, वृद्धि, लाभ, प्राप्ति।

बढ़न दे० (स्त्री०) बढ़ती, वृद्धि। [बहुत होना।

बढ़ना दे० (क्रि०) अधिक होना, अधिकता होना,

बढ़नी दे० (स्त्री०) झाड़ू, बुहारी।

बढ़ाना दे० (क्रि०) अधिकाना, वृद्धिकरना, ऊँचा करना।

बढ़ालाना दे० (वा०) सम्मुख करना, आगे लाना प्रत्यक्ष कहना।

बढ़ाव दे० (पु०) बढ़ती, चढ़ाव, उमड़ाव।

बढ़ावा दे० (पु०) उकसाना, उत्साह।

बढ़िया दे० (वि०) उत्तम, रमणीय, महँगा, दुर्मूल्य।

बढ़ेला दे० (पु०) वन्य शूकर, वन का शूकर।

बढ़ोतर दे० (पु०) ब्याज, सूद, रुपये का भाड़ा, लाभ।
—ी (पु०) ब्याज, नफा, लाभ, सूद।
बढ़न्त दे० (स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, उपज, लाभ।
बणिक तद्० (पु०) जाति विशेष, बनिया, व्यापारी, महाजन, सौदागर।—पथ (पु०) हाट, बाजार।
बणिज दे० (पु०) वाणिज्य, लेनदेन, व्यापार, सौदागरी।
बणिया दे० (पु०) वणिक, बनिया, वैश्य जाति।
बत दे० (पु०) कीट विशेष, बात, क़ौल, करार।
—कहा (पु०) गप्पी, बकी, बकवादी, बातूनी।
—चढ़ाव (पु०) झगड़ा, बातों बातों में विरसता।
—बिना (पु०) बातूनी, बात बनाने वाला।
बतक दे० (पु०) पक्षी विशेष, हंस पक्षी का एक भेद विशेष।
बतकहाव दे० (पु०) कहा सुनी।
बतकही दे० (स्त्री०) बातचीत, बोलचाल, कथोपकथन।
बतफड़ दे० (पु०) बकवादी, बड़बढ़िया।
बतराना दे० (क्रि०) बतियाना, बातचीत करना, सम्भाषण करना, संलाप करना।
बतलाना दे० (क्रि०) समझाना, बुझाना, दिखाना, सिखाना, सङ्केत करना।
बता दे० (पु०) खपाच, बाँस की कमाठी या खपाची।
बताई दे० (क्रि०) बतला कर, समझा कर। [बुझाना।
बताना दे० (क्रि०) बतलाना, सिखाना, समझाना,
बताम दे० (पु०) बात, पवन, वायु।
बतासा दे० (पु०) मिठाई विशेष। [फल, बातचीत।
बतिया दे० (स्त्री०) छोटा कोमल फल, अधकच्चा
बतियाई दे० (क्रि०) बतला कर, समझा कर।
बतियाना दे० (क्रि०) बात करना, बतराना, सम्भाषण करना, संलाप करना।
बतूनी दे० (वि०) बकनी, वाचाल।
बतौती दे० (स्त्री०) भाँड़ैती भाँड़पना, भाँड़ों का काम।
बतौरी दे० (स्त्री०) फोड़ा जो बालों के टूटने से होता है बलतोड़।
बत्ती दे० (स्त्री०) बाती, पलीता, दीपक, दीया, बाँस की छड़, घाव की बंटी, मोमबत्ती घाव में भरने की बत्ती, एक प्रकार की योग क्रिया।—चढ़ाना (वा०) घाव में बत्ती डालना।—जलाना (वा०) दीपक जलाना, दिया बारना।

बत्तीस दे० (वि०) तीस और दो, ३२, दो अधिक तीस।
बत्तीसा दे० (पु०) एक औषधि का योग जिसमें ३२ औषधियाँ डाली जाती हैं और घोड़े आदि जानवरों को दी जाती हैं।
बत्तीसी दे० (स्त्री०) दन्तपंक्ति, दन्त समूह, दाँतों की क़तार। (वि०) बत्तीस वस्तुओं का समुदाय।
—दिखाना (वा०) दाँत दिखाना, हँसना, घिघीरी करना।
बत्सा दे० (पु०) चांवल का भेद, बछिया।
बथुआ दे० (पु०) शाक विशेष।
बद दे० (स्त्री०) रोग विशेष, रान के जोड़ों में बड़ी गाँठ का निकलना, बाघी, बाघी उठना।
बदइ दे० (स्त्री०) बैर, बैर का फल, बैर का वृक्ष।
बदना दे० (क्रि०) नियत करना, निश्चित करना, मानना, दाँव लगाना। [अपकीर्ति, बेइज्ज़ती।
बदनाम (पु०) अपकीर्ति, अपमानिता।—ी (स्त्री०)
बदमाश दे० (वि०) लुच्चा, गुंडा, कुकर्मी।
बदमाशी दे० (स्त्री०) लुच्चई, दुष्टता।
बदर तद्० (पु०) फल विशेष, बेर या सेव, तोड़ा, हज़ार रुपये की थैली, बिनौला, कपास का बीज।
बदरि या बदरी तद्० (पु०) फल विशेष, बेर का फल और वृक्ष।
बदरिकाश्रम तद्० (पु०) तीर्थ विशेष, उत्तरीय तीर्थ जहाँ नर नारायण तपस्या करते थे।
बदल दे० (पु०) प्रतीकार, निवारण, बादल।
बदलना दे० (क्रि०) पलटना, परिवर्त्तन, उलटा करना, अन्यथा करण, एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना।
बदला दे० (पु०) परिवर्त्तन, पलटा।
बदलाई दे० (स्त्री०) पलटाई, बुनाई, बुनवाई।
बदलाना दे० (क्रि०) पलटा करना, बदल देना, पुरानी वस्तु को देकर नई वस्तु लेना।
बदली दे० (स्त्री०) मेघ, बादल, स्थान परिवर्त्तन, स्थान का परिवर्त्तन, एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान पर जाना। (वि०) बादल वाला दिन जैसे आज बदली का दिन है।
बदा दे० (वि०) भविष्य, भवितव्य, भाग, अदृष्ट, होनहार, भावी।

बदाबदी दे० (अ०) ईर्ष्या, स्पर्द्धा, ढिसं, देखादेखी, होड़ाहोड़ी।

बदि तद्० (अ०) कृष्ण पक्ष, किसी बात के लिये बाजी रखना। (क्रि०) कहकर, बखान करके, शर्त लगाना, प्रतिज्ञा करके।

बदी दे० (अ०) कृष्ण पक्ष। (स्त्री०) बुराई, कमीनापन।

बदौलत (वि०) कारण से, भाग्य से, सबब।

बदल दे० (पु०) मेघ, बदली, बादल, घटा। (अ०) बदले में।

बद्ध तद्० (वि०) बँधा, बँधा हुआ।

बद्धी दे० (स्त्री०) भूषण विशेष, कण्ठभूषण।

बध तद्० (पु०) हनन, मारण, हत्या, हिंसा।

बधना दे० (क्रि०) मारना, मार डालना, हनना, हत्या करना। (पु०) टोंटीदार लोटा, गडुआ, मुसलमानों का जल पात्र, मिट्टी का लोटा।

बधस्थान तद्० (पु०) बध्य स्थान, प्राणियों के मारे जाने का स्थान, वह स्थान जहाँ अपराधियों को फाँसी दी जाती है।

बधाई दे० (स्त्री०) हर्षोत्सव, आनन्दोत्सव, मङ्गलाचार, पुत्रोत्सव आदि माङ्गलिक समय में जो बान्धव लोग मनाते हैं। [मङ्गलोत्सव।

बधावा दे० (पु०) माङ्गलिक, उपहार, मङ्गलाचार,

बधिक तद्० (पु०) हत्यारा, जल्लाद व्याध, बहेलिया।

बधिया दे० (पु०) पुरुषत्व हीन किया हुआ बैल, आख्ता।—करना (वा०) अण्ड निकालना, आख्ता करना, निकम्मा बना देना, नपुंसक बनाना।

बधिर तद्० (पु०) बहरा, कर्णेन्द्रिय रहित। [पत्नी।

बधू तद्० (स्त्री०) बहू, पतोहू, लड़के की स्त्री, भार्या, स्त्री,

बधूटी तद्० (स्त्री०) युवती स्त्री पुत्र बधू छोटी बहू।

बध्य तद्० (वि०) बधार्ह, बध के योग्य।—भूमि (स्त्री०) बधस्थान।

बन (पु०) जंगल।

बनज तद्० (पु०) जल से उत्पन्न वस्तु मात्र, कमल, कौड़ी जोंक आदि। वन से उत्पन्न, फल, फूल आदि।

बनजर दे० (पु०) परती भूमि, ऊसर भूमि, ख़राबट्टर।

बनजारा दे० (पु०) व्यापारी बनिया, सौदागर, व्यापारी की एक जाति, पहले समय में ये लोग बेचने की चीज़ों को बैल पर लाद कर इस प्रान्त से उस प्रान्त तक ले जाते थे और अपनी चीज़ें वहाँ बेच कर वहाँ से दूसरी चीज़ें ले आते थे। इनकी उस समय "सार्थवाह" या "सौदागर" संज्ञा थी।

बनजारी दे० (स्त्री०) बंजारे की स्त्री, बंजारे की वस्तु।

बनठनके दे० (वा०) सजधज कर, शृङ्गार कर।

बनत दे० (स्त्री०) एक प्रकार का गोटा, जो गोटे ही से बनाया जाता है, बनना, तैयार होना, सिद्ध होना, प्रस्तुत होना।

बनतराई दे० (स्त्री०) पौधा विशेष। [होना।

बनना दे० (क्रि०) तैयार होना, हँसी समझना, प्रेम

बननिधि तद्० (पु०) समुद्र, जल राशि।

बनपड़ना दे० (पु०) सुधरना, निभना, निबहना।

बनमानुष तद्० (पु०) एक प्रकार का पशु, जिसकी बहुत सी बातें मनुष्यों से मिलती हैं।

बनमाला तद्० (स्त्री०) वनमाला, वह माला जिसे भगवान् धारण करते हैं, गले से पैर तक लटकने वाली माला, तुलसी, कुंद, मन्दार, पारिजात और कमल इन पुष्पों की माला, फूल और पत्ती से बनी माला।

बनमाली तद्० (पु०) श्री कृष्ण।

बनरपकड़ दे० (पु०) निन्दित हठ, दुराग्रह।

बनरा दे० (पु०) दूलह, वर।

बनरी दे० (स्त्री०) दूलहिन, विवाहिता या ब्याही जाने वाली कन्या।

बनवाई दे० (स्त्री०) बनाने का दाम, बनाने की मजूरी।

बनवैया दे० (पु०) बनाने वाला, रचयिता निर्माता।

बनसी, बंसी दे० (स्त्री०) मछली पकड़ने का साधन, काँटा।

बना दे० (पु०) दुलहा, बनरा, वर।

बनात दे० (क्रि०) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, जो जाड़े के काम का होता है।

बनाना दे० (क्रि०) रचना, प्रस्तुत करना, तैयार करना, ठीक करना, दीवार आदि का बनाना, सजाना, सुधारना, जोड़ना सँवारना, मिलाना। पकाना, उत्पन्न करना, सिरजना, पूरा करना, पूर्ण करना, जीर्णोद्धार करना।

बनायुज तद्० (पु०) घोड़ा, अरब, अरबी घोड़ा।
बनाव दे० (पु०) बनावट, सिंगार, सजावट, मिलाप, मित्रता। [आकार, संगठन।
बनावट दे० (स्त्री०) रचना, निर्माण, डीलडौल,
बनावटी दे० (स्त्री०) कारानिक, बनायी हुई, कल्पना प्रसूत, मिथ्या। [प्रदान।
बनिज दे० (पु०) वाणिज्य, व्यापार, लेनदेन, आदान
बनिया दे० (पु०) वणिक्, व्यापारी, सौदागर।
बनियायन दे० (स्त्री०) वणिक् स्त्री, बनिये की स्त्री।
बनी दे० (स्त्री०) दुलहिन, नई बहू।
बनेटी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की लाठी, जिसके दोनों ओर गोल लट्टू लगे रहते हैं, अथवा कोई कोई मशाल लगा देते हैं और उस लकड़ी को घुमाते हैं।
बनैनी दे० (स्त्री०) बनिये की स्त्री।
बनैला दे० (वि०) जङ्गली, वनवासी। [रङ्ग।
बनौटिया दे० (स्त्री०) कपासी, रङ्ग, कपास के समान
बन्दनवार दे० (पु०) तोरण।
बन्दर दे० (पु०) वानर, कपि, मर्कट, जहाजों के ठहरने का स्थान।—की सी आँख बदलना (वा०) शीघ्र क्रोध करना, बहुत जल्दी रिसाना, मुलाहिजा तोड़ना।—की तरह नचाना (वा०) अपने अधीन को तंग करना।—क्या जाने अदरक का स्वाद (वा०) निर्गुणी गुण की परीक्षा नहीं कर सकता, अयोग्य योग्य के गुणों का आदर करना नहीं जानता।—घाव (पु०) असाध्य घाव, कठिन फोड़ा। [ढींट, बन्दर का स्त्री।
बन्दरी दे० (स्त्री०) खड्ग विशेष, एक प्रकार की
बन्दी तद्० (पु०) यशोगायक स्तुतिकर्त्ता, भाट चारण, क़ैदी, बन्धुआ। भूषण विशेष, जिसे स्त्रियाँ मस्तक पर लगाती हैं।—गृह (पु०) जेलखाना, कारागार।—जन (पु०) भाट, चारण, गुण बखान करने वाले। [चेरी।
बन्दोही दे० (स्त्री०) दासी, परिचारिका, सेविका,
बन्दोला दे० (पु०) भृत्यपुत्र, दास का लड़का।
बन्ध तद्० (पु०) बाँधना, गाँठ, ग्रन्थि।—में पड़ना (वा०) फन्दे में फँसना, आफ़त में पड़ना, क़ैद होना, जेल में पड़ना।
बन्धक तद्० (पु०) थाती, धरोहर, निक्षेप, न्यास, गिरौं।—दाता (पु०) न्यासदाता, रेहनदार।—धारी (पु०) गिरौं रखने वाला, न्यासधारी।—पत्र (पु०) रेहननामा।
बन्धन तद्० (पु०) बाँधना, गाँठ, क़ैद, गिरह लगाना, क़ैद करना। [जोड़ा जाना।
बन्धना दे० (क्रि०) बन्ध होना, अटकना, बन्धाना,
बन्धाई दे० (स्त्री०) बाँधने का काम, बाँधना, बाँधने की मजूरी।
बन्धान दे० (स्त्री०) बन्धेज, नियत आजीविका, निश्चित वृत्ति, नियत वृत्ति, किसी बात का निश्चय।
बन्धानी दे० (पु०) पत्थर ढोने वाला, नशा का नित्य सेवक, अफ़ीमची।
बन्धु तद्० (पु०) मित्र, सुहृद, प्रेमी, सम्बन्धी।
बन्धुआ दे० (वि०) बन्धित, बँधा हुआ, क़ैदी, बन्दी। [विहङ्ग।
बन्धुर तद्० (वि०) चढ़ाव, उतराव। (पु०) हंस,
बन्धुल तद्० (पु०) असली पुत्र, वेश्या पुत्र, भडुआ, छिनाल का बेटा।
बन्धेज दे० (पु०) बन्धान, नियमित।
बन्ध्या तद्० (स्त्री०) बाँझ स्त्री, अपुत्रवती स्त्री।
बना दे० (क्रि०) बनना, तैयार होना, सुधरना। (पु०) वर, दूल्हा।
बनी दे० (स्त्री०) बनी, दुलहिन, वरनी।
बन्हा दे० (पु०) टोना, टुटका, यन्त्र मन्त्र।—ई (स्त्री०) जादूगरनी, टोनहा।
बपरा दे० (पु०) बाप का धन, बपौती, पैतृक धन।
बपुरा दे० (वि०) रङ्क, अनाथ, असहाय, दीन, कंगाल।
बपौती दे० (स्त्री०) बपरा, बाप का द्रव्य।
बफारा दे० (पु०) बाफ, बाफ, भाफ, गरम जल या किसी ओषधि की बाफ से रोगपीड़ित शरीर के अंग को सेकना।—लेना (वा०) बाफ शरीर में लगने देना, वाष्पस्नान।
बबुआ दे० (पु०) लड़का, पुत्र, प्रिय पुत्र, दुलारा।
बबुना (पु०) लाड़ला लड़का। [वृक्ष का नाम।
बबूर बबूल (पु०) बर्बुर, वृक्ष विशेष, एक कटीले
बबेसिया दे० (पु०) प्रलापी, प्रलाप बकने वाला, गप्पी, गपोड़िया, बवासीर रोग वाला।

बवेसी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, बर्श रोग, बवासीर।
बव्धी दे० (स्त्री०) चूमा, मोठी, चुम्मा, चुम्बन, मच्छी।
बम दे० (स्त्री०) सोता, स्रोत, चार हाथ का माप।
बमकना दे० (क्रि०) चिल्लाना, उमराना, ऊपर उठना, सूजना, फूलना।
बम्बा, बंबा दे० (पु०) सोता, स्रोत, पानी का नल।
बया दे० (पु०) पक्षी विशेष, एक पक्षी का नाम, यह पक्षी सीख बहुत जल्दी मान लेता है, तौल, तौलाई का पेशा करने वाला।
बयाला दे० (वि०) बादी, बातुल, बात विशिष्ट।
बयान दे० (पु०) कथन, कहन, वर्णन।
बयाना दे० (पु०) खरीद फरोख्त पक्की करने को खरीदी हुई वस्तु के मूल्य में से कुछ मूल्य पेशगी या अगाऊ देना, साई।
बयार दे० (पु०) वायु, पवन, बतास।
बयालीस दे० (वि०) संख्या विशेष, चालीस और दो, ४२, दो अधिक चालीस। [अस्सी, ८२।
बयासी दे० (वि०) अस्सी और दो, दो अधिक
बरंडा, बरण्डा दे० (पु०) बरामदा, दालान।
बर तद्० (पु०) वरदान, आशिष, आशीर्वाद, इष्ट प्राप्ति, मनोरथसिद्धि, पति, स्वामी, दूल्ह।
बरई (पु०) तमोली, पान बेचने वाला। [बरसना।
बरखना दे० (क्रि०) वृष्टि होना, वर्षा होना, पानी
बरगद दे० (पु०) बट, बद का पेड़।
बरगा दे० (पु०) कड़ी, तड़क, धरन, लम्बी सीधी लकड़ी जो कड़ी आदि बनाने के काम में आती है।
बरजना दे० (क्रि०) वर्जन करना, निषेध करना, वारण करना, मना करना।
बरटा तद्० (स्त्री०) हंसी, राजहंसी, बरें।
बरत तद्० (पु०) व्रत, उपास, उपवास, चमड़े की रस्सी।
बरतन, बर्तन दे० (पु०) बासन, पात्र, भाण्ड।
बरतना दे० (क्रि०) काम में लाना, उपयोग में लाना, व्यवहार करना।
बरतनी दे० (स्त्री०) अक्षरौटी, वर्णमाला। [बाँटना।
बरताना दे० (क्रि०) भाग लगाना, विभाग करना,
बरद तद्० (पु०) वर देने वाला, वर दाता।
बरदान तद्० (पु०) आशीर्वाद प्रसाद, उपहार, इनाम।
बरदी (स्त्री०) लदा हुआ बैल, पोशाक जो एक विशेष प्रकार की हो।
बरदैत दे० (पु०) मागध, दसौंधी, आशीर्वादक, आशीर्वाद देने वाला।
बरध दे० (पु०) बैल, वृषभ।
बरधा (पु०) देखो, बरध। [गर्भ धारण करना।
बरधना दे० (क्रि०) बढ़ाना, पालन करना, गौ का
बरधाना दे० (क्रि०) गौ को गर्भ धारण कराना।
बरन तद्० (पु०) वर्ण, रंग, अक्षर, बिछावट। (अ०) बल्कि, प्रत्युत।
बरना दे० (क्रि०) वरण करना, स्वीकार करना, बराना, अपने अभिमत को स्वीकार करना, ब्याह करना, पति को वरण करना।
बरनी दे० (स्त्री०) पलकों के अग्रभाग पर लगे हुए बाल। (वि०) वरण किया हुआ।
बरवनी दे० (स्त्री०) बरनी।
बरबस दे० (पु०) प्रबलता, ज़बरदस्ती।
बरब दे० (पु०) पक्षी विशेष। [का सर्प।
बरबट दे० (पु०) रोग विशेष, पिलही, एक प्रकार
बरबाद (वि०) नष्ट, सत्यानाश।
बरबादी दे० (स्त्री०) नाश, विनाश।
बरभसिया दे० (वि०) बहुरूपिया, स्वाँग रचने वाला।
बरमा (पु०) बढ़ई का एक औज़ार जिससे लकड़ी में छेद करते हैं।—ना (क्रि०) बरमे से छेद करना। [बकाना।
बरराना दे० (क्रि०) प्रलाप बकना, स्वप्न में बड़-
बरबट (पु०) तिल्ली, पिलही, प्लीहा।
बरवा दे० (पु०) एक छन्द का नाम, काँटा जिससे मछली मारी जाती है, रागिनी विशेष, कहते हैं उस रागिनी की मधुरता पर सर्प और हिरन मोहित हो जाते हैं।
बरस तद्० (पु०) वर्ष, सम्वत्, संवत्सर, एक नशीली वस्तु जो अफ़ीम से बनायी जाती है।—गाँठ (पु०) जन्म दिन के उपलक्ष का उत्सव, साल गिरह।
बरसना दे० (क्रि०) पानी पड़ना, वृष्टि होना।
बरसायन दे० (वि०) वार्षिक, सांवत्सरिक, वर्षी।
बरसौड़ी दे० (स्त्री०) वार्षिक कर, भाड़ा, वार्षिक वृत्ति।

बरहा दे० (पु०) गोचर भूमि, पशुओं के चरने की भूमि, पुरवट का रस्सा, खेत में पानी ले जाने की नाली।
बरा दे० (पु०) बड़ा, उर्द की पिठी की पूड़ी।
बराई दे० (क्रि०) छाँटी, चुनी, छाँटकर, चुनकर।
बरात दे० (स्त्री०) विवाह की यात्रा, वरयात्रा, वर के साथियों का गमन। [के लोग।
बराती दे० (पु०) बरात में जाने वाले, वर की ओर
बराना दे० (पु०) पृथक् रहना, अलग रहना, परहेज़ करना, बचा जाना।
बराबर (वि०) समान, साथ साथ, लगातार।—ी (स्त्री०) समानता, मुकाबिला।
बरामदा दे० (पु०) बरण्डा, दालान।
बरारा दे० (पु०) रस्सी, चमोटी।
बराव दे० (पु०) संयम, रोक, परहेज़, बचाव।
बराह तद्० (पु०) सूकर, सूअर, विष्णु का तीसरा अवतार।
बरियाई दे० (स्त्री०) बलात्कार, ज़ोरावरी, ज़बरदस्ती।
बरियार दे० (पु०) बलवान, प्रबल, बलशाली, प्रभाववान्, समर्थ।
बरियारा दे० (वि०) बलवान्, बढ़ कर, बढ़े हुए।
बरी दे० (स्त्री०) कली, चुने की कली, बड़ी।
बरुण दे० (पु०) वरुण, जल के अधिपति देवता, पश्चिम दिशा के अधिपति, दिक्पाल।
बरुणालय तद्० (पु०) [वरुण+आलय] समुद्र, सागर, वरुण के रहने का स्थान।
बरुणी दे० (स्त्री०) पपनी, आँख पर के बाल।
बरेज दे० (पु०) पनवाड़ी, पान का खेत।
बरेठन दे० (स्त्री०) धोबिन, रजकी। [जाति।
बरेठा दे० (पु०) धोबी, रजक, कपड़ा धोने वाली एक
बरेरा दे० (स्त्री०) बिरनी, झाड़ा, एक प्रकार की पंखदार कीट।
बरै दे० (पु०) तमोली, पान वाला।
बरैन दे० (स्त्री०) तमोलिन, पनेरिन। [डंठल।
बरोठा दे० (पु०) धोबी, देवढ़ी, ज्वार आदि का
बरौठा दे० (पु०) रजक, धोबी, देवढ़ी।
बर्छा, बरछी दे० (पु०) शस्त्र विशेष, भाला।
बर्छैत दे० (पु०) बर्छे वाला, बर्छाधारी, भालैत।

बर्त, बरत दे० (पु०) काम, अभ्यास, साधन।
बर्तन, बरतन दे० (पु०) बरतन, बासन, पात्र।
बर्तना, बरतना दे० (क्रि०) काम में लाना, उपयोग करना, व्यवहार करना।
बर्ताव, बरताव दे० (पु०) आचरण, व्यवहार।
बर्दा दे० (पु०) बैल।
बर्मा दे० (पु०) अस्त्र विशेष, बढ़ई का अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ियों में छेद किया जाता है। क्षत्रिय जाति सूचक, यथा—विजयसिंह वर्मा।
बर्माना दे० (क्रि०) छेदना, बेधना, बींधना।
बर्राना दे० (क्रि०) सोते में बकना।
बर्राहट दे० (स्त्री०) प्रलाप, बकवाद, बड़बड़।
बर्वै दे० (पु०) भाषा के एक छन्द का नाम।
बर्ष तत्० (पु०) सवत्सर, बारह महीना।
बर्षासन तद्० (पु०) बरस भर का भोजन, वर्ष भर पर भोजन करने वाला। [श्राद्ध।
बर्षी दे० (स्त्री०) वर्ष दिन के बाद का कृत्य, वार्षिक
बर्सात दे० (स्त्री०) वर्षाकाल, वर्षा का समय।
बर्ह तद्० (पु०) मोरपङ्ख, मयूर पुच्छ, मोर का पाँख।
बर्ही तद्० (पु०) मयूर, मोर, केकी, शिखण्डी।
बल तद्० (पु०) सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, बट, ऐंठन।
बलकना दे० (क्रि०) उमरना, उफकना, खौलना, अपनी बड़ाई आप करना। [विलाप करना।
बलखा दे० (क्रि०) सिसकना, ठुनकना, रोना,
बलताड़ दे० (पु०) वृक्ष विशेष। [बलतोड़।
बलतोड़ दे० (पु०) बाल के टूटने से उत्पन्न फोड़ा,
बलद दे० (पु०) वृषभ, वृषभ, बैल।
बलदाऊ दे० (पु०) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई।
बलदी दे० (पु०) लदा हुआ बैल। [होना।
बलना दे० (क्रि०) जलना, धधकना, दहना, दग्ध
बल-बकरा दे० (पु०) अकारण मारा जाने वाला, बलिदान के लिये निर्दिष्ट बकरा।
बलबलाना दे० (क्रि०) उबलना, कामातुर होना, ऊँट की बोली।
बलबीर दे० (पु०) बलदेव, श्रीकृष्ण, श्रीरामचन्द्र।
बलभद्र तत्० (पु०) बलदेव, बलराम।
बलम, बलमा दे० (पु०) बल्लभ, स्वामी, प्रियतम।
बलमि (पु०) देखो बलम।

बलराम तद्० (पु०) वसुदेव के ज्येष्ठ पुत्र, ये उनकी स्त्री रोहणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। देवकी के सातवें गर्भ के समय कंस ने रक्षक नियुक्त किये थे, परन्तु माया ने उस गर्भ को खींच कर रोहणी के गर्भ में स्थापित कर दिया। रक्षकों को तो ये बातें मालूम नहीं हुई, अतः उन लोगों ने कंस से कहा कि गर्भ नष्ट हो गया। एक गर्भ आकर्षण करके दूसरी जगह रखा गया इस कारण रोहिणी के पुत्र का नाम सङ्कर्षण पड़ा। बलराम ने गदायुद्ध में मगध का राजा जरासन्ध को हरा दिया था, परन्तु मारा नहीं था। दुर्योधन की कन्या लक्ष्मणा के स्वयम्वर के समय कौरवों ने श्रीकृष्ण पुत्रसाम्ब को पकड़ कर क़ैद कर लिया था। यह सुन कर बलराम वहाँ पहुँचे, परन्तु दुर्योधन किसी प्रकार साम्ब को छोड़ना नहीं चाहता था। यह देख कर बलराम ने कौरवपुरी को गङ्गा में फेंक देने के लिये उस नगरी के दीवार में हल लगाया, हस्तिनापुर घूमने लगा, यह देख कर दुर्योधन साम्ब और लक्ष्मणा के सहित उनकी सेवा में उपस्थित हुआ, साम्ब को समर्पण कर उसने गदायुद्ध सीखने की उनसे प्रार्थना की। महावीर बलराम ने, भाण्डीर वन में एक मुक्के के आघात से प्रलम्बासुर को मार गिराया था। उन्होंने गर्दभ रूपी धेनुकासुर को भी पर्वत पर फेंक कर मार डाला था।

बलवन्त दे० (गु०) बलवान्, समर्थ, सशक्त।

बलवान् (गु०) देखो बलवन्त। [और पतली लकड़ी।

बलही दे० (स्त्री०) साँटी, मार, बोझ, लग्गा, लम्बी

बलहीन तद्० (वि०) निर्बल, बल शून्य, दुर्बल।

बलाई दे० (वि०) बलैया, आशीर्वाद, असीस, बाहरी, दूर के, उदासीन।—लेना (वा०) दुःख से सहायता पहुँचाना, अन्य के दुःख हटाने की इच्छा।

बलात्कार तद्० (पु०) बरबस, हठात्, ज़बरदस्ती।

बलि तद्० (पु०) नैवेद्य, देवता का भोग, अंश, पूजा, राजा विशेष, दानवपति, ये विरोचन के पुत्र और प्रह्लाद के पौत्र थे। बलि के सौ पुत्र थे, बाण सब से बड़ा था। पराक्रमी दानवपति बलि को दमन करने के लिये भगवान् ने वामन अवतार ग्रहण किया था बलि ने एक अश्वमेध यज्ञ किया था, उस यज्ञ की समाप्ति के समय भगवान् वामन रूप धारण करके वहाँ उपस्थित हुए। वामन रूपी विष्णु ने बलि की अनेक प्रकार से प्रशंसा करके उससे तीन पैर भूमि माँगी। दैत्यगुरु शुक्राचार्य ने भगवान् को पहचान लिया था, अतएव बलि को उन्होंने दान देने से रोका, परन्तु बलि ने उनकी बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। बलि ने प्रतिज्ञा भ्रष्ट होना उचित नहीं समझा। बलि ने वामन की यथाविधि पूजा की, और तीन पैर भूमि उनको सङ्कल्प कर दी। अब वामन ने अपना रूप इतना विशाल बनाया कि लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही। उन्होंने दो पदों ही से स्वर्ग और मर्त्यलोक नाप डाला, तीसरे पैर के लिये स्थान नहीं बचा। इनको मायावी समझ कर बलि के अनुचरों ने इन्हें अस्त्र शस्त्र लेकर मारना चाहा, परन्तु वे शीघ्र ही विष्णु के अनुचरों द्वारा हटा दिये गये। बलि ने भी अपने अनुचरों को युद्ध करने से रोका। अनन्तर विष्णु ने तीसरा पैर रखने के लिये बलि से स्थान माँगा। बलि अपना सिर ही पैर रखने के लिये स्थान बताया। वामन का तीसरा पैर अब बलि के सिर पर रखा गया, तब दानवपति भगवान् की स्तुति करने लगा। उसी समय विष्णु के अनन्य भक्त और बलि के पितामह प्रह्लाद वहाँ उपस्थित हुए। उनकी प्रार्थना से भगवान् ने बलि का बन्धन कटवा दिया। भगवान् ने प्रह्लाद से कहा कि "बलि ने बहुत त्याग करके अपनी सत्यता का पालन किया है, अतएव मैं इनको देवताओं को भी दुर्लभ पद दूँगा। सावर्णि मन्वन्तर में ये इन्द्र होंगे। जब तक वह मन्वन्तर नहीं आता, तब तक सुतल में जाकर इन्हें रहना पड़ेगा, मैं सर्वदा कौमोदकी गदा लेकर वहाँ उपस्थित रहूँगा और इनकी रक्षा करूँगा।" भगवान् विष्णु की आज्ञा से बलि सुतल नामक पाताल में रहने लगे।

बलिदान तद्० (पु०) देवभोग, देवता के लिये किसी जीव की हिंसा।

बैलिस्टर (पु०) बैरिस्टर।

बलिष्ठ तद्० (वि०) बलशाली, बलवान्, समर्थ।

वलित तत्० (वि०) सिकुड़न पड़ा हुआ, शिकनदार, बल पड़ा हुआ, सिमटा।
वलिपुष्ट तत्० (पु०) काक, कौवा, काग।
वलिरसा तत्० (स्त्री०) उपधातु विशेष, गन्धक।
वलिसङ्ग तत्० (पु०) अँकुश, चाबुक, कोड़ा, बानरों का समूह।
वलिहारी दे० (स्त्री०) निछावर, बधाई।—जाना (वा०) निछावर होना, बल जाना, बलबल जाना।
वली तत्० (वि०) बलवान्, समर्थ, पराक्रमी, पराक्रमशाली।—वर्द (पु०) साँड़, वृषभ।—मुख (पु०) बानर, कपि, मर्कट, बन्दर।
वलीयान् तत्० (वि०) बली, बलशाली, बलवान्। पराक्रमी, अत्यन्त पराक्रमी, अधिक बलवान्।
वलु दे० (पु०) ताकत, बल। (क्रि०) सुलग उठ, बर जा, भभक जा।
वलुवा या वलुआ दे० (वि०) रेतीला, बालुकामय।
वलूरना दे० (क्रि०) नोचना, खसोटना, खरोरना, गुरचना।
वलूला दे० (पु०) बुलबुला, बुलका, बुदबुदा।
वलेंडी दे० (स्त्री०) मरेंचा, मगरा, छजरा, दो छप्पर के बीच का उठा हुआ भाग।
वलैया दे० (स्त्री०) बलाई।
वल्लम दे० (पु०) भाला, सेल, बर्छा, नेजा, अस्त्र विशेष। [बाँस।
वल्ली दे० (स्त्री०) बल्ला, नाव खेने का बड़ा, लंबा
ववण्ड दे० (पु०) अन्धड़, बगूला।
ववाई दे० (स्त्री०) बिवाँई, पैर तले का घाव, विपादिका, शीत से पैर का फटना।
ववासीर दे० (पु०) रोग विशेष, अर्श रोग।
वस दे० (पु०) काबू, अधिकार, बल। (अ०) अधीन, बहुत, पर्याप्त, अलम्।—करना (वा०) अधीन करना, वश में करना, चुप करना, ठहरना।
वसन तत्० (पु०) वस्त्र, कपड़ा।
वसना दे० (क्रि०) रहना, भरना, ठहरना, वास करना। दे० (पु०) वसरा, बड़ी खाता।
वसनी दे० (स्त्री०) रुपये रखने की पतली थैली जो कमर में बाँध ली जाती है, थैली।
वसन्त तत्० (पु०) वसन्त, एक ऋतु का नाम, जो प्रधान ऋतु समझी जाती है। फाल्गुन और चैत ये दोनों महीने वसन्त ऋतु में हैं, कोई कोई चैत और वैशाख को ही वसन्त ऋतु मानते हैं।—फूलना (वा०) सरसों का फूल।—के घर की भी ख़बर है या वसन्त की कुछ भी ख़बर है (वा०) कुछ ज्ञात भी है, कुछ जानते भी हो।
वसन्ती तत्० (पु०) पीला रङ्ग। (वि०) पीले रंग का।
वसराना दे० (क्रि०) पूरा करना समाप्त करना।
वसाना दे० (क्रि०) टिकाना, नये गाँव भराना, बस्ती बसाना।
वसूला दे० (पु०) बढ़ई का एक अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ी काटी और छीली जाती है। [का अस्त्र।
वसूली दे० (स्त्री०) थवइयों का अस्त्र, ईंट छाँटने
वसैंधा दे० (वि०) सड़ा, बबसा, दुर्गन्धयुक्त। [स्थान।
वसेरा दे० (पु०) खोंता, घोंसला, पक्षियों के रहने का
वसोवास दे० (पु०) स्थित, स्थान, वास।
वस्ती दे० (स्त्री०) ग्राम, गाँव, पुरवा, पूरा।
वस्तु तत्० (स्त्री०) पदार्थ, द्रव्य, चीज़, जिंस।
वस्ना दे० (पु०) स्थित, वसन, बसना, बेठन, लपेटना।
वहकना दे० (क्रि०) निराश होना, धोखा खाना, भटकना, भूलना, लक्ष्यच्युत होना, उद्देश्य भ्रष्ट होना।
वहकाना दे० (क्रि०) भुलाना, निराश करना, धोखा देना।
वहङ्गी दे० (स्त्री०) बोझ ढोने के लिये तराज़ूनुमा एक वस्तु, इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं।
वहजाना दे० (क्रि०) बहना, बिगड़ना, ख़राब होना।
वहत्तर दे० (गु०) सत्तर और दो, दो अधिक सत्तर, ७२।
वहन दे० (स्त्री०) भगिनी, बहिन। [का चलना।
वहना दे० (क्रि०) चलना, पानी का चलना, हवा
वहनेऊ दे० (पु०) बहनोई, भगिनी पति, बहिन का पति।
वहनेली दे० (स्त्री०) बहिन।
वहनोई दे० (पु०) बहनोऊ, बहिन का पति, भगिनीपति।
वहर दे० (स्त्री०) नावों की भीड़, नौका समूह।
वहरा दे० (वि०) बधिर, न सुनने वाला।
वहरिया दे० (पु०) अशुद्ध वर्तन, अपवित्र बासन, (वि०) बाहर का, अपूर्व, अतिथि, पाहुन।

बहरी दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष, बाज पक्षी।
बहल दे० (स्त्री०) गाड़ी, बैलगाड़ी, रथ, एक प्रकार की बैलगाड़ी जो पुराने समय में बनती थी।
बहलना दे० (क्रि०) प्रसन्न होना, भूलना, खेलना, बहकना।
बहलाना दे० (क्रि०) खिलाना, प्रसन्न करना, मनोरञ्जक करना, मन बहलाव करना, भुलाना, फिराना।
बहलिया दे० (पु०) गाड़ीवान, गाड़ी हाँकने वाला।
बहली (स्त्री०) छोटा बहल, चढ़ने की गाड़ी, रथ, बैलगाड़ी।
बहादुर (वि०) शूर, वीर।—ी (स्त्री०) वीरता, शूरता।
बहादेना दे० (क्रि०) तोड़ना, उखाड़ना, बिगाड़ना, ख़राब करना, फेंकना।
बहाना दे० (क्रि०) भसाना, चलाना, बहा देना।
बहा फिरना दे० (वा०) भटकते फिरना, बिना काम के दौड़ते फिरना। [का आना।
बहाव दे० (पु०) धार, चढ़ाव, नदी की चाल, सोते
बहिन दे० (स्त्री०) भगिनी, बहन, सहोदरा।
बहिरा दे० (वि०) बधिर, बहरा।
बहिराना दे० (क्रि०) बाहर निकालना, बाहर करना।
बहिर्देश तद्० (पु०) बाहर स्थान, बाहर की भूमि, बाहर का देश। [विपरीत आचरणकर्ता।
बहिर्मुख तद्० (पु०) धर्म विमुख, उदासीन, अधर्मी,
बहिला दे० (स्त्री०) वन्ध्या, बाँझ, बिना लड़के की स्त्री, जिसके कभी लड़का न हुआ हो।
बही दे० (स्त्री०) खाता, खसरा, महाजनों के हिसाब लिखने की पुस्तक। [सामग्री।
बहीर दे० (स्त्री०) सैनिकों का समाज, सेना की
बहु तद्० (अ०) बहुत, अधिक, बड़ा विशाल। —तिथ (वि०) बहुत दिन, बहुत समय, बहुत बार, अनेक समय।—दर्शी (वि०) बहुत देखने वाला, दूरदर्शी, विद्वान, अभिज्ञ, पण्डित।—धा (अ०) बहुत प्रकार से, अनेक प्रकार से, अनेक बार, अनेक समय।—बाहु (पु०) रावण, सहस्रबाहु, कार्तवीर्य।—मूल्य (वि०) बहुत मूल्य का, बहुत दाम का, बढ़िया, महँगा।—वचन (पु०) अधिक संख्या बोधक प्रत्यय। (गु०) अनेक वचन, अधिक वाक्य।—विधि (गु०) अनेक प्रकार, अनेक भाँति।—व्रीहि (पु०) समास विशेष, एक समास का नाम, जिससे अन्य पदार्थ का बोध होता है। इस समास में अन्य पदार्थ की प्रधानता रहती है।
बहुत दे० (वि०) अनेक, अधिक, ढेर, भूरि।
बहुतात दे० (स्त्री०) अधिकता, आधिक्य, अधिकाई, समाई।
बहुतायत दे० (स्त्री०) अधिकाई, सरसाई।
बहुतेरा दे० (वि०) अनेक, अधिक, प्रायशः।
बहुनैन दे० (पु०) इन्द्र, देवराज।
बहुर या बहुरि दे० (अ०) फिर, और, पुनि, पुनः।
बहुरङ्गी दे० (वि०) चञ्चल, चपल, अव्यवस्थित, चित्रित, रंग बिरंग।
बहुरना दे० (क्रि०) लौटना, वापिस आना।
बहुराना दे० (क्रि०) लौटाना, फेर लाना, बचा लाना।
बहुरि दे० (अ०) और बार, पुनः, फेर, पुनि।
बहुरिया दे० (स्त्री०) बहू, बधू, दुलहिन।
बहुरूपा दे० (पु०) गिरगिट, शरट, कहते हैं स्वभाव ही से इसका रंग प्रति दिन बदला करता है।
बहुरूपिया दे० (पु०) स्वाँगी, भाँड़, अनेक रूप धर कर जो भीख माँगते हैं।
बहुल तद्० (वि०) प्रचुर, अधिक, बहुत। (पु०) कृष्ण वर्ण, काला रंग, आकाश, गगन, अग्नि।— गन्धा (स्त्री०) इलायची।
बहू दे (स्त्री०) बधू, स्त्री, दुलहिन, पतोहू, पुत्र बधू।
बहेड़ा (पु०) फल विशेष।
बहेलिया दे० (पु०) बधिक, व्याध, चिड़ीमार।
बहैत दे० (पु०) रमता, दुष्ट, दुर्जन, फिरने वाला।
बहोर } दे० (अ०) फिर, दुहरैया, लौटाने वाला,
बहोरी } फेरी [सूचक शब्द
बहनेटा दे० (पु०) भञ्जा का पुत्र, तिरस्कार-
बचना (क्रि०) बाँचना, समझना।
बँडा दे० (वि०) बेपूँछ का, पूँछ रहित, कुरूप, अकेला, बिना परिवार का, तरकारी विशेष।
बाँक दे० (स्त्री०) वक्रता, तिरछापन, टेढ़ापन, झुकाव, नदी आदि का घुमाव, दोष, अपराध, शस्त्र

विशेष, जिसका आकार कटार के समान होता है, भूषण विशेष, यह भूषण बाहु मध्य में पहना जाता है।—पन (पु०) छिछोरपन, तिरछापन।
बाँका दे० (वि०) टेढ़ा, तिरछा, शुघा, छैला, बदबैत।
बाँगा दे० (पु०) सबीज कपास।
बाँचना दे० (क्रि०) पढ़ना, पाठ करना।
बाँछा तद्० (स्त्री०) बाँछा, चाह, मनोरथ, अभिलाष।
बाञ्छित तद्० (क्रि०) ईप्सित, अभीष्ट, चाहा हुआ, इच्छित, अभिलषित।
बाँजर दे० (पु०) बंजर, ऊसर, पटपर।
बाँझ दे० (स्त्री०) वन्ध्या, अप्रसूता।
बाँट दे० (पु०) भाग, अँश, हिस्सा, तौलने का बटखरा, गाय भैंस का वह भोजन जो दूध दुहने के समय उन्हें दिया जाता है, सन्ध्या का बँधा हुआ भोजन। [बाँटना, हिस्सा लगाना।
बाँटना दे० (क्रि०) भाग करना, विभाग करना,
बाँड़ा दे० (वि०) पुच्छ रहित पशु, बिना पूँछ का पशु, अकेला, असहाय, जिसके कोई न हो।
बाँड़ी दे० (स्त्री०) लकड़, डंडा, लट्ठ।
बाँदर (पु०) बँदर, कपि।
बाँदा दे० (पु०) अमर बेल, आकाश बेल, आकाश लता, वृक्षों के ऊपर जो एक प्रकार की लता उगती है, एक नगर विशेष। [खरीदी हुई दासी।
बाँदी दे० (स्त्री०) लौंडी, दासी, सेविका, परचारिका,
बाँध दे० (पु०) मेंड़, बन्ध, धाप।
बाँधना दे० (क्रि०) जकड़ना, रोकना, बनना।
बाँधनू दे० (पु०) रंगने की प्रक्रिया विशेष।
बाँबी (स्त्री०) साँप का बिल।
बाँस दे० (पु०) वंश वृक्ष, एक पेड़ विशेष, भूमि मापने की लकड़ी।—पर चढ़ना (वा०) बदनाम होना, कलङ्कित होना, दुर्नाम होना।—फोड़ा (पु०) जाति विशेष। इस जाति के लोग बाँस की टोकरी आदि बना कर बेचते हैं और इसी से अपना निर्वाह करते हैं। [नाम।
बाँसली दे० (स्त्री०) मुरली, वंशी, एक बाजे का
बाँसा या पाँसा दे० (पु०) नाक की हड्डी, जो नाक के भीतर रहती है।
बाँसी तद्० (स्त्री०) वंशी, बाँसुरी, मुरली।
बाँसुरी दे० (स्त्री०) मुरली, बसरी।
बाँह तद्० (स्त्री०) बाहु, भुजा।—टूटना (वा०) निःसहाय होना, सहायक न होना, किसी बान्धव का वियोग होना।—चढ़ाना (वा०) लड़ाई करने के लिए उद्यत होना, झगड़ा करना।—देना (वा०) सहायता देना।—पकड़ना (वा०) सहायता करना, पक्ष करना, आश्रय देना।—बल (वा०) सहायक, पक्षपाती, पक्ष करने वाला।—गहना (वा०) सहायता करना, रक्षा करने की प्रतिज्ञा करना।—गहे की लाज (वा०) रक्षा करने की प्रतिज्ञा करके पुनः उसे अनेक कष्ट उठा कर भी न छोड़ना।
बाई दे० (स्त्री०) बात, अजीर्ण, अपच।—पचना (वा०) उत्सुकता का कम होना, निराश होना, हताश होना।—में भड़कना (वा०) बकना, बड़बड़ाना।
बाईस दे० (वि०) बीस और दो, २२, संख्या विशेष।
बाईसी दे० (पु०) एक प्रकार की सेना का नाम, राजा की रक्षक सेना।
बाईहा दे० (पु०) बात रोगी, गठिया वाला।
बाउर दे० (वि०) बौरहा, बौड़म, पागल।
बाऊ दे० (पु०) वायु, पवन।
बाकला दे० (पु०) एक तरकारी का नाम।
बाकस दे० (पु०) अडूसा, वासा वृक्ष, सन्दूक, पेटी, पिटारी।
बाकी (वि०) बचा हुआ, अवशिष्ट।
बाखर दे० (पु०) अङ्गनाई, चौक, आंगन।
बाग दे० (स्त्री०) लगाम, बाग डोर।—छूटना (वा०) विवश होना, बस में न रहना, घोड़े की बाग छूटने से स्वयं बेकस होना।—मोड़ना (वा०) शीतला का उल जाना।—डोर (स्त्री०) लम्बी लगाम, बाग, लगाम की रस्सी या रास।
बागा दे० (पु०) जोड़ा, खिलत, पारितोषिक दिया जाने वाला कपड़ा। [विद्रोही।
बागी दे० (पु०) घुड़चढ़ा, असवार, अश्ववार, शत्रु,
बागुर दे० (पु०) फंदा, जाल, पाश, फाँसी।
बाघ तद्० (पु०) व्याघ्र, शेर, नाहर।
बाघनी तद्० (स्त्री०) व्याघ्री, बाघिन।

बाघम्बर तद्० (पु०) व्याघ्राम्बर, बाघ का चर्म, बाघ की खाल।
बाघा दे० (पु०) व्याघ्र, चीता, शेर। [निकलना।
बाघी तद्० (स्त्री०) रोग विशेष, गाठा, गाठा का
बाछ दे० (स्त्री०) चुनाव, छाँट, निर्वाचन।
बाछना दे० (क्रि०) चुनना, छाटना, बिनना, बहुतों में से ढूँढ़ कर उत्तम निकालना।
बाछी दे० (स्त्री०) बछिया, गाय की बच्ची।
बाजन दे० (पु०) बाजा, वाद्ययन्त्र।
बाजना दे० (क्रि०) बाजे से शब्द होना, शब्द होना।
बाजरा दे० (पु०) अन्न विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध अन्न।
बाजा दे० (पु०) बाजन, वाद्य।
बाज़ीगर (पु०) जादूगर।
बाज़ीगरनी (स्त्री०) जादूगरनी।
बाजू दे० (पु०) भूषण विशेष, अंगद, भुजबन्द। —बन्द (पु०) बाजू, भूषण विशेष।
बाट दे० (पु०) पन्थ, मार्ग, राह, रस्ता, डगर। —काटना (वा०) मार्ग तै करना, रास्ता चलना [बाग।
बाटिका दे० (स्त्री०) फुलवारी, उपवन, बगीचा,
बाटी दे० (स्त्री०) घर, गृह, वासस्थान, एक प्रकार की मोटी गोल रोटी, स्वनाम ख्यात रोटी, अँगाकड़ी।
बाड़, बाढ़ दे० (स्त्री०) धार, तलवार आदि की तीक्ष्णता, पंक्ति, पाँति, प्रतार, घेरा, बाढ़। —छोड़ना (वा०) एक साथ कई बन्दूक दागना। —झाड़ना (वा०) एक साथ बन्दूक दागना। —दिलवाना (वा०) धार तेज करवाना, शान चढ़वाना, तीक्ष्ण कराना। —बाँधना (वा०) काँटे आदि से कुछ स्थान की परिधि बनाना, बाड़ा बनाना। —रखना (वा०) तीखा करना, शान चढ़ाना। —ही जब खेत खाय तो रखवाली कौन करे (लो० उ०) रक्षक ही भक्षक का काम करे तो रक्षा की क्या आशा, जिससे हानि होना असम्भव है यदि उसीसे हानि पहुँचे तो फिर भरोसा किस पर किया जाय।
बाडव तद्० (पु०) ब्राह्मण, घोड़ों का समूह।
बाड़वानल तद्० (पु०) [बाडव+अनल] समुद्र का अग्नि, समुद्र की आग।

बाड़ा दे० (पु०) हाता, घेरा।
बाढ़िया दे० (पु०) शान चढ़ाने वाला, छुरी या तलवार आदि को तीखा करने वाला। [का घर।
बाड़ी दे० (स्त्री०) उपवन, बाग, बगीचा, बाग में
बाढ़ दे० (स्त्री०) तलवार की धार, अधिकता, अधिकाई, बढ़ती, परिवृद्धि, नदी में अधिक जल का आना, चढ़ाव, धावा, बंदूक आदि का क्रमशः शब्द।
बाढ़ना दे० (क्रि०) बढ़ना, उमड़ना, उफनना।
बाण तद्० (पु०) अस्त्र विशेष, शर, बलिराज का ज्येष्ठ पुत्र, मूँज की बनी हुई रस्सी, संख्या विशेष, पाँच की संख्या। —गङ्गा (स्त्री०) नदी विशेष, सोमेश्वर नामक पर्वत से निकली हुई नदी, कहते हैं किसी कारण से रावण ने सोमेश्वर पर्वत पर बाण मारा था, जिससे उस पर्वत के दो खण्ड हो गये और उसके सन्धि स्थान से एक नदी निकली जिसका नाम बाणगङ्गा पड़ा। —भट्ट (पु०) संस्कृत के एक कवि और ग्रन्थकार, ये गद्यकाव्य की रचना में सर्वश्रेष्ठ हैं। हर्षचरित और कादम्बरी नामक दो गद्य काव्य इनके बनाये हैं और चण्डिकाशतक नामक एक पद्य-काव्य भी है। पार्वतीपरिणय नामक एक छोटी नाटिका भी इनके नाम से प्रसिद्ध है। परन्तु इस विषय में विद्वानों की सम्मति भिन्न प्रकार की है। ये कवि कान्यकुब्ज-देशाधिपति राजा हर्षवर्द्धन के सभापण्डित थे। हर्षवर्द्धन का समय छठी शताब्दी निश्चित हुआ है, अतएव उनके सभापण्डित का भी वही समय मानना पड़ेगा। —लिङ्ग (पु०) नर्मदा नदी में उत्पन्न शिवलिङ्ग विशेष। [व्यवसाय, व्यापार, लेनदेन।
वाणिज्य तद्० (पु०) वैश्य वृत्ति विशेष, क्रयविक्रय,
वाणी तद्० (स्त्री०) वचन, बोली, सूक्ति, भाषण, सरस्वती। [शुष्क, सूखा।
बाण्डा, बाँडा दे० (पु०) निराश्रय, निःसहाय, लँडा,
बात दे० (स्त्री०) बोलचाल, कथा, कथन, सम्भाषण, बोलने का विषय, प्रश्न, जिज्ञासा, कारण, निदान। (पु०) रोग विशेष, गठिया, बाई। —उठाना (वा०) आज्ञा का उल्लङ्घन करना, बात न मानना,

चर्चा करना।—करना (वा०) बोलना, बतियाना, बातचीत करना।—काटना (वा०) कथन का खण्डन करना।—बात का बतकड़ या बतगड़ बनाना या करना (वा०) छोटी बात को बड़ी बनाना, सामान्य बात पर हुज्जत करना।—की बात में (वा०) अभी, तुरन्त, शीघ्र, झटपट।—गढ़ना (वा०) बात बनाना, फुसलाने की इच्छा से मिथ्या प्रशंसा करना।—चबाना (वा०) बोलते बोलते चुप हो रहना, धीरे धीरे बोलना, ठहर ठहर कर बातें करना।—चलाना (वा०) किसी की चर्चा करना, बोलने का प्रारम्भ करना।—चीत (वा०) परस्पर भाषण, आपस में उक्ति प्रत्युक्ति।—टालना (वा०) आज्ञा भङ्ग करना, प्रस्तुत वाक्य का उत्तर न देना।—पर बात याद आती है (वा०) यह बात कहने की मेरी इच्छा नहीं थी, परन्तु प्रसङ्ग आ पड़ने से कहता हूँ जहाँ ऐसी अभिप्राय बतलाना होता है वहाँ यह बात कही जाती है।—पी जाना (वा०) कटूक्ति को भी सह लेना।—फेंकना (वा०) ठट्ठा करना, किसी की बात की अवहेला करना।—फेरना (वा०) कहते कहते बात बदल देना, अकस्मात् न कहने योग्य निकली हुई बात को छिपा लेना अथवा उसका अर्थ बदल देना।—बढ़ाना (वा०) झगड़ा टंटा करना, छोटी बात के लिये लड़ना, किसी बात को बढ़ा कर कहना।—बनाना (वा०) स्वार्थ साधने के लिये झूठी बातें कहना।—बिगाड़ना (वा०) बने हुए कार्य को नष्ट कर देना।—मानना (वा०) कहना मानना, आज्ञा मानना।—रखना (वा०) प्रतिज्ञा पालन करना, कही बात को पूरा करना।—रहना (वा०) प्रतिष्ठा का रह जाना, सान रह जाना।—लगाना (वा०) इधर की बात उधर करना, निन्दा करना, झगड़ा लगाना।

बाती दे० (स्त्री०) बत्ती, दिया में जलाई जाने वाली बाती, बत्ती, पलीता। [बाज़ा, बड़बड़िया।

बातूनिया दे० (वि०) वाचाल, अधिक बातें करने

बातूनी दे० (वि०) बातें बनाने वाला, अधिक बोलने वाला, गप्पी, बकवादी, वाचाल।

बातें दे० (स्त्री०) बात का बहुवचन।—करना दे० (वा०) बतियाना, सम्भाषण करना।—बनाना दे० (वा०) झूठी बातें कहना, अपना अपराध छिपाने के लिये झूठ बोलना।—मारना दे० (वा०) अपनी वीरता बताना, डींगें हाँकना।—सुनना दे० (वा०) ध्यान से बात सुनना, कटूक्ति सहना, अधिक्षेप वचन सहना।—सुनाना दे० (वा०) अधिक्षेप करना, निन्दा करना, कड़ी कड़ी बातें कहना।—बातों में उड़ाना दे० (वा०) किसी की प्रार्थना पर ध्यान न देना, किसी के काम की बातों पर हँसी करना।—बातों में धर लेना दे० (वा०) निरुत्तर करना, उक्ति प्रत्युक्ति में चुप करा देना।—बातों में लपेटना दे० (वा०) बिना प्रयोजन किसी को रोकना, पहले बातें बना बड़ी बड़ी आशायें देकर पीछे धोखा देना।

बादल दे० (पु०) मेघ, घटा, बद्दल।

बादला दे० (पु०) लप्पा, एक प्रकार की जरी का तार, जो सोना और रूपे का बनता है।

बादिनि दे० (स्त्री०) बोलने वाली, झगड़ालू।

बादुर दे० (पु०) चमगीदड़।

बाध तत्० (पु०) रोक, रुकावट, निवारण। (दे०) मूँज की डोरी जिससे प्रायः खाट बिनी जाती है।

बाधक तत्० (पु०) प्रतिबन्धक विघ्नकारक, रोकने वाला। [दुःख, प्रसूति सम्बन्धी पीड़ा।

बाधा तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, क्लेश, मानसिक

बाधित तत्० (वि०) प्रतिबन्धित, रोका हुआ।—करना (वा०) अनुगत करना, आभारी बनाना।

बाध्य तत्० (वि०) बाधनीय, रोकने योग्य, प्रतिबद्ध करने के उपयुक्त, वशीभूत, बेबस।

बान दे० (स्त्री०) टेव, अभ्यास। (पु०) बाण, शर बाद, मूँज की बनी रस्सी।

बानगी दे० (स्त्री०) आदर्श, दृष्टान्त, नमूना।

बानबे दे० (वि०) संख्या विशेष, नब्बे और दो, ९२।

बाना दे० (पु०) स्वभाव, प्रकृति, व्यवहार, परिच्छद वेष विन्यास, वेष धारण, भरनी, जिस सूत से कपड़े की चौड़ाई भरी जाती है। प्रतिज्ञा, विचार, अस्त्र विशेष। (क्रि०) खुलना, फटना, पसरना, द्विविधा होना, दो भाग होना।

बानी दे० (स्त्री०) कपड़े बुनने का सूत, बाणी, बोली।
—बोनी दे० (स्त्री०) बिनावट, बिनवाई, बुनावट।
बानूबा दे० (पु०) जल पक्षी विशेष। [का नाम।
बानूसा, बानूसी दे० (पु०) एक प्रकार के कपड़े
बानैत दे० (वि०) निर्माता, रचयिता, बनाने वाला, बाण धारण करने वाला, धनुर्धर।
बान्धव तद्० (पु०) भाई बन्धु, कुटुम्ब, परिवार, सम्बन्धी, नतैत, नातेदार।
बाप दे० (पु०) पिता, जनक।—करना (वा०) बाप के समान आदर करना, आज्ञानुवर्ती होना, वश होना।—रे बाप (वा०) आश्चर्य मय द्योतक। —मारे का वैर (वा०) अतिशय विरोध, बड़ा भारी विरोध।—न मारी पीदड़ी बेटा तीरन्दाज़ (स्त्री० उ०) अयोग्य पिता के पुत्र का घमण्डी होना। जिसका बाप अयोग्य हो और वह भी स्वयं अयोग्य हो और वह अपना बखान करे तब यह लोकोक्ति कही जाती है।
बापड़ा, बापरा दे० (वि०) दीन, असहाय, दरिद्र, कंगाल। यह मारवाड़ी प्रयोग है। [असहाय।
बापरो दे० (पु०) बापरा, दीन, दुखिया, असमर्थ,
बाफ तद्० (पु०) बाष्प, भफारा, गरम जल आदि का धुँआ।
बाँबनी दे० (स्त्री०) बाँबी, सर्प का बिल, साँपों के रहने का स्थान, बावन संख्या विशिष्ट।
बाबर दे० (पु०) मिठाई विशेष।
बाबा दे० (पु०) बाप, दादा, बूढ़ा, साधु, संन्यासी, इस शब्द का प्रयोग बड़े माननीय के अर्थ में किया जाता है।—जी (पु०) योगी, संन्यासी, साधु आदि।
बाबू दे० (पु०) बालक, पुत्र, ठाकुर, ज़मींदार, बङ्गाली, किरानी, आज कल यह पुरुष मात्र के लिये प्रयुक्त होता है।
बाँबी दे० (स्त्री०) बाबनी, सर्प का बिल।
बाम दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली का नाम। (पु०) बाँया, उलटा, सुन्दर स्त्री। (पु०) महादेव, कामदेव।
बामा तद्० (स्त्री०) स्त्री, पत्नी, भार्या।
बाम्हन तद्० (पु०) ब्राह्मण।
बाम्हनी दे० (स्त्री०) एक पौधे का नाम, जो दवा के काम में आता है। अञ्जनहारी, कजिया, ब्राह्मणी, कीट विशेष, छिपकली, बिसतुइया।
बाय दे० (क्रि०) प्रसार कर, फैला कर। (पु०) वायु, बाई, बात।
बायन दे० (पु०) उपहार, बैना, डाली किसी उत्सव विशेष के उपलक्ष में मित्रों के घर जो भेजा जाता है।
बायना दे० (पु०) "बायन" देखो।
बायब तद्० (पु०) वायव्य कोण, वायु कोण, पश्चिम उत्तर का कोना। (गु०) अन्य, दूसरा, भिन्न।
बायव्य तद्० (पु०) वायु कोण।
बाँया दे० (वि०) वामाङ्ग, बायीं ओर, उलटा। —पाँव पूजना (वा०) पाखण्डियों के धोखे में आना, दाम्भिकों पर विश्वास करना।
बायो दे० (क्रि०) फैलाया, पसारा, विस्तारित किया।
बार दे० (स्त्री०) विलम्ब, समय, दिन, बेला, अवसर, देरी।—लगाना (वा०) विलम्ब करना, देरी लगाना। [गज।
बारण तद्० (पु०) वारण, रुकावट, अटकाव, हाथी,
बारन तद्० (पु०) वारण, रोक, रुकावट।
बारना दे० (क्रि०) बिलगाना, अलग अलग करना, निषेध करना, रोकना, रुकावट डालना। [पतुरिया।
बारनारी तद्० (स्त्री०) वेश्या, गणिका, वाराङ्गना,
बारंबार तद्० (अ०) बार बार, प्रतिक्षण, हर घड़ी, प्रति पल।
बारह दे० (वि०) संख्या विशेष, दस और दो, दो अधिक दश, १२।—खड़ी (स्त्री०) द्वादश मात्राओं का व्यञ्जनों के साथ मिलान।—बाट (पु०) नाश, सर्वनाश, चौपट।—बाट होना (वा०) उजड़ना, बिगड़ना, ख़राब होना, सत्यानाश होना।
बारहदरी दे० (स्त्री०) बारह दरवाज़ा का मकान, हवादार मकान, बङ्गला। [खड़ी।
बाराखरी दे० (स्त्री०) अक्षरों का मिलाना, बारह
बारासिंगा दे० (पु०) कस्तूरा, मृग विशेष, यह जङ्गली जन्तु है, हिरनों से बड़ा होता है।
बाराह तद्० (पु०) बाराह, सूकर, सूअर।
बाराहीबेर दे० (पु०) औषधि विशेष, बेल वाला।

बारिश दे० (स्त्री०) वर्षा, मेंह का बरसना।
बारी दे० (स्त्री०) जल, पानी, फुलवारी, बाड़ी, बगीचा, झरोखा, कान और नाक में पहनने का गहना, बिन ब्याही कन्या, क्वारी कन्या। (अ०) ओसरी, पाला। (पु०) जात विशेष, पतरी बनाने वाला, मसाल दिखाने वाला। (क्रि०) निछावर करी, रोकी, मना की।—दार (पु०) नियत समय का नौकर।
बारीक दे० (वि०) महीन, झीना।
बारुणी तद्० (स्त्री०) मदिरा, मद्य, वरुण देवता की दिशा, पश्चिम दिशा, शतभिषा नक्षत्र।
बारूद दे० (स्त्री०) दारू, शोरा, गन्धक और कोयले से बनी हुई वस्तु, जो गरमी पाते ही भक से उड़ जाती है।
बारे दे० (पु०) बच्चे, लड़के, बालक।
बाल तद्० (पु०) लड़का, बालक, बच्चा, केश, सिरोरुह। (गु०) ना समझ, अज्ञान, मूर्ख।—क्रीड़ा (स्त्री०) बच्चों का खेल।—गोपाल (वा०) बाल बच्चे, लड़के बाले।—ग्रह (पु०) बालकों के कष्टदायक ग्रह, उपग्रह, पूतना आदि।—बाँधी कौड़ी मारना (वा०) निशाना लगाना।—बाल बच गये (वा०) बिलकुल बच जाना, आक्रमण से रक्षा पाना।—बाल बैरी होना (वा०) सब से विरोध होना।—बाल गजमोती पिरोना (वा०) खूब शृङ्गार करना, खूब सजाना।—बच्चे (वा०) लड़के बाले, पुत्र पौत्र आदि।—बाँका न होना (वा०) किसी प्रकार की हानि न होना, कुछ भी न बिगड़ना।
बालक तद्० (पु०) लड़का, छोकरा, छोटा।—पन (पु०) बाल्य, लड़काई, बालपन।
बालका दे० (पु०) योगी या संन्यासियों का चेला।
बालछड़ दे० (स्त्री०) औषधि विशेष, सुगन्ध वाला।
बालतोड़ दे० (पु०) बाल टूटने से जो घाव होता है।
बालना दे० (क्रि०) सुलगाना, जलाना, दीपक आदि का जलाना।
बालभोग दे० (पु०) प्रात:काल का नैवेद्य, प्रातःकाल जो भगवान् को नैवेद्य लगाया जाता है।
बालम दे० (पु०) प्रियतम, पति, प्यारा।
बालमखीरा दे० (पु०) एक तरह की ककड़ी, खीरा विशेष। [कवि, रामायण के कर्ता।
बालमीकि तत्० (पु०) एक मुनि का नाम, आदि
बालरॉड़ तद्० (स्त्री०) बालरण्डा, बालविधवा।
बाललीला तद्० (स्त्री०) लड़कपन का खेल, बाल चरित्र। [बालकों पर दयालु।
बालवत्स तद्० (पु०) कबूतर, बालकों पर कृपा,
बालसुख तद्० (पु०) बाल्य का सुख, बालकपन का सुख।
बाला तद्० (स्त्री०) छोटी अवस्था की लड़की, एक उमर की स्त्री, कुण्डल, कानों में पहनने का गहना।—चाँद (पु०) द्वितीया का चन्द्रमा, दूज का चन्दा।—पन (पु०) बालकपन, लड़काई।—भोला (वा०) सीधा सादा, छल कपट रहित।
बालि तद्० (पु०) वानरराज, इनकी राजधानी का नाम किष्किन्धा था। मेरु पर्वत पर योगध्यान मग्न ब्रह्मा के नेत्रों से अकस्मात् आँसू टपक पड़े, उससे एक सुन्दर वानरी उत्पन्न हुई। उसी वानरी के गर्भ से देवराज इन्द्र और सूर्य के औरस से सुग्रीव और बालि उत्पन्न हुए थे। ब्रह्मा की आज्ञा से बालि ने किष्किन्धा में अपना राज्य स्थापन किया। बालि की स्त्री का नाम तारा और सुग्रीव की स्त्री का नाम रुमा था। किसी मायावी दैत्य का वध करने के लिये एक समय बालि पाताल गया था, उसके आने में विलम्ब देख सुग्रीव ने उसकी मृत्यु निश्चित कर ली और तदनुसार उन्होंने यह सम्वाद प्रचारित किया। मन्त्रियों ने सुग्रीव को राजा बनाया, राज्यासन पर बैठ कर सुग्रीव बालि की स्त्री तारा को रख कर राजसुख भोगने लगे। कुछ दिनों के बाद पाताल से बालि अपनी राजधानी में लौट आया, सुग्रीव के आचरणों से दुःखित होकर बालि सुग्रीव को मारने के लिये चेष्टा करने लगा। प्राण बचाने के लिये सुग्रीव वहाँ से भाग गया, बालि ने अपनी स्त्री और सुग्रीव की स्त्री को भी रख लिया, अन्त में बालि रामचन्द्र की सहायता से मारा गया।—कुमार (पु०) अङ्गद।
बालिका (स्त्री०) लड़की, छोटी अवस्था की लड़की।

बाजिश तद्० (वि०) मूर्ख, अज्ञ, नासमझ, लड़िया।
बाजी दे० (स्त्री०) लड़की, कन्या, कुमारी।
बालुका तद्० (स्त्री०) रेत, बालू, कङ्कर।—मय (पु०) रेतीला, किरकिरा।
बालू दे० (स्त्री०) बालुका, रेत, रेती, रेणु, सिकता।—चर (पु०) गाँजे का एक भेद।—चरी (स्त्री०) रेशमी वस्त्र विशेष।—शाही (स्त्री०) एक मिठाई का नाम।
बाल्य तद्० (पु०) लड़कपन, लड़काई।
बाय दे० (पु०) वायु, पवन, बयार।—गोला (पु०) रोग विशेष, पेट की पीड़ा, शूल।—बाँधना (वा०) चिरौरी करना, फड़ बाँधना।—बहना (वा०) हवा चलना, किसी प्रकार का विचार फैलाना।—के घोड़े पर सवार होना (वा०) अभिमान करना, घमण्ड में आकर किसी को कुछ न समझना।—बतास (पु०) दैवी आपद, भूत बाधा।—शूल (पु०) बायगोला।
बायग दे० (पु०) बोआई। [बाचाल।
बायभकक दे० (वि०) गप्पी, बकवादी, बकबड़िया,
बावड़ी दे० (स्त्री०) बावली, तड़ाग, छोटा तालाब।
बावना दे० (वि०) ठिगना, बचना, खर्च।
बावला दे० (वि०) विक्षिप्त, उन्मत्त, पागल, सिड़ी।
बावली दे० (स्त्री०) बावड़ी, तड़ाग, तालाब, उन्मत्त स्त्री।
बाष्प तद्० (पु०) नेत्र, जल, आँसू, वाष्प, भाफ।
बास दे० (पु०) स्थान, वासस्थान, रहने का स्थान, डेरा, बसेरा। (स्त्री०) महक, सुगन्ध, गन्ध।
बासन दे० (पु०) बरतन, भाँड़ा, पात्र।
बासना दे० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ। (क्रि०) सुगन्धित करना, बासना, महकाना, बास देना।
बासा दे० (पु०) स्थान, रहने का स्थान, डेरा।
बासी दे० (वि०) निवासी, रहने वाला, निवास करने वाला, दिनारा, कई दिनों का बना हुआ, पर्युषित अन्न, साफ निकाला अन्न, दुर्गन्ध युक्त।—बचे न कुत्ता खाय (लो० उ०) विरोध का कारण नहीं रहता, ऐसी कोई बात ही नहीं जिससे झगड़ा हो।—फूलों बास नहीं परदेसी बालम आस नहीं (लो० उ०) दूसरों के अधीन बातों में लाभ की आशा नहीं, समय पर किसी काम के न कर, समय बीतने पर उसकी सिद्धि की आशा निरर्थक है।
बाहक तद्० (पु०) [वह्+णक्] ढोने वाला, भार पहुँचाने वाला, मजूर। [आदि।
बाहन तद्० (पु०) [वह्+अनट्] यान, सवारी
बाहना दे० (क्रि०) अस्त्र चलाना, फेंकना, छोड़ना, त्यागना, भैंस गौ आदि का गर्भ धारण करना।
बाहर दे० (अ०) अन्यत्र, दूसरा स्थान, परदेश, अन्य देश।—के खाय जाँय, घर के गीत गावें (लो० उ०) जिसका नियमित अधिकार है उसे तो कुछ नहीं मलाई और सब ले लें। हकदार को न मिलना और दूसरे को लाभ होना।
बाहिज दे० (पु०) बाहरी, बाहर से, बाहर वाला।
बाहु तद्० (पु०) बाँह, भुजा।—ज (पु०) बाहु से उत्पन्न, दूसरा वर्ण, क्षत्रिय।—युद्ध (पु०) मल्ल-युद्ध, पहलवानों की लड़ाई, कुश्ती।
बाहुल्य तद्० (पु०) बहुलता, आधिक्य, अधिकाई। "बाहुल्यता" शब्द बिलकुल अशुद्ध है, तो भी इसका प्रयोग किया जाता है।
बिंजन (पु०) तरकारी, साग, भाजी।
बिंदी (स्त्री०) शून्य, सुन्ना, दाग।
बिंधना (क्रि०) डंक मारना, डँसना।
बिंबोट (स्त्री०) दीमक।
बिक तद्० (पु०) वृक, हुण्डार, भेड़िया।
बिकट तद्० (पु०) भयङ्कर, भयानक, डरावना, कठिन, कठोर, बड़बड़, टेढ़ामेढ़ा, ऊँचा नीचा, दुःखदायी। [होना।
बिकना दे० (क्रि०) बिक्री होना, बेचा जाना, समाप्त
बिकराल तद्० (पु०) डरावना, भयङ्कर, भयानक, बिकट, कठोर।
बिकल तद्० (वि०) व्याकुल, उद्विग्न, बेचैन।
बिकसना दे० (क्रि०) खिलना, विकसित होना, फूलना, स्फुटित होना, प्रसन्न होना।
बिकसित तद्० (वि०) खिला हुआ, फूला हुआ, प्रफुल्ल,हर्षित,प्रसन्न। [वस्तु, जो चीज़ बेची जाय।
बिकाऊ दे० (वि०) विक्रेय वस्तु, बेंची जाने वाली

बिकाना दे० (क्रि०) बिक जाना, खप जाना, उठाना।
बिकाव दे० (स्त्री०) बिक्री, खपत, उठाव।
बिकास तद्० (पु०) चमक, प्रकाश, आनन्द, हर्ष, विकास।
बिकी दे० (पु०) खेल के साथी, किसी खेल के एक पच वाले आपस में बिकी कहे जाते हैं।
बिकी दे० (स्त्री०) विक्रय, बिकाव, खपत।
बिखरना दे० (क्रि०) फैलना, पसरना, क्रुद्ध होना, तितर बितर होना, क्रोध करना।
बिगड़ना दे० (क्रि०) ख़राब होना, नष्ट होना, भग भगाव होना, क्रोध करना, विरोधी होना।
बिगड़ी दे० (स्त्री०) टूट, लड़ाई।
बिगसना दे० (क्रि०) बिकसना, विकसित होना, खिलना, फूलना।
बिगहा दे० (पु०) बीघा, बीस बिस्वा।
बिगाड़ दे० (वि०) विरोधी, तोड़, भङ्ग, लड़ाई, झगड़ा, हानि, क्षति। [पहुँचाना।
बिगाड़ना दे० (क्रि०) विरोध करना, तोड़ना, क्षति
बिगोई दे० (स्त्री०) भुलावा, छुपाव, छिपाव।
बिघन तद्० (पु०) विघ्न, रुकावट, बाधा, अड़चन।
बिच दे० (अ०) बीच, अन्तर, व्यवधान।
बिचकना दे० (क्रि०) भड़कना, सतर्क होना।
बिचकहा दे० (वि०) भड़कने वाला, सतर्क, सावधान।
बिचकाना दे० (क्रि०) भड़काना, चिढ़ाना, सतर्क करना।
बिचलना दे० (क्रि०) बिचलित होना, फिसलना, बिछलना, सरकना, स्खलित होना।
बिचली दे० (स्त्री०) बीचवाली, मध्यस्था।
बिचवई दे० (पु०) मध्यस्थ, बिचवान, दलाल।
बिचवाई (स्त्री०) दलाली।
बिचार तद्० (पु०) ध्यान, निर्णय।—क (पु०) न्यायकर्त्ता।—लय (पु०) न्याय का स्थान, कचेहरी।
बिचारना दे० (क्रि०) ध्यान करना, सोचना, निर्णय करना, समझना, बूझना, जाँचना।
बिचारित तद्० (वि०) सोचा हुआ, निश्चय किया हुआ। [कर्त्ता।
बिचारी तद्० (वि०) विचारक, विचारकर्त्ता, निर्णय
बिचाली दे० (स्त्री०) पुआल, एक प्रकार की चटाई जो पुआल या बाँस की सचियों से बनाई जाती है।
बिचौनिया दे० (पु०) मध्यस्थ, बिचवैत, बिचवाई।
बिचौनिया दे० (स्त्री०) पापड़ के तिकोने टुकड़े।
बिछाव दे० (पु०) बिछाव, पसराव।
बिच्छू दे० (पु०) जन्तु विशेष, वृश्चिक, जिसका दङ्क विषैला होता है।
बिछना दे० (क्रि०) फैलना, पसारना, विस्तृत होना।
बिछुराहट दे० (स्त्री०) वियोग, पृथक्ता, भिन्नता।
बिछलना दे० (क्रि०) बिलगाना, पृथक् होना, अलग होना, पैर सिफलना, रपटना।
बिछलाहा (वि०) फिसलाहा।
बिछलाहट दे० (स्त्री०) फिसलन, फिसलाहट।
बिछवाना दे० (क्रि०) फैलाना, पसराना, बिछाना।
बिछाता दे० (पु०) बिछुआ, भूषण विशेष।
बिछाना दे० (क्रि०) फैलाना, पसारना।
बिछिया दे० (पु०) नूपुर, स्त्रियों के पैर की अँगुलियों में पहनने का आभूषण।
बिछुड़ना दे० (क्रि०) वियोग होना, पृथक्, पृथक् होना, अलग होना, अलग हो।
बिछुरना दे० (क्रि०) वियुक्त होना, वियोग होना, अलग अलग होना।
बिछुआ दे० (पु०) अस्त्रविशेष, कटार विशेष, बिछिया एक गहने का नाम जो पैरों में पहना जाता है।
बिछोह दे० (पु०) वियोग, जुदाई, भिन्नता, भेद।
बिछोहना दे० (क्रि०) अलगाना, वियोग करना, भिन्न करना।
बिछौना दे० (पु०) बिस्तरा, बिछावन।
बिजना दे० (पु०) व्यजन, पङ्खा।
बिजली दे० (स्त्री०) विद्युत्, दामिनी, चपला, बादलों की टक्कर से उत्पन्न अग्नि।
बिजय तद्० जय, जीत, फतह।
बिजया तद्० (स्त्री०) भङ्ग, भङ्ग की पत्ती।
बिजान दे० (वि०) अजान, मूर्ख, अज्ञान।
बिजायठ या बिजायठ दे० (पु०) एक आभूषण का नाम जो बाँह में पहना जाता है, बाजूबन्द।
बिजार दे० (पु०) साँड, वृषभ, बैल।
बिजारा दे० (पु०) बीज वाला, बीज युक्त।

बिजाला दे० (वि०) बीजयुक्त, बीज सहित ।
बिजोग तद्० (पु०) बियोग, बिछुड़न ।
बिज्जु तद्० (स्त्री०) विद्युत् ।
बिज्जू दे० (पु०) जन्तु विशेष ।
बिझकना दे० (क्रि०) चमकना, डरना, भय करना ।
बिझकाना दे० (क्रि०)चमकाना, चौंकाना, डराना ।
बिञ्जन तद्० (पु०) व्यञ्जन, तरकारी, भाजी ।
बिट दे० (पु०) विष्टा, मल, बीट ।—चर (पु०) शूकर, गाँव का सूअर ।
बिटना दे० (क्रि०) बिथुरना, छिटकना बगरना, [छिटक जाना ।
बिटप तद्० (पु०) वृक्ष की शाखा नये पल्लव ।
बिटाना दे० (क्रि०) छिटकाना, बिथराना, गिराना, बिखराना ।
बिटौरा दे० (पु०) गुबरौटी, गोंइठा, उपरी ।
बिठाना दे० (क्रि०) बैठाना, ठहराना, रोकना ।
बिड़कन दे० (पु०) पक्षी विशेष, बटेर आदि पक्षी, यथा—बिड़कन घाघूरे, भवि के मास बीत रामचन्द्रिका ।
बिड़रना दे० (क्रि०) भागना, भाग जाना, डरना, डर जाना ।
बिड़ार तद्० (पु०) बनबिलाव, बिलाव ।
बिड़ारना दे० (क्रि०) भगाना, डरवाना ।
बिड़ारी दे० (स्त्री०) भगाई, भगाड़ ।
बिड़ौजा तद्० (पु०) इन्द्र, पाकशासन, देवराज ।
बिढ़ाई (क्रि०) कमाकर, पैदा करके । (स्त्री०) कचौरी ।
बितरण तद्० (पु०) त्याग, दान, बाँटना । [डालना ।
बितरना दे० (क्रि०) देना, दे देना, बिना मूल्य दे
बिताना दे० (क्रि०) गँवाना, काटना, व्यतीत करना ।
बितीत तद्० (वि०) व्यतीत, गत, बीता हुआ ।
बित्त तद्० (पु०) धन, द्रव्य ।
बित्ता दे० (पु०) वितस्ति, बिलाँद, बालिश्त, बिलस्त ।
बित्तिया दे० (वि०) बवना, ठिंगना ।
बिथकना दे० (क्रि०) आश्चर्यित होना, अचम्भे में आना, पड़ा रहना जहाँ का तहाँ रह जाना, आगे नहीं बढ़ना ।
बिथरना दे० (क्रि०) छिटकना,बिखरना बिखर जाना ।
बिथा तद्० (स्त्री०) व्यथा, पीड़ा, दुःख, आपत्ति, मानसी व्यथा ।
बिथुरना दे० (क्रि०) बिखरना, फैल जाना, इधर उधर होना ।
बिदरना दे० (क्रि०) बिहरना, फटना, चिरना ।
बिदरी दे० (स्त्री०) बिदर देशी, दस्ता ।
बिदा दे० (स्त्री०) बिदाई, रवानगी,भेजना, छुट्टी जाने की आज्ञा ।—करना (वा०) भेजना, जाने की अनुमति देना ।
बिदारण तद्० (क्रि०) फाड़ना, चीरना ।
बिदारना दे० (क्रि०) विदारण करना,फाड़ना, चीरना ।
बिदाहना दे० (क्रि०) बोते हुए खेत में हेंगा चलाना, हेंगाना, खेत के ढोंके फोड़ कर बराबर करना ।
बिदुषन दे० (पु०) पण्डित गण, विद्वान् लोग,तत्त्व के जानने वाले ।—बिदूषक , तद्० (पु०) भाँड, मसखरा, नकल करने वाला ।
बिदोरना दे० (क्रि०) चिढ़ाना, खिजाना ।
बिध तद्० (स्त्री०) विधि, रीति, व्यवहार ।
बिधना दे० (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता । (क्रि०) भिदना, छेदना ।
बिधवा तद्० (स्त्री०) राँड, बेवा, जिस स्त्री का पति मर गया हो ।
बिधावट दे० (स्त्री०) सूराख, छेद, रन्ध्र ।
बिन दे० (अ०) बिना, रहित, छोड़ कर, अतिरिक्त ।—आये तरना (वा०) असमय हो जाना, बिना अवसर मरना, बेमौत मरना ।—रोये लड़का दूध नहीं पाता (वा०) बिना प्रयत्न के कुछ भी नहीं मिलता,अभीष्ट प्राप्ति के लिये थोड़ा भी प्रयत्न करना आवश्यक है ।—भय प्रीति नहीं (वा०) बिना पराक्रम दिखाये प्रभाव नहीं जमता, प्रभाव विस्तार के लिये अपनी प्रभुता दिखानी चाहिये ।—माँगे से दूध बराबर माँगे दे सो पानी (लो० उ०) बिना माँगे मिलना उत्तम है । जो स्वयं तुम्हारा कल्याण करना चाहता है, उसी पर भरोसा रखो, तुम्हारे कहने से जो तुम्हारा कल्याण करेगा उससे अधिक लाभ नहीं ।
बिनती दे० (स्त्री०) विनय, चिरौरी, प्रार्थना ।
बिनना दे० (क्रि०) बटोरना, एकत्रित करना, बुनना ।
बिनवाना दे० (क्रि०) बटोरवाना, एकत्रित कराना, कपड़े आदि का बुनवाना, बुनवाना ।

बिनयाई दे० (स्त्री०) बिनने का काम, बिनने की मजूरी।
बिनसना दे० (क्रि०) नष्ट होना, बिगड़ना, ख़राब होना।
बिना तद्० (अ०) रहित, अतिरिक्त, बिना।
बिनाई दे० (स्त्री०) बिनावट, बिनने का काम।
बिनास तद्० (पु०) नाश, संहार, विध्वंस।
बिनौना दे० (क्रि०) विनय करना, अर्चना, पूजा करना, ध्यान करना, पूजना, छाँटना।
बिनौला दे० (पु०) कपास का बीज।
बिन्दी दे० (स्त्री०) बिन्दू, शून्य।
बिन्धना दे० (क्रि०) डसना, डङ्क मारना, छिन्दना।
बिन्ना दे० (क्रि०) चाली काढ़ना, कपड़े में बेल बूटे निकालना।
बिपत दे० (स्त्री०) आपत्ति, दुःख, क्लेश।
बिपता दे० (स्त्री०) दुःख, कष्ट, क्लेश, आपत्ति। यथा—

"एक बुलावे चौदह आवें,
निज निज बिपता रोय सुनावें।
भूखे मरें भरे नहीं पेट,
क्या सखि सज्जन नहिं ग्रेजुएट।"
—भारतेन्दु।

बिफरना दे० (क्रि०) आक्रमण करना, धावा करना, चढ़ाई करना।
बिपादिका तद्० (स्त्री०) बिवाँई, बवाँई।
बिफरना दे० (क्रि०) चिढ़ना, रुष्ट होना, ढीट होना।
बिफै दे० (पु०) बृहस्पतिवार, गुरुवार।
बिमाता तद्० (स्त्री०) सौतेली माता।
बिम्बोट तद्० (स्त्री०) दीमक, वाल्मीक।
बिया दे० (पु०) बीज, गुठली।
बियारा दे० (स्त्री०) रात्रि का भोजन, ब्यालू।
बियाह तद्० (पु०) विवाह, ब्याह।
बिरकत तद्० (पु०) विरक्त, योगी, आसकाम, वासना शून्य, इच्छा रहित।
बिरचन दे० (पु०) बैर का आटा।
बिरत तद्० (पु०) प्रीति रहित, वैरागी, मुमुक्षु, उदासीन, जिसे संसार से प्रीति न हो।
बिरद तद्० (पु०) यश, ख्याति, प्रसिद्धि, सुकीर्ति।
बिरमना दे० (क्रि०) विराम करना, विश्राम करना, ठहरना, विलम्ब करना, विलम्ब लगाना।
बिरमाना दे० (क्रि०) ठहराना, रोकना, बिलमाना।
बिरल दे० (गु०) छितराया हुआ, जुदा, अलग अलग।
बिरला दे० (गु०) कोई अनूठा, अपूर्व, अतुलनीय, एकाध, कोई एक।
बिरव दे० (पु०) देखो बिरवा।
बिरवा दे० (पु०) रूखड़ा, पौधा, छोटा वृक्ष।
बिरसता तद्० (स्त्री०) झगड़ा, टंटा, मनमुटाव।
बिरसना तद्० (क्रि०) रहना, टिकना, ठहरना।
बिरह तद्० (पु०) वियोग, बिछोह, बिछुड़न।
बिरहनी तद्० (स्त्री०) विरहिणी, वियोगिनी, अपने पति से जिस स्त्री का वियोग हो गया है।
बिरहा तद्० (पु०) वियोग, बिछोह, अहीरों की गीत।
बिरहिया दे० (वि०) विरहिणी, विरही।
बिरही तद्० (पु०) वियोगी।
बिराजना दे० (क्रि०) शोभना, सुन्दर मालूम होना, सुख भोग करना, सुख पूर्वक रहना।
बिराना दे० (क्रि०) चिढ़ाना। (गु०) अन्यदीय, अन्य सम्बन्धी, दूसरे का। [वाक्य समाप्ति सूचक चिन्ह।
बिराम तद्० (पु०) विश्राम, वाक्य की समाप्ति,
बिरिया दे० (स्त्री०) अवसर, समय, बारी, पाला।
बिरोग दे० (पु०) विरह, वियोग।
बिरोगन दे० (स्त्री०) वियोगिनी, विरहिनी।
बिर्रो दे० (स्त्री०) बर्रे, बरनी, हड्डा।
बिल तद्० (पु०) छिद्र, चूहे आदि जन्तुओं के रहने का स्थान, माँद, बाँमी, सेंध।
बिलकना दे० (क्रि०) सिसकना, रोना। [सिसकना।
बिलखना दे० (क्रि०) देखना, निरखना, उदास होना,
बिलग दे० (वि०) अलग, भिन्न, जुदा, न्यारा, पृथक, आन, अन्य, दूसरा। —मानना (वा०) भेद मानना, जुदाई मानना, विरोध करना।
बिलगना दे० (क्रि०) भिन्न भिन्न होना, पृथक् पृथक होना, फटना, छूटना [करना।
बिलगाना दे० (क्रि०) अलगाना, अलहदा करना, पृथक्
बिलगाव दे० (पु०) भिन्नता, भेद, बिछुराहट।
बिलगादि दे० (क्रि०) अलग होते हैं, पृथक् २ होते हैं।

बिलचना दे० (क्रि०) छाँटना, चुनना, बीनना, बिलगाना।

बिलटना दे० (क्रि०) बिगड़ना, नष्ट होना, स्खलित होना, धर्मभ्रष्ट होना।

बिलनी दे० (स्त्री०) सूक्ष्म कीट विशेष, जो आँखों के सामने घूमा करती है, आँख पर की फुंसिया।

बिलपन्द (क्रि०) निपटारा, निर्णय। [विशेष।

बिलबिल (क्रि०) बिल्ली को भगाने के लिये शब्द।

बिलबिलाना दे० (क्रि०) विलाप करना, कूकना, व्याकुल होना, तड़पना, तड़फड़ाना।

बिलखाना दे० (क्रि०) विलाप करना, रोना।

बिलल्ला दे० (पु०) भोंदू, मूर्ख, बेसमझ, गँवारा।

बिलसना दे० (क्रि०) शोभित होना, आनन्दित होना, सुख भोगना, सुख भोग करना।

बिलस्त दे० (पु०) बित्ता, बित्ता, वितस्ति।

बिलहरा दे० (पु०) पनबट्टा, पान रखने का डब्बा।

बिलहरी दे० (स्त्री०) छोटा पनबट्टा, पान रखने का छोटा डब्बा।

बिलाई दे० (स्त्री०) बिल्ली, मार्जार, कद्दूकस, लोहा या पीतल की बनी एक वस्तु जिससे कद्दू के लच्छे काटते हैं। किवाड़ी की चिटकनी, जिससे किवाड़ी बन्द करते हैं।

बिलाना दे० (क्रि०) नष्ट होना, ध्वंस होना, मिट जाना।

बिलाँद दे० (स्त्री०) बित्ता, वितस्ति, बित्ता।

बिलापना दे० (क्रि०) रोना, बिलखना, दुःख करना।

बिलार दे० (पु०) मार्जार, बिलाव, बिलाई। [का नाम।

बिलावल दे० (स्त्री०) रागनी विशेष, एक रागनी

बिलोना बिलोवना दे० (क्रि०) मथना, दही से मक्खन निकालना, दही मथना।

बिल्ला दे० (पु०) बिडाल, बिलार।

बिल्ली दे० (स्त्री०) बिलाई, बिल्ल।—भी लड़ती है तो मुँह पर पंजा धर लेती है (लो० उ०) दूसरे से सामना करने के पहले अपनी रक्षा का उपाय कर लेना चाहिये। अपनी रक्षा का प्रबन्ध कर के दूसरों से भिड़ना चाहिये।—के भाग छींका टूटा। (लो० उ०) भाग्य से मनोरथ पूर्ण हो गया, संयोग वश काम हो गया।

बिवाँई दे० (स्त्री०) पैर के तलवे में का घाव।

बिषखोपरा दे० (पु०) गोह, गोधा।

बिसन उद्० (पु०) व्यसन, बुराई, दोष, बुरा अभ्यास, आदत, टेव।

बिसनी उद्० (पु०) व्यसनी, जुआरी, लम्पट।

बिसबिसाना दे० (क्रि०) सड़ना, मचमचाना।

बिसर दे० (पु०) भूल, चूक, विस्मरण।

बिसरना दे० (क्रि०) भूलना, विस्मरण होना, भटकना, याद न रहना। [कराना।

बिसराना दे० (क्रि०) भुलाना, बहकाना, विस्मरण

बिसाँत दे० (स्त्री०) पूँजी, मूलधन।

बिसाँती दे० (पु०) फेरी वाला, पैकार।

बिसाँध दे० (पु०) दुर्गन्ध, कुबास। [कराना।

बिसाना दे० (क्रि०) मोल लेना, खरीदना, क्रय

बिसारना दे० (क्रि०) भुलाना, बिसारना। [वस्तु।

बिसाह दे० (स्त्री०) मोल ली हुई वस्तु, खरीदी

बिसाहना दे० (क्रि०) मोल लेना, खरीदना।

बिसूरना दे० (क्रि०) विचार करना, बिलपना, धीरे धीरे रोना।

बिसतुइया दे० (स्त्री०) बिस्तुई, छिपकली।

बिस्तुई दे० (स्त्री०) छिपकली, पल्ली। [परिंद।

बिहंग तद्० (पु०) विहंग, पक्षी, पखेरू, चिड़िया,

बिहन दे० (पु०) बीया जो खेत में बोने के लिये रखा जाता है।

बिहनौर दे० (स्त्री०) बीज बोने की क्यारी।

बिहरना दे० (क्रि०) विहार करना, आनन्द करना घूमना, टहरना। [नियमित धन।

बिहरी दे० (स्त्री०) चन्दा, सहायता, सहायतार्थ

बिहरना दे० (क्रि०) बीच से फटना, दरकना, छाती फटना।

बिहसना दे० (क्रि०) मुसकाना, हँसना। [विशेष।

बिहाग (पु०) रात में गाया जाने वाला राग

बिहान दे० (पु०) प्रातःकाल, भोर, भिनसार।

बिहाना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्यागना, निर्वाह करना काल काटना। [(पु०) औषधि विशेष

बिही दे० (स्त्री०) सफरी फल, अमरूद।—सुगन्

बींड़ा दे० (स्त्री०) गेंडुरी, ऐंडुरी, जो मूँज की बनती है और जिस पर भरा हुआ घड़ा रखा जाता है।

बींधना दे० (क्रि०) छेदना, भेदना, भेदन करना बेधना। [बार फिर जमाये जाते हैं।
बींधड़ (पु०) धान आदि अनाज के पौधे जो उखाड़
बींयर दे० (पु०) बिल, छिद्र, छेद, माँद, साँप, आदि के रहने का स्थान। [होता है, भूमि का नाप।
बींघा दे० (पु०) बिघहा, बीस बिस्वे का एक बीघा
बीच दे० (अ०) मध्य, माँझ, माँह, अन्तर, भीतर। (पुं०) विक्षेप, विरोध।—पड़ना (वा०) अन्तर पड़ना, विरोध होना।—बिचाव करना (वा०) विरोध शान्त करना, झगड़ा निपटाना, निर्णय करना, द्वेष दूर करा देना।—में पड़ना (वा०) मध्यस्थ होना, किसी बात को निपटाने का भार लेना।
बीचो बीच दे० (वा०) मध्य में, ठीक बीच में।
बीछू दे० (पु०) बिच्छू, वृश्चिक।
बीज तद्० (पु०) वीर्य, तुख्म, बिया।
बीजक दे० (पु०) वस्तुओं की सूची, चालान, बेची और रवाना की हुई वस्तुओं की संख्या और उनका मूल्य बताने वाली फेहरिस्त। [विशेष।
बीजना दे० (पु०) पंखा, व्यजन, तालवृन्त, कीट
बीजार दे० (पु०) अधिक बीज वाला, बीजमय, बीजैला, जिसमें बीज ज्यादे हों।
बीजू दे० (स्त्री०) जन्तु विशेष, नकुल, नेउला।
बीझना दे० (क्रि०) खोदना, रेलना, ठेलना, पेलना।
बीट दे० (स्त्री०) बिट, मल, विष्ठा, पक्षियों की विष्ठा।
बीटना दे० (क्रि०) छलकना, उफनाना, ढलना, बिथरना।
बीठा दे० (पु०) गेंडुरी, ईंडा जिसको सिर पर रख कर भरा हुआ घड़ा पनिहारी ले जाती है।
बीड़ा दे० (पु०) बीटिका, पान की बीड़ी, लगा हुआ पान, एक प्रकार का सूत जो तलवार की मूठ में बाँधा जाता है।—उठाना (वा०) किसी काम को सिद्ध करने के लिये प्रतिज्ञा करना। पहले यह प्रथा थी कि जब किसी राजकुल में कोई बड़ा काम आ पड़ता था, तब राज्य के लोग बुलाये जाते थे और उनके बीच तलवार या और कोई वस्तु रख दी जाती थी। उनमें जो अपने को शक्तिमान् समझता था वह उस वस्तु को उठा लेता था। इसका अर्थ यह होता था कि उसने काम पूरा करने की प्रतिज्ञा की।—डालना (वा०) किसी काम को पूरा करने के लिये लोगों से कहना।
बीणा तद्० (स्त्री०) बीणा, बीन बाजा।
बीतना दे० (क्रि०) व्यतीत होना, पूरा होना, समाप्त होना, गुज़रना।
बीता दे० (पु०) बालिश्त। (क्रि०) बीतने का भूतकाल, गया समय।
बीन दे० (स्त्री०) बीणा, वाद्य विशेष।
बीनना दे० (क्रि०) बुनना, बनाना, निर्माण करना।
बीबी दे० (स्त्री०) स्त्री, मेहरारू, मेहरिया, मेम, अँग्रेज़ या मुसलमान की स्त्री।
बीमा दे० (पु०) जोखिम, हुण्डी, यह एक प्रकार की राजकीय व्यवस्था है। डाँक के द्वारा भेजी जाने वाली वस्तु के टूटने फूटने की ज़िम्मेदारी लेने के लिये जो डाँक विभाग को कुछ नियमित द्रव्य देकर व्यवस्था करनी पड़ती है, उसे बीमा कहते हैं। इसके अतिरिक्त बीमे का व्यापार भी होता है। व्यवसायी जीवन बीमा इत्यादि का व्यापार करते हैं। बड़े बड़े नगरों में मकान आदि का भी बीमा कराया जाता है। बीमा की अवधि में यदि मकान जल जाय तो बीमे वालों को मकान का दाम देना पड़ता है। [रोग, मर्ज़, अस्वस्थता।
बीमार दे० (पु०) रोगी, मरीज़, अस्वस्थ।—ी (स्त्री०)
बीर तद्० (पु०) उत्साही, शूर, अध्यवसायी, भाई, भैया, कान का गहना।—बहुटी (स्त्री०) कीट विशेष, यह लाल रङ्ग का होता है और बरसात में ही पैदा होता है।
बीरता (स्त्री०) बहादुरी, शूरता।
बीरा दे० (पु०) भाई, भैया, बीड़ा, पान की खिल्ली।
बीरासन तद्० (पु०) बीरों के बैठने का आसन, बीरों की बैठक।
बीरी दे० (स्त्री०) बीड़ा, बीरा, पान की खीली।
बीस दे० (पु०) संख्या विशेष, २०, एक कोड़ी।
बीसा दे० (पु०) बीस नख वाला कुत्ता, कुत्ते दो प्रकार के होते हैं, अठारह और बीसा, बीसा कुत्ते बड़े भयानक और विषैले होते हैं। उनका काटा हुआ आदमी भाग्य ही से बचता है।

बीसी दे० (स्त्री०) यव नापने का नाप।
बुँद (पु०) फल का घ गूपघ विशेष।
बुँदा दे० (पु०) बिन्दी, बिन्दु, यून्य, गोलाकार टीका, काँच की एक छोटी टिकुली।
बुँदिया दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई का नाम।
बुँदेल दे० (पु०) बुन्देलखण्ड का राजपूत, बुन्देलखण्ड का रहने वाला। [परिमित।
बुकटा, बुकट्टा दे० (पु०) मुट्ठी भर, भर मुट्ठा, मुष्टि
बुकनी दे० (स्त्री०) चूर्ण, चूरा, सफूफ।
बुकजाना दे० (क्रि०) थकना, स्वयं थकते रहना थकथकाना। [का छाल रङ्ग।
बुक्का दे० (पु०) बुकटा, मुट्ठा भर, बुरकी, एक प्रकार
बुकी दे० (स्त्री०) कांधे पर का वस्त्र वह कपड़ा जो कांधे पर रक्खा जाता है।
बुजना दे० (पु०) स्त्रियों के पहनने का कपड़ा, जिसे ऋतु आदि की दशा में स्त्रियाँ पहनती हैं, लत्ता का कपड़ा।
बुजदरा या बुझदरा दे० (पु०) पात्र विशेष जिसमें पानी गर्म किया जाता है। [होना।
बुझना दे० (क्रि०) दीपक का गुल होना, ठण्डा
बुझाना दे० (क्रि०) बुताना देना, गुल करा देना, प्रत्यर्पण करना, आग ठण्डी करना, दिया बुझाना।
बुझौवल दे० (स्त्री०) पहेली, ढकूट।
बुड़ाना दे० (क्रि०) डुबाना, जलमग्न करना, बोरना।
बुड्ढा दे० (पु०) वृद्ध, बूढ़ा। (गु०) प्राचीन, पुराना, जीर्ण, शीर्ण।
बुढ़भस दे० (गु०) अपने को युवा समझने वाला बुड्ढा, जवान की चाल चलने वाला बूढ़ा।—लगना (वा०) बुढ़ाई में जवानी का काम करना।
बुढ़ा दे० (वि०) वृद्ध, बूढ़ा, डोकरा।
बुढ़ाई (स्त्री०) बुढ़ापा।
बुढ़ापा दे० (पु०) बुढ़ाई, वृद्धावस्था।—बिगड़ना (वा०) वृद्धावस्था में कष्ट सहना, बुढ़ाई में कलङ्क लगना।
बुढ़िया दे० (स्त्री०) वृद्धा स्त्री, बूढ़ी।
बुँदा दे० (पु०) कर्ण भूषण विशेष, कान के एक गहने का नाम।

बुत्त दे० (पु०) जूआ खेलने की एक वस्तु, जिस पर पाँसा फेंका जाता है।
बुताना दे० (क्रि०) बुझाना, बुझ जाना, गुल होना।
बुत्ता दे० (पु०) ठगाई, छल, कपट, धूर्तता, धोखा।—देना (वा०) ठगना, छलना, धोखा देना।
बुदबुद सं० (पु०) बुलबुला, पानी का बुलबुला, बबूला। [कुछ बकते रहना।
बुदबुदाना दे० (क्रि०) धीरे धीरे बोलना, मनमनाना
बुद्ध सं० (गु०) सर्वज्ञ, सुगत, विदित, ज्ञात। (पु०) भगवान् का अवतार विशेष कपिल वस्तु के राजा शुद्धोदन का पुत्र। इनका दूसरा नाम था गौतम। बुद्ध ने जिस धर्म का संसार में प्रचार किया वह भी उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है। समस्त भूमण्डल में बौद्ध धर्म का प्रचार है, यहाँ तक कि संसार का तीसरा भाग बौद्ध धर्मावलम्बी है। तिब्बत चीन और जापान में भी बौद्ध धर्म फैला हुआ है।

बौद्धमत में बारह इन्द्रियाँ मानी जाती हैं। पाँच कर्मेन्द्रिय और पाँच ज्ञानेन्द्रिय तथा मन और बुद्धि नामक दो उभयेन्द्रिय। शरीर द्वादश इन्द्रिय का आयतन है इसी कारण बौद्धमत में शरीर की द्वादशायतन संज्ञा है। सेवा ही इस शरीर का प्रधान कर्म है, इनके देवता सुगत हैं। इनके मत में प्रत्यक्ष और अनुमान दो ही प्रमाण हैं, सुतरां शब्द प्रमाण रूप वेद का इनके यहाँ आदर नहीं है जगत् क्षणभंगुर है। बौद्ध कहते हैं प्रतिक्षण जगत् का परिवर्तन हो रहा है, अतएव जगत् के कोई पदार्थ स्थायी नहीं हैं। परिवर्तन होना ही इस जगत् का लक्षण और स्वरूप है। सांख्य और बौद्ध की अनेक बातों में एकता है। दोनों कहते हैं कि दुःख का कारण जन्म, जन्म का कारण कर्म, कर्म का कारण प्रवृत्ति और प्रवृत्ति का कारण अज्ञान है। इससे यह स्पष्ट ही सिद्ध होता है कि सांख्य दर्शन ही बौद्ध धर्म का मूल है। बौद्धों के मत में चार भेद हैं, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक और वैभाषिक। माध्यमिक बौद्धों के मत में जगत् स्वप्नदृष्ट पदार्थ के समान मिथ्या है, समस्त शून्य है। योगाचारों के मत में सभी बाह्य वस्तु असत्य है, केवल विज्ञानरूप आत्मा ही सत्य है। सौत्रा-

न्तिक बौद्ध पदार्थमात्र को सत्य और अनुमान सिद्ध मानते हैं, वैभाषिक बौद्धों के मत से समस्त पदार्थ प्रत्यक्ष सिद्ध हैं। बौद्धों के मत से सब पदार्थ क्षणस्थायी हैं। ऐसी स्थिर वासना का नाम मार्ग तत्व है और यही मोक्ष है।

बुद्धि तद्० (स्त्री०) [बुध्+क्ति] मनीषा, धी, धीषणा, ज्ञान का कारण, विवेक शक्ति।—मान् (वा०) मनीषी, समझदार, विवेकी।—हीन (वा०) मूर्ख, नासमझ, अज्ञान।

बुद्धीन्द्रिय तद्० (पु०) बुद्धि और इन्द्रिय, इन्द्रिय सहित बुद्धि, बुद्धि नाम की इन्द्रिय।

बुध तद्० [बुध+क] पण्डित, सौम्य, विद्वान्, चतुर, अभिज्ञ, चतुर्थ ग्रह, चन्द्रमा का पुत्र, बुधावतार, सूर्यवंशी एक राजा का नाम।—जन (पु०) पण्डितजन, अभिज्ञ, बुद्धिमान्।—वार (पु०) बुध का दिन, चौथा दिन।

बुधान तद्० (पु०) गुरु, पण्डित, अध्यापक, ब्रह्मा की सभा।

बुनना या बुन्ना दे० (क्रि०) बिनना, जाली निकालना, कपड़े में बेल बूटे निकालना।

बुभुक्षा तद्० (स्त्री०) भोजन की इच्छा, भोजनाभिलाष, खाने की रुचि।

बुभुक्षित तद्० (वि०) भूखा, क्षुधित, पेटू, पेटार्थू।

बुरा दे० (वि०) खराब, दुष्ट, नीच, अधम, निकम्मा।—कहना (वा०) निन्दा करना, कलङ्कित करना, दुर्यश फैलाना।—चीतना (वा०) अशुभ चाहना, किसी की बुराई चाहना, विनाश चाहना।—खेटा खोटा पैसा समय पर काम आता है (वा०) किसी प्रकार की भी बुरी वस्तु क्यों न हो समय पर काम आती है।—मानना (वा०) अप्रसन्न होना, अपमान समझना, द्वेष मानना।—लगना (वा०) कष्ट होना, अनुचित मालूम होना।

बुराई दे० (स्त्री०) दुष्टता, नीचता, अधमता, खोटापन, बुरापन।—पर कमर बाँधना (पु०) अशुभ करने को उद्यत होना, कष्ट पहुँचाने की चेष्टा करना।

बुर्ज (पु०) धरहरा, मीनार।

बुलबुला दे० (पु०) बुद्बुदा, पानी का बुद्बुद, बुल्ला।

बुलबुला दे० (पु०) बुलबुला।

बुलवाना (क्रि०) बुला भेजना।

बुलाक दे० (पु०) नाक में पहनने का एक गहना।

बुलाना दे०(क्रि०)पुकारना, हाँक मारना, आह्वान करना।

बुलाहट दे० (स्त्री०) आह्वान, पुकार, हाँकना।

बुल्ला दे० (पु०) बुद्बुदा, बुलबुला।

बुहनी दे० (स्त्री०) पहली बिक्री।

बुहरी दे० (स्त्री०) भूँने जौ।

बुहारन दे० (स्त्री०) झाड़न, कूड़ा कर्कट।

बुहारना दे० (क्रि०) झाड़ना, बुहारी लगाना, साफ़ करना।

बुहारी दे० (स्त्री०) झाड़ू, बढ़नी, बढ़नि।

बूआ दे० (स्त्री०) बहिन, भगिनी, पिता की बहिन, फूफू, फूआ।

बूँ दे० (अ०) भय सूचक, डराने का शब्द।

बूँद (स्त्री०) बिन्दु, जलकण, जलबिन्दु, छींटा, टपका।

बूँदा दे० (पु०) बड़ी बूँद।—बाँदी (वा०) पानी बरसना, धीरे धीरे पानी पड़ना, झींसी गिरना।

बूँदी दे० (स्त्री०) वृष्टि, वर्षा की बूँद, एक प्रकार की मिठाई।

बूकना दे० (क्रि०) पीसना, कूटना, चूर्ण करना, चूरन करना।

बूका दे० (पु०) चूर्ण, बुकनी, सफूफ।

बूचा दे० (वि०) कनकटा, कर्ण हीन, जिसके कान न हों, या कट गये हों।

बूझ दे० (स्त्री०) समझ, बुद्धि, ज्ञान, पहिचान, अक्ल। (क्रि०) समझ कर, जान कर।

बूझना दे० (क्रि०) समझना, हृदयङ्गम करना, जानना, सोचना।

बूझाई दे० (स्त्री०) शिक्षा, सीख, परिचय, बुझावट।

बूट दे० (पु०) अन्न विशेष, चणक, चना।

बूटा दे० (पु०) बेल, कपड़े में सूत का या तार का बना काम।

बूटी दे० (स्त्री०) छोटा बूटा, जड़ी, मूरि, औषध।

बूड़ना दे०(क्रि०) डूबना, मग्न होना, जल में डूबना।

बूड़िया दे० (वि०) डूबने वाला, जल में गिरी वस्तु को डूब कर निकालने वाला, पनडुब्बा, गोताख़ोर।

बूड़ी दे० (स्त्री०) भाले की नोंक, बर्छी की धार, भाले का फल।

बूढ़ा (पु०) वृद्ध, बुड्ढा। (वि०) पुराना, प्राचीन, अधिक दिन का, अधिक समय का।—घाग (वा०) बहुत बूढ़ा, घुटा, चालाक।

बूढ़ी (स्त्री०) बुढ़िया ।

बूता दे० (पु०) शक्ति, सामर्थ्य, बल । [बहिन ।

बूबू दे० (स्त्री०) बहिन, भगिनी, छोटी बहिन, दुलारी

बूर दे० (स्त्री०) भूसी, छिलका कोई अन्न का कण ।
—के लड्डू (वा०) एक प्रकार की मिठाई का नाम ।—के लड्डू जो खाय सो भी पछताय न खाय सो भी पछताय (लो० उ०) जिस काम के करने से विशेष फल न हो, वैसे काम जो देखने से अच्छे मालूम पड़ें पर उनका फल कुछ नहीं ।

बूरा दे० (पु०) साफ़ की हुई खाँड़, लकड़ी का चूरा, आरा से लकड़ी चीरते समय जो बारीक चूरा निकलता है ।

बे दे० (पु०) अबे, अरे, नीच सम्बोधन ।

बेंग (पु०) भेक, मेढक ।

बेंट दे० (पु०) किसी अस्त्र का मूठ, हथकड़ा, दस्ता ।

बेंड़ना दे० (क्रि०) पकड़ कर बन्द करना ।

बेंडा दे० (क्रि०) तिरछा, बाँका, वक्र, टेढ़ा । (पु०) अर्गल, किवाड़ बन्द करने की लकड़ी ।

बेंधना दे० (क्रि०) छिदा, चुभाना, गाड़ना ।

बेईमान (वि०) झूठा, अविश्वासी ।—ी (स्त्री०) अधर्म, अविश्वास ।

बेकार (वि०) बिना काम, निष्प्रयोजन, व्यर्थ ।

बेग (पु०) तेज़ी, शीघ्रता ।

बेगार दे० (पु०) बिना मजूरी का काम, बलपूर्वक किसी से काम लेना और मजूरी न देना या थोड़ी मजूरी देना ।—पकड़ना (वा०) ज़बरदस्ती बिना मजूरी के काम कराने के लिये पकड़ना, ज़बरदस्ती किसी को काम करने के लिये बाध्य करना ।

बेगारी दे० (स्त्री०) बेगारी का काम करना, सेंतमेंत का काम ।

बेचना दे० (क्रि०) बिक्री करना, मोल लेकर देना, दाम लेकर देना, अदला बदला करना, बदलौवल करना ।

बेचारा (वि०) दुखिया, अधूरा, असहाय ।

बेचू दे० (वि०) बेचने वाला ।

बेजू दे० (पु०) जन्तु विशेष, नकुल, नेवला ।

बेझी दे० (पु०) लक्ष्य, निशाना, ताक, चिह्न ।

बेटवा दे० (पु०) लड़का, पुत्र बेटा ।

बेटा दे० (पु०) पुत्र, लड़का छोकड़ा, सन्तान, सन्तति ।

बेटिया बेटी दे० (स्त्री०) पुत्री, तनया दुहिता, लड़की । [ढाकन ।

बेठन तद्० (पु०) वेष्टन, लपेटन, खोल, आच्छादन,

बेड़ दे० (पु०) घेरा, बाड़ा, मेंड़ ।

बेड़ा दे० (पु०) धरनई, चौघड़ा, झुण्ड, नावों या जहाज़ों का समूह ।—पार लगाना (वा०) दुःख से उद्धार करना, दुःख दूर करना ।—पार होना (वा०) सब दुःखों से छूटना, मनोरथ सफल होना ।

बेड़िया दे० (स्त्री०) जाति विशेष ।

बेड़ी दे० (स्त्री०) बन्धन सूत्र, पैकड़ी, पात्र विशेष, जो सींचने के काम में आता है ।

बेडौल (वि०) बदशक्ल, कुरूप ।

बेढ़ना दे० (क्रि०) घेरना, बाड़ा बाँधना ।

बेढब (वि०) भद्दा, कुरूप ।

बेढ़ा दे० (पु०) कटघरा, कठरा ।

बेण, बेणु तद्० (पु०) वंशी, बाँसुरी, मुरली ।

बेत तद्० (स्त्री०) वेत्र, एक प्रकार की लकड़ी जो लचीली होती है । यथा—

" फूलै, फरै न बेत यदपि सुधा बरसहिं जलद,
मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं विरञ्चि सम ।"

—रामायण ।

बेदख़ल (वि०) अधिकारच्युत, बहिष्कृत, निकाला हुआ । [थका हुआ ।

बेदम (वि०) बिना दम का, थका हुआ, आसन्न

बेदसिरा तद्० (पु०) एक मुनि का नाम ।

बेदिका या बेदी तद्० (स्त्री०) स्थण्डिल, कर्मकाण्ड के विषय में यज्ञादि कर्म के लिये रेणु निर्मित एक छोटा सा चबूतरा । [सीढ़ ।

बेध तद्० (पु०) नक्षत्र युक्त योग विशेष, छिद्र, छेद,

बेधड़क दे० (वि०) निर्भय, भय शून्य, निडर, निधड़क । [गड़ाना, चुभाना ।

बेधना दे० (क्रि०) छेदना, गाँसना, फोड़ना, भेदना,

बेन तद्० (स्त्री०) बेणु, बाँसुरी, वंशी ।

बेना दे० (पु०) पङ्खा, बाँस का बना हुआ पङ्खा ।—बदिया दे० (स्त्री०) एक जनाना आभूषण जो माथे पर धारण किया जाता है ।

बेनी तद्० (स्त्री०) बेणी, चोटी, जूड़ा, किवाड़ में लगाया जाने वाला एक काठ। [धीनता।
बेबस (वि०) परवश, पराधीन।—ी (स्त्री०) परा-
बेबाक (वि०) चुकता, परवशी।
बेमात तद्० (स्त्री०) विमाता, सौतेली माता।
बेर दे० (पु०) एक वृक्ष और उसके फल का नाम, बदरी वृक्ष बदरी फल। (स्त्री०) बार, अवसर, विलम्ब, वेला।—बेर (अ०) बार बार अनेक बार, अनेक समय, बारम्बार।—भयानक (पु०) भयानक रात्रि, प्रलय की रात, मृत्यु की रात।
बेरी दे० (स्त्री०) बेर के झाड़, बदरी वन, बेरकड़ी।
बेल दे० (पु०) बूटा, सूत या तार से बनाया हुआ कपड़े पर का काम, काँटेदार एक वृक्ष और उसके फल का नाम।—दार (पु०) फावड़ा चलाने वाला मज़दूर। [रोटी पोई जाती है।
बेलन दे० (क्रि०) स्वनाम प्रसिद्ध वस्तु विशेष, जिससे
बेलना दे० (क्रि०) फैलाना, बढ़ाना, रोटी पीटना।
बेलनी दे० (स्त्री०) टहनी, शाखा, लता। [काम।
बेल बूटा दे० (पु०) चित्रकारी का काम, सूई का
बेला दे० (पु०) पुष्प विशेष, एक सुगन्धित पुष्प और उसके पेड़ का नाम, मोती का फूल, कटोरा, वाद्य विशेष, यह बाजा आकार में सारङ्गी के समान होता है, बंगाली लोग अधिक बजाते हैं। [सके।
बेलि दे० (स्त्री०) लता, पौधा जो स्वयं खड़ा न हो
बेलू दे० (पु०) लुढ़कन, लुढ़काव।
बेज़ा दे० (वि०) उदासीन, म्लान, निराश, हताश।
बेलौस दे० (वि०) किसी का पक्षपात न करने वाला, स्पष्टवक्ता। [मूर्खता, अज्ञानता।
बेवक़ूफ़ (वि०) अनारी, मूर्ख, अज्ञान।—ी (स्त्री०)
बेपरदार दे० (अ०) स्पष्ट रूप से, साफ़ साफ़, खोल के, प्रकाश भाव से, क्रमशः, यथा क्रम।
बेवहर दे० (पु०) ऋण, उधार, धार, क़र्ज़, लेनदेन।
बेवहरिया दे० (पु०) ऋणदाता, क़र्ज़ देने वाला, उत्तमर्ण, महाजन। [प्रथा, परस्पर रीति रसम।
बेवहार तद्० (पु०) व्यवहार, चाल चलन, रीति,
बेवान दे० (पु०) विमान, मृतक की अरथी।
बेसन दे० (पु०) चने का आटा।
बेसनौटी दे० (स्त्री०) बेसन की रोटी।
बेसर दे० (पु०) नाक का एक गहना।
बेसरा दे० (पुं०) पक्षी विशेष, बाज़, सिकरा।
बेसुरा दे० (वि०) कुमेल, बेताला, कुश्राव्य, भद्दी आवाज़ वाला, स्वर से भिन्न गाने वाला।
बेश्या तद्० (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, नर्तकी, गणिका, नगर नारी, वाराङ्गना।
बेह तद्० (पु०) वेध, छिद्र, भाक, छेद।
बेहड़ दे० (वि०) जगल, वन।
बेहना दे० (पु०) धुनिया, धुनियाँ, रुई धुनने वाला।
बेहोश (वि०) अचेतन, चेतना रहित, मूर्छित।
बेहोशी (स्त्री०) मूर्छा।
बैंगन दे० (पु०) तरकारी विशेष, बैगन, भाटा, वृन्ताक।
बैंगनी या बैजनी दे० (पु०) रंग विशेष, बैंगन के समान रंग। (वि०) बैंगनी। (पु०) बैंगनी रंग में रंगा हुआ।
बैंटा दे० (पु०) बेंट, कुल्हाड़ी की मूँठ, हथकड़ा।
बैंदा दे० (पु०) बूँदा, टिकुली, टीका, गोलाकार टीका।
बैंदी दे० (स्त्री०) बिन्दु, टिकुली।
बैकाल दे० (पु०) तीसरा पहर, अपराह्न।
बैकुण्ठ तद्० (पु०) नारायण का धाम, विष्णु का धाम।
बैगन दे० (पु०) बैंगन, भाटा, वृन्ताक।
बैजन्ती माल तद्० (स्त्री०) पचरङ्गी माला, भगवान् की माला, नीलम, मोती, माणिक, पुखराज और हीरा इन रत्नों से बनी माला, बैजन्ती माला का लक्षण नीचे के दोहे से स्पष्ट है:—
"बाँसो सीपी सूकरी करी दरी मठ शाख,
पद पद मुक्ता पोहिये सो बैजन्ती माल।"
बैठक दे० (स्त्री०) बैठका, बैठने का स्थान या रीति आसन, एक प्रकार की कसरत।
बैठना दे० (क्रि०) आसन मारना, आसन मार के बैठना, उपविष्ट होना, उपवेशन करना, दीवार आदि का गिर जाना, बिना काम के होना।
बैठा दे० (पु०) बैठा हुआ, चपटा, चिपटा।
बैठाना दे० (क्रि०) बैठालना, बैठने को कहना, स्थापन करना, टूटी हड्डी को बैठाना, बैठने की आज्ञा देना।
बैठार दे० (पु०) बैठक, स्थिति, पैठार, पैठाव, पहुँचा।
बैठालना (क्रि०) बैठाना। [नदी, यमद्वार की नदी।
बैतरनी या बैतरणी तद्० (स्त्री०) नदी विशेष, प्रेत,

बैतरा या बैतला दे० (पु०) एक प्रकार की सोंठ, सूखा अदरख।
बैद तद्० (पु०) वैद्य, वैद्यकी करने वाला, चिकित्सक।
बैदक तद्० (पु०) वैद्यक, चिकित्सा का शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें रोग परीक्षा और रोगों की चिकित्सा की विधि लिखी है।
बैन दे० (स्त्री०) वचन, बोली, कथन, बात, शब्द,
बैना दे० (पु०) शिरोभूषण विशेष, एक प्रकार का भूषण जो माथे में पहना जाता है। भाजी, बायन, उपहार, बायी, वचन, बोली, कोई वस्तु जो उत्सवों पर बिरादरी में बाँटी जाय।
बैपार तद्० (पु०) व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय।
बैपारी दे० (पु०) महाजन, वणिक, सौदागर, व्यवसायी, व्यापार करने वाला।
बैमात्र तद्० (पु०) वैमात्र, सौतेला भाई।
बैया दे० (पु०) पक्षी विशेष।
बैयान दे० (पु०) प्रसव, जन्म, उत्पत्ति। [कराना।
बैयाना दे० (क्रि०) जन्माना, उत्पन्न कराना, प्रसव
बैयाला दे० (वि०) वायु विशिष्ट, वायु वाला, वादी।
बैरंग (पु०) *महसूली, महसूलतलब, बिना टिकिट लगा* डाँक में भेजा हुआ पत्र, जिसका महसूल पत्र पाने वाले को देना पड़े।
बैर तद्० (पु०) फल विशेष, बदरी फल, बैर, द्वेष, विद्वेष, शत्रुता, विरोध।—पड़ना (वा०) द्वेष होना, विरोध करना।— लेना (वा०) बैर का बदला चुकाना, प्रतिशोध करना।—ी (पु०) शत्रु, दुश्मन।
बैरख दे० (पु०) बैरागी का वेस। [भूषण।
बैरखी दे० (स्त्री०) स्त्रियों के विवाह में पहनने का
बैरागड़ा (पु०) बैरागी, साधारण वैष्णव साधु।
बैरागा दे० (पु०) बैरागी का वेस
बैल दे० (पु०) वरध, वरद, वृषभ।
बैस तद्० (स्त्री०) वयस, अवस्था, उमर। (पु०) तीसरा वर्ण, बनिया, राजपूतों की एक जाति, *बैसवारा प्रान्त के रहने वाले।*
बैसन्दर तद्० (पु०) वैश्वानर, अग्नि, आग।
बैसाख तद्० (पु०) वैशाख मास, वर्ष का दूसरा महीना।
बैसाखी दे० (स्त्री०) अस्त्र विशेष, टेक, थूनी।
बैसौंहू दे० (वि०) आलसी, अशक्ती, आलकसी।
बोआई दे० (स्त्री०) खेत जोतने का काम, बीजवपन।
बोआना दे० (क्रि०) छींटना, खेत जोतना, खेत में बीया छिटकाना।
बोआरा दे० (पु०) खेत बोने का समय, सुकाल।
बोइया दे० (स्त्री०) छोटी टोकरी।
बोट दे० (पु०) ढोंट, डट्टा, डट्टल।
बोक दे० (स्त्री०) बकरे का शब्द, बकरे की बोली।
बोकरा दे० (पु०) छाग, बकरा, अज।
बोकरी दे० (स्त्री०) छेरी, छाँगी, बकरी, अजा।
बोच दे० (पु०) जलजन्तु विशेष, जलद, कुम्भीर, मगर।
बोचा दे० (पु०) पालकी का भेद, एक प्रकार की पालकी।
बोझ दे० (पु०) भार, लादी, बोझना।—सिर पर होना। (वा०) *किसी प्रकार का कठिन काम आ जाना।*
बोझना दे० (क्रि०) *भरना, लादना, उठवाना।*
बोझल दे० (वि०) भारी, वजनदार, वजनी।
बोट (स्त्री०) छोटी नाव, डोंगी, *संस्थाओं में प्रतिनिधि* भेजने के लिये सम्मति।
बोटी दे० (स्त्री०) मांस के छोटे छोटे टुकड़े।—बोटी फड़कना (वा०) बहुत चालाक होना, फरेब करना, फरफन्द करना।
बोठा दे० (पु०) डंठा, फल के ऊपर की डंठी।
बोड़ना दे० (क्रि०) डुबाना, बुड़ाना, मग्न करना।
बोड़ी (स्त्री०) कली, बिना खिला फूल।
बोताम (पु०) बटन, घुंडी।
बोतू दे० (पु०) बकरा, छाग, अज, छागल।
बोदली दे० (स्त्री०) भोली, गेगली।
बोदा दे० (वि०) निर्बल, अशक्त, निर्जीव, असमर्थ, नासमझ, मूर्ख।
बोद्ध तद्० (वि०) व्युत्पन्न, बुद्धिमान्, समझदार।
बोध तद्० (पु०) *ज्ञान, समझ, बुद्धि, विवेक, मति।*
बोधक तद्० (पु०) बोधनकर्त्ता, ज्ञापक, शिक्षक, बताने वाला।
बोधन तद्० (पु०) [बुध्+अनट्] ज्ञान, बोध, विवेक, समझ।

बोधना दे० (क्रि०) समझाना, बताना, बतलाना, फुसलाना, सुलाना।

बोधनीय तद्० (वि०) बोधन करने योग्य, बोधनाई बोधन के उपयुक्त।

बोना दे० (क्रि०) खेत बोना, बीज डालना, खेत में बीज छींटना। [का समय।

बोबी दे० (स्त्री०) बोआई, खेत बोने का काम, बोने

बोबी दे० (पु०) माल, सम्पत्ति, गठरी, गाँठ।

बोर दे० (पु०) पैजेब का घूँघर।

बोरा दे० (पु०) गोन, टाट का थैला, बड़ा थैला। (क्रि०) डुबोया, गर्क किया। [थैला, टाट।

बोरिया दे० (पु०) चटाई, पाटी, बोरा, बड़ा

बोरो दे० (पु०) इन्द्रधनुष, एक प्रकार का चावल।

बोल दे० (पु०) वाच शब्द, गीत का शब्द, बात।

बोलचाल दे० (स्त्री०) बातचीत, सम्भाषण, कथन, सम्वाद। [वाला प्राणी, जीव।

बोलता दे० (पु०) बोलने की शक्ति। (वि०) बोलने

बोलना दे० (क्रि०) बातें करना, कहना, कथन करना, सम्भाषण करना।

बोलवाला दे० (पु०) प्रताप, आशीर्वाद विशेष।

बोली दे० (स्त्री०) वाणी, भाषा, बात।—ठोली सुनना (या०) ताना सहना। [तरणी।

बोहित तद्० (पु०) जहाज़, नौका, नाव, जलयान,

बौंड़ दे० (पु०) मंजरी, बाल। [चकराना।

बौंड़ना दे० (क्रि०) लिपटना, भवराना, बलखाना,

बौंड़ियान दे० (क्रि०) बवण्डर के साथ घूमना, चक्कर खाना, घूमना।

बौछार दे० (पु०) जल सहित वायु का झोंका।

बौद्ध तद्०(पु०) बुद्धमतावलम्बी,बुद्ध मत के अनुयायी।

बौना दे० (वि०) वामन, ठिंगना, खर्व।

बौर दे० (पु०) मञ्जरी, फूल, मौर, बौंड़, बाल।

बौरहा दे० (पु०) उन्मत्त, सिड़ी, पागल, बावला।

बौराना दे० (क्रि०) उन्मत्त होना, सिड़ाना, पागल होना।

बौरापन दे० (पु०) पागलपन, उन्मत्तता।

बौराहा दे० (पु०) बावला, पागल, उन्मत्त।

बौराहापन (पु०) देखो "बौरापन"।

बौला दे० (वि०) पोपला, दन्तहीन।

बौहा दे० (पु०) पथरीला, कङ्करीला।

बौहाई दे० (स्त्री०) उपदेश, रोगिणी स्त्री।

ब्यजन दे० (पु०) पंखा।

ब्याज (पु०) सूद, बियाज।

ब्यान दे० (पु०) बियाना, पशुओं का प्रसव।

ब्याना दे० (क्रि०) बियाना, उत्पन्न करना, प्रसव करना।

ब्यालू (पु०) ब्यारी, रात का भोजन।

ब्याह दे० (पु०) विवाह, परिणय।

ब्याहता दे० (स्त्री०) विवाहिता, परिणीता, ब्याही हुई।

ब्याहना दे० (क्रि०) विवाह करना, परिणय करना।

ब्याहा दे० (वि०) ब्याहा हुआ, विवाहिता।

ब्योंगा दे० (पु०) एक अस्त्र विशेष, जिससे चमड़ा छीला जाता है।

ब्योंत दे० (पु०) गढ़ना, योग, छाँट, काट, कपड़े की काट।

ब्योंतना दे० (क्रि०) कपड़े काटना, कतरना।

ब्योपार तद्० (पु०) व्यापार, वाणिज्य, लेनदेन, व्यवसाय, सौदागरी।

ब्योपारी तद्० (पु०) सौदागर, व्यापारी।

ब्योमासुर तद्० (पु०) एक राक्षस का नाम, यह कंस का मन्त्री था।

ब्योरा दे० (पु०) समाचार, वृत्तान्त।

ब्योहार तद्० (पु०) व्यवहार, ब्योपार।

ब्रज तद्० (पु०) गोकुल नामक गाँव, गोष्ठ।—बाला (स्त्री०) ब्रज की स्त्री, गोपी, गोपिका।—भाषा (स्त्री०) ब्रज की बोली।

ब्रह्म तद्० (पु०) वेद, तप, तपस्या, विराट्, हिरण्यगर्भ, ईश्वर, जगत्कर्त्ता।—कुण्ड (पु०) ब्रह्मा का बनाया सरोवर विशेष, तीर्थ विशेष।—घाती (पु०) ब्राह्मण मारने वाला, ब्रह्महत्याकारी।—चर्य (पु०) आश्रम विशेष, प्रथम आश्रम वेदाध्ययन करने का समय, व्रत विशेष।—चारी (पु०) प्रथमाश्रमी, यज्ञोपवीत के अनन्तर नियम पूर्वक गुरुकुल में वेदाभ्यास करने वाला।—ज्ञ (पु०) ब्रह्मज्ञानी, आत्मतत्वज्ञ, वेदज्ञ, वेदवित्।—ज्ञान (पु०) परमात्मा विषयक ज्ञान।—दाय (पु०) वेद बोधित कर्म।—तत्त्व (पु०) आत्म-

सार, ब्रह्मधर्म, ब्रह्मस्वरूप, ब्रह्मज्ञान ।—तीर्थ (पु०) पुष्करमूल ।—भोजन (पु०) ब्राह्मणों को खिलाना ।—पुरी (स्त्री०) सुमेरु पर्वत पर ब्रह्मा की पुरी ।—भूति (स्त्री०) वेदाधिकार, ब्रह्म ऐश्वर्य, ब्रह्मतेज, ब्राह्मण का धर्म ।—यज्ञ (पु०) वेद पाठ ।—योग (पु०) परमेश्वर प्रार्थना, भक्ति, उपासना ।—रन्ध्र (पु०) मस्तक का मध्यस्थान ।—राक्षस (पु०) भूत विशेष, योनि विशेष ।—रात्रि(स्त्री०)ब्रह्मा की रात, जिसमें १००० युग होते हैं मनुष्यों के २११०००००० वर्ष बीत जाते हैं, वह रात्रि, जिसमें श्रीकृष्ण ने रास क्रीड़ा की थी ।—लोक (पु०) ऊर्ध्वलोक विशेष, ब्रह्मा का निवास स्थान ।—वादी (पु०) वेदान्ती, ब्रह्मज्ञानी ।—शाप (पु०) वेद ।—सूत्र (पु०) यज्ञोपवीत, जनेऊ, वेदान्त सूत्र ।—हत्या (स्त्री०) ब्राह्मण की हत्या ।

ब्रह्मर्षि तद्० (पु०) वेद मन्त्र द्रष्टा, ब्राह्मण, ऋषि । —देश (पु०) आर्यावर्त, कुरुक्षेत्र ।

ब्रह्मा दे० (पु०) देव विशेष, ब्रह्माण्ड का पूर्व का देव, विधाता, ईश्वर ।

ब्रह्माण्ड तद्० (पु०) जगत्, संसार ।

ब्राह्म दे० (पु०) स्वयम्भा, आश्चर्य, ब्राह्मणों की सभा । —मुहूर्त (पु०) सूर्योदय के पहले की चार घड़ी ।

ब्राह्मण तद्० (पु०) पहला वर्ण, विप्र ।

ब्राह्मणी तद्० (स्त्री०) विप्रपत्नी, ब्राह्मण की स्त्री ।

ब्राह्मण्य तद्० (पु०) ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की सभा, सातवाँ ग्रह ।

भ

भ व्यञ्जन का चौबीसवाँ वर्ण, ओष्ठ स्थान से उच्चारण होने के कारण इसे ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं ।

भ तद्० (पु०) अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्र, ग्रह, राशि, भ्रमर, भ्रान्ति, शुक्राचार्य ।

भँगड़ या भँगड़ी (वि०) भाँग पीने वाला ।

भँगरा (पु०) पक्षी विशेष ।

भँगिन (स्त्री०) भँगी की स्त्री, मेहतरानी ।

भँगी (पु०) मेहतर ।

भँगेरा (पु०) भाँग बेचने वाला ।

भँगेरिन (स्त्री०) भाँग बेचने वाले की औरत ।

भँजना (क्रि०) तोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना ।

भँटा (पु०) बैंगन ।

भँड़ (पु०) असज्जन, नीच, भेड़ुआ ।

भँड़ा (पु०) मटका, मिट्टी का बना ।

भँटमास दे० (पु०) अन्न विशेष ।

भँडेला (पु०) मसखरा, भाँड ।

भँडौवा (पु०) फक्कड़ ।

भँभुआ (पु०) वह फकीर जो भूख के कारण लूटे मारे ।

भँभोरना (क्रि०) काटना, काटखाना, कुत्ते का काटना, फाड़ खाना ।

भँवर दे० (पु०)भौंर, आवर्त, चक्कर ।—कली (स्त्री०) गवाची, डोरी, एक लोहे की कड़ी विशेष ।

भँवरा तद्० (पु०) भ्रमर, षट्पद ।

भँवरी तद्० (स्त्री०) भ्रमरी, चिर्रिरी ।

भँसार (पु०) भार ।

भई दे० (क्रि०) हुई, होगई । (पु०) भाई, भैया ।

भकसी दे० (स्त्री०) अन्धेरा घर, गुफा, खोह ।

भकुआ, भकुआ दे० (वि०) निर्बुद्धि, लपड़, मूर्ख, भोंदू ।

भकुवी दे० (वि०) मूर्खा स्त्री,निर्बुद्ध स्त्री । [मूढ़ होना ।

भकुआना दे० (क्रि०) चकचकाना, भुलाना, कर्त्तव्य-

भकोसना दे० (क्रि०) खाना, ठूस ठूस कर खाना ।

भक्त तद्० (वि०) [भज्+क्त] सेवक, तत्पर, अनुगत, भात, ओदन । —कार (पु०) पाचक, रसोइया, आहार ।—वत्सल (पु०) भक्तों पर दया करने वाला, सेवक, सुहृद ।

भक्ताई दे० (स्त्री०) भक्ति करना, परमेश्वरानुराग ।

भक्ति तद्० (स्त्री०) [भज्+क्ति]परमात्मा में परम अनुराग, आराधना, उपासना,प्रीति, विश्वास, सेवा, श्रद्धा, अनुरक्ति, श्रवण, कीर्तन, अर्चन, वन्दन, स्मरण, निवेदन, सख्य, दास्य और सेवन ये भक्ति के नौ भेद हैं ।—पन्थ (पु०) भक्त, पूजक, सेवक ।

भक्ष तद्० (पु०) भक्ष्य, भोजनीय पदार्थ, खाने योग्य वस्तु, आहार, भोजन।

भक्षक तद्० (पु०) [भक्ष+णक्] खाने वाला खादक। [भोजन करने की वस्तु।

भक्षण तद्० (पु०) [भक्ष्+ल्यट्] भोजन, आहार,

भक्षणीय तद्० (गु०) [भक्ष्+अनीय] भोजनार्ह, भोजन योग्य, भोजन करने के उपयुक्त।

भक्षित तद्० (गु०) [भक्ष्+इत] खाया हुआ, खादित। [भोजनार्ह, भोजन के उपयुक्त।

भक्ष्य तद्० (गु०) [भक्ष्+य] भक्षणीय, खानेयोग्य,

भग तद्० (पु०) स्त्री चिन्ह, योनि, इच्छा, चाह, ज्ञान, वैराग्य, कीर्ति, माहात्म्य, ऐश्वर्य, यत्न, धर्म, मोक्ष, यश, सौभाग्य, शोभा।

भगण तद्० (पु०) नक्षत्र समूह, नक्षत्र मण्डल, गण विशेष, अक्षर वृत्त पद्य में तीन तीन अक्षर के एक एक गण होते हैं, भगण में आदि का अक्षर गुरु होता है जैसे—राघव, माधव नागर आदि।

भगत तद्० (पु०) भक्त, भक्ति करने वाला, नर्तक, कत्थक, नचनिया।—खेलना (वा०) स्वाँग रचना, रूप धसारना। [की को।

भगतन (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, नर्तकी, भक्त

भगताई दे० (स्त्री०) भगतपन, भक्त का कर्म, भक्ति।

भगतिया दे० (पु०) गवैया, कथिक, जाति विशेष, कत्थक।

भगदत्त तद्० (पु०) प्राग्ज्योतिषपुर, वर्तमान आसाम के राजा का नाम, यह नरकराज का ज्येष्ठ पुत्र था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय इसने अर्जुन से ८ दिनों तक युद्ध किया था। युद्ध में हार कर यह युधिष्ठिर के अधीन हो गया था। महाभारत के युद्ध में दुर्योधन की ओर से इसने बड़ा भयङ्कर युद्ध किया था। द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में यह अर्जुन से लड़ता रहा और उन्हीं के हाथ से मारा गया। इसने अर्जुन के मारने के लिये वैष्णवास्त्र का प्रयोग किया था, परन्तु श्रीकृष्ण ने उस अस्त्र को अपनी छाती से रोक लिया इससे उसका अस्त्र व्यर्थ गया।

भगन्दर तद्० (पु०) रोग विशेष, एक रोग का नाम गुदा के आस पास का नासूर।

भगल दे० (पु०) छल, कपट, धोखा।

भगलिया दे० (पु०) छली, कपटी, ठग।

भगवत तद्० (पु०) भगवान्, परमेश्वर, नारायण।

भगवन्त तद्० (पु०) ईश्वर, परमेश्वर।

भगवाँ दे० (पु०) गेरुआ कपड़ा, काषाय वस्त्र।

भगवान् तद्० (पु०) षट् ऐश्वर्य युक्त, नारायण।

भगाना दे० (क्रि०) हटाना, हकाना, खेदना खदेड़ना, दुरदुराना।

भगिनि या भगिनी तद्० (स्त्री०) बहिन, बहन, दीदी, सहोदरा, भग्नी।

भगीरथ तद्० (पु०) सूर्यवंशीय दिलीपराज के पुत्र और अंशुमान के पौत्र। राजा दिलीप भगीरथ को राज्य देकर तपस्या करने के लिये हिमालय चले गये, वहाँ बहुत दिनों तक तपस्या करने के पश्चात् उन्होंने शरीर त्याग किया। राज्य पाकर भगीरथ सोचने लगे कि किस प्रकार स्वर्ग से गङ्गा लायी जा सकती है। भगीरथ प्रजा हितैषी धर्मात्मा राजा थे, तथापि उनके कोई पुत्र नहीं था। वे मन्त्रियों को राज्य सौंप कर गङ्गा को लाने के लिये निकले। हिमालय के गोकर्ण तीर्थ पर ऊर्ध्वबाहु होकर वे तपस्या करने लगे। उनकी तपस्या से सन्तुष्ट होकर वर देने के लिये ब्रह्मा जी आये, उनसे दो वर देने के लिये भगीरथ ने प्रार्थना की। (१) कपिल के शाप से भस्म हमारे साठ हज़ार प्रपितामह गङ्गाजल से पवित्र होकर स्वर्गवासी हों। (२) हमारा वंशलोप न हो। ब्रह्मा जी ने प्रथम वर के प्रार्थना के उत्तर में कहा तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा, परन्तु गङ्गा के गिरने का वेग पृथिवी सहन नहीं कर सकती, अतएव तुम महादेव की आराधना करो, वे यदि गङ्गा को धारण करना स्वीकार करेंगे तब तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा। दूसरे वर के लिये उन्होंने कहा तुम्हारे वंश की रक्षा होगी, भगीरथ ने महादेव की आराधना की, महादेव प्रसन्न होकर गङ्गा का वेग धारण करने के लिये प्रस्तुत हुए। महादेव के मस्तक पर बड़े वेग से गङ्गा का प्रवाह गिरने लगा, गङ्गा ने चाहा कि अपने तीव्र वेग से महादेव को पाताल में लिये चली जाऊँ। गङ्गा का यह अभिप्राय समझ कर महादेव ने गङ्गा को अपनी जटा

ही में रोक रखा। एक वर्ष तक गङ्गा वहीं घूमती रहीं। पुनः भगीरथ के स्तुति करने पर महादेव ने गङ्गा को अपनी जटा से बाहर निकाल दिया। गङ्गा की सात धारायें निकलीं, जिनमें तीन पूर्व की ओर तीन पश्चिम की ओर गयीं। सातवाँ प्रवाह भगीरथ के साथ साथ चला, भगीरथ पैदल धारा के साथ नहीं चल सकते थे, इस कारण उन्हें एक रथ मिला। भगीरथ के साथ चलने वाली गङ्गा की धारा का नाम भागीरथी है।

भगेल दे० (स्त्री०) पराजय, हार। (पु०) भगोड़ा, भागने वाला।

भगोड़ दे० (वि०) भागने वाला, भगेल, भगैया।

भग्गुल दे० (वि०) भगोड़। (पु०) दूत, हरकारा।

भग्गू दे० (वि०) भगोड़ा, डरपोक, बुज़दिल।

भग्न तत्० (वि०) पराजित, त्रुटित, चूर्णित, टूटा हुआ, नष्ट भ्रष्ट। [खण्डित भाग।

भग्नांश तत्० (पु०) भाग, टूटा हुआ हिस्सा,

भग्नाशा तत्० (वि०) निराशा, हताश, जिसकी आशा भङ्ग हुई हो, हतमनोरथ।

भङ्ग तत्० (पु०) भेद, खण्डन, टूटा, तरङ्ग, ऊर्मि, लहर, पराजय, रोग विशेष, कौटिल्य, कुटिलता, भय, रचना, बेल बूटे काढ़ना। (स्त्री०) एक प्रकार की पत्ती, नशीली पत्ती।

भङ्गन या भंगन दे० (स्त्री०) मेहतरानी, हलालखोरिन, भङ्गी की स्त्री। [का नाम।

भङ्गना, भंगना दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली

भङ्गा दे० (पु०) भाँग, पत्ती विशेष।

भङ्गार दे० (पु०) भङ्गरा, भङ्गारा, जड़ी विशेष।

भचक दे० (वि०) घबड़ा, अचम्भित, विस्मित, आश्चर्यित।

भचकना दे० (क्रि०) अचम्भित या विस्मित होना, लंगड़ा कर चलना, लंग खाकर चलना।

भचक्र तत्० (पु०) नक्षत्र मण्डल, राशिचक्र।

भच्छन तद्० (पु०) भक्षण, आहार, भोजन, जेवनार। [जेवते हैं, आहार करते हैं।

भच्छहिं दे० (क्रि०) खाते हैं, भोजन करते हैं,

भजई दे० (क्र०) भजन करे, सेवे, स्मरण करे, ध्यान करे, नाम स्मरण करे।

भजन तत्० (पु०) स्मरण, कीर्तन, ध्यान, निरन्तर रटन, जप, गान। [स्मरण करना, भागना।

भजना दे० (क्रि०) ध्यान करना, ध्याना, जपना

भजनीक दे० (पु०) अर्चक, पूजक, भजनकर्ता, भजन करने वाला। [करते हैं।

भजहिं दे० (क्रि०) भजते हैं, सुमिरते हैं, स्मरण

भजहु दे० (क्रि०) भजो, भजन करो, स्मरण करो, सुमिरो।

भजामहे तद्० (क्रि०) हम लोग भजते हैं। [रटके।

भजि दे० (अ०) भजन करके, स्मरण करके, भजके,

भजि जाना दे० (क्रि०) भागना, चम्पत होना, हटना, लुकना, छिपना।

भजिय दे० (क्रि०) स्मरण कीजिये, सुमिरिये, भागिये, भागना चाहिये, हट जाइये, हटना चाहिये।

भजी दे० (क्रि०) सुमिरन करो, स्मरण करो। (स्त्री०) दौड़ी, भागी।

भजे दे० (क्रि०) भजन करने से, स्मरण करने से।

भञ्जक तत्० (वि०) भञ्जनकर्त्ता, तोड़ने वाला।

भञ्जन तत्० (पु०) तोड़न, भाँगना, नष्ट करना, नाश करना।—हार (पु०) तोड़ने वाला, हटाने वाला, नाश करने वाला।

भञ्जाना दे० (क्रि०) भुनाना, बदलवाना, रुपया तुड़ाना, गहना तुड़ाना।

भञ्जित तत्० (वि०) खण्डित, चूर्णित, तोड़ा हुआ।

भट तत्० (पु०) [भट्+अच्] योद्धा, वीर, लड़ाका, बहादुर, शूर, मल्ल, पहलवान, वर्णसङ्कर जाति विशेष।

भटई दे० (स्त्री०) गुणगान, बखान, स्तुति, मिथ्या प्रशंसा, भाँटों का काम, भाँटों का व्यवहार।

भटकना दे० (क्रि०) बहकना, भूलना, भ्रम में पड़ना, भ्रान्त होना। [में डालना, डराना।

भटकाना दे० (क्रि०) भुलाना, भुलावा देना, भ्रम

भटकौंहा दे० (वि०) भययुक्त, डरावना, भटकने वाला।

भटपड़ना दे० (क्रि०) अभागा होना, गिर पड़ना।

भटभेरे दे० (पु०) घात प्रतिघात, धक्कमधक्का, धक्का-धुक्की।

भटित्र तत्० (पु०) शूली पर पक्व मांसादि, दग्ध मांस, जलाया माँस, कबाब, सलाइयों पर भूना माँस।

मटियारा दे० (पु०) एक जाति विशेष, मुसलमानों का खाना पकाने वाली और सराय में मुसाफिरों को ठहराने वाली जाति, संस्कृत में इसे भटकार कहते हैं।

मट्टू दे० (स्त्री०) सखी, प्रणयिनी, प्रिया। यथा— "देखि के मट्टू को मैं लट्टू है रहो शिवनाथ ओढ़े पीत पट्टू सो अटा पै खाल ठाढ़ी है।"

भट्ट तत्० (पु०) जाति विशेष, भाट, मीमाँसादि शास्त्रवेत्ता, दक्षिणी ब्राह्मणों का एक आस्पद। —नारायण (पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि। इनका बनाया वेणीसंहार नामक एक नाटक है। राजा आदिशूर के समय में मध्यदेश से जो पाँच ब्राह्मण बङ्गाल गये थे, उनमें भट्टनारायण भी हैं। डा० राजेन्द्रलाल मित्र महोदय आदि शूर का ही नामान्तर वीरसेन बतलाते हैं। वीरसेन का समय ११ वीं सदी निश्चित हुआ है। भट्टनारायण का बनाया प्रयोगरत्न नामक दूसरा ग्रन्थ है। भट्टनारायण के पिता का नाम भट्ट महेश्वर था। —लोल्लट (पु०) काश्मीर निवासी संस्कृत कवि, काव्य प्रकाशकार ने अपने रसनिरूपण में इनका मत उद्धृत किया है। राजानक रुय्यक ने भी अपने अलङ्कारसर्वस्व में इनका मत उद्धृत किया है। ऐसी दशा में यह तो कहा ही नहीं जा सकता कि इनका कोई भी ग्रन्थ नहीं था। परन्तु उस ग्रन्थ का पता नहीं है। काव्यप्रकाशकार मम्मट भट्ट से ये प्राचीन हैं इसमें सन्देह नहीं। तो भी ११ वीं सदी के पहले के ये नहीं हो सकते। यह विद्वानों की सम्मति है। इनके ठीक समय का निर्णय करना विद्वानों ने असम्भव माना है।

भट्टार तत्० (पु०) सूर्य, रवि। (गु०) पूजनीय, मान्य, पूज्यपाद।

भट्टारक तत्० (पु०) नाटकोक्ति में राजा को कहते हैं। देव, सूर्य तपोधन।—वार (पु०) रविवार, अतवार। [सम्बन्धी उपाधि।

भट्टाचार्य तत्० (पु०) बङ्गालियों का आस्पद, विद्या

भट्टकल्लट तत्० (पु०) काश्मीरी पण्डित, इनके गुरु का नाम वसु गुप्त था, वसु गुप्त के रचित ग्रन्थ का नाम स्पन्दकारिका है। उसकी स्पन्द सर्वस्व नाम की टीका भट्टकल्लट ने बनाई है। ये काश्मीर के राजा अवन्ति वर्मा के समकालीन थे। राजतरङ्गिणी के अनुसार इनका समय ९ वीं सदी मालूम होता है। प्रसिद्ध अलङ्कारिक मुकुल इनके पुत्र थे। ये शैव थे।

भट्टोत्पल तत्० (पु०) प्रसिद्ध ज्योतिर्वेत्ता, वराह मिहिर के ग्रन्थों की इन्होंने टीका लिखी है। केवल वराह मिहिर कृत पञ्चसिद्धान्तिका टीका इनकी बनाई नहीं मिलती, इसका जो कारण हो। प्राचीन ज्योतिषियों ने इन्हें भट्टोत्पल लिखा है। परन्तु ये अपने को केवल उत्पल ही लिखा करते थे। बृहत् जातक की टीका में इन्होंने अपना समय ८८८ शाके अर्थात् ९६६ ई० लिखा है।

भट्टोद्भट तत्० (पु०) काश्मीरी पण्डित थे, ये काश्मीर के राजा जयापीड के सभासद थे। महाराज जयापीड का राज्यकाल स० ७७१ से लेकर ८०२ ई० तक था। अतएव इनके सभासद का भी ८ वीं सदी का प्रारम्भ ही समय माना जा सकता है। अलङ्कारसारसंग्रह नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया है। जिसकी टीका प्रतीहारेन्दुराज ने रची। कुमारसम्भव नामक एक काव्य भी इन्होंने रचा था, परन्तु उसका इस समय पता नहीं। कुट्टनी मत-कर्त्ता दामोदर गुप्त वामन आदि पण्डित इनके समय के हैं। व्याकरण अलङ्कार में ये अत्यन्त निपुण पण्डित थे। काव्य प्रकाश के टीकाकारों ने इन्हें कहीं कहीं उद्भट, कहीं उद्भट भट्ट और किसी स्थान में उद्भटाचार्य भी लिखा है। अलङ्कार सारसंग्रह और कुमारसम्भव काव्य इन दो पुस्तकों को छोड़ कर अन्य पुस्तकों का पता नहीं मिलता।

भट्टी दे० (स्त्री०) भाड़, पजावा, बड़ा चूल्हा।

भठाना दे० (क्रि०) तोपना, गाड़ना, छिपाना।

भठियाना दे० (क्रि०) नदी की धार पर बहना, धार में बहना, कुँआ आदि भठवा देना।

भठियारा दे० (पु०) जाति विशेष, सराय का स्वामी।

भठियारिन दे० (स्त्री०) भठियारे की स्त्री।

भठियाल दे० (वि०) बहाव, पटाव, प्रवाह।

भड़ दे० (पु०) बड़ी नाव, डोंगा। [चमक, चौंक।

भड़क दे० (स्त्री०) चमक, भड़क, शोभा, चमत्कार

भड़कना दे० (क्रि०) चमकना, चौंकना, झिझकना।
भड़काना दे० (क्रि०) चमकाना, चौंकाना, झिझकाना, बिचकाना, घबड़वाना।
भड़की दे० (स्त्री०) घुड़की, डरपाव, धमकी।
भड़कीला दे०,(गु०) चटकीला, सजीला।
भड़वेला दे० (गु०) अड़ली, अनपरचा।
भड़भड़ दे० (गु०) सरल, सीधा, अकपटी, निश्छल।
भड़भड़िया दे० (पु०) फड़फड़िया,अल्ददबाज़,उतावला।
भड़भूंजा दे० (पु०) कांदू, भूंजा, भूजने वाला, मूर्खी।
भड़रिया दे० (पु०) कुली, टोमड़ा, जाति विशेष, जो हाथ देखने का काम करते हैं। तीर्थों में यात्रियों को दर्शन कराने वाले ब्राह्मण विशेष, शनिचरा ब्राह्मण जो निषिद्धदान लेते हैं।
भड़साई दे० (स्त्री०) भाड़, भट्ठी, बड़ा चूल्हा, भूंजे का चूल्हा, भरभाड़। [करके खाने वाला।
भड़िहा दे० (पु०) बटोर चाटने वाला, चोर, चोरी
भड़िहाई दे० (स्त्री०) लुटनाई, लुटनापन, चोरी, दाग़, धोखा, कपट, छल, ठगहाई, भड़ियापन, यथा " सो दससीस स्वान की नाईं।
इत उत चितै चला भड़िहाई॥"
रामायण।
भड़ुआ, भड़ुवा दे० (पु०) वेश्यापुत्र, वेश्या के साथ रहने वाला, कुटना। [देने वाला, किरायेदार।
भड़ैत दे० (पु०) भाड़े के मकान में रहने वाला, भाड़ा
भणन तत्० (पु०) [भण्+अनट्] कथन, पठन, पढ़ना।
भणित तत्० (वि०) कथित, उक्त, पठित, पढ़ा हुआ।
भण्ड दे० (पु०) भ्रष्ट, दुश्चरित्र, नीच चरित्र, निर्लज्ज, भंडई करने वाला।
भण्डन तत्० (पु०) प्रतारण, छलना, छलना, ठगना।
भण्डा दे० (पु०) पात्र, बर्तन, बड़े बड़े बर्तन, मटकी, मटका।
भण्डार तत्० (पु०) कोठा, कुठार। [भंडसार।
भण्डारा दे० (पु०) साधुओं का भोज, साधुओं का
भण्डारी दे० (पु०) भण्डार का अध्यक्ष, भण्डारे की देख रेख करने वाला, रसोइया, कोठरिया।
भण्डेरिया दे० (पु०) भंडरिया।
भण्डेला दे० (पु०) भाँड़, भड़ुआ।
भतार तत्० (पु०) भर्ता, पति, स्वामी।
भतीजा दे० (पु०) भ्रातृव्य, भाई का पुत्र।
भतीजी दे० (स्त्री०) भाई की पुत्री।
भत्ता दे० (पु०) भात, भक्त भाता।
भद दे० (स्त्री०) धप्पा, पड़ाका, किसी वस्तु के गिरने का शब्द, वृक्ष के फल गिरने या पैर का शब्द।
भदभदाना दे० (वि०) भदभद शब्द करना।
भदभदाहट दे० (स्त्री०) भदभद शब्द।
भदाक दे० (पु०) धड़ाक पड़ाक, भदाक शब्द के साथ गिरना,ऐसा गिरना जिससे भयानक शब्द हो।
भदेल या भदेस दे० (गु०) भद्दा, कुरूप।
भदेसल (पु०) बेडौल, कुढंगा। [बेडौल, भदेसल।
भद्दा दे० (त्रि०) निर्बोध, अज्ञानी, अबोध मूर्ख, गौंद,
भद्र तत्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, मुस्त, मोथा, करण विशेष, विष्टि करण, शिव, खञ्जन पक्षी, हरितका, जाति विशेष।—होना (वा०) मुंडन कराना, हिन्दुओं की एक प्रथा, जब कोई मरता है तब मुंडन किया जाता है।—काली (स्त्री०) दुर्गा, महामाया, काली।—श्री (स्त्री०) चन्दन, केसर, कुङ्कुम, मङ्गल, शोभा, श्री। [मनोज्ञ, देश विशेष।
भद्रक तत्० (पु०) भद्रमुस्तक, देवदारु वृक्ष। (त्रि०)
भद्रा तत्० (स्त्री०) ख्यात लता विशेष, रास्ना, नील दूब, व्योम नदी, तिथि विशेष, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी।
भद्राक्ष तत्० (पु०) कृत्रिम रुद्राक्ष।
भद्रिका तत्० (स्त्री०) दशा विशेष, मल्लपादी।
भद्री दे० (पु०) डकौतिया, सामुद्रिक शास्त्रवेत्ता।
भनई दे० (क्रि०) कहता है, वर्णन करता है।
भनक दे० (पु०) शब्द, ध्वनि, आहट।
भनित दे० (क्रि०) कहा हुआ, वर्णित, कथित।
भभकना दे० (क्रि०) दहकना, क्रुद्ध होना, जल उठना, तड़पना।
भभकाना दे० (क्रि०) क्रुद्ध कराना, जलाना, तड़पाना।
भभक (स्त्री०) फफूंदना, गुरुता।
भभका दे० (पु०) पात्र विशेष, जिससे अर्क निकालते हैं। (क्रि०) जलना, दहकना, धधकना।
भभकी दे० (स्त्री०) भभकी, धमकी घुड़की।
भभ्भड़ दे० (पु०) डर, हौआ, खटका, हड़बड़ाहट।

भभ्भज दे॰ (पु॰) मोटा, स्थूल, तोंदैल, इन्द्रिज ।
भमक (पु॰) भवक । [फफाना, लजबजाना ।
भमकना दे॰ (वि॰) गिरना, टपकना, उभड़ना,
भभर दे॰ (पु॰) खटका, डर, रौला, घबराहट, उद्वेग, व्याकुलता ।—ना (क्रि॰) फूलना, सूजना ।
भमराना दे॰ (क्रि॰) सूजना, फूलना, खटकना, खटका होना । [ताल, चिम्पुक ।
भभूका दे॰ (पु॰) सुन्दर, मनोहर ,साफ़, स्वच्छ,
भभूत तद्॰ (स्त्री॰) विभूति, भस्म, क्षार ।
भमोरना (क्रि॰) फाड़ खाना ।
भय तद्॰ (पु॰) डर, भीति, शङ्का, त्रास ।—खाना (वा॰) डरना, त्रास करना ।—कारक (गु॰) डराने,वाला, भय देने वाला, भयानक, भयङ्कर ।
भयङ्कर तद्॰ (वि॰) भयानक, डरौना, भयकारक ।
भयचक दे॰ (पु॰) भयातुर, भयभीत, डरा हुआ ।
भयभीत तद्॰ (वि॰) डरा हुआ, घबड़ाया हुआ, भयातुर ।
भयहूँ दे॰ (स्त्री॰) छोटे भाई की स्त्री ।
भयातुर तद्॰ (वि॰) भयचंक, डरपोंक, भयभीत, भयविह्वल ।
भयानक तद्॰ (वि॰) डरावना, भयङ्कर, भयप्रद ।
भयापह तद्॰ (पु॰) भय नाशक,भय दूर करने वाला ।
भयापा दे॰ (पु॰) बन्धुत्व, भाईपना, अपनायता ।
भयावना दे॰ (वि॰) डरावना, भयङ्कर, भयानक ।
भयावह तद्॰ (वि॰) भयदायक, भयानक, भयङ्कर ।
भयावहि दे॰ (वि॰) डराते हैं, शङ्कित करते हैं, त्रास देते हैं ।
भयाहू (स्त्री॰) छोटे भाई की स्त्री ।
भर दे॰ (वि॰) पूरा, पूर्ण, मुँहामुँह, एक जाति । (क्रि॰) पूर्ण करो, पालन करो ।
भरऊँ दे॰ (क्रि॰) भरता हूँ, पूरा करता हूँ, पूर्ण करता हूँ, ऋण चुकाता हूँ, देता हूँ,दान करता हूँ ।
भरका दे॰ (पु॰) बुझाया हुआ चूना, चूने की कली ।
भरकाना दे॰ (क्रि॰) बुझाया, चूना बुझाना, गर्म करना । [करना, रक्षा, बचाव ।
भरण तत्॰ (पु॰) भरना, पूरना, पालना, पोषण
भरणी तत्॰ (स्त्री॰) एक नक्षत्र का नाम, दूसरा नक्षत्र ।
भरणीय तत्॰ (पु॰) योग्य, पालन योग्य, पालनार्ह ।
भरत तत्॰ (पु॰) अयोध्याधिपति दशरथ का पुत्र, ये महारानी कैकेयी के गर्भ से सम्भूत थे । यह भरत, राजा दुष्यन्त के शकुन्तला के गर्भसे उत्पन्न पुत्र, इन्होंने ही इस देश का नाम भारतवर्ष रखा है । नाट्यशास्त्र प्रणेता ऋषि विशेष, इनके समय का ठीक पता अभी तक भी पुरातत्वान्वेषियों को नहीं लगा है, तथापि वे साहसपूर्वक कहते हैं कि ये ईसा के पूर्व ६ वीं सदी के पूर्व के नहीं हो सकते । चाहे जो कुछ हो परन्तु ये बहुत ही पुराने हैं, कालिदास के भी पूर्ववर्ती हैं, भास के नाटकों के श्लोकों से भी इनकी प्राचीनता सिद्ध होती है । [रुपिया, बाजीगर
भरतपुत्रक तत्॰ (पु॰) नट, विदूषक, भाँड, बहु-
भरताग्रज तत्॰ (पु॰) श्रीरामचन्द्र ।
भरद्वाज तत्॰ (पु॰) विख्यात प्राचीन ऋषि, उतथ्य की पत्नी ममता के गर्भ और बृहस्पति के औरस से ये उत्पन्न हुए थे, मरुद्गण ने इनका भरण किया था और ये दो के द्वारा उत्पन्न हुए थे । इस कारण इनका नाम भरद्वाज पड़ा । इनका दूसरा नाम वितथ है । एक समय गङ्गास्नान के समय घृताची नामक अप्सरा को देखकर इनका रेत:-पात हुआ,वह रेत एक द्रोण में रखा गया, उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ । यही पुत्र विख्यात द्रोणाचार्य थे । प्राणियों का दुःख दूर करने के लिये देवताओं के अनुरोध से इन्होंने स्वर्ग में जाकर इन्द्र से आयुर्वेद का अध्ययन किया । इन्द्र से समग्र आयुर्वेद का अध्ययन करके ये मर्त्यलोक लौट आये, और आयुर्वेद की शिक्षा इन्होंने महर्षियों को दी । उनसे शिक्षा पाकर महर्षियों ने आयुर्वेद का प्रचार किया । [धारण ।
भरन दे॰ (पु॰) पूरन, पूर्ति, शोषण, पालन, पोषण,
भरना दे॰ (क्रि॰) पूरा करना, ऋण चुकाना, बन्दूक में गोली भरना, सहना, पाना, दुःख पाना, दुःख सहना ।
भरनी दे॰ (स्त्री॰) भरनेवाली, पूर्ण करने वाली, एक नक्षत्र का नाम, जिस नक्षत्र में वृष्टि होने से सर्प मरते हैं ।

भरपाना दे० (वि०) दाम पाना, दाम वसूल होना।
भरपूर दे० (गु०) पूर्ण, अत्यन्त पूर्ण, अतिशय पूर्ण।
भरभराना दे० (क्रि०) घीरना, छिड़कना, सूजना, फूलना।
भरभरी दे० (स्त्री०) सुजाव, फुलाव।
भरम तद्० (पु०) भ्रम, भ्रान्ति, संशय, सन्देह, भेद, रहस्य, परख।—खुलना (वा०) भेद खुल जाना, रहस्य प्रकाश होना।—खोल देना (वा०) सन्देह मिटाना, भ्रम दूर करना।—गवाँना (वा०) प्रतिष्ठा खोना, यश में धब्बा लगाना, कीर्ति में धब्बा लगाना।—निकल जाना (वा०) सन्देह दूर होना, संशय मिटना, भेद खुलना।
भरमाना दे० (क्रि०) ठगना, वञ्चन करना, बहकना।
भरमीला दे० (वि०) संशयी, सन्देही, भरम वाला।
भरवाना दे० (क्रि०) पूर्ण कराना, पूरा करवाना, पुरवाना।
भरा दे० (वि०) पुरा, पूर्ण।
भराई (स्त्री०) भरने का काम, भरने की मजदूरी।
भराना दे० (क्रि०) पुराना, पूर्ण कराना, भराना, भरवाना।
भरावट दे० (स्त्री०) पूर्ति, पूर्णता, भर्ती।
भरी दे० (स्त्री०) तोला, बारहमासा, तौल विशेष।
भरैत या भड़ैत (पु०) किरायेदार।
भरोठा दे० (पु०) बोझा, भार, मोट।
भरोसा दे० (पु०) आशा, विश्वास, प्रतीति, प्रत्यय।
भर्ग तद्० (पु०) शिव, महादेव, ब्रह्मा, ज्योति, तेज, प्रकाश, दीप्ति।
भर्ज्जन तद्० (पु०) भुँजना, भूलना।
भर्ता तद्० (पु०) पति, स्वामी, भतार। (गु०) पालने वाला, रक्षक, प्रतिपालक। (दे०) एक प्रकार की तरकारी, भाटा, आलू, आदि को भून कर जो बनाया जाता है।
भर्तिया दे० (पु०) जाति विशेष, ठठेरा, कसेरा।
भर्ती दे० (स्त्री०) समाप्ति, भरावट, पूर्णता, पूर्ति।—करना (क्रि०) शामिल करना, सम्मिलित करना। [गर्दी, अपवाद।
भर्त्सना तद्० (स्त्री०) तिरस्कार, निन्दा, कुत्सा,
भर्त्सक तद्० (पु०) तिरस्कार करने वाला, निन्दक।
भर्तृहरि तद्० (पु०) विक्रमादित्य राजा के भाई, इनके बनाये तीन शतक शृङ्गार, वैराग्य और नीति प्रसिद्ध हैं, कहते हैं अपनी स्त्री की दुश्चरित्रता से दुःखी होकर ये घर छोड़ कर वनवासी हो गये थे। वाक्यप्रदीप नामक एक व्याकरण विज्ञान का अमूल्य ग्रन्थ भर्तृहरि के नाम से प्रसिद्ध है। इसका निश्चय करना कठिन है कि वाक्यप्रदीपकर्त्ता ये ही भर्तृहरि हैं या अन्य। इनका भी वही १ वीं सदी ही समय मानना उचित है।
(२) इनका बनाया भट्टी नामक काव्य प्रसिद्ध है। भट्टी काव्य संस्कृत साहित्य का एक रत्न है। इसके पाठ करने वाले इनके व्याकरण के असाधारण ज्ञान से सुपरिचित हैं। इस ग्रंथ के प्रत्येक श्लोक यहाँ तक कि पदों में भी प्रयोग कुशलता देखी जाती है। [खीच।
भल दे० (वि०) भला, उत्तम, श्रेष्ठ, मनोहर, रम-
भलका दे० (पु०) भूषण विशेष, सोने की टिकली।
भलमनसात या भलमनसाहत दे० (वि०) महापुरुषत्व, मनुष्यत्व, पुरुषत्व।
भलमनसी दे० (स्त्री०) सुशीलता।
भला (वि०) उत्तम, शीलवान, अच्छा, श्रेष्ठ, सद्गुणी।—कर भला हो, सौदा कर नफा हो (लो० उ०) जैसा करोगे वैसा पाओगे, कर्मानुसार ही फल होता है।—आदमी (वा०) अच्छा आदमी, श्रेष्ठ पुरुष।—मानना (वा०) उत्तम समझना, अहसान मानना।—चङ्गा (वि०) नीरोग, मोटा, स्वस्थ।
भलाई दे० (स्त्री०) अच्छापन, कुशलक्षेम, कल्याण, महत्व।—लेना (वा०) अहसान लेना, नेकी करना, अहसान करना।—रहना (वा०) सुयश रहना, कीर्ति रहना।
भल्लुक या भल्लूक तद्० (पु०) रीछ, भालू।
भल्ल तद्० (पु०) भाला, बर्छी, बर्छा। [महादेव।
भव (पु०) संसार, जगत्, जन्म, प्राप्ति, शिव,
भवदीय तद्० (वि०) आपका। [स्थान।
भवन तद्० (पु०) घर, गृह, स्थान, वास, वास-
भवभूति तद्० (पु०) संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार, इन्होंने उत्तररामचरित, वीरचरित और मालती

माधव नामक तीन नाटक बनाये थे। भवभूति-खीष्टीय ८ वीं सदी के प्रारम्भ में उत्पन्न हुए थे। पद्मपुर नामक गाँव इनका जन्मस्थान है। इनके पिता का नाम नीलकण्ठ था और पितामह का नाम भूपाल भट्ट था। इनकी माता जतुकर्णी गोत्र में उत्पन्न हुई थीं। इस कारण वह जतुकर्णी नाम से प्रसिद्ध हैं। शब्द प्रयोग की कुशलता और भाव की उच्चता के विचार से भवभूति का स्थान संस्कृत साहित्य में बहुत ऊँचा है। इन तीन ग्रन्थों के अतिरिक्त भवभूति का दूसरा भी कोई ग्रन्थ अवश्य होगा। क्योंकि संग्रह ग्रन्थों में भवभूति के नाम से जो श्लोक देखे जाते हैं वे उनके प्रसिद्ध ग्रन्थों में नहीं हैं। राजा यशोवर्म की सभा के ये पण्डित थे। इनकी रचना करुणरस प्रधान है।

भवादृश तत्० (वि०) आपके तुल्य, आपके समान, आपके योग्य। [काशी।

भवानी तत्० (स्त्री०) पार्वती, शिव की स्त्री, दुर्गा,

भवार्णव तत्० (पु०) [भव+अर्णव] संसार-सागर, संसार रूपी समुद्र, भीषण समुद्र।

भवितव्यता तद्० (स्त्री०) होनहार, भावी, भाग्य, कपाल, यथाः—

" जैसी हो भवितव्यता वैसी उपजै बुद्धि।
होनहार हृदय बसै बिसर जात सब सुद्धि॥ "

भविष्णु तत्० (पु०) होने वाला, होनहार, भावी।

भविष्य तत्० (पु०) होनहार, होने वाला, भवितव्यता।

भविष्यत् तत्० (पु०) आगामी काल विशेष, आगामी काल।—वक्ता (पु०) भविष्यत् काल की बातें जानने वाला, भविष्यवेत्ता, होनहार जानने वाला।

भवैया दे० (पु०) कत्थक, नर्तक, नाचने वाला।

भव्य तत्० (वि०) सत्य, भावी, उज्ज्वल, सुन्दर।

भस दे० (पु०) भस्म, राख, विभूति, किसी वस्तु की असह्य गन्ध।

भसकना दे० (क्रि०) गिरना, पड़ना, फाँकना।

भसना दे० (क्रि०) तरना, तैरना, बहना, उतराना।

भसभसा दे० (वि०) पोला, भुरभुरा।

भसाना दे० (क्रि०) बहाना, पहाना, तिराना, बहाना।

भस्त्रा तत्० (स्त्री०) चमड़े की धौंकनी, भाथी।

भस्म तत्० (स्त्री०) राख, छार, भभूत।—सात् (अ०) अशेष भस्म, समस्त जला।

भस्मक तत्० (पु०) रोग विशेष, जिस रोग में लोग खाते तो बहुत हैं, परन्तु दुर्बल होते जाते हैं।

भहराना दे० (क्रि०) काँपना, डगना, डगमगाना, गिरना, पड़ना।

भाँग दे० (पु०) बूटी, विजया, भंग।

भाँज दे० (पु०) ऐंठ, बल, मोड़।

भाँजना दे० (क्रि०) ऐंठना, बल देना, मोड़ना।

भाँजा दे० (पु०) भागिनेय, बहिन का बेटा।

भाँजी दे० (स्त्री०) बहिन की बेटी।

भाँटा दे० (पु०) भँटा, बैगन।

भाँड़ दे० (पु०) बहुरूपिया, निर्लज्ज, एक तरह का तमाशा करने वाला, हंडा।

भाँड़ना दे० (क्रि) बिगाड़ना, गाली देना।

भाँड़ा दे० (पु०) मृत्तिका का बड़ा पात्र, मटका।

भाँडीर तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, वटवृक्ष, अजीर का वृक्ष।

भाँड़ैती दे० (स्त्री०) स्वाँग, बहुरूपीपना।

भाँति दे० (स्त्री०) तौर, ढब, रीति, प्रकार।

भाँति भाँति दे० (वा०) तरह तरह का, नाना प्रकार का, कई तरह का।

भाँपना दे० (क्रि०) ताड़ना, देखना, जानना।

भाँवर दे० (स्त्री०) घुमाव, भाँवरी, सात बार घूमना, परिक्रमा, दूल्हा और दुलहिन का वेदी की परिक्रमा करना।

भाँवरी दे० (स्त्री०) देखो भाँवर। [प्रकाश।

भा दे० (क्रि०) हुआ, भया। (पु०) उजाला, चमक,

भाई तद्० (पु०) भ्राता, सहोदर।—चारा (पु०) भाई का सम्बन्ध, भयापा।—बन्द (पु०) भाई बन्धु, बिरादरी।

भाक्त तत्० (पु०) कृत्रिम, गौण, पिछलग्गू।

भाकसी (स्त्री०) अन्धकूप, कैदियों के रहने का घर, हवालात, छोटा घर। [भाषण करना।

भाखना दे० (क्रि०) बोलना, कहना, कथन करना,

भाखा तद्० (स्त्री०) भाषा, बोली, बात।

भाग तत्० (पु०) अंश, हिस्सा, बाँट, विभाग। (तद्०) भाग्य, प्रारब्ध।—खुलना (वा०) भाग्यवान् होना, प्रारब्ध का अच्छा होना, सुख मिलना।

—जागना (वा०) धनी होना, अच्छा भाग होना।—भागी (पु०) भागी, हिस्सादार।—भरोसा (वा०) धीरता, धीरज, धैर्य, हौंसला।
भागड़ दे० (स्त्री०) पलायन, भागड़, देशत्याग।
भागना दे० (क्रि०) पलाना, भाग जाना, दौड़ना, अवज्ञा करना। [चला जाना।
भाग चलना दे० (वा०) निकल चलना, भाग जाना,
भागधेय तत्० (पु०) भाग्य, प्रारब्ध, शुभकर्म उत्तम कर्म। [बचा कर भाग आना, भाग पड़ना।
भाग निकलना दे० (वा०) छिप कर भागना, भाग
भागमान तद्० (वि०) भाग्यमान्, प्रारब्ध।
भागमानी तद्० (स्त्री०) सौभाग्यवती।
भागवत तद्० (वि०) भगवान् का भक्त। (पु०) अष्टादश पुराणान्तर्गत पुराण विशेष।
भागहार तद्० (पु०) भागनियम, अँश की रीति, भाजक। (पु०) भागहर्त्ता, अँशहारी, भाग का अधिकारी। [भागड़, दौड़ादौड़।
भागाभाग दे० (पु०) चलाचली, प्रस्थान की हलचल,
भागिनेय तद्० (पु०) भाँजा, भगिनीपुत्र, बहिन का बेटा, भयने।
भागी दे० (वि०) साझी, हिस्सेदार, बटैत, अंशी।
भागीरथी तद्० (स्त्री०) [भगीरथ + इण्] गङ्गा, सुरधुनी, सुरनदी।
भाग्य तद्० (पु०) प्राक्तन शुभाशुभ कर्म, दैव, भागधेय, भवितव्यता, अदृष्ट, प्रारब्ध।
भाग्यवन्त तद्० (वि०) धनी, धनिक, शुभ, अदृष्टशाली।
भाग्यवान् तद्० (वि०) भाग्यवन्त, अदृष्टवान्, पुण्यकर्मा। [दरिद्र, दुःखी।
भाग्यहीन तद्० (वि०) अभागी, हतभाग्य, मन्दभाग्य,
भाजन तद्० (पु०) पात्र, योग्य, आदर, परिमाण। (दे०) बासन, बर्तन।
भाजना दे० (क्रि०) भूँजना, भुनना, तलना, भागना।
भाजर दे० (स्त्री०) भयोड़, भगैल।
भाजी दे० (स्त्री०) साग, तरकारी, बायना, बायन।
भाज्य दे० (वि०) भागाई, भाजनीय, अँश करने योग्य, अङ्कार्थ, जिसका अङ्कों से विभाग किया जाय।
भाट दे० (पु०) चारण, स्तुति गायक, बन्दी, एक जाति विशेष, जिसका काम सब प्रशंसा करना है।
भाटन दे० (स्त्री०) भाट की स्त्री।
भाटा (पु०) समुद्र का उतराव।
भाटियाल (पु०) उतराव, गिराव।
भाटिया दे (पु०) इस नाम की एक व्यापारी जाति।
भाटियानी दे० (स्त्री०) भाटिया जाति की स्त्री।
भाठा दे० (पु०) समुद्र का उतराव।
भाठियाल दे० (पु०) भाटियाल, उतराव, गिराव।
भाठी दे० (स्त्री०) धौंकनी, भाथी। [जाता है।
भाड़ दे० (पु०) वह घर। चूल्हा जहाँ अन्न भूना
भाड़ा दे० (पु०) किराया, धरक, महसूल, घर आदि का कर। [भाड़े का काम।
भाड़ैत (वि०) भाड़े पर रहने वाला।—ी (स्त्री०)
भाण्ड तद्० (पु०) बर्तन, बासन।
भाण्डार (पु०) भंडार।
भात दे० (पु०) भक्त, ओदन।
भाता दे० (वि०) सुहावना, सुन्दर, मनभावन।
भाथा दे० (पु०) तूण, तरकस।
भाथी दे० (स्त्री०) चमड़े की धौंकनी।
भादों तद्० (पु०) भाद्रमास, भादवा, भाद्रपद।
भादों दे० (पु०) वर्ष का छठवाँ महीना, जिस महीने में भाद्रपद नक्षत्र में चन्द्रमा पूर्ण हो।—की भरन (वा०) अधिक वृष्टि, बाढ़, झड़ी।
भान तद्० (पु०) ज्ञान, स्मरण, बोध, सुधि, चेत।
भाना दे० ((क्रि०) अच्छा लगना, सुहावना मालूम होना, सुहाना, मनभावन होना।
भानमती दे० (स्त्री०) नटिनी, जाति विशेष की स्त्री, जो इन्द्रजाल विद्या में निपुण होती है।
भानु तद्० (पु०) सूर्य, रवि, सूर्य की किरण।—ज (पु०) अश्विनीकुमारद्वय, शनैश्चर, यमराज, राजा कर्ण।—जा (स्त्री०) यमुना, जमुना नदी।
भानुमती तद्० (स्त्री०) कहते हैं प्रसिद्ध कवि कालिदास की स्त्री का नाम भानुमती था, ये भोजराज की कन्या थीं, ये ऐन्द्रजालिक विद्या में निपुण थीं। भोजराज के वंशज इस विद्या में अति निपुण थे और वे इस विद्या से अपना मनोरञ्जन किया करते थे, इसी कारण इन्द्रजाल विद्या का दूसरा नाम भोजराजी रे। गया है। भानुमती के नाम के अनुसार इस विद्या का नाम भानुमती का खेल पड़ गया है।

माफ दे० (पु०) बाष्प, बफारा, धुआँ, धूम ।
भाफना दे० (क्रि०) अटकल लगाना, बूझना, अनुमान से किसी के भीतरी हाल का पता लगाना ।
भाभी दे० (स्त्री) भौजाई, बड़े भाई की स्त्री ।
भाँवर दे० (स्त्री०) फेरा, सप्तपदी । विवाह के समय वरवधू का सात बार मँड़वा के चारों ओर फिरना ।
भामिन दे० (स्त्री०) क्रोधी, क्रोध करने वाला ।
भामिनी तत्० (स्त्री०) स्त्री, लुगाई, तरुणी कुपित स्त्री ।—विलास (पु०) जगन्नाथ पण्डितराज कृत काव्य का एक ग्रन्थ ।
भायप दे० (पु०) भाईपन, भाईचारा, अपनाइत ।
भार तत्० (पु०) गुरुत्व, बोझा, काम सम्पादन करने का अधिकार, आठ हज़ार तोला परिमित द्रव्य ।
भारत तत्० (पु०) ग्रन्थ विशेष, महाभारत, भरत पुत्र, नट, अग्नि ।—वर्ष (पु०) जम्बू द्वीप के नव वर्ष के अन्तर्गत वर्ष विशेष, हिन्दुस्थान । —वर्षीय (पु०) भारतवर्षवासी, भारतवर्ष में रहने वाला।
भारती तत्० (स्त्री०) वाक्य, वचन, बोली, सरस्वती, पक्षी विशेष, भारई पक्षी, काव्य की एक वृत्ति ।
भारतीय तत्० (वि०) महाभारत उक्त, महाभारत कथित, महाभारत सम्बन्धी, भारतवर्षीय, भारतवर्ष सम्बन्धीय, हिन्दुस्थानी, हिन्दुस्थान का ।
भारद्वाज तत्० (पु०) द्रोणाचार्य्य, मुनि विशेष, अगस्त्य मुनि, मङ्गल ग्रह । [वाला, भारवहनकर्त्ता
भारवाहक तत्० (वि०) मोटिया, कहार, भार ढोने
भारवि तत्० (पु०) संस्कृत के प्रसिद्ध कवि, इनका बनाया हुआ किरातार्जुनीय नामक काव्य प्रसिद्ध है । ये कालिदास के समकालीन माने जाते हैं। इसके प्रमाण में एक शिलालेख दिया जाता है । जो ६३४ ई० में लिखा गया था । उस शिला में खुदे हुए पद्य से यह बात सिद्ध होती है। बहुतों का अनुमान है कि ये चौथी सदी में उत्पन्न हुए थे ।
भारा दे० (पु०) बोझ, मोट, भार ।
भारी दे० (वि०) गुरु, गरुआ, बड़ा, मँहगा मेहगा ।
भायारी दे० (पु०) भैयापा, बन्धुत्व, भाईचारा ।
भार्या तत्० (स्त्री०) स्त्री, पत्नी, जाया ।
भार्यातिक्रम तत्० (पु०) स्त्रीत्याग, स्त्रीनाश, परस्त्रीगमन । [नोक
भाल तत्० (पु०) ललाट, मस्तक । (दे०) भाले की
भाला दे० (पु०) बर्छा, अस्त्र विशेष, साँग ।
भालू दे० (पु०) रीछ, भल्लूक ।
भालैत दे० (पु०) बर्छा चलाने वाला ।
भाव तत्० (पु०) अभिप्राय, चेष्टा, सत्ता, स्वभाव, जन्म, क्रिया, लीला, पदार्थ, विभूति, धात्वर्थ, योनि, उपदेश, संसार, नवग्रहों की द्वादश चेष्टा कुण्डली के १२ घर । (क्रि०) भावे, अच्छे लगे, प्रिय लगे ।
भावई तत्० (स्त्री०) होनहार, भवितव्यता, भविष्य ।
भावक दे० (पु०) भाव, मनोविकार । (गु०) चिन्ताकारक, सोचने वाला, सत्ताश्रम ।
भावज दे० (स्त्री०) भौजाई, बड़े भाई की स्त्री, भाभी । [रहस्यवेत्ता ।
भावज्ञ तत्० (वि०) भावज्ञाता, मर्मज्ञाता, मर्मज्ञ,
भावता दे० (वि०) प्रिय, चाहिता, अभिलषित, ईप्सित, इष्ट, प्रिय, मनोहर, जो चाहा जाय ।
भावना तत्० (क्रि०) चिन्ता, ध्यान, पर्यालोचना ।
भाववाचक दे० (पु०) संज्ञा शब्द विशेष, जो वस्तु का धर्म गुण बतलाता है ।
भावह दे० (स्त्री०) छोटे भाई की स्त्री ।
भावान्तर तत्० (पु०) प्रकारान्तर, अन्य अभिप्राय, भिन्न अभिप्राय, दूसरे प्रकार ।
भावार्थ तत्० (पु०) अभिप्राय, तात्पर्य ।
भाविक तत्० (वि०) भावुक, चिन्ताशील,अभिप्रायज्ञ।
भावित तत्० (वि०) चिन्तित, विचारित, सोचा हुआ, विचारा हुआ ।
भावी तत्० (वि०) भविष्यत्काल, आगामी, उत्तर काल, होनहार, भवितव्य ।
भावुक तत्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, कुशल, क्षेम ।
भावे दे० (अ०) लेखे, विचार में, मन में ।
भाव्य तत्० (वि०) भवितव्य, भावनीय, चिन्तनीय, भावी, होनहार । [वाग्देवता, वाणी ।
भाषा तत्० (स्त्री०) वाक्य, कथा, वचन, बोली,
भाषित तत्० (वि०) कथित, उक्त । (पु०) वचन, बोली, भाषा ।

भाषी तद्० (वि०) बाती, वक्ता, कथक, कहने वाला ।

भाष्य तद्० (पु०) टीका, टीप्पणी, सूत्रार्थ, सूत्र विवरण ग्रन्थ, सूत्रार्थ का विशद रूप से वर्णन करने वाला ग्रन्थ, विस्तृत टीका ।—कार (पु०) महाभाष्यकर्त्ता मुनि विशेष, पतञ्जलि । (वि०) भाष्य कर्त्ता, भाष्य बनाने वाला ।

भासना दे० (क्रि०) विदित होना, मालूम होना, ज्ञात होना, प्रकट होना ।

भासान्त तद्० (पु०) सूर्य, चन्द्र, पक्षी विशेष, नक्षत्र । (वि०) मनोहर, सुहावना, रमणीय ।

भासुर तद्० (वि०) दीप्तिशील, दीप्तिमान ।

भास्कर तद्० (पु०) सूर्य, अग्नि, रवि ।

भास्कराचार्य तद्० (वि०) प्रसिद्ध ज्योतिर्वित् और गणितज्ञ, इनके पिता का नाम महेश आचार्य था महेश दैवज्ञ था। ये दक्षिण देश के सह्य नामक पर्वत के समीपवर्ती विज्जिडविड़ नामक गाँव में १०३६ शाके (१११४ ई० में) उत्पन्न हुए थे। इन्होंने ३६ वर्ष की अवस्था में अपने विख्यात सिद्धान्तशिरोमणि नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ के चार खण्ड हैं, १ लीलावती या पाटीगणित, २ बीजगणित, ३ ग्रहगणिताध्याय ४ गोलाध्याय । अन्तिम दोनों ग्रन्थ ज्योतिष के ग्रन्थ हैं। इनके पुत्र का नाम लक्ष्मीधर और कन्या का नाम लीलावती था। कहते हैं कि इन्होंने अपनी प्रिय कन्या के नाम से अपने ग्रन्थ का पहला भाग बनाया था ।

भास्करानन्द स्वामी तद्० (पु०) प्रसिद्ध सन्यासी, इनका जन्म १८३३ ई० के आश्विन शुक्ल सप्तमी को कानपुर ज़िले के मैथेलालपुर गाँव में हुआ था, ये बड़े प्रसिद्ध हो गये हैं। इन्होंने १९०१ ई० में अपनी लीला सवरण की। [रवरूप, उज्ज्वल।

भास्वर तद्० (वि०) दीप्ति युक्त, तेजस्वी, प्रतापी,

भिक्षा तद्० (स्त्री) भिक्षण, याचन, चाह, चाहना, माँगना, याचना, याच्ञा, सेवा, नौकरी —जीवी (वि०) याचित वस्तु द्वारा जीने वाला, भिक्षुक, भिखारी ।—टन (पु०) [भिक्षा + अटन] भिक्षार्थ गमन, भिक्षा के लिये जाना, भीख माँगने के लिये घूमना ।

भिक्षु तद्० (पु०) चतुर्थाश्रमी, संन्यासी, परिव्राजक, बौद्ध संन्यासी, याचक, भिखारी ।

भिक्षुक तद्०(पु०) भिक्षोपजीवी, भीख से जीने वाला, याचक, अर्थी, भीख माँगने वाला, भिखारी ।

भिखरी दे० (वि०) खोखला, शून्य, रिक्त ।

भिखारी दे० (पु०) याचक, मँगता, भीख माँगने वाला, भिक्षुक । [सजल करना ।

भिगाना दे० (क्रि०) आर्द्र करना, ओदा करना,

भिगोना दे० (क्रि०) देखो भिगाना । [भिगाना ।

भिजाना दे० (क्रि०) आर्द्र करना, ओदा करना,

भिटनी दे० (स्त्री०) मिठना, भेंटी ।

भिटाई दे० (स्त्री०) वह द्रव्य जो भाई, पिता, चाचा, अपनी कन्या, बहिन, भतीजी, बुआ आदि को मिलने के समय देते हैं ।

भिड़ना दे० (क्रि०) मिलना, सटना, सट जाना, लड़ना, मुठभेड़ होना, सामना करना ।

भिड़ाना दे० (क्रि०) लड़ाना, लड़ाई लगाना, झगड़ा कराना, झगड़ा लगा देना ।

भिंडु (स्त्री०) रमतरोई, शाक विशेष ।

भिंडी दे० (स्त्री०) तरकारी विशेष।

भित्ति तद्० (स्त्री०) दीवार, भीति, अंश, मूल ।

भिनकना दे० (क्रि०) भिनभिन शब्द करना, मक्खियों का बैठना, घिनाना ।

भिनभिनाना दे० (क्रि०) घिनाना, भिनकना ।

भिनुसार दे० (पु०) देखो भिंसार ।

भिन्न तद्० (वि०) [भिद् + क्त] भेद विशिष्ट, विदारित, पृथक्, अन्य, अतिरिक्त, घत रोग विशेष, अतीत ।—गुणन (पु०) अङ्क विशेष, न्यून अङ्क की वृद्धि करना ।

भिन्नाना दे० (क्रि०) सिर में चक्कर आना, सिर घूमना, सिर टनकना, नाराज़ हो जाना ।

भिन्नार्थक तद्० (वि०) अन्य तात्पर्य, अन्य अर्थ, दूसरा आशय। [भिनसार ।

भिसार दे० (पु०) विहान, प्रातःकाल, सबेरा,

भिरत दे० (क्रि०) लड़ते हैं भिड़ते हैं, जुटते हैं, युद्ध करते हैं ।

भिलावा दे० (पु०) औषधि विशेष ।

भिलौंआ (स्त्री०) भिलावे का बीज ।—

भिलौंजी दे० (स्त्री०) भिलावें का बीज।
भिल्ल तत्० (पु०) जाति विशेष, जंगली जाति, भील।
भिषक् तत्० (पु०) वैद्य, चिकित्सक।
भिखारि तद्० (पु०) भिक्षुक, भिखमँगा मँगता।
भी तत्० (स्त्री०) भय, त्रास, डर, आशङ्का। (दे०) वाक्य समुच्चायक अव्यय।
भीख दे० (स्त्री०) भिक्षा।
भीगना दे० (क्रि०) गीला होना, बोदा होना, भीजना।
भीगा (वि०) बोदा, गीला।
भीचना दे० (क्रि०) निचोड़ना, दबाना।
भीजना दे० (क्रि०) भींजना, भींगना।
भींजा दे० (वि०) भींगा, गीला, बोदा।
भीटा दे० (पु०) खंडहर, गिरी हुई भीत, पुराना घर, ऊँची ज़मीन। [कष्ट, आपद्।
भीड़ दे० (स्त्री०) समुदाय, सङ्घ, जमावड़ा, दुःख,
भीड़ी दे० (वि०) सङ्कीर्ण, सकुचा, सङ्केत।
भीत दे० (स्त्री०) दीवार, भित्ति। (वि०) डरा हुआ, भय प्राप्त।
भीतर दे० (अ०) अन्तर, बीच, मध्य, में।
भीतरिया दे० (अ०) भीतर रहने वाला, रसोई बनाने वाला।
भीति तत्० (स्त्री०) भय, त्रास, डर, शङ्का।
भीम तत्० (वि०) भैरव, भीषण, भयङ्कर, भयानक, भयजनक। (पु०) राजा युधिष्ठिर का छोटा भाई, द्वितीय पाण्डव। पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र कुन्ती के गर्भ से और वायु के औरस से ये उत्पन्न हुए थे। भीम और दुर्योधन दोनों बराबर उमर के थे। ये दोनों एक ही दिन उत्पन्न हुए थे। भीम बड़े बलवान् थे। दुर्योधन आदि कोई इनकी बरावरी नहीं कर सकता था। इस कारण दुर्योधन सदा इनसे डाह रखता था और भीम के मारने का उद्योग किया करता था। एक दिन भीम को विष खिला कर दुर्योधन ने जल में फेंकवा दिया, भीम बहते बहते नागलोक पहुँचे और वहाँ इनकी रक्षा हुई। नागलोक से आकर भीम ने दुर्योधन का पाप युधिष्ठिर से कहा। अन्य पाण्डवों के साथ भीम को भी वारणावत नगर के लाक्षागृह में जला देने की चेष्टा दुर्योधन ने की थी। दुर्योधन की चालाकी समझ कर भीम लाक्षागृह में आग लगने के पहले ही कुन्ती और भाइयों के साथ वहाँ से निकल गये। द्रुपद राज्य में आने के पहले ही हिडिम्ब नामक राक्षस को मार कर भीम ने उसकी बहिन हिडिम्बा को ब्याहा। हिडिम्बा के गर्भ से भीम के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम घटोत्कच था। द्रौपदी की प्राप्ति के पश्चात् युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ नगर में आकर राजसूय यज्ञ करना प्रारम्भ किया। कृष्ण और अर्जुन के साथ मगध राज्य में जाकर भीम ने जरासन्ध को मार डाला था। कपट द्यूत में युधिष्ठिर को हरा कर दुर्योधन ने द्रौपदी का अपमान किया था। सभा के बीच में ही भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि इसका बदला चुकाने के लिये मैं भाइयों के साथ दुर्योधन को मार डालूँगा और दुःशासन के हृदय का रुधिर पीऊँगा तथा दुर्योधन का जङ्घा तोड़ डालूँगा। कुरुक्षेत्र के युद्ध में भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी। पाण्डवों के महाप्रस्थान के समय द्रौपदी, सहदेव, नकुल और अर्जुन के पतन के अनन्तर भीमसेन ने भूमि में गिर कर प्राण त्याग किया था। युधिष्ठिर ने उस समय कहा था कि तुम दूसरों को न देकर स्वयं खा जाते थे और अपने सामने दूसरों को बलशाली नहीं समझते थे इसी कारण तुम्हें यहाँ गिरना पड़ा है।
भीमसेनी दे० (स्त्री०) सुगन्ध द्रव्य विशेष, एक प्रकार का कपूर, एक एकादशी का नाम।
भीरु तत्० (वि०) भयशील, डरने वाला।
भील तद्० (पु०) एक पहाड़ी जाति का नाम।
भीषण तत्० (वि०) भयङ्कर, भयानक, भैरव, घोर, भयजनक, भयावह। (पु०) सेहुँड़ वृक्ष, भटकटैया, बाज पक्षी।
भीषा तत्० (स्त्री०) त्रास, भयङ्करता, भय।
भीष्म तत्० (पु०) भयानक, भयङ्कर। (पु०) गाङ्गेय, शान्तनु राजा का पुत्र, ये गङ्गा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इन्होंने पिता की सुखलालसा पूर्ण करने के लिये जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य रहने और राज्य न लेने की प्रतिज्ञा की थी।
भीष्मक तत्० (पु०) विदर्भ राज्य का राजा, श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणी इन्हीं की पुत्री थीं।

भीष्मपञ्चक तद्० (पु०) व्रत विशेष, कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक का व्रत।
भुआल तद्० (पु०) भूपाल, राजा, नरपति।
भुक्त तद्० (वि०) भक्षित, खाद्धित, खा चुका, भोगा गया।—भोगी (वि०) पुनः भोगकर्ता, विशेष रूप से अनुभवी।
भुगतना दे० (क्रि०) भोगना, सहना, कर्मों का फल भोगना, कष्ट उठाना, कष्ट सहना।
भुगतान दे० (पु०) चुकान, पाई पाई चुका देना।
भुगताना दे० (क्रि०) दण्ड देना, भोग करवाना, सहाना, सहवाना, पूरा कर देना, अधिक निकलते हुए रुपये चुका देना।
भुग्गा दे० (वि०) सीधा, भोला, भोंदू।
भुग्न तद्० (वि०) कुटिल, वक्र, कुबड़ा, टेढ़ा, तिरछा।
भुच्च दे० (वि०) अनगढ़, अनपढ़, मूर्ख, अजान, अनभिज्ञ, अनारी, मूर्ख, भद्दा।
भुज तद्० (पु०) भुजा, बाहु।
भुजङ्ग, भुजङ्गम तद्० (पु०) सर्प, साँप, अहि।
भुजबंद दे० (पु०) बाजूबन्द, अङ्गद, बिजायठ।
भुजा तद्० (स्त्री०) बाँह, भुज, बाहु।
भुजिया दे० (वि०) भूँजा हुआ, उसना हुआ, बेसन का सेव, चावल की एक जाति।
भुर्जी दे० (पु०) भड़भूँजा।
भुट्टा दे० (पु०) बाल, मकई की फली, ज्वार।
भुण्डली, भुंडली दे० (स्त्री०) कीट विशेष, एक कीट का नाम।
भुतना दे० (पु०) भोकस, छोटा भूत, प्रेत, पिशाच।
भुतहा दे० (वि०) भूतह, भूत के समान।
भुनना दे० (क्रि०) भूँजना, भर्जन करना, सेंकना।
भुनवाना दे० (क्रि०) भूनने का काम अन्य से करवाना।
भुनाई (स्त्री०) भूनने का काम या मजदूरी।
भुनाना (क्रि०) भुँजाना, तुड़वाना। [का चबैना।
भुरभुरा दे० (पु०) कुरकुरा, कुरकुरा, एक प्रकार
भुरभुराना दे० (क्रि०) छींटना, छिड़कना, फैलाना।
भुलक्कड़ (वि०) भूलने वाला।
भुलसाना दे० (क्रि०) जलना, झुलसना।
भुलाना दे० (क्रि०) भुलवाना, फुसलाना, धोखा देना, हुलना करना, प्रतारण करना।
भुलावा देना दे० (वा०) भुलाना, भुलवाना, फुसलाना, बहकाना।
भुव तद्० (पु०) स्वर्ग, आकाश, अम्बर, पृथिवी, भूमण्डल।—पाल तद्० (पु०) राजा, पृथिवी का पालन करने वाला, भूपति।
भुवङ्ग तद्० (पु०) भुजङ्ग, साँप, सर्प।
भुवन तद्० (पु०) जगत्, लोक, प्राणी, जीव।
भुस दे० (स्त्री०) तुष, चोकर, छिलका, अनाज के डंठल का चूरा। [जिसमें भूसा रखा जाता है।
भुसेरा दे० (स्त्री०) भूसा रखने का स्थान, वह घर
भू तद्० (स्त्री०) भूमि, धरती, पृथ्वी।
भूइडोल दे० (पु०) भूचाल, भूकम्प।
भूइसी तद्० (स्त्री०) देखो " भूरसी "।
भूँजा दे० (पु०) भड़भूँजा, भुर्जी।
भूँकना दे० (क्रि०) भौं भौं करना, कुत्ते का शब्द।
भूकम्प तद्० (पु०) भूचाल, भूडोल।
भूख दे० (स्त्री०) भोजन करने की इच्छा, खाने का अभिलाष, क्षुधा, आहारेच्छा, बुभुक्षा।
भूखा दे० (वि०) बुभुक्षित, क्षुधातुर।
भूगर्भ तद्० (वि०) भूमि का मध्य, भूमि का अभ्यन्तर।
भूगोल तद्० (पु०) भुवन कोष, महीमण्डल, पृथिवी की आकृति के विवरण करने वाला शास्त्र।
भूचक्र तद्० (पु०) विषुवत् रेखा, मध्य रेखा, भूमण्डल।
भूचर तद्० (पु०) स्थलचर, मनुष्य आदि।
भूचाल तद्० (पु०) भूकम्प, भूडोल, भुइडोल, भूमिकम्प।
भूड़ दे० (स्त्री०) बालुकामय भूमि, रेतीली भूमि।
भूड़ल दे० (पु०) अभ्रक, अबरख।
भूडोल तद्० (पु०) भूचाल।
भूण्डपैरा, भूंडपैरा दे० (पु०) अशकुन, अपशकुन।
भूत तद्० (पु०) काल विशेष, अतीत काल, योनि विशेष, पिशाच आदि, अधोमुख या ऊर्ध्वमुख पिशाच, रुद्रानुचर, बालग्रह, कृष्ण चतुर्दशी।—काल (पु०) अतीत काल।
भूतनी तद्० (स्त्री०) भूत की स्त्री, प्रेतनी।
भूतल तद्० (पु०) पृथिवी तल, धरती, भूमि, भूमण्डल।

भूतात्मा तत्० (पु०) जीवात्मा, देह, ब्रह्मा, परमेष्ठी, शिव, बुद्ध, विष्णु।

भूति तत्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, महादेव के अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य, शिव का भस्म, हाथी का शृङ्गार, सम्पत्ति, जाति, वृद्धि नामक औषधि, भस्म, राख।

भूतेश तत्० (पु०) शिव, महादेव। [रूपकारी।

भूदार तत्० (पु०) शूकर, सूअर, वाराह, भूमि विदा-

भूदेव तत्० (पु०) ब्राह्मण, द्विज, विप्र, भूसुर।

भूधर तत्० (पु०) पर्वत, गिरि, शैल भूमि, धारणकर्त्ता।

भूप तत्० (पु०) नृपति, राजा, भूपाल, महिपाल।

भूपति (पु०) राजा, ऋषभ नाम की औषधि।

भूपाल तत्० (पु) राजा, नृपति, महीपाल।

भूभल दे० (स्त्री०) गरम राख, सूर्य किरण से तपी धूल।

भूभुर्त (पु०) गरम धूर, उष्ण भूमि।

भूभृत (पु०) राजा, पर्वत।

भूमि तत्० (स्त्री०) भू, पृथिवी, धरती।—कम्प (पु०) भूकम्प, भूचाल।—जा (स्त्री०) सीता, जानकी।—पाल (पु०) महीपति, भूपाल, राजा।

भूमिका तत्० (स्त्री०) आभास, रचना, प्रस्तावना, उपक्रम, अन्य रूप धारण, छद्मवेश, ग्रन्थों की पूर्वपीठिका, कथामुख, चित्त की अवस्था विशेष।

भूमिया दे० (पु०) भूमि का देवता, उस भूमि का वासी।

भूयः तत्० (अ०) पुनः, फिर, बार बार। [पुनः।

भूयोभूय तत्० (अ०) बार बार, फिर फिर, पुनः

भूर दे० (स्त्री०) दक्षिणा, मँगलोत्सव समय का दान।

भूरसी, भूइसी दे० (स्त्री०) दक्षिणा विशेष, उत्सव आदि में जो द्रव्य बिना सङ्कल्प के ब्राह्मणों को दिया जाता है।

भूरा दे० (पु०) वर्ण विशेष, पिङ्गल वर्ण, कपिल, कपिश। (वि०) पिङ्गल वर्ण का, कपिश।

भूरि तत्० (अ०) प्रचुर, यथेष्ट, अधिक, ढेर, बहु।—प्रेमा (पु०) चक्रवाक पक्षी, चकवा।—माय (पु०) गीदड़, स्यार।—लाभ (पु०) बहुत प्राप्ति, अधिक लाभ।

भूरिश्रवा तत्० (वि०) कीर्तिमान्, अतिशय यशस्वी। (पु०) चन्द्रवंशीय राजा सोमदत्त का पुत्र, महाभारत युद्ध में ये कौरवों की ओर से युद्ध करते थे पहले अर्जुन ने इसके बाहु काट डाले थे, उसी समय सात्यकी ने तलवार से इनका सिर काट डाला था।

भूरुह तत्० (पु०) वृक्ष, पेड़, रूख, गाछ।

भूर्ज (पु०) भोजपत्र का पेड़।

भूर्जपत्र तत्० (पु०) एक वृक्ष की छाल।

भूल दे० (स्त्री०) चूक, विस्मृति, अज्ञान से अपराध, त्रुटि, गलती।

भूलना दे० (क्रि०) विस्मरण होना, बिसरना, चुकना।

भूर्लोक (पु०) मृत्युलोक। [रास्ता भूला हुआ।

भूला बिसरा दे० (वा०) भूला भटका, मार्गभ्रष्ट,

भूला भटका दे० (वा०) विपथ, पतित, रास्ता भूलने से भटकता हुआ।

भूलोक तत्० (पु०) सत्यलोक, मृत्युलोक, मनुष्यलोक।

भूष दे० (क्रि०) भूषित करता है, सजाता है।

भूषक तत्० (वि०) भूषण कारक, अलङ्कारक, अलङ्कार करने वाला, शृङ्गार करने वाला।

भूषण या भूषन तत्० (पु०) [भूष्+अनट्] आभरण, अलङ्कार, हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि, वीर रस के एक प्रसिद्ध कवि। (वि०) भूषणधारी, अलंकारकारक।

भूषित तत्० (वि०) अलङ्कृत, शोभित शृङ्गारित।

भूसा दे० (पु०) भूस, तुष।

भूसी दे० (स्त्री०) चोकर, पलोरन।

भूसुर तत्० (पु०) भूदेव, ब्राह्मण।

भृकुटी तत्० (स्त्री०) भौं, भौंह, त्योरी।

भृगु तत्० (पु०) भार्गव, शुक्राचार्य्य, पर्वत का करारा, प्रपात, मुनि विशेष, विख्यात मुनि, पहले के समय में महादेव वारुणी मूर्ति धर कर एक यज्ञ करते थे, इस यज्ञ में देव कन्या और देवाङ्गनाएँ उपस्थित थीं। देवाङ्गनाओं को देखकर ब्रह्मा का वीर्यपात हुआ, उसको अपनी किरणों से उठा कर सूर्य ने अग्नि में डाल दिया, उससे भृगु अङ्गिरा और कवि ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए। इनको देख कर महादेव ने कहा कि ये हमारे यज्ञ में उत्पन्न हुए हैं, इस कारण ये हमारे पुत्र हैं। अग्नि ने कहा कि जब ये मेरे द्वारा उत्पन्न हुए हैं तब

दूसरे के पुत्र नहीं हो सकते। ब्रह्मा ने कहा कि इनकी उत्पत्ति मेरे वीर्य से हुई है, अतः इनका पिता मैं ही हूँ। इसी प्रकार तीनों आपस में विवाद करने लगे। तब देवताओं ने निर्णय कर दिया। एक एक पुत्र तीनों देवताओं को दे दिये गये। भृगु महादेव को, अङ्गिरा अग्नि को और कवि ब्रह्मा को मिले।

भृङ्ग तत्० (पु०) भ्रमर, अलि, षट्पद, भँवरा।

भृङ्गराज तत्० (पु०) पौधा विशेष, भँगरा।

भृङ्गी तत्० (स्त्री०) कीट विशेष, भौंरी, लखोरी। (पु०) शिवगण विशेष।

भृति तत्० (स्त्री०) वेतन, मजूरी, कमाई, महीना, मासिक या दैनिक वेतन।—भुक (पु०) वेतनग्राही, वैतनिक। [चेला, नौकर, टहलुवा।

भृत्य तत्० (पु०) परिचारक, सेवक, दास, किङ्कर,

भृष्ट तत्० (पु० भुजा हुआ, भुना हुआ, जल संयोग के बिना पकाया।—ि - (स्त्री०) भूजना।

भेक तत्० (पु०) जन्तु विशेष, मण्डूक, बेंग, मेढक, दादुर। [उपहार।

भेंट दे० (स्त्री०) दर्शन, भेंट, साक्षात्कार, सौगात,

भेंटना (क्रि०) भेंट करना, भेंट होना, मिलना, मुलाक़ात करना।

भेंटनी दे० (स्त्री०) वह पदार्थ जो भेंट के समय दिया जाता है, नज़र।

भेंटी, भेंटू दे० (स्त्री०) बोंड़ा, डंठा, फल आदि के ऊपर की डंठी (क्रि०) मिली, संयुक्त हुई।

भेक (पु०)मेंढक, दादुर।

भेख (पु०) भेष, वेष, परिच्छद, आकार, डौल, स्वरूप बनाना।—धारी (पु०) भेष बनाने वाला।

भेंगा दे० (वि०) टेढ़ा, तिरछा, बाँका, बहुत टेढ़ा।

भेजना (क्रि०) पहुँचाना, पठाना।

भेजा (पु०) सिर का गूदा।

भेट (स्त्री०) भेंट, दर्शन, डाली, सौगात।

भेटना (क्रि०) देखना, भेंट होना, मिलना।

भेटी (स्त्री०) डाल।

भेटू (स्त्री०) देखो भेंटी।

भेड़ दे० (पु०) भेड़ा, मेष।

भेड़ा दे० (पु०) भेड़ा, मेष।

भेड़िया दे० (पु०) हिंस्र जन्तु विशेष, हुँडार।—धसान (वा०) देखा देखी करना, किसी कारण न रहने पर भी केवल दूसरे करते हैं इस लिये स्वयं भी करना भेड़ियाधसान कहा जाता है।

भेड़ी दे० (स्त्री०) भेड़ी, मेषी, गाडर।

भेद तत्० (पु०) मिलना, दूसरे के पक्ष से हटा कर अपने अधिकार में करना, शत्रुओं के वश करने योग्य चार उपायों में से अन्तर्गत तीसरा उपाय, विदारण, विवेचन, विवेक, छिपी बात, गुप्त समाचार, विच्छेद, पृथक्ता।

भेदक तत्० (वि०) विदारक, भिन्नताजोड़ने वाला, विरेचक औषधि, फोड़ने वाला।

भेदकिया दे० (वि०) भेदी, खोजी, पता लगाने वाला, गुप्तचर, जासूस। [मर्मज्ञ।

भेदी दे० (पु०) भेदक, चर, भीतरी बात जानने वाला,

भेदू दे० (पु०) भेदी,भेद रखने वाला,मर्म जानने वाला।

भेद्य तत्० (पु०) भेदनीय, भेद के योग्य।

भेना दे० (स्त्री०) बहिन, भगिनी।

भेर तद्० (स्त्री०) भेरी, वाद्य विशेष।

भेरी तत्० (स्त्री०) वाद्य यन्त्र विशेष, दुंदभी, मुनादी, डुगडुगिया, नरसिंहा, तुरही, पटह, नगारा।

भेला दे० (पु०) पौधा विशेष, भिलावा।

भेली दे० (स्त्री०) गुड़ का लड्डू।

भेव दे० (पु०) स्वभाव, प्रकृति, भेद मर्म, भीतरी बातें, भंग, लड़ाई, जुदाई, फूट।

भेष तद्० (पु०) वेश, रूप आकार आकृति, पूर्व पुरुषों का वासस्थान।

भेषज तत्० (पु०) औषध, दवा।

भैंस दे० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध पशु विशेष, महिषी।

भैंसा दे० (पु०) महिष। [दद्रु रोग।

भैंसिया दाद या भैंसा दाद दे० (पु०) रोग विशेष,

भैचक दे० (वा०) आश्चर्यित, चकित।

भैमी तत्० (स्त्री०) माघ शुक्ला एकादशी, राजा भीम की पुत्री दमयन्ती, नल की स्त्री।

भैया दे० (पु०) भाई, भ्राता।

भैयापा दे० (पु०) भयारो, बन्धुत्व, भाईचारा।

भैरव तत्० (दे०) शङ्कर, महादेव, देव विशेष, भयानक रस, वाद्य विशेष, राग विशेष, एक रोग का

नाम, शिवजी के गण का अधिपति। (वि०) भयानक, भयङ्कर, भीषण, कराल।
भैरवी तद्० (स्त्री०) अवधूतिन, अवधूत आश्रम में गई स्त्री, रागिनी विशेष, भैरव राग की स्त्री।—चक्र (पु०) वामाचारियों का भजनार्थ चक्र विशेष।
भैरों तद्० (पु०) भैरव।
भैहुँ दे० (स्त्री०) अनुज वधू, छोटे भाई की स्त्री।
भोंकड़ा दे० (वि०) बड़ा, मोटा, स्थूल, विशाल।
भोंकना दे० (क्रि०) हूलना, ठोंकना, चुभाना, भौं भौं करना।
भोंकस दे० (पु०) ओझा, भूतहा, टोनहा।
भोंघरा दे० (पु०) तलघरा, तलकोठा, नीचे का घर।
भोंड़ा दे० (वि०) कुडौल, कुत्सित रूप वाला।
भोंथरा दे० (वि०) भोथरा, कुण्ठित, कुत्सित, बिना धार का।
भोंदू दे० (पु०) मूर्ख, बेवकूफ, सीधा, भोला, अनजान, अनभिज्ञ।
भोंपू दे० (पु०) नरसिंघा, सींगा, एक प्रकार का [बाजा।
भोई दे० (स्त्री०) कहार, धीमर, पालकी ढोने वाला।
भोकस दे० (पु०) मन्त्र यन्त्र करने वाला, ओझा, टोनहा।
भोक्तव्य (वि०) भोजनीय, खाने योग्य।
भोक्ता तत्० (वि०) भोग करने वाला, भोगी, खाऊ, अधिक खवैया। [मालिक।
भोक्तृ (वि०) खानेवाला। (पु०) विष्णु, भर्ता,
भोग तत्० (पु०) सुख दुःख का अनुभव, स्त्री आदि का उपभोग, साँप का शरीर, पालन, भोजन, तिरस्कार, अपमान, देवता का नैवेद्य, गंगा की उस धार का नाम जो पाताल में है।—राग (पु०) देवता का सेवन पूजन।
भोगना दे० (क्रि०) सुख दुःख उठाना, कर्म का फल भोगना, सुख दुःख सहना।
भोगा दे० (पु०) छल, कपट, धोखा।—वती तद्० (स्त्री०) नाग नगरी।
भोगी तत्० (त्रि०) विलासी, ऐश्वर्यवान्, व्यसनी, दुराचारी, आनन्दी, सुखी, सारथी। [फल।
भोग्य तत्० (त्रि०) भोगने योग्य, सुख दुःख, कर्म
भोजन दे० (पु०) खेनार, आहार।
भोजदेव तत्० (पु०) राजा विशेष, ये मालवा के अन्तर्गत धारा नगरी के राजा थे। ये ११ वीं खीष्टीय शताब्दी में उत्पन्न हुए थे। ये केवल राजा ही नहीं थे, किन्तु संस्कृत-साहित्य का ज्ञान इन का अगाध था। सरस्वती कण्ठाभरण, भोज चम्पू आदि इनके ग्रन्थों का संस्कृतज्ञों में बड़ा आदर है। स्मृति शास्त्र के भी ये बड़े भारी पण्डित थे। इन्होंने मनु संहिता की एक टीका बनाई थी। इन्हींके समय में भारत में संस्कृत विद्या का बड़ा प्रचार था। संस्कृत के अधिकांश साहित्य ग्रन्थ इन्हींके आश्रित कवियों के बनाये हैं।
भोजन तत्० (पु०) आहार, खाना।—खानी दे० (स्त्री०) रसोईदार, जहाँ सब प्रकार के भोज्य पदार्थ प्राप्त हों।—ीय (वि०) भोजन के योग्य।
भोजपत्र तद्० (पु०) भूर्जपत्र, वृक्ष की छाल।
भोज्य दे० (वि०) भोजन योग्य, खाने के योग्य।
भोड़ल दे० (वि०) अभ्रक, उपधातु विशेष।
भोता दे० (त्रि०) भोथर, कुण्ठित, कुराधार।
भोपा दे० (पु०) मन्त्र यन्त्र करने वाला, ओझा।
भोमीरा (पु०) मणि विशेष, विद्रुम, प्रवाल, मूँगा।
भोर दे० (स्त्री०) प्रातःकाल, सबेरा, विहान।
भोला दे० (वि०) छलहीन, निष्कपट, सीधा, भोंदू।
भौं दे० (स्त्री०) भृकुटी, भ्रू।
भौंकना दे० (क्रि०) हौं हौं करना, भूँकना, बिना प्रयोजन बक बक करना, कुत्ते के बोलने का शब्द।
भौंचाल दे० (पु०) भूडोल, भूकम्प, भूमिकम्प, भूचाल। [चक्कर।
भौंर दे० (पु०) भँवर, आवर्त, घुमाव, पानी का
भौंरा दे० (पु०) भ्रमर, अलि, षट्पद, मधुप।
भौंरियाना दे० (क्रि०) घूमना, फिरना, चक्कर काटना, भ्रमर की गति से चलना।
भौंरी दे० (स्त्री०) आवर्त, घोड़े का एक दोष और गुण। गले के नीचे की ओर जिस घोड़े के बाल फिरे रहते हैं वह घोड़ा अच्छा समझा जाता है। परन्तु यही बालों का आवर्त यदि किसी दूसरे स्थान पर रहता है तो वह दोष समझा जाता है। यदि वह मनुष्य के मस्तक पर आगे की ओर हो तो वो कीरन्ता योग समझा जाता है।

भौंकना दे० (क्रि०) हौं हौं करना, भौंकना।
भौं दे० (पु०) भय, डर, शङ्का, त्रास।
भौंचक दे० (अ०) अकस्मात्, सहसा, अचानक।
भौजाई दे० (स्त्री०) भाभी, बड़े भाई की स्त्री।
भौतिक तत्० (वि०) भूत सम्बन्धी, भूत का, भूतयुक्त।
भौना दे० (क्रि०) भ्रमण करना, फिरना, घूमना।
भौनास दे० (पु०) हाथी बाँधने का खूँटा।
भौमवार तत् (पु०) मङ्गलवार।
भ्रंश तत्० (पु०) ध्वंस, नाश।
भ्रम तत्० (पु०) सन्देह, संशय।
भ्रमण तत्० (पु०) पर्यटन, घूमना, भाँवर फिरना।
भ्रमर तत्० (पु०) भौंरा, अलि, मधुप।

भ्रष्ट तत्० (वि०) पतित, अधर्मी, गिरा, अकर्मी, स्थानच्युत। —ता (स्त्री०) पातित्य, दुष्टता।
भ्राता तत्० (पु०) भाई, सहोदर, बन्धु।
भ्रातृ (पु०) सगाभाई, सहोदर भ्राता।
भ्रान्त (वि०) भूला, भटका।
भ्रान्ति तत्० (स्त्री०) भूल, भ्रम, संशय, सन्देह।
भ्रामक तत्० (पु०) रोग विशेष, मूर्छा रोग, मिर्गी। (पु०) सन्देह उत्पन्न करने वाला, घूमने वाला, घुमाने वाला।
भ्रू तत्० (स्त्री०) भौं, भृकुटी।
भ्रूण तत्० (पु०) गर्भ, गर्भस्थ बालक। —हत्या (स्त्री०) गर्भपात, गर्भ गिराना।
भ्रूभङ्ग तत्० (पु०) त्योरी चढ़ाना, भृकुटी :

म

म व्यञ्जन का पचीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान ओंठ होने से यह ओष्ठ्य वर्ण कहा जाता है।
म तत्० (पु०) ब्रह्मा, शिव, चन्द्रमा, विष्णु, यम, समय, विष
मँगतर (स्त्री०) वचनदत्ता, माँग।
मँगता दे० (पु०) भिक्षुक, भिखारी, कंगाल, दरिद्र।
मँगनी दे० (स्त्री०) उधार, सगाई।
मँगरा दे० (पु०) ओलती, छाँद का सिर, खपड़ा।
मँगवाना (क्रि०) मँगाना, पास लाने के लिये कहना।
मँगुला (पु०) माला गूथना।
मँजीरा (पु०) एक प्रकार की झाँझ।
मँडुआ (पु०) घास विशेष।
मँढ़ना (क्रि०) ढकना, लगाना, छिपाना, ढोलक आदि पर चाम मढ़ना।
मइके दे० (पु०) माता के घर, नैहर, पीहर।
मइत्री तद्० (स्त्री०) दोस्ती, मित्रता, मैत्री, मुहब्बत।
मकड़ा दे० (पु०) कीट विशेष, जाल का कीड़ा।
मकड़ना दे० (क्रि०) टेढ़ा चलना, जी चुराना, जी छिपाना।
मकड़ी दे० (स्त्री०) कीट विशेष, छोटा मकड़ा।
मकर तत्० (पु०) जल जन्तु विशेष, दशम राशि, कामदेव की ध्वजा का चिन्ह, कुबेर का धन विशेष, माघ का महीना, फरेब, पगलापन, मगरापन। (दे०) छल, कपट, धोखा—केतु (पु०) कामदेव। —ध्वज (पु०) कामदेव, रस सिन्दूर विशेष, कर्पूरोदयरस।
मकरन्द तत्० (पु०) पराग, पुष्प रस, पुष्पासव,
मकराक्ष तत्० (पु०) राक्षस विशेष, यह रावण के सेनापति खर राक्षस का पुत्र था, यह स्वयं भी रावण का सेनापति था। इसको रामचन्द्रजी ने मारा था।
मकराकृत (पु०) मकर के समान आकार का कान में पहनने का गहना विशेष।
मकराना दे० (पु०) एक स्थान का नाम, जहाँ श्वेत पत्थर निकलता था। यह स्थान मारवाड़ में है।
मकरिन (पु०) समुद्र, सागर।
मकरी दे० (स्त्री०) मगरी, मगर की मादा, मीन, जाल लगाने वाली मकड़ी, एक रोग, फ्रांसेन।
मकरोना दे० (क्रि०) भिगाना, गीला करना, ओदा करना, आर्द्र करना।
मकुट तत्० (पु०) मुकुट, मौर, सिरपेच, किरीट।
मकुर (पु०) आरसी, दर्पण, कचनार का पुष्प।
मकोड़ा दे० (पु०) कीड़ा, चीउँटा, पिपड़ा।
मकोय दे० (पु०) एक वृक्ष और उस का फल।
मक्खन दे० (पु०) नैनू, नवनीत, माखन।
मक्खी दे० (स्त्री०) मच्छी, मक्षिका, माखी।

मख तद्० (पु०) यज्ञ, क्रतु, याग।
मखन दे० (पु०) माखन, मक्खन, नैनू।
मखना दे० (पु०) हाथी विशेष, छोटा हाथी।
मखनिया दे० (पु०) माखन बेचने वाला।—दूध दे० (पु०) मक्खन निकाला हुआ दूध।
मखाना दे० (पु०) फल विशेष, औषध विशेष।
मखी दे० (स्त्री०) मक्खी, मक्षिका।
मग तद्० (पु०) मार्ग, डगर, बाट, राह, पैंडा।
मगध (पु०) संयुक्त प्रान्त और बंगाल की सीमाओं के बीच का देश, बिहार का दक्षिणी प्रान्त मगध कहलाता है, बंदी, भाट।
मगधेश्वर (पु०) मगध का राजा, जरासन्ध।
मगन दे० (वि०) आनन्दित, हर्षित, प्रफुल्ल।—ता (स्त्री०) हर्ष, प्रसन्नता।
मगर तद्० (पु०) मकर, मच्छ, ग्राह, जल जन्तु [विशेष।
मगरमच्छ (वि०) मस्त, स्वतन्त्र।
मंगरा दे० (वि०) ढीठ, निर्लज्ज, धृष्ट, घमण्डी अहङ्कारी।
मगराई दे० (स्त्री०) ढिठाई, धृष्टता, मचलाहट।
मगरापन दे० (पु०) मचलाई, धृष्टता, घमण्ड।
मगरेला दे० (पु०) बीज विशेष।
मगसिर तद्० (पु०) मार्ग शीर्ष, अगहन महीना।
मगही (वि०) मगह का, बनारसी पान विशेष।
मगहैया दे० (पु०) मगध देशवासी।
मगरी (स्त्री०) मगर की मादा।
मगुरी (स्त्री०) मत्स्य विशेष।
मग्न तद्० (वि०) डूबा हुआ, लीन, तन्मय।
मघन दे० (पु०) महक, सुवास, सुगन्ध, उत्तम गन्ध।
मघवा तद्० (पु०) इन्द्र, देवराज, सुरपति देवताओं का अधिपति।
मघा तद्० (पु०) नक्षत्र विशेष, दसवाँ नक्षत्र।
मघोनी (स्त्री०) शची, इन्द्राणी।
मङ्गा दे० (पु०) माला, जप करने की माला, सुमिरनी।
मङ्गल तद्० (पु०) अभिप्रेत अर्थ की सिद्धि, कल्याण, शुभ, क्षेम, कुशल, ग्रह विशेष, तृतीयग्रह।—वार (पु०) भौमवार, मङ्गल का दिन, तीसरे ग्रह का दिन।—समाचार (पु०) अच्छा संवाद, शुभसंवाद।
मङ्गलाचरण तद्० (पु०) मङ्गल के लिये अनुष्ठान, मङ्गल कृत्य, ग्रन्थ के आदि में इष्टदेव की वन्दना।
मङ्गलाचार तद्० (पु०) मङ्गल, उत्सव।
मङ्गलामुखी तद्० (वि०) गवैया, गाने वाली, मङ्गल मनाने वाली, रण्डी।
मङ्गली तद्० (वि०) मङ्गल करने वाला, मङ्गलकारी, कल्याणदायक, जिसकी कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश स्थान में मङ्गल पड़ा हो, यह योग यदि पुरुष में पड़ा हो तो स्त्रीहन्ता योग कहा जाता है, और स्त्री में पड़ा हो तो पुरुषहन्ता।
मङ्गल्य (पु०) मसूर, जीरा, दही, सुवर्ण, सिन्दूर, पीपल, नारियल, सफेद चन्दन, गोरोचन, कैथ, बेल (स्त्री०) शाक विशेष।
मङ्गसिर तद्० (पु०) मार्गशीर्ष, अगहन का महीना।
मचक दे० (स्त्री०) गाँठ की पीड़ा, धीरे धीरे दर्द।
मचकना दे० (क्रि०) व्यथा होना, चर्राना, पीड़ा होना। [चलाना।
मचकाना दे० (क्रि०) मटकाना, झपकाना, आँख
मचना दे० (क्रि०) रचना, उठाना, होना, सम्पादन करना, किया जाना। [मचमच शब्द
मचमच दे० (अ०) चरचर, मरमर, ध्वनि विशेष,
मचमचाना दे० (क्रि०) मचमच करना, हिलाना, कँपाना, जिससे मचमच शब्द हो।
मचलना दे० (क्रि०) मटकना, घमंड करना, अभिमान करना, अहङ्कार करना, हठ करना, दुराग्रह करना। [हठ।
मचलपन दे० (पु०) मचलाहट, अभिमान, अहङ्कार,
मचला दे० (वि०) हठी, हठीला, अहङ्कारी, अभिमानी, घमंडी।
मचलाई (स्त्री०) देखो मँगराई। [बहाना करना।
मचलाना दे० (क्रि०) हठ करना, दुराग्रह करना,
मचलाहा दे० (वि०) हठीला, ढीठा, धृष्ट, घमंडी।
मचवा दे० (पु०) खाट का पाया, छोटा खटोला।
मचान (पु०) शिकार खेलने या खेत की रखवाली के लिये जो ऊँची बैठक बनाई जाती है उसे मचान कहते हैं। [आरम्भ करना।
मचाना दे० (क्रि०) करना, होने देना, बढ़ाना,
मचामच दे० (अ०) खटपट, खटाखट, मचामच।

मचिया दे० (स्त्री०) पीढ़ा, छोटी खाट, मोढ़ा।
मचोड़ना दे० (क्रि०) निचोड़ना, ऐंठना, गारना।
मच्छ तद्० (पु०) मछुआ, मत्स्य, मीन।
मच्छड़ दे० (पु०) मशक, मसा।
मच्छर दे० (पु०) मच्छड़।
मच्छी दे० (स्त्री०) घुमा, घुग्गा, मौठी, मौठिया।
मछन्दर दे० (पु०) चूहा। (वि०) मूर्ख, अनभिज्ञ, बड़ी मूँछ वाला।
मछली दे० (स्त्री०) मत्स्य, मच्छ, मीन।
मछुआ दे० (पु०) धीवर, कैवर्त, मछली पकड़ने वाला। [विशेष।
मजीठ दे० (पु०) रङ्गविशेष, लाल रङ्ग, औषधि
मजीत दे० (वि०) पुराना, सड़ा, निकम्मा।
मजीरा दे० (पु०) वाद्य विशेष, झाँझ।
मजूर दे० (पु०) सेवक, परिचारक, भृत्य, कामकाजी, दास, दैनिक वेतन पर काम करने वाला कारख़ाने में काम करने वाला।—ी (स्त्री०) दैनिक वेतन, मेहनताना।
मज्जक (पु०) स्नान करने वाला पुरुष।
मज्जन तद्० (पु०) स्नान, नहान, धो धो कर नहाना।
मज्जा तद्० (पु०) वैद्यक के सात धातु के अन्तर्गत धातु विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का गूदा।—सार (पु०) जायफल।
मज्जित (वि०) नहाया हुआ, डूबा हुआ।
मझला दे० (वि०) माध्यमिक, बीच का, मध्य का, मध्यम, मझोला, न बड़ा न छोटा, मध्यम क़द का।
मझारि या मझारी दे० (पु०) मध्य, मौंळ, बीच, धनार।
मझेली दे० (स्त्री०) मझोली, बहेली।
मझोला दे० (पु०) बीचला, मध्य का, मध्यम।
मझोली दे० (स्त्री०) एक प्रकार की छोटी गाड़ी, मझेली।
मञ्च तद्० (पु०) मचान, उच्चासन।
मञ्चा मचा दे० (पु०) खाट, चौका, सिंहासन।
मञ्जन, मंजन तद्० (पु०) मार्जन, माजन, दाँत धोने का द्रव्य, चूर्ण विशेष। [म फ्र करना।
मञ्जना, मंजना दे० (क्रि०) उजला होना, फलझाना,
मञ्जरी तद्० (स्त्री०) बौर, गुच्छ, कली, कोंपा।
मञ्जार तद्० (पु०) बिलाव, बिडाल, बिल्ला।
मञ्जु, मञ्जुल तद्० (वि०) सुन्दर, मनोहर, रमणीय मनोज्ञ, अभीप्सित, इष्ट।
मञ्जूषा तद्० (स्त्री०) पेटारी, पिटारी, सन्दूकची, छोटा सन्दूक, संस्कृत व्याकरण के एक ग्रन्थ का नाम। [हावभाव।
मटक दे० (स्त्री०) चोचला, नख़रा, नखरा,
मटकन, मटकाना दे० (क्रि०) आँख घुमाना, आँख चमकाना, झाँकना, ताकना। (पु०) पुरवा, मिट्टी का छोटा बरतन।
मटका दे० (पु०) बड़ी गगरी। [कटाक्ष करना।
मटकाना दे० (क्रि०) आँख घुमाना, आँख चमकाना,
मटकी दे० (स्त्री०) मिट्टी का छोटा घड़ा, गगरी।
मटकोठा दे० (पु०) मिट्टी का बना घर।
मटर दे० (पु०) एक अन्न का नाम। [मटर।
मटरा दे० (पु०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, बड़ा
मटरी दे० (स्त्री०) छोटा मटर, छीमी।
मटियाना दे० (क्रि०) माटी लगाना, माटी घुपड़ना, सड़ना, चुप हो जाना।
मटियारा दे० (पु०) उपजाऊ खेत, वो खेत जोता जाता है, जिसमें मट्टी हो।
मटियाव दे० (पु०) उपेक्षा, उदासीनता प्रदर्शन, आनाकानी सहन।
मट्टी दे० (स्त्री०) माटी, मृत्तिका, मिट्टी, निर्जीव शरीर।—करना (वा०) नाश करना, बिगाड़ना, ख़राब करना।—खाना (वा०) मांस खाना, दुःख पहुँचाना, पीड़ा देना।—डालना (वा०) तोपना, गाड़ना, झगड़ा मिटाना, दोष छिपाना।—देना (वा०) मुर्दा गाड़ना, मुर्दा दफन करना, तोपना, छिपाना, किसी का छिद्र प्रकाशित नहीं होने देना।—पर लड़ना (वा०) भूमि के लिये झगड़ना, व्यर्थ लड़ना, छोटी सी बात के लिये लड़ना।—में मिलना (वा०) बेकार होना, ख़राब होना, नष्ट होना, बरबाद होना।—होना (वा०) निर्बल होना, सत्यानाश होना, बिना काम का होना, बेकार होना।
मट्टुका दे० (पु०) मटका, बड़ी गगरी।
मट्ठा दे० (पु०) घोंघ, मठा, तक्र।

मठ तद्० (पु०) छात्रावास, छात्रों के रहने का स्थान, संन्यासी साधुओं का घर, पाठशाला, देवागार।

मठर (पु०) ऋषि विशेष। [पकवान।

मठड़ी दे० (स्त्री०) मठरी, एक प्रकार का निमकीन

मठरी दे० (स्त्री०) "मठड़ी"।

मठा दे० (पु०) मट्ठा, मही, घोल, तक्र। (वि०) ढीला, शिथिल, आलसी।

मठार (पु०) घी का मैल।

मठोर दे० (पु०) मटका, माँट, मटकना।

मड़वा दे० (पु०) यज्ञस्तम्भ, वह लकड़ी का खंभा जिसके पास विवाह का कृत्य पूरा किया जाता है।

मड़ियाना दे० (क्रि०) चिपकाना, जमाना।

मड़ुआ दे० (पु०) एक अन्न का नाम।

मड़ोड़ दे० (पु०) ऐंठ, पेट का एक रोग।

मड़ोड़ना दे० (क्रि०) ऐंठना, बल देना।

मड़ोड़ा दे० (पु०) ऐंठन, मरोड़ा, शूल की बीमारी।

मढ़न दे० (स्त्री०) आवरण, अस्तर, डाक्स, खोल।

मढ़ना दे० (क्रि०) सौंपना, आवरण करना, छिपा देना, कपड़ा चढ़ाना।

मढ़ा दे० (पु०) कोठा, बड़ी कोठरी।

मढ़ी दे० (स्त्री०) कुटी, झोंपड़ी, मण्डप।

मढ़ैया दे० (स्त्री०) छोटा छप्पर, बहुत छोटी झोंपड़ी।

मणि तद्० (पु०) पत्थर विशेष, मुक्ता आदि रत्न, नग।—कर्णिका (स्त्री०) काशी के एक तीर्थ का नाम।—कार (पु०) मणियुक्त अलङ्कार आदि बनाने वाला जौहरी, न्याय के चिन्तामणि नामक ग्रन्थ का कर्ता।—ग्रीव (पु०) धनाधिपति कुवेर के पुत्र का नाम।—पूर (पु०) षट्चक्र के अन्तर्गत नाभिचक्र स्थित तीसरा चक्र।—बन्ध (पु०) कलाई, पहुँचा।—मण्डप (पु०) रत्नमय गृह।—मय (वि०) मणि द्वारा निर्मित, प्रमुख रत्न युक्त।—माला (स्त्री०) मणिमय हार, मणि की माला, दन्तक्षत विशेष, लक्ष्मी, दीप्ति।—हार (पु०) देखो मणिमाला।

मणियान तद्० (पु०) कुवेर के एक कर्मचारी का नाम, एक बार इसने अज्ञान से महर्षि अगस्त्य के सिर पर थूक दिया। महर्षि ने मनुष्य द्वारा मारे जाने का इसको शाप दिया। गन्धमादन पर्वत पर जब यह रहता था उसी समय सुवर्ण कमल लेने भीमसेन वहाँ गये और उन्हीं के हाथ से यह मारा गया।

मणियाँ या मनिया दे० (स्त्री०) माला का दाना।

मणियार दे० (पु०) मनिहार, चूड़िहार, चूड़ी वाला, चूड़ी बनाने और बेचने वाला।

मण्ड तद्० (पु०) माँड़, जूस।

मण्डन तद्० (पु०) भूषण, अलङ्कार, गहना, सजने की वस्तु।

मण्डप तद्० (पु०) जन विश्रामगृह, तृणादि निर्मित देवगृह, मड़वा, ब्याह के लिये बनाया हुआ गृह।

मण्डल तद्० (पु०) चन्द्र सूर्य के बाहर की परिधि, परिवेष, गोल चक्र, संघात, समूह, सैनिकों की स्थिति विशेष, व्याघ्रनख नामक गन्ध द्रव्य, कुत्ता, नगरों का प्रधान नगर, जनपद, जिला, सूबा।

मण्डलाकार तद्० (वि०) गोलाकार, वर्तुलाकार।

मण्डलाधीश तद्० (पु०) मण्डलेश्वर, मण्डलाध्यक्ष।

मण्डलाना, मंडलाना दे० (क्रि०) घूमना, फिरना, चक्कर काट कर घूमना।

मण्डलिया दे० (पु०) कपोत विशेष।

मण्डली तद्० (स्त्री०) समूह, सभा, जथा, यूथ।—क (पु०) दस हजार की आय वाला।

मण्ड्वा, मँड़वा दे० (पु०) मण्डप, कुञ्ज, घेरा, बैठक, तृण निर्मित देवगृह।

मण्डवी, मँड़वी दे० (स्त्री०) घास विशेष।

मण्डा, मंडा दे० (पु०) पेड़ा, दूध की मिठाई

मण्डित तद्० (वि०) भूषित, अलंकृत, देदी अदित, शोभित, शृङ्गारित।

मण्डियाना, मँडियाना दे० (क्रि०) गेहूँ लगाना, कलफ करना, कलफ चढ़ाना।

मण्डी, मंडी दे० (स्त्री०) हाट, बाजार, अन्न आदि बिकने का स्थान, गोला, गञ्ज।

मण्डूक तद्० (पु०) मेंढ़क, बेंग, मेढ़क, मुनि विशेष।

मण्डूकी (स्त्री०) लज्जा, लज्जमा की, मेंढ़क की मादा, मेढ़की, निर्गुण्डी।

मत तत्० (पु०) अभिप्राय, सिद्धान्त, आशय, रीति, दव, धर्म, धर्म या शास्त्र का मन्तव्य, विचार, पन्थ, धर्मपन्थ।—मतान्तर (पु०) अनेक मत। —विरोधी (पु०) धर्मविरोधी, अधर्मी।—ाव लम्बी (वि०) मताश्रयी, धर्मानुयायी।

मतवारे दे० (पु०) मत्त, उन्मत्त, दीवाना, पागल, अहङ्कारी, शराबी।

मतङ्ग तत्० (पु०) हाथी, हस्ति, गज, करी, ऋष्यमूक पर्वत वासी, एक मुनि, वानर राज बालि ने जब दुन्दुभि नामक असुर को मार कर फेंका तब उसके शरीर के रुधिर का छींटा मतङ्ग मुनि के शरीर पर पड़ा। इससे क्रुद्ध होकर मुनि ने बालि को शाप दिया कि ऋष्यमूक पर्वत पर आने से बालि की मृत्यु होगी। तभी से वह ऋष्यमूक पर्वत पर नहीं आता था। इससे जब सुग्रीव किष्किन्धा से निकाले गये तब बालि के भय से इसी पर्वत पर रहना उन्होंने उत्तम समझा।

मतना दे० (पु०) छल का एक भेद।

मतभेद तत्० (पु०) अभिप्राय विरुद्ध सिद्धान्त।

मतमतान्तर (वि०) अन्य मज़हब।

मतराना दे० (क्रि०) मनाना, समझाना, बुझाना, जताना।

मतलाना दे० (क्रि०) जी मिचलाना, जी मथना, जी मचलाना।

मतवाला दे० (वि०) उन्मत्त, माता, मदमाता, अहङ्कारी।

मतविरुद्ध (वि०) धर्म के विपरीत।

मतहीन तत्० (वि०) मतिहीन, निर्बुद्धि बुद्धिहीन।

मता दे० (वि०) उपदेश, परामर्श, विचार, सम्मति, सलाह।—न्तर (पु०) भिन्नमत, विरुद्ध सम्मति।—वलम्बी (पु०) मताश्रयी, मत पर चलने वाला।

मति तत्० (स्त्री०) बुद्धि, मेधा, मनीषा, धी।—धीर (वि०) दृढ़ बुद्धि।—भ्रम (पु०) भूल, बुद्धि विपर्यय।—मन्द (वि०) कमअक्ल, मन्द बुद्धि।—मान् (पु०) चतुर, बुद्धिमान, विज्ञ। —हीन—(वि०) नासमझ, मूर्ख।

मतिज्ञ (वि०) बड़ा बुद्धिमान, महाचतुर।

मत्त तत्० (वि०) उन्मत्त मतवाला, पागल।

मत्य (पु०) मछली। [को सहता न सहना।

मत्सर तत्० (पु०) द्वेष, डाह, ईर्ष्या, जलन, दूसरे

मत्सरता तत्० (स्त्री०) द्वेष, रिसकुटिया।

मत्स्य तत्० (पु०) जल जन्तु विशेष, मांस, मछली, मीन, पुराण विशेष, भगवान का प्रथम अवतार, विराट् देश।—गन्धा (स्त्री०) मत्स्योदरी, व्यास की माता।—ाण्ड (पु०) मछली का अंडा। —विन्ना (स्त्री०) कुटकी, औषधि विशेष।

मथन तत्० (पु०) बिलोना, खोवन।

मथना दे० (क्रि०) महना, बिलोना, घी निकालना।

मथनिया दे० (स्त्री०) दधि मथने की बनी हुई विशेष रूप की लकड़ी।

मथनी दे० (स्त्री०) मथानी, मथनिया।

मथा दे० (पु०) माथा, मस्तक, कपाल, सिर।

मथानी दे० (स्त्री०) दही महने की हँड़िया।

मथित तत्० (वि०) मथा हुआ, बिलोया हुआ।

मथुरा तत्० (स्त्री०) नगर विशेष, सप्तपुरियों के अन्तर्गत पुरी विशेष, श्रीकृष्ण का जन्म स्थान, हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ। [के वासी।

मथुरिया तत्० (पु०) माथुर, चौबे, ब्राह्मण, मथुरा

मथुरेश (पु०) श्रीकृष्णचन्द्र

मथौर दे० (पु०) चन्दा, बिहरी, चिट्ठा।

मथौरा दे० (पु०) सूरजमुखी छाता।

मद तत्० (पु०) गर्व, मत्तता, मोह, मद्य, मादक वस्तु।—माता (वि०) मतवाला, उन्मत्त, अहङ्कारी।

मदक (पु०) अफीम से बनी नशीली वस्तु।

मदकट (पु०) चीनी, खाँड़।

मदन तत्० (पु०) कामदेव, वसन्त ऋतु, धतूरे का वृक्ष।—गोपाल (पु०) श्रीकृष्ण।—चतुर्दशी (स्त्री०) चैत्रशुक्ला १४।—पाठक (पु०) कोयल।—बाण (पु०) कामदेव का बाण, एक फूल का नाम।—मोहन (पु०) श्रीकृष्ण। —ललित (पु०) छन्द विशेष।

मदार दे० (पु०) अर्क वृक्ष, आकवन का पेड़।

मदारी दे० (पु०) बाजीगर, इन्द्रजाली, साँप वाला, मक्कर।

मदालस (पु०) आलसी ।
मदिक दे० (पु०) अभिमानी, अहङ्कारी, घमंडी ।
मदिरा तद्० (स्त्री०) सुरा, दारू, मद्य, आसव ।
मदीय (वि०) मेरा, हमारा । [घमंडी
मदोन्मत्त (वि०) मदमाता, गर्वीला, अभिमानी,
मद्गुर तद्० (पु०) अन्न विशेष, मूँग ।
मद्गु दे० (पु०) मत्स्य विशेष, एक प्रकार की मछली, मछली की एक जाति ।
मद्य तद्० (पु०) सुरा, मदिरा, मद, दारू, शराब । —प (पु०) मद्यपी, शराबी, मद्य पीने वाला ।
मद्र (पु०) मारवाड़, खुशी, हर्ष ।
मद्रक (वि०) मारवाड़ी, मद्रसुता । (स्त्री०) माद्री ।
मधु तद्० (पु०) मद्य, मदिरा, पुष्परस, शहद, चैत्र महीना ।—कर (पु०) भ्रमर, भौंरा ।—करी (स्त्री०) मधुकरी, अतिथिभिक्षा ।—कोप (पु०) शहद का छाता ।—च्छदा (स्त्री०) मोर की शिखा, चूटी ।—प (पु०) भँवरा, भ्रमर, अलि । —पर्क (पु०) दधि युक्त मधु, दही और शहद । पोडशोपचार पूजा का छठवाँ उपचार ।—मास (पु०) चैत्र, चैत का महीना ।
मधुप तद्० (पु०) मधुपान करने वाला, भौंरा, फूलों का रस पीने वाला ।
मधुपर्णी दे० (पु०) पक्कफल, रसयुक्त फल ।
मधुपुरी (स्त्री०) मथुरा नगरी ।
मधुमल तद्० (पु०) मोम ।
मधुपुष्प (पु०) महुआ ।
मधुमाखी (स्त्री०) शहद की मक्खी ।
मधुमात दे० (पु०) रागिणी विशेष ।
मधुर तद्० (पु०) मीठा, सुमिष्ट ।—ता (स्त्री०) मिठास ।—सा (स्त्री०) दाख, अंगूर ।
मधुरी दे० (स्त्री०) मिठी, रसीली ।
मधुकरी मधूकरी तद्० (स्त्री०) ब्रह्मचारियों की भिक्षा, वृत्ति विशेष, मधुकर की वृत्ति ।
मधुव्रत (पु०)भौंरा, भ्रमर ।
मध्य तद्० (वि०) अन्तराल, बीच, माँझ, मझार । —भाग (पु०) मध्यस्थान, बीचो बीच ।— दिवस (पु०) मध्याह्न, दोपहर ।—देश (पु०) मध्य का देश, बीच का देश ।—लोक (पु०) मनुष्य लोक, मर्त्यलोक, पृथिवी ।—वर्ती (स्त्री०) मधवैया, बिचवई ।—स्थ (पु०) बीचवाला, निर्णय कर्त्ता ।—स्थल (पु०) कटी, कमर, बीच का स्थान ।
मध्यम तद्० (पु०) स्वर विशेष, राग विशेष, उपपत्ति विशेष, मध्य देश, ग्रहों की सामयिक संज्ञा, मध्य में उत्पन्न ।—पाण्डव (पु०) अर्जुन, धनञ्जय, सव्यसाची ।
मध्यमा तद्० (स्त्री०) दृष्टरजस्का नारी, अँगुलि विशेष, नायिका विशेष यथा—दोहा ।—
" प्रिय सों हित तें हित करैं, अनहित कीने मान ।
ताहि मध्यमा कहत हैं, कवि मतिराम सुजान ॥
—रसराज ।
मध्याह्न तद्० (पु०) दिन का मध्य, दोपहर ।
मन तद्० (पु०) चित्त, हृदय । (दे०) परिमाण विशेष, चालीस सेर की तौल ।—का दे० (पु०) जपमाला की गुरिया, मणियाँ, गले की हड्डी ।—कामना तद्० (स्त्री०) अभिलाष, इच्छा, मनोरथ ।—मारे (पु०) उदास, सुस्त, चिन्तायुक्त ।
मनई दे० (स्त्री०) मनुष्य, नर । [वान्, समर्थ ।
मनगढ़ा दे० (वि०) बली, पराक्रम, मकवाला, बल
मनखरा दे० (पु०) मनफटा, चित्त फटा ।
मनघटा दे० (पु०) कूप की जगत, चौतरा ।
मनचला दे० (वि०) उत्साही, साहसी, रसिक ।
मनचोर (वि०) दिल चुराने वाला, दिल लुभानेवाला ।
मनत दे० (पु०) मनौती स्वीकार, मानना ।
मनन तद्० (पु०) चिन्तन, स्मरण, ध्यान, जानी हुई बात का स्मरण करना ।
मननशक्ति (स्त्री०) विचारने की शक्ति ।
मनमाना (वि०) मनचीता, मनचाहा ।
मनभावन दे० (वि०) सुन्दर, सुहावना, मनोहर ।
मनमथ तद्० (पु०) मन्मथ, कामदेव, मदन ।
मनमुटाव दे० (पु०) अनबन, विरसता । [मनोज्ञ ।
मनमोहन तद्० (वि०) मनभावन, मनोहर, सुन्दर,
मनमौज दे० (पु०) स्वच्छन्दता, यथेच्छाचारिता ।
मनसा दे० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाष, मनोरथ, मन करके, मन के द्वारा, राय, सम्मति ।

मनसिज तद्० (पु०) कामदेव, कन्दर्प, अनङ्ग।
मनसेधू या मनसेरू दे० (पु०) मानुष, मनुष्य, मानव। [की पीड़ा, हृदय की पीड़ा।
मनस्ताप तद्० (पु०) मन-कष्ट, मानसिक दुःख, मन
मनोहरण तद्० (वि०) चित्तचोर, मनोहर।
मनहारी तद्० (वि०) मनोहारी, मन को हरण करने वाला, चित्तचोर।
मनहुँ दे० (अ०) मानो, उपमावोधक, उत्प्रेक्षालङ्कार बोधक, सादृश्यार्थक, समानता बोधक।
मनाग दे० (अ०) थोड़ा सा, अल्प, कुछ, मन करके।
मनाना दे० (क्रि०) प्रसादन करना, प्रसन्न करना, मनौती करना।
मनार्थ तद्० (वि०) विचारार्थ।
मनि (पु०) मणि, रत्न।
मनित (वि०) अवगत, जाना हुआ, विदित।
मनिया तद्० (पु०) मणिका, गुरिया, मनका।
मनियारा दे० (पु०) मणिधर, जौहरी, मणिवाला साँप।
मनिहार दे० (पु०) चुरिहार, चूड़ी वाला।
मनिहारिन, मनिहारी दे० (स्त्री०) मनिहारे की स्त्री।
मनीक (स्त्री०) काजल, सुरमा, अञ्जन।
मनीषा (स्त्री०) स्तवन, बुद्धि, प्रज्ञा।
मनीषी (पु०) बुद्धिमान, पण्डित।
मनु तद्०(अ०) मानो, जैसे, (पु०)ब्रह्मा का पुत्र और मनुष्यों का आदिपुरुष प्रत्येक कल्प में चौदह मनुओं का आविर्भाव होता है, इनके नाम ये हैं। स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि और इन्द्रसावर्णि। इस समय सप्तम मनु का अधिकार चलता है। ८ म० से १४ तक मनुओं के अधिकार पीछे आवेंगे। मत्स्य पुराण में मनुओं के नाम इनसे भिन्न लिखे गये हैं।
मनुज तद्० (पु०) मनुष्य, मनु की सन्तति, आदमी।
मनुष्य तद्० (पु०) नर, मानव, मर्त्य, मनुज।—ता या त्व (पु०) मनुष्य का धर्म, मनुष्यपन।
मनुसाई (स्त्री०) आदमीपन, इंसानियत।
मनुहार दे० (स्त्री०) सुन्दरी, मोहनी। (पु०) आदर,
मनुवा दे० (पु०) मन, जिगर, रूई।
मनौं, मानौं दे० (अ०) सादृश्यार्थक, समानार्थक।
मनोज्ञ तद्० (वि०) सुन्दर, मनोहर, रमणीय, मन-भावन।
मनोनीत तद्० (वि०) चाहीता, ईप्सित, अभिलषित।
मनोभव, मनोभूत (पु०) कामदेव, मन्मथ, अनङ्ग।
मनोयोग तद्० (पु०) अवधान, ध्यान। [चाह।
मनोरथ तद्० (पु०) इच्छा, कामना, वासना, अभि-
मनोरम तद्० (वि०) मनोज्ञ, मनोहर, सुघर, सुन्दर।
मनोरमा तद्० (स्त्री०) सरस्वती नदी की एक धारा, हैहयपति कार्तवीर्य की महारानी। परशुराम के साथ कार्तवीर्य का युद्ध आरम्भ होने के समय ही इन्होंने अपने पति का पराजय निश्चित करके योगावलम्बन से अपने प्राण छोड़ दिये।
मनोजोल्लास तद्० (पु०) मन की चञ्चलता, लहर, तरङ्ग, मानसिकभाव।
मनोहत तद्० (वि०) व्यग्र, अस्थिर।
मनोहर तद्० (वि०) सुन्दर, मनोज्ञ, सुघर, मन को हरने वाला। [मानने वाला।
मनौतिया दे० (पु०) प्रतिभू, जामिनदार, मनौती
मनौती दे० (स्त्री०) जामिन, जिम्मेदारी, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक सङ्कल्प।
मन्तव्य (पु०) मर्म, विचारणीय, राय। [उपदेश।
मन्त्र तद्० (पु०) मन्त्रणा, युक्ति, परामर्श, गुप्त
मन्त्रणा, मन्त्रणा तद्० (स्त्री०) एकान्त के कर्तव्य का अवधारण, युक्ति, परामर्श, सलाह, सम्मति।
मन्त्रित (वि०) मन्त्र द्वारा संस्कारित परामर्श, किया हुआ।
मन्त्री तद्० (वि०) सम्मतिदाता, परामर्शदाता।
मन्थज (पु०) मक्खन, नवनीत।
मन्थन तद्० (पु०) विलोड़न, मथन, महना।
मन्थनी, मंथनी दे० (स्त्री०) मथानी, महानी।
मन्थर (पु०) व्याघ, भेद।—रा (स्त्री०) कैकयी की दासी का नाम।
मन्द तद्० (वि०) धपकृष्ट, अधम, मूर्ख, स्वेच्छानु-वर्तीपन, अल्प, आलस्य, थोड़ा, शिथिल।

(स्त्री०) मूर्खता, शिथिलता, बुराई, अल्पता। —गामी (वि०) शनैःगमन कर्त्ता, धीरे धीरे चलने वाला।—मन्द (अ०) धीरे धीरे।
मन्दर तत्० (पु०) मन्थनपर्वत, मन्दरपर्वत, पारिजात वृक्ष,हार विशेष।—ा (पु०) बौना, नाटा, ठिगना।
मन्दा, मंदा तत्० (स्त्री०) संक्रान्ति विशेष, सस्ता, सस्ते दामों में वस्तु बेचने का समय, मृदु, अल्प, धीरा, कोमल, नम्र। [संक्रान्ति विशेष।
मन्दाकिनी तत्० (स्त्री०) स्वर्गगङ्गा, स्वर्णनदी,
मन्दाक्रान्ता तत्० (वि०) छन्द विशेष।
मन्दाग्नि तत्० (पु०) कफ द्वारा जठराग्नि का निस्तेज होना, अजीर्णता।
मन्दादर (वि०) अल्प आदर।
मन्दायु (वि०) थोड़ी आयु। [वृक्ष विशेष।
मन्दार तत्० (पु०) स्वर्गीय पाँच वृक्षों के अन्तर्गत
मन्दिर तत्० (पु०) भवन, गृह, देवालय, देवगृह।
मन्दिरा दे० (पु०) मजीरा, झाँझ, झाल।
मन्दोदरी (स्त्री०) छोटे पेट की, पतले पेट वाली, रावण की पटरानी।
मन्दोष्ण (पु०) कुनकुना, थोड़ा गरम।
मन्द्र (पु०) हाथी की चिंघाड़।
मन्नत दे० (स्त्री०) मनौती, मनन, स्वीकार।
मन्वन्तर तत्० (पु०) एक मनु का राज्य काल, एक मनु का समय। [तौलना।
मपना दे० (क्रि०) मापना, नापना, परिमाण करना,
मम तत्० (वि०) मेरा, हमारा।
ममता तत्० (स्त्री०) मोह, माया, स्नेह, प्रेम।
ममिया-ससुर दे० (पु०) पति का मामा।
ममिया-सास दे० (स्त्री०) पति की मामी।
ममेरा दे०(वि०)मामा के सम्बन्ध का, मामा सम्बन्धी।
ममोड़ा दे० (पु०) मरोरा, ऐंठन। [विशेष।
मय तत्० (पु०) दैत्य विशेष।—कज (पु०) पर्वत
मयङ्क दे० (पु०) चन्द्रमा, चाँद।
मयन दे० (पु०) कामदेव, मन्मथ, मदन।
मयना दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष, सारिका।
मया तत्० (स्त्री०) माया, ममता, मोह।
मयी दे० (स्त्री०) सरावन, हेंगा, एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे खेत बराबर किया जाता है।
मयु (पु०) किंपुर, हिरन। [प्रकाश।
मयूख तत्० (पु०) रश्मि, किरण, तेज, दीप्ति, ज्योति,
मयूर तत्० (पु०) पक्षी विशेष, शिखी, केकी।—क (पु०) तूतिया, लटजीरा।
मरक दे० (पु०) संक्रामक रोग, महामारी।
मरकचा दे० (पु०) घरेंडी, मचरा। [पन्ना।
मरकत तत्० (पु०) मणि विशेष, हरे रङ्ग का मणि,
मरकहा दे० (वि०) मरवैया, मारनेवाला।
मरखना दे० (वि०) मारने वाला (बैल, गाय)।
मरखपना दे० (क्रि०) विनष्ट होना, क्षय शेष होना, मर जाना, मर मिटना। [हुरपेटने वाला।
मरखहा या मरखाहा दे० (वि०) मारने वाला,
मरगजी दे० (वि०) मुरझाया हुआ, मूर्छित, यह शब्द सतसई में प्रयुक्त हुआ है।
मरघट (पु०) श्मशान, मुर्दाघाट, मुर्दा जलने का स्थान, शवदाह-स्थान। [होना।
मरजाना दे० (क्रि०) मरना, मरण होना, प्राण वियोग
मरजिया दे० (पु०) पनडुब्बा, नदी कूप आदि में डूब कर वस्तु निकालने वाला, मोती निकालने वाला, गोताख़ोर।
मरण तत्० (पु०) मृत्यु, मरण, प्राण वियोग, मौत। —प्राय (वि०) अधमरा, मृत प्राय, मरने के समीप। [होना।
मरना दे० (क्रि०) प्राण छूटना, मर जाना, मृत्यु
मरपच दे० (वि०) सड़ा, गला, गन्दा।
मरपचना दे० (क्रि०) अतिशय परिश्रम करना, मरना, बहुत दुःख सहना।
मरभुखा,मरभूखा दे० (वि०) बिन खाया, खाऊ, पेटू।
मरम तद्० (पु०) मर्म, आशय, रहस्य, तत्त्व।
मरमराना दे० (क्रि०) मरमर शब्द करना, थरथराना, मचमचाना।
मरवाना दे० (क्रि०) मरवा डालना, आज्ञा देकर हत्या करना, अनुमति देकर हत्या करना, किसी दूसरे के द्वारा मारने का कार्य कराना। [मारने वाला।
मरवैया दे० (वि०) मरनहार, मरणासन्न, मरणप्राय,
मराल तत्० (पु०) पक्षी विशेष, हंस, राजहंस, मेघ। —ी (स्त्री०) हंसी, हंस की मादा। [काली मिर्च।
मरिच तत्० (स्त्री०) कटु द्रव्य विशेष, गोल मरिच,

मरियल दे० (वि०) दुर्बल, दुबला, पतला, निर्बल।
मरी दे० (स्त्री०) मृत्यु रोग, संक्रामक रोग, मरक, महामारी।
मरीचि तत्० (स्त्री०) किरण, राशि, छ त्रसरेणु का परिमाण। (पु०) ब्रह्मा के पुत्र, मुनि विशेष, ये सप्तर्षियों में एक हैं।—माला (स्त्री०) सूर्य आदि का किरण समूह, दीप्ति समुदाय।—माली (पु०) सूर्य, चन्द्र। [में धन प्रत्यय।
मरीचिका तत्० (स्त्री०) मृगतृष्णा, सूर्य की किरणों
मरु तत्० (पु०) निर्जल देश, जल रहित देश विशेष, मारवाड़। [सुगन्धित होते हैं।
मरुआ दे० (पु०) एक पौधे का नाम, जिसके पत्ते
मरुत् तत्० (पु०) वायु, उनचास वायु।—पर्क आकाश, अन्तरिक्ष।—पथ (पु०) आकाश, गगन, अन्तरिक्ष।—पुत्र (पु०) भीमसेन, हनुमान।—फल (पु०) घनोपल, ओला।—सख (पु०) देवराज, इन्द्र, अग्नि, अनल।
मरुभूमि तत्० (स्त्री०) निर्जल देश, वृक्ष लता, तृणादि शून्य भूमि या देश, शुष्क देश।
मरोड़ दे० (स्त्री०) मड़ोड़, ऐंठ, बल, पेट का दर्द।
मरुस्थल (पु०) मरु भूमि।
मरोड़ी दे० (स्त्री०) ऐंठन।
मरीलि (पु०) मगर, नक्र।
मरोह दे० (पु०) छोह, स्नेह, प्रेम, प्यार, दुलार।
मर्कचा दे० (पु०) घरौंदी, सजरा।
मर्कट तत्० (पु०) वानर, कपि, कीश।
मर्कटी तत्० (स्त्री०) वानरी। [यावक, भाँड।
मर्कर (पु०) भृङ्गराज नामक वृक्ष विशेष। (स्त्री०)
मर्त्य तत्० (पु०) मरणधर्मा, मनुष्य, मनई, मानव, मनुज।—लोक (पु०) मनुष्य लोक, मरने का लोक, मृत्यु लोक, भूमण्डल।
मर्दक तत्० (पु०) पवाँर नामक पौधा। (वि०) मर्दन करने वाला, मलने वाला, मीसने वाला।
मर्दन तत्० (पु०) मानमर्दन, अङ्गचप्पी, मलन, रगड़न।
मर्दल तत्० (पु०) वाद्य विशेष, पटह।
मर्दित तत्० (वि०) चूर्णित, मला हुआ।
मर्दनिया दे० (पु०) नौकर, सेवक, शरीर में तेल लगाने की नौकरी करने वाला।
मर्म तत्० (पु०) मरम, रहस्य, भेद, अभिप्राय, आशय, जीवन स्थान।—ज्ञ (वि०) मर्मवेत्ता, रहस्यज्ञ, तात्पर्यज्ञाता।—वेत्ता (वि०) मर्मज्ञ, तात्पर्य ज्ञाता। [पत्ते का शब्द।
मर्मर तत्० (पु०) शब्द विशेष, ध्वनि विशेष, सूखे
मर्मरीक (पु०) दीन, दरिद्र, दुःखिया, गरीब।
मर्मी (पु०) भेदी, भेद जानने वाला।
मर्यादा तत्० (स्त्री०) मान, पत, प्रतिष्ठा, सीमा, देश।
मर्यादिक तत्० (पु०) मानी, सम्मानी।
मर्ष (पु०) क्षमा, शान्ति, बर्दाश्त।
मर्षण तत्० (पु०) तितिक्षा, क्षमा, सहन, शान्ति।
मल तत्० (पु०) मैल, विष्ठा, पाप, किट्ट, वात, पित्त, कफ आदि।—मल (पु०) वस्त्र विशेष, एक प्रकार का सूती बारीक कपड़ा।—मास (पु०) अधिमास, अधिक मास, लौंद, पुरुषोत्तम महीना।—राशि (पु०) कूड़े का ढेर।
मलकना दे० (क्रि०) मटकना, नख़रे से चलना, मटक कर चलना।
मलङ्गी, मलंगी दे० (पु०) जाति विशेष, जो नोन बनाने का काम करती है।
मलत दे० (वि०) मलता, घिसा, सिलपट।
मलन दे० (पु०) दलन, रगड़न, मर्दन।
मलना दे० (क्रि०) मींजना, मसलना, रगड़ना, मर्दन करना, रगड़ कर साफ़ करना।
मलवा दे० (पु०) मल, कूड़ा, मैल।
मलमेट दे० (पु०) उजाड़, सत्यानाश, नाश, विध्वंस।
मलय तत्० (पु०) पर्वत विशेष, दक्षिणाचल, चन्द्नाद्रि, देश विशेष, उपद्वीप विशेष।—ज (पु०) श्रीखण्ड चन्दन।—पवन (पु०) सुगन्ध वायु।
मलया तत्० (स्त्री०) पत्राक, त्रिवृता लता विशेष।—गिरि (पु०) पहाड़, जिस पर चन्दन उत्पन्न होता है, मलयाचल।
मलवाई दे० (स्त्री०) मलने की मजूरी।
मलाई दे० (स्त्री०) साढ़ी, दूध का सार।
मलाना दे० (क्रि०) मलवाना, मर्दन कराना, घिसाना।
मलार दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष।
मलिन तत्० (वि०) मैला, धुँधला, अस्वच्छ, साफ़ नहीं, उदास, कृष्णवर्ण, नित्य नैमित्तिक क्रिया

त्यागी, पापग्रस्त।—ता (स्त्री०) मालिन्य, विरसता, अप्रफुल्लता।—मुख (वि०) क्रूर, खल, म्लान वदन। (पु०) भूत प्रेत।
मलिनी तद्० (स्त्री०) रजस्वला स्त्री, ऋतुमती नारी।
मलिन्द (पु०) भ्रमर, भौंरा, अलि।
मलिम्लुच दे० (स्त्री०) मलमास, अधिकमास, अग्नि, तस्कर, चोर, पवन, वायु, हवा।
मलिया दे० (स्त्री०) काँच या लकड़ी का बना छोटा पात्र विशेष, जिसमें लगाने का तेल रखा जाता है।
मलीन तद्० (वि०) मलिन, असुन्दर, अस्वच्छ।—ता (स्त्री अशुद्धता।
मलूक (पु०) एक भाँति का कीड़ा।
मलेछ तद्० (पु०) म्लेच्छ, मैली जाति वाले, असभ्य, जङ्गली, वर्बर, संस्कृत के अतिरिक्त भाषा बोलने वाला, असंस्कृतज्ञ, वह जाति जिसमें चातुर्वर्ण्य व्यवस्था न हो।
मलेपञ्ज (वि०) दस वर्ष की उम्र से अधिक उम्र का घोड़ा। [(वि०) मलनेवाला।
मलैया दे० (स्त्री०) हाँड़ी, मिट्टी की छोटी गगरी,
मल्ल तद्० (पु०) बलवान, बाहुयोद्धा, पहलवान्, कुश्ती लड़ने वाला।—युद्ध (पु०) कुश्ती, पहलवानों की लड़ाई। [पुष्प विशेष।
मल्लक (पु०) दिया, दीपक, नारियल का बना पात्र,
मल्लारा तद्० (पु०) राग विशेष, दूसरा राग, छः रागों में का दूसरा राग।
मल्लारी तद्० (स्त्री०) रागिनी विशेष।
मल्लिक तद्० (पु०) हंस विशेष, शुक्ल हंस (दे०) उपाधि विशेष, गाने वालों की एक जाति।
मल्लिका तद्० (स्त्री०) पुष्प विशेष, एक बेला का फूल, पात्र विशेष, मृत्तिका पात्र, दोना।
मल्लूर तद्० (पु०) मालुर, वृक्ष विशेष, बेल, विल्व।
मवास दे० (पु०) शरण, आसरा, भरोसा, आस।
मशक तद्० (पु०) मच्छड़, मच्छर, मसा, डाँस।
मशहरी दे० (स्त्री०) मसेहरी, मच्छड़ वस्त्र, एक प्रकार का बना हुआ कपड़ा, जो मशों से बचने के लिए लगाया जाता है।
मष दे० (पु०) चुप, मौन, नीरव, निःशब्द, स्थिरता।—मारना (धा०) चुप रहना, मौन रहना।
मषि (स्त्री०) स्याही। [(पु०) मच्छर, मसा।
मसक दे० (स्त्री०) पुर, पुरवट, चमड़े का जल पात्र।
मसकना दे० (क्रि०) दबाना, फटना, टूटना, थोड़ा फट जाना, दरकना, दरक जाना।
मसकाना दे० (क्रि०) फड़वाना, दबवाना, दरकवाना।
मसकरी दे० (स्त्री०) दिल्लगी, हँसी, चुलबुलाहट।
मसविर्द दे० (स्त्री०) मसा, माँस वृद्धि।
मसहरी,मसेहरी दे० (स्त्री०) मशहरी। [जलते रहना।
मसमसाना दे० (क्रि०) दाँत पीसना, भीतर ही
मसलना दे० (क्रि०) कुचलना, मींजना।
मसा दे० (पु०) मसविर्द, इल्ला। [का स्थान।
मसान तद्० (पु०) श्मशान, मरघट, मुरदा जलाने
मसानिया दे० (पु०) डोम, डुमार। (गु०) श्मशानवासी, श्मशान पर रहने वाला।
मसिदानी तद्० (स्त्री०) मसिपात्र, दवात।
मसी तद्० (स्त्री०) स्याही, सियाही, कालो।
मसीना दे० (स्त्री०) अलसी, तीसी।
मसीपात्र (पु०) दवात।
मसुड़ा दे० (पु०) दाँतों के ऊपर का मांस।
मसूर दे० (पु०) अन्न विशेष, मसूर।
मसूरिया दे० (स्त्री०) सीतला, चेचक, माता।
मसे दे० (स्त्री०) मूछ, श्मश्रु। [दर्द होना।
मसोसना दे० (क्रि०) मरोड़ना, निचोड़ना, धीरे धीरे
मस्तक तद्० (पु०) माथा, सिर, कपाल।
मस्तूल दे० (पु०) नाव का डंडा, जिस पर पाल ताना जाता है। यह शब्द पोर्तुगाली भाषा के 'मस्तो' या "मस्तरो" शब्द से निकला है।
मस्याधार तद्० (पु०) मसीपात्र, दवात।
मस्सा दे० (पु०) इल्ला, मसा, माँस वृद्धि, डाँस, मच्छर। [दाम का, ऊँचे मोल का।
महँगा दे० (पु०) महर्घ, बहुत मूल्य का, अधिक
महँगी दे० (स्त्री०) अकाल, दुर्भिक्ष, दुःसमय।
मह (पु०) उत्सव, यज्ञ, तेज, रोशनी, भैंस।
महक दे० (स्त्री०) सुगन्ध, सुवास, गन्ध। [आना।
महकना दे० (क्रि०) बासना, गन्ध आना, सुवास
महकाना दे० (क्रि०) सुबाँना, बासना, बास देना
महकीला दे० (वि०) सुगन्धित, सुवासित, सुगन्धयुक्त।

महत् तद्० (वि०) श्रेष्ठ, बड़ा, मान्य, माननीय, पूज्य श्रद्धेय।
महतारी दे० (स्त्री०) माता, जननी, माँ।
महतिया दे० (पु०) चौधरी, देहातियों के लिये प्रतिष्ठा सूचक विशेषण, महतो। [जाति का प्रतिष्ठित।
महतो दे० (पु०) जाति विशेष, कोइरी, चौधरी,
महत्त्व तद्० (पु०) बड़प्पन, श्रेष्ठता, बड़ाई, प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा।
महत्तम (वि०) सब से बड़ा।
महत्तर (वि०) एक की अपेक्षा बड़ा।
महना दे० (क्रि०) मथना, बिलोना, विलोड़न करना।
महन्त, महंत तद्० (पु०) मठधीश, वैरागी वैष्णव साधुओं का प्रधान, मठाधीश। [महन्त की रीति।
महन्ताई, महंताई तद्० (स्त्री०) महन्त का काम
महन्ताना दे० (पु०) मजूरी, मेहनत का, पारिश्रमिक।
महर दे० (पु०) प्रधान, मुख्य, नेता। [पालकी आदि।
महरा दे० (पु०) कहार, धीमर, गोंड़, काम करने
महरी दे० (स्त्री०) महरा की स्त्री।
महर्लोक तद्० (पु०) लोक विशेष, भूर्लोक आदि सप्तलोक के अन्तर्गत चौथा लोक। [श्रेष्ठ ऋषि।
महर्षि तद्० (पु०) [महा+ऋषि] मन्त्रद्रष्टा ऋषि,
महा तद्० (वि०) बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, बहुत, महान।
—उक्षत, महोक्षत (पु०) कदम्ब वृक्ष, कदम का पेड़। —कन्द (पु०) लहसुन। —काय (पु०) शिव का द्वारपाल, नन्दीश्वर, हाथी (वि०) मोटा शरीर वाला, भारी। —काल (पु०) विष्णुस्वरूप, प्रलयद समय, शिव की मूर्ति विशेष, प्रथमगण विशेष। —काली (स्त्री०) दुर्गा, महाकाल की पत्नी। —कुम्भी (स्त्री०) कर्मफल। —कोढ़ (पु०) अतिशय कुष्ठ, अत्यन्त कुष्ठ रोगाक्रान्त। —खात (पु०) समुद्र की खाड़ी। —घोर (पु०) नरक विशेष, काकवासिधी, अत्यन्त भयानक, बहुत डरने वाला। —जन (पु०) साहूकार, सेठ। —जनी (स्त्री०) महाजन का काम, कोठीवाली, लेन देन का काम, व्यवहार। —जम्बू (पु०) जामुन, फल विशेष। —तम (पु०) माहात्म्य, उपकारिता, उपयोगिता, प्रसिद्ध, बड़ाई, अतिशय अन्धकार, अत्यन्त अंधेरा। —तल (पु०) पश्चिम तल, पाताल।
—तीर्थ (पु०) उत्तम तीर्थ, पुण्य तीर्थ, उत्तम क्षेत्र, पुण्यस्थान। —तेजा (वि०) प्रतापी, तेजस्वी, पराक्रमी, भाग्यवान्। —निद्रा (स्त्री०) मरण, मृत्यु, अधिक निद्रा, घोर नींद। —निशा (स्त्री०) अर्धरात्र, निशीथ। —नुभाव (वि०) [महा+अनुभाव] महाशय, प्रधान पुरुष, विशाल हृदय। —पद्म (पु०) सर्प विशेष, निधि विशेष। —पातक (पु०) पाप विशेष, ब्रह्महत्या सुरापान, गुरु स्त्री गमन आदि से उत्पन्न पाप। —पातकी (पु०) महापापी, अधर्मी, पतित। —पुरुष (पु०) श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम पुरुष, सुजान, सज्जन। —प्रभु (पु०) परमात्मा, परमेश्वर, चैतन्य देव, वल्लभाचार्य। —प्रलय (पु०) त्रिलोक का नाश, विश्व का ध्वंस, कल्पान्त, ब्रह्मा की आयु की समाप्ति। —प्रसाद (पु०) भगवान् जगदीश का निवेदित भात। —बली (पु०) बलवान्, पराक्रमी पराक्रमशाली। —भारत (पु०) इतिहास ग्रन्थ। —माया (स्त्री०) अनादि, अविद्या। —मारी दे० (स्त्री०) मरक, संक्रामक रोग, प्लेग। —राज (पु०) राजाधिराज, बड़ा राजा। —रानी (स्त्री०) महाराज की स्त्री। —राय (पु०) परमेश्वर, ब्राह्मण, सम्मानद्योतक, शब्द विशेष। —वट (पु०) पूस माघ की वर्षा। —वत (पु०) हस्तिपक, हाथीवान, महावत। —वर (पु०) रंग विशेष, लाल रङ्ग जिससे स्त्रियाँ पैर रङ्गती हैं। —विद्या (स्त्री०) दस महाकाली। (१) काली, (२) तारा, (३) षोडशी, (४) भुवनेश्वरी, (५) भैरवी, (६) छिन्नमस्ता, (७) धूमावती (८) बगला मुखी, (९) (१०) कमलात्मका। —वीर (पु०) शूर, सिंह, हनुमान, कोकिल। —शय (वि०) [महा+आशय] महानुभाव, उदारचेता, दाता, महापुरुष। —साहस (पु०) निष्फल, निर्भय। —श्वेता (स्त्री०) सरस्वती, कादम्बरी का एक पात्र, लता विशेष।
महात्मा तद्० (वि०) महाशय, महानुभाव, धार्मिक।
महान् तद्० (पु०) महत् तत्त्व, (वि०) बड़ा, श्रेष्ठ, श्लाघनीय, माननीय।
महानी दे० (स्त्री०) मथनी, मथानिया।

महिका (स्त्री०) कर्ज, रिन ।
महिदेव तद्० (पु०) ब्राह्मण, विप्र, द्विज ।
महिपाल (पु०) नृपति, राजा ।
महिमा तद्० (स्त्री०) श्लाघा, प्रशंसा, बड़ाई ।
महिला तद्० (स्त्री०) स्त्री, नारी, मालकइनी ।
महिष तद्० (पु०) भैंसा, पशु विशेष ।
महिषा तद्० (पु०) भैंसा, पशु विशेष, महीष ।
महिषी तद्० (स्त्री०) भैंसा, पटरानी, महारानी, बड़ी रानी। [स्वामी ।
महिषेस तद्० (पु०) यमराज, महिषासुर, भैंसे का
महिसुर तद्० (पु०) ब्राह्मण, भूसुर, चारवर्णों में प्रथम वर्ण ।
मही (स्त्री०) धरणी, धरती, पृथ्वी, दही, छाँछ । —तल (पु०) पृथ्वीतल, भूतल, भूमण्डल । —प (पु०) राजा, नरेश, भूप ।—पति (पु०) महीप, पृथिवी पति ।—भुज (पु०) राजा, नरेश । —भृत (पु०) राजा, पर्वत ।—रुह (पु०) वृक्ष, तरु, रूख ।—श (पु०) राजा, नृपति ।
महीना दे० (पु०) मासिक आय, महीने दिन की मजूरी । [फल, मधूक ।
महुआ दे० (पु०) स्वनामख्यात वृक्ष और उसका
महूरत तद्० (पु०)मुहूर्त, दो घड़ी, उत्तम समय ।
महेन्द्र तद्० (पु०) [महा+इन्द्र] प्रधान राजा, इन्द्र, देवराज ।—नगरी (स्त्री०) अमरावती ।
महेरी दे० (स्त्री०) महेर, खीर पायस ।
महेला दे० (पु०) पकाया लोबिया, घोड़े का एक प्रकार का भोजन ।
महेश दे० (पु०)[महा+ईश] महेश्वर, शिव, महादेव ।
महेश्वर (पु०) महादेव, शङ्कर ।—ी (स्त्री०) ईश्वरी, देवी, पार्वती, मारवाड़ी बनिये की जाति विशेष ।
महेष्वास (पु०) महाधनुर्धारी ।
महैला (स्त्री०) बड़ी इलायची ।
महोक्ष तद्० (पु०) [महा+उक्ष] बैल, साँड़, वृषभ ।
महाखा दे० (पु०) पक्षी विशेष ।
महोत्पल (पु०) कमल, पद्म ।
महोत्सव तद्० (पु०) [महा+उत्सव] बड़ा उत्सव, महापर्व ।
महोदधि (पु०) सागर, समुद्र ।
महोदय (पु०) महानुभाव, महाराज, कान्यकुब्ज देश, अहंकार ।
महोसा दे० (पु०) सहसन, तिल । [सम्भव औषधि ।
महौषध तद्० (पु०) सतौस । (वि०) उत्तम औषध,
मह्यौ दे० (पु०) छाँछ, तक्र, मही, मट्ठा ।
मा दे० (स्त्री०) माता, महतारी, जननी ।
माई दे० (स्त्री०)माता, मा, जननी ।
माई दे० (स्त्री०) मामा की स्त्री, इटावे की तरफ इसका प्रयोग होता है । [बीच ।
माँ दे० (स्त्री०) माता, महतारी । (अ०) में, मध्य,
माँग दे० (स्त्री०) केश विन्यास, याचना ।—चिरुनी (स्त्री०) पक्षी विशेष ।—ना (क्रि०) याचना, याञ्चा करना, चाहना ।—नी दे० (स्त्री०) वाग्दान देना, वचन लेना, मँगनी, सगाई ।—लेना दे० (या०) उधारलेना, याचना करना ।—दे० (स्त्री०) मँगनी, उधार ।
माँचा तद्० (पु०) मञ्च, पलङ्ग, खाट, खटवा ।
माँची दे० (स्त्री०) खटोला, खाटी ।
माँज दे० (पु०) पीब, बिगड़ा रक्त, सड़ा हुआ रुधिर ।
माँजना दे० (क्रि०) उजलाना, उजरा करना, साफ करना, स्वच्छ करना ।
माँझ दे० (अ०) मध्य, बीच, अन्तर ।
माँझत दे० (स्त्री०) ठाट, सज धज, शोभा ।
माँझा दे० (पु०) पतङ्ग उड़ाने का डोरा, बरसात का नया जल ।
माँझी दे० (पु०) नौका चलाने वाला, कर्णधार नाविक, मल्लाह, केवट ।
माँड़ दे० (पु०) चावल का उबालन, कलफ, मारवाड़ी राग विशेष ।
माँड़ना दे० (क्रि०) आटा को जल डाल कर मसलना ।
माँड़ा दे० (पु०) एक प्रकार की रोटी ।
माँड़ी दे० (स्त्री०) कलफ, लेई ।
माँढ़ा दे० (पु०) मण्डप, निर्मित देवगृह ।
माँद दे० (स्त्री०) गुफा, जन्तुओं के रहने का स्थान ।
माँस तद्० (पु०) मांस, पलल, आमिष ।
माँसल तद्० (वि०) स्थूल, मोटा ।
माँसाद तद्० (वि०) माँसभक्षी, माँसहारी, माँस खाने वाला ।

माँसाहारी तद्० (पु०) माँस खाने वाला, माँसभक्षक।
माँहि दे० (अ०) मध्य, में, बीच, अन्दर।
माकन्द तद्० (पु०) आम्र, आम, रसाल; सहकार।
माख दे० (पु०) हरिद, बड़ी जाति की मक्खी, रूट, रोष, क्रोध।—ी दे० (स्त्री०) मक्खी, मक्षिका। (क्रि०) क्रुद्ध भई, रिसियायी।
माखड़ा दे० (वि०) मूर्ख, निर्बुद्धि, अबोध, अज्ञान।
माखन दे० (पु०) नैनू, मक्खन।
मागध तद्० (वि०) मगध देश में उत्पन्न। (पु०) हाथ से बाजा बजाने वाले, भाट, चारण, नकीब, जो राजाओं के आगे स्तुति पाठ करते चलते हैं। वर्णसङ्कर जाति विशेष।
माघ तद्० (पु०) मास विशेष, वर्ष का दसवाँ महीना, संस्कृत का एक कवि, इनका बनाया हुआ महाकाव्य शिशुपाल वध है, कुछ लोग उसे माघ भी कहते हैं।
माछर दे० (पु०) मशक, मच्छड़, मसा, डाँस।
माछी दे० (स्त्री०) मक्खी, माखी, मक्षिका।
मा-जाई दे० (स्त्री०) एक माता से उत्पत्ति, सहोदरता, एक गर्भजात।
माजू दे० (पु०) फल विशेष, औषध विशेष, माजूफल।
माझधार तद्० (पु०) मध्यधार, बीच में, कठिन, कार्य का मध्य।
माटी दे० (स्त्री०) मिट्टी, मृत्तिका।
माठा दे० (पु०) छाँछ, मही।
माठू दे० (वि०) कौतुकी, ठठोल, हँसोड़ा।
माड़नी दे० (स्त्री०) माँबी, कच्छप, खेईं।
माड़िया दे० (वि०) दुबला, दुर्बल, पतला।
माड़ो दे० (पु०) मण्डप, मँड़वा।
माणवक तद्० (पु०) बालक, सोलह वर्ष की अवस्था तक का ब्राह्मणकुमार, बटु, उपनयन किया हुआ ब्राह्मण कुमार, बीस लड़ी का हार। [माणिक्य।
माणिक तद्० (पु०) रत्न विशेष, लाल रङ्ग का मणि,
माणिका (पु०) एक प्रकार का रत्न, मणि, जवाहर।
माणिक्य तद्० (पु०) रत्न विशेष, माणिक, मणि रत्न।
मात तद्० (स्त्री०) मात्रा, स्वर वर्ण, स्वर का आकार विशेष जो व्यञ्जन वर्णों के साथ मिलता है।

मातमपुर्सी दे० (स्त्री०) रिश्तई, किसी नातेदार व हितू के यहाँ किसी की मृत्यु होने पर समवेदन प्रकाशित करने जाना। [विशेष
मातङ्ग तद्० (पु०) हाथी, गज, हस्ति, करी, मुनी
मातङ्गी तद्० (स्त्री०) नवीं महाविद्या, इनके चार हाथ और तीन नेत्र हैं। मस्तक अर्धचन्द्र से सुशोभित है। ये श्याम वस्त्र पहनती हैं, तलवार, खड्ग पाश और अङ्कुश इनके चारों हाथों के अस्त्र हैं।
मातना दे० (क्रि०) मतवाला होना, पागल होना।
मातलि तद्० (पु०) देवराज इन्द्र का सारथी। इन की कन्या गुणकेशी सुमुख नामक नाग को ब्याही गयी थी।
माता तद्० (स्त्री०) जननी, मा।—मह (पु०) नाना, माता का बाप।—मही (स्त्री०) नानी, मा की मा।
मातु तद्० (स्त्री०) देखो माता।
मातुल तद्० (पु०) मामा, माता का भाई। [उन्मत्त
माते दे० हे मैया, हे माव। (गु०) मतवाले, बौराने,
मात्र तद्० (अ०) अवर, थोड़ा, किञ्चित, स्वल्प।
मात्रा तद्० (स्त्री०) परिमाण, मोवाद, रेखा, स्वर।
मात्सर्य तद्० (पु०) डाह, ईर्ष्या, जलन, दूसरों की अभिवृद्धि न सहना।
माथ या माथा दे० (पु०) मस्तक, ललाट, सिर, अग्रभाग, पेशानी।—ठनकना (वा०) अनिष्ट की आशङ्का करना, भीत होना, डरना।—रगड़ना (वा०) विनती करना, चिरौरी करना, नम्रतापूर्वक प्रार्थना।
माथी लेना दे० (वा०) समान बनाना, बराबर करना।
माथुर तद्० (पु०) ब्राह्मण विशेष, मथुरा के वासी ब्राह्मण, चौबे, चतुर्वेदी।
माथे पर चढ़ाना दे० (वा०) मुँह लगाना, ढीठ करना, आदर करना, अतिशय आदर करना, आवश्यकता से अधिक मानना।
मादक तद्० (पु०) उन्मादकारी द्रव्य, नशीली वस्तु। —ता (स्त्री०) नशा, अमल।
मादा दे० (स्त्री०) जानवरों का जोड़ा पूरा करने वाली, जानवरों की स्त्री स्थानीया।
माद्री तद्० (स्त्री०) राजा पाण्डु की रानी और मद्र

देश के राजा की कन्या। इसके गर्भ से अश्विनी-कुमार के औरस से नकुल और सहदेव उत्पन्न हुए थे। पाण्डु के मरने के अनन्तर ये भी पति के साथ मर गईं।

माधव तद्० (पु०) विष्णु का नामान्तर, मा लक्ष्मी को कहते हैं, उनके पति होने के कारण विष्णु का नाम माधव है। वसन्त ऋतु, वैसाख का महीना, किरातार्जुनीय महाकाव्य का विख्यात टीकाकार।

माधवाचार्य तद्० (पु०) वेदों के भाष्यकर्त्ता सायणाचार्य के बड़े भाई, खृष्टीय १४वीं सदी में दक्षिण की तुङ्गभद्रा नदी के तीरस्थ पम्पा नगरी में इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम मायण और माता का नाम श्रीमती था। ये विजयनगर के राजा बुक्कराय के कुलगुरु और प्रधान मन्त्री थे। इन्होंने भारतीतीर्थ के पास संन्यास ग्रहण किया था। १३२३ ई० में ये शृङ्गेरी मठ के अध्यक्ष बनाये गये। ६० वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हुई। इन्होंने पराशर संहिता का एक भाष्य लिखा है, उसी में अपना परिचय भी दिया है।

माधवी तद्० (स्त्री०) लता विशेष, वसन्ती लता।

माधुर्य तद्० (पु०) मधुरता, मीठापन, मीठास।

माध्वी तद्० (स्त्री०) मदिरा विशेष, महुवे का मद्य।

मानत तद्० (पु०) प्रतिष्ठा, आदर, सम्मान, यश, कीर्त्ति।

मानता दे० (पु०) पक्ष, प्रतिज्ञा, मनौती।

मानना दे० (क्रि०) पक्ष रखना, आदर करना, सम्मान करना, प्रेम करना।

माननीय तद्० (वि०) मान्य, श्रेष्ठ, पूज्य, श्लाघ्य।

मानव तद्० (पु०) मनुष्य, दनुज।

मानस तद्० (पु०) मन, हृदय, एक सरोवर का नाम, मन, करके।

मान सम्मान दे० (पु०) आदर, प्रतिष्ठा।

मानसिंह दे० (पु०) अम्बर के राजा भगवानदास का भतीजा, इनके पिता का नाम जगतसिंह था। भगवानदास ने इनको अपना दत्तक पुत्र बनाया था। भगवानदास के मरने के बाद मानसिंह अम्बर के राजा हुए। भगवानदास की बहिन सम्राट् अकबर से ब्याही गई थी और मानसिंह ने अपनी बहिन का ब्याह सलीम से किया था। सम्राट् के साथ वैवाहिक सम्बन्ध होने के कारण इनको राज्य का उच्चपद मिला था, इन्होंने पठानों के हाथ से बङ्गदेश को छीन कर मुगल सम्राट् के अधीन किया। काबुल पर भी इन्होंने मुग़ल सम्राट् की विजय पताका फहराई थी, परन्तु रणस्थल में महाराणा प्रताप से मिल कर इन्हें अपने स्वरूप का ज्ञान हो गया था।

मानहुँ, मानहुँ दे० (अ०) मानो, समान, सदृश। (क्रि०) मानो, जानो, समझो।

मानिक जोड़ दे० (पु०) पक्षी विशेष।

मानिनी तद्० (स्त्री) मानवती, अभिमानवती स्त्री।

मानी तद्० (वि०) अभिमानी, अहङ्कारी।

मानुष तद्० (पु०) मनुष्य, मानव।

मानुष्य तद्० (पु०) मनुष्यत्व, पौरुष।

मानो दे० (अ०) इव, यथा, उपमार्थक। (क्रि०) आदर करो, जानो, समझो बूझो। (पु०) बिल्ली, बिलाव।

मान्य तद्० (पु०) मानने योग्य, सत्कार योग्य, प्रतिष्ठा के योग्य, आदर योग्य, पूजनीय, पूज्य, माननीय।—ता तद्० (स्त्री०) पूजा, प्रतिष्ठा, सत्कार, सम्मान, मान।

माप दे० (पु०) परिमाण, माप।

मापना दे० (क्रि०) परिमाण करना, नापना, तौलना।

मा बाप दे० (पु०) माता पिता।

मामा दे० (पु०) मातुल, मा का भाई।

मामी दे० (पु०) मामा की स्त्री, मामा की पत्नी। —पीना (पु०) पक्षपात करना, पक्ष खींचना।

मामू दे० (पु०) मामा, मातुल, सर्प विशेष।

माया तद्० (स्त्री०) कृपा, मोह, दया, करुणा, अनुकम्पा, प्रेम, स्नेह, छल, कपट, धोखा, सम्पत्ति, धन, योगमाया, इन्द्रजाल विद्या।—कृत (पु०) संसार, इन्द्रजाली। (वि०) माया से निर्मित, माया द्वारा बनाया हुआ।—पति (पु०) परमात्मा, विष्णु, भगवान्।

मायावी तद्० (वि०) छली, कपटी, राक्षस विशेष।

मायिक तद्० (पु०) ऐन्द्रजालिक, नट, नज़रबन्द करके तमाशा करने वाला। [स्वामी, इन्द्रजाली।
मायी तद्० (पु०) माया करने वाला, माया का
मार तद्० (पु०) कामदेव, मन्मथ, मदन। (स्त्री०) प्रहार, लड़ाई।—कुटाई (स्त्री०) मारना, कूटना कुटना।—केश (पु०) मारक ग्रह, लग्न से दूसरे और सातवें घर का स्वामी।—खाना (धा०) पिटाना, पिटना।—गिराना (धा०) पछाड़ना, पटक देना।—पड़ना (धा०) मारखाना, पिटाना।—पीट (स्त्री०) मारामारी, लड़ाई भिड़ाई।—मारना (धा०) अपघात करना, आत्महत्या करना।—जाना (धा०) लूट जाना।—लेना (धा०) मारना, जीतना।—हटाना (धा०) जीत लेना, मारना और हटाना, मार कर हटा देना। [धर्मपद्धति।
मारग तद्० (पु०) मार्ग, पथ, बाट, डगर, धर्ममत,
मारना दे० (क्रि०) पीटना, बिगड़ना, वध करना।
मारात्मक तद्० (पु०) हिंसक, हिंस्र। होना।
मारा पड़ना दे० (धा०) मारा जाना, बड़ी हानि
मारामारा फिरना दे० (धा०) बिना काम इधर उधर फिरना, डाँवाडोल होना, कहीं आसरा न मिलना।
मारी तद्० (स्त्री०) मृत्यु, मौत, मृत्युदायक रोग।
मारीच तद्० (पु०) राक्षस विशेष, ताड़का राक्षसी का बेटा।
मारुत तद्० (पु०) हवा, वायु, बयार, पवन।—सुत (पु०) हनुमान और भीमसेन।
मारुतात्मज तद्० (पु०) वायुपुत्र, हनुमान।
मारू दे० (पु०) युद्ध वाद्य, लड़ाई का बाजा, एक प्रकार का गाना जो लड़ाई में गाया जाता है।
मारे दे० (अ०) कारण, निमित्त, से। यथा—भूख के मारे व्याकुल है, मारे भीड़ के कुछ नहीं सूझता है।
मार्ग तद्० (पु०) सड़क, बाट, राह, रास्ता, पथ।—ण (पु०) बाण, शर, तीर।
मार्गशीर्ष तद्० (पु०) अगहन, मगसिर, मृगशिर।
मार्जन तद्० (पु०) परिष्कार करना, शोधन।
मार्जार तद्० (पु०) बिल्ली, बिलाव। (स्त्री०) मार्जारी।

माल दे० (पु०) मल्ल, पट्ठा, पहलवान।
मालती तद्० (स्त्री०) पुष्प विशेष।
मालपुआ दे० (पु०) एक प्रकार की मीठी पूरी।
माला तद्० (स्त्री०) पुष्पहार, रत्न या सोने का हार।—कार (पु०) माली, बागवान, माला बनाने वाला।—दीपक (पु०) अर्थालङ्कार विशेष।
मालिन दे० (स्त्री०) मालाकार की स्त्री।
मालिन्य तद्० (वि०) मलिनता, मैलापन।
माली दे० (पु०) पुष्प व्यवसायी, मालाकार।
माल्य तद्० (पु०) माला, पुष्प की माल।
मावस तद्० (पु०) अमावस, अमावस्या।
मावा दे० (पु०) अण्डे की जर्दी, खोया, दूध का बना हुआ अत्यन्त गाढ़ा सार।
माशूक (पु०) प्यारा, प्रिय। (स्त्री०) माशूका।
माष तद्० (पु०) अन्न विशेष, उरद।
माषा, माशा दे० (पु०) मान विशेष, वज़न, आठ रत्ती की तौल।
माषपर्णी (स्त्री०) वन उर्द।
माषवटी (स्त्री०) उरद की बड़ी।
माषीण (पु०) खेत जिसमें उर्द उत्पन्न हो।
मास तद्० (पु०) महीना, तीस दिन।—का वार (पु०) महीने का अन्तिम दिन।
मासन (पु०) औषध विशेष।
मासर (पु०) मांड समुद्भव, मावट।
मासान्त तद्० (पु०) मास का पिछला दिन, मास की समाप्ति का दिन।
मासिक (वि०) माहवारी वेतन, मास सम्बन्धी।
मासी (स्त्री०) माँ की बहिन, मौसी।
मासुरी (स्त्री०) दाढ़ी, श्मश्रु।
मासूम (वि०) छोटा बच्चा, अल्प आयु।
मास्य (वि०) मास सम्बन्धीय, माहवारी।
माह (पु०) महीना, मास, माघ।
माहर (पु०) फल विशेष।
माहुर दे० (पु०) गरल, ज़हर, विष, हलाहल।
माहात्म्य (पु०) महत्व, बड़ाई, प्रभाव, प्रताप।
माहि (अ०) मध्य, बीच में, माँझ।
माहियत (स्त्री०) दशा, हालत।
माहिष (वि०) भैंस सम्बन्धी।

माहिष्य (पु०) वर्णसङ्करजाति, वेश्या के गर्भ में क्षत्रिय से पैदा हुई औलाद।
माही (पु०) मत्स्य, मछली।—गीर (पु०) मछुवा।
माहेन्द्र (पु०) शुभदयव, यज्ञ विशेष, इन्द्रध्वज, गाय। [वैश्य विशेष।
माहेश्वरी (स्त्री०) दुर्गादेवी, पार्वती, शिवरानी,
मिङ्गनी, मिंगनी दे० (स्त्री०) बकरी आदि की लेंड़ी।
मिचकारना दे० (क्रि०) निचोड़ना, गारना, संगालना, मर्वासना। [करना।
मिचना दे० (क्रि०) बन्द करना, मूँदना, आँखें बन्द
मिचराना दे० (क्रि०) धीरे धीरे खाना, अनिच्छा से खाना, अरुचि पूर्वक भोजन।
मिचलाना दे० (क्रि०) आँख मूँदना, मींचना, बन्द करना, वमन होने के पूर्व जी का बुरा होना, उबकी आना।
मिटना दे० (क्रि०) बिगड़ना, बनी हुई बात का बिगड़ना, लिखे अक्षरों का बिगड़ना।
मिटाना दे० (क्रि०) बिगाड़ना, नष्ट करना।
मिटिया दे० (स्त्री०) मिट्टी का बर्तन, घड़ा, गगरी।
मिट्टी दे० (स्त्री०) मिट्टी, मृत्तिका, माटी।
मिट्ठी दे० (स्त्री०) चूमा, चुम्बन।
मिठरी दे० (स्त्री०) मठरी, निमकीन पकवान विशेष।
मिठाई दे० (स्त्री०) मिष्टान्न, मिठास, मधुरता।
मिठास दे० (स्त्री०) मधुरता, मिष्टता, मिठाई।
मिठिया दे० (स्त्री०) चूमा, मिट्ठी।
मित तद्० (वि०) परिमित, नपा हुआ, तौला हुआ। —प्रद (गु०) परिमितदाता, हिसाब से देने वाला।—व्ययी (गु०) परिमित व्ययी, अल्प व्यय करने वाला, आय के अनुसार व्यय करने वाला।
मिताक्षरा तद्० (स्त्री०) स्मृति के एक ग्रन्थ का नाम। प्रसिद्ध याज्ञवल्क्य स्मृति की टीका।
मिति तद्० (स्त्री०) मान, परिमाण, अन्त, मर्याद।
मिती तद्० (स्त्री०) तिथि, हिन्दुस्तानी तारीख।
मित्र तद्० (पु०) बन्धु, सखा, सुहृद, मीत, शत्रु से भिन्न, हितू, स्नेही, प्रेमी।—ता (स्त्री०) बन्धुता, सख्य, परस्पर प्रीति।—द्रोही (गु०) मित्र का द्रोही, शत्रु दुष्ट, वैरी।—लाभ (पु०) सुहृत्प्राप्ति, बन्धुलाभ।—वर्ग (पु०) सुहृद्गण।

मित्राई तद्० (स्त्री०) मित्रता, बन्धुता।
मिथ तद्० (अ०) परस्पर, अन्योन्य, आपस में।
मिथिला तद्० (स्त्री०) नगरी विशेष, जनकराज की पुरी।—पति (पु०) मिथिला का राजा, जनक।
मिथिलेश तद्० (पु०) [मिथिला+ईश] राजा जनक।—कुमारी (पु०) जानकी, सीता।
मिथुन तद्० (पु०) जोड़ा, युग्म, स्त्रीपुरुष का जोड़ा, द्वन्द्व, युगल, तीसरी राशि।
मिथ्या तद्० (स्त्री०) असत्य, झूठ, अयथार्थ। —चार (वि०) [मिथ्या+आचार] कपटाचार, दाम्भिक।—दृष्टि (स्त्री०) कर्मफलापवादक ज्ञान, नास्तिकता, असत्य, दर्शन।—वादी (वि०) असत्यवादी, झूठा।—भियोग (पु०) [मिथ्या +अभियोग] असत्य दोषारोपण, मिथ्यावाद, झूठी लड़ाई। [चिरौरी।
मिनती दे० (स्त्री०) विनती, प्रार्थना, निवेदन,
मिमियाना दे० (क्रि०) मैं मैं शब्द करना, बकरी का शब्द करना।
मिमियाहट दे० (स्त्री०) बकरी आदि का शब्द।
मिरगी, मिर्गी दे० (स्त्री०) मूर्च्छा, रोग विशेष, अपस्मार।
मिरजई, मिर्जई (स्त्री०) कमर तक का अँगरखा।
मिरजा (पु०) मुगलों की पदवी।
मिरासी (पु०) रंडी का साज़िन्दा, रंडी का भँडुवा।
मिर्च दे० (पु०) मरिच, गोल मरिच।
मिर्चा दे० (स्त्री०) मिर्चाई, लाल मिर्च।
मिर्दङ्ग, मिरदंग, मिर्दंग तद्० (पु०) मृदङ्ग, वाद्य विशेष, हस्तवाद्य, एक प्रकार का ढोल, पखावज।
मिर्दङ्गा दे० (पु०) मामरासी, मर्दंगी।
मिलन दे० (पु०) मेल, मिलाप, साक्षात्कार, संयोग, दर्शन, भेंट।—सार (वि०) मेली, मिलाप।
मिलना दे० (क्रि०) प्राप्त होना, लाभ, भेंटना, मेल करना, जुड़ना, पाना, बराबर होना।—जुलना (वा०) सदा मिला रहना, शुद्ध भाव से मिलना, दिल खोल कर मिलना।
मिलना दे० (स्त्री०) मिलाप, संयोग, मिलनेवाली।
मिलाना (क्रि०) मेल करना, सटेरना, जुटाना। प्रेम पूर्वक रहना, ऐक्य भाव से रहना।

मिलाप दे० (पु०) मेल, प्रेम, मिगता, मिलाई।
मिलापी दे० (वि०) मिलनसारी, मेली, सज्जन, मित्र।
मिलाव दे० (पु०) मिलौनी, मेल, बनाव, मित्रता।
मिलित तद्० (वि०) एकत्रित, मिश्रित, मिला हुआ।
मिले जुले रहना दे० (वा०) मेल मिलाप से रहना, प्रेम पूर्वक रहना, ऐक्य भाव से रहना।
मिश्र तद्० (पु०) वैद्य, ब्राह्मणों की पदवी, प्रतिष्ठित मनुष्य, पूज्य, माननीय।—(वि०) संयुक्त, मिश्रित। (पु०) देश विशेष।—केशी (स्त्री०) एक अप्सरा, एक स्वर्ग वेश्या।
मिश्रक (पु०) मेलक, मिलाने वाला।
मिश्रण (पु०) मिलावट, संयोजन।
मिश्रित तद्० (वि०) मिलित, मिला हुआ, घोल मेल।—भाषा (स्त्री०) मिली हुई भाषा, खिचड़ी भाषा, अशुद्ध भाषा, कई भाषा का मिश्रण।
मिश्री दे० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध मिठाई।
मिष तत्० (पु०) कपट, बहाना।
मिष्ट तद्० (वि०) मीठा, मधुर।—ता (स्त्री०) [माधुर्य।
मिष्टान्न तद्० (पु०) मिठाई, पकवान। [कारण।
मिस, मिसि, मिसु दे० ब्याज, बहाना, हिला, सबब,
मिसर (पु०) मिश्रदेश।
मिसरी (स्त्री०) देखो मिश्री।
मिसना दे० (क्रि०) पीसना, चूर्ण करना, मलना।
मिसल (पु०) कागजात का मुट्ठा।
मिसाल (पु०) नज़ीर, उदाहरण।
मिस्सी दे० (स्त्री०) मुखमञ्जन, स्त्रियों का शृङ्गार।
मिस्त्री (पु०) कारीगर।
मिहदी दे० (स्त्री०) मेंहदी, वृक्ष विशेष, इसके पत्तों से स्त्रियाँ हाथ पैर रङ्गती हैं।
मिहना दे० (पु०) ताना, बोली, ठठोली।—मारना (वा०) ताना मारना, ठठोली करना।
मिहरा दे० (पु०) स्त्री के समान रहने वाला पुरुष, नारीरूपी पुरुष, मेहरा, हिजड़ा, जनाना।
मिहरारू दे० (स्त्री०) महिला, नार, तिरिया, जोय।
मिहरी दे० (स्त्री०) मिहरिया, स्त्री, भार्या, पत्नी।
मिहाना दे० (क्रि०) गीला होना, सीलना, सीदना।
मिहिका तद्० नीहार, कुहरा, हिम।
मिहिर तद्० (स्त्री०) रवि, दिवाकर, सूर्य। दे० (स्त्री०) मेहरबानी, कृपा।
मीङ्गनी, मींगनी दे० (स्त्री०) देखो "मिङ्गनी"।
मींगी दे० (स्त्री०) मींग, गूदा, सार, मज्जा, भेद।
मींच दे० (स्त्री०) मौत, मृत्यु, मरण, निधन, कज़ा। यथा—
"चिन्तनीय द्वै वस्तु हैं, सदा जगत के बीच।
ईश्वर के पदपद्म युग, और आपनी मींच॥"
मींचना दे० (क्रि०) मूँदना, ढाँकना, मिचना, मरना।
मींजना दे० (वि०) मलना, मसलना, रगड़ना, रगड़ कर रस निकालना।
मींजान (पु०) जोड़, गुणराशि, तराजू।
मींजू दे० (पु०) मयूर, कलाई विशेष
मीठा दे० (वि०) मधुर, धीमा, विष विशेष।
मीठिया दे० (स्त्री०) मीठी, चूमा, चुम्बा, मच्छी।
मीठी दे० (स्त्री०) मच्छी, मीठिया, चूमा। (वि०) मधुर "मीठा" शब्द का स्त्रीलिङ्ग।
मीठ (वि०) मूता हुआ, मूर्छित।
मीणा (पु०) जङ्गली आदमियों की जाति विशेष।
मीत तद्० (पु०) मित्र, सुगम, सनेही, मीता।
मीतन दे० (पु०) सनामी, एक नाम वाला, सखी, सनेही, मीत का बहुवचन, मित्रों।
मीता दे० (पु०) मित्र, मीत।
"रघुवर, साँचे मन के मीता।"
मीन तद्० (पु०) मछली, मत्स्य।—केतन (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ।
मीना दे० (पु०) जङ्गली जाति विशेष, इस जाति के लोग राजपुताने में रहते हैं और चोरी डकैती करते हैं। मछली को भी कहते हैं। यथा—
"निन्दहिं आप सराहहिं मीना,
धिग् जीवन रघुबीर विहीना"।
—रामायण।
मीमांसक तद्० (पु०) मीमांसक-शास्त्रवेत्ता, सिद्धान्तकारी, निष्पत्तिकारी, निर्णयकर्त्ता।
मीमांसा तत्० (स्त्री०) विचार, निष्पत्ति, सिद्धान्त, निर्णय, दर्शनशास्त्र विशेष, इस दर्शन के ये दो भेद हैं पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा। पूर्व

मीमांसा में कर्मकाण्ड की परस्पर विरुद्ध बातों का निर्णय किया गया है। उत्तर मीमांसा में उपनिषद् के वाक्यों का विचार किया गया है। उत्तर मीमांसा का दूसरा नाम वेदान्तदर्शन है, पूर्व मीमांसा के आचार्य जैमिनि और उत्तर मीमाँसा के आचार्य व्यास हैं। [सिद्धान्वित।

मीमांसित तत्० (वि०) विचारित, निर्णीत,

मीर (पु०) सरदार, सैयद, समुद्र, सीमा।

मील (पु०) १७६० गज़ का माप विशेष, वन।

मीलन (पु०) सङ्कोच, टमटमाना।

मीसना दे०(क्रि०) मलना, मर्दन करना।

मुँह दे० (पु०) मुख, वदन, आनन।—अँधेरा (वा०) सन्ध्या का समय या प्रातःकाल, अन्धेरा, जब मुख न दीखे।—अपना सा ले के रह जाना (वा०) निराश होना, हताश होना, कुछ कर न सकना।—आना (वा०) रोग विशेष, मुँह फूलना, मुँह में छाले पड़ना।—उतर जाना (वा०) उदास होना, दुःखी होना, कष्ट पाना।—करना (वा०) सामना करना, मिलाना, बराबरी करना, साथ देना, फोड़ा चीरना, आक्रमण करना, धावा करना, टूट पड़ना, देखना, चलना, जाना।—का फूँहड़ (वा०) गाली बकने वाला, मनमाना बोलने वाला।—काला (वा०) कलङ्क, अपराध, दोष।—काला करना (वा०) कलङ्क लगाना, अपराध लगाना, अपमान करना।—के कौवे उड़ जाना (वा०) उदास होना, व्याकुल होना, चिन्तित होना।—खोलना (वा०) गाली देना, सामना करना, जवाब देना, उत्तर करना।—चढ़ाना (वा०) क्रोध करना, मेल करना, प्रेम करना, सामने होना।—चलाना (वा०) काटना, खाना, इधर की बात उधर करना, चुगली करना।—चोर (वा०) लज्जालु, लज्जाशील, डरपोक, अपराधी।—चोरी (वा०) लाज, भय, छिपकर।—छिपाना (वा०) छिपना, लुकना, लज्जा से छिपना।—ठठाना (वा०) मुँह पर मारना, लज्जित करना, निरुत्तर करना, झूठा साबित करना।—डालना (वा०) माँगना, याचना, याचन करना, किसी विषय में भाग लेना।—ताकना (वा०) चकित होना, विस्मित होना, भौचक्का आना।—तोड़ना (वा०) दबा देना, पराजय कर देना, हराना, दुःख देना।—तो देखो (वा०) अयोग्यता बताना, अपनी शक्ति न जान कर बड़े काम को करने वालों को इस वाक्य से सावधान किया जाता है।—थुथाना (वा०) मुँह बनाना।—दिखाई (स्त्री०) बच्चे या नई बहुओं को मुँह देखकर कुछ देना।—देख कर बात करना (वा०) खुशामद करना, किसी को प्रसन्न करने के लिये उसके मन के योग्य बातें करना। देखना, सहायता माँगना, आज्ञा की प्रतीक्षा करना, आदर करना।—देख रहना (वा०) आश्चर्य होना, किसी के कारण क्रोध दबा लेना।—देखे की प्रीति (वा०) बाहरी प्रेम, दिखावटी प्रेम।—पर गर्म होना (वा०) सामने क्रोध करना।—पर लाना (वा०) कहना।—पर हवाई उड़ना (वा०) मुँह की रङ्गत उड़ जाना, निष्प्रभ होना, फिट्ट पड़ना।—पसारना (वा०) अधिक माँगना।—फेरना (वा०) अप्रसन्न होना, रुष्ट जाना।—फैलाना (वा०) अधिक चाहना, ज्यादे माँगना, अधिक लोभ दिखाना।—बन्द करना (वा०) बोलने न देना, निरुत्तर करना।—बनाना (वा०) त्योरी चढ़ाना, अप्रसन्न होना।—बाना (वा०) मुँह खोलना, मुँह फाड़ना, जम्हाई लेना।—बिगड़ना (वा०) अप्रसन्न होना, क्रोध करना, बुरा मानना, जिह्वा का स्वाद बिगड़ना।—बिगाड़ना (वा०) त्योरी चढ़ाना, क्रोध करना, अपमानित करना, तंग कर देना, दुःख देना।—बोला (वा०) किया हुआ, बनाया हुआ, शब्द से बनाया हुआ।—भरी (वा०) रिश्वत, घूस, उत्कोच।—माँगा (वा०) अभीप्सित, चाहा हुआ, अपनी इच्छा के अनुसार।—मारना (वा०) चुप रहना, उदास होना, चिन्तित होना।—में पानी आना (वा०) अधिक चाह, अतिशय लोभ, लालच।—मोड़ना (वा०) फिर जाना, छोड़ देना, चला जाना।—लगना (वा०) हिल मिल जाना, अधिक प्रेम होना, अधिक हिलना होना।—लगाना (वा०)

दाह करना, आदर करना, प्रेम करना, बहुत चाहना।—पे पे रह जाना। (मा०) लज्जा आना, लज्जित होना।—मुकदना (मा०) मुँह का रङ्ग बदलना, मुँह उतरना।—से फूल झड़ना (मा०) आशीर्वाद देना।

मुख्तवर (वि०) विश्वस्त, विश्वासपात्र।

मुख्तार (वि०) मदक्कदार, सुगन्धित, सुवासित।

मुआ (पु०) मरा हुआ, मुर्दा।

मुकद्दम (पु०) प्रधान, पहिला, अगला।

मुकदमा (पु०) अभियोग, मुआमिला। [मानना।

मुकरना दे० (क्रि०) नकारना, अस्वीकार करना, न

मुकर्रर (पु०) फिर नौकर रखना।

मुकाम (पु०) स्थान, जगह।

मुकाबला (पु०) विरुद्धता, मिलान।

मुकु (पु०) मोक्ष, उत्सर्ग।

मुकुट तत्० (पु०) किरीट, मुकुट, चूड़ा, सिरपेंच, सेहरा।

मुकुर तत्० (पु०) दर्पण, आदर्श, शीशा, आइना आरसी।

मुकुरी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का छन्द और अलङ्कार। किसी बात को कह कर पुन उसको छिपाने की इच्छा से उलटना। यथा—

"बानिन चित चहुँ दिशि डोले,
चातक क्यों पुनि पिय पिय बोले।
प्रलय होय, आवे नहिं गेह,
क्यों सखि सज्जन ना सखि नेह॥"

मुकुल तत्० (पु०) कलि, कलिका, बौर।

मुकुलित तत्० (वि०) मुकुलाया हुआ, अर्द्ध स्फुटित, अधखिला, थोड़ा खिला।

मुकेल दे० (पु०) नकेल, ऊँट का नथना।

मुक्का दे० (पु०) घुस्सा, मुष्टिक, घूसा।

मुक्त तत्० (वि०) खुला, छुटा, त्यक्त, मुक्ति प्राप्त, मोक्ष प्राप्त, बंधन रहित, खुला हुआ, जन्म मरण रहित।—हस्त (वि०) वदान्य, दाता, दानशील।

मुक्ता तत्० (स्त्री०) रत्न विशेष, मोती, मौक्तिक।—कलाप (पु०) मुक्ताहार, मोती की माला।—फल (पु०) मुक्ता, मोती, मौक्तिक।—वली (स्त्री०) मुक्ताहार, मोती की माला।—मणि (पु०) मोती, मौक्तिक।

मुक्ति तत्० (स्त्री०) दुःख की अत्यन्त निवृत्ति, नित्य सुख की प्राप्ति, कैवल्य निर्वाण, श्रेय, निःश्रेयस, मुक्ति, मोक्ष, अपवर्ग परित्राण, मोचन, सद्गति।—दाता (पु०) मुक्ति देने वाला, सद्गुरु, ज्ञान, उद्धारक, उद्धारकर्ता।

मुख तत्० (पु०) वदन, मुँह, मुखड़ा। (वि०) प्रधान, मुख्य नेता।—दूषक (पु०) मुख बिगाड़नेवाला, मुख दुर्गन्ध करने वाला, पियाज।—मण्डन (पु०) तिलक वृक्ष।

मुखड़ा दे० (पु०) मुख, वदन, मुँह।

मुखर तत्० (वि०) अप्रियवादी, दुर्मुख, बकवादी, बहुवदिया।—ता (स्त्री०) अप्रियवादिता।

मुखशुद्धि तत्० (स्त्री०) वक्त्रशोधन, मुख प्रक्षालन, दन्तधावन। [जिह्वाम।

मुखस्थ तत्० (वि०) मौखिक, मुखस्थित, कण्ठाग्र,

मुखापेक्षा तत्० (स्त्री०) अनुरोध, पक्षपात।

मुखावलोकन तत्० (पु०) मुखदर्शन, मुख देखना।

मुखामुखी दे० (स्त्री०) सामना सामनी, मुँहामुँही, मुख परम्परा द्वारा।

मुखालिफ (पु०) विरुद्ध, वैरी, शत्रु।

मुखिया दे० (पु०) मुख्य, प्रधान, पहला, अगुवा, अग्रगण्य, श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, नामी।

मुख्य तत्० (पु०) प्रथम कल्प, यज्ञ आदि में शास्त्रोक्त प्रथम कल्प। (वि०) श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया।

मुगदर दे० (पु०) मोगरी, मोगरा, मुगरी।

मुगल (पु०) मुसलमानों की एक जाति।

मुग्ध तत्० (वि०) मोहित, विस्मित। (पु०) सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ, मूर्ख।

मुग्धा तत्० (स्त्री०) कन्या, कुमारी, नायिका विशेष, स्वकीय नायिका का एक भेद। यथा—

"अभिनव यौवन आगमन, जाके तन में, होय,
ताको मुग्धा कहत हैं, कवि कोविद सब कोय।"

—रसराज।

मुचक (पु०) लाख, लाक्षा।

मुचकुन (पु०) पुष्पवृक्ष विशेष।

मुचा दे० (पु०) मांस का टुकड़ा।

मुजरा दे० (पु०) प्रणाम, दण्डवत, सविनय भेंट, वेश्या का नृत्यरहित बैठ कर गाना।

मुज़रिम (पु०) अपराधी, कसूरवार।
मुञ्ज, मुँज तत्० (पु०) तृण विशेष, राजा विशेष, भोजराज के चचा।
मुटाई (स्त्री०)मोटापन, स्थूलता।
मुटापा दे० (पु०) मुटाई, स्थूलता।
मुट्ठी तद्० (स्त्री०) मुष्टिक, मूठ, बकोट, चकटा।
मुठभेर या मुठभेड़ दे० (पु०) समीप की भेंट, अति निकट से मिलाप, नज़दीक की मुलाकात,हाथापाई।
मुठिया दे० (पु०) हाथभर, मुट्ठीभर, दस्ता, मूठ।
मुड़ना दे० (क्रि०) टेढ़ा होना, बल खाना, ऐंठन पड़ना।
मुड़ियाना दे० (क्रि०) मुड़ना, फिरना, घूमना।
मुड्ढ दे० (पु०) प्रधान, मुखिया, बड़ा मूर्ख।
मुण्ड, मुंड तत्० (पु०) मुंड, कपाल, सिर, मस्तक।
मुण्डक तत्० (पु०) नापित, नाऊ, क्षौरकार।
मुण्डन (पु०) केशच्छेदन।
मुण्डना, मुँडना दे० (क्रि०,) बाल बनाना, मुँड़ना।
मुण्डला, मुँडला दे० (गु०) मुँड़ा, मुण्डित, मुण्डा हुआ।
मुण्डवाना, मुँडवाना दे० (क्रि०) मुण्डन कराना, मुण्डित कराना, मुण्डला बनाना। [अँगरेज़ी जूता।
मुण्डा, मुँडा (पु०) पतङ्ग का सिर, चन्दला,
मुण्डासा, मुँडासा दे० (पु०), मुरेठा, साफा, मुड़बन्धी।
मुण्डित तत्० (वि०) मुँडा हुआ, घुटा हुआ, दीक्षित।
मुण्डिया, मुँडिया दे० (पु०) सिर, कपाल, मस्तक। (गु०) मुड़े सिर का।
मुण्डी, मुंडी दे० (स्त्री०) एक औषधि का नाम।
मुण्ड्ढ तत्० (पु०) संन्यासी, यति, मुण्डित सिर।
मुण्डेर, मुँडेर दे० (पु०) परछती, मेड़, कम ऊँची या नीची दीवार।
मुण्डेर, मुँडेरी दे० (स्त्री०) छोटी भीत।
मुतअल्लिक (वि०) सम्बन्धी, नातेदार।
मुतना तत्० (पु०) खटमुतवा, जो सोते सोते खाट पर ही मूत दे।
मुतास दे० (पु०) मूतने की इच्छा।—ा (पु०) मूतने की आवश्यकता रखने वाला।
मुद् तत्० (पु०) आनन्द, हर्ष, आह्लाद।

मुदर्रिस (पु०) पढ़ानेवाला
मुदित तत्० (वि०) हर्षित, आह्लादित, निहाल।
मुदिर (पु०) मेघ, बादल, मेंढक।
मुदी (स्त्री०) जुन्हाई, हर्ष, प्रीति।
मुद्ग तत्० (पु०) मूँग, कलाई विशेष।
मुद्गर तत्० (पु०) मोगरी, मुगरा।
मुद्दई दे० (पु०) बैरी, वादी, प्रार्थी। [मोहर।
मुद्रा तत्० (पु०) छापा, छल्ला, अङ्क, सिक्का, रुपया,
मुद्दआलह (पु०) प्रतिवादी।
मुद्राङ्कित तत्० (वि०) यन्त्रित, छापा गया, अङ्कित।
मुद्रिका (स्त्री०) सोने चाँदी की बनी हुई अँगूठी।
मुद्रित तत्० (वि०) अङ्कित, छापा हुआ, मुहर दिया हुआ।
मुधा (पु०) झूठ, निरर्थक।
मुनक्का दे० (पु०) मेवा विशेष, एक प्रकार की दाख।
मुनमुन दे० (अ०) प्यार से बुलाने के अर्थ में इसका प्रयोग होता है।
मुनाफा (पु०) फायदा, लाभ।
मुनासिब (पु०) ठीक, उचित।
मुनमुनाना दे० (क्रि०) गुनगुनाना, मुनमुन करना, बिल्लो को बुलाना, धीरे धीरे कुछ बोलना।
मुनि तत्० (पु०) योगी, तपस्वी, वेदज्ञ महात्मा।—पट (पु०) मुनियों के वस्त्र, वल्कल, वृक्ष की छाल के वस्त्र।—राज (पु०) मुनिश्रेष्ठ, मुनियों के प्रधान।—वर (पु०) मुनिवर्य, मुनियों में श्रेष्ठ।
मुनिन्द (पु०) मुनीन्द, मुनिराज।
मुनिया दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष, लाल चिड़िया।
मुनीश तत्० (पु०) ऋषीश, मुनि प्रधान, मुनिराज।
मुंदना दे० (क्रि०) बन्द करना, तोपना, ढाँपना।
मुंद्रा दे० (पु०) कड़ा, गोरखपंथी साधुओं के कान में डाली हुई गोल वस्तु विशेष।
मुफ़्त (पु०) बिनामूल्य, बेदाम।
मुमाखी दे० (स्त्री०) मधुमक्षिका, मौमाखी, मधुमाखी।
मुमानी दे० (स्त्री०) मामी, मातुली, मामा की स्त्री।
मुमूर्षा (स्त्री०) मौत की इच्छा।
मुमूर्ष तत्० (पु०) मरनहार, मरणासन्न, मृतप्राय।
मुर (पु०) दैत्य विशेष।

मुरई दे० (स्त्री०) मूली, एक प्रकार की जड़।
मुरकन दे० (क्रि०) ऐंठना बल पड़ना, हड्डी का टूटना। [पहनने का गहना।
मुरकी दे० (स्त्री०) कान का भूषण विशेष, कान में
मुरचङ्ग दे० (पु०) बाजा विशेष।
मुरचट (पु०) मुँह से बजाने का एक बाजा।
मुरज (पु०) मृदङ्ग, बाजा विशेष।
मुरझाना दे० (क्रि०) सूखना, सूख जाना, उदास होना, खिन्न होना।
मुरखडा करना दे० (धा०) जकड़ना, बाँधना। [चबेना।
मुरमुरा दे० (पु०) चबेना विशेष, एक प्रकार का
मुरला दे० (पु०) पोपला, पक्षी विशेष, मोर, मयूर। तद्० (स्त्री०) एक नदी का नाम।
मुरली तद्० (स्त्री०) बंशी, बाँसुरी।—धर (पु०) बंशीधर, श्रीकृष्णचन्द्र।
मुरसा दे० (पु०) देखो, "मुहाँसा"।
मुरहा दे० (पु०) नटखट, दुष्ट, ऐंठा, मयूर मोर।
मुराई दे० (स्त्री०) जाति विशेष, कुँजड़ा, कोइरी, शाक तरकारी आदि का व्यापार करने वाली जाति।
मुराद (स्त्री०) अभिप्राय, मियत।
मुराधार (वि०) भोंथरा, भोथा, कुण्ठित।
मुरेठा दे० (पु०) साफा, फेंटा।
मुरला दे० (पु०) मोर का बच्चा, छोटा मोर।
मुरैठी दे० (स्त्री०) मुलहटी।
मुर्ग (पु०) कुक्कुट, पक्षी विशेष।—ी (स्त्री०) मुर्गा की स्त्री।
मुर्रा दे० (पु०) पयवा, पछुन्दर, भैंस की एक जाति।
मुलतानी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की रागिनी, मृत्तिका विशेष।
मुलहठी दे० (स्त्री०) ओषधि विशेष, मुरैठी।
मुलाई दे० (स्त्री०) आँकाव, निरख, दर, भाव।
मुलाना दे० (क्रि०) आँकना, मूल्य या भाव ठहराना
मुश्क दे० (पु०) बाहु, भुजा।
मुष्क तद्० (पु०) अण्ड, अण्डकोश, कस्तूरी।
मुषामुषी तद्० (स्त्री०) मुक्कामुक्की, घुस्सामुस्सी।
मुष्टि तद्० (स्त्री०) मुट्ठी, मूठी, मूका।
मुसकाना दे० (क्रि०) हँसना, स्मित करना, ईषत् हास्य करना।
मुसकुराई दे० (स्त्री०) मन्दस्मित, मुसकुराहट।
मुसकुराना दे० (क्रि०) मुसकाना हँसना, मन्द स्मित करना।
मुसल तद्० (पु०) मूशल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं।
मुसलमान दे० (पु०) एक जाति विशेष, मुहम्मद के मतावलम्बी।
मुसली तद्० (पु०) बलभद्र, बलराम, श्रीकृष्णचन्द्र के बड़े भाई, मूषिका, चूही चुहिया।
मुसाना तद्० (क्रि०) चोरी करवाना, लुटवाना।
मुस्ता तद्० (स्त्री०) मूल विशेष, मोथा।
मुहरा दे० (पु०) हरावल, अगाड़ी।
मुहरी दे० (स्त्री०) कोप, बन्दूक का मुँह।
मुहाँसा दे० (पु०) फोड़ा, फुँसी, मुँह पर के फोड़े, जवानी सूचक चेहरे के फोड़े मुहासा।
मुहुर्मुहु तद्० (अ०) बारबार, पुनःपुन, भूय, अनेक बार।
मुहूर्त्त तद्० (पु०) समय विशेष, दो घड़ी समय, दो दण्ड काल, किसी काम करने का निर्धारित उत्तम समय, दिन रात का तीसवाँ भाग, ४८ मिनट।
मुआ दे० (वि०) मरा, मृत, निर्जीव।
मूँग दे० (स्त्री०) एक प्रकार अन्न विशेष, एक हरे रङ्ग का अन्न जिसकी दाल बनती है।
मूँगा दे० (पु०) विद्रुम, प्रवाल, समुद्र में उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की मूल्यवान वस्तु।
मूँगिया दे० (वि०) रङ्ग विशेष, मूँगे का रंग, मूँगे के समान रंग।
मूँछ दे० (स्त्री०) मोंछ, मूछ मोंछ।
मूँज दे० (स्त्री०) दाम, तृण विशेष एक प्रकार का तृण, जिस की रस्सी बनाई जाती है।
मूँड दे० (पु०) मस्तक, सिर, कपाल।—फिकारना (धा०) सिर नङ्गा करना।
मूँड़ना दे० (क्रि०) ठगना, बाल मूँड़ना, बाल बनवाना, सिर घुटवाना, फुसलाना धोखा देना।
मूँडला दे० (वि०) मुंडा मुण्डित, मूँड़ा हुआ।
मूढ़ा दे० (पु०) मोढ़ा बैठने का चौकी।
मूँदना दे० (क्रि०) बन्द करना, तोपना, ढाँकना छिपाना, रोकना।

मूँदरी दे० (स्त्री०) मुद्रिका, छल्ला, अँगूठी।
मूँह दे० (पु०) मुख, वदन, मुखड़ा।
मूँहा दे० (पु०) मुख का रोग।
मूक तद्० (वि०) गूँगा, जो बोल न सके, वाचा-शक्ति रहित, अनबोल, वाक्-शक्ति हीन।
मूका दे० (पु०) घूँसा, मुक्का, मुठी, झरोखा।
मूकी दे० (स्त्री०) मुक्की, घूसा, धक्का।
मूखा दे० (पु०) पखेती, दीवार, मुँडेर, मेंड।
मूगरी दे० (स्त्री०) कपड़े पीटने का मोगरा, मुँगरी।
मूचकाना दे० (क्रि०) मुँह चढ़ाना, ऐंठना, बल देना।
मूचना दे० (पु०) चिमटी, चिमटा, लोहे का एक प्रकार का अस्त्र, जिससे बाल नोचते हैं।
मूछ दे० (स्त्री०) मूँछ, मोंछ।
मूछाऊड़ा दे० (पु०) बड़ी मूँछ।
मूछैल दे० (वि०) बड़ी मूछों वाला।
मूठ दे० (पु०) बेंट, दस्ता।
मूठा दे० (पु०) मरमूँठ, बेंट, कड़ा।
मूठी दे० (स्त्री०) मुष्टि, मुक्का, मूका, घूसा।
मूढ़ तत्० (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, अनपढ़, अनभिज्ञ।
—ता (स्त्री०) मूर्खता, अज्ञानता।
मूत तद्० (पु०) मूत्र, लघुशङ्का, पेशाब।
मूतना दे० (क्रि०) लघुशङ्का करना, पेशाब करना।
मूत्र तत्० (पु०) प्रस्राव, मूत, पेट का निकाला हुआ जल।—कृच्छ्र (पु०) मूत्र रोग, मूत्र रोध रोग। अश्मरी रोग।—घात (पु०) देखो "मूत्रकृच्छ्र" —दोष (पु०) प्रमेह, मूत्रगत दोष।—निरोध (पु०) मूत्र प्रतिबन्धक रोग विशेष, मूत्रकृच्छ्र रोग।
मूना दे० (क्रि०) मरना, मृत होना।
मून्‌ दे० (वि०) लघु, छोटा, थोड़ा, अल्प, किञ्चित्।
मूरत तद्० (स्त्री०) मूर्त्ति, छवि, आकृति, प्रतिमा।
मूर्ख तत्० (वि०) मूढ़, अज्ञान, अजान, अनभिज्ञ।
—ता (स्त्री०) अज्ञानता, मूढ़ता।
मूर्च्छना तत्० (क्रि०) गीत का अङ्ग विशेष।
मूर्च्छा तत्० (स्त्री०) सम्मोह, अचेतन अवस्था, बेहोशी।—गत (पु०) मूर्च्छाप्राप्त बेहोश अचेत।
मूर्च्छित तत्० (वि०) मूर्छा प्राप्त अचेत, बेहोश।
मूर्त्ति तत्० (स्त्री०) प्रतिमा, आकार, पुतली, तसवीर।
—पूजक (पु०) देव पूजक, चतुर्वर्ग के मनुष्य।
—मन्त (पु०) आकारवन्त, शरीरधारी।
मूर्द्धज तत्० (पु०) बाल, केश।
मूर्द्धन्य तत्० (पु०) मूर्द्धा स्थान से उच्चारित होने वाले वर्ण, ऋ, ट ठ ड ढ ण, र ष, ये वर्ण मूर्द्धन्य हैं।
मूर्द्धा तत्० (पु०) मस्तक, तालु से ऊपर का भाग।
मूल तत् (पु०) जड़, वंश, कुल, पूँजी, पुस्तक का मूल भाग।—कारिका (स्त्री०) मूल ग्रन्थार्थ प्रकाशक पद्य, धन मूल की वृद्धि विशेष।—धन (पु०) मूल्य द्रव्य, असल पूँजी।—भूत (पु०) जड़।
मूलक तत्० (पु०) मूली, मुरई। [दाम।
मूल्य तत्० (पु०) मूल, मोल, भाव, निरख, दर,
मूश तत्० (पु०) चूहा।
मूष तत्० (पु०) चूहा, मूसा, मूषिका।
मूषल तत्० (पु०) मूसल, चाँवल आदि अन्न कूटने का लकड़ी का कूटना।
मूषण तत्० (पु०) हरण, चोरी करण, चोरी करना।
मूषा तत्० (पु०) मूस। [खसोटना।
मूसना दे० (क्रि०) हरना, चोरी करना, लूटना
मूसर (पु०) देखो 'मूसल'। [का बट्टा।
मूसरा दे० (पु०) चूहा, मूल, गण, लोहे के खल
मूसल (पु०) मूसरा, अनाज कूटने की लकड़ी विशेष।
मूसला दे० (पु०) जड़, मूल।
मूसा दे० (पु०) चूहा, इन्दूर।
मृग तत्० (पु०) हरिण, मृग, कुरङ्ग।—छाला (पु०) मृगचर्म, अजिन।—जल (पु०) मृग तृष्णा का जल।—तृष्णा (स्त्री०) धूप में जल ज्ञान, व्यर्थ तृष्णा, वृथा काम।—नयनी (स्त्री०) बड़ी आँख वाली, सुन्दरी स्त्री।—नाभि (स्त्री०) कस्तूरी, मृगमद।—पति (पु०) पशुओं का राजा, सिंह, मृगेन्द्र।—मद (पु०) कस्तूरी।—राज (पु०) मृगपति, पशुओं का राजा।—लाञ्छन (पु०) चन्द्रकलङ्क।—लोचनी (स्त्री०) मृगनयनी, बड़ी आँखों वाली, मृग के समान आँखों वाली।
—शिरा (पु०) एक नक्षत्र का नाम।
मृगया तत्० (स्त्री०) शिकार, आखेट अहेर।
मृगी तत्० (स्त्री०) हरिणी, रोग विशेष, मिर्गी।

मृगेन्द्र तत्० (पु०) [मृग+इन्द्र] सिंह, मृगराज, मृगपति ।

मृग्य तत्० (वि०) अन्वेषणीय, दर्शन, अनुसन्धान [करने योग्य ।

मृजा तत्० (स्त्री०) मार्जन,शुद्धकरन,माँजना,फरछाना ।

मृड तत्० (पु०) शिव, महादेव, शम्भु ।

मृणाल तत्० (पु०) कमल नाल, कमल की जड़ ।

मृत तत्० (वि०) मुआ, मरा हुआ, मुर्दा ।

मृतक तत्० (पु०) शव, लोथ, मुर्दा ।

मृत्तिका तत्० (स्त्री०) मट्टी, मिट्टी, माटी ।

मृत्यु तत्० (स्त्री०) मौत, मरण, निधन ।

मृत्युञ्जय तत्० (पु०) शिव का एक नाम ।

मृदङ्ग, मृदंग तत्० (पु०) वाद्य विशेष, भेरी ।

मृदु तत्० (वि०) नरम, कोमल ।—ता (स्त्री०) कोमलता ।

मृषा तत्० (अ०) झूठा, मिथ्या, असत्य ।

में (अव्यय) बीच ।

मेंमनी दे० (स्त्री०) मींगनी, लेंडी, लीद ।

मेंड़ (स्त्री०) बाँध, बाड़, घेरा ।

मेंडक दे० (पु०) दादुर, भेक, मण्डूक ।

मेंडा दे० (पु०) मेंढ़, कुएँ का मुँह, मेंढ़ ।

मेंड़ियाना (क्रि०) घिरना, बटोरना, घेरना ।

मेंढ़ा दे० (पु०) मेंढा, मेष, गाडर ।

मेंह दे० (पु०) वृष्टि, वर्षा, घटा, झड़, झड़ी ।

मेंहदी दे० (स्त्री०) पौधा विशेष ।

मेख दे० (पु०) कील, खूटा, मेष ।

मेखला तत्० (स्त्री०) क्षुद्रघंटिका, करधनी, मृगछाला से बना हुआ यज्ञोपवीत ।

मेखली दे० (स्त्री०) टाट, पट्टी ।

मेघ तत्० (पु०) मेह, बादल, रागविशेष ।—डम्बर (पु०) रावण का छत्र विशेष ।—नाद (पु०) मेघ का शब्द, मेघ के समान शब्द, रावण के पुत्र का नाम । देवराज इन्द्र को पराजित करने के कारण उसका नाम इन्द्रजित पड़ा था । लङ्का के युद्ध में इसने राम लक्ष्मण को दो बार हराया था, परन्तु अन्त में यह लक्ष्मण के हाथों मारा गया ।—पति (पु०) इन्द्र, देवराज ।—वरण (पु०) मेघ के रङ्ग के समान ।—माला (स्त्री०) मेघ समूह, मेघों की माला ।

मेघाध्वा तत्० (पु०) मेघपथ, अन्तरिक्ष, आकाश ।

मेघागम तत्० (पु०) वर्षाकाल, वर्षा का समय ।

मेटना दे० (क्रि०) धो डालना, नाशना, ख़राब करना ।

मेथी दे० (स्त्री०) एक साग का नाम, एक प्रकार का मसाला जो छौंकने के काम में आता है ।

मेद दे० (पु०) मज्जा, वसा, चर्बी ।

मेदिनी तत्० (स्त्री०) धरिणी, धरती, भूमि, अष्टवर्ग में प्रसिद्ध औषधि विशेष, संस्कृत के एक कोश ग्रन्थ का नाम ।

मेदुर तत्० (पु०) अतिशय स्निग्ध, अत्यन्त चिक्कन, [शीतल ।

मेघ तत्० (पु०) यज्ञ, याग, यश, अध्वर ।

मेधा तत्० (स्त्री०) बुद्धि विशेष, धारणावती बुद्धि, मनीषा ।—तिथि (पु०) ये मनुस्मृति के विख्यात टीकाकार हैं, इनके पिता का नाम वीर शिवस्वामी भट्ट था ।—वती (स्त्री०) बुद्धिमती, मेधा विशिष्टा, महाज्योतिष्मती लता ।

मेधावी तत्० (वि०) मेधायुक्त, स्मरण शक्ति विशिष्ट, मतिमान् । (पु०) पण्डित, अभिज्ञ ।

मेधि तत्० (पु०) खलिहान में पशुओं को बाँधने के लिये ऊँचा गाड़ा हुआ काठ ।

मेध्य (वि०) पवित्र ।

मेमना दे० (पु०) बकरी का बच्चा ।

मेरा (सर्व०) अपना ।

मेरु तत्० (पु०) पर्वत विशेष, सुमेरुपर्वत, जपमाला का सब प्रधान मनिया ।—दण्ड (पु०) पीठ के बीच की हड्डी ।

मेल तत्० (पु०) संयोग, मिलाप, भेंट ।

मेलना दे० (क्रि०) डालना, छोड़ना, रखना ।

मेला दे० (पु०) भीड़, रौला, समूह, समुदाय, देवदर्शन, पर्व विशेष, या तमाशा देखने के लिये बहुत लोगों का एकत्रित होना, भीड़ । (क्रि०) मिलाया,डाला,फेंका ।—ठेला (वा०) भीड़ भाड़ ।

मेली तत्० (वि०) मित्र, मिलापी, परिचित, जाना हुआ । (स्त्री०) रख दी, छोड़ दी, धर दी ।

मेव दे० (पु०) जाति विशेष । [मेवा बेचने वाला ।

मेवती दे० (पु०) मेवात वासी, मेवात का रहने वाला,

मेवाड़ दे० (पु०) राजपूताने का प्रान्त विशेष ।

मेष तत्० (पु०) मेषराशि, पहली राशि, भेड़ा ।

मेह तद्० (पु०) मेघ, घटा, रोग विशेष, मूत्र रोग।
मेहतर दे० (पु०) चूहड़ा, भंगी, अन्त्यज, अस्पृश्य, अछूत।
मेहतरानी दे० (स्त्री०) भङ्गी की स्त्री, भङ्गिन।
मेहना दे० (पु०) ठठोली, खिल्ली, ताना।
मेहमान (पु०) अतिथि।
मेहरा दे० (पु०) नपुंसक, जनाना, हिजड़ा।
मेहन्हा दे० (वि०) ठठोलिया, हँसोड़ा।
मैं (सर्व०) आप।
मैंका (पु०) मां का घर।
मैका दे० (पु०) नैहर, पीहर, स्त्रियों का पितृगृह।
मैत्री तद्० (स्त्री०) मित्रता, बन्धुता, प्रेम, स्नेह।
मैथिली तद्० (स्त्री०) जानकी, सीता, मिथिला देश की स्त्री। [सङ्गम, प्रसङ्ग।
मैथुन तद्० (पु०) स्त्रीसंसर्ग, सुरत, रतिक्रिया,
मैनफल तद्० (पु०) औषध विशेष।
मैना दे० (स्त्री०) एक पक्षी का नाम, सारिका, पार्वती की माता, मैना पक्षी। [का पुत्र।
मैनाक तद्० (पु०) पर्वत विशेष, हिमालय पर्वत
मैमा दे० (स्त्री०) विमाता, सौतेली माता।
मैया दे० (स्त्री०) महतारी, माता, अम्बा।
मैल दे० (स्त्री०) मल, मुर्चा। [मलिन।
मैला दे० (वि०) गंदला, गंदा, अशुद्ध, अपवित्र,
मैहिका दे० (पु०) महिष, भैंस।
मो दे० (सर्व०) मुझ। [रखना।
मोकना दे० (क्रि०) छोड़ना, मेलना, धरना,
मोक्ष तद्० (पु०) मुक्ति, परमानन्द प्राप्ति, कर्मबन्धन का नाश, छुटकाव, छुटकारा।
मोखा दे० (पु०) झरोखा, जंगला, गवाक्ष।
मोगरा दे० (पु०) मुगरा, मुग्दर, पुष्प विशेष।
मोगरी दे० (स्त्री०) मुद्गर, छोटा मुगरा।
मोघ तद्० (पु०) प्राचीर, दीवार, (वि०) निरर्थक, हीन, वृथा, व्यर्थ।
मोच दे० (पु०) लचक।—न तद्० (पु०) उद्धार, उद्धारण, अपहरण।—ना दे० (पु०) चिमटा, सिवटा।—रस तद्० (पु०) गोंद विशेष, सेमल वृक्ष का गोंद।—आधी तद्० (पु०) सेमल का वृक्ष।
मोचा तद्० (पु०) कदली वृक्ष, केले का गाभ।
मोची दे० (पु०) चमार, चर्मकार, जूता बनाने वाली जाति।
मोंछ दे० (स्त्री०) मूछ, मुँह पर का बाल।
मोट दे० (पु०) गठरी, बोझ, भार, चमड़े का डोल।
मोटकी दे० (स्त्री०) कुदारी, मोटी स्त्री।
मोटरी (स्त्री०) पोटरी, छोटी गाँठ।
मोटा दे० (वि०) स्थूल, तुन्दैल।
मोटापा दे० (पु०) स्थूलता, मोटाई। [वाला।
मोटिया दे० (पु०) कुली, भारवाहक, मोटरी ढोने
मोठ दे० (पु०) मोट, गठरी, बोझ।
मोड़ दे० (पु०) बाँक, फेर, घुमाव, मल, ऐंठन।
मोड़ना दे० (क्रि०) फेरना, घुमाना।
मोड़ा दे० (पु०) मुड़ा हुआ, वैरागी, संन्यासी, साधु।
मोढ़ा दे० (पु०) मूढ़, सरकंडे और जेवरी का बना बैठने का ऊँचा आसन, कंधा।
मोतिया दे० (पु०) पुष्प विशेष, बेला का फूल।—बिन्दु (पु०) रोग विशेष, आँख का एक रोग।
मोती तद्० (स्त्री०) मुक्ता, मौक्तिक, रत्न विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध समुद्रीय रत्न।—की सी आब उतारना (वा०) अप्रतिष्ठा होना, अपमान होना, तिरस्कार होना, अनादर होना।—फूट कर भरने (वा०) प्रकाशमान होना, प्रकाशित होना।—पिरोने (वा०) माला गूँथना, मधुरता के साथ बोलना, या लिखना।—चूर (पु०) एक प्रकार की मिठाई का नाम।
मोथन, मोथरा दे० (वि०) कुण्ठित, मोथा।
मोथरी दे० (पु०) घोड़े का रोग विशेष, हड्डा रोग।
मोथा दे० (पु०) एक पौधे की जड़, नागर मोथा।
मोद तद्० (पु०) हर्ष, प्रसन्नता, आह्लाद।
मोदक तद्० (पु०) लड्डू। (वि०) हर्षदाता, हर्षकारक।
मोदी दे० (पु०) परचूनिया, बनिया।
मोधू दे० (पु०) सीधा, भोला, निश्छल, कपट रहित।
मोनी दे० (स्त्री०) नोंक, अस्त्र आदि का अग्र भाग।
मोम दे० (पु०) मधुमल, शहद का कीट।
मोमिया दे० (पु०) औषधि विशेष।

मोर तद्० (पु०) मयूर, पक्षी विशेष, शिखी, केकी। —चङ्ग (पु०) मुरचङ्ग, बाद्य विशेष।—छल (पु०) चमर, एक प्रकार का चँवर।—पङ्खी (स्त्री०) एक प्रकार की नाव।—मुकुट (पु०) मोर पङ्ख का बना मुकुट।

मोरछुति दे० मेरी तरफ़ से, मेरे वास्ते, मेरी पेर, मेरी थी। [निकलने का मार्ग।

मोरी दे० (स्त्री०) पनाला, नाला, मकान, का जल

मोल दे० (पु०) भाव, दाम, मूल्य, किसी वस्तु का दाम।—ठहराना (वा०) दाम लगाना, मूल्य आँकना, निरख ठहराना, दाम ठहराना।—तोल (वा०) भाव, कीमत, दर।—बढ़ाना (वा०) दाम बढ़ाना, भाव चढ़ाना।—लेना (वा०) खरीदना, बिसाहना।

मोषक तद्० (पु०) ठग, लुटेरा, धूर्त्त, चोर, तस्कर।

मोसना दे० (क्रि०) चुराना, ठगना, लूटना।

मोह तद्० (पु०) मूर्च्छा, अज्ञानता, अविद्या, प्यार, माया, अधिक प्रेम, तामसिक प्रेम।—में आना (वा०) प्रिय के मिलने से अचेत होना।

मोहन तद्० (गु०) मोहने वाला, जिसको देखने से आप ही आप मोह उत्पन्न हो, मोहना, वश करना। (पु०) श्रीकृष्ण का नाम।—भोग (पु०) भोजन विशेष, हलुवा, सीरा।—माला (स्त्री०) माला विशेष, सोने और मूँगे के दानों से बनी माला।

मोहना दे० (क्रि०) वश करना, मन हरना, अधीन करना।

मोहनी दे० (स्त्री०) सुहावन, मोहित करने वाली, वश करने वाली, सुन्दरी, लुभावनी।

मोहाना दे० (पु०) मुहाना, संगम स्थान, वेणी।

मोहित तद्० (गु०) मूर्च्छित, अचेत, मुग्ध, मोह प्राप्त। [वेश्या।

मोहिनी तद्० (स्त्री०) सुन्दरी, युवती, रूपवती,

मौ दे० (पु०) मधु, शहद।

मौका (पु०) अवसर, ठीक स्थान।

मौक़ूफ़ (पु०) बंद छुड़ाना, बरखास्त करना।

मौक्तिक तद्० (पु०) मोती, मुक्ता।

मौज (स्त्री०) लहर, तरंग।

मौञ्जी तद्० (स्त्री०) मुञ्जतृण निर्मित मेखला, मूँज की करधनी।—बन्धन (पु०) मुञ्ज मेखला बन्धन, उपनयन, यज्ञोपवीत संस्कार। [किरीट।

मौड़ दे० (पु०) मुकुट, मौर, सिहरा, सिरपेंच,

मौन तद्० (पु०) शब्द प्रयोग शून्यता, अभाषण, अकथन, तूष्णींभाव, चुपचाप।—व्रत (पु०) न बोलने का नियम, अभाषण, चुपचाप रहना।

मौना दे० (पु०) छटका, डलिया, डगरा।

मौनी तद्० (पु०) मौनव्रती, मौनयुक्त, नीरव, तूष्णीभूत, मौन विशिष्ट।

मौमाखी दे० (स्त्री०) मधुमक्षिका।

मौर दे० (पु०) मञ्जरी, बौर, कली, मुकुट, किरीट, वह मुकुट विशेष जो विवाह के समय दूल्हा के सिर पर रखा जाता है। [सित होना।

मौराना दे० (क्रि०) खिलना, प्रफुटित होना, विक-

मौरूसी (पु०) पुश्तैनी, वंशानुगत।

मौर्ख्य तद्० (पु०) मूर्खता, जड़ता, अनभिज्ञता।

मौर्वी तद्० (स्त्री०) धनुष का गुण, रोदा, चिल्ला।

मौलना दे० (क्रि०) वृक्षों में पुष्प लगना, मञ्जरित होना।

मौलवी (पु०) इस्लाम धर्म का ज्ञाता, मालिक।

मौलसिरी दे० (स्त्री०) एक वृक्ष और उसका पुष्प, बकुल, बकुल पुष्प।

मौलाना दे० (पु०) मुसलमानों का धर्मगुरु।

मौलि तद्० (स्त्री०) मस्तक, सिर, भाल, माथा, चूड़ा, चोटी, किरीट, मुकुट, संयत केश, बन्धी हुई चोटी।

मौलिक तद्० (वि०) मूल सम्बन्धी, जड़ का, जड़ की वस्तु। (पु०) कुलीन भिन्न, अकुलीन।

मौली दे० (स्त्री०) मारा, मुकुट, मस्तक।

मौसा दे० (पु०) मौसी का पति, माँ की बहिन का पति, पिता का साढू।

मौसी दे० (स्त्री०) माता की भगिनी, मातृष्वसा।

मौसेरा दे० (वि०) मौसा के सम्बन्ध का।

मौहूर्त्तिक तद्० (पु०) ज्योतिर्वेत्ता, दैवज्ञ, गणक।

म्रदिमा तद्० (स्त्री०) संस्कृत में पुलिङ्ग, मृदुता, कोमलता, नम्रता, नरमाई।

म्रदीयान तद्० (वि०) अतिशय मृदु, अत्यन्त कोमल।

म्रियमाण तद्० (वि०) मृतकल्प, अवसन्न, मृत तुल्य, मृतप्राय ।

म्लान तद्० (पु०) मलिन, शुष्क, विरस, विषादयुक्त, खेदित ।—ता (स्त्री०) म्लानभाव, खेद, विषाद, विषण्णता, अवसन्नता ।—मुख (वि०) उदास, मलिन मुख, विषादयुक्त ।—वदन (पु०) विषण्णमुख, उदासीन मुख ।

म्लानि तद्० (स्त्री०) कान्तिक्षय, विषाद, खेद, शुष्कता, मलिनता ।

म्लिष्ट तद्० (पु०) अस्पष्ट वाक्य, अव्यक्त वचन, अस्फुट स्वर ।

म्लेच्छ तद्० (पु०) अन्त्यज जाति, किरात, शबर, पापरत, वेदाचारहीन जाति ।—देश (पु०) म्लेच्छों के रहने का देश ।

य

य अन्तस्थ यकार, हल का छब्बीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है इस कारण इसको तालव्य कहते हैं ।

य तद्० (पु०) वायु, यश, कीर्ति, योग, यान, गमन,

यक (पु०) यक्ष विशेष ।

यकीन (वि०) निश्चय, भरोसा ।

यकृत् तद्० (पु०) पेट के दाहिने ओर का माँस खण्ड, उदररोग, प्लीहा, आपतिल्ली, पिलही रोग ।

यक्ष तद्० (पु०) देवयोनि विशेष, कुबेर के अनुचर ।—राज (पु०) कुबेर, यक्षों के राजा ।

यक्षिणी (स्त्री०) यक्ष भार्या ।

यक्ष्मा तद्० (पु०) रोग विशेष, क्षयी रोग ।

यजत्र (पु०) अग्निहोत्री ।

यजन तद्० (पु०) याग करण, पूजन, यज्ञ ।

यजमान तद्० (स्त्री०) यज्ञ कर्त्ता, यज्ञानुष्ठान में दीक्षित, व्रती ।

यजाक (वि०) दाता, उदार ।

यजुः तद्० (पु०) वेद विशेष, यजुर्वेद ।

यजुर्वेद तद्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध वेद ।

यजुर्वेदी तद्० (वि०) यजुर्वेदवेत्ता, यजुर्वेदाध्यापक, यजुर्वेद के अनुसार काम करने वाला ।

यज्ञ तद्० (पु०) याग, अध्वर, मख, क्रतु, जाग, होम, हवन ।—अंश (पु०) यज्ञ की हवि, यज्ञ भाग ।—कुण्ड (पु०) यज्ञ करने के लिये चौकोना बना हुआ गर्त ।—देव तद्० (पु०) यज्ञ के देवता, विष्णु, नारायण ।—पशु (पु०) वह पशु जिसके माँस से यज्ञ किया जाय । -पुरुष (पु०) विष्णु, पुरुषोत्तम, नारायण ।—वेदी (स्त्री०) यज्ञ के लिये साफ़ की हुई भूमि ।

—भाजन (पु०) यज्ञार्थ पात्र, यज्ञ के बर्तन ।

—भूमि (स्त्री०) यागस्थान, यज्ञस्थल, यज्ञशाला ।

—सूत्र (पु०) यज्ञोपवीत, जनेऊ ।

यज्ञाङ्ग तद्० (पु०) गूलर का वृक्ष, खदिर वृक्ष ।—ा (स्त्री०) सोमवल्ली, गूलर ।

यज्ञान्त (पु०) यज्ञ का अन्त, यज्ञ के अन्त का स्नान ।

यज्ञारि (पु०) शिव, त्रिपुरारि ।

यज्ञिक (पु०) पलाश वृक्ष ।

यज्ञीय (पु०) उदुम्बर वृक्ष, यज्ञ सम्बन्धी ।

यज्ञेश्वर (पु०) विष्णु ।

यज्ञोपवीत तद्० (पु०) यज्ञसूत्र, ब्रह्मसूत्र, जनेऊ, बरुआ ।

यज्वा तद्० (पु०) वेद विधि पूर्वक यागकर्त्ता, यज्ञमान, याज्ञिक ।

यतन तद्० (पु०) यत्न, उपाय, चेष्टा, उद्योग ।

यत् दे० (अ०) जितना, जहाँ तक, जो, जिसका, जीता हुआ मुर्दा ।—चान्द्रायण (पु०) व्रत विशेष ।

यति तद्० (पु०) जितेन्द्रिय, संन्यासी, परिव्राजक ।

यतन दे० (पु०) उपाय, उद्योग, तदबीर, बंदोबस्त ।

यतः (अ०) यस्मात्, चूँकि ।

यतनी तद्० (स्त्री०) यत्न करने वाला, उद्योगी, परिश्रमी ।

यतीम (पु०) अनाथ, मातृ पितृ-हीन ।

यत्किञ्चित् तद्० (अ०) थोड़ा बहुत, जो कुछ ।

यत्न तद्० (पु०) यतन, उपाय, उद्योग, चेष्टा ।

यत्नी तद्० (वि०) यतन करने वाला, खोजी, अनुसन्धानी ।

यत्नवान् (वि०) देखो यत्नी ।

यत्र तद्० (अ०) जहाँ, जिस स्थान पर, जिस स्थान में ।—तत्र (अ०) यहाँ वहाँ ।

यथा तत्० (अ०) जैसा, ज्यों, जिस प्रकार, जिस रीति।—कथञ्चित (अ०) जिस किसी प्रकार से, बड़े कष्ट से, बड़े परिश्रम से।—काल (पु०) यथा समय, उपयुक्त समय, उचित काल, समयानुसार।—क्रम (पु०) क्रमानुरूप, आनुपूर्विक, क्रमशः।—तथा (अ०) जैसा तैसा, ज्यों त्यों।—योग्य (पु०) यथोचित, जैसा उचित।—र्थ (वि०) [यथा+अर्थ] ठीक, सत्य, उचित। (अ०) विधिवत्, यथायोग्य, व्यवस्था के अनुसार, रीति के अनुसार।—विधि (वि०) विधिपूर्वक, विधि के अनुसार।—शक्ति (वि०) सामर्थ्यानुसार, अपने बल के अनुसार।—शास्त्र (वि०) शास्त्रानुसार, शास्त्रानुकूल।—सम्भव (वि०) जैसा होने योग्य, जहाँ तक हो सके।—साध्य (वि०) साध्यानुसार, यथाशक्ति।—स्थित (वि०) सत्य, यथार्थ, निश्चित।

यथागत (अ०) सम्पूर्ण, समाप्त, सब। [मनोरथ।

यथेच्छा तत्० (स्त्री०) यथेच्छ, इच्छानुसार, जैसा

यथेष्ट तत्० (वि०) इच्छानुसार, यथेच्छ, इच्छानुरूप, प्रचुर, अधिक। [कथित।

यथोक्त तत्० (वि०) पूर्वकथित, पूर्वयुक्त, पहले

यथोचित तत्० (गु०) यथा योग्य, जैसा उपयुक्त, उत्तम मत।

यदपि (अ०) यद्यपि।

यदवधि तत्० (अ०) जब से, जिस काल से, अब तक।

यद् (वि०) जो।

यदा तत्० (अ०) जब, जिस काल में।

यदि तत्० (अ०) पक्षान्तर, सम्भावनार्थ, यद्यपि।

यदीय (वि०) जिसका।

यदु (पु०) राजा विशेष।—कुल (पु०) यदुवंश, यदुवंशी राजा, घराना विशेष।—नाथ (पु०) श्रीकृष्ण।—वंश (पु०) यदुराज का घराना।—वंशी (पु०) यदु के वंश के लोग।

यदृच्छा (स्त्री०) जैसी इच्छा हो।

यद्यपि तत्० (अ०) जो भी। [श्चित, अनियमित।

यद्वा तद्वा तत्० (पु०) ऐसा वैसा, भला बुरा, अनि-

यन्त्र तत्० (पु०) कल, देवताओं का अधिष्ठान, पात्र विशेष, नियन्त्रण, युक्ति पूर्वक शिल्प आदिकर्म करने के लिये पदार्थ विशेष, अग्नि यन्त्र, दारु यन्त्र आदि, कोठक, टुटका।

यन्त्रणा तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, क्लेश।—दायक (गु०) क्लेशदायक, दुःखदायक। [हुआ।

यन्त्रित तत्० (गु०) नियमित, रोका हुआ, बंधा

यन्त्री तत्० (पु०) बीनकार, यन्त्र विशिष्ट।

यम तत्० (पु०) यमराज, काल, अन्तक, सूर्यपुत्र।—स्वसा (स्त्री०) यमुना।

यमक तत्० (पु०) शब्दालङ्कार विशेष, इस अलङ्कार के उदाहरण में एक ही शब्द की दो दो तीन तीन बार आवृत्ति होती है यथा—

"भिन्न अरथ फिरि फिरि जहाँ वेई अच्छर वृन्द,
आवत हैं सो यमक कहि परनत बुद्धि बिलन्द"।
शिवराज भूषण।

यमदूत तत्० (पु०) यमराज का गण, यम का सन्देश, मृत्यु का लक्षण।

यमज (वि०) जोड़ा, एक साथ जन्मे दो।

यमधार तत्० (पु०) कटार, शस्त्र विशेष।

यमन तत्० (पु०) यवन, मुसलमान, राग विशेष।

यमनिका तत्० (स्त्री०) कनात, परदा।

यमनी (वि०) यमन देश का।

यमल तत्० (पु०) जोड़ा, युग्म, दो।

यमलार्जुन तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, कहते हैं कुबेर के दोनों लड़के वेश्याओं के साथ गङ्गा में नङ्गे स्नान करते थे। अभाग्यवश नारद वहाँ आ पहुँचे, उन्होंने इस अनीति को देख कर कुबेर के बेटों को शाप दिया कि तुम दोनों वृक्ष हो जाओ, नारद के शाप से वे दो वृक्ष हो गये। पुनः भगवान् कृष्ण ने इनको नारद जी के शाप से उबारा।

यमुना (स्त्री०) जमुना नदी।—भ्राता (पु०) यमराज।

यजाफैल तत्० (वि०) बिथरा, पसरा, फैला।

यव तत्० (पु०) अन्न विशेष, जौ।—क्षार (पु०) लवण विशेष, शोरा।

यवन तत्० (पु०) यमन, मुसलमान।

यवनिका (स्त्री०) देखो "यमनिका"।

यवशा (स्त्री०) अजवाइन।

यवस (पु०) तृण, घास।

यवागू (पु०) रोगी का खाद्य विशेष।

यवीयस (वि०) छोटा, युवा।
यश तद्० (पु०) कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि, नाम, नामवरी।—स्कर (वि०) कीर्तिकारक।
यशस्वी तद्० (वि०) कीर्तिमान्, सुख्यात, लब्ध प्रतिष्ठ।
यशोदा तद्० (स्त्री०) नन्दपत्नी, श्रीकृष्ण की माता।
यष्टि, यष्टिका तद्० (स्त्री०) लाठी, लकड़ी, छड़ी।
यह दे० (सर्व०) निश्चयवाचक सर्वनाम।
यहाँ दे० (अ०) इधर, इस ठौर, इस स्थान पर। —का यहीं (वा०) ठीक इसी स्थान।
या (सर्व०) यह। (अव्य०) वा, है।
याग तद्० (पु०) यज्ञ, होम, हवन।
याचक तद्० (पु०) याचक, भिक्षुक, मँगता, भिखारी, फ़क़ीर।
याचना दे० (क्रि०) भीख माँगना।
याजक तद्० (पु०) याज्ञिक, ऋत्विक, पुरोहित।
याजन तद्० (पु०) याजक का कर्म, यज्ञ कराना।
याज्ञिक तद्० (पु०) यज्ञ करने वाला।
यातना तद्० (स्त्री०) साँसत, दरद, पीड़ा, दुःख, तीव्र वेदना, अधिक कष्ट।
यातायात तद्० (पु०) आवागमन, गमनागमन।
यातुधान तद्० (पु०) राक्षस, निशाचर, दैत्य।
यात्रा तद्० (स्त्री०) कूच, प्रस्थान।
यात्री तद्० (पु०) परदेशी, तीर्थ करैया, मुसाफ़िर।
याथार्थिक तद्० (वि०) वास्तविक, ठीक, सत्य।
याथार्थ्य तद्० (पु०) सत्यता, सचाई, यथार्थता।
याद (पु०) सुध, स्मरण।—व (पु०) श्रीकृष्ण।
यान तद्० (पु०) सवारी, वाहन।
यानी (अव्य०) अर्थात्।
यापन तद्० (पु०) निर्वाह, कालक्षेप, समय बिताना, काल काटना।
याबू दे० (पु०) टाँगन, टट्टू।
यावक तद्० (पु०) महावर, लाल रङ्ग, लाख।
याम (पु०) पहर, प्रहर, संयम।—घोष (पु०) मुर्गा।—ता (पु०) जामाता।
यामि (स्त्री०) धर्मपत्नी।
यामिनी तद्० (स्त्री०) रात, रात्रि, निशा, रजनी।
यामुना (पु०) सुरमा, अंजन।
याम्य (पु०) चन्दन का पेड़, अगस्त्य मुनि।
यावदर (पु०) अस्त्रविशेष जो शरक्षेप में काम आता है। यथोचित भीख।
यार (पु०) मित्र, दोस्त।
यारान (पु०) यारी, दोस्ती।
यावज्जीवन तद्० (पु०) यावदायुः, जीवन पर्यन्त।
यावत् तद्० (अ०) जब तक, जब लग, जहाँ तक।
यावनी (स्त्री०) यवनों की।—भाषा (स्त्री०) यवनों की भाषा।
याही (सर्व) इसे, इसको।
यियुत्सु (वि०) युद्ध करने की इच्छा रखने वाला।
युक्त तद्० (वि०) मिलित, सहित, समेत। (पु०) उचित, योग्य, यथार्थ।
युक्ति तद्० (स्त्री०) मिलना, मेल, योग्यता, प्रवीणता, चतुराई, चतुरता, हथौटी, विवेचना।
युग तद्० (पु०) दो, युग्म, जोड़ा, जुग, सत्य त्रेता आदि चार युग, वृद्धि नामक औषध, चार हाथ, रथ, हल आदि का अङ्ग विशेष, जुआठ, जुआ।—धर्म (पु०) काल का धर्म, कालमाहात्म्य।—पत् (अ०) एकदा, एक कालीन, एक समय।
युगल तद्० (पु०) दो, जोड़ा।—मन्त्र (पु०) लक्ष्मीनारायण का मन्त्र, दो देवता का मन्त्र।
युगान्त तद्० (पु०) प्रलय, युगशेष, युग का अवसान।
युग्म तद्० (पु०) दो जोड़ा, युग, द्वन्द्व।—पत्र (पु०) रक्तकाञ्चन वृक्ष।—पर्ण (पु०) कोविदारवृक्ष, सप्तपर्ण वृक्ष।
युञ्जान (पु०) गाड़ीवान्, सारथी। योग्य।
युज्यमान तद्० (वि०) युक्त होने के उपयुक्त, मिलने
युञ्जान तद्० (पु०) सूत, सारथि, विप्र, ध्यान के द्वारा सब बातों को जानने वाला योगी।
युत तद्० (वि०) मिलित, अनुगामी, एकत्र, विशिष्ट, सहित (पु०) हस्तचतुष्टय, चार हाथ।
युद्ध तद्० (पु०) लड़ाई, संग्राम, समर, विवाद।—निदेश (पु०) युद्ध की आज्ञा, युद्ध का सन्देश।—सज्जा (स्त्री०) युद्ध की तैयारी।
युधाजित् (पु०) भरत के मामा का नाम।
युधामन्यु (पु०) क्षत्रिय जाति। पाण्डव।
युधिष्ठिर तद्० (पु०) पाण्डुपुत्र, धर्मराज, अजातशत्रु, ज्येष्ठ

युयु (पु०) घोड़ा, अश्व। [नाम।
युयुत्सु (पु०) योद्धा, सिपाही, धृतराष्ट्र का दूसरा
युवक तद्० (पु०) तरुण, जवान, नवीन, युवा। [स्त्री।
युवती तद्० (स्त्री०) यौवनवती, तरुणी, युवावस्था वाली
युवन (वि०) युवा। [का उत्तराधिकारी।
युवराज तद्० (पु०) राजा का बड़ा लड़का, राज्य
युवा तद्० (पु०) जवान, तरुण, यौवन अवस्था वाला।
युष्मद् (सर्व०) तू, तुम।
यूँ दे० (अ०) ऐसा, इस प्रकार।
यूँही (अव्य०) इसी तरह।
यूक (पु०) जूँ, मत्कुण, खटमल।
यूथ तद्० (पु०) सजातीय समूह, झुन्ड।—नाथ (पु०) अकेला हाथियों के मध्य में श्रेष्ठ हाथी। —प (पु०) सेनापति, दल का प्रधान।—भ्रष्ट (पु०) समूह से निकला हुआ व्यक्ति।
यूथी (स्त्री०) जुही।
यूप तद्० (पु०) यज्ञस्तम्भ, खम्भा।
यूष तद्० (पु०) जूस, पथ्य विशेष।
योग तद्० (पु०) सामादि चतुर्विध उपाय, सङ्गति, युक्ति, चित्तवृत्तिनिरोध, विषयान्तर से मन की निवृत्ति, मेल, संयोग।—ज (पु०) अलौकिक सन्निकर्ष। (वि०) योगसम्बन्धी।—निद्रा ध्यान।—पट्ट (पु०) ध्यान करते समय पहिनने का कपड़ा।—भ्रष्ट (वि०) योग से गिरा हुआ।——माया (स्त्री०) महामाया, पार्वती।—रूढि (स्त्री०) शब्द विशेष।—रूढ (स्त्री०) योगी।
योगिनी तद्० (पु०) भूतनी, पिशाचिनी, डाकिनी।
योगी तद्० (पु०) योगसाधक, तपस्वी।
योगेश्वर तद्० (पु०) सिद्ध, तपस्वी, योगी।
योग्य तद्० (पु०) उपयुक्त, उचित, यथार्थ।—ता (स्त्री०) निपुणता।
योजक (पु०) मिलाने वाला, दलाल।
योजन तद्० (पु०) चार कोस का परिमाण।—गन्धा (स्त्री०) कस्तूरि।
योजना तद्० (स्त्री०) विन्यास, मिलाप, योग्य का योग्य के साथ विन्यास करना।
योद्धा तद्० (पु०) शूर, वीर, लड़ने वाला, सैनिक, सिपाही।
योधन तद्० (पु०) युद्ध, लड़ाई, संग्राम।
योधा (पु०) देखो योद्धा।
योधापन दे० (पु०) वीरता, शूरता।
योनि तद्० (स्त्री०) स्त्रीचिन्ह, भग, उत्पत्ति स्थान।
योषित् तद्० (स्त्री०) नारी, स्त्री, अबला, बाला।
यौं दे० (अ०) इस प्रकार, ऐसा, इस रीति।
यौतिक तद्० (पु०) ज्योतिष, अङ्क विद्या, गणित।
यौतुक तद्० (पु०) दहेज, दायजा।
यौधेय (पु०) योद्धा।
यौवन तद्० (पु०) जवानी, तरुणाई, यौवनावस्था। —लक्षण (वि०) लावण्य, खूबसूरती।
यौवनाश्व (पु०) मान्धाता राजा का नाम।
यौवराज्य (वि०) युवराजपद।
यौरसना (स्त्री०) रसिकवाली रात।

र

र यह व्यञ्जन का सत्ताइसवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इससे यह अक्षर मूर्द्धन्य कहा जाता है।
र तद्० (पु०) अग्नि, कामाग्नि। (वि०) तीक्ष्ण।
रई दे० (स्त्री०) मथनी, बिलोनी।
रईस (पु०) धनी, राजा।
रँस तद्० (स्त्री०) रश्मि, किरण, दीप्ति।
रँहट, रहट दे० (पु०) जल निकालने का यन्त्र।
रँहस (वि०) शीघ्रता, तेज़ी।
रकबा (पु० क्षेत्रफल, विस्तार।
रक़म (पु०) तादाद, तहरीर।
रकाब (स्त्री०) घोड़े की काठी का पायदान।
रकाबी (स्त्री०) तश्तरी।
रक्त तद्० (पु०) रुधिर, लोहू, शोणित, कुँकुम, केशर। (वि०) रक्त वर्ण, लाल रंग।—कोढ (पु०) रक्त कुष्ट, कुष्ट रोग विशेष।—द्रु (पु०) लोध वृक्ष।—चन्दन (पु०) लाल चन्दन, देवी चन्दन।—चूर्ण (पु०) सिन्दूर।—पा (स्त्री०)

जोंक, जलौका।—पात (पु०) हत्या, रुधिरपात लोहू का गिरना।—पित्त (पु०) रक्तस्राव रोग। —बीज (पु०) एक राक्षस का नाम, यह राक्षस शुम्भ निशुम्भ का सेनापति था। यह दुर्गा के हाथ से मारा गया।

रक्ताकार (पु०) मूँगा, प्रवाल।

रक्ताक्ष (पु०) भैंसा, चकोर, कोकिल, सारस, कबूतर, लाल नेत्रवाला।

रक्तार्क (पु०) मदार, अकौआ।

रक्तिका (स्त्री०) घुघची।

रक्तोत्पल (पु०) लालकमल, शाल्मली वृक्ष।

रक्षक तत्० (पु०) रक्षा करने वाला, पालने वाला, पालक, उद्धारकर्त्ता, स्वामी, प्रभु।

रक्षण तत्० (पु०) रक्षा, पालन, पोषण। [नीच।

रक्षस् तत्० (पु) राक्षस, निशाचर, सत्कर्म द्वेषी,

रक्षा तत्० (स्त्री०) बचाव, बचाना, रखवाली करना, राख, भस्म।—पेक्षक (पु०) [रक्षा+अपेक्षक] द्वारपाल, डेवढ़ीदार, सिपाही, दरबान।

रक्षित तत्० (गु०) रक्खा हुआ, रक्षा किया हुआ।

रख छोड़ना दे० (क्रि०) धरना, रखना, सौंपना, अर्पण करना। [करना।

रख देना दे० (क्रि०) धारना, रखना, टिकाना, स्थापित

रखना दे० (क्रि०) त्यागना, सौंपना, सौंनना।

रखवाना दे० (क्रि०) धराना, सौंपाना, अर्पित करना।

रखवाला दे० (पु०) रक्षक, रक्षा करने वाला, गड़रिया, चरवाहा।

रखवाली दे० (स्त्री०) रक्षा, रखाई, ख़बरदारी।

रखिया दे० (पु०) रक्षा, बचाव, रखवारी, रखाई।

रखी दे० (स्त्री०) रक्षा का कर।

रखैया दे० (पु०) रक्षक, रखवारा, रक्षा करने वाला।

रग दे० (स्त्री०) शिरा, नाड़ी, नस।

रगड़ दे० (स्त्री०) संघर्षण, घिसाव।

रगड़ना दे० (क्रि०) घोंटना, मलना, घिसना।

रगड़ा दे० (पु०) झगड़ा, घिसाव, बलात्कार से लड़ाई।—झगड़ा (वा०) लड़ाई, दंगा, बखेड़ा, फसाद।

रगेद (स्त्री०) खदेर।

रगेदना दे० (क्रि०) खदेरना, भगाना, पीछा करना।

रङ्क, रंक दे० (पु०) कङ्गाल, दरिद्र, कृपण।

रघु तत्० (पु०) एक सूर्यवंशी राजा। राजा दिलीप का पुत्र। इन्हींके वंश में श्रीरामचन्द्र ने अवतार लिया था।—नन्दन (पु०) श्रीरामचन्द्र।—नाथ (पु०) श्रीराम।—पति (पु०) श्रीराम, रघुनाथ।—राज (पु०) श्रीराम, रीवाँ के एक राजा।—वंश (पु०) रघुकुल, काव्य विशेष, कालिदास का बनाया एक काव्य।—वर (पु०) रघुश्रेष्ठ, श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ।

रङ्ग, रंग तत्० (पु०) वर्ण, शौक, रीति, ढंग।—उड़ जाना (वा०) रंग बदल जाना, रंग फीका पड़ना।—उतर जाना (वा०) पीला होना, रंग फीका पड़ना, सोच में होना, कुढ़ना, पछताना।—करना (वा०) खुशी करना, विलसना, समय को आनन्द में बिताना।—चढ़ना (वा०) मद में चूर होना।—देखना (वा०) परिणाम देखना, निष्पत्ति देखना।—नाथ तत्० (पु०) भगवान् विष्णु की मूर्त्ति विशेष जो दक्षिण देश में है। यह श्रीवैष्णवों का प्रधान पवित्र स्थान है।—बरंग (पु०) अनेक रंग का, चित्र विचित्र, भाँति भाँति।—बिगड़ना (वा०) किसी की दशा बिगड़ना, रंग उतरना।—भङ्ग (पु०) आनन्द में विघात होना, आनन्द में खेद।—भूमि (स्त्री०) नाट्यशाला, नाटक खेलने का स्थान।—महल (पु०) आनन्द करने का महल, विलास करने का महल।—मारना (वा०) खेल जीतना।—रलिया (स्त्री०) आनन्द, हर्ष, हुलास, भोग विलास।—रस (पु०) आनन्द, हर्ष।—रातना (पु०) अति गहिरे मित्रता।—राचा (वा०) रंगा हुआ, प्रमत्त, आनन्द।—रूप (पु०) आकार प्रकार, रंग ढंग, चमक दमक।—लगाना (वा०) रंगना, अपना अधिकार जमाना, प्रभाव विस्तार करना।—साजी दे० (स्त्री०) चित्रकारी, रंग चढ़ाने का काम।

रङ्गना, रंगना दे० (क्रि०) रंग करना, रंग चढ़ाना।

रङ्गवाई रंगवाई दे० (स्त्री०) रंगने का काम, रंगने की मजूरी।

रङ्गवैया, रंगवैया दे० (पु०) रंगरेज़ारा, रंगकार, रंग करने वाला।
रङ्गाई, रंगाई दे० (स्त्री०) रंगने का पैसा, रंगवाई।
रङ्गाना, रंगाना दे० (क्रि०) रंगवाना, रंगवाना।
रङ्गावट, रंगावट दे० (स्त्री०) रंगाई, रंगाई देना।
रङ्गी, रङ्गीला रंगी, रंगीला दे० (पु०) रसीला, रसिक, मौजी छैला, चमकीला।
रचक तद्० (पु०) रचना करने वाला, निर्माता। (स०) योद्धा, स्वरूप, बनावट, सजाने वाला, सजैया।
रचना तद्० (स्त्री०) बनावट, सजावट।
रचयिता (पु०) निर्माता, रचने वाला।
रचाना दे० (क्रि०) बनाना, सजाना।
रज तद्० (स्त्री०) धूलि, पराग, रेत।
रजस (स्त्री०) धूल, पराग, रेत।
रजक तद् (पु०) धोबी, कपड़े धोने वाला।
रजत तद्० (पु०) चाँदी, रूपा, रौप्य।—द्युति (पु०) गौरवर्ण, श्वेत वर्ण।
रजन तद्० (पु०) राग उत्पादन, रंगना, रंग चढ़ाना।
रजनि, रजनी तद्० (स्त्री०) रात्रि, रात, यामिनी। —कर (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र।—चर (पु०) राक्षस, असुर, निशाचर, भूत।—जल (पु०) तुषार, ओस, नीहार, कुहार, कुहेसा।—मुख (पु०) प्रदोष, सन्ध्याकाल।
रजधानी तद्० (स्त्री०) राजधानी, राजा के रहने का [स्थान।
रजवाड़ा दे० (पु०) राज्य, राजसमूह, राजपूताना।
रजस्वला तद्० (स्त्री०) ऋतुमती स्त्री।
रजाई दे० (स्त्री०) आज्ञा, आयसु, रज़ा, हुक्म, छुट्टी, मोहलत।
रज़ाई (स्त्री०) शीतकाल में ओढ़ने का कपड़ा विशेष।
रज़ामंदी (स्त्री०) प्रसन्नता खुशी अनुमति।
रजाय दे० (पु०) आज्ञा, अनुशासन।
रजायसु दे० (पु०) राजाज्ञा, राजा का आदेश।
रजोगुण तद्० (पु०) प्रकृति के त्रिविध गुणों में का एक गुण।
रजोवती तद्० (स्त्री) रजस्वला ऋतुमती।
रज्जु तद्० (स्त्री०) सूत रस्सी, डोरी, जेवरी।
रञ्जक तद्० (पु०) चित्रकार, रंगसाज़, रंग चढ़ानेवाला।
रञ्जन तद्० (पु०) रंगसाज़ी, चित्रकारी।
रटन दे० (पु०) बोलना, रटना, एक बात को कई बार कहना।
रटना दे० (क्रि०) बराबर बोलते रहना, कई बार बोलना, दोहराना चिल्लाना।
रण तद्० (पु०) युद्ध, लड़ाई, संग्राम, समर। —गढ़ा (पु०) गढ़, खाईं, मोर्चाबन्दी।—भूमि (स्त्री०) समरभूमि, युद्धभूमि, रणक्षेत्र, रणखेत।—वास (पु०) महल, रानियों के रहने का स्थान।
रथित तद्० (वि०) रथित, बजता हुआ।
रण्ड (पु०) रँड़, रँडी। [स्त्री, अशुद्धाशिनी, विधवा स्त्री।
रण्डा तद्० (स्त्री०) राँड़, विधवा, बिना पति की
रण्डापा, रंडापा दे० (पु०) वैधव्य, विधवापन।
रण्डिया, रंडिया दे० (स्त्री०) रांड़, विधवा स्त्री।
रण्डी, रंडी दे० (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, दुराचारिणी।
रण्डुआ दे० (पु०) वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो।
रत तद्० (पु०) मैथुन, कामकेलि, स्त्रीप्रसङ्ग। (वि०) आसक्त, तल्लीन।—जगा (पु०) रात्रि जागरण। —नाजिन् (पु०) लम्पट, कामुक, मड्डुआ, परस्त्रीगामी।—नाजी (स्त्री०) कुटनी, पुंश्चली।
रतन तद्० (पु०) रत्न, हीरा आदि रत्न।
रतनार दे० (वि०) लाल वर्ण का, लाल रंग का।
रतमिया दे० (पु०) एक प्रकार का चावल।
रतवाही दे० (स्त्री०) सुरैतिन, रखी हुई स्त्री (अ०) रात दो रात, रातोंरात।
रताना दे० (क्रि०) कामातुर होना।
रतायनी (स्त्री०) वेश्या, रंडी।
रतालू दे० (पु०) एक प्रकार का मूल।
रति (स्त्री०) रत्ती, आठ चावल की तौल।
रती दे० (स्त्री०) प्रीति, प्रेम, क्रीड़ा, स्त्री सङ्ग, कामदेव की स्त्री।—पति (पु०) कामदेव, कन्दर्प, अनङ्ग।
रतीसमजना दे० (वा०) बढ़ना, फलना, फूलना, भाग्यवान् होना।
रतीवन्त दे० (वि०) भाग्यवान्, प्रारब्धी।
रतौंधा दे०(पु०) वह पुरुष जिसे रतौंधी का रोग हो।

रतौंधी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, वह रोग जिसके होने से रात में न देख पड़े।
रत्ती दे० (स्त्री०) सौत्र विशेष, आठ यव का तौल।
रत्न तद्० (पु०) मणि, बहुमूल्य पत्थर।—कन्दल (पु०) मूँगा, प्रवाल, विद्रुम।—गर्भ (पु०) समुद्र, सागर। (स्त्री०) पृथिवी, भूमि, धरती। —जटित (वि०) रत्नखचित, रत्नभूषित, जिसमें रत्न जड़े हों।—जोत (पु०) एक प्रकार का पौधा, आँख की औषध।—माला। (स्त्री०) रत्नों की बनी माला, मोती की माला।—सानु (पु०) देवालय, देवलोक, सुमेरु पर्वत। —सिंहासन (पु०) राजसिंहासन, रत्नों से जड़ा हुआ सिंहासन। (स्त्री०) मेदिनी, पृथिवी।
रत्नाकर तद्० (पु०) महोदधि, सागर, समुद्र।
रत्नावली तद्० (स्त्री०) रत्नों की माला, रत्न श्रेणि, एक नाटिका का नाम, जिसे राजा श्रीहर्ष ने बनाया था।
रथ तद्० (पु०) गाड़ी, वहल।—कार (पु०) रथ बनाने वाला, बढ़ई, वर्णसङ्कर जाति विशेष, माहिष्य जाति के पुरुष से करण जाति की कन्या में उत्पन्न सन्तान को रथकार कहते हैं।—गर्भक (पु०) शिविका, पालकी।—गुप्ति (स्त्री०) रथ का परदा, ओहार।—पाद (पु०) पहिया, चाका।—वान (पु०) सारथी, रथवाह, रथ हाँकने वाला।—वाहक (पु०) सारथी, रथवान, यन्ता।
रथाङ्ग तद्० (पु०) [रथ+अङ्ग] पहिया, चक्र, [चक्का।
रथी तद्० (पु०) सवार, रथ पर चलने वाला, रथ का स्वामी।
रथ्या तद्० (स्त्री०) गली, मार्ग, राह, बाट, डगर।
रद, रदन तद्० (पु०) दाँत, दशन, दन्त, निष्प्रयोजन। उच्छिष्ट, उगार, उगाल, छाट, कै।—च्छद (पु०) श्रोष्ठ, अधर, ओठ।
रद्दा दे० (पु०) भीत की परत।
रद्दी दे० (स्त्री०) निकम्मा पुराना काग़ज़।
रन तद्० (पु०) रण, युद्ध, संग्राम, समर।—गढ़ (पु०) छावनी, शिविर।—बन (पु०) महावन, भयानक वन।—वास (पु०) रानियों के रहने का स्थान।

रन्तिदेव तद्० (पु०) चन्द्रवंशी राजा विशेष।
रन्धना दे० (क्रि०) पकना, चुरना, सीझ जाना।
रन्ध्र तद्० (पु०) छिद्र, छेद, बिल।
रपट, रपटन दे० (स्त्री०) फिसलन, खिसकन।
रपटना दे० (क्रि०) फिसलना, गिरना, खिसकना।
रपटा दे० (पु०) अभ्यास, बान, स्वभाव।
रपटाना दे० (क्रि०) दौड़ना, भगाना, कुदाना।
रफूचक्कर (क्रि०) भाग जाना।
रफूगर (पु०) फटे कपड़ों की मरम्मत करनेवाला।
रबड़ दे० (स्त्री०) श्रम, थकाई, थकावट, दौड़ धूप, एक वृक्ष का दूध। [थकना श्रम करना।
रबड़ना दे० (क्रि०) व्यर्थ दौड़ धूप करना, भटकना,
रबड़ा दे० (वि०) श्रान्त, थका। [औटा दूध।
रबड़ी दे० (स्त्री०) बसौंधी, मीठा डाल कर
रबी (पु०) मार्च, अप्रैल में काटी जानेवाली अनाज की फसल।
रम (स्त्री०) मदिरा विशेष। [भृत्य, चाकर।
रमचेरा दे० (पु०) गुलाम, किङ्कर, नौकर, सेवक,
रमठ (पु०) हींग।
रमण तद्० (पु०) [रम्+अनट्] चित्त विनोद, क्रीड़ा, खेल, विहार, साथियों के साथ क्रीड़ा।
रमणी तद्० (स्त्री०) मनोहारिणी स्त्री, सुन्दरी स्त्री, ललना, महिला।
रमणीक तद्० (वि०) मनभावन, मनोहर, सुन्दर।
रमणीय तद्० (वि०) मनोहर, सुन्दर, सुघड़।
रमन दे० (पु०) खेल, क्रीड़ा, कौतुक, विहार।
रमना दे० (क्रि०) रमण करना, खेलना, कूदना।
रमन्ना दे० (पु०) आने या भीतर घुसने की परवानगी का पत्र, गमन। [अङ्क विशेष, प्रश्न शास्त्र।
रमल तद्० (पु०) विदेशी फलित, ज्योतिष शास्त्र का
रमा तद्० (स्त्री०) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी।—पति (पु०) विष्णु।
रमाना दे० (क्रि०) लिवाना, फुसलाना, बहकाना।
रम्भा तद्० (स्त्री०) स्वर्गाङ्गना विशेष, एक अप्सरा का नाम, केला, कदली।
रम्या तद्० (स्त्री०) रात्रि,सुन्दरी, मनोहारिणी, पद्मिनी।
रय तद्० (पु०) वेग, प्रवाह, धारा।
रयो (क्रि०) मिले, रंगे।

रसना (क्रि०) घोलना।

रलाना (क्रि०) मिलाना, बिगना, मिलना, साधाक्कार करना।

रलाना दे० (क्रि०) मिलाना, सींचना।

रल्जक तद्० (पु०) कमज, पसमीने का कपड़ा।

रव तद्० (पु०) शब्द, ध्वनि, नाद, निनाद, आहट।

रवन्ना दे० (पु०) रनवास का सेवक चूंटी को बीच।

रवा दे० (पु०) छोटे छोटे कण, चूर, चूरा, बालू।

रवि तद्० (पु०) सूर्य, मार्तण्ड, दिवाकर।—कर सूर्य की किरण।—तनया (स्त्री०) यमुना नदी।—नन्दिनी (स्त्री०) यमुना नदी।—पुत्र (पु०) कर्ण, सुग्रीव, यमराज, शनैश्चर।—मणि (पु०) सूर्यकान्तमणि, आतिशी शीशा।—मण्डल (पु०) सूर्यमण्डल, सूर्यलोक।—वार आदित्यवार, अतवार, इतवार।

रविक (पु०) नीम का वृक्ष।

रविज (पु०) शनिश्चर ग्रह, यम, वैवस्वतमनु।

रश्मि तद्० (स्त्री०) किरण, तेज, कान्ति, मयूख, रास, घोड़े की बागडोर।

रस तद्० (पु०) विषय, जल, प्रेम, स्वाद, सवाद, अर्क, सार, निष्कर्ष, भोजन के छ रस, शृङ्गार हास्य आदि नव रस, पारा, मेल, मिलाप भस्म, औषधियों का भस्म।—रस (अ०) धीरे धीरे।—ज्ञ (पु०) रसिक, रसज्ञाता, रस समझने वाला।—ज्ञा (स्त्री०) जीभ, रसना।—राज (पु०) पारा धातु, मतिरामकृत काव्यग्रन्थ।

रसद (पु०) सेना आदि के भोजन की सामग्री।

रसन तद्० (पु०) स्वाद, चोखना। (स्त्री०) लहसन, कन्द विशेष।

रसना तद्० (स्त्री०) रसज्ञा, जीभ, जिह्वा।

रसनेन्द्रिय (पु०) जिह्वा, जीभ, ज़बान।

रसमसा दे० (वि०) भीगा भींगा, आर्द्र, गीला।

रसमसाना दे० (क्रि०) भींगना, आर्द्र होना पसीजना। [खींचा जाता है।

रसरा दे० (पु०) डोरी, मोटी रस्सी जिससे पानी

रसरी दे० (स्त्री०) रस्सी।

रसवत दे० (स्त्री०) रसौत [illegible]।

रसवती तद्० (स्त्री०) [illegible], सुशीला।

रसा तद्० (स्त्री०) पृथिवी, भूमि, पातकी, अरवी।

रसाञ्जन तद्० (पु०) काजल, सुर्मा।

रसातल तद्० (पु०) पृथिवी तल, अधोलोक विशेष, सातवाँ लोक, बलिराज का लोक।

रसाना दे० (क्रि०) जोड़ना, मिलाना, संयुक्त करना।

रसायन तद्० (पु०) कीमिया, रस विशेष, प्राण बचाने वाले रस।—पात्र (स्त्री०) हरीतकी, हर्रे।—विद्या (स्त्री०) रस सम्बन्धी विद्या, जिसमें धातुओं का मिलाना पृथक् करना आदि बातें लिखी हैं।

रसाल तद्० (पु०) आम, आम्र।

रसिक तद्० (पु०) रसज्ञ, रसज्ञाता, रसीला, रसिया, लम्पट, दुराचारी, गुंडा।

रसिकाई तद्० (स्त्री०) रसिकता।

रसिया दे० (पु०) रसिक, रसज्ञ, लम्पट, लालच।

रसियाना दे० (क्रि०) गीला होना, भींगना।

रसीद दे० (स्त्री०) पहुँच पत्र, सवादपत्र।

रसीला दे० (वि०) रसयुक्त, रसपूर्ण, रस विशिष्ट।

रसे दे० (अ०) धीरे धीरे, होले होले, शनै शनै।

रसोइया दे० (पु०) रिंधैया, पाचक, पकाने वाला।

रसोई दे० (स्त्री०) पाक, भोजन।

रसौत दे० (पु०) अञ्जन विशेष, रसवत।

रस्सा दे० (पु०) डोरी, जेवरी।

रस्सी दे० (स्त्री०) डोरी, रसरी।

रह दे० (क्रि०) रह जा, ठहर जा, था, रहा। (पु०) रास्ता, मार्ग।

रहकला दे० (स्त्री०) छोटी तोप, गुरज।

रहकला दे० (पु०) छकड़ा, गाड़ी, सामान ढोने वाली गाड़ी।

रहचोला दे० (पु०) बकझोपतो चापलूसी, मीठी बातें।

रहजाना दे० (अ०) बात जोड़ना, ठहराना, सन्तोष करना। [कल।

रहट दे० (स्त्री०) गरारी, चर्खी, पानी निकालने का

रहटा दे० (स्त्री०) चर्खी, गरारी।

रहड़ दे० (पु०) मगर, छकड़ा।

[illegible] (पु०) टिकाव, ठहराव, स्थिति, धाम।

[illegible] (अ०) होते, सामने, आँख के सामने।

[illegible]) चलन, रीति, व्यवहार, भाँति।

रहना दे० (क्रि०) टिकना, ठहरना, बसना।
रहमान (पु०) रहम करने वाला, दयालु।
रहमार दे० (पु०) बटमार, डाकू, चोर, तस्कर, डाँकू।
रहला दे० (पु०) चना, घूट, होला।
रहवा दे० (पु०) चेला, छोरा, दास, भृत्य, नौकर।
रहवाई दे० (स्त्री०) घर का भाड़ा, घर में रहने का किराया। [रहने वाला।
रहवैया दे० (पु०) वासी, निवासी, रहनेवाला,
रहस तद्० (पु०) कौतुक, इसौंवा, हसोड़पन, कृष्णलीला। [न्दित होना, हर्षित होना।
रहसना दे० (क्रि०) हुलसना, प्रसन्न होना, आन-
रहस्य तद्० (पु०) गुप्त तत्व, गुप्त वार्ता, मंत्र, भेद, मर्म, सलाह, राज, निगूढ़, गोपनीय, गुप्त।
रहाइस दे० (स्त्री०) स्थिति, वास, टिकाव।
रहाव दे० (पु०) रहन, स्थिति, टिकाव।
रहित तद्० (वि०) वर्जित, हीन, शून्य, बिना घोड़े का, खाली, त्यक्त, पृथक्, भिन्न।
रहीम (अ०) दयालु, रहम करने वाला। (पु०) प्राचीन कवि विशेष।
राई दे० (स्त्री०) सर्षप, सरसों। (पु०) राजा, प्रधान, स्वामी, यह राजा के अर्थ में संज्ञा शब्दों के पीछे आता है। यथा—रघुराई, यदुराई।
राईया दे० (स्त्री०) कणिका, सर्षप, सरसों, तोरी।
राउ दे० (पु०) राजा, भूपति, राव। [की उपाधि।
राउत तद्० (पु०) राजपुत्र, मान्य, ठाकुर, अहीरों
राए दे० (पु०) राजा, राणा, राजपुत्र, राजपूत। —रायन (पु०) राजराजा, महाराज, राजों में प्रधान।
रायता दे० (पु०) व्यञ्जन विशेष।
रायबेल दे० (पु०) माला, बर्छी।
रांग, रांगा दे० (पु०) धातु विशेष, सीसा।
रांझन दे० (पु०) प्रिय, प्रियतम, सज्जन, एक प्रसिद्ध प्रणयी, राजपूताने में इसका स्वाँग रचते हैं।
रांझरा दे० (पु०) खिलौने वाला। [प्रेमी।
रांझा दे० (वि०) प्यारा, प्रिय, प्रियतम, स्नेही,
रांड़ दे० (स्त्री०) विधवा, अपतिका, बिना पति की स्त्री।—का सांड़ (वा०) विधवा पुत्र, बिगड़ा हुआ लड़का। [अपरखा।
रांड़ा दे० (वि०) बाँझ, वन्ध्या, बिना फल का,
रांदनी दे० (स्त्री०) शाक विशेष, एक शाक का नाम।
रांद पड़ोस दे० (पु०) पड़ोस पड़ोस।
रांधना दे० (क्रि०) रींधना, पकाना सींजना, उबालना, रसोई बनाना।
रांपी दे० (स्त्री०) खुर्पी, घास काटने का शस्त्र, करछी, मोची का एक औज़ार।
रांभना दे० (क्रि०) गाय का शब्द, गौ का डकराना।
राकस (पु०) राक्षस, दानव, दैत्य, प्रकाशमान पदार्थ का जीव विशेष।
राका तद्० (स्त्री०) पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूनो। —पति (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा।
राख दे० (स्त्री०) भस्म, भभूत। [पूर्वक ठहराना।
राखना दे० (क्रि०) रखना, धरना, ठहराना, रक्षा
राखी दे० (स्त्री०) रक्षासूत्र, रेशम या सूत का बना हुआ एक डोरा विशेष जो सावन की पूर्णिमा को हाथ में बाँधी जाती है।—पूनो दे० (स्त्री०) श्रावण पूर्णिमा।
राग तद्० (पु०) रङ्ग, लाल, क्रोध, अनुराग, प्रेम, स्नेह, गान का सुर, भैरव, मल्हार, मेघ, श्री, सारङ्ग, हिण्डोल, वसन्त और दीपक ये छः राग हैं।—छाना (वा०) आनन्द होना, आनन्द मानना।—रंग (वा०) गाना बजाना।
रागना दे० (क्रि०) गीत गाना, गाना आरम्भ करना।
रागिनी या रागिणी तद्० (स्त्री०) गान भेद, तान, रागिनी छत्तीस हैं। भैरव आदि छः रागों में प्रत्येक राग की छः छः रागिणी होती हैं। [क्रोधी।
रागी तद्० (पु०) गायक, गाननिपुण, प्रिय,
राघव तद्० (पु०) रघुनाथ, श्रीरामचन्द्र, रघुराज, रघुवंश के राजा। [लगना, लीन होना।
राचना दे० (क्रि०) प्रेम विवश होना, मिलना,
राछ दे० (पु०) शिल्पियों के अस्त्र, बढ़ई आदि कारीगरों के औज़ार।
राज तद्० (पु०) राज्य, राजा का अधिकार कारीगर, सलतनत, थवई।—कन्या (स्त्री०) राजा

की बेटी, राजकुमारी, राजकुमारी।—कर (पु०) राजस्व, लगान, राजा को दिया जाने वाला धन, यह कर।—कीय (पु०) राजा का, राजसम्बन्धी, सरकारी, बादशाही।—कीय महासभा (स्त्री०) राजा का दरबार, शाही दरबार।—कुटुम्ब (पु०) राजघराना, राजवंश, राजकुल।—कुमार (पु०) राजपुत्र, राजा का वह पुत्र जो राज्य का अधिकारी हो।—कृत्य (पु०) राजकाज, राजा का काम।—कोश (पु०) राजा का खजाना, राजा का वह खजाना जो प्रजा के लाभ के लिये जमा रहता है, जिसके रुपये प्रजा की भलाई के लिये लगाये जाते हैं।—गद्दी (स्त्री०) राजासन, राजा का आसन, सिंहासन, राजगद्दी।—त् (वि०) चाँदी सम्बन्धी, शोभित, निर्मित।—त्व (पु०) राजा का अधिकार, राजा का काम, प्रभुता।—द्वार (पु०) राजा के महल का द्वार, बड़ा द्वार, पुरद्वार, नगर का फाटक।—दण्ड (पु०) राजा की शक्ति विशेष, शासन सम्बन्धी बल, राजा का दिया हुआ दण्ड।—दन्त (पु०) अगले दोनों दाँत।—द्रोही (पु०) राज्य का द्रोह करने वाला, राजा का अशुभचिन्तक।—धर (पु०) अमात्य, मन्त्री, सचिव।—धानी (स्त्री०) राजनगर, राजा का मुख्य नगर, जहाँ राजा रहते हों।—ना (क्रि०) चमकना, शोभना।—नीति (स्त्री०) राजा के शासन करने की रीति, ग्रन्थ विशेष।—न्य (पु०) राजपुत्र, क्षत्रिय, अग्नि, खीर का पेड़, राजा का पुत्र।—पत्नी (स्त्री०) राजा की स्त्री।—पुत्र (पु०) राजकुमार, राजपूत, क्षत्रिय।—पूत (पु०) क्षत्रिय।—भोग (पु०) बड़ा भोग, दोपहर का बड़ा भोग, मध्याह्न काल का नैवेद्य।—मन्दिर (पु०) राजभवन, राजा का महल।—मार्ग (पु०) राजपथ, सड़क।—राज (पु०) कुबेर, चन्द्रमा, सम्राट्।—राणी (स्त्री०) महारानी, राजा की रानी।—रोग (पु०) क्षय रोग, बड़े रोग जो अच्छे नहीं होते।—शासन (पु०) राजा का दण्ड।—सूय (पु०) यज्ञ विशेष, राजा के करने का यज्ञ।—हंस (पु०) पक्षी विशेष।

राजना दे० (क्रि०) चमकना, शोभना, शोभित होना, विराजना।

राजस् तद्० (पु०) रजोगुण, अहङ्कार, गर्व।

राजस्व तद्० (पु०) राजकर, राजधन, राजा को देने का धन, मालगुजारी।

राजा तद्० (पु०) नृपति, भूपति, भूमिपति, भूपाल।

राजाज्ञा तद्० (स्त्री०) राजा की आज्ञा, राजा का आदेश।

राजाधिराज (पु०) सम्राट्, चक्रवर्ती।

राजावर्त (पु०) रावटी, राजावर्त।

राजित (पु०) शोभित।

राजी तद्० (स्त्री०) पंक्ति, पाँति, श्रेणि, अवलि।

राजीव (पु०) कमल, पद्म।

राजेश्वर तद्० (पु०) [राजा+ईश्वर] महाराज, राजाओं के मालिक, महीपति।

राज्ञी तद्० (स्त्री०) महारानी, महिषी, राजपत्नी।

राज्य तद्० (पु०) राज, देश, राष्ट्र, राजा की अधिकृत देश।

राढ़ (पु०) देश विशेष, जो गंगा के पश्चिमी तट पर है।

राठौर (पु०) राजपूतों की जाति विशेष।

राढ़ी दे० (पु०) ब्राह्मण विशेष, राढ़ देशी ब्राह्मण।

राणा दे० (पु०) राजपूत, क्षत्रिय विशेष, राजा।

राणी दे० (स्त्री०) रानी, राजपत्नी रानी।

रात तद्० (स्त्री०) रात्रि, रजनी, निशा, रैन।

रातना दे० (क्रि०) रंगना, लाल रंग में रंगना, लाल होना।

राता तद्० (वि०) रक्त, लाल, लाल रंग में रंगा हुआ।

रातिब (पु०) घोड़ा हाथी का दाना, खुराक।

राते (वि०) लाल, रहे।

रातौंधिया तद्० (वि०) रात्र्यन्ध, रात का अन्धा, [घुग्घू।

रात्र (पु०) ज्ञान, शिक्षा, हवन।

रात्रि तद्० (स्त्री०) रात, निशा, रैन।—चर (पु०) राक्षस, निशाचर, भूत, राक्षस। [कोकिल आदि।

रात्र्यन्ध (पु०) जिसे रात में न देख पड़े, कौआ, तोता,

राद (पु०) पीब, पीप, बिगड़ा खून।

राधा तद्० (स्त्री०) श्रीकृष्ण की स्त्री, गोपी, वृषभानु की पुत्री।—कान्त (पु०) श्रीकृष्ण।—कुण्ड (पु०) गोवर्द्धन पर्वत के पास का एक

कुबड़ जिसे श्रीकृष्ण ने सुधराया था ।—वल्लभ (पु०) श्रीकृष्ण ।—सुत (पु०) कर्ण ।

राधिका तत्० (स्त्री०) राधा नाम की एक गोपी, जो श्रीकृष्ण वल्लभा बतलाई जाती है ।

रान (पु०) जाँघ, धानू ।

रानी (स्त्री०) बेगम, राजपत्नी ।

राब दे० (स्त्री०) गुड़ का रस, सीरा, छोआ ।

राबड़ी दे० (स्त्री०) ज्वार बाजरे का मठा या दूध में पकाया हुआ आटा ।

राम तत्० (पु०) परशुराम, भगवान् का अवतार । ये जमदग्नि ऋषि के पुत्र थे और इन्होंने इक्कीस बार क्षत्रियों का नाश किया था (२) रामचन्द्र, यह भी भगवान् ही के अवतार थे । राजा दशरथ के यहाँ ये प्रकट हुए थे । (३) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।—कहानी (स्त्री०) बड़ी कहानी, दुःख पूर्ण कथा ।—राम (अ०) प्रणाम, सलाम, घृणा बोधक ।—कली (स्त्री०) रागिणी विशेष, एक रागिणी का नाम ।—गिरि (पु०) पर्वत विशेष, चित्रकूट पर्वत, यह बुन्देलखण्ड में है ।—जनी (स्त्री०) पहाड़ी हिन्दू वेश्या ।—तरोई (स्त्री०) एक तरकारी का नाम ।—दूत (पु०) रामचन्द्र का दूत, हनुमान ।—दोहाई (पु०) राम की शपथ, राम की सौगन्द ।—नवमी (स्त्री०) चैत्रशुक्ल ९ ।—भद्र (पु०) श्रीराम ।—रस (पु०) लवण, नून, निमक ।—शर (पु०) नरकट, तृण विशेष ।

रामा तत्० (स्त्री०) नारी, सुन्दरी स्त्री । [अनुयायी ।

रामानन्दी तद्० (वि०) वैरागी, साधु, रामानन्द के

रामानुज तत्० (पु०) विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रचारकों में ये सर्वाग्रगण्य थे । इन्होंने भारतवर्ष में जैनियों और मायावादियों का प्रभाव हटाने के लिये प्राणपण से प्रयत्न किया था और अपने प्रयत्न में ये सफल भी हुए थे । स्मृति काल तरङ्ग में इनके प्रकट होने का समय शाकाब्द १०४९ अर्थात् ११२७ ई० बतलाया गया है । परन्तु कोई कोई इनका जन्म १००२ ई० में मानते हैं । इन्होंने विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं ।

रामायण तत्० (पु०) रामकथा, एक ग्रन्थ विशेष ।

रामावत दे० (पु०) साधुविशेष, रामानन्दी साधु ।

राय दे० (पु०) क्षत्रियों की उपाधि ।

रायता दे० (पु०) रायता, व्यञ्जन विशेष ।

रायमानिया दे० (पु०) चावल विशेष, एक प्रकार का चावल । [झगड़ ।

रार दे० (पु०) झगड़ा, विवाद, विरोध, विद्वेष ।

राल दे० (पु०) धूना, एक प्रकार का गोंद, जो धूप में डाला जाता है, मुँह से निकलने वाला चिपचिप थूक ।

राव दे० (पु०) राय, राई, राजकुमार क्षत्रियों की उपाधि ।—चाव (पु०) राव रङ्ग, भोग विलास ।

रावटी दे० (स्त्री०) छोटा तंबू, छोटा कपड़कोट, लाजावर्त्त पत्थर ।

रावण तत्० (पु०) दशानन, लङ्का का अधिपति ।—अरि (पु०) श्रीरामचन्द्र ।

रावणि (पु०) मेघनाद, रावण का पुत्र ।

रावत दे० (पु०) वीर, बहादुर, सूरमा, सावन्त ।

रावरा, रावरो (सर्व०) तुम्हारा ।

रावी (स्त्री०) पंजाब की एक नदी विशेष ।

राशि तत्० (स्त्री०) धान् आदि का ढेर, मेष, वृष, आदि बारह राशि, गणित का एक अङ्क विशेष ।—चक्र (पु०) राशि चक्र, लग्न मण्डल, द्वादश भाव । [शासन मायावी ।

राष्ट्र तत्० (पु०) बसा हुआ देश, शासित देश, देश

रास तत्० (पु०) क्रीड़ा, खेल, ब्याज, एक प्रकार का नृत्य, छोटे छोटे लड़के और लड़कियाँ पहले आपस में एक दूसरे का हाथ पकड़ कर नाचते थे । जैसा आज कल श्रीकृष्ण लीला होती है ।—धारी (पु०) रास करने वाले । [स्वाद ।

रासन तत्० (पु०) रसना से उत्पन्न ज्ञान, जीभ का

रासभ तत्० (पु०) गदहा, गर्दभ । (स्त्री०) रासभी ।

रासी दे० (पु०) मध्यम ।

राहना दे० (पु०) चकी में दाँत बनाना ।

राहु तत्० (पु०) आठवाँ ग्रह, दैत्य विशेष, केतु का सिर, कहते हैं यही चन्द्रमा और सूर्य को ग्रसता है ।—ग्रस्त (पु०) चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण ।—ग्रास (पु०) ग्रहण, चन्द्रमा और सूर्य का ग्रहण ।

रिक्त तत्० (वि०) खोखला, शून्य, रीता।
रिचा तत्० (स्त्री०) ऋक् वेद का मन्त्र विशेष।
रिझैया दे० (पु०) रीझने वाला, प्रसन्न करने वाला।
रिझाना दे० (क्रि०) प्रसन्न करना, मनाना, सताना, दुःख देना। [शून्य करना।
रिताना दे० (क्रि०) रिक्त करना, छूँछा करना,
रितु तत्० (स्त्री०) ऋतु, समय।—राज (पु०) वसन्त।
रिद्धि तत्० (स्त्री०) ऋद्धि, सम्पत्ति, बढ़ती।
रिपु तत्० (पु०) शत्रु, वैरी, द्वेष, विरोध।—ता (स्त्री०) शत्रुता, द्वेष, विरोध।—हा (पु०) शत्रुनाशकारी।
रिपुञ्जय तत्० (पु०) अति बलवान, शत्रुजयी।
रिस दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप, खिसियाहट, अप्रसन्नता। [टपकना, चूना, गिरना।
रिसना दे० (क्रि०) क्रोध करना, खिसियाना, झरना,
रिसहा दे० (स्त्री०) क्रोधी, कोपी।
रिसाना दे० (क्रि०) क्रोधयुक्त होना, क्रोध करना।
री दे० (अ०) अरी, सम्बोधन।
रींगना दे० (क्रि०) चलना, फिरना, चिढ़ना, खिसियाना, छाती के बल चलना।
रींधना दे० (क्रि०) पकाना, चुराना।
रीछ तत्० (पु०) भालु, ऋक्ष, भल्लुक।
रीझ दे० (स्त्री०) पसंद, चाह, इच्छा, अभिलाष।
रीझना दे० (क्रि०) चाहना, आशिक होना, प्रीति करना।
रीठा (पु०) एक प्रकार का फल।
रीढ़ दे० (स्त्री०) पीठ के बीच की हड्डी।
रीता दे० (वि०) शून्य, खाली, छूँछा, रिक्त।
रीति तत्० (स्त्री०) चाल, चलन, प्रकार, व्यवहार।
रीरियाना दे० (क्रि०) घिघियाना, घिघियाना।
रीस दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप। [डाहियाहट।
रुक् तत्० (पु०) रोग, उदार, दाता, दीप्ति, प्रकाश,
रुकना दे० (क्रि०) अटकना, बन्द होना, प्रतिहत होना, विरत होना। [रुकावट।
रुकनैया दे० (पु०) रोकने वाला, प्रतिबन्धक, छेंक,
रुकाव दे० (पु०) छेंक, बाधा, प्रतिबन्धक, रोक, अटकाव।
रुकावट (स्त्री०) अटकाव, विराम, अड़चन।
रुक्म तत्० (पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्य, राजा भीष्मक का बड़ा बेटा, यह रुक्मिणी का भाई था और श्रीकृष्ण का साला।
रुक्मिणी तत्० (स्त्री०) कुण्डनपुर के राजा भीष्मक की पुत्री, जिसे श्रीकृष्ण ने ब्याहा था।
रुख दे० (पु०) सम्मुख, सामना, आमना सामना, सम्मति, अनुमति, मर्ज़ी। [अचिक्कण।
रुखा तत्० (वि०) रूक्ष, रूखा, कठोर, स्नेह रहित,
रुखाई दे० (स्त्री०) कठोरता, कड़ाई, रुक्षता।
रुखानी (स्त्री०) बढ़ई का एक औज़ार।
रुग्ण तत्० (वि०) रोगी, टेढ़ा, बाँका, तिरछा।
रुच तत्० (स्त्री०) रुचि, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ।
रुचक तत्० (पु०) आभूषण विशेष, माला सत्रलड़ीहार। [होना, भाना।
रुचना दे० (क्रि०) अच्छा लगना, मनोहर मालूम
रुचि तत्० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा।—कर (वि०) प्यारा, पाचक, रुचि उत्पन्न करने वाला।—मान (वि०) प्रकाशमान।
रुचिर (वि०) सुन्दर, मीठा, मनोहर, मनभावन।
रुच्य तत्० (वि०) सुन्दर, मनोहर, रुचिकर।
रुजा तत्० (पु०) रोग, बीमारी।
रुण्ड तत्० (पु०) धड़, बिना सिर का देह, कबन्ध।
रुदन तत्० (पु०) रोना, रोदन, रुलाई, अश्रुपात करना, आँसू बहाना, विलाप।
रुद्ध तत्० (वि०) रुका हुआ, घेरा, अटका हुआ, बँधा हुआ। [जाते हैं।
रुद्र तत्० (पु०) शिव, महादेव, रुद्र एकादश कहे
रुद्राक्रीड़ तत्० (पु०) [रुद्र+आक्रीड़] श्मशान, रुद्र का विनोद स्थान।
रुद्राक्ष तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके दानों की माला शैव और संन्यासी लोग पहनते हैं।
रुद्राणी तत्० (स्त्री०) शिवा, भवानी, पार्वती, उमा।
रुद्री (स्त्री०) ११ बिल्वपत्र, ११ शीशी गंगाजल, शिव पूजन।
रुधिर तत्० (पु०) रक्त, शोणित, खून।
रुपना दे० (क्रि०) डटना, अड़ना, थमना।
रुपया दे० (पु०) मुद्रा, चाँदी का सिक्का।

रुपहरा दे० (वि०) रूपा का बना हुआ, रूपा सम्बन्धी।
रुपैया दे० (पु०) रुपया, मुद्रा, सिक्का।
रुपैहला दे० (वि०) "रुपहरा" देखो।
रुरु (पु०) दैत्य, एक प्रकार का हिरन, सर्प।
रुलना दे० (क्रि०) लोहे से पीसना, चूर करना, चूर्ण करना, थूकना।
रुलाना दे० (क्रि०) दुख देना, दुखाना, पीड़ा पहुँ- [चाना।
रुसना (क्रि०) रिसाना, रुष्ट होना, अप्रसन्न होना, कोपना, क्रोध करना।
रुष्ट तद्० (वि०) रूठा हुआ, क्रुद्ध, कुपित।
रुई दे० (स्त्री०) रूँआ, कपास।
रुईया दे० (पु०) रुई का व्यापारी, रूए का।
रूंक दे० (स्त्री०) घेलुवा, घलुवा, खरीदने वाले को ठहराई हुई दर या तौल के अतिरिक्त जो वस्तु मिलती है। [बाल, रोएं।
रूँगटा दे० (पु०) रोम, रोवाँ, लोम, शरीर पर के
रूँघट दे० (स्त्री०) मैल, मलु, मलिनता।
रूँधना दे० (क्रि०) रोकना, रुकावट डालना, छेंकना, अगोरना।
रूख दे० (पु०) वृक्ष, पेड़, तरु, तरुवर।
रूखड़ दे० (पु०) योगी विशेष।
रूखड़ा दे० (पु०) छोटा पेड़, विरवा पौधा।
रूखा तद्० (वि०) रुक्ष, कठिन, कठोर, सूखा।
रूखाई दे० (स्त्री०) कठोरता, कठिनता, रूखापन।
रूखानी दे० (स्त्री०) अस्त्र विशेष, छेनी, काँटी।
रूखी दे० (स्त्री०) चिखुरी, गिलहरी।
रूज दे० (पु०) कीट विशेष।
रूग्णा दे० (वि०) रोग से पीड़ित, रुग्न।
रूठना दे० (क्रि०) अप्रसन्न होना, रूसना, झगड़ना, बिगड़ना।
रूठनी दे० (वि०) झगड़ालू, अव्यवस्थित चित्त।
रूढ़ तद्० (पु०) उत्पन्न, प्रसिद्ध।
रूढ़ि तद्० (स्त्री०) उत्पत्ति, प्रसिद्ध, शब्दार्थ विशेष, प्रकृति प्रत्ययगत अन्य अर्थ होने पर भी, अन्यार्थ वाचक शब्द रूढ़ि कहे जाते हैं।
रूप तद्० (पु०) आकार, आकृति, सुन्दरता।—जस्त (पु०) राँगा।—निधान (पु०) अतिशय सुन्दर।—रस (पु०) रूपा का भस्म।—राशि (पु०) सुन्दरता का समूह, अतिशय सुन्दर।—वती (स्त्री०) रूपवाली, सुरूपा सुन्दरी।—वान् (वि०) सुन्दर, सुरूपा पुरुष।—हला (पु०) रूपे का बना, रूपवाला। [रूप, सूरत।
रूपक (पु०) अलङ्कार विशेष, दृश्यकाव्य, नाटक,
रूपा तद्० (पु०) रजत, चाँदी, श्वेत धातु विशेष।
रूमटी दे० (स्त्री०) घोल घुमाव मिष, व्याज, बहाना।
रूमाल दे० (पु०) अँगोछा, छोटा अँगोछा।
रूरी (स्त्री०) सौन्दर्यवती, सुन्दरी।
रूसना दे० (क्रि०) रूठना, कुपित होना, क्रुद्ध होना, कुढ़ाना, रोष करना।
रूसी दे० (स्त्री०) सिर का मैल, चाँई।
रे दे० (अ०) नीच सम्बोधन।
रेंकु दे० (पु०) गदहे की बोली।
रेंकना दे० (क्रि०) गधा का बोलना।
रेंगना दे० (पु०) चलना, साँप की चाल चलना।
रेंट दे० (स्त्री०) रहट, पानी निकालने की कल, चरखी।
रेंटा दे० (पु०) पोंटा, नेटा, नासिका का मल।
रेंड़, रेंड़ी दे० (स्त्री०) एरण्ड का वृक्ष, रेंड का पेड़।
रेंद (स्त्री०) छोटी ककड़ी। [खरबूजा
रेंदी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का खरबूजा, छोटा
रेंहट दे० (स्त्री०) नाक द्वारा निकलने वाला कफ, बलगम, नेटा, पोंटा।
रेंहटा दे० (पु०) चरखा।
रेख तद्० (स्त्री०) रेखा, लकीर, चिन्ह, बिन्दु समूह, जिसकी मोटाई न हो, किन्तु केवल लंबाई हो वह रेखा कही जाती है। भाग्य, प्रारब्ध, छोटी मोंछ जो तरुणावस्था के पूर्व निकलती है।—निकलना तद्० (क्रि०) मोंछ की रेखा निकलना, मोंछ के बालों का प्रथम प्रकट होना।
रेखा तद्० (स्त्री०) लकीर, चिन्ह, ललाट, कपाल, भाग्य, प्रारब्ध।—ङ्कित (वि०) चिन्हित, रेखा से जिस पर चिन्ह किया गया हो।—गणित (पु०) एक प्रकार का गणित।
रेघारी दे० (स्त्री०) हलकी रेखा, चिन्ह

रेचक (पु०) जुलाब, दस्तावर दवा।
रेचन (पु०) दस्त करवाना, जुलाबदेना।
रेणु तद० (स्त्री०) धूली, माटी की बुकनी, रज। —का (स्त्री०) जमदग्नि ऋषि की पत्नी जो परशुराम की जननी थी।
रेत (पु०) बालू, धूल।
रेत तद० (पु०) वीर्य, शुक्र, धातु, शरीरस्थ सप्त धातुओं के अन्तर्गत मुख्य धातु।
रेतना दे० (क्रि०) काटना, धार को तेज करना, ऐसा काटना जिससे धीरे धीरे कटे, रेती से घिसना।
रेतल दे० (पु०) किरकिरा, रेतीला, कंकरेल।
रेता दे० (पु०) बालू, रेणु, रेत।
रेताई दे० (स्त्री०) रेतने की मजूरी। [करना।
रेतियाना दे० (क्रि०) रेतना, चिकनाना, तेज
रेती दे० (स्त्री०) बालू, रेता, किरकिरा, सोहन, एक लोहे का यन्त्र जिससे लोहा आदि रेता जाता है।
रेतीला दे० (गु०) रेतयुक्त, रेतसहित, बलुआ, किरकिरा, कँकरेल। [वाला।
रेतुआ दे० (पु०) रेतने वाला, रेतने का काम करने
रेव (वि०) निन्दित, क्रूर, कृपण, प्रहार।
रेफ तद० (पु०) रकार, र अक्षर, व्यञ्जन का सत्ताइसवाँ अक्षर, " ' "।
रेलना दे० (क्रि०) ठेलना, धक्का देना, ढकेलना।
रेलपेल दे० (स्त्री०) अधिकता, अधिकाई बहुतायत, प्रचुरता। [की श्रेणी, ढकेल, धक्का।
रेला दे० (पु०) दक्का, बाढ़ नदी की वृद्धि, पशुओं
रेवड़ी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।—के फेर में पड़ना (वा०) फन्दे में फँसना, कठिनता में पड़ना।
रेवत (पु०) बलदेव जी के ससुर का नाम।
रेवती तद० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, सत्ताईसवाँ नक्षत्र। एक राजकन्या, जो बलराम को व्याही गई थी। —रमण (पु०) बलराम, बलदेव।
रेवा तद० (स्त्री०) नदी विशेष नर्मदा नदी।
रेसु (पु०) द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध।
रेह दे० (स्त्री०) सज्जी मिट्टी की एक प्रकार की खार विशेष, जो कपड़ साफ़ करने के काम में आती है।
रेहड़ दे० (पु०) एक प्रकार की गाड़ी, छकड़।
रेहला दे० (पु०) चना, चणक, घूट।
रेहू पेहू दे० (स्त्री०) अधिकता, अधिकाई।
रै (पु०) धन, सोना, विभव, अर्थ।
रैन दे० (स्त्री०) रात्रि, रात, निशा, रजनी। (पु०) राक्षस।
रैवत तद० (पु०) पर्वत विशेष, जो द्वारका के पास है जो आजकल गिरनार के नाम से प्रसिद्ध है। महादेव, चौदह मनुओं में का एक मनु, रेवती का पिता।
रोआँ दे० (पु०) रोम, रोंगटा, लोम। [हाहाकार।
रोआई दे० (स्त्री०) बिसूरना, रोना, विलाप, रोदन,
रोआना दे० (क्रि०) रुलाना, दुःख देना पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना।
रोआस दे० (पु०) रुलाई, रोआँस, रोने की इच्छा।
रोंघ दे० (स्त्री०) रोंआ, रूँगटा, लोम।
रोंगटी दे० (स्त्री०) झगड़ा, ठगविद्या, धूर्त्तता।
रोंट दे० (स्त्री०) छल, वञ्चना, प्रतारण, बहाना, व्याज, मिष।
रोंटना दे० (क्रि०) मुकरना, नकारना, छल करना, बहाना करना, घोल घुमाव करना। [प्रपञ्ची।
रोंटिया दे० (पु०) विश्वासघातक, छली, कपटी,
रोंपना दे० (क्रि०) लगाना, गाड़ना, वृक्ष आदि उगाना एक स्थान से उखाड़ कर दूसरी जगह बोना।
रोंवा तद० (पु०) रोम, रोंआ, रूँगटा।
रोक दे० (स्त्री०) अटक, छेंक, रुकाव, अटकाव।
रोकड़ दे० (स्त्री०) नगद, नक़दी, रुपैया, पैसा।
रोकड़िया दे० (पु०) कोठारी, भण्डारी, ख़ज़ाँची, रुपया पैसा रखने वाला। [प्रतिबन्ध।
रोकन दे० (स्त्री०) आड़, ओट, बाधा, व्याघात,
रोकना दे० (क्रि०) घेरना, अवरुद्ध करना, अटकाना, घेरा डालना, बन्द करना, थामना। [बाधाकर्त्ता।
रोकू दे० (पु०) रोकने वाला, बाधक, प्रतिबन्धक,
रोग तद० (पु०) व्याधि, पीड़ा, दुःख, शारीरिक अस्वस्थता।—ग्रस्त (वि०) रोगी, रोग पीड़ित, व्याधित, व्याधिग्रस्त।
रोगहा (पु०) वैद्य, रोगनाशक।
रोगिया दे० (पु०) रोगी, रोगग्रस्त।

रोगी तद्० (पु०) रोगिया, रोगग्रस्त, पीड़ित, अस्वस्थ।
रोचक तद्० (पु०) रुचिकारक, पाचक, मनभावन।
रोचन (पु०) पसंद, हरदी, गोरोचन, मनोहर, रुचिकर, केशर, दर्पण।
रोचना तद्० (स्त्री०) गोरोचन, हरदी, पीलारंग।
रोचिष्णु तद्० (वि०) दीप्तिशील, प्रकाशमान, रुचिशील, रुचने योग्य।
रोज दे० (पु०) दिन, दिवस, विलाप, रोदन।
रोझ दे० (पु०) नीलगाय, मृग विशेष।
रोट दे० (पु०) एक प्रकार की मोटी रोटी, जो प्राय हनुमानजी के नैवेद्य के लिये बनाई जाती है।
रोटा दे० (पु०) रोट, मोटी रोटी।
रोटी दे० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध भोज्य वस्तु, फुलका।
रोड़ा या रोड़ी दे० (पु०) बड़ा कङ्कड़, ईंट पत्थर आदि के टुकड़े, पञ्जाब की एक प्रसिद्ध वणिक् जाति। [आँसू बहना।
रोदन तद्० (पु०) रुदन, रुलाई, रोना, अश्रुपात करना,
रोध तद्० (पु०) तट, तीर, किनारा, करारा, नदी का तट, रोक, रुकावट, अटकाव।
रोधन तद्० (पु०) रोकाव, अटकाव, प्रतिबन्ध।
रोना दे० (क्रि०) रोदन करना, आँसू बहाना, दुख जताना।
रोपक (पु०) रोपने वाला, वृक्षादि लगानेवाला।
रोपण तद्० (पु०) स्थापन, पेड़ लगाना।
रोपना दे० (क्रि०) वृक्ष आदि का लगाना, रोपण करना।
रोपा तद्० (पु०) रोपणकर्त्ता, रोपने वाला, लगाने वाला, पेड़ या धान आदि का रोपण करने वाला।
रोम तद्० (पु०) लोम, बाल, केश, रोंआ।—कूप (पु०) रोम का छिद्र, रोआं के निकलने का स्थान।—पाट (पु०) रोम का बना वस्त्र, दुशाला, कम्बल।—हर्षण (वि०) भयानक, भयङ्कर, कठिन कार्य।
रोमक तद्० (पु०) देश विशेष, रूम देश। (वि०) रोम देश के वासी, रूसी।
रोमन्थ तद्० (पु०) पगुराना, पगुरी करना, चबाई हुई वस्तु का पुन चबाना।
रोमाञ्च तद्० (पु०) रोंओं का खड़ा होना, सिहरना, भय या हर्ष से रोंओं का उठ आना, पुलक।
रोमाञ्चित तद्० (पु०) हर्ष या भय से शरीर के रोमों का खड़ा होना, पुलकित।
रोमावली (स्त्री०) रोम श्रेणि, रोएँ की पंक्ति जो नाभि के पास से निकलती है।
रोर दे० (स्त्री०) हुल्लड़, धूमधाम, भीड़भाड़।
रोराकार दे० (अ०) अतिशय क्लेश से।
रोरी (स्त्री०) देखो रोली। [चिकनाना।
रोलना दे० (क्रि०) बराबर करना, चिकना करना,
रोला दे० (पु०) रिस, एक छन्द का नाम।
रोली दे० (स्त्री०) कुंकुम, स्त्रीचूर्ण, स्त्री, एक प्रकार का रंग, साधु जिसका तिलक लगाते हैं।
रोष तद्० (पु०) क्रोध, कोप, रीस, अप्रसन्नता।
रोह (पु०) ऊपर चढ़ना, अङ्कुर, कली।
रोहिणी तद्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, चौथा नक्षत्र, बलराम की माता।—पति (पु०) चन्द्रमा, वसुदेव।
रोहित, रोहू तद्० (पु०) एक प्रकार की मछली।
रोहिताश्व (पु०) राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम, आग।
रोही (पु०) बरगद की नीचे की ओर लटकने वाली जटाएँ।
रोहू (पु०) मछली विशेष।
रौताई (स्त्री०) लड़ाई, युद्ध, सरदारी।
रौंदना दे० (क्रि०) कुचलना, पीसना, चूर करना, चूर्ण करना।
रौंधना दे० (क्रि०) रौंदना, बन्द करना, कुचलना।
रौद्र तद्० (वि०) भयानक, भयङ्कर। (पु०) रस विशेष।
रौध (पु०) चाँदी, धातु विशेष।
रौर दे० (पु०) रौला, कीर्ति, प्रसिद्ध। [नरक।
रौरव तद्० (पु०) नरक विशेष, अति कष्टदायक
रौला दे० (पु०) धूमधाम, बखेड़ा, हौहल्ला।
रौच्य (पु०) एक मनु का नाम।
रौंस दे० बारजा, बरामदा।
रौहिणेय (पु०) बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भ्राता।

ल

ल यह व्यञ्जन का अट्ठाईसवाँ अक्षर है, दन्त से यह उच्चारित होता है इसीसे इसे दन्त्य कहते हैं।
ल तत्० (पु०) इन्द्र, मन्त्र, कीट, दीप्ति, प्रकाश।
लकड़ दे० (पु०) काष्ठ, काठ, लकड़ी, कुन्दा।—हारा (पु०) लकड़ी चीरने वाला, लकड़ी बेचने वाला। [बड़े मोटे कुन्दे।
लकड़ी दे० (पु०) लकड़, बड़ा कुन्दा, लकड़ी के
लकड़ी दे० (स्त्री०) काठ, इन्धन, काष्ठ, जलावन, जलाने की लकड़ी, छड़ी, डंडा।
लकवा दे० (पु०) रोग विशेष, पक्षाघात।
लकीर दे० (स्त्री०) रेखा, धारी, चिह्न, पंक्ति, पाँति।
लकुट या लकुटिया दे० (पु०) लाठी, छड़ी।
लकीर (स्त्री०) रेखा, लीक, हाँड़ा।
लक्कड़ (पु०) लट्ठ, लकड़ी।
लक्ष तत्० (पु०) संख्या विशेष, लाख, सौ हजार, व्याज, बहाना, कैतव, कपट, अपदेश।
लक्षक तत्० (पु०) दर्शक, दिखाने वाला, बताने वाला। [रीति, भाँति।
लक्षण तत्० (पु०) चिन्ह, पहचान, स्वभाव, प्रकार,
लक्षणा तत्० (स्त्री०) शब्द की शक्ति विशेष, शब्दार्थ से सम्बन्ध रखने वाले वस्त्वन्तर का बोधक, अध्याहार। [परिचित।
लक्षित तत्० (वि०) जाना हुआ, विदित, ज्ञात,
लक्ष्म तत्० (पु०) चिन्ह, अङ्क।
लक्ष्मण तत्० (पु०) श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई, महाराज दशरथ की छोटी रानी सुमित्रा का पुत्र।
लक्ष्मणा तत्० (स्त्री०) श्रीकृष्ण की पटरानियों में की एक पटरानी, यह मद्रदेश के राजा की कन्या थी। (२) दुर्योधन की कन्या, श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब ने इसे हर कर ब्याहा था, सारसी, सारस पक्षी की स्त्री।
लक्ष्मी तत्० (स्त्री०) विष्णुप्रिया, इन्दिरा, कमला, लोकमाता, हरिवल्लभा। समुद्र से निकले हुए चौदह रत्नों के अन्तर्गत रत्न विशेष, ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति, सम्पदा।—कान्त, नाथ, पति (पु०) विष्णु, नारायण, रमानाथ, रमापति, भगवान, रमेश।—वान (पु०) धनी, धनवान।
लक्ष्य तत्० (पु०) निशाना, उद्देश्य।
लख (पु०) प्रत्यक्ष, माया का प्रत्य।
लखना दे० (क्रि०) पहचानना, चीन्हना, ताड़ना, जानना, देखना, भावना।
लखपति तद्० (पु०) लक्षपति, धनी, धनवन्त, लक्षाधीश।
लखलखा दे० (पु०) औषध विशेष, मूर्च्छा दूर करने की औषधि विशेष।
लखलखाना दे० (क्रि०) हाँफना।
लखलूट दे० (वि०) उड़ाऊ, अपव्ययी, नंगा, लुच्चा।
लखा दे० (पु०) लखे, लखित, देख, दृष्टि, ज्ञात, जाना।
लखाऊ दे० (पु०) लखने योग्य, जानने योग्य, समझने लायक।
लखिया दे० (पु०) लखनहार, ताड़नहार, लक्षक, जानने वाला, समझने वाला।
लखेरा दे० (पु०) जाति विशेष, लाह का काम करने वाली जाति, लहेरा, लाख चढ़ैया।
लखेरा दे० (वि०) लाह से बना हुआ, लाखी।
लग दे० (अ०) तक, पर्यन्त, अवधि, लौं, साथ, संग। —चलना (क्रि०) साथ साथ चलना, पास जाना।—भग (अ०) पास पास, निकट, प्रायः करीब, अन्दाजन। [(पु०) एक जीव विशेष।
लगड़ दे० (पु०) पक्षी विशेष, बाज।—लग्गा
लगन (स्त्री०) धुन, प्रीति, प्रेम, लगन।
लगना दे० (क्रि०) सोहना, शोभना, वृक्ष आदि का जड़ जमना। [(पु०) सिलसिलेवार, अविच्छिन्न
लगातार दे० (अ०) बराबर, क्रमशः एक के बाद एक,
लगान दे० (पु०) उतार, टिकाव, टिकाना, माल गुजारी, किराया, भाड़ा, कर।
लगाना दे० (क्रि०) रोपना, बोना, वपन करना, मिलाना, सटाना।
लगाव दे० (पु०) मेल, मिलाप, सम्बन्ध।
लगि दे० (क्रि०) तक, लग, अवधि, पर्यन्त, सीमा।
लगुड़ तत्० (पु०) लाठी, सोटा, डंडा, यष्टि, छड़ी।

लगुँहा दे० (पु०) मनोहर, सुन्दर, मनभावन ।
लगुआ, लगुवा दे० (पु०) यार, जार, लगा हुआ, उपपति, आशिक ।
लग्गा दे० (पु०) प्रेम, प्यार, नाव खेने के लिये बड़ा बाँस ।—न खाना (वा०) अगाध, सर्वश्रेष्ठ होना । [की छोटी बग्घी ।
लग्गी दे० (स्त्री०) नाव चलाने का छोटा बाँस, बाँस
लग्न तद्० (पु०) मेष आदि राशियों के उदय होने के समय का मुहूर्त, समय । (पु०) लगा हुआ, सटा हुआ, मिला ।
लग्नक तद्० (पु०) प्रतिभू, जामिन ।
लघिमा तद्० (स्त्री०) (संस्कृत में पुल्लिङ्ग) लघुता, छुटाई, छोटापन, लाघव, योगियों की आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि ।
लघिष्ठ तद्० (वि०) छोटा, नीच, लघु ।
लघु तद्० (वि०) छोटा, हलका, ह्रस्ववर्ण, शीघ्र, नीचा, एक मात्रिक स्वर ।—काय (पु०) बकरा, छाग (वि०) छोटा शरीर वाला ।—ता (स्त्री०) छोटापन, छुटाई, नीचता, निचाई ।—हस्त (पु०) छोटा हाथ ।—शङ्का (स्त्री०) मूत्र, प्रस्राव, पेशाव ।
लघ्वी तद्० (स्त्री०) छोटी, अति छोटी [भाग ।
लङ्क, लंक दे० (पु०) कमर, कटि, शरीर का मध्य
लङ्का तद्० (स्त्री०) राक्षसाधिप रावण की राजधानी । लङ्का पहले कुबेर के अधिकार में थी, परन्तु रावण ने बलपूर्वक उससे छीन कर उसे अपनी राजधानी बनाई ।—पति (पु०) रावण, विभीषण, लङ्का का राजा ।
लंगड़ा (वि०) एक पैर का व्याधि ।
लङ्ग, लंग (वि०) अपाहिज, पंगु ।
लङ्गड़, लंगर दे० (पु०) बिना पैर के, पद रहित, चरण हीन, लोहे का बना हुआ भारी और अंकुश-नुमा एक प्रकार का काँटा जिससे नाव रोकी जाती है, एक प्रकार का पैर में पहना जाने वाला जनाना जेवर ।
लंकिनी (स्त्री०) राक्षसी विशेष ।
लंगर (पु०) जहाज के ठहराने का खास अङ्ग का भारी लोहा । (वि०) ढीट, लंगड़ा ।
लङ्गरी, लंगरी दे० (स्त्री०) थाली, थरिया ।
लंगूरा दे० (पु०) खाने की एक वस्तु ।
लंगूर दे० (पु०) वानर विशेष, बड़ी पूँछ वाला बन्दर, वीर, लसुआ बन्दर, इसकी पूँछ लम्बी और मुख काला होता है ।
लंगोट दे० (पु०) लंगोटा, कौपीन, पहलवानों की एक प्रकार का कटिवस्त्र, कछनी, करधनी ।—बन्द (पु०) अनब्याहता, ब्रह्मचारी, बच्चबन्ध ।
लंगोटिया दे० (पु०) समवयसी, समवयस्क, बाल्या-पन का साथी ।
लंगोटी (स्त्री०) कछनी ।
लंघन तद्० (पु०) [लघि+अनट्] लाँघना, पार उतारना, पार होना, उपवास, उपास करना ।
लंघना दे० (क्रि०) उछलना, कूदना, पार उतरना, फाँदना, लाँघ जाना ।
लचक दे० (स्त्री०) नवन, लचीला, झुकाव ।
लचकना दे० (क्रि०) नवना, झुकना, लचना ।
लचका दे० (पु०) धक्का, झोंक, एक प्रकार की नाव, मत्स्य विशेष । [हिलना ।
लचकाना दे० (क्रि०) झोंकना, झुकना, नवाना,
लचना दे० (क्रि०) टेढ़ा होना, नवना, झुकना, तिरछा होना ।
लचलचाना दे० (क्रि०) लचलच होना, नवना ।
लचर दे० (पु०) अनाड़ी, अज्ञान, अबोध, मूढ़, मूर्ख ।
लचाना दे० (क्रि०) टेढ़ा करना, नवाना, झुकाना ।
लच्छन तद्० (क्रि०) लक्षण, स्वभाव, चिन्ह, आकार, आकृति के विशेष चिन्ह ।
लच्छा दे० (पु०) स्तवक, गुच्छा, रँगे सूत की आँटी ।
लछन (पु०) लक्षण, चिन्ह ।
लछमन (पु०) लक्ष्मण ।
लछमी (स्त्री०) लक्ष्मी ।
लजलजा दे० (वि०) चिपचिपा, गोंददार, लसलसा ।
लजलजाना दे० (क्रि०) चिपचिपाना, लसलसाना, सटना, नरमाना, नरम होना ।
लजवाना दे० (क्रि०) लज्जित करना, सङ्कोच करना, लजाना, शर्मिन्दा करना ।
लजालु या लज्जालु तद्० (वि०) लज्जावान्, लजाने वाला, शर्मिन्दा, हयादार ।

लजालू (वि०) शर्मीला। (पु०) छुईमुई, जिसको लज्जवन्ती भी कहते हैं।
लजियाना दे० (क्रि०) लजाना, लज्जा करना।
लजीला दे० (वि०) लाजवन्त, सङ्कोची।
लज्जा तद० (स्त्री०) शर्म, लाज, सङ्कोच, शील। —रहित (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया।—शील (वि०) लज्जालु लजीला, शर्मीला।
लज्जित तद० (वि०) लज्जायुक्त, लजीला, शर्मिन्दा।
लट दे० (स्त्री०) अलूरी, केश, सिर का बाल। यथाः—
"ताही समय लट एक छुटकि कपोलन पर, मानो राहु चन्द्रमा को चाबुक चलायो है।"
लटक दे० (स्त्री०) ढंग, रीति, भाँति, प्रकार, टँगाव, झुकाव। —रहा है (क्रि०) झूल रहा है, टंग रहा है।
लटकन दे० (पु०) आभूषण विशेष, झुमका, एक वृक्ष का फूल जिससे कपड़े रँगे जाते हैं।
लटकना दे० (क्रि०) झूलना, टँगना, हिलना, पीछे रहना।
लटका दे० (पु०) गुन, मन्तर मन्तर, टुटका, टोना, (झाड़ फूँक, कौतूहलोत्पादक बात, चुटकुला)
लटकाना दे० (क्रि०) झूलना, टाँगना।
लटकाव दे० (पु०) टँगाव, झुकाव, झुलाव।
लटपट दे० (वि०) मिला, सटा, चिपटा।
लटपटा दे० (वि) चञ्चल, खिलाड़, गटपट।
लटपटाना दे० (क्रि०) लड़खड़ाना, विचलित होना, डिगना।
लटा दे० (वि०) दुर्बल, निर्बल, असक्त, असमर्थ।
लटाई दे० (स्त्री०) परेती, चर्खी, जिसमें डोरा रख कर गुड्डी उड़ाई जाती है।
लटपटा दे० (वि०) दुबला, पतला, अत्यन्त निर्बल, अतिशय असमर्थ, लटाला। [छोटी लटा।
लटूरिया दे० (पु०) लटा, जटा, चोटी, बच्चों की
लटूरी (स्त्री०) देखो "लटूरिया।"
लटोरा (पु०) पक्षी विशेष।
लट्टू दे० (पु०) भौंरा, भ्रमर, एक प्रकार का खिलौना, जिसे लड़के नचाते हैं।—होना (वा) मोहित होना, आसक्त होना, किसी के प्रेम में फँसना।
लठ दे० (पु०) बड़ी लाठी, बड़ा सोटा, बड़ा डंडा।
लठालाठी दे० (स्त्री०) लठ्ठाज़ी, लाठी की लड़ाई।
लठियाना दे० (क्रि०) लाठी मारना, लट्ठों से मारना, लाठी से पीट देना।
लड़र दे० (वि०) शिथिल, ढीला, ठंढा, धीमा, आलस, आलसकती, सुस्त।
लड़ दे० (स्त्री०) लरी, पाँति, पंक्ति, मोती आदि की माला। (क्रि०) झगड़, भिड़, युध।
लड़कपन दे० (पु०) लड़काई, बालपन।
लड़कबुद्धि दे० (स्त्री०) चिलबिल्लापन, चुलबुलाहट।
लड़का दे० (पु०) बालक, छोकरा, शिशु।—वाला (वा०) बच्चा बच्ची, लड़का लड़की।
लड़काई दे० (स्त्री) बालपन, शिशुता, लड़कपन।
लड़की दे० (स्त्री०) छोकरी, बेटी, तनया, कन्या, कुमारी, दुहिता।
लड़खड़ाना दे० (क्रि०) डगमगाना, डिगना, स्थिर नहीं ठहर सकना।
लड़ना दे० (क्रि०) लड़ाई करना, संग्राम करना, युद्ध करना, बखेड़ा करना।
लड़बड़ दे० (वि०) हलका, तुतला।
लड़बड़ाना दे० (क्रि०) लड़खड़ाना, तोतलाना, अस्पष्ट उच्चारण करना।
लड़बावला दे० (वि०) झक्की, पागल।
लड़ाई दे० (स्त्री०) युद्ध, संग्राम, समर।—करना (वा०) लड़ना, झगड़ना, बखेड़ा करना।
लड़ाक, लड़ाका तद० (वि०) झगड़ालू, विवादी, लड़ने वाला।
लड़ाना दे० (क्रि०) लड़ना, लड़ाई कराना, झगड़ा लगाना, उकसाना।
लड़ियाना दे० (क्रि०) गूँथना, पिरोना, लड़ बनाना, पोहना।
लड़ी दे० (स्त्री) पाँति, पंक्ति।
लड़ैता (वि०) प्यारा, दुलारा।
लड्डू दे० (पु०) मोदक, मिठाई, मोतीचूर आदि।
लढ़ा, लढ़िया दे० (पु०) छकड़ा, भार ढोने वाली गाड़ी, लाढ़ी। [भोंदू, पोंदका।
लंठ दे० (पु०) निर्बोध, अबोध, गँवार,
लंडूरा दे० (वि०) अनाथ, असहाय, एकाकी, बँडा।

लत दे० (स्त्री०) बुरी आदत, बान, सम्पात, बाज, बुरी चाल।—ना (क्रि०) घोड़े का घोड़ी के साथ जोड़ा खाना।
लतरी दे० (स्त्री०) पुरानी जूती।
लता तद० (स्त्री०) बेल, बल्ली, वल्लरी, उस पौधे को कहते हैं जिसकी ऊंचाई तो बहुत हो परन्तु वह बिना आश्रय के खड़ी न रह सके।—तरु (पु०) खजूर, नारंगी का पेड़।—पनस (पु०) तरबूजा, खरबूज। [घोड़े की लात।
लताड़ दे० (स्त्री०) फटकार, अपवाद, तिरस्कार,
लताड़ना दे० (क्रि०) फटकारना, तिरस्कार करना, लथेड़ना, लात मारना।
लतिका तद्० (स्त्री०) कोमललता, वल्ली, वल्लरी।
लतिया दे० (पु०) बुरी चाल का, कुचाली, दुराचारी।
लतियाना दे० (क्रि०) लात मारना।
लत्ता दे० (पु०) फटा पुराना कपड़ा, चीथड़ा, चिरकुट।
लत्ती दे० (स्त्री०) लत्ता, घास, लट्टू नचाने की डोरी।
लथड़ना दे० (क्रि०) लदफद होना, कीचड़ से भींगना।
लथरपथर दे० (पु०) लबालब, मुँह तक, ठसाठस।
लथेड़ना दे० (क्रि०) लथाड़ना, फटकारना।
लदना दे० (क्रि०) बोझैल होना, भार बोझाना।
लदाना दे० (क्रि०) बोझना, भरना, भार रखना।
लदाव दे० (पु०) मोट, बोझ, भार।
लद्दू दे० (वि०) लादने योग्य, लदने वाला।
लप दे० (स्त्री०) झप, शीघ्र, जल्दी, मुट्ठी भर, हथेली, पसर, पसा।
लपका दे० (स्त्री०) चटक, भड़क, चमक, शोभा, प्रकाश, दीप्ति।
लपकना दे० (क्रि०) चमकना, लहकना, आगे बढ़ना। [बुरी चाल।
लपका दे० (पु०) झपक, आक्रमण, फुर्ती, शीघ्रता,
लपकाना दे० (क्रि०) हाथ बढ़ाना, लेने के लिये आगे बढ़ना, बढ़ाना, अभिलाष करना।
लपकी दे० (स्त्री०) मत्स्य विशेष।
लपची दे० (स्त्री०) एक जाति की मछली।
लपझप दे० (वि०) फुर्तीला, चञ्चल, सतर्क, सावधान, अस्थिर।
लपट दे० (स्त्री०) लौ, सुगन्ध, महक, चिपक, सट,
लपटना दे० (क्रि०) सटना, मिलना, लगना।
लपटा दे० (पु०) पास, लगाव, सम्बन्ध।
लपटी दे० (स्त्री०) लपसी, चिपकी, सटी।
लपड़चटाई दे० (स्त्री०) "लबड़चटाई" देखो।
लपसी दे० (स्त्री०) पतला शीरा, पतला हलवा।
लपाटिया दे० (पु०) झूठा, मिथ्या वादी, लबार।
लपाटी दे० (स्त्री०) मिथ्या, झूठमूठ।
लपित दे० (स्त्री०) कहा हुआ, कथित, जो एक बार कहा जा चुका है। [सूक्ष्म।
लपानक दे० (वि०) दुबला, पतला, क्षीण, झीना,
लपेट दे० (स्त्री०) बेठन, वेष्टन, ढकन।—झपेट (स्त्री०) घोलघुमाव, टालमटूल, बहाना।
लपेटन दे० (पु०) बेठन, लपेटन का कपड़ा।
लपेटना दे० (क्रि०) बेठन लगाना, बाँधना, बेठनियाना।
लपेटवाँ दे० (वि०) ऐंठुवा, घुमाया हुआ।
लप्पा दे० (पु०) पट्टा, गोटा, किनारी।
लबड़खब्बा दे० (पु०) गड़बड़, अलेल, उबड़खुबड़।
लबड़चटाई दे० (स्त्री०) सूखी चूंची, गिरी हुई चूंची शिथिलस्तन। [उधर की बातें।
लबड़ सबड़ दे० (पु०) बकझक, झूठसाँच, इधर
लबड़ा दे० (पु०) झूठा, असत्यवादी, अनर्थक वादी।
लबनी दे० (स्त्री०) ताड़ी चुआने का घड़ा या चूल्हा।
लबरबट्टा दे० (पु०) नकचढ़ा, छोटी बात से क्रोध करने वाला।
लबझब दे० (पु०) जल्दी, शीघ्रता, लथर पथर।
लबलबा दे० (वि०) चिपचिपा, लसदार।
लबालेस दे० (स्त्री०) चापलूसी, लल्लोपत्तो, खुशामद।
लबार दे० (पु०) झूठा, गप्पी।
लबालब दे० (वि०) मुँह तक, ठसाठस।
लबी दे० (स्त्री०) चीनी की चाशनी।
लबादा दे० (पु०) रुई भरा जामा, बड़ा अंगा लट, मोटा सोंटा।
लबेदा दे० (पु०) लाठी।
लब्ध तद० (वि०) [लभ्+त] प्राप्त, उपार्जित।—वर्ण (पु०) पण्डित, निपुण, विद्वान्।

लब्धि तत्० (स्त्री०) [लभ्+क्ति] प्राप्ति, लाभ, हाथ लगना, हाथ में आना।
लभेड़ा, लभेरा दे० (पु०) लसोड़ा, वृक्ष एवं फल विशेष। [योग्य।
लभ्य तत्० (वि०) [लभ+य] प्राप्य, प्राप्ति के
लमकाना तद्० (पु०) लम्बकर्ण, शशक, ससा, खरहा, गर्दभ, खच्चर।
लमेरुआ दे० (स्त्री०) पयारफला, बांधा।
लम्पट तत्० (पु०) दुराचारी, दुष्कृत्य, झूठा, असत्यवादी। [बालक।
लम्ब (वि०) लंबा, ऊँचा। (पु०) नर्तक, लोलुप,
लम्बर, लंबर, दे० (स्त्री०) लोमड़ी, लूखरी, दगैला जन्तु विशेष, संख्या, गिनती।
लम्बा, लंबा दे० (पु०) ऊँचा, बड़ा, दीर्घ।—करना (वा०) फैलाना, बढ़ाना, पसारना।
लम्बाई, लंबाई, लम्बान, लंबान दे० (स्त्री०) ऊँचाई, दीर्घता।
लम्बाना, लंबाना दे० (क्रि०) लंबा करना, बढ़ाना, दीर्घ करना, फैलाना, पसारना।
लम्बित तत्० (वि०) लटकाया हुआ, टँगा हुआ, लटका हुआ। [क्रीड़ा, किलोल।
लबिम्या, लबिया दे० (स्त्री०) उछल कूद, खेल,
लम्री (स्त्री०) ऊँची, बड़ी।
लम्बी सांस भरना दे० (वा०) रोना, बिलपना, विलाप करना।
लम्बोदर तत्० (स्त्री०) गणेश, गणनायक, विनायक, गजानन, बड़े पेट वाला।
लम्मा दे० (पु०) लमकाना, खरहा, शशक, ससा।
लय तत्० (पु०) प्रलय, नाश, ध्वंस, विनाश, ताल, स्वर, लीन, मग्न, लवलीन—पालक (पु०) गोद लिया हुआ बालक।
लर्री दे० (पु०) लच्छा, लौटी, फेंटी।
ललक दे० (स्त्री०) मन की चाह, इच्छा, अभिलाष, ललोल, लहर, उत्सुकता।
ललकना दे० (क्रि०) चाहना, तरसना, उत्सुक होना, लालायित होना।
ललकाना दे० (क्रि०) लोभ देना, मोहित करना, इच्छायित करना, लुभाना, ललचाना।
ललकार दे० (पु०) हाँक, पुकार, दाँक, बढ़ावा, प्रोत्साहन वाक्य।—ना (क्रि०) सामने के लिये बुलाना, पुकारना।
ललगांड़ा दे० (पु०) वानर, कपि, मर्कट।
ललचाना दे० (क्रि०) तरसाना, लुभाना, लटकाना।
ललन तत्० (पु०) कुतूहल, कौतुक, खेल, क्रीड़ा, अत्यन्त दुलार में पुत्र को भी पुत्र में ललन कहते हैं। [प्रवीण स्त्री।
ललना तत्० (स्त्री०) महिला, नारी, स्त्री, कामकला
लला दे० (पु०) बालक, लड़का, छोरा, छोकरा। (वि०) प्रिय, दुलारा, इकलौता, अतिशय प्रिय।
ललाट तत्० (पु०) सिर, कपाल, भाग्य, मस्तक, प्रारब्ध।
ललाम तत्० (वि०) सुन्दर, मनोहर, श्रेष्ठ, उत्तम, भूषण। [सुहावना, चमत्।
ललित तत्० (वि०) सुन्दर, मनोज्ञ, मनभावन,
ललिता तत्० (स्त्री०) एक गोपी का नाम, सुन्दरी।
ललियाना दे० (क्रि०) फुसलाना, बहकाना, वश में करना।—परचाना, अपने में मिलाना।
लली दे० (स्त्री०) बालिका, छोकरी, लड़की।
लल्लोपत्तो दे० (पु०) चापलूसी, खुशामद, गुलामा, फुसलावा।
लव तत्० (पु०) क्षण, निमेष, पल, मिथकाधिप का एक भाग, रामचन्द्र का बड़ा बेटा। (वि०) थोड़ा, अल्प, थोड़ा, न्यून, कम।
लवक तत्० (पु०) करवैया, करने वाला।
लवङ्ग तत्० (पु०) वृक्ष विशेष का फूल।
लवण तत्० (पु०) नोन, निमक।—समुद्र (पु०) खारा समुद्र।
लवणाम्बु तत्० (पु०) खारा पानी, खारा समुद्र, सागर।
लवणासुर (पु०) मधुदैत्य के पुत्र का नाम।
लव-निमेष (पु०) अल्प समय, थोड़ा समय।
लवमात्र (वि०) थोड़ी देर, क्षण मात्र।
लवलेश (पु०) बहुत ही थोड़ा, तनक सा।
लवन तत्० (पु०) कटनी, कटाई।
लवा दे० (पु०) पक्षी विशेष, बटेर पक्षी [अस्त्र।
लवाक तत्० (पु०) हँसुआ, दराती, खेत काटने का

लबार (वि०) झूठा, असत्यभाषी।
लशटम्पशटं दे० (अ०) उलटापुलटा, किसी प्रकार, किसी भाँति।
लशुन तद्० (पु०) लहसन, कन्द विशेष।
लषन, लषण (पु०) लक्ष्मण।—पुर (पु०) नगर विशेष, लखनऊ।
लषित (पु०) चाहा हुआ, देखा हुआ।
लस दे० (पु०) चिपचिपाहट, गोंद, तरी, सार।
लसकना दे० (क्रि०) चिपचिपा होना, लसना, गीला होना। [सोहना, सजना।
लसना दे० (क्रि०) शोभित होना, शोभा पाना,
लसलसा दे० (वि०) चिपचिपा, लसदार, गोंदैला।
लसा (स्त्री०) हल्दी, चिपटा हुआ।
लसित तद्० (वि०) शोभित, विराजित, लक्षित, प्रत्यक्ष, आँखों के सामने।
लसियाना दे० (क्रि०) लसलस होना, चिपकना, चिपचिप होना।
लसोड़ा दे० (पु०) लभेर, एक वृक्ष विशेष और उसका फल, यह फल लसदार होता है।
लस्त (पु०) थका हुआ।
लस्सी दे० (स्त्री०) भक्ष्य विशेष, दूध और पानी मिला हुआ भोजन, उलझन, फन्दा।
लहँगा दे० (पु०) घाँघरा, फरिया, स्त्रियों के पहिनने का एक प्रकार का कपड़ा जिसे वे कमर में बाँध कर पहनती हैं।
लहक दे० (स्त्री०) चमक, झलक, उजाला, प्रकाश।
लहकना दे० (क्रि०) चमकना, बलना, उजाला होना, प्रकाशित होना, बलना।
लहकाना दे० (क्रि०) बहकाना, गहगहाना, आग बलाना, बालना।
लहकारना दे० (क्रि०) पुचकारना, शब्द से आदर करना, दिखावटी आदर करना।
लहकारट दे० (स्त्री०) चमक, दीप्ति, प्रकाश, शोभा।
लहकीला दे० (वि०) चमकीला, जगमग, प्रकाशशील।
लहकौर या लहकौवर दे० (पु०) विवाह की एक रीति, वर को दही चीनी खिलाना।
लहड़ू दे० (पु०) छोटी बैलगाड़ी।
लहना दे० (क्रि०) लगना, ठहरना, पाना, खाना, (पु०) कर्ज़, ऋण, देना।
लहबर दे० (पु०) मीठ, तोता, सुग्गा।
लहर उद्० (स्त्री०) लहरी, तरङ्ग, गङ्गा या नदियों का हिलोरा, रङ्ग रङ्गने की एक प्रक्रिया, विष चढ़ने का पर्व, हिलोरा।
लहरना दे० (क्रि०) तरङ्ग उठना, हिलकोरा मारना, प्रसन्न होना, बलने लगना, आग लगना।
लहरबहर दे० (स्त्री०) सौभाग्य, सम्पत्ति, धन।
लहराना दे० (क्रि०) बढ़ना, लहर मारना, तरङ्ग उठना।
लहरिया दे० (पु०) वस्त्र विशेष, डोरिया, रङ्गीली लहरदार धारियों का कपड़ा, एक विशेष रीति से रङ्गा हुआ कपड़ा।
लहरी दे० (स्त्री०) मनमौजी, उच्छृङ्खल, चोचला, मनमाना काम करने वाला।
लहलहा दे० (वि०) विकसित, प्रफुल्ल, फूला हुआ।
लहलहाना दे० (क्रि०) खिलना, फूलना, विकसना, विकसित होना।
लहलुट दे० (पु०) "लेलूट" देखो।
लहलोट दे० (वि०) लेइ उधार ले के न दे।
लहसन दे० (पु०) शरीर के ऊपर जन्म से उत्पन्न चिन्ह विशेष, मसा।
लहसुन दे० (पु०) लशुन, कन्द विशेष।
लहसुनिया दे० (पु०) हीरे का एक भेद एक प्रकार का हीरा।
लहाछेह (स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी।
लहास (स्त्री०) नौका बाँधने की डोरी।
लहासी दे० (स्त्री०) रस्सा, गुर्ण, लहास।
लहियत (क्रि०) पाता है।
लहू दे० (पु०) रुधिर, रक्त, लोहू, शोणित।—
—लुहान (पु०) खून में सराबोर —लुहान (वा०) रुधिर पूर्ण, लोहू से भरा हुआ।
लाई दे० (स्त्री०) लावा का लड्डू, चबेना, भूँजा अन्न।
लाँक दे० (पु०) कटि, कमर, लङ्क भूसा, लासा, भूसी।
लाँघ दे० (पु०) फलाँग, दूर, वदल, कुलाँच।

लाँघना दे० (क्रि०) उतरना, पार होना, पार जाना, कूदना, फाँदना।

लाक्षा तद्० (स्त्री०) लाख, महावर, महावर का रंग, लाह। [से कथित अर्थ।

लाक्षणिक तद्० (वि०) लक्षण युक्त, लक्षणा वृत्ति

लाख दे० (पु०) संख्या विशेष, लक्ष, सौ हज़ार की संख्या, लाह, लाक्षा, जन्तु, लाही।

लाखी दे० (स्त्री०) लाही का रंग।

लाग दे० (पु०) द्वेष, विरोध, बैर, शत्रुता, विद्वेष।

लागत दे० (स्त्री०) मोल, दाम, मूल्य।

लागना दे० (क्रि०) भिड़ना, विरोध करना, सट जाना, लगाना। [द्वेष, शत्रु, विरोधी।

लागी दे० (स्त्री०) स्नेह, छोह, प्यार। (पु०)

लागू दे० (वि०) चलने वाला, पिछलगू, अनुयायी, अनुगत। [छुटाई, नीरोगता, सुस्पता।

लाघव तद्० (पु०) लघुता, छोटाई, क्षुद्रता, नीचता,

लाङ्गल तद्० (पु०) हल, जिससे खेत जोता और बोया जाता है।—ी (पु०) बलदेवजी, जलपीपर, नारियल।—फोटि (पु०) हल के मुँह पर लगा हुआ लोहे का फाल।

लाङ्गूल तद्० (पु०) पूँछ, पशुओं का अङ्ग विशेष।—ी (पु०) कौंच का बीज, वानर।

लाची (स्त्री०) इलायची।

लाज तद्० (स्त्री०) लज्जा, सङ्कोच, शर्म।—वन्त (वि०) लजीला, कुलवन्त।

लाजा तद्० (पु०) लावा, खील, खोई, धान का लावा।

लाजावर्त्त तद्० (पु०) मणि विशेष, राबटी।

लाञ्छन तद्० (पु०) चिन्ह, अपराध, कलङ्क, दाग़, धब्बा। [बुराई।

लाञ्छना तद्० (स्त्री०) निन्दा, तिरस्कार, अपमान,

लाञ्छित तद्० (वि०) तिरस्कृत, निन्दित, अपमानित। [जो मल विशेष गिराता है।

लाफा दे० (पु०) लास, बैल आदि के ब्याने के समय

लाट तद्० (पु०) देश विशेष, लमा, स्तम्भ, प्राचीन, पुराना, जीर्ण।

—ाटी तद्० (स्त्री०) काव्य की एक रीति का नाम, लाट देश की स्त्री। (दे०) बेंदुली।

लाठ दे० (पु०) मोटा खम्भा, मोटा और लम्बा खम्भा, बेलवृक्ष का काठा।

लाठी दे० (स्त्री०) लकड़ी, सोटा।

लाड़ दे० (पु०) छोह, प्यार, दुलार।—लड़ाना (मा०) प्रेम करना, दुलार करना, दुलार से खिलाना।

लाड़ला दे० (वि०) प्यारा, दुलारा, प्रिय।

लाड़ली दे० (स्त्री०) प्यारी, दुलारी, प्रिय।

लाडू दे० (पु०) लड्डू, मोदक।

लात दे० (स्त्री०) पैर।

लातिन (स्त्री०) भाषा विशेष, लैटिन।

लाद दे० (स्त्री०) बोझ, भार, अन्तड़ी, हृदय।

लादना दे० (क्रि०) भरना, बोझना, भार भरना।

लादिया दे० (पु०) लादने वाला।

लादी दे० (स्त्री०) गठरी, गदहे पर का बोझ।

लादू दे० (वि०) लद्दू, लादने योग्य, लादने के उपयुक्त।

लाना दे० (क्रि०) ले आना, पास ले आना।

लापक (पु०) गीदड़, सियार।

लापना दे० (क्रि०) कूदना, फाँदना हाँफना।

लाभ दे० (पु०) प्राप्ति, नफ़ा पाना, मिलना, सूद।

लार दे० (पु०) मणि विशेष, दुलारा दुलरुआ, प्रिय, प्यारा। (वि०) लाल रङ्ग का, रक्त वर्ण।—बुझक्कड़ (पु०) बहुत बड़ा मूर्ख जो स्वयं मूर्ख हो, परन्तु अपने को अधिक बुद्धिमान् समझे।

लालच दे० (पु०) लोभ, तृष्णा, चाह, इच्छा, अभिलाष।

लालची दे० (पु०) लोभी, स्वार्थी।

लालड़ी दे० (स्त्री०) मानिक, चुन्नी।

लालन दे० (पु०) पालन करना, प्रेमपूर्वक पालना, पोसना, पोषण करना।

लालना दे० (क्रि०) पालना, प्यार से खिलाना।

लालसा तद्० (स्त्री०) इच्छा, मनोरथ, अभिलाष।

लाला दे० (पु०) कायस्थ, जाति विशेष, पटवारी।

लालाटिक तद्० (वि०) स्वामी देख कर काम पड़ने वाला, पराभाग्योपजीवी, भाग्याधीन, भाग्याधीन, भाग्य का भरोसा रखने वाला।

लालित (पु०) दुलारा हुआ, पाला हुआ, पोषित।
लालित्य तद्० (पु०) मनोहरता, रमणीयता, सुन्दरता।
लाली (स्त्री०) लड़की, प्यारी, ललाई।
लाव दे० (पु०) रस्सी, उल्लास।
लावण्य तद्० (पु०) सुन्दरता, शरीर की स्वाभाविक प्रभा जिससे सुन्दरता उत्पन्न होती है।
लावलाव दे० (पु०) लोभ, चाह, अभिलाष, तृष्णा।
लावसाव दे० (पु०) लाभ, प्राप्ति, बढ़ती, वृद्धि।
लावा दे० (पु०) खील, खोई।
लावू दे० (स्त्री०) लौका, कद्दू।
लास (पु०) नृत्य, रास, मोद।—क (पु०) मयूर, नर्त्तक, नचैया।
लासा दे० (पु०) चेप, गोंद, जो चिड़िया पकड़ने के काम में आता है, फँदा। [लाख, लाही।
लाह तद्० (पु०) लाभ, प्राप्ति, क्षेमकुशल, मङ्गल,
लाहा तद्० (पु०) लाभ, प्राप्ति, लब्धि।
लाही दे० (स्त्री०) लाख, लुब्धा, तोरी, सर्षप, सरसों, महीन कपड़ा।
लाहौर (पु०) पञ्जाब की राजधानी।
लिखत (पु०) तमस्सुक, दीप, चिट्ठीपत्री। [चिट्ठी।
लिखतङ्ग, लिखतंग दे० (पु०) लेख, नियमपत्र,
लिखना दे० (क्रि०) अक्षर बनाना, लिखाई करना।
लिखनी तद्० (स्त्री०) कलम, लिखने का साधन, लेखनी।—दास (पु०) लेखक।
लिखन्त दे० (पु०) प्रारब्ध, भाग्य, कपाल, ललाट, लिखा हुआ।
लिखा दे० (पु०) प्रारब्ध, होनहार, भवितव्य।
लिखाई दे० (स्त्री०) लिखना, लिखने का काम।
लिखावट दे० (स्त्री०) लेख, अक्षरों की बनावट।
लिखित तद्० (गु०) लिखा हुआ।
लिङ्ग तद्० (पु०) पुरुषेन्द्रिय, पुरुष चिन्ह, चिन्ह, लक्षण, शरीर विशेष, कारण शरीर, शिवजी की पिण्डी।
लिचु (पु०) एक प्रकार का फल।
लिजड़ी दे० (स्त्री०) दब, पोतड़ी।
लि[illegible]ना दे० (क्रि०) सुलाना, पौढ़ाना, सुला देना।
लिट्टी दे० (स्त्री०) मोटी रोटी, बाटी।
लिथड़ना दे० (क्रि०) लथाड़ना, अपमानित करना, तिरस्कार करना।
लियाड़ना दे० (क्रि०) पछाड़ना, लथाड़ना।
लिपटना दे० (क्रि०) चिपकना, सटना, लिटपिटाना।
लिपटाना दे० (पु०) सटाना, मिलाना, युद्ध करना।
लिपटाव दे० (पु०) चिपटाव, सटाव, मिलान।
लिपड़ी दे० (स्त्री०) पुरानी पगड़ी।
लिपवाना दे० (क्रि०) पुतवाना, पुताना, चौका दिलाना, पोतना चलवाना।
लिपाई दे० (स्त्री०) लीपने का काम।
लिपि तद्० (स्त्री०) लेप, लेख, हस्ताक्षर, हस्तलेख।—कर (पु०) लेखक, लिखने वाला।
लिप्त तद्० (वि०) लिपा हुआ, लिपा पोता।
लिबलिबा दे० (वि०)लसलसा, चिपचिपा, लबलबा।
लिब्बा दे० (पु०) चपत, चपेटा, धौल धप्पा।
लिम दे० (स्त्री०) कलङ्क, दोष, अपराध, लांछन, चिन्ह, लक्षण।
लिये दे० (अ०) वास्ते, निमित्त, तदर्थ, हेतु, हेतवर्थ।
लिलाना दे० (क्रि०) चाहना, इच्छा करना, ललचाना, लोभ करना, तृष्णा करना।
लिलार (पु०) ललाट, कपाल,प्रारब्ध, नसीब।
लिवाना दे० (क्रि०) बुलवाना, आह्वान करना।
लिवालाना दे० (वा०) साथ बुला लाना, साथ ले कर आना।
लिहाफ दे० (पु०) रुई भरी हुई मोटी रजाई।
लिहाड़ा दे० (गु०) दुष्ट, नीच, अधम, कदाचार, दुराचारी, दुष्ट।
लीक दे० (स्त्री०) रेखा, चिन्ह, पगडण्डी।
लीख तद्० (स्त्री०) सिर के बालों की छोटी जूँ।
लीचड़ दे० (वि०) कृपण,कञ्जूस, अर्थपिशाच, धनदास, सुस्त, ढीला।
लीची दे० (स्त्री०) फल विशेष, एक वृक्ष और उसके फल का नाम।
लीझी दे० (स्त्री०) गाद, मल, तलछट।
लीतरा दे० (पु०) पुराना जूता, टूटा जूता।
लीद दे० (स्त्री०) घोड़े की विष्ठा।
लीन तद्० (वि०) तन्मय, तत्पर, आसक्त, डूबा हुआ, मग्न।

लीपना (क्रि०) पोतना, लेपना, पोतना।
लीचड़ दे० (पु०) कीचड़, पाँक, पङ्क। [की शान्ति।
लीम दे० (पु०) सन्धि, मेल, मिलाप, शान्ति, विरोध
लीमू दे० (पु०) नीबू, निबुआ।
लीर दे० (स्त्री०) चिट, चिथड़ा, कतरन।
लील तद्० (पु०) नील। (वि०) नीला, नील रंग।
लीलना दे० (क्रि०) निगलना, घोंटना, गलाधःकरण, गले के भीतर करना।
लीलहि (स्त्री०) बिना श्रम, खेल ही खेल में, अनायास (क्रि०) निगल जाय। [अनुकरण।
लीला तद्० (स्त्री०) क्रीड़ा, विहार, खेल, कौतुक,
लीलावती तद्० (स्त्री०) विलासवती स्त्री, विलास युक्ता स्त्री। प्रसिद्ध ज्योतिर्वेत्ता भास्कराचार्य की कन्या, कहते हैं भास्कराचार्य का प्रसिद्ध पाटीगणित इन्हीं के नाम पर रखा गया है। जगह जगह पर उस ग्रन्थ में भास्कराचार्य ने लीलावती के नाम का उल्लेख किया है। जिससे मालूम होता है कि उस ग्रन्थ की श्रोत्री उनकी कन्या लीलावती ही थी।
लुक दे० (पु०) आकाश से गिरने वाला तारा, लू।
लुकना दे० (क्रि०) छिपना, गुप्त होना।
लुकन्द्रा दे० (पु०) दुराचारी, दुष्ट, दुष्कृत, लुच्चा, लम्पट।
लुका (वि०) गुप्त, छिपा हुआ।—अंजन (पु०) अञ्जन विशेष जिसके आँखों में लगाने से लगाने वाला अदृश्य हो जाता है।
लुकाना दे० (क्रि०) छिपाना, ढाँकना, गुप्त करना।
लुखरी (स्त्री०) लोमड़ी, दुँगर।
लुगाई दे० (स्त्री०) नारी, स्त्री।
लुच दे० (पु०) निरा, केवल, नंगा, उघाड़ा।
लुचई दे० (स्त्री०) पूरी, सोहारी, लुचपन, दुष्टता।
लुचपन दे० (पु०) दुष्टता, दुश्चरित्रता, बदमाशी।
लुचरा दे० (पु०) मकड़ा, कीट विशेष।
लुच्चा दे० (पु०) कुकर्मी, अन्यायी, दुष्ट, दुराचारी।
लुजलुजा (वि०) लचीला, कमज़ोर।
लुञ्जा दे० (वि०) हस्तहीन, हाथ से हीन, लूला।
लुटना दे० (क्रि०) लुट जाना, अपहृत होना छिन जाना, धन हरण होना।
लुटवैया दे० (पु०) लूटने वाला, ठग, बटमार, धूर्त।
लुटाना दे० (क्रि०) गवाना, खोना, उड़ाना, दे देना, बाँट देना।
लुटिया दे० (स्त्री०) छोटा लोटा।
लुटेरा, लुटेरू दे० (पु०) लूट करने वाला, लुटवैया।
लुट्टस दे० (पु०) बिगाड़, नाश, ध्वंस, लूटखसोट।
लुठन (पु०) घोड़ा गधा आदि की थकावट दूर करने के लिये ज़मीन पर लोटपोट करना।
लुड़का दे० (पु०) कान का एक प्रकार का गहना।
लुड़की दे० (स्त्री०) छोटा लुड़का।
लुड़कना दे० (क्रि०) ढुलना, ढुलकना, ढलकना।
लुड़लुड़ी दे० (स्त्री०) ढुलन, लुढ़कन।
लुढ़कना दे० (क्रि०) गिरना, गिर जाना, ढलकना।
लुढ़ाना दे० (क्रि०) बगेरना, छोड़ना, गिराना, सूप से धूल आदि को अलग करना।
लुढ़िया दे० (पु०) छोटा लोढ़ा, लोढ़ा, बट्टा, जिससे मसाला आदि पीसा जाता है।
लुढ़ियाना दे० (क्रि०), कपड़े सीना, टाँके दिये हुए कपड़े को मज़बूत सीना।
लुण्ठित (पु०) चुराया हुआ, अपहृत। [पूँछ का।
लुण्डा, लुण्डा दे० (वि०) बंडा, पुच्छहीन, बिन
लुतरा दे० (वि०) बड़बड़िया, बकवादी, गप्पी, झूठा, असत्यवादी, निन्दक, निन्दा करने वाला।
लुनाई दे० (वि०) लावण्य, निमकीनपन।
लुनिया दे० (स्त्री०) लुनिया, एक घास का नाम, एक जाति का नाम।
लुपरी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का भोग, लपसी।
लुपलुप दे० (क्रि०) पशु आदि के खाने का शब्द विशेष।
लुप्त तद्० (वि०) नष्ट विध्वस्त, आँखों की ओट, अदर्शन, गुप्त। [दवा, औषधि पिण्ड।
लुबदी दे० (स्त्री०) लेप आदि के लिये पीसी हुई
लुब्ध तद्० (वि०) [लुभ्+क्त] लोभी, सतृष्ण, तृष्णायुक्त, स्वार्थी।
लुब्धक तद्० (पु०) व्याध, बहेलिया, शिकारी।
लुभाना दे० (क्रि०) ललचाना, लोभ देना, लोभ दिखाना। [राजा का नाम।
लुम्पक (पु०) चोरी करने वाला चोर, मालवा का एक
लुरकी (स्त्री०) लुरकी, कान में पहनने का गहना।

लुदपडा, लुदंडा दे० (पु०) घोड़े का इपटा।
लुदरा दे० (पु०) छहुरा, छोटा, कनिष्ठ।
लुदाङ्गी, लुदांगी दे० (स्त्री०) घोड़े से मढ़ी हुई लाठी।
लुहान दे० (वि०) लहू भरा, रक्तपूर्ण, रक्तमय।
लुहार दे० (पु०) जाति विशेष, लोहा का काम करने वाली जाति, लोहकार। (स्त्री०) लुहारिन।
लू दे० (स्त्री०) उष्णवायु, गरम बतास।
लूआठ दे० (पु०) जली लकड़ी, अधजली, अर्धदग्ध।
लूक दे० (स्त्री०) हवा विशेष, गरम वायु, लू।
—ट (वि०) अधजला, लुआठ।
लूकटी दे० (स्त्री०) लोमड़ी।
लूकना दे० (क्रि०) लू लगना, लू से जलना, दग्ध होना, छिपना।
लूकवाही दे० (पु०) अगवाही, होली के दिन का एक प्रकार का तृण निर्मित दण्ड, जिसमें आग डालते हैं। [आग की लपट।
लूका दे० (स्त्री०) जलती लकड़ी, चिनगारी, लपट,
लूख दे० (स्त्री०) आग, लूक, ज्वाला।
लूट दे० (स्त्री०) चोरी, अपहरण, अपहार, डकैती, डाँका।—खसोट (स्त्री०) लुहस, डाँका।
लूटना दे० (क्रि०) अपहरण करना, ठगना, डाँका मारना।
लूटक (पु०) लूटने वाला, ठग, कमरचंद।
लूता तद० (स्त्री०) मकड़ी, एक प्रकार का कीड़ा जो जाला बनाता है। संस्कृत में जिसे ऊर्णनाभ अर्थात् रेशम का कीड़ा कहते हैं।
लून दे० (पु०) नोन, लवण, निमक, काटा गया।
लूनिया दे० (पु०) जाति विशेष, जो नोन निकालने का पेशा करते हैं। खारा, एक पौधे का नाम, बेलदार।
लूनी दे० (स्त्री०) माखन, मक्खन, नैनू, नवनीत।
लूला दे० (वि०) पंगा, टूटे पैरों वाला।
लूह दे० (स्त्री०) लू, लूक।
लूहर (पु०) लुकेठा, लूक, गिरा हुआ तारा।
ले दे० (अ०) तक, तलक, अवधि, पर्यन्त।
लेई दे० (स्त्री०) माँडी, माँड, एक प्रकार का भोजन। बिना घी चीनी का हलुआ जिससे कागज़ चिपकाया जाता है।
लेंड़ी दे० (स्त्री०) मींगनी, बकरे आदि की बीट।
— (पु०) एक तरह का डरपोक कुत्ता। (वि०) नामर्द, असमर्थ।
लेंढ़ा दे० (पु०) अन्तःसार शून्य फल, बँधा फल, खोखला फल, भेड़ आदि का झुंड।
लेख तद० (पु०) लिखित, लिखावट, प्रबन्ध, रचना, लिखावट।
लेखक तद० (पु०) लिखने वाला, लिखने का काम करने वाला, लिपिकार, ग्रन्थकर्त्ता।
लेखकी तद० (स्त्री०) लिखाई, लेखक का काम।
लेखन तद० (पु०) लीपि, लिखाई, लिखावट।
लेखनी तद० (स्त्री०) लिखनी, लिखने का साधन, कलम।
लेख पत्र (पु०) खत का पत्ता।
लेखा दे० (पु०) गिनती, गणित, हिसाब।
लेख्य तद० (वि०) चिट्ठी पत्री, लिखने योग्य, चित्र, तसवीर।
लेख्यगृह (पु०) दफ़्तर, कचहरी, आफ़िस।
लेज दे० (स्त्री०) रस्सी, डोरी।
लेजाना दे० (क्रि०) ले भागना, उठा ले जाना, दूसरे स्थान पर रखना।
लेज्जुर दे० (स्त्री०) रस्सी, डोरी, लेज।
लेज्जुरी दे० (स्त्री०) देखो लेज।
लेट दे० (पु०) गच, मकान आदि को पक्का बनाने के लिये चूना सुरखी आदि का बना लेप।
—लगाना (क्रि०) लेटना।
लेटना दे० (क्रि०) सोना, शयन करना, आराम करना, विश्राम करना।
लेठगना (क्रि०) चोरी करना।
लेनदेन दे० (पु०) व्यवहार, व्यापार।
लेना दे० (क्रि०) ग्रहण करना, अपने अधिकार में करना, पकड़ना। [लगाने की दवा, मलहम।
लेप तद० (पु०) पोतने की वस्तु, घाव आदि पर
लेपड़ना दे० (क्रि०) संग सोना, ले आना, नाश करना, बिगाड़ना।
लेपना दे० (क्रि०) पोतना, लेप लगाना।
लेपन (पु०) लेपने की वस्तु, मरहम उबटन इत्यादि।

ले पालक दे० (पु०) धर्मपुत्र, पाला हुआ पुत्र, पोसा हुआ बेटा, पोष्यपुत्र । [पोसना ।

ले पालना दे० (क्रि०) बेटा के समान पालना,

ले मरना दे० (धा०) कलङ्क लगाना, दोषी करना, अपने साथ नष्ट करना, स्वयं ख़राब होना, दूसरों को भी ख़राब करना ।

ले रखना दे० (क्रि०) संचय करना, संग्रह करना, बटोरना, एकत्रित करना ।

ले रहना दे० (क्रि०) संग रखना, साथी बनाना, अपने अधिकार में कर लेना ।

लेरू, लेरुआ दे० (पु०) बच्चा, बछड़ा ।

लेला दे० (पु०) भेड़ का बच्चा, मेमना, छोटी भेड़ ।

लेलुट दे० (वि०) लड़खुट, ले कर न देने वाला ।

ले लेना दे० (क्रि०) छीनना, छीन लेना, लूटना, खसोटना ।

लेलिह (पु०) साँप, सर्प, नाग ।

लेव दे० (स्त्री०) भीत की पपड़ी, छाप ।

लेवा दे० (पु०) ग्राहक, लेने वाला, मट्टी और राख जो बटलोई की पेंदी में, इस लिये लगाई जाती है जिससे वह जले नहीं ।—देई (स्त्री०) लेनदेन, व्यवहार, व्यापार ।

लेवार दे० (पु०) गीली मिट्टी, भीत पर छाप लगाने को मिट्टी, लेप, लेवा ।

लेवास दे० (पु०) हठ, टेट ।

लेवैया दे० (पु०) लेने वाला, लेवा, ग्राहक ।

लेश तत्० (पु०) अल्प, लघु, थोड़ा, स्वल्प, अत्यल्प, अंश, मात्रा । [कर बंद करना ।

लेसना दे० (क्रि०) लीपना, पोतना, मिट्टी से थोप

लेसालेस दे० (पु०) लिपाई, चारों ओर लीपने का काम होना ।

लेस (पु०) भूसी मिली हुई मिट्टी जो भीत में लगाई जाती है । लीपपोत । [भोजन ।

लेहन तत्० (पु०) चाटना, अवलेहन, पतली वस्तु का

लेह (स्त्री०) जल्दी, शीघ्रता, उतावली ।

लेहना दे० (पु०) चारा, घास, पाला ।

लेही दे० (स्त्री०) आटे का बना चिपकाने का पदार्थ ।

लेह्य तत्० (गु०) लीपन करने योग्य, अवलेह, अवलेहन करने की वस्तु, चाटने योग्य ।

लैस दे० (गु०) तैयार, प्रस्तुत, बना बनाया, सिद्ध, (पु०) पट्टा ।

लोई दे० (स्त्री०) पुरसा, ऊन की बनी ओढ़ने की वस्तु, गुँधे आटे के गोल गोल पिण्ड, जिन्हें बेल कर पूड़ी तैयार की जाती है ।

लों दे० (अ०) तक, पर्यन्त, अवधि ।

लोंकिया दे० (स्त्री०) कद्दू, शाक विशेष ।

लोंग (स्त्री०) एक तरह का गरम मसाला, टैंका, घोंघा ।

लोंद दे० (पु०) अधिक मास, पुरुषोत्तम महीना ।

लोंदा दे० (पु०) पिण्डा, मिट्टी आदि का पिण्डा ।

लोक तत्० (पु०) लोग, जन, मनुष्य, भुवन, द्वीप, मनुष्यों का वासस्थान ।—पाल (पु०) राजा, दिक्पाल ।

लोकना दे० (क्रि०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को बीच ही में पकड़ लेना, पकड़ना, गोचना, झुलना ।

लोकनाथ (पु०) राजा, विष्णु, ब्रह्मा, शिव ।

लोकप (पु०) लोकपाल, लोक का पालने वाला, राजा । [कमला, रमा ।

लोकमाता (स्त्री०) लोकों की माता, लक्ष्मी,

लोकरा दे० (पु०) चीथड़ा, फटा कपड़ा ।

लोकलोचन (पु०) सूर्य, भास्कर, सूरज ।

लोकापवाद (पु०) बदनामी, लोकनिन्दा, अपकीर्ति ।

लोखर दे० (पु०) हथियार, लोहे का पात्र ।

लोखरी (पु०) लोमड़ी, हुँडार ।

लोग तत्० (पु०) लोक, मनुष्य, जन ।

लोगाई दे० (स्त्री०) लुगाई, स्त्री, नारी, मेहरारू ।

लोचन तत्० (पु०) आँख, नयन, नेत्र, चक्षु ।

लोचना (स्त्री०) सुन्दर नेत्रवाली, सुन्दरी ।

लोटन दे० (स्त्री०) लुपटन, नेत्र, नयन, चक्षु, आँख, पटकन, मचलहिया ।—कबूतर (पु०) कपोत विशेष, कबूतर की एक जाति । [पटकना खाना ।

लोटना दे० (क्रि०) तड़फना, छटपटाना, पटकना,

लोटपाट दे० (गु०) तड़फन, पटकन ।

लोटा दे० (पु०) जल पात्र विशेष । [जाता है, बट्टा ।

लोढ़ा दे० (पु०) वह पत्थर जिससे मसाला पीसा

लोढ़ी दे० (स्त्री०) छोटा लोढ़ा, लुढ़िया।
लोथ दे० (पु०) मृतक, मृतक शरीर, मुर्दा, शव।
लोथरा दे० (पु०) मांस का पिण्ड, बोटी।
लोथा दे० (पु०) बोरा, थैला।
लोथी दे० (स्त्री०) गठीली लाठी, लट्ठा।
लोदी दे० (पु०) पठानों की जाति विशेष, इस जाति के लोग भी कुछ दिनों तक भारत के राजा रह चुके हैं।
लोधिया दे० (पु०) जाति विशेष, किसान, कुर्मी।
लोधी दे० (पु०) "लोधिया" देखो।
लोन दे० (पु०) नून, लून, लवण, निमक। [विशेप।
लोना दे० (वि०) खारा, लवण युक्त। (पु०) फल
लोनार दे० (पु०) खारी भूमि, खार, खार भूमि।
लोप तत्० (पु०) अदर्शन, अदर्शन, नाश, विध्वंस, अगोचर।
लोपमुद्रा (स्त्री०) अगस्त्य ऋषि की पत्नी।
लोपड़ी दे० (स्त्री०) लोंदा, लेप विशेष।
लोपी (पु०) लोप करने वाला, नाशकर्ता।
लोबान दे० (पु०) सुगन्धयुक्त द्रव्य विशेष, जो धूप में जलाया जाता है। [सेमिया है।
लोबिया दे० (पु०) एक तरकारी, जिसका नाम बन-
लोम तत्० (पु०) तृष्णा, लालच, इच्छा, ईप्सा।
लोभना दे० (क्रि०) मोहित होना, चाहना, ललचना।
लोभी तत्० (वि०) लालची, लोलुप, लुब्ध।
लोम तत्० (पु०) रोम, रोंआँ, रुँगटा।
लोमड़ी (स्त्री०) लोखरिया, लुकरी, जन्तु विशेष।
लोमश (पु०) एक ऋषि का नाम। (वि०) जिसके देह में बहुत बाल हों।
लोयन तद्० (पु०) लोचन, नयन, नेत्र।
लोर दे० (पु०) आँसू, अश्रु, नयनजल।
लोल तत्० (पु०) चञ्चल, लालची।
लोलक तत्० (पु०) कान का एक गहना विशेप।
लोलुप तत्० (पु०) अत्यन्त लोभी, लालची, लुब्ध।
लोवा (पु०) चवापदी, लोमड़ी।
लोष्ट तत्० (पु०) ढेला, मिट्टी, मृत्तिका।
लोह तत्० (पु०) धातु विशेष, लौह धातु।—चून (पु०) लोहे का चूरा, रेत।—पात्र (पु०) लोहे का पात्र, लोहे का बर्तन।—सार (पु०) लोहे का भस्म कान्तिसार।
लोहकार (पु०) एक जाति विशेष, लुहार।
लोहकड़ (पु०) लोहे का पात्र, कड़ाही।
लोहा तत्० (स्त्री०) धातु विशेष, लोह, लौह।
लोहान दे० (पु०) रुधिरपूर्ण लुहान, रक्तमय, लोहू से लदफद।
लोहार दे० (पु०) लोहकार, लोहे का काम करने वाला।
लोहानी (पु०) पठानों की एक जाति।
लोहावजाना (क्रि० अ०) तलवार लेकर लड़ना।
लोहित तत्० (वि०) रक्त, लाल, कुसुम्भा।
लोहिया दे० (वि०) लोहे का, लोहमय।
लोही दे० (स्त्री०) लोई, सने हुए आटे के टुकड़े, जिन्हें बढ़ाकर पूरी या रोटी बनाई जाती है।
लोहू दे० (पु०) रुधिर, शोणित, रक्त। [सीमा।
लौं दे० (अ०) लों, तक, तलक, अवधि, पर्यन्त
लौंग तद्० (पु०) लवङ्ग, लवग, पुष्प विशेष, पुंग-, गिया, नाक में पहिनने का आभूषण विशेष, फुल्ली।
लौंडा दे० (पु०) छोकरा, छोरा, बालक चाकर, नाचने वाला लड़का। [रानी।
लौंडिया दे० (पु०) छुकड़िया, लौंडी, दासी, चाक-
लौ (स्त्री०) जलती हुई बत्ती की ज्वाला।
लौकना दे० (क्रि०) चमकना, बिजुली चमकना।
लौका दे० (पु०) बिजली, विद्युत, इन्द्रधनुष, बड़ी लौकिया, शाक विशेष।
लौकिक तत्० (वि०) सांसारिक, इस लोक का, इस लोक में होने वाला।
लौकी दे० (स्त्री०) पर्वती, छोटी लौका, कद्दू।
लौटना दे० (क्रि०) पलटना, फिरना, घूमना, घूम जाना, लौट जाना।
लौटाना दे० (क्रि०) फिराना, घुमाना, पलटाना।
लौन तद्० (पु०) निमक, नोन।
लौना दे० (क्रि०) काटना, कटनी करना।
लौन्द, लौंद दे० (पु०) मलमास, अधिमास, अधिक मास।
लौह तत्० (पु०) धातु विशेष, लोह, लोहा।
ल्यारी (स्त्री०) भेड़िया, हुँडार।

व

व यह व्यञ्जन का उन्तीसवाँ वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है इस कारण इसे दन्तोष्ठ्य कहते हैं। [शुद्धरूप

वंश तद्० (पु०) सन्तान, सन्तति, कुल, परिवार,

वंशावली तद्० (स्त्री०) वंश परम्परा, कुल, पीढ़ी, पुश्त, पुरत।

वंशकार (पु०) बाँसफोड़ा, डोम, भङ्गी।

वंशज (पु०) वंश का, बाँस से उत्पन्न।

वंशलोचन (पु०) बाँस से निकलने वाला एक पदार्थ।

वंशी तद्० (स्त्री०) बाद्य विशेष, बाँस का बना हुआ बाजा, मुरली, बाँसुरी।

वंशीधर (पु०) वंशी वाला, श्रीकृष्ण।

वंश्य (वि०) कुलीन, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न।

वक तद्० (पु०) पक्षी विशेष, बगुला, मौलसरी।

वकुल तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, मौलसिरी का पेड़।

वकवृत्ति (स्त्री०) धूर्तता, पाखण्ड, छल।

वक्ता तद्० (पु०) बोलने वाला, कहने वाला, व्याख्याता, व्याख्यानदाता। [अभिप्राय प्रकाशन।

वक्तृता तद्० (पु०) कथन, व्याख्यान, उपदेश,

वक्र तद्० (वि०) टेढ़ा, बाँका, तिरछा, कुटिल।

वक्रोक्ति तद्० (स्त्री०) टेढ़ी बात, ताना मारना, अलङ्कार विशेष, यथा:—

"जहँ श्लेष के काकुसों, अरथ लगावै और।
वक्र उकति तासों कहत भूषन कवि सिर मौर।

उदाहरण—

करि मुहीम आये कहि ह्वाँसरत सब सेन।
सिवसरजासों गाजुरि पैहैं बचि के हैन।

—शिवराज भूषण।

वक्रग्रीवा (पु०) ऊँट।

वक्षःस्थल तद्० (पु०) छाती, हृदय, उर:स्थल, कलेजा।

वक्षोज तद्० (पु०) उरोज, स्तन, कुच, चूँची, छाती।

वङ्क तद्० (वि०) वक्र, तिरछा, बाँका, कुटिल।

वङ्कित तद्० (वि०) टेढ़ा, मेढ़ा।

वङ्ग तद्० (पु०) धातु विशेष, राँगा का भस्म, देश विशेष, बङ्गाल।

वङ्गसेन (पु०) अगस्त्य का पेड़।

वच तद्० (पु०) ओषधि विशेष, वाक्य, वचन।

वचन तद्० (पु०) उक्ति कथन, वाक्य। —शुद्धि (स्त्री०) बात की सफाई।

वज्र तद्० (पु०) देवराज इन्द्र का अस्त्र विशेष, बिजली, विद्युत, हीरक, हीरा, श्रीकृष्ण का प्रपौत्र और अनिरुद्ध का पौत्र। —दंष्ट्र (पु०) सूअर, सूकर। —दन्ती (स्त्री०) पौधा विशेष। —नाभ (पु०) सुमेरु पर्वत पर रहने वाला एक असुर, ब्रह्मा के वर से यह सकल देवताओं का अवध्य था और वज्रपुर नामक एक नगर भी इसे मिला था। तब से सुमेरु पर्वत छोड़ कर वे उसी नगर में रहने लगा था। कुछ दिनों बाद यह वर के अभिमान से समस्त लोक को पीड़ित करने लगा और स्वर्ग छोड़ने के लिये इसने इन्द्र को भी कहलाया। इन्द्र बृहस्पति के आदेश के अनुसार वज्रनाभ को साथ लेकर कश्यप मुनि के पास गये और वहाँ उन्होंने सभी बातें कह कर महामुनि कश्यप की सम्मति माँगी। कश्यप ने कहा, वत्स वज्रनाभ, मैं इस समय एक यज्ञ करने के उद्योग में हूँ, इसकी समाप्ति होने पर जो उचित होगा वह मैं कहूँगा, तब तक वज्रपुर में ही तुम रहो।

वज्रक (पु०) हीरा।

वज्रधर (पु०) इन्द्र।

वज्राघात तद्० (पु०) वज्रपात, वज्र से मारना।

वञ्चक तद्० (पु०) ठग, ठगने वाला, धूर्त, प्रतारक, शृगाल, सियार। —ता (स्त्री०) धूर्तता, ठगाई।

वञ्चना तद्० (स्त्री०) प्रतारण, धूर्तता, ठगाई।

वञ्चित तद्० (वि०) प्रतारित, ठगा हुआ, रहित, शून्य, बिना।

वट तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, बड़ का पेड़, बरगद।

वटर तद्० (पु०) मुर्गा, मुर्गी, चोर, पहाड़, आसन, चटाई।

वटिका, वटी तद्० (स्त्री०) गोली बत्ती।

वटु तद्० (पु०) विद्यार्थी, बालक, ब्रह्मचारी, विद्याध्ययन करने वाला, ब्राह्मण कुमार।

वटुक तद्० (पु०) बालक, बटु, भैरव विशेष।

वट्ट तद्० (पु०) बरगद, वट वृक्ष।

वडवानल (पु०) समुद्र की अग्नि।

वडिश तद्० (पु०) मछली पकड़ने का काँटा।

वराटक तद्० (पु०) बाँटने वाला, विभाग करने वाला, विभाजक, अलगाने वाला, पृथक्कर्त्ता।

वत् तद्० (अ०) समान, सदृश, उपमा, तुल्य, यथा—मातृवत् पण्डितवत्।

वत्स तद्० (पु०) शिशु, बच्चा, बछड़ा।—तर (वि०) अतिशय छोटा, अत्यन्त छोटा बच्चा।

वत्सर तद्० (पु०) वर्ष, साल, संवत्, बारह महीनों का काल। [वार्षिक।

वत्सरीय तद्० (वि०) वत्सर सम्बन्धी, वर्ष का,

वत्सल तद्० (वि०) पुत्र प्रेमी, स्नेही, छोही, दयावान्

वत्सासुर तद्० (पु०) कंस का अनुचर, असुर विशेष, यही श्रीकृष्ण को मारने के लिये कंस के द्वारा गोकुल भेजा गया था। श्रीकृष्ण को मारने की इच्छा से यह गोकुल में वत्सरूप धारण करके घूमता था। यह जान कर श्रीकृष्ण ने इसे मार डाला।

वदन तद्० (पु०) आस्य, मुख, मुँह।

वद्रीनाथ (पु०) एक तीर्थ, चार धामों में एक धाम।

वदान्य तद्० (पु०) दाता, दानशील।

वध (पु०) हत्या, प्राणहिंसा।

वधू तद्० (स्त्री०) स्त्री, भार्या, दारा, स्नुषा, पुत्र-वधू।

वन तद्० (स्त्री०) जल, नीर, अरण्य, जङ्गल, कान्तार, विपिन, वृक्षों का समूह, जो वृक्ष स्वयं उत्पन्न हुए हों।—चर (पु०) जङ्गली, वनैला, वन्य, वन में रहने वाला।—ज (पु०) कमल, जलज, निरज।—पाँशुली (पु०) व्याध, बहेलिया।—माला (स्त्री०) तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात और कमल इनसे बनी लम्बी माला, पैर तक लटकने वाली माला।—स्पति (पु०) वृक्ष विशेष, जिन वृक्षों में बिना फूल के ही फल लगें, वे वनस्पति हैं।

वनिता तद्० (स्त्री०) भार्या, स्त्री, प्रियतमा, प्यारी।

वनप्रिया (स्त्री०) कोयल।

वनैला दे० (वि०) वन्य, वनवासी, वनचर, वनचारी।

वन्दन तद्० (पु०) प्रणाम, अभिवादन।—चरित (वि०) प्रशंसा योग्य, माननीय, गुणी।

वन्दना तद्० (पु०) स्तुति, नमस्कार, प्रणाम, नियत नमस्कार। [करने लायक, पूज्य।

वन्दनीय तद्० (वि०) वन्दन करने योग्य, प्रणाम।

वन्दा, वंदा दे० (पु०) आकाश लता, वृक्षों पर से निकला हुआ वृक्ष विशेष।

वन्दित तद्० (वि०) प्रणमित, नमस्कार किया हुआ, जिसको लोग प्रणाम करें, पूज्य।

वन्दी तद्० (पु०) भाट, दसौंधी, स्तुतिकर्त्ता, स्तुति करने वाला, बँधा हुआ, कैद किया, कैदी।—जन (पु०) भाट आदि स्तुतिकारी।

वन्य तद्० (वि०) वनैला, जङ्गली, वनचर।

वन्धु (पु०) कुटुम्बी, परिवार के लोग।

वपन तद्० (पु०) बोना, बीजारोपण, मुण्डन, केश-कर्तन, बाल मुड़ाना।

वपनी तद्० (स्त्री०) नापितशाला, नाइयों का अड्डा।

वपुः तद्० (पु०) शरीर, देह, काय।

वपुरा (वि०) तुच्छ, नीच, ओछा।

वप्त तद्० (वि०) वपनकर्त्ता, बीज बोने वाला, मुण्डन-कर्त्ता।

वप्र तद्० (पु०) प्राचीर, दीवार, भीत, चारदीवारी।

वभ्रु तद्० (पु०) यादव विशेष, यदुवंश के नाश होने पर श्रीकृष्ण की आज्ञा से ये यादवों की स्त्रियों की रक्षा के लिये जाते थे, परन्तु रास्ते ही में दस्युओं ने इन्हें मार डाला।

वभ्रुवाहन तद्० (पु०) अर्जुन का पुत्र, ये मणिपुर की राजकन्या चित्राङ्गदा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। नाना के मरने के बाद ये मणिपुर के राजा हुए थे।

वमन तद्० (पु०) उद्वान्त, वान्त, उलटी, कै।

वमनी तद्० (स्त्री०) जलौका, जोंक।

वयस् तद्० (स्त्री०) अवस्था, आयु, आयुष्य, उमर।

वयस्थ तद्० (वि०), बालिग, वयःप्राप्त, अवस्था वाला। [मित्र।

वयस्य तद्० (पु०) समान अवस्था वाला, सखा,

वयस्या तद्० (स्त्री०) सखी, सहेली।

वर तद्० (पु०) आशीष, आशीर्वाद, शुभचिन्तन, शुभानुध्यान, मनोरथसिद्धि। (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, प्रधान।—द (पु०) अभीष्टदाता, इष्टदेव।

वरण तत्० (पु०) वेष्टन, लपेटना, चुनना, बीनना, आह्वान करना, निमन्त्रण देना।

वरणा तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, जो काशी के उत्तरी भाग से बहती हुई गङ्गा में आ मिली है।

वरटा तत्० (स्त्री०) हंसी, हंसिनी। [का दान।

वरदान (पु०) वर देना, आशीर्वाद देना, विवाह

वर रहना दे० (वा०) बड़ी होना, अयवन्त होना।

वरपतिक (पु०) अभ्रक, अबरख।

वररुचि तत्० (पु०) व्याकरण का वार्त्तिककार, सोमदेव भट्ट कृत कथासरित्सागर में लिखा हुआ है कि ये सोमदेव नामक ब्राह्मण के पुत्र थे। इन्होंने पाणिनि के सूत्रों पर वार्तिक बनाए थे। कुछ लोगों का कहना है कि ये उज्जयनी के राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक रत्न थे। प्राकृत प्रकाश नामक एक प्राकृतभाषा का व्याकरण इन्होंने बनाया था।

वरल दे० (पु०) बिरनी, बीनो, हड्डा।

वरवर्णिनी तत्० (स्त्री०) उत्तमा स्त्री, गुणवती और रूपवती स्त्री।

वरह दे० (पु०) पत्ता, पत्र।

वरा तत्० (स्त्री०) कुटकी, औषधि विशेष।

वराक तत्० (पु०) बेचारा।

वराटक तत्० (पु०) कौड़ी, कपर्दिका।

वाराणसी (स्त्री०) काशी, वरुणा और असी के बीच में होने से इसका यह नाम पड़ा है।

वराह तत्० (पु०) भारत के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी। इनके पुत्र मिहिर विक्रमादित्य की सभा के वराह मिहिर नामसे प्रसिद्ध थे और वे नवरत्नों में से थे। भगवान् का अवतार विशेष।

वरिष्ठ तत्० (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान।

वरु दे० (अ०) बल्कि, अगर, पक्षान्तर, भले ही।

वरुण तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, जल का देवता, जल का अधिपति देव। ये पश्चिम दिशा के दिक्पाल हैं। अदिति के गर्भ और कश्यप के औरस से इनकी उत्पत्ति हुई थी। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि भृगु और वाल्मीकि इनके पुत्र थे। इनकी चर्षणी नामक स्त्री के गर्भ से ये दोनों पुत्र उत्पन्न हुए थे। बहुत दिनों से इस देवता की पूजा आर्यों में प्रचलित है। ऋग्वेद में इस देवता का पराक्रमशाली और विधाताकारी के रूप में वर्णन किया गया है। इनके प्रधान अस्त्र का नाम पाश है इसी कारण इनको पाशी भी कहते हैं।

वरूथ तत्० (पु०) समूह, दल, गिरोह, यूथ।

वरूथी तत्० (स्त्री०) सेना, चमू, फ़ौज।

वरूथ तत्० (पु०) रथ ओहारने का कपड़ा, समूह, झुण्ड, वरूथ।

वरूथिनी तत्० (स्त्री०) सेना, अनी, फ़ौज।

वरे दे० (अ०) इस पार, इधर, समीप, समुद्र, लिये, वास्ते (काहे वरे)। (क्रि०) वरना क्रिया का भूतकालिक रूप।

वरेखी दे० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, अङ्कोल वृक्ष।

वरेषी दे० (स्त्री०) भूषण विशेष, एक गहने का नाम।

वरोरु तत्० (स्त्री०) श्रेष्ठ जंघा वाली।

वरोह (स्त्री०) बड़ की जटा, सोर।

वरोहक दे० (पु०) अमगन्ध, औषधि विशेष।

वर्ग तत्० (पु०) कवर्ग, समान जाति का समूह, समान का समूह, गुण जाति और क्रिया इनसे समान वालों का समूह। एक स्थान से उच्चारण होने वाले अक्षर, गणित विशेष, एक अङ्क को उसी में घात करने से जो गुणनफल होता है।—क्षेत्र (पु०) जिस क्षेत्र की चारों भुजा समान और चारों कोण भी समान हों।—मूल (पु०) वह अङ्क जिसका वर्ग किया गया हो। यथा—४—का वर्ग करने से १६ होता है, १६ का वर्गमूल ४ होता है।

वर्गीय तत्० (वि०) वर्ग का, समूह का, श्रेणी का, दर्जे का।

वर्जन तत्० (पु०) निषेध, त्याग, परिहार।

वर्जित तत्० (वि०) रोका हुआ, छोड़ा हुआ, मना, निषिद्ध।

वर्ण तत्० (पु०) रंग, राग, ब्राह्मण आदि चार वर्ण, अक्षर मात्रा।—माला (स्त्री०) ककहरा, अक्षर माला।—सङ्कर (पु०) विभिन्न जाति के माता पिता से उत्पन्न, दोगला।

वर्णक तत्० (वि०) प्रशंसक, स्तुतिकर्त्ता। (पु०) रंग, चित्रों में भरा जाने वाला रंग।

वर्णन तत्० (पु०) गुण, कथन, बखान ।
वर्णना तत्०(स्त्री०) वर्णन, स्तव, स्तुति । (क्रि०) बखान करना, स्तव करना, बखानना ।
वर्णात्मक तत्० (वि०) [वर्ण+आत्मक] अक्षर सम्बन्धी, अक्षरात्मक ।
वर्णाश्रम तत्० (पु०) [वर्ण+आश्रम] ब्राह्मण आदि वर्ण और ब्रह्मचर्य आदि आश्रम ।
वर्णिका तत्० (स्त्री०) रंग भरने की लेखनी ।
वर्णित तत्० (वि०) प्रशंसित, स्तुति ।
वर्तन तत्० (पु०) जीवका, वृत्ति, जीवनोपाय ।
वर्तमान तत्० (पु०) काल विशेष, जो समय बीत रहा हो । किसी काम को प्रारम्भ कर के जब तक उसकी समाप्ति न हो तब तक का काल वर्तमान कहा जाता है । [लिखा जाता है ।
वर्ता दे० (स्त्री०) काठ की क़लम, जिससे पटरे पर
वर्ति तत्० (स्त्री०) बाती, दीपक में जलाने वाली बत्ती, आँखों में सुरमा लगाने की सलाई, नयनाञ्जन शलाकिका । [बाती, वर्ति ।
वर्तिका तत्० (स्त्री०) पक्षी विशेष, बटेर पक्षी,
वर्तुल तत्० (वि०) गोलाकार, गोल वस्तु, मण्डल ।
वर्त्म तत्० (पु०) पथ, राह, रास्ता, मार्ग ।
वर्द्धन तत्० (पु०) वृद्धि, बढ़ती, बढ़ना, उन्नति, उन्नव, अभ्युदय ।
वर्द्धमान तत्० (वि०)श्रीमान्,भाग्यमान्,उन्नतिशील ।
वर्द्धित तत्० (वि०) उन्नत, बढ़ा हुआ ।
वर्म तत्० (पु०) कवच, शरीर त्राण, लोहे का वस्त्र जिसे योद्धा लोग युद्ध के समय धारण करते थे । क्षत्रियों का उपपद ।
वर्मा तत्० (पु०) क्षत्रियों का उपपद, बढ़ई का एक औज़ार जिससे वह लकड़ी में छेद करता है ।
वर्य तत्० (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रवर, वर, शिरोमणि, यह जिस संज्ञा शब्द के अन्त में आता है उसकी श्रेष्ठता बतलाता है ।
वर्वर तत्० (पु०) असभ्य, जङ्गली ।
वर्ष तत्० (पु०) वृष्टि, वर्षा, साल, संवत्, बारह महीने का समय,-पृथिवी का खण्ड विशेष ।
वर्षगाँठ (स्त्री०) सालगिरह ।
वर्षण तत्० (पु०) वृष्टि, बरसना, पानी पड़ना ।
वर्षा तत्० (स्त्री०) वर्षा काल, प्रावृट् काल, वृष्टि, पानी बरसना ।—काल तद्० (पु०) प्रावृट् बरसात ।
वर्षाशन तत्० (पु०) [वर्ष+अशन] एक वर्ष का भोजन, वर्ष भर की जीविका ।
वर्ही तत्० (पु०) मोर, मयूर ।
वल तत्० (पु०) सेना, चमू ।
वलदेव (पु०) श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम ।
वलकल तद्० (पु०) वल्कल, छाल, त्वक्, बक्ला ।
वलय तत्० (पु०) कङ्कण, कड़ा, हाथ में पहनने का कड़ा ।
वलभी तत्० (स्त्री०) बरामदा । [विशेष, बरियार ।
वला तत्० (स्त्री०) सेना, लक्ष्मी, धरणी, ओषधि
वलाका तत्० (स्त्री०) बगुला, बक, बकपंक्ति, बक समूह ।
वलाहक तत्० (पु०) मेघ, घटा, बादल ।
वलि तत्० (पु०) पूजोपहार, पूजा की सामग्री, पशु का नैवेद्य, पाताल का राजा । [त्वक् ।
वल्कल तत् (पु०) छाल, छिलका, बकला, वृक्ष
वल्गु तत्० (वि०) मनोहर, सुन्दर ।
वल्मीक तत्० (पु०) दीमक ।
वल्लकी तत्० (स्त्री०) वीणा, तम्बूरा, वाद्य विशेष ।
वल्लभ तत्० (पु०) प्रिय, प्रियतम, स्वामी, प्रभु, प्रसिद्ध वल्लभ सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक आचार्य, ये दक्षिणी ब्राह्मण थे, इनके पिता का नाम महादेव भट्ट था । इनके अनुयायी इनको साक्षात् विष्णु भगवान् का अवतार मानते हैं । सम्भवतः ११६२ ई० में इनका जन्म हुआ था । [प्रिया स्त्री ।
वल्लभा तत्० (स्त्री०) प्रिया, प्रियतमा, अत्यन्त
वल्लव तत्० (पु०) अहीर, गोप, ग्वाला ।
वल्ली तत्० (स्त्री०) लता, बेल ।
वश तत्० (वि०) अधीन, अधिकृत, अधिकार युक्त, अधिकार, प्रभुत्व ।
वशिष्ठ तत्० (पु०) महर्षि विशेष,ये ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से थे, सप्तर्षियों में से एक अन्यतम ये भी हैं । कर्दम प्रजापति की कन्या अरुन्धती इनकी स्त्री हैं । इनके एक सौ पुत्रों को राक्षस भावापन्न अयोध्या के राजा कल्माषपाद ने मार डाला था ।

महर्षि विश्वामित्र इनके स्वाभाविक शत्रु थे। सूर्यवंशियों के ये पुरोहित थे।
वशीकरण तत्० (पु०) अधीन करने की प्रक्रिया, तन्त्र या मन्त्र विशेष जिससे वशीकरण होता है।
वशिभूत तत्० (वि०) हिला, परवश, वश में किया हुआ।
वश्य तत्० (वि०) वशीभूत, अधीन, परवश।
वषट् तत्० (अ०) इससे देवताओं को हवि दी जाती है।
[गाँव, ग्राम।
वसति तत्० (स्त्री०) वास, वासस्थान, पुर, नगर,
वसन तत्० (पु०) वस्त्र, कपड़ा।
वसन्त तत्० (पु०) ऋतुराज, फागुन और चैत महीना, किसी के मत से चैत और वैशाख वसन्त ऋतु है। राग विशेष, शीतला, चेचक, गोटी। —दूत (पु०) कोकिला, आम्र वृक्ष।
वसह (पु०) शिव जी का वाहन, नादिया।
वसा तत्० (पु०) मज्जा, चर्बी।
वसन्ती (पु०) पीला, एक रंग विशेष।
वसीठ दे० (पु०) दूत, हरकारा।
वसीठी दे० (पु०) दूतता, दूत का काम।
वसु तत्० (पु०) गण देवता विशेष, वसु नामक आठ देवता प्रसिद्ध हैं। यथा—धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनल, अनिल, प्रत्यूष और प्रभास। (२) चेदि देश का राजा, इसका जन्म पुरुवंश में हुआ था। इन्द्र के अनुग्रह से इन्हें चेदि देश का राज्य मिला था। कुछ दिनों के बाद अस्त्र शस्त्र छोड़ कर वसु तपस्या करने लगे, इनकी तपस्या से इन्द्र को बड़ा भय हुआ, इन्द्र इनके समीप आये, प्रेम पूर्वक इन्द्र राज्यशासन करने के लिये इनसे अनुरोध करने लगे। इन्होंने इन्द्र की बातें मान लीं, और तदनुसार तपस्या छोड़ कर ये राज्यशासन करने लगे। इनके साथ इन्द्र की बड़ी मित्रता हो गई थी, ये मर्त्यलोक से भी इन्द्र की मित्रता निभा सकते थे। इन्द्र ने आकाशगामी एक विमान इन्हें दिया था, इसी विमान पर चढ़कर ये कभी कभी आकाश में घूमते थे। अतएव इनका दूसरा नाम उपरिचर प्रसिद्ध हुआ था।—देव (पु०) श्रीकृष्णचन्द्र के पिता।—धा (स्त्री०) धरती, पृथ्वी।—मती (स्त्री०) वसुधा।
वसुन्धरा तत्० (स्त्री०) पृथिवी, वसुधा।
वस्तव्य तत्० (पु०) वास योग्य, रहने योग्य, बसने के उपयुक्त।
[द्रव्य, सामग्री।
वस्तु तत्० (स्त्री०) (संस्कृत में नपुंसक) पदार्थ,
वस्तुतः (अव्य०) ठीक, यथार्थ, सचमुच।
वस्त्र तत्० (पु०) वसन, कपड़ा।
वह दे० (सर्व०) अन्य पुरुष विशेष।
वहला दे० (पु०) धावा, चढ़ाई, आक्रमण।
वहाँ दे० (पु०) उस स्थान पर।
वह्नि तत्० (पु०) आग, अग्नि, अनल।
वा तत्० (पु०) विकल्प, पक्षान्तर, अथवा।
वांशी तत्० (स्त्री०) मुरली, वंशी।
वाक्, वाक्य (पु०) भाषा, वाणी, वचन।—चातुरी (स्त्री०) वचनपटुता।—देव (पु०) हयग्रीव, देवी जी, शारदा, सरस्वती।—पति (पु०) हयग्रीव, बृहस्पति, देवगुरु।—युद्ध (पु०) जबानी झगड़ा।
वाकुची दे० (स्त्री०) औषध विशेष।
वाक्यार्थ तत्० (पु०) [वाक्य+अर्थ] वाक्य का अर्थ, शब्द बोध।
वाग्जाल तत्० (पु०) प्रपञ्च, वाक् समूह।
वाग्दत्त तत्० (पु०) वचनदत्त, वचन से दिया, एक प्रकार का विवाह।
वागुरा, वागुरी तत्० (पु०) मृगबंधन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा, यथा:—

मास चरण सिरनाय, चले तुरत शङ्कित हिये।
वागुरि विषम तोराय, मनो भाग मृग भागवस।
—रामायण।

वाच तत्० (पु०) वचन, वाक्, वाक्य, भाषा, बोली। दे० अङ्गरेजी जेबी घड़ी।
वाचक तत्० (पु०) शब्द, अर्थबोधक, अर्थबोधन करने वाला, बाँचने वाला, पुराणवक्ता, कथक।
वाचनिक तत्० (वि०) वचन, कथित, वचन सम्बन्धी।
वाचा तत्० (पु०) वाक्, वचन, वच।
वाचाल तत्० (वि०) बकनी करनेवाला बकवादी, गपोड़िया, मुखर।
वाचस्पति (पु०) बृहस्पति, देवगुरु।
वाच्य तत्० (पु०) वक्तव्य, बोलने के योग्य। (पु०) बोध्य अर्थ, शब्दार्थ।

वाह्निड़ दे० (अ०) वाह की, धन्य, प्रिय वाक्य ।
वाज दे० (पु०) पक्षी विशेष ।
वाजपेय तद्० (पु०) यज्ञ विशेष ।—ी तद्० (पु०) कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की श्रेष्ठ पदवी ।
वाजी तद्० (पु०) घोड़ा, अश्व ।
वाञ्छा तद्० (स्त्री०) आकांक्षा, मनोरथ, स्पृहा ।
वाञ्छित तद्० (वि०) आकांक्षित, इच्छित, अभिलषित ।
वाट दे० (पु०) मार्ग, पथ, अध्वा, राह, डगर ।
वाटिका तद्० (स्त्री०) फुलवाड़ी, बगीचा, आराम ।
वाड़ दे० (पु०) स्थान, बाढ़, सान ।
वाड़ी दे० (स्त्री०) आँगन, उपवन, उद्यान, बग़ीचा ।
वाण तद्० (पु०) तीर, शर, पङ्ख, कागद ।
वाणासुर (पु०) दैत्य राज बलि का पुत्र ।
वाणिज्य (पु०) व्यापार, सौदागरी ।
वाणी तद्० (स्त्री०) बात, बोली, शब्द, वचन ।
वात तद्० (पु०) वायु, पवन, हवा, रोग विशेष । गठिया ।—शूल (पु०) शूल विशेष ।
वातय (पु०) सर्प, साँप, हिरन, मृग ।
वातूल तद्० (पु०) वात रोगी, उन्मत्त, वायुग्रस्त ।
वात्सल्य तद्० (पु०) करुणा, अनुकम्पा, स्नेह ।
वाद तद्०(पु०) विवाद, वाक्कलह, शास्त्रार्थ, सम्भाषण, आलाप ।
वादरायण (पु०) बदरिकाश्रम वासी व्यास मुनि ।
वादानुवाद तद्० (पु०) उत्तर प्रत्युत्तर, झगड़ा, कलह ।
वादी तद्० (पु०) विरोधी, मुद्दई, प्रथम अभियोग करने वाला। [बजन्त्री, बजाने वाला ।
वाद्य तद्० (पु०) बाजा, वाद्य यन्त्र ।—कर (पु०)
वानप्रस्थ तद्० (पु०) तीसरा आश्रम ।
वानर तद्० (पु०) कपि, बन्दर, मर्कट, बँदर ।
वानरमुख (पु०) नरियल, बंदर का मुँह ।
वापी तद्० (स्त्री०) तड़ाग, बावली, सरोवर ।
वाम तद्० (पु०) वायाँ । (वि०) विरोधी, शत्रु, अशुभचिन्तक, अहितकारी ।
वामन तद्० (पु०) बौना, खर्व, हस्व आकार वाला ।
वामा तद्० (स्त्री०) नारी, स्त्री ।—चार (पु०) कौल सम्प्रदाय, शाक्तमत का एक भेद, मद्यमांस सेवन आदि जिन की धर्म क्रिया है ।

वायु तद्० (पु०) पवन, बयार, बतास, हवा ।
—ग्रस्त (वि०) उन्मत्त,वायु पुत्र हनुमान ।
वार दे० (पु०) ठोकर, आक्रमण, घाव,पाला, बारी ।
वारक तद्० (पु०) निवारणकर्त्ता निषेधक, रुकवैया, बाधक । [विघ्न,हस्ति, हाथी ।
वारण तद्० (पु०) अटकाव, रुकाव,रुकावट, बाधा,
वारन दे० (पु०) अर्पण, भेंट चढ़ाना, न्योछावर करना, बलि, अटकाव, रोक, रुकावट ।
वारना (क्रि० अ०) घेर लेना, अर्पण करना, भेंट चढ़ाना या न्योछावर करना ।
वारा दे० (पु०) सस्ताई, बचाई, बचाव, निछावर ।
वाराङ्गना तद्० (स्त्री०) दिव्याङ्गना, स्वर्गीया स्त्री ।
वाराह तद्० (पु०) शूकर, सूअर ।
वारि तद्० (पु०) जल, नीर, अप्, पानी, अम्बु ।
—चर (पु०) जलजन्तु, जलचर ।—ज (पु०) कमल, पद्म ।—द (पु०) मेघ, जलद, तोयद, घटा, घन ।—धि (पु०) समुद्र, सागर ।
वारी दे० (स्त्री०) घर, मकान, गृह ।
वारीश (पु०) समुद्र, सागर, सिन्धु ।
वारुणी तद्० (स्त्री०) मदिरा, शराब, पश्चिम दिशा । पश्चिम, वरुण की । [लाप (पु०) बातचीत ।
वार्ता तद्० (स्त्री०) वृत्तान्त, बात, समाचार ।—
वार्तिक तद्० (पु०) सूत्रों की टीका, सूत्र में कहे नहीं अथवा दो बार कहे विषयों का विचार जिस ग्रन्थ में हो ।
वार्द्धक्य तद्० (पु०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा, बुढ़ौती ।
वार्षिक तद्० (वि०) वर्ष में होनेवाला, साम्वत्सरिक ।
वालखिल्य तद्० (पु०) अँगुष्ठ प्रमाण शरीर वाले साठ हज़ार महर्षियों का समूह । इन्हीं की तपस्या से गरुड़ उत्पन्न हुए हैं । एक समय महर्षि कश्यप ने पुत्र की इच्छा से यज्ञ प्रारम्भ किया था । उन्हीं ने उस यज्ञ में लकड़ी ले आने के लिये इन्द्र और बालखिल्य को नियुक्त किया था । समस्त बालखिल्यों का समूह बड़े कष्ट से एक लकड़ा ले आ रहा था, क्योंकि वे बहुत ही छोटे और दुर्बल थे । रास्ते में जलपूर्ण एक गोष्पद में वे डूब रहे थे, बलाभिमानी पुरन्दर पर देख का उपहास पूर्वक उनको लाँघ कर चले गये । इससे उनको

बड़ा कष्ट हुआ और इस इन्द्र से अधिक बलशाली दूसरे इन्द्र की यज्ञ द्वारा वे प्रार्थना करने लगे। तब इन्द्र की प्रार्थना करने पर महर्षि कश्यप ने कहा, देखो इनको ब्रह्मा ने इन्द्र बनाया है और तुम दूसरे इन्द्र की प्रार्थना करते हो इससे ब्रह्मा के नियम का तिरस्कार होगा और हम तुम्हारा भी प्रार्थना निष्फल नहीं करना चाहते हैं, अतएव तुम्हारा प्रार्थित इन्द्र पतगेन्द्र हो, बालखिल्यों ने कश्यप के प्रस्ताव को स्वीकृत किया।

वाल्मीकि तत्० (पु०) विख्यात रामायण के कर्ता मुनि। ये अयोध्याधिपति रामचन्द्र के समय में थे। परन्तु रामचन्द्र से ये अवस्था में बहुत बड़े थे। अयोध्या के दक्षिण ओर गङ्गा बहती हैं, गङ्गा के दक्षिण की ओर का वास वनवासियों की बस्ती थी, यह प्रदेश जङ्गल था। इसी जङ्गल के बीच से तमसा नदी प्रवाहित हुई है, इसी नदी के तीर पर महर्षि वाल्मीकि का आश्रम है। इसी आश्रम में उन्होंने अपने भुवन विख्यात काव्य की रचना की है। ये ही भारत के आदि कवि हैं। कोई कहते हैं कि अयोध्या से मथुरा जाने के मार्ग में वाल्मीकि का आश्रम है, अतएव लवणासुर का वध करने के लिये जाते हुए शत्रुघ्न वाल्मीकि के आश्रम में ठहरे थे। इनके डाकू होने की कथा आर्ष रामायण में नहीं है।

वावदूक तत्० (पु०) वक्ता, विख्यात वक्ता, अत्यन्त बोलने वाला।

वाष्प (स्त्री०) भाप।

वास तत्० (पु०) स्थान रहने का स्थान, गन्ध, महक।

वासना (स्त्री०) इच्छा, प्रत्याशा।

वासन्ती तत्० (स्त्री०) लता विशेष माधवी लता।

वासव (पु०) देवताओं का राजा, इन्द्र।

वासर तत्० (पु०) दिन, दिवस दिवा, वार, तिथि।

वासित तत्० (वि०) सुगन्धित।

वासी तत्० (वि०) बसैया रहने वाला निवासी, बासिंदा। (पु०) ठंढा अन्न, भात निकला भोजन कल का बना हुआ भोजन।

वासुकि (पु०) सर्पों के राजा का नाम।

वासुदेव (पु०) वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण।

वास्तव तत्० (पु०) यथार्थ, निश्चय, ठीक, सत्य

वास्तूक (पु०) बथुई का साग।

वाह्य तत्० (पु०) वाहन, भार।

वाहिनी तत्० (स्त्री०) सेना, चमू।

वाह्य तत्० (वि०) बाहर, बाहरी, बाहर का।

वि तत्० (उप०) वियोग, विशेष, निश्चय, ईषत्, थोड़ा, शुद्ध, अवलम्बन, ज्ञान, गति, आलस्य, पालन।

विकङ्कत (पु०) कटाई।

विकट तत्० (वि०) भयानक, भयङ्कर, क्रूर।

विकल तत्० (वि०) विह्वल, उद्विग्न, व्याकुल, अधूरा, असम्पूर्ण।

विकराल तत्० (वि०) अतिशय भयानक, घोर भयङ्कर, डरावना, भयप्रद, भयजनक।

विकल्प तत्० (पु०) सन्देह, संशय, भ्रान्ति, भ्रम, अनिश्चय।

विकराल (वि०) दीर्घाङ्ग, जिसे देखने से डर लगे

विकल (वि०) घबड़ाया हुआ, व्याकुल, विह्वल।

विकार तत्० (पु०) विकृत, परिवर्तन, परिणति, उलटफेर, बदभाव।

विकसन (पु०) खिलना, फूलना, प्रकाशित होना।

विकसित (वि०) फूला हुआ।

विकाल तत्० (पु०) गोधूली, सन्ध्या, सायङ्काल।

विकशन तत्० (पु०) प्रकाश, प्रफुल्लता, खिलना।

विकाश तत्० (पु०) प्रकाश, उद्भेद, खिल।

—सिद्धान्त (पु०) एक प्रकार का दर्शन सिद्धान्त।

विकीरण (पु०) बिखेरना, छितराना, फेंकना।

विकृत तत् (वि०) विरूप, अस्वच्छ, मलीन। (पु०) घृणा। [परिवर्तन, बदलाव।

विकृति तत्० (स्त्री०) विकार, अन्यथाभाव,

विक्रम तत्० (पु०) पराक्रम, बल, शक्ति, सामर्थ्य, शूरता, वीरता, प्रभुता, वीर्य।

विक्रमादित्य तत्० (पु०) [विक्रम+आदित्य] उज्जयिनी के विख्यात विद्याप्रेमी राजा। ये स्वयं पण्डित थे, और पण्डितों को बहुत धन देकर उनकी विद्या का आदर करते थे, इनके समय में

सर्वोत्तम नौ पण्डित थे, जो नवरत्न कहे जाते थे। उन पण्डितों के नाम हैं कालिदास, वररुचि, अमरसिंह, धन्वन्तरि, क्षपणक, वेतालभट्ट, घटकर्पर, शंकु और वराहमिहिर। बहुतों के मत से ई० सन् के ५६ वर्ष पहिले विक्रम का समय माना गया है। इनकी विश्वसनीय जीवनी कोई नहीं मिलती।

विक्रमी तद्० (वि०) बलवान, बली, पराक्रमशाली, वीर, विक्रम के समय में उनका चलाया संवत्सर की गणना, सम्वत्।

विक्रय तद्० (पु०) बिक्री, बेचना, माल खपाना।

विक्रयी, विक्रेता तद्० (पु०) बेचने वाला, बिक्री करने वाला।

विक्षिप्त (वि०) पागल, जिसकी बुद्धि ठीक न हो।

विक्षेप तद्० (पु०) व्याघात, बाधा, व्याकुलता, फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना।

विख्यात तद्० (वि०) प्रसिद्ध, ख्यातिमान, कीर्त्तिमान, यशस्वी।

विख्याति तद्० (स्त्री०) कीर्त्ति, यश, प्रसिद्ध।

विगत तद्० (वि०) गया हुआ, बीता हुआ, व्यतीत। —श्रम (वि०) श्रम रहित, बिना थकावट का।

विगति तद्० (स्त्री०) विरोध, बिगाड़, ख़राबी।

विगर्हण तद्० (पु०) तिरस्कार, निन्दन, निन्दा करना।

विगुण तद्० (वि०) गुणहीन, विगतगुण, बिना [गुण का।

विगोये दे० (वि०) छिपा हुआ, गुप्त, लुका।

विग्रह तद्० (पु०) विरोध, लड़ाई, युद्ध, समास, देह, शरीर, देह, अङ्ग, प्रतिमा।

विघटन तद्० (पु०) अलगाव, पृथक्कार, वियोग, अलग अलग होना, खिलना, फूलना।

विघात तद्० (पु०) विघ्न, अड़चन, रुकावट, बाधा, व्याघात, प्रहार मारा, ध्वंस, बिगाड़।

विघातक तद्० (पु०) बाधक, नाशक, घातक।

विघ्न तद्० (पु०) बाधा, अटकाव, दबाव। —राज (पु०) श्री गणेश जी।

विचक्षण तद्० (पु०) चतुर, निपुण, बुद्धिमान्।

विचरण तद्० (पु०) भ्रमण, घूमना।

विचल तद्० (पु०) चञ्चल, अस्थिर, अधीर।

विचलना दे० (क्रि०) विचलित होना, अधीर होना, मुकरना। [निर्णय, मानसिक अभिप्राय।

विचार तद्० (पु०) ध्यान, सोच, अनुमान, तत्त्व-

विचारणीय तद्० (पु०) विचार करने योग्य, निर्णय योग्य।

विचारित तद्० (वि०) निर्णीत, व्यवस्थापित।

विचित्र तद्० (वि०) अनेक रंग का, अद्भुत।

विचित्रवीर्य तद्० (पु०) महाराज शान्तनु का पुत्र, काशिराज की कन्या अम्बालिका और अम्बिका इनको ब्याही गई थीं। अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु और अम्बिका के गर्भ से धृतराष्ट्र उत्पन्न हुए थे।

विच्छेद तद्० (पु०) वियोग, पार्थक्य भेद, अन्तर।

विजन तद्० (वि०) निर्जन, जनरहित, जनशून्य,

विजय तद्० (पु०) जय, जीत।

विजया तद्० (स्त्री०) भाँग, बूटी तिथि विशेष, कुआर शुक्ल ११ एकादशी, दुर्गा।

विजयादशमी (स्त्री०) दशहरा, आश्विन शुक्ल दशमी का विशेष नाम है। इस दिन राम ने रावण को मार कर लङ्का जीती थी। [दूसरी जाति।

विजाति तद्० (स्त्री०) अन्य जाति, भिन्न जाति,

विज्ञ तद्० (पु०) पण्डित, चतुर, प्रवीण, अभिज्ञ, ज्ञाता, बुद्धिमान्, विद्वान्। —ता (स्त्री०) पण्डिताई, बुद्धिमानी, प्रवीणता, चतुरता।

विज्ञप्ति तद्० (स्त्री०) विज्ञापन, इश्तिहार।

विज्ञानी (वि०) ज्ञानवान, पण्डित, अति चतुर।

विज्ञान तद्० (पु०) शिल्प और शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान।

विज्ञापन तद्० (पु०) आहिरात, सूचना। —पत्र (पु०) सूचना, आहिरात।

विट तद्० (पु०) जार, भड़ुआ।

विटप तद्० (पु०) वृक्ष, पेड़, रूख। यथा —

पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारी।
मोह विटप नहिं सकहिं उपारी॥

रामायण

विडम्बना तद्० (स्त्री० दुःखदायक, दुःख, तिरस्कार, अपमान, अनुकरण। [स्वत।

विडम्बित तद्० (वि०) अपमानित, निन्दित, तिर-

बिडाल तद्० (पु०) बिल्ली, मार्जार, बिलार।
वितण्डा तद्० (स्त्री०) मिथ्यावाद, वाद्प्रपञ्च, शास्त्रार्थ में दूसरे का पक्ष खण्डन करने की रीति।
वितरण तद्० (पु०) दान, त्याग, बाँटना, पार होना।
वितर्क तद्० (पु०) अनुमान, विचार, तर्क।
वितल तद्० (पु०) पाताल, विशेष।
वितस्ति तद्० (स्त्री०) बित्तैंद, बित्ता, बीता।
वितान तद्० (पु०) चाँदनी, चँदवा। [वृक्ष।
वितृष्ण तद्० (वि०) तृष्णाहीन, निस्पृह, विराग,
वित्त तद्० (पु०) धन, ऐश्वर्य, विभव। [होना।
विथकना तद्० (क्रि०) थकुरा थका रहना, थक्या
विदग्ध तद्० (पु०) चतुर, प्रवीण, अनुभवी।
विदर्भ (पु०) महाभारत के समय के एक देश का नाम जहाँ प्रसिद्ध रानी दमयन्ती का जन्म हुआ था, बराड़ का एक ज़िला।
विदारण तद्० (पु०) फाड़ना, चीरना, छेदन।
विदिक् तद्० (स्त्री०) विदिशा, उपदिशा।
विदित तद्० (वि०) ज्ञात, जाना हुआ, सूझा हुआ।
विदिशा तद्० (स्त्री०) नगरी विशेष, उपदिशा।
विदीर्ण तद्० (वि०) फाड़ा, चीरा, विदारा हुआ।
विदुर तद्० (पु०) कृष्ण द्वैपायन व्यास के औरस से और विचित्र वीर्य की स्त्री अम्बिका की परिचारिका के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ये अन्धराज धृतराष्ट्र के मन्त्री थे, परन्तु पाण्डवों का अधिक पक्ष करते थे। ये न्यायपरायण और सत्यवादी थे। जिस समय दुर्योधन आदि वारणावत नगर में पाण्डवों को भेज कर जतुगृह में उन लोगों को मारने का विचार करते थे, उस समय विदुर की ही कृपा से पाण्डवों की रक्षा हुई थी। पाण्डवों के विवाह के पश्चात् धृतराष्ट्र की आज्ञा से वे पाञ्चाल राज्य में गये थे और वहाँ से पाण्डवों को लिवा लाये थे। महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर जब युधिष्ठिर राजा हुए थे, तब १५ वर्ष तक विदुर उनके साथ हस्तिनापुर में रहे थे। तदनन्तर धृतराष्ट्र के साथ वन गये और वहीं उन्होंने योगबल से शरीर छोड़ दिया। कहते हैं ये पूर्वजन्म में यम थे। परन्तु अणिमाण्डव्य के शाप से शूद्र योनि में उत्पन्न हुए थे।
विदुला तद्० (स्त्री०) सौवीरराज महिषी, ये वीर महिला और वीर्यवती स्त्री थीं। इनके पति की मृत्यु के बाद सिन्धुराज ने इनके राज्य पर आक्रमण किया। प्रबल शत्रु के आक्रमण से इनका पुत्र सञ्जय पहले डर गया था, परन्तु पुनः माता के उत्साह वाक्यों से उत्तेजित होकर प्रबल शत्रु सिन्धुराज का उसने सामना किया और उन्हें हरा कर अपने पिता का राज्य लिया। [वाला मुसाहब।
विदूषक तद्० (पु०) मसखरा, राजा के साथ रहने
विदुषी (स्त्री०) पण्डिता, शिक्षिता स्त्री।
विदेश तद्० (पु०) अन्य देश, भिन्न देश, अपने देश से दूसरा देश।
विदेशी तद्० (वि०) परदेशी, प्रवासी।
विदेह तद्० (पु०) जनक, मिथिला का राजा।—जा (स्त्री०) सीता। [सन्निहित, उपस्थित।
विद्यमान तद्० (गु०) वर्तमान, जीवित, स्थित,
विद्या तद्० (स्त्री०) ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, यथार्थ ज्ञान।—धर (पु०) देवयोनि विशेष, गुणी, पण्डित कारीगर, विद्वान।—र्थी (पु०) [विद्या+अर्थी] छात्र, शिष्य, पढ़ने वाला, पढ़ैया।—लय (पु०) [विद्या+आलय] पाठशाला, पढ़ने का स्थान।—वान् (वि०) पण्डित, विद्वान्।
विद्युत् (स्त्री०) चपला, तड़ित, बिजली।
विद्रुम तद्० (पु०) मूँगा, प्रवाल, रत्न विशेष।
विद्रोह तद्० (पु०) विरोधी, विद्वेष, वैर।
विद्रोही तद्० (पु०) वैरी, शत्रु, अहित, अहित कारक।
विद्वान् तद्० (पु०) विद्यावान, पण्डित, पढ़ा।
विद्वेष तद्० (पु०) वैर, विरोध।
विध तद्० (स्त्री०) विधि, रीति, प्रकार, ढब, ढाँचा।
विधवा तद्० (स्त्री०) रण्डा, पतिहीना स्त्री।
विधातव्य तद्० (वि०) करने योग्य, विधेय।
विधाता तद्० (पु०) ब्रह्मा, सृष्टिकर्त्ता, भाग्य।
विधान तद्० (पु०) विधि, रीति, शास्त्रोक्तरीति, उपाय।
विधायक तद्० (वि०) विधान करने वाला, निर्माण करनेवाला, सिद्धान्त करने वाला, सिद्धान्त वाक्य।

विधि तद्० (स्त्री०) (संस्कृत में पुल्लिङ्ग) व्यवस्था, विधान, उपाय, उद्योग भाग्य ।—वत् (अ०) विधिपूर्वक, यथारीति ।
विधिन्तुद तद्० (पु०) राहु, ग्रह विशेष ।
विधु तद्० (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र ।
विधुर तद्० (पु०) विकल, स्त्रीहीन पुरुष ।
विधुवदनी (स्त्री०) अति सुन्दरी, चन्द्रमुखी, चन्द्रमा को तरह सुन्दर मुख वाली । [गया ।
विधूत तद्० (वि०) कम्पित, कँपाता हुआ, हिलाया
विधेय तद्० (पु०) होनहार, कर्तव्य ।
विध्वंस तद्० (पु०) नाश ।
विध्वस्त तद्० (वि०) नष्ट, विनष्ट ।
विनत तद्० (वि०) नम्र, प्रणत, झुका हुआ ।
विनता तद्० (स्त्री०) गरुड़ को माता, महर्षि कश्यप की स्त्री । [अनुनय, विनय ।
विनति, विनती तद्० (स्त्री०) नम्रता, निवेदन,
विनय तद्० (पु०) विनती, शिष्टता, शिष्टाचार, नम्रता ।
विनष्ट तद्० (वि०) विगड़ा, विनाश प्राप्त ।
विनश्वर तद्० (वि०) भङ्गुर, नाशी, नाश होनेवाला ।
विना तद्० (अ०) छोड़ कर, रहित, अतिरिक्त, भिन्न ।
विनायक तद्० (पु०) गणेश, भगवान, नम्र करने वाला ।
विनियोग (पु०) स्थिर करना, बैठाना ।
विनाश तद्० (पु०) ध्वंस, नाश, संहार, मरण ।
विनाशित तद्० (वि०) विध्वस्त, नष्ट, नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ । [विषाद ।
विनिपात तद्० (पु०) पतन, विपद, अध पात
विनिमय तद्० (पु०) लेनदेन, अदल बदल, परिवर्तन ।
विनीत तद्० (वि०) विनयी, नम्र, सुशील ।
विनीतात्मा तद्० (वि०) नम्र, सुशील ।
विनेता तद्० (पु०) शासक, शिक्षक, राजा ।
विनोद तद्० (पु०) कौतुक, खेल, हँसी, ठट्ठा ।
विन्दक तद्० (पु०) लाभयुक्त, सलाम । [कणिका ।
विन्दु तद्० (पु०) बूँद, अनुस्वार, शून्य, कणा,
विन्ध्य तद्० (पु०) पर्वत विशेष ।—गिरि तद्० (पु०) विन्ध्याचल पर्वत ।—वासिनी (स्त्री०) दुर्गादेवी, अष्टभुजा ।
विन्ध्याचल तद्० (पु०) एक पर्वत का नाम, एक नगर का नाम, जहाँ विन्ध्यवासिनी देवी हैं ।
विन्यस्त तद्० (वि०) स्थापित, यथाक्रम रत, क्रम से रखा हुआ ।
विन्यास तद्० (पु०) स्थापन, रचना, रखना ।
विपक्ष तद्० (पु०) विरुद्ध पक्ष, वैरी का पक्ष ।
विपत्ति तद्० (स्त्री०) आपद, विपद, दुःख, दुर्गति ।
विपथ तद्० (पु०) कुमार्ग, बुरी तरह ।
विपद तद्० (पु०) आपदा, दुर्दशा, दुःख ।
विपरीत तद्० (वि०) उलटा, वाम, विरोधी, शत्रु ।
विपर्यय तद्० (वि०) विरोध, उलटा, इधर उधर, अस्तव्यस्त ।
विपर्यस्त (पु०) व्यतिक्रान्त, उलट फेर करने वाला ।
विपर्यास (पु०) विपरीत, उलटा ।
विपल (पु०) क्षण, एक पल का साठवाँ भाग ।
विपश्चित् तद्० (पु०) विद्वान्, दोषज्ञ, बुद्धिमान् ।
विपाक तद्० (पु०) परिणाम, फल,कर्म भोग, सिद्धि ।
विपिन तद्० (पु०) अरण्य, जङ्गल, वन ।
विपाशा (स्त्री०) पञ्जाब की व्यास नदी का दूसरा नाम ।
विपुल तद्० (पु०) प्रचुर, अधिक, बहुत, गम्भीर, बड़ा, विस्तृत ।
विप्र तद्० (पु०) ब्राह्मण, द्विज, श्रोत्रिय ब्राह्मण, वेदज्ञ ब्राह्मण । [ठगाया हुआ ।
विप्रलब्ध तद्० (वि०) वञ्चित, प्रतारित, धोखा
विप्रलब्धा (स्त्री०) नायिका विशेष । जो स्त्री प्रिय से मिलने के लिये संकेत में आकर वहाँ पति के न मिलने पर दुःखी हो, उसी का नाम ।
विप्रलाप (पु०) अनर्थकारी वाक्यों का कहना, विलाप करना ।
विप्लव तद्० (पु०) उपद्रव, हलचल । [वृथा, अकारण ।
विफल तद्० (वि०) निष्फल, फल रहित, निरर्थक
विभक्त तद्० (वि०) बटा हुआ, पृथक पृथक्, अलग अलग ।
विभक्ति तद्० (स्त्री०) अंश, बाँट, टुकड़ा, प्रत्यय, कारकों के चिह्न । [सरस्वती का नाम ।
विभव तद्० (पु०) सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य, एक
विभाग तद्० (पु०) भाग, अंश, टुकड़ा, बाँट, हीसा, मद ।

विभाजक तद्० (पु०) अंशकर्त्ता, विभागकर्त्ता, पृथक् करने वाला । [बाँटा हुआ ।
विभाजित तद्० (वि०) अंशित, अंश किया हुआ,
विभावना तद्० (स्त्री०) अर्थालङ्कार विशेष, यथा—
भयो काज बिन हेत हूँ बरने है जिहि ठौर ।
तहँ—विभावना होति है भाषत कवि सिरमौर ।
उदाहरण—
साहि तनै शिवराज की, सहज टेव यह ऐन ।
अनरीझै दारिद हरे, अनखीझै अरिसैन ।
—शिवराजभूषण ।
विभावसु (पु०) सूर्य, मदार का पेड़, अग्नि, चन्द्र ।
विभीषण तद्० (वि०) भयानक, भयङ्कर, विकराल, डरौना । (पु०) लङ्कापति रावण का छोटा भाई । जिसे रावण को मार कर रामचन्द्र ने लङ्का की राजगद्दी पर बैठाया था । [डर बताना ।
विभीषिका तद्० (स्त्री०) भयप्रदर्शन, भय दिखाना,
विभु तद्० (पु०) स्वामी, प्रभु, व्यापक ।
विभूति तद्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, भस्म, राख ।
विभूषण तद्० (पु०) अलङ्कार, गहना, शोभा ।
विभेद तद्० (पु०) विच्छेद, भिन्नता, पृथक्ता ।—क (पु०) विभाजक, विच्छेदक ।
विभ्रम तद्० (पु०) स्त्रियों की स्वाभाविक चेष्टा विशेष, घबराहट, प्रिय आगमन से घबरा जाना ।
विमर्श, विमर्शन तद्० (पु०) विचार, अनुध्यान, परामर्श । [साफ़, सुथरा ।
विमल तद्० (वि०) मल रहित, निर्मल, स्वच्छ,
विमाता तद्० (स्त्री०) दूसरी माता, सौतेली मा ।
विमान तद्० (पु०) रथ, गाड़ी, देवयान विशेष, जो आकाशपथ से चलता है, घोड़ा विशेष ।
विमुक्ति तद्० (वि०) छुटा हुआ, छूटा, बन्धन रहित ।
विमुक्त तद्० (स्त्री०) मोक्ष, छुटकारा, उद्धार, मुक्ति ।
विमुख तद्० (वि०) विरोधी, पराङ्मुख, फिरा हुआ ।
विमुग्ध (वि०) अज्ञान, मूढ़, मूर्ख ।
विमूढ़ तद्० (वि०) अज्ञानी, अनभिज्ञ, अविज्ञ मूर्ख । [मुक्त करना, त्यागना ।
विमोचन तद्० (पु०) [वि+मुच्+अनट्] छोड़ना,

विम्ब तद्० (पु०) मण्डल, प्रतिबिम्ब, छाया, मूर्ति, तसवीर, फल विशेष, कुन्दरुन का फल ।
विम्बिसार तद्० (पु०) मगध के प्राचीन राजा, ये बुद्धदेव के समकालीन थे और उन्हीं से इन्होंने बौद्धधर्म की दीक्षा ग्रहण की थी । इनके पुत्र का नाम अजातशत्रु था ।
विम्बुक तद्० (पु०) खोज, भभूका ।
वियोग तद्० (पु०) विच्छेद, बिछोह, बिछुड़ना, विरह ।
वियोगी तद्० (पु०) विरही ।
वियोगिनी (स्त्री०) विरहिणी स्त्री का नाम, प्रियविहीन स्त्री ।
विरक्त तद्० (पु०) वैरागी, वासना शून्य, वीतराग, संसार विरागी । [रचा हुआ ।
विरचित तद्० (वि०) बनाया हुआ, निर्मित, रचित,
विरचना (क्रि० स०) बनाना, रचना, पैदा करना, उत्पन्न करना ।
विरञ्चि तद्० (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता ।
विरज तद्० (वि०) क्रोधरहित, अहङ्कारशून्य, निरभिमान ।
विरजा (स्त्री०) गोलोक की एक नदी का नाम, एक पौधे का नाम, राधिका की एक सखी का नाम, दूब । [जिसने छोड़ दिया है ।
विरत तद्० (वि०) निवृत्त, छोड़ा हुआ, विरक्त,
विरति तद्० (स्त्री०) वैराग्य, त्याग, निस्पृहता ।
विरथ (वि०) बिना रथ का, रथहीन, पैदल ।
विरद तद्० (पु०) बखान, प्रशंसा, गुणगान ।
विरदैत दे० (पु०) गुणगान करने वाला, भाट, चारण, बन्दी, विरद बखानने वाला । [विरला ।
विरल तद्० (वि०) अनुपम, अनूठा, अनोखा,
विरस तद्० (वि०) रसहीन, नीरस, बिना स्वाद का, बेजायका ।
विरह तद्० (पु०) वियोग, बिछोह, बिछुड़न ।
विरहिन (वि०) वियोगी, बिछुड़ा हुआ ।
विराग तद्० (पु०) विरक्ति, वैराग्य, संसार में आसक्ति का त्याग, ममता त्याग ।
विराज तद्० (पु०) क्षत्रिय, आदि पुरुष, विष्णु का स्थूल रूप ।—मान (पु०) शोभायमान, सोहता

हुआ, विराजित।—ना (क्रि०) शोभित होना, अच्छा मालूम होना।
[रु]ज तद्० (वि०) रोग रहित, नीरोग।
[विरा]ट् तद्० (पु०) चतुर्दशभुवन रूप परमात्मा की मूर्ति। (पु०) विशाल, विस्तार, विराज (पु०) मात्स्य देश का राजा। इसके यहाँ पाण्डवों ने एक वर्ष छिप कर बिताया था। यह अतुल ऐश्वर्य सम्पन्न तथा शक्तिशाली राजा था। इसका साला कीचक सेनापति था और वह अत्यन्त बलवान् था। त्रिगर्त देश के राजा सुशर्मा को पराजित कर उसने उसके राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया था। सुशर्मा राज्यभ्रष्ट होकर हस्तिनापुर में दुर्योधन के यहाँ रहते थे। एक रात को भीम सेन ने मल्लयुद्ध करके कीचक को मार डाला था। कीचक के मारे जाने की बात चारों ओर फैल गई। यह सुयोग समझ कर सुशर्मा ने कौरवों की सहायता से विराट् की दक्षिण गोशाला पर आक्रमण किया। विराट् भी युद्ध करने के लिये गये, परन्तु सुशर्मा ने उनकी सेना को हरा कर उन्हें क़ैद कर लिया। अनन्तर युधिष्ठिर की आज्ञा से भीमसेन ने विराट् की रक्षा की। कुछ दिनों के बाद अगणित सेना और भीष्म, कर्ण आदि सेनापतियों के साथ दुर्योधन ने विराट् की उत्तर गोशाला पर धावा किया। अर्जुन ने समस्त कुरुसेना के छक्के छुड़ा दिये और गौओं की रक्षा की। अज्ञातवास की समाप्ति होने पर पाण्डवों का विराट् से परिचय हुआ। विराट् ने अपनी कन्या उत्तरा को अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से ब्याह दिया। कुरुक्षेत्र के युद्ध में विराट् पाण्डवों की ओर से लड़ते रहे। युद्ध के पन्द्रहवें दिन इनको द्रोण ने मार डाला था।
[वि]राध तद्० (पु०) राक्षस विशेष, वनवास के समय यह राक्षस राम के द्वारा मारा गया था।
[वि]राम तद्० (पु०) निवृत्ति, विश्राम, शान्ति, विश्रान्ति अन्त, अवसान, समाप्ति।
[वि]रुद्ध तद्० (वि०) विपरीत, वाम, शत्रु।—ता (स्त्री०) झगड़ा, शत्रुता, अहिताचरण, विपरीता[च]रण।

विरूप तद्० (वि०) कुरूप, भोंडा।
विरूपाक्ष (पु०) एक राक्षस का नाम, महादेव जी, शिव जी।
विरेक तद्० (पु०) रोग विशेष, अतीसार, पेचिश।
विरेचक तद्० (पु०) सारक, निकलने वाला, दस्तावर औषध।
विरेचन तद्० (पु०) मल निस्सारण, जुलाब।
विरोचन (पु०) प्रह्लाद का बेटा और बलि का पिता, सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा।
विरोध तद्० (पु०) द्वेष, शत्रुता, लड़ाई, झगड़ा।—क (पु०) विवादी, वैरी, शत्रु।
विरोधी तद्० (पु०) शत्रु, रिपु, वैरी।
विरोधोक्ति (स्त्री०) उलटी बात करना, अनर्थ वचन।
विल तद्० (पु०) बिल, छिद्र, छेद, माँद।
विलक्षण तद्० (वि०) अद्भुत, आश्चर्यमय, अनूप उत्तम, श्रेष्ठ, भला।
विलग (वि०) भिन्न, अलग, पृथक्।
विलगावना दे० (वा०) अलग करना, पृथक् करना, भिन्न करना, अलगाना।
विलज्ज (वि०) निर्लज्ज, बेहया।
विलपना दे० (क्रि०) रोना, चिल्लाना दुःख करना रोदन करना।
विलपत दे० (क्रि०) रोते हुए, रोदन करते हुए।
विलम्ब तद्० (पु०) देर, अधिक समय।—ना (क्रि० अ०) रहना, ठहरना, देर करना।
विलमना दे० (वा०) देर लगाना, अधिक समय लगाना।
विलय तद्० (पु०) नाश, जगत् का नाश, प्रलय।
विलायत (पु०) परदेश, इस शब्द का प्रयोग विशेष कर इङ्गलैण्ड के लिये होता है। [दुःख करना।
विलाप तद्० (पु०) रोना, बिलखना, चिल्लाना,
विलास तद्० (पु०) खेल, क्रीड़ा, कौतुक, भोग, सुख, आनन्द।
विलासी तद्० (वि०) भोगी, आनन्दी।
विलीन तद्० (वि०) नष्ट, लुप्त।
विलुप्त तद्० (वि०) अदृष्ट, नष्ट, गुप्त।
विलोकन तद्० (पु०) दृष्टि, ताक, दर्शन, देखना।

विलोकना दे० (क्रि०) देखना, ताकना, प्रतीत करना।
विलोकित (पु०) देखा हुआ।
विलोचन तद्०(पु०) नेत्र, नयन, आँख, चक्षु।
विलोड़ना (क्रि०) मथना, मढ़ना, हिलोरना।
विलोप तद्० (पु०) अदर्शन, नाश, ध्वंस।
विलोम तद्० (पु०) विपरीत, उलटा, व्युत्क्रम, नीचे से ऊपर। [बेल का फल।
विल्व तद्० (पु०) बेल का वृक्ष।—फल तद्०(पु०)
विवर तद्० (पु०) छिद्र, भेद, बिल।
विवरण तद्० (पु०) विस्तृत हाल, गुप्त कथन।
विवर्ण तद्० (वि०) चिह्न, चर्मित, पश्चात्ताप युक्त।
विवर्द्धन (पु०) उन्नति। (क्रि०) उन्नति होना।
विवर्द्धित (पु०) किसी के द्वारा उन्नति कराया हुआ।
विवश तद्० (वि०) अवश्य, पराधीन, अनन्योपाय।
विवस्त्र तद्० (वि०) वस्त्र रहित, नग्न, नङ्गा।
विवसा (पु०) इच्छित, वाञ्छित, चाहा हुआ।
विवाद तद्० (पु०) वाद, वाक् कलह, शास्त्रार्थ, झगड़ा।
विवादी तद्० (स्त्री०) विवाद कारक वादी, मुद्दई।
विवाह तद्० (पु०) ब्याह, परिणय, पाणि ग्रहण।
विवाहित तद्० (पु०) ब्याहा हुआ, कृतपरिणय, ब्याहता।
विवाहिता तद्० (स्त्री०) ब्याही हुई, परिणीता।
विविक्त तद्० (पु०) पूत, पवित्र, एकान्त, निर्जन।
विविध तद्० (वि०) नाना प्रकार, भाँति भाँति, अनेक प्रकार का।
विबुध (पु०) देवता, पण्डित।
विवृत्ति तद्० (वि०) व्याख्या, टीका, विवरण।
विवेक तद्० (पु०) विचार, निर्णयात्मिका बुद्धि।
विवेकी तद्० (पु०) न्यायकर्त्ता, विचारक, निर्णयकर्त्ता।
विवेचक या विवेजक तद्० (पु०) निर्णय कर्त्ता, विचारकर्त्ता। [ज्ञान
विवेचना तद्० (स्त्री०) विचार, सत्य असत्य का
विवेचित (पु०) विचारा हुआ।

विशद तद्० (वि०) विस्तृत, चिह्नयुक्त, विशाल।
विशाखदत्त तद्० (पु०) संस्कृत का एक नैतिक कवि। मुद्रा राक्षस नामक एक नाटक इन्होंने बनाया है। संस्कृत साहित्य में इस ग्रन्थ का बड़ा आदर है। मिस्टर वैबर कहते हैं कि इस ग्रन्थ का रचनाकाल ईसा की ७ वीं सदी है।
विशाखा तद्० (पु०) सोलहवाँ नक्षत्र।
विशार (पु०) [illegible]।
विशारद (वि०) चतुर, दक्ष, ज्ञाता, पण्डित (पु०) मौलसिरी का पेड़।
विशाल तद्० (पु०) विस्तृत, बड़ा, चौड़ा, बृहत।
विशिख तद्० (पु०) बाण,सर, तीर। (वि०) शिखा रहित, बिना चोटी का।
विशिष्ट तद्० (पु०) संयुक्त, जुटा, मिला।
विशुद्ध तद्० (वि०) बहुत पवित्र, निर्मल, उज्ज्वल, निर्मल,खालिस। [विशेष।
विशूचिका (स्त्री०) हैज़ा, कालरा, मुर्द, एक रोग
विशेष तद्० (वि०) प्रकार, भेद, जाति, अधिक, मुख्य, प्रधान, ख़ास।—ण (पु०) गुणवाचक। जिस शब्द से विशेष्य का मुख्य गुण आदि का बोध होता है।—तः (अ०) विशेष रूप से, अधिकता से, ख़ास कर।—ता (स्त्री०) भेद, भिन्नता, पृथकता, अधिकता, प्रधानता, मुख्यता।
विशेषोक्ति तद्० (स्त्री०) अलङ्कार विशेष।
विशेष्य तद्० (पु०) प्रधान, मुख्य, धर्मी, द्रव्य, जिसकी प्रशंसा की जाय।
विशोक तद्० (वि०) शोकरहित, विगत शोक।
विश्रम्भ तद्० (पु०) विश्वास, प्रत्यय, निश्चय।
विश्रान्त तद्० (वि०) थकित,थका हुआ, बैठा हुआ।—घाट (पु०) यमुना जी के घाट का नाम, यह मथुरा में है। [करना।
विश्राम तद्० (पु०) सुख, थकावट दूर करना,विराम
विश्रुत (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध नामी।
विश्लिष्ट (पु०) शिथिल, वियोगी, अलग रहने वाला। [अलगाव।
विश्लेष तद्० (पु०) वियोग, विरह, बिछोह, भेद,
विश्व तद्० (पु०) जगत्,संसार,देव विशेष, इनके श्राद्ध में पिण्ड और बलि दी जाती है।—कर्मा (पु०)

परमात्मा, देव, शिवजी विशेष।—नाथ (पु०) जगत् स्वामी, काशी के प्रधान देव, महादेव, परमेश्वर।—म्भरा (स्त्री०) पृथ्वी, धरती, धरणी।—रूप (पु०) ईश्वर।

विश्वम्भर तत्० (पु०) जगत् का पालनकर्त्ता, संसार का भरण पोषण करने वाला, विष्णु।

विश्वसनीय तत्० (वि०) विश्वास योग्य, विश्वास का पात्र। [किया गया हो।

विश्वसित तत्० (वि०) विश्वस्त, जिसका विश्वास

विश्वस्त तत्० (वि०) ज्ञात प्रत्यय, प्रतीति योग्य।

विश्वामित्र तत्० (पु०) [विश्व+मित्र] विख्यात महर्षि, ये राजवंश में उत्पन्न हुए थे, परन्तु इन्होंने कठिन तपस्या और साधनों से महर्षि पद पाया था।

विश्वास तत्० (पु०) प्रत्यय, प्रतीत, धारणा, भरोसा।—घातक (पु०) कपटी, धोखेबाज़, ठग, धूर्त।—पात्र विश्वसनीय, विश्वास योग्य।

विश्वेश (पु०) शिवजी, विश्वेश्वर।

विष तत्० (पु०) गरल, कालकूट, हलाहल, ज़हर, माहुर।—धर (पु०) सर्प, साँप, भुजङ्ग।—वैद्य (पु०) विष उतारने वाला, गारुड़ी।

विषण्ण तत्० (वि०) उदास, दुःखी।

विषम तत्० (वि०) अयुग्म, अनमेल, असमान, अतुल्य, बराबरी नहीं, कठिन, कठोर, भयङ्कर।—ज्वर (पु०) ज्वर विशेष, एक प्रकार का ज्वर।—ता (स्त्री०) कठिनता, कठोरता।—बाण (पु०) कामदेव, मदन, कन्दर्प।—भुज (पु०) जिसकी भुजाएँ बराबर न हों।

विषय तत्० (पु०) पदार्थ, वस्तु, इन्द्रियार्थ वस्तु, भोग विलास, देश। (अ०) लिये, निमित्त, अर्थ।—क (वि०) संसारी।—वासना (स्त्री०) भोग विलास की इच्छा।

विषयी तत्० (पु०) विलासी, भोगी, संसारी।

विषहर तत्० (पु०) विष नाशक, विषघ्न।

विषाण तत्० (पु०) सींग, शृङ्ग, हाथी का दाँत।

विषाद तत्० (पु०) शोक, दुःख, क्लेश, खेद।

विषुव (पु०) जब दिन रात बराबर हों उस दिन का नाम।

विषुवत्, विषुव तत्० (पु०) पृथिवी की मध्यरेखा, मध्यरेखा।—रेखा (स्त्री०) धरती के बीच की रेखा, मध्यरेखा। [विशेष।

विष्टर तत्० (पु०) आसन, कुश का आसन, वृक्ष

विष्टि तत्० (स्त्री०) भद्रा, अशुभ समय, बेगार।

विष्ठा तत्० (पु०) मल, पुरीष, गू।

विष्णु तत्० (पु०) परमेश्वर, परमात्मा, सृष्टिपालक, देव विशेष।—पद (पु०) आकाश, वैकुण्ठ।—पदी (स्त्री०) गङ्गा, संक्रान्ति विशेष।

विस (सर्व०) वह, उस।

विसर्ग तत्० (पु०) स्वर के पीछे के दो विन्दु (:)।

विसर्जन तत्० (पु०) त्याग, छोड़ना, त्याग देना।

विसारना (क्रि०) भूल जाना।

विसासिनि (स्त्री०) सौत, डाहिनी, सौतिनी।

विसूचिका तत्० (स्त्री०) रोग विशेष, महामारी, हैज़ा, कालरा।

विसूरना (क्रि०) शोक करना, रोना, दुविधा में पड़ना। [विस्तारयुक्त। (दे०) बिछौना।

विस्तर तत्० (वि०) अधिक, विस्तृत, बड़ा हुआ,

विस्तार (पु०) फैलाव, विशालता।

विस्तारित तत्० (वि०) फैलाया हुआ, बढ़ाया हुआ।

विस्तीर्ण तत्० (वि०) बड़ा, विस्तारयुक्त, फैला हुआ, चौड़ा।

विस्तृत तत्० (वि०) विस्तीर्ण, विशाल, बड़ा।

विस्फुलिङ्ग (पु०) चिनगारी।

विस्फोट तत्० (पु०) फोड़ा, घाव, फुंसी।—क (पु०) शीतला, चेचक, गोटी, गाँठ।

विस्मय तत्० (पु०) अचरज, अचम्भा, आश्चर्य।

विस्मरण तत्० (पु०) भूलना, बिसराना, विस्मित होना।

विस्मित तत्० (वि०) विस्मययुक्त, अचम्भित, आश्चर्यित।

विस्मृति तत्० (स्त्री०) विस्मरण, भूल, बिसराना।

विस्वाद तत्० (पु०) स्वादहीन, स्वादरहित।

विहङ्ग, विहङ्गम तत्० (पु०) पक्षी, पखेरू।

विहरण तत्० (पु०) भ्रमण, पर्यटन, घूमना, सैर।

विहसना (क्रि० अ०) हँसना, खिलना।

विहार तत्० (पु०) क्रीड़ा, खेल, छड़के लड़कियों का आपस में हाथ पकड़ कर घूमना। बौद्धों का उपासनागार, बौद्धमन्दिर, भारत का प्रान्त विशेष।

बिहारी (पु०) श्रीकृष्ण, एक कवि का नाम जिन्होंने अपने नाम की सतसई बनाई है। ये शृङ्गार रस के अच्छे कवि थे। (वि०) विहार करने वाला, चंचल, चपल। [निर्जीन।

विहित तद्० (वि०) कथित, उक्त, उचित, कर्तव्य,

विहीन तद्० (वि०) बिना, रहित, शून्य। [उद्विग्न।

विह्वल तद्० (पु०) व्याकुल, घबराया हुआ, चंचल,

वीक्षण तद्० (पु०) दर्शन, दीठ, विलोकन।

वीक्षित तद्० (वि०) दृष्ट, विलोकित, देखा हुआ।

वीचि तद्० (स्त्री०) लहर, तरङ्ग।

वीज तद्० (पु०) वीर्य, शरीरान्तर्गत सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र, मूलकारण, बीया।—गणित (पु०) गणित का ग्रन्थ विशेष, अव्यक्त गणित।—पूर (पु०) बिजौरा नीबू।

वीणा तद्० (स्त्री०) सितारनुमा एक बाजा, जिसे नारद और सरस्वती आदि बजाते हैं।

वीत तद्० (वि०) अपगत, गत, व्यतीत, समाप्त, बीता हुआ।—हव्य (पु०) हैहय राज्य के अधिपति। इन्होंने वाराणसी के राजा दिवोदास को जीत कर काशी को अपने अधिकार में कर लिया था सही, परन्तु दिवोदास के पुत्र ने इन्हें जीत कर अपनी राजधानी लौटा ली थी। वीतहव्य ने प्राण बचाने की इच्छा से भरद्वाज मुनि के आश्रम में आश्रय लिया था।

वीथि तद्० (स्त्री०) गली कैल, मतोली।

वीप्सा तद्० (स्त्री०) अधिकता, व्यापकता

वीय (वि०) दो, २।

वीर तद्० (पु०) बलवान, योद्धा, काव्य का रस।—प्रसू (स्त्री०) वीर जननी, वीर माता।—गति (स्त्री०) युद्धक्षेत्र में प्राण विसर्जन, मरण।—ता (स्त्री०) शूरता, वीरत्व।—भद्र (पु०) महादेव का प्रिय अनुचर, इसने दक्ष-यज्ञ का नाश किया था। पति की निन्दा न सह कर सती का प्राणत्याग करने का संवाद जब महादेव ने सुना, तब क्रोध से अधीर होकर उन्होंने अपनी जटा भूमि पर पटकी, उसी से वीरभद्र उत्पन्न हुआ था।—भाव (पु०) बहादुरी, वीरता।—भूमि (स्त्री०) युद्धक्षेत्र, बङ्गाल प्रान्त का नगर विशेष।—रस (पु०) काव्य का एक रस विशेष।—वृत्ति (स्त्री०) शूरों का बाना, वीरों का काम।

वीर्य तद्० (पु०) सामर्थ्य, बल, बीज।—वान् (पु०) पराक्रमी, बलवान्, बलशाली।

वृक तद्० (पु०) भेड़िया, हुँड़ार, अग्नि विशेष, भीम के जठराग्नि का नाम।

वृकोदर तद्० (पु०) [वृक+उदर] जिसके उदर में वृक नामक अग्नि हो, भीम, भीमसेन।

वृक्ष तद्० (पु०) पेड़, रूख, तरु, तरुवर, तरवर।

वृत्त तद्० (पु०) घेरा, मण्डल, मण्डलाकार, गोल, छन्द।—खण्ड (पु०) वृत्त का टुकड़ा, जो त्रिज्या और जीवा से घिरा हो।—अर्द्ध (पु०) गोला का आधा।

वृत्तान्त तद्० (पु०) बात, समाचार, हाल, वार्ता।

वृत्ति तद्० (स्त्री०) जीविका, जीवनोपाय, व्यवसाय।

वृत्रासुर तद्० (पु०) [वृत्र+असुर] राक्षस विशेष, जिसको इन्द्र ने मारा था।

वृथा तद्० (अ०) अनुक्ति, निष्प्रयोजन।

वृद्ध तद्० (पु०) बूढ़ा, पुराना, प्राचीन, जर्जर, डोकरा।—प्रपितामह (पु०) पिता का पितामह।—प्रपितामही (स्त्री०) बाप की दादी।

वृद्धा तद्० (स्त्री०) बुढ़िया, बूढ़ी, डोकरी।

वृद्धि तद्० (स्त्री०) लाभ, बढ़ती, [illegible]त, [illegible]।

वृन्द तद्० (पु०) समूह, प्राणियों का दल, यूथ, जथा।—ा (स्त्री०) तुलसी, राधिका, देवी विशेष। (पु०) ढेर, समूह, शोक।

वृन्दारक तद्० (पु०) देवता, अमर, देव।

वृन्दावन तद्० (पु०) मथुरा के पास का एक वन जहाँ श्रीकृष्ण रहते थे।

वृश्चिक तद्० (पु०) बीछू, आठवीं राशि।

वृष तद्० (पु०) बैल, वृषभ, धर्म।—केतु (पु०) शिव, महादेव।—दंश (पु०) बिलार।—भानु (पु०) श्रीराधिका जी के पिता का नाम।

वृषण तद्० (पु०) अण्डकोश, पोता, अण्ड।

वृषभ तद्० (पु०) बैल, वर्षा।—ध्वज (पु०) महादेव।

वृषल तद्० (पु०) जाति विशेष, शूद्र जाति, चन्द्रगुप्त राजा। (स्त्री०) वृषली।

वृषाकपि तत्० (पु०) धर्म को न ढँपाने वाला, महादेव, विष्णु। [दाग कर छोड़ना।

वृषोत्सर्ग तत्० (पु०) श्राद्ध का अङ्ग विशेष, साँड़

वृष्टि तत्० (स्त्री०) वर्षा, मेंह, मेघ, बारिश, बरसात।

वृहत् तत्० (पु०) बड़ा, विशाल, विस्तृत।

वेङ्कटेश तत्० (पु०) भगवान् विष्णु की वह मूर्ति जो वेंकटाद्रि पर दक्षिण में है उन्हें बालाजी भी कहते हैं, यह हिन्दुओं का एक प्रधान तीर्थ स्थान है।

वेग तत्० (पु०) शीघ्रता, प्रवाह, धारा।—गामी शीघ्र चलने वाला घोड़ा।—वान् (पु०) पवन, चीता। (वि०) अश्व चलने वाला।

वेगि (क्रि० वि०) शीघ्र, जल्दी।

वेगी तत्० (वि०) शीघ्रगामी, वेग वाला।

वेणी तत्० (स्त्री०) चोटी, नदियों का सङ्गम, त्रिवेणी।

वेणु तत्० (पु०) बाँस।—क (पु०) वंशलोचन, ठग, बाज़ीगर, चालाक।

वेत दे० (पु०) एक वृक्ष का नाम, आकाश।

वेतन तत्० (पु०) तनख्वाह, तलब, पगार, मजूरी।

वेताल तत्० (पु०) प्रेत योनि विशेष।

वेत्ता तत्० (पु०) जानने वाला, ज्ञाता, वेदी।

वेत्र तत्० (पु०) बेंत का वृक्ष, छड़ी, चाबुक।

वेद तत्० (पु०) हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ, वेद चार हैं ऋक्, साम, यजु और अथर्व। ज्ञान, उपासना और कर्म भेद से इनके तीन काण्ड हैं।—गर्भ (पु०) ब्रह्मा, ब्राह्मण।—गिरा (स्त्री०) वेदवाणी, वेद के वाक्य। (पु०) ऋषि विशेष।—माता (स्त्री०) गायत्री। [बखेरा।

वेदन या वेदना तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, यातना

वेदाङ्ग तत्० (पु०) वेद के अङ्ग, वेद ज्ञान प्राप्त करने के उपयोगी शास्त्र। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द और निरुक्त ये छः वेदाङ्ग हैं।

वेदान्त तत्० (पु०) वेद का भाग विशेष, उपनिषद, उपनिषद् का विचार करने वाला दर्शन।—ी (पु०) ब्रह्मवादी, वेदान्त का जानने वाला।

वेदि (स्त्री०) पीढ़, चौरा, होम करने का चबूतरा।

वेदिका तत्० (स्त्री०) वेदी, होम करने का चौतरा।

वेदी तत्० (स्त्री०) वेदिका, स्थण्डिल, हवन स्थान।

वेध (पु०) छेद, सूराख, एक ग्रह पर दूसरे ग्रह की छाया।—ना (क्रि०) छेद करना।—मुख्या (स्त्री०) कपूर, कस्तूरी।

वेला तत्० (स्त्री०) समय, काल, एक बाद्य विशेष।

वेश तत्० (पु०) आकार, परिच्छद, सजावट, शोभा।

वेशर दे० (पु०) भूषण विशेष, नाक का गहना।

वेश्म (पु०) गृह, घर, मेल।

वेश्या तत्० (स्त्री०) पतुरिया, गणिका, बारस्त्री, वाराङ्गना।

वेष (पु०) कपड़ा, गहना, डौल, चाल।

वेष्टन तत्० (पु०) वेठन, लपेटन। [काटना।

वैंछना दे० (क्रि०) छीलना, उधेड़ना, छाँटना

वैकाल दे० (पु०) अपराह्न, दोपहर के बाद का समय, चौथा पहर।

वैकुण्ठ तत्० (पु०) लोक विशेष, विष्णु का धाम।—नाथ (पु०) विष्णु भगवान।

वैगन्ध (पु०) गन्धिक। [बौध भिक्षुक।

वैखानस तत्० (पु०) यती विशेष, वानप्रस्थाश्रमी,

वैचित्र्य (पु०) विचित्रता, चित्र विचित्र।

वैजन्ती (स्त्री०) झण्डा, पताका।

वैतरणी तत्० (स्त्री०) नरक की एक नदी का नाम।

वैताल (पु०) पिशाच, भाट, बन्दी।

वैतालिक (पु०) गायक, राज घराने के गवैया।

वैदिक तत्० (पु०) वेदपाठी, वेद पढ़ने वाला। (वि०) वेदोक्त, वेद कथित, वेद में कही बात, जो बात वेद में लिखी हो या उससे विरुद्ध न हो।

वैदेही तत्० (स्त्री०) जानकी, सीता।

वैदूर्य (पु०) नीलम, नीलमणि।

वैद्य तत्० (पु०) चिकित्सक, वैद्यशास्त्रवेत्ता।—नाथ (पु०) शिव, दिवोदास, धन्वन्तरि, वैद्यनाथ, जिनका मन्दिर [illegible] में है।

वैद्यक तत्० (पु०) [illegible]।

वैनतेय तत्० (पु०) गरुड़, पक्षिराज, [illegible]।

वैभव तत्० (पु०) ऐश्वर्य, सम्पत्ति, धन, [illegible]।

वैमनस्य तत्० (पु०) [illegible]।

वैयाकरण तत्० (पु०) व्याकरण [illegible] उसका ज्ञाता। इसके अर्थ में [illegible] शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

वैर तत्० (पु०) द्वेष, शत्रुता, विरोध। [निस्पृह।
वैरागी तत्० (पु०) विरक्त, वीतराग, संसारत्यागी,
वैराग्य तत्० (पु०) विषय त्याग, विषय उदासीनता, निस्पृहता।
वैरी तत्० (पु०) शत्रु, रिपु, विरोधी, अरि, द्वेषी।
वैलक्षण्य (पु०) विचित्रता, भावान्तर।
वैवस्वत (पु०) धर्मराज, मनु विशेष।
वैशाख तत्० (पु०) महीना का नाम, जिस महीने में विशाखा नक्षत्र में चन्द्रमा पूर्ण हों, दूसरा मास।
वैशाखी (स्त्री०) थूनी, वैशाख की पूर्णिमा।
वैशेषिक (पु०) न्याय का एक भाग, दर्शन विशेष।
वैश्य तत्० (पु०) वर्ण विशेष, तीसरा वर्ण, बनिया, महाजन आदि।
वैष्णव तत्० (पु०) विष्णुभक्त, विष्णु के उपासक, विष्णु उपासक सम्प्रदाय। (स्त्री०) वैष्णवी।
वैसा दे० (सर्व०) उसके समान, उसके ऐसा, उसके तुल्य, तत् सदृश।
वैसे दे० (वि०) बिना मूल्य, सेंतमेंत, उसी तरह।
वोहित (पु०) जहाज़, बड़ी नाव।
वौला दे० (पु०) गोंद, गुग्गल, धूप विशेष।
व्यक्त तत्० (वि०) स्पष्ट, प्रकाशित, दर्शन योग्य।
व्यक्ति तत्० (स्त्री०) एक मनुष्य, एकाकी, एक वस्तु, जन, मनुष्य।
व्यग्र तत्० (वि०) व्याकुल, उद्विग्न, विकल।
व्यङ्ग तत्० (पु०) अङ्गहीन, विकलाङ्ग।
व्यजन तत्० (पु०) पङ्खा, बेना, बेनिया।
व्यञ्जक तत्० (पु०) प्रकाशक, भावबोधक शब्द जिनसे अर्थ प्रकाशित होते हैं।
व्यञ्जन तत्० (पु०) तरकारी, साग, वर्ण, अक्षर, स्वरहीन वर्ण, क से ह तक वर्ण।
व्यञ्जना तत्० (स्त्री०) शब्द शक्ति, जिससे अर्थों का बोध होता है। [विपर्यय।
व्यतिक्रम तत्० (पु०) डाँकना, लाँघना, विलोम,
व्यतिरिक्त तत्० (वि०) अन्य, भिन्न।
व्यतिरेक तत्० (पु०) भेद, अलग, भिन्नता, एक काव्यालङ्कार।
[illegible] तत्० (वि०) गत, बीता, गयाबीता।
[illegible]पात तत्० (पु०) योग विशेष, समवर्ती योग।

व्यत्यय तत्० (पु०) अतिक्रम, लाँघना, डाँकना।
व्यथा तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, वेदना, क्लेश कष्ट।
व्यथित तत्० (वि०) पीड़ित, दुःखित, क्लेश, ग्रस्त कष्ट पतित।
व्यपदेश तत्० (पु०) बहाना, व्याज, केवल।
व्यभिचार तत्० (पु०) परस्त्री या परपुरुष संगम, निन्दित कर्म, न्याय का एक दोष।
व्यभिचारिणी तत्० (स्त्री०) कुलटा, नष्ट चरित्रा, छिनाल औरत, पर पुरुषरता स्त्री।
व्यभिचारी तत्० (पु०) लम्पट, कुमार्गी, छिनरा।
व्यय तत्० (पु०) ख़र्च, लागत, क्षय, नाश।
व्यर्थ तत्० (वि०) वृथा, निरर्थक, निकम्मा, बिना काम का, निष्फल।
व्यवकलन तत्० (पु०) गणित विशेष, घटाना, बाक़ी निकालना। [पृथक्ता।
व्यवच्छेद तत्० (पु०) भेद, भिन्नता, अलगाव,
व्यवधान तत्० (पु०) अन्तर, दूरी, दो पदार्थों के बीच का अन्तर।
व्यवसाय तत्० (पु०) व्यवहार, लेनदेन, उद्योग, रोज़गार।—ी (पु०) व्यापारी।
व्यवस्था तत्० (स्त्री०) प्रबन्ध, उपाय, प्रक्रिया, धर्मनिर्णय।—पक (पु०) व्यवस्था करने वाला, प्रबन्धक। [ठीक ठीक।
व्यवस्थित तत्० (वि०) अचल, अटल, निश्चित
व्यवहार तत्० (पु०) उद्यम, धन्धा, काम, रोज़गार।
व्यवहरिया दे० (पु०) व्यवहार करने वाला, महाजन, ऋणदाता। [राजपुत्र।
व्यवहित तत्० (वि०) व्यवधान प्राप्त, अन्तः
व्यसन तत्० (पु०) आसक्ति, अभ्यास, खोटी आदत।—ी (पु०) व्यसन करने वाला।
व्यस्त तत्० (वि०) व्याकुल, उद्विग्न।
व्याकरण तत्० (पु०) शास्त्र विशेष, भाषा को नियमित करने वाला शास्त्र, शब्दशास्त्र।
व्याकुल तत्० (वि०) घबड़ाया हुआ, उद्विग्न, व्यग्र, व्यस्त।—ता (स्त्री०) घबड़ाहट, व्यग्रता चंचलता।
व्याख्या तत्० (स्त्री०) वर्णन, टीका, विवृति।

व्याख्यान तद्० (पु०) उपदेश, वक्तृता ।
व्याघात तद्० (पु०) बाधा, रुकावट, रोक, अटकाव ।
व्याघ्र तद्० (पु०) बाघ, नाहर, चीता ।
व्याज तद्० (पु०) बहाना, मिष, छल, कपट । (दे०) सूद, लाभ ।—क (वि०) व्याज, छली, कपटी ।
व्याजू दे० (पु०) व्याज के लिये, सूद पाने के लिये, उधार दिया हुआ ।
व्याध तद्० (पु०) अहेरिया, शिकारी, बहेलिया ।
व्याधि तद्० (स्त्री०) रोग, पीड़ा, दुःख, क्लेश ।
व्यान तद्० (पु०) प्राण विशेष ।
व्यापक तद्० (पु०) सर्वत्र विस्तृत, सर्वत फैला हुआ ।—ता (स्त्री०) विस्तार, फैलाव ।
व्यापना दे० (क्रि०) हर जगह हो जाना, फैलना, सर्वत्र फैल जाना ।
व्यापार तद्० (पु०) रोजगार, कामधन्धा, व्यवसाय ।
व्यापी तद्० (पु०) व्यापक, विभु, सर्वगत ।
व्याप्त तद्० (पु०) विस्तृत, फैला हुआ ।
व्याप्ति तद्० (स्त्री०) विस्तार, फैलाव, न्याय मत से अनुमान का कारण ।
व्यामोह तद्० (पु०) पश्चात्ताप, पीड़ा, दुःख ।
व्यायाम तद्० (पु०) कसरत, शारीरिक श्रम ।
व्याल तद्० (पु०) साँप, सर्प, अहि, भुजङ्ग ।—ी (स्त्री०) मड़ोला, साँपिनि ।
व्यावहारिक (पु०) मंत्री, सलाहकार ।
व्यास तद्० (पु०) महर्षि विशेष, पुराणकर्त्ता, पुराण कहने वाला ।—गद्दी तद्० (स्त्री०) बड़ा आसन जिस पर बैठ कर पुराण की कथा कही जाय ।
व्यासार्द्ध (पु०) व्यास का आधा ।
व्याहृति तद्० (स्त्री०) वैदिक मन्त्र विशेष, जिससे प्राणायाम किया जाता है ।
व्युत्क्रम तद्० (पु०) उलटा पलटा, क्रमरहित ।
व्युत्पत्ति तद्० (स्त्री०) शास्त्रीय ज्ञान में अभिनिवेश, बोध शास्त्र, परज्ञान ।
व्युत्पन्न तद्० (वि०) शास्त्र में प्रवीण ।
व्यूह तद्० (पु०) सेना की रचना विशेष, समूह, राशि ।—ा (पु०) क़िलाबंदी ।
व्योम तद्० (पु०) आकाश, गगन, अन्तरिक्ष ।—केश (पु०) शिव ।—चर (पु०) पक्षी, ग्रह, देवता ।—यान (पु०) विमान ।
व्रज (पु०) गोस्थान, मथुरामण्डल ।—न (पु०) भ्रमण, पर्यटन ।—वासी (पु०) व्रज में रहने वाला ।
व्रजेन्द्र (पु०) श्रीकृष्ण ।
व्रण तद्० (पु०) घाव, फोड़ा, फुंसी, क्षत ।
व्रत तद्० (स्त्री०) पुण्य, तिथि का उपवास, अनुष्ठान ।
व्रात तद्० (पु०) समूह, यूथ, दल ।
व्रात्य तद्० (स्त्री०) पतित, संस्कारहीन ।
व्रीड़ा तद्० (स्त्री०) लज्जा, लाज, शर्म, हया ।
व्रीहि तद्० (स्त्री०) धान्य विशेष, छोटे छोटे अन्न ।

श

श व्यञ्जन का तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु होने के कारण इसे तालव्य कहते हैं ।
श तद्० (पु०) कल्याण, मङ्गल ।
शंयु तद्० (वि०) प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित ।
शंव तद्० (वि०) पुण्यी, पुण्यात्मा, धर्मी ।
शंबर तद्० (पु०) मत्स्य, शत्रु, मायावी राक्षस विशेष । इन्द्रजाल विद्या का यह एक आचार्य हो गया है । इसी विद्या का दूसरा नाम शांबरी भी कहा है ।
शंसा तद्० (स्त्री०) चाहना, चाह, अभिलाष, उत्सुकता, प्रबल अभिलाष ।
शंसित तद्० (वि०) उक्त, कथित, प्रोक्त, निश्चित, स्तुत्य ।
शंस्य (वि०) स्तुत्य, प्रशंसनीय, प्रशंसा के योग्य ।
शऊर (पु०) तमीज़, शिष्टता ।—दार (वि०) सभ्य, शिष्ट ।
शक तद्० (पु०) देश विशेष, एक जाति विशेष, जिसको विजय राजा विक्रमादित्य ने की थी । राजा शालिवाहन का चलाया संवत् । दे० (स्त्री०) सन्देह, संशय ।—कर्त्ता (पु०) शक अर्थात् साका चलाने वाला । यथा, युधिष्ठिर, विक्रमा-

विन्य, चन्द्रगुप्त, शालिवाहन आदि संवत्सर प्रवर्तक।
शकट तत्० (पु०) रथ, गाड़ी, बैलगाड़ी, छकड़ा।
शकटासुर तत्० (पु०) दानव विशेष, कंस ने श्री कृष्ण को मारने के लिये इसको भेजा था। इसने शकट का रूप धारण करके श्रीकृष्ण के मारने का उद्योग किया था, परन्तु स्वयं मारा गया।
शकल (पु०) स्वरूप, सूरत, चिन्ह, चर्म, छाल, भाग, छिलका।
शकाब्द तत्० (पु०) शालिवाहन प्रवर्तित संवत्।
शकारि तत्० (पु०) राजा विक्रमादित्य।
शकुन तत्० (पु०) सगुन, शुभसूचक चिन्ह, मङ्गलगान, पक्षी विशेष। [और दुर्योधन का मामा।
शकुनी तत्० (पु०) गान्धार राजा सुबल का पुत्र
शकुन्त (पु०) पक्षी, चिड़िया।
शकुन्तला तत्० (स्त्री०) विख्यात पुरुवंशी राजा दुष्यन्त की महारानी, महर्षि विश्वामित्र के औरस और मेनका नामक अप्सरा के गर्भ से यह उत्पन्न हुई थी। महर्षि कण्व ने इसे पाला पोसा था। विख्यात कवि कालिदास निर्मित एक नाटक।
शकुल (पु०) मछली विशेष।
शकृत् (पु०) मल, विष्ठा, पुरीष।
शक्कर (स्त्री०) चीनी।
शक्की (वि०) सन्देही, संशयी। [दृढ़, पुष्ट।
शक्त तत्० (वि०) समर्थ, शक्तिमान्, कठोर, बलवान्,
शक्ति तत्० (स्त्री०) बल, पुरुषार्थ, सामर्थ्य, पराक्रम, अस्त्र विशेष, भाला, बर्छी। इन्द्राणी, वैष्णवी आदि आठ शक्तियाँ। वशिष्ठ का ज्येष्ठ पुत्र। —मान् (पु०) पुरुषार्थी, पराक्रमी।
शक्तु (पु०) सतुआ।
शक्र (पु०) इन्द्र, सुरपति। —जित् (पु०) मेघनाद, इन्द्रजीत। —धनुष (पु०) इन्द्रधनुष। —सुत। —(पु०) इन्द्रपुत्र, जयन्त। —वाजि (पु०) अर्जुन।
शक्राणी (स्त्री०) इन्द्राणी, शची, इन्द्र की पत्नी।
(पु०) इन्द्रवधू, कीट विशेष, इन्द्र गोप।
(पु०) जन, प्राणी, मनुष्य।
शगल (पु०) कामकाज।

शगुन (पु०) शकुन, शुभ अशुभ की पूर्व सूचना।
शगुनिया (वि०) शकुन विचारने वाला।
शङ्क तत्० (पु०) भय, डर, सर्पाग्र।
शङ्कर तत्० (पु०) शिव, शम्भु, महादेव। (वि०) शुभकर, कल्याणकर, मङ्गलप्रद।
शङ्करा तत्० (स्त्री०) रागिणी विशेष। —चार्य (पु०) धर्माचार्य विशेष। [भय।
शङ्का तत्० (स्त्री०) सन्देह, संशय, शक, त्रास, डर,
शङ्कित तत्० (वि०) डरा हुआ, भयभीत, डरपोकना, सन्दिग्ध।
शङ्कु तत्० (पु०) कीला, खूँटा, बर्छी।
शङ्ख तत्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध वाद्य विशेष। —चूड़ (पु०) एक नागराज। —पुष्पी (स्त्री०) जड़ी विशेष। —सुर (पु०) एक राक्षस।
शङ्खिनी तत्० (स्त्री०) एक प्रकार की स्त्री।
शचान (पु०) शिकरा, बाज। [इन्द्र।
शची (स्त्री०) इन्द्र की स्त्री का नाम। —पति (पु०)
शटी (पु०) एक प्रकार की कचूर।
शठ तत्० (पु०) धूर्त, ठग, कपटी, वञ्चक। —ता (स्त्री०) धूर्तता, ठगाई।
शण तत्० (पु०) सन, पाट, तृण विशेष, जिसके छाल की रस्सी बनायी जाती है। —सूत्र (पु०) सुतली, वैरयों का यज्ञोपवीत। [साँड़ियाँ।
शण्ड तत्० (पु०) बैल, साँड़। —ी (स्त्री०) ऊटिनी,
शण्ढ (पु०) नपुंसक, हिजड़ा, साँड़। [सैकड़ों।
शत तत्० (पु०) सौ संख्या, १०० —शः असंख्यात,
शतक (वि०) सौ का, सैकड़ा।
शतकोटि (पु०) इन्द्र के वज्र का नाम, सौ करोड़।
शतक्रतु (पु०) इन्द्र।
शतघ्नी (स्त्री०) तोप, महामारी।
शतपुष्प (स्त्री०) सौंफ। [नक्षत्र।
शतभिषा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र का नाम, चौबीसवाँ
शतमूली तत्० (स्त्री०) लता विशेष। [री।
शतवंश (स्त्री०) एक पौधे का नाम। —ी (स्त्री०)
शता (स्त्री०) सौंफ।
शत्रु तत्० (पु०) द्वेषी, वैरी, रिपु, अरि। —ता (स्त्री०) दुश्मनी, रिपुता। —घ्न (पु०) राजा दशरथ के पुत्र

शनि तत्० (पु०) सप्तम ग्रह, सूर्यपुत्र, शनैश्चर ।
—वार (पु०) सातवाँ दिन, मन्दवार ।
शनै शनैः तत्० (अ०) हौले हौले, धीरे धीरे ।
शनैश्चर तत्० (पु०) देखो शनि ।
शपथ तत्० (पु०) सौगन्ध, सौंह, किरिया ।
शप्पा तत्० (पु०) चाँद, चन्द्रमा, बोझा, भार ।
शब दे० (पु०) मुर्दा, प्राणहीन शरीर, मृतक ।
शब्द तत् (पु०) ध्वनि, निनाद, बोली ।—शास्त्र (पु०) व्याकरण ।
शम तत्० (पु०) शान्ति, निग्रह, इन्द्रिय वशीकार ।
शमन तत्० (पु०) यम, यमराज, शान्ति ।
शमा (पु०) प्रकाश ।—दान (पु०) दीवट, बैठकी ।
शमी तत्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, अग्निगर्भ वृक्ष ।
शम्बूक तत्० (पु०) सीप, घोंघा, एक शूद्र तपस्वी ।
शम्भु (पु०) महादेव ।
शयन तत्० (पु०) नींद, निद्रा, पलँग ।
शय्या तत्० (स्त्री०) सेज, पलँग, बिछौना, खाट ।
शर तत्० (पु०) बाण, तीर, सरकण्डा, सायक, विशिख ।—जन्मा (पु०) कार्तिकेय ।
शरट तत्० (पु०) कृकलास, गिरगिट ।
शरण तत्० (पु०) रक्षा, उद्धार, घर, मकान ।
शरणागत तत्० (वि०) आश्रित, शरणार्थी, रक्षा के लिये आगत ।
शरण्य तत्० (वि०) शरण के योग्य, शरणदाता ।
शरद् तत्० (स्त्री०) एक ऋतु कुआर और कार्तिक महीना ।
शरह (स्त्री०) दर, भाव, रस्म, रीति ।
शराकत (स्त्री०) संमिलित, जो बटा हुआ न हो ।
शराटा दे० (पु०) शब्द विशेष, सरसराहट, सरसर शब्द, प्रचंड वायु के चलने का शब्द ।
शराफत (स्त्री०) सौजन्य, सभ्यता, भलमनसाहत ।
शराब तत्० (पु०) पुरवा, सकोरा, मिट्टी का पात्र विशेष, मदिरा ।—ी (वि०) मद्यप, शराब पीने वाला ।
शरारत (स्त्री०) नटखटी, दुष्टता ।
शरासन तत्० (पु०) धनुष, धन्वा, बाण का आसन ।
शरीर तत्० (पु०) काय, देह, अङ्ग, गात्र ।
शरीरी तत्० (पु०) शरीरधारी पुरुष, आत्मा ।
शर्करा तत्० (स्त्री०) चीनी, खाँड ।
शर्त (स्त्री०) ठहराव, पण, नियम ।
शर्बत (पु०) चीनी घुला जल ।—ी (स्त्री०) रंग विशेष, एक प्रकार का नीबू ।
शर्म (स्त्री०) हया, शरम, लज्जा ।
शर्मा तत्० (पु०) ब्राह्मणों का उपपद ।
शर्वरी तत्० (स्त्री०) रात्रि, रजनी, रात, निशा । यामिनी ।
शलभ तत्० (पु०) कीट, पतङ्ग, कीड़ा, मकोड़ा ।
शलाका तत्० (स्त्री०) सलाई, कूँची, तूली ।
शलीता दे० (पु०) थैला, बोरा ।
शलूका दे० (स्त्री०) पहिरन विशेष, स्त्रियों के पहिनने के एक कपड़े का नाम ।
शल्य तत्० (पु०) बाण, शल्य मद्रदेश के राजा, और युधिष्ठिर के मामा थे । महाभारत युद्ध में ये कर्ण के सारथी बने थे ।
शव तत्० (पु०) प्राणहीन शरीर, मुर्दा ।
शबर तत्० (पु०) जंगली जाति विशेष, भील, पुलिन्द ।—ी (स्त्री०) भिल्लिनी विशेष ।
शशक तत्० (पु०) ससा, खरहा, ख़रगोश ।
शशमाही (स्त्री०) छमाही ।
शशा (पु०) ख़रगोश ।—ङ्क (पु०) चन्द्रमा ।
शशि या शशी तत्० (पु०) चन्द्रमा, विधु ।
शश्वत् (अव्य०) सदा, सर्वदा, सनातन ।
शस्त्र तत्० (पु०) अस्त्र, हथियार ।
शस्य तत्० (पु०) धान्य, धान, अन्न के पौधे ।
शहंशाह (पु०) बादशाह, सम्राट् ।
शहतूत (पु०) फल विशेष ।
शहद (पु०) मधु, दवा विशेष ।
शहनाई (स्त्री०) एक बाजा विशेष ।
शाक तत्० (पु०) साग, भाजी, सब्ज़ी ।
शाकल या शाकल्य तत्० (पु०) हवन सामग्री, होम की वस्तु ।
शाका (पु०) शालिवाहन का चलाया साल ।
शाक्त तत्० (पु०) शक्ति का उपासक, सम्प्रदायविशेष ।
शाख या शाखा तत्० (स्त्री०) डाल, टहनी ।—मृग (पु०) वानर, कीश ।
शाखी तत्० (...) ...

शाठ्य तद्० (पु०) शठता, ठगाई, धूर्तता ।
शाण तद्० (पु०) एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज़ किये जाते हैं, शान । [सुवर्ण ।
शात (पु०) कल्याण, सुख ।—कुम्भ (पु०)
शान (पु०) हथियार पैनाने का पत्थर विशेष । —दार (वि०) भड़कीला, सुन्दर ।—शौकत (पु०) आनन्दमङ्गल, शौकीनी ।
शान्त तद्० (वि०) स्थिर, अक्षुब्ध, अचञ्चल ।
शान्तनु (पु०) भीष्म पितामह के पिता का नाम ।
शान्ति तद्० (स्त्री०) शम, स्थिरता, चैन, ठंढाई ।
शाप तद्० (पु०) सराप, धिक्कार, अशुभ चिन्तन ।
शाम (स्त्री०) सन्ध्या, सूर्यास्त का समय ।
शामत (स्त्री०) बुराई, खराबी ।
शामा (स्त्री०) पक्षी विशेष ।
शामियाना (पु०) चँदोवा, चाँदनी, वस्त्रगृह ।
शामिल (वि०) समुद, सम्मिलित ।
शामी या शान लगाना या धरना दे० (वा०) तेज करना, धार चढ़ाना ।
शामूक तद्० (पु०) घोंघा, सीप ।
शाम्बरी तद्० (स्त्री०) माया, इन्द्रजाल विद्या ।
शाम्भव तद्० (पु०) शिवोपासक, शैव ।
शायक तद्० (पु०) विशिख, तीर, बाण ।
शायद (अव्य०) कदाचित् ।
शायर दे० (पु०) कवि, कवित्त बनाने वाला ।
शायरी दे० (स्त्री०) कविता, पद्यमयी रचना ।
शायस्ता (वि०) सभ्य, शिष्ट, सज्जन ।
शाया (वि०) शयन करने वाला, सुवैया ।
शारंग (पु०) पपीहा, मृग, हाथी, भौंरा, मोर, धनुष ।
शारद (वि०) शरत् सम्बन्धी ।
शारदा (स्त्री०) सरस्वती, वाग्देवी ।
शारदी (वि०) शरदृतु का ।
शारदोत्सव (पु०) शारदी पूर्णिमा का उत्सव ।
शारिका तद्० (स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहिनने का कपड़ा ।
शारीरिक (वि०) शरीर सम्बन्धी, व्यास सूत्रों पर भाष्य, आत्मा, जीव ।
शार्ङ्ग (वि०) सींग का बना हुआ । (पु०) धनुष, पक्षी विशेष ।
शार्दूल तद्० (पु०) पक्षी विशेष, बाघ, व्याघ्र ।
शाल तद्० (पु०) काँटा, कील, मत्स्य विशेष, वृक्ष विशेष, पर्वत विशेष ।—ग्राम (पु०) भगवत् मूर्ति विशेष, जो गण्डकी नदी से निकलती है ।
शाला तद्० (स्त्री०) गृह, मकान, आलय ।
शालि तद्० (पु०) धान, चावल ।—नी (स्त्री०) छंद विशेष, छेदनेवाली, दुःख देनेवाली ।—वाहन (पु०) राजा विशेष ।
शाल्मली तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, सेमल का वृक्ष ।
शावक (पु०) बच्चा, पशुओं का बच्चा । [नाम ।
शावर तद्० (पु०) मन्त्र शास्त्र विशेष, एक पशु का
शाश्वत (क्रि० वि०) लगातार, बराबर, सतत, सदैव ।
शासन तद्० (पु०) पालन, अपराध का दण्ड । —पत्र (पु०) हुकुमनामा ।—प्रणाली (स्त्री०) राज्यव्यवस्था, राज्य पद्धति ।
शासनीय तद्० (वि०) शासन करने योग्य, दण्डनीय ।
शासित तद्० (वि०) जिसका शासन किया जाय ।
शास्ति तद्० (पु०) शासन, सीख, शिक्षा, राजाज्ञा ।
शास्त्र तद्० (पु०) नहीं जाने हुए ज्ञान को बताने वाले ग्रन्थ, विद्या ।—ज्ञ (पु०) शास्त्र जानने वाला ।
शास्त्रार्थ तद्० (पु०) शास्त्र सम्बन्धी विवाद, शास्त्रचर्चा ।
शास्त्री तद्० (पु०) शास्त्रज्ञ, शास्त्रवेत्ता ।
शास्त्रीय तद्० (वि०) शास्त्र सम्बन्धी, शास्त्र सम्मत ।
शाह (पु०) बादशाह, स्वामी, प्रभु ।—ी (वि०) शाह सम्बन्धी ।
शिकन दे० (स्त्री०) बल, सिकुड़न ।
शिकस्त (पु०) हार, पराजय ।
शिकायत (स्त्री०) निन्दा, उलहना ।
शिक्य तद्० (पु०) सिकहर, सीका ।
शिक्षक तद्० (पु०) सिखाने वाला, अध्यापक, विद्या दाता । [(पु०) वसीयतनामा ।
शिक्षा तद्० (स्त्री०) सीख, सिखाई, उपदेश ।—पत्र
शिक्षित तद्० (वि०) सीखा हुआ, सिखाया गया, निपुण, अभिज्ञ । [नाम ।
शिखण्डी (पु०) मोर, राजा द्रुपद के एक पुत्र का
शिखर तद्० (पु०) शिखा, चोटी, शृङ्ग, पर्वत के ऊपर का भाग ।—ी (पु०) पहाड़ ।

शिखा तद्० (स्त्री०) चोटी, हिन्दू लोग सिर के बीच में कुछ बाल रख छोड़ते हैं जो उनकी धार्मिक दृष्टि में उपयोगी और आवश्यक वस्तु समझी जाती है, ज्वाला, अग्नि की ज्वाला।—चूड़ (पु०) केशपाश, जटाजूट।—वल (पु०) मयूर, पक्षी विशेष। [मोर, मयूर, अग्नि, एक पेड़ का नाम।
शिखी तद्० (वि०) शिखा विशिष्ट, शिखायुक्त। (पु०)
शिथिल तद्० (वि०) ढीला, आलसी, मन्द, धीमा, अदृढ़।—ता (स्त्री०) आलस्य, ढीलापन।
शिम्बि (स्त्री०) सेम, एकलता।
शिरः तद्० (पु०) सिर, मस्तक, भाल, कपाल, कपार।—धरा (पु०) ज़िम्मेदार।
शिरा तद्० (पु०) नाड़ी, नस, धमनी।
शिरीष (पु०) सिरिस का पेड़।
शिरोधरा (स्त्री०) गर्दन, ग्रीवा।
शिरोमणि तद्० (पु०) सिर पर धारण करने की वस्तु, सिर का एक आभूषण। (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, सब से बड़ा, सर्वोत्तम।
शिरोरुह तद्० (पु०) बाल, केश।
शिला तद्० (स्त्री०) सिल, चट्टान, पत्थर।—जित शिलारस, शैलज, पर्वतों से उत्पन्न होने वाला द्रव्य विशेष, जो दवा के काम में आता है।
शिलीमुख (पु०) बाण, तीर, भौंरा।
शिलोच्चय (पु०) पर्वत, पत्थर की राशि।
शिल्प तद्० (पु०) कारकार्य, कारीगर, चित्र, व्यवसाय, गुन, हुनर।—कार (पु०) शिल्पी, चित्रकार, चितेरा, कारीगर।—शाला (स्त्री०) कारख़ाना।
शिल्पी (पु०) कारीगर।
शिव तद्० (पु०) महादेव, महेश, मङ्गल, शुभ, कल्याण।—पुरी (स्त्री०) काशी, वाराणसी।—रात्री (स्त्री०) व्रत विशेष।—सेनानी (पु०) कार्तिकेय।
शिवा तद्० (स्त्री०) पार्वती, दुर्गा, उमा।
शिवालय तद्० (पु०) शिवमन्दिर, शिव का स्थान।
शिवाला तद्० (पु०) शिवालय, शिवमन्दिर।
शिवि तद्० (पु०) राजा उशीनर का पुत्र, ये राजा ययाति के दौहित्र थे।

शिविका तद्० (स्त्री०) पालकी, डोली।
शिविर तद्० (पु०) छावनी, पड़ाव, सेना सन्निवेश, सेना के रहने का स्थान।
शिशिर तद्० (पु०) ऋतु विशेष, जाड़ा, पाला, हिम, सर्दी, माघ और फागुन इन दो महीनों को शिशिर ऋतु कहते हैं।
शिशु तद्० (पु०) बालक, बाल, बच्चा।—पाल (पु०) चेदि देश का राजा, यह चेदिराज दमघोष का पुत्र था। यह श्रीकृष्ण की बुआ का लड़का था, इसके छोटे भाई का नाम दन्तवक्र था। शिशुपाल की माता सुश्रमा को यह मालुम हो गया था कि शिशुपाल को श्रीकृष्ण मारेंगे। इसलिये उन्होंने श्रीकृष्ण को शिशुपाल को एक सौ अपराध क्षमा करने के लिये प्रसन्न किया था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उसने श्रीकृष्ण को बड़ी गालियाँ दीं, उसके सौ अपराध पूरे होने के बाद श्रीकृष्ण ने उसे मार डाला।—ता (स्त्री०) लड़कई, लड़कपन, चञ्चलता।—मार (पु०) सूंस, जलजन्तु विशेष, आकाश में ताराओं का समूह विशेष।
शिश्न (पु०) पुरुषेन्द्रिय, लिङ्ग।
शिष्ट तद्० (पु०) सदाचारी, प्रतिष्ठित, भलामानस।—ता (स्त्री०) सदाचार, भलमनसी।
शिष्टई दे० (स्त्री०) नेवता, निमन्त्रण, आदर, सम्मान, शिष्टाचार।—आना (क्रि०) किसी नातेदार के यहाँ मौत होने पर मातमपुर्सी या समवेदना प्रकाशित करने के लिये जाना।
शिष्टाचार (पु०) सत्कार, शिष्टों का आचार।
शिष्य तद्० (पु०) छात्र, विद्यार्थी, चेला।
शीकर तद्० (पु०) कण, जलकण, फुहार, फुही।
शीघ्र तद्० (वि०) त्वरित, तुर्त, द्रुत, तुरन्त, जल्दी।—गामी (वि०) वेगवान्, वेगी, जल्दी चलने वाला।—ता (स्त्री०) जल्दी, वेग, उतावली।
शीत तद्० (वि०) ठंढा, सर्द, शीतल, आलसी। (पु०) जाड़ा, सर्दी हिम, पाला।—कटिबन्ध (पु०) पृथिवी के २३½ अंश उत्तर और २३½ दो अंश दक्षिण का भू भाग।—कर (पु०) ठंढी किरणों वाला, चन्द्रमा।—काल (पु०) हेमन्त ऋतु,

जाड़े का दिन ।—ज्वर (पु०) जूड़ी, वह ज्वर जो जाड़ा लग कर आवे । [शीतगुण, ठढापन ।
शीतल तत्० (पु०) ठढा, सर्द ।—ता (स्त्री०)
शीतलाई या शीतलताई (स्त्री०) शीतलता, ठढाई, ठंढापन ।
शीतला तत्० (स्त्री०) देवी विशेष, माता, चेचक ।
शीतांशु तत्० (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, सुधांशु ।
शीताङ्ग तत्० (पु०) एक रोग विशेष, जिस रोग में आधा शरीर शून्य हो जाता है । अर्द्धांग, पक्षाघात, लकवा, रोग ।
शीतार्त्त तत्० (पु०) शीतपीड़ित, ठढ से कम्पित ।
शीतोष्ण (वि०) गर्म, ठंढा, सर्द गर्म, सुख दु:ख ।
शीरा दे० (पु०) हलुआ, मोहनभोग, चीनी के पानी में आग पर सूजी गला कर जो बनाया जाता है उसे सीरा कहते हैं ।
शीर्ण तत्० (वि०) जीर्ण, पुराना, प्राचीन, पुराना होने से गला हुआ, बिल्कुल निकम्मा ।
शीर्ष तत्० (पु०) सीस, सिर, माथा, मस्तक ।
शील तत्० (पु०) कृतिवान, उत्तम स्वभाव, लज्जा, सम्मान करने वाला स्वभाव ।—वान् (वि०) सुशील, मिलनसार, सम्मान करने वाला ।
शीशम दे० (पु०) एक वृक्ष और उसकी लकड़ी ।
शीशमहल (पु०) शीशे का घर ।
शीशा (पु०) काँच, दर्पण, ऐनक ।
शीशी (स्त्री०) शीशे का छोटा पात्र ।
शीस (पु०) माथा, मस्तक, सिर ।
शुक तत्० (पु०) पक्षी विशेष, तोता, सूआ, सुग्गा ।—देव (पु०) वेद विभागकर्त्ता महर्षि कृष्ण द्वैपायन के पुत्र, इनका उपनयन महादेव ने किया था, देवराज इन्द्र ने इनको कमण्डलु और देवासन देकर सम्मानित किया था । शुकदेव ब्रह्मचर्य पूर्वक पिता के निकट मोक्षधर्म का अध्ययन करते थे । थोड़े दिनों के बाद पिता के उपदेश से मोक्ष धर्म में अपना सदेह मिटाने के लिये मिथिला धिप जनकराज के पास गये । मोक्षधर्म का शिक्षा पूरी करके हिमालय प्रदेश में वे व्यासाश्रम में रहने लगे । वहाँ बहुत दिनों तक शिष्य मण्डल को उपदेश देते रहे ।

शुकाचार्य (पु०) देखो शुकदेव ।
शुक्ति तत्० (स्त्री०) सीप, घोंघा ।
शुक्र तत्० (पु०) ग्रह विशेष, छठवाँ ग्रह, उशना, भार्गव, कवि, ऋषि विशेष, दैत्यगुरु, आग, अग्नि, बल, सामर्थ्य ।—वार (पु०) छठवाँ दिन ।
शुक्राचार्य तत्० (पु०) दैत्यगुरु, ये महर्षि भृगु के पुत्र थे । इनके एक कन्या और दो पुत्र थे, कन्या का देवयानी और पुत्रों का नाम षण्ड तथा अमर्क था । देवगुरु वृहस्पति के पुत्र कच ने इन्हींसे मृतसञ्जीवनी विद्या सीखी थी ।
शुक्रिया (स्त्री०) साधुवाद, धन्यवाद ।
शुक्ल तत्० (वि०) श्वेत वर्ण, उजला, धौला, सफ़ेद ।—पक्ष (पु०) सुदी, जिस पक्ष में चन्द्रमा बढ़ता है । [शुद्ध, निर्मल, पूत, स्वच्छ ।
शुचि तत्० (वि०) श्वेत, श्वेतवर्ण, शुक्ल, पवित्र,
शुण्ठी तत्० (स्त्री०) औषध विशेष, सोंठ, सूखा हुआ अदरख ।
शुण्ड तत्० (पु०) सूँड, हाथी का कर ।
शुद्ध तत्० (वि०) पवित्र, साफ़, स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष, दोष रहित ।—ता (स्त्री०) पवित्रता, निर्दोषिता, स्वच्छता । [पत्र (पु०) सफ़ाईनामा ।
शुद्धि तत्० (स्त्री०) पवित्रता शोधन, सफ़ाई, शुचिता ।—
शुद्धोदन तत्० (पु०) कपिल वस्तु के राजा, तथा जगत्प्रसिद्ध बुद्धदेव के पिता ।
शुनःशेफ तत्० (पु०) महर्षि ऋचीक का मझला पुत्र, महाराज अम्बरीष के यज्ञ में ये बलि देने के लिये लाये गये थे । कृपापरवश महर्षि विश्वामित्र ने इनको अग्नि की स्तुति सिखाई थी । इनकी स्तुति से अग्निदेव प्रसन्न हुए और ये भी यज्ञाग्नि से सकुशल शरीर निकले । तदनन्तर विश्वामित्र ने हा इनको अपना पोष्य पुत्र बना लिया ।
शुभ तत्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, अच्छा, भला ।—चिन्तक (पु०) हितचिन्तक, हितकारी ।—लग्न (पु०) उत्तम मुहूर्त्त कल्याणकारी समय, मङ्गलमय अवसर । [प्रद ।
शुभङ्कर तत्० (वि०) मङ्गलकारी, कल्याण, कल्याण
शुभाकाङ्क्षी तत्० (वि०) शुभ चाहने वाला, हित चि

शुभ्र तद्० (वि०) स्वच्छ, विशद, श्वेत ।
शुम्भ तद्० (पु०) दानवराज, इसके छोटे भाई का नाम निशुम्भ था । चण्डी के हाथों ये मारे गये ।
शुरू (पु०) आरम्भ, प्रारम्भ, आदि ।
शुल्क तद्० (पु०) किराया, भाड़ा, घूस, फीस ।
शुश्रूषक तद्० (पु०) सेवा करने वाला, सेवक, भृत्य, नौकर ।
शुश्रूषा तद्० (स्त्री०) सुनने की इच्छा, सेवा, टहल ।
सुषेण तद्० (पु०) वानरराज, इनकी कन्या तारा बाली को ब्याही थी । इन्होंने शक्तिहत लक्ष्मण का औषधोपचार किया था ।
शुष्क तद्० (वि०) [शुष्+क] सूखा, नीरस, कठोर ।
शूकर तद्० (पु०) सुअर, वराह ।—खेत (-पु०) शूकरक्षेत्र, तीर्थ विशेष ।
शूद्र तद्० (पु०) चौथा वर्ण ।—ी (स्त्री०) शूद्र की स्त्री ।
शून्य तद्० (वि०) रिक्त, रीता, जनशून्य, असम्पूर्ण, असमस्त, छूंछा, खाली, एकान्त, आकाश ।—ता (स्त्री०) छूंछापन ।—वादी (पु०) बौद्ध विशेष, नास्तिक ।
शूर तद्० (पु०) वीर, उत्साही, बलवान् ।—ता (स्त्री०) वीरता, उत्साह ।—सेन (पु०) मथुरा के एक राजा का नाम ।—वीर (वि०) बहादुर ।
शूर्प तद्० (पु०) सूप, छाज, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है ।—नखा (स्त्री०) रावण की बहिन जिसकी नाक लक्ष्मण ने काटी थी ।
शूल तद्० (पु०) अस्त्र विशेष, लोहे का एक प्रकार का काँटा ।
शूली (पु०) दीप (वि०) शूल रोग वाला ।
शृगाल तद्० (पु०) सियार, गीदड़ ।
शृङ्खला तद्० (स्त्री०) साँकल, सिकरी ।
शृङ्खलित तद्० (वि०) साँकल के समान नथा हुआ, एक दूसरे से लगाया हुआ ।
शृङ्ग तद्० (पु०) सींग, विषाण ।—वेर (पु०) नगर विशेष, चोटी, अदरख ।
शृङ्गार तद्० (पु०) सजावट, शोभा शोभा के लिये शरीर का परिष्कार और भूषण आदि पहनना । रस विशेष, प्रथम रस, शृङ्गार रस में रति स्थायी भाव है, नायक और नायिका आलम्बन हैं ।
शृङ्गी तद्० (वि०) सींग वाला, शृङ्ग विशिष्ट । (पु०) ऋषि विशेष, ये लोमश ऋषि के चेले थे । इन्होंने राजा परीक्षित को साँप काटने का शाप दिया था ।
शेखचिल्ली (पु०) प्रसिद्ध मसखरा ।
शेखर तद्० (पु०) फूलों की माला जो मुकुट पर धारण की जाती है, भूषण विशेष, हिन्दी के एक कवि का नाम, सिर, मस्तक, कपाल ।
शेखी (स्त्री०) अभिमान, घमण्ड ।
शेर (पु०) व्याघ्र, बाघ । (स्त्री०) शेरिनी ।
शेल तद्० (पु०) बर्छा, भाला, अस्त्र विशेष ।
शेलु (पु०) मेंथी का साग ।
शेष तद्० (वि०) अवशिष्ट, बचा हुआ, अन्त, सीमा । (पु०) सर्प, साँप, नाग ।—शायी (पु०) विष्णु, नारायण ।
शेषावस्था तद्० (स्त्री०) वृद्धावस्था, अन्त की दशा, बुढ़ापा ।
शैतान (पु०) धर्मकर्म विरोधी, असुर ।
शैत्य तद्० (पु०) शीतलता, ठंढा, सर्दी ।
शैथिल्य तद्० (पु०) शिथिलता, आलस्य, ढिलाई ।
शैल तद्० (पु०) पहाड़, पर्वत ।—राज (पु०) हिमालय, हिमाचल ।
शैलाट तद्० (पु०) [शैल+अट्] सिंह, किरात, भिल्ल, भील ।
शैली (स्त्री०) रीति, भाँति, प्रकार ।
शैव तद्० (पु०) शिवभक्त, शिवोपासक, एक सम्प्रदाय विशेष ।
शैवाल तद्० (पु०) सेवाल, जलमल, जम्बाल, सिवार ।
शैवी (स्त्री०) पार्वती । (वि०) शिवोपासक, शैव ।
शैव्या तद्० (स्त्री०) महाराज हरिश्चन्द्र की रानी, महर्षि विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र की धर्म बुद्धि, आत्मत्याग, कष्ट सहिष्णुता आदि की परीक्षा के लिये इन्हें बड़ा कष्ट पहुँचाया था । उस समय महारानी शैव्या एक ब्राह्मण के हाथ बिकी थीं । ऐसे कष्ट के समय उनका पुत्र साँप के काटने से मर गया । मृतपुत्र का शव श्मशान में रख कर शैव्या रो रही थी, इसी श्मशान में राजा हरिश्चन्द्र डोम का काम करते थे । विश्वामित्र इस

पर प्रसन्न हुए, मृतपुत्र पुनः जीवित हुआ और उन लोगों को उनका राज्य मिल गया।
शैशव (पु०) बालकपन, शिशुता, लड़कपन।
शोक तद्० (पु०) सोच, चिन्ता, दुःख, खेद, पश्चात्ताप, पछतावा।
शोकाकुल तद्० (वि०) शोकयुक्त, शोकपीड़ित।
शोकार्त्त तद्० (वि०) शोकाकुल, शोकयुक्त।
शोकापह तद्० (वि०) शोकनाशक, दुःखनाशक।
शोख (वि०) ढीठ, अभिमानी।—ी (स्त्री०) धृष्टता, अभिमान।
शोच (पु०) चिन्ता, दुःख, विचार (क्रि०) सोचना।
शोण तद्० (पु०) अलसी, रक्त, लालवर्ण, नद विशेष।
शोणित तद्० (पु०) लोहू, रुधिर, रक्त।
शोथ तद्० (पु०) सूजन।
शोध तद्० (पु०) खोज, अनुसन्धान, शुद्धि, ऋण को चुकाना, बदला। [पवित्र करण।
शोधन तद्० (पु०) स्वच्छ करना, निर्मल करना,
शोधनी तद्० (स्त्री०) बुहारी, बढ़नी।
शोधा (वि०) शुद्ध किया हुआ, ढूँढ़ा गया।
शोभन तद्० (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, भला।
शोभा तद्० (स्त्री०) कान्ति, दीप्ति, सुन्दरता, छवि, मनोहरता।—यमान (वि०) सुन्दर, मनोहर।
शोभित तद्० (पु०) विभूषित, शोभायमान, अलंकृत, सजा हुआ।
शोर (पु०) कोलाहल, गुलगपाड़ा।
शोरा (पु०) द्रव्यविशेष। [बनाये जाते हैं, अँगारा।
शोला (पु०) वृक्ष विशेष, जिसकी छाल के टोप
शोहदा दे० (वि०) विलासी, लुच्चा, लंपट, छैला।
शोषक तद्० (वि०) शोषण करने वाला, रसाकर्षक, रस खींचने वाला, चूसने वाला।
शोषण तद्० (पु०) सोखना, चूसना, सुखाव।
शौक्तिक (पु०) मोती, सीप, शुक्ति से उत्पन्न।
शौच तद्० (पु०) शुचिता, पवित्रता, सुन्दरता, स्नान, स्वच्छता।
शौण्डिक तद्० (पु०) कलवार, शराब बेचने वाला।
शौनक तद्० (पु०) एक तपोबल सम्पन्न ऋषि, इन्होंने नैमिषारण्य में द्वादश वर्ष में समाप्त होने वाले एक यज्ञ का अनुष्ठान किया था।
शौरि (पु०) श्रीकृष्ण।
शौर्य तद्० (पु०) शूरता, सामर्थ्य, शक्ति।
श्मशान तद्० (पु०) मुर्दाघाट, मरघट, मढ़ी, गाँव या नगर के बाहर का वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं।
श्मश्रु तद्० (पु०) मूँछ, मोछ।
श्याम तद्० (वि०) काला, कृष्णवर्ण।—कर्ण (पु०) अश्व विशेष।—ता (स्त्री०) कालापन, सांवलापन।—सुन्दर (पु०) श्रीकृष्ण।
श्यामल तद्० (वि०) कृष्णवर्ण विशिष्ट, काला।
श्यामा तद्० (स्त्री०) युवती, यौवन प्राप्ता स्त्री, सोलह वर्ष की स्त्री, पक्षी विशेष, देवी विशेष।
श्यामाक तद्० (पु०) सावाँ, धान्य विशेष।
श्यालक तद्० (पु०) साला, स्त्री का भाई, पत्नी का भ्राता।
श्याला (पु०) साला, पत्नी का भाई।
श्येन तद्० (पु०) पक्षी विशेष, बाज पक्षी।
श्रद्धा तद्० (स्त्री०) आदर, प्रेम, सम्मान, गुरु, पिता आदि माननीय व्यक्ति विषयक प्रेम।—लु (वि०) श्रद्धायुक्त, श्रद्धावान्।
श्रद्धेय तद्० (वि०) श्रद्धा करने योग्य, पूज्य, मान्य।
श्रम तद्० (पु०) परिश्रम, मिहनत, उद्योग।—जीवी (पु०) कुली, मजूर, किसान।—कण (पु०) पसीना।
श्रमित तद्० (वि०) श्रान्त, थका हुआ, थका माँदा।
श्रमी तद्० (वि०) परिश्रम करने वाला, उद्योगी, उत्साह पूर्वक प्रयत्न करने वाला।
श्रवण तद्० (पु०) कान, कर्ण, कर्णेन्द्रिय। (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, एक नक्षत्र का नाम, बाईसवाँ नक्षत्र।
श्राद्ध तद्० (पु०) श्रद्धा पूर्वक किया हुआ कर्म, पितरों के तृप्ति के लिये तर्पण पिण्डदानादि।—देव (पु०) यमराज, धर्मराज, ब्राह्मण।—पक्ष (पु०) आश्विन का कृष्णपक्ष।
श्रान्त तद्० (वि०) श्रमित, थका हुआ, थकित।
श्रान्ति तद्० (स्त्री०) श्रम, थकावट, परिश्रम जन्य अवसाद, शरीर की शिथिलता।
श्रावक (पु०) जैन भक्त

श्रावण तद्० (पु०) मास विशेष, पाँचवाँ महीना ।

श्रावणी तद्० (स्त्री०) श्रावण की पूर्णिमा ।—कर्म तद्० (पु०) उपाकर्म, श्रावण की पूर्णिमा को किये जाने वाले कर्म ।

श्री तद्० (स्त्री०) सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य, विभव, शोभा, कान्ति, द्युति, छवि, लक्ष्मी, इन्दिरा, विष्णुपत्नी, रोरी, कुङ्कुम, लौंग, वाणी ।—खण्ड (पु०) चन्दन, हरिचन्दन ।—चक्र (पु०) देवी की पूजा का यन्त्र विशेष ।—चूर्ण तद्० (स्त्री०) रोरी, कुङ्कुम ।—धराचार्य (पु०) भागवत के विख्यात टीकाकार पण्डित विशेष ।—नगर (पु०) काश्मीर राज्य की राजधानी ।—निवास (पु०) विष्णु, नारायण, वेङ्कटेशजी का नाम ।(वि०) धनी ।—पति (पु०) लक्ष्मीपति, नारायण, विष्णु भगवान ।—फल (पु०) बिल्वफल, नारियल, नारिकेल ।—मत् (वि०) धनवान, धनी, लक्ष्मीपात्र ।—युक्त (पु०) कीर्तिमान्, यशस्वी ।—युत (पु०) भाग्यवान्, लक्ष्मीपात्र, धनी ।—वत्स (पु०) विष्णु भगवान के वक्षःस्थल का चिन्ह ।—हत (वि०) शोभाहीन, निष्प्रभ ।—हट्ट (पु०)ढाका के पूर्व एक नगर का नाम, सिलहट ।—हर्ष (पु०) महाराज आदिशूर ने जो कान्यकुब्ज से पाँच ब्राह्मण बुलवाये थे उनमें एक श्रीहर्ष भी थे । इन्हीं के वंशज मुखोपाध्याय कहे जाते थे । इनका समय १००० ई० सन् अनुमान किया जाता है । इनके पिता का नाम श्रीहरी था । नैषधीय चरित नामक काव्य इन्हों ने बनाया है । जो संस्कृत साहित्य का चमकता हुआ एक रत्न है । इसके अतिरिक्त गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, अर्णववर्णन काव्य, नवसहसाङ्कचरित, खण्डन खण्डखाद्य आदि ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं । परन्तु इनमें खण्डन खण्डखाद्य के अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते । ये विद्या बुद्धि में अतुलनीय थे । इन्होंने नैषधीयचरित में अपनी जिस अद्भुत कवित्वशक्ति का परिचय दिया है वह अनोखी है ।

श्रुत तद्० (पु०) सुना हुआ, वर्णित, कर्णगत, कर्णगोचर ।—कीर्ति (स्त्री०) शत्रुघ्न की स्त्री, यह कुशध्वज जनक की कन्या थीं, इस के दो पुत्र थे, एक का नाम सुबाहु और दूसरे का नाम शत्रुघाती था ।

श्रुति तद्० (स्त्री०) कान, कर्ण, वेद ।

श्रुवा (पु०) यज्ञीय पात्र विशेष ।

श्रेणी तद्० (स्त्री०) पंक्ति, पाँति, लकीर, कतार ।

श्रेयः तद्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, शुभ ।

श्रेष्ठ तद्० (वि०) प्रधान, बड़ा, माननीय ।—ता (स्त्री) प्रधानता, उत्तमता ।

श्रोतव्य तद्० (वि०)श्रवणीय, सुनने योग्य, अच्छे, उपदेश ।

श्रोता तद्० (पु०) सुनने वाला, सुनवैया ।

श्रोत्र तद्० (पु०) कान, कर्ण श्रवणेन्द्रिय, श्रवण ।

श्रोत्रिय तद्० (पु०) वेदज्ञ, वेदपाठी ।

श्लाघा तद्० (स्त्री०) प्रस्तुत, प्रशंसा । [के योग्य ।

श्लाघ्य तद्० (वि०) प्रशंसनीय, वर्णनीय, श्लाघा

श्लेष तद्० (पु०) आलिङ्गन, संयोग, अलङ्कार विशेष इसके सभङ्ग और अभङ्ग दो भेद होते हैं । यथा—

एक वचन में होत नहिं, बहु अर्थन को ज्ञान ।
श्लेष कहत हैं ताहि को, भूषन सकल सुजान ॥
—शिवराम भूषण ।

श्लेष्मा तद्० (पु०) कफ, खखार, शरीर सम्बन्धी, त्रिविध विकारों में एक प्रकार का विकार ।

श्लोक तद्० (पु०) कीर्ति, यश,कीर्त्तिगान, पद्य, छन्द, छन्द विशेष, अनुष्टुप वृत्त ।

श्वपच (पु०) डोम, चाण्डाल ।

श्वसुर तद्० (पु०) पति या पत्नी के पिता, पति का पिता, पत्नी का पिता ।

श्वश्रू तद्० (स्त्री०) सास, पति या पत्नी की माता, श्वसुर की स्त्री ।

श्वसन (पु०) हवा, वायु, पवन ।

श्वान तद्० (पु०) कुत्ता, कुक्कुर ।

श्वास तद्० (पु०) प्राण, दम, प्राणवायु, साँस ।

श्वित्र तद्० (पु०) रोग विशेष, श्वेत कुष्ट, सफ़ेद कोढ़ ।

श्वेत (पु०) सफेद, धौत्र, उज्ज्वल ।—केतु (पु०) ऋषि विशेष ।—ता (स्त्री०) सफेदी ।—सर्षप (स्त्री०) पीली सर्सों, उजली, शुक्ल, शुक्लवर्ण, धवल ।—द्वीप (पु०) वैकुण्ठ द्वीप

श्रावण तत्० (पु०) मास विशेष, पाँचवाँ महीना।

श्रावणी तत्० (स्त्री०) श्रावण की पूर्णिमा।—कार्म तत्० (पु०) उपाकर्म, श्रावण की पूर्णिमा को किये जाने वाले कर्म।

श्री तत्० (स्त्री०) सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य, विभव, शोभा, कान्ति, द्युति, दुति, लक्ष्मी, इन्दिरा, विष्णुपत्नी, रोरी, कुङ्कुम, लौंग, वाणी।—खण्ड (पु०) चन्दन, हरिचन्दन।—चक्र (पु०) देवी की पूजा का यन्त्र विशेष।—चूर्ण तत्० (स्त्री०) रोरी, कुङ्कुम।—धराचार्य (पु०) भागवत के विख्यात टीकाकार पण्डित विशेष।—नगर (पु०) काश्मीर राज्य की राजधानी।—निवास (पु०) विष्णु, नारायण, वेङ्कटेशजी का नाम।(वि०) धनी।—पति (पु०) लक्ष्मीपति, नारायण, विष्णु भगवान।—फल (पु०) बिल्वफल, नारियल, नारिकेल।—मत् (वि०) धनवान, धनी, लक्ष्मीपात्र।—युक्त (पु०) कीर्तिमान्, यशस्वी।—युत (पु०) भाग्यवान्, लक्ष्मीपात्र, धनी।—वत्स (पु०) विष्णु भगवान के वक्षःस्थल का चिन्ह।—हत (वि०) शोभाहीन, निष्प्रभ।—हट्ट (पु०) ढाका के पूर्व एक नगर का नाम, सिलहट।—हर्ष (पु०) महाराज आदिशूर ने जो कान्यकुब्ज से पाँच ब्राह्मण बुलवाये थे उनमें एक श्रीहर्ष भी थे। इन्हीं के वंशज मुखोपाध्याय कहे जाते थे। इनका समय १००० ई० सन् अनुमान किया जाता है। इनके पिता का नाम श्रीहरी था। नैषधीय चरित नामक काव्य इन्होंने बनाया है। जो संस्कृत साहित्य का चमकता हुआ एक रत्न है। इसके अतिरिक्त गौड़ो र्वीशकुलप्रशस्ति, अर्णववर्णन काव्य, नवसहसाङ्क-चरित, खण्डन खण्डखाद्य आदि ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं। परन्तु इनमें खण्डन खण्डखाद्य के अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते। ये विद्या बुद्धि में अतुलनीय थे। इन्होंने नैषधीयचरित में अपनी जिस अद्भुत कवित्वशक्ति का परिचय दिया है वह अनोखी है।

श्रुत तत्० (पु०) सुना हुआ, कर्णागत, कर्णप्राप्त, कर्णगोचर।—कीर्ति (स्त्री०) शत्रुघ्न की स्त्री, यह कुशध्वज जनक की कन्या थी, इस के दो पुत्र थे, एक का नाम सुबाहु और दूसरे का नाम शत्रुघाती था।

श्रुति तत्० (स्त्री०) कान, कर्ण, वेद।

श्रुवा (पु०) यज्ञीय पात्र विशेष।

श्रेणी तत्० (स्त्री०) पंक्ति, पाँति, कतार, ...।

श्रेयः तत्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, धर्म।

श्रेष्ठ तत्० (वि०) प्रधान, बड़ा, ...।—ता (स्त्री) प्रधानता, उत्तमता।

श्रोतव्य तत्० (वि०) श्रवणीय, सुनने योग्य, अच्छे उपदेश।

श्रोता तत्० (पु०) सुनने वाला, सुननेवाला।

श्रोत्र तत्० (पु०) कान, कर्ण श्रवणेन्द्रिय, श्रवण।

श्रोत्रिय तत्० (पु०) वेदज्ञ, वेदपाठी।

श्लाघा तत्० (स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा। [के योग्य।

श्लाघ्य तत्० (वि०) प्रशंसनीय, वर्णनीय, श्लाघा

श्लेष तत्० (पु०) आलिङ्गन, संयोग, अलङ्कार विशेष इसके सभङ्ग और अभङ्ग दो भेद होते हैं। यथा—

एक वचन में होत जहँ, बहु अर्थन को ज्ञान।
श्लेष कहत हैं ताहि को, भूषण सुकवि सुजान॥
—शिवराज भूषण।

श्लेष्मा तत्० (पु०) कफ, खखार, शरीर सम्बन्धी त्रिविध विकारों में एक प्रकार का विकार।

श्लोक तत्० (पु०) कीर्ति, यश, कीर्तिगान, पद्य, छन्द विशेष, अनुष्टुप वृत्त।

श्वपच (पु०) डोम, चाण्डाल।

श्वसुर तत्० (पु०) पति या पत्नी के पिता, पति का पिता, पत्नी का पिता।

श्वश्रू तत्० (स्त्री०) सास, पति या पत्नी की माता, श्वसुर की स्त्री।

श्वसन (पु०) हवा, वायु, पवन।

श्वान तत्० (पु०) कुत्ता, कुकुर।

श्वास तत्० (पु०) प्राण, दम, प्राणवायु, साँस।

श्वित्र तत्० (पु०) रोग विशेष, श्वेत कुष्ट, सफेद कोढ़।

श्वेत (पु०) सफेद, धौला, उज्ज्वल।—केतु (पु०) ऋषि विशेष।—ता (स्त्री०) सफेदी।—सर्षप (स्त्री०) पीली सर्सों, ...।—द्वीप (पु०) वैकुण्ठ द्वीप

विशेष, एक देश का नाम, इसी द्वीप में भर भारा पर्व तपस्या करते थे। महर्षि कौशिक का भी तप स्थान यहीं है।

श्वेतता (स्त्री०) दूध, घास तृण। [कक के पुत्र थे।
श्वेतकि तद्० (पु०) ऋषि विशेष, ये महर्षि उद्दा-
श्वेतिका (स्त्री०) सौंफ।

ष

ष व्यञ्जन का इकतीसवाँ वर्ण, यह वर्ण मूर्धन्य है। क्योंकि इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

षट् तद्० (वि०) संख्या विशेष छः ६ ।—ऊर्मि (स्त्री०) छः प्रकार की तरङ्गें, वे ये हैं—प्राण और मन की भूख, प्यास, शोक तथा मोह और शरीर सम्बन्धी जरा तथा मृत्यु ये ही षट्ऊर्मियाँ हैं। इसी भाव को एक संस्कृत पद्य कहता है, यथा।—"बुभुक्षा च पिपासा च प्राणस्य मनसः स्मृतौ। शोकमोहौ शरीरस्य जरामृत्यू षडूर्मयः॥"—कर्म (पु०) छः प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्तव्य हैं यथा—अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह।—कोण (पु०) षट्कोणा, छः कोण का खेत आदि।—चक्र (पु०) शरीरस्थ छः चक्र उनके नाम हैं - आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा।—पद (पु०) भ्रमर, भौंरा।—पदी (स्त्री०) छप्पय छन्द, छन्द विशेष।—प्रयोग (पु०) तन्त्र सम्बन्धी छः प्रयोग, शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण।—रस भोजन (पु०) षट् रसयुक्त भोजन।—वदन (पु०) कार्तिकेय, देवसेनापति।—वर्ग (पु०) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर।—शास्त्र (पु०) षट्दर्शन, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य और पातञ्जल।

षडङ्ग तद्० (पु०) [षट्+अङ्ग] वेद के छः अङ्ग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त। हाथ पैर आदि शरीर के अङ्ग।

षडङ्घ्रि तद्० (पु०) भ्रमर, भौंरा।

षड्विधि तद्० (पु०) छः प्रकार, छः भाँति।

षडानन (पु०) कार्तिकेय, देवसेनानी।

षड्ऋतु (पु०) [छः+ऋतु] वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर।

षड्दर्शन (पु०) देखो षट्शास्त्र।

षण्ड तद्० (पु०) साँड, बैल, समूह।

षण्ढ तद्० (पु०) नपुंसक, हिजड़ा।

षष्टि तद्० (वि०) संख्या विशेष, ६०।

षष्ठ तद्० (वि०) छठवाँ, छः को पूर्ण करने वाली संख्या।—ी (स्त्री०) तिथि विशेष, कारक विशेष।

षष्ठम तद्० (पु०) छठवाँ, छठा।

षोडश तद्० (वि०) सोलह, १६ ।—दान (पु०) दान विशेष ।—भुजा (स्त्री०) दुर्गा, देवी।—संस्कार (पु०) कर्म विशेष, सोलह प्रकार के संस्कार। यथा गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जात कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ा कर्म, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, द्विरागमन, मृतक, और्ध्वदैहिक।

षोडशी (स्त्री०) श्राद्ध विशेष।

स

स व्यञ्जन का बत्तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान दन्त है, अतएव यह वर्ण दन्त्य है।

सं तद्० (अ०) सम, साथ, सङ्ग, सहित।

संकर तद्० (पु०) शिव, महादेव, रामायण में यह शब्द इस रूप में प्रसिद्ध है।

संकुल तद्० (वि०) भरा हुआ, पूरा, पूर्ण, समस्त।

संक्रम तद्० (पु०) संचार, एक स्थान त्याग पूर्वक अन्यत्र गमन, जाना, एक वस्तु का गुण दूसरी वस्तु पर आना।

संक्रान्त तद्०(वि०) सम्बन्धी, विषयक, प्रतिबिम्बित।

संक्रान्ति तद्० (स्त्री०) सूर्य का एक राशि पर से दूसरी राशि पर जाना। [बचना।

संक्रामक तद्० (वि०) फैलने वाला, छूआछूती,

संक्षिप्त तद्० (पु०) [सं+क्षिप्+क्त] न्यून, अल्प, थोड़ा, घटाना, कम किया हुआ।
संक्षेप तद्० (पु०) [सं+क्षिप्+घञ्] न्यूनता, अल्पता, सारभाव।
संखिया (स्त्री०) एक प्रकार का विष।
संख्या तद्० (स्त्री०) गणना, गिनती, सङ्कलन।
संग तद्० (पु०) साथ, सोहबत।
संगत तद्० (स्त्री०) सङ्गति, साथ, मित्रता, सिक्खों का धर्ममन्दिर। [का स्थान।
संगम तद्० (पु०) मेल मिलाप, नदियों के मिलने
संग्रह तद्० (पु०) एकत्रीकरण, सञ्चय, बटोरना।
संग्राम तद्० (पु०) युद्ध, समर, रण, लड़ाई, जंग।
संजना दे० (क्रि०) सञ्चय करना, संग्रह करना, एकत्रित करना, बटोरना।
संज्ञा तद्० (स्त्री०) नाम, आख्या, अभिधान, नामधेय, बुद्धि, चेतनता, गायत्री, सूर्य की स्त्री और विश्वकर्मा की कन्या का नाम।
संजोना (क्रि०) सजाना, यथाक्रम रखना।
संजोयन दे० (क्रि०) संयोजन करना, संयुक्त करना।
संजोया दे० (वि०) परोसा, सजाया।
संन्यासी तद्० (पु०) चतुर्थाश्रमी, योगी, यती।
संपत् तद्० (स्त्री०) सम्पद्, धन, ऐश्वर्य, विभव।
संभलना दे० (क्रि०) सहायता पाकर बचना, थंभना, पकड़ना, बचना, उबरना, उद्धार पाना।
संभालना दे० (क्रि०) सहायता देकर बचाना, सहारा देना, उबारना, बचाना।
संयम तद्० (पु०) नेम, नियम, व्रत, इन्द्रिय निग्रह, इन्द्रियों को अपने वश में करना।
संयमिनी (स्त्री०) यमपुरी।—पति (पु०) यमराज।
संयमी तद्० (पु०) मुनि, योगी, यती, वशी, जिसने योग क्रिया द्वारा अपनी इन्द्रियों को वश कर लिया है। [हुआ।
संयुक्त तद्० (वि०) सम्बन्धयुक्त, मिला हुआ, सटा
संयुक्ता दे० (स्त्री०) पृथ्वीराज की रानी और कन्नौज के राजा जयचन्द की कन्या। इनका ११७० ई० में जन्म हुआ था। ११९० ई० में पृथ्वीराज ने इनको ब्याहा और ११९३ ई० में मुहम्मद गोरी के साथ युद्ध में पृथ्वीराज के पराजित और शत्रु के हाथ बन्दी होने पर संयुक्ता ने देह त्याग दिया था। इन्होंने युद्ध में जाने के लिये उद्यत अपने पति को युद्ध सामग्री से सजाया था।
संयुग तद्० (पु०) युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई।
संयुत तद्० (वि०) संयोग प्राप्त, मिलित, मिला हुआ, जुड़ा हुआ।
संयोग तद्० (पु०) मेल मिलाप, सम्बन्धी विशेष।
संयोजित तद्० (वि०) मिलाया गया, कृत संयोग।
संरम्भ तद्० (पु०) कोप, क्रोध, मानसिक आवेग, आक्रोश। [सेवा करना, चिन्तन करना।
संराधन तद्० (पु०) सेवा करना, सब प्रकार की
संराव तद्० (पु०) ध्वनि, शब्द, पक्षियों का शब्द।
संलग्न तद्० (पु०) संयुक्त, योग प्राप्त, मिला हुआ, घटित।
संलाप तद्० (पु०) सम्भाषण, आलाप, परस्पर कहना।
संवत् तद्० (पु०) संवत्सर, वर्ष, बरस, हायन, सन्।—सर (पु०) वर्ष, संवत, बरस।
संवत्सरी (स्त्री०) संवत् का व्यवहार।
संवरण तद्० (पु०) आवरण, आच्छादन, ढाँकना।
संवरना दे० (क्रि०) सजना, शोभित होना।
संवर्त (पु०) ऋषि विशेष।
संवाद तद्० (पु०) समाचार, बातचीत, चर्चा।
संवारना दे० (क्रि०) सजाना, [illegible]ार करना।
संशय तद्० (पु०) सन्देह, भय, चिन्ता।
संशयात्मा (पु०) शक्की, सन्देहयुक्त, डाँवाडोल।
संशयापन्न तद्० (वि०) सन्देहयुक्त, सन्देही, भ्रान्त, भ्रम पूर्ण।
संशोधन तद्० (पु०) परिष्करण, मार्जन, संशुद्धि।
संसक्त तद्० (वि०) मिला, समीप, आसक्त।
संसरण तद्० (वि०) उपजाऊ, उर्वर।
संसर्ग तद्० (पु०) सम्बन्ध, संगत, मैत्री।
संसर्गी तद्० (पु०) सम्बन्धी, मेल।
संसार तद्० (पु०) जगत् जग, गमनागमन स्थान।
संसारी तद्० (वि०) संसार का, लौकिक, संसार सम्बन्धी।
संसृति तद्० (स्त्री०) विश्व, संसार, जन्ममरण, आवागमन।

संस्कार तद्० (पु०) मलीनता निराकरण, दोष हटाना, मल दूर करना, शोधन करना, सफ़ाई, शुद्धता, द्विजातियों के लिये कर्म विशेष।

संस्कृत तद्० (वि०) संस्कारित, सस्कार किया हुआ, परिष्कृत। (पु०) देवमार्ग, हिन्दुस्तान की पुरानी राष्ट्र भाषा, देववाणी। [ढंग, रूप, सङ्गठन।

संस्थान तद्० (पु०) विन्यास, बनावट, बनाने का

संस्थापक (पु०) स्थापन कर्ता, प्रतिष्ठा करने वाला, प्रवर्तक।

संस्पर्श तद्० (पु०) स्पर्श, छूत। [दद।

संहत तद्० (वि०) मिला हुआ, मिश्रित, ठोस, बली,

संहति तद्० (स्त्री०) समूह, ढेर, योग, अधिकता।

संहार तद्० (पु०) नाश, विनाश, प्रलय, नरक, विशेष, एक भैरव का नाम।

संहारना दे० (क्रि०) नाश करना, मार डालना।

संहिता तद्० (स्त्री०) ऋषि प्रणीत ग्रन्थ।

सई दे० (स्त्री०) एक नदी का नाम।

सकत तद्० (स्त्री०) शक्ति, बल, सामर्थ्य, कड़ा, कठोर। [उठाना।

सकना दे० (क्रि०) समर्थ होना, उपयुक्त होना,

सकरा दे० (वि०) सकेत, सङ्कीर्ण, छोटा, तंग।

सकराई (स्त्री०) सङ्कीर्णता।

सकारना दे० (क्रि०) सङ्कीर्ण करना, सकेत करना, छोटा बनाना।

सकर्मक तद्० (पु०) जिस क्रिया के कर्म हो, कर्म युक्त क्रिया, जैसे पीना, खाना, देखना।

सकल तद्० (वि०) समस्त, सब, सम्पूर्ण।

सकाना दे० (क्रि०) शङ्कित होना, डरना, भय, करना, त्रास पाना।

सकाम तद्० (वि०) कामना सहित किया गया कर्म, अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिये कृतकर्म। (वि०) कामना सहित, सफल, फलवान्। [अदा करना।

सकारना दे० (क्रि०) स्वीकार करना, भुगतान करना,

सकारे दे० (अ०) प्रातःकाल, प्रभात, सबेरे, प्रात काल, यथा —

सजन सकारे जाँयगे, नैन मरेंगे रोइ।
बिधना ऐसी रैन कर, भोर कमहु न होइ॥

सकाल तद्० (पु०) प्रात काल, प्रभात, सबेरा।

सकिलना (क्रि०) हटना, सिमटना, सुकड़ कर बैठना।

सकुच दे० (स्त्री०) लाज, सङ्कोच, डर, भय, त्रास।

सकुचना दे० (क्रि०) सङ्कोच करना, लजाना, शर्माना।

सकुचा दे० (वि०) सकेत, सङ्कीर्ण।

सकु दे० (पु०) सतुआ, सत्तू।

सकृत् तद्० (अ०) एक बार। [बटप।

सकेत तद्० (वि०) सकरा, छोटा, सङ्कीर्ण, सङ्कुचित,

सकेतना दे० (क्रि०) सकेत करना, छोटा करना, समेटना, एकत्र करना। [तह डालना।

सकेलना दे० (क्रि०) समेटना, बटोरना, तहियाना,

सकेला दे० (वि०) एक प्रकार का लोहा। (वि०) सकेलने वाला, समेटने वाला।

सकोच तद्० (पु०) सङ्कोच, सहम।—ी (वि०) लजीला, सङ्कोची। [बटोरना।

सकोड़ना दे० (क्रि०) सङ्कोच करना, सकेलना,

सकोरा दे० (पु०) मिट्टी का प्याला। [सरैया।

सकोरी दे० (स्त्री०) प्याली, मिट्टी की परई,

सखरा (वि०) कच्ची रसोई।

सखरी दे० (वि०) कच्ची, निखरी की उल्टी। —रसोई (स्त्री०) रोटी, दाल, भात आदि की रसोई जो चौके के भीतर ही खायी जा सके।

सखा तद् (पु०) मित्र, बन्धु, साथी, सङ्गी।

सखी तद्० (स्त्री०) सहेली, संगनी वयस्या आली।

सख्य तद्० (पु०) मित्रता, बन्धुत्व, दोस्ती।

सगड़ तद्० (पु०) शकट, छकड़ा, एक प्रकार की गाड़ी जिसे बैल खींचते हैं। [साग डाल कर बनाते हैं।

सगपहता दे० (पु०) एक प्रकार की दाल, जिसे

सगर (पु०) अयोध्या के एक राजा विशेष।

सगा दे० (वि०) स्वजन, सम्बन्धी, सतैत।

सगाई दे० (स्त्री०) सम्बन्ध, नाता, मगनी।

सगुण या सगुन तद्० (वि०) गुण सहित, गुण विशिष्ट, गुणयुक्त।

सगरे (वि०) समस्त सब।

सगोती तद्० (वि०) सगोत्री, एक कुल का, भाई बन्धु माँस का बना एक भोज्य पदार्थ विशेष।

सगोत्र तद्० (पु०) एक गोत्र का, समान गोत्रवाला, सगोती।

सगौती (स्त्री०) माँस, माँस का बना भोजन।

सघन तद्० (वि०) घना, सान्द्र, निविड़, मिला हुआ, खूब सटा हुआ।

सङ्कट तद्० (पु०) विपत्ति, दुःख, कष्ट, आपद्।

सङ्कटा (स्त्री०) योगिनी, दशाओं में से एक दशा का नाम, देवी विशेष।

सङ्कर तद्० (पु०) वर्णसङ्कर, दोगला, दो जाति के माता पिता से उत्पन्न। (रामायण में) शिव, महादेव। (वि०) मिला हुआ।

सङ्कर्षण तद्० (पु०) बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई, ये देवकी के गर्भ से निकाल कर रोहिणी के गर्भ में लाये गये थे, अतएव इनका नाम सङ्कर्षण हुआ था।

सङ्कल तद्० (पु०) राशि, ढेर।

सङ्कलन तद्० (पु०) जोड़, जोड़ती।

सङ्कल्प तद्० (पु०) मानसिक कर्म, इच्छा, चाह, अभिलाष।—प्रभव (वि०) सङ्कल्प से उत्पन्न, सङ्कल्प योनी, सङ्कल्पज।

सङ्कल्पना दे० (क्रि०) दान देना, नियम करना, किसी काम के लिये प्रतिज्ञा करना।

सङ्कीर्ण तद्० (वि०) घन, सघन, निविड़, सकरा, सकेत।—ता (स्त्री०) कोताही, तङ्गी।

सङ्कीर्तन तद्० (पु०) गुणगान, बखान, भजन।

सङ्कुचित तद्० (पु०) सकुचा, मुरझा, लज्जित।

सङ्कुल तद्० (पु०) भीड़, बहुत मनुष्यों का एकत्रित होना।

सङ्केत तद्० (पु०) सैन, इशारा, इङ्गित।

सङ्कोच तद्० (पु०) लाज, लज्जा, सिमट, सहम।

सङ्ग तद्० (पु०) साथ, संयोग, मेल।

सङ्गत तद्० (वि०) संलग्न, मिला हुआ, यथा योग्य, उचित, साथी, मैत्री, मित्र।

सङ्गति तद्० (स्त्री०) मेल, साथ, सङ्ग, मैत्री, दोस्ती।

सङ्गम तद्० (पु०) भेंट, प्रेमपूर्वक मिलन, नदियों के मिलने का स्थान।

सङ्गमी या संगमी दे० (स्त्री०) सँड़सी, सड़सी।

सङ्गर तद्० (पु०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई, समर।

सङ्गी तद्० (वि०) साथी, सङ्ग वाला, दोस्त, मित्र।

सङ्गीत तद्० (पु०) गाने की विद्या। [ढकाव, छुपाव।

सङ्गोपन तद्० (पु०) भली प्रकार से छिपाव, गोपन,

सङ्घ तद्० (पु०) समूह, झुण्ड।

सङ्घर्ष (पु०) रगड़, देखादेखी, स्पर्द्धा, ईर्ष्या।

सङ्घार (पु०) संहार, नाश।

सच दे० (वि०) सत्य, साँच, हाँ, ठीक।—मुच (अ०) ठीक ठीक, बिल्कुल सत्य, निःसन्देह सत्य।

सचराचर तद्० (पु०) समस्त जगत, जीव, जड़, जन्तु आदि।

सचाई दे० (स्त्री०) सत्यता, सच्चावट।

सचिव तद्० (पु०) मन्त्री, अमात्य, दीवान, सलाहकार, सलाह देने वाला।

सचेत तद्० (वि०) चौकस, चौकसा, सावधान।—न (वि०) ज्ञानवान्, बुद्धियुक्त, जीव, प्राणी।

सचेष्ट तद्० (वि०) चेष्टा युक्त, उद्योगी, यत्नवान, यत्नी।

सचौरी दे० (स्त्री०) सचाई, सत्यता, सच्चावट।

सच्चा दे० (वि०) सत्य, सत्यवादी, ठीक, यथार्थ, उत्तम। [श्वर।

सच्चिदानन्द तद्० (पु०) परब्रह्म, परमात्मा, परमे-

सज दे० (स्त्री०) ढौल, ढब, सिंगार, शोभा।—सज (वा०) शोभा, वेषरचना, बनावट, तैयारी।

सजग दे० (वि०) सावधान, सचेत।

सजन दे० (पु०) प्रिय, प्रियतम, पति।

सजना दे० (क्रि०) सोहना, शोभना। (पु०) पति, प्रियतम।

सजनी (स्त्री०) सखी, सहेली, प्यारी स्त्री।

सजल तद्० (वि०) जलपूर्ण, जल सहित।

सजला दे० (पु०) चार भाइयों में तीसरा, मझले से छोटा। (पु०) जल पूर्ण, जल से भरी हुई।

सजाई दे० (स्त्री०) बनावटी, निर्मित, बनाव, निर्माण, रचना।

सजातीय (वि०) एक जातिवाला।

सजाना दे० (क्रि०) बनाना, शृङ्गार करना।

सजाव या सजावट दे० (पु०) अलङ्कार, बनाव।

सजीला दे० (वि०) सुन्दर, आकारवान्।

सजीव तद्० (वि०) जीता, जीव सहित, जीवयुक्त, प्राणी। [भूरि।

सजीवनी तद्० (स्त्री०) जड़ी विशेष, प्राण देने वाली

सज्जन तद्० (पु०) कुलवन्त, साधु, उत्तमस्वभाववाला।

सझा दे० (स्त्री०) वेश, कवच, मेडल।
सझी दे० (स्त्री०) खारी मिट्टी, जिससे कपड़े गहने आदि साफ़ किये जाते हैं।
सञ्चय तत्० (पु०) संग्रह, ढेर।
सञ्चार तत्० (पु०) भ्रमण, पर्यटन। [बाधा।
सञ्चारक तत्० (पु०) नायक, संक्रमण, भ्रमण कराने
सञ्चारिका तत्० (स्त्री०) दूती, सन्देश पहुँचाने वाली। [करना।
सञ्चालन (पु०) फैलाना, व्यवस्था करना, प्रबन्ध
सञ्चित तत्० (वि०) सञ्चय किया हुआ, एकत्रित, बटोरा हुआ, संग्रहीत।
सञ्जय तत्० (पु०) ये धन्धराज धृतराष्ट्र के सचिव थे। व्यासदेव के आशीर्वाद से प्राप्त दिव्यचक्षुओं से महाभारत का युद्ध देख कर उसका वर्णन धृतराष्ट्र को ये सुनाया करते थे। महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर युधिष्ठिर के राज्य में धृतराष्ट्र के साथ ये हस्तिनापुर में रहते थे और उन्हीं के साथ वन भी गये थे। कुछ दिन के बाद उस वन में वनदाह लग गया। धृतराष्ट्र गान्धारी और कुन्ती ने तो जल कर प्राण त्याग दिये, परन्तु सञ्जय ने भाग कर अपने प्राणों की रक्षा की। इसके बाद हिमालय प्रदेश में जा कर इन्होंने अपना समय बिताया था।
सञ्जीवनी (स्त्री०) बूटी विशेष।
सज्ञान तत्० (पु०) ज्ञान सहित, ज्ञानी, ज्ञानवान्।
सटक दे० (स्त्री०) मरघा, नली, हुक्के की नली।
सटकना दे० (क्रि०) भागना, भाग जाना, छिपना।
सटकाई दे० (स्त्री०) छिपना, झुकाव, उतार चढ़ाव।
सटकाना दे० (क्रि०) छिपाना संकोच करना। [छिपकना।
सटना दे० (क्रि०) मिलना, मिलित होना, जुड़ना,
सटपटाना दे० (क्रि०) विस्मित होना, सचम्भित होना।
सटल दे० (स्त्री०) प्रलाप, बकबक, बकबक।
सटा (पु०) घोड़े के कंधे के बाल, केशर, शिखा।
सटाना दे० (क्रि०) चिपकाना, जोड़ना, मिलाना, मेल करना। [तार, मिलामिल।
सटासट दे० (स्त्री०) तर ऊपर, एक पर एक, लगा-
सटिया दे० (स्त्री०) बाँस की पतली छड़ी, कपची, लकड़ी, लठिया, आभूषण विशेष, एक प्रकार की चूड़ी।
सटीक तत्० (वि०) टीका के सहित, व्याख्या के संहित।
सटूकि दे० (क्रि०) पतली छड़ी से मार कर, धीरे से भाग कर, दबक के भाग कर। [उधर।
सट्टापट्टा दे० (पु०) हेराफेरी, अदला बदली, इधर
सठियाना दे० (क्रि०) बूढ़ा होना, बुढ़ाई से दुर्बल और निर्बुद्धि होना।
सठोड़ा दे० (पु०) पुहई, एक प्रकार का लड्डू।
सड़क (स्त्री०) चौड़ा मार्ग।
सड़न दे० (स्त्री०) दुर्गन्ध, दुर्गन्धित।
सड़ना दे० (क्रि०) उपासना, गलना, सड़ जाना।
सड़ाँद दे० (पु०) सड़ा हुआ, गला हुआ, दुर्गन्धयुक्त।
सड़ाना, या सड़ाइन दे० (क्रि०) गलाना।
सड़ियल (वि०) निर्जीव, सड़ा हुआ, अनुपयोगी।
सण्डा या संडा दे० (वि०) पोढ़ा, मोटा, हृष्टपुष्ट।
सण्डास या संडास दे० (पु०) पाखाना, जाजरू।
सत दे० (पु०) सार, निष्कर्ष, सारभाग, गूदा, सत्य।
—मासा (पु०) गर्भ के सातवें मास में किया जाने वाला संस्कार विशेष।
सतत (क्रि० वि०) सदैव, सदा, हमेशा।
सतराना दे० (क्रि०) क्रोधित होना, अप्रसन्न होना।
सतर्क तत्० (वि०) सावधान, सचेत।
सतलड़ी दे० (स्त्री०) सात लड़ की माला।
सतवन्त दे० (वि०) सत्यवादी, सच्चा।
सताना दे० (क्रि०) पीड़ा देना, कष्ट देना, छेड़ना।
सती तत्०(स्त्री०)पार्वती, दक्षप्रजापति की कन्या, इनका विवाह महादेव से किया गया था। पतिव्रता, साध्वी।
सतीर्थ तत्० (वि०)साथी, सहपाठी, साथ के पढ़ने वाले।
सतीला दे० (क्रि०) सत्तावान्, समर्थ, सामर्थ्यवान्, पराक्रमी।
सतीवाड़ दे० (पु०) सती का स्थान, पति का अनुगमन करने वाली स्त्रियों का श्मशान।
सतुआ दे० (पु०) सत्तू, सत्तू, भुँजे हुए चना और जौ का आटा। [उत्तम काम।
सत्कर्म तत्० (पु०) अच्छा काम, उत्तम काम, पुण्य
सत्कार तत्० (पु०) सम्मान, आदर, आगत स्वागत।
सत्क्रिया तत्० (स्त्री०) सत्कर्म, उत्तम कर्म।
सत्त (पु०) बल, सार, रस, सतगुण।

सत्तम तद्० (वि०) अति उत्तम, अतिशय श्रेष्ठ, यह शब्द जाति या गुणवाचक शब्दों के अन्त में आता है और उसकी प्रधानता बतलाता है, जैसे मुनि-सत्तम।

सत्तर (पु०) संख्या विशेष, ७०। [अखिल।

सत्ता तद्० (स्त्री०) बल, पराक्रम, विद्यमानता,

सत्ताईस (वि०) बीस और सात।

सत्तानबे (वि०) नब्बे और ७।

सत्तावन (वि०) पचास और ७।

सत्तासी (वि०) ८० और ७।

सत्तू दे० (पु०) सतुआ।

सत्य तद्० (वि०) सच्चा, यथार्थ, ठीक निश्चय, सही, वाजबी, मिथ्या नहीं।—ता (स्त्री०) सचाई, सच्चापन।—युग (पु०) कृतयुग, प्रथम युग।—लोक (पु०) ब्रह्मलोक, ऊपर का सातवाँ लोक।—वती (स्त्री०) महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास की माता और वसुराज की कन्या।—वादी (पु०) सत्यवक्ता, सच्चा, सच बोलने वाला, यथार्थ वक्ता।—वान् (पु०) शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र। इनकी माता का नाम शैव्या था। अभाग्यवश राजा द्युमत्सेन अन्धे हो गये, तथा मन्त्रियों के षड्यन्त्र से राज्यच्युत होकर पत्नी और शिशुपुत्र को लेकर वन में चले गये। एक समय उसी वन में मद्रदेश के राजा अपनी कन्या सावित्री के साथ आये। मातृपितृभक्त सत्यवान् के गुणों पर सावित्री मोहित हो गयी और उन्हीं को अपना पति बनाया। सत्यवान् अल्पायु थे, उनकी आयु पूरी हुई, परन्तु पतिपरायणा सावित्री ने अपने पातिव्रत्य बल से यमराज को प्रसन्न कर उनसे वर ग्रहण किये। उन्हीं वरों के प्रभाव से सत्यवान् भी जीवित हो गये, और राजा द्युमत्सेन की भी गयी हुई आँखें लौट आयीं तथा राज्य भी मिल गया।—व्रत (वि०) सत्यवादी, प्रधानतः सत्य को उपास्य मानने वाला।—सन्ध (वि०) सत्यप्रतिज्ञ, अपनी प्रतिज्ञा सदा सत्य करने वाला, अत्यन्त सच्चा, जो कभी झूठ न बोले।

सत्यानाश तद्० (पु०) नाश, विनाश, बरबादी।—री (वि०) सर्वनाशी, बरबाद करने वाला। पा०—रून

—करना (वा०) नाश करना, विनष्ट करना, ध्वस्त होना, बरबाद करना।—जाना (वा०) नष्ट होना, बिगड़ना, ख़राब होना।

सत्यानृत तद्० (पु०) [सत्य+अनृत] वाणिज्य, व्यापार।

सत्व (पु०) सार, प्राण, सद्गुण, जीवा, उद्यम, हृदय, प्रकृति, भलाई। तद्० (स्त्री०) पराक्रम, बल पवित्रता, शुद्धता।—गुण (पु०) प्रकृति का एक गुण विशेष त्रिगुणों में का एक गुण। यह लघु, प्रकाशक और इष्ट है।

सत्वर तद्० (वि०) जल्द, शीघ्र, उतावला, तुरन्त, झटपट।

सत्सङ्ग तद्० (पु०) सज्जन सङ्ग, उत्तम मनुष्यों की सङ्गति।

सत्सङ्गति (स्त्री०) सत्सङ्ग, अच्छी संगति।

सथराव दे० (पु०) रण में मरे पुरुषों की लोथ।

सथिया दे० (पु०) आँख के रोगों को चीर फाड़ कर या दवा लगा कर अच्छा करने वाला, आँख वैद्य।

सद् (अव्य०) तत्काल, उसी समय, श्रेष्ठ, उत्तम।

सदन तद्० (पु०) गृह, घर, मकान, मन्दिर, वासस्थान।

सदय तद्० (पु०) दयायुक्त, मृदुल, कोमल, अन्तःकरण वाला, दयालु, कृपालु, कारुणिक।

सदसत् तद्० (वि०) सत्यासत्य, सच झूठ।

सदस्य तद्० (पु०) सभासद, पञ्च।

सदा या सदाई तद्० (अ०) सर्वदा, नित्य, सतत, हमेशः।—चार (पु०) उत्तम आचार।—व्रत (पु०) अन्नदान, वह स्थान जहाँ भूखों को अन्न दान दिया जाता है।—शिव (पु०) महादेव, शिव।—सुहागिनी (स्त्री०) पुष्प विशेष, वेश्या।

सदृश तद्० (वि०) समान, तुल्य, सम।

सदेश तद्० (अ०) समीप, निकट, पास।

सदैव (अव्य०) सदा, सर्वदा, हमेशा।

सदोष तद्० (वि०) दोष सहित, दोषी, अपराधी।

सद्गति तद्० (स्त्री०) निस्तार, त्राण, मुक्ति, उत्तम गति।

सद्गन्ध तद्० (स्त्री०) सुगन्ध, उत्तम गन्ध।

सद्भाव (पु०) प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, प्रेमभाव।
सद्वक्ता तद्० (पु०) उत्तम वक्ता, शैली के साथ बोलने वाला, उत्तम व्याख्याता। [निर्णायक।
सद्विवेचक तद्० (वि०) विचार, निर्णयकर्त्ता, उत्तम
सद्दल (पु०) समूह, गिरोह, वृन्द।
सद्म (पु०) मकान, घर, रहने का स्थान।
सद्य (अव्य०) तुरत, शीघ्र। [परिचय होना।
सधना दे० (क्रि०) थमना, होना, उठना, हिलना,
सधवा तद्० (स्त्री०) सुहागिनी, सुभगा, पति वाली स्त्री, जिसका पति जीवित हो।
सधाना दे० (क्रि०) साधन करना, अभ्यास कराना, परिचय कराना, सिखाना, बनाना।
सन दे० (पु०) पौधा विशेष, एक प्रकार का पाट।
सनक (पु०) ब्रह्मा के १ पुत्र का नाम। (स्त्री०) उन्माद, पागलपन। [सनकार दिये।
सनकारे दे० (क्रि०) इशारा किये, सैन से बताए,
सनत्कुमार तद्० (पु०) ब्रह्मज्ञ, महातपा महर्षि, ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। [करना।
सनना दे० (क्रि०) गर्भिणी होना, गर्भ धारण
सनन्दन (पु०) ब्रह्मा के पुत्र, सात ऋषियों में से एक।
सनातन तद्० (पु०) ब्रह्मा का मानसपुत्र, ये बड़ा तपस्वी हैं, कहते हैं कि ये सर्वदा बालक रूप में रहते हैं। [सहायक हो, कृतार्थ।
सनाथ तद् (वि०) नाथ सहित, जिसके मालिक और
सनाह (पु०) कवच, बख्तर।
सनिया दे० (पु०) वस्त्र विशेष, सन का बना वस्त्र।
सनीचरा दे० (वि०) अभागा, अभागी, भाग्यहीन।
सनेह तद्० (पु०) प्यार, प्रीति, प्रेम, मोह, छोह, दुलार, प्रेमी, प्यारा, प्रिय, सुहृद्वती। [धार्मिक।
सन्त तद्० (पु०) साधु, सज्जन, उत्तम मनुष्य, धर्मी,
सन्तत (क्रि० वि०) सदैव, लगातार।
सन्तति तद्० (स्त्री०) सन्तान, अपत्य, लड़के वाले।
सन्तप्त तद्० (वि०) दुःखित, तपा हुआ, थका हुआ, श्रान्त, पीड़ित।
सन्तरण तद्० (पु०) पैराव, तिराव, हिलाव।
सन्ता दे० (वि०) बिगड़ा, नष्ट भए।
सन्तान तद्० (पु०) वंश, सन्तति लड़के वाले, [कोष यहां यह शब्द स्त्री लिङ्ग माना जाता है। हिन्दी के कोशकार तो इस शब्द को पुंलिङ्ग ही मानते हैं। शायद उर्दू शब्द औलाद के पर्यायवाची होने के कारण इसे लोग स्त्री लिङ्ग में व्यवहृत करते हैं।]
सन्ताप तद्० (पु०) शोक, पीड़ा, मानसिक व्यथा।
सन्ती दे० (पु०) बदला, बदले में परिवर्तन में, प्रतिनिधि।
सन्तुष्ट तद्० (वि०) तृप्त, प्रसन्न। [आत्मसुख।
सन्तुष्टि तद्० (स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता
सन्तोष तद्० (पु०) आनन्द, हर्ष, तृप्ति, मनस्तोष।
सन्तोषी तद्० (वि०) सन्तोष रखने वाले।
सन्था दे० (पु०) पाठ, अध्ययन, अध्याय।
सन्दर्भ तद् (पु०) रचना, प्रबन्ध।
सन्दर्शन तद्० (पु०) साक्षात्कार, प्रत्यक्ष, देखाव।
सन्दिग्ध तद्० (पु०) सन्देहयुक्त, संशयान्वित, भ्रमयुक्त।—भूत (पु०) व्याकरणसम्बन्धी काल विशेष।
सन्देश तद्० (पु०) समाचार, वृत्तान्त, सदेशा।
सन्देशी तद्० (पु०) दूत, धौरे, सन्देशहारक, हरकारा।
सन्देसिया दे० (पु०) हरकारा, धौरहरा, सदेसा ले जाने वाला। [अनिश्चित ज्ञान।
सन्देह तद्० (पु०) संशय, शङ्का भ्रम, दुविधा,
सन्दोह (पु०) गिरोह, झुंड, अधिकता। [लगाना।
सन्धान तद्० (पु०) अन्वेषण ढूंढ़ना, खोजना पता
सन्धारा दे० (पु०) आधार।
सन्धि तद्० (स्त्री०) मेल, विरोध, करार मित्रता स्थापन, कतिपय नियमों पर मित्रता स्थापन करना। दो पदार्थों के मिलने का स्थान, संयोग, दरार, भेद, सुख मध्य, स्वार्थसिद्धि के उपाय।
सन्ध्या तद्० (स्त्री०) सायङ्काल, दिन और रात्रि की सन्धि का समय, सन्ध्या के समय की जाने वाली उपासना सन्ध्योपासना।
सन्नद्ध तद्० (वि०) उद्यत, तैयार, प्रस्तुत तत्पर।
सन्ना (क्रि०) सटना, गुंधना मिलना।
सन्नाटा दे० (पु०) शब्द विशेष, जो पानी बरसने या वायु के चलने से होता है, नीरव शब्दाभाव।
सन्नाह तद्० (पु०) कवच, बख्तर। [समीप।
सन्निकट तद्० (पु०) निकट पास सन्निधान,

सन्निकर्ष तद्० (पु०) सन्निधान, समीप ।
सन्निधान (पु०) समीप, निकट, पास ।
सन्निधि तद्० (स्त्री०) पास पास, निकट ।
सन्निपात तद्० (पु०) रोग विशेष से उत्पन्न रोग, एक शीत प्रधान रोग का नाम ।
सन्निहित तद्० (वि०) निकट, समीप, पास ।
सन्मान तद्० (पु०) सम्मान, आदर, सत्कार, मर्यादानुसार, प्रतिष्ठा । [साक्षात्, प्रत्यक्ष ।
सन्मुख तद्० (वि०) सामना, पुरःस्थित, आगे,
संन्यास तद्० (पु०) विराग, वासनात्याग, चतुर्थ आश्रम । [दण्डी ।
संन्यासी तद्० (पु०) चतुर्थाश्रमी, यती, त्रिदण्डी,
सपक्ष तद्० (वि०) सहायक, सहायता देने वाला, सहकारी, साथी । (पु०) पक्षी, पखेरू ।
सपदि तद्० (अ०) तुरत, शीघ्र, उसी समय, उसी क्षण, तत्क्षण । [आई हुई बातें ।
सपना तद्० (पु०) स्वप्न, निद्रा के समय विचार में
सपिण्ड तद्० (पु०) बान्धव, सात पीढ़ी के अन्तर्गत बान्धव, जिनके जन्म और मरण में अशौच लगता है ।
सपुत्र तद्० (पु०) सुपुत्र, सपूत, अच्छा लड़का, आज्ञाकारी बेटा ।
सपोला या सपेला दे० (पु०) साँप का बच्चा ।
सप्त तद्० (वि०) संख्या विशेष, ७ ।—चत्वारिंशत (वि०) संख्या विशेष, सात अधिक चालीस, ४७ । —दश (वि०) सत्रह, १७ ।—द्वीप (पु०) सातद्वीप यथा जम्बू, प्लक्ष, कुश, क्रौंच, शाक, शाल्मली, और पुष्कर ।—पाताल (पु०) सात पाताल, यथा अतल, वितल, सुतल, रसातल, महातल, तलातल, और पाताल ।—पुरी (स्त्री०) पवित्र सात पुरियाँ यथा, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, काञ्ची, उज्जैन, और द्वारका ।—मी (स्त्री०) सातवीं तिथि ।—र्षि (पु०) । [सप्त+ऋषि] कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ ये सप्तर्षि कहे जाते हैं ।—सागर (पु०) सात समुद्र, यथा —लवण, इक्षु, दधि, क्षीर, मधु, मदिरा, घृत —स्वर (पु०) सात प्रकार के सुर यथा, षड्ज गान्धार, ऋषभ, निषद, मध्यम, धैवत और पञ्चम ।
सप्तति (वि०) संख्या विशेष, ७० ।
सप्ताश्व (पु०) सात घोड़ों का रथ में बैठने वाले सूर्य ।
सप्ताह तद्० (पु०) सात दिन, अठवारा ।
सप्रीति तद्० (अ०) प्रेम सहित, प्रेम पूर्वक, प्रीति से, प्रेम से ।
सप्रेम तद्० (अ०) प्रेम पूर्वक ।
सफर (वि०) प्रवास, यात्रा ।
सफरी तद् (स्त्री०) मत्स्य विशेष, एक प्रकार की मछली, अमत्स्य, विही ।
सफल तद्० (पु०) फलवान्, सार्थक, सिद्धि, फलदायक, फल देने वाला ।
सब तद्० (सर्व०) सर्व, समस्त, सारा, सम्पूर्ण, पूरा, समूचा, अशिष, कुल ।
सबल तद्० (वि०) बलवान्, प्रौढ़, बली, बलशाली ।—ता (स्त्री०) बल, पराक्रम ।—ई (स्त्री०) सबलता, बल ।
सबाद दे० (पु०) स्वाद, जायका ।
सबेर दे० (अ०) प्रातःकाल, प्रभात, तड़का, भोर ।
सबेरा या सबेरे दे० (पु०) बिहान, भोर ।
सबोतर दे० (अ०) सर्वत्र, सब स्थान में, सब ठौर ।
सबत्तर (अ०) देखो "सबोतर" । [भीत ।
सभय तद्० (वि०) भययुक्त भय सहित, डरा हुआ,
सभा तद्० (स्त्री०) मण्डली, समाज, पञ्चायत, जलसा ।—पति (पु०) सभासञ्चालक, सभा का मुखिया, सरपञ्च ।—सद् (पु०) सभा में बैठने वाला, सभा में उपस्थित रहने वाला ।
सभिक तद्० (पु०) जुआ खेलाने वाला, नाल वाला, जुआ का प्रधान ।
सभीत तद्० (वि०) डरा हुआ, सभय, भयभीन ।
सभ्य तद्० (पु०) सभासद, सभा के योग्य, नागरिक, भद्र ।
सम तद्० (अ०) तुल्य, बराबर, समान, सदृश । —कटिबन्ध (पु०) शीत कटिबन्ध और मध्य रेखा के बीच ४६½ अंश वाला भूखण्ड ।
समक्ष तद्० (अ०) समीप, सम्मुख, प्रत्यक्ष, सामने ।
समञ्जस तद्० (वि०) बराबर, तुल्य ।

समग्र तद्० (वि०) समस्त, सारा, सम्पूर्ण।—ता (स्त्री०) सम्पूर्णता।
समज्या तद्० (स्त्री०) सभा, गोष्ठी, कीर्त्ति, यश।
समझ दे० (स्त्री०) बुद्धि, धारणा, विचार, विश्वास। —दार (वि०) बुद्धिमान्, विचारवान्। [करना।
समझना दे० (क्रि०) बूझना, जानना, धारण
समझाना दे० (क्रि०) बतलाना, सिखाना। [पट।
समझावा दे० (पु०) सिखावन, समझौती, बुझा-
समञ्जस तद्० (वि०) योग्य, उचित।
समता तद्० (स्त्री०) तुल्यता, समानता, बराबरी।
समत्रिभुज (पु०) जिस त्रिभुज की तीनों भुजाएँ समान हों। [पात नहीं करने वाला।
समदर्शी तद्० (वि०) समान दृष्टि, पक्षपाती, पक्ष-
समद्विबाहु (वि०) दो समान भुजाओं वाला।
समधिन दे० (स्त्री०) बेटा या बेटी की सास।
समधियाना दे० (पु०) समधी का स्थान, समधी का घराना।
समधी दे० (पु०) पति और पत्नी के पिता आपस में समधी होते हैं। लड़का लड़की के ससुर। (पु०) बराबर बुद्धिवाला।
समध (पु०) सेंहुड़ का वृक्ष।
समन्तात् तद्० (अ०) चारों ओर, सब तरफ़ से।
समन्वय तद्० (पु०) लक्ष्य के लक्ष्य में घटाना, मेल, परस्पर, अनुगतता।
समन्वित तद्० (वि०) समन्वय किया हुआ।
समबल तद्० (वि०) तुल्य बल, समान बल वाला।
समभाव तद्० (पु०) समता, साम्य, तुल्यता, बराबरी।
समय या समया तद्० (पु०) काल, अवसर, बेला।
समर तद्० (पु०) संग्राम, युद्ध, लड़ाई। [शाली।
समर्थ तद्० (वि०) शक्तिमान्, योग्य, शक्ति-
समर्थन तद्० (पु०) प्रमाण करना, दृढ़ करना।
समर्पना (स्त्री०) सिफ़ारिश, प्रार्थना। (क्रि०) पुष्ट करना।
समर्पण तद्० (पु०) सौंपना, त्याग, अर्पण, दान।
समर्पित (वि०) दिया हुआ, प्रदत्त।
समल तद्० (वि०) मल युक्त, मल सहित, मलिन, मैला, अपवित्र।
समवाय तद्० (पु०) भीड़, समूह, समुदाय, नैयायिकों के मत से सम्बन्ध विशेष, उपादान कारण और कार्य का सम्बन्ध। यथा—सूत और कपड़े का। [समान रूप से साथ देना।
समवेदना तद्० (स्त्री०) किसी विपत्ति या दुःख में
समसूत्रपात तद्० (पु०) डोरी से मापना, जल थाहना, जल की गहराई का पता लगाना।
समस्त तद्० (पु०) सब, सारा, सकल, सम्पूर्ण।
समस्या तद्० (स्त्री०) सङ्केत, किसी छन्द का एक अन्तिम पाद।—पूर्ति (स्त्री०) किसी छन्द के अन्तिम पाद को लेकर उसी के अनुसार श्लोक बनाना।
समा दे० (पु०) समय, काल, अवसर, साल और ऋतु विशेष।—ई (स्त्री०) फैलाव, चौड़ाई, सामर्थ्य, शक्ति।—कुल (वि०) व्याप्त, घिरा हुआ, दुःखी, परेशान।—गम (पु०) आगमन, आना, बधाई, मिलाप, सम्भाषण।—चार (पु०) सन्देशा, संवाद, वृत्तान्त, मङ्गल। —चारपत्र (पु०) पत्र, ख़त, अख़बार, संवादपत्र। —ज (पु०) सभा, मण्डली, जातीय संस्था, समूह, समुदाय।—जी (पु०) बजन्त्री, तबलची, समासद, दयानन्दी।—दर (पु०) सत्कार। सम्मान।—धान (पु०) उत्तर, शङ्का का समाधान।—धि (पु०) ध्यान योग की क्रिया विशेष, इसके दो भेद होते हैं सातिशय और निरतिशय। सातिशय समाधि में ध्याता और ध्येय का बोध रहता है, परन्तु निरतिशय समाधि में वेदान्तियों का अन्तिम अनुभव ही वर्तमान रह जाता है।—धि देना (धा०) मृत साधु संन्यासियों का अन्तिम संस्कार, समाधिस्थ (पु०) ध्यान में, समाधि में।
समान तद्० (वि०) बराबर, तुल्य, एक प्रकार —ता (स्त्री०) तुल्यता, बराबरी।
समाना दे० (क्रि०) घुसना, पैठना, प्रविष्ट होना।
समानान्तर (पु०) बीच, बराबर, तुल्यान्तर, मुतवाज़ी, दो रेखाओं के मध्य का समान फ़ासला।
समापन तद्० (पु०) समाप्त होना, समाप्ति, सम्पूर्णता, पूर्ति।

समाप्त तद्० (वि०) पूरा, हो चुका, सिद्ध ।
समाप्ति तद्० (स्त्री०) अन्त, समापन, सम्पूर्णता, नाश ।
समारोह तद्० (पु०) धमान, जमावड़ा, भीड़ ।
समाली दे० (स्त्री०) फूलों का गुच्छा, पुष्पस्तवक ।
समालू (पु०) पौधा विशेष ।
समालोचना (स्त्री०) भली भाँति विचारना ।
समाव दे० (पु०) समावेश, ठौर, स्थान ।
समावेश तद्० (पु०) पैसार, द्वार, मिलाव, प्रवेश ।
समास तद्० (पु०) संक्षेप, व्याकरण की एक प्रक्रिया, दो तीन पदों के मेल करने की रीति को समास कहते हैं । समास छः हैं । तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि, अव्ययीभाव, द्वन्द्व ।
समाहित तद्० (वि०) समाधिस्थ, स्थिरीकृत, सावधान, दत्तोत्तर, उत्तर दिया हुआ, एक रसालङ्कार विशेष।
समाह्वान (पु०) बुलाना, पुकारना ।
समिती } सुमीती } तद्० (स्त्री०) सभा, मिताई, मित्रता ।
समिध तद्० (स्त्री०) इन्धन, लकड़ी, जलाने की लकड़ी, होम की लकड़ी ।
समीकरण तद्० (पु०) बराबर करना, समतल बनाना, बीजगणित का एक गणित, जिसमें दो राशियाँ बराबर की जाती हैं ।
समीकार (पु०) तुल्य करने वाला, समान करने वाला । [उत्तम ।
समीचीन तद्० (वि०) सम्यक्, सचाई, सच्चा,
समीप तद्० (वि०) पास, निकट, नगीच ।
समीपी दे० (पु०) पड़ोसी, आत्मीय, स्वजन ।
समीर तद्० (पु०) वायु, हवा, पवन, प्रकम्पन ।
समीरण (पु०) पवन, वायु, हवा ।
समीहा तद्० (स्त्री०) इच्छा, वांछा, पूर्ण इच्छा अभिलाष । [युक्त ।
समुचित तद्० (पु०) योग्य, यथार्थ, उचित, उप-
समुच्चय तद्० (पु०) समुदाय, एकत्रित, ठेठ, राशि, समूह, संग्रह ।
समुदाय तद्० (पु०) समूह, समान जाति के लोगों का जमावड़ा ।

समुद्र तद्० (पु०) सागर, समुन्द, जलनिधि, उदधि, पयोधि । —फल (पु०) औषध विशेष ।
समूचा दे० (वि०) सारा, पूरा, समस्त, आद्यन्त सहित ।
समूह तद्० (वि०) दल, यूथ, जथा, समुदाय ।
समूहानी दे० (क्रि०) सामने मिली हुई ।
समृद्ध (वि०) धनवान्, समर्थ, भाग्यवान । [बढ़ती ।
समृद्धि तद्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, विभव, धन, सम्पत्ति
समे (पु०) वक्त समय, अवसर, मौक़ा ।
समेट दे० (स्त्री०) सङ्कोचन, सिमटन । [करना ।
समेटना दे० (क्रि०) सिकोड़ना, बटोरना, सङ्कोच
समेत तद्० (वि०) सहित, युक्त ।
समैं (पु०) समय, अवसर, मौक़ा ।
समोना दे० (पु०) कुनकुना जल, गरम जल में ठंढा जल मिला कर ठंढा किया हुआ जल ।
समौ (पु०) देखो समैं ।
सम्पत्ति तद्० (स्त्री०) समृद्धि, धन, सम्पदा, सुभाग ।
सम्पदा तद्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, विभव ।
सम्पन्न तद्० (वि०) परिपूर्ण, धनाढ्य, पूरा, सिद्ध ।
सम्पर्क तद्० (पु०) सम्बन्ध, मिलाप, संयोग, संसाव । [रेखा विशेष ।
सम्पात (पु०) गिरना, स्पर्श रेखा, रेखागणित की
सम्पाति तद्० (पु०) अरुण के पुत्र और जटायु के ज्येष्ठ भ्राता, ये दोनों भाई सूर्य को छोकने के लिये उनकी ओर दौड़े । सूर्य के प्रखर तेज से जटायु के पंख भस्म होने लगा, तब सम्पाति ने उसे अपने पङ्खों द्वारा ढाँप लिया । छोटे भाई की रक्षा करने से सम्पाति स्वयं दग्धप्राय हो गये । वे अचेत होकर विन्ध्य पर्वत पर गिर पड़े । चेत होने पर निशाकर मुनि के उपदेश से उन्होंने उसी पर्वत पर रहना स्थिर किया । सीता की खोज करने वालों को सीता का पता बताने से उनके पङ्ख पुनः जम गये ।
सम्पादक तद्० (पु०) कर्ता, सम्पन्न कर्ता, सम्पादन करने वाला, पूरा करने वाला, पूर्ण करने वाला । दैनिक समाचारपत्र, पुस्तक माला या मासिक पुस्तक को अपने तथा दूसरों के लेखों से पूरा कर निकालने वाला, एडिटर ।

सम्पादन तद्० (पु०) निरूपण, कथन, समाप्ति करना, निष्पादन, सङ्गठन, प्राप्ति, लाभ, निर्माण।

सम्पुट तद्० (पु०) ढक्कन, डिबिया।—क (पु०) पिटारा, पेटी।

सम्पूर्ण तद्० (पु०) समस्त, परिपूर्ण।

सम्प्रति तद्० (अ०) इस समय, अब।

सम्प्रदान तद्० (पु०) दान, कारक विशेष, चतुर्थी कारक।

सम्प्रदाय (पु०) परम्परा का धर्म।

सम्बद्ध (वि०) संयुक्त, घेरा गया, बाँधा गया।

सम्बन्ध तद्० (पु०) संयुक्त, नाता, लगाव।

सम्बन्धी तद्० (पु०) सम्बन्ध रखने वाला, नातेदार, कुटुम्ब। [पहला कारक विशेष।

सम्बोधन तद्० (पु०) समुख़ी करण, कारण विशेष,

सम्बोधित (वि०) पुकारा हुआ, सम्बोधन किया हुआ। [होश, सावचेत हो जाना।

सम्भलना दे० (क्रि०) थमना, सुधरना, सावधान

सम्भव तद्० (पु०) योग्यता, होने के योग्य, होनहार, भवितव्य, सम्भावना [थामना।

सम्भालना दे० (क्रि०) प्रबन्ध करना, सुधारना,

सम्भावना तद्० (स्त्री०) दुविधा, सन्देह, अनिश्चय। [भाव।

सम्भाषण तद्० (पु०) बातचीत, आलाप, बोल

सम्भूत (वि०) उत्पन्न, पैदा।

सम्भोग तद्० (पु०) स्त्री-प्रसङ्ग, मैथुन।

सम्भोजन तद्० (पु०) भोज भण्डार।

सम्भ्रम तद्० (पु०) आदर, सम्मान, घबराहट, भय, डर, त्रास। [अभिमत।

सम्मत तद्० (गु०) अनुमत, स्वीकृत, ईप्सित,

सम्मति तद्० (स्त्री०) इच्छा, स्वीकार।—पत्र (पु०) राजीनामा। [बुहारी।

सम्मार्जनी तद्० (स्त्री०) झाड़ी, झाड़, कूँची,

सम्मान (पु०) आदर, सत्कार, प्रतिष्ठा, मर्यादा।

सम्मिलित (वि०) शामिल, संयुक्त मिला हुआ।

सम्मुख (पु०) सामने, आगे, प्रत्यक्ष।

सम्यक् तद्० (अ०) अच्छी भाँति से, योग्यता से, ठीक ठाक, भली भाँति।

सम्हालना (क्रि०) देखो सम्भालना।

साम्राट तद्० (पु०) अधिराजा, चक्रवर्ती राजा।

सय दे० (पु०) सौ, शत, १००।

सयान दे० (गु०) वयस्क, वय प्राप्त, अधिक उमर का अधिक अवस्था वाला।

सयाना दे० (गु०) चतुर, प्रवीण, निपुण, दक्ष, वृद्ध, वयः।

सर तद्० (पु०) सरोवर, तालाब, तड़ाग।—कण्डा (पु०) तृण विशेष, नरकट।

सरकना दे० (क्रि०) हटना, दूर जाना, खसकना।

सरकाना दे० (क्रि०) हटाना, भगाना, खसकाना।

सरगुण तद्० (गु०) सगुण, गुण सहित, सत्व रज और तम इन गुणों से युक्त परमात्मा।

सरघा तद्० (स्त्री०) मधुमक्षिका, मधुमाखी, शहद की मक्खी।

सरट तद्० (पु०) गिरगिट। [खर्बूजा

सरदा दे० (पु०) खर्बूजा विशेष, एक प्रकार का

सरन तद्० (पु०) शरण, रक्षक।

सरना दे० (क्रि०) सड़ना, हटना, जाना।

सरपट दे० (पु०) बड़े वेग से दौड़ना, खूब ज़ोर से दौड़ना।—फेंकना (मा०) घोड़े की लगाम ढीली करके दौड़ाना, वेग से दौड़ाना। [पत्ते वाली घास।

सरपत दे० (पु०) तृण विशेष, एक प्रकार की चौड़े

सरपोश (पु०) ढकना, चिलम ढाँकने की वस्तु।

सरल तद्० (वि०) उदार, सच्चा, ईमानदार, निष्कपट, छलशून्य, सीधा। (पु०) एक प्रकार के पेड़ का नाम इसे सरो भी कहते हैं।

सरवर तद्० (पु०) तालाब, तड़ाग, झील, पोखरा।

सरवरि या सरवरी दे० (स्त्री०) बराबरी, समता, ढिठाई, गुस्ताख़ी, उत्तर प्रति उत्तर देना।

सरम (पु०) वानर विशेष।

सरयू (स्त्री०) नदी विशेष, इसके नाम घघरा, घाघरा या देवा भी है।

सरस तद्० (वि०) रस वाला, मीठा, स्वादु, रसीला।

सरसाना दे० (क्रि०) रेंगना, फिरना चलना।

सरसाई दे० (स्त्री०) अधिकाई, बहुतायत, उत्तमता।

सरसिज तद्० (पु०) कमल, पद्म, कँवल।

सरसीरुह तद्० (पु०) कमल, पद्म।

सरसों दे० (पु०) सर्षप, राई, तेलनी।

सरस्वती तद्० (स्त्री०) नदी विशेष, वाणी, भारती, वाग्देवता, वाक् की अधिष्ठात्री देवी, वागीश्वरी, शारदा।
सरा दे० (पु०) ढकना, ढपना, मिट्टी का पात्र।
सराई दे० (स्त्री०) छोटा सरा, ढकनी।
सराप तद्० (पु०) शाप, अशुभ चिन्ता, श्राप।
सरापना दे० (क्रि०) शाप देना, गरियाना, गाली देना, कोसना।
सराफ दे० (पु०) देन लेन करने वाला महाजन, चाँदी सोने के बने आभूषण बेचने वाला।
सराफी दे० (स्त्री०) देन लेन, महाजनी।
सरावक तद्० (पु०) जैनी, जैन धर्मी, जैन धर्मी गृहस्थ।
सरावगी (पु०) जैनी। [मोटी लकड़ी।
सरावना दे० (पु०) हेंगा, ज़मीन बराबर करने की
सराह दे० (पु०) बखान, बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा।
सराहना दे० (क्रि०) बड़ाई करना, प्रशंसा करना, बखान करना। [के वर्ण, स्वर।
सरिगम तद्० (पु०) स्वर के आरोह, अवरोह करने
सरित् तत्० (स्त्री०) नदी, निम्नगा, स्रोत।—पति (पु०) समुद्र, सागर।—सुत (पु०) गङ्गापुत्र, भीष्म।
सरिता (स्त्री०) नदी। [सम, तुल्य।
सरिस, सरिखा तद्० (वि०) सदृश, समान, बरा-
सरी दे० (स्त्री०) बिना फल का तीर।
सरीखा तद्० (वि०) समान, तुल्य, बराबर।
सरीसृप तत्० (वि०) जन्तु विशेष, शरट, गिरगिट, साँप, बिच्छू।
सरूप तद्० (वि०) बराबर, समान रूपवाला, आकारवान्। (दे०) स्वरूप, आकृति, आकार, साकार मूर्ति।
सरेखा तद्० (स्त्री०) श्लेषा नक्षत्र विशेष, नवाँ नक्षत्र।
सरेस दे० (पु०) लसलसी वस्तु विशेष, जिससे प्रायः लकड़ी जोड़ी जाती है।
सरो दे० (पु०) एक प्रकार का वृक्ष।
सरोज तत्० (पु०) कमल, पद्म, पङ्कज।—भव (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता।
सरौता दे० (पु०) सुपारी काटने का औज़ार।
सरोरुह तत्० (पु०) अरविन्द, कमल, पद्म।
सरोवर तत्० (पु०) तालाब, तड़ाग, सरवर, झील।
सरोष तत्० (वि०) क्रुद्ध, क्रोध युक्त।
सरोही दे० (स्त्री०) राजपूताने के एक राज्य की राजधानी। वहाँ की बनी तलवार, एक प्रकार का भाला।
सरौं करें दे० (वा०) श्रम करना, दण्ड पेलना, बैठक करना।
सर्करा (स्त्री०) शर्करा, शक्कर।
सर्ग तत्० (पु०) सृष्टि, उत्पत्ति, अध्याय, ग्रन्थभाग।
सर्प तत्० (पु०) साँप, अहि, भुजङ्ग।—राज (पु०) साँप का राजा, शेष, वासुकी।
सर्व तत्० (वि०) सब, समस्त, सम्पूर्ण, सारा, सकल।—काल (पु०) नित्य, सदा।—ग (पु०) सब जगह जाने वाला, सर्वव्यापी, सब स्थानों में फैलने वाला।—गत (पु०) सर्वग, सर्वत्र व्याप्त, सर्वत्रव्यापी।—ज्ञ (पु०) सर्ववेत्ता, परमात्मा, परमेश्वर, एक वेदान्ती पण्डित का नाम, जिन्होंने "संक्षेप-शारीरक" नामक वेदान्त का ग्रन्थ बनाया है।—तोभद्र (पु०) यज्ञ की प्रधान वेदी, जिस पर प्रधान देवता की स्थापना की जाती है।—त्र (अ०) सब जगह, चारों ओर—था (अ०) सब प्रकार, सब तरह।—दमन (पु०) राजा दुष्यन्त का पुत्र।—दा सदा, हमेशा।—नाम (पु०) कुछ शब्द जिनका प्रयोग अन्य शब्दों के बदले में किया जा सके।—नाश (पु०) सत्यानाश, बिगाड़।—भक्षक या भक्षी (वि०) सर्वभुक्, सब कुछ खाने वाला।—भूत (पु०) चराचर, विश्व।—मङ्गला (स्त्री०) अपर्णा, पार्वती, दुर्गा।—मय (पु०) सर्वस्वरूप, सर्वत्र व्याप्त।—व्यापक या व्यापी (वि०) सर्वत्र वर्तमान, सब जगह व्याप्त।—स्व (पु०) धन, पूँजी, मूल धन।
सर्वस्व तत्० (पु०) सर्वेश्वर, जगत्, धन, समस्त धन।
सर्वाङ्ग तत्० (पु०) [सर्व+अङ्ग] समस्त शरीर, सम्पूर्ण अङ्ग।
सर्वोपरि तत्० (अ०) सब से बड़ा, सर्वश्रेष्ठ।
सर्षप तत्० (पु०) सरसों, तोरी।
सर्लुगाहट (स्त्री०) गुदगुदी।
सलकी दे० (स्त्री०) [illegible]।

सलज्ज तद्० (वि०) लज्जा युक्त लज्जा सहित, लज्जालु ।
सलना दे० (क्रि०) छिदना, घुसना, गड़ना ।
सलभ तद् (पु०) सलभ, पतङ्ग, टिड्डी, दीपक पर गिरने वाला कीड़ा ।
सलसलाना दे० (क्रि०) सरसराना, खुजलाना, पानी से खूब भीगना, दीवाल आदि में खूब पानी घुस जाना ।
सलाई दे० (स्त्री०) शलाका, लोहे या सीसा का पतला तार, सुर्मा लगाने की सलाई ।
सलिता दे० (स्त्री०) नदी, सरित, सिन्धु ।
सलिल तद्० (पु०) जल, पानी, आप, नीर ।
सलूप तद्० (वि०) स्वल्प, अल्पक, थोड़ा, बहुत थोड़ा ।
सलूना (वि०) देखो सलोना ।
सलूनो (स्त्री०) देखो सलोनो ।
सलोन तद्० (वि०) लोन सहित, सलवण, नमकीन ।
सलोना दे० (वि०) सुन्दर, रूपवान्, मनोहर, प्रिय, लावण्ययुक्त, खारी, नमकीन ।
सलोनी दे० (वि०) रोचक, रुचिकर, स्वादिष्ट ।
सलोनो दे० (पु०) श्रावण की पूर्णिमा, राखी पूनो ।
सल्लम दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा ।
सल्लु (पु०) जूता सीने का चाम ।
सल्लो दे० (स्त्री०) थोड़नी स्त्री, भोली औरत ।
सवति (स्त्री०) सौत, सपत्नी ।
सवर (पु०) कोल, भील ।
सवरी (स्त्री०) भीलनी, कोलनी ।
सवर्ण तद्० (वि०) समान वर्ण, एक जाति वाला, एक समान ।
सवा दे० (वि०) चतुर्थांश अधिकता के साथ, १¼ ।
सवाई दे० (पु०) राजपूतों की पदवी, जैपुर के राजाओं की पदवी, एक और उसकी चौथाई, सवा ।
सवांग दे० (पु०) स्वाँग, पहेली, मज़ाक ।
सवाँरना दे० (क्रि०) साँधना, अनुसन्धान करना, पता लगाना, ढूँढ़ना ।
सवाद तद्० (पु०) स्वाद, मज़ा ।
सवाया (पु०) सवाई, सवा ।
सवार तद्० (पु०) घोड़ चढ़ैया, घुड़चढ़ा ।

सवारी दे० (स्त्री०) यान, वाहन ।
सविता तद्० (पु०) सूर्य रवि ।
सवैया दे० (पु०) सवासेर नापने या तौलने का बाट, भाषा का एक छन्द विशेष ।
सव्य तद्० (वि०) बायाँ, वाम, विरुद्ध, उलटा । —साची (पु०) अर्जुन, तीसरा पाण्डव ।
सशङ्क तद्० (वि०) शङ्कायुक्त, त्रास युक्त, सभय, भीत ।
ससक (पु०) खरगोश । [(स्त्री०) खवास ।
ससा दे० (पु०) शशक, खरगोश, खरहा ।—पाश्री
ससुर तद्० (पु०) पति या पत्नी का पिता ।
ससुराल (स्त्री०) ससुर का घर, पीहर ।
सस्ता दे० (वि०) स्वल्पमूल्य, थोड़े दाम में मिलने वाली वस्तु ।
सस्य (पु०) फल, खेत में लगा हुआ अन्न ।
सह तद् (अ०) साथ, सहित, सङ्ग, समेत ।—कार (पु०) आम, आम्रफल, सहायता ।—गामिनी (स्त्री०) स्त्री, भार्या, पतिव्रता स्त्री ।—चर (पु०) साथी, सङ्गी ।—चरी (स्त्री०) सखी, सहेली, वयस्या, आली ।—ज (पु०) भाई, सहोदर भाई । (अ०) सामान्य, सुगम, स्पष्ट, सरल ।—जन (पु०) एक पेड़ का नाम, मुनगा ।—देई (स्त्री०) एक पौधे का नाम ।—देव (पु०) राजा पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र, माद्री के गर्भ और अश्विनीकुमार के औरस से ये उत्पन्न हुए थे । द्रौपदी के गर्भ से श्रुतसेन नामक इनका एक पुत्र उत्पन्न हुआ था । युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में दक्षिण देश के राजाओं से कर लेने के लिये गये थे । अज्ञातवास के समय विराट् राजा के यहाँ तन्त्रीपाल नाम धारण करके ये गोरक्षा करते थे । महाप्रस्थान के समय उन्होंने सुमेरु शिखर पर से गिर कर प्राण त्यागा। (२) जरासन्ध का पुत्र, महाभारत के युद्ध में ये कौरवों की ओर से लड़ते थे और अभिमन्यु के हाथ से मारे गये ।—पाठी तद्० (पु०) साथ पढ़ने वाला, सतीर्थ ।—मरण (पु०) साथ मरना, सती होना ।—योगी (वि०) एक व्यवसाय करने वाले, साथी, सङ्गी ।—लाना (क्रि०) धीरे धीरे हाथ फेरना ।—लपन (स्त्री०) गुदगुदी,

सुरसुरी।—जाना (क्रि) गुदगुदाना, सुरसुराना।—वास (पु०) एकत्र स्थिति, पड़ोस।
—वासी (पु०) पड़ोसी, साथ रहने वाला।
—वैया (वि०) सहने वाला।

सहन दे० (पु०) कपड़ा विशेष, आँगन, घर के भीतर का खुला हुआ चौकोर स्थान। तद्० (पु०) क्षमा, सहिष्णुता।—शील (वि०) सन्तोषी, गमख़ोर, परहेज़ी।—हार (पु०) सहने वाला, सहन करने वाला।

सहना दे० (क्रि०) सहन करना, भोगना, झेलना, उठाना, पाना, भुगतना, सन्तोष करना।

सहनाई दे० (स्त्री०) नफ़ीरी, वाद्य विशेष।

सहमना (क्रि०) डर जाना, ग्रस्त होना, मूर्छा जाना, लजा जाना, शर्माना।

सहस (वि०) हज़ार।

सहसा तद्० (अ०) अकस्मात्, झटपट, अतर्कित, बिना विचार।—नन (पु०) शेषनाग।

सहस्र तद्० (वि०) संख्या विशेष, दस सौ, १०००।
—नयन (पु०) देवराज, इन्द्र।—बाहु (पु०) कार्त्तवीर्य, इसको परशुराम जी ने मारा था।

सहस्राक्षी तद्० (पु०) सहस्राक्ष, इन्द्र, देवताओं के राजा। [हज़ार मुँह हों।

सहस्रानन तद्० (पु०) सहस्रानन, शेषनाग, जिनके

सहाई तद्० (स्त्री०) सहाय, सहायता, सहायता कारक।

सहाऊ दे० (वि०) सहनीय, सहन करने योग्य, सह्य।

सहानुभूति तद्० (स्त्री०) सुख दुःख में भागी होना।

सहाय तद्० (पु०) सहारा, मदद।—क (पु०) सहारा देने वाला, मदद करने वाला।—ता (स्त्री०) सहाय, सहारा।

सहारा दे० (पु०) सहायता, योगदान।

सहित तद्० (वि०) साथ, सङ्ग, समेत, एकत्र।

सहिराना दे० (क्रि०) सहराना, सुहराना।

सहिष्णु तद्० (वि०) सहन करने वाला।

सही दे० (अ०) शुद्ध, निश्चय बोधक शब्द।

सहेजना दे० (क्रि०) सौंपना, सँभालना।

सहेली दे० (स्त्री०) सखी, वयस्या, साथ रहने वाली।

सहोदर तद्० (पु०) सहज, सगा, एक माता से उत्पन्न —भ्राता (पु०) सगा भाई।

सहौटी दे० (स्त्री०) चौखट, दरवाज़ा।

सह्य तद्० (वि०) सहने योग्य, सहाऊ।

सा दे० (अ०) सादृश्य बोधक, अल्पार्थक, थोड़ा सा।

साइत दे० (स्त्री०) अच्छी मुहूर्त।

साई दे० (स्त्री०) बयाना, किसी वस्तु के ठहराये हुए मूल्य का कुछ अंश अगाऊ देना।

साऊ दे० (पु०) सीखने द्वारा, शिष्ट।

साँऊगी दे० (स्त्री०) साँगी, गाड़ी का मचहार।

साँई दे० (पु०) स्वामी, प्रभु, भगवान्।

साँक तद्० (स्त्री०) शङ्का, भय, श्वास का रोग।

साँकर या साँकरी दे० (स्त्री०) शवङ्ख, शृङ्खला, सिकली।

साँकरी दे० (वि०) सङ्कीर्ण, तङ्ग, पहाड़ों की योनि।

साँकर या साँकल दे० (स्त्री०) सिकरी, भूषण विशेष, जो गले में पहना जाता है।

साँखू, साखू दे० (पु०) पुल, सेतु, वृक्ष विशेष, साल का वृक्ष। [अस्त्र।

साँग दे० (स्त्री०) बर्छी, सेल, भाला, एक प्रकार का

साँगी दे० (स्त्री०) गाड़ी में का मचहार, बर्छी।

साँगून दे० (पु०) एक प्रकार की मछली।

साँघर दे० (पु०) पुनर्विवाहिता का पुत्र, पहले पति का लड़का।

साँच दे० (वि०) सत्य, सच्चा ठीक उचित, यथार्थ।

साँचा दे० (स्त्री०) फरिया, गहना या बर्तन ढालने की वस्तु दर्रा, ठप्पा।

साँझ दे० (स्त्री०) सन्ध्या, सायङ्काल।

साँझा, साँझी दे० (स्त्री०) पुतली का खेल, एक प्रकार का चित्रणकला।

साँटा दे० (पु०) कोड़ा, कषा।

साँटी (स्त्री०) छड़ी, लग्गी।

साँठ दे० (वि०) संयोग, साझेदा।—गाँठ (पु०) संयोग, मेल।

साँटना दे० (क्रि०) सटाना, लगाना, जोड़ना।

साँद दे० (पु०) पगड़, ढील [illegible] पेंच, विस्तार।

साँड़नी दे० (स्त्री०) ऊँटनी।

साँडा दे० (पु०) एक प्रकार का जन्तु।

साँड़ दे० (पु०) छुट्टा बैल।

साँति दे० (अ०) सकती, बदला, आख़िर, लिये।

साँप दे० (पु०) सर्प, भुजंग, भुजङ्ग, नाग, अहि। (स्त्री०) साँपन।
साँभर दे० (पु०) सम्बर, एक प्रकार का मृग, एक भाग विशेष, जहाँ साँभर नामक लवण होता है।
साँवर दे० (वि०) साँवला, श्यामल।
साँवला तद्० (गु०) श्यामल, कृष्ण वर्ण का, काला [रंग।
साँवा दे० (पु०) धान्य विशेष। [पाला वायु।
साँस तद्० (पु०) श्वास, प्राण, नाक से आने जाने
साँसत दे० (स्त्री०) कठिन दंड, पीड़ा, अटकाव, व्याकुलता। [सुखाने के लिये दण्ड देना।
साँसना दे० (क्रि०) डाँटना, ताड़ना, धमकाना,
साँसा दे० (पु०) संशय, सन्देह, कष्ट, अटकाव।
सांसारिक तद्० (वि०) संसार सम्बन्धी, संसार का, संसार में उत्पन्न होने वाला
साक (पु०) शाक, साग।
साकम् (अव्य०) सह, साथ।
साका (पु०) शाका, संवत्सर विशेष।
साकार तद्० (वि०) आकार सहित, आकृति विशिष्ट।
साक्षात् तद्० (अ०) प्रत्यक्ष, सामने, आँखों के आगे, प्रकट।—कार (पु०) आमना सामना, प्रत्यक्ष।
साक्षी तद्० (वि०) गवाह, साखी।
साख तद्० (स्त्री०) साख, प्रामाणिकता, साखी।
साखी तद्० (वि०) साक्षी, गवाह।
साखोच्चार (पु०) शाखोच्चार, वंश निरूपण।
साख्या (पु०) साक्षात्कार।
साग तद्० (पु०) शाक, भाजी, तरकारी।
सागर तद्० (पु०) समुद्र, उदधि, पयोधि, पर्याय।
सागू दे० (पु०) काष्ठ विशेष।
सांख्य तद्० (पु०) कपिल मुनि प्रणीत शास्त्र विशेष, दर्शन शास्त्र।
साङ्ग तद्० (वि०) अङ्ग सहित समास, पूर्ण शरीर।—ोपाङ्ग (वि०) समस्त, ज्यों का त्यों।
साज दे० (पु०) सामग्री, सजाने का सामान।
साजन दे० (पु०) सज्जन, प्रिय, प्रियतम, पति।
साजना दे० (क्रि०) पहिनना, बनाना, सजावट करना।
साजिश (पु०) दुरभिसन्धि, कपट प्रबन्ध संयोग।
साझी (स्त्री०) साझीदार।
साझा दे० (पु०) भाग, हिस्सा, अंश, किसी काम में अनेक मनुष्यों का भाग।
साझी दे० (पु०) साथी, भागी, हिस्सादार, अंशक।
साठी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का चाँवल, यह चावल साठ दिनों ही में पक कर तैयार हो जाता है। इसी से इसका नाम साठी पड़ा है। [कपड़ा।
साड़ी दे० (स्त्री०) सारिका, स्त्रियों के पहनने का
साढ़साती (स्त्री०) शनिश्चर की ७ वर्ष की दशा।
साढ़ू दे० (पु०) पत्नी का बहनोई।
साढ़े दे० (वि०) सार्द्ध, आधा के साथ, आधा सहित।
सात तद्० (वि०) संख्या विशेष, सप्त, ७।—पाँच करना (वा०) असमञ्जस करना, इधर उधर करना, संशयित होना, सन्देहान्वित होना।
सात्विक तद्० (वि०) सत्व गुण युक्त, सत्व गुण विशिष्ट, साधु, सरल, सज्जन।
सातू दे० (पु०) सत्तू, सतुआ।
साथ दे० (अ०) सङ्ग, सहित, समेत।—देना (वा०) सहायता देना, सहारा पहुँचाना।—वाला (गु०) साथी, सङ्गी। [निर्मित शय्या।
साथरी दे० (स्त्री०) पत्तों का बिछौना, चटाई, तृण
साथिन या साथिनी दे० (स्त्री०) सहेली, सखी।
साथी दे० (पु०) सङ्गी, मेली, मित्र, बन्धु, साथ का रहने वाला, सुहृद।
साद, सादर तद्० (वि०) आदर सहित, सन्मान पूर्वक।—र (स्त्री०) शक्ति विशेष।
सादृश्य तद्० (पु०) समानता, तुल्यता, बराबरी।
साध दे० (स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाष।
साधक तद्० (पु०) साधन करने वाला, धार्मिक अनुष्ठान कर्त्ता, अभ्यासकारी, तपस्वी।
साधन तद्० (पु०) उपाय, यत्न, उद्योग, चेष्टा, अभ्यास, अनुष्ठान, व्याकरण के कारककारक का दूसरा नाम।
साधना तद्० (स्त्री०) साधन, अनुष्ठान, तपस्या, सिद्ध करने का उपाय। (क्रि०) सिद्ध करना, अभ्यास करना, ध्यान लगाना, साधन करना।
साधनिका (स्त्री०) साधना, उपाय, पूरा करने की रीति।

साधनीय तद्० (वि०) साधन करने योग्य, उत्तम कर्म, जिसका साधन करना उपयोगी हो।

साधारण तद्० (वि०) सामान्य, सहज, सरल, आम, जन समाज।—तः (अव्य०) सामान्यतः, आम तौर से।—धर्म (पु०) वह धर्म जिसके पालन का अधिकार सभी का है। वे ये हैं:— अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, दम, क्षमा, आर्जव और दान।

साधित तद्० (वि०) साधा गया, किया गया, सिद्ध, निष्पादित, पूर्ण किया हुआ।

साधी (स्त्री०) ठहराई हुई, थमी हुई।

साधु तद्० (पु०) सज्जन, परोपकारी व्यक्ति, वैष्णव सम्प्रदाय के मनुष्य, एक जाति।—ता (स्त्री०) श्रेष्ठता, साधु का कर्म।—साधु (वि०) धन्य धन्य।

साध्य तद्० (वि०) साधनीय, साधन करने योग्य।

सान तद्० (स्त्री०) सिल्ली जिस पर शस्त्र तेज किये जाते हैं।—चुभाना (वा०) दूसरे से बात करना; इङ्गित करना।

सानन्द (वि०) सहर्ष, आनन्द के साथ।

सानी दे० (स्त्री०) पशु भोजन विशेष, भूसा में पानी खली आदि डाल कर जो बनाई जाती है, घरावर।

सानुकूल (वि०) कृपालु, दयालु, प्रसन्न।

सान्निध्य (पु०) नजदीकपन, निकटता।

सान्त्वन तद्० (पु०) ढाढ़स देना, धीरज बँधना, समझाना, बुझाना।

साना दे० (क्रि०) किलना, गूँधना, माँड़ना।

सापन (पु०) रोग विशेष, जिसके कारण सिर के बाल गिर जाते हैं।

सापराध तद्० (वि०) अपराध विशिष्ट, अपराधयुक्त, अपराधी, दोषी, कसूरी, सदोष।

साफल्य तद्० (पु०) सफलता, फलसिद्धि।

साबर दे० (पु०) पशु विशेष, बारहसिंहा का चर्म।

साबुत दे० (वि०) अखण्ड, बिना टूटा फूटा, समूचा, समस्त।

साम तद्० (पु०) वेद विशेष, तीसरा वेद, गायी जाने वाली ऋचा। (दे०) सन्ध्या, साँझ, मूसल या लकड़ी के मुँह पर का लोहा।

सामग्री तद्० (स्त्री०) सामान, चीज़, वस्तु, उपकरण, असबाब।

सामध (पु०) समधौरा, समधियों का मेल।

सामना (अव्य०) आगे, अगाड़ी, सम्मुख।

सामन्त तद्० (पु०) काबू में लाये हुए राजा, माण्डलिक राजा।

सामयिक तद्० (वि०) कालोचित, समय के अनुकूल।

सामर दे० (पु०) लवण विशेष, नोन।

सामर्थ तद्० (स्त्री०) शक्ति, बल, पराक्रम, योग्यता।

सामर्थी तद्० (वि०) समर्थ, बलवान्, पराक्रमी, शक्तिमान्।

सामर्थ्य तद्० (पु०) शक्ति, योग्यता पराक्रम, बल।

सामा दे० (पु०) सामना, सामग्री, भोजन सामग्री, बहुविधि भोजन, जमाव, मण्डली की शोभा।

सामाजिक तद्० (वि०) सभासद, सभ्य, समाज सम्बन्धी, समाज विषयक।

सामान (पु०) असबाब, सामग्री।

सामान्य तद्० (पु०) साधारण, मध्यम स्थिति का, चलनसार।—तः (क्रि० वि०) साधारणतः, आम तौर से।

सामान्या तद्० (स्त्री०) गणिका, वेश्या, व्यभिचारिणी, नायिका विशेष।

सामी दे० (स्त्री०) साम, सामने, आगे, प्रत्यक्ष।

सामीप्य तद्० (वि०) समीपता, निकटता, नजदीकी, घनिष्ठता।

सामुद्रिक तद्० (वि०) विद्या विशेष, जिसमें हस्तरेखा आदि का विचार किया जाता है।

सामुहे (अव्य०) सामने, आगे।

साम्हना या सामना या साम्हा दे० (पु०) [illegible], सामने का भाग, आगे, प्रत्यक्ष।

सायङ्काल तद्० (पु०) संध्याकाल, दिन और रात्रि का संधिकाल, साँझ।

सायुज्य (पु०) मोक्ष विशेष, जिसमें भक्त ईश्वर में मिल जाता है। एकत्व, अभेदत्व।

सार तद्० (पु०) बल, जोड़ा, [illegible], वस्तु का उत्तम भाग।—क (पु०) [illegible], मैना।

सारङ्ग तद्० (पु०) राग विशेष, मोर, मयूर, सर्प, मेघ, बादल, हरिण, [illegible], पार्श्व [illegible] देश का नाम,

चातक, पपीहा, हाथी, राजहंस, सिंह, कोइल, कोकिल, कामदेव, रंग विशेष, वर्षा, धनुष, भ्रमर, मधुमक्खिका । (स्त्री०) मधु की मक्खी, कपूर, कमल, आभरण, भूषण, पुष्प, छत्र, शोभा, रात्रि, दीपक, स्त्री, शस्त्र, वस्त्र ।

सारङ्गिया (पु०) सारङ्गी बजाने वाला ।

सारङ्गी दे० (स्त्री०) वाद्य विशेष ।

सारथि या सारथी तद्० (पु०) रथवाह, रथ चलाने वाला, गाड़ी हाँकने वाला ।

सारना दे० (क्रि०) सरकाना, हटाना, दूर करना ।

सारस तद्० (पु०) पक्षी विशेष, एक पक्षी का नाम

सारस्वत (पु०) देश विशेष, ब्राह्मणों की जाति विशेष (वि०) सरस्वती सम्बन्धी ।

सारा दे० (वि०) सम्पूर्ण, समस्त, समूचा—सार सत्यासत्य, भलाबुरा, साँच झूठ ।

सारार्थ तद्० (वि०) [सार+अर्थ] मुख्य अर्थ, प्रधान अर्थ ।

सारांश दे० (पु०) निचोड़, मुख्य अंश, मुख्यभाग ।

सारिका तद्० (स्त्री०) तोता, मैना, पक्षी विशेष ।

सारी दे० (स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहनने योग्य कपड़ा ।

सारूप्य (पु०) मोक्ष विशेष, जिससे मुमुक्षु अपने आराध्य देव के रूप का हो जाता है ।

सार्थक तद्० (वि०) अर्थसहित, अर्थ युक्त, सफल ।

सार्वभौम तद्० (पु०) राजा, महाराजा, चक्रवर्ती राजा ।

साल तद्० (पु०) एक प्रकार की लकड़ी, साखू का वृक्ष, वर्ष ।—गिरह दे० (स्त्री०) वर्षगाँठ, जन्म दिवस । [छेदन, भेदन, वेधन ।

सालन दे० (पु०) बना हुआ माँस, माँस की तरकारी,

सालना दे० (क्रि०) भेदना, चुभाना, गड़ाना ।

सालसा दे० (पु०) औषध विशेष, खींचा हुआ अर्क ।

साला तद्० (पु०) श्यालक, स्त्री का भाई ।

सालिग्राम (पु०) विष्णु की मूर्ति विशेष, जो गण्डकी नदी में निकलती है । [की बहिन ।

साली तद्० (स्त्री०) श्याली, साले की बहिन, स्त्री

सालू, सालूर दे० (पु०) दुकरता, लाल रङ्ग का कपड़ा विशेष ।

सालोक्य (पु०) मोक्ष विशेष, जिससे मुमुक्षु अपने आराध्य देव के लोक में चला जाता है ।

सालोतरी तद्० (पु०) घोड़ों का वैद्य, अश्व चिकित्सक ।

सावक तद्० (पु०) शावक, शिशु, बच्चा, लड़का, दावक ।

सावकरन तद्० (पु०) श्यामकर्ण, एक प्रकार का वर्जीय उत्तम घोड़ा । [छुट्टी ।

सावकाश तद्० (पु०) अवकाश, अवसर, फुरसत,

सावज दे० (पु०) बनैला पशु, अहेर में मिला पशु ।

सावधान तद्० (पु०) सतर्क, चौकस, सावचेत, कार्यों में जागृत ।—ता (स्त्री०) सतर्कता ।

सावधानी तद्० (स्त्री०) सावधानता, चौकसी, सावचेती ।

सावन तद्० (पु०) श्रावण, एक महीने का नाम ।—हरे न भादों सूखे (वा०) सदा एक समान ।

सावन्त तद्० (पु०) सामान्त, माण्डलीक राजा, अधिराज, करद राजा, चक्रवर्ती के अधिकारयुक्त राजा, अधीनस्थ राजा ।—ी (स्त्री०) वीरता, बहादुरी ।

सावयव (वि०) अवयव सहित । [सूर्य ।

सावर्णि (पु०) चौदह मनुओं में से आठवें मनु (वि०)

सावाँ दे० (पु०) धान्य विशेष, श्यामक ।

सास, सासु तद्० (स्त्री०) श्वश्रु, श्वसुर की स्त्री, स्त्री या पति की माता ।

साँसत (स्त्री०) कष्ट, तकलीफ ।

साँसना (क्रि०) डाँटना, ताड़ना ।

साहु दे० (पु०) बनिया, महाजन, रोजगारी, सेठ ।—चर्य (पु०) संगति, साथ ।

साहनी (स्त्री०) फौज, सेना ।

साहस तद्० (पु०) उद्योग, उत्साह, वीरता, कार्य तत्परता, कार्य में अतिशय मनोयोग, अपराध, अनुचित कार्य करने का हौसला ।

साहसी तद्० (वि०) उद्योगी, उत्साही, साहसयुक्त, निर्भीक, निडर । [मदद ।

साहाय्य तद्० (वि०) सहायता, उपकार, सहारा

साहित्य तद्० (पु०) उपकरण, सामान, सामग्री, विद्या विशेष, काव्य अलङ्कार आदि ।

साही दे० (स्त्री०) जन्तु विशेष, जिसके शरीर में काँटे होते हैं।

साहु (पु०) महाजन।

साहूकार दे० (पु०) महाजन, लेन देन करने वाला, कारबार करने वाला, प्रसिद्ध।

साहूकारी दे० (स्त्री०) महाजनी, लेन देन, कारबार।

सिंगरौज (पु०) शृङ्गवेर पुर, ग्राम विशेष। [विशेष

सिंघाड़ा (पु०) जल में उत्पन्न होने वाला फल

सिंह तत्० (पु०) मृगेन्द्र, केसरि, मृगराज।—मुखी (पु०) बाँस।—द्वार (पु०) फाटक, राजा के महल का बड़ा द्वार।—नाद (पु०) गम्भीर ध्वनि, सिंह का शब्द।

सिंहनी दे० (स्त्री०) सिंह, सिंह की मादा।

सिंहलद्वीप तत्० (पु०) द्वीप विशेष, लङ्का, सिलोन।

सिंहासन तत्० (पु०) राजासन, राजगद्दी, विचार का आसन। [माता।

सिंहिका तत्० (स्त्री०) राक्षसी विशेष, राहु की

सिकता तत्० (स्त्री०) बालू, रेत, बालुका।

सिकड़ी दे० (स्त्री०) छोटे की जालीदार अँगूठी।

सिकरी, सिकुली दे० (स्त्री०) साँकल, आभूषण विशेष।

सिकहर दे० (पु०) सीका, रस्सी के बने थैले जो टाँगे जाते हैं, जिस पर बिल्ली आदि से रक्षा के लिये चीज़ें रखी जाती हैं।

सिकुड़न दे० (स्त्री०) बल, शिकन, सिमटन।

सिख दे० (पु०) जाति विशेष, नानक पन्थ के अनुयायी।

सिक्त (वि०) सींचा हुआ।

सिखनाहट दे० (स्त्री०) शिक्षा, सीख।

सिखर तत्० (पु०) शिखर, पर्वतशृङ्ग, पहाड़ की चोटी, ऊँचे मकानों का ऊपरी भाग।

सिखरन तद्० (पु०) वह पेय पदार्थ जो दही में दूध, चीनी और मसाले आदि डाल कर बनाया जाता है। [देना, पढ़ाना।

सिखलाना दे० (क्रि०) पढ़ाना, सिखाना, शिक्षा

सिखाई दे० (स्त्री०) शिक्षा, सिखावट, पढ़ाई।

सिगाना दे० (क्रि०) बताना, सिखलाना।

सिगरौ दे० (वि०) सकल, समस्त सम्पूर्ण, सारा।

सिङ्गा, सिंगा दे० (पु०) रणसिंगा, तुरही, वाद्य विशेष।

सिङ्गार, सिंगार तत्० (पु०) शृङ्गार, शोभा, सजावट।

सिङ्गारना, सिंगारना दे० (पु०) सजाना शोभा बनाना, सजावट करना।

सिङ्गारिया, सिंगारिया दे० (पु०) शृङ्गार करने वाला, पुजारी, पूजा करने वाला, पूजक।

सिङ्गौटी, सिंगौटी दे० (स्त्री०) पशुओं का आभूषण विशेष, जो उनके सींगों पर लगाया जाता है।

सिजाना (क्रि०) उबालना, रींधना। [दुःख देना।

सिझाना दे० (क्रि०) पकाना, रींधना, उबालना,

सिड़ दे० (स्त्री०) उन्मत्तता, पागलपन।

सिड़ी दे० (पु०) बावला, उन्मत्त, पागल।

सित तत्० (वि०) धवल, श्वेत, शुक्ल, धौला।

सितरी दे० (स्त्री०) स्वेद, पसीना, प्रस्वेद।

सितला दे० (स्त्री०) चेचक, माता का रोग।

सिद्ध तत्० (पु०) देवयोनि विशेष, देवता का एक भेद, योग की आठ सिद्धियाँ जिन्हें प्राप्त हैं। (वि०) पूरा, समाप्त, पक्का, तैयार, बना हुआ, साबित किया हुआ। (पु०) साधु, योगी, तपस्वी।—योग (वि०) ज्योतिष का योग विशेष।

सिद्धि (स्त्री०) मनोवाञ्छित फल पाना।—दाता (पु०) श्रीगणेश जी।

सिद्धान्त तत्० (पु०) दृढ़ निश्चय, वादि और प्रतिवादि द्वारा युक्ति तर्क से सिद्ध किया हुआ अर्थ।

सिद्धान्ती तत्० (पु०) मिमांसक, विचारक।

सिधारना दे० (क्रि०) जाना, चला जाना, टलना, स्थान त्याग करना। [कफ जो नाक से निकलता है।

सिनक दे० (स्त्री०) पोंटा, रेंटा, नासिका का मल,

सिनकना दे० (क्रि०) नाक साफ करना, छिनकना।

सिन्दूर तत्० (पु०) उपधातु विशेष, जिसका भस्म दवा के काम में आता है, स्त्रियों का सोहाग चिह्न।

सिन्धु तत्० (पु०) समुद्र, सागर, पयोधि, एक नद का नाम, जिसका दूसरा नाम अटक है। प्रान्त विशेष सिन्धुदेश एक रागनी का नाम।

सिन्धुर तत्० (पु०) हाथी, हस्ती, करी, गज।—गामिनी (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, नारी जी, जिसकी गति गज के समान हो।

सिपाह (स्त्री॰) सेना, फौज।
सिपाही (पु॰) वर्दीधारी, चपरासी, सैनिक।
सिम तद॰ (पु॰) निदाघ, उग्र, पसीना, स्वेद।
सिप्रा तद॰ (स्त्री॰) नदी विशेष, जो उज्जैन के पास है।
सिमट दे॰ (स्त्री॰) सकुच, शिकन, सिकोड़न।
सिमटन दे॰ (स्त्री॰) सिकुड़न, शिकन।
सिमिटना दे॰ (क्रि॰) सिकुड़ना, बटुरना।
सिमाना तद॰ (पु॰) सीमा, मेंड़, अवधि, सीमाना।
सिय (स्त्री॰) सीता।
सियन (स्त्री॰) सीवन, सिलाई। [दक्ष।
सियाना दे॰ (पु॰) प्रवीण, चतुर, निपुण, अभिज्ञ,
सियार तद॰ (पु॰) शृगाल, गीदड़।
सिर तद॰ (पु॰) मस्तक, माथा, कपाल।—उठना (वा॰) स्वामी का विद्रोह करना, सिर में पीड़ा होना।—करना (वा॰) प्रारम्भ करना।—काटना (वा॰) शिरच्छेद करना, मूंड काटना।—काढ़ना (वा॰) प्रसिद्ध होना, नामी होना, प्रगट होना, प्रस्तुत होना।
सिरका दे॰ (पु॰) श्रासव विशेष।
सिरकी दे॰ (स्त्री॰) पतले सैंटे की छावनी।
सिरखप दे॰ (वि॰) मनचला, मग्री, अपनी टेक पर सटल। [करना।
सिर खपाना दे॰ (वि॰) दिमाग लड़ाना, सिरपची
सिरखपी दे॰ (स्त्री॰) ढाँढ़स, जोखिम।
सिरचढ़ा दे॰ (वि॰) घमंडी, अहङ्कारी।
सिरजना दे॰ (क्रि॰) रचना, उत्पन्न करना, बनाना।
सिर फोड़ौवल दे॰ (स्त्री॰) झगड़ा, लड़ाई।
सिरसीगा दे॰ (वि॰) झगड़ालू, दंगा करने वाला।
सिरहाना दे॰ (पु॰) सिर की ओर।
सिरा दे॰ (पु॰) रग, नस।
सिरात दे॰ (क्रि॰) ठंढा, शीतल, शीत।
सिराना दे॰ (क्रि॰) बन पड़ना, होना ठंढा करना।
सिरिस (पु॰) वृक्ष विशेष। [पीसा जाता है।
सिल (स्त्री॰) पत्थर विशेष जिस पर मसाला आदि
सिलपट दे॰ (वि॰) चौपट उजाड़, बराबर, समतल।
सिलबट्टा दे॰ (पु॰) सिल लोढ़ा।
सिलपाई दे॰ (स्त्री॰) सीने की मजदूरी।
सिलवाना दे॰ (क्रि॰) सिवाना, सिलाना, सिलाई करना।
सिलाई दे॰ (स्त्री॰) सीने का काम, सीने की मजूरी।
सिलाना दे॰ (क्रि॰) पहनने के कपड़े बनवाना।
सिली दे॰ (स्त्री॰) पथरी, सिल, शाण।
सिल्ली (स्त्री॰) देखो सिली।
सिवाना दे॰ (पु॰) सीमा, छोर, अवधि।
सिवार दे॰ (पु॰) देखो "सेवार"।
सिसकना दे॰ (क्रि॰) रोना, धीरे धीरे रोना।
सिसकारी दे॰ (स्त्री॰) सिस सिस शब्द करना।
सिसकी दे॰ (स्त्री॰) सिसकारी।
सिहरन दे॰ (स्त्री॰) कंपन, घबराहट। [थराना।
सिहरना दे॰ (क्रि॰) कँपना, कम्पित होना, थर-
सिहरा दे॰ (पु॰) एक प्रकार का मुख का आवरण जो दूल्हा की पगड़ी के पास माथे पर बाँधा जाता है।
सिहराना दे॰ (क्रि॰) थकना, शान्त होना, थक जाना।
सिहाना (क्रि॰) देख कर सन्तुष्ट होना।
सींक दे॰ (स्त्री॰) तृण, घास, नरकट।
सींका दे॰ (पु॰) लकीर, धारी, सिकहर, छींका।
सीकहर (पु॰) रस्सी की बनी टोकरानुमा एक चीज़ जो छत में लटकायी जाती है और उसमें चीज़ें रख दी जाती हैं जिससे उसमें चीटियाँ न चढ़ें और उसे बिल्ली न खाय, छींका।
सींकिया दे॰ (पु॰) धारी वाला कपड़ा।
सींग तद॰ (स्त्री॰) शृङ्ग, विषाण, पशुओं की सींग।
सींगड़ा दे॰ (पु॰) सींग का बना हुआ पात्र, जिसमें बारूद रखा जाता है।
सींगा दे॰ (पु॰) नरसिंगा, तुरही, वाद्य विशेष।
सींगी दे॰ (स्त्री॰) तुमड़ी, सींगा, मछली।
सींचना दे॰ (क्रि॰) सींचना, पाटना, पानी देना।
सींचाई दे॰ (स्त्री॰) पानी देने का काम।
सींची दे॰ (स्त्री॰) सींचने का समय।
सीख तद॰ (स्त्री॰) शिक्षा, पाठ, उपदेश, सिखावट।
सीखना दे॰ (क्रि॰) शिक्षा पाना, अभ्यास करना, पढ़ना।
सींचना दे॰ (क्रि॰) सिंचाई करना।
सींझना (क्रि॰) पकना, उबलना।

सीजना दे० (क्रि०) पसीजना, रसना, निसरना, निकलना।
सीटना दे० (क्रि०) डींगें करना, झूठी प्रशंसा करना।
सीटी दे० (स्त्री०) मुँह से बजाया हुआ शब्द, सीटी बजाने का बाजा।
सीठना दे० (क्रि०) ब्याह का गीत।
सीठा दे० (गु०) रसहीन, फीका, असार, नीरस।
सीठी दे० (स्त्री०) खूदर, छागन, निकम्मा भाग, फोक।
सीढ़ी दे० (स्त्री०) सोपान, पैड़ी, आरोह, निसेनी।
सीत (पु०) ओस।—रस (पु०) मुख पर का रोग विशेष।
सीतला तद्० (स्त्री०) शीतला, माता, गोटी, चेचक।
सीता तद्० (स्त्री०) जानकी, वैदेही, मिथिला के राजा जनक की कन्या, श्रीरामचन्द्र की पत्नी, हल, हल का फल।—पति (पु०) रामचन्द्र।—फल (पु०) फल विशेष, शरीफा।
सीदना दे० (क्रि०) दुःखी होना।
सीधा दे० (गु०) सीना, अवक्र, निश्चल, शुद्ध, सच्चा, कोरा अन्न।
सीना दे० (क्रि०) सिलाई करना, तागना, टाँकना, गुरपना। [मोती जिसमें से निकाला जाता है।
सीप, सीपी दे० (स्त्री०) घोंघा, शुक्ति, सुतुही, सुती,
सीमन्त (पु०) माँग पाटना, गर्भवती स्त्री का संस्कार विशेष।
सीमन्तिनी (स्त्री०) स्त्री, औरत।
सीमन्ती (स्त्री०) औरत, नारी, अबला, स्त्री।
सीमा तद्० (स्त्री०) हद, सिवाना, अवधि, डाँड़।—विवाद (पु०) अठारह प्रकार के न्याय के अन्तर्गत एक न्याय।
सीय तद्० (स्त्री०) सीता, जानकी, वैदेही।
सीरा दे० (पु०) भोजन विशेष, मोहनभोग, हलुआ, हलुआ।
सीला दे० (वि०) गीला, भीगा हुआ, शीतल।
सीवन दे० (पु०) सिलाई, जोड़, मेल।
सीव दे० (स्त्री०) सीमा, हद, छोर, मर्यादा।
सीस तद्० (पु०) शीर्ष, सिर, मस्तक, कपाल।—फूल (पु०) सिर का आभूषण विशेष।
सीसक, सीसा तद्० (पु०) धातु विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध धातु, काँच।
सीसों (पु०) शीशम का वृक्ष।
सु तद्० (उप०) उत्तमता बोधक।
सुअन (पु०) बेटा, पुत्र।
सुअर तद्० (पु०) सूकर, वराह।
सुआर (पु०) रसोइया, बावर्ची।
सुँघाना दे० (क्रि०) महकाना, सुवासना।
सुकचाना दे० (क्रि०) संकुचित होना, सिमटना, डरना, भयपाना, सकुचाना।
सुकटा दे० (वि०) दुर्बल, दुबला, पतला।
सुकटी दे० (स्त्री०) सूखी मछली।
सुकड़ना दे० (क्रि०) सिमटना, संकुचित होना।
सुकर तद्० (वि०) अल्प परिश्रम से करने योग्य, सीधा। [समय।
सुकाल तद्० (पु०) सुअवसर, अच्छी ऋतु, उत्तम
सुकुमार तद्० (वि०) मनोहर, सुन्दर, कोमल।
सुकृत तद्० (पु०) पुण्य, उत्तम धर्म। [धर्मनिष्ठ।
सुकृती तद्० (पु०) पुण्यात्मा, पुण्यवान, धर्मात्मा,
सुख तद्० (पु०) आराम, कल, शान्ति, इन्द्रियों की तृप्ति।—चैन (वा०) विश्राम, अवकाश, अवसर।—तला (पु०) जूते का तला।—द (वि०) सुखदायक, आनन्ददायक।—दास (पु०) एक जाति का नाम।—लाना (क्रि०) सुखाना, सूखा करना।
सुखाला दे० (वि०) सहज, सुख से, आनन्द से।
सुखित तद्० (वि०) सुखी, सुख प्राप्त, आनन्दित।
सुखिया दे० (वि०) सुखी, सुखित, सुखयुत, आनन्दी, विलासी।
सुखी तद्० (वि०) सुख करने वाला।
सुख्याति तद्० (स्त्री०) कीर्ति, यश, प्रसिद्धि, नाम, नामवरी, प्रतिष्ठा, मर्यादा।
सुगति तद्० (स्त्री०) उत्तम गति, अच्छी अवस्था।
सुगन्ध या सुगन्धि तद्० (स्त्री०) [illegible] बास, महक, शोभन गन्ध।—त (वि०) सुगन्धदार, सुगन्ध वाला। [वास।
सुगन्धी तद्० (गु०) सुगन्ध, महक, वास, अच्छी
सुगम तद्० (वि०) सहज, सरल, सुकर, अल्प परिश्रम से करने योग्य।—ता (स्त्री०) सरलता।

सुगामी दे० (वि०) निस्तेज, स्नेहरहित, जिसमें चिकना न हो, रूखा सूखा।
सुग्रीव तत्० (पु०) वानरराज बालि का छोटा भाई।
सुघर दे० (वि०) सुन्दर, मनोहर, सुडौल।—ई (स्त्री०) सुन्दरता। [दार, सखा।
सुचि दे० (वि०) निर्मल, स्वच्छ, मलरहित, ईमान-
सुचकना दे० (क्रि०) विस्मित होना, चमत्कृत होना, आश्चर्य में होना।
सुचरिता (स्त्री०) पतिव्रता।
सुचरित तत्० (वि०) उत्तम चरित्र वाला, सदाचारी, धर्मात्मा।
सुचित्त तत्० (वि०) सुगम, निश्चिन्त, चिन्ता शून्य, सावधान।
सुचिताई दे० (स्त्री०) सावधानी, सुचित्तता।
सुचेत तत्० (वि०) सावधान, चौकस, सतर्क।
सुजन तत्० (वि०) साधुजन, भलामानस, सदाचारी, परोपकारी।—ता (स्त्री) साधुता, परोपकारिता, भलमनसी।
सुजस तत्० (पु०) सुख्याति, कीर्ति, सुन्दर यश।
सुजान तत्० (वि०) ज्ञानवान्, ज्ञाता, अभिज्ञ, प्रवीण, बुध।
सुझाना दे० (क्रि०) जताना, बताना। [समझाना।
सुझाना दे० (क्रि०) दिखाना, बताना, स्मरण कराना,
सुटकना दे० (क्रि०) सकुचित होना, सिकुड़ना, घूरना, पतली छड़ी से पीटना।
सुटुन्ना दे० (स्त्री०) छड़, छड़ी, छाड़ी, छड़िया।
सुठि दे० (वि०) सुन्दर, मनोहर, उत्तम।
सुड़कना दे० (क्रि०) घूँट घूँट करके पीना।
सुड़की दे० (स्त्री०) सुट्टी की डोरी खोलना।
सुड़प दे० (स्त्री०) कवल, ग्रास, कौर।
सुड़पना दे० (क्रि०) निगलना, चाटना, पूताना।
सुडौल दे० (वि०) सुन्दर, शोभन, सुन्दर आकार वाला सुघर।
सुत तत्० (पु०) पुत्र, बेटा, लड़का, आत्मज, तनय।
सुतरा दे० (पु०) बाजा, कवा, आभूषण विशेष।
सुतरी दे० (स्त्री०) सन की बनी पतली रस्सी।
सुता तत्० (स्त्री०) कन्या, तनया, दुहिता, पुत्री, लड़की, बेटी।
सुतार दे० (पु०) बढ़ई, जाती जाति विशेष, जिसका लकड़ी का काम करना व्यवसाय है उसका समाज अनुकूल समय।
सुतीक्ष्ण (स्त्री) अति चोखी, धारदार।
सुथन या सुथना या सूथना दे० (पु०) पायजामा पैरों में पहनने का कपड़ा।
सुथरा दे० (वि०) साफ, स्वच्छ, सच्चा अच्छा —शाही (पु०) नानकशाही साधु।
सुदर्शन तत्० (पु०) विष्णु के चक्र का नाम, पुष (वि०) जो देखने में मनोहर हो।
सुदामा तत्० (पु०) एक दरिद्र ब्राह्मण, श्रीकृष्ण का सहपाठी श्रीकृष्ण ने उसे बहुत धन देकर धनी बनाया था।
सुदि तत्० (अ०) शुक्ल पक्ष, उजाला पाख।
सुदिन तत्० (पु०) अच्छे दिन, भला अवसर, सौभाग्य।
सुदी तत्० (अ०) देखो "सुदि"।
सुदृढ़ तत्० (पु०) कठोर, दृढ़ता।
सुदृश्य तत्० (वि०) उत्तम, दर्शनीय, देखने योग्य, मनोज्ञ, मनभावन।
सुध दे० (स्त्री०) स्मरण, चेत, ज्ञान, चिन्ता।—बुध समझ, चेत, ज्ञान, बुध।—लेना (वा०) समाचार पूछना, याद करना, स्मरण करना। [जाना
सुधरना दे० (क्रि०) बनना सहज जाना।
सुधाँ दे० (अ०) सहित, समेत, युक्त।
सुधांशु (पु०) चन्द्रमा, चाँद कपूर।
सुधा तत्० (स्त्री०) अमृत पीयूष, पानी पृ कलई मकान पोतने का श्वेत द्रव्य विशेष —कर (पु०) चन्द्रमा।
सुधार (स्त्री०) मरम्मत।
सुधारना दे० (क्रि०) बनाना, सवाँरना, सजाना
सुधि—(स्त्री०) देखो "सुध"।
सुधी तत्० (पु०) बुद्धिमान् अनुभवी, पण्डित, तजरुबेकार।
सुन तद् (वि०) शून्य, रिक्त रीता।—कार (पु०) सर्पविशेष।—गुन दे० (स्त्री०) क चर्चा, कानाफूँसी।—बहरी (स्त्री०) रोग वि कुष्ठरोग का पूर्वरूप।—सार (पु०) एक

का गहना।—सान (वि०) एकान्त, उजाड़, बीरान।—हरा या—हला (वि०) सोने का।
सुनाना दे० (क्रि०) श्रवण कराना, निवेदन करना, जनाना।
सुनावट दे० (स्त्री०) सुनाहट, मौन, चुप।
सुनार दे० (पु०) जाति विशेष, जो गहने बनाता है, स्वर्णकार।
सुनारिन दे० (स्त्री०) सुनार की स्त्री।
सुनारी दे० (स्त्री०) सुनार का काम, सुनार की विद्या, सुन्दरी स्त्री।
सुनावनी (स्त्री०) मरने का समाचार।
सुनाहट दे० (स्त्री०) सुनावट।
सुनीति (स्त्री०) अच्छी नीति, शिष्टाचार।
सुन्दर तत्० (वि०) सुरूप, रूपवान्, मनोहर। ता— (स्त्री०) मनोहरता, सुरूपता।
सुन्दरी तत्० (स्त्री०) रूपवती, सुरूपा।
सुंगावट, सुंघाउट दे० (स्त्री०) गन्ध विशेष, मिट्टी की गन्ध, सुवास।
सुन्न दे० (पु०) सन्नाटा, बिंदी।
सुन्ना (पु०) सिफर, बिंदी। [सुपन्थ।
सुपथ तत्० (पु०) उत्तम मार्ग, अच्छा रास्ता, सुमार्ग,
सुपात्र तत्० (वि०) योग्य, उत्तम पात्र, सज्जन, उत्तम जन।
सुपारी दे० (स्त्री०) पूगी फल, प्रसिद्ध फल विशेष।
सुपास दे० (पु०) सुविधा, सुभीता।
सुपुत्र या सुपूत तत्० (पु०) अच्छा लड़का, सत्पुत्र।
सुप्त तत्० (वि०) निद्रित, सोया हुआ।
सुप्ति (स्त्री०) नींद, निद्रा।
सुफल तत्० (वि०) उत्तम फल, लाभदायक, लाभकारी, सफल।—ा (स्त्री०) खजूर।
सुबुद्धि तत्० (स्त्री०) उत्तम बुद्धि, प्रवीणता।
सुभग तत्० (पु०) सुन्दर, पति, प्यारा, प्रिय। —ता (स्त्री०) उत्तमता, श्रेष्ठता।
सुभट तत्० (पु०) उत्तम योद्धा, वीर, शूर, लड़ाका सिपाही।
सुभद्रा (स्त्री०) श्रीकृष्ण की बहिन।
सुभागा तत्० (स्त्री०) सौभाग्यवती, सधवा।
सुभाव तत्० (पु०) स्वभाव, अच्छा स्वभाव।
सुभीता दे० (स्त्री०) अवसर, अवकाश, सुविधा।
सुमङ्गल तत्० (पु०) शुभ, कल्याण, कुशल।
सुमति तत्० (स्त्री०) सुबुद्धि, भलमंसी, अच्छी बुद्धि।
सुमन तत्० (पु०) फूल, पुष्प, कुसुम।
सुमन्त तत्० (पु०) राजा दशरथ का सचिव, सारथी।
सुमरन दे० (पु०) स्मरण, याद, भजन।
सुमरना दे० (क्रि०) स्मरण करना, जपना, नाम लेना, भजन करना।
सुमिरनी दे० (स्त्री०) छोटी माला, स्मरण करने के लिये २७ दानों की बनी माला।
सुमित्रा तत्० (स्त्री०) राजा दशरथ की छोटी रानी, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता।
सुमेरु तत्० (पु०) पर्वत विशेष, उत्तर ध्रुव, केन्द्र, मध्य स्थान, माला की बड़ी मनिया।
सुम्बा, सुंबा दे० (स्त्री०) तोप या बन्दूक की ठसनी, गज, लोहे आदि को छेदने का औज़ार।
सुयश (पु०) सुख्याति, कीर्ति, सुन्दर यश।
सुयोग (पु०) अच्छा अवसर, अच्छा योग।
सुर तत्० (पु०) देवता, देव, अमर, सूर्य, स्वर।—गुरु (पु०) बृहस्पति।—पति (पु०) इन्द्र।—पुर (पु०) अमर।—तरु (पु०) देववृक्ष, कल्पवृक्ष। —मिलाना (वा०) बाजों का सुर मिलाना, कई एक बाजों को एक स्वर करना।
सुरङ्ग तत्० (स्त्री०) सेंध, ज़मीन के भीतर का मार्ग।
सुरत दे० (स्त्री०) सुध, याद, चेत, स्मृति। (तत्०) (पु०) मैथुन, स्त्रीप्रसङ्ग।
सुरती दे० (स्त्री०) तम्बाकू, तमाखू, खैनी।
सुरतीला दे० (वि०) स्मरणकर्त्ता, सावधान, सुचेत, याददाश्त करने वाला।
सुरतैन दे० (स्त्री०) रखी हुई स्त्री।
सुरभि तत्० (पु०) सुगन्ध।
सुरमा दे० (पु०) अञ्जन विशेष।
सुरस तत्० (वि०) रस युक्त, उत्तम रसवाला।
सुरसुराना दे० (क्रि०) सरसराना, रेंगना।
सुरसुरी दे० (स्त्री०) गुद गुदी।
सुरा तत्० (स्त्री०) मद्य, मदिरा, आसव, शराब।
सुरूप तत्० (वि०) सुन्दर, सुघर, सुडौल।
सुरेतिन दे० (स्त्री०) अविवाहिता भार्या, रखनी।

सुलगना दे० (क्रि०) दहकना, लहराना, जलना, धुँआ निकलना।
सुलगाना दे० (क्रि०) बालना, दहकाना, जलाना।
सुलझना दे० (वि०) सुधरना, सुलझना।
सुलझाना दे० (क्रि०) उकेलना, सुधारना, खोलना।
सुलभ दे० (वि०) सुप्राप्य, कम कीमत, अल्पमूल्य, सहज, सुगम, आसान, सहल।—ता (स्त्री०) सुगमता।
सुलक्षण तत्० (पु०) शुभचिह्न।
सुलाना दे० (क्रि०) शयन कराना, पौढ़ाना।
सुवचन तत्० (पु०) विशद वचन, प्रिय वाणी।
सुवर्ण तत्० (वि०) सुजाति, अच्छी जाति, उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर। (पु०) सोना, काञ्चन।
सुवास तत्० (पु०) सुगन्ध, सुरभि।
सुवैया दे० (वि०) सोने वाला।
सुशील तत्० (वि०) उत्तम स्वभाव वाला।
सुश्री तत्० (वि०) सुन्दर, सजीला।
सुषुप्ति तत्० (स्त्री०) अवस्था विशेष, योगियों की ध्यानावस्था।
सुसकारना दे० (क्रि०) पुचकारना, फनकारना, पुचियाना, छोटे बच्चों को शौचादिक कराना।
सुसताना दे० (क्रि०) विश्राम करना, थकावट उतारना।
सुसमय तत्० (पु०) अच्छा समय, सुकाल।
सुस्त दे० (वि०) शिथिल, ढीला, निर्बल, दुबला।
सुस्थ तत्० (वि०) नीरोग, अच्छा, भला, चंगा।
सुहराना दे० (क्रि०) बदन पर धीरे धीरे हाथ फेरना।
सुहाई (वि०) शोभायमान। (क्रि०) शोभित।
सुहाग तत्० (पु०) सौभाग्य, सधवापन।
सुहागन, या सुहागिन दे० (स्त्री०) सधवा स्त्री, जिसका पति वर्तमान हो।
सुहागा दे० (पु०) टंकन, क्षार विशेष। [भावन।
सुहाता दे० (वि०) अभीप्सित, इष्ट, चाहीता, मन-
सुहाना दे० (क्रि०) अच्छा मालूम होना।
सुहावना दे० (क्रि०) रुचना, लगना। (वि०) सुन्दर, मनभावन।
सुहृद् तत्० (पु०) मित्र, बन्धु, हितचिन्तक, हितू।
सुआ दे० (पु०) तोता, सुग्गा, बोरा सीने का सूजा।
सुई दे० (स्त्री०) कपड़े सीने की सलाई, सूची।
सूँगरा (पु०) पड़वा, भैंस का बच्चा।
सूँघना दे० (क्रि०) नाक से किसी सुगन्धयुक्त पदार्थ की महक लेना। [तमाकू
सूँघनी दे० (स्त्री०) हुलास, नास, सूँघने
सूँट दे० (स्त्री०) चुप्पी, मौन, अवाक्, नीरव।
सूँड़ तद्० (स्त्री०) शुण्ड, हाथी का कर।
सूँड़ी दे० (पु०) जाति विशेष जो मद्य बेचने आदि का काम करते हैं, कलाल, कलवार। [करना
सूँतना दे० (क्रि०) तोड़ना, बटोरना, एकत्रित
सूँस दे० (पु०) जल जन्तु विशेष, जलहस्ति।
सूकट दे० (वि०) छटा, दुबला, क्षीणबल, सूखा हुआ। [सोटों।
सूकर (पु०) सुअर।—खेत (पु०) नगर विशेष,
सूकी दे० (स्त्री०) रुपये का चौथा हिस्सा, चवन्नी।
सूक्ष्म तत्० (वि०) पतला, छोटा, बारीक।—ता (स्त्री०) पतलापन, छोटापन।—दर्शी (वि०) चतुर, गुणी, मनीषी।
सूखड़ी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, पसी रोग।
सूखना दे० (क्रि०) निरस होना, बिगड़ना, खराब होना, कुम्हलाना, स्वादहीन होना।
सूखा दे० (पु०) नीरस, रसहीन, शुष्क, सड़ा गला। (पु०) अकाल, महँगी।
सूगा दे० (पु०) सुग्गा, तोता। [बतलाने वाला।
सूचक तत्० (पु०) बोधक, ज्ञापक, बताने वाला,
सूचना तत्० (स्त्री०) जनाना, चेतावनी, विज्ञापन। —पत्र (पु०) नोटिस, विज्ञापन। [हुआ।
सूचित तत्० (पु०) बताया गया, विज्ञापन दिया
सूची तत्० (पु०) सुई। [वाला पत्र, फीहक।
सूचीपत्र तत्० (पु०) बोधपत्रिका, बोधमपत्र, बताने
सूज दे० (स्त्री०) शोथ, फुलाव।
सूजन दे० (स्त्री०) सूज।
सूजना दे० (क्रि०) फूलना।
सूजा (पु०) बड़ी सुई, वेधी, सुतारी।
सूजी दे० (स्त्री०) मोटा आटा, दररा, रवा।
सूझ दे० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, निरख, परख, बुद्धि।
सूझना दे० (क्रि०) मालूम होना, दीख पड़ना, दृष्टिगत होना।

सूत तद्० (पु०) सूत्र, तागा, धागा, डोरा । (तद्०) सारथी, रथवाह, एक पौराणिक व्यास, ये नैमिषारण्य में रहते थे और महाभारत आदि की कथा सुनाते थे । इनको बलदेव ने मार डाला था ।
सूतक तद्० (पु०) अशौच, जनन और मरण की अशुद्धि ।
सूतना दे० (क्रि०) सोना, निद्रा आना ।
सूतल या सुतल तद्० (पु०) पाताल विशेष ।
सूतली दे० (स्त्री०) सन की रस्सी, डोरी ।
सूतिका तद्० (स्त्री०) प्रसूती स्त्री, जिसने हाल में बच्चा जना हो ।—गृह (पु०) घर जिसमें लड़का पैदा हो, जच्चा गृह ।
सूती दे० (वि०) सूत का बना, सीप, सुतही ।
सूत्र तद्० (पु०) सूत, धागा, तागा, डोरा, रीति, व्यवस्था, प्रबन्ध, व्याकरण के सूत्र ।—धार (पु०) नाटकाचार्य, नाटक का प्रबन्धक ।
सूथन या सूथना या सूथनी दे० (पु०) पायजामा ।
सूधा दे० (वि०) सीधा, सज्जन, निष्कपट ।
सूनु तद्० (पु०) पुत्र, आत्मज, तनय, बेटा, अनुज, छोटा भाई, रवि, सूर्य ।
सूना दे० (वि०) शून्य, उजाड़, रीता, खाली ।
सूनु (पु०) पुत्र, बेटा ।
सूप तद्० (पु०) शूर्प, अनाज पछोरने का एक साधन जो सिरकी या बाँस का बनता है । (तद्०) दाल ।—कार (पु०) रसोइया, पाचक ।
सूबा (पु०) प्रान्त, प्रदेश ।
सूम दे० (पु०) कृपण, कन्जूस, मक्खीचूस ।
सूर तद्० (पु०) सूर्य, रवि । (दे०) अन्धा, बिना आँख का, वीर, बहादुर ।—दास (पु०) एक कवि का नाम, ये अन्धे थे, इनका बनाया ग्रन्थ सूरसागर है । हिन्दी के कवियों में इनका आसन ऊँचा है ।—मलार (पु०) एक रागिणी का नाम ।
सूरज तद्० (पु०) सूर्य ।—गहन (पु०) सूर्यग्रहण ।
—मुखी (पु०) एक फूल के पौदे का नाम ।
सूरन तद्० (पु०) कन्द विशेष, जिमीकन्द ।
सूरमा दे० (पु०) वीर, सूर ।—पन (पु०) वीरता, बहादुरी ।
सूरा दे० (पु०) बांका, शूर, वीर, योद्धा । यथा:—
सूरा रथ में जाय के छोड़ा करो निशङ्क ।
ना मोंहि चढ़े रंडापरो ना तोहि चढ़े कलङ्क ।
सूरी (स्त्री०) शूली, खपड़ी ।
सूर्पणखा या सूर्पनखा (स्त्री०) रावण की बहिन ।
सूर्मा तद् (वि०) देखो सूरमा । [एक जाति ।
सूर्य तद् (पु०) रवि ।—वंशी (पु०) राजपूतों की
सूर्योदय तद्० (पु०) प्रात काल, प्रभात । [अवस्था ।
सूल तद्० (पु०) शूल, रोग विशेष, दुःख, हाल,
सूली तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का काँटा, प्राचीनकाल में जिस पर चढ़ा कर अपराधी को प्राण दण्ड दिया जाता था ।
सूसी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा ।
सूसुम दे० (वि०) थोड़ा गरम, कुनकुना । [का रंग ।
सूहा दे० (वि०) लाल, लाल रङ्ग, रक्त, एक प्रकार
सृष्ट (वि०) रचित, निर्मित ।
सृष्टि तद्० (स्त्री०) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव, संसार की रचना, कठपुतली नचाने वाला बाज़ीगर ।—कर्त्ता (पु०) ब्रह्मा, दुनिया का रचनेवाला ।
से दे० (अ०) अपादान बोधक, साथ, सङ्ग । [करना ।
सेंकना दे० (क्रि०) गरमाना, गरम करना, उष्ण
सेंगरी दे० (स्त्री०) फली, छीमी ।
सेंटा दे० पतला सरपत ।
सेंत दे० (अ०) बिना दाम, बिना मूल्य, बेदाम का ।
—मेंत (अ०) यों ही, बिना दाम ।
सेंध दे० (पु०) चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद ।
सेंधा दे० (पु०) नमक, लाहोरी नीमक ।
सेंधिया दे० (पु०) भेदिहर, गड़रिया, गवालियर महाराज की अल्ल ।
सेंधी दे० (पु०) खजूर का रस ।
सेचन तद्० (पु०) छिड़काव, सींचना ।
सेज दे० (पु०) शय्या, शयन, पलङ्ग, बिछौना, बिस्तर । [वाल ।
सेठ तद्० (पु०) श्रेष्ठ, साहूकार, महाजन, कोठी-
सेत तद्० (वि०) धवल, सफ़ेद, श्वेत, शुक्ल, यथा —
सेत सेत सबही भलो, सेतो भलो न केश ।
नारि रमे ना रिपु डरे, होतो क्लेश विशेष ॥

सुलगना दे० (क्रि०) दहकना, लहराना, जलना, धुँआ निकलना।
सुलगाना दे० (क्रि०) बालना, लहकाना, जलाना।
सुलझना दे० (वि०) सुधरना, सुजना।
सुलझाना दे० (क्रि०) उकेलना, सुधारना, खोलना।
सुलभ दे० (वि०) सुप्राप्य, कम कीमत, अल्पमूल्य, सहज, सुगम, आसान, सहल।—ता (स्त्री०) सुगमता।
सुलक्षण तत्० (पु०) शुभचिह्न।
सुलाना दे० (क्रि०) शयन कराना, पौढ़ाना।
सुवचन तत्० (पु०) विशद वचन, प्रिय वाणी।
सुवर्ण तत्० (वि०) सुजाति, अच्छी जाति, उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर। (पु०) सोना, काञ्चन।
सुवास तत्० (पु०) सुगन्ध, सुरभि।
सुवैया दे० (वि०) सोने वाला।
सुशील तत्० (वि०) उत्तम स्वभाव वाला।
सुश्री तत्० (वि०) सुन्दर, सजीला।
सुषुप्ति तत्० (स्त्री०) अवस्था विशेष, योगियों की ध्यानावस्था।
सुसकारना दे० (क्रि०) पुचकारना, फलकारना, फुफियाना, छोटे बच्चों को शौचादिक कराना।
सुसताना दे० (क्रि०) विश्राम करना, थकवाट उतारना।
सुसमय तत्० (पु०) अच्छा समय, सुकाल।
सुस्त दे० (वि०) शिथिल, ढीला, निर्बल, दुबला।
सुस्थ तत्० (वि०) नीरोग, अच्छा, भला, चंगा।
सुहराना दे० (क्रि०) बदन पर धीरे धीरे हाथ फेरना।
सुहाई (वि०) शोभायमान। (क्रि०) शोभित।
सुहाग तत्० (पु०) सौभाग्य, सधवापन।
सुहागन, या सुहागिन दे० (स्त्री०) सधवा स्त्री, जिसका पति वर्त्तमान हो।
सुहागा दे० (पु०) टंकन, क्षार विशेष। [भावन।
सुहाता दे० (वि०) अभीप्सित, इष्ट, चाहीता, मन-
सुहाना दे० (क्रि०) अच्छा मालूम होना।
सुहावना दे० (क्रि०) रुचना, लगना। (वि०) सुन्दर, मनभावन।
सुहृद् तत्० (पु०) मित्र, बन्धु, हितचिन्तक हित्।
सुआ दे० (पु०) तोता, सुग्गा, मोटा सीने का सूआ।
सुई दे० (स्त्री०) कपड़े सीने की सलाई, सूची
सुँगरा (पु०) पड़वा, भैंस का बछड़ा।
सूँघना दे० (क्रि०) नाक से किसी सुगन्धयुक्त की महक लेना। [ता
सूँघनी दे० (स्त्री०) हुलास, नास, सूँघने
सूँट दे० (स्त्री०) चुप्पी, मौन, अवाक्, नीरव।
सूँड़ तद्० (स्त्री०) शुण्ड, हाथी का कर।
सूँड़ी दे० (पु०) जाति विशेष जो मद्य बेचने का काम करते हैं, कलाल, कलवार। [का
सूँतना दे० (क्रि०) सोढ़ना, बटोरना, एक
सूँस दे० (पु०) जल जन्तु विशेष, जलहस्ति।
सूकट दे० (वि०) घटा, दुबला, चीमड़, (हुआ। [सो
सूकर (पु०) सुअर।—खेत (पु०) नगर वि
सूकी दे० (स्त्री०) रुपये का चौथा हिस्सा, चव
सूक्ष्म तत्० (वि०) पतला, छोटा, बारीक।—(स्त्री०) पतलापन, छोटापन।—दर्शी (वि० चतुर, गुणी, प्रवीण।
सूखड़ी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, पसी रोग।
सूखना दे० (क्रि०) निरस होना, बिगड़ना, खर होना, कुम्हलाना, स्वादहीन होना।
सूखा दे० (पु०) नीरस, रसहीन, शुष्क, सड़ा गव (पु०) अकाल, महँगी।
सूगा दे० (पु०) सुग्गा, तोता। [बतलाने वाला
सूचक तत्० (पु०) बोधक, ज्ञापक, बताने वाल
सूचना तत्० (स्त्री०) जनाना, चेतावनी, विज्ञापन —पत्र (पु०) नोटिस, विज्ञापन। [हुआ
सूचित तत्० (पु०) बताया गया, विज्ञापन दिय
सूची तत्० (पु०) सुई। [वाला पत्र, बीजक
सूचीपत्र तत्० (पु०) बोधपत्रिका, बोधमपत्र, जनाने
सूज दे० (स्त्री०) शोथ, फुलाव।
सूजन दे० (स्त्री०) सूज।
सूजना दे० (क्रि०) फूलना।
सूजा (पु०) बड़ी सुई, बेधी, सुतारी।
सूजी दे० (स्त्री०) मोटा आटा, दरदरा अन्न।
सूझ दे० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, निरख, परख, बुद्धि।
सूझना दे० (क्रि०) मालूम होना, दीख पड़ना, दृष्टिगत होना।

सूत तद्० (पु०) सूत्र, तागा, धागा, डोरा । (तद्०) सारथी, रथवाह, एक पौराणिक व्यास, ये नैमिषारण्य में रहते थे और महाभारत आदि की कथा सुनाते थे। इनको बलदेव ने मार डाला था।
सूतक तद्० (पु०) अशौच, जनन और मरण की अशुद्धि।
सूतना दे० (क्रि०) सोना, निद्रा आना।
सूतल या सुतल तद्० (पु०) पाताल विशेष।
सूतली दे० (स्त्री०) सन की रस्सी, डोरी।
सूतिका तद्० (स्त्री०) प्रसूती स्त्री, जिसने हाल में बच्चा जना हो।—गृह (पु०) घर जिसमें लड़का पैदा हो, अरिष्टा गृह।
सूती दे० (वि०) सूत का बना, सीप, सुतही।
सूत्र तद्० (पु०) सूत, धागा, तागा, डोरा, रीति, व्यवस्था, प्रबन्ध, व्याकरण के सूत्र।—धार (पु०) नाटकाचार्य, नाटक का प्रबन्धक।
सूथन या सूथना या सूथनी दे० (पु०) पायजामा।
सूधा दे० (वि०) भोला, सज्जन, निष्कपट।
सून तद्० (पु०) पुत्र, आत्मज, तनय, बेटा, अनुज, छोटा भाई, रवि, सूर्य।
सूना दे० (वि०) शून्य, उजाड़, रीता, खाली।
सूनु (पु०) पुत्र, बेटा।
सूप तद्० (पु०) शूर्प, अनाज पछोरने का एक साधन जो सिरकी या बाँस का बनता है। (तद्०) दाल।—कार (पु०) रसोइया, पाचक।
सूबा (पु०) प्रान्त, प्रदेश।
सूम दे० (पु०) कृपण, कन्जूस, मक्खीचूस।
सूर तद्० (पु०) सूर्य, रवि। (दे०) अन्धा, बिना आँख का, वीर, बहादुर।—दास (पु०) एक कवि का नाम, ये अन्धे थे, इनका बनाया ग्रन्थ सूरसागर है। हिन्दी के कवियों में इनका आसन ऊँचा है।—मलार (पु०) एक रागिणी का नाम।
सूरज तद्० (पु०) सूर्य।—गहन (पु०) सूर्यग्रहण।—मुखी (पु०) एक फूल के पौधे का नाम।
सूरन तद्० (पु०) कन्द विशेष, ज़िमीकन्द।
सूरमा दे० (पु०) वीर, सूर।—पन (पु०) वीरता, बहादुरी।
सूरा दे० (पु०) अंधा, शूर, वीर, योद्धा। यथा:—
सूरा रण में जाय के छोड़ा करो निशङ्क।
ना मोहि चढ़े रंडापरी ना तोहि चढ़े कलङ्क।
सूरी (स्त्री०) शूली, लकड़ी।
सूर्पणखा या सूर्पनखा (स्त्री०) रावण की बहिन।
सूर्मा तद् (वि०) देखो सूरमा। [एक जाति।
सूर्य तद् (पु०) रवि।—वंशी (पु०) राजपूतों की
सूर्योदय तद्० (पु०) प्रात काल, प्रभात। [अवस्था।
सूल तद्० (पु०) शूल, रोग विशेष, दर्द, हाल,
सूली तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का काँटा, प्राचीन-काल में जिस पर चढ़ा कर अपराधी को प्राण दण्ड दिया जाता था।
सूसी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा।
सूसुम दे० (वि०) थोड़ा गरम, कुनकुना। [का रंग।
सूहा दे० (वि०) लाल, लाल रंग, रक्त, एक प्रकार
सृष्ट (वि०) रचित, निर्मित।
सृष्टि तद्० (स्त्री०) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव, संसार की रचना, कठपुतली नचाने वाला बाजीगर।—कर्त्ता (पु०) ब्रह्मा, दुनिया का रचनेवाला।
से दे० (अ०) अपादान बोधक, साथ, सङ्ग। [करना।
सेंकना दे० (क्रि०) गरमाना, गरम करना, उष्ण
सेंगरी दे० (स्त्री०) फली, छीमी।
सेंटा दे० पतला सरपत।
सेंत दे० (अ०) बिना दाम, बिना मूल्य, बेदाम का।—मेंत (अ०) यों ही, बिना दाम।
सेंध दे० (पु०) चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद।
सेंधा दे० (पु०) नमक, लाहोरी नोमक।
सेंधिया दे० (पु०) भेदिहर, गड़रिया, गवालियर महाराज की अल्ल।
सेंधी दे० (पु०) खजूर का रस।
सेचन तद्० (पु०) छिड़काव, सींचना।
सेज दे० (पु०) शय्या, शयन, पलङ्ग, बिछौना, बिस्तर। [वाल।
सेठ तद्० (पु०) श्रेष्ठ, साहूकार, महाजन, कोठी-
सेत तद्० (वि०) धवल, सफ़ेद, श्वेत, शुभ्र, यथा —
सेत सेत सबही भलो, सेतो भलो न केश।
नारि रमे ना रिपु डरे, होतो ढंग विशेष॥

सुलगना दे० (क्रि०) दहकना, लहराना, जलना, धुँआ निकलना।
सुलगाना दे० (क्रि०) बालना, दहकाना, जलाना।
सुलझना दे० (वि०) सुधरना, सुलझना।
सुलझाना दे० (क्रि०) उकेलना, सुधारना, खोलना।
सुलभ दे० (वि०) सुप्राप्य, कम कीमत, अल्पमूल्य, सहज, सुगम, आसान, सहल।—ता (स्त्री०) सुगमता।
सुलक्षण तत्० (पु०) शुभचिह्न।
सुलाना दे० (क्रि०) शयन कराना, पौढ़ाना।
सुवचन तत्० (पु०) विशद वचन, प्रिय वाणी।
सुवर्ण तत्० (वि०) सुजाति, अच्छी जाति, उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर। (पु०) सोना, कांचन।
सुवास तत्० (पु०) सुगन्ध, सुरभि।
सुवैया दे० (वि०) सोने वाला।
सुशील तत्० (वि०) उत्तम स्वभाव वाला।
सुश्री तत्० (वि०) सुन्दर, सजीला।
सुषुप्ति तत्० (स्त्री०) अवस्था विशेष, योगियों की ध्यानावस्था।
सुसकारना दे० (क्रि०) पुचकारना, फनकारना, फुफियाना, छोटे बच्चों को शौचादिक कराना।
सुसताना दे० (क्रि०) विश्राम करना, थकवाट उतारना।
सुसमय तत्० (पु०) अच्छा समय, सुकाल।
सुस्त दे० (वि०) शिथिल, ढीला, निर्बल, दुबला।
सुस्थ तत्० (वि०) नीरोग, अच्छा, भला, चंगा।
सुहराना दे० (क्रि०) बदन पर धीरे धीरे हाथ फेरना।
सुहाई (वि०) शोभायमान। (क्रि०) शोभित।
सुहाग तत्० (पु०) सौभाग्य, सधवापन।
सुहागन, या सुहागिन दे० (स्त्री०) सधवा स्त्री, जिसका पति वर्त्तमान हो।
सुहागा दे० (पु०) टंकन, क्षार विशेष। [भावन।
सुहाता दे० (वि०) अभीप्सित, इष्ट, चाहीता, मन-
सुहाना दे० (क्रि०) अच्छा मालूम होना।
सुहावना दे० (क्रि०) रुचना, लगना। (वि०) सुन्दर, मनभावन।
सुहृद् तत्० (पु०) मित्र, बन्धु, हितचिन्तक, हित।
सूआ दे० (पु०) तोता, सुग्गा, बोरा सीने का सूजा।
सूई दे० (स्त्री०) कपड़े सीने की सलाई, सूची।
सूँगर (पु०) पड़वा, भैंस का बछड़ा।
सूँघना दे० (क्रि०) नाक से किसी सुगन्धयुक्त पदार्थ की महक लेना। [तमाकू
सूँघनी दे० (स्त्री०) हुलास, नास, सूँघने
सूँट दे० (स्त्री०) चुप्पी, मौन, चुपाप्, नीरव।
सूँड़ तद्० (स्त्री०) शुण्ड, हाथी का कर।
सूँड़ी दे० (पु०) जाति विशेष जो मद्य बेचने का काम करते हैं, कलाल, कलवार। [करना
सूँतना दे० (क्रि०) तोड़ना, बटोरना, एकत्रि
सूँस दे० (पु०) जल जन्तु विशेष, जलहस्ति।
सूकट दे० (वि०) सूखा, दुबला, चीमर्ख, सूखा हुआ। [सोटों
सूकर (पु०) सुअर।—खेत (पु०) नगर विशेष,
सूकी दे० (स्त्री०) रुपये का चौथा हिस्सा, चवन्नी।
सूक्ष्म तत्० (वि०) पतला, छोटा, बारीक।—ता (स्त्री०) पतलापन, छोटापन।—दर्शी (वि०) चतुर, गुणी, परीक्षक।
सूखड़ी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, बच्चों का रोग।
सूखना दे० (क्रि०) निरस होना, बिगड़ना, खराब होना, कुम्हलाना, स्वादहीन होना।
सूखा दे० (पु०) नीरस, रसहीन, शुष्क, सड़ा गला। (पु०) अकाल, महँगी।
सूगा दे० (पु०) सुग्गा, तोता। [बतलाने वाला।
सूचक तत्० (पु०) बोधक, ज्ञापक, बताने वाला,
सूचना तत्० (स्त्री०) जनाना, चेतावनी, विज्ञापन। —पत्र (पु०) नोटिस, विज्ञापन। [हुआ।
सूचित तत्० (पु०) बताया गया, विज्ञापन दिया
सूची तत्० (पु०) सुई। [वाला पत्र, फीहरू।
सूचीपत्र तत्० (पु०) बोधपत्रिका, बोधपत्र, बताने
सूज दे० (स्त्री०) शोथ, फुलाव।
सूजन दे० (स्त्री०) सूज।
सूजना दे० (क्रि०) फूलना।
सूजा (पु०) बड़ी सुई, बेधी, सुतारी।
सूजी दे० (स्त्री०) मोटा आटा, दरदरा आटा।
सूझ दे० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, निरख, परख, बुद्धि।
सूझना दे० (क्रि०) मालूम होना, दीख पड़ना, दृष्टिगत होना।

सूत तद्० (पु०) सूत्र, तागा, धागा, डोरा । (तत्०) सारथी, रथवाह, एक पौराणिक व्यास, ये नैमिषारण्य में रहते थे और महाभारत आदि की कथा सुनाते थे । इनको बलदेव ने मार डाला था ।

सूतक तत्० (पु०) अशौच, जनन और मरण की अशुद्धि ।

सूतना दे० (क्रि०) सोना, निद्रा आना ।

सूतल या सुतल तत्० (पु०) पाताल विशेष ।

सूतली दे० (स्त्री०) सन की रस्सी, डोरी ।

सूतिका तत्० (स्त्री०) प्रसूती स्त्री, जिसने हाल में बच्चा जना हो ।—गृह (पु०) घर जिसमें लड़का पैदा हो, जच्चा गृह ।

सूती दे० (वि०) सूत का बना, सीप, सुतही ।

सूत्र तत्० (पु०) सूत, धागा, तागा, डोरा, रीति, व्यवस्था, प्रबन्ध,व्याकरण के सूत्र ।—धार (पु०) नाटकाचार्य, नाटक का प्रबन्धक । •

सूथन या सूथना या सूथनी दे० (पु०) पायजामा ।

सूधा दे० (वि०) भोला, सज्जन, निष्कपट ।

सूनु तत्० (पु०) पुत्र, आत्मज, तनय, बेटा, अनुज, छोटा भाई, रवि, सूर्य ।

सूना दे० (वि०) शून्य, उजाड़, रीता, खाली ।

सूनु (पु०) पुत्र, बेटा ।

सूप तद्० (पु०) शूर्प, अनाज पछोरने का एक साधन जो सिरकी या बाँस का बनता है । (तत्०) दाल ।—कार (पु०) रसोइया, पाचक ।

सूबा (पु०) प्रान्त, प्रदेश ।

सूम दे० (पु०) कृपण, कञ्जूस, मक्खीचूस ।

सूर तत्० (पु०) सूर्य, रवि । (दे०) अन्धा, बिना आँख का, वीर, बहादुर ।—दास (पु०) एक कवि का नाम, ये अन्धे थे, इनका बनाया ग्रन्थ सूरसागर है । हिन्दी के कवियों में इनका आसन ऊँचा है ।—मलार (पु०) एक रागिणी का नाम ।

सूरज तद्० (पु०) सूर्य ।—गहन (पु०) सूर्यग्रहण । —मुखी (पु०) एक पुष्प के पौधे का नाम ।

सूरन तत्० (पु०) कन्द विशेष, जिमीकन्द ।

सूरमा दे० (पु०) वीर, शूर ।—पन (पु०) वीरता, बहादुरी ।

सूरा दे० (पु०) योधा, शूर, वीर, योद्धा । यथा —
सूरा रण में आय के खोहा करो निशङ्क ।
ना मोंहि चढ़े रंडापरी ना तोहि चढ़े कलङ्क ।

सूरी (स्त्री०) शूली, खपची ।

सूर्पणखा या सूर्पनखा (स्त्री०) रावण की बहिन ।

सूर्मा तत् (वि०) देखो सूरमा । [एक जाति ।

सूर्य तत् (पु०) रवि ।—वंशी (पु०) राजपूतों की

सूर्योदय तत्० (पु०) प्रात काल, प्रभात । [अवस्था ।

सूल तद्० (पु०) शूल, रोग विशेष, दर्द, हाल,

सूली तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का काँटा, प्राचीन काल में जिस पर चढ़ा कर अपराधी को प्राण दण्ड दिया जाता था ।

सूसी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा ।

सूसुम दे० (वि०) थोड़ा गरम, कुनकुना । [का रंग ।

सूहा दे० (वि०) लाल, लाल रङ्ग, रक्त, एक प्रकार

सृष्ट (वि०) रचित, निर्मित ।

सृष्टि तत्० (स्त्री०) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव, संसार की रचना, कठपुतली नचाने वाला बाजीगर ।—कर्त्ता (पु०) ब्रह्मा, दुनिया का रचनेवाला ।

से दे० (अ०) अपादान बोधक, साथ, सङ्ग । [करना ।

सेंकना दे० (क्रि०) गरमाना, गरम करना, उष्ण

सेंगरी दे० (स्त्री०) फली, छीमी । •

सेंटा दे० पतला सरपत ।

सेंत दे० (अ०) बिना दाम, बिना मूल्य, बेदाम का । —मेंत (अ०) यों ही, बिना दाम ।

सेंध दे० (पु०) चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद ।

सेंधा दे० (पु०) नमक, लाहोरी नीमक ।

सेंधिया दे० (पु०) भेदिहर, गड़रिया, गवालियर महाराज की पदवी ।

सेंधी दे० (पु०) खजूर का रस ।

सेचन तत्० (पु०) छिड़काव, सींचना ।

सेज दे० (पु०) शय्या, शयन, पलङ्ग, बिछौना, बिस्तर । [पात्र ।

सेठ तत्० (पु०) श्रेष्ठ, साहूकार, महाजन, कोठी

सेत तत्० (वि०) धवल, सफेद, श्वेत, शुभ्र यथा —
सेत सेत सबही कहै सेतो भलो न केश ।
नरि रमै ना रिपु डरै होगो कैस विशेष ॥

सेतना दे० (क्रि०) सुगाना, सञ्चय करना।
सेतु तद्० (पु०) बाँध, पुल, मर्यादा, सीमा, हद। वृक्ष विशेष।—बंध (पु०) तीर्थ विशेष, जिसे राम ने बनाया। [मक़सर।
सेनप तद्० (पु०) सेनापति, कप्तान, फ़ौज का
सेना तद्० (स्त्री०) कटक, दल, फौज, लश्कर। —पति (स्त्री०) सेनानी, सेना का अध्यक्ष। एक हिन्दी कवि का नाम। [कार्तिक स्वामी।
सेनानी तद्० (पु०) सेनापति, स्कन्ध, कार्तिकेय,
सेम दे० (पु०) तरकारी विशेष।
सेमल दे० (पु०) वृक्ष विशेष, सेमर का पेड़।
सेर दे० (पु०) सोलह छटाँक का परिमाण।
सेराना दे० (क्रि०) ठंडा करना, सिराना।
सेलखड़ी दे० (स्त्री०) सफ़ेद मिट्टी जिससे लड़के लिखते हैं।
सेला दे० (पु०) साफ़ा, जरी का मुँह बंधा, बर्छी, भाला, एक प्रकार का वाद्य।
सेव दे० (पु०) फल विशेष, एक प्रकार का पक्वान्न।
सेवक तद्० (पु०) भृत्य, नौकर, चाकर।
सेवकाई तद्० (स्त्री०) नौकरी, चाकरी, सेवा।
सेवड़ा दे० (पु०) जैन भिक्षुक, नमकीन पकवान, ठग।
सेवती दे० (स्त्री०) एक फूल का नाम।
सेवना दे० (क्रि०) सेवा करना, पालना पोसना, अण्डा पोसना।
सेवा तद्० (स्त्री०) नौकरी, चाकरी, टहल।
सेवार, सेवाल तद्० (पु०) एक प्रकार की घास जो नदियों में उगती है और जो चीनी साफ़ करने के काम में आती है, शैवाल, सियार।
सेवित (वि०) सेवा किया हुआ, पूजा किया हुआ।
सेवी (पु०) दास, पुजारी, सेवक।
सेव्य (वि०) सेवा के योग्य, पूज्य, उपास्य।—वीर (पु०) खसखस।
सेहरना दे० (क्रि०) चँवर डुलाना, चँवर हाँकना।
सेहरा दे० (पु०) एक प्रकार की जरी का मुकुट जो दूल्हा या वर के माथे पर बाँधा जाता है।
सेंहुआ तद्० (पु०) दाद, दद्रु। [परिमित।
सैकड़ा दे० (वि०) शतक, शतका, सौ संख्या से
सैंगर (स्त्री०) शमीवृक्ष या बबूल की फली।
सैंतना (क्रि०) होशियारी से रख छोड़ना।
सैंतालीस (वि०) चालीस और सात, ४७।
सैंतीस (वि०) ३० और ७, ३७।
सैन दे० (स्त्री०) सहकी, आँख या अँगुली का इ
सैना सैनी दे० (धा०) इशारे से बात करना
सैन्धव तद्० (पु०) लवण विशेष, लाहौरी घोड़ा, अश्व।
सैन्य तद्० (पु०) सेना, कटक, फौज।
सैसाँझ दे० (अ०) संध्या का प्रारम्भ, सन्ध्या प्रारम्भ में, सरिसाँझ।
सैहरन दे० (पु०) समाई, अटाव, स्थान।
सो दे० (सर्व०) यह, वही, पस, निशान।
सोअर दे० (पु०) सूतिका गृह, जिस घर में जनती है।
सोआ दे० (पु०) साग विशेष (क्रि०) शयन
सोई दे० (सर्व०) वही (क्रि०) सुती। [चिन्ह,
सो दे० (अ०) से, साथ, ब्रजभाषा में अपा
सोंटा दे० (पु०) छोटी मोटी लाठी, डण्डा।
सोंठ तद्० (पु०) शुण्ठी, सूखा अदरक।
सोंठराय दे० (पु०) कंजूस, कृपण।
सोंधना दे० (क्रि०) मट्टी से कपड़ा मलना, बरतन को गरम करना। [इ
सोंधा दे० (वि०) सुगन्ध विशेष।—हट (
सोंपना दे० (क्रि०) दे देना, हवाले करना।
सोंह दे० (स्त्री०) सौगन्ध, शपथ।
सोंही दे० (पु०) सामने, आगे, प्रत्यक्ष। [
सोखना दे० (क्रि०) शोषण करना, चूसना,
सोग दे० (पु०) दुःख, चिन्ता, शोच, शोक।
सोच दे० (पु०) शोक, दुःख, चिन्ता।
सोचना (क्रि० अ०) ख़याल करना, समझना, विचारना, ध्यान करना।
सोझ (पु०) सूझ, समझ।
सोझा दे० (पु०) सीधा, सामने खड़ा।
सोड़ा (पु०) एक खार वस्तु विशेष।
सोत तद्० (पु०) धारा, प्रवाह, स्रोत।
सोदर तद्० (पु०) सहोदर, एक माँ के लड़के।
सोध तद्० (पु०) सुधि, खोज, शोध

ाधना दे० (क्रि०) शोधन करना।
ान तद्० (पु०) शोण, एक नदी का नाम।—हुरा
या हुला (पु०) सोने का, सोने का पना।
ाना तद्० (वि०) सुवर्ण, काञ्चन, हिरण्य।—माखी
(स्त्री०) औषध विशेष।
र दे० (पु०) सुनार, सुवर्णकार। [शोधक।
ानिया दे० (पु०) सोनार, स्वर्णकार, सोना
तद्० (पु०) सीढ़ी, निसेनी, झीना।
ाना दे० (क्रि०) सजना, सोहना, अच्छा दिखाई
देना।
तद्० (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा, विधु, इन्दु, लता
विशेष, जो पहले के महर्षियों की दृष्टि से बड़े
आदर की वस्तु थी।—नाथ (पु०) गुजरात
के सोमपट्टन नामक स्थान में शिवजी की मूर्ति
विशेष।—वार (पु०) चन्द्रवार, दूसरा दिन।
—वारी (स्त्री०) सोमवती अमावास्या।
ठ दे० (पु०) एक रागिनी का नाम।
ठा दे० (पु०) छन्द विशेष। इसके पहले और
तीसरे पाद में ११ दूसरे और चौथे पाद में १३
मात्राएँ होती हैं। दोहा को उलट कर पढ़ने से
यह छन्द हो जाता है।
ह, सोलह (वि०) दस और छ, १६।
ासि दे० सो हो, सो तू है।
ाह दे० (क्रि०) शोभा पाता है, शोभायमान होता है।
ाहन दे० (वि०) सज्जन, प्यारा, रैती।
ाहना दे० (क्रि०) शोभना, अच्छा मालूम होना,
सजना।
ोहनी तद्० (स्त्री०) रागिनी विशेष।—करना
(वि०) निराना, बोये हुए खेत से घास निकालना।
ोहर दे० (पु०) राग विशेष, वह गीत जो बचा
उत्पन्न होने पर गाया जाता है।
ोहागा (पु०) पदार्थ विशेष जो सोना चाँदी आदि
कई एक धातुओं को गलाने के काम में आता है।
ोहिल (पु०) एक राग का नाम।
ोहारी दे० (स्त्री०) पूरी, लुचई।
ौ दे० (वि०) शत, १००।
ौख्य (पु०) आराम, सुख।
(पु०) सौंह, शपथ।

सौंपना दे० (क्रि०) समर्पण करना, धरना, रखना।
सौंफ दे० (स्त्री०) औषध विशेष।
सौंरा दे० (पु०) कागज, कागद, भुज। [धननम।
सौरि (स्त्री०) बालक उत्पन्न होने वाला सूतक, शौच
सौरी (स्त्री०) प्रसूति, जच्चा।
सौंह (स्त्री०) सौगन्ध, शपथ।
सौगन्द दे० (पु०) शपथ, किरिया, आन।
सौच तद्० (पु०) शौच, शुद्धता, शुद्धि।
सौजन्य तद्० (पु०) सुजनता, साधुता, साधुपन।
सौत, सौतिन दे० (स्त्री०) सपत्नी।
सौतियाडाह (पु०) सौतों का आपस में डाह, ईर्ष्या।
सौतेला दे० (वि०) सौत से जन्मा।
सौतेली दे० (वि०) सौत सम्बन्धी।—माता दे०
(स्त्री०) विमाता, दूसरी माँ।
सौदामिनी (स्त्री०) विद्युत्, बिजली। [प्रासाद।
सौध (पु०) राजमन्दिर, देवमन्दिर, कोठा, महल,
सौनिक (पु०) व्याध, वधिक, कसाई, बहेलिया।
सौन्दर्य तद्० (पु०) सुन्दरता, मनोहरता।
सौभाग्य तद्० (पु०) भागवानी, अच्छा भाग्य।
—वती (स्त्री०) सुहागिन, सधवा।
सौमित्र (पु०) लक्ष्मण।
सौम्य (पु०) बुध (वि०) सुशील, मनोहर, सुन्दर।
—ता (स्त्री०) सुशीलता, सीधापन।
सौर तद्० (पु०) सूर्य सम्बन्धी।
सौरभ तद्० (पु०) सुगन्ध, सुवास।
सौरमास (पु०) एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति
तक का समय।
सौरि, सौरी दे० (स्त्री०) प्रसूतिका गृह, वह घर
जिसमें बच्चा जना जाय।
सौवचल (पु०) काला निमक।
सौहार्द (पु०) दोस्ती, मैत्री।
स्कन्ध तद्० (पु०) काँध, कन्धा, पेड़ का धड़, जहाँ
से शाखा निकलती है।
स्खलन तद्० (पु०) पतन, गिरन, गिरना।
स्खलित तद्० (वि०) गिरा, पतित। (पु०)
अशुद्धि।
स्तन तद्० (पु०) चूँची, पयोधर, थन।—पायी
(पु०) दूध पीने वाला बच्चा।

सेतना दे० (क्रि०) सुगाना, सग्रह करना।
सेतु तद्० (पु०) बाँध, पुल, मर्यादा, सीमा, हद। वृक्ष विशेष।—बन्ध (पु०) तीर्थ विशेष, जिसे राम ने बनाया। [अफ़सर।
सेनप तद्० (पु०) सेनापति, कप्तान, फ़ौज का
सेना तद्० (स्त्री०) कटक, दल, फ़ौज, लश्कर। —पति (स्त्री०) सेनानी, सेना का अध्यक्ष। एक हिन्दी कवि का नाम। [कार्तिक स्वामी।
सेनानी तद्० (पु०) सेनापति, स्कन्द, कार्तिकेय,
सेब दे० (पु०) तरकारी विशेष।
सेमल दे० (पु०) वृक्ष विशेष, सेमर का पेड़।
सेर दे० (पु०) सोलह छटाँक का परिमाण।
सेराना दे० (क्रि०) ठंडा करना, सिराना।
सेलखड़ी दे० (स्त्री०) सफ़ेद मिट्टी जिससे लड़के लिखते हैं।
सेला दे० (पु०) साफ़ा, धरी या मुँह बचा, बर्छी, भाला, एक प्रकार का धान।
सेव दे० (पु०) फल विशेष, एक प्रकार का फल।
सेवक तद्० (पु०) भृत्य, नौकर, चाकर।
सेवकाई तद्० (स्त्री०) नौकरी, चाकरी, सेवा।
सेवड़ा दे० (पु०) जैन भिक्षुक, नमकीन पकवान, ठग।
सेवती दे० (स्त्री०) एक फूल का नाम।
सेवना दे० (क्रि०) सेवा करना, पालना पोसना, अण्डा पोसना।
सेवा तद्० (स्त्री०) नौकरी, चाकरी, टहल।
सेवार, सेवाल तद्० (पु०) एक प्रकार की घास जो नदियों में उगती है और जो चीनी साफ़ करने के काम में आती है, शैवाल, सिवार।
सेवित (वि०) सेवा किया हुआ, पूजा किया हुआ।
सेवी (पु०) दास, पुजारी, सेवक।
सेव्य (वि०) सेवा के योग्य, पूज्य, उपास्य।—वीर (पु०) खसखस।
सेहथना दे० (क्रि०) चँवर डुलाना, चँवर हाँकना।
सेहरा दे० (पु०) एक प्रकार की जरी का मुकुट जो दूल्हा या वर के माथे पर बाँधा जाता है।
सेंहुआ तद्० (पु०) दाद, दद्रु। [परिमित।
सैकड़ा दे० (वि०) शतक, शतकड़ा, सौ संख्या से
सैगर (स्त्री०) शमीवृक्ष या बबूल की फली।

सैंतना (क्रि०) टेढ़ियारी से हल जोड़ना।
सैंतालीस (वि०) चालीस और सात, ४७।
सैंतीस (वि०) ३० और ७, ३७।
सैन दे० (स्त्री०) सहकी, आँख या अँगुली का
सैना सैनी दे० (अ०) इशारे से बात करना
सैन्धव तद्० (पु०) लवण विशेष, लाहौरी घोड़ा, अश्व।
सैन्य तद्० (पु०) सेना, कटक, फ़ौज।
सैसांझ दे० (अ०) सन्ध्या का प्रारम्भ स[...] प्रारम्भ में, सरिसाँझ।
सैदरन दे० (पु०) समाई, अटाव, स्थान।
सैा दे० (सर्व०) यह, येही, पता, निशान।
सोअर दे० (पु०) सूतिका गृह, जिस घर में [...] जनती हैं।
सोआ दे० (पु०) साग विशेष (क्रि०) शयन
सोई दे० (सर्व०) वही (क्रि०) सुती। [चिन्ह,
सो दे० (अ०) से, साथ, ब्रजभाषा में अपा[...]
सोंटा दे० (पु०) मोटी मोटी लाठी, डण्डा।
सोंठ तद्० (पु०) शुण्ठी, सूखा अदरक।
सोंठराव दे० (पु०) कंजूस, कृपण।
सोंधना दे० (क्रि०) मट्टी से कपड़ा मलना, बर्तन को गाम करना।
सोंधा दे० (वि०) सुगन्ध विशेष।—हट (
सोंपना दे० (क्रि०) दे देना, हवाले करना।
सोंह दे० (स्त्री०) सौगन्ध, शपथ।
सोंही दे० (गु०) सामने, आगे, प्रत्यक्ष।
सोखना दे० (क्रि०) शोषण करना, चूसना
सोग दे० (पु०) दुःख, चिन्ता, शोच, शोक
सोच दे० (पु०) शोक, दुःख, चिन्ता।
सोचना (क्रि० अ०) ख़याल करना, स[...] विचारना, ध्यान करना।
सोज (पु०) सूजन, सतम।
सोझा दे० (गु०) सीधा, सामने खड़ा।
सोडा (पु०) एक खार वस्तु विशेष।
सोत तद्० (पु०) धारा, प्रवाह, स्रोत।
सोदर तद्० (पु०) सहोदर, एक माँ के लड़के
सोध तद्० (पु०) शुद्धि, हाल, खोज, [...] अन्वेषण, पता।

। दे० (क्रि०) शोधन करना।
तद्० (पु०) शोण, एक नदी का नाम।—हुरा
या हुला (गु०) सोने का, सोने का बना।
। तद्० (वि०) सुवर्ण, काञ्चन, हिरण्य।—माखी
(स्त्री०) औषध विशेष।
ार दे० (पु०) सुनार, सुवर्णकार। [शोधक।
दे० (पु०) सोनार, स्वर्णकार, सोना
ान तद्० (पु०) सीढ़ी, निसेनी, ज़ीना।
. दे० (क्रि०) सजना, सोहना, अच्छा दिखाई
देना।
तद्० (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा, विधु, इन्द्र, लता
विशेष, जो पहले के महर्षियों की दृष्टि से बड़े
आदर की वस्तु थी।—नाथ (पु०) गुजरात
के सोमपट्टन नामक स्थान में शिवजी की मूर्ति
विशेष।—वार (पु०) चन्द्रवार, दूसरा दिन।
—वारी (स्त्री०) सोमवती अमावास्या।
ठ दे० (पु०) एक रागिनी का नाम।
ठा दे० (पु०) छन्द विशेष। इसके पहले और
तीसरे पाद में ११ दूसरे और चौथे पाद में १३
मात्राएँ होती हैं। दोहा को उलट कर पढ़ने से
यह छन्द हो जाता है।
ह, सोलह (वि०) दस और छ, १६।
से दे० सो हो, सो तू है।
ह दे० (क्रि०) शोभा पाता है, शोभायमान होता है।
दे० (वि०) सज्जन, प्यारा, रेती।
ा दे० (क्रि०) शोभना, अच्छा मालूम होना,
सजना।
हनी तद्० (स्त्री०) रागिनी विशेष।—करना
(वि०) निराना,बोये हुए खेत से घास निकालना।
हर दे० (पु०) राग विशेष, वह गीत जो बच्चा
उत्पन्न होने पर गाया जाता है।
हागा (पु०) पदार्थ विशेष जो सोना चाँदी आदि
कई एक धातुओं को गलाने के काम में आता है।
ाहिल (पु०) एक राग का नाम।
ाहारी दे० (स्त्री०) पूरी, लुचई।
ी दे० (वि०) शत, १००।
(पु०) आराम, सुख।
(पु०) सौंह, शपथ।

सौंपना दे० (क्रि०) समर्पण करना, धरना, रखना।
सौंफ दे० (स्त्री०) औषध विशेष।
सौंरा दे० (पु०) कागज़, कागद, भूर्ज। [बनना।
सौंरि (स्त्री०) बालक उत्पन्न होने वाला सूतक,शौच
सौंरी (स्त्री०) प्रसूति, जच्चा।
सौंह (स्त्री०) सौगन्ध, शपथ।
सौगन्द दे० (पु०) शपथ, किरिया, आन।
सौच तद्० (पु०) शौच, शुद्धता, शुद्धि।
सौजन्य तद्० (पु०) सुजनता, साधुता, साधुपन।
सौत, सौतिन दे० (स्त्री०) सपत्नी।
सौतियाडाह (पु०) सौतों का आपस में डाह, ईर्ष्या।
सौतेला दे० (वि०) सौत से जन्मा।
सौतेली दे० (वि०) सौत सम्बन्धी।—माता दे०
(स्त्री०) विमाता, दूसरी माँ।
सौदामिनी (स्त्री०) विद्युत, बिजली। [प्रासाद।
सौध (पु०) राजमन्दिर, देवमन्दिर, कोठा, महल,
सौनिक (पु०) व्याध, बधिक, कसाई, बहेलिया।
सौन्दर्य तद्० (पु०) सुन्दरता, मनोहरता।
सौभाग्य तद्० (पु०) भागवानी, अच्छा भाग्य।
—वती (स्त्री०) सुहागिन, सधवा।
सौमित्र (पु०) लक्ष्मण।
सौम्य (पु०) बुध (वि०) सुशील, मनोहर, सुन्दर।
—ता (स्त्री०) सुशीलता, सीधापन।
सौर तद्० (पु०) सूर्य सम्बन्धी।
सौरभ तद्० (पु०) सुगन्ध, सुवास।
सौरमास (पु०) एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति
तक का समय।
सौरि, सौरी दे० (स्त्री०) प्रसूतिका गृह, वह घर
जिसमें बच्चा जना जाय।
सौवचल (पु०) काला निमक।
सौहार्द (पु०) दोस्ती, मैत्री।
स्कन्ध तद्० (पु०) काँध, कन्धा, पेड़ का धड़, जहाँ
से शाखा निकलती है।
स्खलन तद्० (पु०) पतन, गिरन, गिरना।
स्खलित तद्० (वि०) गिरा, पतित। (पु०)
अशुद्धि।
स्तन तद्० (पु०) चूँची, पयोधर, थन।—पायी
दूध पीने वाला बच्चा।

(क्रि०) बहना, गिरना, भूना।
० (पु०) सोत, धारा, प्रवाह, सोता।
(सर्व०) अपना। (पु०) निज धन।
तत्० (वि०) अपना, अपने सम्बन्ध का।
तत्० (स्त्री०) नायिका विशेष।
तत्० (वि०) निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल।—ता
स्त्री०) निर्मलता, सफाई, उज्ज्वलता।
तत्० (पु०) स्वेच्छानुसार वर्तने वाला,
ी, स्वाधीन, मनमौजी।—ता (स्त्री०)
स्वाधीनता।
तत्० (पु०) बन्धु, मित्र।
(पु०) अपने गोत्र वाला, अपनी जाति
।
(अ०) अपने से, स्वाभाविक, स्वभाव से।
तत्० (वि०) स्वाधीन, अपने वश।—ता
स्त्री०) स्वाधीनता।
पु०) अधिकार, स्वत्व।—ापहरण (पु०)
ी, अधिकार हर लेना।
तत्० (पु०) अपना धर्म।
(स्त्री०) पितरों को पिण्डदान करने का
। (स्त्री०) अग्नि की दो स्त्रियों में से एक स्त्री
नाम। [वस्था के विचार।

—पताली (स्त्री०) ऐंचाताना जिसकी आँखें नीचे ऊपर तनी होती हैं।—वास (पु०) मरण, मृत्यु, स्वर्ग में रहना।
स्वर्गीय तत्० (वि०) स्वर्ग सम्बन्धी।
स्वर्ण तत्० (पु०) सोना, कंचन, हेम।—कार (पु०) सुनार।—मुद्रा (स्त्री०) मोहर, अशर्फी, गिन्नी।
स्वल्प तत्० (वि०) थोड़ा, तनिक, ज़रासा।
स्ववश (वि०) स्वतंत्र, स्वाधीन।
स्वस्ति तत्० (अ०) कल्याण, मङ्गल, भलाई।—वाचन (पु०) कल्याणार्थ वैदिक मन्त्रों का पाठ।—वाचक (पु०) मङ्गलपाठकर्ता।
स्वस्त्ययन (पु०) मङ्गलपाठ, शुभस्थान।
स्वस्थ (वि०) निरोगी, सुखी रहने वाला।
स्वाँग दे० (पु०) अनुकरण, नक़ल, भड़ैती, तमाशा।
स्वागत तत्० (पु०) अतिथि सत्कार, आदर, सम्मान।
स्वाति तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष चन्द्रमा की स्त्री।
स्वाद तत्० (पु०) सवाद, रस।—युक्त (गु०) स्वादयुक्त, स्वाद, सरस, ज़ायकेदार, मज़ेदार।
स्वादु तत्० (वि०) सवाद, ज़ायका।
स्वादिष्ट (वि०) मज़ेदार, ज़ायकेदार, रसीला, मीठा।

स्तब्ध त॰ (पु॰) कुंठित, हक्काबक्का, रुका हुआ।
स्तमित तद्॰ (वि॰) स्तब्ध, स्थिर, अचञ्चल।
स्तम्भ तद्॰ (पु॰) खंभा, रुकाव, अटकाव, थंभा।
स्तम्भन तद्॰ (पु॰) रुकाव, अटकाव, तन्त्र विशेष, काम शास्त्र की क्रिया विशेष।
स्तव तद्॰ (पु॰) स्तुति, प्रशंसा, बखान, गुणगान।
स्तवक तद्॰ (पु॰) गुच्छा, फूलों का गुच्छा।
स्तावक तद्॰ (पु॰) स्तुतिकर्त्ता, भाट, चारण, बन्दी।
स्तुति तद्॰ (स्त्री॰) बखान, स्तव।
स्तुत्य तद्॰ (वि॰) स्तुति योग्य, स्तवनीय, बखान के योग्य।
स्तेय (पु॰) चौरकर्म, चोरी।
स्तोत्र तद्॰ (पु॰) स्तव, स्तुति।
स्त्री तद्॰ (स्त्री॰) नारी, लुगाई, वनिता।—धन (पु॰) दायजा, दहेज, दहेज में स्त्री को मिला दान।—पुष्प (पु॰) रजोधर्म, मासिक धर्म।
स्त्रैण तद्॰ (पु॰) स्त्री वश, स्त्री का अधीन।
स्थगित तद्॰ (वि॰) थका, छिपा, रोका।
स्थपति तद्॰ (पु॰) शिल्पी, बढ़ई।
स्थल तद्॰ (पु॰) भूमि, सूखी भूमि।
स्थाणु तद्॰ (पु॰) ठूठा वृक्ष, शिव, महादेव।
स्थान तद्॰ (पु॰) ठौर, ठाँव, ठिकाना, घर।
स्थानापन्न तद्॰ (पु॰) प्रतिनिधि, किसी दूसरे के स्थान पर काम करने वाला।
स्थापत्य विद्या तद्॰ (स्त्री॰) भवन निर्माणविद्या।
स्थापन तद्॰ (पु॰) रखना, धरना, बैठाना।
स्थापना तद्॰ (स्त्री॰) प्रतिष्ठा, स्थिति, देव आदि की स्थापना करना।
स्थापित तद्॰ (वि॰) प्रतिष्ठा किया हुआ, रखा गया।
स्थाली तद्॰ (स्त्री॰) पाकपात्र, हाँडी, बटुई, बट लोही, पतीली।
स्थावर तद्॰ (पु॰) अचल, नहीं चलने वाला।
स्थित (वि॰) ठहरा हुआ।
स्थिति तद्॰ (स्त्री॰) स्थान, टिकाव, ठहराव।
स्थिर तद्॰ (वि॰) अचल, अटल।—ता (स्त्री॰) धीमापन।
स्थूणा दे॰ (पु॰) खंभा, खूँटी।
स्थूल तद्॰ (वि॰) मोटा।

स्थैर्य तद्॰ (पु॰) स्थिरता, अचलता।
स्थौल्य तद्॰ (पु॰) स्थूलता, मोटापन
स्नातक तद्॰ (पु॰) ब्रह्मचर्य व्रत समा स्थाश्रम में प्रवेश करने वाला।
स्नान तद्॰ (पु॰) नहाना, नहान, अव
स्नायी (वि॰) स्नान करने वाला।
स्नायु (पु॰) रग, नस।
स्निग्ध (वि॰) चिकना, दयालु।
स्नेह तद्॰ (पु॰) सनेह, प्रेम चिकनाई,
स्पन्द तद्॰ (पु॰) कम्प, चञ्चलता।
स्पर्द्धा तद्॰ (स्त्री॰) हिर्स, डाह, अन्यन उन्नति देख कर दुःख पाना।
स्पर्श तद्॰ (पु॰) छूना, छुआवट।
स्पष्ट तद्॰ (वि॰) साफ़, प्रकाश, सहज,
स्पृश्य (वि॰) छूने योग्य।
स्पृहा तद्॰ (स्त्री॰) इच्छा, अभिलाष
स्पृही (वि॰) अभिलाषी, वाञ्छितार्थ।
स्फटिक तद्॰ (पु॰) बिल्लौरी पत्थर, स्व विशेष।
स्फुट तद्॰ (वि॰) खिला हुआ, प्रकट, प्रका
स्फुटन तद्॰ (पु॰) प्रकाशन, खिलन, फू
स्फूर्ति तद्॰ (स्त्री॰) धड़कन, फुरण, फरक
स्फोटक तद्॰ (पु॰) फोड़ा, फुँसी, घाव।
स्मर तद्॰ (पु॰) कामदेव, मदन, मन्मथ (पु॰) महादेव, शिव।
स्मरण तद्॰ (पु॰) सुध, चेत, स्मृति, —शक्ति (स्त्री॰) यादृदाश्त, याद र सामर्थ्य।
स्मारक तद्॰ (पु॰) स्मरण कराने वाला, बो
स्मार्त (वि॰) स्मृति उक्त धर्मानुयायी।
स्मित तद्॰ (पु॰) थोड़ा हँसना, मुसकाना।
स्मृति तद्॰ (स्त्री॰) स्मरण, यादृदाश्त, ध मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य आदि।
स्यानपन दे॰ (पु॰) निपुणता, बुद्धिमता, चतुराई, चालाकी।
स्याना दे॰ (पु॰) सियाना, चतुर।
स्यार, स्याल तद्॰ (पु॰)

(क्रि॰) बहना, गिरना, भूना।
(पु॰) सोत, धारा, प्रवाह, सोता।
(सर्व॰) अपना। (पु॰) निज धन।
(वि॰) अपना, अपने सम्बन्ध का।
(स्त्री॰) नायिका विशेष।
(वि॰) निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल।—ता
) निर्मलता, सफाई, उज्ज्वलता।
(पु॰) स्वेच्छानुसार बर्तने वाला,
, स्वाधीन, मनमौजी।—ता (स्त्री॰)
, स्वाधीनता।
(पु॰) बन्धु, मित्र।
(पु॰) अपने गोत्र वाला, अपनी जाति
।
(अ॰) अपने से, स्वाभाविक, स्वभाव से।
(वि॰) स्वाधीन, अपने वश।—ता
) स्वाधीनता।
) अधिकार, दखल।—ापहरण (पु॰)
, अधिकार हटा देना।
(पु॰) अपना धन।
(अ॰) पितरों को पिण्डदान करने का
(स्त्री॰) अग्नि की दो स्त्रियों में से एक स्त्री
नाम। [वस्था के विचार।
(पु॰) शयन, निद्रा, नींद, सपना, निद्रा
तद्॰ (पु॰) प्रकृति, टेव, बान।
(अ॰) आप, निज, खुद।—भू (पु॰)
उत्पन्न होने वाला, विष्णु, शिव, कामदेव।
(पु॰) स्वेच्छानुसार वरण, एक प्रकार
विवाह, जो पहले समय में प्रचलित था।
निमन्त्रित विवाहार्थियों में से अपने इच्छा
अपना पति वरण कर लेती थी।
सिद्ध (पु॰) जिसको प्रमाणित करने के लिये
अन्य प्रमाण की आवश्यकता न हो।
(पु॰) शब्द, अकार आदि मोखिक वर्ण,
, नाद, स्वर्ग, आकाश।
(पु॰) उच्चारण विशेष, अधिक उच्च
[सुन्दरता।
तद्॰ (पु॰) अपना रूप समान रूप, शोभा,
(पु॰) देवलोक, इन्द्रलोक, परलोक।

—पताली (स्त्री॰) ऐंचाताना जिसकी आँखें नीचे ऊपर तनी होती हैं।—वास (पु॰) मरण, मृत्यु, स्वर्ग में रहना।
स्वर्गीय तद्॰ (वि॰) स्वर्ग सम्बन्धी।
स्वर्ण तद्॰ (पु॰) सोना, कंचन, हेम।—कार (पु॰) सुनार।—मुद्रा (स्त्री॰) मोहर, अशर्फी, गिन्नी।
स्वल्प तद्॰ (वि॰) थोड़ा, तनिक, ज़रासा।
स्ववश (वि॰) स्वतंत्र, स्वाधीन।
स्वस्ति तद्॰ (अ॰) कल्याण, मङ्गल, भलाई।—वाचन (पु॰) कल्याणार्थ वैदिक मन्त्रों का पाठ।—वाचक (पु॰) मङ्गलपाठकर्त्ता।
स्वस्त्ययन (पु॰) मङ्गलपाठ, शुभस्थान।
स्वस्थ (वि॰) निरोगी, सुखी रहने वाला।
स्वाँग दे॰ (पु॰) अनुकरण, नक़ल, भड़ैती, तमाशा।
स्वागत तद्॰ (पु॰) अतिथि सत्कार, आदर, सम्मान।
स्वाति तद्॰ (स्त्री॰) नक्षत्र विशेष चन्द्रमा की स्त्री।
स्वाद तद्॰ (पु॰) सवाद, रस।—युक्त (गु॰) स्वादयुक्त, स्वाद, सरस, ज़ायकेदार, मज़ेदार।
स्वादु तद्॰ (वि॰) सवाद, ज़ायका।
स्वादिष्ट (वि॰) मज़ेदार, ज़ायकेदार, रसीला, मीठा।
स्वाधीन (वि॰) स्वतन्त्र, खुदमुख्तार।—ता (स्त्री॰) स्वतंत्रता।
स्वाभाविक तद्॰ (वि॰) स्वभाव सिद्ध, स्वभाव से उत्पन्न।
स्वामी तद्॰ (पु॰) मालिक, प्रभु, रक्षक।
स्वार्थ तद्॰ (पु॰) अपना अर्थ, अभिप्राय।—ी (वि॰) स्वार्थ युक्त।
स्वावस तद्॰ (पु॰) श्वास, प्राण वायु।
स्वास (पु॰) मुख से निकलने वाली शरीर के भीतर की हवा।
स्वास्थ्य (पु॰) तनदुरुस्ती, आरोग्यता, सुख, सन्तोष। [भस्म।
स्वाहा (अ॰) हवन के समय बोला जाने वाला शब्द,
स्वीकार तद्॰ (पु॰) अङ्गीकार, मानना, मञ्जूर।
स्वीकृत (पु॰) मञ्जूर किया हुआ।
स्वीकृति (स्त्री॰) मञ्जूरी।

स्वेच्छा तत्० (स्त्री०) यथेच्छाचार, स्वाधीनता ।
स्वेद तत्० (पु०) पसीना ।—ज (पु०) स्वेद से उत्पन्न कीट ।
स्वैर तत्० (पु०) स्वेच्छानुसार वर्तने वाला, स्वच्छन्द दुराचारी ।—णी (स्त्री०) कुलटा, बदचलन
स्वैरी तत्० (स्त्री०) स्वेच्छाचारिणी, व्यभिचारिणी

ह

ह हल् वर्ण का तेंतीसवाँ अक्षर, कण्ठस्थान से उच्चार्य होने के कारण इसको कण्ठ्य कहते हैं ।
हँकाना दे० (क्रि०) हाँकना, निकालना, बैल आदि को चलाना ।
हँकार तत्० (पु०) बैल आदि का शब्द, राँभना ।
हँकारना दे० (क्रि०) हाँकना ।
हँकैल दे० (वि०) हाँकने वाला ।
हंस तत्० (पु०) मराल पक्षी, आत्मा, जीव ।—क (पु०) स्वर्ण कंकण, बिछिया, बिछुआ ।—गामिनी (स्त्री०) हंस की तरह चाल चलने वाली ।—ध्वज (पु०) ब्रह्मा, राजा विशेष ।
हँसना दे० (क्रि०) हँसी करना, मुस्कुराना ।
हँसमुख (वि०) प्रसन्न वदन, हँसोड़ा ।
हँसा दे० (पु०) हँसी, हास्य, मुस्कुराहट ।
हँसाई दे० (स्त्री०) हँसी, ठठोली ।
हँसिया, हँसुआ दे० (पु०) दाँती, दराती, खेत काटने या तरकारी बनाने का औजार ।
हँसाड़ दे० (वि०) ठठोल, हँसमुख ।
हँसोड़ा दे० (वि०) ठठोलबाज, हँसमुख, दिल्लगी करने वाला ।
हँसौंधा दे० (पु०) ठठोली, हँसोड़पन ।
हँडा (पु०) ताँबे या पीतल का बड़ा पात्र ।
हकबकाना दे० (क्रि०) घबड़ाना, उद्विग्न होना, व्याकुल होना, खड़बड़ाना ।
हकराया दे० (क्रि०) बुलवाया ।
हकला दे० (वि०) तुतला, लड़बड़ा ।
हकलाना दे० (क्रि०) हकरना, तुतलाना, ठहर ठहर कर बोलना ।
हकलाहा (वि०) देखो हकला ।
हकाना (क्रि०) हटाना, भगाना ।
हकारना दे० (क्रि०) खदेड़ना, दौड़ाना, भगाना ।
हकिया दे० (वि०) कड़ा, कड़ुआ ।
हकाबका दे० (क्रि०) घबड़ाया, व्याकुल, उद्विग्न
हगना दे० (क्रि०) झाड़ा फिरना, जङ्गल जाना दिशा जाना ।
हगनौटी दे० (पु०) हगने की भूमि, झाड़े फिरने [भूमि
हगास दे० (स्त्री०) हगने की इच्छा ।
हचका, हचकोला दे० (पु०) धक्का, आघात, झोंक
हचरमचर दे० (पु०) ढीलापन, हिलना डोलना विवाद, आगा पीछा, खटका, सोच विचार ।
हट (स्त्री०) हठ, टेक ।
हटक दे० (पु०) रोक, निषेध, डाँट, मनाई, रुकावट
हटकना दे० (क्रि०) रोकना, अटकाना, निषेध करना,
हटना दे० (क्रि०) पीछे फिरना, अलग होना, मुड़ना मुकरना । —हटाने का काम
हटवा दे० (पु०) तौलने वाला बया । —ई स्त्री०
हटाना दे० (क्रि०) टाल देना, दूर कर देना ।
हटाल (स्त्री०) दुकान बढ़ाना या बंद करना ।
हटिया दे० (स्त्री०) हाट, बाज़ार ।
हट्ट दे० (पु०) दूकान, हाट, रास्ता मुहान ।
हट्टाकट्टा दे० (पु०) बलवान, पुष्ट बदनवाला, स्वस्थ
हठ तत्० (पु०) मगराई, मचलाई, अड़, जबरदस्ती, ज़ोरावरी ।—धर्मी (वि०) जिद्दी, हठीला
हठना (क्रि०) जिद करना ।
हठात् तत्० (अ०) अकस्मात्, सहसा ।
हठी हठीला तत्० (वि०) चिड़चिड़ा, मगरा, क्रोधी
हड़ दे० (स्त्री०) फल विशेष, काठ का बेड़ी ।—गिल्ला (पु०) पक्षी विशेष, जो पाँच फुट का होता है ।—ताल (स्त्री०) बाज़ारबन्दी, काम की बन्दी ।—फूटन (पु०) हड्डी की पीड़ा —बड़ाना (क्रि०) घबराना, व्याकुल होना ।—बड़िया (वि०) वेगी, उतावला ।—बड़ी (स्त्री०) शीघ्रता ।—हड़ाना (वा०) थरथराना, काँपना ।—

। (क्रि०) स्वयानत करना, खा जाना, बेईमानी करना।
... दे० (क्रि०) घबड़ाना, अकुलाना, अतुराना।
[ह]ड़कुड़ी दे० (स्त्री०) धींगाधींगी, कोलाहल।
[हड़]डी दे० (स्त्री०) हाड़, अस्थि।—ला (गु०) हाड़ वाला, दृढ़, मज़बूत।
[हं]डा,हंडा दे० (पु०) बड़ा जल रखने का पात्र।
[हं]डाना, हंडाना दे० (क्रि०) देश निकाला देना, घुमाना। [बर्तन।
[हा]ंडिका, हंडिका दे० (स्त्री०) हाँड़ी, मिट्टी का
[हा]ंडिनी (स्त्री०) बदचलन स्त्री।
[हत्] दे० (अ०) धुत्कार, तिरस्कार।
[ह]त तत्० (वि०) मरा हुआ या मारा हुआ।—मनोरथ (पु०) असफल, मनोरथ की हानि।—भाग्य तत्० (वि०) अभागा।
[ह]तना, हनना दे० (क्रि०) मारना, मार डालना।
[हत]ाश तत्० (वि०),जिसकी आशा हत हुई हो, निराश।
[ह]ति (स्त्री०) हनना, मारना।
[ह]ती (क्रि०) थी, रही। (स्त्री०) मारी गई।
[ह]त्थ (पु०) हाथ।
[ह]त्या तत्० (स्त्री०) वध, घात, मार, हिंसा।
[ह]त्यारा दे० (पु०) मारने वाला, वधिक।
[ह]थ तद्० (पु०) हाथ, हस्त, कर।—कड़ी (स्त्री०) हाथ बेड़ी,लोहे की बेड़ी जिससे अपराधियों के हाथ जकड़ दिये जाते हैं।—कड़ा दे० (पु०) मूँठ, दस्ता।—कण्डा (पु०) टेव, ढब, रीति, भाँति।—चपुआ (पु०) भाग, बाँट, हिस्सा।—छुट (पु०) मारने वाला, पीटने वाला।—फोला (पु०) एक प्रकार की झोली।—नाल (स्त्री०) हाथी पर की तोप।—फेर (पु०) उधार, ऋण, क़र्ज़।—रस (पु०) झगड़ा, लड़ाई, चूमा-चाटी, शिकार, हाथ का मैथुन।—लेवा (पु०) हथफेर, उचक्कापन, चोरी की बान।—सान दे० (पु०) महावत।
[ह]थला, हथवास दे० (पु०) हथकड़ा। (स्त्री०) हाथ उठाओ, दाँव रोको, दाँव बाँधो।

हथा दे० (पु०) हथकड़ा, बेंट, खोदनी, एक प्रकार की वस्तु, जिससे पानी फेंकते हैं।
हथिनी दे० (स्त्री०) हस्तिनी, हाथी की स्त्री, करिणी।
हथिया दे० (पु०) नक्षत्र विशेष, तेरहवाँ नक्षत्र।
हथियाना दे० (क्रि०) पकड़ना, ग्रहण करना, अधिकार में रखना।
हथियार दे० (पु०) अस्त्र, कलकाँटा, औज़ार।
हथी दे० (स्त्री०) घोड़ा मलने का सूत, खरहरा।
हथेला (पु०) मोर, हाथ में का।
हथेली दे० (स्त्री०) हस्ततल, हाथ के बीच का स्थान।
हथौटी दे० (स्त्री०) चतुराई, निपुणता, बनावट बनाने की निपुणता, युक्ति।
हथौड़ा दे० (पु०) घन, बड़ा मार्तोल।
हथौड़ी दे० (स्त्री०) छोटा पथौड़ा। [भीत होना।
हदियाना दे० (क्रि०) घबराना, व्याकुल होना,
हन तत्० (क्रि०) प्राण हरण का भार।
हनन तत्० (पु०) मारण, वध।
हनना दे० (क्रि०) वध करना, मार डालना।
हननीय (पु०) मारने योग्य।
हनुमान् तत्० (पु०) सुग्रीव की सेना का प्रधान वानर।
हन्ता तत्० (पु०) वधिक, हिंसक, वध करने वाला, मारने वाला।
हप (पु०) झट मुँह में थोड़ी वस्तु डाल कर निगल जाना।—झप (पु०) झपट।
हपहपाना (क्रि०) हाँपना।
हबड़ा (वि०) कुरूप।
हबिला (वि०) जिसके आगे के दाँत बड़े हों।
हम (सर्व०) हम लोग।
हमारा या हम्हारा (सर्व०) हम लोगों का।
हय तत्० (पु०) अश्व, घोड़ा।—गृह (पु०) घुड़साल।
हयेव (अव्य०) अहंकार।
हर तत्० (पु०) शिव, महादेव, गणित में भाजक अङ्क को कहते हैं।—गिरि (पु०) कैलाश।—गुणी (वि०) गुणवान्, अनेक गुणों का ज्ञाता।—हमेश दे० (अ०) सदा, सतत, सदैव।
हरकारा दे० (पु०) सँदेसिया, दौड़हा, दौड़ने वाला।
हरख (पु०) खुशी, आनन्द।

हरण तद्० (पु०) छीनना, बलात्कार से ले लेना, लूट, चोरी, डाँका।—नीय (पु०) चुराने योग्य।

हरता तद्० (पु०) हर्ता, हरण करने वाला, लुटवैया, चोर, ठग।

हरद (पु०) हल्दी, पोखरा, तालाब।

हरना दे० (क्रि०) लूटना, छीनना, बरबस लेना।

हरनौटा दे० (पु०) हरिण का बच्चा, मृग शावक।

हरमुष्टा दे० (पु०) हट्टाकट्टा, बलवान्, बली।

हरवीर्य (पु०) पारा।

हरसिंगा (पु०) पुष्प एक फूल विशेष।

हरहार (पु०) साँप।

हरा दे० (वि०) हरित, हरितवर्ण, सब्ज़।

हराना दे० (क्रि०) थकाना, जीतना, पराजय करना।

हराम (वि०) शास्त्रविरुद्ध, निषिद्ध, वर्जित।

हरारत (स्त्री०) थकावट, ज्वर की गर्मी, हलका ज्वर।

हरावल दे० (स्त्री०) मुहाना, सेना के आगे का भाग। (पु०) मुहरा, अगाड़ी।

हरास (पु०) ह्रास, कमी, क्षति।

हरास् दे० (पु०) दुःख, शोक, नाउम्मेदी।

हरि तद्० (पु०) विष्णु, इन्द्र, साँप, मेंढक, सिंह, घोड़ा, सूर्य, चन्द्रमा, सुग्गा, तोता, वानर, यमराज पवन।—अरे (वि०) हरा हरा।—चन्दन (पु०) देववृक्ष, गोरोचन, सफ़ेद चन्दन, ज्योत्स्ना।—श्चन्द्र (पु०) सत्ययुग के सूर्यवंशी एक राजा। सत्य और दान धर्म के पालन में ये प्रसिद्ध हैं।—जन (पु०) विष्णु का भक्त, विष्णु का अनन्य भक्त।—ताल (पु०) धातु विशेष, जो पीले रङ्ग का होता है।—तालिका (स्त्री०) व्रत विशेष, स्त्रियों का एक व्रत, भादों सुदी तीज का व्रत।—द्वार (पु०) एक तीर्थ और नगर का नाम।—पैड़ी (स्त्री०) विष्णुघाट।—प्रिया (स्त्री०) तुलसी, विष्णुपत्नी।—यल (पु०) हरा कबूतर।—जान, यान (पु०) गरुड़।—याली (स्त्री०) सब्ज़ी, श्यामता।—वाहन (पु०) गरुड़।—वासर (पु०) पीपल का पेड़।—वासर (पु०) एकादशी, जन्माष्टमी, रामनवमी, वामनद्वादशी, नृसिंह १४ शी आदि विष्णु के व्रतों के दिन।

हरिण तद्० (पु०) मृग, मृग, कुरङ्ग।

हरिणी तद्० (स्त्री०) मृगी, मृग की स्त्री।

हरित् तद्० (वि०) हरा, सब्ज़, श्याम, घोड़ा का

हरिद्रा तद्० (स्त्री०) हल्दी।

हरीय (क्रि०) हर लेना चाहिये, छीन लेना चाहि

हरीतकी (स्त्री०) हर्रें।

हरीरा दे० (वि०) मनोहर, हरा।

हरीवा दे० (पु०) एक प्रकार का तोता।

हरीश (पु०) सुग्रीव।

हरुआई (स्त्री०) हलकापन।

हरुए (अव्य०) हौले हौले।

हरौटी दे० (स्त्री०) खड़ी, मेंट, खड़िया।

हर्रा (पु०) हरीतकी, दवा विशेष।

हर्तव्य (पु०) लेने योग्य।

हर्ता (पु०) लेने वाला।

हर्म्य (पु०) अटारी, छज्जा।

हर्ष तद्० (पु०) आनन्द, सुख, कान्यकुब्ज के रा का नाम, एक संस्कृत कवि का नाम।

हर्षना या हर्षाना तद्० (क्रि०) हर्षित होना, फूल खिलना।

हर्षित तद्० (वि०) आनन्दित, आह्लादित, सुखित

हल तद्० (पु०) हर, जिससे खेत जोतते —काना (क्रि०) धक्का देना पहरा देना, काना।—कोरना (क्रि०) बटोरना, इखो समेटना।—चल (पु०) खलबली, हड़बड़ी, भीड़भाड़, डर, हुल्लड़।—चल मचाना (क्रि हुल्लड़ करना, युद्ध करना।—दिया (पु०) प्रकार का विष, पीलिया रोग, जिसमें शरीर पी हो जाता है।—धर (पु०) बलराम, प्र आता। [हलकी रो

हलका दे० (वि०) जो भारी न हो। (पु०) पुञ्ज

हलचल दे० (पु०) गड़बड़ी।

हलका दे० (पु०) प्रान्त।

हलदी दे० (स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।

हलपना दे० (क्रि०) तड़फड़ाना, व्याकुल होना।

हलफल दे० (स्त्री०) शिष्टाचार, हड़बड़ी।

हलरा दे० (पु०) तरङ्ग, मेर, लहर।—ना (क्रि० बहलाना, विनोदन करना।

हलराई (क्रि०) झोंका देकर।

हाव तद्० (पु०) नख़रा, चोंचला, भाव, हावभाव।
हास (पु०) हँसी, प्रसन्नता, दिल्लगी।
हास्य तद्० (पु०) हँसी, कौतुक, विनोद।
हाहा दे० (अ०) हाय हाय, हा। (पु०) गन्धर्व विशेष।
हाहाकार तद्० (पु०) शोक, त्राहि त्राहि, हाय हाय।
हाहा खाना (क्रि०) गिड़गिड़ाना।
हिंडोला या हिंडोरा दे० (पु०) पलना, झूला।
हिंसक तद्० (पु०) वधिक, व्याध, मारने वाला।
हिंसा तद्० (स्त्री०) मारण, वध, घात।
हिंस्र तद्० (पु०) वधिक, हिंसक।
हिंगु तद्० (पु०) हींग, गन्ध द्रव्य।
हि (अ०) निश्चय, दृढ़। [अटकना।
हिचकना दे० (क्रि०) आगा पीछा करना, रुकना,
हिचकाना दे० (क्रि०) धक्का देना, हिलाना।
हिचकिचाना दे० (क्रि०) सन्देह में पड़ना, संशयित होना। [शब्द निकलता है।
हिचकी दे० (स्त्री०) हिक्का, गले से जो हिचू हिचू
हिजड़ा दे० (पु०) नपुंसक, क्लीब, नामर्द।
हित तद्० (पु०) उपकार, भलाई।—कारी (पु०) उपकारी।
हितू तद्० (वि०) हितैषी, नातेदार, सम्बन्धी मित्र।
हितैषी तद्० (वि०) हितकारक, हित करने वाला।
हिनहिनाना दे० (क्रि०) घोड़े का शब्द।
हिन्द (पु०) भारतवर्ष।
हिन्दी दे० (स्त्री०) हिन्द की भाषा, राष्ट्रभाषा।
हिन्दु दे० (पु०) हिन्दुस्तान के वासी, वैदिक मत का मानने वाला।—स्थान (पु०) भारतवर्ष।
हिम तद्० (पु०) पाला, तुषार, ओस।—कर (पु०) चन्द्रमा कपूर। —कूट (पु०) जाड़ा, शिशिर ऋतु।
हिमायत दे० (स्त्री०) पक्षपात, समर्थन।
हिमायती दे० (वि०) पक्षपाती।
हिमालय या हिमाचल तद्०(पु०)हिमगिरि, हिमाद्रि।
हिम्मत दे० (स्त्री०) साहस।
हिया दे० (पु०) हृदय कलेजा।
हियाव दे० (पु०) साहस हिम्मत।
हिरण (पु०) सोना, सुवर्ण, मृग, मृगवत् विशेष।
हिरण्यकशिपु तद्० (पु०) दैत्यपति, प्रह्लाद का।
हिरण्यगर्भ (पु०) ब्रह्मा, शालिग्राम की मूर्ति।
हिरद तद्० (पु०) हिया, हृदय।
हिरन तद्० (पु०) मृग, हिरण।
हिरमिजी (स्त्री०) एक प्रकार का रंग।
हिला (पु०) पालतू। (क्रि०) कांपा, वशीभूत हुआ।
हिलाना (क्रि०) कपाना, वशीभूत करना।
हिलाव दे० (पु०) पैराव, तैराव।
हिलामिला दे० (पु०) मिला हुआ, सम्पर्क परचा हुआ।
हिलोरा दे० (पु०) तरंग, लहर।
हिल्सा दे० (स्त्री०) मछली विशेष।
हिसका दे० (पु०) देखादेखी, स्पर्द्धा, हिर्स।—कुटि दे० (वि०) मत्सर, द्वेष।
हिर्स दे० (स्त्री०) ईर्ष्या, डाह।
हिसाब दे० (पु०) लेखा, गणितशास्त्र।—किता (पु०) लेखा।
हींग दे० (पु०) गन्ध द्रव्य, स्वनाम प्रसिद्ध गन्ध द्रव्य
हींसना दे० (क्रि०) हिनहिनाना, चाहना।
हीक दे० (स्त्री०) उबकाई, मतलाई, गचलाई।
हीके दे० हृदय को।
हीन तद्० (वि०) न्यून, अधम, छोटा।—जाति (पु०) अधम जाति। [पिता का नाम
हीर तद्० (पु०) वज्र, हीरा, मणि विशेष, वीहर्ष के
हीरा दे० (पु०) एक श्वेत रत्न, पर्व, वज्र, मणि विशेष।—मन (पु०) एक प्रकार का तोता।—वली (स्त्री०) योगी की स्त्री।
हीला (पु०) बहाना, मिस।
हुकुम दे० (पु०) आज्ञा, अनुशासन।—नामा दे० (पु०) आज्ञापत्र अनुशासनपत्र। [ध्वनि।
हुङ्कार तद्० (पु०) गर्जन, डरावना शब्द, भयङ्कर
हुड़का दे० (पु०) धमाल, फूलना।
हुड़दङ्गा दे० (पु०) डकैत, गुण्डा, उपद्रवी।
हुडड दे० (वि०) फक्कड़।
हुण्डी दे० (स्त्री०) रुपये की चिट्ठी।
हुण्डार दे० (पु०) भेड़िया, हिंसक जन्तु विशेष।
हुति तद्० (स्त्री०) आहुति (क्रि०) थी।

दे० (पु०) गुन, कारीगरी, कारुकार्य ।
दे० (क्रि०) ठोकर, मारना ।
। दे० (क्रि०) हुलकारना, खदेड़ना, भगाना ।
(क्रि०) मोड़ना, घुमाना ।
दे० (क्रि०) आनन्दित होना, हर्षित होना ।
(पु०) आनन्द, हर्ष, सुख, अहलाद,
काम, सूँघने की तमाखू ।
दे० (पु०) रोला, झगड़ा, टण्टा ।
तत्० (पु०) एक प्रकार की सहायता जो खेतिहर आपस में एक दूसरे की करते हैं ।
दे० (पु०) धींगाधींगी ।
तत्० (पु०) हूँण देश का वासी, कठोर मनुष्य ।
दे० (क्रि०) पेलना, धक्का देना, ढकेलना ।
(पु०) प्रसन्नता का शब्द ।
तत्० (पु०) अन्तःकरण, मन, चित्त, छाती ।
तत्० (वि०) आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित ।—पुष्ट (पु०) बलवान्, बली ।
(अ०) सम्बोधन सूचक ।
दे० (पु०) एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे खेतबराबर किया जाता है । [आलसी, डरपोकना ।
दे० (पु०) नीचे, अध., तले ।—ा (वि०)
तद्० [हा+इति] हाय यह, हाय इतना ।
दे० (क्रि०) प्रेमी, हित, हितकारी, मित्र ।
तत्० (पु०) कारण, निमित्त, निदान ।
म तत्० (पु०) सुवर्ण, सोना, हिरण्य ।
मन्त तत्० (पु०) ऋतु विशेष, जाड़े की ऋतु ।
य तत्० (वि०) त्याज्य, छोड़ने योग्य ।
रना दे० (वि०) ढूँढ़ना, खोजना ।
रम्ब तत्० (पु०) गणेश, गजानन, विनायक ।
रफेर दे० (पु०) परिवर्तन, उलटफेर ।
राफेरी दे० (स्त्री०) अदल बदल, परिवर्तन ।
लना दे० (क्रि०) पार होना, तैरना ।
ला दे० (स्त्री०) अवज्ञा, अनादर, वाद्य विशेष ।
—मारना (वा०) पुकारना ।

हैज़ा दे० (पु०) कालरा, विशूचिका का रोग ।
हैहय तत्० (पु०) क्षत्रिय विशेष ।—पति तद्० (पु०) कार्तवीर्य ।
होंकना दे० (क्रि०) हाँफना, ऊँची साँस लेना ।
होंठ दे० (पु०) ओष्ठ, ओठ, अधर ।
होड़ दे० (पु०) बाज़ी, शर्त, ठहराव, नियम, समय ।
—लगाना (वा०) बाज़ी लगाना ।
होत दे० (स्त्री०) बल, शक्ति, सामर्थ्य ।
होता तत्० (पु०) हवन कर्त्ता ।
होनहार दे० (वि०) भवितव्यता, भविष्य, भावी, होने वाला, तीक्ष्ण बुद्धि ।
होना दे० (क्रि०) रहना, विद्यमान, वर्तमान ।
होम तत्० (पु०) हवन, वेद मन्त्र पूर्वक अग्नि में आहुति देना ।—कुण्ड (पु०) हवन करने का कुण्ड ।
होला दे० (पु०) एक प्रकार की नाव, भूँजा चना, बूट ।
होली तत्० (स्त्री०) पर्व विशेष, फागुन के महीने में यह होता है ।
होहल्ला दे० (पु०) हुल्लड़ ।
हौं हौं दे० (पु०) कुत्ते की बोली ।
हौंस दे० (स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाषा ।
हौंसला दे० (पु०) साहस, इच्छा, उत्साह ।
हौका दे० (पु०) लोभ, लालच, लिप्सा, अभिलाष ।
हौद दे० (पु०) कुण्ड, चहबचा ।
हौदा दे० (पु०) हाथी की पीठ पर कसने वाला हौदा ।
हौदी दे० (स्त्री०) छोटा कुण्ड, छोटा चहबचा ।
हौली दे० (स्त्री०) कलवरिया, मदिरा की दूकान ।
हौले दे० (अ०) धीरे धीरे, शनै. शनै. ।
हौवा दे० (पु०) बालकों को डराने के लिये एक कल्पित भूत ।
ह्रद तत्० (पु०) बड़ा जलाशय, झील ।
ह्रस्व तत्० (पु०) मात्रा विशेष, एक मात्रिक स्वर, लघु वर्ण ।
ह्रास तत्० (पु०) घटा, टोटा, नुकसान ।
ह्लाद तत्० (पु०) आनन्द, हर्ष, सुख ।

॥ इति ॥